☆ सोहँ महाराज शेर सिँघ विशनूं भगवान दी जै ☆

निहकलंक हरिशब्द भंडार

छेवां भाग

तत्करा

मिती-सम्मत	नाम	स्थान	पन्ना नं:
०१ सावण २०१३ बिक्रमी	हरि भगत द्वार	जेठूवाल अमृतसर	००१
०१ सावण २०१३ बिक्रमी	हरि भगत द्वार रजिंदर प्रसाद नूं शब्द भेज्जया	जेठूवाल तों	००३
१७ सावण २०१३ बिक्रमी	करतार सिँघ दे गृह	तरनतारन अमृतसर	००८
१७ सावण २०१३ बिक्रमी	तेजा सिँघ दे गृह	तरनतारन अमृतसर	०२०
१७ सावण २०१३ बिक्रमी	मस्सा सिँघ दे गृह	नौरंगाबाद अमृतसर	०२२
०१ भादरों २०१३ बिक्रमी	हरि भगत द्वार	जेठूवाल अमृतसर	०३०
०१ भादरों २०१३ बिक्रमी	प्रताप सिँघ नामधारीए नूं शब्द	जेठूवाल अमृतसर	०३५
०१ भादरों २०१३ बिक्रमी	अकाल तख्त दे प्रधान नूं शब्द	जेठूवाल अमृतसर	०३८
१२ भादरों २०१३ बिक्रमी	डाः रजिंदर प्रसाद नूं शब्द	जेठूवाल अमृतसर	०४५
१६ भादरों २०१३ बिक्रमी	आत्मा सिँघ नूं वर दिता	जेठूवाल अमृतसर	०४८
०१ अस्सू २०१३ बिक्रमी	दिल्ली जाण समें सिँघासण वाले पलंघ हिलाउणा ते लिखत	जेठूवाल अमृतसर	०५०
०१ अस्सू २०१३ बिक्रमी	बाबा प्रताप सिँघ दे डेरे	भैंणी साहिब लुध्याणा	०५८
०२ अस्सू २०१३ बिक्रमी	गज्जण सिँघ दे गृह	अंबाला छाउणीं	०५६
०२ अस्सू २०१३ बिक्रमी	संत कृपाल सिँघ ने डेरे सद्दया	दिल्ली	०६३
०२ अस्सू २०१३ बिक्रमी	संत सुजान सिँघ दे गुरद्वारे	दिल्ली	०६६
०३ अस्सू २०१३ बिक्रमी	पहाड़ गंज दरबार	दिल्ली	०७१
०३ अस्सू २०१३ बिक्रमी	राष्ट्रपती भवन	दिल्ली	०८३
०३ अस्सू २०१३ बिक्रमी	डाः रूप लाल बत्तरा	दिल्ली	०८३

1 ०६

०४	अस्सू	२०१३	बिक्रमी	मल सिँघ दे गृह		दिल्ली	०६५
०४	अस्सू	२०१३	बिक्रमी	बिशन सिँघ दे गृह		गुड़गाउँ	०६७
०५	अस्सू	२०१३	बिक्रमी	राष्ट्रपती राजिंदर प्रसाद नाल	राष्ट्रपती हाऊस	दिल्ली	१०३
०५	अस्सू	२०१३	बिक्रमी	११:४५ ते राष्ट्रपती नूं शब्द लिख के दित्ता			१०३
०५	अस्सू	२०१३	बिक्रमी	दिल्ली दरबार	हरि संगत नूं वड्डिआई	दिल्ली	१०४
०५	अस्सू	२०१३	बिक्रमी	इन्द्र सिँघ दे गृह	करोलबाग	दिल्ली	१०५
०५	अस्सू	२०१३	बिक्रमी	बूआ सिँघ दे गृह	मुराद नगर	मेरठ	१०६
०५	अस्सू	२०१३	बिक्रमी	रेशम सिँघ दे गृह	मेरठ छाउणी		१०६
०६	अस्सू	२०१३	बिक्रमी	गज्जण सिँघ दे गृह	अंबाला छाउणी		११३
०१	कत्तक	२०१३	बिक्रमी	निरमला संमेलन विच	अमृतसर		१२१
०१	कत्तक	२०१३	बिक्रमी	हरि भगत द्वार	जेठूवाल	अमृतसर	१२२
०१	कत्तक	२०१३	बिक्रमी	ईरान दे बादशाह नूं शब्द भेज्जया	जेठूवाल	अमृतसर	१२८
१४	कत्तक	२०१३	बिक्रमी	शाह ईरान नूं शब्द भेज्जया	जेठूवाल	अमृतसर	१२६
१४	कत्तक	२०१३	बिक्रमी	संत कृपाल सिँघ नूं दिली शब्द भेज्जया			१३२
०१	मग्घर	२०१३	बिक्रमी	हरि भगत द्वार	जेठूवाल	अमृतसर	१३६
१६	मग्घर	२०१३	बिक्रमी	दर्शन सिँघ दे गृह	दिल्ली		१५५
१७	मग्घर	२०१३	बिक्रमी	कुरुक्षेत्र विच पंडतां नूं मिले			१६२
१७	मग्घर	२०१३	बिक्रमी	कुरुक्षेत्र			१६५
२१	मग्घर	२०१३	बिक्रमी	जरनैल सिँघ दे गृह	शाहवाला	फिरोज़पुर	१६८
२३	मग्घर	२०१३	बिक्रमी	सरदारा सिँघ दे गृह	मनाला	फिरोज़पुर	१६५
२३	मग्घर	२०१३	बिक्रमी	हरि गोबिन्द साहिब दे गुरद्वारे	मनाला	फिरोज़पुर	२०७
२५	मग्घर	२०१३	बिक्रमी	तारा सिँघ दे गृह	चम्बल	अमृतसर	२१०

०१ पोह २०१३ बिक्रमी हरि भगत द्वार जेठूवाल अमृतसर २१७
२५ पोह २०१३ बिक्रमी हरि भगत द्वार जेठूवाल अमृतसर २३३
२६ पोह २०१३ बिक्रमी हरि भगत द्वार जेठूवाल अमृतसर २३६
२७ पोह २०१३ बिक्रमी हरि भगत द्वार जेठूवाल अमृतसर २७३
२८ पोह २०१३ बिक्रमी नरैण सिँघ दे गृह गुमानपुर अमृतसर २६६
२६ पोह २०१३ बिक्रमी अवतार सिँघ दे गृह काउके अमृतसर ३१६
०१ माघ २०१३ बिक्रमी हरि भगत द्वार जेठूवाल अमृतसर ३३५
०१ फग्गण २०१३ बिक्रमी हरि भगत द्वार जेठूवाल अमृतसर ३४१
२४ फग्गण २०१३ बिक्रमी गुरमुख सिँघ दे गृह भलाईपुर अमृतसर ३५३
२४ फग्गण २०१३ बिक्रमी डा: पाल सिँघ दे गृह भलाईपुर अमृतसर ३५८
०१ चेत २०१४ बिक्रमी हरि भगत द्वार जेठूवाल २१ प्रवारां दा इकट्ठ होया
इक्की दिन तक्क इक्की इक्की प्रवार इकट्ठे होए अते
सभ दा सांझा लंगर चलाया गया अते सवा पंज रुपए ३५८
०१ चेत २०१४ बिक्रमी सवेर दे समे हरि भगत द्वार जेठूवाल अमृतसर ३५६
०१ चेत २०१४ बिक्रमी सवेरे पंज वजे भगत द्वार जेठूवाल अमृतसर ३६४
०१ चेत २०१४ बिक्रमी हरि भगत द्वार तों राष्ट्रपती राजिंदर प्रसाद नूं शब्द ३६६
०१ चेत २०१४ बिक्रमी हरि भगत द्वार जेठूवाल तों अकाल तख़त अमृतसर
ख़ालसा पंथ दे प्रधान नूं शब्द लिखया ३७२
०१ चेत २०१४ बिक्रमी हरि भगत द्वार जेठूवाल तों डेरा बाबा जैमल सिँघ
संत चरन सिँघ नूं शब्द भेज्जया ३७६
०१ चेत २०१४ बिक्रमी हरि भगत द्वार जेठूवाल अमृतसर ३७८
०१ चेत २०१४ बिक्रमी दलीप सिँघ दे गृह गगोबूआ २१ प्रवारां दा इकट्ठ ३८२

०२ चेत २०१४ बिक्रमी मनी राम दे गृह सिधम २१ प्रवारां दा इकट्ठ होया ३६६
०३ चेत २०१४ बिक्रमी इन्द्र सिँघ दे गृह बंडाला २१ प्रवारां दा इकट्ठ ४१२
०४ चेत २०१४ बिक्रमी मस्सा सिँघ दे गृह नौरंगाबाद २१ प्रवारां दा इकट्ठ ४२२
०४ चेत २०१४ बिक्रमी तारा सिँघ दे गृह चम्बल अमृतसर ४२४
०५ चेत २०१४ बिक्रमी केहर सिँघ दे गृह रज्जीवाल फिरोज़पुर ४२६
०५ चेत २०१४ बिक्रमी मल सिँघ दे गृह रज्जीवाल फिरोज़पुर ४३१
०५ चेत २०१४ बिक्रमी गुरदयाल सिँघ दे गृह रामूवाला २१ प्रवारां दा इकट्ठ ४३२
०६ चेत २०१४ बिक्रमी उजागर सिँघ दे गृह रामू वाला फिरोज़पुर ४५५
०६ चेत २०१४ बिक्रमी शाम सिँघ दे गृह रामू वाला फिरोज़पुर ४५७
०६ चेत २०१४ बिक्रमी राम सिँघ दे गृह २१ प्रवारां दा इकट्ठ
मकान नं: ३८६ गवाल टोली फिरोज़पुर ४५६
०७ चेत २०१४ बिक्रमी नाजर सिँघ दे गृह नाथेवाल २१ प्रवारां दा इकट्ठ ४७५
०८ चेत २०१४ बिक्रमी बूड़ सिँघ दे गृह नाथेवाल फिरोज़पुर ४६६
०६ चेत २०१४ बिक्रमी बग्गा सिष्घ दे गृह नत्त २१ प्रवारां दा इकट्ठ लुध्याणा ५१०
१० चेत २०१४ बिक्रमी हरबंस सिँघ दे गृह अजनोंध २१ प्रवारां दा इकट्ठ ५२३
११ चेत २०१४ बिक्रमी बचन सिँघ दे गृह ध्यानपुर अंबाला ५३३
११ चेत २०१४ बिक्रमी जंगीर सिँघ दे गृह रंगीलपुर २१ प्रवारां दा इकट्ठ ५३४
१२ चेत २०१४ बिक्रमी सुरजीत सिँघ दे गृह राजोमाजरा अंबाला ५४६
१२ चेत २०१४ बिक्रमी गयान चंद दे गृह मिरजापुर २१ प्रवारां दा इकट्ठ होया ५४७
१३ चेत २०१४ बिक्रमी दीदार सिँघ दे गृह आलोवाल हुशयार पुर ५६२
१३ चेत २०१४ बिक्रमी सरूप सिँघ दे गृह मुध २१ प्रवारां दा इकट्ठ होया ५६३
१४ चेत २०१४ बिक्रमी नसीब सिँघ दे गृह बोपाराए जलंधर ५८०

4
०६
4
०६

१४ चेत २०१४ बिक्रमी बिशन सिँघ दे गृह नूरपुर २१ प्रवारां दा इकट्ठ होया ५८४
१५ चेत २०१४ बिक्रमी रेशम सिँघ दे गृह खहरा मजा जलंधर ५६२
१५ चेत २०१४ बिक्रमी गुरमुख सिँघ दे गृह भलाईपुर
२१ प्रवारां दा इकट्ठ होया ५६५
१६ चेत २०१४ बिक्रमी कैपटन बंता सिँघ दे गृह पंज गराईआं
२१ प्रवारां दा इकट्ठ होया ६१३
१७ चेत २०१४ बिक्रमी अजीत सिँघ दे गृह बटाला २१ प्रवारां दा इकट्ठ होया ६३२
१८ चेत २०१४ बिक्रमी करतार सिँघ दे गृह भूमली २१ प्रवारां दा इकट्ठ होया ६५५
१६ चेत २०१४ बिक्रमी गिरधारा सिँघ दे गृह बलोवाली २१ प्रवारां दा इकट्ठ ६६७
२० चेत २०१४ बिक्रमी बखशीश सिँघ दे गृह कादराबाद २१ प्रवारां दा इकट्ठ ६७६
२० चेत २०१४ बिक्रमी जगीर सिँघ दे गृह कादराबाद अमृतसर ६८५
२१ चेत २०१४ बिक्रमी हरि भगत द्वार जेठूवाल २१ प्रवारां दा इकट्ठ ६८६

5 ०६

०१ विसाख २०१४ बिक्रमी हरि भगत द्वार जेठूवाल अमृतसर ७००
२५ विसाख २०१४ बिक्रमी गुरमुख सिँघ दी माता ताबो दे अंतम संस्कार दे समें ७०८
०१ जेठ २०१४ बिक्रमी हरि भगत द्वार जेठूवाल अमृतसर ७०६
०५ जेठ २०१४ बिक्रमी हरि मंदर साहिब विखे ग्रन्थी भुपिंदर सिँघ नाल अमृतसर ७२४
०५ जेठ २०१४ बिक्रमी मोता सिँघ दे घर सचे पातशाह जी ने सिँघासण उलटा
कल्सीआं अमृतसर ७२७
०५ जेठ २०१४ बिक्रमी सैनापती कृष्ना मैनन ते राष्ट्रपती डाः राजिंदर प्रसाद नूं
शब्द भेज्जया कल्सीआं अमृतसर ७३३
२० जेठ २०१४ बिक्रमी सोहण सिँघ दे गृह मुण्डी जमाल फिरोज़पुर ७३५
२१ जेठ २०१४ बिक्रमी बगीचा सिँघ दे गृह मुण्डी जमाल फिरोज़पुर ७४१

२१ जेठ २०१४ बिक्रमी बिशन सिँघ दे गृह	कादराबाद	फिरोज़पुर	७४४
२१ जेठ २०१४ बिक्रमी नाजर सिँघ दे गृह त्रैगुण माया दे अंत करन बारे	नाथेवाल	फिरोज़पुर	७४४
२२ जेठ २०१४ बिक्रमी जुगिंदर सिँघ दे गृह	नाथेवाल	फिरोज़पुर	७६३
२२ जेठ २०१४ बिक्रमी बग्गा सिँघ दे गृह	नाथेवाल	फिरोज़पुर	७६५
२२ जेठ २०१४ बिक्रमी बलवंत सिँघ दे गृह	नाथेवाल	फिरोज़पुर	७६६
२२ जेठ २०१४ बिक्रमी प्रीतम सिँघ दे गृह	नाथेवाल	फिरोज़पुर	७६८
२२ जेठ २०१४ बिक्रमी जरनैल सिँघ दे गृह	नाथेवाल	फिरोज़पुर	७७०
२२ जेठ २०१४ बिक्रमी इन्द्र सिँघ दे गृह	नाथेवाल	फिरोज़पुर	७७१
२२ जेठ २०१४ बिक्रमी साधू सिँघ दे गृह	रोडेवाल	फिरोज़पुर	७७१
२२ जेठ २०१४ बिंकमी माला सिँघ दे घर	समालसर	फिरोज़पुर	७७४
०१ हाढ़ २०१४ बिक्रमी हरि भगत द्वार	जेठूवाल	अमृतसर	७७७
१७ हाढ़ २०१४ बिक्रमी हरि भगत द्वार	जेठूवाल	अमृतसर	७८८
१८ हाढ़ २०१४ बिक्रमी आत्मा सिँघ दे गृह	मल्लूवाल	अमृतसर	८१६
०१ सावण २०१४ बिक्रमी हरि भगत द्वार	जेठूवाल	अमृतसर	८३५
०१ भादरों २०१४ बिक्रमी हरि भगत द्वार	जेठूवाल	अमृतसर	८४५
१६ भादरों २०१४ बिक्रमी लछमण सिँघ, दर्शन सिँघ	पहाड़ गंज	दिल्ली	८६०
२० भादरों २०१४ बिक्रमी डीफैंस मनिस्टर कृष्णा मैनन नूं शब्द भेज्जया		दिल्ली	८६५
२० भादरों २०१४ बिक्रमी जुगल किशोर बिरला नाल	बिरला मंदर	दिल्ली	८६७
१६ भादरों २०१४ बिक्रमी लछमण सिँघ, दर्शन सिँघ पहाड़ गंज	सिँघासण उत्ते	दिल्ली	८६६
२० भादरों २०१४ बिक्रमी बिशन सिँघ दे गृह	गुड़गाउँ		८७६

6 ०६

२२ भादरों २०१४ बिक्रमी करतार सिँघ, अरजन सिँघ पुराबाड़ी भरतपुर ८७८
२३ भादरों २०१४ बिक्रमी इन्द्र सिँघ दे घर कोल करोल बाग नवीं दिल्ली ८८८
२४ भादरों २०१४ बिक्रमी रेशम सिँघ दे गृह मेरठ छाउणी ८६३
०१ अस्सू २०१४ बिक्रमी दरबार विच जेठूवाल अमृतसर ६१०
०३ अस्सू २०१४ बिक्रमी राष्ट्रपती राजिंदर प्रसाद,
पंडत जवाहर लाल नेहरू, मौलाना अबदुल
कलाम अजाद, कृष्ना मैनन, गोबिन्द वलब पंत नूं
शब्द भेज्जया दरबार विच जेठूवाल अमृतसर ६२१
०३ अस्सू २०१४ बिक्रमी दयाल बाग महिता दी राधा स्वामी
डेरा बाबा जैमल सिँघ चरन सिँघ नूं शब्द भेज्जया
दरबार विच जेठूवाल अमृतसर ६२४
१५ अस्सू २०१४ बिक्रमी दरबार विच जेठूवाल अमृतसर ६२७
०१ कत्तक २०१४ बिक्रमी दरबार विच जेठूवाल अमृतसर ६३०
१० कत्तक २०१४ बिक्रमी चरन सिँघ दे गृह हेमराज पुर गुरदासपुर ६३८
१० कत्तक २०१४ बिक्रमी बचन सिँघ दे गृह काणा कौटा गुरदासपुर ६४२
१० कत्तक २०१४ बिक्रमी किशन सिँघ दे गृह अल्लड़ पिंडी गुरदासपुर ६४६
११ कत्तक २०१४ बिक्रमी तेज भान दे गृह शेख़सर अखनूर जम्मू ६५४
११ कत्तक २०१४ बिक्रमी संसार सिँघ दे गृह छंब जम्मू ६७८
१४ कत्तक २०१४ बिक्रमी सी गुरू गोबिन्द सिँघ दे गुरद्वारे
मंडी शहर हिमाचल प्रदेश ६८१
१४ कत्तक २०१४ बिक्रमी महाराजा जोगिंदर सैन नूं शब्द भेज्जया
मंडी शहर हिमाचल प्रदेश ६८६

7 ०६

१५	कत्तक	२०१४	बिक्रमी	गुरद्वारे लिखत करवाई	सकेत	हिमाचल प्रदेश,	६८७
१६	कत्तक	२०१४	बिक्रमी	गुरद्वारे लिखत करवाई	रवालसर	हिमाचल प्रदेश	६८८
१६	कत्तक	२०१४	बिक्रमी	रवालसर गुरद्वारा	मण्डी सकेत	हिमाचल प्रदेश	६६४
१६	कत्तक	२०१४	बिक्रमी		जगिंदर नगर	कांगड़ा	६६५
०१	मग्घर	२०१४	बिक्रमी	हरि भगत द्वार	जेठूवाल	अमृतसर	६६७
०१	मग्घर	२०१४	बिक्रमी	हरि भगत द्वार तों पटना साहिब शब्द भेज्जया			१००४
०२	मग्घर	२०१४	बिक्रमी	मोहण सिँघ दे गृह	तारा चक्क	गुरदासपुर	१००६
११	मग्घर	२०१४	बिक्रमी	गुरमख सिँघ दे गृह	भलाई पुर डोगरां	अमृतसर	१०१६
११	मग्घर	२०१४	बिक्रमी	गुरबख़स सिँघ दी शादी वासते	भलाईपुर डोगरां	अमृतसर	१०२४
११	मग्घर	२०१४	बिक्रमी	गुरमख सिँघ दी सपुत्तरी जगीर कौर दी गुरबख्श सिँघ नाल शादी समें	भलाई पुर डोगरां	अमृतसर	१०२७
२०	मग्घर	२०१४	बिक्रमी	बलवंत सिँघ, हरबंस सिँघ दे गृह	माहल	अमृतसर	१०२६
२०	मग्घर	२०१४	बिक्रमी	खुशहाल सिँघ दे गृह	मानावाला	अमृतसर	१०३३
२१	मग्घर	२०१४	बिक्रमी	सुरमख सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	१०४२
२१	मग्घर	२०१४	बिक्रमी	सुखदेव राज दे गृह	कल्ला	अमृतसर	१०४७
२२	मग्घर	२०१४	बिक्रमी	बूड़ सिँघ दे गृह	नाथेवाल	फिरोज़पुर	१०५०
२३	मग्घर	२०१४	बिक्रमी	गुलजार सिँघ दे गृह	नाथेवाल	फिरोज़पुर	१०५४
२३	मग्घर	२०१४	बिक्रमी	नाज़र सिँघ दे गृह	नाथेवाल	फिरोज़पुर	१०५६
२४	मग्घर	२०१४	बिक्रमी	करम सिँघ दे गृह	पिपली	फिरोज़पुर	१०६१
२४	मग्घर	२०१४	बिक्रमी	राम सिँघ दे गृह	फिरोज़पुर छाउणी		१०६७
२५	मग्घर	२०१४	बिक्रमी	सीतल सिँघ दे गृह	डगरू	फिरोज़पुर	१०७७
२५	मग्घर	२०१४	बिक्रमी	गुरबचन सिँघ दे गृह	सदा सिँघ वाला	फिरोज़पुर	१०८४

२६ मग्घर २०१४ बिक्रमी सरदारा सिँघ दे गृह	मनावा	फिरोज़पुर	१०६६
२७ मग्घर २०१४ बिक्रमी हीरा नंद दे गृह	चम्बल	अमृतसर	११०६
२८ मग्घर २०१४ बिक्रमी निरंजण सिँघ दे गृह	चम्बल	अमृतसर	१११२
०१ पोह २०१४ बिक्रमी हरि भगत द्वार	जेठूवाल	अमृतसर	१११६

9
०६

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

* पहली सावण २०१३ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल जिला अमृतसर *

हरि जोती नूर अगम्म, अगम्म समाया। आदि अन्त ना मरे ना पए जम्म, आप आपणे विच समाया। पवण स्वासी
ना लए दम, आलस निन्दरा विच ना आया। नेत्र नीर ना वहाए छम्म छम्म, जल धारा दिस ना आया। गगन पताल
रक्खे बिना थम्म, शब्द जाल इक्क विछाया। आप रखाए आपणा नाम, ना कोई हड्ड मास ना नाड़ी चम्म, मात पित ना
१ किसे गोद उठाया। जुग जुग आदि पुरख अपरम्पर सुआमी आपे आप पए जम्म, शब्द साचा नाम रखाया। लोआं पुरीआं १
०६ आपे जाणे आपणा कम्म, मात पताल आकाश प्रकाश एका नूर सवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप ०६
आपणी रचन रचाया। आप आपणी रचन रचाए, अकल कला भरपूरा। निहचल धाम अटल सुहाए, हरि दाता जोद्धा सूरा।
जल थल कोई दिस ना आए, नेरन नेर दूरन दूरा। वल छल इक्क खेल रचाए, अकल कला भरपूरा। निहचल धाम अटल
सुहाए, शब्द वजाए साची तूरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणा सति सरूरा। आपणा
आप आपे मन्ने, हरि आपणी बणत बणांयदा। किसे ना दिसे छप्परी छन्ने, भेव अभेदा भेव कोई ना पांयदा। जुग जुग
आपणा बेड़ा आपे बन्ने, वेद कतेबां दिस ना आंयदा। जो घड़या सो अन्तिम भन्ने, भाणा आपणे हथ्थ रखांयदा। रवि ससि
उपाए सूरज चन्ने, साची सेवा लांयदा। अगाध बोध शब्द जणाए कन्ने, सुनावणहारा दिस ना आंयदा। पंचम तत्त ना दिसे
चन्ने, पंचम मीता पंच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग वटांयदा। आप आपणा
रंग वटाए, जोती नूर कराईआ। पुरख अबिनाश जोत जगाए, एका नाद तूर वजाईआ। वरन गोत कोई दिस ना आए,
ना कोई नाता दिसे मात पित भैण भाईआ। आदि अन्त जुगा जुगन्त हाज़र हज़ूरा आप अख्वाए, भेद अभेद अख्वाईआ।
पूरन भगवन्त सन्त कन्त जीव जन्त मेल मिलाए, एका पल्ला नाम फड़ाईआ। शिव शंकर गणपति गणेश कोई भेव ना पाए,

ब्रह्मा चारे मुख चारे रसना रिहा ध्याईआ। आपे जाणे आपणा वेसा, पुरख अबिनाशी नर नरेशा, मूंड मुंडाए ना धारी केसा, सीस धड़ कोई दिस ना आईआ। आप आपणे विच प्रवेशा, ना कोई जाणे ब्रह्मा विष्न महेष गणेशा, चोटी चढ़ किसे दिस ना आईआ। आपे जाणे आपणा लेखा, लोआं पुरीआं भरम भुलेखा, चित्रगुप्त राए धर्म दोवें बैठे सीस झुकाईआ। सृष्ट सबाई जोत निरँजण एका नेत्र साचे पेखा, आप आपणा भेव छुपाईआ। आप उपाए आपणी रेखा, अन्तिम दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत नूर कराईआ। नूर उजाला सच घर, ना कोई चार दिवारी। गुर गोपाला इक्क कर, ना कोई लिखे लेख लिखारी। आपे मंगे आपे देवणहारा वर, करे खेल अपर अपारी। शब्द खुल्हाए साचा दर, हरि दाता वड भण्डारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे रंग रवे मुरारी। हरि जोती निरँकार, नाउँ धराया। साचा नूर अपर अपार, दिस किसे ना आया। आपे बन्हे आपणी धार, जोती वर इक्क रखाया। आपे पुरख आपे नार, सुरती शब्द गोद उठाया। एका खोल्हे बन्द किवाड़, पंचम धाड़ दिस ना आया। पंचम अन्दर रिहा वाड़, पंचम एका हुक्म सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पवण पवणी लए उपाया। हरि जोती नूर अगम्म, शब्द सपूत जंम्मया। प्रभ चाढ़े साचा रंग, नाम रंगे चारे कन्नीआं। निरगुण डोरी इक्क पतंग, मस्तक टिक्का कौस्तक मणीआ। ना कोई काया दीसे काची वंग, नाम खजाना वड धन धनया। नाद अनादी वज्जे मृदंग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका राग सुणाए कन्नया। नाम अगम्म अगाध बोध, हरि शब्दी शब्द जणाई। देवे वर जोधन जोध, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याई। दर दुआरा आपणा सोध, नूरो नूर कराई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मेला शब्द वर, पवण पवणी नाल रलाई। जोती शब्दी पवण प्यार, एका रंग समाया। आपे बन्हे आपणी धार, भेव ना जाणे कोई राया। चौथे दर खोल्हे बन्द किवाड़, त्रैगुण माया तत्त उपाया। लक्ख चुरासी कर त्यार, ब्रह्मा रूप वटाया। कँवल नाभी कर उज्यार, पूत सपूता मात टिकाया। चारे मुख जगत उपाया। अट्ठे नेत्र राह तकाया। पुरख अबिनाशी करे ख़बरदार, साचा लेखा रिहा लिखाया। विष्नूं वंसी कर अकार, आप आपणा भेख वटाया। शिव शंकर नाल कर त्यार, आप आपणी सेवा लाया। आपे वसे सभ तों बाहर, अन्दर भीतर विच समाया। आपे गुप्त आपे जाहिर, वेस अनेकां वेस वटाया। शब्द घोड़ा कर त्यार, कल्गी तोड़ा नाम लगाया। जोत सरूपी कर आकार, शब्द सरूपी हुक्म सुणाया। ब्रह्मा मुख लए उग्घाड़, पारब्रह्म विच समाया। चारे वेद रसन उचार, चारे जुगां लेख लिखाया। सतिजुग द्वापर त्रेता गए हार, कलिजुग वेला अन्तिम आया। लक्ख चुरासी होए ख्वार, लोकमात ना धीर धराया। ना कोई दिसे मीत

मुरार, मात पित ना कोई अख्वाया। नार दुहागण होई विभचार, साचा कन्त सन्त ना किसे हंढाया। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, जीवां जन्तां दए सज़ाया। शब्द खण्डा फड़ दो धार, चिट्टे अस्व तंग कसाया। नीली छत्तों आए बाहर, आप आपणा राह तकाया। लोआं पुरीआं करे ख़बरदार, कलिजुग वेला अन्तिम आया। ब्रह्मा रोवे धाहां मार, वेला अन्त ना कोए सहाया। शिव शंकर बैठा करे विचार, धीरज धीर ना कोए धराया। करोड़ तेतीसा सुण पुकार, सुरपति राजा इन्द बिल्लाया। गगन पताली हाहाकार, रवि ससि बैठे मुख छुपाया। लोकमात मार झात, कर्म कुकर्म कर विचार, पुरख अबिनाशी जामा पाया। जन भगतां देवे साची दात, सोहँ साचा नाउँ जपाया। कलिजुग मिटे अन्धेरी रात, एका दूजा भउ चुकाया। आप चलाए आपणी गाथ, मात चलाए। प्रगट होए त्रैलोकी नाथ, सगला साथ दए निभाया। लेख चुकाए सीआं साढे तिन्न हाथ, जो जन सरन सरनाई साची आया। सगल वसूरे जायण लाथ, पारब्रह्म ब्रह्म दर्शन पाया। होए जणाई बोध अगाध, कथनी कथ ना सके राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त जुगा जुगन्त आपणे रंग समाया। हरि रंग अपार, रूप अभेदया। सतिजुग साचे बन्ने धार, भेव ना पायण चारे वेदया। सृष्ट सबाई एका बन्ने धार, एका नाता भईआ बेब्या। ऊँचां नीचां कर प्यार, मेट मिटाए देवी देवया। भाण्डा भरम भउ निवार, हरिजन लगाए साची सेवया। जोती नूर शब्द भण्डार, मस्तक लाए साचा थेवया। देवणहार सर्ब संसार, ना कोई गाए जिह्वा जिह्वया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर चेला वेखे इक्क द्वार, हरि जोती शब्दी सेवया। हरि जोती साचा पिता है, पूत शब्द गोबिन्द। जुग जुग साची मईआ है, नूर नुरानी एका बिन्द। आपे बणे साचा मिता है, धार वहाए साची सिन्ध। ना कोई जाणे वार थित है, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आपे आप वड मृगिन्द। गुर गोबिन्दे शब्द जणाई, जोती दया कमाईआ। घर मन्दिर अन्दर वज्जी वधाई, पंचम मंगल गाईआ। दीपक जोत करे रुशनाई, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाईआ। साचे मन्दिर आपे कुण्डा लाही, सच महल्ला रिहा वखाईआ। शब्द डण्डा हथ्थ उठाई, चार कुन्टां आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, शब्द करे सच्ची कुड़माईआ।

३ ०६

✲ पहली सावण २०१३ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल तों राष्ट्रपती राजिन्दर प्रशाद नूं शब्द भेज्जया ✲

राष्ट्रपति मिले वधाई, नौ खण्ड पृथ्वी गेड़ा। गुर गोबिन्दे जोत जगाई, सम्बल नगरी काया खेड़ा। वाली हिन्दे शब्द जणाई, प्रभ बन्नूण आया बेड़ा। वड मृगिन्दे जोत प्रगटाई, खुल्ल्हा कराए धरत मात वेहड़ा। चारों कुन्ट पए दुहाई, लक्ख

चुरासी चुक्के झेड़ा। गुरमुख विरले होए शब्द कुड़माई, पुरख अबिनाशी नाम बन्ने सीस साचा सेहरा। राज राजाना शाह सुल्ताना तख्त ताज जुदाई, करे अन्तिम हक्क निबेड़ा। चार वरन बणाए नाता भैणा भाई, आपे बन्नणहारा बेड़ा। जोती जोत सरूप हरि, जोती नूर रिहा उपाई, कलिजुग वक्त ल्याए नेड़ा। सम्बल नगर मात उजागर, हरि हरि शब्द जोत वसाईआ। अमृत ताल सुहाया काया गागर, सच उछाल रिहा लगाईआ। दर द्वारे बणना इक्क शब्द सौदागर, काल महांकाल दर द्वारे आप रखाईआ। अस्सू तिन्न सुहाए बंक द्वार, भेखाधारी भेख अपार, दर दरवेशा दरस दिखाईआ। धारी केसा रूप अपार, जोत प्रवेशा हरि निरँकार, ब्रह्मा शिव गणेशा दर आए सीस रहे झुकाईआ। राज राजानां दर दरबानां शाह सुल्तानां कोई ना चले पेशा, शब्द खण्डा हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, सम्बल नगरी जोत धर, ब्रह्मण्डां खोज खुजाईआ। अस्सू तिन्न चित चितावनी, देवणहार भगवान। करे कराए पूर भावनी, जन मंगे दर द्वार। कलिजुग मिटे अन्तिम रैण अन्धेरी शामनी, हरि जोती नूर होए उज्यार। चण्डी चमके तेज़ दमक दामनी, ना कोई सुणे सुणाए पुकार। दुष्ट सँघारे जिउँ रामा रामणी, भगत भबीखण रहिणा ख़बरदार। ना कोई देवे धुरदरगाही सच्ची जामनी, जूठे झूठे मीत
४ मुरार। ना कोई मिटाए कलिजुग तृष्ना तामनी, काम क्रोध मोह लोभ तन हँकार। जोती जोत सरूप हरि, सम्बल नगर ४
०६ वेस कर, आए दर दिल्ली दरबार। दिल्ली दरबार शब्द सिँघासण, बीस बीसा इक्क रखाईआ। वेख वखाणे पृथ्वी आकाशन, ०६
जगत जगदीसा जोत जगाईआ। करोड़ तेतीसा दासी दासन, इन्दलोक रिहा कराईआ। ब्रह्मा शिव स्वास स्वासन, दिवस रैण रहे गाईआ। प्रगट होया शाहो शाबासन, निहकलंक नाउँ रखाईआ। साचे मण्डल पावे रासन, द्वार बंका दए सुहाईआ। ना कोई खाए मदिरा मासन, हरि शब्द मात जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, सम्बल नगरी वेस धर, पंचम मीता पंचम रिहा मोख दवाईआ। पंचम मुख पंचम ताज, हरि साची बणत बणांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां एका राज, राज राजाना आप अख्वांयदा। शब्द घोड़े पकड़े वाग, जोती जोड़े मेल मिलांयदा। साचे पौड़े चढ़या देस माझ, शब्द सिँघासण इक्क रखांयदा। लक्ख चुरासी रच्चया काज, नौ द्वारे खोल्ल वखांयदा। जन भगतां रक्खे अन्तिम लाज, दस्म द्वारी कुण्डा लांहयदा। जोत सरूपी मारे आवाज़, सुरत सवाणी सुत्ती आप जगांयदा। बीस इकीसा सिर सोहे ताज, भारत खण्ड तेरी रक्खे लाज, महिंमा अगणत ना कोई गिणांयदा। शब्द ताज जगत जगदीस, बणाए बणत बनवारी। सृष्ट सबाई जाए पीस, ना कोई दीसे जीव हँकारी। ना कोई गाए राग छतीस, वेद पुराण ना रसन उचारी। कुरान हदीस संग मुहम्मद तुटी यारी। हरि वेखे खेल बीस इकीस, प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारी। एका छत्र झुल्ले प्रभ साचे सीस, सृष्ट

सबाई होए चरन पनिहारी। जोती जोत सरूप हरि, सम्बल नगरी वेस कर, पंचम ताज मात बणाए, अस्सू तिन्न ल्याए बंक द्वारी। मुख पंचम ताज संग पंच कराउँणा सच निशान बणाया। आपे जाणे आपणा काज, जगत नादान भेव ना राया। साची साजण रिहा साज, सत रंग निशान उपाया। करे खेल देस माझ, बीस बीसा अवतार चौबीसा आया। जगत नाता तुट्टे सांझ, इक्क इकीसा दए दुहाया। जोती जोत सरूप हरि, सम्बल नगर वेस कर, दर द्वारे अग्गे खड़, अस्सू तिन्न देवे दिवस सुहाया। शब्द सोटी जगत सहार, प्रभ वाली हिन्द फड़ांयदा। करे कराए ख़बरदार, भेद अभेद चुकांयदा। सर्ब जीआं प्रभ सांझा यार, वेद कतेबां दिस ना आंयदा। भरमे भुल्ला भरम संसार, भरम गढ़ ना कोई तुड़ांयदा। माया मोह आत्म हँकार, उप्पर चढ़ महल्ल अटारी, अन्दर वड़ दरस कोई ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, सम्बल नगरी वेस कर, दर द्वारे अग्गे खड़, एका पल्ला नाम फड़ांयदा। पंचम जोड़ा चरन कँवल, चरन धूढ़ इशनान। शब्द घोड़ा उप्पर धवल, मिले मेल श्री भगवान। प्रभ उलटी करे नाभ कँवल, उपजे आत्म ब्रह्म ज्ञान। दरस दिखाए साँवल सँवल, काहन घनईआ कृष्ना काहन। सृष्ट सबाई आपे रिहा मवल, जोती शब्द मात निशान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, प्रगट होए वड जोद्धा सूर बली बलवान। अस्सू तिन्न जगत विहार, दर दिल्ली दरबारया। मिल्या वर भबीखण यार, प्रगट होए राम रामा अवतारया। लंका तुट्टा गढ़ हँकार, कंचन गढ़ महल्ल उसारया। द्वापर अन्तिम आई हार, दर्योध्न खाली होए द्वारया। कलिजुग अन्तिम वेख विचार, चारों कुन्ट अन्धेर पसारया। जगत स्यासत आई हार, ना कोई दिसे किसे विरासत, ना कोई मात सहारया। प्रगट होए निहकलंक नर अवतार, लक्ख चुरासी धरत मात तेरी वेखे काशत, सोलां सोलां सोलां बीस दो हज़ारया। आपे होए आस्तिक नास्तिक आपे वणज करे वपारया। आपे ब्रह्म जोत वेद प्रकाशत, आपे शब्द शस्त्र बणत बणा रिहा। आपे वास देव आत्म वास्तक, आपे विष्न रूप वटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, सम्बल नगर जोत धर, एका शब्द सुनेहड़ा दर द्वारे आप घला रिहा। अस्सू तिन्न साढे दस, जोती नूर सवाईआ। जगत शाह मिलणा हस्स हस्स, प्रभ देवे मात वड्याईआ। मुख छुपा जे जाएं नस्स, ना होए कोई सहाईआ। सोहँ तीर वज्जे कस, तख्त ताज दए उलटाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां चरनां हेठ रिहा झस्स, लुकया रहिण कोई ना पाईआ। शाह शहाना साचा राह रिहा दस्स, निहकलंक चरन सरन सच्ची सरनाईआ। कलिजुग रैण अन्धेरी मिटे मस्स, सतिजुग साचा चन्न चढ़ाईआ। कोई ना चले किसे दा वस, जो घड़या भन्न सो वखाईआ। दूर दुराडे तक्कण रवि ससि, प्रभ जोती नूर सवाईआ। सम्मत सम्मती होए बस, लहिणा देणा मूल चुकाईआ। अगम्म अगम्मा आए नस्स, लोकमाती मार झाती, गुरमुखां देवे लहिणा देणा

बाकी, शब्द गहणा तन पहनाईआ। ना कोई जाणे बन्दा ख़ाकी, पुरख अबिनाशी शब्द घोड़े साचे चढ़या राकी, नाम तोड़ा जोती जोड़ा, साची कल्गी जगत जगदीश आपणे सीस टिकाईआ। कलिजुग वेले अन्तिम बौहड़ा, वेखे परखे मिट्ठा कौड़ा, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, वेद व्यासा गया लिखाईआ। सम्बल नगर साढे तिन्न हथ्थ लम्भा चौड़ा, उच्चा पर्बत उच्चा टिल्ला बजर कपाटी लाए सिल्ला, अन्दर मन्दिर बन्द कराईआ। कलिजुग अन्तिम कटया शिला, वेखे खेल शब्द घोड़ा नीला, वाग आपणे हथ्थ रखाईआ। राज राजाना शाह सुल्ताना करना आपणा हीला, दर द्वारे आए जोत सरूपी छैल छबीला, सम्मत तेरां तेरी रुत्त सुहाईआ। तन बस्त्र पाए चोला पीला, रंग बसन्ती इक्क चढ़ाईआ। राज मन्त्री वेखे जगत कबीला, पंडत नेहरू नाल रलाईआ। मौलाना आजाद प्रभ वेखे दाद, नूर अलाही कवण झोली पाईआ। देस प्रदेसां सुणे फरयाद, शब्द प्रमुख राज द्वारे आईआ। धरतमात तेरी सुफल कराए कुक्ख, जन भगतां लए उठाईआ। गऊ ग़रीब निमाणयां आत्म कटे दुःख, राज राजानां शाह सुल्तानां ऊँचां नीचां एका थाँ बहाईआ। जगत तृष्ना मेटे भुक्ख, गोपी काहना कृष्ना रूप अनूपा, सति सरूपा भेखाधारी भेख वटाईआ। बिरला सेठ वेखे कवण द्वारे धुक्खे धूपा, कवण हवन कराईआ। अन्तिम लहिणा देणा चुकणा महीना जेठा, हाढ़ सतारां वाहो दाहीआ। भरे रहिण जगत भण्डारा, खाणा पीणा हथ्थ ना आईआ। जो जन होए भिखारा चरन दुआरा, प्रभ रक्खे गोद उठाईआ। अस्सू तिन्न रक्खणा याद दिवस दिहाड़ा, सम्मत तेरां दिल्ली दरबार, नर निरँकार आवे जावे फेरा पाईआ। राष्ट्रपति जुगां जुगां दा विछिड़या यार, जुग त्रेता याद कराईआ। लहिणा देणा करज उतार, अन्तिम आपणा मेल मिलाईआ। भाणा सहिणा विच संसार, नेत्र नैणा दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्बल नगरी वेख घर, घर साचे बैठा आसण लाईआ। घर मन्दिर साचा मीत, बैठा आसण लाईआ। इक्क सुणाए सुहागी गीत, राग अनादा भेव ना राईआ। चरन कँवल जन राखो चीत, ब्रह्म ब्रह्मादा पारब्रह्म मेल मिलाईआ। काया करे ठण्ढी सीत, आदि जुगादि विछड़ ना जाईआ। दरस दिखाए इक्क अतीत, वाद विवादा तन गंवाईआ। ना कोई जाणे हस्त कीट, आपणे रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां चरन कँवल बख्शे इक्क प्यार, साची रीत मात चलाईआ। आत्म सेजा सच घर, दिवस रैण वसेरा। सद खुल्ला रहे दर, चुक्के मेरा तेरा। धुर दरगाही मिले वर, लोकमात रैण वसेरा। ना जन्मे ना जाए मर, साचा मेला गुरु गुर चेला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाए सच घर, अट्ठे पहर एका हरि, ना सञ्झ सवेर ना दूसर रात। गुरमुख अन्दर मन्दिर वेख मार झात। मिले मेल परम परमात्म, शब्द देवे साची दात। आत्म झूटे जाति ज़ातम, मिले मेल कमलापात।

६
०६

ना कोई जाणे धर्म सनातन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दिवस रैण रक्खे सद प्रभात। दिवस रैण एका रंग, गुरचरन चित लाया। सतिगुर साचा होए संग, मीत मीता आप अख्वाया। चिट्टे अस्व कसे तंग, नाम पलाणा पाया। नौ द्वारे आपे लँघ, दसवें कुण्डा आपे लाहया। शब्द रंगीला वेख पलँघ, सोहँ डण्डा हरि टिकाया। आप रखाए आपणे अंग, पार कन्ढ्ढा ना किसे वखाया। पंच वजायण सच मृदंग, राग रागनी रहे अलाया। अमृत आत्म वगे गंग, सति सरोवर नीर वहाया। गुरमुख मंग साची मंग, आपे कटे भुक्ख नंग, जोती नूर हरि हज़ूर, आसा मनसा भगत पूर, तामस तृष्ना दए गंवाया। वसया घर हरि धन पाया, होई बुध बिबेका। चुक्कया डर तन मन वसाया, चरन ओट रखाया एका। हरि हरि भाणा रिहा जर, मस्तक लाए साची रेखा। साचा मार्ग रिहा वखाया, धुर दरगाही एका वर, आप चुकाए अगला पिछला लेखा। शब्द घोड़े रिहा चढ़ाया। इक्क सुहाए बंक द्वार, लहिणा देणा मूल चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अंगी अंग एका नाम अनामी रिहा चढ़ाया।

हरि जोत सरूप समाया, शब्दी शब्द प्रतक्ख। वड शाहो भूप दिस किसे ना आया, सन्त सुहेले करे वक्ख। अन्धकूप चारों कुंट अन्धेरया, नर नरायण किसे हथ्थ ना आया, माया ममता करोड़ी लक्ख। नेत्र लोचन नैण दरस किसे ना पाया, जगत वसूरा ना गया लथ्थ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख रुल्ला शब्द चढ़ाए साचे रथ। शब्द रथ हरि दातार, कलिजुग मात चलाया। सर्बकला समरथ सिरजणहार, इक्क इकांत रूप समाया। आपे रक्खे दे कर हथ्थ, गुरमुख साचे पिता पूत गोद उठाया। मस्तक लहिणा वेखे मथ्था, शब्द सूत साचा तन्द बणाया। प्रगट होए त्रैलोकी नाथ, नाथ अनाथां दया कमाया। जगत सुणाए साची गाथ, शब्द संदेशा इक्क सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण साचा मीत, आप आपणे रंग रंगाया। रंग गुलाला रंगे चोली, तन बस्त्र आप रंगाया। हरिजन उठाए साची डोली, अस्त्र बस्त्र साचा शब्द तन पहनाया। पंच आत्म बोले हौली हौली, दिवस रैण रैण दिवस एका धार वहाया। अन्दर मन्दिर पर्दे खोल्ही, डूँघी कन्दर दीपक जोत जगाया। जगत माया जगत विचोली, भगतां दर दर गाया। नौ द्वारे होई गोली, दसवें मुख छुपाया। शब्द शब्दी लेखने जोती, रंग बसन्ती इक्क चढ़ाया। पूरे तोल आपे तोली, दसवें दिस ना आया। जगत भिच्छया पाए झोली, हरि जन जन हरि चरन द्वारे गोली, सगली चिन्त मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निन्दक दुष्ट दुराचार दोए लए तराया। दर घर हरि निरँकार, दर दरवाज़ा दिस ना आया।

शब्द सिँघासण अपर अपार, ग़रीब निवाज़ा आसण लाया। जोती नूर कर आकार, सुरत सवाणी साजन साजा, आप आपणा विच वसाया। शब्द जणाई सच्चे निरँकार, अनहद राग वज्जे वधाई, पंचम पंचां संग मिलाया। गुरमुख साचा संगी साथी, साचा मेल कराया। अन्दर मन्दिर रिहा सुणाई। सच मृदंगा हरि हरि रंगा अन्त तरंगा आत्मक धुन रिहा उपजाई। वड दाता सूरा सरबंगा, चरन धूढ़ आत्म अन्दर इशनान गंगा, दुरमति मैल रिहा गंवाई। गुरसिख तृष्ना चरन प्यास भुक्खा नंगा, अमृत आत्म मेघ रिहा मुख चुआई। आपे जाणे आपणा संगा, पंच विकारा तोड़े काची वंगा, शब्द श्रृंगार तन कराई। आत्म अन्तर होए अनन्दा, जोग जुगत रंग रखंदा, सोहँ ढोला रसना गाई। जोग जुगत हरि आप बख्शिंदा, हरिजन उपजाए साची बिन्दा, जगत मिटाए झूठी चिन्दा, अमृत आत्म धार वहाए सागर सिन्धा, नीर सीर मुख चुआई। जोती जोत सरूप हरि, वड दाता गुणी गहिंदा, तन पहनाए बस्त्र चीर, हउमे कढ्ढे विच्चों पीड़, साचा मार्ग इक्क रखाई। साच मार्ग जगत मलाह, धुर दरगाह रखाया। धर्म राए पाए फाह, लक्ख चुरासी फंद कटाया। प्रभ मिलण दा साचा लाह, मानस देही लेखे लाया। हँस बणाए फड़ फड़ काँ, जुग जुग विछड़े मेल मिलाया। दरस दिखाए सभनी थाँ, आप आपणा रूप वटाया। आपे पिता आपे माँ, गुरमुख साचा बाल अञ्जाणा, आप आपणी गोद उठाया। दो जहानी देवे ठंडी छाँ, अगाध बोध शब्द जणाया। सोहँ सो साचा नाँ, सतिजुग साचा मार्ग लाया। चार वरन रखाए फड़ फड़ बांह, ऊँचां नीचां भेव मिटाया। पुरख अबिनाशी अगम्म अथाह, राज राजाना शाह सुल्तान रिहा जणाया। ढाहे वसाए बेपरवाह, भेव अभेदा अन्त कलि वेद कतेबां सार ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां सिर हथ्थ टिकाया।

८
०६

✻ १७ सावण २०१३ बिक्रमी करतार सिँघ दे गृह तरन तारन ज़िला अमृतसर ✻

शब्द सिँघासण इक्क आकाशी, प्रभ अबिनासी डेरा लाया। जन भगतां बख्शे अमृत बूंद स्वांती, इन्द इन्द्रासण सेवा लाया। देवे दरस बहु बहु भांती, भेव अभेदा भेव ना राया। हरिजन आत्म करे रासी, चार वेदां दिस ना आया। धुर दरगाही एका दाती, आत्म झोली शब्द भराया। आपे पिता आपे माती, आप आपणी गोद उठाया। मेट मिटाए अन्धेरी राती, दीपक जोती चन्द चढ़ाया। निर्मल दीवा जगे बाती, हर घट वासी रिहा जगाया। आत्म अन्दर वेखे ताकी, बन्द किवाड़ा आप कराया। अन्तिम लहिणा देणा देवे बाकी, सिँघ बग्गा हिसाब मुकाया। ना कोई जाणे बन्दा खाकी, साध सन्त सार ना राया। आपे चढ़या चिट्टे अस्व साचे राकी, लोआं पुरीआं वेख वखाया। बग्गा रक्खे चाल बांकी, अट्ठे पहर हरि रघुराया।

आप लिखाए भविख्त बाकी, कलिजुग मिटे अन्धेरी राती, ना कोई सके मेट मिटाया। अन्तिम ढहि ढहि ढेरी होए ख़ाकी, सम्मत सम्मती नेड़े आया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे सन्त जनां एका मार्ग रिहा बताया। हरि पुरख अथाह बेपरवाहीआ। सन्त बणाए जगत मलाह, वेख वखाणे थाउँ थाँईंआ। इक्क जपाए आपणा नाँ, नौ द्वारे बन्द कराईआ। शब्द सुहेला देवे ठण्ढी छाँ, आत्म तृष्ना अग्न मिटाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा भेख वटाईआ। हरि दुलारा सन्त, सन्त उपन्नया। हरि बख्शे चरन प्यार, भरम भुलेखा कढ्ढे जनया। अमृत आत्म ठण्ढी धार, काया मन्दिर आपे बन्न्हया। जोती नूर अपर अपार, दर द्वारे एका चन्नया। हरि शब्दी शब्द भण्डार, ना कोई लाए डन्नया। गुरमुख विरला करे वणज वपार, हथ्थ आवे ना जीव अन्नयां। जुग जुग मेल मिलाए विछड़े यार, किला गढ़ हँकारी भन्नया। प्रगट होए नर हरि सच्ची सरकार, लक्ख चुरासी बेड़ा बन्न्हया। कलिजुग अन्तिम वेख विचार, लोआं पुरीआं देवे डन्नया। ब्रह्मा ब्रह्म करे विचार, अन्तिम भाणा एका मन्नया। शिव शंकर हाहाकार, लग्गी बसन्तर एका तनया। करोड़ तेतीस करे निमस्कार, सुरपति राजा इन्द जावे डन्नया। रवि ससि धुँदूकार, जो घड़या सो अन्तिम भन्नया। लक्ख चुरासी उतरे पार, नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां देवे डन्नया। गुरमुख विरला उतरे पार, जिस भाणा हरि हरि मन्नया। देवे दरस अगम्म अपार, एका राग सुणाए कन्नया। खोल्ह्रे आत्म बन्द किवाड़, साचा घर इक्क वखाए दया कमाए ना कोई छप्पर छन्नया। ना कोई दीसे चार दिवार, ना कोई सांझा मीत मुरार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा बेड़ा आपे बन्न्हया। हरि सन्त दुलारा सुत, मात उपाया। कलिजुग सुहाई रुत्त, काया खेड़ा इक्क वसाया। मिल्या मेल पुरख अबिनाशी अचुत्त, पंचां झेड़ा आप मुकाया। अमृत आत्म पीणा घुट्ट, खुल्ल्हा वेहड़ा इक्क रखाया। आवण जावण गया छुट्ट, साचे पौड़े शब्द चढ़ाया। नाम खज़ाना ल्या लुट, आत्म पल्लू अग्गे डाहया। पंच विकारा जड़्ह पुट्ट, सच दुआरा इक्क वसाया। मनमुख जीवां कढ्ढे कुट्ट, हरि हरि साचा खेल रचाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जुग जुग आपणा भेख वटाया। हरि सन्त प्यारा मीत, साचा सज्जणा। आप चलाए साची रीत, आपे होए पड़दा कज्जणा। काया देहुरा गुरुदुआरा मन्दिर मसीत, गुरमुख साचे हरि हरि सजना। इक्क सुणाए अनादी गीत, राग अनादा एका वज्जणा। दिवस रैण परखे नीत, मदिरा मास रसना तजना। चरन कँवल उप्पर धवल साची प्रीत, चरन धूढ़ी साचा मजना। काया करे ठंडी सीत, वेले अन्तिम रक्खे लजना। आपे हस्त आपे कीट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वसया काया घर आपे चोला तजना। आत्म सज्जण साचा मीतड़ा, प्रभ साचा मात बणांयदा।

काया चोली रंगे चीथड़ा, एका रंगण नाम चढ़ांयदा। मेल मिलावा हरि हरि साचे मीतड़ा, हरि संजोगी मेल मिलांयदा। पंचम तत्त कौड़ा रीठड़ा, आपणी हथ्थीं भन्न वखांयदा। निज घर निज आत्म निज पति पतिवन्ता डीठड़ा, निज आसण आप सुहांयदा। एका एक सुणाए सुहागी गीतड़ा, साचा मंगल राग अल्ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त अन्त कन्त पिता पूत सुत भगवन्त, भगवान मेल मिलांयदा। हरि धाम अपार आप उपाया। जोती जोत कर आकार, प्रकाश प्रकाश सवाया। चारों कुन्ट एका धार, वड दाता आप वहाया। अन्दर बाहर गुप्त जाहर, आप आपणा रूप वटाया। आपे पुरख आपे नार, आपे पिता पूत अख्वाया। आपे जननी जण संसार, आपे आपणी गोद उठाया। आपे आपणा कर अधार, आप आपणे बल जिवाया। आपे जाणे आपणी कार, आप आपणे धन्दे लाया। साची चोली हरि करतार, एका एक आप सुहाया। आपे बैठ सच्ची सरकार, आप आपणा मता पकाया। ना कोई दीसे मीत मुरार, भैणा भाई ना कोई अख्वाया। बस्त्र शस्त्र ना कोई कटार, तीर तलवार ना कोई रखाया। जल थल ना कोई पहाड़, उच्चा पर्बत दिस ना आया। जंगल जूह ना कोई उजाड़, नगर खेड़ा ना बणत बणाया। ना कोई दीसे पंचम धाड़, पंचम तत्त ना कोई उपाया। पंझी प्रकृती ना लाड़ी लाड़, अट्ठां अट्ठां वक्ख रखाया। ना कोई दीसे नौ द्वार, पैर हथ्थ ना मुख रखाया। ना कोई दिसे धुँदूकार, सूरज चन्द ना कोई चढ़ाया। ना कोई दीप लोअ पताल, धरत धवल ना कोई सहाया। ना कोई काल ना महांकाल, जगत जंजाल ना कोई रखाया। ना कोई तीर्थ ना कोई ताल, ना कोई शब्द ताल वजाया। ना कोई पवण पाणी मसान, ना कोई अग्नी हवन कराया। ना कोई खाणी बाणी वेद पुराण, अञ्जील कुरान ना कोई गाया। ना कोई वेखे मार ध्यान, पुरख अगम्मा कवण कूटे डेरा लाया। ना कोई चतर सुघड़ स्याण, ज्ञानी ध्यानी ना कोए रखाया। ना कोई वेद कतेब सुजान, काया माटी ना हट्ट विकाया। ना कोई मक्का काअबा दो दो आबा पीण खाण, पीर पैगम्बर ना कोई रखाया। गुरदुआरा मन्दिर ना दीसे कोई कँवल नाभा, अमृत आत्म ना मुख चुआया। ना कोई पुन्न ना सवाबा, ना कोई देवे अन्त अजाबा, ना कोई शाह ना नवाबा, राज राजाना कोई दिस ना आया। ना कोई घोड़ा जोड़ा चरन रकाबा, शाह सुल्तान ना नज़री आया। ना कोई महीना जेठ ना मजन माघा, साध सन्त ना नज़री आया। पुरख अबिनाशी घट घट वासी, आपणे घर आपे वड़े भागा, दूसर कोए ना संग रलाया। आपे सुरत सवाणी आपे कन्त भतार सुहागा, आप आपणी सेज हंढाया। आपे सोया आपे जागा, आप आपणा वेख वखाया। आप आपणी हथ्थीं बन्ने तागा, आप आपणा सगन मनाया। आपे मिल मिल गाए रागा, आप आपणा गीत अल्ाया। आपे हँस आपे कागा, आपे पंखी पंछी सरवर आप आपणा रूप वटाया। आप आपणी

सरनी लागा, आप आपणा नाउँ रखाया। आप आपणी पकड़े वागा, डोरी आपणे हथ्थ रखाया। आपे बाशक सेज माणे
नागा, सागों पांग सेज हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसे घर, सद आपणा थाँ सुहाया। हरि सुहाए थाँ
अगम्म अगोचरा, नज़र किसे ना आया। सृष्ट सबाई करे सोच, सन्त साध चढ़ चढ़ थक्के भेव किसे ना पाया। प्रभ दर्शन
को सृष्ट सबाई रही लोच, विरले गुरमुख पाया। घर घर बैठे सारे कहिण, अग्गे हो ना कोए अलाया। खब्बे खड़ी मौत
लाड़ी डैण, सज्जे काल रिहा डराया। माया ममता रुढ़े झूठे वहिण, गुर पूरा अन्तिम लैण ना आया। जगत नाता झूठा
बणाया भाई भैण, संगत तेरा लहिणा देण किसे ना मूल चुकाया। बिन गुर पूरे नौ द्वारे सारे रहिण, दसवां घर ना किसे
वखाया। ना कोई साक सज्जण सैण, प्रभ लेखा आपणे हथ्थ रखाया। जन भगतां चुकाए लहिण देण, देवणहार आप
अखवाया। शब्द पहनाए गहणा गहिण, तन बस्त्र इक्क रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे
वसे सच घर, साचा आपणा धाम सुहाया। सच सुहाए धाम, हरि बनवारीआ। जोती नूर रमईआ राम, हरि जोती कृष्न
मुरारीआ। आपे आप घनईआ शाम, भेखधारी भेख अपारीआ। आपे अमृत आत्म जाम, आपे भरया शब्द भण्डारीआ। आप
जपाए आपणा नाम, आपे देवे चरन प्यारीआ। आप मिटाए अन्धेरी शाम, दीपक जोत करे उज्यारीआ। अमृत आत्म प्याए
११ जाम, दिवस रैण रहे खुमारीआ। पंचां तत्तां करे एका ताम, तन लाहे दूई द्वैत बीमारीआ। लेखे लग्गे काया चाम, जो ११
०६ जन आए बंक द्वारीआ। अग्गे कोई ना लाए दाम, शब्द देवे जगत सहारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत ०६
धर, सति पुरख निरँजण सति सतिवादी आपे अन्दर आपे बाहरीआ। आप आपणा घर वसाया, चारे कुन्ट वखानीआ। दहि
दहि दिशा प्रभ डेरा लाया, सभ घट जाणी जाणीआ। सञ्झ सवेरा इक्क कराया, एका शब्द एका बाणीआ। सप्तम घर
उठ उठ धाया, छेवें वेखे गुण निधानीआ। जोती नारी दया कमाया, शब्द सुत प्रभ झोली पाया, छेवें अन्दर बन्द कराया,
अमृत देवे ठण्ढा पाणीआ। बत्ती दन्द ना कोई रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वेखे आपणा
घर, जोती शब्दी एका वर, साचा मेला हाणी हाणीआ। शब्द जोती इक्क सलाह, घर साचे मता पकाया। पुरख अबिनाशी
इक्क मलाह, गतमित ना कोए जणाया। ना कोई जाणे साचा राह, थिर घर दिस किसे ना आया। शब्द सिँघासण बैठा
बेपरवाह, जोती नूर सवाया। साचा आसण एका थाँ, लोकमाती दिस ना आया। आपे पकड़नहारा बांह, आप आपणी गोद
उठाया। दर द्वारे देवे ठंडी छाँ, सति शब्दी हुक्म जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दोहां वखाए
इक्क घर, सच मेला मेल मिलाया। जोती शब्द इक्क द्वार, घर साचे मेल मिलांयदा। आपे खोल्हे बन्द किवाड़, पंचम

कुण्डा लांहयदा। पवण स्वासी कर त्यार, शब्दी रूप चढ़ांयदा। तिन्नां मेला इक्क द्वार, पुरख अबिनाशी बणत बणांयदा। आपे जाणे आपणी धार, आप आपणी कर विचार, दूसर कोई भेव ना पांयदा। तिन्नां नाता इक्क प्यार, पवण जोती शब्द अधार, एका रूप समांयदा। निरगुण रूप अगम्म अपार, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वेखे चौथा घर, साचा मण्डल फोल फुलांयदा। चौथे घर साची रास, प्रभ आपणी आप पाईआ। ना कोई दीसे हड्ड नाड़ी मास, ना कोई अंडज जेरज उत्भज सेत्ज खाणीआ। ना कोई पृथ्वी ना आकाश, ना कोई राग नाद गाए कोई बाणीआ। ना कोई चले पवण स्वास, ना कोई मेले हाणी हाणीआ। ना कोई जंगल ना प्रभास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी करे आप पछाणीआ। चौथे घर खेल न्यारा, हरि साचा आप रचांयदा। दर घर साचे बैठ सच्ची सरकारा, आपणी बणत बणांयदा। नूर अगम्मी शब्दी धारा, पवणी देवे इक्क हुलारा, साचा झूला आप झुलांयदा। आपे वसया सभ तों बाहरा, आप आपणे विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे आपणा घर, महिंमा अगणत ना कोई गिणांयदा। अगणत ना गणया जाऐ, भेव ना भेवया। देव दंत ना जाणे राए, रसना कोए ना किसे सेवया। जीव जन्त फिरे हलकाए, गुरमुख विरले साचे सन्त मेल मिलाए, मस्तक लाए साचा थेवया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया तेरा तत्त, साची बणत बणाईआ। त्रैगुण माया तख्त रचाया, प्रभ साचे सेज विछाईआ। आप आपणा राज कमाया, राज दूत आप अख्वाईआ। लक्ख चुरासी काज रचाया, आप आपे लए उपाईआ। कँवल नाभी आवाज़ लगाया, अमृत मुख चुआया, ब्रह्मा ब्रह्म उपाईआ। साजन साज आप अख्वाया, ग़रीब निवाज हर हर थांया, आप आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे द्वार बंक, आप आपणे धाम सुहाईआ। सच दुआरा बंक, हरि सुहानया। ना कोई राउ ना कोई रंक, ना कोई राज शाह सुल्तानया। एका जोती नूर शब्द तनक, आप लगाए वाली दो जहानया। जोती भेखा बार अनक, अंक अनक करानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क वखाए दिसाए सच घर, जोती नूर श्री भगवानया। कवण घाट जन उतरे पार, कवण मलाह बणाईआ। कवण वखाए इक्क लिलाट, जोत निरँजण इक्क जगाईआ। कवण मार शब्द साट, ओंकारा रूप वटाईआ। कवण वखाए तीर्थ ताट, अमृत आत्म जाम प्याईआ। कवण पाड़े बजर कपाट, तीर निराला शब्द चलाईआ। कवण वणज कराए साचा हाट, साचा नाम झोली पाईआ। कवण दुरमति मैल देवे काट, काग हँस उडाईआ। कवण बहाए साची खाट, पावा चूल ना कोई रखाईआ। कवण रस हरिजन लए चाट, आत्म रस आपणा भेव छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, वेख वखाणे थाउँ थाँईंआ। कवण आत्म रस रस, कवण मुख चवीजे। कवण राग सुणाए हस्स हस्स, कवण नाद सुणीजे। कवण मेल मिलाए राह दस्स दस्स, सुरत शब्दी बीज बीजे। कवण प्रकाश कराए कोटन रवि ससि, कवण कारज कीजे। कवण पंज विकारा देवे झस्स, कवण पल्लू नाम फड़ाए खड़ दर दहिलाजे। कवण मेटे रैण अन्धेरी मस्स, तन मन आत्म एका सीजे। कवण शब्द जन करे वस, मन मन्दिर इक्क गवीजे। कवण नौ द्वारे करे वस, कवण दसवां दर खुल्हीजे। कवण देवे साचा वर, दरस दिखाए नैण तीजे। कवण चुकाए जम दा डर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका वेखे सच घर, कवण दुआरा हरि निरँकारा, शब्द भण्डारा सन्त दुआरा गुरमुखां करे साची रीझे। कवण अन्ध कवण अन्धेरा, कवण गुफा सुहाईआ। कवण पन्ध आवण जावण गेड़ा, कवण लक्ख चुरासी विच भवाईआ। कवण बन्नणहारा बेड़ा, कवण आपणे कंध उठाईआ। कवण वसाए काया नगर खेड़ा, पंचम झेड़ा दए चुकाईआ। कवण कराए काया खुल्ल्हा वेहड़ा, दूई द्वैती भरमां कंध रिहा हथ्थीं ढाहीआ। कवण करे हक्क नबेड़ा, कवण तोड़े जम की फाहीआ। कवण बन्ने सीस साचा सेहरा, कवण मस्तक तिलक लगाईआ। कवण पाए शब्द घेरा, साचा राह इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आपे वेखे सच घर, सन्त दुआरा इक्क वर, नारी नारा रूप वटाईआ। कवण राग कवण कन्न, कवण
१३ जन सुणांयदा। कवण माल कवण धन, कवण झोली पांयदा। कवण वसे छप्परी छन्न, कवण महल्ल अटल बणांयदा। कवण १३
०६ जोत जगाए तन, कवण रूप शाहो भूप भेखी भेख वटांयदा। कवण मन प्रभ देवे बन्न्ह, साचे मन्दिर ना लाए संन्ह, दर ०६
द्वार दुरकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, एका वेखे सच घर, सन्त दुआरा वसया घर, हरी हरि कवण मिलांयदा। कवण हरि कवण मिलावा, कवण संग रखाईआ। कवण घर कवण थाउँ, कवण गढ़ तुड़ाईआ। कवण पकड़े आपणे हथ्थीं बाहों, उप्पर चढ़ होए सहाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, सभ दे अन्दर बैठा वड़, दिवस रैण रिहा लड़, जीव जन्त भेव ना जाणे राईआ। जिस फड़ाए आपणा लड़, पौड़े पौड़े जाए चढ़, एका अक्खर जाए पढ़, साची धारा शब्द चलाए, दरस दिखाए अग्गे खड़्ह, जोत जगाए बहत्तर नड़, आप आपणा प्रकाश वखाईआ। मनमती जीव रहे सड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त दुआरा वेखे सच घर, कवण साजण मिल्या साज, सज्जण साची बणत बणाईआ। कवण राज कवण जोग, कवण शाह कवण सुल्तान। कवण रस आत्म भोग, कवण होए वस मेला धुर संजोग, कवण मीठा पीण खाण। कवण कटे हउमे रोग, देवे दरस इक्क अमोघ, शब्द चुगाए इक्क चोग, गुणवन्ता हरि गुण निधान। ना कोई हरख ना कोई सोग, आदि अन्त ना जगत वियोग, एका एक जन भगत टेक, साचा बख्शे चरन ध्यान। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन वेखे सच दर, कवण शब्द कवण बाणी कवण लाया आत्म बाण। कवण शब्द कवण सुरत, कवण मेल मिलांयदा। कवण अकाल कवण मूर्त, कवण नाद कवण तूरत, कवण रूप कवण सूरत, कवण आसा मनसा पूरत, कवण जोती मेल मिलांयदा। कवण नेड़े कवण दूरत, कवण सवण भवण अवण गवण कवण बैठा रिहा झूरत, कवण रोग सोग चिन्त मिटांयदा। कवण नाता दीसे कूड़त, कवण बिधाता बख्शे चरन धूढ़त, जुग जुग विछड़े मेल मिलांयदा। कवण मूर्ख कवण मूढ़त, कवण रंग चढ़ाए गूढ़त, कवण ज्ञान कवण ध्यान कवण इशनान कवण सर कवण अमृत आत्म ताल सुहांयदा। कवण घर कवण दर कवण देवे साचा वर, आदि अन्त चुक्के डर, ना जन्मे ना जाए मर, एका रंग समांयदा। कवण रूप कवण रंग, कवण शाहो भूप कवण साचा संग निभांयदा। कवण घोड़ा कवण जोड़ा कवण कसे तंग, कवण वजाए नाम मृदंग, कवण कूट कवण दिशा, कवण पाए साचा हिस्सा, कवण साची वंड वंडांयदा। कवण ईसा कवण मूसा, कवण गाए राग छत्तीसा, कवण अञ्जील कुरान हदीसा, कवण पद बीस बीसा, कवण घर सद लेख चुकाए दन्द बत्तीसा। कवण ब्रह्म कवण ब्रह्माद, कवण खेल इक्क इकीसा। कवण बंस कवण यद, दस्म द्वारी अद्ध विच हद्द, छत्र झुल्ले प्रभ साचे सीसा। लक्ख चुरासी जांदा लद्द, ना कोई मदिरा मदि, कलिजुग तेरी अन्तिम होई हद्द, ना कोई दीसे सूरबीर बलवान शाह सुल्तान ना कोई ऊँच नीच वड्डा छोटा दिसे कद्द, ना कोई दीसे मन्दिर मकान, एका शब्द एका धार, आप कराए वणज वपार, पुरख अबिनाशी जामा धार, निहकलंक नर अवतार लोआं पुरीआं पावे सार, ब्रह्मा रोवे धांहा मार, शिवद्वारे हाहाकार, करोड़ तत्तीसा इन्द करे पुकार, मातलोक प्रभ कराए जै जैकार, जन भगतां दर सुहाईआ। आपे जाणे आपणी कार, शब्द घोड़े हो अस्वार, बस्त्र भूशन लाल धार, लछमी वेखे दर द्वार, कंचन रूप निरँकार, नीली धारों आए बाहर, चिट्टा कर आकार सूहा वेस पसर पसार, पीला बस्त्र विच संसार, काला काली घटा अन्ध अंध्यार, कलिजुग रैण दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वेखे इक्क दर, कवण सन्त कवण कन्त कवण साचा मेल मिलाईआ। कवण राग कन्न सुणाए, कवण दरस दिखांयदा। कवण दाग़ कलि मिटाए, आप आपणा तरस कमांयदा। कवण दीपक जोती चिराग तन जगाए, आपणी दया कमांयदा। कवण वाग आपणे हथ्थ रखाए, कवण सिध्धे राहे पांयदा। कवण हँस दर काग बणाए, सोहँ मोती चोग चुगांयदा। चरन लाग जो जन भुल्ल बख्शाए, कन्त सुहाग इक्क हंढाए, आत्म साची सेज इक्क वखांयदा। वड वड भाग प्रभ दर्शन पाए, दुरमति मैल धोया झूठा दाग़, आप आपणी बणत बणाए, सरन सरनाई हरि रघुराए जो जन आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन वेखे साचा राह, कवण द्वारे उडे

काँ, कवण कागी काग सुहांयदा। कवण काग कागी रलया, कवण हँस हँसा। कवण सुहागी कन्त वरया, कवण माणी साची सेजा। कवण नीर जल अमृत पाणी भरया, कवण द्वारे वेखे नौ नौ नेजा। कवण रूप अगम्मा, जन वेखे एका दूजा। कवण द्वारे अग्गे खड़या, लहिण देण मुकाए जिउँ जन्मेजा। भेव ना जाणे लेहजा फेहजा। कवण महल्ला उप्पर चढ़या, कवण नूर हरि हज़ूर कवण वखाए तीजा। कवण द्वारे अग्गे खड़या, कवण शब्द सुनेहड़ा भेजा। कवण पल्लू मात फड़या, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे इक्क घर, शब्द सिँघासण विछी सेजा।

हरि अभेद अपार भेव ना राया। चारे वेद लिखार, मुख चारे रसना गाया। पुराण अठार कतेब अधार, वेद व्यासा गया जणाया। पृथ्वी आकाशा साची धार, साचा मार्ग इक्क रखाया। सर्ब भरवासा हरि निरँकार, आसा मनसा पूर कराया। काया कासा कर त्यार, साची वस्त इक्क टिकाया। नौ द्वारे खोल्ह द्वार, जगत ज्ञान रिहा दवाया। आपणा कर बन्द किवाड़, मोहण मुखड़ा रिहा छुपाया। त्रैगुण अग्नी तत्ती हाढ़, विष्ना रूप रही जणाया। ब्रह्मा उपाए पंजे लाड़, पंजां चोरां संग रलाया। शिव चबाए आपणी दाढ़, लहिणा देणा दए मुकाया। पुरख अबिनाशी घट घट वासी आपे वसे दर द्वारे हस्से जोत
१५
०६
नूर बहत्तर नाड़, आप आपणा रूप वखाया। सच द्वार शब्द अखाड़, राग रागनी आपणा ताल वजाया। आपे घड़या साचा घाड़, ताल तलवाड़ा अनहद रखाया। आपे पिच्छे आपे अगाड़, पंचम पंचां दए बहाया। दर द्वारे पंचम वाड़, साचा पौड़ा इक्क रखाया। आपे वेखे शब्द घोड़े चढ़ के साचा लाड़, पंचम नाता कवण नारी साचे कन्त रखाया। पंचम मीता आपे लए बाहों फड़, सुहागी गीता छंत सुणाया। निशअक्खर वक्खर रिहा पढ़, परा पसन्ती मधम बैखरी भेव ज़रा ना आया। सच महल्ले बैठा अड़, देवी देव ना कोए मिलाया। जिस जन फड़ाए आपणा लड़, दर दरवाज़ा दए खुल्हाया। किला तोड़ हँकारी गढ़, आप आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त दुलार, काया मन्दिर जोत अकार, दीपक नूरी इक्क जगाया। नूरी दीप सच उजाला, सच प्रकाश कराईआ। साचा मेला गुर गोपाला, पृथ्वी आकाश इक्क वखाईआ। गुर शब्द बणाया जगत दलाला, हरि रसना हरि गुण गाईआ। लहिणा देण चुकाए काल महांकाला, दीन दयाला दया कमाईआ। दरस दिखाए सच्ची धर्मसाला, तन मन्दिर इक्क सुहाईआ। मारे शब्द सच्ची उछाला, माणक मोती बाहर कढाईआ। चले चलाए अवल्लड़ी चाला, जुग जुग जोती नूर उपाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे सृष्ट सबाई भरम भुलेखे, लक्ख चुरासी भरमी भरम भुलाईआ। संग मुहम्मद चुक्के लेखे, चार यारी नेत्र पेखे, सच हदीस ना कोई

पढ़ाईआ। मेट मिटाए औलीए पीर शेख़े, अन्तिम लहिणा देणा मिटे काली धार कलिजुग वेखे, प्रभ साचा आप मिटाईआ। सम्मत उनीसा इक्क कराए, मूसा ईसा चरन छुहाए, मक्का मदीना काला सूसा तन छुहाईआ। सम्मत उन्नी चरन लगाए, चीना रूसा इक्क कराए, शब्द जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वेखे लोकमात हुन्दी जुदाईआ। लोकमात अन्त जुदाई, कलिजुग वहिण वहांयदा। लाड़ी मौत करे कुड़माई, लक्ख चुरासी बणत बणांयदा। धर्म राए दर इक्क्ठे धी जवाई, एका नाता जोड़ जुड़ांयदा। लेखा चुक्कणा भाई भाई, लुकया कोई रहिण ना पांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी वेखे थाउँ थाँईं, सत्तां दीपां वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख घर, करे खेल अगम्म अथाही। कलिजुग अन्तिम नाता गूढ़, होणी मात जुदाईआ। लक्ख चुरासी जाणा छोड़, घर साचे मिले वधाईआ। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़, धुरदरगाही आया दौड़, वेखे परखे मिट्ठा कौड़, शब्द हथौड़ा हथ्थ रखाईआ। सम्बल नगरी एका पौड़, साढे तिन्न हथ्थ रखाए साची डोर, आपे जाणे लम्भा चौड़, नौ द्वारे जगत डण्डा ब्रह्मण्डां भेव ना राईआ। कलिजुग तेरा अन्तिम कंडा, प्रभ मेट मिटाए भेख पखण्डा, गुर शब्दी जाणे साची वंडा, फड़े नाम कलि चण्ड प्रचण्डा, चारों कुन्ट खोज खुजाईआ। मनमुख जीवां वढ्ढे कंडां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, साची रचना रिहा रचाईआ। कलिजुग तेरा रच्चया काज, साचा वक्त सुहाया ए। लक्ख चुरासी पल्ले बन्ने दाज, माया ममता मोह विकारा संग रखाया ए। सम्बल नगरी वज्जे साज, अनहद रागी नाद अनादा इक्क वजाया ए। मातलोक अन्त जाणा त्याग, एका उपजे मन वैराग, जूठा झूठा नात तुड़ाया ए। चारे कुन्टां काला दाग़, मिल्या मेल ना कन्त सुहाग, साचा रंग प्रभ साचे संग लग्ग साचे अंग ना कोई मिटाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी वेखे गंग, कवण धारा रिहा वहाया ए। कलिजुग लहिणा देणा चुक्कणा बाकी, प्रभ साचा आप मुकांयदा। ना कोई जाणे बन्दा ख़ाकी, पाकी पाक आप अख्वांयदा। ना कोई मीत मुरारा साकी, अमृत जाम ना कोई पिलांयदा। ना कोई खोल्हे बन्द ताकी, ताकी ताक ना खोल्ह खुल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा वेख दर, दर दरवाज़ा बन्द करांयदा। दर दरवाज़ा बन्द किवाड़, प्रभ साचे आप करावणा। सम्मत बीस सतारां हाढ़, लहिणा देण चुकावणा। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क अखाड़, शब्द अखाड़ा मात लगावणा। जगत विकारा आत्म तृष्ना शक्ती भुगती जोती जुगती देवे साड़, साचा राह चलावणा। लेखा चुक्के पंचम धाड़, त्रैगुण तत्त देवे साड़, हड्ड मास नाड़ी ना उब्बल रत्त, पति पतिवन्ता पति रखावणा। शब्द चलाए एका रथ, जोत सरूपी हरि समरथ, लक्ख चुरासी पावे नत्थ, वाग आपणे

हथ्थ रखावणा। शब्द चलाए इक्क अकथ, सगल वसूरे जायण लथ्थ, लेखा चुक्के सीआं साढे तिन्न हथ्थ, जिस जन दर्शन पावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौ खण्ड पृथ्वी एका राज, शब्द सरूपी साचा ताज, पंचम मुख रखावणा। पंचम मुख साचा ताज, प्रभ साचे मात बणावणा। सृष्ट सबाई मेटे दुःख, पूर कराए आत्म भावना। सुफल कराए मात कुक्ख, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन रसना गावना। गर्भवास ना उलटा रुक्ख, लक्ख चुरासी फंद कटावणा। मानस देही मिले मनुख, आप आपणा दरस दिखावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत तेरां तेरी धार, सति सरूपी रूप वटावणा। सम्मत तेरां साची धार, गुरमुख शब्द जणाईआ। भरया रहे भण्डार, देवणहार आप अख्वाईआ। इक्क कराए वणज वपार, नाम वणजारा हरि रघुराईआ। जुग जुग जाणे आपणी कार, करन करावणहार आप अख्वाईआ। कलिजुग अन्तिम जामा धार, निहकलंका डंक वजाईआ। प्रगट होए विच संसार, राउ रंकां रिहा जगाईआ। शब्द खण्डा हथ्थ कटार, मारी जाए वाहो दाहीआ। जोद्धा सूरा हरि बलकार, शब्द शस्त्र तीर रखाईआ। चरन छुहाए दिल्ली दरबार, अस्सू तिन्न रुत्त सुहाईआ। राज राजानां करे ख़बरदार, वाली हिन्द आप उठाईआ। अन्तिम आउणा चरन द्वार, राज मन्त्री होए भिखार, बीस बीसा दए दुहाईआ। शब्दी जोती इक्क अधार, वरन गोती वसे बाहर,
१७ इक्क इकलौती नूर सवाईआ। टिक्का धोती ना सीस दस्तार, मुच्छ दाढ़ी ना केस कोई रखाईआ। आपे चढ़या साची चोटी, १७
०६ फड़ फड़ थक्के कोटन कोटी, साधां सन्तां हथ्थ ना आईआ। कलिजुग मंगे बोटी बोटी, लक्ख चुरासी नीती खोटी, साचा ०६
नाउँ ना कोई ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका मार्ग एका राह, शब्द सरूपी बण मलाह, नौ खण्ड पृथ्वी रिहा चलाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी एका राह, प्रभ साचे मात चलावणा। अस्सू तिन्न जणाए साचे शाह, वाली हिन्द उठावणा। देस प्रदेसां बेपरवाह, आपणा गीत गवावणा। वेख वखाणे सारे थाँ, नाउँ निरँकारा इक्क जपावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मुख एका ताज, धुर दरगाही एका राज, शब्द प्रमुख आपे आप बणावणा। शब्द प्रमुख हरि निरँकारा, साची बणत बणांयदा। जाए दर दिल्ली दरबारा, अस्सू तिन्न वक्त सुहांयदा। पंचम मुख ताज न्यारा, आपणे हथ्थ टिकांयदा। वाली हिन्द रहिणा ख़बरदारा, बीस बीसा वेख वखांयदा। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, सम्मत सोलां याद करांयदा। राज राजाना छड्डणा बंक दुआरा, भिच्छया कोए ना दर ते पांयदा। चारों कुन्ट हाहाकारा, साध सन्त ना कोई छुडांयदा। पंचम मारे तेज कटारा, शब्द शस्त्र दिस ना आंयदा। ना कोई करे ब्रह्म विचारा, जगत दूजा भरम भुलांयदा। जोत सरूपी हरि निरँकारा, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, सम्बल नगरी खेल अपारा, जोती

नूर करांयदा। गुर गोबिन्दा मीत मुरारा, सर्ब बख्शिंदा हरि गिरधारा, लक्ख चुरासी करे निन्दा भेव कोई ना पांयदा। कामी क्रोधी वज्जा जिंदा, घर साचे ना उपजे साची बिन्दा, मात कुक्ख ना सुफल कोई करांयदा। भाग लगाए भारत खण्डी साची हिन्दा, पंचम खण्डा लेख लिखांयदा। पुरख अबिनाशी वड मृगिन्दा, पीर पीरां अख्वांयदा। कलिजुग तेरी धार वहाए सागर सिन्धा, ना कोई मात अटकांयदा। भगत जनां सदा सद बख्शिंदा, आप आपणी गोद उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी बणत बणांयदा पंचम ताज पंच परवान, पंचम रूप वटाया। पंचम फड़ तीर कमान, पंचम घोड़े चढ़ बलवान, पंचम जोड़े मेल मिलाया। पंचम बौहड़े हरि सुल्तान, पंचम कौड़े विच जहान, पंचम पंचां भन्न वखाया। पंचम पौड़े काया मन्दिर सच मकान, पंचम गौड़े राग सुणाया। पंचम लग्गी औड़े आत्म ब्रह्म ध्यान, पंचम ब्रह्म ज्ञान वखाया। पंचम वखाए पंच निधान, सत्त निशाना संग रलाया। वेखे खेल श्री भगवान, गोपी काहना कृष्ना भेख वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरी साची सेवा, सेवक सेवा लाया। ठाकर सिँघ ठाकर अरदास, पैज संवारे तेरी। सति पुरख निरँजण वसे पास, कर कर आपणी मेहरी। शब्द उडान पृथ्वी आकाश, करे कराए ना लाए देरी। निज घर आत्म रक्खे वास, गुर पारब्रह्म गुरमुख साची चेरी। शब्द जणाई स्वास स्वास, काया मण्डल वेखे रास, भरमां ढाहे ढेरी। जोती

१८ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेवक सेवा लाए तेरी। पहली सेवा हरि भगवान, आपणी आप लाईआ। सवा १८

०६ पंझी करे दान, सत्त रंग निशान बणाईआ। दूजी भेंटा शब्द महान, सिँघ ठाकर आप कराईआ। सिँघ प्रीतम बणना नाल ०६

जवान, दस दसवां रिहा जगाईआ। गुरमुख तेरी वधदी शान, अठ्ठ अठारवां हिस्सा पाईआ। सिँघ पाल तेरी नाम दुकान, चलदी वाहो दाहीआ। सिँघ इन्द्र बख्शे चरन ध्यान, शब्द सहारा डण्डा हथ्थ फड़ाईआ। सिँघ बिशन तेरा रक्खे माण, कलिजुग अन्तिम कन्ढा नेड़े आईआ। पुरख अबिनाशी चतर सुजान, साची वंडा मात वंडाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी देवे दंडा, एका डण्डा हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम लेखा पंचम लेख, जोती जामा धर धर पेख, लहिणा देणा रिहा मूल चुकाईआ। आपणी सेवा आपे लाए, सर्ब जीआं जग दाता। गुरमुख साचे संग रलाए, आप पिता पित माता। काया चोली रंग चढ़ाए, बख्शे साची दाता। शब्द डोली विच बिठाए, ना कोई पुच्छे ज़ाता पाता। दर द्वारे गोली इक्क रखाए, एका इक्क इकांता। हौली हौली शब्द जणाए, अमृत बूंद प्याए स्वांता। आत्म गंढु आपणी हथ्थीं खोल्हे खोल्ह वखाए, मेल मिलाए कमलापाता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा लहिणा देणा, गुरमुखां पहनाए शब्द गहणा, साची बणत बणाता। पंचम ताज जगत जगदीश, एका इक्क सुहांयदा। छत्र झुल्ले प्रभ साचे

सीस, शाह शहाना आप अख्वांयदा। सृष्ट सबाई गाए दन्द बत्तीस, इक्क हदीस सुणांयदा। लहिणा देणा बीस इकीस, कलिजुग कलि मुकांयदा। वेख वखाणे राग छतीस, राग रागणी संग मिलांयदा। आपे जाणे कुरान हदीस, वेद पुराणा फोल फुलांयदा। प्रगट होवे अवतार चौबीस, नर नरायण आप अख्वांयदा। ना कोई धड़ ना कोई सीस, तन बस्त्र ना कोई सजांयदा। लक्ख चुरासी पीसण रिहा पीस, कलिजुग चक्की आपणी हथ्थीं आप चलांयदा। अन्तिम वेला विच उनीस, अल्ला राणी आप लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मौलाना आज़ाद वेखे आत्म स्वाद, नूर अलाही कवण द्वारे झोली पांयदा। मौलाना आज़ाद मौला आया, अस्सू आस रखाईआ। कँवल कौल इक्क कराया, संग मुहम्मद चार यार दए गवाहीआ। उप्पर धवल डेरा लाया, बस्त्र अस्त्र शस्त्र बस्त्र नील पहनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अस्सू तिन्न आए दर दिल्ली दरबार, भरम भुलेखा देवे मात कढाईआ। भगत भण्डार हरि अतोल, हरि रखाया। आपे तोले साचा तोल, तोलणहार सृष्ट सबाया। सच दुआरा एका खोल्ह, चार वरनां रिहा जणाया। शब्द दो अक्खर एका बोल, चौह अक्खर भेव मिटाया। आपे वसे सदा कोल, आप आपणा भेव छुपाया। नाम मृदंगा वजाए साचा ढोल, ताल आपणे हथ्थ रखाया। शब्द भण्डारा एका खोल्ह, जगत दुआरा बन्द कराया। प्रगट होया सोलां सोल, नाउँ निरँकारा आप अख्वाया। जन भगतां करे आत्म चोल्ह, साची बोली आप प्रनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचा नाम वणजारा, साचा वणज नाम कराया। नाम वस्त वणज सच्च, हरि दर साचे पावणी। देवणहारा दस्त दस्त, पूर कराए भावनी। अट्ठे पहर रहिणा मस्त, सुरत सुरती शब्द मिलावणी। तन पहनाए बस्त शसत, तिक्खी धारा आप रखावणी। आपे कीट आपे हस्त, आपे राम रामा रावण रावणी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां वखाए इक्क घर, शब्द भण्डार हरि निरँकार, वणज कराए जगत वपार, अन्तिम देवे धुरदरगाही साची जामनी। हरिसंगत हरि रंग माणया, आई चरन द्वार। प्रभ लेखे लाए बिरध बाल अञ्जाणयां, पार उतारे नारी नार। हउमे हँगता रोग निवारया, जगत सहिंसा दुःख निवार। दरस अमोघ इक्क वखा ल्या, आप सुहाए बंक द्वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत देवे इक्क वर, खाली भरे भण्डार। आत्म रोग चिन्त मिटाए, रोग सोग जन कट्ट। साचा सुख इक्क उपजाए, दूई द्वैती मेटे फट्ट। तृष्ना भुक्ख मात गंवाए, शब्द रखाए साचा हट्ट। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोहँ शब्द देवे साचा वर, तन पहनाए साचा पट। बिरध बाल नौजवान, दर आए आस रखाईआ। आपे बख्शे जीआं दान, जगत प्यास मिटाईआ। आवण जावण चुक्के कान, जो जन रसना साची गाण, ढोला सोहला इक्क सुणाईआ। शब्दी जोती मेला

विच जहान, काया चोली रंग रंगाईआ। मनमुख जीव आपणा कीता आपे पाण, अन्तिम मिटे जगत निशान, धूआँधार सृष्ट सबाईआ। गुरमुख साचे कर पछान, आपे होए निगाहबान, पहरेदार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे इक्क वर, दर द्वारे आईआ। आत्म तृष्न बुझाई, शब्द दात प्रभ झोली पाई, मिले मात वड्याईआ। बालक सीर रसन मुख। दरस लोचन नैण, जगत वसूरा उतरे दुःख। रसना सके ना कहिण, पिता पूत घर साचा सुख। आप चुकाए लहिण देण, जोती जोत सरूप हरि, दर द्वारे देवे इक्क वर, चरन धूढ़ जो जन नहाता साचे सर, उज्जल करे मात मुख।

✻ १७ सावण २०१३ बिक्रमी डाकटर तेजा सिँघ दे गृह तरन तारन ज़िला अमृतसर ✻

घर शब्द अपार, घर जणाईआ। घर रंग अपार, रंग महल्ल इक्क टिकाईआ। घर संग गिरधार, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आपे वसे आत्म घर, दर दरवाज़ा इक्क रखाईआ। दर दरवाज़ा इक्क दर, चारे मुख खुल्हांयदा। आपे बैठा अन्दर वड़, दिस किसे ना आंयदा। शब्द सिँघासण साची खाट, साची सेज विछांयदा। जोत प्रकाश एका कर, दीपक जोत जगांयदा। रवि ससि हेठां जड़, उप्पर चरन छुहांयदा। मण्डल रासी घाड़न घड़, आकाश आकाश भेव ना पांयदा। सच महल्ले आपे खड़, गुरमुख साचे मात जगांयदा। आपे लाए आपणी जड़, सीस धड़ ना कोए रखांयदा। पंचां वज्जे साचा तड़, ताल तलवाड़ा इक्क रखांयदा। किला कोट हँकारी गढ़, गढ़ कंचन इक्क वखांयदा। डूँघी भवरे आपे वड़, सर सरोवर वेख वखांयदा। काया कवरी रिहा सड़, जीव अञ्जाणा भेव ना पांयदा। गुर शब्द अक्खर एका पढ़, चरन ध्यान मात रखांयदा। नेतन नेता बाहों फड़, साचा आपणा आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा संग निभांयदा। साचा संग सगला साथी, सतिगुर सृष्ट सबाईआ। लहिणा देणा लोकमात माती, कमलापाती आप चुकाईआ। हरिजन तेरी उत्तम जाति, अमृत मिली बूंद स्वांती, धारी धार आप वहाईआ। वणज वणजारा साची हाटी, जोत निरँजण इक्क लिलाटी, औखी घाटी आप चढ़ाईआ। वेख वखाणे काया माटी, बजर कपाटी जिस जन पाटी, तीर्थ ताटी तट्ट किनारा इक्क वखाईआ। नौ द्वारे खेल बाजीगर नाटी, नट नटूआ स्वांग वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सुहेला सतिगुर मीता, वेख वखाणे इक्क अतीता, पतित पुनीता कवण अख्वाईआ। सन्त सतिगुर सच घर, सच शब्द प्रनाईआ। पुरख अबिनाशी एका वर, एका नारी कन्त सुहाईआ। आपे होए धरनी धर, दर दरवाज़ा

इक्क खुल्ह़ाईआ। इक्क नुहाए साचे सर, सर सरोवर चरन रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आत्म अन्तर खोज खुजाईआ। आत्म अन्तर खोज खोजीना, निज घर आत्म वसया। आपे होए दाना बीना, आपे दर तों जाए नस्सया। आपे होए भिन्नड़ा भीन्ना, आपे आप दूर दुराडा वसया। आपे करे ठंडा सीना, आपे दूई द्वैती तीर कसया। आपे दाना आपे बीना, आपे मरना आपे जीणा, आपे रोवे आपे बहि बहि हस्सया। आपे दाणा पाणी खाणा पीणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका वेखे सच घर सच द्वारे कौण वसया। कवण दुआरा सच, सच वणजारया। काया माटी भाण्डा कच्च, अन्तिम भन्ने भन्न्ह़णहारया। नौ द्वारे जो जन रिहा नच्च, सुणे सुणाए ना हरि पुकारया। गुर शब्द जणाए साचो सच, चरन कँवल इक्क प्यारया। तृष्ना अग्नी जाए मच्च, काम क्रोध लोभ मोह जाए हंकारया। हरि नाउँ अन्दर जाए पच, काया हरी होए क्यारया। नाड़ बहत्तर जाए रच, देवे दरस अगम्म अपारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाए सच घर, कवण वणज करे वपारया। कवण वणज नाम वापार, कवण लाहा खट्टया। कवण मिल्या शब्द अधार, कवण जोती जगे लट लटयां। कवण दीपक होए उज्यार, सच तत्त काया मट्टया। कवण गोती ख़बरदार, कवण किनारा तीर्थ तट्टया। कवण सोटी शब्द अधार, कवण अमृत आत्म रस साचा चट्टया। कवण जोती विच संसार, चढ़ चढ़ वेखे औखी घाटीआ। गुर सतिगुर मिल्या कवण बजार, कवण खोल्ह़े साची हाटीआ। कवण फल फुलवाड़ी खिड़े गुलज़ार, कवण पत्ती कवण पातीआ। कवण पुरख कवण नार, कवण रंग रत्ती साची रातीआ। कवण सेजा मीत मुरार, कवण दे समझावे मतीआ। कवण करे शब्द श्रृंगार, वा ना लग्गे तत्तीआ। कवण कराए नाम आहार, एका बख्शे धीरज सतीआ। जोती जोत सरूप हरि, एका वेखे सच घर, कवण रसना रसन भोग पदार्थ वेखे छत्तीआ। कवण रस रसना चोग, कवण मुख चुगांयदा। कवण मेटे जगत दोख, तृष्ना दुःख गंवांयदा। कवण देवे अन्तिम मोख, सुफल कुक्ख करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका वेखे सच घर, कवण कन्त कवण सन्त कवण नारी हरि भतारी, साची सेज हंढांयदा। आत्म सेजा फूल क्यारी, गुर पूरे मात लगाईआ। गुरमुखां वेखे वारो वारी, रुत्त बसन्ती इक्क कराईआ। अमृत आत्म देवे ठंडा पाणी, सांतक सीतल सति कराईआ। सुरत शब्द मेल मिलाए साचे हाणी, पल्लू एका नाम फड़ाईआ। आप जपाए आपणी बाणी, पंचम दर राग अल्ह़ाईआ। भेव ना जाणे जेरज खाणी, लक्ख चुरासी बणत बणाईआ। हरिजन साचा सुघड़ स्याण सवाणी, प्रभ पूरन बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाम निधानी नाम सिँघासण वेख वखाईआ। नाम सिँघासण शब्द भण्डार, जगत गुर वरतांयदा। देवणहार विच संसार, लेखा

धुर चुकांयदा। आपे बख्शे बख्शणहार, आत्म सुर इक्क उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, एका वेखे सच घर, कवण वंड जीउ पिण्ड विच ब्रह्मण्ड, हरिजन मात करांयदा।

✻ १७ सावण २०१३ बिक्रमी मस्सा सिँघ दे गृह पिण्ड नौरंगाबाद ✻

वीह सौ तेरां तेरी धार, नानक रसना गाईआ। तेरां तेरां कर विचार, तेरां धार बंधाईआ। तेरां तेरां एका धार, प्रभ साचे हथ्थ फड़ाईआ। प्रभ तोलणहारा सर्ब संसार, नाम कंडा एका लाईआ। नाम कंडा अपर अपार, सोहँ डण्डा नाल लटकाईआ। वेखे खेल विच ब्रह्मण्डां, जेरज अंडां नाल चढ़ाईआ। उत्भज सेत्ज पाए वंडां, खाणी बाणी नाल उठाईआ। झोली पाए नौ द्वारे भेख पखण्डा, वेख वखाणे थाउँ थाँईंआ। मनमुख हँकारी वेख घमंडा, झूठा पासा रिहा भराईआ। वरते खेल विच वरभण्डा, हरि साची बणत बणाईआ। कलिजुग अन्तिम आया कन्ढा, धरत मात दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक तेरी तेरां धार, तेरां तेरां रिहा तुलाईआ। तेरां नानक गाया, रसना मुख उचार, कलिजुग जीवां भेव ना पाया, हट्ट हटवाणा आप अख्वाया, जूठा झूठा हट्ट पसार। जर जरवाणा जोत जगाया, आप आपणा भेख वटाया। रूप रंग किसे दिस ना आया, कलिजुग तेरी काली धार। सोहँ वट्टा इक्क ल्याया। सृष्ट सबाई छाणे घट्टा, मनमुख जीव वरोल वखाया। आपे वेखे तीर्थ तट्टां, तट्ट किनारा कोई दिस ना आया। सच सरोवर काया मट्टा, गुरमुख विरले नहावण साचा नुहाया। आपे मेटे दूई द्वैती फटा, चार वरनां एका सरना एका राहे पाया। आपे गेड़े उलटी लट्ठा, कलिजुग अन्तिम जाए नट्ठा, चारों कुन्ट पए दुहाया। ना कोई दीसे तीर्थ अट्ठ सट्ठा, गंगा गोदावरी मुख छुपाया। वरते कहर महीना जेठ, जेठा सुत हरि उपजाया। लक्ख चुरासी वेखे परखे कौड़ा रीठा, शब्द हथौड़ा इक्क रखाया। नाम जपाए इक्क अनडीठा, नेत्र लोचन नैण दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक तेरां तेरी धार, तेरां तेरां दए वहाया। तेरां तेरां तोलणहारा, जोत सरूपी आया ए। शब्द सरूपी पावे घेरा, सृष्ट सबाई वेख वखाया ए। करे कराए हक्क निबेड़ा, काया खेड़ा फोल वखाया ए। पंचम मुकाए पंच झेड़ा, पंच पंचां संग रलाया ए। धरत मात तेरा खुल्ल्हा वेहड़ा, आपणी हथ्थीं रिहा कराया ए। जन भगतां बन्नृण आया बेड़ा, आप आपणे कंध उठाया ए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग तेरी काली धार, तेरां तेरां विच संसार, तेरा मेरा भेव चुकाया ए। तेरां तेरां हरि गुण गाया, दर घर वज्जी वधाईआ। नाम वणजारा वणज कराया, साचा हट्ट चलाईआ। अन्तिम लहिणा देणा रिहा चुकाया, मूल मूला रहिण

ना पाईआ। दुरमति मैल कट्ट वखाया, शब्द झूला रिहा झुलाईआ। दीपक जोती लट लट जगाया, कन्त कन्तूहला मेल मिलाईआ। दूई द्वैती भरमां वट्ट गंवाया, दूलो दूला दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची रिहा बणत बणाईआ। तेरां तेरी साची धार, प्रभ साचा मात चलांयदा। शाह सुल्तानां करे ख़बरदार, राज राजानां आप उठांयदा। तीर कमाना शब्द कटार, आप आपणे तन सजांयदा। बली बलवाना जोद्धा बलकार, जोत सरूपी हरि अख्वांयदा। नाम निशाना मारे मार, चारे कुन्टां वेख वखांयदा। वेखे खेल श्री भगवान, जीव जन्त ना कोई जणांयदा। जन भगतां देवे जिया दान, आत्म ब्रह्म जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तेरां तेरी साची धार, एका धर्म चलांयदा। तेरां तेरां तोलणहारा, तेरां तेल चढ़ांयदा। शब्द जैकारा बोलणहारा, कलि साचा मेल मिलांयदा। मेट मिटाए धुँदूकारा, दीपक जोती इक्क जगांयदा। प्रगट होए विच संसारा, निहकलंका नाउँ रखांयदा। नानक नानक बण लिखारा, गुर गोबिन्दा गोद उठांयदा। भरमे भुल्ला भरम संसारा, सर्ब बख्शिंदा दिस ना आंयदा। रूप अनूप अगम्म अपारा, देवत सुर ना दर्शन पांयदा। आपे जाणे आपणी धारा, आपे गुर पीर अख्वांयदा। कल्गी तोड़ा सीस अपारा, जोती जोड़ा मेल मिलांयदा। शब्दी घोड़ा चिट्टी धारा, वाग आपणे हथ्थ रखांयदा। लोआं पुरीआं वेखे पार किनारा, गगन पताल पताल अकाशां एका राह वखांयदा। आदि अन्त ना कदे विनाशा, पारब्रह्म पुरख अबिनाशा, लक्ख चुरासी तेरा वेखे अन्त तमाशा, वेखणहार आप अख्वांयदा। ना कोई खाए मदिरा मासा, शब्द जपाए स्वास स्वासा, वेख वखाणे काया कासा, नाम रंगण रंग रंगांयदा। भगत जनां हरि दासन दासा, निज घर आत्म रक्खे वासा, शब्द सरूपी दे भरवासा, आत्म ब्रह्म ज्ञान जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी काली धार, तेरां तेरां विच संसार, तेरां तेरां नाम वडिआंयदा। तेरां तेरां तेरा बोल, कलिजुग अन्त व्याहया। हरि शब्द भण्डारा रिहा खोल्ह, वरन अवरनी इक्क अख्वाया। प्रगट होए कला सोल, एका कल रिहा वरताया। भगत सुहेला करे चोहल, जल थल विच समाया। नाम मृदंगा वजाए ढोल, डूँघी डल डेरा लाया। लोआं पुरीआं जाए लँघ सदा सुहेला वसे कोल, शब्द घोड़े तंग कसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तेरां तेरां तेरी धार, तेरां रूप रिहा वटाया। तेरां तेरां नानक गाया, घर साचे वज्जी वधाईआ। हेरा फेरा रिहा चुकाया, प्रभ जोती नूर सवाईआ। सञ्झ सवेरा इक्क कराया, कलिजुग रैण अन्धेरी छाईआ। पंचम घेरा पंचम पाया, पंचम मोह चुकाईआ। सच सिँघासण डेरा लाया, शब्द सिँघासण नाउँ रखाईआ। नौ द्वारे खोल्ह वखाया, सृष्ट सबाई करे कुड़माईआ। पंजां तत्तां नाल उपाया, पंचम बैठा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, कलिजुग तेरी तेरां धार, आपणी हथ्थीं रिहा तुलाईआ। नौ दरवाज़े चार कुन्ट, तेरा तोलण आया। ग़रीब निवाज़े वेख बैकुण्ठ, शब्द सुनेहड़ा बोलण आया। जुगां जुगां दे विछड़े जो जन गए रुट्ठ, प्रभ साचा मेली मेला मेलण आया। लुकया रहिण ना देवे कोई गुट्ठ, मीत मुरारा गया तुठ्ठ, सज्जण सुहेला आप अख्वाया। तीर निराला रिहा छुट्ट, लक्ख चुरासी रिहा कुट्ट, भाग निमाणे गए निखुट, कलिजुग अन्तिम दए दुहाया। घर घर अन्दर दिसे फुट्ट, आप आपणी जड़्ह रहे पुट्ट, अमृत आत्म मिले ना घुट्ट, जगत तृष्ना ना कोए बुझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक तेरी तेरां धार, तेरां तेरां बोलण आया। तेरां बोल शब्द जैकारा, तेरां भेव चुकांयदा। नौ द्वारे खोल्ह किवाड़ा, सृष्ट सबाई वेख वखांयदा। चारे कुन्टां वेखे दिन दिहाड़ा, दहि दिशा फोल वखांयदा। पंचम लाए मगर धाड़ा, ना कोई किसे छुडांयदा। गुरमुख विरला साचा लाड़ा, प्रभ साची घोड़ी शब्द चढ़ांयदा। लक्ख चुरासी वज्जे ताड़ा, बहत्तर नाड़ी आप वजांयदा। धर्म राए दा इक्क अखाड़ा, लाड़ी मौत विच नचांयदा। वेख वखाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, उच्चे टिले पर्बत फोल फुलांयदा। आप चबाए आपणी दाढ़ा, भेखाधारी भेख वटांयदा। कलिजुग अन्तिम कढ्ढे हाढ़ा, जूठ झूठ मुख शरमांयदा। माया ममता तन मन साड़ा, अग्नी अग्ग ना कोई बुझांयदा। धुर दरगाही पैणीआं झाड़ां, अग्गे हो ना कोई छुडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक तेरी तेरां धार, तेरां तेरां नाम जपांयदा। तेरां धार नाम बोदी, प्रभ आपणी मुट्ठ वखाईआ। गुरमुख बिठाए साची गोदी, शब्दी लाड लडाईआ। सुरत सवाणी आपे सोधी, वाहिद गाँड मेल मिलाईआ। शब्द ज्ञानी आत्म बोधी, देवे ब्रह्म जणाईआ। गुरमुखां हिरदे रिहा सोधी, साचा धर्म इक्क रखाईआ। दाता सूरा वड जोधन जोधी, जग जुग करदा रिहा लड़ाईआ। आपे बैठा खाने मोदी, तक्कड़ी आपणे हथ्थ रखाईआ। कलिजुग तोले वैर क्रोधी, तोलणहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक तेरी तेरां धार, तेरे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। तेरां हथ्थ वड्याई, त्रैगुण तोल्लया। किसे जीव ना चले चतुराई, प्रभ साचे शब्द रसना बोल्लया। चार वरन करे कुड़माई, सोहँ साचे ढोल्लया। नौ खण्ड पृथ्वी वज्जे वधाई, सत्तां दीपां चरन द्वारे करे गोल्लया। लोआं पुरीआं रिहा जगाई, ब्रह्मा उठे नेत्र वेखे खोल्ह्या। शिव शंकर लए इक्क अंगड़ाई, कवण कूटे हरि हरि बोल्लया। करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द वेखे जगत जगदीसा, शब्द सुनेहड़ा रिहा घलाई। होए सहाई बीस इकीसा, सम्मत सम्मती दए मिटाई। ना कोई गाए राग छतीसा, वेद पुराणां अन्त कराई। ना कोई पढ़े कुरान हदीसा, अञ्जील अञ्जील रहिण ना पाई। प्रगट होए बीस बीसा, एका धार रिहा चलाई। छत्र झुलाए साचे सीसा, जगत जगदीसा नाउँ रखाई। राज राजानां शाह सुल्तानां विच जहाना खाली करे खीसा, माया

राणी बैठे मुख छुपाई। हरि मेहरवाना इक्क चलाए शब्द तराना, राग अनादी हरि भगवाना, वेखे थाउँ थाँईं। पारब्रह्म ब्रह्म ब्रह्मादी, खेले खेल आदि जुगादी, जुग जुग बणत रिहा बणाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत तेरां तेरी धार, तेरा मेरा रिहा चुकाई। तेरां तेरां साचा रंग, सच तख्त सुल्तानया। भगत जनां प्रभ साचा संग, जिउँ नानक संग मरदानया। मानस जन्म ना होए भंग, गुर अंगद अंग लगानया। शब्द घोड़े कसे तंग, अमर अमरापद पानया। सच दुआरा जाए लँघ, रामदास वेख वखानया। गुर अर्जन मंगी साची मंग, प्रभ बख्शे चरन ध्यानया। हरि गोबिन्द कटाई भुक्ख नंग, चरन प्रीती मात निशानया। हरिराए वहाए साची गंग, साचा तीर्थ इक्क इशनानया। हरिकृष्न कराया साचा जंग, बाल अवस्था मेल मिलानया। तेग बहादर वज्जे मृदंग, कलिजुग वेखे अन्त जहानया। गुर गोबिन्दा बैठा शब्द रंगीले पलँघ, साचा मेला श्री भगवानया। शब्द डोरी इक्क पतंग, प्रभ आप चढ़ाए जुग जुग वाली दो जहानया। वड दाता सूरा सरबंग, हरि शाहो शाह शहानया। आदि शक्त हथ्थ तेज कटारी, शब्द भगौती नाम रखानया। पन्थी पन्थां पावे सारी, ग्रन्थी ग्रन्थां ना कोई जाणे वेद पुराणया। जुग जुग लै मात हरि अवतारी, आप रहीम कृष्ना कान्हिआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, धारे भेख हरि बनवारी, विष्नूं नाउँ हरि भगवानया। भरमें भुल्ले जीव गंवारी, साधां सन्तां आई हारी, मगर लग्गे पंज शैतानया। दर घर बैठा हरि सुल्ताना, वेखे खेल सच्ची सरकारी, आपे जाणे आपणे भाणया। लक्ख चुरासी बाजी हारी, ना कोई देवे मात सहारी, वज्जे तीर जगत निशानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक तेरां तेरी धार, आप आपणे हथ्थ रखानया। तेरां तेरां रक्खणहारा, तेरा रूप वटांयदा। सृष्ट सबाई परखणहारा, शाहो भूप अख्वांयदा। लक्खण दीप कर विचारा, करोच फेरा पांयदा। पुष्कर हाहाकारा, जम्बु नाल रलांयदा। सलमल होए धुँदूकारा, सान ना कोए छुडांयदा। कुशा ना पावे कोई सारा, भरमे भुल्ले जीव गंवारा, साध सन्त ना देवे कोई सहारा, अन्तिम वेले मुख छुपांयदा। कुलाखण्ड प्रभ शब्द हुलारा, इलाबुत कर चरन प्यारा, केतमाल हरि शब्द जैकारा, किंपुरख तेरी साची धारा, हरिवरख तेरा हरि वरतारा, भारत खण्डी जोत जगांयदा। हरणमयह तेरा सगल पसारा, रमक चले एका धारा, हरिभद्र गोद उठांयदा। जोत सरूपी कर अकारा, निहकलंक नरायण नर अवतारा, सम्बल नगरी पावे सारा, गुर गोबिन्दा साचा पूत एका धागा एका सूत, आपणी हथ्थीं आप पुरांयदा। शब्द जणाए साचा दूत, आप घलाए चारे कूट, लोआं पुरीआं आप जणांयदा। सच पंघूड़ा रिहा झूट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक तेरी तेरां धार, तेरा पल्लू नाम फड़ांयदा। तेरां तेरां त्रैगुण जाल, प्रभ माती मात चुकांयदा। सृष्ट सबाई खाए काल, मार झाती वेख वखांयदा। लक्ख

चुरासी हाल बेहाल, ना कोई किसे बचांयदा। गुरमुख विरला मस्तक जोती साचे थाल, जोत निरँजण डगमगांयदा। आपे शाह आपे कंगाल, आपे करे सर्ब प्रितपाल, आपे बणत बणांयदा। आपे शब्द धुर दलाल, आपे अमृत आत्म दए प्याल, आपे जगत तृष्ना अग्न मात जलांयदा। आपे दीपक जोती देवे बाल, आपे ब्रह्मा आपे शिव आपे विष्न रूप वटांयदा। जुगा जुगन्तर चले अवल्लड़ी चाल, भेव अभेदा भेव कोई ना पांयदा। आपे मारे इक्क उछाल, शब्द सुहाए साचा ताल, मुख चारे खोल् वखांयदा। फल लगाए साचे डाल्, त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, ब्रह्मा वेता साचा नेता, चारे वेद चारे मुख चारे रसन चलांयदा। आप उठाया आपणी कुक्ख, कँवल नाभी साचा मुख, साचा मेला उतरे दुःख, एका रंग समांयदा। कलिजुग अन्तिम वेला गया ढुक, हरि हरि भाणा जाए ना रुक, लक्ख चुरासी जीवां जन्तां दाणा पाणी गया मुक्क, लेखा रिहा लेख मुकांयदा। हरया बूटा जाणा सुक्क, जीव हँकारी जाणा चुक्क, मनमुखां पया मूंह विच थुक्क, राए धर्म दए सजाया। लाड़ी मौत आपणी गोदी लए चुक्क, काल द्वारे रिहा बुक्क, वेला कलिजुग अन्तिम आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक तेरी तेरां धार, आपणी हथ्थीं तोलण आया। तोलणहारा हरि जगदीश, आपे सृष्ट सबाईआ। लक्ख चुरासी पीसण रिहा पीस, कलिजुग चक्की मात चलाईआ। वेखे खेल बीस इकीस, सतिजुग साचा जन्म दवाईआ। कवण करे प्रभ तेरी रीस, तेरी महिंमा अगणत गणी ना जाईआ। आपे जाणे हस्त कीट, कीट कीटां विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सृष्ट सबाई इक्क वर, एका छाबे रिहा पाईआ। सृष्ट सबाई एका पल्ला, एका लड़ फड़ाया। पंच विकारा करे हल्ला, विषे विकारा हड़ वहाया। चारों कुन्ट पए तरथल्ला, सभ दी जड़् रिहा उखड़ाया। वेखे खेल घड़ी घड़ी पला पला, नाड़ बहत्तर विच समाया। आपे वसया जल थला, डूँघी कन्दर डेरा लाया। आप वसाया इक्क महल्ला, रंग महल्ल सजाया। हरि जी बैठा इक्क इकल्ला, शब्द भल्ला हथ्थ फड़ाया। दूई द्वैती मेटे सल्ला, साचा भाणा हुक्म जणाया। कलिजुग तेरा अन्तिम शिला, बीस बीसे दए कराया। ना कोई दीसे बूरा कक्का बिल्ला, चीना रूस दए मिटाया। रसना चढ़ाए साचा चिल्ला, शब्द रखाए घोड़ा नीला, कल्गी तोड़ा सीस लगाया। बस्त्र पहने तन पीला, गुर गोबिन्दे भेख वटांयदा। साल तेरवां छैल छबीला, नौजवाना हो हो आया। भारत खण्ड तेरा इक्क कबीला, सृष्ट सबाई दए बणाया। ज़ात अजाति मिटे मेला, वरन अवरनी गोत चलाया। गुरमुखां लाहे बजर कपाटी सिला, अन्दरों कुण्डा लाहया। आप हिलाए उच्चा टिल्ला, गोरख मच्छन्दर रहिण ना पाया। वेख वखाणे सागर झीलां, उलटे नदीआं वहिण वहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सदी बीस तेरां तेरी झोली पाईआ। झोली तेरां तेरी पाई, तेरा लहिणा मुक्कया। काया डोली इक्क उठाई,

हरया काष्ट सुकया। गुरमुख विरले चोली रंग रंगाई, दर द्वारे आए झुकया। पुरख अबिनाशी दए वधाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे इक्क वर, हरि भाणा मात ना रुकया। सगल रूप करतार, सगल समाया। अन्ध कूप संसार, दिस किसे ना आया। दर मन्दिर अन्दर धुखदे धूप, साचा हवन ना किसे कराया। रसना गाउँदे चारे कूट, अन्दर वड़ किसे ना पाया। कलिजुग पाया जूठ झूठ, भेख पखण्डा नाल रलाया। अन्तिम खाली होए ठूठ, साची भिच्छया कोए ना पाया। इक्क इकल्ला गया तुठ, राए धर्म दए वड्आया। गुरमुख रक्खे एका मुठ, लक्ख चुरासी हरि जी झोली पाया। अगम्म अगम्मा रिहा रुट्ठ, पुरीआं लोआं मुख भवाया। तीर निराला रिहा छुट्ट, सोहँ मुखी मुख रखाया। जन भगतां नाम हलूणा देवे झूट, सहिंसा दुखी रोग गंवाया। नौ खण्ड पृथ्वी दूई द्वैती कढ्ढे फूट, भाण्डा भरम गढ़ तुड़ाया। बस्त्र शस्त्र वेखे पहन बूट सूट, कवण कप्पड़ तन रंगाया। पंच विकारा रिहा लूट, जगत छप्पड़ नहावण नहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल सृष्ट सबाया। सर्बकला समरथ, सर्बकला कलि धारया। आप चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही नर निरंकारया। सृष्ट सबाई रिहा मथ्था, हरि साचा शाह संवारया। जीव जन्तां पाए नत्थ, नत्थी जाए वारो वारया। कलिजुग लहिणा लैण चुकाए सीआं साढे तिन्न हथ्थ, उच्चे मन्दिर अटल ढाहे अटारया। महिंमा जगत चलाए अकथ, सोहँ शब्द जै जैकारया। हरि हरि रामा जिउँ घर दसरथ, रावण मारे दुष्ट हंकारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वरते खेल अपर अपारया। अपर अपारा कलिजुग खेल, खेलणहार खिलंदड़ा। लक्ख चुरासी चढ़या तेल, घर साचा इक्क वखंदड़ा। धर्म राए दी वेखे जेल, अठाई कुण्डां भार रखंदड़ा। लाड़ी मौत करे मेल, कलिजुग गीत सुहाग गवंदड़ा। ना कोई गुर ना कोई चेल, माया वाह इक्क वहंदड़ा। कोई ना दीसे सज्जण सुहेल, साध सन्त जन्त मशटंडड़ा। कवण सहाई अन्तिम वेल, सदा सदा कवण बख्शंदड़ा। लक्ख चुरासी बेड़ा रिहा ठेल, पार किनारा कवण वखंदड़ा। कवण वधावे साची वेल, सतिजुग साचा राह वखंदड़ा। बीस इकीसा वसे रंग नवेल, भगत मलाह आप अख्वंदड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भेखाधारी भेख वटंदड़ा। भेख वटाए जगत रेख, रिखी केश गिरधारीआ। सृष्ट सबाई रिहा वेख, दर दरवेश बनवारीआ। लेखा लेख चुकाए औलीआ पीर शेख़, लहिणा देणा मूल चुकाए, जीव जन्त दुष्ट दुराचारीआ। गुरमुखां मस्तक मेख लगाए, देवे नाम शब्द खुमारीआ। साचा वणज मात कराए, अन्तिम आए ना पासा हारीआ। शब्द वस्त प्रभ झोली पाए, हउमे तृष्ना लाहे तन बिमारीआ। काया चोली रंग वखाए, काग हँस लगाए सच उडारीआ। सृष्टी नाता भुक्ख नंग कटाए, आत्म घर सुहाए बंक द्वारीआ। पुरख बिधाता खुशी प्रभ मनाए, गुरमुख

जन्मे एका घर सौ सौ वारीआ। धुर दरगाही गहणा तन पहनाए, सोलां सोलां सोलां कर तन शृंगारीआ। भाणा सहिणा हुक्म सुणाए, कलिजुग तेरी अन्तिम वारीआ। नेत्र लोचण नैणा दरस दिखाए, आत्म खोल्हे बन्द किवाड़ीआ। गुर संगत बहिणा दे मति समझाए, सतिजुग साची सच फुलवाड़ीआ। आत्म वत्त साचा बीज बिजाए, सिंच काया नाम क्यारीआ। जन भगतां आपणी हथ्थीं रीझ कराए, सोहँ बन्न्हे सीस दस्तारीआ। एका दूजा तीज मुकाए, चौथे घर इक्क अधारीआ। पंचम कुण्डा आपे लाहे, वेखे खेल नर निरँकारीआ। छेवें मुंडा गोद उठाए, शब्द बाला हरि खिलारीआ। सत्तवें जोती नूर रखाए, नूरो नूर होए उज्यारीआ। सर्बकल भरपूर आप अखवाए, आपे रहे विच संसारीआ। दूरो दूर आप हो जाए, नेरन नेर सर्ब जणा रिहा। कूड़ो कूड़ सृष्ट अखवाए, मस्तक धूढ़ गुरमुख विरला ला रिहा। काया रंगण रंग गूढ़ चढ़ाए, दर घर साचे दर्शन पा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सिँघासण देवे वर, नौ द्वारे बन्द रखा रिहा। नौ द्वारे बन्द दरवाज़ा, दर दसवां इक्क खुल्हाईआ। आप आपणा साजण साजा, आप आपणी बणत बणाईआ। चोबदार दर मारे अवाजा, शब्द पहरेदार अख्वाईआ। शब्द सिँघासण ग़रीब निवाजा, साचा आसण बैठा लाईआ। चिट्टा अस्व सोहे ताजा, चौथा पौड़ा रिहा उठाईआ। अन्दरे अन्दर मारे अवाजा, शब्द पहरेदार अख्वाईआ। शब्द सिँघासण ग़रीब निवाजा, साचा आसण बैठा लाईआ। कलिजुग अन्तिम रच्चया काजा, आपणी हथ्थीं सगन मनाईआ। धरती सोहे देस माझा, हरि जोती नूर सवाईआ। भगतां देवे नाम दाजा, धुरदरगाही इक्क वड्याईआ। नौ द्वारे साजण साजा, सृष्ट सबाई होए हलकाईआ। चारों कुन्ट पए भाजा, नाता तुट्टे भैणा भाईआ। ना कोई रक्खे किसे लाजा, अन्त विछोड़ा धी जवाईआ। ना कोई मक्का काअबा हाजी हाजा, शाह नवाबा ना कोई अख्वाईआ। ना कोई अस्त्र शस्त्र घोड़ा ताजा, महांसार्थी सार ना पाईआ। ना कोई रेल गाड़ी ना दिसे जहाजा, प्रभ अन्तिम मेट मिटाईआ। शब्द उडाए साचा बाजा, चारों कुन्ट आप उडाईआ। अन्दर मन्दिर बहि बहि मारे आवाजा, नौ खण्ड पृथ्वी रिहा जगाईआ। शाह भीखम तेरी रक्खे लाजा, हाढ़ सतारां जन्म दवाईआ। गुर गोबिन्दे साजन साजा, प्रभ जोती लाड़ी नाल प्रनाईआ। माझे देस पाया अन्तिम माझा, ना सके कोई तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, दर दुआरा बंक सुहाईआ। माझे देस पाया माझा, गोबिन्द गुर गुर गोबिन्द आपणी हथ्थीं जोड़ा। सम्मत तेरां हाढ़ सतारां रच्चया काजा, चरन छुहाए चिट्टा जोड़ा। बस्त्र पीला तन रखाए, सोहँ चलाए नीला घोड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे हथ्थ वाग रखाए, लक्ख चुरासी मारे पहला पौड़ा। नीला घोड़ा नौ दर, नौ घर शोर मचांयदा। पुरख अबिनाशी किरपा कर, आसण सिँघासण इक्क रखांयदा। चरन

रकाबे साचा धर, पृथ्वी आकाशन वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी आवे डर, स्वास स्वासन आप बचांयदा। धर्म राए दर मंगे वर, कलिजुग काल नाल रलांयदा। एका भाणा रिहा जर, आपणी झोली अग्गे डांयदा। नर निरँकार देणी भर, लक्ख चुरासी एका घर, गोली आपणी आप बणांयदा। गुरमुखां चरन द्वार रखाए साचा सर, अमृत आत्म इक्क इशनान करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर सर्ब समांयदा। जीव जन्त उपाए, जुगत आपणे हथ्थ रखांयदा। सृष्ट सबाई विच समाए, दिस किसे ना आंयदा। जिस जन आपणी दया कमाए, पूरन बूझ बुझांयदा। शब्द जणाई इक्क कराए, अगाध बोध भेव खुल्हांयदा। नाम वणज मात कराए, वणज वपारा आप अख्वांयदा। शब्द भण्डारा इक्क रखाए, लक्ख चुरासी आप वरतांयदा। नर निरँकारा रूप वटाए, जुग जुग भेव वटांयदा। बंक दुआरा इक्क सुहाए, सन्तन सति रूप समांयदा। सच अखाड़ा इक्क लगाए, गुरसिख गुरमुख हरिभगत हरिजन हरिसंगत मेल मिलांयदा। दिवस दिहाड़ा इक्क जणाए, लहिणा देण मूल चुकांयदा। दूई द्वैती पाड़ा मेट मिटाए, आप आपणे रंग रंगांयदा। पंचम धाड़ा परे हटाए, शब्द बाणा तन पहनांयदा। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ां पंखी पंछी तरवर सरवर एका धार वहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जुग जुग आपणी जोत धर, जोग जुगती आपणे हथ्थ रखांयदा। जोग जुगत जगत अभ्यास, हरि आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस जन अन्दर करे वास, हउमे हँगता रोग गंवाईआ। आए जाए स्वास स्वास, आप आपणा जाप जपाईआ। वेख वखाणे पृथ्वी अकाश, पुरीआं लोआं विच समाईआ। जिस जन होया दासी दास, सेवक सेवा रिहा कमाईआ। कलिजुग अन्तिम वेला जो जन तजाए मदिरा मास, अमृत फल मेवा मुख लगाईआ। शब्द वस्त गुर साचे पास, कलिजुग जीवां रिहा वरताईआ। जगत विकारा करे नास, पंच विकारा तत्त रहिण ना पाईआ। शब्द जैकारा काया विच प्रभास, मन अधारा इक्क वखाईआ। मेल मिलाए शाहो शाबास, शब्द सिँघासण इक्क वखाईआ। साचे मण्डल पावे रास, पंचम पंचां मेल मिलाईआ। वरते वरतावे सर्ब गुणतास, आपणी रचना रिहा रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जुग जुग आपणी जोत धर, जन भगतां देवे मात वड्याईआ। जुग जुग धारे भेख, भेख वटांयदा। सृष्ट सबाई लिखे लेख, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां रिहा वेख, पुरीआं लोआं राह तकांयदा। ब्रह्मा शिव दर गनेश, अठ्ठे पहर सीस झुकांयदा। इन्द इन्द्रासण करे वेस, करोड़ तेतीसा संग रलांयदा। ना कोई जाणे धारी केस, मूंड मुंडाया भेव ना पांयदा। जोती नूर सर्ब प्रवेश, हर घट में आप समांयदा। मुच्छ दाढ़ी ना दीसे केस, हड्ड मास नाड़ी ना कोए रखांयदा। बाल बिरध जवान ना कोए वरेस, एका रंग समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी बणत बणांयदा। कलिजुग काली

३०
०६

धार, बणत बणाईआ। माया ममता भुल्ला संसार, जूठा झूठा खेल रचाईआ। साध सन्त होए गंवार, आत्म अग्नी तृष्न वसाईआ। दर दर घर घर भरया इक्क हँकार, झूठी वंडण इक्क वंडाईआ। ना कोई दीसे किसे सहार, अन्तिम बैठे कंड वखाईआ। बिन गुर पूरे कोए ना उतरे पार, धर्म राए डण्ड लगाईआ। प्रभ अबिनाशी बख्शणहार, जन भगतां साची वंड रिहा वंडाईआ। आपे बख्शे चरन प्यार, जेरज अंडज वेख वखाईआ। सृष्ट सबाई धुँदूकार, ब्रह्मण्डां खोज खुजाईआ। आपे अन्दर आपे बाहर, आपे गुप्त आपे जाहिर, दिस किसे ना आईआ। लक्ख चुरासी सुणे पुकार, जोती जोती जामा पाईआ। गऊ ग़रीबां फड़ फड़ बाहों लाए पार, सम्मत सोलां रुत्त सुहाईआ। एका बख्शे शब्द अधार, चार वरनां इक्क जणाईआ। राउ रंक राजान शाह सुल्तान दर दरबार, इक्क दर दए बहाईआ। इक्क झुलाए धर्म निशान, भेख पखण्डा दए मिटाईआ। जोत निरँजण पावे आण, सोहँ डण्डा हथ्थ उठाईआ। तीर निराला वज्जे बाण, कलिजुग अन्तिम कन्ढा नेड़े आईआ। गोबिन्द गोबिन्द सारे गाण, सृष्ट सबाई एका राह वखाईआ। वाली हिन्द करे पछाण, प्रभ साचा भारत खण्डी बैठा जोत जगाईआ। मेट मिटाए कलिजुग तेरी टेडी डण्डी, साचा मार्ग एका लाईआ। ना कोई दीसे नार दुहागण रंडी, कन्त सन्त इक्क हंढाईआ। फड़े शब्द प्रभ साची चण्डी, पंचां दूता नष्ट कराईआ। ग़रीब निमाणयां पाए वंडी, चारे कूटां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जीव अल्पग चरन लगाए सूरा सरबंग, एका बख्शे चरन सरन सच्ची सरनाईआ। सरन सरना सतिगुर साचे, सच सच्ची सरनाईआ। जीउ पिण्ड जन भाण्डे काचे, साजन साज आप अख्वाईआ। नौ द्वारे जो जन आपणे नाचे, नट नटूआ खेल कराईआ। माया अग्न तृष्न तमाचे, मनमुख जीवां रही लगाईआ। हरि हरि शब्द जो जन वाचे, चरन सरन सरन चरन मिले जगत वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जीवां जन्तां आदिन अन्ता एका रंगण साची नाम रंगाईआ। काया रंगण रंगे चोला, प्रभ साचा जगत ललारी। शब्द चलाए सुणाए एका ढोला, कराए वणज सच्चा वपारी। जुगा जुगन्तर हारा तोला, तोलणहार संसारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल अपर अपारी।

✻ पहली भाद्रों २०१३ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✻

सगल पसारा वेख, सर्ब समाया। जुग जुग धारे भेख, भेखाधारी भेख वटाया। लक्ख चुरासी लिखे लेख, लिखणहारा दिस ना आया। आपे बैठा रिहा वेख, आप आपणा मुख छुपाया। बाल अवस्था अल्लड़ वरेस, तेरां तेरां धार वहाया। वेख

३०
०६

३१
०६

वखाणे धारी केस, गुर गोबिन्दा संग रलाया। आपे ब्रह्मा विष्न महेष, दर दरवेश फेरा पाया। शिव शंकर बण गणेश, जटा जूट आप अख्वाया। आपे दाता नर नरेश, निरवैर रूप समाया। करे खेल माझे देस, देस प्रदेसां दिस ना आया। जोती जामा हरि भगवाना भेखधारी गुर दस्मेश, दिस किसे ना आया। रूप अगम्म अपार हरि रघुराया। आपे जाणे आपणा कम्म, जुग जुग आपणा भेख वटाया। कलिजुग नेत्र नीर वहाए रोवे छम्म छम्म, वेला अन्तिम आया। हरि दुआरा ना कोई खुशी ना कोई ग़म, सद एका रंग समाया। लक्ख चुरासी नाता हड्ड मास नाड़ी चम्म, जीवां जन्तां बणत बणाया। पवण स्वासी देवे दम, आदि अन्ता खेल रचाया। आपे अन्दर पए जम्म, आप आपणे विच समाया। लक्ख चुरासी तेरा एका तम, वेले अन्तिम दए पकाया। गगन पतालां हिल्ले थम्म्ह, राए धर्म दर कुरलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया रूप वटाया। जुग जुग धारे भेख, रंग अपारया। कलिजुग मेटे अन्तिम रेख, रिखी रिखेशर ना पाए सारया। मेट मिटाए औलीए पीर शेख़, कुरान हदीस ना कोई सुणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया काया रूप आपणा आप वटा रिहा। काया रूप अपार, गोबिन्द शब्द जणाईआ। हरि जोती नूर अपार, घर मन्दिर इक्क टिकाईआ। दोहां मेला इक्क द्वार, पवण पवण विच समाईआ। छत्ती राग ना पायण सार, नार सुरसती रहे गाईआ। ब्रह्मा लिख लिख थक्किआ चारे वेदां, वेद कतेबां भेव ना राईआ। वेद व्यासा बण लिखार, पुराण अठारां जोत जगाईआ। काहना कृष्ना मीत मुरार, अर्जन रीता इक्क वखाईआ। आपे वसया सभ तों बाहर, हर घट रिहा आप समाईआ। आपे गुप्त आपे जाहिर, अठारां ध्याए गीता शब्द जणाईआ। कलिजुग तेरी वेख विचार, प्रभ साची बणत बणाईआ। संग रलाया मुहम्मद यार, चार यारां मता पकाईआ। मिल्या वर सच्चे दरबार, चौदां चौदां लेख लिखाईआ। नानक आया दर द्वार, प्रभ साची भिच्छया पाईआ। एका रसना रिहा उचार, सभ थाँईं होए सहाईआ। गुणवन्ता गुण रिहा विचार, पूरन भगवन्ता भेव ना राईआ। साधां सन्तां देवणहार, शब्द भण्डारा रिहा भराईआ। पाया दर नर निरँकार, पति पतिवन्ता आप अख्वाईआ। साची सेजा सुत्ता नाल प्यार, नारी रूप आप वटाईआ। शाहो भूपा सुहाए बंक द्वार, नानक नानक विच समाईआ। बिन रंग रूपा आप करतार, वेख वखाणे थाउँ थाँईंआ। धुन नाद नाद धुन पंचम घर पंचम बोले, पंचम शब्द जणाईआ। आदि अन्त कदे ना डोले, कीर्तन गाए साचे राग महल्ले सुहले, गौड़ी पौड़ी आप गंवाईआ। लोआं पुरीआं आपे फोले, नर हरि वसे सदा कोले, रवि ससि होए दर द्वारे गोले, ब्रह्मा शिव देवत सुर दर्शन रहे पाईआ। चरन प्रीती गई जुड़ प्रभ आप सुणाए साचे सोहले, तार सितारा रिहा वजाईआ। आपे अन्दर आपे बाहर आपे हरि हरि शब्दी बोले, दिस किसे ना आईआ।

३१
०६

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक दित्ता एका वर, साचा नाउँ जगत गुर मन्त्र नाम सति वरोले, पंज तत्त सृष्टी सबाई देवे मति, एका राह जणाईआ। आपे रक्खणहारा पुरख अबिनाशी तेरी पत्त, आत्म बीजे बीज एका वत, रसना सोहँ धारा आप वहाईआ। कलिजुग अन्तिम लक्ख चुरासी बन्ने नत्त, साधां सन्तां जीआं जन्तां धीरज टुट्टे यति, आपे जाणे मित गत्त, साचा रथ इक्क चलाईआ। जगत चलाए महिंमा अकथ, प्रगट होए हरि समरथ, नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां लक्ख चुरासी सृष्ट सबाई पाए नत्थ, डोरी आपणे हथ्थ रखाईआ। लोआं पुरीआं रिहा मथ, गगन पतालां करे सत्थ, ना कोई किसे सहाईआ। गुरमुख विरले जगत वसूरे जायण लथ्थ, जो जन दर आए दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक तेरी तेरां धार, सम्मत तेरां रिहा चलाईआ। सम्मत तेरां तोलण आया, हरि साचा तोलणहारा। जगत भण्डारा खोल्हण आया, आदि अन्त एका एक एकँकारा। शब्द दो अक्खर बोलण आया, चहु अक्खर तेरा पार किनारा। रोड़ी सक्खर फोलण आया, संग रलाया मुहम्मदी यारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, करे खेल अगम्म अपारा। नानक तेरा बोल बुलारा, रसना तोल तुलांयदा। सृष्ट सबाई इक्क हुलारा, आपणी हथ्थीं आप दवांयदा। लक्ख चुरासी डोले विच मँझधारा, गुरमुख विरले पार करांयदा। धरत मात तेरा इक्क अखाड़ा, सम्मत पन्दरां नींह रखांयदा। सम्मत सोलां अगम्मी धाड़ा, चार कुन्ट आप उठांयदा। सम्मत सतारां कढ्ढे हाढ़ा, सर अमृत थेह करांयदा। सम्मत अठारां होए उजाड़ा, जल धारा रूप समांयदा। सम्मत उन्नीं चोटी जाए मुन्नी, ना कोई दीसे मुस्लिम सुन्नी, चार यारां वक्त चुकांयदा। बीस बीसा वड गुण गुणी, मेट मिटाए राग छतीसा, ना कोई गाए कुरान हदीसा, अंजील कुरान पुकार किसे ना सुणी, बीस इक्क इकीस छत्र झुल्ले प्रभ साचे सीस, सृष्ट सबाई जाए पीस, आपणे रंग समांयदा। बीस इक्क इकीसा, हरि जगदीशा विच संसारया। छत्र झुलाए साचे सीसा, नर नरायण हरि अवतारया। बीस बीसा राज राजाना खाली खीसा, दर दर फिरन होए भिखारया। सम्मत उनी सृष्ट सबाई छाणी पुणी, चारों कुन्ट हाहाकारया। सम्मत अठारां नारी कन्त ना कोई बहारा, मावां पुत्तरां संग तुड़ा ल्या। सम्मत सतारां मारन धाहां, कलू काल कसाई रूप वटा रिहा। सम्मत सोलां प्रभ बदले चोला, चोजी आपणा चोज वरता रिहा। सम्मत पन्दरां प्रभ वेखे गुरद्वारे मन्दिर मसीतां काजी मुला पंडत पांधे फड़ फड़ आप हिला रिहा। सम्मत चौदां चौदां हट्ट गुरमुखां पहनाए तन साचा पट्ट, एका लाहा लैण खट्ट, दर द्वारे दर्शन पा रिहा। सम्मत तेरां वज्जा फट्ट, सृष्ट सबाई खेल बाजीगर नट, लक्ख चुरासी झूठी रचन रचा रिहा। कलिजुग तेरी अन्तिम चट्ट, हाढ़ सतारां तपणा मट्ठ, वेला अन्तिम अन्त लिखा रिहा। पंचम

जेठ करे इक्छु, गुर संगत दर द्वारे आए नठ्ठ, सोलां तेरी धार वहा रिहा। उच्चे मन्दिर जाणे ढठ्ठ, ना कोई शिवदवाला मठ्ठ, गुर पीर ना कोए बचा रिहा। भेव चुक्के तीर्थ अठ्ठ सठ्ठ, गंगा गोदावरी कोए ना नहावण नुहा रिहा। गुरमुख तेरा साचा हठ्ठ, गुर चरन प्रीती इक्क वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग देवे अन्तिम वर, लहिणा देणा मूल चुका रिहा। कलिजुग लहिणा साचा लैणा, आए बंक द्वारया। जूठ झूठ प्रभ पाए गहिणा, माया ममता तन श्रृंगारया। खाली ठूठा अन्तिम रहिणा, तन भरया इक्क हंकारया। दर दवारिउँ रूठे रहिणा, मिल्या मेल ना पुरख भतारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, वेखे खेल अपर अपारया। कलिजुग बंक द्वार, दए दुहाईआ। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, वेला अन्तिम आईआ। गुर गोबिन्दा बणया लेख लिखार, लक्ख चार हज़ार बत्ती मेरा मेट मिटाईआ। नाता तुट्टे जगत यार, जूठा झूठा कोए ना संग निभाईआ। एका मेला मुहम्मदी यार, नबी रसूलां मता पकाईआ। सदी चौधवीं ख़बरदार, चौदां चौदां धार वहाईआ। चारों कुन्ट हाहाकार, ईसा मूसा रिहा कुरलाईआ। आपे करनहार करतार, कलिजुग तेरी धार बंनाईआ। लक्ख चुरासी छड्डणा पए प्यार, होणी अन्त जुदाईआ। राए धर्म होया ख़बरदार, प्रभ अग्गे बैठा सीस सीस झुकाईआ। चित्रगुप्त वेखे खोल्ह हिसाब, लहिणा देणा मूल चुकाईआ। प्रगट होए हक्क ज़नाब, दो दो आबा फोल फुलाईआ। आपे जाणे पुन्न सवाबा, जीव जन्त भेव ना पाईआ। सृष्ट सबाई एका खवाबा, सुफने रैण विहाईआ। शब्द घोड़े दे रकाबा, प्रभ सोलां कलीआं आसण पाईआ। कोई ना झल्ले मात ताबा, शब्द खण्डा हथ्थ उठाईआ। गुरमुखां अमृत बख़्शे नाभा, साची धारा मुख चुआईआ। मनमुख जीवां दए अज़ाबा, देवणहार सज़ाईआ। वेख वखाणे मक्का काअबा, कोना गोशा फोल फुलाईआ। मुख रखाए इक्क नकाबा, काला बस्त्र तन पहनाईआ। नूर अलाही बेपरवाही प्रगट होवे सच नवाबा, आपे जाणे आपणी शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द तेरा रूप वटाईआ। कलिजुग सोहे बंक द्वार, आए दर परवानया। प्रभ पाए फूलणहार, अन्तिम एह निशानीआ। चारो कुन्ट हाहाकार, सृष्ट सबाई होए दीवानया। घर घर रोवण धाहां मार, ना कोई करे किसे पछाणयां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात मार झात इक्क इकांत, एका तीर मारे शब्द सच्ची कानीआ। कलिजुग अन्तिम वार, अन्त उदास्सया। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, अन्त वसेरा दिसे प्रभास्सया। एका बख़्शे चरन प्यार, घर साचे करना वास्सया। माया ममता करे ख्वार, जीव जन्त मदिरा मास्सया। कोई ना दीसे मात सहार, भरमे भुल्ले पंडत काशीआ। ग्रन्थी पन्थी गए हार, दस दस्मेस ना गाया स्वास्सया। मुल्ला शेखां पए मार, वेख वखाणे पृथ्वी आकाश्या। पंचां तत्तां जगत प्यार,

३३
०६

लोभ मोह पई गल फास्सया। गुर पीर ना देवे कोई सहार, गुर मन्दिर अन्दर घर घर करे हास्सया। धरत मात दर करे प्यार, हरि साजन साचा शाहो शाबास्सया। लज पति तेरी होए ख्वार, घर साचे कोई ना दिसे दास्सया। वेला अन्तिम लए अवतार, किरपा कर घनक पुर वास्सया। शब्द खण्डा फड़ कटार, मारी जाए वारो वार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख विरले चरन लगाए, अन्त चलाए शब्द स्वास्सया। खण्ड ब्रह्मण्ड शब्द प्रभ धार, जुग जुग आप रखाईआ। लक्ख चुरासी वंड जेरज अंड, उत्भज सेत्ज आप कराईआ। नौ द्वारे खण्ड खण्ड, पंचम पंचां वढ्ढे कंड, नाम गंढ्ढ पल्ले हरि बंधाईआ। आपणी हथ्थीं रिहा वंड, देवे शब्द सच प्रचण्ड, नाम गात्रा तन म्यान टिकाईआ। कलिजुग औध गई हंढ, कोई भेव ना पाए वेद शास्त्रां पढ़ पढ़ थक्की लोकाईआ। खेले खेल विच ब्रह्मण्ड, जोती नूर हरि वरभण्ड, लेख चुकाए अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ यात्रा चरन नातरा इक्क बंधाईआ। उलटी गेड़े आपे लठ्ठ, कलिजुग माया पाए भठ्ठ, अग्नी जोती ताए मठ्ठ, मोह ममता लम्बू आपणी हथ्थीं लाईआ। जोती शब्दी इक्क इक्ठ्ठ, सति सन्तोखी नाल रलाए हठ्ठ, सम्मत पन्दरां आपे वेखे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दरा, कोलम्बू चरन छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, दीप जम्बु करे रुशनाईआ। चरन छुहाए हरि कोलम्बू, रावण गढ़ अपारया। लेख चुकाए

३४
०६

शंकर शिव शम्भू, गणेश गणेशा पूत सपूता वारया। चार दिवारी शब्द कनात सोहँ लाए एका तम्बु, दर दरवाज़ा इक्क खुल्ल्हा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भेखाधारी भेख वटा रिहा। पन्दरां पन्ध मुकावण आया, कलिजुग कल दुहाई। मदिरा मास गन्द गंवावण आया, कलिजुग झूठी मिटे शाही। सतिजुग साचा चन्द चढ़ावण आया, हरि दाता बेपरवाही। जगत नाता तोड़ तुड़ावण आया, मनमुख भुल्ले झूठे राही। गुरमुख साचे जोड़ जुड़ावण आया, गलों कटे जम की फाही। शब्द घोड़े तोड़ चढ़ावण आया, होए सहाए थाउँ थाँई। वागां मोड़ गुरसिख सुहेले लोकमात मुड़ावण आया, दूसर कोए जाणे नाही। जगत विछोड़ा आप विछोड़न आया, दर घर साचे आप बहाए फड़ फड़ बांही। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सदा सुहेला देवे ठंडीआं छाँई। पन्दरां पन्ध करे पान्धी, दिवस रैण इकल्ला। जगत घोड़ा बणया गांधी, पुरी इन्द मिल्या इक्क महल्ला। करोड़ तेतीस चरन बांधी, हरि शब्द फड़ाए पल्ला। सृष्ट सबाई कलिजुग आंधी, अन्तिम वहिण वहाए जल थला। किसे हथ्थ ना आए सोना चांदी, ना कोई पीवे ठंडा जला। जोती जोत सरूप हरि, इक्क चलाए शब्द आंधी, कलिजुग वरते आपणी कला। कलिजुग तेरी कल, लेख किसे ना लिख्या। लक्ख चुरासी वल छल, साची मिले ना नाम भिख्या। साचा मेला गोबिन्द डल डल्ला, गोबिन्द साचा लेख लिख्या। शब्द सुनेहड़ा रिहा घल, सृष्ट

सबाई अन्तिम मिथ्या। चरन छुहाए उप्पर थल, लोकमात लगाए साची मेखया। सम्मत चौदां आप बणाए निहचल धाम अटल, त्रैगुण माया तेरा मिटे सल्लया। शब्द सरूपी सृष्ट सबाई आप चलाए एका हल्ल, गुरमुख चढ़ाए सोहँ साचे रथया। लक्ख चुरासी मनमुख जीवां लाहे खल्ल, नाम मधाणी आपे मथया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप चलाए आपणी गाथया।

❋ पहली भाद्रों २०१३ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल तों प्रताप सिँघ नाम धारीए नूं
चचिआल कोठी ज़िला हिसार शब्द भेज्जया अते उत्तर दी मंग कीती,
उस ने कोई उत्तर ना दित्ता ❋

हरि गोबिन्द गोबिन्द, हरि गोबिन्द समाया। हरि गोबिन्द बिन्द, हरि बिन्द गोबिन्द हरि रघुराया। हरि गोबिन्द मिटे चिन्द, गोबिन्द हरि दर्शन पाया। हरि गोबिन्द अमृत धारा सागर सिन्ध, गोबिन्द हरि साचा नुहावन नुहाया। हरि गोबिन्द सच नरिंद, गोबिन्द हरि साचा तख्त सुहाया। हरि गोबिन्द गोबिन्द बख्शिंद, बख्शणहार आप अख्वाया। हरि गोबिन्द सृष्ट सबाई कराए निन्द, हरि गोबिन्द रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द लेखा लेख लिखाया। शब्द लिखारी लेख, लेख लिखारया। साचे लोचन आपे पेख, आप आपणे रंग समा रिहा। आपे लिखणहारा लेख, अन्तिम आपे आप मिटा रिहा। गुर गोबिन्दा साची नारी, हरि हरि साचा कन्ता। आपे बख्शे चरन प्यारी, आप बणाए साची बणता। शब्द पहनाए तन कटारी, पार कराए जीआं जन्तां। पंचम पैज रिहा संवारी, पंचम चाढ़े रंग बसन्ता। पंचम घोड़े कर अस्वारी, पंच सँघारे देव दंतां। पंचां वेखे वारो वारी, पंचां अमृत आत्म रस मुख चवन्ता। पंचां देवे शब्द उडारी, धुन आत्मक नाद इक्क वजन्ता। पंचां देवे शब्द खुमारी, घर साचा धाम इक्क सुहंता। पंच बणाए दर दरबारी, पंचम आसण जोग वखंता। पंचम होवे पहरेदारी, नाम धन धन्न धन्नवन्ता। पंचां बणया मीत मुरारी, पंचां सुहाए द्वार बंका। पंचां गीत सुणाए अपर अपारी, एका नाउँ एका अंका। पंचां खेले खेल खिलारी, हथ्थ फड़ाए सोहँ साचा धनखा। पंचां देवे शब्द उडारी, पंचां माण जिउँ जन जनका। पंचां करे धर्म जैकारी, प्रगट होए बार अनका। पंचां पैज रिहा संवारी, पुरख अबिनाशी वासी पुरी घनका। राम सिँघ कर घर त्यारी, सिँघ प्रताप प्रभ लौहण आए शंका। निर्मल जोत होई उज्यारी, इक्क वजाए साचा डंका। लोआं पुरीआं करे ख़बरदारी, शब्द सतारी लाए तनका। लक्ख चुरासी पावे सारी, पावे भेव जीअ जीअ जन का।

प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारी, वेखे खेल बन बन का। फड़ शब्द तेज कटारी, वास मिटाए छप्परी छन्न का। चारों कुन्ट हाहाकारी, नाता तुट्टे सरीर तन का। कर्म कुकर्मां रिहा विचारी, आप फिराए मन का मणका। तोड़े गढ़ काया कोट हँकारी, भाण्डा भरम आपे भन्न का। पहली अस्सू आए वारी, शब्द सिँघासण पैज संवारी, जोती आसण मीत मुरारी, मण्डल रासन शब्द उडारी, साचा मेला अनन अननका। अनन जनन जन दर घर आए, पतित पुनीत पुनीता। ननन ननन मन भरम चुकाए, काया रस वखाए फीका। कवण जनन कवण गनन द्वार बंक सुहाए, जोती नूर समाए, दिस ना आए नीकन नीका। गुर सतिगुर शब्द सिँघासण वेख वखाए, नेत्र लोचण कवण रुशनाए, कवण नैण वेखे हरि साक सज्जण सैण कवण जगत शरीका। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, असू तिन्न पाए पहली इक्क तरीका। इक्क तारीख इक्क तिन्न, नौ दर वेख वखाईआ। अन्तिम लेख चुकाए गिण गिण, जोती जामा भेख वटाईआ। प्रगटाए जोत जोत छिन्न छिन्न, सिँघ राम राम रूप समाईआ। अन्तिम मेला पहले तिन्न दिन, थित वार आपणे हत्थ रखाईआ। करे खेल प्रभ भिन्न भिन्न, गुरमुखां आत्म विंन विंन, शब्द निराला तीर चलाईआ। गुर पूरा हाज़र हज़ूरा, दर द्वारे दर्शन पाईआ। गिण गिण, मुख रसना पुच्छ पुछाईआ। कवण भूत प्रेत होए जिंन, कवण गुर सतिगुर रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्बल नगरी वेस धाम अवल्लड़ा इक्क इकल्लड़ा आप वसाईआ। सच महल्लड़ा दस्म द्वारी, शब्द सरूपी चार द्वारी, नाम दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा, आप आपणा साजन साजा, बाडी कोई दिस ना आईआ। प्रगटे जोत देस माझा, जन भगतां रक्खे लाजा, कलिजुग सतिजुग रच्चया काजा, लाड़ी मौत मंगे दाजा, धर्म राए दा खुल्ला दरवाज़ा, पंच विकारा जगत डोली। मनमुखां सुरत सवाणी होई गोली। जूठ झूठ काया रंगण रंगी चोली। लक्ख चुरासी घट घट वासी, आपणी हत्थीं डोली पाईआ। प्रगट होया शाहो शाबासी, गुरमुख वेखे शब्द स्वासी, मात पाताल आकाश पृथ्वी आकाशी, पुरीआं लोआं मण्डल रासी, रवि ससि नस्स नस्स रैण दिवस दिवस रैण रहे पन्ध मुकाईआ। पुरख पुरखोतम ब्रह्मण्ड खण्ड चरनां हेठां रिहा झस्स, जोत निरँजण जन भगतां पाए नेत्र अंजन, शब्द सुनेहड़ा राह साचा रिहा दस्स, कलिजुग वेला अन्त सुहाईआ। चरन धूढ़ साचा मजन, वेले अन्तिम रक्खे लजन, पुरख अबिनाशी आया पर्दे कज्जन, धुरदरगाही साचा सज्जण, जो घड़े सो अन्तिम भज्जण, ना सके कोई बचाईआ। कलिजुग ताल झूठे वज्जण, मन मती जीव माया दजन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर मन्त्र अन्तर जगत दुआरा वेखे पंच बसन्तर, शब्द नाद धुन आत्म धाम धामा राम रामा आपे जाणे आपणा कामा कवण द्वार हरि निरँकार गुर पीर साध सन्त अवतार बैठे आसण लाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सिँघ प्रताप दो जहानी वेख आप हिसाब, काया बस्त्र खोल्ह कताब, अक्खर वक्खर बजर कपाटी पाड़ पत्थर, आपे फोल फुलाईआ। वड प्रताप प्रताप कवण जग रीती, कवण शब्द जणाईआ। कवण रूप काया अतीती, कवण सति सरूप समाईआ। कवण धाम गुर चरन प्रीती, गुर शब्दी रूप वटाईआ। कवण घर सिँघ राम करे काया सीतल सीती, नूरी जोत शब्दी मेल मिलाईआ। कवण वजाए नाद सुणाए साचा कन्न, तन मन्दिर अन्दर राग अल्हाईआ। कवण जाणे मिती मीती, सम्मत सम्मती मास दिवस घड़ी पल रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, एका वेखे सच घर, नौ द्वारे छड्ड दर, दस्म द्वार हरि निरँकार जोत उज्यार शब्द भण्डार सुणनेहार, कवण रूप वटाईआ। कवण धाम सति पुरख है, दीसे हरि अबिनाश। ना सोग ना कदे हरख है, हर घट रक्खे वास। जुग जुग जन भगतां करे परख है, निर्मल जोत करे प्रकाश। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आए जाए दर द्वार, दर द्वारे वेखे मण्डल रास। आए दर शब्द परवाना, गुर गोबिन्द इक्क निशानी। मिले मेल हरि भगवाना, गुण गहिंदे खेल निराली। प्रगट होए वाली दो जहाना, कलिजुग चले अवल्लड़ी चाली। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे दर द्वार कवण भरया कवण खाली। सम्बल नगरी कवण गढ़, कवण कूट वसाईआ। कवण वेखे उप्पर चढ़, कवण राह तकाईआ। कवण वेखे दर द्वारे अग्गे खड़्ह, कवण मलाह बणाईआ। कवण चोटी कवण जड़्ह, कवण नां रखाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, गोबिन्द गोबिन्द रूप समाईआ। सन्त सुहेले आपे रिहा फड़, सगली चिन्द मिटाईआ। कोई ना सके अग्गे अड़, विच हिन्द जोत जगाईआ। सम्मत सोलां जूठे झूठे पत्त डाली जाए झड़, बिरखा बिरखा कोए रहिण ना पाईआ। माया ममता बस्त्र जाणे सड़, ना कोई सके तन छुहाईआ। एका अक्खर गुर पीर साध सन्त जाणे पढ़, पुरख अबिनाशी आपे रिहा अल्हाईआ। ना कोई पीवे हुक्का नड़, मदिरा मास रसन तजाईआ। एका पल्लू नाम फड़ाए साचा लड़, चार वरनां इक्क सरनाईआ। शब्द धार वहाए साचा हड़्ह, मनमुखां रिहा रुढ़ाईआ। बंक द्वार किला कोट ना दीसे गढ़, उच्चे मन्दिर आपे ढाहीआ। आपे घाड़न आपे घड़, आपे लए मिटाईआ। वेख वखाए पृथ्वी आकाश पहाड़ उजाड़, जलां थलां विच समाईआ। गुरमुखां जोत प्रकाश बहत्तर नड़, अन्ध अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। साचे पौड़े जाणा चढ़, निहकलंक सच्ची सरनाईआ। जगत विकारा जाए झड़, वज्जे शब्द धुर डंक सच्ची शनवाईआ। अन्दर मन्दिर आपे बांह लए फड़, दोवें भुजा अग्गे उठाईआ। जगत चतराई मात वड्याई ना कोई सके लड़, शब्द धुजा इक्क उठाईआ। ना कोई पूजे मढ़ी गोर मढ़, दरस दिखाए प्रभ अग्गे खड़्ह, जोती जामा भेख वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्बल

नगर इक्क घर, शब्द दिवारी चार कुन्ट, महल्ल अटल इक्क सुहाईआ। महल्ल अटल उच्चा मन्दिर, प्रभ आपणा आप सुहांयदा। आपे वसया आपणे अन्दर, दूसर कोए दिस ना आंयदा। शब्द सरूपी लाया जन्दर, ना कोई तोड़ तुड़ांयदा। सदा वसेरा डूँघी कन्दर, ना कोई वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी भौंदी बन्दर, गुर पूरा हत्थ ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्बल नगरी साचा वासा, आपे करे पुरख अबिनाशा, सच द्वारे आसण लांयदा। सम्बल नगरी शब्द सिँघासण, प्रभ साची सेज विछाईआ। जोती नूर होए प्रकाशन, दीवा बत्ती ना कोई रखाईआ। साचे मण्डल पावे रासन, गोपी काहना आप अख्वाईआ। आपे होए दासी दासन, जन भगतां सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्बल नगरी वेस कर, घर साचे बैठा मुख छुपाईआ। सम्बल नगरी साढे तिन्न हत्थ, गोबिन्द आप रचाया। अन्दर बैठा हरि समरथ, दिस किसे ना आया। लक्ख चुरासी पाए नत्थ, शब्द डोरी हत्थ रखाया। नौ खण्ड पृथ्वी रिहा मथ्था, सत्तां दीपां लेख चुकाया। जगत चलाए महिंमा अकथ, सतिजुग साचा मार्ग लाया। सतिजुग तेरा साचा रथ, सोहँ नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्बल नगरी वेस कर, वेस अवल्लड़ा आप कराया। गुर गोबिन्द जोत प्रगटाई, हरि चरन सच्ची सरनाईआ। पारब्रह्म शब्द कुड़माई, मुख साचा सगन लगाईआ। दर मन्दिर अन्दर वज्जी वधाई, मंगलाचार इक्क कराईआ। पंचम गायण चाँईं चाँईं, पंचम ताल रिहा वजाईआ। साचा मेला सहिज सुभाई, कलिजुग वेला अन्तिम दए सुहाईआ। लहिणा देणा चुकाए थाउँ थाँईं, बस्त्र गहणा गुरमुखां शब्द तन पहनाईआ। नेत्र लोचन दर्शन साचे नैणा, जन्म जन्म मैल गंवाईआ। अन्तिम भाणा सभ ने सहिणा, निहकलंक सच्ची सरनाईआ। एका एक पुरख अबिनाशी जोत सरूपी मात रहिणा, शब्द वज्जे सच्ची वधाईआ। नाता तुट्टे भाई भैणां, ना कोई दीसे साक सज्जण सैणा, कलिजुग चुक्के लहिणा देणा, सतिजुग साची रुत्त सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, साचा मेला इक्क दर, दर द्वारे आवे जावे फेरा पाईआ।

❊ पहली भाद्रों २०१३ बिक्रमी जेठूवाल तों अमृतसर अकाल तख्त दे प्रधान नूं शब्द भेज्जया अते उत्तर मंग्गया, परन्तू उस कोई जवाब ना दित्ता ❊

सर अमृत सच तख्त है, कवण तख्त अकाल। आपे लिखणहारा लेख लिख्त है, दीना बंधप दीन दयाल। कवण वेला कवण वक्त है, प्रभ साचा होए कृपाल। अन्त विछोड़ा दुनी जगत है, ना कोई शाह ना कंगाल। कवण गुर गोबिन्द

३८
०६

कवण साचा भगत है, लोकमात चले नाल नाल। कवण बूंद कवण रक्त है, कवण काया माटी हाटी जीव खाल। जोती जोत सरूप हरि, एका पुच्छे जगत वर, वेले अन्तिम होए कवण दलाल। कवण दलाल अन्त कलि, कवण दए सहारा। कवण करे वल छल, खेले खेल अपर अपारा। कवण मेटे दूई द्वैती सल, एका एक वखाए एकँकारा। अमृत आत्म कवण द्वारे मिले साचा जल, सर अमृत आत्म धारा। दीपक जोती कवण द्वार रही बल, कवण शब्द वज्जे नाद सुणे धुन्कारा। कवण तख्त अकाल प्रभ बैठा मल्ल, कवण करे तन श्रृंगारा। कवण बस्त्र पहने तन, फड़े तेज कटारा। कवण घोड़ होए अस्वारा। गुर गोबिन्द कवण कूटे चढ़या चन्न, नीला घोड़ा मारे पौड़, धरत मात वेखे इक्क अखाड़ा। कवण कूट सम्बल नगर लभ्मा चौड़, प्रगट होए धुरदरगाही साचा लाड़ा। कवण पूत सपूता ब्रह्मण गौड़, वेद व्यासा होए लिखारा। कवण वेखे परखे मिट्ठा कौड़, घर घर दर दर गुर पीर भरे हँकारा। वेले अन्तिम कवण जाए बौहड़, प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा। धुर दरगाही लाए एका पौड़, दो जहानी वखाए पार किनारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तख्त अकाल अकाल तख्त वेखे सच दुआरा। कवण ज्ञानी ज्ञान जणाई, गुण गोबिन्द गाया। कवण घर वज्जी वधाई, तन शब्द हरि रघुराया। कवण शब्द होई कुड़माई, पंचम सिक्खां मंगल गाया। कवण दर मिले वधाई, राग रागणी रहे अल्लाया। कवण हरि लए प्रनाई, नारी कन्त एका रूप समाया। कवण अमृत आत्म नहाता सर, काग हँस हँस काग रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, एका पुच्छे सच घर, कवण ज्ञानी गुर का ज्ञान, कवण रूप प्रभ चरन ध्यान, कवण सरूप नज़री आया। जगत विद्या मात विद्यार्थी, पढ़े वेद कतेबा। कवण बणे जगत महांसार्थी, लेख चुकाए करोड़ तेतीस देवी देवा। कवण हिन्दी उर्दू गुरमुखी फ़ारसी, कवण जिह्वा रसना गाए अलख अभेवा। कवण शब्द गुर मन्त्र अन्तर तारसी, कौस्तक मणीआ मस्तक लाए थेवा। कवण वारस अन्तिम वारसी, मुख लगाए अमृत आत्म साचा मेवा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका पुच्छे सच घर, कवण धाम वसे निहकाम निहचल नहिकेवा।

गुरदेव गुर शब्द मन्त्रा, गुर मूर्त अकाल। गुर बणाए मात बणतरा, गुरमुख उपजाए साचे लाल। आपे जाणे आत्म अन्तरा, फल वेखे काया डाल। जोती जोत सरूप हरि, एका वेखे सच घर, कवण गुर होए रखवाल। गुर साखी गुर साख्यात, सगला संग निभाए। गुरमुख बणाए पारज़ात, मस्तक चरन छुहाए। मेट मिटाए अन्धेरी रात, अज्ञान अन्धेर मिटाए। अमृत प्याए बूंद स्वांत, साची धार इक्क वहाए। वेखे खेल बातन बात, जमाल बातनी आप वखाए। जिस जन देवे पूरी

३६
०६

दात, सिर आपणा हथ्थ टिकाए। गुर पूरा पुच्छे आपे वात, राह विच ना कोई अटकाए। दूर दुराडा बैठा आपे वेखे मार झात, नौ अठारां दर दुरकाए। आप चढ़ाए औखे घाट, एका पल्ला नाम फड़ाए। बजर कपाटी जाए पाट, जिस जन नाम भल्ला हथ्थ फड़ाए। अमृत धारा मारे ठाठ, एका हल्ला आप कराए। गुर साखत जलया लकड़ी काठ, गुरसिख कवण पार कराए। आत्म अन्तर औखी घाट, दूरन दूर किनारा। दीपक जोत ना जगे लिलाटी, ना कोई मेटे अन्ध अन्धयारा। नाम विकाए साची हाटी, हरिजन जन हरि करे वणज सच्चा वपारा। दुरमति मैल दर द्वारे काटी, देवे एका शब्द सहारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ देवे शब्द वर, आप कराए नौ द्वारे पार किनारा। सोहँ शब्द साचा वर, जोत निरँजण संग रलांयदा। आप दिसाए काया घर, नेत्र अंजन एका पांयदा। कामन तृष्ना जाए हर, भाण्डा भरम भनांयदा। मन सुरती घाड़न आपे घड़, शब्द कुठाली एका पांयदा। कंचन रूप बणाए काया गढ़, नाम सुहागा नाल रलांयदा। साचे अन्दर जाए वड़, जगत दागा आप मिटांयदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी चरन कँवल जन जाणा पड़, बातनी बातन दरस दिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, काया मण्डल आकाश आकाशन, सुरती शब्दी मेल मिलांयदा। शब्द सुरत जगत मलाह, हरि एका एक बणाया। फड़ फड़ बाहों राहे देवे पा, जिस जन आपणी दया कमाया। गुरमुख विरला वेखे साचा थाँ, कोटी कोट चढ़ चढ़ थक्के, हथ्थ किसे ना आया। सोहँ गाउँणा साचा नाउँ भगती बोए अन्तिम पक्के, साचा फल दए खाया। आपे पिता आपे माँ, सदा सुहेला देवे ठंडी छाँ, मन्दिर अन्दर दए चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका एक रिहा जगाया। एका पुरख एका नारी, एका कन्त सुहागीआ। इक्क शब्द इक्क भण्डारी, एका देवणहार संसारी, एका जोग जुगन्तर जागीआ। एका वणज इक्क वपारी, सृष्ट सबाई होए पनिहारी, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, चरन धूढ़ कराए मजना साचा माघीआ। आप बहाए बंक द्वारी, अस्सू तिन्न दिवस विचारी, जमन किनारा ढहि उचारी, जुग जुग धोवे दाग़ीआ। ब्यास किनारा पहली वारी, पुरख अबिनाशी बन्नी धारी, हाढ़ सतारां दिवस विचारी, सम्मत सोलां लेख लिखासीआ। सिँघ जैमल तेरी शब्द उडारी, पंचां करे चरन प्यारी, बावन बावन भेखाधारी रूप वटासीआ। भेख पखण्डा करे ख्वारी, शब्द डण्डा हरि करतारी, सिँघ चरन रहिणा ख़बरदारी, प्रगट होए घनकपुर वासीआ। चरन सिँघ प्रभ चरन ध्यान, एका ओट रखावणी। प्रगट होए हरि भगवान, एका रुत्त सुहावणी। धर्म झुलाए इक्क निशान, गुरमुखां पूर कराए भावनी। ना कोई दीसे जीव निधान, मेट मिटाए दुष्ट दुराचार कामन कामनी। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दो जहानां एका देवे वर, सोहँ शब्द सच्ची जामनी।

सम्मत सोलां रक्खणा याद, लोकमात कलि आया ए। सच द्वार सुणे फरयाद, डेरा डेरे लाया ए। धुर दरगाही देवे दाद,
चारों कुन्ट घेरा रिहा पाया ए। सत्तर लक्ख रहे अराध, हू हू अल्ला नाअरा लाया ए। देवे वर प्रभ माधव माध, हरि
मोहणी रूप वटाया ए। ना कोई दीसे सन्त साध, बोध अगाध ना किसे जणाया ए। आपणा भार रहे लाध, माया ममता
सिर उठाया ए। एका वज्जणा साचा नाद, लोआं पुरीआं दए सुणाया ए। शब्द जणाई हरि ब्रह्माद, नौवां खण्डां आप उठाया
ए। आपे जाणे आदि जुगादि, आप आपणे विच समाया ए। कलिजुग बख़्शी साची दाद, पंच विकारां संग रलाया ए। जोती
जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दे मिल्या वर, सम्बल नगरी धाम सुहाया ए। सम्मत सोलां सोलां कल
धार, लोकमात वड्याईआ। जोती नूर कर उज्यार, शब्द कटार चलाईआ। खाली करे भरे भण्डार, राज राजानां ख़ाक
रुलाईआ। ना कोई दीसे बंक द्वार, घर घर चारों कुन्ट पए दुहाईआ। लहिणा देणा मुहम्मद यार, वेले अन्तिम रिहा चुकाईआ।
वेख वखाणे ब्यास किनार, आप आपणा चरन छुहाईआ। गुरमुख साचे कर त्यार, शब्द सुनेहड़ा इक्क घलाईआ। आपे
होए पहरेदार, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। फड़ फड़ बेड़ा लाए पार, सोहँ डण्डा नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि,
४१ आप आपणी जोत धर, थल कपूर राज राजाना आप रखाए एका आणया। सम्मत सोलां चरन छुहाए, हरि गोबिन्द रूप ४१
०६ समाया। शब्द भण्डारा खोल्ह वखाए, वरन अवरनां आप अख्वाया। जगत वणजारा आप अख्वाए, साचा मार्ग रिहा लगाया। ०६
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच दुआरा इक्क सुहाया। सम्मत सोलां सोलां धार, पन्दरां कत्तक रुत्त
सुहाईआ। प्रगट होए नर अवतार, वासी पुरी घनक मिले वड्याईआ। गुरमुख साचे सन्त दुलार, आप आपणे अंग लगाईआ।
शब्द सरूपी दए प्यार, जिउँ नानक अंगद अंग लगाईआ। इक्क वखाए दर दरबार, चार वरनां साचा प्यार, ऊँचां नीचां
भेव मिटाईआ। राजा राणा होए ख्वार, शाह शहान दए हुलार, मस्तूआणा धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप
आपणी जोत धर, शाह संगरूर बख़्शे जोती नूर, आत्म तूर शब्द जणाईआ। शब्द वखाए साचे घर, हरि हरि आपे वसया।
सच दुआरा वेख दर, धुर दरगाही आया नस्सया। अमृत आत्म वेखे सर, कलिजुग रैण अन्धेरी मस्सया। चार वरन आवे
डर, माया नागनी मनमुख जीवां डस्सया। गुरमुख विरला भाणा रिहा जर, गुर चरन कँवल साजण बहि बहि हस्सया। ना
जन्मे ना जाए मर, जुगां जुगन्तर देवे वर, आपे पुरख नारी नर, हर घट घट अन्दर वसया। जोती जोत सरूप हरि,
आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे जगत वर, पंच विकारा चरनां हेठ झस्सया। गुरमुख सदा अडोल, आप रखाया।
चार वरनां इक्क दुआरा खोल्ह, ऊँचां नीचां भेव मिटाया। शब्द सरूपी करे चोल्ह, कलि सोलां सम्मत सोलां सोलां कल वरताया।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मुख शब्द सिँघासण, प्रगट होए पुरख अबिनाशण, सच समग्री साची रासन, साचा धाम सुहाया। सम्मत चौदां पहली चेत, गुरमुख चित चितारना। प्रभ वसे हरिजन काया खेत, रसना रसन उचारना। दरस दिखाए नेतन नेत, नित्त नित्त रूप वटावणा। अन्तिम लहिणा देण चुकाए महीना जेठ, हाढ़ सतारां मेल मिलावणा। ना कोई दीसे राज राजान शाह सुल्तान सेठ, प्रभ ख़ाकी ख़ाक मिलावणा। गुरमुखां रक्खे साया हेठ, सिर आपणा हथ्थ टिकावणा। कलिजुग जीव भन्ने कौड़े रेठ, शब्द डण्डा हथ्थ उठावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत देवे इक्क वर, दर दुआरा बंक सुहावणा। पहली चेत होए दास, जोत निरँजण भेख वटाईआ। फिरे फिराए पृथ्वी आकाश, पुरीआं लोआं फेरा पाईआ। कलिजुग अन्तिम ब्रह्मे मुख होए उदास, अट्ठे नेत्र वेखे आप उठाईआ। शिव शंकर बाशक तशका गल वेख करे हासी, अन्तिम पैणी कलिजुग फाहीआ। करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द वेखे मार झाकी, कवण जोत लोकमात करे रुशनाईआ। धर्म राए लहिणा देणा वेखे बाकी, कलिजुग अन्तिम हिसाब मुकाईआ। लाड़ी मौत बणे साकी, लक्ख चुरासी एका जाम प्याईआ। ना कोई जाणे बन्दा ख़ाकी, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। गुरमुखां खोल्हे बन्द ताकी, नाम कुंजी आपणी हथ्थीं लाईआ। जाणे जणाए भविख्त वाकी, लेख लिख्त ना सके कोई जणाईआ। आपे होए पाक पाकी, पतित पुनीत रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पहली चेत गुरमुख साचे सन्त जनां देवे मात वड्याईआ। सम्मत चौदां गुरमुख घर घर, गुरसिख वज्जे वधाईआ। अट्ठ सट्ठ तीर्थ नुहाए साचे सर, जिस दर चरन छुहाईआ। सतिजुग साचे मिले वर, होए मात रुशनाईआ। आपणी करनी रिहा कर, जीव जन्त साध सन्त भेव ना राईआ। जो जन सरनी जाए पढ़, आदि अन्त होए सहाईआ। एका अक्खर मात पढ़, लोचन तीजा इक्क खुल्हाईआ। काया कोट तोड़ किला हँकारी गढ़, साचा घर इक्क वसाईआ। हौली हौली अन्दर मन्दिर आपे चढ़, आपे कुण्डा देवे लाहीआ। दर द्वारे अग्गे खड़, छोटा मुंडा साधां सन्तां देवे शब्द जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नारी नर एका धाम सुहाईआ। नारी पुरख भतार, कन्त कन्तूल्हिआ। शब्द घोड़ा भगत अस्वार, झूले साचा झूलया। दो जहानां उतरे पार, आदि अन्त चुकाए लहिणा देणा मूलया। सच कराए वणज वपार, फल लगाए काया डाल्ह, गुरमुख साचा फलया फूलया। शब्द जोग इक्क अपार, दरस अमोघ विच संसार, धुर संजोग कलिजुग तेरी अन्तिम वार, शब्द सिँघासण इक्क वखाए, ना कोई पावा ना कोई चूलया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत चौदां गुरसिख तेरी आत्म अन्दर डाहे, जो जन दर द्वारे आए भूलया। गुरमुखां रुत्त सुहाए, चाढ़ रंग बसन्तीआ। आप

आपणे सुत बणाए, दिवस रैण सुणे बेनन्तीआ। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत आप अख्वाए, महिंमा अगणत गणत गणंतीआ। चारे कुन्ट जै जैकार कराए, सुर नर देव दंतीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नारी पुरख इक्क घर, एका धाम सुहंतीआ। नारी पुरख शब्द वरन, गोत किसे ना जाणीआ। जो जन आए सरनाई साची सरन, शब्द जणाए धुर फ़रमाणीआ। लेख चुकाए मरन डरन, अन्तिम चुक्के जम की काणीआ। मनमुख जीव आपणा कीता आपे भरन, ना कोई जाणे पवण मसाणीआ। गुरमुखां नेत्र खोल्हे हरन फरन, दिवस रैण देवे चरन ध्यानीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नारी पुरख पुरख नारी, एका दर दुआरा बंक सुहाईआ। दर द्वार आए जन, आत्म आस रखाईआ। जग रंग लग्गा तन, तृष्न प्यास तड़फाईआ। किसे दिस ना आवे आपणा मन, चारों कुन्ट दहि दिशा फिरे हलकाईआ। साचा राग ना सुणन पाए कन्न, आलस निन्दरा धी जवाईआ। दर घर वसेरा ना भाए छप्परी छन्न, महल्ल अटल आस रखाईआ। भाण्डा भरम दर देवे भन्न, जो जन आपणा जन कढाईआ। साचा राग सुणाए कन्न, नाद अनादा गीत सुहाईआ। आपे करे पुण छाण, शब्द मधाणा हथ्थ रखाईआ। गुरमुख विरले आत्म लाए बिरहों बाण, आर पार आप कराईआ। आपे बख्शे चरन ध्यान, अन्दर बाहर दरस दिखाईआ। शब्द बिठाए इक्क बिबाण, लोआं पुरीआं पार कराईआ। दर घर साचा वेख मार ध्यान, मति मन बुध सुरत संग वसाईआ। आपे चतर सुघड़ स्याण, अकाल मूर्त रूप वटाईआ। आपे ब्रह्म शब्द ज्ञान, नाद तूरत आप वजाईआ। आपे गोपी आपे काहन, शब्द बंसरी रिहा वजाईआ। आपे सीता आपे राम, आप आपणा कारज रचाईआ। आपे मोहण माधव शाम, आपे राधा कृष्न समाईआ। आपे नानक नाम निधान, निरगुण रूप वटाईआ। आपे गोबिन्द शब्द खण्डा किरपान, आप आपणे हथ्थ उठाईआ। आपे जोद्धा सूर बली बलवान, शाह सुल्तान आप अख्वाईआ। आपे दाता हरि मेहरवान, जगत जगदीशा आप हो आईआ। आपे देवे धुर फ़रमाण, लेखा लिखणहार आप अख्वाईआ। आपे सुणे सुणाए कान, रसना जिह्वा कोए ना गाईआ। काया मन्दिर बैठ सच मकान, दसम द्वारी नाउँ रखाईआ। नौ द्वारे जगत निशान, जगत वासना विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे एका वर, नारी नर साचे वर, सम्मत चौदां इक्की इक्की रिहा पाईआ। एका इक्की इक्क घर, एका एक ओंकारया। शब्द धार तिक्खी जगत धर, वेखे खेल सर्ब पसारया। शब्द सिक्खी साचे वर, सोहँ जै जैकारया। पुरख अगम्मा देवे वर, आप आपणा काज संवारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती जामा भेख धर, जोती नूर करे उज्यारया। रोग सोग प्रभ कट्ट, आए चरन द्वारया। साची वस्त मिले साचे हट्ट, खाली भरे भण्डारया। शब्द पाए साचा पट्ट, अंगी अंग करे अंगकारया। दूई द्वैती

मेटे फट्ट, तुट्टे माण मोह हंकारया। आपणी किरपा करनी झट्ट, मिटे दुःख भुक्ख संसारया। साचा रस रसना लईए चट्ट,, सांतक सुख मिले द्वारया। मिटे तृष्ना काया मट्ट, आए तोट ना दूजी वारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ग़रीब निमाणे रक्खे पति, पति पतिवन्ता आप अख्वा रिहा। पंच तत्त जगत अकार, प्रभ साचे साजण साज्जया। कर्म जरम हथ्थ करतार, लेखा जाणे ग़रीब निवाज्जया। रोग सोग चिन्त विच संसार, माया ममता जीव जन्त दाज्झया। रोग सोग भरे भण्डार, ना कोई संवारे आपणा काज्जया। शब्द जोग अपर अपार, आप चुकाए दया कमाए जो जन दर द्वारे आए भाज्जया। सोहँ नाउँ रसना गाए, तापदिक कोई रहिण ना पाए, नाड़ बहत्तर तिन्न सौ सट्ठ हाडी जोड़ी जोड़ पीड़ मिटाए, शब्द लडाए साचा लाडया। साची घोड़ी आप चढ़ाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर द्वारे देवे वर, ग़रीब निमाणे गले लगाए, दर द्वार ढहि ढहि ढेरया। होए जगत ख्वार, ना कोई देवे मात दलेरीआ। सुखला किशना पक्ख अन्ध अंध्यार, चारों कुन्ट फिरे अन्धेरीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर द्वारे देवे वर, कर कर आपणी मेहरीआ। सिर मुख कन्न, नक्क हथ्थ पैर जन अटयां। आपे बेड़ा देवे बन्न्ह, लग्गी अग्ग बुझाए काया भट्ठया। पवण मसाणी देवे डन्न, धुरदरगाही आया नट्ठया। गुरमुख काया आप चढ़ाए साचा चन्न, चरन प्रीत जो जन रखाए साचा हट्ठया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रोग सोग चिन्त मिटाए, ताप रहिण ना पाए मट्ठया। मिटे रोग सोग, रखाए आपणे अंग। रसना चुगाए शब्द चोग, मुख रहिण ना पाए जगत खंघ। साचा मेला धुर संजोग, मानस जन्म ना होए भंग। आपे कट्टणहारा रोग, वड दाता सूरा सरबन्ग। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बंक द्वारे देवे वर, कटे भुक्ख नंग। सम्मत चौदां रक्खणी आस, प्रभ घर घर पूर कराईआ। जो जन तजाए मदिरा मास, मंगे सरन सच्ची सरनाईआ। पूत सपूता कुक्ख करे निवास, फल काया डाल्ह लगाईआ। एका देवे शब्द धरवास, अवल्लड़ी चाल चलाईआ। रसना गाउँणा स्वास स्वास, सुफल कुख मात कराईआ। गुरसिख ना होए कदे उदास, गुर पूरा दए मात वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे वर, साचे घर वज्जे वधाईआ। मनमति मात हलकाई, घर साचा मात ना दस्सया। गुर पूरे होई जगत जुदाई, साचा राह किसे ना दस्सया। जूठी झूठी जगत कुड़माई, वेला अन्तिम आए नस्सया। राए धर्म पाए फाही, दर द्वारे बहि बहि हस्सया। ना कोई होए जगत सहाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे शब्द वर, राह साचा एका दस्सया।

✻ १२ भाद्रों २०१३ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल तों राष्ट्रपती डा० राजिन्दर प्रशाद नूं दिल्ली विखे शब्द भेज्जया ✻

राष्ट्रपति पति कर ध्यान। प्रगट होए हरि समरथ, समरथ पुरख विच जहान। शब्द चलाए साचा रथ, नौ खण्ड पृथ्वी इक्क ध्यान। महिंमा जगत चलाए अकथ, ना कोई जाणे जीव जन्त नादान। अन्तिम सीआं साढे तिन्न हथ्थ, कलिजुग काया सुंञ मसाण। सगल वसूरा जाए लथ्थ, जो जन प्रभ अबिनाशी दर्शन पान। जोती जोत सरूप हरि, अस्सू तिन्न दया कमाए, द्वार बंक सुहाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। उठ जाग, प्रभ साचे शब्द जणाईआ। साचा मेला कन्त सुहाग, नारी कन्ता आप अख्वाईआ। जुग जुग धोवे काया दाग़, जन भगतां होए सहाईआ। पकड़न आवे तेरी वाग, नौ खण्ड पृथ्वी दए दुहाईआ। सत्तां दीपां दीपक जोती बुझे चिराग, कलिजुग काया आपणा रंग वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, शब्द हलूणे रिहा जगाईआ। सत दीप नौ खण्ड, प्रभ खण्ड खण्ड करावणा। आपे करे आपणी वंड, भेद अभेदा भेव छुपावणा। सोहँ शब्द चण्ड प्रचण्ड, सृष्ट सबाई करे खण्ड, वड दाता खेल करे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज आप समावणा। नार दुहागण दिसे रंड, सन्त कन्त भगवन्त ना किसे हंढावणा। अन्तिम तुट्टे मात घमंड, जीव जन्त ना सीस झुकावणा। प्रभ चरन द्वारे साची ठण्ढ, जगत जगदीशा हरि आप अख्वावणा। साची दात प्रभ देवे वंड, बीस इकीस मुख साचा सगन लगावणा। वेखे खेल विच ब्रह्मण्ड, ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीस देवी देव भेव ना पावणा। चरन कँवल जो जन जाए मात सरन, शब्द छत्र प्रभ साचे सीस झुलावणा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानणा, निहकलंक नरायण नर अवतार, जोती शब्दी शब्दी जोती विच समावणा। अस्सू तिन्न रक्खणा याद, धुरदरगाही आप जणांयदा। आपे जाणे जुगादि आदि, आदि अन्त आपणा हथ्थ रखांयदा। शब्दी शब्द जणाए बोध अगाध, सृष्ट सबाई अग्नी अग्न जलांयदा। सोहँ शब्द वजाए साचा नाद, धुन आपणे हथ्थ रखांयदा। प्रगट होया माधव माध, साचा कन्त कन्तूहल मात अख्वांयदा। सृष्ट सबाई छाण पुण, भारत खण्ड पुकार रिहा सुण, आपे जाणे गुण अवगुण, गुणवन्ता आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मात चुण, आप आपणा मेल मिलांयदा। अस्सू तिन्न साढे दस, प्रभ धर्म निशान लगावणा। सृष्ट सबाई करे वस, आपणा कर्म कमावणा। नेत्र मुख मिलणा हस्स, हरि साचा सुख उपजावणा। आत्म हँकार जाए नस्स, आत्म रस गंवावणा। सदी बीसवीं होए बस, बीस बीसा हथ्थ ना आवणा। एका राह साचा रिहा दस्स, पुरख अबिनाशी चरन ध्यान लगावणा। तीर निराला मारे कस, हरि शब्द कमान उठावणा।

राम रामा होया वस, भबीखण भेखा भेखाधारी अख्वावणा। जोती जोत सरूप हरि, सच सुनेहड़ा देवे वर, चरन सरन प्रभ जाणा तर, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाजा चार वरन इक्क खुल्ल्हावणा। चार वरन इक्क धार, एका रंग रंगावणा। साची सरन हरि निरँकार, ऊँच नीच भेव मिटावणा। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, कमलापाती मेल मिलावणा। अन्दर वेख मार झाती हरि साचा मीत मुरार, वेले अन्तिम जिस बचावणा। दरस दिखाए अगम्म अपार, बूंद स्वांती अमृत आत्म जाम पयावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवण आए जगत दान, पंचम पंचां हथ्थ फड़ावणा। शब्द सुनेहड़ा मोड़। प्रभ वेखे चढ़ चढ़ शब्द घोड़। जोती शब्दी दो जहानी जुड़या जोड़। जीव ना जाणे मात अनभोल, अन्तिम पैणी लोड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सम्मत सोलां वेखे परखे मिट्ठे कौड़। जोत सरूपी हरि निरँकार, शब्दी बणत बणाईआ। मेल मिलाए सच्ची सरकार, आदि अन्त ना होए जुदाईआ। कलिजुग कर्मां पैणी मार, ना सके कोई बचाईआ। राज राजाना दर दरबाना शाह सुल्तानां तख्त जुदाईआ। गोपी काहना कृष्न प्रभ रमईआ रामा, जोती नूर करे रुशनाईआ। चार वरनां जीआं जन्तां सोहँ मिले साची नईआ, लक्ख चुरासी उतरे पार। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अस्सू तिन्न आए दर दिल्ली दरबार। दर द्वारका जाए बण, मिले मेल भगवन्ता। जोत राधका नाम धर, सुरती मेला साचे कन्ता। राम रामा मिले वर, मेले आदिन अन्ता। सीता सीतल सच घर, मिले वड्याई जीव जन्तां। कलिजुग अन्तिम मिले वर, प्रगट होए हरि भगवन्ता। राष्ट्रपति चरन धूढ़ नहाउणा साचे सर, प्रभ साचा लेख लिखंता। शब्द भण्डारा आत्म घर देवे भर, रक्खे पति अन्त पतिवन्ता। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, निहकलंक नरायण नर, जुग जुग मेला आप मिलाए, जुग जुग विछड़े सन्ता।

हरि प्रभ रच्चया काज, जोत जगाईआ। आपणा साजण साज, बणत बणाईआ। शब्द सिँघासण सीस ताज, साध सन्त सुणाईआ। कलिजुग अन्तिम रक्खण आया लाज, आपणा भेव छुपाईआ। शब्द उडाए साचा बाज, डोरी आपणे हथ्थ रखाईआ। नाम चलाए इक्क जहाज़, हरिजन साचे संग रलाईआ। सोहँ मारे इक्क आवाज़, सोई सुरती आप जगाईआ। सच कराए एका काज, काअबा काया इक्क वखाईआ। धुर दरगाही साचा राज, मस्तक चरन धूढ़ी लगाईआ। मनमती खोल्ह्े पाज, गुरमती जगत जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौ जेठ वीह सौ बारां बिक्रमी आप

आपणी रचन रचाईआ। नौ जेठ वीह सद, हरि साचे रंग रंगाया। शाह रूमा संग ईस मूस, फूलन सेहरा सीस गुंदाया। आपणी हथ्थीं पीसण पीस, सेवक सेव रिहा कमाया। लहिणा देणा बीस इकीस, देवी देवा आप जगाया। छत्र बन्ने साचे सीस, तेरां तेरी रुत्त सुहाया। गुर संगत तेरी ना कोई करे रीस, वीह सद ग्यारां अस्सू तिन्न तेल चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत विहारा आपणे हथ्थ रखाया। गुर संगत तेरी सेव कमाई, सद इक्क इक्क सद अरदास कराई। पुरख अबिनाशी किरपा कर, किला लाल वंड कराई। सवा पंझी वक्ख कर, मायाधारी माया वहिण वहाई। अग्ग आगरे आपे धर, शब्द फुँकारा लाई। मनी सिँघ प्रभ दित्ता वर, आपे लए मिटाई। सवा पंझी झोली भर, पहली बणत बणाई। लहिणा देणा चुक्के डर, रिहा हिसाब मुकाई। आपे लाए साचे घर, साचा हुक्म जणाई। जगत बणाए साचा घर, नौ द्वार खुल्लाई। सिँघ जगदीशे अग्गे धर, अचरज रीत चलाई। सवा पंझी मिल्या वर, प्रभ नीहां हेठ दबाई। भरया होया खाली घर, प्रभ साचे दी सच वड्याई। साधां सन्तां आवे डर, वेख वेख नौ दर देण दुहाई। अग्गे बैठा साचा हरि, शब्द सिँघासण डेरा लाई। पुरीआं लोआं चरनां हेठ धर, उप्पर बैठा आसण लाई। चन्द सूरज रोवण घर घर, पुरख अबिनाशी दिस ना आई। ब्रह्मा शिव मंगे वर, दोए जोड़ सीस झुकाई। करोड़ तेतीसा गया हर, सुरपति राजा इन्द दए दुहाई। गुरमुख साचे मिल्या वर, मिले मात वड्याई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे विच समाई। हरि भाणा बलवान, किसे ना जाणया। धर्म झुलाए इक्क निशान, वाली दो जहानया। सत्तां रंगां देवे दान, सिँघ मनजीता कर परवानयां। करोड़ तेतीसा चरन करे इशनान, प्रभ साचे धाम सुहानयां। प्रगट होया विच जहान, नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां मारे कानया। पुरख अबिनाशी खेले खेल महान, राज राजानां शाह सुल्तानां आप वखावण जाए कलिजुग तेरीआं अन्त निशानीआं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरी पाए रास, अट्ठे पहर होए दास, गुणवन्ता गुण निधानया। गुर संगत तेरा साचा घर, प्रभ साची वस्त टिकाई। सवा पंझी सेवा कर, सच निशाना आप बणाई। चवी हथ्थ धरत मात तों उच्चा धर, साढे तिन्न हथ्थ सृष्ट वखाई। चारों कुन्टां आउणा डर, ना होवे कोए किसे सहाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छोटे बाले जगत निधाने चल्लया करन तेरी कुड़माई। सवा पंझी तीजी वंड। पुरख अबिनाशी गुरमुखां आत्म पाई ठण्ढ। अस्सू तिन्न अमृत वेला सवा पंज। आपणी हथ्थीं खोल्ले गंढ। गुर संगत मेला सज्जण सुहेला, भाग लगाए पहाड़ गंज। आपे गुर आपे चेला, आपे वसे रंग नवेला, मायाधारी मेट मिटाए कोई ना दिसे किसे कारू गंज। शब्द सिँघासण लाए आसण, पुरख अबिनाशी दासी दासन, गुरसिख दया कमाए सेवा लाए जिउँ भाई मंझ।

शब्द ताज प्रभ सीस टिकाए, पंचम पंचां हुक्म सुणाए, शब्द सेहरा सीस बंधाए, सृष्ट सबाई नेत्र वहाए अंझ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वक्त सुहाए सवेर सञ्झ। अस्सू तिन्न अमृत वेला, वक्त सुहाउँणा सवा पंज। गुरमुख साचे साचा मेला, मेल मिलाए प्यारे पंज। जोत निरँजण चाढ़े तेला, मेट मिटाए जगत विछोड़ा ग़मी ग़म। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुरती शब्दी दर साचे मेला, नाद अनादी हीर रंझ। गुर संगत हरि शब्द जणाई। सवा पंज, पंज शब्द हरि भेंट चढ़ाई। पंज मुख पंज सुक्ख पंज भुक्ख प्रभ दए गंवाई। पंच लेखा मिटे उलटा रुक्ख, साचा मेला सहिज सुभाई। शब्द सिँघासण उज्जल मुख, गुर चेला रूप हरि दिखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत सेवा तीजी भेंट अस्सू तिन्न आपणी हथ्थीं शब्द सिँघासण देवे अरदास कराई। तीजा लहिणा जाए मुक्क। अग्गा नेड़े आए ढुक। पहली चेत पहला वेख काया खेत, गुरमुखां उतारे तन मन काया भुक्ख। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणा भेख।

❊ १६ भाद्रों २०१३ बिक्रमी हरिभगत जेठूवाल आत्मा सिँघ नूं वर दित्ता गया ❊

धर्म द्वारे प्रभ अबिनाशी सर्ब घट घट, प्रभ रिहा विचार। ना कोई सहाई तीर्थ तट्ट, तट्ट तीर्थ आई हार। लेखा मुकया काया हट्ट, सिँघ बलजीता विच संसार। आत्म जोती बुझे झट्ट, ना कोई देवे मात उभार। बिरध अवस्था लग्गी सट्ट, ना कोई दीसे होर सहार। पुरख अबिनाशी खोल्ह्या बजर कपाट, शब्द जणाया अपर अपार। नूरी दरस लट लट, चरन सरन सच्ची सरकार। लेख चुकाए जगत मट्ट, मढ़ी गोर सुंञ मसाण। चरन कँवल जन जाए ढठ्ठ, प्रभ मोड़े मोड़ पवण मसाण। उलटी गेड़नहारा लट्ट, धुरदरगाही धुर दी बाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शे बख्शणहार निशान। बिरध अवस्था शब्द जणाई, जगत विछोड़ा कटया। चरन सरन सरन चरन सच्ची सरनाई, मिले वस्त घर साचे हट्टया। पंचम नाता तत्त हरि हरि तत्त रिहा जुड़ाई, अमृत आत्म काया झट्टया। शब्दी जोती पवण टिकाई, स्वास स्वासी आपे रटयां। काया माटी करे कुड़माई, सुरती लाहा एका खट्टया। तिन्न सौ सट्ठ हाडी वज्जे वधाई, खेले खेल बाज़ीगर नटयां। पूर्ब लहिणा प्रभ झोली पाई, चरन सेव साची खट्टी खट्टया। पूत सपूता मिले वधाई, लेख चुकाए आन बाटयां। निर्मल जोती दए जगाई, लेख मुकाए साढे तिन्न तिन्न हाथया। उन्नी असू प्रभ पति रखाई, सगल वसूरा लथ्थया।

रोग सोग चिन्त ना लग्गे राई, शब्द डोरी प्रभ साचे नथ्थया। सच वस्त हरि झोली पाई, आप जणाई आपणी गाथया। गुरसिख धन्न धन्न तेरी कमाई, प्रभ साचे भाणा तेरे हथ्थ रक्खया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका बख्शे जिया दान, उन्नी अस्सू ना बणे तेरे घर कोई सथया।

✻ पहली अस्सू २०१३ बिक्रमी दिल्ली जाण समें हरिभगत द्वार जेठूवाल विच शब्द उचारया गया ✻

इक्क इकल्ला कर आकार, एका एकँकारया। दूजी बन्ने शब्द धार, प्रगट हो विच संसारया। तीजे खेल अपर अपार, जोती जामा भेख न्यारया। चौथे घर रिहा वेख, साध सन्त गुर पीर अवतारया। पंचम लावण आया मेख, पंचम मीता पंच प्यारया। छेवें मेट मिटाए औलीए पीर शेख़, कलिजुग मिटे रैण अन्ध अंध्यारया। सत्तवें सत्तां दीपां रिहा वेख, सत्त रंग निशान आप बणा रिहा। अठवें अठ्ठां तत्तां लिखे लेख, लक्ख चुरासी जून उपा रिहा। नावें नौ खण्ड नौ दर जूठा झूठा भेख, भेखाधारी भरम भुला रिहा। दसवें वेखे दस दस्मेश, गोबिन्द काया जोत समा रिहा। ग्यारवें गुप्त रखाया आपणा एका एक, नौ द्वारे मात दिसा रिहा। सम्मत बारां सन्त सुहेले आपे वेख, सतारां हाढ़ी जोड़ जुड़ा रिहा। सम्मत तेरां नेत्र लोचन लैणा पेख, नानक तेरी तेरां धार, आपणी हथ्थीं कुण्डा ला रिहा। चौदवें गुरमुखां लाए मस्तक मेख, लहिणा देणा मूल चुका रिहा। पन्दरवें वसे आप विसेख, अभेव भेदा भेव छुपा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत सोलां सोलां कल आप आपणा भेख धर, सृष्ट सबाई कलिजुग झोली पा रिहा। नानक तेरी तेरां धार, प्रभ तेरां लए तुलाईआ। प्रगट हो विच संसार, निहकलंका नाउँ रखाईआ। शब्द कंडा अपर अपार, सोहँ डण्डा नाल लगाईआ। लक्ख चुरासी पावे वंडां, नौ खण्डां थाउँ थाँईंआ। वेख वखाणे जेरज अंडां, उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। भेव चुकाए विच ब्रह्मण्डां, रूप अनूपा हरि रघुराईआ। जोत निरँजण एका फड़या कंडा, कलिजुग अन्तिम दए दुहाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी राज राजानां शाह सुल्तानां अन्तिम वढुण चल्लया कंडां, आप आपणा भेव चुकाईआ। गुरमुख साचे सन्त जनां आत्म दर पावे ठण्डां, अमृत धार शब्द जणाईआ। आपणी हथ्थीं देवे गंढां, सच वस्त हरि झोली पाईआ। मनमुखां आत्म होई रंडा, कन्त सुहाग ना कोई हंढाईआ। दर दर घर घर भेख पखण्डा, गुर पीरां सार ना राईआ। लोकमात पायण वंडां, झूठी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी वेखे थित, भगत सुहेला नित नवित्त, सम्मत तेरां तेरी रुत्त सुहाईआ। रसना गाया नानक गुर, हरि हरि साजन मीता। मिल्या मेल गोबिन्द धुर, अचरज

कलिजुग रीता। शब्द जोती जोड़ी गई जुड़, सृष्ट सबाई आपे जीता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे वेख वखाणे गुर दर मन्दिर अन्दर जगत मसीता। पहली अस्सू भगत विहार, जगत करे रघुराईआ। अमृत वेला सवा चार, नौ खण्ड पृथ्वी लेख लिखाईआ। खेले खेल खेलणहार, जीव जन्त भेव ना राईआ। शब्द सुनेहड़ा भगत द्वार, देवणहार आप अख्वाईआ। आपे अन्दर आपे बाहर, गुप्त जाहिर थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां आसण आस पुजाईआ।

✻ सिँघासण वाले पलँघ नूं हिलाउँणा ते फेर लिख्त कराउँणी ✻

शब्द सिँघासण हरि हिलाया, कलिजुग जोत जगाईआ। गुरमुखां दे नेड़े आया, मनमुखां रिहा डराईआ। लक्ख चुरासी गेड़ रिहा कटाया, चरन प्रीत इक्क वखाईआ। मनमुख जीवां रिहा दबाया, जोत सरूपी भार पाईआ। आप आपणा रिहा छुपाया, दिस किसे ना आईआ। करनहार सदा अख्वाया, करता कादर हरि रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सिँघासण रचन रचाईआ। चार कुन्ट चार दीवार, चारे जुग हिलांयदा। जुग जुग मात लए अवतार, जुग जुग भेख वटांयदा। जुग जुग खेले खेल अपार, जुग जुग बणत बणांयदा। जुग जुग सन्त सुहेले लए अधार, जुग जुग मनमुखां आप खपांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार, कलिजुग वक्त सुहांयदा। ईसा मूसा मुहम्मदी यार, यार यारी तोड़ निभांयदा। नानक जोती दस अवतार, आप आपणे विच समांयदा। गुर गोबिन्दा कर लिखार, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। प्रगट होवे विच संसार, निहकलंका नाउँ रखांयदा। शब्द घोड़ा अपर अपार, नीली छत्तों पार करांयदा। नाम तोड़ा सीस दस्तार, नाम कटार तन सजांयदा। लोआं पुरीआं करे खबरदार, ब्रह्मा शिव देव हिलांयदा। मातलोक कर विचार, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। गुरमुखां करे ख़बरदार, मनमुखां गूढ़ी नींद सवांयदा। जुग जुग लहिणा देणा कर्ज उतार, आपे भाणे विच रखांयदा। आत्म जोती शब्द अधार, वरन गोती भेव मिटांयदा। जगत वासना कढ्ढे खोटी, आप चढ़ाए साची चोटी, बन्द किवाड़ा आप खुल्हांयदा। नाम फड़ाए साची सोटी, मनमुख भुल्ले जीव कोटन कोटी, गुरमुख विरले चरन लगांयदा। कलिजुग औध होई छोटी, गुर गोबिन्दा लेख लिखांयदा। मायाधारी हथ्थ ना आवे रोटी, सम्मत सतारां रुत्त सुहांयदा। सम्मत अठारां बोटी बोटी, एका नाअरा अल्ला हू लगांयदा। सम्मत उन्नी ना कोई हुक्का ना कोई लोटी, मस्तक तिलक ना कोई लगांयदा। बीस बीसा हरि जगदीशा प्रगट होए बजर कपाटा साचा पत्थर चोटी, दस्म दुआरा हरि

निरँकारा एका दर खुल्हांयदा। इक्क इकीसा छत्र झुलाए आपणे सीसा, चरन लगाए चीना रूसा, ईसा मुसा रहिण ना पांयदा। मेट मिटाए अञ्जील कुरान ना कोई पढ़े जगत हदीसा, खाणी बाणी वेद पुराण अन्त करांयदा। सोहँ तेरी इक्क निशानी, सतिजुग तेरी साची बाणी, जन भगत वेखे साचे हाणी, जोती शब्दी एका मेल मिलांयदा। अमृत आत्म देवे ठंडा पाणी, सुरत सवाणी सुघड़ स्याणी, दर मन्दिर अन्दर इक्क सुहांयदा। इक्क वरन कराए जेरज खाणी, राउ रंकां एका डंका शब्द वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, द्वार बंक सुहांयदा। द्वार बंक इक्क सुहाउँणा। हरि हरि हरि आपे विच वसाउँणा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंगण रंग चढ़ाउँणा। साढे तिन्न हथ्थ कलि काया ढेर, धरत मात टिकाईआ। आपे चलाए उलटा गेड़, धुर दी बाण हरि रघुराईआ। तीर्थ तट्टां दए उखेड़, मन्दिर गुरुदुआरा कोई रहिण ना पाईआ। अन्तिम करे हक्क निबेड़, प्रभ जोती जोत जगाईआ। लेखा चुक्के नगर खेड़, शहर ग्रां रहिण ना पाईआ। खुल्ला करे धरत मात तेरा कल्ला वेहड़, काला सूसा तन छुहाईआ। लक्ख चुरासी दए निबेड़, गुरमुख साचे लए बचाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी मारे भेड़ भेड़, चारों कुन्टां आप उठाईआ। आपे जाणे आपणा गेड़, सत्तां दीपां रिहा हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पहली वेर रचन रचाईआ। साढे तिन्न हथ्थ कलि तेरी धार, प्रभ अन्तिम अन्त करांयदा। वेख वखाणे मुहम्मदी यार, नबी रसूलां फड़ हिलांयदा। दर द्वारे हाहाकार, धीरज धीर ना कोए धरांयदा। ईसा ईश्वर इक्क पुकार, जगदीश जोत जगांयदा। लहिंदी दिशा पावे सार, शब्द कटार हथ्थ उठांयदा। घड़ी घड़ी पल पल रिहा विचार, दिवस रैण लेख लिखांयदा। कलिजुग कर्मा आप नितार, छाछ वरोले मक्खण कढ्ढे बाहर, जगत सुहेले आप उठांयदा। शाह इरान हो त्यार, प्रभ प्रगट होए विच संसार, अहिनल हक्क अलाही नूर सर्बकल आपे भरपूर, अल्ला अलाह नाम रखांयदा। दहि दिशा करे चूरो चूर, मुल्ला शेख़ मिटाए, जोती जोत जगाए, काया मन्दिर सच कोहतूर, निर्मल आकार करांयदा। वेला नेड़ ना जाणो दूर, इराक कल तुट्टे गरूर, सम्मत सोलां पहली चेत्र प्रभ साचा चरन उठांयदा। वेखण जाए साचा खेत्र, पंचम जेठी साची हाढ़ी वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा चरन छुहांयदा। पहली चेत्र चित ठगोर। प्रभ चरन छुहाए विच लाहौर। भाग लगाए धरत मात तेरी गोद सजाए, चारों कुन्ट बणाए तेरी मढ़ी गोर। गुरमुख साचे लए तराए, आप आपणा संग निभाए, शब्द रखाए साची डोर। चार यारां संग रलाए, ऐलीशाह मृदंग वजाए। मुहम्मद अहिमद सीस झुकाए। मक्का काअबा राह तकाए। चरन घोड़े दे रकाबा, दुलदुल तेरी वाग गुंदाए। प्रगट होए हक्क ज़नाबा, अहिनल हक्क आप अख्वाए।

मनमुख जीआं दए अज़ाबा, शब्द खण्डा हथ्थ उठाए। ना कोई पुन्न ना कोई पापा, जुग जुग आपणी बणत बणाए। कोए ना झल्ले हरि हरि ताबा, अर्शी प्रीतम जोत प्रगटाए। गुरमुखां अमृत धार वहाए कँवल नाभा, शास्त्र सिमरत अंज़ील कुरान वेद पुराण कोई भेव ना पाए। इक्क वखाए हयात आबा, चरन कँवल प्रभ नीर छुहाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, साढे तिन्न हथ्थ तेरा लेख आपणे हथ्थ रखाए। साढे तिन्न हथ्थ प्रभ रचन रचाई, शब्द सिँघासण इक्क सजांयदा। कलिजुग तेरी बणत बणाई, नौ द्वारे मुख खुल्हांयदा। शब्द दुशालन इक्क विछाई, जोती नूर जगांयदा। जोत आकाल अकालन मात प्रगटाई, नाम मृदंग ढोल वजांयदा। सर्ब जीआं प्रितपालन आप अख्वाई, आप उपाए आपे ढांयदा। जोत ज्वाला आप खिचाई, उच्चे टिल्ले पर्बत पहाड़ हरि आप हिलांयदा। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ मेट मिटाई, गंगा गोदावरी नीर वहांयदा। मन्दिर मस्जिद पए दुहाई, गुर दर ना होए कोई सहाई, कलिजुग अन्त ना कोई छुडांयदा। प्रगट होवे हरि रघुराई, लोकमात कलि कलि वज्जे वधाई, ब्रह्मा शिव देवत सुर फड़ फड़ बाहों आप हिलांयदा। गुरमुख विरले चरन प्रीती गई जुड़, जिस आपणी दया कमांयदा। शब्द चढ़ाए साचे घोड़, साढे तिन्न हथ्थ लेख मिटांयदा। अन्तिम वेले जाए बौहड़, शब्द जणाई आप करांयदा। धुरदरगाही एका लाया पौड़, राह विच ना कोई अटकांयदा। प्रगट जोत ब्राह्मण गौड़, पूत सपूता आप अख्वांयदा। सम्बल नगर वेखे लभ्मा चौड़, साढे तिन्न हथ्थ बन्द रखांयदा। धुरदरगाही आया दौड़, जोत सरूपी आसण लांयदा। लक्ख चुरासी वेखे परखे मिठ्ठा कौड़, सतिजुग साचा रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा मिटया वर, सतिजुग साचे खुल्हा दर, लहिणा देणा आपणी हथ्थीं आप चुकांयदा। गोबिन्द रूप अपार, हरि हरि विच समाया। गोबिन्द चरन कँवल पनिहार, हरि हरि दया कमाया। हरि हरि जोत आकार, गोबिन्द रिहा जगाया। गोबिन्द जगत जैकार, हरि हरि आप कराया। हरि हरि खण्डा दो दो धार, गोबिन्द तन पहनाया। गोबिन्द होया पहरेदार, प्रभ साची सेवा लाया। साचा मेला विच संसार, कलिजुग लेख चुकाया। जोती शब्दी इक्क प्यार, एका राह चलाया। फिर फिर थक्के जीव गंवार, कलिजुग जीवां भेव ना पाया। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, गोबिन्द गोबिन्द लेख लिखाया। सृष्ट सबाई मारे मार, मनमुखां दए मिटाया। गुरमुख साचे लए अधार, नेत्र नैण दरस दिखाया। कलिजुग सतिजुग दोवें दर द्वार, दोहां लेखा रिहा चुकाया। कलिजुग काला वेस हाहाकार, दोए जोड़ सीस रिहा झुकाया। संग मुहम्मद साचा यार, चार यारां लड़ फड़ाया। नानक बैठा नैण मुँधार, आत्म ध्यान लगाया। गुर गोबिन्दा सेवादार, सेवक सेवा रिहा कमाया। पुरख अबिनाशी घट घट वासी वेख विचार, जुग जुग आपणा भेख वटाया। कलिजुग

अन्तिम आई हार, काया कुकर्मां कर्म कमाया। पुरख अबिनाशी सद सुणे पुकार, चित्रगुप्त आपणा लेखा रिहा वखाया। राए धर्म खोल्हे बन्द किवाड़, लाड़ी मौत हथ्थीं मैहन्दी लाया। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, वेला अन्तिम अन्त दिस आया। धरत मात करे हाहाकार, गऊ ग़रीब निमाणयां मैनूं नित सताया। दुक्खां भुक्खां कोई ना पावे सार, राज राजानां शाह सुल्तानां आपणा विकार वधाया। आवे हथ्थ ना पीणा खाणा, बस्त्र ना तन छुहाया। प्रगट होए प्रभ बीना दाना, ग़रीब निमाणयां गले लए लगाया। आप कराए ठांढा सीना, सतिजुग साचा नाल जगाया। बख्शे राज लोक तीना, आपणी हथ्थीं तिलक लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेख वटाया। राज तिलक प्रभ देवणहारा, जुग जुग बणत बणांयदा। सतिजुग साचा सेवणहारा, एका नाम ध्यांअदा। दोए जोड़ दर नेवणहारा, निउँ निउँ सीस झुकांयदा। आपे बख्शे बख्शणहारा, बख्शणहार आप अख्वांयदा। सोहँ बन्न्हे सीस दस्तारा, साचा तोड़ा नाम सजांयदा। प्रगट होए नर अवतारा, साचा जोड़ा जोड़ जुड़ांयदा। सतिजुग साची बन्न्हे धारा, धरती धवल आकाश समांयदा। लोआं पुरीआं इक्क हुलारा, ध्रू दरबानी वक्त चुकांयदा। गुरमुख साचे कर प्यारा, आपणा शब्द जणांयदा। ब्रह्मा ब्रह्म रूप अपारा, सर्बकला अख्वांयदा। शिव जी देवे जोत अधारा, आप आपणे विच टिकांयदा। गुरमुख साचा साचा लाड़ा, हरि साचा धाम सुहांयदा। करोड़ तेतीस तेरा वेखे अखाड़ा, सुरपति राजा इन्द ताल वजांयदा। अमृत बरखे सतारां हाढ़ा, मेघ मेघणी सेवा लांयदा। मनमुखां दिसे ना पिच्छा अगाड़ा, गुरमुखां आप उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, दर दुआरा इक्क सुहांयदा। सतिजुग साचे साची दात, प्रभ साचे झोली पाईआ। कलिजुग तेरी कोई ना पुच्छे वात, अन्त रैण अन्धेरी छाईआ। ना कोई पिता ना कोई मात, ना कोई बालक गोद उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी वेखे मार झात, जेरज अंड फोल फुलाईआ। ना कोई पलँघ ग़लीचा दिसे खाट, ना कोई फूलन सेज हंढाईआ। ना कोई तीर्थ तट्ट दिसे घाट, सर सरोवर कोई रहिण ना पाईआ। कलिजुग बस्त्र गया पाट, लथ्थे चीर रिहा सरमाईआ। कोई ना पूरी करे घाट, मदिरा मासी बैठण मुख छुपाईआ। गुरमुख विरले आप जगाए मस्तक दीपक आप लिलाट, जोती नूर सवाईआ। अमृत आत्म रस लैणा चाट, निझर धारा रिहा वहाईआ। दुरमति मैल रिहा काट, सोहँ साचा नाम जपाईआ। लेखा चुक्के आण बाट, गर्भवास फंद कटाईआ। एका सौदा साचे हाट, प्रभ साचा हट्ट खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका वणज करे वणजारा, घाट रहे ना राईआ। सतिजुग तेरा साचा रंग, प्रभ साचा मात रंगांयदा। आपे होया अंग संग, अंगीकार आप अख्वांयदा। नाम वजाए इक्क मृदंग, चारे कुन्ट सुणांयदा। चरन कँवल धारा गंग, आपणे आप वहांयदा। शब्द घोड़े

कसे तंग, मात पताल आकाश विच फिरांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी वेखे जंग, शब्द खण्डा गल लटकांयदा। माया डस्सणी मारे डंग, राज राजाना आप उठांयदा। लक्ख चुरासी भन्ने काची वंग, कोई ना किसे बचांयदा। जन भगतां कटे भुक्ख नंग, नाम वस्त हरि झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग तेरी साची रीती साचा राह चलांयदा। सतिजुग तेरा साचा राह, प्रभ साचे मात चलावणा। आपे बणे जगत मलाह, चप्पू नाम लगावणा। उप्पर बैठे बेपरवाह, दिस किसे ना आवणा। आप उठाए थाउँ थाँ, गुरमुख सोया कोए रहिण ना पावणा। आपणी हथ्थीं पकड़े बांह, चरन कँवल चरन प्रभ आपणा दर सुहावणा। आपे बणे पिता माँ, बाल अञ्जाणे गोद उठावणा। सदा सुहेला देवे ठंडी छाँ, दे मति तत्त समझावणा। घर घर अन्तिम उडणे काँ, लज पति ना किसे रखावणा। इक्क जपाए साचा नाँ, प्रभ सोहँ धार वहावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचे तेरी बणत बणावणा। सतिजुग साचे सच सुल्तान, साची सेव कमाईआ। आपे होया हरि मेहरवान, हरि जोती मात प्रगटाईआ। राम रमईआ कृष्न काहन, भेखाधारी भेख ना राईआ। नानक गुर गोबिन्द चरन ध्यान, रस रसना रहे गाईआ। प्रगट होया जोद्धा सूर बली बलवान, निहकलंक नाउँ रखाईआ। वाली हिन्द उठ निधान, प्रभ सोया रिहा जगाईआ। अन्तिम मेटे पंच निशान, पंचां डोरी हथ्थ फड़ाईआ। पंचां चाढ़े इक्क बिबाण, पंचां मात वधाईआ। पंच मुख एका गाण, प्रभ साचा इक्क जणाईआ। सीस मुकट श्री भगवान, बीस बीसा रिहा आपणे सीस टिकाईआ। पंचां चाढ़े रंग महान, उतर कदे ना जाईआ। सत्तां दीपां इक्क ज्ञान, वरभण्डी आप रखाईआ। सिध्धी डण्डी शब्द निशान, साची झण्डी मात चढ़ाईआ। धरत मात प्रभ देवे दान, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणाईआ। बाल अञ्जाणे तेरा झुल्ले इक्क निशान, प्रभ अबिनाशी आपणीं हथ्थीं दए चढ़ाईआ। सर्ब जीआं प्रभ जाणी जाण, जुग जुग आपणी रीत चलाईआ। गुरमुख साचे चतर सुजान, आपणे संग रलाईआ। पंचां मेला धुर फ़रमाण, कलि अन्तिम जन्म दवाईआ। त्रेता द्वापर विछड़े विच जहान, कलिजुग मिले मात वड्याईआ। सोहँ मिल्या पीण खाण, सतिजुग साची रुत्त सुहाईआ। अस्सू तिन्न प्रभ मस्तक बणे इक्क निशान, जोती नूर इक्क सवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। शब्द सोटी हथ्थ करतार, आपणी आप उठांयदा। त्रैलोक प्रभ पावे सार, धाम भूमिका वेख वखांयदा। लोक परलोक प्रभ रिहा संवार, गुरमुख साचे पार करांयदा। चरन जोड़ा अपर अपार, शब्द घोड़ा संग रलांयदा। वेख ना सके कोई विच संसार, आपणी हथ्थीं वाग गुंदांयदा। चौथा पौड़ा करे त्यार, कलिजुग अग्गे सीस झुकांयदा। सम्मत सोलां मारे पहली वार, मूंह दे भार सुटांयदा। पुरख अबिनाशी हो त्यार, गुर संगत हुक्म जणांयदा। साचा मेला चरन

द्वार, वेला गया हथ्थ ना आंयदा। नारी नर होए ख्वार, ना कोई किसे बचांयदा। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, सोलां सोलां कल वरतांयदा। भेख पखण्डा वहाए वहिंदी धार, एका धार वहांयदा। शब्द सिँघासण बैठ सच्ची सरकार, साचा मार्ग इक्क वखांयदा। वरन गोत सद वसे बाहर, मात गर्भ कदे ना आंयदा। आपे गुप्त आपे ज़ाहर, सर्ब घटा आप समांयदा। जन भगतां करे मात प्यार, तीर्थ तट्ट वेख वखांयदा। वेख वखाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सम्मत तेरां नानक धार, तेरी आस पुचांयदा। नानक तेरा तेरा गाया। मोदी खाना मात चलाया। पुरख अबिनाशी दया कमाया। आप आपणी जोत जगाया। सोहँ कंडा नाल ल्याया। साचा तोला आप अख्वाया। लक्ख चुरासी तेरा माया डोला, खब्बे रिहा चढ़ाया। गुरसिख तेरा रसना गाया सोहँ ढोला, सज्जे छाबे आप टिकाया। दोहां बणया आप विच्चोला, इक्क हुलारा दए लगाया। त्रैगुण माया सति तत्त तेरा भार रती होए सोलां, सम्मत सोलां कल दए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां बणया आपे गोला, दर दर घर घर जाए लए जगाया।

५५
०६

गुरमुख साचे मात जगाए, दिवस रैण वैरागी। आप आपणी सेवा लाए, सृष्ट सबाई रिहा त्यागी। अमृत आत्म मेवा इक्क खवाए, हँस बणाए कागी। कौस्तक मणीआ मस्तक तिलक इक्क लगाए, सुरत सवाणी सोई जिस जन जागी। वड देवी देव आप अख्वाए, हरिसंगत साचा मेल मिलाए, गुरमुखां होए वड वड भागी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान वरते खेल, नौ खण्ड पृथ्वी चढ़े तेल, करे स्वांग वड स्वांगी। पहली अस्सू पंज तीस, पंचां मिले वधाईआ। पंचम जोती बीस इकीस, हरि जगदीश विच समाईआ। धुन नाद आत्मक वज्जे राग राग सुणाए छतीस, सुणावणहार आप अख्वाईआ। शब्द छत्र प्रभ साचे सीस, पंचम मुख रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचे दए वधाईआ। पंज तीस हरि चरन उठाउणा, शब्दी लेख लिखांयदा। आउँदा जांदा किसे दिस ना आउणा, गुरमुख साचे विच समांयदा। नेत्र नैण जिस जन दर्शन पाउणा, चरन कँवल ध्यान लगांयदा। शब्द सुनेहड़ा देवे पवणी पौणा, उनन्जा आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सर्बकल समरथ, कलिजुग तेरा बद्धा भार तेरे सीस टिकांयदा। पंज तीस कर त्यारी, शब्द सिँघासण वेख वखांयदा। गुर संगत करे निमस्कारी, प्रभ साचा काज रचांयदा। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना गाउँणा इक्क जैकारी, एका ताज आप भवांयदा। भगत

वछल आप गिरधारी, कलिजुग माया जूठ झूठ गवर्धन आपणे हथ्थ टिकांयदा। हरिभगतां पैज रिहा संवारी, धन्न धन्न जो जन रसना गांयदा। मोर मुकट हरि छत्र झुलारी, सतिजुग साचा चन्न चढ़ांयदा। चार वरनां इक्क द्वारी, बेड़ा बन्न्ह वखांयदा। एका शब्द होए जैकारी, जै जैकार आप करांयदा। दाता जोद्धा हरि भण्डारी, शब्द भण्डारा आप वरतांयदा। गुरमुखां आई कलिजुग अन्तिम वारी, मनमुख मुख छुपांयदा। दोहां पावे आत्म सारी, लहिणा देणा मूल चुकांयदा। मढ़ी गोर मनमुख सुत्ते पैर पसारी, गुरमुख आपणी गोद उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंज तीस आपणा कर्म कमांयदा। गुर संगत प्रभ दासी दास, सेव कमाईआ। घट घट अन्दर रक्खे वास, भेव कोई ना पाईआ। आपे जोती नूर करे प्रकाश, आपे शब्द धुन उपजाईआ। आप चलाए पवण स्वास, पंजां तत्तां विच टिकाईआ। पंचम पंचां पाए रास, दहि दिशा वेख वखाईआ। बणत बणाई हड्ड नाड़ी मास, प्रभ साचा जोड़ जुड़ाईआ। साढे तिन्न हथ्थ सीआं पृथ्वी आकाश, चौदां हट्ट विच रखाईआ। चौदां लोक रक्खे वास, अन्दर बैठा कुण्डा लाईआ। जो जन होए दासी दास, दासी दास विच समाईआ। मण्डल मण्डप पृथ्वी आकाश वेखे रास, गोपी काहन आप अख्वाईआ। लेख चुकाए दस दस मास, उलटा रुक्ख बिरख गर्भवास कटाईआ। गुर पूरे गुर संगत बलि बलि जास, दोहां एका बणत बणाईआ। हरिसंगत हरि दास, चरन ध्यान लगाईआ। संगत हरि होवे पास, आत्म ब्रह्म जणाईआ। साचा मेला विच प्रभास, भैण भाई ना कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आपणी हथ्थीं सेव कमाईआ। सेवा करे चार जुग, जुग जुग भेख अवल्ला। कलिजुग औध गई पुग, सुंञा दिस्सया जगत महल्ला। माया ममता गई झुक, जूठा झूठा फल लग्गा काया डल्ला। धरत मात तन गया सुक्क, रो रो नेत्र नीर उछला। यति सति कलि गया मुक्क, पंज तत्त फड़या हथ्थ विच भल्ला। जीव जन्त साध सन्त मदिरा मास पींदे हुक्क, दूई द्वैत काया सल्ला। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ मन्दिर अन्दर बैठे लुक, प्रभ वेख वखाणे जल थला। सतिजुग साचा वेला गया ढुक्क, प्रभ का भाणा ना जाए रुक, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत सेवा आप कमाए, सृष्ट सबाई पए तृथल्ला। गुर संगत हरि प्रनाम, आई चरन द्वारया। सच सच्चा नाम दान, सच कराए वणज वपारया। लेखे लाए काया चाम, पहली अस्सू दया कमा रिहा। मिटे रैण अन्धेरी शाम, प्रभ दीपक जोती आप जगा रिहा। एका एक हरी हरि नाम, दूसर काम ना कोई छुडा रिहा। अमृत आत्म पीणा जाम, दस्म द्वारी आप पया रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरा आउणा जाणा लेखे ला रिहा। घर बाहर काम कलि

तज्ज। कलि चरन द्वारे आए भज्ज। प्रभ अबिनाशी किरपा करे, अमृत आत्म भण्डार भरे दिवस रैण पीणा रज्ज। दोहां कारज सर्ब सरे, प्रभ पड़दे देवे कज्ज। रसना गाउँणा सोहँ नर हरे, कलिजुग प्रभ रक्खणहारा लज। गोबिन्द हरि एका दर द्वार खड़े, सिँघ रूप खब्बे सज्जे। सम्बल नगरी नौ दरे, शब्द ताल एका वज्जे। पुरख अबिनाशी गुर गोबिन्दा आपे वरे, लोआं पुरीआं खण्ड मण्डल वरभण्ड ब्रह्मण्ड सृष्ट सबाई आप तजे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरी सेवा आप कमाए, गुर संगत होए पिच्छे अग्गे।

चतुर्भुज अन रंग, रूप रंग अपारया। सर्ब जीआं प्रभ साचा संग, दिस किसे ना आ रिहा। जन भगतां तन मन्दिर वजाए इक्क मृदंग, दिवस रैण वजा रिहा। अमृत आत्म नुहाए साची गंग, सर सरोवर इक्क वखा रिहा। कलिजुग औध गई लँघ, भेखाधारी भेख वटा रिहा। सृष्ट सबाई भुक्ख नंग, नाम दान ना कोए वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, निहकलंक नरायण नर, वाली हिन्द आप उठा रिहा। वाली हिन्द भगत निशान जगत नादान, प्रभ सोया मात जगांयदा। अस्सू तिन्न थित वखाण, जोत सरूपी दरस वखांयदा। प्रगट होए कृष्ना काहन, राम रमईआ आप अख्वांयदा। धर्म झुलाए इक्क निशान, सत्तां दीपां वेख वखांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क ज्ञान, सोहँ साचा जाप जपांयदा। सम्मत सोलां मेट मिटाए तट्ट तीर्थ जगत इशनान, गुर दर मन्दिर अन्दर मक्का काअबा फोल फुलांयदा। सर्ब जीआं प्रभ जाणी जाण, आदि अन्त इक्क भगवान, लोकमात मार झात, जुग जुग भेख वटांयदा। चार वरन कराए इक्क जमात, नाता बन्ने भैण भ्रात, सतिजुग साचा राह वखांयदा। इक्क चलाए साची गाथ, प्रगट होए हरि त्रैलोकी नाथ, सगला साथ निभांयदा। लहिणा देणा चुक्के जीव जन्त साध सन्त गुर पीर साढे तिन्न तिन्न हाथ, अन्तिम अन्त हरि साचा कन्त पूरन भगवन्त लहिणा देणा चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, निहकलंक नरायण नर, शब्द खण्डा विच ब्रह्मण्डां वेख वखाणे जेरज अंडां अकाश प्रकाश पुरख अबिनाशी भगत जनां होए दासी दास, साचे मण्डल पावे रास, जोत निरँजण नेत्र अंजन शब्द चलाए स्वास स्वास, लेखे लाए हड्ड नाड़ी मास, जिस जन अपणी दया कमांयदा।

❊ पहली अस्सू २०१३ बिक्रमी बाबा प्रताप सिँघ दे डेरे जा के शब्द उचारया भैणी साहिब ज़िला लुध्याणा ❊

राम सिँघ गुर राम गढ़। प्रभ अबिनाशी वेखे अन्दर वड़। जोत सरूप ना कोई सीस ना कोई धड़। ना कोई मात पताल आकाश वेख सके लग्गी जड़। सन्त जनां सद वसे अन्दर, भाग लगाए साचे मन्दिर, जो जन शब्द चहु अक्खर जायण पढ़। पंचां नाल रिहा लड़। पंचां जोड़ जुड़ाए, जोत जगाए बहत्तर नड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सन्त सुहेले आप बंन्हाए आपणे लड़। आपणे लड़ बन्न्हणहार, जुग जुग हरि भगवन्ता। सन्त सुहेले मेलणहारा, देवे दान जीआं जन्तां। कर्म कुकर्मां परखणहारा, भेखाधारी भेख वटंता। नानक गोबिन्द शब्द धार लिखणहारा, सृष्ट सबाई साचा कन्ता। जोती जोत सरूप हरि, जुग जुग जोती जामा भेख धर, वेस अनेक एक कर, करे खेल आदिन अन्ता। आदि अन्त जगत प्रभ रीती, जुग जुग करदा आया। गुरमुखां करे काया पतित पुनीती, आप आपणा दरस दिखाया। मानस देही हरिजन जीती, रसना हरि हरि गुण गाया। काया होए सीतल सीती, गोबिन्द गोबिन्द रूप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग जोती भेख धर, सतिजुग साचे जीव जन्त सभ भाण्डे काचे, साची सरन लगाए लए तराया। सतिगुर साचा हट्ट है, खोल्हे विच संसार। नाम रखाए साचा पट्ट है, गुरमुखां करे तन शृंगार। गुर चरन तीर्थ साचा तट्ट है, गुरमुख नुहावण उतरन पार। आपे जाणे घट घट है, आपे अन्दर आपे बाहर। आपे जोत जगाए लट लट है, आपे देवे शब्द धुन्कार। भाग लगाए काया मट्ट है, जिस जन किरपा देवे धार। दुरमति मैल देवे कट्ट है, जिस जन देवे चरन प्यार। शब्द मारे एका सट्ट है, बजर कपाटी पत्थर देवे पाड़। सिँघ राम कलिजुग जीआं कढ्ढे भरमां वट्ट है, प्रगट होए विच संसार। सन्त सुहेले लाहा रहे खट्ट है, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्बल नगरी धाम अपार। धाम अवल्ला, प्रभ साची जोत जगांयदा। गुरमुख वसाए इक्क महल्ला, हरि हरि सेवा लांयदा। आपे जाणे जल थला, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी आपे चबाए आपणी दाढ़ा, वरते खेल सतारां हाढ़ा, सम्मत सोलां हाहाकार सृष्ट मात करांयदा। गुरमुख साचा साचा लाड़ा, पुरख अबिनाशी घट घट वासी गुर गोबिन्दा सगली लाहे चिन्दा, आप आपणी सेव कमांयदा। सिँघ प्रताप हरि साचा जाप, आप पछाणे आपा आप, ना भेव कोई छुपांयदा। लोकमात वड प्रताप, जिस जन सीस आपणा हथ्थ टिकांयदा। त्रैगुण माया रही कांप, ब्रह्मा विष्न महेष सीस दर झुकांयदा। माया डस्सणी ना डस्से सांप, एका शब्द साची वस्त आत्म झोली पांयदा।

दुरमति मैल धोवे दाग़, हँस बणाए फड़ फड़ काग, आत्म जोती जगे चिराग, धुन अनादी बोध अगाधी शब्दी इक्क रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, राम सिँघ गुर साचा गढ़, शब्द सरूपी वेखे अन्दर वड़, जगत विकारा जाए सड़, सांतक सति जो वरतांयदा। सति सति वरते, हरि वरतावणहारा। जन भगतां रक्खे पति उप्पर धरते, प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा। सतिगुर साचे सरन सरनाई परते, जीव जन्त जग उतरे पारा। गुरमुख साचे सन्त जन प्रभ भाणा सिर ते जरते, आदि अन्त जुगा जुगन्त पूरन भगवन्त साध सन्त करे शब्द प्यारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्तिम वेखे सच घर, साचा वणज करे कराए नाम अपारा। आउणा जाणा वल छल, अचरज रीत चलाईआ। खेले खेल घड़ी घड़ी पल पल, शब्द सिँघासण डेरा लाईआ। जोत निरँजण रही बल, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। गुर संगत जो जाए रल, गुर पूरा साची नईआ नाम चढ़ाईआ। साचे सन्त हरि जाए बलि बलि, एका टेक हरि रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, वेख वखाणे सच घर, बन्द किवाड़ कवण कराईआ। सतिगुर साचा धन्न है, होए शब्द जैकार। जिस जन आत्म गया मन्न है, दो जहानां बेड़ा पार। चेला गुरू धन्न है, मेला इक्क द्वार। ना वसेरा छप्परी छन्न है, ना कोई बंक द्वार। सच्चा देवे नाम धन है, कोई लुट्टे ना चोर यार। राग सुणे सुणाए साचा कन्न है, धुन अनादी अगम्म अपार। सभ दा बेड़ा रिहा बन्न् है, भेखाधारी भेख अपार। जोती जोत सरूप हरि, आए दर वेखे सर, चुक्के डर नौ द्वारे वसे बाहर। पहली अस्सू वीह सौ तेरां, तेरी रुत सुहाईआ। साध भैणी दर साचा फेरा, हरि हरि आपे पाईआ। गऊ ग़रीब निमाणयां कटे जम का जेड़ा, फड़ फड़ राहे पाईआ। अन्तिम करे सच निबेड़ा, साचा पल्ला नाम फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्तिम मेला लए मिलाया।

❊ २ असू २०१३ बिक्रमी गज्जण सिँघ दे गृह अम्बाला छाउँणी ❊

हरि साजण जग मीत, जुग जुग कर्म कमांयदा। जन भगतां दस्से साची रीत, मनमुख भरम भुलांयदा। शब्द सुणाए सुहागी गीत, गोबिन्द काया रूप समांयदा। आपे करे पतित पुनीत, नीत अनीती वेख वखांयदा। अमृत धारा काया करे ठण्ढी सीत, निझर झिरना आप झिरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जुग जुग जामा भेख धर, हरिजन सोए आप जगांयदा। गुरमुख सोए मात जगाए, बख्शे चरन प्यारा। एका एक नाम जपाए, काया तन भरे भण्डारा। जन्म कर्म प्रभ आपणे लेखे लाए, दरस दिखाए अगम्म अपारा। नेत्र पेखे जो जन दर्शन पाए, लक्ख चुरासी उतरे पारा। जोती जोत सरूप हरि,

जोती जामा भेख धर, कलिजुग अन्तिम लोकमात लए अवतारा। लोकमात प्रभ जामा धार, नूरी जोत जगाईआ। शब्द भरया इक्क भण्डार, गुरमुखां रिहा वरताईआ। देवणहारा वारो वार, आपणी रीती आपणे हथ्थ रखाईआ। भरमे भुल्ले जीव गंवार, पुरख अबिनाशी सार ना पाईआ। माया रुल्ले तन हँकार, काम क्रोध अग्न जलाईआ। दर दुआरा एका भुल्ले, प्रगट होए हरि गिरधार, शब्द खण्डा हथ्थ उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी पावे सार, ब्रह्मण्डां खोज खुजाईआ। करोड़ तेतीसा देवत सुर करे पुकार, दोए जोड़ सरन सरनाईआ। ब्रह्मा शिव रहे विचार, प्रभ अचरज बणत बणाईआ। अन्तिम वेले आए हार, हरि हरि भेव अभेद भेव ना राईआ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, अछल अछेद इक्क कराईआ। लक्ख चुरासी मारे मार, गुरमुख साचे लए तराईआ। कलिजुग अन्तिम करे विहार, सम्मत तेरां रुत्त सुहाईआ। नानक तेरी तेरां धार, पहली अस्सू आप लिखाईआ। सिँघ राम तेरा वेखे दर दरबार, अन्दर मन्दिर फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त सुहेले शब्द सरूपी साचे मेले जोती जोत मिलाईआ। शब्द मेला सच द्वार, करे कराए हरि निरंकारया। गुरमुख विरला होवे सेवादार, सेवक सेवा रसन लगा रिहा। साची सेवा दर दरबार, रसना भेव अभेव गा रिहा। मिले मेल हरि पुरख भतार, गुरमुख नारी आप प्रना रिहा। आत्म सेजा सुत्ता पैर पसार, आप आपणा मुख छुपा रिहा। गुरमुखां सुहाए साची रुत्ता, हउमे दुक्खां रोग मिटा रिहा। सुफल कराए मात कुक्खा, जिस जन आपणी सरन लगा रिहा। दर द्वारे जो जन आए दर्शन भुक्खा, नेत्र लोचन नैण तीजे दरस दिखा रिहा। मात गर्भ ना आए उलटा रुक्खा, लक्ख चुरासी फंद कटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख घर, हरिजन साचे मेल मिला रिहा। हरिजन साचा इक्क है, जुग जुग अवल्लड़ी कार। गुरमुखां काया करे सदा बिबेक है, देवे शब्द अधार। एका एक सरन सरनाई साची टेक है, चरन कँवल अधार। मनमुख रहे वेखी वेख है, कलिजुग अन्तिम आई हार। अन्तिम मिटणी सभ दी रेख है, ना कोई दीसे विच संसार। जोती जामा हरि हरि भेख है, गुर गोबिन्दा पावे सार। गुरमुख विरला नेत्र लए पेख है, जिस जन आपणी किरपा देवे धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मेला इक्क दर, पूर्ब कर्मां रिहा विचार। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, पूर्ब लहिणा चुकांयदा। सर्बकल समरथ, सगल वसूरे जायण लथ्थ, जो जन आत्म दर्शन पांयदा। नाद अनादा शब्द अकथ, पंचम पंचां राग अलांयदा। पंच विकारा देवे मथ, साचा ताल वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त दुलार, आपणे रंग रंगांयदा। शब्द रंग गुरमुख मंग, अन्तिम अन्त रंगांयदा। शब्द घोड़े कस तंग, साध सन्त गुर पीर दर दर वेख वखांयदा। दरस द्वारी कोई ना बैठा

अग्गे लँघ, माया भरमे भरम भुलांयदा। शब्द सरूपी इक्क पलँघ, प्रभ साची सेज विछांयदा। ना कोई भुक्ख ना कोई नंग, आलस निन्दरा तृष्ना तृख मिटांयदा। शब्द वज्जे इक्क मृदंग, नाद अनादा आप वजांयदा। गुरमुख विरला हरि सन्त सुहेला चरन द्वार पार जाए लँघ, एका दर एका घर अमृत आत्म साचा सर साचे नुहावण तीर्थ आप नुहांयदा। ना जन्मे ना जाए मर, लक्ख चुरासी चुक्के डर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन काया मन देवे नाम धन, भरम भउ कढ्ढे जन, दरस दरसी आप वखांयदा। दरस अमोघ धुर संजोग, जुग जुग मेल मिलांयदा। रसना देवे साची चोग, आत्म रस वखांयदा। ना कोई हरख ना कोई सोग, एका रंग रंगांयदा। धुरदरगाही बख्शे साचा जोग, जुगत आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन संवारे आपे भुगत, भगत भगवन्त कन्त सन्त एका सेज हंढांयदा। सन्त कन्त शब्दी नाता, जोती मेल मिलाईआ। मिले मेल हरि पुरख बिधाता, जोत निरँजण तेल चढ़ाईआ। एका पिता एका माता, जन भगतां देवे साची दाता, जुग जुग आपणा भेख वटाईआ। कलिजुग वेखे रैण अन्धेरी राता, माया ममता झूठा नाता, भुल्ली सर्ब लुकाईआ। चार वरन सुणाए एका गाथा, प्रगट होए त्रैलोकी नाथा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगाए जोत सभनीं थाँईंआ। गुरमुख वड्याई धन्न है, धन्न पाया हरि हरि नामा। हरिभगत वड्याई जन है, जन मिल्या गोबिन्द रामा। साचा राग सुणना कन्न है, मिटे रैण अन्धेरी शामा। जगे जोत काया तन है, वज्जे अनहद शब्द दमामा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख गुरमुख बाल अञ्जाणया। देवे नाम अमृत आत्म सच्चा जाम धुर दरगाही सच्चा तामा। नाम ताम जगत धरवास, देवणहार दातारा। निज घर आत्म रक्खे वास, हर घट रूप पसारा। वेख वखाणे पृथ्वी आकाश, पुरख अगम्म अगम्मड़ी कारा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग खेले खेल निहकलंक नरायण नर अवतारा।

चार कुन्ट दहि दिशा, हरि साचा वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम पाए हिस्सा, नौ खण्ड पृथ्वी वंड वंडांयदा। राज राजानां शाह सुल्तानां वाली दो जहानां खाली करे खीसा, दर दर घर घर अन्त फिरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, लोकमात किसे ना दिसा, आप आपणे रंग समांयदा। आप आपणे रंग समाया, गोबिन्द रूप अकाली। गुरमुख साचा सन्त जगाए, देवे शब्द दलाली। पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाए, दीपक जोत जगे मस्तक गगन साची थाली। वरन गोत गोत वरन कलि मेट मिटाए जगत अवल्लड़ी चाली। एका ओट हरि रघुराए, फल लगाए काया डाल्ही। लक्ख चुरासी जीव

६१
०६

जन्त साध सन्त आलणिओ डिग्गे बोट, लोकमात ना कोए उठाए। तीर्थ तट्टां भेखाधारी फिरदे कोटन कोट, पुरख अबिनाशी घट घट वासी साचे मन्दिर अन्दर किसे दिस ना आए। जोती जगे बैराग उदासी रमता रमता माया ममता पीसण पीस पिसाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द रूप समाए। गोबिन्द काया सच घर, हरि साची जोत जगाईआ। आप खुलाया आत्म दर, दस्म द्वारी भेव चुकाईआ। जोत अकारी इक्क कर, शब्द धारा धार वहाईआ। अमृत आत्म नुहाए साचे सर, दिवस रैण इशनान कराईआ। पंचां तोड़े हँकारी गढ़, जिया दान झोली पाईआ। शब्द सरूपी अन्दर वड़, पंज शैतानां बन्न बंनाईआ। दर द्वारे अग्गे खड़, आत्म ब्रह्म ज्ञान जणाईआ। शब्द घोड़े साचे चढ़, खण्ड मण्डल ब्रह्मण्ड वरभण्ड लोआं पुरीआं पार कराईआ। आपे वेख जेरज अंड, उत्भज सेत्ज वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी तेरी वंड, प्रभ आपे रिहा वंडाईआ। ब्रह्मा शिव देवत सुर देवे वंड, सोहँ खण्डा हथ्थ उठाईआ। सृष्ट सबाई नार दुहागण होई रंड, सन्त कन्त ना कोई हंढाईआ। जन भगतां पल्ले बन्ने नाम गंढु, दो जहानां सदा सहाईआ। मेट मिटाए भेख पखण्ड, सम्मत तेरां वीह सद अस्सू तिन्न वाली हिन्द करे जणाईआ। हथ्थ फड़े प्रभ चण्ड प्रचण्ड, नौ खण्ड पृथ्वी खण्ड खण्ड, चारे कुन्टां फिरे दुहाईआ। राज राजानां लाहे घमंड, जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, अचरज रीती मात चलाईआ। वाली हिन्द शब्द जणाई, हरि साचे चरन ध्याना। अन्तिम वेले होए जुदाई, गुरमुख विरले मेल श्री भगवाना। माया ममता राज जोग कुड़माई, सति सन्तोखी कोई ना बन्ने हथ्थीं गाना। नौ दर वज्जदी रहे वधाई, दसवें राग ना कोई सुणाना। पंडत पांधे रहे भुलाई, पढ़ पढ़ विद्या वेद विदाना। हरि अन्तर बुझाए बसन्तर शब्द जोत प्रगटाई, देवे नाम निशाना। आवे जावे फेरा पाई, राम रमईआ गोपी काहना। सम्बल नगरी धर्म सनवाई, प्रगट होए हरि जाणी जाणा। गऊ ग़रीबां पकड़े बांही, अट्ठ सट्ठ तीर्थ मेट मिटाना। चार वरन देवे ठण्ढीआं छाईं, सति सतिवादी सति पुरख निरँजण इक्क झुलाए धर्म निशाना। गुरमुखां नेत्र पाए अंजन, दर द्वारे देवे माणा। चरन धूढ़ कलि साचा मजन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका राग जगत हदीस भगत सुणाए साचा गाना। राग छतीस एका रंग, एका शब्द जणाईआ। सपारा तीस वज्जे मृदंग, बीस इकीस मुख छुपाईआ। गंगा गोदावरी होए नंग, तीर्थ तट्ट कोई रहिण ना पाईआ। मन्दिर मस्जिद गुरदर होइण भंग, कलिजुग अंग अंग भन्नाईआ। गुरमुख विरला पार जाए लँघ, जिस प्रभ साचा सरन लगाईआ। शब्द घोड़े कस तंग, नाम मृदंग इक्क वजाईआ। सम्मत चौदां मारे डंग, मनमुखां काया दए जलाईआ। गुरमुखां आत्म चाढ़े रंग, वज्जे नाम वधाईआ। सदा सुहेला होए संग, जोत निरँजण नाउँ रखाईआ। शब्द बैठ सच पलँघ, दस्म द्वारी नर

निरँकारी आत्म सेजा आसण लाईआ। एका मंगे साची मंग, चरन प्रीती साची नीती जन भगतां झोली पाईआ। जुग जुग करदा आया आपणी रीती, जुग जुग भेख वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां चरनां हेठ रिहा पिसाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी सत्त दीप, लक्ख चुरासी गेड़ा। माया ममता पीसण रिहा पीस, ना कोई करे हक्क निबेड़ा। अन्तिम लेखा चुक्के बीस इकीस, खुल्ल्हा होवे धरत मात तेरा वेहड़ा। एका छत्र झुल्ले प्रभ साचे सीस, ज़ात पाती वरन बरन ऊँच नीच राज राजानां शाह सुल्तानां वाली दो जहानां करे निबेड़ा। जगे जोत जगत जगदीश, आप चुकाए चौथे जुग कलिजुग तेरा गेड़ा। हरिसंगत सेवा परवान, दर द्वार कमाईआ। अमृत आत्म मेवा साचा खाण, तोट रहे ना राईआ। रसना जिह्वा साची गाण, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द हरि हरि हरि दरस दिखाईआ। बजर कपटी वज्जे बाण, तीर निराला आप चलाईआ। औखी घाटी मात चढ़ जाण, प्रभ साचा होए सहाईआ। साचे मन्दिर अन्दर अन्त वड़ जाण, धर्म राए बैठा मुख छुपाईआ। पुरख अबिनाशी करे पछाण, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। दर दुआरा एका पाण, अट्ठे पहर नेत्र लोचन दरस पुरख अबिनाशी बैठा जोत जगाईआ। एका राग जगत त्याग साचा नाद धुन धुन नाद तेरी वड्याईआ। आत्म देवे अमृत साचा पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। सर्ब घटां हरि जाणी जाण, नाम चोग साची मुख रखाईआ। अन्तिम चुक्के जम की काण, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। शब्द पंघूड़ा सच बिबाण, पारख पारखी आप उठाईआ। दरगाह साची देवे माण, महांसार्थी नाम रखाईआ। लेखा चुक्के आवण जाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे शब्द वर, सेवक सेवा लेखे लाईआ।

* २ असू २०१३ बिक्रमी दिल्ली सन्त कृपाल सिँघ ने डेरे सद्दया ते फिर आप डेरा छड्ड के बाहर चला गया ते संगत तों मुख भवा गया *

सति पुरख निरँजण एक है, सृष्ट सबाई टेक। सृष्ट सबाई रिहा वेख है, कवण घर मात बिबेक। आपे लिखणहारा लेख है, नौ खण्ड पृथ्वी नेत्र पेख। कलिजुग तेरा काला भेख है, जूठी झूठी लग्गी मेख। अन्तिम ना कोई रहिणा औलीआ पीर शेख़ है, जीव जन्त साध सन्त प्रभ रक्खे चरनां हेठ। कलिजुग माया ममता भरमे भुल्ले वड वड सेठ। दर मेला ना साचे कन्त है, होए झूठे कौड़े रेठ। ममता अग्नी महीना जेठ है, हउमे तत्ती सीस रेत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणा लेख। आप आपणा लेख लिखाया, लेखा धुर दरगाही दा। सन्त कृपाल प्रभ हुक्म

जणाया, अस्सू दो वेला साचे माही दा। अस्सू तिन्न वेख वखाया, दर घर टिकाणा साचे शाही दा। आप आपणा भेख वटाया, खेले खेल बेपरवाही दा। साधां सन्तां बहि बहि आसण लाया, पुरख अबिनाशी दिस ना आया, कवण द्वारे बहि बहि गाई दा। रसना ढोल मृदंग वजाया, नौ द्वारे ना लँघ वखाया, लेखा चुक्के आवण जावण झूठी फाही दा। मानस जन्म भंग कराया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लहिणा देणा जगत मूल आपणी हथ्थीं रिहा चुकाया। सन्त कृपाल तेरा कौल इकरार, घर साचे इक्क निभांयदा। आपणा छड्डुया दर दरबार, पंचम सावण वक्त भुलांयदा। साचा मीता मीत मुरार, सावण सावण सावण रसना गांयदा। अचरज रीता वेख विच संसार, साध सन्त ना कोई बचन निभांयदा। अमृत नाम निधान मात किसे ना पीता, साचा धाम ना कोई वसांयदा। कलि कोए ना पतित पुनीता, पल्ले दाम ना नाम कोई रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अस्सू दो आए दर, वेख वखाणे घर घर साचा साजण दिस ना आंयदा। साचे साजण छड्डुया घर, उलटी रीत चलांयदा। आपणी रसना मंग्गया वर, साची लग्गी तोड़ निभांयदा। आपणी करनी रिहा कर, भरम भुलेखा बेपरवाही दा। अन्तिम बन्द कराए सारे दर, चार वरनां एका सरनां एका राह जणाई दा। सम्मत सोलां चुक्के डर, दोए दोए जोड़ ना सीस किसे झुकाई दा। सन्त सुहेले गुर गुर चेले प्रभ अबिनाशी लए फड़, जोती शब्दी मेल मिलाई दा। पंचम अन्दर रिहा सड़, पंचम जोड़ जुड़ाई दा। ना कोई सीस ना कोई धड़, साचे मन्दिर बहिणा वड़, अट्ठे पहर दर्शन माही दा। कदे ना करे बन्द दर, गुर संगत कोलों ना आए डर, सतिगुर साचा वसे साचे घर, ना कोई नारी ना कोई नर, एका अंक समाई दा। अमृत नुहाए साचे सर, आप आपणी किरपा कर, दरस कराए दया कमाए, हरिजन आपणे रंग रंगाई दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अस्सू दो वेखे घर, मस्तक लेख लिख्या केहड़ी शाही दा। आपणी हथ्थीं लिख्या लेख, कवण दिवस सुहावणा। उत्तर दित्ता सभ घट वेख, वार थित आप समझावणा। मस्तक वेखे लग्गी मेख, बजर कपाटी खोल्ह खुल्ह्लावणा। ना कोई जाणे धारी भेख, जोत सरूपी हरि भगवानणा। ना कोई मुच्छ दाढ़ी ना केस, ना कोई दिसे मूंड मुंडावणा। सभ घट आपे होए प्रवेश, शब्दी आप फड़ाए दामना। वेख वखाणे नर नरेश, राज राजानां शाह सुल्तानां दे मति आप समझावणा। अस्सू तिन्न प्रभ साचे वेस, प्रभ आपणा आप वटावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वक्त विचारे साढे दस, वाली हिन्द आप उठावणा। वाली हिन्द जाणा जाग, प्रभ दिल्ली चरन छुहांयदा। सन्त सुहेले गए भाग, इक्क इकल्ला जोत प्रगटांयदा। माया डस्से ना डस्सणी नाग, शब्द वैराग इक्क उपजांयदा। चरन धूढ़ी बख्शे साचा मजन माघ, गुरमुख दिवस रैण नुहांयदा। कलिजुग

काया लग्गे भाग, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काग, कागों हँस बणांयदा। जगत तृष्ना बुझाए आग, एका अमृत जाम प्यांअदा। सृष्ट सबाई पकड़ी बैठा वाग, नौ खण्ड सत्त दीप आपे आप भवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्तिम वेखण आया दर, कवण सुहेला रसना बोले करे मेला, गुर पूरा बचन निभांयदा। अस्सू तिन्न दिवस विचार। दो दो प्रभ मेटे धार। एका एक एकँकार। सृष्ट सबाई एका बन्ने धार। वरन बरन निहकलंक कलि साची सरन, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। राज राजान शाह सुल्तान विच जहान। सृष्ट सबाई साची करे पछान। सम्मत सोलां पन्दरां कत्तक वेख वखान। इक्क हदीस ऊँच नीच सारे पढ़न, सोहँ अक्खर मात महान। गुर पीर साध सन्त दर दर घर घर बैठे लड़न, खाली दिसण अन्दर मन्दिर सुंञ मसाण। जूठे झूठे मात सड़न, अन्तिम तुट्टे हँकारी जन्दर, मेट मिटाए पंज शैतान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, खेले खेल श्री भगवान।

पंचम सावण पंचम गाया, पंचम रुत्त सुहाईआ। सतिगुर सावण दिवस मनाया, शब्द होई कुड़माईआ। अन्दर बैठ हरि सन्त एह मता पकाया, अस्सू दो रुत्त सुहाईआ। आप आपणा हथ्थ मिलाया, भुल्ल भुल्ल रही ना राईआ। सृष्ट सबाई जगत काज दए तजाया, एका मेला मेल मिलाईआ। शब्द विच्चोला नाल रलाया, वेखे खाना दफ़तर शाहीआ। माण ताण प्रभ अबिनाशी आपणे हथ्थ रखाया, ना कोई जाणे जीव वड्याईआ। सन्त भगवान मेल मिलाया, लहिणा देणा मूल चुकाईआ। सज्जण सुहेल कवण अख्वाया, इक्क नरेल संग लिआईआ। जोती जोत सरूप हरि, वेख वखाणे सच घर, सन्त कृपाल दिस ना आया, हरिद्वार जा डेरा लाया, हरि द्वार नज़र ना आईआ। हरि द्वार जिस जन जाणया, मिटया भरम अंदेसा। सो जन होए पुरख सुजानया, साचा मेला नर नरेशा। एका एक घर पछाणया, ना कोई वेखे दूजा वेसा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सोलां कल जगत भुलाए कर कर वल छल, आपे वसे निहचल धाम अटल, चले चलाए आपणे भाणया। हरि रूप महान, किसे हथ्थ ना आया। भरमे भुल्ले जीव नादान, हउमे विच फसाया। गोबिन्द गीता सारे गाण, गोबिन्द किसे ना गाया। जिस जन किरपा करे आप भगवान, आपणी सरनी लए लगाया। आत्म देवे शब्द साचा दान, गुरमुखां झोली रिहा भराया। जुगो जुग हरि साचा मेहरवान, जन भगतां पैज रक्खदा आया। झूठा घर झूठा दर झूठे सन्त सुहेले लए सद्द, जगत टिक्का तिलक दए लगाया। ना कोई वेखे वड्डा निक्का, जिस जन सिर आपणा हथ्थ दए टिकाया। जगत रस रसना सृष्ट सबाई जाणो फिक्का, जग रस फिरे सर्ब हलकाया। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अस्सू दो आए दर, आपे आया गया फेरा पाया। सम्मत सोलां रक्खणा याद। जमन किनारे प्रभ सुणे फरयाद। ना कोई जणाई ना कोई वड्याई, ना होवे शब्द बोध अगाध। तन बस्त्र एका शब्द शस्त्र, साचा मेला माधव माध। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, निहकलंक नरायण नर, आवे जावे आदि जुगादि। आदि अन्त एका एकँकारा। जुग जुग वरते आपणा वरतारा। वेखे खेल उप्पर धरते, पुरीआं लोआं पावे सारा। करनी खेल प्रभ कादर करते, कलिजुग अन्तिम करे विहारा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अस्सू तिन्न चरन छुहाए जाए दिल्ली दरबारा। आपे करन करावणहार, आपे सृष्ट उपांयदा। आपे जाणे जानणहार, आपे भरम भुलेखे विच रखांयदा। अगला लेखा लिखणहार, पिछला लेख मूल चुकांयदा। नौ दवारिउँ वसणा बाहर, सुखमन नाड़ी पैंडा डूँघा कवण मलाह बणांयदा। कवण देवे साचा नाँ, सच सुच्च रसना बहि बहि गांयदा। तन कच्चा किसे रहिणा ना, नौ द्वार लेखा आवण जावण झूठी फाही दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका मंगे शब्द वर, कवण द्वारे मेला सति पुरख निरँजण सति सतिवादी साचे माही दा। गुर संगत धन्न कमाईआ। दिवस रैण रसना गाए, गुरमुख विरले शब्द जणाईआ। विरले पंच धाम सुहाए, गुर पूरा हाज़र हज़ूरा अन्दर बैठा सदा सदा पकड़े बाहींआ। ना कोई जाणे ना जाणो दूरा, दो जहानी देवे ठण्ढीआं छाँईआ। सर्बकल आपे भरपूरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आया गया गया आया आपणा बचन कराया पूरा।

❊ २ असू २०१३ बिक्रमी सन्त सुजान सिँघ दे गुरद्वारे गए, उन्हां ने निहकलंक दी बाबत पुच्छया ते हज़ूर ने उत्तर दित्ता दिल्ली ❊

निहकलंक हरि शब्द है, जुग जुग भेख वटाए। इक्क सुहाए द्वार बंक है, बंक द्वारी आप अख्वाए। आपे राउ रंक है, ऊँचां नीचां विच समाए। जन भगतां लाए जोती तनक है, शब्दी वाजा पवण वजाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रचन रचाए। निहकलंक नर निरँकार है, साचा सति सरूप। लक्ख चुरासी आत्म घर वसाए द्वार बंक है, हरि हरि वड्डा शाहो भूप। नूर उजाला जोती कणक है, पृथ्वी आकाश अन्ध कूप। जोती जोत सरूप हरि, जुग जुग मात भेख धर, करे खेल अनूप सरूप। निहकलंक नर निरँकार है, निरगुण रूप समाए। पंज तत्त ना कोई आकार है, हड्ड मास नाड़ी चम्म ना कोई दिसाए। एका शब्द साची धार है, लोआं पुरीआं विच समाए। त्रैगुण माया सृष्ट अपार

है, प्रभ आपणा रथ चलाए। आपे वसे सभ तों बाहर है, हर घट में आप समाए। आपे गुप्त आपे जाहिर है, आपे अन्दर मन्दिर डेरा लाए। आपे जोत निरँजण कर आकार है, शब्द अनादी धुन वजाए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जुग जुग भेख वटाए। निहकलंक नर नरायण है, वसे धाम अगम्म। भगत सुहेला वेखे तीजे नैण है, ना मरे ना पए जम्म। रसना किसे ना सके कहिण है, आपे जाणे आपणा नम। जुग जुग जगत वहाए एका वहिण है, शब्द बणाए साचा थम्म्। जन भगतां चुकाए लहिणा देण है, पवण स्वासी शब्द चलाए दम। सन्त सुहेले विरले गुरमुख लैण है, मनमुख रोवण छम्म छम्म। धन्न धन्न जो जन रसना कहिण है, एका एक पारब्रह्म। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आपे जाणे आपणा कम्म। निहकलंक निहकलंक निहकलंक, जोती हरि अकाल है। शब्द वजाए साचा डंक, जुग जुग अवल्लड़ी चाल है। आप रखाए एका अंक, सन्त सुहेले साचे लोकमात आपे भाल है। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए दीन दयाल है। दीन दयाल कृपाल, जुग जुग भेख वटांयदा। जन भगतां भरे शब्द भण्डार, साचे घर दर आप सुहांयदा। आत्म खोले बन्द किवाड़, आपे हथ्थीं कुण्डा लांहयदा। नेड़ ना आए पंचम धाड़, काल महांकाल मुख छुपांयदा। वज्जे शब्द ताल बहत्तर नाड़, धुन अनादी आप उपजांयदा। करे जणाई बोध अगाध, साचा मन्दिर इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सिँघासण डेरा लांयदा। शब्द सिँघासण हरि करतार, आपणी बणत बणाईआ। ना कोई दीसे चार दिवार, दीवा बत्ती ना कोई जगाईआ। निर्मल जोती इक्क आकार, साचे मन्दिर रिहा टिकाईआ। सन्त सुहेले करे ख़बरदार, देवे मात शब्द जणाईआ। आपे वसे सभ तों बाहर, सभ घट में रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जन भगतां रिहा आप जगाईआ।

गुर नानक दरस कवण घर, देवे सहिज सुभाए। आवण जावण चुक्के डर, लेखा लेखे लए लाए। आत्म सर सरोवर नुहाए साचे सर, दुरमति मैल गंवाए। नौ द्वारे पार कर, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाए। साचे मन्दिर आपे वड़, आपे कुण्डा लाहे। शब्द सिँघासण उप्पर चढ़, दस्म द्वारी वेख वखाए। शब्द सरूपी घाड़न घड़, नाम पलँघ रंगीला इक्क विछाए। नारी कन्त आपे बण, साची सेज हंढाए। सन्त सुहेले साचे जन, शब्दी जोती जोत जगाए। निहकलंक शब्द अनाद, अनादी राग सुणाए। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन आपणी किरपा देवे कर, नानक गुर वखाए साचा घर, मेरी तेरी ना कोए दिसाए। साचा घर सच महल्ल, गुर पूरे आप बणाया। जुगो जुग रहे अटल, ना कोई मेटे मेट मिटाया। किसे दिस

ना आए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ जल थल, काया मन्दिर डूँघी कन्दर आप रचाया। सन्त सुहेला गुरमुख विरला लए मल्ल, जिस जन गुर पूरे शब्दी आपणा लड़ फड़ाया। पौड़ी पौड़ी जाए चढ़, पंच विकारा ना सके अड़, एका शब्द खण्डा हथ्थ लए फड़, साचा मार्ग इक्क वखाया। प्रभ अबिनाशी सति सतिवादी दरस देवे अग्गे खड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, जोती नूर सवाया। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन देवे नाम धन, दो जहानी पार कराया। सन्त जनां घर होया मेला, आत्म वज्जी वधाईआ। आपे वसे सभ तों बाहर, आपे आपणा रंग वटाईआ। जूठा झूठा जगत धरवास, शब्द शब्दी रिहा जणाईआ। आपे गुरु आपे चेला, गोबिन्द रूप वटाईआ। जोत निरँजण चाढ़े तेला, नेत्र अंजन साचा पाईआ। चरन धूढ़ी बख्शे साचा मजन, भाण्डे भरम सन्त द्वारे भज्जण, भरम भुलेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन आपणी किरपा देवे कर, भरमे तोड़ गढ़, गुर पूरे शब्द वड्याईआ। देवे शब्द निशान, जुग जुग भेख वटांयदा। सन्त सुहेले दिवस रैण रसना गाण, साचा कन्त साचा राग सुणांयदा। आप आपणा वेस कर, सन्त साजण साचे देस धर, आपणे संग मिलांयदा। साचा सन्त सुघड़ स्याण, सुरती शब्द जगाईआ। सुरत शब्द इक्क ध्यान, एका ब्रह्म जणाईआ। आत्म ब्रह्म जोत महान, मिले मेल हरि रघुराईआ। एका जोती एका नूर, शब्द धारा रिहा चलाईआ। शब्द धार हरि करतार, लक्ख चुरासी विच समाईआ। आपे वसे अन्दर आपे होया बाहर, गुप्त ज़ाहिर आप अख्वाईआ। खाली भरे शब्द भण्डार, भरे खाली रिहा कराईआ। पुरख अबिनाशी अवल्लड़ी कार, जुग जुग आप आपणी रीत चलाईआ। गुर पीर साध सन्त जीव जन्त आप लए उभार, आप आपणे विच मिलाईआ। जन भगतां देवे शब्द अधार, इक्क कराए वणज वपार, रसना जिह्वा एका सेवा लाईआ। रसना गाया नानक गुर गुर नानक निरँकार, कवण सितार काया मन्दिर आप वजाईआ। किरपा कर आए दर बख्शो धार, मिले मेल सच्चे माहीआ। गुरुदुआरा काया अन्दर, गुर नानक आसण लाया। आप सुहाया साचा मन्दिर, शब्द सिँघासण इक्क विछाया। जगत विकार हँकारी तुट्टा जन्दर, सति सरूप समाया। होए रुशनाई डूँघी कन्दर, अज्ञान अन्धेर मिटाया। उच्चे टिल्ले चढ़ चढ़ थक्के गोरख मच्छन्दर, हथ्थ किसे ना आया। सतिगुर साचा सदा सदा जन तेरे अन्दर, तेरा रूप वटाया। सच दुआरा सचखण्ड, कवण बणत बणाईआ। पुरख अबिनाशी कीनी वंड, साधां सन्तां रिहा जणाईआ। मनमुखां सुत्ता दे कर कंड, दिस किसे ना आईआ। वेख वखाणे हरि ब्रह्मण्ड, जेरज अंड उत्भज सेत्ज खोज खुजाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी पावे वंड, सत्तां दीपां लेख लिखाईआ। कलिजुग औध गई हंढ, गुर गोबिन्दा कलिजुग अन्तिम दए जोत जगाईआ। हथ्थ फड़े शब्द चण्ड प्रचण्ड, मनमुखां दए सज़ाईआ। मनमती जीवां कंडां देवे वढ्ढ, गुरमुख साचे सन्त जनां सिर आपणा

हथ्थ टिकाईआ। सन्त साजना पाए साची वंड, सम्बल नगरी भाग लगाईआ। सृष्ट सबाई नार दुहागण होई रंड, साचा कन्त ना कोई हंढाईआ। गुरमुख विरले बध्धी नाम गंढ, गुर नानक आपणी हथ्थीं झोली पाईआ। वाली हिन्दा आपे दए वंड, गऊ ग़रीबां होए सहाईआ। लोआं पुरीआं करे खण्ड खण्ड, ब्रह्मा शिव सुरपति राजा इन्द करोड़ तेतीसा रिहा जगाईआ। अन्तिम जोत जगे विच ब्रह्मण्ड, आत्म पड़दे देवे लाहीआ। सतिगुर साचा सदा सदा कृपाल, भगत वछल दीन दयाल, जन भगतां बख्शे चरन सरन सच्ची सरनाईआ। सन्त सुजान घर साचा पाया, आत्म ब्रह्म जणाईआ। जीउ पिण्ड तन काचा जगत तजाया, शब्द वज्जी वधाईआ। एका नाम साचो साचा गाया। दिवस रैण ना होए जुदाई, सतिगुर साचे नानक गुर गुर शब्द जणाया, लोकमात मार झात बैठ इकांत, अमृत देवे बूंद स्वांत, आत्म तृखा रिहा बुझाईआ। कवण सिँघासण हरि बिराजे, आपणी सेज विछांयदा। कवण घोड़ा रक्खे ताजे, कवण चरन टिकांयदा। कवण सवेला अमृत शब्द सरूपी गाजे, आलस निन्दरा मगरों लांहयदा। कवण वजाए नाद अनादी अनहद वाजे, ताल तलवाड़ा आपणे हथ्थ रखांयदा। कवण साजण साचा साजे, सुरती शब्दी मेल मिलांयदा। गुर पूरा दिवस रैण गुरमुखां मारे अवाज़े, आप आपणी शरन लगांयदा। दर द्वारे आयण भाजे, वेले अन्तिम रक्खे लाजे, आप आपणे रंग समांयदा। सतिगुर साचा सच वड्याई, पारब्रह्म ब्रह्म भेव ना राई, एका रंग रंगाईआ। रंग रंगाया शब्द लाल, एका चोली रतीआ। मिल्या मेल गुर गोपाल, वा ना लग्गे तत्तीआ। शब्द मारे इक्क उछाल, सति सन्तोखी देवे मतीआ। साचा सन्त ना शाह ना कंगाल, शाहो आपणे नाल रतया। गुर पूरा जिस जन होए दलाल, घर आपणे जाए वत्तया। सन्त साजण फल लगाए काया डाल्ह, आत्म बीज साचा घत्तया। दर दुआरा आए भाल, सतिगुर नानक दरस दए दिखाल, दर द्वारे दे समझावे मत्तया। मिले मेल दीन दयाल, जोती जगे इक्क अकाल, भेव खुल्ल्हे राग छत्तीआ। साची वेख सच्ची धर्मसाल, अमृत आत्म सुहाए साचा ताल। दीपक जोती नूर, हरि दिसे हाज़र हज़ूर, सर्बकला भरपूर, ना नेड़े ना दूर, सन्त जनां कुंजी आपणे हथ्थ रक्खीआ। सन्तन हथ्थ साची कुंजी, प्रभ शब्द खज़ाना दित्ता। मंगणहारा मंगे साची पूंजी, एका मिले साचा नाम, लेखा चुक्के अठारां ध्याए गीता। रोग जाए एका दूजा तीजे नेत्र तीजी धार, दरस दिखाए हरि निरँकार, काया होए पतित पुनीता। आए दर बण भिखार, सन्त सुहेले देणा तार, मिले मेला सज्जण साचे मीत मुरार, पंज तत्त रहे सीतल सीता। गुर पूरे भरया इक्क भण्डार, हरिजन वरया विच संसार, जुग जुग अवल्लड़ी रीता। सतिगुर साचा सच वड्याईआ। आत्म जोती जिस टिकाईआ। सद वजदी रहे वधाईआ। दिवस रैण गाए चाँईं चाँईंआ। ज़ात पाती आत्म कमलापाती चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। चरन कँवल मस्तक धूढ़, नैणी दरस

निराला। सुघड़ बणाए मनमुख मूढ़, साध सन्त जीव जन्त करे प्रितपाला। सृष्ट सबाई नाता कूड़ो कूड़, एका एक साचा सर सच्ची धर्मसाला। लक्ख चुरासी आवण जावण कटे जूड़, शब्द साजन होए कृपाला। सन्त सुजान मेल मिलाउँणा नानक रूप भगवान, हथ्थ फड़ाउँणी साची माला। नाम माला मन मना डोर। बन्नृ वखाए पंजे चोर। जोत जगाए अन्धेर घोर। साचे मार्ग देवे तोर। अग्गे मिले ना कोई होर। गुर नानक पकड़े आपे डोर।

पंज तत्त तन रत है, मानस रसन फिरे हलकाए। सतिगुर साचा बीज बीजे आत्म अमृत साचे वत्त है, अमृत फल लगाए। चरन प्रीत साचा नत्त है, जो जन सरन सरनाई आए। बहत्तर नाड़ी ना उब्बल रत्त है, जिस जन सीस आपणा हथ्थ टिकाए। आपे दे समझावे मति है, गुण अवगुण एका रंग समाए। दुरमति मैल देवे कट्ट है, हउमे हँगता दए जलाए। दूई द्वैती मेटे फट्ट है, अमृत आत्म जाम प्याए। इक्क वखाए काअबा साचा हट्ट है, गुर नानक तेरां सम्मत तेरां तेरी धार मोदीखाने गाए। अन्तिम प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, मस्तूआणे जोत जगाए। पन्दरां कत्तक दिवस विचार, राणा संगरूर शब्द जणाए। गुरमुखां देवे शब्द हुलार, सन्त सुहेले फड़ फड़ बाहों लए तार, साचे सन्त नंद सिँघ तेरे साचे सुत आपे पार कराए। मनमुखां वढ्ढे काया जूठे झूठे पत्त, शब्द खण्डा एका वाहे। जो जन नानक गुर गोबिन्द दर दवारिउँ तेरे गए रुढ्ढ, फड़ फड़ बाहों फेर मनाए। सतिगुर पूरा जाए तुठ्ठ, लुकया रहिण ना पाए गुढ्ढ, तीर निराला जाए छुट्ट, नीला घोड़ा पहला पौड़ा उठाए। गुरमुख सन्त सुहेले आप कराए एका मुठ्ठ, दूजी धार विच संसार रहिण ना पाए। पुरख अकाल होए दीन दयाल, एका नाम रखाए। साचा सुत साचा हट्ट खुल्हाए। नानक गुर तेरा साचा घर, गुर गोबिन्दे मिल्या वर, सम्बल नगरी जाए तर, चार वरन खुल्हाए इक्क दर, साचा मार्ग इक्क वखाए। पंचम पाया पंचम गंवाया, सन्त घर वड्याई। पंचम साचा भोग लगाया, गुरमुख साचे दर घर साचे मेला मेल कराया, विछड़ कदे ना जाईआ। दर द्वारे दरस अमोघ दिखाया, जगत दुखड़ा रोग मिटाईआ। गुर शब्द गुर संगत साची चोग चुगाया, काया तृप्त कराईआ। हउमे हँगत दूई द्वैती मेट मिटाया, साची संगता संग निभाईआ। आपे कट्टणहारा भुक्ख नंगता, प्रभ हथ्थ सच्ची वड्याईआ। एका दर एका घर एका सर हरिजन सदा सदा सदा रहे मंगता, गुर पूरा आत्म झोली रिहा भराईआ। काया चोली नाम रंगता, रंगण रंग मजीठी इक्क चढ़ाईआ। मानस जन्म ना होए भंगता, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। अन्तिम तुट्टी आपणी हथ्थीं गंढुता, नाम डोरी विच लटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रचना लोकमात रिहा रचाईआ।

* ३ अस्सू २०१३ बिक्रमी दिल्ली दरबार पहाड़ गंज गली नं० ७ मकान नं० ८६६७ *

सम्मत बीस तेरा साचा रंग, प्रभ साचा आप रंगांयदा। गुर संगत लगाए आपणे अंग, अंगीकार आप अख्वांयदा। सृष्ट सबाई होए भंग, गुरमुख विरला मात रहि जांयदा। चारों कुन्ट दिसे भुक्ख नंग, कोई ना किसे बचांयदा। जमन किनारा प्रभ आए लँघ, अस्सू तिन्न थित वखांयदा। चरन छुहाए शहीद गंज, तेग बहादर तेरा दर वसांयदा। वाली हिन्द सौणा मिले ना उप्पर पलँघ, दर दरबान रखांयदा। जगत काया तृष्ना खंघ, माया ममता बलगम चलांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी वज्जे मृदंग, प्रभ साचा आप वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वीह सौ तेरां तेरी बणत बणांयदा। बीस बीस वज्जी वधाई, अस्सू तिन्न वड्याईआ। राज राजान शाह सुल्तान आयण चल सरनाई, माण ताण सर्ब मिट जाईआ। जगे जोत इक्क रघुराई, दूसर कोई दिस ना आईआ। ना कोई दिसे भैण भाई, मात पित ना कोई संग रखाईआ। गुरमुख साचे गायण चाँईं चाँईं, पंचम मीता मिले कर कर लंमीआं बांही, आप आपणा लड़ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सिँघासण बैठा चढ़, दिस किसे ना आईआ। शब्द सिँघासण हरि निरँकार, रंगण नाम रंगाया। गुरमुखां करे मात प्यार, साचा संग निभाया। चरन छुहाए दिल्ली दरबार, द्वारका रूप वटाया। गऊ ग़रीब निमाणयां जाए तार, साची सेवा आपणी आप लगाया। कलिजुग वेला अन्त विचार, चारे जुग चारे हिस्से लेख लेखणी रिहा वंडाया। पहला हिस्सा किसे ना दिसा, माया मधी करे ख्वार। गुर पीर साध सन्त कोई रहिण ना पाया, दूजा हिस्सा धर्म जैकार। राज राजानां शाह सुल्तानां मिटे निशानां जगत झण्डा, विच ब्रह्मण्डां कोई रहिण ना पाया। पुरख अबिनाशी सोहँ फड़े हत्थ विच खण्डा, नौ खण्ड पृथ्वी देवे दंडा, आपणे भाणे विच समाईआ। तीजी वंड हरि विचारी। गुर संगत लग्गी मात प्यारी। करे विहार पहली वारी। जन भगतां भरे शब्द भण्डारी। कलिजुग जीआं आई हारी। सम्मत चौदां पहली चेत्र कर त्यारी। दर द्वारे साचे जाए, इक्की इक्की इक्की पाए, खेले खेल हरि गिरधारी। गुर संगत संगत गुर छोटी सिक्खी, सृष्ट सबाई दुष्ट दुराचारी। खण्डे धार रक्खी तिक्खी, गुर गोबिन्द खेल न्यारी। गुर गोबिन्दे मंगी भिखी, दोवें चरन सरन सच्ची निमस्कारी। अन्तिम लज पति प्रभ मेरी रक्खी, हउँ दासन दास तुहारी। आपणी हत्थीं रेख आपे लिखी, प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तीजी भेंट गुर संगत चढ़ाए, आप आपणी सेवा लाए, सेवक सेवादारी। अस्सू तिन्न सवा पंज। होए वक्त सुहेला, प्रभ चरन छुहाया पहाड़ गंज। गुरमुख विरले मात मेला, सृष्ट सबाई नार बंझ। ना कोई गुर ना कोई चेला, मायाधारी अन्तिम मिटणे जिउँ कारू गंज। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला,

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां सुहाए अमृत वेला। शब्द सिँघासण हरि करतार, वेला अमृत आप सुहांयदा। गुर संगत तेरा सच विहार, लोकमात आप करांयदा। सिँघ बिशन खोले बन्द किवाड़, आपणी हथ्थीं सेवा लांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म रूप अपार, सति सरूप समांयदा। वाली हिन्द करे ख़बरदार, साचा शाह सुल्तान आप अख्वांयदा। ना कोई दीसे दर दरबान, सेवक सेवा आप लगांयदा। तीजे मन्नया हरि भगवान, जुग जुग आपणी रीता आप चलांयदा। आपे करे पतित पुनीता, जिस जन दया कमांयदा। सम्मत अठारां इक्क वहाए जल जल धारा ना कोई दिसे गुरदुआरा मस्जिद मन्दिर मसीता, शिवदवाला ठाकर गणेश गणपति ना कोए रसन ध्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, तख्त निवासी घनकपुर वासी, हरि हरि साचा शाहो शाबासी, पारब्रह्म रूप अगम्मा हर घट आप समांयदा। तख्त बिराजे साचा काहना, साचा सईआ आप अख्वांयदा। जोत सरूपी पहरया बाणा, सोहँ नईआ इक्क चलांयदा। एका फड़ शब्द तीर कमाना, लहिणा देणा मूल चुकांयदा। प्रगट होए वाली दो जहाना, भाणा सहिणा हुक्म जणांयदा। अन्तिम छड्डणा पैणा पीणा खाणा, सुंञ मसाणा मात करांयदा। इक्क निशान साचा रहिणा, गुरमुख विरला वेखे साचे नैणा, प्रभ साचा मात झुलांयदा। साढे तिन्न हथ्थ सीआं सभ ने बहिणा, मौत लाड़ी वहिण वहिणा, माया ममता तन पाए गहणा, साची डोली ना कोई चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रंगी चोली, गुरमुखां रंग चढ़ांयदा। काया चोली रंग बसन्त, प्रभ साचा इक्क चढ़ंनया। हरिजन मेला साचे कन्त, आदि अन्त ना कदे विछुनया। आप बणाए साची बणत, वड दाता हरि गुण गुणया। भरमे भुल्ले जीव जन्त, खाणी बाणी वेद पुराणी अञ्जील कुरानी साचा हाणी, कोई ना देवे अमृत आत्म ठण्ढा पाणी, राग नाद ना धुन उपजाए साची धुनया। माया ममता चादर बैठे ताणी, गुर गोबिन्द ना कोए पछाणी, तन म्याना शब्द गात्रा, ना कोई जाणे वेद शास्त्रा, पढ़ पढ़ थक्के देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सम्बल नगरी वेस कर, आपणी बणत बणाईआ। गुर गोबिन्द तेरा साचा घर, हरि साचा आप वसांयदा। अन्दर बैठा हरी हरि, हरि हरि रूप वटांयदा। सृष्ट सबाई आए डर, पंज तत्त वेख शरमांयदा। जगत घाड़न रिहा घड़, आपणा घाड़ ना किसे जणांयदा। सभ दे अन्दर बैठा वड़, दिस किसे ना आंयदा। गुरमुख जगाए दस्म द्वारी चोटी चढ़, शब्द सरूपी दरस दिखांयदा। लक्ख चुरासी नौ खण्ड पृथ्वी लोआं पुरीआं रिहा लड़, दिवस रैणा खण्डा वांहयदा। दोए दोए करे सीस धड़, लग्गी रहिण ना देवे किसे दी जड़, सम्मत उन्नी सभ दी चोटी जाए मुंनी, ना कोई दिसे ज्ञानी ध्यानी पंडत पांधा मुस्लिम सुन्नी, साध सन्त ना कोई वखांयदा। एका एक हरिसंगत प्रभ साचे चुणी, देवे शब्द दर नाद

वजाए साची धुनी, आत्म ब्रह्म ज्ञान जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मीता पंचम रीता पंचम मात चलांयदा। पंचम रीत चलावण आया, पंचां मेल मिलांयदा पंचम गीत सुनावण आया, पंचां तेल चढ़ांयदा। पंचां जगत वसावण आया, पंचां मार मुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचां संग निभांयदा। पंच प्रधान प्रभ मात बणाए। शब्द निशान हथ्थ फड़ाए। चरन रखाए एका आण, सोहँ साचे रथ चढ़ाए। ब्रह्मा शिव देवत सुर अन्त मिट जाण, भाणा समरथ आप वरताए। गुरमुख साचे चतर सुजान, दरस दिखाए विच जहान, सगल वसूरे जायण लथ्थ, नेत्र लोचन दर्शन पायण, आत्म जोती ब्रह्म ज्ञान साढे तिन्न हथ्थ रखाए इक्क निशान, सत्तां दीपां रिहा चढ़ाए। वाली हिन्द ना सौणा बण नादान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कथा अकथ रखाए।

७३
०६

प्रभ अबिनाशी काज रचाया, त्रैलोक वज्जे वधाईआ। ब्रह्मा ब्रह्मलोक त्याग दर साचे आया, दोए जोड़ पड़े सरनाईआ। शिव शंकर नेत्र जाग खुल्हाया, बाशक तशका गल लटकाईआ। सुरपति राजा करोड़ तेतीसा नाल रलाया, चरन धूढ़ मस्तक लावे, नेत्र चरन टिकाईआ। सूरज चन्द रसना गायण आपणे दन्द, मिटावण आए जगत अन्ध, दर द्वार रहे तकाईआ। वरते खेल प्रभ विच वरभण्ड, नौ खण्ड पृथ्वी मिटे भेख पखण्ड, सृष्ट सबाई एका रंग रंगाईआ। सत्तां दीपां रिहा वंड, अचरज खेले खेल विच ब्रह्मण्ड, साची रंगण रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा रिहा लिखाईआ। लेखा लिखणहार दातार, कलिजुग अन्त लिखांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क दरबार, इक्क द्वार वखांयदा। इक्क बणाए सच्ची सरकार, सच सुच्च वरतार चलांयदा। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, बीस बीसा रुत्त सुहांयदा। कल्गी तोड़ा नाम अपार, पंचम जोड़ा जोड़ जुड़ांयदा। सोहँ लेखा अपर अपार, साचे घोड़े आप चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, लेखा लिखणहार आप अख्वांयदा। सच सरकार सच सुल्तान, साचे तख्त बराज्जया। इक्क रखाए आपणी आण, ना कोई सके मात पछाण, ना कोई जाणे राजन राज्जया। नाम चलाए साचा बाण, सोहँ रक्खे तीर कमान, सृष्ट सबाई मिटे निशान, लाड़ी मौत मंगे दाज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेस कर, जगत संवारे भगत काज्जया। साचा वेस आप कराया, माझे जोत जगाईआ। माझा देस दए मिटाया, घर घर ख़ाक उडाईआ। बेमुख जीवां दिस ना आया, अन्तिम रो रो दए दुहाईआ। साढे तिन्न हथ्थ सीआं धाम सुहाया, साची सेवा आपणी आपे लाईआ। जगत जगदीशा नीहां हेठ दबाया, राज राजानां रिहा जगाईआ। अन्तिम वेला नेड़े आया, ना होए कोई सहाईआ।

नगर खेड़े रिहा ढाया, साधां सन्तां दिस ना आईआ। आपणा आपणा राह चलाया, प्रभ अबिनाशी दिस ना आया, गा गा थक्की सर्ब लुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सृष्ट सबाई इक्क मलाह बण के आया, साची नईआ नाम चलाईआ। साची नईआ नाम चलाए, वाली दो जहानया। साचा सईआ आप अख्वाए, देवे दान साचा दानया। भैणा भईआ चार वरन बणाए, चरन धूढ़ कराए सच्चा इशनानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत तेरां साचा समां सुहानयां। सम्मत तेरां लग्गे भाग, वडभागी हरि हरि पाया। गुर संगत मन रहे वैराग, प्रभ साची दया कमाया। सुरत सवाणी जाए जाग, कागीं हँस बणाया। आप बुझाए तृष्ना आग, दुरमति दाग़ धवाया। आपणे हथ्थ पकड़े वाग, दिल्ली तख्त चरन छुहाया। माया डस्से ना डस्सणी नाग, आत्म तृप्त कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल हरि रघुराया। शब्द ताज जोग राज, नाम सुल्तान भगत दरबान साचा दर सुहञ्जणा। नौ खण्ड पृथ्वी वेखे मार ध्यान, आत्म जोती ब्रह्म ज्ञान, शब्द जणाए धुर फ़रमाण, हरि हरि भाणे चलणा। नाम दान पीण खाण, चरन धूढ़ सच्चा इशनान, बीस बीसा कर पछाण, दर घर साचे मन्नणा। साध सन्त जन्त नादान, मन्दिर बहि बहि सारे गाण, मदिरा मास रसना पान, भाण्डा भरम ना किसे भन्नणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नौ खण्ड पृथ्वी करे सच्चा चानणा। सच तख्त सच्चा शाह, जगत मलाह आप बिराज्जया। सृष्ट सबाई दस्से राह, अन्तिम कोई रहिणा ना, ना कोई रक्खे लाज्जया। ना कोई पिता ना कोई माँ, भईआ भैण ना देवे ठंडी छाँ, जूठा झूठा साजण साज्जया। पुरख अबिनाशी एका एक पकड़े बांह, जो जन दर द्वारे आए भाज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे सोहँ सच्चा दाज्जया। सोहँ शब्द सृष्ट कुड़माई, प्रभ आपणी हथ्थीं आप कराउँणी। घर घर दर दर वज्जे वधाई, साची बणत बणाउँणी। अंज़ील कुरान होए जुदाई, प्रभ साची खेल रचाउँणी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची लिख्त लेख भविख्त आपणी आपे आप कराउँणी। हरि हरि हरि साची कार, सच सुच्च वरताईआ। धर्म खण्डा इक्क जैकार, जगत जोग दवाईआ। पाए वंडां कर्म विचार, ब्रह्मण्डां खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जागरत जोत जगाईआ। जगे जोत होए प्रकाश, मिटे अन्ध अन्धेरया। गोबिन्द गाया घनकपुर वास, कलिजुग अन्तिम पाए फेरया। हरि हरि साचा दासन दास, सद वसे नेरन नेरया। वेख वखाणे पृथ्वी आकाश, लोआं पुरीआं रिहा घेरया। कलिजुग सन्तां लग्गी अग्न खै खै जलन बांस, अन्तिम भस्मी भस्म ढेरया। गुरमुख विरले लेखे लग्गे हड्ड नाड़ी मास, चुक्के मेरा तेरया। साचे मण्डल वेखे रास, हरि शामा चाउ

घनेरया। सर्ब गुणा गुण आपे तास, गुणवन्ता करे मिहरया। कट्टणहारा जुग जुग फास, आवे जावे पावे फेरया। गऊ ग़रीब निमाणे मुख विच रक्खी बैठे घास, साध सन्त बणाई बैठे वड वड डेरया। शब्द सरूपी कोई ना वसे किसे पास, रसना कहिण मैं तेरा तूं मेरया। अन्तिम होणा सभ ने नास, राए धर्म पाए घेरया। गुर पूरे गुरसिख साचे सद बलि बलि जास, इक्क कराया सञ्झ सवेरया। गुर संगत साची रक्खणी आस, वेला अन्तिम नेड़े आ रिहा। बीस बीसे अस्सू तिन्न बुझे प्यास, तट्ट किनारा चरन छुहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घट घट रूप वटा रिहा। जमन किनारा वज्जे नाद, हरि साचे आप वजावणा। भगत भगवन्त लए लाध, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर फोल फुलावणा। वेख वखाणे आत्म रसीए साध, रस निझर इक्क चुआवणा। दिवस रैण गुप्त गुप्ती रहे अराध, गोबिन्द नज़र किसे ना आवणा। रसना कहि कहि करन विवाद, वाहवा सतिगुर साचा किसे ना पावणा। जिस जन किरपा कर आपे मेल मिलाए माधव माध, सो जन दर द्वार सुहावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा रूप वटावणा। पंच रंग प्रभ रूप वटाए, पंचम खेले खेला। राम कृष्न कृष्न राम रूप आप हो जाए, सीस मुकट बैन साचे नैणा। गोबिन्द धारा शब्द जणाए, दरस दिखावे देवी नैणा। अमाम मैहन्दी हथ्थ मैहन्दी लाए, सृष्ट सबाई आप वहाए वहिंदे वहिणा। मुहम्मद मुहम्मदी संग रलाए कलिजुग अन्त वखाए नेत्र नैणा। उम्मत नबी रसूल दी निज मेरे घर जम्मदी, धरत मात ने रो रो कहिणा। कोए ना जाणे खेल अगम्म दी, साधां सन्तां ढहि ढहि चरनी पैणा। काया खेल हड्ड मास नाड़ी चम्म दी, प्रभ साचे अन्दर मन्दिर साचे रहिणा। ना भरवासा दम दम दी, बीस बीसे किन्न किन्न रहिणा। गुरमुखां आत्म नीर वहाए छम्म छम्म दी, प्रभ दर्शन लोचन नैणा। तृष्ना रहे ना भुक्ख तम दी, चौथी कूटे दिल्ली आपे बहिणा। घाट रहे ना प्रभ तेरे नाम दी, आप चुकाए लहिणा देणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन धूढ़ नेत्र कज्जल पाए, खोल्ह दिखावे तीजे नैणा। पार किनार कर कर तट्ट, प्रभ प्रगट होवे झट पट, जोती नूर होए प्रकाश। शब्द सरूपी निकले लाट, पंज गज ना कोई आवे पास। काया अग्नी लग्गे मट्ट, रसना गाए इक्क स्वास। आत्म खुल्ल्हे शब्द साचा हट, सतिगुर पूरा होवे सदा पास। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत देवे साचा वर, तन पहनाए सोहँ साचा पट्ट। नौ जेठ प्रभ नींह रखाई, नौ खण्ड वेख वखाणया। नौ खण्ड साढे तिन्न हथ्थ सीं वखाई, लिख्या लेख ना मिटे भगवानया। गुरमुखां अमृत आत्म मींह बरसाई, मेघ मेघला आप अख्वानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, शब्द सिँघासण इक्क पछाणया। शब्द सिँघासण हरि करतार, आपणा आपे साज्जया। सृष्ट सबाई रिहा पुकार, प्रभ प्रगट

होए देस माज्झया। नौ खण्ड पृथ्वी बन्ने धार, पकड़ उठाए राजन राज्जया। वाली हिन्द कराए ख़बरदार, शब्द सरूपी साचे मन्दिर बहि बहि गाज्जया। साढे तिन्न हथ्थ हरि समरथ फड़े निशान अपर अपार, सृष्ट सबाई रक्खे लाज्जया। गुरमुखां होए पहरेदार, घर घर बैठा मारे आवाज्जया। जोत सरूपी पहरेदार, सभ दे पड़दे रिहा काज्जया। कलिजुग अन्तिम अन्त ना आए हार, जो जन चरन द्वार आए भाज्जया। पंचम जेठ करे प्यार, लक्ख चुरासी देवे दाज्जया। हाढ़ सतारां मारे इक्क अवाज़, दरस दिखाए दया कमाए तृप्त बुझाए, ब्यास किनारा खिज़र खवाज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख चढ़ाए शब्द सच ज़हाज्जया। पंच निशाना पंचम धार, पंचम सीस बंधाईआ। गुरमुखां रहिणा ख़बरदार, जगत जगदीस रिहा कराईआ। नौ खण्ड पृथ्वी पैणी मार, बीस बतीस छतीस ना कोई गाईआ। सतिजुग तेरा सच विहार, इक्क इकीस कराईआ। इक्की इक्की चारे मेल वार, इक्क इक्क रूप वटाईआ। एकँकारा कर अकार, एका दर खुल्हाईआ। शब्द भरे नाम भण्डार, दिवस रैण चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम पंचां मेल मिलाईआ। शब्द सोटी जगत हुलारा, आपणे हथ्थ रखांयदा। राज राजानां करे ख़बरदारा, उलटी लट्ठ गिड़ांयदा। अन्त विछोड़ा नारी नारा, नारी कन्त ना कोए हंढांयदा। जन भगतां बख्शे चरन प्यारा, साची सुरत दवांयदा। धुरदरगाही एका लाड़ा, लक्ख चुरासी आप प्रनांयदा। धरत मात एका वेख अखाड़ा, राए धर्म खुशी मनांयदा। लग्गे अग्ग सतारां हाढ़ा, सोलां सोलां तेरी धार बन्नांयदा। लुक्कया रहिण ना पाए कोई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, मस्जिद मन्दिर गुरुदुआरा फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, शब्द डण्डा चारों कुन्ट अगम्मी धाड़ा आप उठांयदा। अगम्मी धाड़ आए चढ़, दिस किसे ना आईआ। शब्द डण्डा प्रभ ल्या फड़, अचरज रीत बणाईआ। तिन्नां लोआं रिहा लड़, दिवस रैण लड़ाईआ। आप उखाड़े सभ दी जड़, आपणी मात लगाईआ। कलिजुग ममता लए फड़, सम्मती सम्मता वक्त चुकाईआ। किला तोड़ हँकारी गढ़, अगम्मा शब्द जणाईआ। दर दर घर घर सीस धड़, चारों कुन्ट दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, अस्सू तिन्न शब्द सोटी कर त्यार, वेखे खेल दिल्ली दरबार, वाली हिन्द रिहा जगाईआ। वाली हिन्द रिहा सौं, अन्तिम अन्त जुदाईआ। उच्चे मन्दिर ना वेखणे भौं, दिवस रैण जुदाईआ। सम्मत इक्की प्रभ भाग लगाए, चरन छुहाए विच गुड़गाउँ, साचा धाम बणाईआ। गुर पूरा देवे गुरसिख तेरे नाम वड्याई, साचा द्वार बंक इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सोटी फड़ आप जाए चढ़ उप्पर चोटी, सृष्ट सबाई रिहा जगाईआ। पंचम जोड़ा हरि भगवान,

७७
०६

आपणे चरन छुहांयदा। गुरमुखां देवे चरन ध्यान, धूढ़ी मस्तक लांयदा। मनमुखां मेटे मात निशान, बीस बीस बीस इकीस लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, पंचम पंचां रंग वटांयदा। पंचम ताज जगत जगदीश, आपणी बणत बणाईआ। सृष्ट सबाई जाए पीस, वरन गोत रहिण ना पाईआ। ना कोई पढ़ाए कुरान हदीस, अंज़ील अंज़ीलां वक्त चुकाईआ। रसना गाए ना राग छतीस, राग रागनी मुख छुपाईआ। बन्द कराए दन्द बतीस, बत्ती धारा मात बख्शाईआ। प्रभ साचे तेरी साची रीत, सतिजुग साचे मंगी वधाईआ। लेख लिखाए बीस इकीस साचे शब्द मात कुड़माईआ। सोहँ शब्द गुरमुखां झुल्ले साचे सीस, चौथे घर आपे झुलाईआ। साचे दर आपे खड़, आपणी हथ्थीं बूहा लाहीआ। कन्ता नारी लए वर, तन वेस करेंदी आईआ। आप नुहाए साचे सर, काग हँस बणाईआ। मेला मेला मेल कर, मिल्या विछड़ ना जाईआ। गुरमुख साचे सज्जण सुहेल मात धर, दर दरबान आप अख्वाईआ। आप चुकाए जगत डर, घर साचे इक्क वड्याईआ। सृष्ट सबाई वेखे नौ दर, दसवां बन्द रखाईआ। गुरमुखां आपणी किरपा देवे कर, आपणे रूप समाईआ। जोत निरँजण साचा दीपक बाती साची धर, पहली इक्क करे रुशनाईआ। पौड़ी पौड़ी जाणा चढ़, साचा डण्डा शब्द हथ्थ फड़ाईआ। जगत विकारा जूठ झूठ अन्तिम जाए सड़, प्रभ जोती लम्बू लाईआ। ना कोई दिसे किला गढ़, तख्त ताज किसे रहिण ना पाईआ। सति सतिवादी प्रभ लावण आया सतिजुग तेरी साची जड़, अस्सू तिन्न रुत्त सुहाईआ। दिल्ली द्वार अग्गे आपे खड़, हरि हरि भेव किसे ना राईआ। अन्तिम सरनी जाए पड़, प्रभ देवे दरस आपणा रूप वटाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी सत्त दीप एका अक्खर जायण पढ़, सुरती शब्द जणाईआ। साचा घाड़न आपे ल्या घड़, घड़नहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची रीती रिहा चलाईआ। पंचम मुख पंचम ताजा। पुरख अबिनाशी धुर दरगाही साचा राजा। कलिजुग तेरा अन्तिम अन्त, लोकमात मार झात करावण आया सतिजुग संवारे साचा काजा। गऊ ग़रीब निमाणयां बाहों पकड़ मात उठाए, देवे शब्द साचा दाना। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत भगवन्त ग़रीब निवाजा। इक्क इक्की एका धार, हरि साचे आप चलाईआ। सेव लगाए साची सिक्खी, साचा सुख उपजाईआ। चार लक्ख बत्ती हजार मंगे भिक्खी, कलिजुग आयू औध मिटाईआ। गुर गोबिन्दे रेख लिखी, हरि पूर कराए धुरदरगाहीआ। शब्द धार रक्खे तिक्खी, खण्डा चलाए वाहो दाहीआ। ना कोई जाणे मुनी रिखी, पंडत पांधे भेव ना पाईआ। ना कोई जाणे साची सिक्खी, सिख्या कवण द्वारे आईआ। वरन गोत गोत वरन भेखा भेखी, भेखाधारी रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आपणी जोत जगाईआ। साची सिख्या सिख विचार, सति सरूप

समावणा। वरन गोत तों वसणा बाहर, एका हरि पछानणा। देवे दरस गुप्त ज़ाहिर, दर दुआरा साचा मानणा। फड़ फड़ बाहों करे पार, जमन किनारा इक्क वखावणा। सृष्ट सबाई वहिंदी धार, अग्गे हो ना किसे बचावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख शब्द फड़ाए साचा दामना। दामन फड़ाए दामनगीर, दम दम रसन ध्यावणा। तन बस्त्र पहनाए शब्द चीर, नाम पड़दा उप्पर पावणा। सोहँ गात्रा रसना तीर, एका एक चलावणा। नौ खण्ड पृथ्वी पैंडा चीर, ब्रह्मण्ड खोज खुजावणा। अन्तिम पीणा साचा सीर, सीर मुख चवावणा। नेत्र दर्शन साचे गुर, तृष्ना भुक्ख मिटावणा। साचा मेल मिलावण आया धुर, धुर दा मेल मिलावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत सेवा रिहा कर, सवा पंझी साध संगत तेरी भेंट चढ़ावणा। तेरी भेंट आप चढ़ाए आपणी सेवा लाए, दर दर घर घर गुरसिक्खां कोलों मंगे अग्गे खड़, नाम प्रीती झोली पावणा। गले लगाए बाहों फड़, जिउँ सुदामा हरि रघुराईआ। बन्नी जाए आपणे लड़, एका गंढु दवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे सन्त जनां आत्म ठण्ढा रखाईआ। सवा पंझी कर अरदास, तीजी वंड वंडांयदा। सवा पंझी रक्खे पास, सम्मत सोलां वक्त सुहांयदा। ब्यास किनारा पाए दस, जैमल सावण संग रलांयदा। आपे वसे आस पास, दिस किसे ना आंयदा। लेखे लाए सास ग्रास, जो जन मदिरा मास तजांयदा। वेखणहारा पृथ्वी आकाश, आकाश अकाशां विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाए सर्ब घर, आपणे रूप समांयदा। नाम धार हरि पाया, नामे बणत बणाईआ। कर्म विचार प्रभ कर्म कमाया, माटी जामे लिख्त लिखाईआ। अमृत आत्म साचे जामे, साची धार चवाईआ। साची स्वांती बूंद चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां अमृत मेघ एका बरसाईआ। सम्मत पन्द्रां वज्जे सट्ट, प्रभ साचे आप लगावणी। सिँघ प्रताप उठे झट्ट, कवण वेखे दामन दामनी। अन्दर कीता बन्द हट्ट, राम रामा रूप रमावणी। माया ममता पाई तन छट्ट, छुट्ट जाए तन मिटे तृष्ना तामनी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सम्मत सोलां पूर कराए घर घर भावनी। पूर कराए घर घर आसा, आत्म तृखा बुझांयदा। गुरमुखां बख्शे चरन भरवासा, दासी दासा आप अख्वांयदा। मण्डप माढ़ी पाए रासा, काया मण्डल इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां अन्दर सद रक्खे वासा, आस प्यास बुझांयदा। अस्सू तिन्न सवा पंज, प्रभ ताज सीस टिकाया। ताज सीस जगत जगदीश, बीस इकीस होए सहाया। छत्र झुल्ले प्रभ साचे सीस, दूसर कोई रहिण ना पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सतारां हाढ़ वीह सद आया। सतिजुग तेरी साची लिख्त, सोलां विद्या

विच दए लिखाईआ। सोलां विद्या एका धार, एका रसन चलाईआ। सत दीप नौ खण्ड इक्क प्यार, एका पल्ले नाम गंढु बंधाईआ। ना कोई दिसे नार दुहागण रंड, ब्रह्मण्ड खुशी मनाईआ। सतिजुग साचा गुरमुखां घर घर साचा जाए नाम आए वंड, प्रभ साची सेवा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेव रिहा छुपाईआ।

इक्की एक एकँकार, एका रूप समावणा। जगत मिटाए धुँदूकार, सतिजुग साचा चन्द चढ़ावणा। सुहाए बंक दर द्वार, राउ रंक एका धाम सुहावणा। साचा हुक्म धुर फ़रमाण, पंचम आप अख्वावणा। सति सन्तोखी वरते कार, नाम अधार आप रखावणा। बीज बीजे अपर अपार, आपणी हथ्थीं बूटा लावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा कर्म कमावणा। इकीस इकीस इक्की इक्क अकल्लया। करे खेल हरि जगदीस, वसाए इक्क महल्लया। सम्मत सम्मती लहिणा देणा चुक्के विच बीस, कलिजुग अन्त परछावां ढलया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, चल्ले चाल इक्क अवल्लया। चाल अवल्लड़ी इक्क चलाए। करन करावणहारा, इक्क अकलड़ी जोत जगाए।

७६
०६

खेल खिलाए खेलणहारा, धरत धवल सारी हलड़ी, ना कोई दिसे होर सहाए। गुरमुखां वखाए एका घर एका हरि, अगम्म अगम्मड़ी जोत जगाए। ना कोई मंगे पैसा धेला दमड़ी, रूपा सोना ना तन श्रृंगार कराए। पुत्तर धीआं ना कोई लोचे माता अंमड़ी, पिता पूत ना कोए तरसाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरन इच्छया भगत कराए। सतारां हाढ़ सम्मत इक्की, सतिजुग तेरी धार चलावणी। नौ खण्ड पृथ्वी बणाए लक्ख ग्यारां मुनी रिखी, साची सिक्खी आप सुहावणी। मस्तक लेख आपणी हथ्थीं जाए लिखी, लिखी रेख ना किसे मिटावणी। सतिजुग मंगी साची भिखी, प्रभ आपणी हथ्थीं झोली पावणी। सोहँ धारा रक्खीं तिक्खी, सस्सा होड़ा दोवें मुख निरगुण सरगुण रूप सुहावणी। सुखमन टेडी रक्खी, भीड़ी गली इक्क तकावणी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे सन्त जनां साची सिख्या इक्क सिखावणी।

सच घर वसया आप, साचे रूप समाया। हरि हरि साचा शाहो भूप, साचा तख्त रिहा सुहाया। लक्ख चुरासी अन्ध कूप, निर्मल जोत ना जगाया। कलिजुग रैण अन्धेरी चारों कूट, दहि दिशा अन्धेरा छाया। तीर निराला रिहा छूट, दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अगम्म अगम्मा अगम्मड़ा रूप वटाया। तीर निराला शब्द

मुख, रसन कमान चलांयदा। जन भगतां मेटण आया दुःख, मनमुखां नष्ट करांयदा। धरत मात तेरी सुफल कराए कुक्ख, गौड़ ब्रह्मण पूत सपूता लोकमात चरन छुहांयदा। उज्जल करे सतिजुग साचे मुख, मस्तक साची रेख लिखांयदा। गऊ ग़रीबां कटे भुक्ख, राज राजानां शाह सुल्तानां दर दर फिरांयदा। जन भगतां गेड़ कटाए गर्भवास उलटा रुक्ख, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। घर घर धूंए रहे धुक्ख, किसे ना मिले आत्म सुख, साचा मन्दिर काया अन्दर कोए ना मात वखांयदा। साधां सन्तां वधाई तृष्ना भुक्ख, अग्नी अग्न जलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग मेटे भेख पखण्डा, सोहँ फड़या हथ्थ विच डण्डा, नौ खण्ड पृथ्वी पावे वंडा, वेख वखाए जेरज अंडां, वेख वखाए चारे वेद कुरान पुराण ज्ञान ध्यान जगत विद्या ब्रह्म विचार, ग्रन्थ पन्थ साचे फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, एका एकँकारा। एका एक शब्द जैकारा, धुरदरगाही लेख साचा लिख्या प्रगट होए नर निरँकारा, नानक गाई सृष्ट सबाई मिथ्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क चलाए साचा रथया। सतिजुग साचा रथ चलाए, साचा हरि रथवाहीआ। कलिजुग काला मथ वखाए, चारों कुन्ट पए दुहाईआ। महिंमा जगत अकथ अकथ आप रखाए, कथनी अकथ कथ ना सके राईआ। मनमुखां जीवां धर्म राए दर सत्थ वछाए, लाड़ी मौत खुशी मनाईआ। अन्तिम लेखा सीआं साढे तिन्न हथ्थ वखाए, दूसर वस्त कोए नाल ना जाईआ। गुरमुख साचे सन्त सुहेले सिर दे कर हथ्थ रक्ख वखाए, साचे शब्द करे कुड़माईआ। त्रैलोकी नाथ सगला साथ आपणा आप निभाए, पारब्रह्म ब्रह्म सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, निहकलंक नरायण नर, लोआं पुरीआं रिहा जणाईआ। लोआं पुरीआं शब्द हुलार देवणहार एकँकार। वेखे खेल विच संसार। ब्रह्मा ब्रह्म वेता रसना गाए, चारे वेदा भेव ना पाए, अछल अछेद वेद व्यासा बण लिखार। अठारां पुराण गाए सलोक इक्क लक्ख हज़ार सतारां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, लोकमात अन्तिम कलि विच संसारा। रसना गाया गौड़ ब्रह्मण साचा पूता, नाल रलाए शब्द साचा दूता, चारों कुन्ट रिहा दुड़ाईआ। मेटे जूठ झूठा, जग सच सुच्च वरताईआ। मनमुखां फड़ाए हथ्थ खाली ठूठा, चारों दर रिहा फिराईआ। गुरमुख साचा सन्त सुहेला दर दवारिउँ जो गया रूठा, दरस अमोघ हरि वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे संग आप रखाईआ। आत्म संगी शब्द सुरंगी, नाद अनादी नाद वजाईआ। वज्जे तन सच्चा मृदंगी, नौ द्वारे वेखे लँघी, साचा मार्ग इक्क वखाईआ। वड दाता सूरा सरबंगी, दिवस रैण अंगी संगी, आप आपणा संग निभाईआ। गुरसिख पिठ ना होवे नंगी, प्रभ बैठा सीस आपणा हथ्थ टिकाईआ। देवे वस्त जो दर आए मूंहों मंगी, ब्रह्म रूप समाईआ।

८०
०६

आत्म धारा इक्क वहाए अमृत साचा गंगी, शिव शंकर सीस टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जगत जगदीश तेरी करी घर साचे कुड़माईआ। जगत जगदीश घर साचा पाया, त्रैलोक वज्जी वधाईआ। जीउ पिण्ड काचा मात तजाया, नाम दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। ग़रीब निवाज़ा दर्शन पाया, सगली चिन्त मिटाईआ। हरिजन जन हरि तेरा साजन साजा, अग्गे बैठा दोवें भुजा उठाईआ। चतुर्भुज हरि रक्खे लाजा, भेखाधारी भेख वटाईआ। प्रगट होए देस माझा, सम्मत सम्मती रिहा मिटाईआ। हरिजन जन हरि तेरी रक्खे लाजा, आप कराए तेरा काजा, साची सेवा रिहा कमाईआ। मनमुख जीवां विकार हँकार काया डोली देवे दाजा, अन्तिम एका धक्का लाईआ। कलिजुग मातलोक विच्चों जाए भाजा, धुरदरगाहों आए भाजा, संग मुहम्मद मुख छुपाईआ। सतिजुग साचा धुरदरगाहों आए भागा, दोए जोड़ प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। धरतमात दूर दुराडी उठ उठ मारे आवाज़ा, आ सपूता साची गोद मैं आपणी आप सुहाईआ। भगत जनां दी रक्खे लाजा, सोहँ मुम्मा साचा सीर पिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सम्मत तेरां तेरी बन्न्हे धार, अस्सू तिन्न दिवस विचार, बीस बीसे होए जगत जैकार, इक्क इकीसे सारी सृष्ट एका इष्ट एका दृष्ट एका रूप समाईआ। एका रूप रंग रंगावणा। काया साची चोली, शब्द घोड़े तंग कसावणा। चार कुन्ट दहि दिशा वेख वखावणा। जन भगतां पूर कराए भावना। लहिणा देणा पिछला लेख चुकावणा। सम्मत सतारां साचा वेख, गुरमुख साचे संग निभावणा। सम्मत पन्दरां धारे भेख, तट्ट तीर्थां खिच वखावणा। सम्मत सोलां लाए मेख, दर दर घर घर हाहाकार करावणा। सम्मत सतारां रिहा वेख, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ राज राजानां शाह सुल्तानां एका आसण विछावणा। सम्मत अठारां ना कोई दिसे औलीए पीर शेख़, सेठ सिठान विच जहान कोई रहिण ना पावणा। सम्मत उन्नी सन्त सुहेले जाए चुणी, कलिजुग मिटदी जाए रेख, बीस बीसे उपजे राग साची धुनी, मिले मेल हरि जगदीस। जोती जोत सरूप हरि, इक्क इकीसा हरि जगदीसा छत्र झुलाए साचे सीस। रथ रथवाही बण के आया, सृष्ट सबाई हरि रघुनाथ। दो जहानां खेल आपणे हथ्थ रखाया, प्रगट होए त्रिलोकी नाथ। भगतां जनां हरि रिहा जगाया, लहिणा आपणा मूल चुकाए मस्तक लिख्या धुर धुर माथ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जुग जुग आप निभाए आपणा साथ।

रथ रथवाही ठाकर दाता, सर्बकला भरपूरा। ज्ञानी शब्दी ब्रह्म ज्ञाता, सद सद हाज़र हज़ूरा। जन भगतां रक्खे उत्तम ज़ाता, शब्द रखाए साची तूरा। प्रगट होए कमलापाता, कलिजुग कूड़ मिटाए कूड़ा। मिटे रैण अन्धेरी राता, माया ममता

जूठी झूठी मिटे धूढ़ा। जन भगतां पुच्छे अन्तिम वाता, करे प्रकाश दीवा बाती साची जोती नूरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेद व्यासा लेख लिखाया करे कराए पूरा। ब्रह्म गौड़ गौड़ सपूत, जोती मात जणाईआ। गोद उठाया साचा पूत, शब्दी नाउँ रखाईआ। सोहँ धागा साचा सूत, हथ्थीं गाना बन्नृ वखाईआ। लोआं पुरीआं फेर फिराए साचा दूत, साचा हुक्म जणाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी चारे कूट, दहि दिशा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग वक्त सुहाईआ। कलिजुग अन्तिम अन्त आया, हरि जोती नूर उपांयदा। भगत सुहेले साचे सन्त रिहा जगाया, राम राम आप अख्वांयदा। शाह भबीखण अन्त कलि ना मिले सज़ाया, जुग त्रेता पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, माँ प्यो बेटा अख्वांयदा। मात पित हरि जगदीश्र, सृष्ट सबाई उपाया। आपे जोगी मुनी मुनीश्र, तपी तपीश्र रिख मुन आप अख्वाया। संग रखाए सवा रत्ती मस्तक टिक्का साचा केसर, नाम तिलक त्रिसूल धार लगाया। अन्तिम वेला जगत थनेसर, थिर घर रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत जिज्ञासू वेखण आया। इक्क नरेल नारद मुन, ब्रह्मा पूत उठांयदा। भगत सुहेले साचे चुण, सोए मात जगांयदा। देवणहारा साचा गुण, आपणा भेव खुल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द अनादी साची धुन आपणे हथ्थ रखांयदा। नाद धुन तन काया मन्दिर, प्रभ आपणे हथ्थ रखाईआ। बजर कपाटी लाया जन्दर, ना कोई तोड़ तुड़ाईआ। रैण अन्धेरी डूँघी कन्दर, दीपक जोत दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आत्म वर, नेत्र नैणी दरस दिखाईआ। दर्शन नैण साचे घर, जगत तृष्ना बुझाईआ। हरि चरन बहिण साचा वर, ब्रह्मा विष्न महेष गणेश दर बैठे सीस झुकाईआ। भगत जनां हरि दर दरवेश, लोकमात आवे जावे फेरा पाईआ। पारब्रह्म पुरख अबिनाशी सदा आदेस, वेस अवेसा अनन अनेका आप कराईआ। ना कोई जाणे धारी केसा, मूंड मुंडाया सूझ ना पाईआ। हरिजन साचे विच प्रवेशा, शब्द धार इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत तेरां दस तीस, तीजी अस्सू थित लिखाईआ। अस्सू तिन्न साढे दस दासा दास आया। करे खेल बीस बीस, भेव किसे ना पाया। नौ खण्ड पृथ्वी चरन हेठ झस्स, लोआं पुरीआं पार कराया। आप आपणे घर रिहा वस, महल्ल अटल इक्क रखाया। हरिजन साचे राह साचा रिहा दस्स, चार वरन साची सरन इक्क सरनाया। अन्तिम मेला होणा नस्स नस्स, शब्द तीर चलाए कस कस, भरमां डेरा देवे ढाहया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे भगती वर, साची सेवा रिहा लगाया। भगत भगवन्त साचा मीत, दयानिध अख्वांयदा। एका राग सुणाए साचा गीत, कारज सिद्ध करांयदा। काया

करे पतित पुनीत, आप आपणी बणत बणांयदा। नेत्र दर्शन सीतल सीत, सांतक रूप समांयदा। आपे वसे आत्म चीत, चित वित ना कोई ठगोरी पांयदा। सदी बीसवीं रही बीत, बीस बीसा हरि अख्वांयदा। ना कोई हस्त शाह कीट, माया चक्की रही पीस, कलिजुग साचा पीसण पांयदा। माया ममता कौड़े रीठ, ना कोई चाढ़े काया चोली रंग मजीठ, रंगण नाम ना कोई रंगांयदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी भगवान बीठला बीठ, जोत सरूपी सदा अनडीठ, अनडिठा दरस दिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन बख्शे चरन प्रीती दर सो जन सरन सरनाई आंयदा।

३ अस्सू २०१३ बिक्रमी दिल्ली राष्ट्रपती भवन विच शब्द उचारया

अस्सू तिन्न साढे दस अन्दर वड़या, सर्बकला भरपूरा। राष्ट्रपति तुट्टा यति शब्द सरूपी जाए फड़या, वेखे खेल नूरी नूरा। जगत विकारा माया ममता मथया, हरि हरि नाता दूरन दूरा। लोकमात अग्गे होए ना अड़या, शब्द खण्डा करे चूर चूरा। आत्म अक्खर ना पढ़या, अमृत मिल्या ना सति सरोवरा। जोती जोत सरूप हरि, शब्द लेखा रिहा भेज, अन्तिम छड्डणी फूलां सेज, जोत जाति जाए जड़या। फूलन सेज जाए छुट्ट, ना रहे रुत्त बसन्ता। भाग भागनी गए निखुट्ट, मेल विछोड़ा साचे कन्ता। अन्तिम पैणी दर द्वारे लुट्ट, मिले ना हाथी घोड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर द्वारे बैठे रथ जगत रथया। मुख छुपाया मस्तक लेख अपारा, आप आपणा पर्दा पाया। भरमी भरम न्यारा, लेखा जाणे अस्थूल जड़ दा। अगम्म रूप अपारा, शब्द सरूपी आपे फड़दा। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहिरा, माया ममता विच ना सड़दा। जोत सरूपी हरि निरँकारा, तोड़े माण किला हँकारी गढ़ दा। खेले खेल विच संसारा, दस्म द्वारी साचे मन्दिर हरिभगत सुहेले आपे वड़दा। एका एक एकँकारा, काली धार वहे वहिण जूठे झूठे हड़ दा। सच सुच्च ना कोई वरतारा, हरिजन साचा एका अक्खर पढ़दा। दो जहानी उतरे पारा, लेखा चुक्के सीस धड़ दा। अन्तिम मेला जमन किनारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल अगम्म अगम्म अगम्म अपारा।

३ असू २०१३ डा० रूप लाल बत्तरे नाल बचन होए दिल्ली

निर्मल जिया आप करे, आपणी किरपा धार। दीपक देवे इक्क दीआ, जोती नूर अपार। आत्म बीज बीजे शब्द बीआ, फल लाए काया डाल्ह। नाम निधान गुरमुख विरले मात पिया, तोड़े जगत जंजाल। जोती जोत सरूप हरि, जुग जुग

जोती भेख धर, जन भगतां होए आप दलाल। जगत दलाल भगत वणजारा, शब्द हट्ट खुल्हांयदा। काया मन्दिर वेखे तीर्थ पार किनारा, अमृत आत्म ताल सुहांयदा। काया माटी शब्द वजाए सच नगारा, ताल आपणे हथ्थ रखांयदा। करे प्रकाश एका एक एकँकारा, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। नाद धुन उपजे सुणाए राग हरि सुणनेहारा, मुन सुन तोड़ तुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, भगत भगती मार्ग लांयदा। भगत भगवन्त सन्त कन्त एका सच हंढाईआ। दर घर साचे आप बणाए साची बणत, शब्द सिँघासण फूलन सेजा, दस्म द्वारी साचे अन्दर आप विछाईआ। जोत निरँजण शब्द सुनेहड़ा भेजा, हरिजन साचे मात जगाईआ। हथ्थ फड़ाए नाम शस्त्र नेजा, पंजां चोरां रिहा डराईआ। नैण खुल्हाए आपे तीजा, जिस जन आपणी दया कमाईआ। हरिभगतां करे आपे रीझा, तन शब्द शृंगार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, जुग जुग जोती जामा भेख धर, वेख वखाए सृष्ट दृष्ट इष्ट इष्ट कवण रघुराईआ। अस्तक नास्तक दोवें धार, जुग जुग मात चलांयदा। हरि का रूप अगम्म, भेव अपारया। हड्ड मास नाड़ी ना कोई चम्म, दिस किसे ना आ रिहा। पवण स्वासी ना कोई लए दम, पंच तत्त ना संग रला रिहा। नेत्र नीर ना दिसे छम्म छम्म, बस्त्र शस्त्र ना कोई लटका रिहा। ना मरे ना पए जम्म, साचे धाम सुहा रिहा। आपे जाणे आपणा कम्म, करन करावणहार आप अख्वा रिहा। आपे राम रमईआ राम, राम रामा आप अख्वा रिहा। आपे गगन पतालां देवे थम्म, लोआं पुरीआं आप सुहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आपे वसे आपणे घर, जोती नूर उपा रिहा। जोती नूर हरि भगवान, दिवस रैण सवाईआ। शब्द रक्खे इक्क निशान, जुग जुग मात झुलाईआ। जिस जन किरपा कर देवे साचा दान, आपणी बूझ बुझाईआ। आत्म बख्शे ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। दरस अमोघा देवे जिया दान, धुर संजोगा मेल मिलाईआ। रसना रस ना कोई भोगा, आत्म रस निझर धार इक्क वहाईआ। ना कोई राग सुणाए जगत सलोका, पढ़ पढ़ ना कोए वखान कराईआ। आत्म अन्तर एका एक सच्चा गुर मन्त्र, पंच रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आपे आपणे वसया घर, जोती नूर कराईआ। जोती नूर हरि अगम्मा, अगम्मा धाम सुहांयदा। निरगुण रूप नर आकार, निज घर वास रखांयदा। सरगुण रूप विच संसार, हरि आपणी बणत बणांयदा। गुरमुख साचे सन्त सुहेले मीत मुरार, आपणी गणत गिणांयदा। आपणा बख्शे चरन प्यार, साची रीत वखांयदा। देवे शब्द नाम धुन सच्ची धुन्कार, काया मन्दिर मसीत गुरुदुआरा इक्क जणांयदा। गुण अवगुण प्रभ रिहा विचार, मीत मीता आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, हरिजन सोए आप जगांयदा। सो जन उधरे पार, जिस जन जोत जगाईआ। साची जोत कर अकार, शब्द धार वहाईआ। शब्द धार अपर अपार, बजर कपाट खुल्हाईआ। बजर

कपाटी औखा घाट, आपे आप चढ़ाईआ। इक्क वखाए साचा हाट, सतो गुण सति वस्तू विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां मस्तक लेख लिखाए लिलाट, लिखणहार आप अख्वाईआ। नाम जोती काया धर, साचा शब्द जणांयदा। इक्क वखाए साचा सर, अमृत आत्म सच सरोवर तीर्थ इशनान करांयदा। जगत चुकाए झूठा डर, साचे मार्ग लांयदा। जिया दान भगती देवे वर, सारंगधर भगवान बीठला आप अख्वांयदा। आप आपणे जिहा कर, रूप अनूपा विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले आप कराए आपणे मेले, आपणा शब्द जणांयदा। हरि मूर्त अकाल, जोती नूर सवाईआ। जोती नूर दीन दयाल, दिस किसे ना आईआ। आपणी आप करे प्रितपाल, आपणे रंग समाईआ। आपे चले अवल्लड़ी चाल, आपणी बणत बणाईआ। जोती सुत उपाया शब्द रखाया साचा लाल, हरि आपणी गोद उठाईआ। त्रैलोकां बणाया आप दलाल, ब्रह्मण्ड विच टिकाईआ। खोजन खोज खोज जुग जुग थक्के भाल, हरि शब्द हथ्थ ना आईआ। पुरख अबिनाशी आपे चले अवल्लड़ी चाल, आप आपणा रूप मात वटाईआ। आपे मार शब्द उछाल, पंज तत्त रसना बाहर कढाईआ। सृष्ट बणाए जगत दलाल, रसना गा गा तरे लुकाईआ। नेड़ ना आए काल महांकाल, अकाल अकाला दोवें राह चलाईआ। हरि शब्द अनमुल्लड़ा लाल, हरि दर रक्खया आप संभाल, सभ घट में आप टिकाईआ।

८५
०६

मानस जन्म पाया, वज्जी मात वधाईआ। प्रभ अबिनाशी दया कमाया, लक्ख चुरासी होई कुड़माईआ। साचा धर्म आप रखाया, भरमे भुल्ली सर्ब लुकाईआ। गुर गोबिन्द हरि हरि हरि नरायण नरायण जिस जन रसना गाया, कटे जम की फाहीआ। आप आपणी शरन लगाया, मस्तक टिक्का लाहे लग्गी काली छाहीआ। जिस जन हो प्रतक्ख दरस दिखाया, कर्म कुकर्म एका रंग समाईआ। अन्त अन्त हरि लए रक्ख, आप आपणे विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां लहिणा देणा पिछला रिहा मूल चुकाईआ। बैठत बैठत जग गए, चार चुफेरे संगी यार। बैठत बैठत बैठत हँकार हँगता तन झूठी चोली रंग गए, ना मिल्या मीत मुरार। बैठत बैठत बैठत तपी तपीशरां बरस महीने लँघ गए, ना होया मात अधार। गुरमुख साचे सन्त सुहेले अन्तिम वेले संग गए, दोए जोड़ करन निमस्कार। हरि हिरदे अन्दर वस जाए, जगत विकारा विच्चों नस्स जाए, साचे अन्दर नर हरि साचा बहि बहि हस्स जाए, देवे दरस अपार। अमृत आत्म मेघ सीतल धारा वस जाए, काया करे ठण्ढी ठार। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, आत्म खोले

बन्द किवाड़। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, आपणी रीत चलाईआ। सृष्ट सबाई चलाए रथ, रथ रथवाही आप अख्वाईआ। लक्ख चुरासी आपे रिहा मथ्था, आप आपणी रचन रचाईआ। जीवां जन्तां आत्म अन्दर पाई बैठा नत्थ, डोरी आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस जन किरपा कर आपणी कथा सुणाए अकथ, साचा मार्ग रिहा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा रिहा कर्म कमाईआ। जन्म कर्म हथ्थ करतार, करन करावणहारा। ना कोई जाणे जीव जन्त गंवार, प्रभ खेल खिलाए खिलावणहारा। लक्ख चुरासी मात विहार, उपजावे मिटावे मिटावणहारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लिखे लिख्या लेख धुर, घर मन्दिर लेख अपारा। लिख्या मन्दिर मस्तक लेखा, आपे आप लिखांयदा। जीव जन्त रिहा भरम भुलेखा, भरम ना कोए चुकांयदा। धुर दी बाण लग्गी मेखा, ना कोई वेख वखांयदा। जिस नेत्र लोचन नैण साचे पेखा, दृष्ट इष्ट खुल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा राह चलांयदा। सच भूप हरि साचा राजा, सच तख्त सुहांयदा। उप्पर बैठ ग़रीब निवाज़ा, लेखा लिख्त लिखांयदा। शब्द सरूपी मारे आवाज़ा, पवण पवणी सेव लगांयदा। सीस ना दिसे कोए ताजा, साचा ताज इक्क सुहांयदा। अन्तिम रक्खणहारा लाजा, कवण घर वसांयदा। कवण करे गुरमुखां काजा, सुरती नारी आप प्रनांयदा। कवण द्वारे वज्जे वाजा, अनहद राग सुणांयदा। कँवल द्वारे फिरे भागा, सन्त सुहेले गोद उठांयदा। कवण निरँकारे इक्क कराए साचा हाजा, मक्का काअबा आप वखांयदा। मेल मिलाए दो दो आबा, सूरज चन्द ना झल्ले ताबा, तारा मण्डल मुख शरमांयदा। शब्द घोड़ा हरि चरन रकाबा, अमृत धार वहाए कँवल नाभा, साचा सीर मुख चुआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, हर घट अन्दर वेखे दर, नौ दर खोज खुजांयदा। नौ दर माया खेल है, वरते विच संसार। दस्म द्वारी घर नवेल है, वसे एका एकँकार। सृष्ट सबाई सज्जण सुहेल है, दिवस रैण सुणे पुकार। जिस जन जोत निरँजण चाढ़े साचा तेल है, मिले मेला कन्त भतार। गुर शब्दी पवणी साची वेल है, देवे नाम भण्डार। अचरज पारब्रह्म ब्रह्म खेल है, मेल विछोड़े विछड़े मेले मेल मेलणहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हर घट अन्दर वेखे सच घर, कवण खोल्हे कवण रक्खे बन्द किवाड़। बन्द किवाड़ा काया हट्ट, गुरमुखां मात खुल्हांयदा। जीव जन्त फिर फिर थक्के तीर्थ तट्ट, अट्ठ सट्ठ ना कोई वखांयदा। जोत ज्वाला जगे लट लट, आदि शक्त आदि भवानी नूर नुरानी ना कोई तन उपांयदा। दुरमति मैल ना देवे कट्ट, शब्द ना लाए साची हट, पंच शैतानी ना कोए मिटांयदा। भरमा ढाहे ना दूजी वट, दूई द्वैती ना मेटे फट, जोती जोत सरूप हरि, सभ घट अन्दर वेखे घर, कवण बन्द कवण खुल्हांयदा। साचा मन्दिर काया खेड़ा, प्रभ साचे आप वसाया। अन्दर बहि बहि करे निबेड़ा, राए धर्म चित्रगुप्त

८६
०६

आपणे संग रखाया। काल महांकाल मंगे मंग, प्रभ साचे हुक्म जणाया। लाड़ी मौत वजाए दर दर घर घर मृदंग, जो घड़या सो भन्न वखाया। गुरमुख विरले काया चोली चढ़या रंग, जिस जन प्रभ आपणा लड़ फड़ाया। दर दुआरा पार जाए लँघ, अग्गे ना सके कोई अटकाया। जोत सरूपी होए संग, शब्दी पहरेदार अख्वाया। शब्द सिँघासण वेखे इक्क पलँघ, पुरख अबिनाशी आपणी हथ्थीं आपे डाहया। उप्पर विछाया लाल रंग, लच्छमी चरन झस्सण लाया। चतुर्भुज सूरा सरबंग, सांगो पांग सेज हंढाया। सर्ब जीआं सदा अंग संग, विसर कदे ना जाया। आपे कटे जगत माया तृष्ना भुक्ख नंग, नाम वस्त झोली पाया। दर द्वारे जो जन मंगे साची मंग, प्रभ देवे देवणहार अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम अन्त तेरा खेल वेखण आया। मन चैंचल चतुराई, किसे ना जाणया। हरि रचना आप बणाई, नाल रलाई बुध मति सुघड़ स्याणया। तिन्नां साचा मेल मिलाई, पंचां तत्तां आख वखाणया। तिन्न सौ सठ्ठ हाडी जोड़ जुड़ाई, बहत्तर नाड़ी तणयां ताणया। मन इच्छया आप कराई, साचा रूप वखाणया। जोती जोत सरूप हरि, पंचां तत्तां पाई भिच्छया, पंचां रिड़के वांग मधाणया। हरि डोरी शब्द अपार, आत्म परमात्म पाईआ। ना कोई वेखे विच संसार, दिस किसे ना आईआ। आप लाए धुन सच्ची धुन्कार, खिच्चे वाहो दाहीआ। सर्ब जीआं रिहा सुण पुकार, सुणनेहार आप अख्वाईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहिर, रूप अनूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन जन हरि एका रंग समाईआ।

८७
०६

हरि नामा हरि दान है, उत्तम विच संसार। लेखे लाए हड्ड नाड़ी मास चामा, जोत जगाए अगम्म अपार। काया वजाए सच दमामा, उपजे धुन सच्ची धुन्कार। मिटे रैण अन्धेरी शामा, आकाश प्रकाश अपर अपार। एका देवे साचा दामा, दो जहानी पावे सार। मिले मेल रमईआ रामा, गोपी काहना कृष्न मुरार। अमृत प्याए साचा जामा, दिवस रैण रहे खुमार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रंगे रंग इक्क अपार। नाम दात वस्त अमोल, गुरमुख विरले पाईआ। आपे तोलणहारा तोल, शब्द खण्डा हथ्थ उठाईआ। तन नगारा वज्जे ढोल, ब्रह्मण्ड खोज खुजाईआ। नौ द्वारे कढ्ढे पोल, दसवें बूझ बुझाईआ। दस्म द्वारी कुण्डा खोल्ह, घर मन्दिर इक्क वखाईआ। शब्द डण्डा फड़े हथ्थ अडोल, हरिजन डोल कदे ना जाईआ। पंचम मीता पए बोल, काया मन्दिर अन्दर साचा राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, साचा नाम देवे वर, मेला साचे माहीआ। नाम धारा वक्खरी कल, आपणी आप चलाईआ। पुरख अबिनाशी हरि प्रबल, जुग जुग भेख वटाईआ। वेख वखाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ जल थल, थल जल विच समाईआ। साचे

मन्दिर दीपक रिहा बल, कोटन कोट करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द धारा इक्क छुहाईआ। शब्द धार वहे गंग, आत्म नाल सुहांयदा। वज्जे नाम सच्चा मृदंग, काल जंजाल तुड़ांयदा। नौ द्वारे जो जन पार जाए लँघ, हरि साचा दया कमांयदा। आपे होए अंग संग, सोहँ खण्डा हथ्थ फड़ांयदा। पंच विकारा भन्ने काची वंग, दूसर कोई दिस ना आंयदा। शब्द घोड़े कसे तंग, शाह सवार नज़री आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, आत्म दर पूरी करे मंग, नाम भिच्छया साची पांयदा।

आदि पुरख आदि शक्त, आदि जुगादि समाईआ। ना कोई बूंद ना कोई रक्त, हड्ड मास नाड़ी चम्म ना कोई दिसाईआ। पंचम पंचां ना कोई दिसे कटक, ना कोई वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती नूर उपाईआ। आदि पुरख अपरम्परा, अकल कला भरपूर। आपणा खेल आप वरछत्रा, नूर नुरानी नूरो नूर। आप बणाए आपणी बणतरा, ना कोई बाडी लाए मज़दूर। आप आपणा घर वसन्तरा, नूर नुरानी नूरो नूर। आप बणाए आपणा बणतरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे नेड़ा दूर। आदि पुरख अगम्म, अगम्म अगम्म समाया। अगम्म अगम्मो पए जम्म, जोती नूर कराया। जोती नूर देवे दम, शब्दी सच उपाया। शब्द सपूता पए जम्म, ब्रह्मण्डी विच समाया। गगन पतालां देवे थम्म्ह, दिस किसे ना आया। आप आपणे जाणे कम्म, आप आपणे रंग समाया। आदि पुरख अनादया। एका एक इकल्ला, सद वसे विच ब्रह्मादया। धाम सुहाए सच महलया, शब्द जणाए बोध अगाध्या। सद वसे जल थला, आपणा आप अराध्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा अंक उपाईआ। आप आपणा अंक उपाया, नाउँ नर निरंकारया। शब्द डंक इक्क वजाया, धुनी नाद अपर अपारया। द्वार बंक इक्क सुहाया, सति पुरख निरंजन अपर अपारया। राउ रंक ना कोई वखाया, राज राजाना शाह सुल्ताना कोई दिस ना आ रिहा। दर दरबान ना कोई रखाया, निर्मल जोत अकार करा रिहा। अन्ध अन्धेर दिस ना आया, वरन गोत ना रूप वटा रिहा। एका रंग रंगाया, शब्द चोट इक्क लगा रिहा। ना कोई दिसे कोटी कोटन कोट, कोटी कोटां विच आप समा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा नाउँ आप रखा रिहा। आप आपणी जोत जगाए, आत्म करे विचारा। पुरख अबिनाशी वेख वखाए, केहड़ी बन्न्हे आपणी धारा। आपणा लेखा आपे आप लिखाए, दूसर किसे दिस ना आए, ब्रह्मा वेता भेव ना पाए, नाउँ रखाए इक्क निरँकारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा भेख धर, करे सर्ब पसारा। हरि रूप नाउँ निरँकार है, हरि हरि रंग समाया। आपे

८८
०६

वड्डा शाहो भूप है, ग़रीब निमाणा आप अख्वाया। आपे वसया अन्ध कूप है, आपे सति प्रकाश कराया। आपे देवे जोती साची तूर है, नाम सुगंधी इक्क रखाया। आपे वसया दहि दिशा चारे कूट है, आपे आपणा मुख छुपाया। आपे हर घट रिहा झूट है, आप आपणा राह चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच सिँघासण एका कूट, आपणा धाम सुहाया। एका कूटे इक्क महल्ला, वसे नर निरंकारया। शब्द रक्खे हथ्थ विच भल्ला, आपे होए पहरेदारया। पवणी जोती शब्दी आपे रला, त्रैगुण माया ना तत्त विचारया। सदा सदा सदा अलेप निरलेप वसे इकल्ला, काया खेत ना कोई रचा ल्या। आपे भाग लगाए आपणे डाला, अमृत फल आपणा आप उगा ल्या। आपे करे वल छला, वल छलधारी आप अख्वा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाउँ निरँकार अपर अपार वरन गोत वसे बाहर, इक्क सुहाए बंक द्वार, चार दिवार ना कोई रखा ल्या। चार दिवार ना कोई दरवाज़ा, प्रभ जोत जगांयदा। जोत सरूपी आप बिराजा, आप आपणा पलँघ विछांयदा। आप सुहाए सीस आपणे ताजा, आपणे मस्तक आपे टिक्का लांयदा। आपे रक्खे आपणी लाजा, दूसर कोई ना संग रखांयदा। आपे चढ़े साचा ताजा, डोरी आपणे हथ्थ रखांयदा। आपे पाए जुग जुग भाजा, आप आपणे विच समांयदा। आपे मारे आप अवाज़ा, आप आपणा आप उठांयदा। आप आपणा रच्चया काजा, आप आपणा काज रचांयदा। शब्द प्रगटाए जोत जगाए नाल रखाया वाजा, अनहद साज वज्जे वाजा, सुणे सुणाए ग़रीब निवाज़ा, साचा धाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती नूरो नूर कर, सर्बकला भरपूर दर, नर निरँकार आप अख्वांयदा। निरँकार निरवैर निज घर आप समाया। घर साचे कदे ना वरते कहर, एका रंग रंगाया। दयाल दयाल दयाल कृपाल सद रक्खे मेहर, मेहरवान आप अख्वाया। इक्क चलाए साची लहर, नाम उछाल इक्क लगाया। आपे करे घर आपणे साची सैर, दिवस रैण ना कोई रखाया। ना कोई आवे ऐर गैर, सूरज चन्द कोई दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वसया साचे घर, हड्ड मास नाड़ी ना कोई दिसे बन्द ना कोई काया घाड़न घड़ाया। निरँकार निरगुण रूप है, निरगुण हरि रघुराए। आपे आप सति सरूप है, सति सतिवादी आप अख्वाए। प्रभ हथ्थ वड्याईआ, जुग जुग करदा आए। जुग जुग आपणी बणत बणाईआ, जन भगत मात उपाए। जन भगतां सेवा लाईआ, पूर्ब लहिणा झोली पाए। जो जन रसना गाईआ, नेत्र नैणा दर्शन पाए। नेत्र नैणा दरस दिखाईआ, जीवां जन्तां भार वंडाए। जीवां जन्तां भार वंडाईआ, साधां सन्तां मिले गल लाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिभगत हरिभगती मार्ग लाए। कर्म चन्द नरायण गांधी, प्रभ आपणी दया कमाईआ। भारत खण्ड कलिजुग रैण अन्धेरी वगे आंधी, निर्मल रूप वखाईआ। जीव जन्त गऊ

ग़रीब निमाणे जगत फिरंगीआं होए बांधी, आपे लए छुडाईआ। ना कोई रक्खे सोना रूपा चांदी, तन मन आपणा भेंट चढ़ाईआ। दिवस रैण आत्मा रो रो गांदी, प्रभ किरपा कर हरि रघुराईआ। हरिभगती भगत जनां दी दुष्ट दुराचारां आप बख़्शांदी, दोए जोड़ सीस झुकांदी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची सेवा इक्क लगाईआ। सेवा लाई सेवादार, हरिभगती कर्म पछानया। प्रगट होया विच संसार, आपणा आप जाणया। मिली वस्त इक्क अपार, तुट्टा माण ताणया। छड्डुया घर राज दरबार, मेल विछोड़ा हाणी हाणया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुनेहड़ा दित्ता वर, भारत खण्डी पाई वंडी, जगत जुदाई साची डण्डी, एका मन्नया प्रभू भाणया। प्रभ भाणा मन्न, दिवस रैण सेव कमांयदा। उपजे शब्द धुन साचे कन्न, हरि साचा आप सुणांयदा। गऊ ग़रीबां बेड़ा बन्न, ऊँचां नीचां मगर लांयदा। छड्डुया वसेरा छप्परी छन्न, डेरा हरि हरि चरन टिकांयदा। लोकमात चढ़या साचा चन्न, हरि साचा आप चढ़ांयदा। अन्तिम झूठी माटी होणी खंन खंन, धर्म राए ना दित्ता डन्न, पुरी इन्द्र शब्द मिलांयदा। पुरख अबिनाशी बेड़ा ल्या बन्न, एका राग सुणाया कन्न, लोकमात जन्म दवांयदा। लोकमात प्रभ जन्म दवाया, साची बणत बणाईआ। अठारां माघ देह छुडाया, साची रचन रचाईआ। आप आपणा नेहुं लगाया, साची सेव कमाईआ। आत्म अमृत पीव साचा मींह बरसाया, मेघ माला वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत ज्वाला इक्क वखाईआ। अठारां माघ देह तज्ज। सच सिँघासण चढ़या भज्ज। प्रभ अबिनाशी पड़दा ल्या कज्ज। दर द्वारे अमृत पीता रज्ज। धुरदरगाही एका करे शब्द जणाई, मातलोक विच जाणा सज। शब्द घोड़ा जोती जोड़ा आप आपणी देही तज। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचे खोल्हे तेरा दर, तेरे पड़दे लए कज्ज। काया माटी झूठी खेह, अन्तिम खाक रुलाईआ। चरन कँवल प्रभ लग्गा नेह, सच प्रीत कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इन्द इन्द्रासन शब्द सिँघासण, वेख वखाए पृथ्वी आकाशन, साचे घोड़े जोती जोड़े मेल मिलाईआ।

हरि भण्डार अतोल, सदा सदा रखांयदा। दर दरवाज़ा एका खोल्ह, जन भगतां झोली पांयदा। मन्दिर अन्दर साचे बोल, शब्द मृदंग वजांयदा। बजर कपाटी पड़दा खोल्ह, आपणा रंग वखांयदा। निज घर वासी सदा वसे कोल, कलिजुग जीआं दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, काया खेत्र रिहा मौल, तन मन हरा करांयदा। भगत भण्डारी हरि दातार, देवे जिया दाना। जगत संसारी नर निरँकार, खेले खेल महाना। हरिजन मंगे दर बण भिखार,

आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञाना। मांगत मंगे एका वार, गुर पूरा साचा बन्ने हथ्थीं गाना। तन करे सोलां श्रृंगार, साचा मेला साचे काहना। लज पति रक्खे विच संसार, पार कराए दो जहानां। अन्तिम वेले पावे सार, आपे होए बीना दाना। आप सुहाए बंक द्वार, शब्द जणाए सच तराना। मेल मिलाए एका एकँकार, निरगुण सरगुण लेख महाना। सरगुण साखत बंन्ने धार, निरगुण रूप वटाना। दोहां मेला इक्क द्वार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे विच मिलाना। शब्द निशान सति है, झुल्ले विच जहान। सृष्ट सबाई दे समझावे मति है, भरमे भुल्ले ना जीव नादान। इक्क रखाए धीरज यति है, धुरदरगाही मारे साचा बाण। नाम दिसे साचा रथ है, आदि अन्त इक्क भगवान। सर्बकला आपे समरथ है, सृष्ट सबाई करे पछाण। कलिजुग माया लक्ख चुरासी पाई नत्थ है, ना कोई करे किसे कल्याण। साध सन्त माया ममता रही मथ है, दर दर घर घर रसना करन विख्यान। हरि महिंमा जगत अकथ है, कथनी कथे ना विच जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, प्रगट होवे विच जहान। पुरख अबिनाशी जामा पाया, जोती नूर जगाईआ। एका एक आप अख्वाया, त्रेता तृप्त कराईआ। कृष्ना काहना भेव ना राया, अर्जन रथ रथवाहीआ। अठारां ध्याए शब्द जणाया, भेव अभेदा भेव खुल्हाईआ। चार वेदां भेव ना पाया, पुराण अठारां रहे गाईआ। वेद व्यासे लेख लिखाया, लक्ख इक्क हज़ार सतारां सलोक बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग भेख वटाईआ। भेखाधारी भेख धरे, जुग जुग बणत बणांयदा। सृष्ट सबाई आपे वरे, आपे परे हटांयदा। धरनी धर धरती धवल जोत एका घरे, एका घर वसांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी आवे डरे, सत्तां दीपां आप हिलांयदा। ब्रह्मा शिव द्वार खड़े, दोए जोड़ सीस झुकांयदा। सुरपति राजा करोड़ तेतीसा मंगे दान हरि हरे, हरि हरि झोली आप भरांयदा। कलिजुग काला काला रूप मात धरे, ना कोए किसे मिटांयदा। प्रगट होए निहकलंक अवतार नरे, शब्द खण्डा हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी पावे वंड, मेट मिटाए भेख पखण्ड, हथ्थ फड़े शब्द डण्डा, साचा नाउँ रखांयदा। शब्द डण्डा हरि बलकार, आपणे हथ्थ उठांयदा। रसन कमान तेज कटार, शब्दी शब्द इक्क रखांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी मारे मार, ना कोई किसे बचांयदा। लक्ख चुरासी आई हार, सृष्ट सबाई होए ख्वार, प्रभ साची बणत बणांयदा। राए धर्म दोए जोड़ पुरख अबिनाशी अग्गे करे पुकार, अठाई कुण्डां बूहा लांहयदा। लाड़ी मौत करे श्रृंगार, प्रभ अबिनाशी किरपा धार, मातलोकी राह तकांयदा। धरतमात रो रो रही धाहां मार, कलिजुग जीवां माया लुट्टया, घर घर दर दर गऊ ग़रीबां कुट्टया, चुक्कया ना जाए अन्तिम भार। ग़रीब निवाज़ा क्यों बैठा रुठ्ठया, सुणी जाए मैथों पुकार। पुरख अबिनाशी एका तुठ्ठया, प्रगट होए

विच संसार। राज राजानां शाह सुल्तानां लुकया रहिण ना देवे गुड्डया, करे खेल अपर अपार। हथ्थ फड़ाए खाली ठूठया, ईसा मूसा रोवण धाहां मार। संग मुहम्मद होया झूठया, अल्ला राणी होए ख्वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत तेरां तेरी धार, सृष्ट सबाई रिहा विचार। अस्सू तिन्न दिवस विचार। पाया फेरा दिल्ली दरबार। आपणी खेल आपे खेले, जगत खिलावणहार। प्रभ अबिनाशी किसे ना दिसे, आत्म अन्ध अंध्यार। जिस जन किरपा कर पाए साचे हिसे, देवे शब्द अधार। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, सृष्ट सबाई नौ खण्ड पृथ्वी शब्द सरूपी कराए जै जै जैकार। जै जै जैकार कराए, हरि हरि भगवानीआ। आदि अन्त एकँकार, जुग जुग जाणे आपणी कार विच जहानया। माया पाए बेअन्त, गुणवन्ता गुण निधानया। गुण अवगुण कर्म कुकर्म रिहा विचार, साधां सन्तां होए अन्त, ना कोई दिसे धर्म निशानया। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणे भाणया। साधां सन्तां होया अन्त है। ना कोई दिसे धर्म द्वार, माया पाई सृष्ट बेअन्त है। जूठा झूठा धुँदूकार, सच दिसे ना कोई सुगंधता है। लेखा लिख्या हरि करतार, शब्द निशाना अपर अपार, सत्तां दीपां लेख लिखाए ना कोई मेटे मेटत है। सम्मत बीस रहिणा ख़बरदार, चढ़े चढ़ाए दिल्ली दरबार, नौ खण्ड पृथ्वी मेला एका कन्त है। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे करे खेल बेअन्त है। राष्ट्रपति जोग रखीशर, आत्म ब्रह्म जणाईआ। भगती भगत भुगत सच्चा तपीशर, आत्म तृप्त कराईआ। मिले मेल जगत जुगीशर, साचा सीस ताज भेंट चढ़ाईआ। मस्तक टिक्का लाए केसर, सवा रत्ती नाल रखाईआ। जुग जुग विछड़या विच थनेसर, अन्तिम कलिजुग मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, आप आपणा रिहा छुपाईआ। जुग जुग विछड़े मेल मिलावणहार दातारा। शाह भबीखण जुग त्रेता पार कराए, मिल्या मेल राम अवतारा। भगत सहेटा आप अखवाए, माँ प्यो बेटा आप करतारा। खेवट खेटा आप हो जाए, कलिजुग पार कराए किनारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर लै के आया, शब्द सरूपी पंचम मुखीआ साचा सुखीआ नाम सच्चा दस्तारा। शब्द नाम सीस जगदीस, आपणा आप रखाईआ। सृष्ट सबाई जाए पीस, ना कोई होए किसे सहाईआ। इक्क चलाए शब्द हदीस, अंजील कुरान वेद पुराण खाणी बाणी एका रंग समाईआ। आपे जाणे राग छतीस सपारे तीस दन्द बतीस, आपे रिहा जणाईआ। लहिणा चुक्के बीस इकीस, प्रभ साची बणत रिहा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शाह भबीखण देवे मात वड्याईआ। मात वड्याई जुगो जुग, हरि हरिभगतां आप रखांयदा। लहिणा देणा जुगो जुग, जुग जुग मूल चुकांयदा। भाणा सहिणा जुगो जुग, जुग जुग हुक्म सुणांयदा। दरसन नैणा जुगो जुग, कलिजुग रूप वटांयदा। साचे मन्दिर अन्दर

बहिणा जुगो जुग, राम रामा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि द्वारे साचे बहिणा, एका राह वखांयदा। पंचम मीता पंचम चीता, पंचम जोत जगांयदा। पंचम करे पतित पुनीता, पंचम पंचां ठण्ढा सीता, पंचां खोट कढांयदा। पंचां पंचां करे अतीता, पंचम बख्शे चरन प्रीता, पंचम कूट उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, सच निशाना धुर फ़रमाणा, सोहँ अक्खर लेख लिखाना, अचरज रीत चलांयदा। शब्द सोटी जगत सहारा, धुरदरगाही दाता। हरि हरि साचा कर प्यारा, देवण आया मात सुग़ाता। गुरमुख विरला करे वणज वपारा, जिस जन बंधाए साचा नाता। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणी धारा, आप आपणे रंग समाता। चरन जोड़ा जगत विछोड़ा, भगती मार्ग लांयदा। नाम मिले सच्चा घोड़ा, धुरदरगाही आया दौड़ा, वेखे परखे मिट्ठा कौड़ा, नौ द्वारे वेख वखांयदा। प्रगट होए ब्रह्मण गौड़ा, पूत सपूता जोती जोड़ा, आपणा रूप वटांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी वेखे राह लम्बा चौड़ा, उच्चा टिल्ला फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे मन्दिर आपे बौहड़ा, आप आपणा मुख छुपांयदा। भिन्नी रैनड़ीए तेरी रुत्त सुहाई, सन्त जनां घर पाया। भिन्नी रैनड़ीए कलि मिले वधाई, हरि हरि मंगल गाया। भिन्नी रैनड़ीए तेरे नाम वड्याई, गुरमुखां रंग रंगाया। भिन्नी रैनड़ीए लोकमात होए जुदाई, हरि हरि चरनी चित लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भिन्नड़ी रैण जन भगतां दर साचे दए दुहाया। भिन्नड़ी रैण मंगी मंग, आए चरन द्वारे। भगत जनां दा साचा संग, सोहण बंक द्वारे। शब्द उडारी सुरती चढ़े पतंग, जाए पार किनारे। अमृत धारा वहाए साची गंग, छोहे चरन कँवलारे। होए सहाई अंग संग, सर्ब जीआं दा दातारे। मानस जन्म ना होए भंग, मिले मेल कन्त पुरख भतारे। दर घर साचे मंगी एका मंग, सतवन्ती साची नारे। आत्म सेजा शब्द रंगीला पलँघ, दस्म द्वारी डट्ठा अटल महल्ल उत्तम चुबारे। गुर किरपा पार जाणा लँघ, पुरख अबिनाशी घट घट वासी आपे बैठा भुजा पसारे। इक्क वजाए नाम मृदंग, सुणाए राग अपर अपारे। आप लगाए आपणे अंग, एका सेजा सुत्ते पैर पसारे। जुग जुग जुग जुग पार जायण लँघ, प्रभ अबिनाशी किरपा धारे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे मात वर, आदि अन्त एका घर सुरत सवाणी मात सुहागण मिल्या हरि हरि कन्ता। दिवस रैण लभ्भे साचा हाणी, पुरख अबिनाशी वड वड बलवन्ता। मनमुखां अन्दर सुत्ती काली चुन्नी उत्ते ताणी, भरम भुलेखा जीवां जन्तां। कोई ना देवे अमृत आत्म ठण्ढा पाणी, ना कोई वखाए रुत्त बसन्ता। गुरमुख विरला निशअक्खर वक्खर पढ़े एका बाणी, बणाए आपणी बणता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका साचा रंग दिखंता। साचा रंग साची सेज, प्रभ फूलन आप विछाईआ। गुरमुखां शब्द सुनेहड़ा रिहा भेज, कन्त कन्तूहला

दया कमाईआ। सम्मत अठारां नौ नौ खण्ड पृथ्वी पाणी नौ नौ नेज़, जल धारा आप वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सृष्ट सबाई पावे दूसर कोए सार ना पाईआ।

शब्द हार तन श्रृंगार, हरिभगतां आप करांयदा। पूर्ब लहिणा कर्म विचार, आपणा कर्ज़ा लांहयदा। दर्शन नैणां अपर अपार, दर दुआरा इक्क वखांयदा। पंचां तत्तां खोल्ह किवाड़, जोत आकार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कृपानिध इक्क अख्वांयदा। कृपानिध अपार रूप, सति सन्तोख समाया। जोत जगाए अन्ध कूप, अन्ध अन्धेर मिटाया। करे प्रकाश चारे कूट, काया मन्दिर दए सुहाया। नाम धुखाए साचा धूप, पवण सुगंधी रखाया। आप समाए विच आपणा रूप, रूप अनूपा विच समाया। साचा धागा नाम सूत, प्रेम वट्ट चढ़ाया। दूई द्वैती मिटे फूट, एका बंन्हण पाया। रसना तीर रिहा छूट, चन्दन देही विच लगाया। पार कराए जूठ झूठ, पंच विकारा रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तन श्रृंगार हार कराया। शब्द हार साचा फुल्ल, गुरमुख रंग चढ़ांयदा। दर द्वारे कोई ना लग्गे मुल्ल, चरन प्रीत जो कमांयदा। शब्द भण्डारा जाए खुल्ह, मिले वस्त इक्क अनमुल्ल, दूसर ना कोई दिसे तुल, गाउँदे रहिण सदा साचे बुल्ह, जाप अजपा आप चलांयदा। मानस देही ना जाए हुल्ल, भाग लग्गे साची कुल, फल फुलवाड़ी जाए फुल्ल, रुत्त बसन्त सुहांयदा। हरिजन साचा ना जाए रुल, एका एक आप अभुल्ल, सृष्ट सबाई आप भुलांयदा। लक्ख चुरासी कर्म कुकर्मां अन्तिम पावण आया मुल्ल, साचे कंडे पूरे तोल रिहा तुल, धड़ा एका नाउँ रखांयदा। मनमती जीव रहे रुल्ल, कलिजुग कालख लग्गी कुल, काला दाग़ ना कोई मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे सन्त दुलार, आपे बख्शे बख्शणहार, फूलन तन श्रृंगार करांयदा। फूलन फूल रंग अपार, वेखे आप द्वारया। कलिजुग अन्तिम आई वार, खाली भरे रहिण भण्डारया। खाली भरे होण भण्डार, चारों कुन्ट हाहाकारया। गुरमुख साचा साची सेजा सुत्ता पैर पसार, प्रभ अबिनाशी रसना गा रिहा। आप सुहाए साची रुत्ता, अमृत धारा मेघ बरसा रिहा। साचा सोमा काया मन्दिर अन्दर फुट्टा, गुरमुख न्हावण न्हावणी साचे तीर्थ नुहा रिहा। आवण जावण गेड़ छुट्टा, पतित पावन आपणा दामन आप फड़ा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी मिटे रैण अन्धेरी शामन, सच्चा एका चन्द चढ़ा रिहा। साचा चन्द मात बलोए, होए सर्ब प्रकाश्या। वेखे खेल हरि त्रै त्रै लोए, मात पाताल पृथ्वी आकाश्या। दिवस रैण रैण दिवस कदे ना सोए, शब्द चलाए साचा राथया। जोती नूर सर्बकला भरपूर अट्ठे पहर जन भगतां दर द्वार

रिहा खलोए, मस्तक लहिणा मूल चुकाए, लिख्या साचे माथया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला मेल मिलाए, जन हरि त्रैलोकी नाथया। साचा भोग हरि भगवान, शब्द मुख लगांयदा। हरिसंगत देवे जिया दान, सगले दु:ख मिटांयदा। आत्म दरसी दरस घर आत्म पाण, आपणा मुख वखांयदा। मिटे हरस रसना भोग शब्द चोग साची धर, तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। लग्गे भोग भगत भगवाना, आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञाना, वज्जे नाम तीर निशाना, दिवस रैण ना सुझे, ना कोई बुझांयदा। दर दुआरा एका बुझे, जोत द्वारे हरि हरि लुझे, तृष्ना अग्नी बुझे, भउ चुकाए एका दूजे, तीजे दर्शन दरस महाना। तीजे नैण सच बलोइण, कलि सरूप समाईआ। सन्त सुहेले आत्म सेजा साची सोइन, कँवल फूल कन्त कन्तूहल साची भेंट चढ़ाईआ। अमृत धारा निझर रस अन्तिम मुख चोइन, सांतक सति वरताईआ। बुझे बसन्तर मिटे दु:ख, सहिज धुन धुन सहिज समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, ज्ञान गोझ गोझ ज्ञान मार ध्याना जिया दाना झोली पाईआ। जिया दान भगत गुर दीआ, देवणहार स्वामी। आप रखाई साची नीहा, थिर घर नर वसे निहचल धाम अटल शब्द निहकामी। आपे जाणे आपणा दर, किला कोट प्रभ रिहा वेख, आपे वसे नगर शहर सच गरामी। आपे अन्दर जाए वड़, साची चोटी वेखे जाए चढ़, किला तोड़ हँकारी गढ़, शब्द डण्डा साचा फड़, पंचां नाल जाए लड़, पंचां रिहा जगाईआ। जोत निरँजण अग्गे खड़, भगत जनां दा पकड़े लड़, साची लाए आपे जड़, साचा मार्ग इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा भेख धर, शब्दी गुर वेख घर, मन्दिर अन्दर ढूँघी कन्दर होए आप सहाईआ।

✲ ४ अस्सू २०१३ बिक्रमी मल्ल सिँघ दे गृह दिल्ली ✲

मूर्त अकाल सदा दयाल, सदा सदा प्रितपालीआ। बणे बणाए मात दलाल, दोवें हथ्थां रहे खालीआ। देवे शब्द सच्चा धन माल, धुरदरगाही वालीआ। साचा मन्दिर आप सुहाए काया सच्ची धर्मसाल, जोती दीपक एका बालीआ। फल लगाए काया डाल्, तोड़े जगत जंजालीआ। इक्क सुहाए आत्म ताल, अमृत धार निरालीआ। आपे चले आपणी चाल, बेहंगम रूप वटालीआ। सन्त सुहेले आपे भाल, गोद उठाए साचे लाल, धुरदरगाही वालीआ। शब्द वजाए साचा ताल, अनादी नाद हरि बनवालीआ। नेड़ ना आए काल महांकाल, कलिजुग रैण विहानीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बख्शे नाम सच्चा धन मालीआ। नाम खज़ाना सदा अतुट्ट, भरया रहे भण्डार। पुरख अबिनाशी आप निखुट्ट, खुट्ट

ना जाए विच संसार। हरिजन लाहा लए लुट्ट, चरन कँवल कलि कर प्यार। निर्मल जिया आत्म पीए घुट्ट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे चले नाल नाल। चलणहारा चाल अवल्ली, जुग जुग चलाया। सृष्ट सबाई इक्क इकल्ली, दूजा संग ना किसे निभाया। कलिजुग माया अन्दर पली, मोह ममता प्यार रखाया। जंगल जूह उजाड़ डूँघी कन्दर काया फिरे झल्ली, साचा राह दिस ना आया। गुर चरन द्वार साची भूमिका एका मल्ली, प्रभ हउमे पर्दा लाहया। दीपक जोत निराली निरँजण साची बली, अज्ञान अन्धेर मिटाया। वेख्या राम देवे नाम वसे निहचल धाम अटली, महल्ल अटल इक्क रखाया। पार कराए फड़ फड़ भीड़ी गली, शब्दी रूप वटाया। आत्म विछड़ी अन्त परमात्मा रली, शब्द दूत नाल रलाया। ना कोई जाणे जगत वली, प्रभ अबिनाशी भाणा आपणे हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत जोग रिहा कमाया। सन्तन घर सच वसेरा, साचा थान सुहांयदा। पुरख अबिनाशी लग्गा डेरा, जाण पछाण करांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी एका गेड़ा, जीआं जन्तां दान दवांयदा। पंच वसाए एका खेड़ा, पंचां माण दवांयदा। पंचां बन्नॣणहारा बेड़ा, पंचां आप डुबांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल ग़रीब निवाज्जया। चारों कुन्ट आवे डर, मक्का काअबा छुट्टे ना कोई हाजी करे हाज्जया। तीर निराला एका छुट्टे, वेख वखाणे शेख़ पंडत मुल्लां काजिया। मनमुख जीव कलिजुग माया रुल्ले, हरि नर सच्चा ना किसे पछानयां। जोत सरूप हरि साचा तुठ्ठे, जग देवे जिया दानया। पंच विकारा फड़ फड़ कुट्टे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मारे शब्द तीर कमानयां। शब्द तीर आत्म कानी, गुरमुखां पार करांयदा। अक्खर दो अक्खर साची बाणी, सोहँ नाम धरांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम बाणी, सोहँ सो गुरमुख विरला गांयदा। आत्म लभ्भणा घर घर पाणी, प्रभ घर घर आप फिरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां आपणी सरन लगांयदा। सरन लाग मिले वड्याई, दरस नैण कँवला। चतुर्भुज प्रभ दया कमाई, माण रखाए उप्पर धवला। आत्म घर वज्जे वधाई, प्रगट होए साँवल सँवला। गुरमुख सद गाउँदे चाँईं चाँईं, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सभ घट अन्दर आपे मवला। सर्ब घटां घट आप आपे, आपणा कर्म कमांयदा। सदा सदा सद वड प्रतापे, जन्म मरन गेड़ कटांयदा। मेट मिटाए तीनो तापे, अग्नी आप बुझांयदा। ना कोई पुन्न ना कोई पापे, सृष्ट सबाई माई बापे, गुरमुख साचे आप तरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा जाणे वड प्रतापे, वड प्रतापी आप अख्वांयदा। मल्ल सिँघ दर लैणा मल, प्रभ चरन सच्चा दुआरा। कलिजुग लेखा चुक्कणा अज्ज कल्ल, ढहिणा मन्दिर मुनारा। साचा खेल जल थल, उप्पर जमन

किनारा। सर्ब भुलाए वल छल, वसे सभ तों बाहरा। गुरमुखां दरस दिखाए घड़ी घड़ी पल पल, प्रभ साचे दी साची धारा। गुर संगत संग रिहा रल, मिल्या मेल एका एकँकारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देवे नाम वर, जोत निरँजण विच संसारा। जोत निरँजण मात प्रधान, प्रभ साचे आप रखाईआ। पहला देवे भूमिका अस्थान, साची जोत जगाईआ। मार्ग पाए साचे काहन, सज्जा हथ्थ उठाईआ। दिस ना आए कोए निशान, सज्जा खब्बा अग्गा पिच्छा रूप अनूपा ना कोई वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां देवे दरस दात जगत वड्याईआ।

✻ ४ अस्सू २०१३ बिक्रमी बिशन सिँघ दे गृह गुड़गाउँ ✻

घर मन्दिर अपार हरि उपाया। शब्द सरूपी लाया जन्दर, दिवस रैण बन्द कराया। खेल खेले काया अन्दर, रूप अनूप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा रंग रंगाया। गुर मन्दिर अपार, काया कोट उसारया। हड्ड मास नाड़ी चम्म चार द्वार, चारों कुन्ट करा रिहा। नौ द्वारे रक्खे बाहर, दसवां गुप्त रखा रिहा। जन भगतां बख्शे चरन प्यार, साची सेवा ला रिहा। आप आपणी किरपा धार, शब्द मेवा मुख खवा रिहा। शब्द मेवा विच संसार, रसना जिह्वा रस चखा रिहा। रसना गाए हरि निरँकार, अगम्मी तार हिला रिहा। अगम्म रूप नर निरँकार, निरगुण रूप वटा रिहा। निरगुण रूप जोत अकार, सरगुण विच समा रिहा। सरगुण बन्न्हे साची धार, आपणी दया कमा रिहा। आपे खोल्हे बन्द किवाड़, साचा राह वखा रिहा। पंचम लेखा पए झूठी धाड़, सीस खण्डा इक्क लगा रिहा। जोत प्रकाश बहत्तर नाड़, आपणी आप करा ल्या। काया लेख कराए पृथ्वी आकाश, गगन पतालां आप वखा रिहा। चौदां लोक तन प्रभास, हट्ट विका रिहा। मण्डप मण्डल पावे रास, काहना कृष्ना रूप वटा रिहा। पवणी पवण चलाए स्वास, शब्दी संग रला रिहा। शब्द शब्दी साचा वास, जोती नूर उपा रिहा। आदि अन्त ना जाए विनास, आदि पुरख अगम्म अपारया। जन भगतां होया रहे दास, लोकमात आवे जावे वारो वारया। लेखे लाए हड्ड नाड़ी मास, पंचम तत्त जीव मति आप समझा रिहा। गुर पूरे सद बलि बलि जास, ब्रह्म पारब्रह्म जणा रिहा। सदा सदा संग वसे वास, बत्ती दन्द जो जन गा रिहा। साचा मेला सर्ब गुणतास, दीपक जोती साचा चन्द चढ़ा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर मन्दिर खोल्हे इक्क दर, काया भाग लगा रिहा। घर मन्दिर अगम्म, भेव ना राईआ। चार द्वारी ना कोई दिसे थम्म्ह, प्रभ साचे धाम उपाईआ।

हड्ड मास नाड़ी ना कोई चम्म, ना कोई बणत बणाईआ। ना मरे ना पए जम्म, आपणी रचना रिहा रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप वसाए इक्क घर, मन्दिर रूप वटाईआ। काया मन्दिर सच मकान, प्रभ साचा आप बणांयदा। शब्द सरूपी वेखे मार ध्यान, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। पाणी पवण पवण पाणी मसान, आपे जाणे पीण खाण, जीआं दान सर्ब दवांयदा। खाणी बाणी रसना गाण। वेद पुराण जस भगवान अञ्जील कुरानी नूर अलाही इक्क पछाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर मन्दिर वेखे इक्क घर, कवण करे सुंञ मसाण। काया मन्दिर साचा हट्ट, प्रभ साची वस्त टिकाईआ। किसे हथ्थ ना आवे तीर्थ तट्ट, रोवे सर्ब लोकाईआ। पुरख अबिनाशी वसे घट घट, गुरमुख विरले बूझ बुझाईआ। हरिजन लपेटे साचे पट, दुरमति मैल धवाईआ। दुरमति मैल देवे कट्ट, मस्तक धूढ़ी कौस्तक मणीआं टिक्का लाईआ। दीपक जोत जगाए लट लट, अन्ध अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। दूई द्वैती मेटे फट्ट, नाम पट्टी इक्क बंधाईआ। शब्द चोट काया तन नगारे लाए सट्ट, अनहद धुन वजाईआ। भरम भुलेखा कढ्ढे वट्ट, भरमां कंध ढाहीआ। गुरमुख साचे सन्त सुहेले गऊ ग़रीब निमाणे तारे जिउँ धन्ना जट्ट, आप आपणी दया रिहा कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग करे खेल रघुराईआ। घर मन्दिर अथाह, वसया हरि निरंकारया। आपे होए बेपरवाह, सृष्ट सबाई पावे सारया। आपे जाणे आपणा नाँ, आपणी रसना रिहा उचारया। आपे पिता आपे माँ, आप आपणी गोद उठा रिहा। आपे देवे ठण्ढी छाँ, रसना सीर मुख चुआ रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, काया अन्दर सच अस्थान, जोती नूर जोत भगवान, शब्द तूर इक्क महान, दूसर कोई भेव ना पा रिहा। तन मन्दिर अपार, संगीत सुणांयदा। जन भगतां देवे नाम अधार, जुग जुग रीत चलांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म पावे सार, काया मन्दिर देहुरा सच मसीत गुरदुआरा आप वखांयदा। सच सच जग साचा धर्म, साचा नाअरा कर्म कमांयदा। वेखे परखे काया चर्म, एका एक चरन टेक प्रभ साचा वणज करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर मन्दिर वेखे इक्क बिबेक, कलिजुग माया ना लग्गे सेक, त्रैगुण माया रहे निरलेप, आपणा रूप वटांयदा। घर मन्दिर अडोल, हरि रखाया। शब्द सरूपी रिहा बोल, अन्दर बैठा दिस ना आया। दिवस रैण तोले पूरे तोल, दो जहानी हिस्सा रिहा वंडाया। नाम वणजारा हट्ट साचा खोल्ह, साचा वणज रिहा कराया। भगत प्यारा जन भगतां हिरदे अन्दर रिहा मवल, अट्ठे पहर रहे दर दुआरा। उलटी करे नाभ कँवल, अमृत झिरना झिरे अपर अपारा। मिले वड्याई उप्पर धवल, जिस जन बख्शे चरन प्यारा। साचा मेला कृष्ना साँवल सँवल, सुन्दर रूप अपारा। लक्ख चुरासी होई बवल, एका भुल्लया हरि गिरधारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,

सृष्ट सबाई लक्ख चुरासी वेखे काया मन्दिर साचे अन्दर कवण वजाए नाद अनादी साचा ढोल। घर मन्दिर अपार हरि सुहाया। दीपक जोती रक्खे अन्दर, आपणी हथ्थीं कुण्डा लाया। लक्ख चुरासी भौंदी बन्दर, पुरख अबिनाशी किसे ना पाया। मनमती जीव गाए मन्दिर, पंडत कांशी पढ़ पढ़ वाद वधाया। ग्रन्थी पन्थी आत्म अन्धेर, निरगुण रेख लेख ना जाणे राया। जोती जोत सरूप हरि, सर्ब जीआं आपे बख्शिंद, बख्शणहार सदा अख्वाया। घर मन्दिर अनाद, हरि अनादया। साचा मेला माधव माध, शब्द जणाए बोध अगाध्या। दो जहानी देवे दाद, दिवस रैण जो जन मन्ने देवे धुरदरगाही सच निशानया। सोहँ अक्खर रक्खणा याद, वेले अन्तिम सुणे फरयाद, ना कोई वजाए झूठा नाद, सृष्ट सबाई अन्तिम खानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी वेखे दर, मन्दिर गंवाए गाए साची बाणीआ। घर मन्दिर सच दरबार, प्रभ आपणा आप लगांयदा। ना कोई रक्खे जम्म जंदार, ना कोई बणत बणांयदा। शब्द सिँघासण साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, आपणी रीत चलांयदा। जन भगतां करे ख़बरदार, शब्द भण्डारा मात खुलायदा। लक्ख चुरासी अन्तिम कलि पैणी मार, धर्म राए वंड वंडांयदा। चित्रगुप्त लेखा लिखे अपर अपार, अन्त हिसाब मुकांयदा। लाड़ी मौत होए त्यार, हथ्थीं बन्न्हे गाना बस्त्र चीर लाल, कलिजुग मात रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी वेखे घर, मन्दिर कवण सुहांयदा। घर मन्दिर अमोघ, हरि हरि आप बणाया। गुरमुख मेला धुर संजोग, विछड़ कदे ना जाया। प्रभ कट्टण आया दूई द्वैती रोग, अमृत आत्म जाम प्याया। आत्म रस रसना देवे भोग, साचा भोगी भोग कराया। दिवस रैण ना होए वियोग, एका पल्ला नाम फड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वेखे सच घर महल्ला, साची कूटे आप वसाया। घर मन्दिर सच महल्ल, प्रभ साचा धाम सुहांयदा। गुरमुख साचा रिहा मल्ल, दिस किसे ना आंयदा। आपे वसया जल थल, लोआं पुरीआं आप समांयदा। सृष्ट सबाई आपे करे वल छल, जीआं जन्तां आप भुलांयदा। आपे जन भगतां फल लगाए काया डल, अमृत मेवा आप खवांयदा। आपे दीवा आपे बत्ती आपे जोत निराली जाए बल, आपे अन्ध अन्धेर रखांयदा। आपे रक्खे वा तत्ती वेख वखाए साची आलम, भेव अभेदा अछल अछेदा भेव ना कोई छुपांयदा। आपे दाता दुष्ट सँघारे जालम, जिउँ काहना कृष्ना रामा रावण जुग जुग बणत बणांयदा। अन्तिम मेला होणा पालम, अद्ध विचकार रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी वेख घर, आपणा रंग रंगांयदा। घर मन्दिर अतोट, आप बणाया। लभ्भ लभ्भ थक्के कोटी कोट, दिस किसे ना आया। जीव जन्त आल्हणिउँ डिगे बोट, साची चोग ना कोए चुगाया। माया ममता तृष्ना जगत विकारे कलिजुग भरी ना पोट, रोग सोग चिन्ता ना

कोई देवे भुक्ख मिटाया। जन भगतां लग्गा एका अंक नेत्र दर्शन हरि अमोघ, दिवस रैण रहे बिल्लाया। अन्तिम मेला धुर संयोग, पुरख अबिनाशी रिहा लिखाया। साचा देवे सोहँ जोग, जमन किनारा इक्क वसाया। भगत जनां दर आत्म भोग, शब्द सरूपी दए लगाया। जगत विछोड़ा होए वियोग, प्रभ चरनी लए बहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर मन्दिर वेखे इक्क द्वार, आप आपणा आसण लाया। घर मन्दिर आप सेज सुहञ्जणी, प्रभ अबिनाशी कीती आप त्यार। जोत जगाई इक्क निरँजणी, प्रेम विछोड़ा फूलन बरखा आपणी हथ्थीं लाया। नाम रखाया दर्द दु:ख भय भंजनी, गीत संगीत एका एक सुणाया। चरन धूढ़ कराया साचा मजनी, सच प्रीत इक्क वखाया। कलिजुग तेरी जूठी झूठी रैणी, सतिजुग साचा वक्त सुहाया। ना कोई दीसे देहुरा मन्दिर मसीत, चारों कुन्ट दए दुहाया। बीस बीसा एका गाए सुहागी गीत, सोहँ साचा नाउँ रखाया। आपे वेखे हस्त कीट, ऊँचां नीचां विच समाया। लक्ख चुरासी रिहा पीठ, कलिजुग चक्की रिहा चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां वेखे इक्क घर, अनडिठ अनडिठ दिस किसे ना आया। घर मन्दिर अबिनाश, हरि सुहांयदा। जन भगतां होया दास, जोत सरूपी दरस दिखांयदा। खेले खेल पृथ्वी आकाश, लोआं पुरीआं विच रहांयदा। ब्रह्मा शिव शंकर होए दास, दास साची सेवा आप लगांयदा। करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द चरन द्वारे रक्खे वास, दोए जोड़ सीस झुकांयदा। सूरज चन्द मण्डल मण्डप पायण रास, दिवस रैण सेव कमांयदा। लोकमात प्रभ मार झात, जन भगतां पुच्छे अन्तिम बात, धरतमात प्रभ देवे दात, कलिजुग मिटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्न चढ़ांयदा। आपे वेखे बैठ इकांत, गुरमुख साचे सन्त जनां अमृत आत्म देवे बूंद स्वांत, काया ठण्ढी ठार करांयदा। आपे पिता आपे मात, दर दर घर घर पुच्छे बात, सोहँ देवे शब्द सुग़ात, आत्म झोली आप भरांयदा। मेरी तेरी बन्ने नात, ना कोई वेखे ज़ात पात, ऊँचां नीचां रंक राजानां शाह सुल्तानां एका धाम सुहांयदा। सर्ब जीआं प्रभ कमलापात, जन भगतां करे सीतल शांत कराए आत्म सीना, मेट मिटाए मुहम्मदी दीनां, साचा खण्डा हथ्थ उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख तेरा वेखे इक्क घर, नगर खेड़ा इक्क वसांयदा। हरि मन्दिर हरि साचा पाया, गुरमुख काया खेड़ा। अन्तिम सच्चा डेरा लाया, खुल्ला रखाया वेहड़ा। शब्द घेरा चौगिर्द रखाया, आप बन्नया आपणा बेड़ा। कारज सिद्ध लोकमात कराया, करया सच्चो सच निबेड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम जन भगतां बन्ने मात बेड़ा। नैण मूर्त हरि प्रभ गोबिन्द गुर गोपाल। भगत भगवन्त हरि बख्शिंद, दीनां बंधप दीन दयाल। गहर गम्भीर सागर सिन्ध, सदा सदा सदा वसाल। मेट मिटाए सगली चिन्द, फल लगाए काया डाल।

अन्तिम वेले होए विछोड़ा निमाणी जिंद, मुकट बैना कँवल नैणां मुकंद मनोहर लखमी नरायण दरस दए दिखाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आए दर देवे वर, दिवस रैण करे प्रितपाल। चरन धूढ़ मस्तक रेख, दुरमति मैल गंवाईआ। नेत्र लोचन नैण दर्शन पेख, आपणा भरम मिटाईआ। धुरदरगाही लाए साची मेख, ना कोई सके मात उखड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आए दर देवे वर, एका आपणा काया रंग चोली आप चढ़ाईआ। शब्द चोली कार अंगी, अंग अंग करांयदा। जगत जोड़ी साचा संगी, सगला संगी संग निभांयदा। दर द्वारे आए मंग मंगी, काया तंगी सर्ब मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, इक्क सुणाए सुहागी छन्दी, सोहँ साचा नाउँ रखांयदा।

जोत सरूप शब्द जैकार, ब्रह्मण्ड विच समाया। लक्ख चुरासी अपर अपार, आपणी रचन रचाया। ब्रह्मा विष्न शिव कर त्यार, साची सेवा लाया। लोआं पुरीआं पसर पसार, धरत धवल आकाश सुहाया। आपे वसया सभ तों बाहर, सभ घट आप समाया। लोकमाती वेख विचार, साची वंड वंडाया। ब्रह्मा वेता लेख लिखार, शब्दी शब्द जणाया। चारे हिस्से जगत धार, चारे जुग लिखाया। सतिजुग द्वापर त्रेता उतरे पार, कलिजुग अन्तिम आया। जीव जन्त साध सन्त चारों कुन्ट रसन विकार, पुरख भतार किसे दिस ना आया। जूठा झूठा अन्ध अंध्यार, सञ्झ सवेर ना कोई रखाया। धरत मात रोवे धाहां मार, पाप पुन्न ना कोए गंवाया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, वेला अन्तिम आया। वेद व्यासा बण भिखार, साचा लेखा लेख लिखाया। गुर नानक गाई तेरां धार, तेरां सम्मत आया। सर्ब जीआं प्रभ कर्म विचार, लोकमाती जोत जगाया। गोबिन्द डल्ला लए उभार, आपणा रूप वटाया। जलां थलां पावे सार, दिस किसे ना आया। सम्बल नगरी वेख विचार, शब्दी धार चलाया। शब्दी धार हरि करतार, जोती नूर उपाया। जोती नूर इक्क आकार, जुग जुग करदा आया। कलिजुग तेरा कूड़ पसार, अन्तिम दए मिटाया। लोआं पुरीआं करे ख़बरदार, ब्रह्मा शिव देवत सुर रिहा हिलाया। शब्द खण्डा फड़ कटार, तिक्खी दोवें धार कराया। शब्द घोड़े हो अस्वार, नीली छत्तों बाहर कराया। पवण उनन्जा छत्र झुलार, साचा हवण रखाया। अवणी गवणी पार किनार, एका राह तकाया। मातलोक प्रभ जामा धार, जोती भेख वटाया। ना कोई जाणे जीव गंवार, पढ़ पढ़ थक्की सृष्ट सबाया। वेद पुराण करन विचार, पुरख अबिनाशी ना मरे ना जाया। अंज़ील कुराना आई हार, मुल्ला काज़ी शेख़ मुसायक साचा नायक दिस ना आया। ग्रन्थी पन्थी वारो वार, दिवस रैण रहे कुरलाया। पुरख अबिनाशी अगम्म अगम्मड़ी कार, जुग जुग आपणे हथ्थ रखाया। लक्ख चुरासी कर्म विचार, सर्बकला समरथ आपणी

बणत बणाया। प्रगट होए विच संसार, साढे तिन्न हथ्थ कलिजुग तेरा रथ आपणी हथ्थीं रिहा चलाया। जगत विकारा देवे मथ, राजानां शाह सुल्तानां ऊँचां नीचां एका रंग समाया। शब्द चलाए महिंमा अकथ, भेव कोए ना पाया। नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां शब्द डोरी पाए नत्थ, चारों कुंट आप भवाया। गुरमुख साचे सन्त जनां सगल वसूरे जायण लथ्थ, जो जन दर आए दर्शन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सम्बल नगरी साचा वास, वेख वखाए पृथ्वी आकाश, लोआं पुरीआं आपे आप समाया। आप समाया सर्ब घट, दिस किसे ना आंयदा। वेख वखाए तीर्थ तट्ट, गुरदर मन्दिर फोल फुलांयदा। लक्ख चुरासी जीवां जन्तां दूई द्वैती लग्गा फट्ट, एका रंग ना कोई चढ़ांयदा। गुरमुख विरले प्रभ तन लपेटे शब्द पट्ट, आत्म सेजा इक्क वखांयदा। नाम लगाए काया नगारे साची सट्ट, बजर कपाटी तोड़ तुड़ांयदा। इक्क वखाए साचा हट, साचा नाम विकांयदा। गुरमुख साचे साचा लाहा लैण खट्ट, जिस जन आपणी दया कमांयदा। मनमुखां आत्म घर आई भरमां वट्ट, ना कोई परे हटांयदा। अन्तिम लेखा चुक्के तीर्थ अठ्ठ सठ्ठ, गंगा गोदावरी सीस झुकांयदा। ब्रह्मा शिव सुर दर आयण नठ्ठ, लहिणा देणा हिसाब मुकांयदा। करोड़ तेतीसा तुटे हड्ड, सुरपति राजा इन्द दिवस रैण रसना गांयदा। लक्ख चुरासी तेरा इक्क बणाए मठ्ठ, जोती अग्नी लांयदा। गुरमुख साचे सन्त जनां चरन द्वारे इक्क इकठ्ठ, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द हरि गोबिन्द रूप समांयदा। मन्दिर मण्डप माढ़ी जाणे ढठ्ठ, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ कोए दिस ना आंयदा। कलिजुग गेड़े उलटी लठ्ठ, संग मुहम्मद चार यार साचा संग निभांयदा। पंचम जेठी करे चठ्ठ, चारों कुन्ट हाहाकार वखांयदा। हाढ़ सतारां किसे ना दिसे दर दुआरा पुरख अबिनाशी मिलण नठ्ठ नठ्ठ, राह खैड़ा दिस कोए ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरा अन्तिम वेखे जूठा झूठा मठ्ठ, सतिजुग सोया आप जगांयदा। सतिजुग जगाए एका गाए, धरतमात तेरी गोद बिठाए, आपणी किरपा धारया। गुरमुख साचे संग रलाए, अंग संग आप हो जाए, शब्द मृदंग इक्क वजाए, ना कोई जाणे पूजा पाठया। मन मति विकारा काची वंग बणाए, धीरज यति आत्म सति इक्क रखाए, कमलापत प्रगट होए नैण मुँधारा, दरस दिखाए शब्द उछाल मारे एका ठाठया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन एका देवे शब्द साचा वर, सगल सगल सगल चिन्त वसूरा लाथया।

१०२ ०६

✻ ५ अस्सू २०१३ बिक्रमी नवीं दिल्ली राष्ट्रपती हाऊस विच डा० राजिन्दर प्रशाद नाल बचन होए ✻

अस्सू पंज वीह सौ तेरां बिक्रमी घर साचे वज्जी वधाईआ। राष्ट्रपति पती पतिवन्त, सृष्ट सबाई एका राह वखाईआ। जुग जुग हरि संग रहे कुड़माई, ना कोई छोड़ छुड़ाईआ। सच वस्त हरि भेंट चढ़ाई, अंगीकार आप अख्वाईआ। दर दुआरा बंक सुहाए, लहिणा देणा मूल चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, धुर फ़रमाण एका एक जणाईआ। आए द्वार दर मेहरवान, मिल्या मेल मीता। आत्म जोती ब्रह्म ज्ञान, शब्द सुणाई साची रीता। सत्त रंग झुल्ले धर्म निशान, भारत खण्ड सृष्ट सबाई जीता। ताज मोर मुकट भगवान, एका रंग रंगाए हस्त कीटा। पंच निशान राज जोग जगत मन्त्री इक्क वखाए साची रीता। शब्द सोटी जगत बलवान, एका एक कराए हस्त कीटा। चरन जोड़ा चरन कँवल ध्यान, श्री भगवान आप आप आप प्रभ आपणा दीता। राष्ट्रपति जगत संदेश रिहा सुणाया। भारत खण्ड बाल अवस्था, वड वड कर्म कमाया। ईसा मूसा मस्तक लागे मथ्थाा, जगत विच्चोला आप अख्वाया। पारब्रह्म सर्बकला समरथा, जन भगतां रथ रिहा चलाया। जोती जोत सरूप हरि, साची सेवा भेंट धर, धन्न धन्न धन्नवाद रिहा कराया।

✻ ५ असू २०१३ बिक्रमी नवीं दिल्ली ११ : ४५ ते जो शब्द लिख के राष्ट्रपती नूं दित्ता गया ✻

वीह सौ तेरां सच विहार, साचा मात कराया। दर द्वार दिल्ली दरबार, पंचम भेंट चढ़ाया। धर्म जड़्ह दी सच्ची सरकार, साचा राह रही जगत वखाया। सम्मत चौदां हरि वेखे अखाड़, त्रै देशां भेड़ भिड़ाया। सम्मत पन्दरां अन्दर वड़, जीव जन्त दए हिलाया। सम्मत सोलां आपणा घाड़न घड़, चारों कुन्ट पए दुहाया। सम्मत सतारां साचे पौड़े आपे चढ़, दूर दुराडे लए उठाया। सम्मत अठारां इक्क वहाए पाणी हड़्ह, जलधारा नाम रखाया। सम्मत उन्नी ईसा मूसा जायण झड़, कोई ना होए सहाया। सम्मत बीस हरि जगदीश भगत सुहेले लए फड़, जमन किनारा साचा धाम सुहाया। बीस इकीस साचा घाड़न आपे घड़, साचा मार्ग दए लगाया। सत्त रंग निशाना जाए चढ़, सत्तां दीपां इक्क संदेश सुणाया। साचा ताज शब्द सीस साचे धर, धर्मी धर्म कमाया। नाम सोटी हथ्थ फड़, कोटी कोट जीव तराया। पंच पंचायण लाए जड़्ह, पंच प्रमुख साचा राज चलाया। साचा जोड़ा वेखे चरन शब्द घोड़ा, अगम्म अगम्मा चढ़ के आया। जोती शब्दी जुड़या जोड़ा, दोहां मेल मिलाया। लक्ख चुरासी जीव जन्त वेखे परखे मिट्ठा कौड़ा, खेल आपणे हथ्थ रखाया। लिख्या लेख

वेद व्यास पूत सपूता प्रगट होए ब्रह्मण गौड़ा, निहकलंक नाउँ रखाया। जगत निशाना धराया साढे तिन्न हथ्थ लम्भा चौड़ा, कलिजुग जीआं सीआं वंड वंडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द संदेश हो मात प्रवेश, राष्ट्रपति साचा रिहा जणाया। राष्ट्रपति जगत जुगीशर, धन्न तेरी कमाईआ। साचा मेला शाह भबीखण, राम रामा जोत जगाईआ। सृष्ट सबाई करे परीखन, प्रभ परीखया किसे ना आईआ। भगत सुहेला एका सिक्खे सिख्या, साची सिख्या हरि मन भाईआ। नेत्र नैण लोचन जिस जन वेख्या, प्रभ आत्म तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। दो जहान लिखणहारा लेखया, जुग जुग पैज रखाईआ। कलिजुग जोती जामा धारे भेखया, शब्दी बणत बणाईआ। मस्तक लाए साची मेखया, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा शब्द वर, राष्ट्रपति जगत दर साचे रिहा सेव कमाईआ। राष्ट्रपति भगत ज्ञान, जगत होए सहारा। बीस बीसे बणे इक्क विधान, ऊँच नीच राउ रंक शाह सुल्तान सोहण इक्क दुआरा। प्रगट होए श्री भगवान, एका रूप एका भूप शाह सच्चा निरँकारा। गऊ ग़रीब निमाणयां देवे जीआं दान, इक्क सिखाए चरन प्यारा। सच धर्म दा झुल्लाए इक्क निशान, जूठ झूठ कराए पार किनारा। जन भगतां आत्म जोती देवे ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म कलि खेल न्यारा। जोती जोत सरूप हरि, भगत सुनेहड़ा शब्द वर, आए जाए देवे दर दुआरा। दर द्वारे साचा माणा, शब्द संदेश धुर फ़रमाणा, आदि जुगादी वसया। प्रगट होए हरि भगवाना, कलिजुग अन्धेर मिटे अन्धेरी मस्सया। जन भगता बन्ने हथ्थीं गाना, तीर निराला शब्द साचा कसया। सोहँ आत्म ब्रह्म साची माला, हरि हिरदे अन्दर वसया। दो जहानी देवे सच्चा धन माला, रसना रस एका रस्सया। आपे शाह आपे कंगाला, जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां देवे शब्द वर, धुरदरगाही आए नस्सया। राष्ट्रपति शब्द उजागर, निर्मल इक्क रखाईआ। सृष्ट सबाई कराउँणी आप सौदागर, साचा नाम जपाईआ। भाग लग्गे काया गागर, डूँघे सागर अमृत आत्म ताल सच सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, शब्द सुनेहड़ा देवे वर, जुग जुग मेला मेल मिलाईआ। राष्ट्रपति हरि रक्खे जगत सच्ची सरनाईआ।

१०४ ०६

✻ ५ अस्सू २०१३ बिक्रमी दिल्ली दरबार विच हरिसंगत नूं वड्याई दित्ती ✻

हरिसंगत तेरी साची भेंट, प्रभ आपणा सीस लगाया। शब्द सरूपी बणया खेवट खेट, जगत जगदीस अख्वाया। मात पित जन बणाए साचे बेट, तृष्ना प्यास बुझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती शब्दी रंग रंगाया। सीस भेंट अग्नी धर, अग्नी विच समाईआ। अग्नी जोती नूर कर, शब्दी बणत बणाईआ। शब्द सर्ब भरपूर कर, कलि

आपणे हथ्थ रखाईआ। आप आपणा हरि हज़ूर कर, हरि की पौड़ी इक्क वखाईआ। आउणा जाणा दर द्वार मन्ज़ूर कर, दिल्ली तख्त तेरी मेटे मात जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत तेरी तीजी भेंट, आपणी हथ्थीं आप भेंट कराईआ। चौथी वार कर अरदास, दास दासां दए उठाया। आपे वसे रसन स्वास, आपणा रूप दए वखाया। काया मण्डल वखाए पृथ्वी आकाश, बराट बराटी रूप समाया। हरि साजण दाता शाहो शाबास, गुरमुख साचा साचे हट विकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी सेवा आपे लाया।

⁕ ५ अस्सू २०१३ बिक्रमी इन्द्र सिँघ दे गृह करोल बाग नवीं दिल्ली ⁕

आपे पिता आपे माता, आपे बाल सखाईआ। आपे देवे साची दाता, दातार आप अख्वाईआ। आपे मेटे अन्धेरी राता, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। आप बंधाए चरनी नाता, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। आपे देवे बूंद स्वांता, अमृत रस चुआईआ। आपे वसे इक्क इकांता, इक्क इकल्ला घर वसाईआ। आपे पुच्छे जन भगतां वातां, जुग जुग रीत चलाईआ। दरस दिखाए बहु बहु भांता, भरमे गढ़ तुड़ाईआ। जोत सरूपी हरि बिधाता, बिधना आपणे चरन लगाईआ। लिख्या लेख आप पछाता, पिछला लहिण चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मानस देही मानस आप बणाईआ। मानस देही आत्म माण, देवणहार दातारा। सुरत शब्द इक्क ज्ञान, कर्म धर्म जैकारा। पंचम तत्त मिटे निशान, बख्शे चरन प्यारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कराए पार किनारा। पार किनारा दो जहान, आपणा आप करांयदा। शब्द फड़ाए हथ्थ निशान, कलिजुग अन्त झुलांयदा। आपे होए जाणी जाण, जानणहार आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां, कर किरपा पार करांयदा। किरपा कर आप गिरधार, निर्धन संग समाया। निर्धन सरधन मेल दर, साचा मीत अख्वाया। दर्द दुःख भंजन जगत भार उठाए गवर्धन, प्रभ काहना रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति सन्तोख शब्द मोख साची भेंट चढ़ाया। साचा घर चरन द्वार, चरन द्वार घर वसांयदा। साचा सर मिले वर जाए तर, तारनहार दया कमांयदा। आप आपणा रंग रिहा कर, दूसर कोई ना रक्खे संग, लक्ख चुरासी जम की फाँसी डर चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम मीता आप कराए दासन दासी, आप आपणा दरस दिखांयदा।

✻ ५ अस्सू २०१३ बिक्रमी बूआ सिँघ दे गृह मुराद नगर ज़िला मेरठ ✻

साजन साहिब साख्यात, सर्बकल भरपूरा। गुरसिख बणाए पारज़ात, निर्मल जोती बख्शे नूरा। मिटे रैण अन्धेरी रात, जगत विकारा करे दूरा। चरन प्रीती बख्शे दात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दरस हाज़र हज़ूरा। हरि दर्शन जन शांत, तृखा अग्न बुझाईआ। नेत्र परस इक्क इकांत, सोई सुरत जगाईआ। आत्म देवे बूंद स्वांत, सीतल धार वहाईआ। साचा मेला कमलापात, कमली वाला आप अख्वाईआ। गुर संगत बणाए सच बरात, दर साचे मंगल गाईआ। गऊ ग़रीबां आपे पुच्छे वात, घर घर फेरा पाईआ। आप निभाए आपणा साथ, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर आए बेड़ा पार कराईआ। बेड़ा बन्ने लावणहार, सर्ब जीआं प्रभ दाता। साची दात देवे विच संसार, चरन प्रीती नाता। चरन प्रीती चरन कँवल प्यार, उत्तम होए ज़ाता। उत्तम ज़ाता हरि द्वार, हरि हरि आप पछाता। हरि हरि राम पसर पसार, सर्ब जीआं का ज्ञाता। सर्ब जीआं प्रभ जानणहार, जन भगतां देवे शब्द सुग़ाता। शब्द सुग़ाती अपर अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भाग लगाए साचे डाल्, मिटे रैण अन्धेरी राता।

✻ ५ अस्सू २०१३ बिक्रमी रेशम सिँघ दे गृह मेरठ छाउँणी ✻

जगत जुग जोग प्रभ हथ्थ, वड वड्याईआ। आपे आप चलाए रथ, दिस किसे ना आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर ल्या मथ, कलिजुग वारी आईआ। जूठ झूठ खुल्या हट, सच वस्त हथ्थ ना आईआ। औखी घाटी तीर्थ तट्ट, सच किनारा ना कोई वखाईआ। साधां सन्तां ममता फट, पटी नाम ना कोई बंधाईआ। माया खेल बाज़ीगर नट, चंचल रूप वखाईआ। धर्म कर्म होया भट्ठ, ना कोई किसे सहाईआ। यति सति गया नठ्ठ, आत्म धीर रही ना राईआ। साचा मन्दिर गया ढठ्ठ, सति सन्तोख दिस्स ना आईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार होया इक्ठ, पंचम मता पकाईआ। कलिजुग अग्नी लाए मट्ठ, तत्ती पवण रखाईआ। जगत विकारा मारे सट्ट, हाहाकार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण तत्त विचार, त्रैगुण माया रूप वटाईआ। त्रैगुण माया तेरा संग, दिस किसे ना आया। लक्ख चुरासी चढ़या रंग, साचा हिस्सा मात वंडाया। अन्तिम करे मात भंग, भरम गढ़ तुड़ाया। प्रगट होए हरि सूरा सरबंग, अन्दर वड़ साचे मन्दिर आपे चढ़ दर दवारयो देवे बाहर कराया। नौ खण्ड पृथ्वी लग्गी जड़्, सत्तां दीपां रही लड़, प्रभ साचा दए तुड़ाया। जगत विसया जाए झड़, हरि दस्मेसा रिहा लड़, कोई ना सके मात फड़, प्रभ आपणा मुख छुपाया। जूठ झूठ जाए झड़, ना

कोई पीए हुक्का नड़, मदिरा मास ना मुख रखाया। सृष्ट सबाई एका अक्खर जाए पढ़, पुरख अबिनाशी आप फड़ाए आपणा लड़, दूसर कोए रहिण ना पाया। ना कोई पूजे गोर मड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची करनी रिहा कमाया। करनी किरत कमाए, करनहार करतारा। धरन धरत धवल हिलाए, ना झल्ले मात भारा। गुरमुख साचे सरनी सरन लगाए, दरस दिखाए एका एकँकारा। हरनी फरनी नैण खुल्हाए, भेव चुकाए गुप्त ज़ाहिरा। साची चरनी जिस जन लाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सद देवे नाम भण्डारा। कंचन काया रूप, काया गढ़ अपार। हरि साचा शाहो भूप, बैठे सच द्वार। ना कोई रंग ना कोई रूप, सति सरूप अधार। वेख वखाणे दहि दिशा चारे कूट, पुरीआं लोआं पावे सार। तीर निराला रिहा छूट, लक्ख चुरासी आर पार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धरत मात तेरा लाहवण आया भार। धरत निमाणी चरन दासी, दिवस रैण कुरलाईआ। कलिजुग जीव मदिरा मासी, रसन होई हलकाईआ। कोई ना गाए स्वास स्वासी, मानस गए भुलाईआ। धर्म राए हथ्थ फड़े फाँसी, चारों कुन्ट रिहा वखाईआ। लाड़ी मौत करे हासी, अन्तिम वारी मेरी आईआ। पढ़ पढ़ थक्के पंडत काशी, प्राग अयुध्या पए दुहाईआ।
१०७ प्रगट होए घनकपुर वासी, कन्त सुहाग ना कोई हंढाईआ। जन्म दवाए राणी झांसी, गीता बाई नाम रखाईआ। बीस बीसा १०७
०६ करे दासी, आगरा लए जगाईआ। तीजी कूट रक्खी वासी, गली महल्ला लेख लिखाईआ। घट घट जाणे पुरख अबिनाशी, ०६
भारत खण्ड लाड लडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची रचन जगत रचाईआ। जागणहारा हरि दातार, सृष्ट सबाई जगांयदा। दागणहारा सर्ब संसार, कलिजुग दाग़ मिटांयदा। मेटणहारा तृष्ना आग, सतिजुग सति रखांयदा। लपेटणहारा साचे ताग, साचे तन पहनांयदा। लक्ख चुरासी हथ्थ पकड़े वाग, साचा शब्द जणांयदा। चरन धूढ़ मजन साचा माघ, सर सरोवर इक्क वखांयदा। हँस बणाए फड़ फड़ काग, दुरमति मैल गंवांयदा। दीपक जोती जगे चिराग, अन्ध अज्ञान मिटांयदा। सरन सरनाई जो जन जाए लाग, जनणी जन रूप वटांयदा। आत्म देवे इक्क वैराग, भय भंजनी दरस दिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोग जुगत जगत आपणे हथ्थ रखांयदा। जगत फंदन कलिजुग बांधा, ना होए मात छुटकारा। साध सन्त आत्म आंधा, भरया तन हँकारा। दिवस रैण पंजां चोरां बांधा, रसना बोले बोले करे बुलारा। ना कोई जाणे पंडत पांधा, ग्रन्थी गाथा हाहाकारा। कलिजुग अन्तिम थक्का मांदा, प्रभ चरनी डिग्गे वेखे सच दुआरा। कर्म कुकर्मां वेख शरमांदा, ना कोई देवे अन्त सहारा। खाली हथ्थीं दोवें जांदा, नाम सीस ना मिल्या सच्चा दस्तारा। दिवस रैण रहे कुरलांदा, जूठ झूठ मारे नाअरा। आपणी भुल्ल अन्त बख्शांदा, दोवें भुजा

पसारा। जोत सरूपी वेख वखौदा, कलिजुग तेरा अन्त किनारा। सतिजुग साचा दिवस रैण ध्यॉंदा, किरपा कर गिरधारा। मातलोक तेरा दर्शन पांदा, सोंहदा सच दुआरा। भगत जनां नूं राह वखांदा, सोहँ गाउँदा गीत अपारा। एका ढोला नाम अनादी जगत वजाउँदा, चार कुन्ट कराए जै जैकारा। गुरमुख साचा सन्त सुहेला आत्म मन्दिर जो जन ध्यॉंदा, देवे शब्द हुलारा। साची इक्की कलिजुग तेरी अन्तिम वार एका पौदा, गुरमुखां दर जाए बण भिखारा। रसना गुरमुख गोबिन्द साचे गौदा, भरदा जाए भण्डारा। मनमुख जीव अन्त खपौदा, मेट मिटाए दुष्ट दुराचारा। ऊँच नीच ज़ात पाती वक्त चुकौदा, चार वरन एका घर बहौदा, दर सच्चे दरबारा। पुरख अबिनाशी मेल मिलौदा, लक्ख चुरासी फंद कटौदा, देवे नाम अधारा। घनकपुर वासी जोत जगौदा, शाहो भूप आप अख्वौंदा, चरन छुहाए दिल्ली दरबारा। राष्ट्रपति दे मति आप समझौंदा, प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा। लेखा चुक्के नगर शहर काया गढ़ ग्रांउ दा, अन्तिम मेला जमन किनारा। लहिणा देण वेख वखाए गुरमुखां साचा लेख चुकाए थाउँ थाउँ दा, जोती शब्दी पावे सारा। साचा नाता जोड़ जुड़ाए पिता पूत माउँ दा, साची गोदी करे प्यारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, करे पार किनारा। पार किनारे इक्क वखाए, दो जहानी कन्ढा। नौ खण्ड पृथ्वी आप उठाए, खेल खिलाए विच ब्रह्मण्डां। सत्तां दीपां वंड वंडाए, भेव चुकाए जेरज अंडा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे मेटे मेट मिटाए कलिजुग भेख पखण्डा। कलिजुग भेख पखण्ड अन्धेरी रैण, चारों कुन्ट छाया। जूठा झूठा वहे वहिण, माया ममता पर्दा पाया। अन्तिम अन्त खाए डैण, सहिंसा रोग ना कोए चुकाया। हरि दरस ना पेखे तीजे नैण, दोए मूंद रसन विकार चलाया। ना कोई चुकाए लहिण देण, अमृत सवात बूंद ना कोई प्याया। झूठा नाता भाई भैण, अन्तिम अन्त ना कोए सहाया। गुरमुख साचे सन्त सुहेले सदा सदा मात विच रहिण, प्रभ लेखा रिहा लिखाया। धन्न गुरदेव धन्न गुरसिख, साची सेवा सेवक रिहा लगाया। धुर दरगाही शब्द सिँघासण बैठा लेख रिहा लिख, लेखा आपणे हथ्थ रखाया। ब्रह्मा शिव मंगे भिख, हरि भिखक भिख्या पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिभगत उपजाए मुन रिख, रिख मुन आप उपाया। मुनी रिखी आत्म सुनी जोग अभ्यासी, दासन दास सन्यास वैराग जणाईआ। पकड़ उठाए पंडत काशी, डूँघी कन्दर शब्द स्वासी, उच्चे मन्दिर करन हासी, स्वांगी स्वांग रहिण ना पाईआ। सन्धया वेखे साची रासी, अमृत वेला हरि प्रभाती, ना कोई दीवा ना कोई बाती, अज्ञान अन्धेर सञ्झ सवेर आपे रिहा कराईआ। पंज तत्त तन काया माटी, नौ द्वारे औखी घाटी, जीव जन्त ना कोए पार कराया। नहा नहा थक्के तीर्थ ताटी, दुरमति मैल ना किसे काटी, शब्द शृंगार ना कोए कराया। बजर

कपाट ना किसे पाटी, नाम ना मिल्या साची हाटी, वणज वणजारा कोई दिस ना आईआ। पढ़ पढ़ थक्के पूजा पाठी, शब्द ना मिली साची लाठी, दुबदा मैं ना दर तों नाठी, रंग मजीठ ना कोए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा वेख दर, दर दरवाज़ा इक्क खड़काईआ। दर दरवाज़ा एका खड़के, हरि जोती जोत जगांयदा। लक्ख चुरासी कालजा धड़के, धीरज धीर ना कोई धरांयदा। राज राजान शाह सुल्तान अधविचकारा अटके, सांतक सति ना कोई वरतांयदा। चिन्ता अग्नी लग्गे काया मटके, अमृत धार ना कोई वहांयदा। शब्द अगम्मा चढ़या कटके, ना कोई वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी धरत मात दी गोदी हटके, एका वार करांयदा। प्रभ अबिनाशी दूर दुराडा बैठा हट्ट के, शब्द सरूपी रचन रचांयदा। ना कोई खाए हलाली झटके, प्रभ आपणी बणत बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी नेत्र वेख लाड़ी मौत भटके, हरि साचा हुक्म जणांयदा। लक्ख चुरासी कलिजुग दात, अन्तिम मंगे मंग सवालीआ। पुरख अबिनाशी वेखे मार झात, कवण शाह कवण कंगालीआ। कवण बैठा इक्क इकांत, प्रभ चरन ध्यान इक्क रखालीआ। वरन बरन खेल खेले बहु बहु भांत, खिच्चे जोती जोत ज्वाल्या। तीर्थ तट्टां नाता तुट्टे पुरख अबिनाशी तेरा नात, कलिजुग अन्तिम करे खालीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी देवे वर, अन्तिम जाणा हथ्थीं खालीआ। गावत गावत गा रहे, गहर गम्भीर अनाद। ध्यावत ध्यावत ध्या रहे, पारब्रह्म ब्रह्माद। सुणावत सुणावत सुणा रहे, आदि जुगादि आदि। पावत पावत पा रहे, रसना नाम स्वाद। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवत देव साची दाद। गायण गुण गोबिन्द, हरि गोबिन्द रूप समाया। सर्ब जीआं बख्शिंद, दर सगली चिन्द मिटाया। धार वहाए अमृत सागर सिन्ध, हरि साचा ताल सुहाया। सृष्ट सबाई निन्द, निन्दक निन्दया आप लगाया। हरिजन साचा साची बिन्द, कर तन बिन्दराबन बणाया। सर्ब जीआं बख्शिंद, हरि गोपी काहना आप अख्वाया। सरन सरनाई जो जन जाए पड़, कारज रास दुःख रहे ना राया। आत्म तृखा बुझाए प्यास, नेत्र लोचन दर्शन पाया। आपे कट्टणहारा जम का फास, लक्ख चुरासी गेड़ कटाया। लेखे लाए दस दस मास, बत्ती धार दए बख्शाया। सदा सुहेला वसे पास, सास ग्रास नाम रखाया। गुर पूरे सद सद बलि बलि जास, बलिहारी गुर चरन लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख कर, गुरमुख साचे लए जगाया। साजन साचा मीत हरि, सुत्या रिहा जगाए। अचरज आपणी रीत कर, नाम रुट्ठयां जाम पिलाए। काया मन्दिर सच मसीत कर, नाम तुट्ठयां झोली पाए। एका रंग हस्त कीट कर, राज राजानां पुट्ठयां आप टंगाए। शब्द खेल जगत अनडीठ कर, अनडिठे रूप समाए। जोती जोत सरूप हरि, आप

१०६ ०६

आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरे लेखे छुट्टे धर्म राए हथ्थ फड़ाए। धर्म राए शब्द संदेसा, दर द्वारे सुणने आया। दोए जोड़ चरन करे आदेसा, आपणा पल्लू अग्गे डाहया। पुरख अबिनाशी आप जणाए ब्रह्मा शिव गणेशा, कलिजुग रहिणा नाही। सुरपति राजा इन्द दर दरवेशा, मंगे भिच्छया कर कर लंमीआं बाहीं। जोती जामा हरि जी धरया भेसा, सूरज चन्न दोनों रहे शरमाई। माझे देस करया वेसा, जोती शब्द होई कुड़माई। बाल अवस्था अल्लड़ वरेसा, सम्मत तेरां रुत्त सुहाई। गुरमुख साचे विच प्रवेशा, जोती नारी इक्क प्रनाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम अन्त वज्जे वधाई। कलिजुग तेरा अन्तिम डंक, हरि आपणे हथ्थ वजांयदा। पकड़ उठाए राउ रंक, सोलां कल वरतांयदा। इक्क सुहाए द्वार बंक, महिंमा अकथ जणांयदा। हरिजन वड्याई जिउँ राजा जनक, कलिजुग खाली कुण्ड करांयदा। धर्म राए तेरी मिटे शंक, खाली फेर भरांयदा। प्रगटे जोत वार अनक, कलिजुग वेला वक्त सुहांयदा। सोहँ शब्द रखाए साचा धनुख, चिल्ले कमान तीर इक्क चढ़ांयदा। गुरमुखां आत्म सेज सपुत्री व्याहे जनक, राम रामा आप अख्वांयदा। साचा लाड़ा वसया पुरी घनक, दिस किसे ना आंयदा। वाली हिन्द वजाए डंक, नैण नाई ना ढोल कोए खड़कांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी सुहाए द्वार बंक, बंक दुआरा इक्क वखांयदा। प्रेम डोरी जोती देवे तनक, शब्द घोड़े आप चढ़ांयदा। मुख उठायण चार भाई वेखण ब्रह्मा सुत्त, कवण कूट प्रभ साची रचन रचांयदा। अगम्म अगम्मा पुरख अबिनाशी पन्थ, आदि अन्त एका रंग समांयदा। गगन पाताल हिलाए रोवण छम्म छम्मा, पुरीआं लोआं कोए ना धीर धरांयदा। लाड़ी मौत तेरा इक्को तामा, लक्ख चुरासी आप बणांयदा। धर्म राए तेरा एका जामा, भर प्याला आप प्यांअदा। चित्रगुप्त तेरा होए दलाला, लहिणा देणा हिसाब मुकांयदा। प्रगट जोत हरि गोपाला, गोपीआं काहन सुहांयदा। जन भगतां तोड़े जगत जंजाला, अन्ध अन्धेरी शाम मिटांयदा। चरन द्वारे रखाए सच्ची धर्मसाला, धर्म विद्या इक्क पढ़ांयदा। एका रंग रंगाए समाए जवान बिरध बिरध बालां, आपणी दया कमांयदा। अमृत आत्म सुहाए साचा ताला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा तीर्थ नुहावण इक्क नुहांयदा। कलिजुग अन्तिम नुहावण आया, प्रभ मंगे चरन धूढ़ी। आपणा दाग़ मिटावण आया, रंग काला चढ़या गूढ़ी। जूठा झूठा ताग तुड़ावण आया, भागां मन्दा मूर्ख मूढ़ी। कन्त सुहाग हंढावण आया, प्रभ साचा दए घूरी। सतिजुग साचा गुरमुख साचे सन्त जनां लोकमात अग्ग बुझावण आया, प्रभ आसा करे पूरी। दीपक जोती सच चराग हरिजन काया मन्दिर आप जगावण आया, जगत बुझाए तृष्ना प्यास। हँस काग बणावण आया, सोहँ मोती चोग चुगाए साची वेखे आस। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग करे बन्द खुलास। बंधी तोड़ बंधी पा बंधन बंध बंधाया। दर द्वारे आया दौड़, आत्म अन्धी

११० ०६

११० ०६

अन्ध अज्ञान वधाया। कर्मा काया कीती कौड़, मिट्ठा रस कोई नज़र ना आया। प्रगट होए पूत सपूता ब्रह्मण गौड़, शब्द खण्डा हथ्थ उठाया। तेरी सीआं अन्तिम अन्तिम आया कन्ढे लेख लिखाए साढे तिन्न तिन्न हथ्थ लम्भा चौड़, दूसर धाम ना कोए सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा अन्तिम वेला मिलण आया। नैण मंधारे मातलोक विच्चों हिलणे आया, बन्ने जूठे झूठे भारी। संगी साथी जग छलने आया, ना कोई पावे सारी। दर दरवाज़ा प्रभ अबिनाशी एका मल्लणे आया, बणे दर भिखारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्त कराए, अन्त आपणे चरन द्वारी। कलिजुग अन्तिम अन्त कराउँणा, सेवक सेवा लेखे लाईआ। लोआं पुरीआं आप उलटाउँणा, ब्रह्मण्ड खोज खुजाईआ। साचा मार्ग इक्क रखाउँणा, जेरज अंड वेख वखाईआ। सोहँ साचा शब्द चलाउँणा, सतिजुग साची वंड वंडाईआ। पारब्रह्म सिर हथ्थ टिकाउँणा, समरथ कला अख्वाईआ। जीव जन्त रसना गाउँणा, साध सन्त बीस बीसा झोली पाउँणा, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। छत्र झुलाए उनन्जा पवणा, करोड़ तेतीसा सेवा लाईआ। शिव शंकर इक्क ध्यान लगाउँणा, ब्रह्मा दोए जोड़ सीस झुकाईआ। अट्ठे पहर पुरख अबिनाशी तेरा राह तकाउँणा, लोकमाती जोत जगाईआ।
१११ आदि पुरख असुत्ते प्रकाश इक्क कराउँणा, शब्द जणाई आपणी आप इक्क रखाईआ। सोए मात आप जगाउँणा, एका जोग १११
०६ नाम दवाईआ। दरस अमोघ दर वखाउँणा, सहिंसा रोग चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग ०६
तेरी अन्तिम वर, लहिणा देणा मूल चुकाईआ। लहिणा देणा अन्तिम मूल, संग मुहम्मद चार यार चुक्कणा। शब्द फड़े प्रभ हथ्थ त्रिसूल, चारों कुन्ट करे ख्वार, हरया बूटा मात सुकणा। प्रगट होए कन्त कन्तूहल, शब्द सरूपी मारे मार, हरि का भाणा मात ना रुकणा। गुरमुख साचे शब्द पंघूड़ा साचा झूल, चरन द्वारे बहि बहि झूटणा। शब्द सिँघासण आप बहाए ना कोई पावा ना कोई चूल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा अन्तिम पैंडा मुक्कणा। कोई ना रहे बाकी मूल पिछला लेखा दए मुका, अग्गे सेज विछाईआ। आपणी हथ्थीं दए सवा, तिन्न जुग ना कोई उठाईआ। उत्ते पड़दा देवे पा, काला सूसा इक्क रंगाईआ। ईसा मूसा तेरी सेवा दए ला, बचया कोई रहिण ना पाईआ। संग मुहम्मद चार यार नूर इल्लाही मंगण इक्क दुआ, अल्ला हू नाअरा लाईआ। साचा राह तक्के ऐली शाह, शस्त्र बस्त्र तन सजाईआ। कवण होवे अन्त मलाह, सदी चौधवीं रही तकाईआ। पीर दस्तगीर कोई ना पकड़े बांह, शाह हकीर रहे कुरलाईआ। दर दर घर घर वेखण अमाम मैहन्दी केहड़ी थाँ, मुहम्मद अहिमद गया लिखाईआ। अन्तिम उडणे घर घर काँ, मक्का मदीना ख़ाक मिलाईआ। कोई ना खाए माता गऊ गां, नगर ग्रां दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, कलिजुग तेरी अन्तिम मंग पूरी रिहा कराईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम सुण फरयाद, प्रभ साचा दया कमांयदा। शब्द वजाए साचा नाद, राज राजाना आप सुणांयदा। होए जणाई बोध अगाध, शाह शहाना तख्त सजांयदा। सृष्ट सबाई देवे साध, हरि दाता इक्क अख्वांयदा। हरि प्रगट होवे माधव माध, तीर निराला इक्क चलांयदा। आदि शक्त प्रभ आदि जुगादि, जुग जुग वेस करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा लहिणा मूल चुकांयदा। कलिजुग रहिणा ख़बरदार, प्रभ साचा आप करांयदा। अन्तिम मेला संग मुहम्मद चार यार, साचा राह वखांयदा। वरभण्डी नारी नार, चण्ड प्रचण्ड चलांयदा। ब्रह्मण्डी होवे हाहाकार, आकाश प्रकाश धुँदूकार वखांयदा। भेख पखण्डी धूआँधार, अग्नी जोत लगांयदा। वड्डे कंडी विच संसार, मनमुखां मेट मिटांयदा। साची वंडी अपर अपार, गुरमुख साचे आप बचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग मेल मिलाए प्रतक्ख, तेरी पति लए रक्ख, सृष्ट सबाई पति रखांयदा। कलिजुग काला ख़ुशी मनाए, प्रभ दर वज्जी वधाईआ। अल्ला राणी मूंह तकाए, आपणा पड़दा लाहीआ। खवाज़ा खिज़र नदी नूह चढ़ाए, प्रभ साचा हुक्म जणाईआ। कलिजुग अक्षूणीआं नौ खण्ड बणाए, सत्तां दीपां नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी पूरी आस कराईआ। नौ खण्ड सत दीप कलिजुग तेरी बणे बरात, प्रभ जगत करे तेरी कुड़माईआ।
मेटे रैण अन्धेरी रात, जूठी झूठी डोली इक्क बणाईआ। अन्तिम लेखा चुक्के दिवस सात, सति पुरख निरँजण साची सेवा लाईआ। धरत मात पाणी वारे साची मात, माया कज्जल सुरमा नेत्र पाए तेरी भरजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जूठी झूठी मात घोड़ी कलिजुग दित्ता चढ़ाईआ। कलिजुग अन्तिम बद्धा गाना, मौली तन्द रंगाया। लाड़ी मौत गाए ख़ुशी तराना, लक्ख चुरासी आपणे फंद फंदाया। पुरख अबिनाशी पहरया बाणा, बत्ती दन्द मेरा सास ग्रास दर द्वारे लेखे लाया। चार कुन्ट चलाए तीर निशाना, मदिरा मास जिस रसन लगाया। अन्तिम वेले मेट मिटाए श्री भगवाना, ना कोई होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा वसाया घर, अन्तिम होए वैराना। अन्तिम होए वैरान, शब्द जणाईआ। प्रभ पकड़ उठाए शाह ईरान, सम्मत चौदां नेड़े आईआ। पन्दरां चेत्र वेखे मार ध्यान, लिख्या लेख दए पुजाईआ। सूरबीर विच मैदान, आपणी हथ्थीं खिच्च लिआईआ। नाल रलाए पंज शैतान, साचा हुक्म जणाईआ। चिल्ले चाढ़े नाम निशान, तीर निराला इक्क चलाईआ। आपे होया बेपछाण, दिस किसे ना आईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज माया जगत वरताईआ।

❊ ६ अस्सू २०१३ बिक्रमी गज्जण सिँघ दे गृह अम्बाला छाउँणी ❊

हरि साजन घर वसया, मेला सच द्वार। दस्म द्वारी बहि बहि हस्सया, मन्दिर कोट अपर अपार। कोटन कोट प्रकाश रवि सस्सया, जोती नूर आकार। धुरदरगाही आवे नस्सया, पारब्रह्म रूप अपार। जन भगतां दर एका साचा दस्सया, गुर चरन प्रीती साची कार। मनमुख दर तों जाए नस्सया, शब्द खण्डा मारे तेज कटार। लक्ख चुरासी चरनां हेठ झस्सया, लोआं पुरीआं करे ख़बरदार। कलिजुग मेटे रैण अन्धेरी मस्सया, सतिजुग साचा कर उज्यार। तीर निराला एक कसया, नौ खण्ड पृथ्वी पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां एका देवे नाम धना, निरगुण रूप हरि करतार। निरगुण रूप समाए, सरगुण जगाया। सरगुण दरस दिखाए, दया कमाया। आप आपणा रूप वटाए, दिस ना आया। औलीए पीर शेख़ मुसायक, राणी अल्ला सार ना राया। सर्ब जीआं प्रभ नायक, जोती शब्दी धार चलाया। भगत सुहेला सदा सहायक, आप आपणा मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, जुगो जुग जोती भेख धर, लोकमाती भेख वटाया। लोकमात लक्ख चुरासी तेरा घर, प्रभ आपे आप बणांयदा। आपे वेखे मार झात चारों कुन्ट आए डर, कलिजुग काला रूप वटांयदा। गुरमुख विरले अमृत देवे बूंद स्वांत इक्क नुहाए साचे सर, दुरमति मैल गंवांयदा। भगत भण्डारा देवे भर, इक्क इकांत दरस अमोघ धुर संजोग आपणा आप करांयदा। आपणी करनी रिहा कर, दूसर कोई ना दीसे दर, चिन्ता रोग जगत विजोग जन हरि मेट मिटांयदा। पारब्रह्म प्रभ रूप अपार सदा सुहेला देवे वर, ना जन्मे ना जाए मर, रूप अनरंगा शब्द तरंगा वेखे खेल सूरा सरबंगा, दाता जोद्धा आप अख्वांयदा। दाता जोद्धा हरि बलकारी, शब्द खण्डा उठाया। वेख वखाणे लोआं पुरीआं पावे सारी, सत्तां दीपां रिहा हिलाया। लक्ख चुरासी वेख विचारी, कलिजुग बाजी अन्तिम हारी, भेख पखण्डा पाए वंडा, चारों कुन्ट हाहाकारी, वेखे खेल हरि विच ब्रह्मण्डा, उत्भुज सेत्ज जेरज अंडा खाणी बाणी गगन पताली साची कार कराईआ। जन भगतां दीपक जोत जगाए मस्तक साची थाली, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। अनहद अनाहद शब्द वजाए साचा ताली, ताल तलवाड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। धुर नाम देवे जगत दलाली, दो जहानां पार कराईआ। आपे वसे सदा हथ्थां खाली, जन भगतां आत्म घर भण्डार रिहा भराईआ। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाली, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। साचा माली सत्तां वेख परखे फल लग्गा कवण डाली, कवण रंग रंगाईआ। माया ममता मोह जगत जंजाली, काम क्रोध सुरत भवाईआ। प्रभ अबिनाशी भगत जनां दर बणया पाली, दर दरवाज़े ग़रीब निवाज़े साजन साजे, निज घर आत्म शब्द सरूप अनरंग रूप अगम्म अगम्मा बैठा आसण लाईआ। लेखे लाए काया चम्मा, पवण

स्वासी गाया दमा, नेत्र नीर वहाया छमा, प्रभ चरन कँवल ध्यान लगाईआ। गगन पताली देवे थम्मा, सेव लगाए शिव ब्रह्मा करोड़ तेतीसा बैठा सीस झुकाईआ। जोत निरँजण जोत सरूप लोकमात घर साचे जम्मा, मात पित ना कोई अख्वाईआ। आपे जाणे आपणा कम्मा, राम रहीम करीम रमईआ रामा, गोबिन्द रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, सम्बल नगर सच ग्रां, सदा सदा सद ठण्ढी छाँ, एका रंग समाईआ। गोबिन्द रूप अपार, हरि हरि आप वटाया। हरि हरि खेल अपार, गोबिन्द विच समाया। गोबिन्द मेल करतार, हरि हरि नाम ध्याया। हरि हरि सज्जण सुहेल, गुर चेल आप अख्वाया। साचा चेला चरन द्वार, गुर गोबिन्दा सीस झुकाया। हरि हरि हरि सदा सद बख्शणहार, बख़शिश आपणी झोली पाया। गुर गोबिन्दा कर निमस्कार, दोए जोड़ सीस झुकाया। दर वेख सच्ची सरकार, शब्द बोल बुलाया। किरपा कर हरि करतार, मातलोक जगत ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सरूपी शब्द जणाए, गोबिन्द तेरी साची कार, हरि साचे मन भाया। दिवस रैण रसन उचार, चरन कँवल मिली वड्याईआ। पारब्रह्म कलि पावे सार, लोकमाती जन्म दवाईआ। शब्द देवे सच कटार, तन गात्रे आप सजाईआ। पंचम करना ख़बरदार, पंचम मेट मिटाईआ। पंचम मेला सच दरबार, पंचम बैठा मुख छुपाईआ। पंचम रोवे धाहां मार, पंचम हरि हरि हरि गुण गाईआ। पंचम पंचां एका धार, हरि पंचम रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा मात लगाईआ। साची सेवा मात लगाई, आदि पुरख अनादी। आत्म मेवा इक्क खवाई, शब्द बोध अगाधी। देवी देवा देव समाई, रसन शक्त प्रभ अराधी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती नूर विस्मादी। चार वरन दर घर वज्जी वधाईआ। मातलोक चुक्कया डर, आपणी करनी रिहा कर, कर कर वेखे सृष्ट सबाईआ। हरि भाणा अन्तिम हरि हरि जर, एका एक टेक चरन सरन सच्ची सरनाईआ। लक्ख चुरासी लहिणा देणा लए भर, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा कर, देवे शब्द जणाईआ। गोबिन्द रूप हरि धरनी धर, धरत धवल आकाश समाईआ। बन्द किवाड़ा खोल्हे दर, अन्दर वड़ नूरी दर्शन पाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई चोटी ना कोई जड़, ना कोई किला कोट ना दीसे गढ़, सच द्वारे पुरख अबिनाशी घट घट वासी आपे बैठा चढ़, शब्द सिँघासण आत्म सेजा पंचम रागा शब्द अनादा धुन आत्मक सच संगीत, इक्क वखाए चरन प्रीत, काया करे सीतल सीत, सति सन्तोख आत्म ब्रह्म सांतक सति कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा लेखा धुर फ़रमाण, जोत सरूपी हरि भगवान, गुर गोबिन्दे रिहा जणाईआ। गोबिन्द सुणया साचे कान, हरि शब्दी शब्द जणाया। अन्तिम छड्डे

तन मकान, रहिण कोई ना पाया। सरसा भेंटा नौजवान, तन साचा आप रुढ़ाया। जीव जन्त सर्ब पछताण, गुर पूरा खुशी मनाया। प्रभ अबिनाशी एका रक्खे चरन ध्यान, दिवस रैण सद रिहा चित लाया। सर्ब जीआं प्रभ जाणी जाण, आपणा आप रूप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भाणा सहिणा हुक्म जणाया। गुर गोबिन्द शब्द जणाई, हरि हरि भेख अवल्ला। प्रभ अबिनाशी दया कमाई, इक्क वसाया काया मात महल्ला। गोबिन्द धार मात चलाई, इक्क वखाए निहचल धाम अटला। अन्तिम वेले होए जुदाई, हरि वेखे खेल कर कर वल छला। पिता पूत हरि सच सरनाई, सेवा लाई जल थला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क फड़ाया हथ्थ विच साचा भल्ला। गुर गोबिन्द खुशी मनाई, प्रभ साचे मार्ग लाया। आत्म घर वज्जी वधाई, दोए जोड़ सीस झुकाया। दिवस रैण ना होए जुदाई, साची मंग मंगाया। पूत सपूता करे कुड़माई, चौथे जुग चारे भेंट चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेवट खेट माँ प्यो बेट पिता पूत पति पतिवन्ता, साचा कन्ता आत्म सेजा नारी कन्ता, गुर पीर औलीआ साध सन्त पारब्रह्म रूप समाया। गुर गोबिन्द करे अरदास। पुरख अबिनाशी होवे पास। वेख वखाणे पृथ्वी आकाश। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर विच प्रभास। उच्चे मन्दिर हरि नर नर हरि किते ना रक्खे वास। गुरमुख साचे सन्त सुहेले जायण तर, जो जन प्रभ मिलण दी रक्खण आस। आत्म नुहाए साचे सर, अमृत सति सरोवर हउमे दुखड़ा करे नास। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किरपा करे पुरख अबिनाश। पुरख अबिनाशी जगत मलाह, गुर पीर आप अख्वांयदा। शब्द जणाए साचा राह, धुर फ़रमाण जणांयदा। अगम्म अगम्मा पकड़े बांह, दिस किसे ना आंयदा। ना मरे ना कदे जम्मा, जुग जुग हिस्से आप वंडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द काया रूप आपणे विच समांयदा। गोबिन्द काया साचा हट्ट, प्रभ साचे आप खुल्हाया। आपे जाणे घट घट, घट घट मन्दिर डेरा लाया। ना कोई तीर्थ ना कोई तट्ट, सच सरोवर किसे दिस ना आया। कलिजुग माया खेल बाज़ीगर नट, जूठा झूठा स्वांग कराया। सन्त सुहेले लाहा जाण खट, प्रभ चरन कँवल चित्त लाया। मण्डप माढ़ी जायण ढठ्ठ, गुर गोबिन्दे लेख लिखाया। ना कोई दीसे मन्दिर मस्जिद काअबा मट्ठ, देहुरा मसीत पतित पुनीत कोई दिस ना आया। अन्तिम लेखा चुक्के अट्ठ सट्ठ, गंगा गोदावरी रो रो रही नीर वहाया। त्रैगुण माया पए भट्ठ, ब्रह्मा शिव विष्न दिवस रैण रहे कुरलाया। कलिजुग तेरी अन्तिम चट्ठ, गोबिन्द साचा लेख लिखाया। धुरदरगाही बेपरवाही साचा माही जोत सरूपी आए नठ्ठ, शब्द खण्डा हथ्थ रखाया। लक्ख चुरासी गेड़े उलटी लट्ठ, भेव अभेदा अछल अछेदा चारे वेदां दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

गोबिन्द तेरा काया रूप आपणे विच समाया। गोबिन्द आत्म अन्तर कर ध्यान। एका मंगे जिया दान। पुरख अबिनाशी किरपा कर साचे हरि, सर्ब जीआं दा जाणी जाण। चार वरन एका दर, राउ रंक चुक्के डर, ऊँच नीच सर्ब मिट जाण। पुरख अकाल तेरा साचा सर, नौ खण्ड पृथ्वी मिले वर, सत्तां दीपां एका रंग रंगान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मंगे मंग वाली दो जहान। प्रभ अबिनाशी शब्द जणाई, गुर गोबिन्दे रीती। मानस जन्म होए जुदाई, जोती जोत सदा अतीती। पारब्रह्म आपणे हथ्थ रक्खे वड्याई, आपे जाणे आपणी रीती। कलिजुग अन्तिम दए मिटाई, लेख लिखाए सीआं साढे तिन्न हथ्थ सीती। ब्रह्मण्ड वरभण्ड नौ खण्ड जेरज अंड वेख वखाए ऊँच नीच रंक राजान, शाह सुल्तान हस्त कीटी। सृष्ट सबाई भंग कराए, नाम मृदंग इक्क वजाए, शब्द घोड़े तंग कसाए, आत्म मध अमृत एका पीती। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दे देवे वर, हरि साजन मीता खेले खेल नीकन नीकी। नीकन नीका हरि अख्वाया। मनमुख जीवां दिस ना आया। गुरमुखां प्रभ पर्दा लाहया। आत्म जोती नूर सवाया। शब्द सिँघासण हरि हरि घाड़न घड़दा, दर दूसर बाडी कोए ना लाया। लक्ख चुरासी अन्दर वड़दा, दिवस रैण आपे लड़दा, शब्द खण्डा हथ्थ उठाया। लेखा चुक्के अस्थूल जड़ दा, सूख्म मूर्त हरि रघुराया। कलिजुग माया अग्नी जूठी झूठी जीव जन्त साध सन्त सड़दा, ना कोई होए सहाया। लहिणा देणा सीस धड़ दा, जगत जगदीश अन्तिम कलिजुग दए चुकाया। गुरमुख साचे शब्द सरूपी आपे फड़दा, चरन दुआरा हरि निरँकारा एका साचा राह वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखे खेल बहत्तर नाड़ दा, अन्ध अज्ञान मार ध्यान श्री भगवान गुरमुख साचे दए मिटाया। मनमुख जीवां अन्तिम अन्ध, दिवस रैण अन्धेरा। दूई द्वैती भरमां कंध, माया ममता घेरा। ना कोई सुणाए सुहागी छन्द, सृष्ट सबाई हेरा फेरा। हरि का नाउँ ना मिल्या बत्ती दन्द, ना कटयां जम का जेड़ा। रसना लाए मदिरा मास गन्द, लग्गे भाग ना काया खेड़ा। आप गंवाया परमानंद, निजानंद ना वेख वखाया। हउमे रोग रोग बन्द बन्द, काम क्रोध फिरे हलकाया। सतिगुर साचा सदा सदा सद बख्शंद, गुरमुख साचे लए तराया। कलिजुग तेरा अन्तिम पन्ध, बीस बीसा दए मुकाया। सतिजुग चाढ़े साचा चन्द, सति सतिवादी नाउँ रखाया। सृष्ट सबाई करे खण्ड, वरन बरन कोई रहिण ना पाया। शब्द चले इक्क प्रचण्ड, चण्ड चण्डूल रहिण ना पाया। सोलां सोलां सोलां आपे वंड, सोलां तेरी धार विच संसार दए चलाया। वेख वखाणे हरि ब्रह्मण्ड, पुरीआं लोआं विच समाया। आपे सुत्ता दे कर कंड, मनमुख जीवां दिस ना आया। नार दुहागण होई रंड, कन्त सुहाग ना कोए हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरा साचा रूप आपणे रंग रंगाया।

रंग चलूल शब्द भट्ठी, प्रभ साची मात चढ़ांयदा। हरिजन ना जाए भूल, आत्म रक्खे हथ्थी, सच्ची दात झोली पांयदा। आपे आप कन्त कन्तुहल भेव चुकाए अट्ठ सट्ठी, चरन धूढ़ मस्तक लांयदा। नाभी कँवली साचा फूल उलटी करे लट्ठी, अमृत बूंद मुख चुआंयदा। आप चुकाए पिछला मूल पंचम जेठी, लेखा लेख मुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, निहकलंक नरायण नर, नौ खण्ड पृथ्वी वेखे घर, साध सन्त जीव जन्त औलीआ पीर शेख़ मुसायक कोए रहिण ना पांयदा। नाम रस जगत अत मीठा, गुरमुख विरले पाया। रूप रंग प्रभ किसे ना डीठा, हरि जी हिरदे विच समाया। लक्ख चुरासी जूठ झूठ पीसण पीठा, रसना शब्द ना साचा गाया। मन मती कौड़ा होया रीठा, गुर मती गुर राह ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे शब्द वर, दे मति आप समझाया। गुर मति जगत बलवान, जुग जुग आप रखाईआ। पंचम मिटाए तन शैतान, पंजे शब्द जणाईआ। साचा मेला हरि भगवान, आत्म जोती नूर सवाईआ। एका बख़्शे चरन ध्यान, शाहो भूप आप अख्वाईआ। जिस जन देवे जिया दान, चारों कुन्ट होए सहाईआ। मदिरा मास तजणा पीण खाण, आत्म रस घर साचे पाईआ। दर द्वारे साचा माण, दिवस रैण हरि साचा दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत मेघ काया बरस, ठण्ढी ठार रखाईआ। दयानिध दयाल गुर मीता, नित नित दया कमांयदा। जन भगतां परखणहारा नीता, दिवस रैण सेव कमांयदा। नाम निधान जिस जन पीता, देवी देवा अलख अभेव जोत निरँजण शब्द पाए नेत्र अंजन जगत अन्धेर मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे जगत वर, भगत भगवन्त एका रूप समांयदा। सम्बल नगर साचा गढ़, प्रभ साचे मात बणाया। आपे अन्दर बैठा वड़, दिस किसे ना आया। साचे पौड़े गया चढ़, दस्म द्वारी कुण्डा लाहया। आप आपणा घाड़न घड़, महल्ल अटल इक्क सुहाया। ना कोई सके जीव जन्त साध सन्त फड़, लक्ख चुरासी फिरे हलकाया। पुरख अगम्मा आपे वेखे खड़, नौ खण्ड पृथ्वी वहिंदी धार वहाया। पंच विकारा रिहा लड़, जीवां जन्तां माया ममता मोह वधाया। कलिजुग अग्नी रिहा सड़, अमृत धार ना कोए मुख चुआया। जूठ झूठ बणाया हँकार गढ़, जगत विकारा विच वसाया। कर्म कुकर्म रहे लड़, धर्म अधर्मी झगढ़ा पाया। दोहां मिल्या जगत वर, कलिजुग वेला अन्त सुहाया। चार यार संग मुहम्मद आपणी करनी रिहा कर, प्रभ साची रचन रचाया। गोबिन्द रूप मात धर, सम्बल नगरी डंक वजाया। गौड़ ब्रह्मण आप हरि, पूत सपूता शब्द उपाया। तिन्नां लेखा इक्क घर, लहिणा देणा मूल चुकाया। कलिजुग करनी रिहा कर, धर्मराए संग रलाया। चित्रगुप्त लेखा रिहा पढ़, लाड़ी मौत हुक्म जणाया। लक्ख चुरासी वेखे सीस धड़, सीस धड़ कोई दिस ना आया। हरिजन सन्त

११७
०६

सुहेले एका अक्खर जायण पढ़, ब्रह्म विद्या नाउँ उपाया। जगत विद्या वहिण झूठा हड़, जोग जुगत किसे हथ्थ ना आया। ना कोई गोर ना कोई मड़, पवण मसाण सर्ब समाया। पुरख अबिनाशी जोती जामा भेख धर, अवण गवण पृथ्वी आकाश प्रभास वेख वखाया। तीर्थ तट्ट वेखे सर, मन्दिर टिले उच्चे किले आप फोल फुलाया। धरत मात दर मंगे वर, पुरख अबिनाशी किरपा कर, कलिजुग मिटे रैण अन्धेरी छाया। सतिजुग साचा सोहे दर, चरन सरन प्रभ जाए पड़, पुरख अबिनाशी फड़ लड़, लग्गी अग्ग बहत्तर नड़, तिन्न सौ सट्ठ हाडी तन जलाया। सतिजुग साचा भगत जनां दे अन्दर जाए वड़, सच सुच्च दी लाए जड़, सति सन्तोख धर्म निशान उगाया। कलिजुग फल जायण झड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, संग मुहम्मद चार यार, गोबिन्द तेरी एका धार, ब्रह्मण गौड़ रूप अपार, साचा मेल मिलाया। साचा मेला इक्क घर, नौ दर दिस ना आईआ। पुरख अबिनाशी दित्ता वर, साचा हिस्सा मात वंडाईआ। अगम्म अगम्मा जोत धर, जोती शब्द जणाईआ। वड शाहो भूप नर, नर नरेशा आप अख्वाईआ। चार वरन सुहाए बंक द्वार, दर दरवेशा लोकमात फेरा पाईआ। पकड़ उठाए ब्रह्मा विष्न महेष सुरपति राजा इन्द करोड़ तेतीसा, आपणी सेव लगाईआ। भाग लगाए माझे देसा, गुरमुख साचे विच प्रवेशा, वेख वखाणे धारी केसा, मूंड मुंडाई हरि रघुराई आपणी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप

११८
०६

हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द तेरी धार संग मुहम्मद सुण पुकार, पूत सपूता धरत मात तेरी गोद बिठाईआ। धरत मात दए हुलारा, हरि साचा शब्द जणाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी पार किनारा, एका वार कराईआ। मनमुख डोबे वहिंदी धारा, सम्मत अठारां अट्ठ तत्त मात दिस ना आईआ। नौ दर वेखे वेख विचारा, दसवां वेख वखाईआ। इक्क इकल्ला हरि करतारा, सच सिँघासण डेरा लाईआ। शब्द खण्डा हथ्थ दो धारा, दो जहानी रिहा चलाईआ। गुरमुखां देवे शब्द अधारा, जोती दीपक नूर उज्यारा, पवण उनन्जा छत्र झुलारा, सास ग्रास आत्म तृखा प्यास दरस नेत्र नैण लोचन सांतक सति वरताईआ। सांतक सति सरूप, हरि हरि रंगया। सृष्ट सबाई वेखे दहि दिशा चार कूट, लोआं पुरीआं आपे लँघया। कलिजुग मिटाए जूठ झूठ, माया ममता तन श्रृंगार एका रंगया। सच सुच्च दर दरवाज़िउँ गई रूठ, जीव जन्त साध सन्त काया तन फिरे नाम नम्गया। खाली दिसे घर घर ठूठ, मिले दान ना किसे कोलों मंग्गया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी देवे कुट्ठ, जगत डोरी आप बंधाए, लक्ख चुरासी पावे फन्दया। लक्ख चुरासी फंदी फास, प्रभ आपणी हथ्थीं आप पांयदा। अन्तिम वेला विच प्रभास, होए दास ना कोए सेव कमांयदा। काया मण्डल झूठी रास, साचा काहन हरि भगवान दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द तीर तीर तुफंग, मनमुख जीवां

करे भंग, रसना चिले आप चढ़ांयदा। रसना चिला शब्द कमान, गुर गोबिन्दा आप चढ़ाईआ। इक्क इकल्ला विच मैदान, सोहँ कटार तन म्यान, नौ खण्ड पृथ्वी पावे तरथल्ला, नाल रलाए गोबिन्द डल्ला, जलां थलां आप हिलाईआ। सृष्ट सबाई दूई द्वैती सल्ला, एका दूजा दूजा एका एका भाओ चलाईआ। गुरमुख विरले वसे काया मन्दिर सच महल्ला, प्रभ आत्मक दीपक जोती नूर सवाईआ। दर दुआरा एका मल्ला, पारब्रह्म प्रभ अग्गे खल्ला, चतुर्भुज आपणी भुजां उठाईआ। लोकमात जन फला फुला, माया ममता विच ना रुला, लग्गी अग्ग ना काया झल्ला, हरि दरस नेत्र नैण दिखाईआ। दर द्वारे जो जन आए भुल्ला, भाग लगाए आपणी कुला, चरन सरन घोली घुल्ला, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। कलिजुग फल अन्तिम हुल्ला, लक्ख चुरासी कोई ना पैणा मुल्ला, अमृत आत्म सभ दा डुल्ला, निझर धार साचा रस सर सरोवर दर आत्म घर कोए ना मुख चुआईआ। नौ द्वारे मिल्या वर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, लोकमात करे जुदाईआ। कलिजुग अन्तिम अन्त कर, सतिजुग सुरत दवाईआ। आप आपणी जोत धर, अकाल मूर्त इक्क वटाईआ। चार वरन इक्क दर, नाद तूरत रिहा वजाईआ। शब्दी जोती पवणी इक्क वर, त्रै लोआं रिहा दवाईआ। भगत भण्डारे आपे भर, भगत भागवत भगवन्त लेख लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मुहम्मद अहिमद गोबिन्द धार, रूप अनूप सति सरूप हरि दातार, पूत सपूत ब्रह्मण गौड़ एका एक ओंकार एका रंग वखाईआ। इक्क ओंकार इक्क इकल्ला, एका धाम वसंदड़ा। शब्द रक्खे तेज कटारा, नाम खण्डा हत्थ उठंदड़ा। तिन्नां लोआं पावे सारा, इक्क जैकार करंदड़ा। चौथे घर कर प्यारा, सन्त सुहेले कर कर मेले निहचल धाम सुहंदड़ा। पंचम मेला मीत मुरारा, पंजां बख्शे चरन प्यारा, पंचम जोती नूर उज्यारा, सच रंग सुहंदड़ा। छेवें छप्पर छन्न अपारा, ना कोई दीसे चार दिवारा, ऊँच नीच प्रभ अगम्म अपारा, घर साचे आप वसंदड़ा। सत्तवें सति पुरख निरँजण प्रभ तेरी धारा, आदि अन्त जुगा जुगन्त लोकमात लए अवतारा, आपणी धारा आपणे हत्थ रखंदड़ा। अठवें अट्ठां तत्तां कर विचारा, मति मन बुध करे अन्त ख्वारा, शब्द खण्डा तेज कटारा, सीस आरा आप रखंदड़ा। नौ दर भुल्ले जीव गंवारा, मानस देही आई हारा, ना कोई दीसे पार किनारा, लक्ख चुरासी फाही फंदड़ा। दसवां घर हरि करतारा, जोत सरूपी कर अकारा। शाहो भूपी बैठ दर सच्चे दरबारा, साचा ताज एका सीस सुहंदड़ा। एका ताज एका काज एका राज सृष्ट सबाई साजन साज, साचे हुक्म जणाईआ। शब्द घोड़े चरन दे रकाब, प्रगट होए हक्क ज़नाब, वेख वखाणे दो दो आब, कँवल नाभ फोल फुलाईआ। पुरख अबिनाशी कोई ना झल्ले तेरी ताब, लक्ख चुरासी दए अज़ाब, लहिणा देणा हिसाब मुकाईआ। साचा नाम जगत खिताब, साचा मेला

इक्क अहिबाब, नाम वजाए तन रबाब, सारंगधर भगवान बीठला सुरती किंगी आप वजाईआ। काया काअबा काअबा काअब, हरि हरि साचा शाह नवाब, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सपत सरिंग पंचम धुन जोत निरँजण आपे चुण, नाम सति साचा तत्त वजाईआ। नाम सितार दर दर वज्जे, वजावणहार दिस ना आया। सर्ब जीआं प्रभ पर्दे कज्जे, गुरमुखां पर्दा आपे लाहया। अनहद मारे साची आवाजे, राग रागणी रिहा अलाया। चिट्टे अस्व शब्द घोड़े चढ़या साचे ताजे, देस माझे भेस वटाया। पकड़ उठाए राजन राजे, शब्द सरूपी साचा गाजे, वाली हिन्द दए जगाया। सम्मत सोलां पैणी भाजे, कोई ना किसे रखे लाजे, शाह सुल्ताना वाली दो जहानां राज राजानां दर दर फिराया। आप रचाए आपणा काजे, लाड़ी मौत मंगे दाजे, लक्ख चुरासी घनकपुर वासी कराए दासी, कलिजुग देवे अन्त प्रनाया। कोई ना दीसे मदिरा मासी, ना कोई पंडत पढ़े कांशी, वेद पुराण अञ्जील कुरान मुल्ला काजी शेख़ मुसायक अन्तिम रो रो चढ़न फाँसी, प्रभ साचा दए सज़ाया। पारब्रह्म पुरख अबिनाशी, भगत जनां दासन दासी साचे मण्डल पावे रासी, मेल मिलाए शब्द स्वासी, सुरत ज्ञानन इक्क ध्यानन दरस दिखाए श्री भगवान, नेत्र अंजन चरन धूढ़ मजन सच इशनान कराया। भाण्डे भरम भउ प्रभ दर भज्जण, शब्द ताल साचे वज्जण, मिल्या मेल साचे सज्जण, एका धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां आया पड़दे कज्जण, शब्द दुशाला उप्पर पाया। शब्द दुसाला रंग लाल, प्रभ आपणे हत्थ रखांयदा। प्रगट होए दीन दयाल, सर्बकला समरथ आप अखवांयदा। जन भगतां सुहाए अमृत आत्म ताल, सर सच नुहावण इक्क नुहांयदा। अन्तिम तोड़ जगत जम काल, काल महांकाल नेड़ ना आंयदा। शब्द बणाए आप दलाल, सुरत सवाणी करे रखवाल, दिवस रैण सेव कमांयदा। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल, हरिभगत सुहेले लए भाल, मात पित अम्मां अम्मड़ी आप अखवांयदा। फल लगाए काया डाल, दीपक जोती जगे साचे थाल, कौस्तक मणीआ मस्तक नूर नुराना शाह सुल्ताना आपणी हत्थीं आप लगांयदा। आपे गोपी आपे काहना, रूप अनूप सति सरूप हरि भगवाना, बार अनक वासी पुरी घनक जोती जोत प्रगटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा अन्तिम वर, लहिणा देणा मूल कन्त कन्तूहल आप चुकांयदा। शब्द सरूप अनरंग, दिस किसे ना आया। जिस जन किरपा कर देवे सूरा सरबंग, सगला साथ निभाया। कट्टणहारा भुक्ख नंग, शब्द मृदंग काया मन्दिर अन्दर आप वजाया। जूठा झूठा तोड़े वज्जा जन्दर, आपणी किरपा कुण्डा लाहया। लक्ख चुरासी भौंदी बन्दर, सच दरवाज़ा किसे दिस ना आया। उच्चे टिल्ले चढ़ चढ़ थक्के गोरख मच्छन्दर, साचा हट्ट ना किसे वखाया। गुर पूरा हाज़र हज़ूरा भाग लगाए काया डूँघी कन्दर, आप आपणा दरस दिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, जिस जन देवे शब्द वर, भाणा सहिणा दरस नैणा दोवें राह चलाया। दोवें राह एका धार, एका संग निभाईआ। चरन कँवल बख्शे इक्क प्यार, शब्द मलाह बेपरवाह आपे आप अख्वाईआ। फड़ फड़ बाहों करे पार, इक्क जपाए साचा नाँ, काया चोली रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे नाम वर, इक्क सुणाए शब्द सुहागी सच संगीत, काया करे पतित पुनीत, पति पतिवन्ता श्री भगवन्ता साचा कन्ता आपे आप अख्वाईआ। शब्द भण्डार अतुट्ट, देवणहार दातार। आदि अन्त सदा निखुट्ट, लक्ख चुरासी पावे सार। लक्ख चुरासी जाए छुट्ट, जो जन सोहे बंक द्वार। आत्म लाहा साचा साची लुट्ट, हरि नाउँ रसन जै जै जैकार। अमृत आत्म पीणा घुट्ट, दिवस रैण रहे खुमार। मनमुख जीव जड़ आपे रहे पुट्ट, तन वसया काम क्रोध लोभ मोह हँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे जगत वर, एका शब्द नाम अधार। नाम निशअक्खर प्रभ आप है, ब्रह्मण्ड रूप निवास। सृष्ट सबाई माई बाप है, जन भगतां दासी दास। आपे जाणे आपणा वास है, हरि घट घट रक्खे वास। वेख वखाणे पृथ्वी आकाश है, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर विच प्रभास। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे शब्द वर, लेखे लाए सास ग्रास।

१२१ ०६

❋ पहली कत्तक २०१३ बिक्रमी अमृतसर निर्मला सम्मेलन विच
पंडत शंकर अनन्द स्वामी कोलों शब्द दी पुच्छ कीती ❋

कवण घर कवण टिकाणा। कवण शब्द मात बिबाणा। कवण रूप सन्त समाणा। कवण भूप कन्त भगवाना। कवण कूट बिसराम कराणा। कवण फल रिहा टूट, डाल किसे ना लाणा। कवण पंघूड़ा रिहा झूट, कवण आसण सेज विछाणा। जोती जोत सरूप हरि, सन्तन वेखे सच घर, दूसर दर भेव ना पाणा। कवण सिँघासण कर शृंगार, आत्म सेज विछाईआ। कवण रूप रंग कन्त भतार, सुरत सवाणी नार सुहागण आप बणाईआ। कवण खाणा पीणा पहनणा तन शृंगार, कवण वेस कराईआ। कवण अमृत आत्म साची धार, दिवस रैण अट्ठे पहर तृप्त कराईआ। कवण दहि दिशा रिहा विचार, लोआं पुरीआं गगन पाताल आकाश एका रंग समाईआ। कवण घर हरि सन्त रक्खे वास, मिले मेल पुरख अबिनाश, हरि दूसर दर कोए दिस ना आईआ। निज घर निज आत्म वेख वखाणे सर्ब गुणतास, भेद अभेदा भेव खुल्हाईआ। कवण मण्डप वेखे रास, सन्त सुहेला इक्क अकेला इकांत अनन्त रूप अनूप सति सरूप शाहो भूप रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, सन्तन

पुच्छे सच घर, नौ द्वारे बन्द दर, दसवें खोल्ह बन्द किवाड़, कवण दरवाज़े जाए अन्दर वड़, कवण कुण्डा आपे लाहीआ। कवण घर कवण दरवाज़ा। एका एक वसे हरि ग़रीब निवाजा। भगत जनां राह साचा दस्से शब्द रखाए घोड़ा ताजा। ना रोवे ना कदे हस्से, धुन आत्मक ब्रह्मादा। मारे शब्द अवाजा। रसना खाए ना गाए कोई स्वाद, आदि जुगादि इक्क इकांता। जोती जोत सरूप हरि, सन्तन वेखे इक्क घर, खोजत खोजत काया पिण्ड ब्रह्मण्ड अंड खण्ड विच विस्मादा। सन्तन धाम घर अगम्म, दिस किसे ना आया , ना कोई छप्पर छन्न ना दीसे थम्म्ह, चार दिवार ना कोई बणाया। जगत तृष्ना भुक्ख ना तम, आलस निन्दरा नींद ना आया। शब्द सिँघासण जोती डेरा लाया। जोती नूर कवण द्वार, करे सच रुशनाईआ। मेट मिटाए अन्ध अंध्यार, दीवा बत्ती ना कोई जलाईआ। शब्द धुन अपर अपार, पंचम रिहा गाईआ। पंचम मेला मीत मुरार, एका रंग समाईआ। तन बस्त्र काया शब्द शस्त्र तीर कटार, नाउँ निरँकार बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, सन्तन पुच्छे सच घर, भारत खण्ड कवण द्वार द्वारका पाई वंड, चार कुन्ट दहि दिशा पंचम तत्त विकारी हिस्सा धीरज यति सति सन्तोख ज्ञान ध्यान अन्तिम मोख कवण द्वारे डेरा लाईआ। शब्द गुर बलवान, है, हर घट में रिहा समाए। जिस जन प्रभ देवे साचा जिया दान है, आत्म जोत जगाए। इक्क रखाए चरन ध्यान है, एका रंग समाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेखाधारी भेख रखाए। कलिजुग तेरा अन्तिम भेख, पुरख अबिनाशी वेखण आया। लक्ख चुरासी मस्तक लिखे वेखे रेख, लिखणहारा दिस ना आया। नौ खण्ड पृथ्वी रही वेख, भेव अभेदा दिस ना आया। भरमे भुल्ले औलीए पीर शेख़, साधां सन्तां माया ममता जगत मोह वधाया। ना कोई जाणे शब्द अगम्मता, अगम्म अगम्मा जोती नूर सवाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, कलिजुग तेरां वेखण दर, लोकमात मार झात एका रूप समाया।

✻ पहली कत्तक २०१३ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✻

हरि सावण मेहरवान, आदि पुरख अपारा। जन भगतां देवे जिया दान, जोती शब्द हुलारा। काया मन्दिर इक्क मकान, वसे हरि निरँकारा। सन्त सुहेले कर पछान, दीपक दीप करे उज्यारा। आपे गोपी आपे काहन, काहना कृष्ना राधका कृष्न मुरारा। सर्ब जीआं प्रभ जाणी जाण, वेखे परखे परखणहारा। धुरदरगाही शब्द बिबाण, लोआं पुरीआं इक्क हुलारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुर गोबिन्दा वाली हिन्दा इक्क कराए साचा वणज वपारा। साचा वणज वपार, चरन प्रीतया। गुरमुखां देवे मात अधार, काया करे पतित पुनीतया। ऊँचां नीचां राज राजानां शाह

सुल्तानां भेव निवार, एका धाम दिखाए हस्त कीटयां। जोत सरूपी हरि भगवाना, शब्द सरूपी तीर कमाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे शब्द वर, एका एक एक अनडिठया। शब्द वर इक्क अनडिठ, दिस किसे ना आया। काया मन्दिर आपे सुत्ता दे कर पिठ्ठ, मनमुखी मुख छुपाया। हरि दाता वडा शाह सेठ, दिवस रैण लेखा रिहा लिखाया। जन भगतां रक्खे साया हेठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। मनमुख भन्ने कौड़े रेठ, कलिजुग वेला अन्तिम आया। वेखे खेल महीना जेठ, पंचम पंचां दए जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द गुर मेल हरि, मेला मेलणहार आप अख्वाया। गुर गोबिन्द साची नारी, हरि हरि साचा कन्ता। पुरख अबिनाशी करे प्यारी, देवे माण आदिन अन्ता। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, इक्क सुहाए रुत्त बसन्ता। सिँघ किशन प्रभ देवे तारी, निर्मल जोत कर उज्यारी, अमृत आत्म देवे सच खुमारी, दिवस रैण रैण दिवस एका दीपक जोत जगंता। दीपक जोत काया मन्दिर, आपे आप जगांयदा। वेख वखाणे डूँघी कन्दर, भाण्डा भरम भउ भनांयदा। बजर कपाटी तोड़े जन्दर, शब्द खण्डा हथ्थ उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख काया पावे वंडां, वेखे खेल विच ब्रह्मण्डां, जेरज अंडां वेख वखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन बख्शे चरन ध्यान, आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान, सदा सुहागी वड
१२३ वड भागी ना होए मात रंडा। दस्म द्वारी उच्चा टिल्ला, प्रभ साचे आप बणाया ए। गुरमुख विरले लोकमात कलिजुग मिला, १२३
०६ ०६
लक्ख चुरासी दर दर फिरे हलकाया ए। मन्दिर अन्दर बहि बहि कट्टदे शिला, प्रभ अबिनाशी किसे हथ्थ ना आया ए। मनमुख लभ्भदे घोड़ा नीला, नीले वाला नज़र ना आया ए। गुर संगत प्रभ मिलण दा अन्तिम वेला, कलिजुग वेला नेड़े आया ए। प्रगट होए जोत सरूपी छैल छबीला, सम्मत तेरां तेरी रुत्त सुहाया ए। गुर संगत बणाए इक्क कबीला, ऊँच नीच भेव मिटाया ए। गुरमुख अमृत आत्म शब्द निधान, प्रभ अबिनाशी देवणहार अख्वाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख तेरे वसया घर, घर आपणा आप सुहाया ए। गुरमुख तेरा साचा घर, प्रभ साचा धाम सुहांयदा। नौ द्वारे उप्पर चढ़, आपे वेख वखांयदा। शब्द सरूपी किला गढ़, दस्म द्वारी आप खुल्हांयदा। आपे बैठा अन्दर वड़, निर्मल जोती नूर जगांयदा। एका अक्खर रिहा पढ़, पंचम पंचां रुत्त सुहांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, साची सेजा आसण लांयदा। दिवस रैण अग्गे खड़, नेत्र लोचन नैण दरस दिखांयदा। अन्दरे अन्दर रिहा फड़, मनमुख कोई भेव ना पांयदा। आप फड़ाए आपणा लड़, दो जहान ना कोए छुडांयदा। अग्नी हवन ना जाए सड़, काल महांकाल नेड़ ना आंयदा। साचे पौड़े गुरमुख साचा गया चढ़, प्रभ आपणी गोद उठांयदा। शब्द सरूपी बांह फड़, लोआं पुरीआं पार करांयदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे शब्द वर, साचा पल्लू नाम फड़ांयदा। कवण काया कवण कूट, कवण चार दिवारी। कवण शब्द वज्जे चोट, पारब्रह्म ब्रह्म करे ख़बरदारी। कवण कढ्ढे माया ममता मोह झूठा खोट, बख्शे चरन प्यारी। नाम दान देवे दाता इक्क अतोट, भरया रहे तन भण्डारी। फिर फिर थक्के कोटन कोट, साध सन्त जीव जन्त गंवारी। लक्ख चुरासी आलृणिउँ डिग्गे बोट, ना कोई मारे शब्द उडारी। माया ममता अजे ना भरी पोट, कलिजुग पासा गया हारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे शब्द वर, आए दर सोहे बंक द्वारी। बंक द्वार ग़रीब निवाज, हरि साचा मेल मिलाया। भगत जनां हरि साजन साज, साजणहारा आप अख्वाया। दिवस रैण रक्खे लाज, अट्ठे पहर सेव कमाया। सीस पहनाए शब्द ताज, सोहँ सेहरा मुख लगाया। लक्ख चुरासी रच्चया काज, ओंकारा दिस ना आया। प्रगट होए देस माझ, निहकलंका नाउँ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा साजन रिहा साज, वासी पुरी घनक बार अनक जोत जगाया। जोती नूर अपार, हरि उपाया। शब्द सिँघासण कर त्यार, आप आपणा आसण लाया। पृथ्वी आकाश वेख विचार, लोआं पुरीआं बणत बणाया। रवि ससि लाए कार, कारज आपणे हथ्थ रखाया। हरि अगम्म अगम्मड़ा कार, अगम्म अगम्मा खेल रचाया। नाथ अनाथां हो सहार, नाथ त्रैलोकी आप अख्वाया। साची गाथा शब्द अधार, वाजा शब्दी रिहा वजाया। सगला साथा विच संसार, पुरख अबिनाशी हरि रघुराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटाया। जोती जामा हरि निरँकार, कलिजुग बणत बणाईआ। प्रगट होया विच संसार, साध सन्त रिहा जगाईआ। राज राजानां करे ख़बरदार, शाह सुल्तानां रिहा उठाईआ। शब्द खण्डा तेज़ कटार, नाम धारा आप बंधाईआ। सोहँ तोड़ा सीस दस्तार, जोती जोड़ा जोड़ जुड़ाईआ। ब्रह्मण्डां खोज अपर अपार, साचे घोड़े आसण लाईआ। जोत निरँजण कर आकार, लोकमात करे कुड़माईआ। कलिजुग कर्मां रिहा विचार, रैण अन्धेरी जगत छाईआ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, गुर गोबिन्दा संग रलाईआ। गुर गोबिन्दा चरन प्यार, तेग बहादर दए वड्याईआ। तेग बहादर शब्द उडार, प्रभ चरनी आसन लाईआ। प्रभ चरन सच द्वार, साची रासण वेख वखाईआ। ब्रह्मा वेता करे पुकार, अन्तिम वेले दए दुहाईआ। सतिजुग साचा रिहा पुकार, आप आपणी अक्ख खुल्हाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, लक्ख चुरासी दए दुहाईआ। कलिजुग रोवे धाहां मार, काला सूसा तन छुहाईआ। ईसा मूसा मुहम्मदी यार, प्रभ साचा रिहा हिलाईआ। ग्रन्थी पन्थी पावे सार, वेद पुराणा फोल फुलाईआ। आदिन अन्ता एका एकँकार, इक्क आकार कराईआ। शब्द खण्डा तेज कटार, गुर गोबिन्द ना कोई दिसे चार दिवार, वल छल सर्ब संसार, लक्ख चुरासी आप

१२४
०६

१२५ ०६

भुलाईआ। जल थल प्रभ साची धार, अमृत धारा आप वहाईआ। वेखे खेल अज्ज कल्ल, कल्ल अज्ज वेख वखाईआ। प्रभ का भाणा ना जाए टल, चारों कुन्ट दए दुहाईआ। जन भगतां मेटे दूई द्वैती सल्ल, जन आए चल सच सच्ची सरनाईआ। इक्क दुआरा ल्या मल्ल, प्रभ दरस दिखाए घड़ी घड़ी पल पल, आत्म अन्दर खेल अलाहीआ। इक्क वखाए निहचल धाम अटल, अगम्म अपारा शब्द गुर एका बैठा जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी तेरी अन्तिम वार आया करन जगत कुड़माईआ। लक्ख चुरासी वेखण आया, सर्ब जीआं प्रभ दाता। गुरमुख साचे नेत्र पेखण आया, पारब्रह्म ब्रह्म भए ज्ञाता। औलीए पीर शेख़ मेट मिटावण आया, मेट मिटाए ज़ात पाता। बिधनी लिखी रेख मनमुखां मस्तक वेखण आया, गुरमुखां देवे साची दाता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सिँघासण डेरा लाए, बैठा रहे इक्क इकांता। इक्क इकांत सर्ब गुणवन्ता, सर्बकला भरपूरीआ। जोत जगाए पूरन भगवन्ता, कलिजुग आसा मनसा पूरीआ। हरिजन नारी मेला साचे कन्ता, दिवस रैण हाज़र हज़ूरीआ। सतिजुग बणाए तेरी साची बणता, वेला नेड़ ना जाणे दूरीआ। लक्ख चुरासी होए भंगता, वरभण्डी कूड़ो कूड़ीआ। मिले वड्याई साची संगता, प्रभ दर्शन नेत्र नूरीआ। गुर संगतां हरि हरि तेरा मंगता, एका मनसा करनी पूरीआ। काया चोली आपे रंगता, चाढ़े रंग साचा गूढ़ीआ। आपे होए भुक्खा नंगता, गुरमुखां आपे बौहड़ीआ। नौ खण्ड पृथ्वी वेखे जंगता, गुर गोबिन्दा पावे घूरीआ। राज राजानां शाह सुल्तानां तोड़ तुड़ाए हउमे हँगता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जन भगत द्वारे इक्क वर, मस्तक बख्शे चरन धूढ़ीआ। उठ भगवान प्रभ देवे दान, आए चरन द्वारया। धूढ़ी मजन सच इशनान, मिले मेल कन्त भतारया। अमृत आत्म पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख निवारया। मिले मेल प्रभ साचे हाणी हाण, आपे बैठे आत्म घर दर सच्चे द्वारया।

हरि शब्द गुर मति है, भेखी भेख अपार। हरि शब्द गुर मति है, जुग जुग लए अवतार। हरि शब्द गुर रत्त है, जनणी जन आप करतार। हरि शब्द गुर मति है, देवणहार सर्ब संसार। हरि शब्द सच तत्त है, पंजां तत्तां वसे बाहर। हरि शब्द धीरज यति है, साचा रथ अपार। हरि शब्द राम घर दसरथ है, रामा राम अवतार। हरि शब्द लक्ख चुरासी पाए नत्थ है, इक्क वखाए बंक द्वार। हरि शब्द गुर मति सदा समरथ है, बख्शे बख्शणहार। हरि शब्द गुर एका वत्थ है, आदि अन्त एका एक ओंकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग लए मात अवतार। हरि

शब्द अकाल अकाल अकालया। हरि शब्द दीन दयाल, सर्ब करे प्रितपालया। हरि शब्द रखवाल, नेड़ ना आए जगत जंजालया। हरि शब्द इक्क उछाल, साचा ताल इक्क सुहा ल्या। हरि शब्द गुरमुख साचे लए भाल, आप आपणी गोद उठा ल्या। हरि शब्द दो जहानी मात दलाल, प्रभ साचे आप बणा ल्या। हरि शब्द आपे शाह आपे कंगाल, आपे आप धन्न सच्चा धन मालया। हरि शब्द अनमुल्लड़ा लाल, लाल गुलाला रंग चढ़ा ल्या। हरि शब्द वसे मुख काया खाल, विरले गुरमुख पा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, जुग जुग जोत जगाए गोपाल, भेखाधारी भेख वटा ल्या। भेखाधारी भेख वटाए, जुग जुग अवल्लड़ी कारीआ। सतिजुग त्रेता खेल रचाए, राम रामा हरि निरँकारीआ। द्वापर जूआ खेल वखाए, तोड़े गढ़ किला हँकारीआ। कलिजुग वेला अन्त ल्याए, फड़े शब्द तेज कटारीआ। गुर गोबिन्दा संग रलाए, हरि आपे पहरेदारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्बल नगरी खेल अपारीआ। संम्बल नगरी धाम सुहाया, जोती नूरी सवाईआ। गुर गोबिन्दा आप उठाया, वरन गोती दिस ना आईआ। सृष्ट सबाई निन्दा लाया, निन्दक निन्दया मुख रखाईआ। गुरमुखां आत्म चिन्दा दए मिटाया, दूई द्वैती जिंदा तुड़ाईआ। वाली हिन्दा आप उठाया, सम्मत तेरां तेरी रुत्त सुहाईआ। गुणी गहिंदा खेल रचाया, नानक तेरी धार बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटाईआ। जोती जामा हरि बलवाना, कलिजुग अन्तिम वारीआ। शब्द फड़े तीर कमाना, शब्द खण्डा दोहरी धारीआ। मेट मिटाए पंज शैताना, पंचां देवे नाम अधारीआ। जन भगतां देवे ब्रह्म ज्ञाना, आत्म ब्रह्म विचारीआ। एका बख्शे चरन ध्याना, दूई द्वैती करे ख्वारीआ। लक्ख चुरासी देवे ताअना, कोई ना पावे हरि हरि सारीआ। भगत सुहेला बन्ने गाना, हथ्थीं मैहन्दी नाम अपारीआ। प्रगट होए वाली दो जहाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्बल नगरी पैज संवारीआ। सम्बल नगर धाम अवल्ला, गुर गोबिन्द लिखाया ए। आपे वसया इक्क इकल्ला, दिस किसे ना आया ए। वेख वखाणे जल थला, डूँघी डल्ल रिहा तकाया ए। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गोबिन्द काया अन्दर रला, रल मिल साचा खेल रचाया ए। गोबिन्द काया साचा घर, प्रभ साचे आप पछाणया। आपे दित्ता साचा वर, आप चलाया आपणे भाणया। ना जन्मे ना जाए मर, जिस जन शब्द पछाणया। सदा खुल्ला रक्खे दर, साचा मेला हाणी हाणया। अमृत आत्म नुहाए साचे सर, लेखा चुक्के जेरज खाणीआ। धर्म राए ना देवे डर, ना कोई पढ़े दूसर बाणीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे शब्द साचा धुर फ़रमाणीआ। धुर फ़रमाणा लै के आया, गुर गोबिन्द सवाली। साचा राणा साचे तख्ते बहि के आया, दोहां हथ्थां रक्खे खाली। धर्म राए दर कहि के आया, पूर कराए भरे खाली। शब्द सुनेहड़ा लै के आया, कलिजुग

वेख अवल्लड़ी चाली। शब्द सिँघासण पुरख अबिनाशी जोती जोत सरूप हरि, लक्ख चुरासी रिहा जणाया। गुर गोबिन्दे करे पुकार, प्रभ साचे शब्द जणाईआ। दोवें भुजा रिहा पसार, साचा मेला बेपरवाहीआ। शब्द घोड़ा कर त्यार, सोलां कलीआं आसण पाईआ। चिट्टा जोड़ा नर निरँकार, आपे चरन छुहाईआ। सत्तवें घर खोल्हे बार, जोती नूर सवाईआ। छेवें वेखे छहिबर धार, शब्दी वज्जदी रहे वधाईआ। पंचम लेखा अपर अपार, पवण स्वासी नाल रलाईआ। चौथे घर सन्त दुलार, आपे रिहा जगाईआ। तीजे घर पावे सार, खाणी बाणी रचन रचाईआ। त्रैगुण माया कर आकार, प्रभ ब्रह्मे झोली पाईआ। शिव शंकर नाल कर त्यार, डोरी विष्नूं हथ्थ फड़ाईआ। आपे वसया सभ तों बाहर, आपे भाणे विच रखाईआ। करोड़ तेतीसा कर उज्यार, सुरपति राजा इन्द दए वड्याईआ। राग छतीसा विच संसार, नारद मुनी रसना गाईआ। माँ सुरसती इक्क प्यार, ब्रह्मा नारी गीत सुणाईआ। मंगी मंग इक्क दरबार, हरि सच सच्ची सरनाईआ। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, एका दात झोली पाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, सुनणेहार आप अख्वाईआ। छत्ती रागां पार किनार, कोए ना रसना गाईआ। राग अनादी वसे बाहर, शब्द अनाहद धुन वजाईआ। पंज तत्त ना पावे सार, पंचम चोटी शब्द चढ़ाईआ। शब्द गढ़ इक्क अपार, प्रभ आपणा आप सुहाईआ। बैठा वड़ रूप अपार, नेत्र नैण दिस्स ना आईआ। गुरमखां करे ख़बरदार, सुरत सवाणी रिहा जगाईआ। शब्द खण्डा हथ्थ कटार, तन गात्रे आप लटकाईआ। सोहँ रक्खी तिक्खी धार, नौ द्वारे बाहर रखाईआ। खिच्ची जाए वारो वार, गुप्त ज़ाहिर भेव ना राईआ। कोटन कोट मंगण दर द्वार, गुरमुख विरले आत्म झोली अग्गे डाहीआ। शब्द सिँघासण बैठ सच्ची सरकार, नाम भिच्छया साची पाईआ। दो जहानी उतरे पार, हरि सरन सच्ची सरनाईआ। शब्द कानी मारे मार, पंज शैतानी नेड़ ना आईआ। वड विद्वानी गए हार, पढ़ पढ़ थक्की जगत लुकाईआ। खाणी बाणी करे विचार, मदीने मक्के पए दुहाईआ। अंजील कुरानां आई हार, ना कोई देवे मात सहार, मुहम्मदी यार रहे कुरलाईआ। ईसा मूसा करे विचार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, काला टिक्का मस्तक छाहीआ। लाड़ी मौत करे श्रृंगार, लक्ख चुरासी वेखे साची नार, वेले अन्तिम लए प्रनाईआ। राए धर्म खोल्हे बन्द किवाड़, सम्मत सोलां लेखा मिटे सतारां हाढ़, प्रभ आपणी रचन रचाईआ। करोड़ तेतीसा रिहा पुकार, छोटा बाला करे ख़बरदार, साढे तिन्न हथ्थ कलिजुग सीआं मात रखाईआ। शिव शंकर रोवे धाहां मार, जगत जगदीशा पावे सार, ना होए कोई सहाईआ। ब्रह्मा उठे नेत्र खोल्हे रोवे ज़ारो ज़ार, प्रभ अबिनाशी देवे इक्क हुलार, वेला अन्तिम अन्त कराईआ। तेग बहादर तेरी धार, कलिजुग वरती विच संसार, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाईआ। गुर गोबिन्दा बिन्द अपार, सागर सिन्धा शब्द अधार, हरि जोती मेल मिलाईआ।

नौ दर मेटे सगली चिन्द, आदि अन्त हरि बख्शिंद, बख्शणहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। हरि हथ्थ वड्याई भेव ना राया। सृष्ट सबाई रिहा मथ, दिस किसे ना आया। राज राजानां पाए नत्थ, दर द्वारे फेरा पाया। शब्द जणाई अकथना अकथ, कथनी कथ ना सके ना रसना किसे गाया। सोहँ चलाए साचा रथ, रथ रथवाही आप अख्वाया। सतिजुग तेरी साची गाथ, चार वरनां इक्क जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सृष्ट सबाई रिहा जगाया। सृष्ट सबाई आप जगाए, जीव जन्त हुलारा। प्रभ अबिनाशी दया कमाए, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। सतिजुग साचा दर खुल्हाए, चार वरन बहाए इक्क घर बाहरा। राउ रंक ऊँच नीच कोई रहिण ना पाए, सम्मत सम्मती मिटे पसारा। सूचो सूच इक्क अख्वाए, एका एक एकँकारा। कूचो कूच सृष्ट सबाई कूच कराए, चारों कुन्ट धुँदूकारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शाह ईरान संग अफगान देवे नाम अधारा।

१२८
०६

✻ पहली कत्तक २०१३ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल तों ईरान दे बादशाह नूं शब्द लिख के भेज्जया ✻

शाह ईरान जगत दुरानी, हरि जोती नूर सवाया। एका देवे शब्द निशानी, तूरत तूर नाम रखाया। नाल रलाए अल्ला राणी, अल्ला हू नाअरा लाया। आब हयात ना मिले पाणी, बे बेआबा रिहा तरसाया। मक्का काअबा होए वैरानी, दो दो आबा दिस ना आया। हक्क ज़नाबा मेट मिटाए जीव शैतानी, पुन्न सवाब ना कोए जणाया। चरन घोड़े दे रकाबा, आपणा रूप वटाया। शब्द शस्त्र बस्त्र तन मुख नकाबा, अगैब अगैबी रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा लेखा रिहा लिखाया। शाह ईरान अन्त वैरान, होणी मात जुदाईआ। सम्मत अठारां इक्क तुफान, उच्चे टिल्ले रिहा वहाईआ। महिबान बीदो बी खैरीया अल्ला, अलाही नूर दिस ना आईआ। संग मुहम्मद चार यार इक्क इकल्ला आपे वेखे जल थला, उजाड़ पहाड़ जंगल जूह दए दुहाईआ। अहिमद मुहमन्द ख़बरदार, ऐली शाह सुणे पुकार, नबी रसूलां आई हार, पीर मुसायक गौंस शेख़ कुतब अन्तिम होए जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुनेहड़ा रिहा घलाईआ। अवल्ल औलीआ हक्क बहक्क, हकीकत जानी जानया। दीन मुहम्मदी रिहा तक्क, पीर पैगम्बर इक्क निशानया। दिस ना आए मूंह हथ्थ नक्क, काला सूसा तन पहनानया। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे अहिनल हक्क, कलिजुग अन्तिम हक्क हक्क करे कुरबानया। अहिनल हक्क शाह रफीक, तौफीक खुदी खुदाई ना। कलिजुग बूटा

गया पक्क, फल साचा कोए खवाई ना। एका शब्द नकेल पाए नक्क, कोई सके मात तुड़ाई ना। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेखे खेल हर घट थाँईं, लुकया रहिण कोई पाई ना। वाहिद खुदा बेऐब परवरदिगार निहकामी। होए जुदा कराए सदा, खेले खेल जगत दुरानी। जगाए नाम सदा, करना हक्क अदा, चरन सरन सच्ची कुरबानी। आबहयात मदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवण आए दया कमाए धुरदरगाही इक्क निशानी। इक्क निशाना इक्क फ़रमाणा, एका नाम हज़ूरी दा। एका तीर इक्क कमाना, एका नूर कोहतूरी दा। एका नाम इक्क निधाना, एका प्याला सबर सबूरी दा। एका शब्द एका गाना, मिले मेल श्री भगवाना, तुट्टे गढ़ हँकार ग़रूरी दा। ना कोई राज राजाना, ना कोई शाह जगत सुल्तानां, जूठा झूठा जीव जहानां, अन्त लहिणा देणा कूड़ो कूड़ी दा। हक्क खुदाए जिस पछाना, रहिमत रहिमान आप करे जिस होए मेहरवाना, लेखा चुक्के नेड़ दूरी दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल दर दर घर घर मूर्ख चतर सुघड़ मूढ़ी दा।

✻ १४ कत्तक २०१३ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल तों ईरान विच शब्द भेज्जया ✻

सहिंसा गढ़ हँकार जगत डन्नया। गुरमुख विरला वेखे उप्पर चढ़, कर प्यार जिस जन आत्म मंनया। नौ द्वारे झूठ पसार, माया ममता लोभ मोह हँकार, सच द्वारे धर्म जैकार, एका धुन आत्मक धुनी सच्ची धुन्कार, गुरमुख साचे सुण, एका दूजा भउ कटन्तया। प्रभ अबिनाशी जुग जुग सन्त सुहेले चुण चुण, कलि आपणा बेड़ा बन्नया। खेले खेल सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण, काया डूँघी डल्लया। लक्ख चुरासी छाण पुण पुण छाण, गुरमुख साचे सन्त जनां शब्द सीस सेहरा साचा बन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर संगत पुच्छे सच घर दर द्वार आए चढ़ाए साचा चन्नया। साचे शब्द हरि जणाईआ। गुरमुख आस रखाईआ। दे मति मात समझाया, धरत धवल आकाश सुहाईआ। सतिगुर साचा संग रखाया, वास निवास थाउँ थाँईंआ। लेखा आपणे हथ्थ रखाया, लिखणहार आप अख्वाईआ। सम्मत सोलां वेख वखाया, प्रगट होए दो जहानां शहनशाहीआ। सिँघ सावण शब्द जोत मिलाया, जोती मेल मिलाईआ। जोती पूत सपूता जाया, शब्दी नाउँ रखाईआ। शब्द नगारा काया तूता इक्क वजाया, सावण नाउँ रखाईआ। सावण जैमल विच समाया, रूप अनूप वटाईआ। पुरख अबिनाशी खेल रचाया, शाहो भूप आप अख्वाईआ। अन्ध कूप कलि डेरा लाया, चारों कुन्ट बणत बणाईआ। शब्द घेरा रिहा पाया, गुर चेला एका धाम मेल मिलाईआ। सञ्झ सवेरा इक्क कराया, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। सम्मत तेरां

१२६
०६

लेख लिखाया, तेरां तेरी धीर धराईआ। सम्मत सोलां लए उपजाया, आप आपणा रूप वटाईआ। साँवल सुन्दर हरि रघुराया, सावण संग रलाईआ। सावण मोहणी रूप वटाया, शब्दी बणत बणाईआ। शब्द सरूपी दहि दिशा समाया, आपणा हिस्सा आप वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुनेहड़ा दित्ता वर, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सतिगुर सावण दर द्वार, दिवस रैण सलाह। पुरख अबिनाशी किरपा धार, बणे बणाए जगत मलाह, वेख वखाए विच संसार, सन्त सुहेले साचा राह। कन्ता पुरखा साची नार, आप बहाए साचे थाँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सरूपी दित्ता वर, सम्मत सोलां पकड़े बांह। सम्मत सोलां सोलां धार, कलिजुग भेख वटंदड़ा। वेखे खेले आर पार ब्यास, आस हद्द रखंदड़ा। चरन सरन दासी दास, साध सन्त हरि बख्शंदड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निज घर आत्म रक्खे वास, पारब्रह्म पुरख अबिनाश आप फड़ाया आपणा पल्लड़ा। आपणा पलाणा नाम पलड़ा, नाम साची डोरी, गुरमुख हथ्थ फड़ाईआ। कलिजुग रैण अन्धेर घोरी, दिस किसे ना आईआ। जीवां जन्तां करे चोरी, साचा हिस्सा इक्क रखाईआ। आत्म मेला साची जोड़ी, शब्द घोड़ी आप चढ़ाईआ। पुरख अबिनाशी आपे बौहड़ी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर साचे गुरमुख करे मात कुड़माईआ। साचा कन्त सुभागी नारी, हरि हरि साचा पाया। चरन कँवल कँवल चरन इक्क प्यारी, अनहद राग साचा गाया। दिवस रैण रैण दिवस नेत्र लोचन दरस अपारी, गुर दरसी दरस दिखाया। जोत निरँजण कर उज्यारी, अमृत जाम शब्द खुमारी, अंजन नेत्र साचा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द देवे भगत वर, वेले अन्तिम पावे सारा। इक्क इकीसा हरि जगदीसा, आपणे रंग समांयदा। बीस बीसा छत्र झुलाए साचे सीसा, नौ खण्ड पृथ्वी चरन लगांयदा। उन्नी उनीसा ईसा मूसा खाली खीसा, अल्ला राणी संग मुहम्मद तोड़ निभांयदा। सम्मत अठारां वहिण धारी धारा, आप वहांयदा। सम्मत सतारां खेल अपारा, तट्ट ब्यासा पार किनारा आप रखांयदा। सम्मत सोलां बदले काया चोला, हरि चोजी चोज करांयदा। सम्मत पन्दरां वेख वखाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दरां, उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फुलांयदा। सम्मत चौदां साचा हट्ट गुरमुखां खुल्हाया काया मट्ट, रत्न अमोलक नाम हीरा कौस्तक मणीआ मस्तक टिक्का सोहँ चीरा, जगत जगदीशा साचे सीस बंन्हांयदा। सम्मत तेरां कर विचारा, राज राजानां शाह सुल्तानां पावे सारा, वाली हिन्द पंच निशाना पंचम संग रखांयदा। सम्मत बारां गुरमुखां बणया लेख लिखारा, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। सम्मत ग्यारां कलिजुग तेरी काली धारा, साढे तिन्न हथ्थ सीआं जगत रखाई साची नीआं, साचा लेखा आप लिखांयदा। सम्मत दस दस दुआरा, शब्द महल्ल हरि उसारा, जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा विच टिकांयदा। इक्क ग्यारां इक्क है, आदि पुरख अकाल। दो बारां साची सिक्क है, गुरमुखां हाढ़ सतारां दीन दयाल। सम्मत तेरां लेखा रिहा लिख है, वेख वखाणे वाली हिन्द गऊ ग़रीब शाह कंगाल। सम्मत चौदां गुरमुख बणाए साची बिन्द, हरि शब्द देवे धुर दलाल। सम्मत पन्दरां लक्ख चुरासी भौंदी बन्दरा, हरि नाउँ हथ्थ ना आए साचा लाल। सम्मत सोलां लाड़ी मौत चुक्के डोला, चाढ़े रंग इक्क गुलाल। सम्मत सतारां ना कोई दीसे मीत मुरारा, चारों कुन्ट हाहाकारा, सर अमृत थेह दए वखाल। सम्मत अठारां कोई ना देवे किसे सहारा, कलिजुग पाए जगत रुढ़ाए आपणे ताल। सम्मत उन्नीं सच पुकार हरि दातार इक्क मुहम्मद मात सुणी, उम्मत उम्मती होए ख्वार। बीस बीसा वड गुण गुणी, शब्द ताज सीस दस्तार। इक्क इकीसा दीपां लोआं खंडां ब्रह्मण्डां वरभण्डी देवे एका धुनी, सोहँ शब्द जै जैकार। ना कोई दीसे पंडत पांधा मुस्लिम सुन्नी, हिन्दू सिख ना कोई विचार। सभ दी चोटी जाए मुन्नी, शब्द सीस जगदीस देवे साची चुन्नी, एका एक कराए सर्ब संसार। मति मन बुध प्रभ छाणी पुणी, सुरत सवाणी करे ख़बरदार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार। इक्क इकीस रुत्त सुहाए, होए रुत्त बसन्ता। गुरमुख सन्त जगाए, एका मेला नारी कन्ता। महिंमा अग्नत आप जणाए, मेट मिटाए देव दंता। लक्ख चुरासी बणत बणाए, साजन साज आप अख्वन्ता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचा देवे वर, सोहँ नाम सच्चा धन्नवन्ता। सतिजुग साची दात, प्रभ आपणी झोली पाईआ। कलिजुग मिटे अन्धेरी रात, एका होली रिहा खिलाईआ। दूर दुराडा आपे वेखे मार झात, कलिजुग लहिणा देणा रिहा मूल चुकाईआ। गुरमुखां अमृत आत्म देवे बूंद स्वांत, जगत तृष्ना अग्न बुझाईआ। साचा मेला कमलापात, पति पतिवन्ता पति रखाईआ। गुर गोबिन्दा सगला साथ, हरि रघुनाथ आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तख्त अकाल अकाल तख्त जोत बिराजे शब्द सिँघासण डेरा लाईआ। शब्द सिँघासण हरि सुल्ताना, जोती रूप समाईआ। प्रगट होए श्री भगवाना, एका डंक नाउँ वजाईआ। आप आपणा पहरे बाणा, राउ रंकां रिहा उठाईआ। शब्द सरूपी तीर कमाना, गोबिन्दा रसन चलाईआ। आपे वसया काया मन्दिर सच मकाना, दिस किसे ना आईआ। लोआं पुरीआं वेखे मार ध्याना, आप आपणी निगाह उठाईआ। लेखा चुक्के ज़िमी अस्माना, लोआं पुरीआं रिहा हिलाईआ। ब्रह्मा शिव देवत सुर होए हैराना, कवण कूटे प्रभ अबिनाशी जोत जगाईआ। गुरमुखां बन्ने हथ्थीं गाना, गुणवन्ता हरि गुण निधाना, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दा लिख्या लेख, जोती जामा धर धर भेख, आपे नर आपे नरेश, आपणा रूप वटाईआ। गुर गोबिन्दा

बणे लिखारी, प्रभ साचा लेख लिखांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, हरि जोती जामा पांयदा। आप निभाए साची यारी, लग्गी तोड़ निभांयदा। मंग्गया वर बंक द्वारी, कन्त भतारी मेल मिलांयदा। जुग जुग पैज रिहा संवारी, दमन दुष्ट नाउँ रखांयदा। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारी, सम्बल नगरी धाम सुहांयदा। ना कोई जाणे जीव जन्त गंवारी, सुरती सुरत सर्ब भुलांयदा। मानस देही बाज़ी हारी, लक्ख चुरासी भरम भुलांयदा। गुरमुखां मेला मीत मुरारी, साचा वेला आप सुहांयदा। सम्मत तेरां जोत निरँकारी, गुर गोबिन्दा तन श्रृंगारी, बस्त्र पीला तन छुहांयदा। वाली हिन्द करे ख़बरदारी। अन्तिम छड्डणी महल्ल अटारी, सुंञ मसाणा जगत विखांयदा। एका बणना चरन वपारी, देवे शब्द उडारी, सोहँ साचा लेख लिखांयदा। कवण राज कवण जोग कवण सोहे जगत द्वारी, कवण ताज सीस बंधांयदा। कवण भोग धुर संजोग, आत्म वेखे साची चोग, कवण नाभी मुख चुआंयदा। जगत तृष्ना झूठा रोग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भरम भुलेखे आप भुलांयदा। भरम भुलेखा हरि रखाया, कलिजुग वर घर मंग्गया। प्रभ अबिनाशी दया कमाया, काया चोली काया रंगया। इक्क मुहम्मद संग रलाया, जूठ झूठ वजाए जगत मृदंगया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौ द्वारे वेख घर, साध सन्त वेखे नम्गया।

१३२
०६

✻ पहली कत्तक २०१३ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल सन्त कृपाल सिँघ नूं दिल्ली शब्द भेज्जया गया ✻

कृपाल किरत ना जगत कमाई, मनमति होई कुड़माईआ। शब्द सुरत ना मेल मिलाई, पंजां तत्तां विच समाईआ। अकाल मूर्त ना नज़री आई, रत्ती रत्त ना पाईआ। नाद तूरत ना किसे वजाई, जोत निरँजण ललाट ना करे रुशनाईआ। भेख पखण्डा कूड़ो कूड़त, नार वेसवा इक्क हंढाईआ। जगत नादान मूर्ख मूढ़त, लोक लज्जया मात तजाईआ। सावण रंग ना काया चढ़या गूढ़त, रसना काग वांग कुरलाईआ। गुर दर ना मिली साची धूढ़त, स्वांगी बैठा स्वांग वरताईआ। धर्म राए अन्त पावे जूड़त, सतिगुर सावण ना होए तेरा सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, वेखण आया तेरा घर, बन्द दरवाज़ा ना सके कोई खुल्ह्राईआ। जीव जन्त जगत जुग, कलिजुग ठगोरी पाया। उप्पर ना चढ़या शाह रग, काया कवरी डेरा लाया। मिल्या मेल ना सूरे सरबग्ग, अलपग जीव अख्वाया। जूठ झूठ अन्धेरी रही वग, सन्त कृपाल अग्गे नाल रुढ़ाया। माया ममता अग्नी रही दग, लाल अँगयार माया ममता मोह वधाया। मानस देही होई कग्ग, हँस सरोवर ना किसे नुहाया। तन तुटा शब्द तग, रसना मूल मन्त्र शब्द गंवाया। पंज सावण कौल इकरार जग, सतिगुर सावण जामन विच रखाया।

१३३
०६

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लेखा धुर दरगाही रिहा लिखाया। कृपाल आत्म अन्ध, जगत अन्धेर छाया। नौ द्वार ना मुक्का अजे पन्ध, दिवस रैण रहे हलकाया। जूठ झूठ मुख रसना गन्द, सतिगुर साचा मात भुलाया। कौल इकरार बत्ती दन्द, अन्तिम गया मुख छुपाया। रसन ना गाया परमानंद, निज़ानंद ना वेख वखाया। माया ममता झूठी कंध, कोई ना डेरा ढाहया । शब्द ना चढ़या साचा चन्द, अज्ञान अन्धेर दए मिटाया। कूड़ कुड़यारा बन्द बन्द, साढे तिन्न करोड़ दए दुहाया। अन्तिम होणा खण्ड खण्ड, राए धर्म दए सज़ाया। पहली पाई मात वंड, पंज सावण गुर सावण विच विच्चोला आप रखाया। पल्ले ना दिसी नाम गंढु, नार दुहागण होई रंड, दर दवारयो नठ्ठा दे कर कंड, दूर दुराडा डेरा लाया। वेखणहारा हरि ब्रह्मण्ड, उत्भज सेत्ज जेरज अंड, चार कुन्ट दहि दिशा मात पाताल आकाश लोआं पुरीआं वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख वखाणे जगत दर, भेव अभेदा अछल अछेदा आत्म पड़दा रिहा लाहया। कवण कूड़ रसना मुख, कवण जिह्वा गाईआ। कवण कूड़ देवे सुख, साची सेवा सेवक रहे कमाईआ। कवण कूड़ मेटे भुक्ख, साची झोली मात भराईआ। कवण कूड़ वासा करे उलटा रुख, गर्भवास मिले सज़ाईआ। कवण कूड़ वखाए मात कुक्ख, दस दस मास भरम भुलाईआ। कवण कूड़ छुपाए मुख, नस्स नस्स पिठ्ठ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे गया तुठ्ठ, तेरा लेख सच सुच्च सच नाल लिखाईआ।

गावत गावत गा रहे, गुणवन्त गुण निधानी। पावत पावत पा रहे, हरि शब्द धुर निशानी। सुणावत सुणावत सुणा रहे, गुरमुख साचे आत्म ब्रह्म ज्ञानी। नुहावत नुहावत साचा नहावण नुहा रहे, चरन धूढ़ सच्चा इशनानी। धावत धावत घर साचे धा रहे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दान नाम सच्चा दानी। सोवत सोवत सो रहे, मूर्ख मूढ़ नादान। रोवत रोवत रो रहे, मनमुख जीव अञ्जाण। गुरसिख गुरमुख दुरमति मैल धोवत धोवत धो रहे, सरन सरनाई साची जाण। मनमुख जूठा झूठा बीज बोवत बोवत बो रहे, फल लग्गे ना काया डाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे नाम जिया साचा दान। नाम दान सर्ब गुणवन्त, देवणहार निरँकार। मिले वड्याई जीव जन्त, साचा मेला दो जहान। आत्म सेजा नारी कन्त, सन्त भगवन्त पुरख सुजान। आप बणाए साची बणत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दरस महान। रसना गाया हरि गुण, गुण रसना गहर गम्भीर। सर्ब पुकार प्रभ रिहा सुण, अन्दर मन्दिर चोटी चढ़ अखीर। आपे करे छाण पुण, सोहँ मुखी हथ्थ फड़ाए जगत निराला तीर। आपे

जाणे गुण अवगुण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे शब्द वर, दरस दिखाए दया कमाए बजर कपाटी पड़दा चीर। चार कुन्ट चार दिवार। दहि दिशा वेख वखाणया, कलिजुग तेरा कूड़ पसार। कूड़ कुड़यारा जाणया, जूठ झूठ जगत वणजार। साचा वणज ना कोई पछाणया। लक्ख चुरासी खाणी बाणी रोवे धाहां मार। गुरमुख विरले आत्म सेजा एका माणया, मिल्या मेल कन्त भतार। धुरदरगाही देवे इक्क निशानया, सोहँ शब्द तन श्रृंगार। अमृत आत्म ठंडा पाणीआ, सर सरोवर इक्क अपार। पंचम नाद अनहद बाणीआ, बोध अगाध साची धार। लेखे लाए जेरज खाणीआं, हरिजन साचे सन्त उभार। नाम देवे दाणा पाणीआ, सृष्ट सबाई सांझा यार। लेखा चुक्के राजे राणीआ, ना कोई सोहे बंक द्वार। कलिजुग झूठी तणी ताणीआ, मनमुख डोबे अधविचकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बणया शब्द लिखार। शब्द लिखारी साचा लेखा, कलिजुग अन्त वखांयदा। जोत निरँकारी भरम भुलेखा, कलिजुग माया पांयदा। सृष्ट सबाई वेखी वेखा, पंचम रंग रंगांयदा। गुरमुख विरले नेत्र पेखा, साचा संग निभांयदा। आपे जाणे धारी केसा, गुर गोबिन्दा नाउँ रखांयदा। वेख वखाणे ब्रह्मा शिव विष्न गणेशा, विष्न रूप वटांयदा। शब्द सिँघासण नर नरेशा, जोती आसण लांयदा। वक्त चुकाए जगत गणेशा, छत्र कोए ना सीस झुलांयदा। गुरमुख साचे विच प्रवेशा, राग छतीसा ना कोए अलांयदा। आपे होए दस दस्मेशा, दन्द बतीसा ना कोए गांयदा। भेख अवल्लड़ा अवल्लड़ा भेसा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोग जुगत आपणे हथ्थ रखांयदा। दस दस्मेस जोत उज्यारा, हरि शब्द सच्ची कुड़माईआ। दिवस रैण इक्क जैकारा, सोहँ ढोला गाईआ। एका एक एकँकारा, चरन गोला रिहा बणाईआ। वरभण्डी होवे धुँदूकारा, शब्द गोला रिहा चलाईआ। भेख पखण्डा विच संसारा, झूठा चोला अन्त मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया विच समाईआ। गोबिन्द काया साचा गढ़, हरि साचा आप सुहांयदा। साचे मन्दिर आपे चढ़, शब्द सिँघासण डेरा लांयदा। लक्ख चुरासी नाल रिहा लड़, पुरीआं लोआं आप हिलांयदा। राज राजाना शाह सुल्ताना कोई ना सके फड़, दो जहानी खेल खिलांयदा। लक्ख चुरासी उखेड़े जड़, कलिजुग वेला अन्त करांयदा। ना कोई गोर ना कोई मड़, बन्दा ख़ाकी ख़ाक मिलांयदा। वहिंदे वहिण वहाए अठारां हड़, धीरज धीर ना कोई धरांयदा। हरिजन फड़ाए आपणा लड़, अमृत आत्म सीर प्यांअदा। एका अक्खर जाणा पढ़, सोहँ सुरती शब्दी मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया विच समांयदा। गोबिन्द काया रंग अपार, साची चोली आप चढ़न्नया। जोत सरूपी कर आकार, कलिजुग बेड़ा अन्तिम बन्नया। शब्द खण्डा तेज कटार, आप सजाए साचे तनया। रसन चलाए वारो वार, लक्ख चुरासी देवे डन्नया।

आपे घड़े आपे भन्ने भन्नणहार, आपणा भाणा आपे मन्नया। सूरज चन्न चन्न होए अंध्यार, रवि ससि ना दीसे कोई चन्नया। तारा मण्डल धुँदूकार, धूआँधार आत्म अन्नयां। ब्रह्मा रोवे धाहां मार, साचा राग ना सुणया कन्नया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, दर द्वारे जाए डन्नया। गुरमुख साचा हो त्यार, सतिजुग साचा बेड़ा बन्नया। सतिजुग मंगे दर द्वार, प्रभ अबिनाशी किरपा धार, सन्त सुहेले लए उभार, एका राग सुणाए कन्नया। शब्द कराए वणज वपार, निहकलंक लए अवतार, सोहँ नाउँ अपर अपार, लोक ब्रह्म ना लाए संन्निआ। ब्रह्मे आत्म ब्रह्म जणाई, वेला अन्तिम आया। आप कराए आपणा कर्म, निहकरमी हरि रघुराया। जुग जुग जामा साचा धर, धर्मी मार्ग इक्क रखाया। आपे देवे लक्ख चुरासी जन्म, अन्तिम आपे लए मिटाया। आप भुलाए भरमी भरम, आपे ब्रह्म ज्ञान जणाया। आपे वरनी वरना वरन, आपे वरन गोत मिटाया। आपे सरनी साचा सरन, आपे मुखड़ा आप भवाया। आपे हरना फरना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गोबिन्द काया डेरा लाया। गोबिन्द काया साचा डेरा, साचे घर वसेरा ए। पुरख अबिनाशी नेरन नेरा, निज आत्म करे वसेरा ए। लहिणा देणा चुकाए अन्तिम मेरा तेरा, तेरा मेरा भेव मिटाया ए। आप कराए हेरा फेरा, हेरी फेरी विच ना आया ए। सिँघ शेर हरि शेर दलेरा, दर दुआरा इक्क खुल्हाया ए। कलिजुग करे अन्त निबेड़ा, काली रेख रिहा मिटाया ए। लक्ख चुरासी देवे गेड़ा, एका धक्का नाम लगाया ए। जूठा झूठा चुक्के झेड़ा, काया खेड़ा दिस ना आया ए। धरत मात तेरा खुल्ल्हा वेहड़ा, अन्तिम अन्त वखाया ए। जन भगतां बन्न्हे मात बेड़ा, साचा चप्पू नाम लगाया ए। दन्द बतीसा भेड़ भेड़ा, साधां सन्तां जीवां जन्तां प्रभ अबिनाशी दिस ना आया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द काया विच समाया ए। गोबिन्द काया साची हाटी, प्रभ साची वस्त टिकाईआ। किसे हथ्थ ना आवे तीर्थ ताटी, गुर मन्दिर अन्दर दए दुहाईआ। उच्चा पर्बत वड्डी सिला बजर कपाटी पाटी, जोत ललाटी डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका वेखी काया घाटी, आत्म सेजा शब्द सिँघासण सोहँ फूलन सेज विछाईआ। सोहँ फूल सच फुलवाड़ी, प्रभ आपणी सेज विछांयदा। गुरमुखां मेल सतारां हाढ़ी, शब्द सुनेहड़ा इक्क घलांयदा। आपे होए पिच्छे अगाड़ी, चारों कुन्ट वखांयदा। रक्खे लाज चरन छुहाए दाढ़ी, मौत लाड़ी दर दुरकांयदा। माया ममता देवे साड़ी, नाम दात झोली पांयदा। होए सहाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, दिवस रैण सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया वेख घर, आप आपणे विच टिकांयदा। गोबिन्द काया साचा घर, प्रभ साचे बणत बणाईआ। चारों कुन्ट एका दर, एका धार बंधाईआ। आपे आप ल्या उसार, बाडी

कोई मूल ना लाईआ। आपे अन्दर रिहा वड़, नाड़ी हाडी दिस ना आईआ। आपे आपणी लाए जड़, दूसर बीज ना कोई पाईआ। शब्द द्वारे अग्गे खड़, कलिजुग अन्तिम रीझ कराईआ। चिट्टे अस्व आपे चढ़, नीले वाग गुंदाईआ। गुर गोबिन्दा ल्या फड़, कल्गी तोड़ा सीस सजाईआ। कलिजुग अन्तिम घाड़न घड़, प्रभ आपणी बणत बणाईआ। जोत अगम्मी रिहा लड़, शब्द अगम्मी धाड़ चढ़ाईआ। साधां सन्तां लए फड़, सम्मत सोलां नेड़े आईआ। गुरमुख साचे सन्त सुहेले आप कराए आपणे मेले, वेख वखाणे गुर गुर चेले, दस्म द्वारी उप्पर चढ़ आपणा भेव छुपाईआ। मनमुख माया ममता रहे सड़, हउमे हँगता सीस धड़, जगत जंजाला हथ्थ कटार फड़ाईआ। गुरमुखां फड़ाए आपणा लड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया विच समाईआ। गोबिन्द जाति विच संसार, शब्द वरन रखाया ए। मिल्या मेल कमलापाती, चरन कँवल ध्यान लगाया ए। आपे दीवा आपे बाती, आपे जोत जगाया ए। आपे अमृत बूंद स्वांती, आपे मुख चुआया ए। आपे खोल्ले बन्द ताकी, आपे पड़दा पाया ए। आपे चढ़या शब्द घोड़े साचे राकी, लोआं पुरीआं रिहा रुढ़ाया ए। ना कोई जाणे बन्दा ख़ाकी, माया ममता लग्गी हाकी डाकी, नौ अठारां करे हलकाया ए। जन भगतां मिल्या साचा साकी, लहिणा देणा मूल चुकाए अन्तिम बाकी, अमृत आत्म जाम प्याया ए। इक्क सुणाए भविख्त वाकी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द तेरा काया रूप, प्रभ आपणी सेवा लाया ए। गोबिन्द काया साचा इष्ट, हरि चरन अपारा। आपे खोल्लणहारा दृष्ट, गुर चेला इक्क दुआरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल अगम्म अपारा। गोबिन्द चढ़या साचे घाट, प्रभ साचा आप चढ़ांयदा। जोती नूर इक्क लिलाट, तन साचे हट्ट विकांयदा। शब्द पंघूड़ा साची खाट, दस्म द्वारी अन्दर डांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सुन अगम्मो पार वसांयदा। सुन अगम्मी पीली धार, पीला रंग रंगांयदा। सुरत शब्द ना पावे सार, सुरती सुरत गंवांयदा। रूप रंग ना कोए करतार, करता पुरख करनहार अख्वांयदा। आपे जोती आपे धार, आपे शब्द सुणनेहार, आप आपणा राग अल्लांयदा। आपे आपणे घर वसणहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ओंकारा खेल अपारा कंचन रूप समांयदा। कंचन तेरा साचा रंग, हरि शब्दी जड़त जड़ाईआ। साचा दर ल्या मंग, वज्जे धुन सच्ची शनवाईआ। ना कोई अमृत धारा वहे गंग, दूसर वस्त दिस ना आईआ। ना कोई ढोल वज्जे मृदंग, बंसरी बीन ना कोई वजाईआ। सुर ताल ना कोई बेहंग, बार बार ना कोई गाईआ। ना कोई जाणे दूर दुराडा पन्ध, दस्म द्वारी अद्धविचकार टिकाईआ। एका नानक गया लँघ, प्रभ आपे रिहा बुलाईआ। भगत कबीरा मंगी मंग, प्रभ चरन सीस निवाईआ। हरि अन्दर बैठा शब्द रंगीले सच पलँघ, जोती नूर सवाईआ। जोती जोत

१३७
०६

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया तेरी धार वेखण आया विच संसार, दीपक जोती सच जगाईआ। कंचन धारी कंचना रूप, हरि आपणा आप वटांयदा। शब्द सुहेला शाहो भूप, सति सरूप आप अख्वांयदा। ना कोई दिशा ना कोई कूट, ना कोई हिस्सा वंड वंडांयदा। शब्द हुलारा रिहा झूट, आर पार ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया तेरी धार, आप चलाए विच संसार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, आप आपणा कर्म कमांयदा। साचा कर्म हरि कमाया, जोती नूर उपन्नया। दर घर साचे नूर सवाया, ना कोई सूरज ना कोई चन्नया। तारा मण्डल दिस ना आया, साध सन्त ना दीसे कोई द्वारे, ना बेड़ा किसे बन्न्या। एका एक एकँकारे शब्द सरूपी चार द्वारे, वसया महल्ल अटल उच्च चुबारे, ना कोई छप्परी ना कोई छन्नया। जुग जुग आपणा जामा धारे, जोती खेल अपर अपारे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, गोबिन्द तेरी पैज संवारे। गोबिन्द पति रखावण आया, हरि जोद्धा सूरबीर बलकारी। एका तत्त मात समझावण आया, चार वरनां इक्क द्वारी। सोहँ साचा रथ चलावण आया, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। सर्बकला समरथ अख्वावण आया, निहकलंक नरायण नर अवतारी। साढे तिन्न हथ्थ तेरी सीआं धरत मात तेरी सत्थ विछावण आया, लक्ख चुरासी सोए पैर पसारी। गुरमुख साचे सन्त सुहेले शब्द अकथ सुणावण आया, गोबिन्द रसना नाउँ उचारी। मनमुख जीवां मथ वखाया, मारे तेज शब्द कटारी। गुरमुखां सिर हथ्थ टिकाया, आए चरन द्वारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोहँ साची गाथ चलाया, सतिजुग तेरी पैज संवारी। हरिसंगत हरि द्वार, मिटे रोग संतापया। काया पीड़ पेट अफार, कोटन कोट उतारे पापया। नेत्र नैण दरस अपार, सोहँ जाप अजपा जापया। गुर मती उतरन पार, मेट मिटाए तीनों तापया। धीरज यति सति सन्तोखी इक्क विचार, कलिजुग वा ना लग्गे तातया। सुहाए बंक दर सच्चा दरबार, नाम टिकाए साचे हाटयां। हरिजन करना वणज वपार, साचा लाहा जगत खाटयां। दुरमति मैल इक्क उतार, आत्म रस एका चाटयां। गुरमति काया तन शृंगार, नाम दीवा बाती साची वाटयां। रोग सोग चिन्त निवार, प्रभ भाग लगाए काया माटयां। दरस अमोघ विच संसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे जगत वर, कलिजुग खेल बाज़ीगर नाटयां। हरिसंगत हरि दर सवाली, आए बंक द्वार। कोए ना दर तों जाए खाली, प्रभ देवे देवणहार। धुर दरगाही साचा माली, माल खज़ीना इक्क प्यार। वेख वखाए बिरध बाल जवानी, मन्दिर अन्दर पावे सार। मेटे चोर पंज शैतानी, अमृत आत्म काया ठंडी ठार। आप चढ़ाए शब्द बिबाणी, इक्क वखाए पार किनार। जोती जोत सरूप हरि, आपे होवे दाता दानी। देवणहार वस्त अपार, हरिसंगत मनमुख उतरे मुख,

तृष्ना दुःख गंवाईआ। अन्दरे अन्दर जगत सुक्खणा रहे सुक्ख, साची सिख्या मन ना भाईआ। आपे लिखणहारा लेख, लेखा लिख्या दए मिटाईआ। दूई द्वैती लाहे विख, एका रंग रंगाईआ। दर द्वारे मूंहों मंगी मिले भिक्ख, आत्म मुखड़ा इक्क खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे मात वड्याईआ। हरिसंगत मिटे हउमे रोग, चिन्ता सर्ब विनासीआ। मिल्या मेला धुर संजोग, पारब्रह्म पुरख अबिनाशीआ। नेत्र लोचन दरस अमोघ, साचा मेल घनकपुर वासीआ। रसना रस लैणा भोग, सोहँ बणना जगत सवालीआ। आपे कट्टणहारा रोग, तापदिक ना रहे काया डालीआ। जिस जन चुगाए साची चोग, दिवस रैण करे प्रितपालीआ। जोती जोत सरूप हरि, हरिसंगत देवे साचा वर, दर मंगण आए बण सवालीआ। आए दर बण भिखारी, साची रुत्त सुहाईआ। पुरख अबिनाशी लेख लिखारी, लिख्या लेख रिहा मिटाईआ। नाड़ बहत्तर पावे सारी, हाडी हाडी फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत बेड़ा पार उतारी। हरिसंगत काया साचा रंग, प्रभ साचा आप चढ़ांयदा। दर द्वारे एका मंग, साची भिच्छया झोली पांयदा। चरन धूढ़ जन लाए साची गंग, सर सरोवर इशनान करांयदा। इक्क वजाए हरि मृदंग, मृदंगा अंग लगांयदा। गुरमुख साचा पार जाए लँघ, दाता सूरा सरबंग दया कमांयदा। आपे कटे भुक्ख नंग, जो जन दर आए सीस झुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे एका वर, एका राग अल्हांयदा। हरिसंगत घर साचे गोली, साची सेव कमाईआ। मनमुख जीव मारन बोली, देवी देव दिस ना आईआ। जोती शब्दी काया सभ दी मौली, फल फुलवाड़ी इक्क सुहाईआ। शब्द जणाए हौली हौली, आप आपणा भेव रखाईआ। उलटी करे नाभ कँवली, अमृत आत्म मुख चुआईआ। मिले वड्याई उप्पर धवली, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। साचा मेला साँवल सँवली, सुन्दर रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, संगत देवे साचा वर, आए सरन सच्ची सरनाईआ। नाड़ बहत्तर तन सितार, प्रभ आप रिहा वजाईआ। तिन्न सौ सट्ठ हाडी कर त्यार, काया बणत बणाईआ। आपे बणया साचा गाड़ी, शब्द सरूपी रथ चलाईआ। ना कोई लाए हरि हरि बाडी, बूंदी बूंद रिहा उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे बैठा आसण लाईआ। काया मन्दिर नौ द्वार, जगत खोल्ह वखांयदा। पंजां तत्तां कर आकार, पंजां संग मिलांयदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार, मन मती आप दुड़ांयदा। गुर मती जीव ना कोई पावे सार, हरि भाणा दिस ना आंयदा। वा तत्ती कलिजुग हाढ़, भरम भुलेखा इक्क रखांयदा। मगर लग्गी पंचम धाड़, दिवस रैण दुड़ांयदा। अन्तिम वरे मौत लाड़, लाड़ी मौत प्रनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, काया जंगल जूह उजाड़ पहाड़ दिस किसे ना आंयदा।

कवण हट्ट हरि वसेरा, कवण तट्ट वखाईआ। कवण दुरमति मैल कट्ट, कवण गवण मिटाईआ। कवण शब्द लपेटे साचे पट्ट, आत्म तृष्न बुझाईआ। कलिजुग खेले खेल बाज़ीगर नट, माया ममता करे हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन दया कमाए जोत जगाए काया मट, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। काया मट अन्ध अज्ञान, दहि दिशा अंध्या। जगत हँकारी लग्गा फट, पंच विकारा रिहा घेरया। झूठा मन्दिर जाए ढठ्ठ, अन्तिम ढहि ढहि होए ढेरया। गुरसिख वेखे तेरा हट्ठ, हरि साचा शेर दलेरया। दर दुआरा आया नठ्ठ, कर कर आपणी मेहरया। आपे गेड़नहारा उलटी लट्ठ, लाए मात ना देरया। साध संगत तेरी साची चट्ठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम वेखे हो दलेरया। वेखे नाड़ी जगत सितार, कवण मात हिलांयदा। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आपणी दया कमांयदा। गुर संगत बहाए गुरसिख विचकार, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। खण्डा फड़ तेज कटार, साची वंडा वंड वंडांयदा। मनमुख मारे पहली वार, गुरमुख पार करांयदा। आपणा आप प्रभ लए रक्ख, साची कल वरतांयदा। सिर धड़ वक्ख वक्ख, ना कोई करे किसे पक्ख, शब्द जणाई आप करांयदा। प्रगट होए हरि प्रतक्ख, चारों कुन्ट लाउँदे भक्ख, माया माटी अग्नी कक्ख, अन्तिम अन्त जलांयदा। काची माटी होई सक्ख, कोई ना सके मात रक्ख, ना कोई किसे बचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सर्बकला आपे समरथ, भाणा आपणे हथ्थ रखांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीआं जन्तां पाए नत्थ, चारों कुन्ट भवांयदा। शब्द खण्डा तेज कटार, दिस किसे ना आया। प्रगट होए नर निरँकार, जोती जामा भेख वटाया। गुरमुख साचे कर त्यार, सेवक सेवा साची लाया। आपे होया पहरेदार, भेव अभेदा भेव छुपाया। काल महांकाल करे ख़बरदार, एका डंक नाम वजाया। कलिजुग कूड़ मिटे कुड़यार, राउ रंकां रिहा हिलाया। जूठ झूठ हाहाकार, भरमां गढ़ रिहा तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले आपे फड़, आपणा मेल मिलाया।

❊ पहली मग्घर २०१३ बिक्रमी हरिभगत द्वार पिण्ड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ❊

आदि पुरख हरि सति है, सति सति वरतार। साचा नाम साचा तत्त है, सार शब्द अधार। सो साची रत्त है, हँ पसर पसार। दस्म द्वारी साचा नत्त है, नाता एकँकार। अगम्म अगम्मा किसे ना आए हथ्थ है, वेखे कोए ना विच संसार। आदि पुरख सदा समरथ है, रूप अनूप अधार। सति नाम साची वत्थ है, साचे सच दरबार। सोहँ साचा रथ है, रथ रथवाही आप करतार। दस्म द्वारी शब्द अकथ है, पंचम धुन अपर अपार। आदि पुरख सदा अनाद है, आदि अन्त शाह

भूप। सतिनाम शब्द ब्रह्माद है, दहि दिशा चारे कूट। सोहँ शब्द साची दाद है, फल अगम्मा रिहा टूट। दस्म द्वारी मेला माधव माध है, शब्द पंघूड़ा रिहा झूट। आदि पुरख सदा अनन्त है, अनन रूप प्रकाश। सति नाम सदा बेअन्त है, हरि हरिजन रक्खे वास। सोहँ शब्द साची रास है, चले चलाए पृथ्वी आकाश। दस्म द्वारी जोत प्रकाश है, आदि अन्त ना जाए विनास। आदि पुरख अथाह है, आदि अन्त ना कोए। सति नाम सच मलाह है, जीव जन्त ना जाणे कोए। सोहँ शब्द वखाए राह है, साचा मार्ग त्रैलोए। दस्म द्वारी एका नाउँ है, दूसर नाउँ ना जाणे कोए। आदि पुरख अनील है, एका एक अपार। सति नाम वकील है, मेला सच द्वार। सोहँ शब्द छैल छबील है, जुगा जुगन्तर पसर पसार। दस्म द्वारी इक्क अपील है, सुणे सुणाए हरि करतार। आदि पुरख आदेस है, आदेस आदेसा होए। सति नाम प्रवेश है, ब्रह्मा शिव ना जाणे कोए। सोहँ साचा नर नरेश है, त्रै लोकां पावे सोए। दस्म द्वारी ना कोई गणपति गणेश है, एका जोत निरँजण बलोए। आदि पुरख सुल्तान है, रूप रंग ना रेख। सति नाम मेहरवान है, अगम्म अगम्मा भेख। सोहँ साचा लेख है, लोआं पुरीआं रिहा वेख। दस्म द्वारी ना कोई दिसे रेख है, शब्द सरूपी लग्गी मेख। आदि पुरख

एका एक पसार। सति पुरख दयाल है, वरते विच संसार। सोहँ साची धार है, रूप अनूप अपार। दस्म द्वारी सच्चा घर बाहर है, मेला मेल नर निरँकार। आदि पुरख प्रकाश है, रूप रंग ना कोए आकार। सति नाम एका दास है, शाहो भूप साचा सोए। सोहँ शब्द घर साचे वास है, घर साचे रिहा बलोए। दस्म द्वारी ना कोई सास ग्रास है, आलस निदरा ना कोई सोए। आदि पुरख भरपूर है, सर्बकला कलि धार। सतिनाम हाज़र हज़ूर है, सोहँ बंक द्वार। सोहँ शब्द साची तूर है, आप वजाए वजावणहार। दस्म द्वारी ना नेड़े ना दूर है, प्रभ रक्खी अद्धविचकार। आदि पुरख अनाद है, दीना बंधप दीन दयाल। सति नाम सगला साथ है, नेड़ ना आए काल महांकाल। सोहँ साचा रथ है, जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल। दस्म द्वारी महिंमा अकथ है, आपे गाए हरि कृपाल। आदि पुरख हरि जोत है, जोती जोत समाए। सति नाम सच ज़ात है, ज़ात अजाति होर ना कोए। सोहँ शब्द साची दात है, देवणहारा आपे होए। दस्म द्वारी मेला कमलापात है, शब्द सिँघासण एका सोए। आदि पुरख सति रंग है, रूप ना जाणे नाम। सति नाम सच रंग है, तन बस्त्र ना दीसे कोई चाम। सोहँ शब्द सच्चा मृदंग है, आप वजाए इक्क दमाम। दस्म द्वारी साची गंग है, आप नुहाए प्याए अमृत जाम। आदि पुरख खेल है, खेले खेलणहार। सति नाम सच मेल है, मेले मेलणहार। सोहँ शब्द साची वेल है, एका लाई बसन्त बहार। दस्म द्वारी रंग नवेल है, आपे जाणे आपणी धार। आदि पुरख भगवन्त है, साचे दर द्वार। सति नाम धन्नवन्त

है, देवणहार दातार। सोहँ शब्द मिलावा कन्त है, धन्न धन्न सुभागी नार। दस्म द्वारी मेला इक्क इकन्त है, जोती नूर शब्द हुलार। आदि पुरख प्रभ आप है, आपणे रंग समाए। सति नाम सच तुरंग है, आपे रिहा दौड़ाए। सोहँ शब्द मृदंग है, त्रैलोकां रिहा वजाए। दस्म द्वारी साचा रंग है, गुरमुख विरले रिहा वखाए। आदि पुरख अभुल्ल है, भुल्ल ना जाणे कोए। सति नाम अटल है, किसे हट्ट ना वेचे कोए। सोहँ शब्द साची कुल है, हरि घर प्रगट होए। दस्म द्वारी शब्द पंघूड़ा रिहा झूल है, गुरमुख साची सेजा सोए। आदि पुरख वरछत्रा, वर्तमान त्रैलोए। सति नाम सति मन्त्रा, इक्क दर उठावे सोए। सोहँ हरि वरछत्रा, साचे धागे रिहा परोए। दस्म द्वारे मेल मिलंतरा, हरिजन मेला साचा होए। दस्म द्वारी साची धार है, धर्म जड़ ना मूल। सोहँ शब्द रूप अपार है, आपे जाणे आपणा मूल। सति नाम वणज वपार है, करे कराए कन्त कन्तूहल। आदि पुरख अगम्मड़ी कार है, आपे जाणे आपणा नूर। आदि पुरख हरि नूर है, नूर नुरानी जोत। सति नाम सच सूर है, ना कोई वरन गोत। सोहँ शब्द हाज़र हज़ूर है, वेख वखाणे कोटन कोट। दस्म द्वारी प्रभ भरपूर है, शब्द लगाए साची चोट। दस्म द्वारी सच महल्ल है, हरि आपणा आप उसार। सोहँ शब्द धाम अचल है, चले चलाए वारो वार। सति नाम सदा प्रबल है, सार शब्द रंग अधार। आदि पुरख सदा बेहंग है, एका जाणे आपणी चाल। आदि पुरख धनवन्त है, साचा हरि जगदीस। सति नाम पति पतिवन्त है, एका छत्र सीस। सोहँ शब्द गुणवन्त है, भेव ना पावे राग छतीस। दस्म द्वारी मेला हरि भगवन्त है, ना कोई गाए दन्द बतीस। दस्म द्वारी साची धुन है, हरि साचा रिहा सुणाए। सोहँ शब्द वड्डा वड्ड गुण है, हरि बिन अवर ना जाणे कोए। सति नाम सुहेला ल्या चुण है, प्रभ साचे रंग बलोए। आदि पुरख ना कोई गुण अवगुण है, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे अन्दर होए। आपणे अन्दर आप बिराजे, आपणी कल धारया। सति नाम हरि मारे आवाज़े, दर दरबान पहरेदारया। सोहँ चढ़या साचे ताजे, चारों कुन्ट फिरे ललकारया। दस्म द्वारी गढ़ हँकारी भाजे, शब्द खण्डा एका मारया। शब्द खण्डा हरि दातार, दस्म द्वार टिकाईआ। सोहँ शब्द रूप अपार, दिस किसे ना आईआ। सति नाम सुहेला मीत मुरार, इक्क इकेला दर्शन पाईआ। आदि पुरख जणाए आपणी धार, साचा वेला वक्त सुहाईआ। आप आपणा वक्त सुहाए, आदि पुरख अबिनाशी। सति नाम हरि शक्त रखाए, करे दासन दासी। सोहँ साचा भगत जणाए, गुरमुख अन्दर रक्खे वासी। दस्म द्वारी वक्त सुहाए, गुर गोबिन्दा जोत जगाए, मेल मिलाए घनकपुर वासी। जगत मलाह, घर साचे आसण लांयदा। गुर गोबिन्दे इक्क सलाह, दूसर कोए भेव ना पांयदा। लक्ख चुरासी भुल्ली भरमे राह, मनमुख आपणी निन्दा आपे लांयदा। गुरमुख उठाए फड़ फड़ बांह, कलिजुग सागर सिन्धा

पार करांयदा। आपे पिता आपे माँ, आप आपणी गोद उठांयदा। दो जहानां देवे ठण्ढी छाँ, दूसर कोई ना संग रलांयदा। इक्क जपाए साचा नाँ, धुर दरगाही मेल मिलांयदा। फड़ फड़ बणाए हँस काँ, दुरमति मैल धो धवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दस्म द्वारी साचा घर, घर साचे मता पकांयदा। दस्म द्वारी सच टिकाणा, प्रभ साचे आसण लाया ए। दस्म गुर गोबिन्दा होए निमाणा, दोए जोड़ सीस झुकाया ए। पुरख अबिनाशी पहरे बाणा, निहकलंका नाउँ रखाया ए। पकड़ उठाए राजा राणा, शब्द डंका इक्क वजाया ए। आपे होए सुघड़ स्याणा, ज्ञान ध्यान आप अख्वाया ए। आप चलाए आपणा भाणा, माण अभिमान रिहा मिटाया ए। ना कुछ खाणा ना कुछ पीणा, हरि शब्दी शब्द समाया ए। लक्ख चुरासी तणया ताणा, कलिजुग आपणा रंग वखाया ए। दन्द बतीसा गौंदे गाणा, साचा नाद ना किसे वजाया ए। साचा रंग ना किसे माणा, घर सुंञी सेज विछाया ए। पुरख अबिनाशी किसे ना पाणा, मन मती जन्म गंवाया ए। जिस जन देवे जिया दाना, वा तत्ती नेड़ ना आया ए। एका बख्शे चरन ध्याना, जप तप हठ्ठ सति एका एक रखाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दस्म द्वारी वेख घर, आप आपणा आसण लाया ए। दस्म द्वारी शब्द अटारी, प्रभ आपणी आप बणाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, प्रगट होए हरि गिरधारी, निहकलंका नाउँ रखाईआ। सोहँ पकड़े तेज कटारी, मारी जाए वारो वारी, चारों कुन्टां वेख वखाईआ। गुर गोबिन्दे बन्न्हे धारी, आप आपणी पैज संवारी, लोआं पुरीआं वेख वखाईआ। आपे पुरख आपे नारी, जणया सुत अपर अपारी, हरि शब्दी नाउँ रखाईआ। जोती माता करे प्यारी, पुरख अबिनाशी पावे सारी, दिस किसे ना आईआ। मिल्या मेल दस्म द्वारी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द मेला इक्क घर, गोबिन्द रूप वखाईआ। गुर गोबिन्दा तेग बहादर, होए दर परवाना। प्रभ अबिनाशी लै के आया चिट्ठी चादर, सोहँ नाम तराना। आप बहाए कर कर आदर, आत्म अन्तर बन्न्हे गाना। रहीम करीम करता कादर, वड गनीम रहिमाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्त वजावण इक्क दमामा। दस्म द्वारी साचा थाउँ, हरि गोबिन्द नाता जोड़या। कलिजुग अन्तिम करे सति न्याउँ, चढ़े चढ़ाए साचे घोड़या। नौ खण्ड पृथ्वी आप उडाए घर घर काउँ, गुरमुख काया मन्दिर अन्दर आपे बहुड़या। दया कमाए गले लगाए फड़ बाहों, सम्मत चौदां आए दौड़या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दस्म द्वारी इक्क घर, एका नाम लगाया पौड़या। दस्म द्वारी साचा पौड़ा, प्रभ एका नाम लगांयदा। ना कोई जाणे लम्भा चौड़ा, ना कोई वेख वखांयदा। धुर दरगाही आया दौड़ा, लोकमाती फेरा पांयदा। आपे वेखे मिट्ठा कौड़ा, गुरमुख सोया आप जगांयदा। भेखाधारी ब्रह्मण गौड़ा, पूत सपूता आप

१४२
०६

अख्वांयदा। कलिजुग अन्तिम आपे बौहड़ा, सोहँ दूता नाल रलांयदा। जोती शब्दी जुड़या जोड़ा, चारे कुन्टां वेख वखांयदा। राह विच ना अटकाए कोई रोड़ा, साध सन्त अन्त कन्त भेव ना पांयदा। चिट्टे अस्व चढ़या साचे घोड़ा, जीव जन्त आप हिलांयदा। चौदां तबकां मारे पहला पौड़ा, चौदां लोकां आप हिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दस्म द्वारी साचा घर, सच महल्ले आसण लांयदा। आसण लाए हरि निरँकारा, शब्दी सेज विछाईआ। गुर गोबिन्दा सच दुलारा, आपे रिहा उठाईआ। सोहँ देवे इक्क हुलारा, दिवस रैण हिलाईआ। सति नाम देवे साची धारा, अमृत मुख चुआईआ। आदि पुरख मिल्या मीत मुरारा, विछड़ कदे ना जाईआ। गुर नानक मंगे दर दुआरा, प्रभ भिच्छया आपणी पाईआ। सति नाम इक्क भर भण्डारा, आपणी हथ्थीं विदा कराईआ। सोहँ मिल्या शब्द अधारा, रसना भोग लगाईआ। दस्म द्वारी खुल्ले किवाड़ा, प्रभ साचा नज़री आईआ। आसण लाया विच उजाड़ा, सृष्टी भरमे भरम भुलाईआ। इक्क सुरंगा साचा ताड़ा, मरदाना रिहा वजाईआ। सिँघ मनजीत बहत्तर नाड़ा, इक्क सितार हिलाईआ। साधां सन्तां पाए धाड़ा, आत्म अन्दर खोज खुजाईआ। शिव शंकर वेखे उच्च पहाड़ा, उच्चे टिल्ले आसण लाईआ। जगत जगदीसा मारे धाड़ा, नौ दर लक्ख चुरासी इक्क निशान वखाईआ। दो जहानी मिटे पाड़ा, हरि शब्द बिबाण बिठाईआ। अग्नी जोती आपे साड़ा, आप आपणा हवन कराईआ। गुर गोबिन्दे तेरी भगती पूत सपूत कढुया भाड़ा, गुर संगत फल खवाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी बणे इक्क अखाड़ा, हरि साचे रचन रचाईआ। आप उठाए अगम्मी धाड़ा, शब्दी नाउँ रखाईआ। धर्म राए दा भरे वाड़ा, लाड़ी मौत नाल रलाईआ। कलिजुग अन्तिम कढ्ढे हाढ़ा, ना सुणे कोई लुकाईआ। त्रैगुण चबाए आपणी दाढ़ा, पंज तत्त मेट मिटाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार प्रभ अग्नी साड़ा, सिँघ मनजीते बन्ने लाईआ। करोड़ तेतीसे पैण झाड़ां, सुरपति राजा इन्द रिहा शरमाईआ। जगत जगदीसा साचा लाड़ा, प्रभ आपणी हथ्थीं घोड़ चढ़ाईआ। दर घर साचे साचा वाड़ा, दो जहानां मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया वसया घर, घर साचे भाग लगाईआ। भाग लगाया काया गढ़, हरि साचा धाम सुहंदड़ा। दस्म द्वारी उप्पर चढ़, एका रंग वखंदड़ा। लक्ख चुरासी नाल रहे लड़, शब्द खण्डा इक्क रखंदड़ा। ना कोई सीस ना कोई धड़, जोद्धा सूर बलवंदड़ा। ना कोई सके मात फड़, राज राजानां शाह सुल्तानां राउ रंक विच जहान नेत्र नैण होया अन्धड़ा। आपणा घाड़न आपे घड़, साचे मन्दिर बैठा वड़, हरि आपणा खेल रचन्दड़ा। ना मरे ना जाए सड़, हरि जोती जोत जगन्दड़ा। कोई ना सके अग्गे अड़, नौ खण्ड पृथ्वी वेखे साध सन्त मुशटंडड़ा। आप उखेड़े सभ दी जड़, लुकया रहे ना विच वरभण्डड़ा। शब्द तीर चलाए कड़ कड़, काया किला कोट इक्क रखंदड़ा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया साचा घर, हरि साचा आप वसंदड़ा। हरि साचे घर वसया, वेखे नौ द्वार। दस्म द्वारी बहि बहि हस्सया, भरमे भुल्ले जीव गंवार। जगत नुहाए पुंनया मस्सया, ना कोई मेटे अन्ध अंध्यार। वेख प्रकाश फिरन रवि सस्सया, आत्म अन्ध होई अंध्यार। सच सुच्च दर दवारयो नस्सया, जूठा झूठा तन पसार। पंज विकारा तीर कसया, पंच कराए हाहाकार। गुरमुख विरले हरि हरि अन्दर वसया, जिस जन किरपा देवे धार। कलिजुग एका राह दस्सया, नौ खण्ड पृथ्वी चढ़ चढ़ गई हार। पुरख अबिनाशी धुर दरगाही आए नस्सया, सोहँ फड़ तेज कटार। मुख छुपायण रव रवि सस्सया, कलिजुग अन्तिम पैणी मार। सतिजुग साचा आवे नस्सया, प्रभ चरन करे निमस्कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया साचा घर, बैठा भुजा पसार। चतुर्भुज जगत जगदीश्र, दिवस रैण जग मीता। जुगत जोग भगत तपीश्र, आपे जाणे आपणी रीता। आपे ब्रह्मा शिव आपे ईश्र, आपे रिख मुन अतीता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया इक्क घर, आप रखाए इक्क प्रीता। इक्क प्रीती चरन हरि, दिस किसे ना आईआ। नुहावण नुहाए साचे सर, सर सरोवर इक्क रखवाईआ। एका दूजा चुक्के डर, तीजे भरम मिटाईआ। चौथे वेखे साचे घर, पंचम रागा रिहा गाईआ। छेवें छप्पर ना कोई दर, सत्तवें सति पुरख समाईआ। अठवें अट्ठां तत्तां घाड़न घड़, नौ दर बणत बणाईआ। दसवें बैठा आपे वड़, आपणी हथ्थीं कुण्डा लाहीआ। बजर कपाटी साची सिला अग्गे धर, माया ममता पड़दा पाईआ। पंच बलकारा रिहा लड़, पंच शैताना नाल रलाईआ। हड्ड मास नाड़ी अन्दर वड़, आपणी जड़ आपणी हथ्थीं आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया साचा घर, सच समग्री आपणी आपणे हथ्थ रखाईआ। सति पुरख सतिवाद है, साचे घर समाए। सच शब्द ब्रह्माद है, सार रूप समाए। पुरख अबिनाशी आसा वजे नाद है, नाम रूप हो जाए। आदि पुरख आपे रिहा अहिलाद है, रसना कोई ना गाए। बत्ती दन्द ना मिले दाद है, पंचम तत्त ना कोई टिकाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी इच्छया शब्द नाम रखाए। हरि इच्छया बलवान, आपणी आप उपाईआ। दिस ना आए कोई निशान, ब्रह्मण्ड खण्ड समाईआ। रसना गाए ना कोई गान, रूप रंग ना कोई वखाईआ। ना कोई लिखे विच जहान, सूरत मूर्त किसे दिस ना आईआ। गा गा थक्के वेद पुराण, अञ्जील कुरान दए दुहाईआ। खाणी बाणी होए हैरान, नाम अक्खर कर कर वक्खर कोए ना सके मात बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी इच्छया आपणा नाउँ रखाईआ। प्रभ अबिनाशी आई आसा, आसा आस रखाईआ। जोती नूर इक्क प्रकाशा, प्रकाश रूप समाईआ। आप आपणा किया दासन दासा, आप आपणे अंग लगाईआ।

आप चलाया पृथ्वी आकाशा, राउ रंकां दिस ना आईआ। आपे जाणे अगम्म अगैबा, अगैब अगैबी आपणा नाउँ रखाईआ। किसे हथ्थ ना आए रत्ती तोला मासा, रत्ती रत्त वहाईआ। खोजत खोजत खुल्ले काया कासा, मक्का काअबा दो दोआबा फोल फुलाईआ। रवि ससि तक्क रहे महिताबा, शाह नवाबा नाम सति दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा आपे नाउँ रखाईआ।

त्रैगुण साची रास, शब्द रत्न अमोल। जुग जुग रक्खे पास, जुग जुग भण्डारा देवे खोल्ह। वेख वखाणे पृथ्वी आकाश, आपे तोले पूरे तोल। जन भगतां अन्दर रक्खे वास, निशअक्खर वक्खर शब्द सरूपी बोल। काया मण्डल पावे रास, अनहद वजाए ताल साचा ढोल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल सदा अडोल। निरगुण निर्लज, लोक लाज तजाईआ। सच सिँघासण बैठा सज, पलँघ रंगीला सेज विछाईआ। जोत सरूप चढ़या भज्ज, शब्द घोड़ा नीला नाउँ रखाईआ। आपणा पड़दा आपे कज्ज, काया चार दिवार बणाईआ। दो जहानी बणया जज्ज, लिख्या लेख वेख वखाईआ। गुरमुखां अमृत आत्म प्याए रज्ज, नेत्र पेख दरस दिखाईआ। गुरुदुआरा मन्दिर मस्जिद ना कोई दिसे काअबा काअब, चरन प्रीत एका रीत सिखाईआ। उलटी करे कँवल नभ, अमृत धारा सीतल सीत वहाईआ। कारज पूरे करे सभ, जो जन रसन रसनी गाईआ। प्रगट होए दरस दिखाए झब्ब, जोती जामा भेख वटाईआ। जुग जुग विछड़े लए लभ्भ, दिवस रैण सेव कमाईआ। गुरमुखां द्वारे रिहा फब, मनमुखां पिठ वखाईआ। नेत्र दरस दिखाए जणाए आबे हयात अब, दो आब लेखे लाईआ। तन वजाए इक्क रबाब, सुरती सुरत भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अकाल मूर्त निरगुण रूप समाईआ। निरगुण रूप निरपक्ख, निज घर वसया। हरि शाहो भूप प्रतक्ख, सच सिँघासण बहि बहि सज्जया। भगत सुहेले करे वक्ख, दिवस रैण फिरे भज्जया। नौ खण्ड पृथ्वी उडणे कक्ख, ना कोई रक्खे किसे लज्जया। राज राजानां काया ठूठे सक्ख, झूठा ताल मात वज्जया। दहि दिशा लाउँदे भक्ख, काया भाडां सभ दा भज्जया। गुरमुखां राखे दे कर हथ्थ, दो जहानां पड़दा कज्जया। सर्बकला आपे समरथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे आपे सज्जया। संगत आई दर प्यासी, जगत रोग सताया। किरपा कर घनकपुर वासी, धुर संजोग मिलाया। कट्टणहारा जम की फ़ासी, दरस अमोघ वखाया। किसे हथ्थ ना आए पंडत काशी, वेद पुराणां भेव ना राया। हरिजन मेला शाहो शाबाशी, दर दुआरा बंक सुहाया। पूर कराए आत्म आसी, आसा तृष्ना जो जन रखाया। रसन तजाए मदिरा

मासी, आप आपणे रंग रंगाया। दुःख रहे ना दिक खांसी, दर्द सिर सर्ब मिट जाया। निज घर आत्म रक्खे वासी, वास देव अख्वाया। दर द्वार जो करन हासी, लहिणा देणा मूल गंवाया। चरन सरन जो जन होए दासन दासी, फूलन सेजा दए सुहाया। जगत अन्धेर एका छासी, धुँदूकार कराया। गगन पाताल ना दिसे पृथ्वी आकाशी, रवि ससि नज़र ना आया। गुरसिख गुर पूरा सद बलि बलि जासी, चरन कँवल कँवल चरन जिस जन ध्यान लगाया। आए दर परवान, सुणे बेनन्तीआ। नाम दाता मेहरवान, साचा कन्तीआ। देवे सोहँ धुर फ़रमाण, जीव जन्तीआ। आप सुणाए साचे कान, दात गुण गुणा गुणवन्तीआ। मनमुख आपणा कीता आपे पाण, गुरमुखां मेला हरि भगवन्तीआ। तीर निराला वज्जे बाण, ना कोई जाणे वेद विदंतीआ। खाणी बाणी करे पछाण, पावे सार ग्रन्थ ना ग्रन्थीआ। कलिजुग अन्तिम आई हान, जूठ झूठ बणाए संखीआ। सेवा लाए पवण पाणी मसाण, एका एक हुक्म सुणंतीआ। राए धर्म उठ निधान, लक्ख चुरासी वेख वखंतीआ। लाड़ी मौत धी रकान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां काया चोली एका रंग रंगाए सोहँ सच बसन्तीआ। आए दर शब्द भिखार, हरि साचा झोली पाईआ। जो जन मंगे जगत अधार, रोग सोग चिन्त मिटाईआ। दुध्ध पुत्त जो करे प्यार, हरि इच्छया पूर कराईआ। पंचम चोर जन कढ्ढे कुट्ट, शब्द खण्डा इक्क वखाईआ। लक्ख चुरासी जाए छुट्ट, सोहँ डण्डा हथ्थ फड़ाईआ। साचा लाहा लैण लुट्ट, नैण नेत्र दर्शन पाईआ। अमृत आत्म साचा घुट्ट, हरिजन पी पी तृखा बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर आए देवे जगत वर, सहिँसा रोग चिन्त गंवाईआ। दुःख रोग जगत संताप, जीव जन्त कुरलांयदा। कलिजुग काया वध्या पाप, ना कोई किसे बचांयदा। भगत दो अक्खर एका जाप, साचे मार्ग लांयदा। नेड़ ना आयन तीनों ताप, साची रसना जो जन गांयदा। दरस दिखाए हरि आपे आप, आप आपणा रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे साचा वर, आसा इच्छया पूर करांयदा। बाल बिरध नौजवान, एका रंग रंगाईआ। मात कुक्ख वेखे मार ध्यान, दस दस मास लेख लिखाईआ। जगत वियोग सर्ब मिट जाण, चरन ध्यान जो रखाईआ। साचा मेला धुर संयोग, नाम बिबाण इक्क चढ़ाईआ। आपे कट्टणहारा रोग, हउमे हँगता रोग गंवाईआ। नाम रस रसना लैणा भोग, साची संगता संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत दर आई मंगत, साची भिच्छया रिहा पाईआ।

कलमा अमाम कायनात पसारया। आबे हयात जाम प्याए मध, संग मुहम्मद चार यारया। पाक पाकी मकलूके ख़ाकी

सखी सरवर परवरदिगारया। अहिनल हक्क राह रिहा तक्क, दूर द्वार किनारया। सदी चौधवीं फल गया पक्क, ईसा मूसा मेल मिला रिहा। अन्त निबेड़ा हक्को हक्क, अहिबाब रबाब साची आप वजा रिहा। संग मुहम्मद चार यार, हू अल्ला अल्ला हू पुकारया। खुदी खुदाई ख़बरदार, खुदावंद खंदक खुद खुदा रिहा। मुल्ला शेख़ मुसायक नबी रसूल ना कोई गाए बत्ती दन्द, अल्ला बिस्मिलाह कलमा कोए ना रसन पढ़ा रिहा। अज़मतो कस्मतो अज़िबवा अतिलहे अज़राईल ज़बराईल मेकाईल असराफील हवा हवस मिला रिहा। बस्त्र पहन चोला नील, छैल छबील भेख वटा रिहा। अल्ला राणी दए दलील, कुरान हदीस इक्क सुणा रिहा। अमाम मैहन्दी बणे अन्त वकील, सपारा तीस वेख वखा रिहा। खुदावंद खुदा अन्तिम होए जुदा, अगैब अगैबी कदम उठा रिहा। अमाम मैहन्दी नूर अलाही, ख़ाकी बन्दा ना कोई। कलमा कलमी दए सलाही, मुल्ला शेख़ अन्धा रहे ना कोई। चौदां तबकां मिटे शाही, चारों कुन्ट दरोही खुदाए होई। दरोही खुदाए दी खुदाए दे नबी दी, चार यार हज़रत पीर दस्तगीर संग मुहम्मद उम्मत सारी सोई। एका चले साचा तीर, वेला अन्त अन्त अख़ीर। खुदाए ख़लक हथ्थ ना आवे नीर, मख़लूकात औकात बज़ाते ज़ात सफात रहे ना कोई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आलम उलमा वेखे अलाही तुलबा कवण सबक चौदां तबक रिहा पढ़ाईआ। शाह पाक अन्त उन्नीसा होए ख़ाक, नाल रलाए शाह इराक, अफगान तहिरान ईरान होए जुदाईआ। गफ़लत नींद सोए नादान, उलफत वेखी विच जहान, खुदी खुदाए बेपरवाहे बेपरवाह दिस ना आईआ। वाहिद खुदा वाहिद कलमा हक्क हकूक वेखे खेल शाह तबरूक, ना मेटे कोई मिटाईआ। मुहम्मद मुहम्मदी दए फूक, अहिमद जम दी सुणे कूक, नेत्र नीर वहाए छम्म छम्म दी अन्तिम चुक्के चूक, चाकर चाक ना कोए अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संग मुहम्मद चार यार, इक्क वखाए दर द्वार, पकड़ उठाए ऐली शाह, शाह सवार आप अख्वाईआ। अमाम मैहन्दी रंग अपार। दिशा लहिंदी रिहा विचार। नबी रसूलां धार वहिंदी, ना देवे कोई सहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलमा लेख कलाम अलाही वेख करे कराए ख़बरदार।

हरिसंगत भेंट चढ़ाया, फूलनहार अपार। हरि खेवट खेट आप अख्वाया, फड़ फड़ बाहों लाए पार। बेटी बेट सुत उपजाया, हरिसंगत इक्क प्यार। पहली चेत नेड़े आया, गुरमुखां करे ख़बरदार। काया खेत वेख वखाया, भेव चुकाए नौ द्वार। साचा शाहो सेठ आप अख्वाया, ग़रीब निमाणयां भरे भण्डार। आपणी साया हेठ रखाया, कलिजुग वा ना देवे

साड़। कौड़े रेठ रिहा भन्नाया, मनमुखां अग्न लगाए नाड़ नाड़। महीना जेठ दया कमाया, इक्की जेठ होए विचार। पार ब्यासों डेरा लाया, त्रैगुण माया महल्ल दए उसार। आप आपणा वक्त सुहाया, जीव जन्त ना पावे सार। साध सन्त माया भरम भुलाया, आत्म भरया इक्क हँकार। आप आपणी सेवा लाया, गुरमुखां होया पहरेदार। अमृत आत्म मेवा रिहा खवाया, फल लगाए काया डालृ। देवी देवा आप हो आया, हरिजन बणाए साचे लाल। कौस्तक मणीआं थेवा लाया, सूरज चन्द ना झल्ले झाल। सोहँ जिस जन रसना गाया, सम्मत चौदां करे संभाल। सम्मत पन्दरां मुख छुपाया, आपे वेखे शाह कंगाल। सम्मत सोलां आपणे लड़ बंधाया, हरि चले अवल्लड़ी चाल। चारों कुन्ट अन्धेरा छाया, फल किसे ना दिसे डालृ। सञ्झ सवेरा कोई दिस ना आया, खेले खेल आप तत्तकाल। अगम्म अगम्मी घेरा पाया, त्रैगुण माया तोड़े जाल। ब्रह्मा वेखे दए दुहाया, ना कोई दीसे मात दलाल। शिव शंकर लए अंगड़ाया, प्रभ दर अग्गे करे इक्क सवाल। करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द दए दुहाया, अन्तिम लुट्टया जाए धन माल। निहकलंक कलि जामा पाया, वेखे खेल मस्जिद मन्दिर गुरुद्वारे जगत धर्मसाल। गुरमुख साचे लए प्रनाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे अंक समाया। फूलन बरखा सीस ताज, हरि हरिजन आप पहनांयदा। लोकमात कलि साजन साज, मार झात वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम रच्चया काज, इक्क इकांत बणत बणांयदा। लेख लिखाए देस माझ, बूंद स्वांत गुरमुखां मुख चुआंयदा। लोआं पुरीआं दिसे भाज, धीरज धीर ना कोई धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे अन्तिम वर, जगत लज्जया आपणे हथ्थ रखांयदा। फूलन बरखा साचे सीस, आपणी हथ्थीं लाईआ। मिल्या मेल हरि जगदीस, साचे रथीं रिहा चढ़ाईआ। लक्ख चुरासी जूठा झूठा पीसण रिहा पीस, साची चक्की इक्क चलाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां खाली दिसे खीस, दर दर भिच्छया रिहा मंगाईआ। ना कोई गाए राग छतीस, रागां नादां वक्त चुकाईआ। जूठा झूठा झेड़ा दन्द बतीस, अन्तिम लहिणा देणा चुक्कणा बीस इकीस, जगत जगदीस सीस आपणे ताज सुहाईआ। अल्ला राणी विच उनीस, बैठी मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत देवे इक्क वर, सम्मत सम्मती वेख वखाईआ। हरि द्वार सति है, लोकमात प्रधान। आपे दे समझावे मति है, शब्द रूप ज्ञान। मेट मिटाए पंचम तत्त है, पंचम मेला हरि भगवान। सति सन्तोखी देवे एका रत है, बीरज बीजे गुण निधान। नाम कथा अकथना अकथ है, ना कोई रसना सके वखान। सर्बकला आपे समरथ है, जीआं जन्तां देवे दान। सगल वसूरे जायण लथ्थ है, जो जन दर्शन करे आन। आप चढ़ाए एका सोहँ साचा रथ है, पार कराए दो जहान। लक्ख चुरासी पाए नत्थ है, वड दाता हरि मेहरवान। जिउँ

रामा घर दशरथ है, शब्द सपूता हरि बलवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे इक्क वर, गुर मन्त्र अन्तर एका आण। शब्द गुर नेत्र अंजन, कज्जल धार बंन्हांयदा। चरन धूढ़ साचा मजन, मीत मुरार आप करांयदा। नाद अनादी ताल वज्जण, अनहद तलवाड़ा आप वजांयदा। भाण्डे हँकारी गढ़ आपे भज्जण, मिले मेल हरि साचे सज्जण, मदिरा मास जो जन तज्जण, अन्तिम वेले रक्खे लजण, स्वच्छ सरूपी दरस दिखांयदा। अमृत पी पी रज्जण, काया सच सरोवर इक्क इशनान करांयदा। गुर चरन चरन गुर बहि बहि गुरमुख साचे सजण, मनमुख दर दुरकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत देवे इक्क वर, काया काअबा हाज़ी हज्जण, एका हज्ज करांयदा। आए द्वार बंक, हरि रंग माणया। हउमे जाए शनक, आप आपणा रंग पछाणया। ना कोई राउ ना कोई रंक, गुरमुख मिले वड्याई जिउँ जन जनक, भगत भगती लेखे लानया। जोत सरूपी लाए तनक, आपे रूप सनक सनंदन, सन्त सनातन आप अख्वा रिहा। गुरमुखां आत्म फेरे मन का मनक, रसना जिह्वा आपणा नाम जपा रिहा। प्रगट होए वासी पुरी घनक, काहन घनईआ साँवल सुन्दर रूप वटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, वेद व्यासा दए खुलासा गोबिन्द नानक भेव चुका रिहा। नानक गोबिन्द रसना गायण, आयण चरन द्वार। परम पुरख प्रभ साचा पायण, दासी दास तुहार। साक सज्जण बण साचा सैण, रूप अनूप रंग अपार। लक्ख चुरासी अन्तिम खाए लाड़ी मौत डैण, कोई ना होए किसे सहार। राए धर्म चुकाए लहिण देण, चित्रगुप्त लेख लिखार। मनमती जीव जूठे झूठे वहिण वहिण, कलिजुग धारा वहिंदी धार। गुरमुख विरले सन्त सुहेले अन्तिम रहिण, जिस जन बख्शे चरन प्यार। दरस दिखाए तीजे नैण, आत्म खोल्हे बन्द किवाड़। नाता तुट्टे भाई भैण, आत्म सेजा नारी कन्ता इक्क्ठे रहिण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां मेला इक्क दर, जो जन हरि हरि भाणा सहिण। हरि भाणे शब्द जणाई, लोक परलोक ब्रह्माद। एका एक सलोक सुणाई, बोध अगाध अगाध बोध। ना कोई रोके रोक रुकाई, लोआं पुरीआं वज्जे साचा नाद। लक्ख चुरासी झोक वखाई, ना कोई सहाए सन्त साध। गुरमुखां एका मोख अन्तिम पाई, गुर चरन दुआरा ल्या लाध। सम्मत सोलां सति सन्तोख रखाई, धीरज धीर धरावे, देवे हरि हरि माधव माध। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत मेला सच घर, खेले खेल आदि जुगादि।

हरि शब्द तन गात्रा, काया विच म्यान। लेखा लिखे ना वेद शास्त्रा, खाणी बाणी ना करे ज्ञान। आप पहनाए कमलापात्रा,

आपे वेखे मार ध्यान। अन्दर मन्दिर अन्धेरी रात्रा, ना कोई दीसे होर निशान। गुर गोबिन्दे बख्शे चरन सच्ची यात्रा, हरि चरन धूढ़ इशनान। जोत जगाए नव नव सातरा, नौ खण्ड वेखे हरि भगवान। नाम देवे साची दात्रा, दानी दाता हरि हरि दान। वरन बरन ना कोई यात्रा, ज़ात पात ना करे पछाण। एका एक रखाए नात्रा, आपे वरते जाणी जाणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द खण्डा आप रखाए आपणे तन म्यान। शब्द खण्डा हरि दातार, काया तन लपेटयां। तिक्खी रक्खे दोवें धार, वेखे खेल पिता पूत सुत बेटयां। एका देवे नाम सहार, आपे होए खेवट खेटयां। वरते कल कलिजुग तेरी अन्तिम वार, जोती जगे महीना जेठया। आपे ढाहे लए उसार, भन्नणहार कौड़े रेठया। जीवां जन्तां पावे सार, साध सन्त हिलाए वड वड सेठया। अन्दरे अन्दर मारे मार, चलाए बाण इक्क अनडीठया। आप झुलाए विच जहान, सम्मत सोलां पहली चेत्र नौ खण्ड पृथ्वी शब्द दुआरा लेख लिख भेजे जगत चिठया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द खण्डा तेज कटार, धारी धार अनडीठया। शब्द खण्डा काया अन्दर, हरि आपणे हथ्थ रखांयदा। दिस ना आए डूँघी कन्दर, समरथ खेल रचांयदा। आपे बैठा लाई जन्दर, ना कोई मात तुड़ांयदा। चारों कुन्ट भौंदे बन्दर, बन्द खलासी ना कोई करांयदा। गुरमुख साचे सीस सोहे पीत पितम्बर, जगत जगदीस दया कमांयदा। कलिजुग माया रच्चया सवम्बर, नाता बिधाता आप तुड़ांयदा। त्रैगुण तेरा वेखे अडम्बर, कमलापाता जोत जगांयदा। सृष्ट सबाई आप भरतम्बर, भारत देश वेख वखांयदा। वेख वखाणे पीर पैगम्बर, गौंस धौंस ना कोई जणांयदा। साध सन्त तारा मण्डल ना कोई वेखे रहिबर, आत्म झाकी ना कोई पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाणे काया ख़ाकी, बन्दी बन्दा ना कोई तुड़ांयदा। शब्द खण्डा हरि गोबिन्द, गोबिन्द तन सजांयदा। आप उपजाए आपणी बिन्द, रित बीरज आप हो जांयदा। उत्पत होए काया खित, काया विच समांयदा। जोती माता करे हित, शब्दी सुत बणांयदा। खेले खेल नित नवित्त, आपणी गोदी आप उठांयदा। आपे माई आपे पित, पिता पूत आप अख्वांयदा। दो जहानां रिहा जित्त, त्रैलोकी नाथ आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, काया तन शब्द कटार, आपणी आप सुहांयदा। शब्द खण्डा नाम कृपान, ब्रह्मण्ड करे रखवाली। उच्चा डण्डा वेखे मार ध्यान, जोत निरँजण दीपक थाली। गुर गोबिन्दे इक्क ज्ञान, मिल्या मेल जोत अकाली। धुर जणाई धुर फ़रमाण, धुरदरगाह रहे सवाली। शब्द बिठाए सच बिबाण, चलाए अवल्लड़ी चाली। खाणी बाणी होए हैरान, प्रगट होए दो जहानां वाली। लोआं पुरीआं मारे बाण, वरभण्ड कराए खाली। इक्क रखाए धर्म निशान, जन भगतां करे दलाली। पंचम ताज सीस भगवान, फल लग्गे साची डाल्ही।

धुरदरगाही साजन साज, आपे बणया साचा वाली। भगत जनां हरि रक्खे लाज, मंगे भिच्छया प्रेम सवाली। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मेटे रैण कलिजुग अन्धेरी काली। नाम खण्डा राम मुट्ठ, तुट्ठ हथ्थ रखाईआ। आदि अन्त ना जाए छुट, बंधन बंध बंधाईआ। मेटणहारा जगत फुट्ट, एका दूर कराईआ। गुरमुखां दर ना कोई जाए लुट्ट, पहरेदार आप हो आईआ। अमृत आत्म प्याए साचा घुट्ट, सोहँ मुखी साचा तीर छुहाईआ। भगत भगवन्त साचा जुट्ट, जुग जुग जोड़ी जोड़ बणाईआ। आप मनाए गए रुट्ठ, रुठयां आप मनाईआ। जगत विकारा देवे कुट्ठ, भय भयानक होए सहाईआ। माया राणी खाली ठुठ, दर दर दए दुहाईआ। जाग जाग गुरसिख रुट्ठ, हरि शब्दी शब्द जणाईआ। नाम रंगीली चाढ़े मुट्ठ, काया चोली रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द कटार कर प्यार, गुर गोबिन्दे गोली दर बणाईआ। गुर गोबिन्दे साचा तन, नाम गात्रा इक्क लटकाया। प्रभ अबिनाशी ना गया मन्न, सस्से होड़ा रिहा वखाया। निरगुण सरगुण मिल्या एका तन, धन्न धन्नवन्ता दया कमाया। साचा राग सुणाए कन्न, सुणावणहार आप अख्वाया। शब्द वसेरा ना कोई छप्परी ना कोई छन्न, ब्रह्मण्ड वेख वखाया। जुग जुग देवणहारा डन्न, डण्डावत बन्दना आप कराया। आपे कट्टणहारा जन भगत फंदना रिहा तुड़ाया। साचा देवे नाम धन, चोर ठग्ग ना लए चुराया। गुर गोबिन्दे साचे
१५१
०६
घर कोए ना लाए संन्ह, सोहँ पहरेदार आप अख्वाया। सृष्ट सबाई होई अन्न्ह, आप आपणी आलस निन्दरा लाहया। गुरमुखां बेड़ा रिहा बन्न, चरन दुआरा बन बिन्दरा धाम सुहाया। धर्म राए ना देवे डन्न, राजा इन्द्र सीस रिहा झुकाया। दूर दुराडे वेखण सूरज चन्न, गुरमुख साचा चन्द आकाश प्रकाश विच चढ़ाया। शिव शंकर ढाहे भरमां कंध, पुरख अबिनाशी खेल रचाया। ब्रह्मा वेखे घर अनन्द, अनन्द अनन्द दया कमाया। सर्ब जनां आपे बख्शंद, आपणे भाणे विच समाया। गा ना सके बती दन्द, जुग जुग लेखा आपणे हथ्थ रखाया। कलिजुग मुकावण आया पन्ध, शब्द खण्डा हथ्थ उठाया। धरतमात तेरा खुशी कराए बन्द बन्द, दुष्ट दुराचार कोई रहिण ना पाया। एका धार वहाए सागर सिन्ध, सिन्ध सागरां ताल सुहाया। मनमती जीव लाए निन्द, निन्दक निन्दया मुख रखाया। हरिजन उपजाए साची बिन्द, धीरज धीर सति सन्तोख आत्म ज्ञान जणाया। हरि दाता जोद्धा सूरा सरबंग, गुणी गहिंद, गोबिन्द काया विच समाया। साचे तख्त सुल्तान नरेश नरिंद, निगाहवान अख्वाया। सूरबीर हरि मृगिन्द, जगत शैतान दए मिटाया। जोत प्रगटाए जोती हिन्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, रूप रंग रंग रूप ना कोई जणाया।

जन्म कर्म प्रभ हथ्थ है, लक्ख चुरासी रिहा उपाईआ। सर्बकल आपे समरथ है, समरथ कल आप अख्वाईआ। जगत जोग जाणे अकथना अकथ है, जिह्वा कत्थ ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगत जोग जगत रिहा बणाईआ। जुगत जोग जगत जगदीश, आपणी आप बणांयदा। खेले खेल बीस इकीस, एका आप अख्वांयदा। लेख रेख चुकाए राग छतीस, रागी नादी आप अख्वांयदा। अञ्जील कुरान विच उनीस, शरअ हदीस वक्त चुकांयदा। त्रैगुण माया पीसण पीस, कलिजुग चक्की आप चलांयदा। छत्र ना झुल्ले किसे सीस, राज राजानां शाह सुल्तानां ख़ाक मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी जन्म कर्म प्रभ आपणे हथ्थ रखांयदा। लक्ख चुरासी मात बंधाया, आपणा संग रखांयदा। पुरख अकाल दयाल हरि रघुराया। सार शब्द सच धार, तन कटार समाया। दस्म द्वारी वेख द्वार, आपणा रंग रंगाया। शब्द घोड़ा इक्क अपार, नाम तंग कसाया। चिट्टे बस्त्र चिट्टी धार, सति सपैदी रूप समाया। कल्गी तोड़ा अपर अपार, जोती जोड़ा मेल मिलाया। अगम्म अगम्मा हो अस्वार, अगम्म अगम्मा धाम सुहाया। सुन्न अगम्मो आया पार, शब्द आपणा रूप वटाया। शब्द रूप हरि करतार, ब्रह्मण्ड विच समाया। करता पुरख करनहार, दिस किसे ना आया। लोआं पुरीआं पावे सार, गगन पातालां विच समाया। भेखाधारी भेख अपार, लेखा आपणा रिहा लिखाईआ। लोकमात कर विचार, लहिणा देणा मूल चुकाया। कलिजुग मंगे मंग भिखार, दाता दया दए कमाया। धरत धवल रोवे धाहां मार, ना कोई होवे जगत सहार, इन्द इन्द्रासण दए हुलार, करोड़ तेतीसा रिहा कुरलाया। शिव शंकर रोवे ज़ारो ज़ार, जगत जगदीसा रिहा उठाया। हरिजनां नेत्र खोल्ह बन्द किवाड़, पारब्रह्म भेव चुकाया। सतिजुग साचा वेखे दिवस दिहाड़, सति पुरख द्वारे अग्गे सीस झुकाया। जोत सरूपी किरपा धार, देवे वर सच्चे दरबार, नाम निशअक्खर साची झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख शब्द सार दस्म द्वार एका धार वहाया। दस्म द्वारी रंग महल्ला, प्रभ आपणा आप निभांयदा। सार शब्द इक्क इकल्ला, ब्रह्मण्ड विच समांयदा। जोती नूर हरि हरि सरूप अनूप वखांयदा। आदि पुरख इक्क इकल्ला, जुगादि जुगत बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोग जुगत आपणे हथ्थ रखांयदा। दस्म द्वारी घर साचे रचन रचाईआ। पंचम गाए एका गाना, पंचम धुंन उपजाईआ। पंचम देवे नाम निधाना, पंचम सच तख्त सुल्ताना, श्री भगवाना जोती नूर सवाईआ। आपे गोपी आपे काहना, आपे मण्डल रास रचाईआ। मारे तीर कटार नाम निशाना, बजर कपाटी पार कराईआ। आपे दीना आपे दाता, दाता सूरा आप अख्वाईआ। आपे बन्ह्हे हथ्थीं गाना, साची रंगण रंग रंगाईआ। आपे जाणे आपणा भाणा, आपे भाणे विच समाईआ। आपे चतर सुघड़

१५२
०६

स्याणा, सारंगधर आप अख्वाईआ। आपे चढ़े चढ़ाए उप्पर बिबाणा, आपे लोआं पुरीआं पार कराईआ। आपे पवण पाणी मसाणा, अवण गवण आप पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चार दिवारी एका घर, शब्द सिँघासण डेरा लाईआ। शब्द सिँघासण हरि सुल्ताना, दिवस रैण बिराज्जया। आपे जाणे आपणा गाना, आप आपणी मारे आवाज्जया। आप आपणे रंग समाना, आप आपणा रच्चया काज्जया। आपे होए जाणी जाणा, आप आपणा पड़दा काज्जया। आपे होए गुण निधाना, आपे रक्खणहारा लाज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दस्म द्वारी साचे घर सदा वसेरा ग़रीब निवाज्जया। ग़रीब निवाजा राज भिखारी, दर द्वार सुहांयदा। गुरमुखां करे जगत प्यारी, आत्म दर खुल्हांयदा। निर्मल जोत कर अकारी, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। शब्द खण्डा फड़ कटारी, पंचम मार मुकांयदा। साचा मेला मीत मुरारी, मीत मुरारा आप अख्वांयदा। देवे दरस अगम्म अपारी, हरि दरसी दरस दिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दस्म द्वारी साचा घर, घर साचे सेज विछांयदा। दर घर साचा हरि मेहरवान, आपणा आप उपांयदा। ना कोई दीसे दर दरबान, निगाहबान दिस ना आंयदा। ना कोई करे मात पछाण, पंचम पंच रहे कुरलाया। गुरमुख विरला चतर सुजान, हरि चरन कँवल चित लाया। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान, एका रंगण रंग रंगाया। अन्दर मन्दिर वेख मकान, गोबिन्द गीता रिहा गाया। आप बिठाए शब्द बिबाण, साचा मीता दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दस्म द्वारी एका घर, अन्दर मन्दिर रिहा सुहाया। दस्म द्वारी साचा अन्दर, प्रभ साची रचन रचाईआ। जोती जगे अन्दरे अन्दर, काया काची बणत बणाईआ। बजर कपाटी लाया जन्दर, साची हाटी बन्द वखाईआ। मनमुखां दिसे रैण अन्धेरी डूँघी कन्दर, कमलापाती दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दस्म द्वारी वेख घर, आत्म अन्तर खोज खुजाईआ। लहिणा देणा देवे बाकी, अमृत आत्म प्याए साची साकी, नाम प्याला इक्क रखाईआ। नाम प्याला सच द्वार, हरि साचा आप प्यांअदा। दस्म द्वारी खोल्ह किवाड़, दीपक जोत जगांयदा। दर घर साचे देवे वाड़, नौ द्वारे मुख भवांयदा। ना कोई दीसे पंचम धाड़, पंचम रागां शब्द सुणांयदा। लग्गे अग्ग ना तत्ती हाढ़, सीतल धारा अमृत आप वहांयदा। जोत प्रकाश बहत्तर नाड़, अन्ध अन्धयारा मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दस्म द्वारी वेख वखांयदा। एका आसण पुरख अबिनाशण, घट घट वासण आपणा आप वखांयदा। पुरख अबिनाशी हर घट वसया, जगे जोत अकाल। भगत जनां राह साचा दस्सया, जोत निरँजण अवल्लड़ी चाल। मिटे रैण अन्धेरी मस्सया, दीपक मस्तक साचे थाल। दर द्वारे आए नस्सया, हरि हरि साचा दो जहानां वाली। तीर निराला एका कसया, मारे बाण ना जाए खाली। जन भगत

अन्दर वसया, रसना जिह्वा घालन घाली। कोटन कोट प्रकाश रवि सस्सया, फल लगाए काया डाली। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका राह बण जगत मलाह हरि बेपरवाह कलिजुग अन्तिम सतिजुग साचा वसया। गुर नानक हरि शब्द है, शब्द रूप समाया। हरि शब्द गुर नानक है, रूप रंग रेख ना राया। गुर गोबिन्दा जोती भेख है, दिस किसे ना आया। हर घट आपे रिहा वेख है, साची बिन्दा गुरसिख मात उपजाया। आपे लिखणहारा लेख है, मनमुख निन्दया निन्दक आप लगाया। आपे दाता धारी केस है, मूंड मुंडाए भेव ना पाया। जन भगतां दर दरवेस है, दिवस रैण सेव कमाया। दो जहानी नर नरेश है, निरगुण सरगुण खेल खिलाया। चरन दासी ब्रह्मा शिव गणेश है, दर बैठे सीस झुकाया। सुरपति राजा इन्द करोड़ तेतीस अल्लड़ वरेस है, बाली बाल बुद्ध रखाया। शिव शंकर रहे वेख है, हरि साचा हुक्म सुणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां, एका देवे नाम धना, मन मन्दिर अन्दर आप टिकाया। नाम रत्न जगत अमोल, गोबिन्द घर हरि पाया। आपे तोलणहारा तोल, नाम कंडा इक्क रखाया। शब्द वजाए मृदंग ढोल, अनहद ताल रिहा वजाया। जन भगतां आत्म पड़दा देवे खोल्ह, राग अनादी दए सुणाया। शब्द सुहेला वसे कोल, मीत मीता आप अख्वाया। दिवस रैण करे चोहल, काया चोली डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे लए तराया। गुरमुख साचे सज्जणा, हरि मेला चरन द्वार। चरन द्वारी साचा मजना, दुरमति दए मैल उतार। अमृत आत्म पी पी रज्जणा, काया सीतल ठण्ढी ठार। शब्द नगारा एक वज्जणा, लोआं पुरीआं आप सुनार। लक्ख चुरासी भाण्डा भज्जणा, कलिजुग अन्तिम तेरी वार। मनमुख जीव तेरा किसे ना पड़दा कज्जणा, सृष्ट सबाई दुहागण नार। गुरमुखां गुर चरन द्वारे बहि बहि सजणा, हरि पाया कन्त भतार। आदि अन्त पड़दा कज्जणा, पुरख अबिनाशी पाए सार। त्रैगुण माया अग्नी दजणा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सुहेले लए वर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। सन्त सुहेला साचा मीता, आपे कन्त सुहागीआ। आप चलाए आपणी रीता, चरन धूढ़ कराए मजन साचा माघीआ। अन्दर मन्दिर परखे नीता, दुरमति मैल धवावे दाग़ीआ। बैठा रहे इक्क अतीता, शब्द जणाए अनहद रागीआ। गुरदुआरा सच मसीता, काया मन्दिर नाम वैरागीआ। नाम निधान अमृत रस पीता, सुरत सवाणी सोई जागीआ। एका रंग समाए हस्त कीटा, हँस बणाए फड़ फड़ कागीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचा साची नारी, एका सेजा सुत्ते पैर पसार, जगत बुझाई तृष्ना आग्गी।

❈ १६ मग्घर २०१३ बिक्रमी दर्शन सिँघ दे गृह दिल्ली दरबार ❈

हरि हरि ना ठण्ढा ना तत्तड़ा, दुःख रोग ना सोग। हड्ड मास नाड़ी ना कोई दीसे रत्तड़ा, ना कोई कर्म वियोग। मन बुद्ध ना देवे मतड़ा, काया रस ना दीसे भोग। ना कोई धीरज यति सन्तोखी यतड़ा, ना संजोग विजोग। एका हरि हरि शाहो साचे रंग रत्तड़ा, वेख दर घर हरि दरस अमोघ। बीजे बीज काया साचे वत्तरा, दो जहानी चुगे साची चोग। जगत सहिँसा रोग मात लथ्थड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे साचा वर, आप संवारे लोक परलोक। घर पाया जन आपणा, मिल्या हरि हरि राए। त्रैगुण माया विच ना तपणा, पंज तत्त ना कोई दिसाए। एका जाप जपाए जपना, लिखन पढ़न विच ना आए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस वखाए साचा घर, रंगण एका रंग रंगाए। मन अंस जगदीस है, मानसिक आप उपाए। आप झुलाए छत्र सीस है, आप ख़ाकी ख़ाक मिलाए। आप गाए गवाए राग छतीस है, वेद पुराण आप पढ़ाए। आप जणाए दन्द बतीस है, रसना जिह्वा नाल रलाए। आप रखाए इक्क हदीस है, गुर शब्द डण्डा मगर लगाए। गुर पूरे कोई ना करे रीस है, मन मनुआ शब्द डोरी बंध बंधाए। दोए जोड़ चरन झुकाए आपणा सीस है, पिछली भुल्ल बख़्शाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत जगदीस मन माया ममता पीसण पीस, आपणी बणत बणाए। हरि जगदीस मन बांध्या, बंधनहार गोपाल। दिस ना आए आत्म आंध्या, गुर शब्द होए कंगाल। फंदनहारा वड वड फांदया, आपे पकड़े काया डूँघे ताल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सरूपी होए विच दलाल। जगदीस हरि रंग है, हर घट आप समाए। मन मनुआ इक्क पतंग है, आकाश अकाशां विच उडाए। आपे भन्नृणहारा काची वंग है, नाम खण्डा हथ्थ उठाए। जिस जन निभाए आपणा संग है, ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलाए। नौ द्वारे बैठा लँघ है, दसवें शब्द सिँघासण आसण डेरा लाए। चारों कुन्ट धारा गंग है, दिवस रैण वहाए। पंचम शब्द वजाए मृदंग है, नाद अनादी गीत सुणाए। हरि बैठा शब्द रंगीले सच पलँघ है, दस्म द्वारी डेरा लाए। ऐर गैर ना सके कोई लँघ है, बजर कपाटी कुण्डा लाए। जोती नूर बहु बहु रंग है, साची सेजा डगमगाए। आपे चले चाल बेहंग है, जिस जन आपणी दया कमाए। मन मारे ना कोई तरंग है, शब्द सागर धार वहाए। आपे होए अंग संग है, संग सुहेला मीत मुरार आप हो जाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे शब्द वर, मन पंखेरू दहि दिशा ना धाए। मन उडारी दहि दिशा, दिवस रैण लगांयदा। मनमुख जीवां पाया हिस्सा, आपणी वंड वंडांयदा। लोइण तीजे हरि दरस ना दिसणा, तामस तृष्ना ना कोए मिटांयदा। जूठी झूठी मोह माया चक्की पिसणा,

पंचम झेड़ा ना कोई चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, मन मति बुध वखाया काया घर, नगर खेड़ा नौ द्वार जगत जुगत खोल्ह वखांयदा।

हरि नाम तीर्थ सच यात्रा, गुरमुख विरला विच संसार। अठ्ठ सठ्ठ अन्धेरी रात्रा, धीआं भैणां होण ख्वार। पढ़ पढ़ थक्के वेद शास्त्रा, पारब्रह्म ना पायण सार। भरमे भुल्ले जाति पात्रा, ज़ात पात ना हरि निरँकार। ला ला थक्के लगां मात्रा, हरि शब्द ना कोई आकार। खाणी बाणी होया नात्रा, नाम नरायण ल्या विसार। तन पाया जूठा झूठा गात्रा, माया ममता लोभ मोह शृंगार। मिले मेल ना कमलापात्रा, काया मन्दिर चार कुन्ट दहि दिशा धूआँधार। कोए ना पुच्छे किसे वातड़ा, रवि ससि ना सुणे पुकार। धरत मात ना दए दिलासड़ा, रोवे धाहां मार। पंचम तत्त पंच विकार करे निवासड़ा, पंचम शब्द ना सुणे धुन्कार। गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदवाला अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ बहि बहि करन हासड़ा, राम रामा नाउँ विसार। लोभ हँकारी भरया कासड़ा, साध सन्त भिक्षू फिरन भिखार। निज घर आत्म निज घर वासी ना करे वासड़ा, सुणे सुणाए ना कोए पुकार। ना कोए जाणे खेल मात पाताल आकासड़ा, लोआं पुरीआं ना वेख विचार। ब्रह्मा ब्रह्म ना दए दिलासड़ा, चार वेद रहे पुकार। शिव शंकर वेखे खेल तमासड़ा, मनमती जीव होइण ख्वार। इन्द इन्द्रासण छड्ड छड्ड नासड़ा, करोड़ तेतीसा हाहाकार। कलिजुग अन्तिम अन्त होए विनासड़ा, आप वहाए वहिंदी धार। भारत खण्ड हरि शब्द इक्क प्रकाशड़ा, नौ खण्ड पृथ्वी देवे धार। प्रगट होए हरि शाहो शाबासड़ा, जोती नूर करे उज्यार। रसना कोए ना लाए मदिरा मासड़ा, राज राजानां शाह सुल्तानां करे ख़बरदार। जगत अन्धेरा जाए विनासड़ा, दीपक जोत होए उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, वेख वखाए काया घर, कवण तीर्थ कवण करे कराए साची यात्रा।

हरि चरन कँवल प्यार, भगती भगत उपाया। भगती रूप अपार, हरिजन इच्छया विच रखाया। हरिजन इच्छया एका धार, हरि दर्शन नैणा पाया। हरि दर्शन अगम्म अपार, तामस तृष्ना दए मिटाया। साचा मेला इक्क द्वार, एकँकारा मेल मिलाया। विछड़ ना जाए दूजी वार, साची जुगती जुगत बणाया। भगत भगवन्ती साची धार, साचा कन्त रही हंढाया। दिवस रैण करे प्यार, आत्म सेजा इक्क विछाया। मंगे मंग दोवें भुजा पसार, चतुर्भुज मेल मिलाया। आपे देवे इक्क हुलार, गोझ आपणा आप खुल्हाया। भगवन्त भगती भगत एका रंग अपार, आपणा दए चढ़ाया। साची भगती विच संसार, हरि

सरन सरनाई चरन कँवल कँवल चरन चित लाया। भगती हरि का रूप है, हरिजन विच समाए। दिस ना आए अन्धकूप है, सृष्ट सबाई रही बिल्लाए। ना कोई धुखाए साचा धूप है, हरि मन्दिर अन्दर धूआँधार ना कोई दिसाए। आपे फिरदी चारे कूट है, गुरमुख सोए रही जगाए। शब्द पंघूड़ा रही झूट है, गोबिन्द साचा रिहा हिलाए। साची मस्तक जोत निरँजण पोह रही फूट है, अज्ञान अन्धेर मिटाए। जूठ झूठ फल रिहा टूट है, जिस जन आपणा राह वखाए। पंज चोर ना सकण लूट है, दर द्वार दए दुरकाए। तीर निराला जाए छूट है, जन हिरदे पार कराए। अन्तिम अन्त मनाए जो जन गए रूठ है, जुग जुग विछड़े मेल मिलाए। पुरख अबिनाशी जिस जन उप्पर जाए तूठ है, भगती भगतन सेवा लाए। भगत सुहेले एका मूठ है, एका दूजा संग निभाए। मनमुखां खाली ठूठ है, सच वस्त दिस ना आए। लोभ मोह विकारा नाता जगत झूठ है, निन्दक निन्दया विच रखाए। कलिजुग काया रही कूठ है, साचा राह ना कोई दिसाए। जोती जोत सरूप हरि, जुग जुग आपणी जोत धर, भगतन वेखे साचा घर, साची भगती सेवा लाए। हरिभगत जगत मलाह है, जुग जुग आप बणांयदा। जन भगतां फड़ फड़ वखाए बांह है, महिंमा अगणत ना कोई गिणांयदा। इक्क जणाए जपाए सच्चा नां है, सति सन्तोख विच रखांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ है, दुरमति मैल धवांयदा। दर घर दवाए ठण्ढी छाँ है, गुरमति साची जोत जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन देवे जगत वर, भगती भगतन संग रखांयदा। हरिभगती हरि भगवन्तया, भगतन रूप अपार। आप उपाए आदिन अन्तया, जीव जन्त ना पाए सार। हरिजन साचे संग रलाए, धाम अवल्ले आप बहाए, आप आपणी किरपा धार। काया महल्ले डेरा लाए, औंदी जांदी दिस ना आए, वेखणहार सर्ब संसार। हरि हरि गोबिन्द गोबिन्द गीत गाउँदी जाए, मेल मिलाए कन्त भतार। साची सेजा इक्क विछाउँदी जाए, तन फूलन हार परोंदी जाए, आप आपणा कर प्यार। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, भगती सुहाए भगतन दर, मेल मिलाए विछड़े यार।

१५७
०६

असीस जगदीस हरिजन प्यारया, मिले मात वड्याई। रसना गाया नाउँ निरंकारया, ना होए अन्त जुदाई। तन मन्दिर अन्दर इक्क उसारया, हरि बैठा कुण्डी लाई। शब्द सरूपी देवे पहरया, नाम खण्डा हथ्थ उठाई। दिस ना आए नौ द्वारया, साध सन्त चढ़ चढ़ थक्के बैठे मुख भवाई। साचे मन्दिर किसे ना वाड़या, मिल्या मेल ना साचे माही। जोत जगी ना बहत्तर नाड़या, लोचन तीजे ना होई रुशनाई। जो जन आए दर मंगे मंग अपारया, देवणहार वड संसारया, सदा

सुहेला इक्क इकेला शब्दी जोती एका मेला देवे ठण्ढीआं छाई। शब्द गुर जगत बलवान, आदि अन्त ना कदे विनास्सया। इक्क झुलाए धर्म निशान, साधां सन्तां दए भरवास्सया। जूठे झूठे सर्ब मिट जाण, खाणी बाणी होए हैरान, हाहाकार पृथ्वी आकाश्या। हरिजन साचे सुख सहिजे सहिज समान, गोबिन्द गोबिन्द रसना गान, लेखा चुक्के आवण जाण दस दस मास्सया। मिले नाम इक्क निधान, लोकमात ना दिसे कोई निशान, दो जहानां सच बिबाण, काया मण्डल मण्डप पावे रास्सया। जोती जोत सरूप हरि, शब्द सरूपी देवे वर, किरत कमाई करनी कर, हरि हरि सद सद काया घर रक्खे आपणा वास्सया। काया मन्दिर चार दिवारी, हरि साची रचन रचाईआ। निर्मल जोती कर आकारी, आप आपणी डगमगाईआ। शब्द सरूप सच धुन्कारी, धुन आत्मक रिहा कराईआ। परा पसन्ती मधम बैखरी चारे बाणी रचन रचाईआ। अंडज जेरज उत्भज सेत्ज खाणी, चारे वेख वखाईआ। जन भगतां देवे नाम शब्द गुर साचा हाणी, आदि अन्त ना होए जुदाईआ। सुरत सवाणी बणे साची राणी, दर घर आपणा मूल पछाणी, मिले मेल साचे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, जन हरि देवे साचा वर, दर आए दया कमाए नाम वस्त आत्म झोली भगत भिच्छया आपणी पाईआ। वर वरन जगत गुर मीता, गुर मन्त्र शब्द दृढ़ाया। आपे जाणे आपणी रीता, गीता ज्ञान रूप समाया। हरि हरि वसया आत्म चीता, ध्यान इक्क रघुराया। आपे करे पतित पुनीता, सर सरोवर इक्क इशनान कराया। गुरमती मन जाए जीता, मनमती दए तजाया। वा ना लगे मात तत्ती, सांतक सीतल सीता दए कराया। जोत जगाए लिलाट लिलाटी, दीपक दीप प्रकाश कराया। नाम रखाए साची हाटी, चौदां हट्टां खोल् वखाया। हरिजन लाहा एका खाटी, नाउँ रसना गोबिन्द गाया। भाग लग्गे काया माटी, साचा लेखा लेख लिखाया। धर्म राए ना देवे चट्टी, जम जंधार नेड़ ना आया। लक्ख चुरासी ना तपया भट्ठी, हरि जोती मेल मिलाया। त्रैगुण वस्त पंज तत्त होई इक्की, आप उपाए आपे दए मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ नाउँ भगती वर, जुगती आपणे हथ्थ रखाया। सोहँ डण्डा विच ब्रह्मण्डां, हरि आपणा इक्क लगांयदा। गुरमुख पायण साची वंडा, पार कन्ढा आप करांयदा। खेल चुकाए जेरज अंडां, आप आपणी दया कमांयदा। सो पुरख निरँजण एका देवे खण्डा, हँ हँगता रोग मिटांयदा। दो जहान ना होवे रंडा, साचा संग आप निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, मनमति घमंडा दर द्वारे रहिण ना पांयदा। हरि शक्ती भगत अधीन है, दासी दास अख्वाए। हरि हरि हरिभगत जिउँ जल मीन है, जल मीन आप अख्वाए। वेख वखाणे लोकां तीन है, दिवस रैण कवण रिहा बुझाए। हरिभगत अछल अछल्ला शक्ती लए छीन है, दोए जोड़ सीस झुकाए। हरि शक्ती रंग नवीन है, आप आपणा भेख वटाए। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगतन इच्छया पूर कर, कला धार आप हो जाए। कल धार कलवन्तया, अकल कला भरपूर। हरिजन सुणे बेनन्तया, आपे नेड़े आपे दूर। आप आपणा रूप वटन्तया, प्रगट होए हाज़र हज़ूर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिभगत द्वारे सदा सदा चोबदारे, भेखाधारी भेख वटन्तया। आदि शक्त अनरंग है, शक्त जोग बहु रूप। जुगा जुगन्त निभाए संग है, सर्ब जीआं शाहो भूप। सभ घट अन्दर बैठा लँघ है, रक्खे वसेरा अन्ध कूप। हरिजन मंगे साची मंग है, हरि जोती शब्दी काया चोली जाए भूप। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप उपाए आप मनाए, आपे विछड़ आपे जाए रूठ। रूप रंग हरि खेल है, खेलणहार लिखारी। आप कराए आपणा मेल है, देवे दरस अगम्म अपारी। सद वसे रंग नवेल है, वेखण सुणन तों रहे बाहरी। दासी दास गुरु गुर चेल है, गोबिन्द हरि गिरधारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूर कराए आस प्रगट होए शाहो शाबाश, भेव अभेदा अछल अछेदा ना कोई लिखे लेख लिखारी।

कलिजुग हाहाकार, दर द्वार दुहाईआ। दर घर रोवे धाहां मार, ना दिसे कोई सहाईआ। अन्तिम आई हार, होणी मात जुदाईआ। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, दिवस रैण रिहा कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति रिहा समझाईआ। कलिजुग उठ बलधार, प्रभ साचे रसन उचारया। गुरमुखां दर वेख द्वार, दोवें जोड़ कर निमस्कारया। आपे बख्शे बख्शणहार, बख्शणहारा सद अख्वा रिहा। गुण अवगुण ना करे विचार, गुण निधान दया कमा रिहा। सुण पुकार करे अधार, पुण छाण जगत करा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, साचे मार्ग आपे ला रिहा। जगत क्रिया कर्म विचार, किरती किरत कमाईआ। धर्मी धर्म गया संसार, धीरज यति ना कोई वखाईआ। वरनी वरन हाहाकार, ज़ात पात रही कुरलाईआ। गोबिन्द धारा गुप्त ज़ाहिर, दिस किसे ना आईआ। अल्ला हू रिहा ललकार, ऐली अल्ला नाम सिखाईआ। मुहम्मद मुहम्मदी रिहा उधार, कलमा एका नबी पढ़ाईआ। सतिजुग साचा नेत्र रिहा उग्घाड़, लए मात अंगड़ाईआ। प्रभ अबिनाशी पैज संवार, जन्मे जन्म रिहा भवाईआ। आप सुहाए बंक द्वार, कर्मी कर्मा लेख लिखाईआ। एका नाउँ करे प्यार, रंगण काया रिहा चढ़ाईआ। सोहँ गाणा विच संसार, दूसर दर ना मंगण जाईआ। चार वरन बहाउँणा इक्क द्वार, दर दुआरा खोल्ह वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कल रिहा वरताईआ। सतिजुग साचा शब्द मलाह, लोकमात उपनया। पुरख अबिनाशी दस्से राह, जन भगतां बेड़ा बन्न्हया। पकड़ उठाए थाउँ थाँ, दिस ना आए आत्म अन्नयां। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग वखाए इक्क दर, जगत द्वारे देवे डन्नया। सतिजुग साचे मिले वड्याई, देवणहार दातारा। सोहँ शब्द होई कुड़माई, चार कुन्ट जै जै जैकारा। मात पाताल आकाश होए रुशनाई, मेट मिटाए धुँदूकारा। गुरसिख गोबिन्द मिलाए फड़ फड़ बांही, देवे जगत सहारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचे साची धार, हरि नर चलाए विच संसार, करे कराए आपणी कारा।

कथा कहाणी जगत है, गोबिन्द भेव अभेव। ना कोई वखाणे वेला वक्त है, ना कोई जाणे वेद कतेब। आप आपणी यथा शक्त है, ना गाए रसना जिह्व। जोती जोत सरूप हरि, आपे वसया सच घर, जगत जगत जगत दिसे फरेब। भाणा हरि बलवान है, गोबिन्द रिहा सुणाए। गोबिन्द चरन ध्यान है, प्रभ चरन कँवल रिहा चित लाए। रसना शब्द ना ल्या वखाण है, नाअरा आह दा कवण लगाए। जोती जोत सरूप हरि, आप वखाया इक्क दर, दर दुआरा इक्क सुहाए। गोबिन्द भाणा मन्नया, हाहाकार ना कोए विचार। ना वर सराप ना देवे डन्नया, प्रभ चरन रिहा अधार। जनणी जन पूत सपूता जिस जन जणया, सो जन पावे सार। हरि भाणा हरि गोबिन्द गोबिन्द रूप मन्नया, सिँघ फतहि ना कोए उधार। जगत विकारी जूठा झूठा डन्नया, पेट पुजारी करे पुकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द गोबिन्द इक्क अधार। हरि गोबिन्दा, गोबिन्द रूप समांयदा। आप मिटाई सगली चिन्दा, साची बिन्दा आप उपजांयदा। सूरा नरेश वड मृगिन्दा, सागर सिन्धा आप अख्वांयदा। हरख सोग चिन्त ना कोई चिन्दा, नाअरा हा ना रसना गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, गुर गोबिन्दा दित्ता वर, ना जन्मे ना जाए मर, पूत सपूता एक रंग समांयदा। नूरी खण्डा किसे ना वेख्या, ना कोई जाणे तेज धार। जगत जहान आत्म रंडा सभ ने वेख्या, दर दर घर घर हाहाकार। पार कन्ढा किसे ना वेख्या, गुर चरन चरन जाए बलिहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द वसाया इक्क घर, भरमे भुल्ला भरम संसार। शब्द घोड़ा हरि निरँकार है, नीला नाउँ रखाया। जोती जोड़ा सच्ची सरकार है, पीली धार बंधाया। होया आप आपे अस्वार है, कल्गी तोड़ा सीस सजाया। दर घर साचे होया बाहर है, लोआं पुरीआं विच समाया। भरमे भुल्ला भरम संसार है, दस दस्मेस दिस ना आया। भेखाधारी भेख अपार है, जोती जामा भेख वटाया। गुर गोबिन्दा काया अकार है, काया चोली रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी अवस्था रिहा लिखाया। बाल अवस्था बाली बुध, बालक बाल निधानया। शब्द घोड़े बैठा कुद्द, खेले खेल दो जहानया। नाम सरूपी साचा युद्ध, रसना चिला

तीर कमानया। भेव ना पाए मन मति बुध, खेले खेल गुण निधानया। आउण ना देवे किसे सुध, ग्रन्थी पन्थी पंडत पांधे पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराणया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत तेरां तेरी धार, नानक गाई विच संसार, गोबिन्द वधाई जै जैकार, जोत जगाई हरि निरँकार, खेले खेल मात महानया। साल तेरवां जगत जवानी, जोबन हरि रंग रतया। सोहँ मुखी तीर कानी, मारे शब्द पंचम तत्तया। गुर गोबिन्दे एह निशानी, जन भगतां चरन बंधाए नतया। तीर कमान ना हथ्थ उठावणी, काया रंगण चोली रत्तया। छैल छबीले चढ़दी जाए मात जवानी, सृष्ट सबाई लग्गे वा ना तत्तया। पंच विकारा पंच जैकारा ना कोई दिसे निशानी, आपे जाणे आपणी मतया। भेव ना राया लोकमात खाणी बाणी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया वेख घर, आप टिकाई आपणी सतया। नीला घोड़ा नज़र आए, नीली धार वहाउँदा ए। जोती जोड़ा शब्द जणाए, नाम खण्डा हथ्थ उठाउँदा ए। चारों कुन्ट पए दुहाई, मनमुख फिरंगीआं आप मिटाउँदा ए। गुरमुख साचे सच सरनाई, अंगीकार अंग लगाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, गोबिन्द काया चाढ़े रंग, आप निभाए आपणा संग, मनमुखां दिस ना आउँदा ए। चिट्टा अस्व चिट्टी धार, हरि साचे रूप समाया। शब्द
१६१ सरूपी हो त्यार, सोलां कलीआं आसण लाया। शब्द खण्डा हथ्थ दो धार, ब्रह्मण्डां वेख वखाया। कल्गी तोड़ा सीस अपार, १६१
०६ आप आपणा रिहा सजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द वसया काया घर, रूप अनूप सति ०६
सरूप शाहो भूप अख्वाया। नेत्र अन्ध भागां मन्द, आपणा आप ना जाणया। गुर गोबिन्द ना वेख्या चढ़या चन्द, ना जाणे गुण निधानया। रसना गा ना सके दन्द, मिल्या माण ना विच जहानया। जगत विकार रखाया रसना गन्द, साचा मेल ना हाणी हाणीआं। आत्म उपजिआ ना परमानंद, नंद किशोर ना किसे विखाणया। जोती जोत सरूप हरि, एका वेखे सच घर, काया मन्दिर कवण टिकाणया। गुर गोबिन्दा जोत जगाए आसण लाए, वेखे इक्क बिबाणया। गुर गोबिन्दा कवण रंग, कवण रूप वटाया। कवण रखाया आपणे संग, कवण कूट सहाया। कवण वजाए इक्क मृदंग, कवण हथ्थ उठाया। कवण दुआरा बैठा लँघ, कवण धाम सुहाया। काया मन्दिर दिसे तृष्ना भुक्ख नंग, सच सुच्च सन्तोख रंग ना किसे चढ़ाया। माटी काची काची वंग, धार ना वेखी अमृत गंग, गुर चरन नहावण किसे ना नुहाया। दूर दुराडा ना कोई दिसे पन्ध, गुर गोबिन्दा जिस जन आपणे घर वसाया। जोती जोत सरूप हरि, एका पुच्छे साचा घर, कवण सिँघासण पुरख अबिनाशण, नेरन नेरा दूरन दूरा रिहा दरस दिखाया।

✻ १७ मग्घर २०१३ बिक्रमी कुरुक्षेत्र विच पंडतां नूं मिले अते शब्द उचारया ✻

आदि पुरख अगम्म, आपणा आप उपाया। आपे आप पया जम्म, मात पित ना किसे गोद उठाया। पवण स्वास ना कोई लए दम, हड्ड मास नाड़ी चम्म ना कोए रखाया। नेत्र नीर ना वगे छम्म छम्म, आलस निन्दरा विच ना आया। तृष्ना भुक्ख प्यास ना खाए तम, नित्त नवित्त आपणी बणत बणाया। गगन पाताल ना दिसे कोई थम्म्ह, मन्दिर अन्दर ना कोई सुहाया। आपे जाणे आपणा कम्म, सूरज चन्न रवि ससि मण्डल मण्डप कोई दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे रंग समाया। जोती नूर आकार कर, हरि आपणा आप विचारया। एका एक अधार कर, सति पुरखां नाउँ अपारया। चारों कुन्ट दहि दिशा पसार कर, करे खेल अपर अपारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी बणत आप बणा रिहा। आपणी बणत हरि आप बणाई, आपणा आप उपनया। जीव जन्त कोई दिस ना आई, मात पाताल आकाश ना दिसे बन्नया। ब्रह्मण्ड खण्ड वरभण्ड ना कोई वंड वंडाई, ना कोई छप्पर छन्नया। उत्भज सेत्ज जेरज अंड ना कोई रचन रचाई, जनणी पूत ना कोई जणया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा बेड़ा आपे बन्न्ह्या। आप आपणा रंग रंगाए, अचरज खेल रचाईआ। जोती जोत नूर उपाए, नूरो नूर करे रुशनाईआ। शब्द तूर इक्क उपाए, चारों कुन्ट रिहा दुड़ाईआ। ब्रह्मण्ड वंड निशअक्खर वक्खर सर्ब समाऐ, साची रास बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची रचना आप रचाईआ। आप आपणा कर्म कमाया, भेव दिस ना आई। जन्म कर्म कोई भेव ना राया, धीरज तत्त रहे ना राई। वरन बरन ज़ात पात ना कोई गोत बणाया, ना कोई सरन रहे सरनाई। नेत्र हरन फरन ना कोई रखाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी खेल आपणे हथ्थ रखाई। आप आपणा काज रचाया, करी इक्क कुड़माईआ। एका एक सीस ताज रखाया, दिस किसे ना आईआ। वड राजन राज शाह नवाब आप अख्वाया, दूसर कोई दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी इच्छया आपे रिहा उपाईआ। साची इच्छया, हरि करतार एका एक विचार। पारब्रह्म साची भिच्छया, खेले खेल खेलणहार। देवत देव ना किसे दिस्सया, भेव ना पायण करे विचार। लेखा लेख ना किसे लिख्या, वेद कतेब ना गुप्त ज़ाहिर। आदि अन्त ना होए मिथ्या, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे बन्न्हे आपणी धार। आई इच्छया हरि भगवान, साची रीती जगत चलांयदा। कँवल नाभी पाई भिच्छया, ब्रह्मा सुत उपजांयदा। त्रैगुण माया साचा तत्त लेख लिख्या, लिखणहारा दिस ना आंयदा। आउँदा जांदा किसे ना दिस्सया, ना कोई वेख वखांयदा। वेद

कतेब निशअक्खर वक्खर किसे ना लिख्या, पारब्रह्म ब्रह्म जणांयदा। ब्रह्म वस्त ना होवे मिथ्या, पारब्रह्म मेल मिलांयदा। ब्रह्मा वेता एका धार दर पाई सिख्या, चरन कँवल कँवल चरन चित लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मे देवे नाम वर, जोती नूर साचे मन्दिर धर, ज्ञान जोत दीपक प्रकाश एका एक जलांयदा। ब्रह्मा सुत उपनया, किरपा होई अपार। मिल्या नाम सच्चा धन धनया, रसना रहे उचार। पुरख अबिनाशी साचा मन्नया, देवे वर अपर अपार। ना कोई सूरज ना कोई चन्नया, धरत धवल ना कोई सहार। जल बिम्ब कवण बेड़ा रिहा बन्न्या, देवणहार कवण अधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वस्त ब्रह्मे देवे दस्त, लक्ख चुरासी लए करे कराए पसार। कवण वस्त हरि झोली पाई, ब्रह्मे खुशी मनाई। काया डोली दए बणाई, पंज तत्त दए जणाई, हौली हौली होए जणाई, शब्द शब्दी विच रखाई, निर्मल जोत करे रुशनाई, चेतन्न चेतन्न रूप अख्वाईआ। वेखण वेख रहे थाउँ थाँईं, वेखणहारा दिस ना आईआ। पकड़ उठाए फड़ फड़ बाहीं, ब्रह्मा चतुर्भुज दया कमाईआ। देवणहारा ठण्ढीआं छाँईं, अमृत आत्म धार इक्क वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा दित्ता वर, ब्रह्मे ब्रह्म भण्डारा दित्ता भर, ब्रह्म भिच्छया पुरख अबिनाशी कर कर इच्छया, आपणी वस्त साची दात वड करामात इक्क सुग़ात झोली पाईआ। कवण वर कवण वरन, दीआ हरि भगवन्त।
१६३
०६
कवण रूप कवण रंग कवण धाम भूमिका अस्थान, ब्रह्मे मंगी साची मंग। कवण राम कवण शाम, कवण देवे साचा ताम, कट्टणहारा भुक्ख नंग। कवण आत्म दित्ता एका जाम, सच दुआरा गया लँघ। जोती जोत सरूप हरि, ब्रह्मे दित्ता इक्क वर, कर्म धर्म जरम ना कोए अंग।

पारब्रह्म प्रभ एक है, एका रंग समाए। लक्ख चुरासी साची टेक है, आपणी आप रखाए। पंचम तत्त काया बुत्त रिहा वेख है, आपणा नूर उपाए। आपे लिखणहारा लेख है, लिखत लिलाटी लेख लिखाए। पारब्रह्म ब्रह्म आपे रिहा वेख है, वेखणहारा दिस ना आए। जोती नूर पया जम्म है, शब्द सिँघासण डेरा लाए। ना फिरना तृष्ना वासना, आलस निन्दरा विच ना आए। जोती नूर इक्क प्रकाशना, धुन शब्दी संग रलाए। दर घर एका रक्खे वासना, वास निवासा साची थाएँ। पुरख पुरखोतम इक्क प्रभासना, भरम भुलेखा कोए ना पाए। हरि हरि होए दासी दासना, दासी दास आप अख्वाए। वेख वखाए पृथ्वी आकाशना, अन्ध अंधयार ना नज़री आए। साचे मण्डल पावे रासना, सच समग्री इक्क रखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म ब्रह्म काया काअबा दए जरम, अंसा बंसा आप अख्वाए। अंस बंस हरि रघुनाथ,

बणाए सृष्ट सबाईआ। आप रखाए आपणा साथ, विछड़ कदे ना जाईआ। सगल वसूरे जायण लाथ, दरस दर्शन पाईआ। कथा कथनी चले गाथ, कथ कथ रही गाईआ। नक्क मूंह ना दिसे हाथ, ना कोई सीस सुहाईआ। संग सुहेला त्रैलोकी नाथ, त्रैगुण परे हटाईआ। इक्क वखाए साचा राथ, रथ रथवाही आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, पारब्रह्म ब्रह्म इक्क दर, घर साचा बंक सुहाईआ। अंसा बंसा, पारब्रह्म ब्रह्म रूप समाया। एकँकारा होए सहँसा, गुण सहिँसा वेख वखाया। पंचम धाड़ नेड़ ना आए कंसा, दुष्ट हँकारी मार मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्म ब्रह्म रूप समाया। ब्रह्म जणाई हरि दर, वज्जे ढोल मृदंगया। इक्क वखाए सच घर, देवे दान दाता मूंहों मंग्गया। आपणी किरपा आपे कर, आप आपणी रंगण रंगया। नौ द्वारे बन्द कर, साचे मन्दिर आप बहाए शब्द सरूपी इक्क पलँघया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन कँवल इक्क नुहावण साचा नुहाए, सीतल धारा सीस वहाए, अमृत आत्म गन्गया। ब्रह्म रूप अथाह, प्रभ हथ्थ वड्याईआ। वेख वखाए बेपरवाह, भेव ना जाणे राईआ। इक्क जपाए आपणा नाँ, दूसर कोए दिस ना आईआ। आपे पिता आपे माँ, पिता पूत आप अख्वाईआ। ना कोई दीसे भैण भ्रा, साक सज्जण कोई ना गाए बत्ती दन्द, जगत भार ना कंध उठाईआ। गीत गोबिन्दा सुहागी छन्दा, इक्क उपजाए परमानंदा, निजानंद निज घर रूप वखाईआ। पारब्रह्म सदा बख्शंद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म ब्रह्म करे जणाईआ। ब्रह्म जणाई बोध अगाध, अलख अगोचर अगम्मा। आप आपणा बैठा साध, मिटाई तामस तम्हा। एका सुणे अनादी अनाद, हरि हरि नामा नमा। साचा दर्शन माधव माध, वेख वखाए काया चम्मा। खोज खुजाए लोक ब्रह्माद, हरि हरि खेल बिन बिन थम्हा। ना कोई वाद जगत विवाद, रसन ना गाए दम दमा। आप आपणा घर ल्या लाध, पुरख अबिनाशी दित्ती दाद, ब्रह्म ब्रह्म सरूपी आपे जम्मा। ब्रह्म भेद अभेद है, जाणे जानणहार। जीव अछल अछेद है, खेले खेल विच संसार। लिख लिख थक्के वेद कतेब है, पुराण अठारां रहे पुकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जीव जीवत लए उधार। जीव इच्छया जगत है, जगत मूल सम्बंध। काया माटी पंज तत्त है, दूई द्वैती भरमां कंध। मन मनुआ जाणे लखत है, विकार हँकारी एका जंद। इक्क विछोड़ा आत्म शक्त है, निज घर ना पाए अनन्द। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जीव उपाए जगत जुग जोग जुगत गुणी गहिंद। जीव जहानां धंदया, दिवस रैणी कार। मोह माया ममता फन्दया, मिल्या मेल ना मीत मुरार। काम क्रोध हँकारा अंध्या, तन मन्दिर धूआँधार। बजर कपाटी वज्जा जंदया, ना कोई खोल्हे बन्द किवाड़। ना कोई प्रभाती सन्धया, नाता लग्गा पंचम धाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

जीवत जीव जगत लाए विवहार। जगत विहारा जीव जन, जागरत दिशा वखाईआ। नाम नगारा ना चोट तन, साकत इक्क अख्वाईआ। भाण्डा भरम काया तन, मन हट्ठ रिहा कमाईआ। दोहां विछोड़ा खिन खिन, एका दूजा भउ मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आपे देवणहारा डन्न, आपे बेड़ा देवे बन्न, काया मन्दिर साचे तन, एका एक एक बणत बणाईआ। तन यात्रा जगत है, जीव जन्त करन। लेख लिखाया वेद शास्त्रा, मुनी मुनीश्र भिन्न भिन्न। चरन चरनोदक हरि हरि कमलापात्रा, लेखे लाए तीर्थ जाए छिन्न छिन्न। जोती जोत सरूप हरि, आत्म स्वास वेख विखास, लेखा लिखे गिण गिण गिण।

✻ १८ मग्घर २०१३ बिक्रमी कुरुक्षेत्र ✻

हरि शब्द त्रैलोकी नाथ, जुग जुग बणत बणांयदा। जुग जुग निभाए आपणा साथ, सतिजुग द्वापर त्रेता वेख वखांयदा। राम रमईआ आप रघुनाथ, रावण लंका गढ़ हँकार आप तुड़ांयदा। काहन घनईआ कृष्न मुरार, द्वापर अन्त रेख मिटांयदा। इक्क वहाई मात नईआ, अठारां अखशूहणी नाम रखांयदा। इक्क अक्षूणी भेव खुल्हईआ, लक्ख चुरासी गणत गिणांयदा। पंचम राजा पंचम ताजा पंचम रक्खे आपे लाजा, पंचम मोर मुकट सुहांयदा। आप रचाया आपणा काजा, ना कोई जाणे राजन राजा, जीव हँकारी कर विचारी अन्तिम अन्त मिटांयदा। महांसार्थी पावे सारी, रथ रथवाही आप मुरारी, अर्जन रीता नाम गीता पतित पुनीता एका एक सुणांयदा। चरन कँवल रखाए इक्क प्रीता, सृष्ट सबाई आपे जीता, तीर कमान आप उठांयदा। वेख वखाणे हस्त कीटा, ना कोई जाणे कौड़ा मीठ, रूप वराटी इक्क अनडीठा आपणा आप वखांयदा। जीव जन्त हरि पीसन पीठा, प्रगट होए हरि बीठल बीठा, मोहण माधव नाम रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जुग जुग आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी आप उपाए आपे मेट मिटांयदा। द्वापर दोआ धार, दोवें रंग वखांयदा। आपे होए कृष्न मुरार, नाम बंसरी इक्क वजांयदा। गोपी काहना तन शृंगारी, बैन मुकट साचे कुण्डल मूंड वखांयदा। नाद तराना इक्क अपार, जन भगतां आत्म अन्दर इक्क वखांयदा। सच निशाना मारे मार, तत्त सति विच समांयदा। दोहां मेला इक्क द्वार, दोवें धार वहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात कर अकार, जगत रीती एका एक वखांयदा। जगत रीती राजन राज, आपणी आप चलाईआ। कौरो बख्शे तामस ताम, तामस तृष्ना अग्ग वधाईआ। पंच जणाए स्वास स्वास, आपणा नाम जपाईआ। अट्ठे पहर रहे पास, विछड़ कदे ना जाईआ। सदा सुहेला पृथ्वी आकाश, दरबाशा माण

१६५
०६

गंवाईआ। निर्धन हरि पूर कराए आस, सरधन रूप समाईआ। आपे पावे साची रास, नट नटूआ नाम रखाईआ। भगत सुहेला होया दास, बिप्पर सुदामा गले लगाईआ। द्रोपद मेला सर्ब गुणतास, हरि अंगी अंग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आप उपाए, आपे दए मिटाईआ। जुग द्वापर अन्त कर, युजर दए दुहाईआ। वेद अथर्बण मात धर, कलिजुग करे कुड़माईआ। आप आपणी खेल कर, बैठा कला छुपाईआ। जीव जन्त राए धर्म दी जेलू धर, कुण्डा बैठा लाईआ। पंचम पंचां मेल कर, राज युधिष्टर योग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका एक बचन अलाईआ। भगत युधिष्टर हरि द्वार, दोए जोड़ करे निमस्काररया। अन्तिम मेला कवण द्वार, दर घर साचे आप पुकाररया। खेले खेल विच संसार, हरि काहना कृष्न मुराररया। भगत सुहेला दूजी वार, आए विच संसाररया। कलिजुग वेला वक्त विचार, निहकलंक लए अवताररया। शब्द खण्डा तेज कटार, मारी जाए वारो वाररया। ना कोई जाणे आर पार, सागर डूँघा वड संसाररया। तिक्खी आपणी धार, ना कोई सके मात सहाररया। ब्रह्मा शिव देवत सुर रहे विचार, देवी देवा देव मना रिहा। लक्ख चुरासी वेखे चढ़ चढ़ शब्द घोड़ा, चिट्टा अस्व इक्क दुड़ा रिहा। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, आप आपणा रूप वटा रिहा। धुरदरगाही आया दौड़ा, शाहो भूप आप अख्वा रिहा। कोई ना जाणे लम्भा चौड़ा, एका पौड़ा मात रखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत युधिष्टर एका वर, रसना कथनी शब्द ज्ञान चरन ध्यान वखा रिहा। योग युधिष्टर चरन ध्याना, आपणा आप बंधांयदा। पंचम देवे पंच निशाना, पंचम वेख वखांयदा। मिले मेल वाली दो जहानां, आपणे अंक लिखांयदा। पंचम तत्त ना कोई जाणे जीव जन्त बण जोती नूर हरि समांयदा। जोत सरूपी कृष्ना काहना, आपणी जोत जगांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी होए सुंञ मसाणा, सत्तां दीपां दीपक ना कोई जगांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म गुण निधाना, धर्म झुलाए इक्क निशाना, साची रंगण रंग चढ़ांयदा। ना कोई जाणे खाणा पीण भेव ना पाए बीना दाना, हवन पवन नाम अहूती सच समग्री ना कोई रखांयदा। काया रमाए ना सच भबूती, जीव जन्त होए अधभूती, माया ममता तन मन झूठी, तृष्ना तृप्त ना कोई करांयदा। हँकारी विकारी फड़ी ठूठी, ब्रह्म विद्या गई रूठी, जगत विद्या गुण वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क युधिष्टर साचा वर, आपणा आप दवांयदा। सच युधिष्टर साचा ताज, आपणे सीस टिकाईआ। पारब्रह्म कलि करे काज, शब्द सरूपी मारे आवाज़, सोहँ बाज उडाईआ। प्रगट होए देस माझ, जन भगतां अन्तिम रक्खे लाज, जुग जुग जोत जगाईआ। चारों कुन्ट पैणी भाज, ना कोई राज राजान शाह सुल्तान करे कराए आपणा काज, दर द्वार ना बंक होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, निहकलंक नरायण नर, एका वेखे जगत खेत्र, खेले खेल महीना चेत्र, चौदस चौदस चौदां रंग वटाईआ। नर अवतारी नर निरँकार, जुग जुग जोत जगांयदा। शब्द खण्डा तेज कटार, साचे तन आप सजांयदा। लोआं पुरीआं मारे मार, नौ खण्ड पृथ्वी आप हिलांयदा। साध सन्त ना पावे सार, जीव जन्त सर्ब कुरलांयदा। पूरन भगवन्त हरि जोत अधार, जोती सभ दे अन्दर टिकांयदा। जन भगतां मेला कन्त भतार, नर नारी रूप वटांयदा। आपे होए द्वार पाल, दर द्वारका नाउँ रखांयदा। चरन छुहाए पहली वार, सृष्ट सबाई मारे मार, ना कोई जाणे जन्त गंवार, भेव अभेदा अछल अछेदा, हथ्थ ना आए चारे वेदा, जगत कतेबा दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत सरूपी एका घर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा आप रखांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, हरि साचे जोत जगाईआ। कुरक्षेत्र सिम्मत विचारी, काहना कृष्ना मेल मिलाईआ। अर्जन जोद्धा हरि शब्द खण्डा खण्डा बलकारी, आपणी देवे आप वड्याईआ। रथ रथवाही नर निरँकारी, रथ पूरन इक्क बणाईआ। उप्पर रिहा कर सवारी, दिस किसे ना आईआ। इक्क गीता अठारां ध्याए लेख लिखारी, ज्ञान गोझ भेव लिखाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, भउ चुकाए एका दूज, एका रचन रिहा रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखण आया सच दर, राए धर्म रिहा पुकारीआ। राए धर्म सुण पुकार, प्रभ आपणी कल कलि धारया। सम्मत तेरां तेरी धार, आई अन्तिम वारया। वेख वखाणे विच संसार, चारों कुन्ट चार दिवारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, खेले खेल अपर अपारया। रथ रथवाही आप हरि, काया रथ चलांयदा। शब्द घोड़ा अग्गे धर, साचा जोड़ जुड़ांयदा। सृष्ट सबाई रिहा लड़, रसना तीर निराला इक्क चलांयदा। अगम्म अगम्मा धाम अगम्मे खड़, आपणा वार करांयदा। सृष्ट सबाई तोड़े किला हँकारी गढ़, दिस किसे ना आंयदा। लग्गी रहिण ना देवे जड़, तीर्थ तट्ट ना कोई वखांयदा। आप आपणा घाड़न घड़, घट घट रूप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सर सरोवर तट्ट किनार ना कोई मात दिसांयदा। चरन छुहाए हरि निरँकारी, आपणी दया कमाईआ। तीर्थ तट्ट होए ख्वारी, ना कोई मात सहाईआ। कलिजुग अन्तिम मारे मारी, मारनहारा आप अख्वाईआ। आपे करन आया कारी, कारज आपणे हथ्थ रखाईआ। पंज सिख नाल इक्क लिखारी, अचरज लीला आप रचाईआ। जोत जगाई इक्क निरँकारी, आस आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लेख लिखाए दया कमाए, नौ खण्ड पृथ्वी आप हिलाए, देवे लोकमात इक्क हुलारीआ। कुरक्षेत्र चरन छुहाया, लोकमात हुलारा। सृष्ट सबाई खेत्र इक्क बणाया, चारों कुन्ट धुँदूकारा। नेत्र नैण किसे दिस ना

आया, प्रगट होया हरि गिरधारा। साक सज्जण सैण कोई दिस ना आया, गोबिन्द काया मीत मुरारा। गुरसिक्खां हिस्सा इक्क वंडाया, सोहण चरन दुआरा। आत्म विसा रिहा लुहाया, चरन वखाए इक्क सरोवर इक्क दुआरा। तृष्ना भुक्खा रिहा मिटाया, रूप अनूपा हरि गिरधारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कृष्न कृष्ना अर्जन अर्जना एका रूप अपारा। धाम सुभागा हरि चरन लागा, दो जुग होए कुड़माईआ। जन भगतां धोवे दर दर घर घर दागा, सम्मत चौदां दया कमाईआ। मनमुखां आत्म लाए आगा, अग्न बाण इक्क चलाईआ। आपे सोया आपे जागा, आप आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धाम भूमिका गुर चरन अस्थान आपे दए सुहाईआ।

❋ २१ मग्घर २०१३ बिक्रमी जरनैल सिँघ दे गृह पिण्ड शाहवाला ज़िला फिरोजपुर ❋

हरिजन एका आस, हरि चरन कँवल ध्यानया। हरि हरि होवे दास, दरस देवे नाम निधानया। रसना गाए स्वास स्वास, एका दूजा भउ चुकानया। साचे मण्डल वेखे रास, जोती शब्दी गोपी काहनया। ना कोई जाणे पृथ्वी आकाश, लोआं पुरीआं भेव ना आनया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां देवे दरस श्री भगवानया। देवे दरस हरि गोबिन्दा, हरिजन चिन्त मिटाईआ। लक्ख चुरासी मिटे चिन्दा, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। आप बणाए आपणी बिन्दा, काया चोली रंग चढ़ाईआ। अमृत आत्म धार वहाए सागर सिन्धा, निर्मल जोती नूर सवाईआ। बजर कपाटी तोड़े जिंदा, पंज चोर रहिण ना पाईआ। वड दाता जोद्धा सूरा मृगिन्दा, शब्द खण्डा इक्क उठाईआ। आपे दाता गुणी गहिंदा, कलिजुग तेरा अन्तिम कन्ढा, चारों कुन्ट वेखे थाउँ थाँईआ। हरि नाउँ उठाए चण्ड प्रचण्डा, नौ खण्ड पृथ्वी पावे वंडा, सत्तां दीपां वेख वखाईआ। वेद विदांत ब्रह्मा रंडा, शिव शंकर तोड़े इक्क घमंडा, करोड़ तेतीसा दए दंडा, सुरपति राजा इन्द दए दुहाईआ। रवि ससि खेल ब्रह्मण्डा, उत्भज सेत्ज जेरज अंडा, विच वरभण्डा वरभण्डी बणत बणाईआ। बिन हरि नाउँ जीव जहानी रंडा, साचा कन्त ना कोई हंढाईआ। आपे देवणहारा दंडा, जुग जुग जोती जोत जगाईआ। मेट मिटाए भेख पखण्डा, कलिजुग काया दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां पाए एका वंडा, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान जणाईआ। भगत जनां घर साचा पाया, एका नाउँ निरँजणा। जीउ पिण्ड तन काचा वेख वखाया, दरस दिखाए दीन दर्द दुःख भय भंजना। एका साचा साचो साचा राह वखाया, मिले मेल प्रभ हरि साचे सज्जणा। दो जहानां मलाह आप अख्वाया, आदि अन्त गुरमुख साचे पड़दा कज्जणा। बेपरवाह सर्ब थाँईं होए सहाया, मदिरा मास जिस

जन तजणा। साची रंगण नाउँ रंगाया, काया चोली रखे लजना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख मेला सच घर, साची बणता रिहा बणाया। गुरमुख हरि रंग माणया, दो जहानी साचा नाउँ। आप चलाए आपणे भाणया, फड़ फड़ हँस बणाए काउँ। किसे हथ्थ ना आए राजे राणया, गुरमुख विरला माणे ठण्ढी छाउँ। जुग जुग आपणा भेख आप पछाणया, दो जहानी करे सच न्याउँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां एका देवे नाम धना, आप उठाए फड़ फड़ बाहों। नाम धन सच खज़ीना, प्रभ आपणे हथ्थ रखांयदा। गुरमुखां देवे जिया दाना, आत्म झोली आप भरांयदा। नेड़ ना आए ताप तीना, त्रैगुण माया एका तत्त वखांयदा। सीतल सांतक करे भीन्ना, रसन रसायण जिस जन चीना, दे मति आप समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे इक्क वर, एका राह वखांयदा। एका राह हरि निरँकारा, आपणा आप रखांयदा। जुग जुग चलाए आपणी धारा, भेखाधारी, आप अख्वांयदा। ना कोई जाणे जीव गंवारा, पढ़ पढ़ थक्के करन विचारा, जगत विद्या हथ्थ ना आंयदा। आपे वसे सभ तों न्यारा, करे खेल अगम्म अपारा, हर घट में आप समांयदा। जोती नूर इक्क आकारा, शब्द सरूपी साची धारा, पवण जोती दए हुलारा, ब्रह्म पारब्रह्म मिलांयदा। महल्ल अटल इक्क उसारा, ना कोई दीसे चार दिवारा, आपे जाणे आपणी

१६८
०६

कारा, शब्द सिँघासण डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे साचा वर, दर घर साचा इक्क सुहांयदा। दर घर साचा इक्क सुहाए, कलि आपणी किरपा धारीआ। नाम तमाचा इक्क लगाए, मारे पंच कटारीआ। काया कासा काचा भाग लगाए, दूई द्वैती जाए बिमारीआ। साचो साचा नाम रखाए, एका हट्ट खुल्ह्राए, कराए वणज सच्चा वपारीआ। तीर्थ तट्ट गुर चरन रखाए, अठ्ठ सठ्ठ कोई भेव ना राए, नठ्ठ नठ्ठ हरि जन दर्शन पाए, आत्म देवे दरस खुमारीआ। सति सन्तोखी हट्ट कमाए, आपे उलटी लट्ट गिढ़ाए, काया अग्नी मठ तपाए, साड़े पंच विकारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला सच घर, देवे दरस दर दरबारीआ। देवे दरस हरि निरँकारा, आत्म दर खुल्ह्रांयदा। शब्द सरूपी बोल जैकारा, आत्म नूर वखांयदा। आपे खोल्ह्रे बन्द किवाड़ा, अन्दर मन्दिर कुण्डा लांहयदा। पंचम राग वजाए ताड़ा, अनहद साचा राग अल्ह्रांयदा। नेड़ ना आए पंचम धाड़ा, साचा खण्डा नाम वखांयदा। गुरमुख बणाए साचा लाड़ा, साची घोड़ी आप चढ़ांयदा। आपे होए पिच्छे अगाड़ा, दो जहानी पार करांयदा। वेखे खेल बहत्तर नाड़ा, नाड़ी नाड़ी रूप वटांयदा। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, जल थल रूप आप हो आंयदा। कलिजुग वेख अन्त अखाड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे एका वर, जोत निरँजण इक्क जगांयदा। जोत निरँजण सच

लिलाट, हरि आपणी आप जगांयदा। जन भगतां करे पूरा घाट, लहिणा देणा मूल चुकांयदा। इक्क वखाए साचा हाट, कन्त कन्तूहल दया कमांयदा। अमृत आत्म सर सरोवर तीर्थ ताट, सच सुच्च इशनान करांयदा। भाग लगाए काया माट, भाण्डा भरम भउ भनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे इक्क वर, जुग जुग आपणा मेल मिलांयदा। जुग जुग मेला मेलणहारा, हरि वाली दो जहानीआ। खेले खेल खेलणहारा, कलिजुग तेरी अन्त निशानीआ। गुर चेले घर घर वेखे अन्दर मन्दिर गुरुदुआरा, रसना गाए अकथ कथा कहाणीआ। लक्ख चुरासी वेख वखाए नौ दुआरा, पंच विकारा जीव शैतानीआ। माया ममता धुँदूकारा, दिस ना आए हरि दुआरा, बुध मति होई विद्वानीआ। मनमती होए जीव हँकारा, गुरमती दिसे दूर किनारा, वा तत्ती इक्क वखानीआ। गुरमुखां देवे नाम भण्डारा, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, सतिजुग साची इक्क निशानीआ। सोहँ होवे जै जैकारा, चार वरनां इक्क प्यारा, ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां एक राग सुणानीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम धुरदरगाही इक्क निशानीआ। नाम निशानी धुर दी दात, हरि जुग जुग मात लिआंयदा। जन भगतां मेला कमलापात, शब्द सरूपी मेल मिलांयदा। ना कोई पुच्छे ज़ात पात, पंचां पंच आप समांयदा। कलिजुग मिटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चढ़ांयदा। प्रगट होए त्रैलोकी नाथ, भेद अभेदा अछल अछेदा दिस किसे ना आंयदा। पढ़ पढ़ थक्के जगत कतेबा, ना कोई जाणे भईआ बेबा, पिता पूत ना वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे इक्क वर, गुणवन्ता हरि गुण निधाना शब्द सरूपी बन्ने गाना, साची तन्दन नाम एका तन्द रखांयदा। साचा तन्द नाम डोरी, गुरमुखां अंग बंन्नांयदा। मनमुखां कोलों करे चोरी, दिस किसे ना आंयदा। कलिजुग दिसे रैण अन्धेर घोरी, घोर अन्धेर ना कोई मिटांयदा। दर दर घर घर पंज चोर मचायण शोरी, जगत विकारा नाल रलांयदा। साचे मन्दिर कोए ना लाए साची पौड़ी, डण्डा ब्रह्मण्डां ना कोई वेख वखांयदा। कलिजुग वेल होई कौड़ी, ना कोई जाणे ब्रह्मण गौड़ी, पूत सपूता किसे दिस ना आंयदा। सम्बल नगरी दिसे सौड़ी, ना कोई जाणे लम्बी चौड़ी, गुर गोबिन्दा सेज विछांयदा। जन भगतां आपे रिहा बौहड़ी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रूप अनूपा सति सरूपा आत्म दरसी एका दरस दिखांयदा। गुरमुख दरस अमोल, हरि आपणा आप वखांयदा। दस्म द्वारी पड़दा खोल्ह, मन्दिर अन्दर जोत जगांयदा। नाम मृदंगा वजाए ढोल, पंचम नादा आप वजांयदा। सदा सुहेला वसे कोल, आप आपणा मुख वखांयदा। निशअक्खर वक्खर रिहा बोल, परा पसन्ती रूप समांयदा। दिवस रैण करे चोहल, जीव जन्ती भेव ना पांयदा। अमृत आत्म धारा देवे नाभ कँवल, एका एक जाम पिलांयदा। जन

भगतां होए सहाई उप्पर धवल, धरत धवल आकाश प्रकाश आपणा आप रखांयदा। आपे काहना कृष्ना साँवल सँवल, राम रामा आप अख्वांयदा। जोती शब्दी रिहा मवल, जुग जुग जोत जगांयदा। कलिजुग अन्त चारों कुन्ट लक्ख चुरासी रही सोती, चारों कुन्ट हाहाकार वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे इक्क वर, आत्म दर इक्क सुहांयदा। आत्म दर शब्द बिबाणा, प्रभ एका एक रखाया ए। जिस जन बख्शे चरन ध्याना, बुध बिबेका रिहा कराया ए। इक्क वखाए नाम निशाना, रसना कोए ना गाए गाना, गायत्री रूप आप समाया ए। राग छतीस वेद पुराणा, खाणी बाणी हरि मेहरवाना, अञ्जील कुराना करे पछाना, आप आपणा मुख छुपाया ए। कलिजुग खेल श्री भगवाना, प्रगट होए वाली दो जहाना, एका शब्द रखाए तीर कमाना, दूसर कोए ना संग रखाया ए। जोत सरूपी पहरया बाणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम निधाना ए। नाम निधान साची रास, प्रभ आपणे हथ्थ रखाईआ। भगत सुहेला होया दास, समरथ दया कमाईआ। निज घर आत्म रक्खे वास, माया ममता मथ वखाईआ। हरिजन रसना गाए स्वास स्वास, साढे तिन्न हथ्थ लेख चुकाईआ। गुर पूरे गुरसिख सद बलि बलि जास, हरिभगत भगती सेवा लाईआ। हरिभगत भगती दासी, हरि हरि आप करांयदा। खेले खेल सर्ब गुणतासी, गुणवन्ता भेव छुपांयदा। प्रगट होए घनकपुर वासी, सम्मत चौदां रुत्त सुहांयदा। गुरमुखां मेला शाहो शाबाशी, बंक दुआरा इक्क वखांयदा। पकड़ वरोले मदिरा मासी, राए धर्म आप उठांयदा। लाड़ी मौत करे हासी, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। कलिजुग रैण अन्धेरी एका छासी, सम्मत पन्दरां नींह रखांयदा। सम्मत सोलां ना कोई राज राजान ना दासन दासी, सेवक सेवा ना कोए कमांयदा। सम्मत सतारां वहिंदी धारा, नारी नारां ना वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे इक्क वर, दर घर एका एक सुहांयदा। सति पुरख सति अख्वाया, ना कोई सुरत ज्ञान। एका तत्त नाम रखाया, पंज तत्त ना कोई निशान। कमलापति आप अख्वाया, खेले खेल दो जहान। नाम रथ रिहा चलाया, जुग जुग चलाए आण। सर्बकल समरथ आप अख्वाया, आदि शक्त रूप भगवान। आपणी कथा अकथा रखाया, गुर मन्त्र शब्द वखाण। लक्ख चुरासी एका सत्थ रिहा विछाया, पुरीआं लोआं पाए आण। मानस देही साढे तिन्न हथ्थ रिहा वखाया, अन्तिम तुटे माण ताण। सतिजुग साची गाथा रिहा सुणाया, सोहँ शब्द इक्क बिबाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे मारे आपणा बाण। सति पुरख सति नाद है, एका शब्द अपार। आप वजाए विच ब्रह्मांद है, कोई ना पावे सार। खेले खेल आदि जुगादि है, आदि जुगादी एकँकार। साचा मेला साधन साध है, आत्म साध करे विवहार। नाथ अनाथी त्रैलोकी नाथ है, देवणहार

सर्ब संसार। अन्त मिटाए नौ नौ नाथ है, सिद्ध चुरासी होए ख्वार। लेखा लिखणहारा मस्तक माथ है, लेख लिखारी आप करतार। जुग जुग खेले खेल हरि समरथ है, सतिजुग सति लए अवतार। आपे रामा घर दशरथ है, रावण गढ़ तोड़े हँकार। काहना कृष्ना पाए नत्थ है, द्वापर तेरी अन्तिम वार। कलिजुग अन्तिम रिहा मथ है, सृष्ट सबाई हाहाकार। गुरमुख विरले सगल वसूरा गया लथ्थ है, दरस पाया चरन द्वार। आप चढ़ाए साचे रथ है, रथ रथवाही आप गिरधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग देवे नाम अधार। नाम निधान जगत अनडीठा, ना कोई वेख वखाईआ। गुर बचन जन लागे मीठा, गुरमति होई कुड़माईआ। एका चाढ़े काया रंग मजीठा, उतर कदे ना जाईआ। मनमती होया काया कौड़ा रीठा, दुरमति होई हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप अख्वाईआ। नर नरायण हरि करतार, रूप अनूप अनूपा। जुग जुग लहिणा देणा मूल चुकाए विच संसार, हरि साजन शाहो भूपा। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, खेले खेल दहि दिशा चार कूटा। साध सन्त ना पायण सार, माया ममता तन मन लूटा। जीव जन्त होए विभचार, रस रसना लाया झूठा। ममता मोह भरया हँकार, नाम निधाना जाम झूठा। पंजां तत्तां करे प्यार, पंज शब्द ना आए मुठा। दर घर साचे आई हार, वेले अन्तिम बैठा रुट्ठा। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, गुरमुख रहिण ना देवे रुट्ठा। दरस दिखाए अगम्म अपार, कलिजुग अन्तिम वारी तुट्ठा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, दो जहान ना किसे लुट्टा। आए दर दर परवाना, आत्म घर वधाईआ। नेत्र नैण लोचन दरस भगवाना, चरन धूढ़ साचे सर तीर्थ नुहावण नुहाईआ। मिले मेल हरि हरि दातार, रसना गावत गावत गावत गहर गम्भीर गुण गाईआ। एका बख्शे चरन ध्याना, सोहँ शब्द सुणावत सुणावत सुणावत धीर धराईआ। सर्ब जीआं प्रभ जाणी जाणा, गुरमुख पावत पावत पावत हरि दर पाईआ। जोती नूर कोटन भाना, रवि ससि नस्स नस्स नस्स बैठे मुख छुपाईआ। कलिजुग वेखे तीर निशाना, कमरकस इक्क कराईआ। बस्त्र चीर ना कोए वखाना, शस्त्र तन ना कोई सजाईआ। जोत सरूपी पहरया बाना, नाउँ खण्डा हथ्थ रखाईआ। आपे वेखे मोदीखाना, तेरां तेरां बोल निभाईआ। प्रगट होया हरि भगवाना, गोबिन्द गोबिन्द सेवा लाईआ। कलिजुग अन्तिम देवे ताना, तार सितार ना कोई हिलाईआ। पंचम बन्न्हे हथ्थीं गाना, पंचम तेल चढ़ाईआ। पंचम सुणाए एका गाना, पंचम मेल मिलाईआ। पंचम मीता धुर फ़रमाणा, सोहँ शब्द जणाईआ। साची दाता देवे दाना, दाता देवणहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। हरि हथ्थ वड्याई, जुग जुग रचन रचांयदा। कलिजुग करे कुड़माई,

लक्ख चुरासी नाल प्रनांयदा। नौ दर वज्जे वधाई, जूठ झूठ मंगल गांयदा। पंच विकारा वेखे थाउँ थाँईं, पंच विकारा तन श्रृंगारा आप करांयदा। दूई द्वैती पकड़े बांही, रोग हँगता ताल वजांयदा। गुरमुख विरले मेला साची संगता, संगी साथी आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत चौदां पहली चेत, करे खेल हरि नेतन नेत, चौदां देश शब्द संदेश जोत सरूपी हो प्रवेश, आप आपणा लेख लिखांयदा। चौदां देश शब्द सलाह, एका आण रखांयदा। आपे बणया जगत मलाह, आपे माण दवांयदा। आपे फड़ फड़ पाए राह, आपे भरम भुलांयदा। आप वखाए सच्चा थाँ, आपे मुख छुपांयदा। आप उडाए घर घर काँ, आपे हँस सुहांयदा। आपे पिता आपे माँ, पूत सपूता आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चौदां तेरी चौदां धार, चौदस चन्न होए संसार, चौदां तबकां आप हिलांयदा। शब्द संदेश साची धार, एका मात दुहाईआ। ना कोई जाणे नर नरेश जोत सरूपी मारे मार, भेव अभेद अभेद छुपाईआ। शब्द खण्डा हरि दो धार, आपे खिच्चे पहली वार, ब्रह्मा रोवे धांही मार, शिव शंकर बैठा करे विचार, करोड़ तेतीसा रिहा कुरलाईआ। गणपति गणेश ना करे अधार, दर दरवेश ना सुणे पुकार, धारी केस ना कोई प्यार, ना कोई मूंड मुंडाईआ। उत्तम जाति विच संसार, काया प्रभाती रसन उचार, शब्द गीत सच संगीत, एका नाद रिहा वजाईआ। जन भगतां बख्शे चरन पीत, एका रंग रंगाए हस्त कीट, रस मिट्ठा मुख चुआईआ। सम्मत सम्मती रहे बीत, अगम्म अगम्मी अचरज रीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटाईआ। जोती जामा जोत जगाई, जुग चौथे अन्तिम वारया। वरन गोत प्रभ भेव मिटाई, खेले खेल वड संसारया। सृष्ट सबाई लेख लिखाई, जन भगतां मेल अगम्म अपारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नाउँ निरँकार शब्द जैकार एका एक करा रिहा। शब्द जैकारा लोकमात, हरि एका एक करावणा। आप वेखे मार झात, दिस किसे ना आवणा। कलिजुग रैण अन्धेरी रात, मुख मुखड़ा आप छुहावणा। आपे बैठा इक्क इकांत, दुःख रोग ना किसे सतावणा। जन भगतां पुच्छे अन्तिम वात, दरस तरस आप वखावणा। शब्द विहारा दिवस सात, सत्त कलमी लेख लिखावणा। खेले खेल बहु बहु भांत, भारत भगती नाउँ रखावणा। नौ खण्ड पृथ्वी देवे दात, दे मति आप समझावणा। लक्ख चुरासी काया मन्दिर अन्दर वेखे मार झात, सिँघासण आसण इक्क डुलावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द संदेश इक्क पुचावणा। ईश जीव ब्रह्म अभेद, पारब्रह्म समाईआ। मन मति बुध ना पाए भेद, वेद कतेब सार ना पाईआ। आपे होए अछल अछेद, इच्छया भिच्छया रूप वटाईआ। ना कोई गाए रसना जिहवा जिहव, लिख सके ना लेख लिखाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग जगत जोग जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। जगत जोग सच्ची सरकार, आपणी आप करांयदा। मोख मुक्त प्रभ चरन द्वार, साची सन्धया इक्क वखांयदा। भगत जगत विच संसार, आत्म अंध्या दरस दिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सर्ब जीआं आपे बख्शंदया, बेड़ा पार करांयदा। बेड़ा पार गुर चरन लाग, मस्तक मिले धूढ़ी दयाल। दाता सूरा सरबग्ग, रंग काया चाढ़े गूढ़ी। नाम बन्ने तन्द साचा तग, गुणवन्त बणाए मूर्ख मूढ़ी। दरस दिखाए उप्पर शाह रग, काया चोली रक्खे अंगी गूढ़ी। गुर पूरे पड़े साचे पग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन द्वार जीव जन्त अधार, एका देवे नाम साची धूढ़ी। नाम धूढ़ तन बस्त्र ख़ाक, गुरमुख तन रमाईआ। आपे करे पाकी पाक, पतित पवित कराईआ। अमृत आत्म जाम प्याए साकी साक, नित नवित्त दया कमाईआ। काया मन्दिर अन्दर बैठा रिहा झाक, अट्ठे पहर सिक रखाईआ। बन्द किवाड़ा खोल्ले ताक, दीपक जोती इक्क जगाईआ। आपे जाणे भविख्त वाक, जुग जुग लेखा रिहा लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे नाम वर, दर द्वार जो जन आए सीस झुकाईआ। नेत्र नैण हरि दरस, फंदी फंद कटांयदा। करे कराए आपे तरस, सुहागी छन्द इक्क सुणांयदा। खुशी कराए बन्द बन्द, नाम चन्द इक्क चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, परमानंद विच रखांयदा। परमानंद निज घर वास, निज आत्म राम पछाणया। राम रामा होया दास, वास निवासा इक्क भगवानया। लेखे लाए हड्ड नाड़ी मास, जो जन रक्खे चरन ध्यानया। आवण जावण लेखा चुक्के दस दस मास, लक्ख चुरासी फंद कटानया। होए सहाई जंगल जूह विच प्रभास, उजाड़ पहाड़ हरि हरि वाली दो जहानया। भगत जनां दर होया दास, दासी दास सेव कमानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरन करे पूरी आस, आए दर होए परवानया। आए दर शब्द भिखारी, हरि भिच्छया आत्म पाईआ। नाम उडाए इक्क उडारी, रक्खक रक्खया रिहा कराईआ। गुर संगत सोहे बंक द्वारी, द्वार बंका इक्क सुहाईआ। जनक सपुत्री राज दुलारी, गुरमुख सुरती साचे राम आप प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, दर द्वार देवे भाग लगाईआ। लग्गे भाग होए वडभागी, भरम गढ़ तुड़ाया। सुरती सोई मात जागी, महल्ल अटल उच्चे चढ़ प्रभ अबिनाशी दर्शन पाया। गुर चरन धूढ़ बणाए हँस कागी, दुरमति मैल दए गंवाया। प्रीत अतीत जिस जन लागी, साची सेवा रिहा कमाया। मनमति गुर दर जाए भागी, दुरमति काया रहिण ना पाया। गुरमति बुझाए तृष्ना आगी, तामस तृष्ना रहे ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर द्वार देवे इक्क वर, सहिंसा रोग दूर कराया। सहिंसा

रोग जगत जड़, दर भगत रिहा दुरकाईआ। पंचम पंचां रिहा लड़, पंच पंचां मेल मिलाईआ। दर द्वारे अग्गे खड़, दर दरबाना सेव कमाईआ। कोई ना सके मात लड़, शब्द खण्डा हथ्थ उठाईआ। सन्त सुहेले आपे फड़, साची वंडा वंड वंडाईआ। गुर चेले एका दर, जेरज अंडां वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी आवे डर, ब्रह्मण्डां दए दुहाईआ। गुरमुख विरला जाए तर मिले वर, प्रभ चरन सच्ची सरनाईआ। आपणी किरपा रिहा कर, दरस दिखाए घर घर, काया घर इक्क सुहाईआ। नौ कराए बन्द दर, तामस तृष्ना जाए मर, राजस राज जाए हर, सांतक सति समाईआ। सति सन्तोखी मिले वर, अन्तिम मोखी सोहे दर, गुणवन्त दए गुण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवे नाम वर, जो जन दर आए दरस रहे पाईआ। दरस अमोघ धुर संजोग, साचा मेला मेल मिलाया। सोहँ शब्द रसना चोग, एका रिहा चुगाया। रसना रस साचा भोग, अमृत आत्म फल खवाया। आदि अन्त ना होए विजोग, विछड़ कदे ना जाया। देवे दरस दर अमोघ, दर द्वार बंक सुहाया। भरमे भुल्ले भरम लोग, लोक लज्जया जगत बंधाया। सच ना गाए कोई सलोक, रसन विकार रहे चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन हरि देवे एका वर, नाम निधाना झोली पाया। हरि शब्द जैकार, अन्तिम कलि कराईआ। सोहँ जै जै जैकार, ब्रह्मा शिव देवत सुर रहे गाईआ। सति पुरख निरँजण अपर अपार, सति सन्तोख समाईआ। हउमे हँगता रोग निवार, जीव जन्त दए वड्याईआ। साची संगता मेल अपार, आप आपणा संग निभाईआ। हरिजन मंगता दर दरबार, एका वस्त मंग मंगाईआ। देवणहार सर्ब संसार, प्रभ झोली दए भराईआ। दिस ना आए विच संसार, अनडिठ वस्त हरि रघुराईआ। आदि अन्त ना जाए हार, सवा गिट्ठ समाधी लाईआ। दस उंगली वेख दिवार, नौ दर खोज खुजाईआ। शब्द सरूपी चार दिवार, सच महल्ल आप उपाईआ। छत्त तत्त ना कोई विचार, रत्ती रत्त ना कोई सुहाईआ। कमलापात हरि भतार, साची सेजा आसण लाईआ। एका खेले खेल संसार, सार पाशा रिहा वछाईआ। कलिजुग अन्तिम आई हार, रिख दरबाशा दए दुहाईआ। मिले मेल मीत मुरार, अन्तिम वेले लए मिलाईआ। सम्मत पन्दरां हो त्यार, साचे मन्दिरां फोल फुलाईआ। जगत नाथी पावे सार, जगन्नाथ दर खुल्हाईआ। आप चढ़ाए साचे राथ, लहिणा देणा मूल चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धर्म युधिष्टर जगत प्यार, नाथ त्रैलोकी रिहा कमाईआ। भगत युधिष्टर अन्तिम मंग, मंगी चरन द्वार। गोपी काहना चाढ़े रंग, प्रगट विच संसार। शब्द जैकार वजाए मृदंग, चारों कुन्ट जै जैकार। चरन धूढ़ इशनान कराए साची गंग, सम्मत पन्दरां वेख विचार। किले कोट प्रभ अन्दर लँघ, खोल्ह वखाए बन्द किवाड़। कट्टणहारा भुक्ख नंग, आत्म झोली भरे भण्डार। जुग जुग निभाए

आपणा संग, सगला साथी नैण मुँधार। जगत तपीशर मंगी मंग, काया खेत्र पावे सार। शब्द घोड़े कसे तंग, पहली चेत्र हो त्यार। जन्म अजन्मा करे भंग, मारे खण्डा एका वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत युधिष्टर दित्ता वर, साचा मेला अन्तिम वार। योग युधिष्टर मात कमाए, आई अन्तिम वारीआ। साचा मेला मेल मिलाए, जुग जुग खेल अपारीआ। लिख्या लेख ना कोई मिटाए, हरि लिखणहार लिखारीआ। काहना कृष्ना भुक्ख वटाए, जोत सरूप हरि निरँकारीआ। सृष्ट सबाई वेख वखाए, अन्दर बाहर गुप्त जाहरीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुहाए बंक द्वारीआ।

थिर घर अपार, नर निरंकारया। ना कोई दीसे चार दिवार, छप्पर छन्न ना कोई दिसा रिहा। जोत सरूपी कर आकार, दीपक एका इक्क जगा रिहा। विष्न वराटी पहरेदार, आपणा आप बणाया। पंज तत्त ना दीसे माटी, मन मति बुध ना वेख वखाया। एका घर साची हाटी, आप आपणा हरि उपाया। आपे जाणे आपणी घाटी, आर पार भेव ना राया। आपणा लाहा आपे खाटी, घर आपणे खुशी मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर रखाए इक्क दर, दर दरवाज़ा आपे बन्द कराया। थिर घर हरि महल्ल, एका एक उपनया। आपे जाणे उच्च महल्ल, आपे बेड़ा बन्नया। किसे दिस ना आए जल थल, रवि ससि ना जाणे सूरज चन्नया। पृथ्वी आकाश वेखे थल, दिस ना आए जनणी जनया। एका वसे निहचल धाम अटल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वखाए साचा दर, आप आपणा रंग महल्लया। हरिजन उधार, आपे आप करांयदा। एका बख्शे चरन प्यार, साची रीत रीत वखांयदा। अगम्म अगम्मा दरस अपार, दीपक जोत जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रचन रचांयदा। सच महल्ल कर त्यार ना कोई दीसे काया बुत्त, आप आपणे अन्दर वाड़या। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, दर दर बैठा रिहा ताड़या। आदि अन्त ना जाए निखुट्ट, वरते वरतावे विच हरि निरंकारया। ना कोई सके जड़ पुट्ट, आप लगाई उच्च महल्ल अटल धर्म चुबारया। ना कोई कढ्ढे बाहर सुट्ट, हरि हरि हरि नर आपणे विच समा रिहा। ना कोई पावे दूई द्वैती फुट्ट, एका रंगण रंग रंगा रिहा। ना कोई फड़ फड़ सके कुट्ट, प्रभ शब्द किसे दिस ना आ रिहा। ना कोई वेखे उप्पर चढ़ चढ़ चोट, शब्द सिँघासण आपणा आप सुहा रिहा। ना कोई सके लोकमात लुट्ट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर रखाए इक्क दर, दर दुआरा आपणे हथ्थ रखा रिहा। पारब्रह्म किसे भेव ना पाया, जीव जन्त साध सन्त रसना फिरे

१७७
०६

हलकाईआ। देवी देव देवा दिस ना आया, करोड़ तेतीसा रहे कुरलाईआ। शिव शंकर साची सेवा लाया, बाशक तशका गल विच लटकाईआ। ब्रह्मा लेख लिखारा आप उपाया, आप आपणी बिन्द उपाईआ। गुरमुख साचा हरि प्रभ बहाए चरन दुआरा, दूसर किसे वस्त दस्त हथ्थ ना आईआ। मिले मेल हरि पुरख भतारा, साची सेज साची नारी इक्क हंढाईआ। एका एक एक ओंकारा, रूप अनूपा कर पसारा, शब्द सुहाए इक्क दुआरा, साचा मेला मेल मिलाईआ। थिर घर हरि धन्न है, शब्द वस्त अपार। पुरख अबिनाशी गया मन्न है, आप आपणा किया अधार। ना कोई सूरज चन्न है, तारा मण्डल ना वेख पसार। ना कोई लोआं पुरीआं बन्नू है, रत नत ना दीसे धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर वखाए इक्क दर, एका शब्द होए जै जैकार। थिर घर लग्गा भाग, हरि साचा आप लगांयदा। पूत सपूता गया जाग, शब्द सुत आप उपांयदा। जननी जोती धोवे साचा दाग़, साची सेवा आप रखांयदा। एका बख्शे इक्क वैराग, एका सिख्या आप उपांयदा। ना कोई तृष्ना ना कोई आग, जगत चिराग ना कोई जगांयदा। आप आपणे हथ्थ रक्खी वाग, जोती धारा आप बंनूांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर वसाया इक्क दर, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाजा, आप आपणा साजन साजा, साजणहार आप अख्वांयदा। साजणहारा हरि कृपाला, आप आपणी बणत बणाईआ। खेले खेल दीन दयाला, देवणहार सृष्ट सबाईआ। मेले मेल मेलणहारा, जुग जुग जन भगतां मेल मिलाईआ। गुर गुर चेले सोहण इक्क दुआरा, द्वार बंका इक्क सुहाईआ। सति पुरख निरँजण पावे सारा, आदि शक्त आदि भवानी एका नाउँ रखाईआ। शब्द सरूपी कर जैकारा, जै जैकार कराईआ। आप रखाए धुँदूकारा, प्रकाश आकाश समाईआ। आप उपाए मेट मिटाए मेटणहारा, दिस किसे ना आईआ। आपे खेवट आपे खेटा, मात पित हरि बेटी बेटा, पिता पूत आप अख्वाईआ। आप आपणा तन लपेटा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर सुहाए इक्क घर, सच दुआरा नाउँ रखाईआ। सच दुआरा साचा नाउँ, हरि आपणा आप उसारया। आपे जाणे नगर गराउँ, आपे पावे सारया। गुरमुखां वखाए साचा थाउँ, आप आपणी किरपा धारया। आप कराए सच न्याउँ, जुग जुग मात लए अवतारया। जन भगत उठाए फड़ फड़ बाहों, आप आपणा इक्क उधारया। हँस बणाए फड़ फड़ काउँ, चरन धूढ़ सच इशनान इक्क नुहावण आप नुहा रिहा। आपे पिता आपे माउँ, सदा सुहेला देवे ठण्ढी छाउँ, आप आपणी गोद उठा रिहा। गुर पूरे सद बलि बलि जाओ, जुग जुग विछड़े मेल मिला रिहा। गुरमुख साचे साचा देवे थाउँ, थिर घर महल्ल इक्क वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत निरँकारा शब्द अधारा एका रंग वखा रिहा। एका रंग हरि परबल, आपणा आप वखाया। आपे

करे वल छल, आपे मार्ग लाया। आपे वसे नेहचल धाम अटल, आपे दिस ना आया। आपे वसया जल थल, जंगल जूह उजाड़ पहाड़, ढूँघी कन्दर हरि समाया। आपे गुरमुखां अन्दर रिहा रल, काया मन्दिर डेरा लाया। आत्म सेजा रिहा मल्ल, शब्द सिँघासण डेरा लाया। भाग लगाए काया खल्ल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वखाए सच घर, थिर घर साचा नाउँ रखाया। थिर घर अगम्म अगम्म अथाह है, हरि आप वखाए बेपरवाह। हरि दाता बेपरवाहो है, इक्क जपाए साचा नाँ। नाम निधाना हरि भगवाना एका एक न्याउँ है, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वखाए थिर घर, एका शब्द झुल्ले धर्म निशान। थिर घर सच निशानी, प्रभ आपणी आप रखाईआ। पंचम नादा गाए साची बाणी, अनहद ताल वजाईआ। पारब्रह्म पुरख पद निरबाणी, निरगुण रूप समाईआ। कथ कथा हरि अकथ कहाणी, गावणहारा आप अख्वाईआ। जन भगतां करे मात पछाणी, आत्म पड़दा दए चुकाईआ। अमृत आत्म देवे ठंडा पाणी, सर सरोवर इक्क वखाईआ। सुरत सवाणी साची राणी, प्रभ कन्ते आप प्रनाईआ। मिल्या मेल शब्द हाणी, कन्त सुहाग इक्क हंढाईआ। दर द्वार इक्क वखानी, प्रभ साचा धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वखाए इक्क घर, थिर घर तेरी वड्याईआ। थिर घर वेखे राज जोग, हरि साचा आप चलांयदा। रस रसना ना जाणे भोग, भोगी भोग ना कोई रखांयदा। गुरमुख मेला धुर संजोग, आप आपणा मेल मिलांयदा। एका देवे दरस अमोघ, नाम चोगी चोग चुगांयदा। काया कटे हउमे रोग, भुक्ख तृष्ना मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क वखाए साचा घर, थिर घर नाउँ रखांयदा। थिर घर हरि टिकाणा, हरि आपणा आप बणाया ए। इक्क रखाए नाम बिबाणा, गुरमुखां रिहा चढ़ाया ए। ना कोई जाणे राजा राणा, शाह सुल्तानां हथ्थ ना आया ए। नानक नानक नानक हरि गुण वखाणा, गुणवन्ता भेव ना राया ए। आपे चतुर सुघड़ स्याणा, मूर्ख मति बुध आप अख्वाया ए। आपे वरते आपणा भाणा, भेखाधारी आप अख्वाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां वखाए इक्क घर, थिर घर साचा नाउँ रखाया ए। नानक घर निरँकार है, निज घर आप सुहाए। जोत सरूपी इक्क अकार है, जोती जोत उपाए। बिन रंग रूपी साची धार है, शब्दी शब्द जणाए। आप वसया सभ तों बाहर है, हर घट बैठा आसण लाए। आप सुहाए बंक द्वार है, दर द्वारी आप हो जाए। आपे माया पसर पसार है, त्रैगुण तत्त रिहा उपाए। पंचम लेखा इक्क दातार है, दाता दानी आप हो जाए। भरम भुलेखा वड संसार है, बाणी बाण ना कोई लगाए। अक्खर अक्खरे जगत विहार है, अक्खर अक्खर लेख लिखाए। बजर कपाटी साचा पत्थर अद्धविचकार है, साची सिला आप टिकाए। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सस्सा सतिगुर किला गढ़ है, सच दुआरा इक्क वखाए। नानक घर निरगुण रूप, हरि निरगुण रंग समाए। सदा खुल्ह्ा रक्खे दर है, दर दुआरा बन्द ना कोई कराए। जुग जुग देवणहारा वर है, भगत भगती मार्ग लाए। आप आपणी करनी रिहा कर है, साची करनी साची किरत कमाए। गुरमुखां शब्द भण्डारा रिहा भर है, धन्न धर्मी आप रखाए। जगत जंजाला तोड़े डर है, आत्म शक्ती इक्क वखाए। साची तरनी रिहा तर है, अन्तिम बेड़ा बन्ने लाए। एका वेख वखाणे हरी हरि है, हरिजन साचे मात जगाए। साचा दर दुआरा एका दर है, दर दरबान आप हो आए। ना जन्मे ना जाए मर है, जुग जुग जोती भेख वटाए। सेवक सेवा रिहा कर है, साची सेवा सेव कमाए। हरि हरि भाणा एका जर है, ज़र ज़रवाणा आप हो जाए। गुर नानक वखाया एका घर है, दूसर कोए दिस ना आए। गुरमुख विरले लोकमात मिले वर है, गोलक गोला होए सेव कमाए। मनमुखां दर आए डर है, बैठे मुख भवाए। माया ममता लग्गी लड़ है, लाड़ी मौत अन्त प्रनाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी रचन रचाए। नानक गोला दर दरबार कराया। शब्द बोला इक्क जैकार, नाम सति रखाया। लोआं पुरीआं पावे सार, वरभण्डी मेल मिलाया। साची डण्डी एका धार, चार वरनां रिहा चलाया। नौ खण्ड पृथ्वी वेखे भेख पखण्डी, आत्म सभ दी होई रंडी, दर द्वार ना बंक कोई सुहाया। फड़े हथ्थ तेज शब्द चण्ड प्रचण्डी, कलिजुग अन्तिम पावे वंडी, साची वंडण वंड वंडाया। आपे वेखे जेरज अंडी, उत्भज सेत्ज फोल फुलाया। लक्ख चुरासी नार होई रंडी, ब्रह्मण्डी खोज खुजाया। आपे सुत्ता दे कर कंडी, आप आपणा मुख भवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर नानक इक्क वखाए साचा गोला शब्द अमोला आपे बणया हरि हरि तोला, सम्मत तेरां तेरी धार नानक गाई विच संसार, तोलणहारा हरि निरँकारा एका दर एका घर, एका हरि लए तुलाया। आपे तोला तोलणहारा, जुग जुग कंडा लांयदा। नानक गोला बोलणहारा, शब्द ढोला इक्क सुणांयदा। काया चोली फोलणहारा, ब्रह्मण्डां खोज खुजांयदा। शब्द भण्डारा खोल्ह्णहारा, हट्ट हटवाणा साचा हट्ट चलांयदा। तेरां तेरां बोलणहारा, मोदीखाना नाम रखांयदा। आपे वरते विच संसारा, शब्द तराना नाम वजांयदा। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द रूप अपारा, गोबिन्द गोबिन्द विच समांयदा। प्रगट होए विच संसारा, कल्गी तोड़ा सीस अपारा, जोती जोड़ा शब्द मिलांयदा। साचे घोड़े हो अस्वारा, लोआं पुरीआं पावे सारा, ब्रह्मा शिव दए हुलारा, करोड़ तेतीसा करे निमस्कारा, सुरपति राजा इन्द राह तकांयदा। लोकमात हरि लए अवतारा, आपे जाणे आपणी कारा, शब्द खण्डा तेज कटारा, तिक्खी रक्खे दोवें धारा, दिवस रैण हरि साचा साक सज्जण सैण आपे आप वखांयदा। नानक गोला सेवादार,

घर साचे आप बणांयदा। घर साचा वेखे इक्क निरँकार, अमृत मेवा मुख लगांयदा। आत्म सुख भगत उधार, पूरन भगवन्ते मेल मिलांयदा। अनहद शब्द सच्ची धुन्कार, काया मन्दिर अन्दर ढोल वजांयदा। नाम सुरंगी खिच्चे तार, नानक गाई विच संसार, इक्क मरदाना जगत निशाना हरि भगवाना नेत्र नैण आप वखांयदा। आपे मस्ती मस्त दीवाना, आपे हस्त कीट अस्माना, आपे राज जोग अभ्यासी आपे शस्त्र बस्त्र पहने तीर कमाना, तीर अंदाज़ आप अख्वांयदा। आपे गोपी आपे काहना, आपे राम रमईआ रामा, आपे बीना आपे दाना, आपे जाणे आपणा भाणा, हरि हरि भाणे आप समांयदा। राग छतीस गाए गाना, पद निरबाण इक्क रखाणा, सृष्ट सबाई सुंञ मसाणा, गुरमुख तेरा आत्म घर इक्क वसाणा, हरि जोती जोत जगांयदा। धुर दरगाही इक्क टिकाणा, आप वखाए दया कमाए विच बिठाए नाम बिबाना, रथ रथवाही आप अख्वांयदा। मेल मिलाए दो जहानां, नेड़ ना आए पंज शैताना, शब्द फड़ाए तीर कमाना, रसना चिल्ले आप चढ़ांयदा। जोद्धा सूर बली बलवाना, धर्म झुलाए इक्क निशाना, दीपां लोआं आप झुलांयदा। जन भगतां हथ्थीं बन्ने गाना, धुर दरगाही इक्क फ़रमाणा, शब्द गीत हरि सच संगीत, नाद अनादी हरि ब्रह्मादी बोध अगाधी एका शब्द जणांयदा। मिले मेल प्रभ माधव माधी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन किरपा देवे कर, आप कराए चरन गोला, राग उपजाए एका ढोला, ढोल मृदंगा इक्क वजाए, आप आपणा राग अलांयदा। पंचम साजा रिहा खड़काए, हरि हरि साचा बेपरवाहीआ। राजन राजा दया कमाए, साचा बाजा नाउँ उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द गुर मेला इक्क दर, दर द्वार बंक बार अंक सुहाईआ। बार अनक सुहाए दर, दर दरवेश भिखारी। प्रगट होए वासी पुरी घनक, जोत जगाए अगम्म अपारी। गुरमुख रखाए गले लगाए जिउँ जन जनक, देवे नाम वस्त सच सच खुमारी। आपे मेटणहारा सहिंसा शंक, आपे तोड़े गढ़ हँकारी। शब्दी जोती लाए तनक, एका बख्शे चरन प्यारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सुहाए द्वार बंक, गुर संगत करे प्यारी। हरि साजन जग मीत, आपणी किरपा धारया। गुरमुखां बख्शे चरन प्रीत, चरन प्रीती इक्क वखा रिहा। आप चलाए साची रीत, आपणी रीत इक्क वखा रिहा। काया करे पतित पुनीत, जो जन आए चरन द्वारया। आत्म धारा सीतल सीत, अमृत नाभी मुख चुआ रिहा। शब्द सुणाए सुहागी गीत, चिन्ता दुःख जगत मिटा रिहा। मानस देही लैणी जीत, जागरत जोत इक्क वखा रिहा। तन कच्चा कौड़ा रीठ, हँकारी तत्तां विच वसा रिहा। माया ममता पीसण रिहा पीठ, नाड़ बहत्तर उब्बल रत्ता रत्ती रत्त ना कोई समा रिहा। हरि हरि शब्द इक्क अनडीठ, गुर मती आप समझा रिहा। दरस दिखाए बीठला बीठ, धीर यती सति सन्तोख आत्म ज्ञान जणा रिहा। आपे भन्नणहारा

कौड़े रीठ, शब्द हथौड़ा इक्क उठा रिहा। गुरमुख काया चोली रंग चाढ़े इक्क मजीठ, लाट लिलाटी आप जगा रिहा। आत्म रस वखाए निझर साचा मीठ, धारमिक धारा धर्म वहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सज्जण सुहेला इक्क अकेला, जुग जुग विछड़े मेला आप मिला रिहा। हरि साजण साचा साक सैण, जन भगतां आप अख्वांयदा। नाता तुट्टे मात पित भाई भैण, सुत बंधप दिस कोई ना आंयदा। दरस दिखाए तीजे नैण, नैण मुँधारा रूप वटांयदा। रसना किसे ना सके कहिण, शब्द जैकारा इक्क अलांयदा। निशअक्खर वक्खर धाम अगम्मे बैठे रहिण, नाद अनादी नाउँ रखांयदा। साची धार वहाए वहिण, जिस जन आपणी दया कमांयदा। गुर चरन द्वारे बैठे रहिण, साची भगती आप करांयदा। आप चुकाए लहिणा देण, जगत जुगती आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा संग आदि अन्त निभांयदा। हरि साजण जग मेल, मेलणहार दातार। शब्द सरूपी चाढ़े तेल, खेले खेल अपर अपार। धर्म राए दी कटे जेल, जो जन होए चरन भिखार। धाम सुहाए इक्क नवेल, हरिजन साचे पाए सार। आपे गुर आपे चेल, गुर गोबिन्द लेख लिखार। मीत मुरारा सज्जण सुहेल, वंड वंडाए गुरमुखां उठाए दो जहानी भार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि साजण जग मीत, जुग जुग पावे सार। जुग जुग जोत जगन्दड़ा, जोग जुगत तन भेद। आपे होए सद बख्शंदड़ा, आपे करे अछल अछेद। आपे काया चोली रंग चढ़ंदड़ा, आप गंवाए रसना जिह्व। भगत भिखारी आप अख्वंदड़ा, आपे करे कराए सेव। आपे चरन ध्यान रखंदड़ा, आपे अमृत आत्म खवाए साचा मेव। आपे दीपक जोत जगन्दड़ा, आपे इष्ट देव गुरदेव। आपे वरन गोती भेख वटंदड़ा, आपे आप होए नहिकेव। आपे गुरमुख माणक मोती इक्क वखंदड़ा, आप आपणी लाए सेव। आपे मारनहारा काया मन्दिर अन्दर जिंदड़ा, आपे होए भेव अभेव। आपे जगत निधान अन्धड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां एका राग सुणाए कन्ना, साचा नाम देवे धना, धर धर्मी लाए सेव। सेवक सेवा चाकरी, दिवस रैण विचार। वेख वखाणे साकत साकरी, गुरमुख साचे लए उधार। लहिणा देणा देवे बाकड़ी, तोले तोल तोलणहार। हथ्थ उठाए नाम ताकड़ी, कलिजुग अन्तिम दए हुलार। ना कोई जाणे बन्दा ख़ाकड़ी, करे खेल हरि निरँकार। शब्द घोड़े चढ़या साचे राकड़ी, लोआं पुरीआं पावे सार। सोहँ शब्द साची लाठड़ी, सो पुरख निरँजण लए उभार। मन मति खोले काया गाठड़ी, बुद्धी बुध करे विचार। गुरमुख विरला एका हाठड़ी, गुर चरन करे प्यार। जगत विकारा जाए नाठड़ी, काया मठ ना तपे अन्नयार। चरन धूढ़ नुहाउँणा तीर्थ अट्ठ साठड़ी, गंगा गोदावरी ना कोई हरिद्वार। इक्क कराए पूजा पाठड़ी, गोबिन्द रसना नाउँ अधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन

साचा साचा मीत, आपे जाणे आपणी रीत, इक्क सुहाए बंक द्वार। हरि मीत सच सज्जणा, दर घर साचे पाया। चरन धूढ़ कराए मजना, तीर्थ तट्ट ना कोए वखाया। आदि अन्त पर्दा कजणा, काया माटी दया कमाया। जो घड़या सो भज्जणा, घड़न भन्नणहार आप अख्वाया। कलिजुग ताल एका वज्जणा, धरतमात दए दुहाया। लाड़ी मौत हार श्रृंगार ला ला लोकमात विच सजणा, लक्ख चुरासी वेखे कन्त भतार। कालका पी पी रक्त अन्तिम रज्जणा, प्रभ तृष्ना दए निवार। अष्टभुज कराए साचा हाजी हज्जना, गदा चक्र एका दए हुलार। गुर गोबिन्दा एका गज्जणा, साचे घोड़े हो अस्वार। शब्द नगारा एका वज्जणा, लोआं पुरीआं जै जैकार। लेखा चुक्के मक्का काअबा हाज़ी हज्जना, पीर पैगम्बर औलीए शेख़ मुसायक मुल्ला काज़ी होवण शार। गुर दर मन्दिर अन्दर जीवां जन्तां साधां सन्तां अन्तिम तज्जणा, चारों कुन्ट हाहाकार। काल नगारा एका वज्जणा, कलिजुग तेरी काली धार। गोबिन्द काया अन्दर हरि हरि सजणा, जोत सरूपी कर आकार। गुरमुखां अमृत आत्म पी पी रज्जणा, हरि बख्शे बख्शणहार, लक्ख चुरासी जीव जन्त कलि दझणा,कोए ना पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां पर्दा कज्जणा, मेल मिलाए अन्तिम वार। हरि साजन जग ठग्ग है, ठग्गे ठग्गणहार। कलिजुग वा तत्ती रही वग है, कोए ना पावे किसे सार। जगत तृष्ना लग्गी अग्ग है, काम क्रोध लोभ मोह हँकार। गुरमुख विरले एका शब्द नाउँ लग्गा मुख सग है, साचा सगन अपर अपार। धीरज यति सति सन्तोखी बन्ने तग है, पति पतिवन्ती एका नार। आत्म मोखी भगती भगत है, जीव जन्ती लए उधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे साजण साज, मिले मेल ग़रीब निवाज़, शब्द पहनाए सीस ताज, दर द्वार दया कमाईआ।

हरिसंगत हरि रूप है, हरि हर रंग समाए। हरि राजन शाहो भूप है, वेखे हरि हर थाँए। काया अन्धेरी दहि दिशा चारों कूट है, अन्ध अज्ञान डेरा लाए। पंच विकारा रिहा लूट है, रोग सोग चिन्ता दुःख तृष्ना भुक्ख वधाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत आत्म ब्रह्म जणाए। हिरदा सच ध्यान है, धरे धराए हरि भगवान। हरि शब्दी शब्द निशान है, वेख वखाणे विच जहान। हरि दाता सद मेहरवान है, जीआं जन्तां देवे जिया दान। दर आए दर परवान है, मेट मिटाए रोग संताप। देवे नाम गुण निधान है, दरस दिखाए आपे आप। तीर अवल्ला मारे बाण है, सोहँ शब्द जपाए साचा जाप। करे कराए आपे आप पछान है, आपे होए माई बाप। हरिजन मेला इक्क भगवान है, कोटन कोट उतारे पाप। अमृत आत्म पीण खाण है, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वर हरि रघुनाथ।

बाल बिरध जवान, हरिसंगत हरि रंग वटाया। माता कुक्ख वेखे मार ध्यान, किशना सुखला वेख वखाया। तन विकारा लग्गा दुःख, रोगी रोग रहे बिल्लाया। उज्जल होए दर द्वारे मुख, जिस जन आए दर्शन पाया। मात गर्भ ना उलटा रुक्ख, मानस मनुख देही लेखे लाया। साची सुखणा एका सुख, घर साचे सहिज सुख पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे इक्क वर, हरि नाउँ साची चोग चुगाया। रसना नाउँ साची चोग, आपणी आप चुगांयदा। दरस दिखाए हरि अमोघ, रसना भुक्ख मिटांयदा। मेल मिलाए धुर संजोग, विछड़ कदे ना जांयदा। आपे कट्टणहारा रोग, चिन्ता भरम दुःख मिटांयदा। एका देवे साचा जोग, सोहँ रंगी रंग रंगांयदा। आदि अन्त ना होए वियोग, आपणे अंगण आप लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत किरपा रिहा कर, जोत निरँजण तेल चढ़ांयदा। जोत निरँजण कुँवार कन्या, लोकमात कवण प्रनांयदा। देवे दाम शब्द धन धनया, सोहरे पईए तोड़ निभांयदा। नाम चढ़ाए साची नईआ, बेपरवाही रथ चलांयदा। दो जहानी बेड़ा बन्नृया, साचे माही मेल मिलांयदा। मिल्या मेल चिरी विछुनया, जगत विछोड़ा मूल गवांयदा। गुरमुख साचा सन्त सुहेला एका चन्नया, आप आपणा विच टिकांयदा। राग नादी एका सुन सुनया, सुन्न समाध खुल्हांयदा। धुन आत्मक देवे साची धुनया, सच सितारा इक्क हिलांयदा। किसे हथ्थ ना आए रिखीआं मुनीआं,

१८३ ०६ जटा जूटां नूं वेख वखांयदा। सृष्ट सबाई छाणी पुणीआ, चारे कुन्ट दहि दिशा आपणा आप जणांयदा। जन भगतां पुकार १८३ ०६

रिहा सुणीआ, सुणनहारा दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत देवे नाम वर, रसन जैकारा एकँकारा सोहँ नाउँ धरांयदा। सोहँ साची टेक है, सच सुच्च ज्ञान। तन काया बुध बिबेक है, तीर्थ तट्ट ना कोई इशनान। साचे नेत्र रिहा वेख है, लोइण तीजा इक्क पछाण। भेखाधारी धारे भेख है, वसे काया मन्दिर सच मकान। आपे लिखणहारा लेख है, सतिजुग खोल्हे मात दुकान। सृष्ट सबाई रही वेखा वेख है, पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराण कुरान। गुरमुख विरले लग्गी मस्तक मेख है, मिल्या मेल श्री भगवान। नेत्र लोचन हरि हरि दर्शन रिहा पेख है, जगी जोत मात महान। गुर गोबिन्दा धारी केस है, जोद्धा सूर बली बलवान। जोत सरूपी हरि प्रवेश है, दस दस्मेशा इक्क ज्ञान। आपे दाता नर नरेश है, निरगुण सरगुण एका जाण। बाल जवानी अल्लृड़ वरेस है, लक्ख चुरासी करे पछाण। किसे ना चले कोई पेश है, कलिजुग खेले खेल जहान। जन भगतां दर दरवेश है, आपे होए निगाहबान। ना कोई जाणे ब्रह्मा शिव गणेश है, रवि ससि सर्ब कुरलाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे इक्क वर, चरन धूढ़ सच्चा इशनान। चरन धूढ़ सच्चा इशनाना, आत्म मजन माघीआ। गुणवन्ता देवे गुण निधाना, साची साजन रिहा साजिया।

परा पसन्ती भेव ना जाणा, मधम बैखरी कथा कहानीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे इक्क वर, लेखे लाए जेरज खाणीआ।

दर घर साचा एक है, चरन कँवल प्रभ टेक। जगत जगदीशर हर घट रिहा वेख है, कवण बुद्धी मात बिबेक। लेखा लिखणहारा लिखत साची रेख है, कलिजुग माया ना लाए सेक। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, काया वेखे इक्क घर, दर द्वारे हरि दरवेश। दर घर साचा इक्क पछाण, प्रभ लाए नौ दरवाज़या। आपे होया बेपछाण, दर दसवें ग़रीब निवाज़या। गुरमुख विरले मात पाण, जिस जन आप उठाए मारे शब्द सरूपी आवाज़या। दर दर घर घर सारे गाण, कवण रक्खणहारा लाज्जया। काची माटी वेख मकान, बस्त्र शस्त्र घोड़े हाथी वड वड राजन राज्जया। मदिरा मास पीण खाण, जगत सवारी माया ताज्जया। गुरमुखां देवे इक्क निशान, गोबिन्द काया साजन साज्जया। शब्द सरूपी इक्क बिबाण, सति सरूप नाम जहाज्जया। अक्खर वक्खर पावे आण, देवे दान साचा दाज्जया। धुरदरगाही हरि फ़रमाण, लोकमात आए भाज्जया। जिस जन चुकाए जम की कान, जगत संवारे एका काज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल देस माज्झया। गुरमुख वड्याई धन्न है, घर वसया गुर गोबिन्दा। सहिंसा रोग जाए तन है, मेट मिटाए सगली चिन्दा। भाण्डा भरम देवे भन्न है, रसन तजाए जूठी झूठी निन्दा। नाम सरूपी चढ़या चन्न है, हरिजन बणाए साची बिन्दा। ना वसेरा छप्परी छन्न है, सागर धार इक्क वहिंदा। रागनी राग सुणाए कन्न है, दूई द्वैती तोड़े जिंदा। जगत जज्ञासू एका जन है, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आत्म वेखे इक्क घर, दाता दानी हरि मृगिन्दा। दर दुआरा बंक है, सुहाए आप करतार। ना कोई राउ रंक है, ऊँच नीच ना कोई विचार। एका नाम वजाए डंक है, करे कराए ख़बरदार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, काया वेखे इक्क घर, महल्ल अटल उच्च मनार। काया गागर अमृत धारा, हरि वस्त अमोल टिकाईआ। डूँघा सागर कलि संसारा, गुरमुख विरला पार कराईआ। लक्ख चुरासी डुब्बे विच मँझधारा, आर पारा दिस ना आईआ। भरमे भुल्ला भरम गंवारा, भरमी भरम ना जाईआ। जन्मे रुल्ला जन्म ख्वारा, मानस जन्म ना बूझ बुझाईआ। हउमे हँगता रोग अपारा, साची संगता मूल ना भाईआ। वेखे दर ना हरि दुआरा, दर दरबान ना सेव कमाईआ। हँकार विकारी इक्क चुबारा, बैठा मात बणाईआ। आपे ढाहे लए उसारा, खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। ना कोई लाए मिट्टी गारा, ना कोई बाडी रिहा बणाईआ। पुरख अबिनाशी साची कारा, साचा धाम

१८४
०६

सुहाईआ। जन हरि बख्शे चरन प्यारा, राम रामा राम मिलाईआ। अमृत आत्म निझर धारा, मुख अगम्मा रिहा चुआईआ। शब्द सरूपी तेज कटारा, तन बस्त्र इक्क सजाईआ। सोलां करे नाम शृंगारा, प्रेम मैहन्दी हथ्थीं लाईआ। शब्द सरूपी सीस दस्तारा, मस्तक टिक्का इक्क रघुराईआ। करे कराए ख़बरदारा, नीकन नीका नींव रखाईआ। जूठा झूठा नाता सज्जण मीत मुरारा, अन्त विछोड़ा भैणां भाईआ। एका सोहे बंक दुआरा, द्वार बंका आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन किरपा देवे कर, दे मति रिहा समझाईआ। गुरमति सच रंग है, काया चोली दए रंगाए। मानस जन्म ना होए भंग है, कलिजुग बोली दए व्याहे। आपे होए अंग संग है, साची डोली शब्द चढ़ाए। नाम निधाना इक्क पतंग है, गुरमुख साचे रिहा उडाए। आत्म धारा साची गंग है, अमृत सर सरोवर इक्क नुहाए। सच द्वारे बैठा लँघ है, आत्म सेजा इक्क विछाए। नाम रंगीला हरि पलँघ है, बैठा आसण लाए। अनहद वजाए सच्चा मृदंग है, गीत सुहागी एका गाए। गुरमुख विरले लाए अंग है, अंगीकार आप हो जाए। ना कोई तृष्ना भुक्ख नंग है, आलस निन्दरा नेड़ ना आए। वड दाता सूरा सरबंग है, हर घट वेख वखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क सुहाए
१८५ साचा घर, दर दरवाज़ा दिस ना आए। दर दरवाज़ा ग़रीब निवाजा, आपणा आप लगाया ए। शब्द रखाया एका ताजा, १८५
०६ लक्ख चुरासी साजन साजा, कलिजुग अन्तिम रच्चया काजा, जोत जगाए देस माझा, गुर गोबिन्दा रक्खे लाजा, पार ब्यासों ०६
चरन उठाया ए। शाहो भूप राजन राजा, अन्ध कूप मारे अवाज़ा, जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख सोए रिहा मात जगाया ए। हरिजन उठ उठ जाग, कलिजुग रुत्त सुहाईआ। माया ममता धो आपणा दाग़, पारब्रह्म अबिनाशी अचुत आपणी दया कमाईआ। बिन हरि नामे खाली बुत्त, साचा सुत ना कोई उपजाईआ। काया तन नगारे ना लग्गे शब्द चोट, धुनी नाद ना कोए वजाईआ। पंज तत्त विकारा भरमा खोट, गोबिन्द गीत ना रसना गाईआ। मनमती आलूणिओ डिग्गे बोट, ना कोई सके मात उठाईआ। जगत तृष्ना ना भरी पोट, दिवस रैण होई हलकाईआ। चारों कुन्ट दर दर घर घर फिरदे कोटी कोट, गुरमुख विरले बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाणे साचा घर, घर बाहरी कवण अख्वाईआ।

हरि मन्दिर घर सुहञ्जणा, एका एक सुहाए। दीपक जोत जगे निरँजणा, अन्ध अन्धेर मिटाए। हरि शब्द मेला साचा सज्जणा, सगला साथ आप निभाए। आप कराए आपणा मजना, सच दुआरा इक्क सुहाए। ताल नगारा एका वज्जणा,

राग अनादी इक्क वजाए। भाण्डा भरम गढ़ हँकारी भज्जणा, भन्नणहारा आप भनाए। लक्ख चुरासी लोकमात अन्त अन्त तज्जणा, मानस पंखी पंछी सरवर रहिण ना पाए। कर्मा जेड़े अन्तिम बज्झणा, ना कोई सके जगत छुडाए। दर दर घर घर अन्तिम जिंदा वज्जणा, बंक द्वार ना कोई सुहाए। लाउण ना देवे किसे अज पजना, लाड़ी मौत खुशी मनाए। राए धर्म कराए साचा हज्जना, अठाई कुण्डां मुख खुल्हाए। किसे सीस ना दिसे ताजना, राज राजानां ख़ाक मिलाए। शब्द घोड़ा साचा बाजना, प्रभ साचा रिहा उडाए। प्रगट होए देस माझना, सांझीवाल सर्ब अख्वाए। जन भगतां पर्दा काजना, गुर गोबिन्दा गोबिन्द राए। नाम चलाए सच जहाज़ना, गुरमुख साचे लए चढ़ाए। आप रचाया आपणा काजना, कलिजुग वेला अन्त सुहाए। सतिजुग साचे देवे दाजना, पूत सपूता सोया आप उठाए। पुरख अगम्मा मारे आवाज़ना, दिस किसे ना आए। जन भगतां रक्खण आया लाजना, निहकलंकी जामा पाए। आदि अन्त पर्दा काजणा, शब्द डंकी डंक वजाए। चारों कुन्ट पैणी भाजणा, मात पित ना कोई सहाए। शब्द नगारा एका वाजणा, लोआं पुरीआं रिहा सुणाए। ब्रह्मा शिव जाणे कल कि आजना, पारब्रह्म भेव ना राए। करोड़ तेतीसा अन्तिम नाचना, हरि हरि साचा रिहा नचाए। गुरमुख विरले नाम जणाए साचो साचना, हरि साचा हट्ट खुल्हाए। काया माटी भाण्डा काचना, तन सोहँ पट पहनाए। इक्क खुल्हाए साचा हाटना, हट्ट हटवाणा आप हो जाए। ना कोई दीसे तीर्थ ताटना, अट्ठ सट्ठ बैठे मुख छुपाए। ना कोई पार कराए घाटना, सागर डूँघा वहिण संसार वहाए। जोती नूर ना कोई लिलाटना, अन्ध अज्ञान अन्धेरा छाए। दुरमति मैल ना कोए काटना, अमृत आत्म धार ना मुख चुआए। अग्गे जाणे ना कोई वाटना, साध सन्त रहे कुरलाए। शब्द खटोला ना कोई जाणे साची खाटना, नाम सिँघासण ना वेख वखाए। लक्ख चुरासी लेखा आन बाटना, गर्भवास ना कोई कटाए। गुरमुख विरले हरि हरि नाउँ रसना राटना, हरि साची सेव लगाए। एका रस रसना चाटना, मदिरा मास रसन तजाए। बजर कपाटी पर्दा पाटना, सम्मत चौदां नेड़े आए। पुरख अबिनाशी घट घट वासी गुरमुखां पूर कराए घाटना, घाटा कोई रहिण ना पाए। गुरमुखां दर दरवाज़िउँ उठ उठ नाठना, शब्द खण्डा रिहा वखाए। आपे जाणे पूजा पाठना, काया मन्दिर अन्दर बहि बहि डेरा लाए। शब्द सरूपी मारे एका ठाठना, जगत विकारा अन्त रुढ़ाए। गुरमुख रखाए साचा हाठना, गुर चरन कँवल चित्त लाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लहिणा देणा मूल चुकाए। कलिजुग लहिणा जाए चुक्क, हरि वेला वक्त सुहांयदा। मनमुखां मुख पैणा थुक्क, ना कोई मात बचांयदा। सम्मत पन्दरां रिहा ढुक्क, प्रभ साची नींह रखांयदा। सम्मत सोलां दाणा पाणी जाए मुक्क, प्रभ अग्न मींह बरसांयदा। प्रभ का भाणा ना जाए

रुक, लिख्या लेख ना कोई मिटांयदा। सतिजुग साचा रिहा झुक, दोए जोड़ सीस निवांयदा। कलिजुग काला बैठा लुक, जूठा झूठा मूंह शरमांयदा। सच सरोवर गया मुक्क, तृष्ना अग्न ना कोई बुझांयदा। सतिजुग साचा रिहा बुक्क, लोकमाती राह तकांयदा। सम्मत सतारां रिहा ढुक्क, सृष्ट सबाई हाहाकार करांयदा। बाल ना दीसे किसे कुक्ख, ना कोई सहाई मानस देही मनुक्ख, देवत सुर ना कोई बचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर निरँकारा आप अख्वांयदा। नर निरँकारा हरि निरँकारी, जोती नूर सवाया। शब्द फड़ तेज कटारी, लहिणा देणा मूल चुकाया। जुग जुग लए मात अवतारी, प्रगट होए वड्ड संसारी, लक्ख चुरासी पावे सारी, कन्त कन्तूहला भेव ना राया। कलिजुग तेरी चार दिवारी, आपे ढाहे लए उसारी, ना कोई जाणे नर नारी, भेव अभेदा अछल अछेदा साचा खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोत निरँजण देवे वर, दर दर घर घर वेख वखाया। जोत निरँजण साची सेवा, प्रभ साचे आप लगाईआ। गुरमुखां वेखे कौस्तक मणीआ लग्गा थेवा, नाम रत्ती रत्त छुहाईआ। रसना गाए गुण हरि जिह्वा, गुणवन्ता भेव अलाहीआ। वेख वखाणे सुर नर देवी देवा, यश गधंरब रहे गुण गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोआं पुरीआं वेख वखाईआ। लोआं पुरीआं वेख वखाणे, हरि शब्द घोड़ अस्वारा। जीव जन्त कोई भेव ना जाणे, आदि अन्त एकँकारा। साध सन्त बेमुहाणे, विसरया करतारा। साचा राह ना कोई पछाणे, पुरख अगम्मा एका धारा। माया ममता राजे राणे, हउमे हँगता करे श्रृंगारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, प्रगट होए विच संसारा। प्रगट होए हरि बलवाना, आपणी जोत जगाईआ। शब्द फड़े तीर कमाना, रसना चिल्ले रिहा चढ़ाईआ। खेले खेल आप महाना, उच्चे टिल्ले रिहा हिलाईआ। एका मार नाम निशाना, लक्ख चुरासी पार कराईआ। ब्रह्मा उठे बण नादाना, चारे मुखड़े रिहा भवाईआ। शिव शंकर वेख चरन ध्याना, कवण कूटे हरि हरि जोत जगाईआ। सुरपति मंगे जिया दाना, करोड़ तेतीसा संग रलाईआ। कलिजुग होए अन्त निमाणा, दर बैठा मुख शरमाईआ। धर्म राए दा झुल्ले निशाना, वरभण्डी वंड वंडाईआ। लाड़ी मौत बन्ने गाना, सम्मत चौदां नेड़े आईआ। पुरख अबिनाशी धुर फ़रमाणा, गुरमुखां दर दर घर घर रिहा जाए सुणाईआ। ना कोई जाणे राजा राणा, शाह सुल्तानां भेव ना राईआ। आपे वरते आपणा भाणा, हरि भाणे विच समाईआ। जोत सरूपी पहरया बाणा, शब्दी बणत बणाईआ। गुर गोबिन्दा संग रखाना, शस्त्र अस्त्र इक्क सुहाईआ। गुणवन्ता हरि गुण निधाना, सगला संग निभाईआ। लिख्या लेख लेख महाना, नानक हरि गुण रसना गाईआ। प्रगट होए हरि भगवाना, निहकलंका नाउँ रखाईआ। धर्म झुलाए इक्क निशाना, बीस बीसा दए

दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात लक्ख चुरासी करे कुड़माईआ। लक्ख चुरासी एका नाता, प्रभ साचा आप निभांयदा। धर्म राए तेरा पूर कराए खाता, लहिणा देणा मूल चुकांयदा। कलिजुग मिटे अन्धेरी राता, सतिजुग साचा चन्द चढ़ांयदा। ना कोई जाणे ज़ाता पाता, ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां एका रंग रंगांयदा। प्रगट होए कमलापाता, जन भगतां देवे साची दाता, नाम सुग़ाता झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे मार झाता, आप आपणा मुख छुपांयदा। आप आपणा मुख छुपाया, दिस किसे ना आया ए। चुप चुपीते खेल रचाया, गुर गोबिन्दा इक्क जगाया ए। साची रीते मात रखाया, पतित पुनीते वेख वखाया ए। गीत सुहागी इक्क सुणाया, चरन कवण चित लाया ए। साचा मीत आप अख्वाया, आप आपणा मेल मिलाया ए। काया ठण्ढी सीतल सीत कराया, अमृत धारा ठण्ढी ठारा आपणी आप वहाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत अठारां बख्शे धारा, एका इन्द्र सेवा लाया ए। एका इन्द्र करोड़ छिआनवें, हरि करोड़ी करोड़ अख्वांयदा। भेख ना जाणे बावन बावने, जोती शब्दी जोड़ जुड़ांयदा। आवण अठ तरै जाण सत्त नवै, नौ सत्त वेख वखांयदा। अट्ठ त्रै भेव ना पावने, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत अठारां एका धारा, इन्द इन्द्रासण दए हुलारा, एका हुक्म जणांयदा। ख्वाजा खिजर खिजर ख्वाजा। एका बख्शे प्रभ साचा दात। अट्ठ अठारां वड्डु करामात। जल थल धारा धरत मात। प्रभ देवे सच सुग़ात। आर पार ना दीसे कोई किनारा, ना कोई वेखे तीर्थ ताट। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे उलटी गेड़े लाठ। सम्मत उन्नी उन्नी उनीसा। खेले खेल हरि जगदीसा। ईसा मूसा खाली खीसा। कोई ना पढ़े सुणाए कुरान हदीसा। छत्र ना झुल्ले किसे सीसा। राह तकाए बीस बीसा। नौ खण्ड पृथ्वी लक्ख चुरासी पीसण पीसा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका छत्र झुलाए सीसा। बीस बीसे शब्द मलाह, हरि नामे मता पकांयदा। पुरख अबिनाशी बणे मलाह, दो जहानां वेख वखांयदा। कलिजुग काला दिसे ना, सतिजुग साचा चन्न चढ़ांयदा। गुरमुख उठाए थाउँ थाँ, आप आपणे रंग रगांयदा। सन्त सुहेले फड़ फड़ बांह, साचा मेली मेल मिलांयदा। जमन किनारा एका नाँ, लेखा लेख लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी बणत बणांयदा। आप आपणी बणत बणाए, जुग जुग जोत जगाईआ। साध सन्त हरि लए उठाए, एका शब्द करे कुड़माईआ। वरन गोती कोई रहिण ना पाए, केसाधारी ना कोए मूंड मुंडाईआ। पुरख अबिनाशी जोत जगाए, चारों कुन्ट होए रुशनाईआ। जमन किनारे डेरा लाए, राज राजानां रिहा जणाईआ। ज़र ज़रवाणा आप हो आए, शाह शहाना वेख वखाईआ। तीर कमाना

हथ्थ उठाए, एका चिल्ले रिहा चढ़ाईआ। माण ताण सर्ब जगत मिटाए, उच्चे टिल्ले रिहा ढाहीआ। शब्द निशाना इक्क झुलाए, सत्त रंगां रंग रंगाईआ। सीस गंज प्रभ दए गडाए, आपणी हथ्थीं सेव कमाईआ। वाली हिन्द प्रभ दए उठाए, चरन कँवल दए सरनाईआ। राग अनादी इक्क सुणाए, सोहँ शब्द वजे वधाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी आप जणाए, देश प्रदेशा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत बीस तेरी रुत्त सुहाईआ। बीस बीसा हरि जगदीसा, जोती खेल खिलांयदा। वेख वखाणे राग छतीसा, नाद धुन रसन अलूांयदा। मात सुरसती दन्द बतीसा, बत्ती धारा मुख सुहांयदा। लेखा चुक्के इक्क इकीसा, सम्मत इक्की लेख लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका सीस हरि जगदीस सुहांयदा। हरि जगदीस शब्द बनवारी, हरि नामे बणत बणाईआ। पंचम मेला सच दरबारी, दर दरबारा इक्क सुहाईआ। जोत जगाए नर निरँकारी, वेख वखाए सृष्ट सबाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां आप बिठाए चरन द्वारी, शब्द सरूपी शब्द जणाईआ। सृष्ट सबाई बन्नॢे धारी, धारा आपणे हथ्थ रखाईआ। आपे लेखा लिख्त लिखारी, लिखणहार हरि रघुराईआ। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क सिक्दारी, साचा सिकदार आप हो जाईआ। शब्द सुनेहड़ा भेजे वारो वारी, दूत दूतां नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चारे कुन्ट शब्द संदेश, देवणहारा नर नरेश, ब्रह्मा शिव गणेश ना कोई पूज पुजाईआ। सृष्ट सबाई एका नाता, एका रंग रंगांयदा। ना कोई दीसे ज़ाता पाता, ज़ात पाती भेव चुकांयदा। प्रगट होए कमलापाता, पंचम मुख प्रमुख आप अख्वांयदा। सृष्ट सबाई मेटे दुःख, दुःख भुक्ख आप गंवांयदा। हरि सन्त सुहेले धरत मात दी रक्खे कुक्ख, मनमुख ना कोई दिसांयदा। सतिजुग साची सुक्खणा रिहा सुख, प्रभ अग्गे झोली डांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत इकी पाए इक्की नौ खण्ड पृथ्वी छोटी सिक्खी आपणी आप बणांयदा। साची सिक्खी शब्द विचार, हरि आपणी आप दृढ़ांयदा। सत्तां दीपां दए हुलार, सतिजुग साची जड़्ह लगांयदा। आपे बैठ दिल्ली दरबार, तिक्खी धारा इक्क वखांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी जोत अकार, लोआं पुरीआं वेख वखांयदा। शब्द सिँघासण हरि दातार, एका मात विछांयदा। चतुर्भुज हो त्यार, अष्टभुज सेवा लांयदा। गुरमुखां तन शृंगार, पंचम ताजा सीस टिकांयदा। पंचम आवाजां रिहा मार, सोहँ मस्तक लेख लिखांयदा। नाम सोटी हथ्थ करतार, सृष्ट सबाई आप वखांयदा। चरन जोड़ा अपर अपार, शब्द घोड़ा नाल रलांयदा। आया दौड़ा विच संसार, कौड़ा मिठ्ठा परखणहार, भेद अभेदा भेव छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत इक्की इक्क इकल्ला नौ खण्ड पृथ्वी बणत बणाए इक्क महल्ला, सत्तां दीपां पावे सार। नौ खण्ड पृथ्वी एका घर, प्रभ आपणा आप बणांयदा। शब्द सिँघासण बहि बहि देवे वर,

वर दाता आप हो जांयदा। आपणी करनी रिहा कर, जुग जुग भेख वटांयदा। पंचम ताज सीस धर, राज प्रमुख आप हो आंयदा। सतिजुग तेरा काज कर, साचा मार्ग इक्क वखांयदा। धरतमात तेरी लाज रक्ख, लाजावन्त आप हो आंयदा। देस माझ हरि जोत धर, सम्मत सोलां चरन उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, सम्मत इक्की आपे वेखे धार तिक्खी, तिक्खी धार ना कोई वखांयदा। तिक्खी धार हरि निरँकारा, आपणी आप वखाईआ। प्रगट होए विच संसारा, एका डंका नाउँ वजाईआ। ना कोई दीसे शाह सवारा, राज राजानां दिस ना आईआ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, तख्त ताज इक्क सुहाईआ। जन भगतां देवे नाम सहारा, सम्मत चौदां वंड वंडाईआ। इक्की इक्की इक्की इक्क घर बाहरा, आप आपणा रूप समाईआ। आप वखाणे सच दुआरा, दर द्वारका नाउँ रखाईआ। सृष्ट सबाई हाहाकारा, जन भगतां जै जैकार कराईआ। कलिजुग वेखे धुँदूकारा, गुरमुख साचे चन्द चढ़ाईआ। आपे बणया लेख लिखारा, गुर गोबिन्दा कलम चलाईआ। नानक बणया दर भिखारा, हरि देवणहार सबाईआ। प्रगट होए नर अवतारा, कलिजुग अन्त करे कुड़माईआ। लक्ख चुरासी पावे सारा, राए धर्म दए वड्याईआ। लाड़ी मौत करे प्यारा, चारों कुन्ट हलकाईआ। गुरमुखां बख्शे चरन प्यारा, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। अन्तिम मेला जमन किनारा, साधां सन्तां रिहा जणाईआ। ग़रीब निमाणयां पावे सारा, राज राजानां ख़ाक मिलाईआ। शब्द सरूपी दए हुलारा, पवण उनन्जा सेवा लाईआ। धरतमात तेरा इक्क अखाड़ा, प्रभ साची रचन रचाईआ। पंचम जेठ उठाए अगम्मी धाड़ा, सिँघ शेर शेर दलेरी इक्क वखाईआ। अग्न लगाए सतारां हाढ़ा, प्रभ साचे बणत बणाईआ। ना कोई दीसे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, उच्चे पर्बत रिहा हिलाईआ। लग्गे अग्ग बहत्तर नाड़ा, ना कोई सके मात बुझाईआ। धर्म राए दा वज्जे ताड़ा, कलिजुग आपणी खेल खिलाईआ। गुरमुखां बख्शे एका दर दुआरा, चरन कँवल सच्ची सरनाईआ। मिल्या मेल हरि कन्त भतारा, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुर गोबिन्दे दित्ता वर, वर घर आपणा आप हंढाईआ। गुर गोबिन्दे वर घर पाया, हरि साचा कन्त कन्तूहला। ना मरे ना कदे जाया, देवे शब्द साचा झूला। कलिजुग वेला अन्तिम आया, आप चुकाए अगला पिछला लहिणा देणा मूला। गुरमुख साचे लए तराया, आप आपणी दया कमाया, जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, जो जन दर द्वारे आए भूला। आए भुल्ल दर द्वार, दर्शन लोचन नैणा। पाए मुल्ला विच संसार, गुर संगत साचा बहिणा। गुरमुख विरला पूरे तोल तुला, गुर पूरे मंनयां साचा कहिणा। लोकमात फलया फुल्ला, कलिजुग वहिण झूठा वहिणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन जन हरि देवे इक्क वर, आपे होए साक सज्जण सैणा।

चौथा घर हरि द्वार, आपणा आप उपाया। सन्त सुहेले कर त्यार, दर द्वारे लए बहाया। हड्ड मास नाड़ी ना कोए आकार, पंज तत्त दिस ना आया। जोती मेला शब्द अधार, शब्दी शब्द समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नूरी नूर रखाया। नूर उजाला सति पुरख चौथा घर, चौथा पद वखंदड़ा। गुर गोपाला इक्क घर, एका धाम सुहंदड़ा। दीन दयाला जोत धर, जोती मेल मिलंदड़ा। आपणी रचना आपे कर, भेव आपणे हथ्थ रखंदड़ा। पंचम खोल्हे साचा दर, साचा धाम सुहंदड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक कबीरा इक्क दर, एका राह वखंदड़ा। पंचम घर धाम सुहाया, धुर दरगाही मीता। आप आपणा मुख छुपाया, आपे जाणे आपणी रीता। सति पुरख निरँजण दर घर साचे आसण लाया, बैठा रहे अतीता। नानक निरगुण रिहा ध्याया, चरन कँवल तन जीता। निरगुण नर हरि दया कमाया, निर्धन बणाए मीता। आप आपणा नूर उपाया, दर घर हरि छेवें वेखे शब्द मीता। साचे शब्द हरि जणाया, पंचम घर राह वखाया, दर द्वारे नानक आया, जीवत जीवत जीवत जीता। प्रभ अबिनाशी बोल सुणाया, आप अडोल अडोल कराया, एका नाम प्याए मीठा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, छेवां घर बाहर कराया, पंचम दरस वखाए इक्क अनडीठा। पंचम घर दर सुहञ्जणा, मिले मेल बनवारी। चरन कँवल किया साचा मजना, नानक निरगुण हारी। ताल तलवाड़ा एका वज्जणा, किरपा कर मंगे दान होए पनिहारी। सतिनाम रक्खे लजना, वरते कल वड संसारी। नानक मेला साचे सज्जणा, सज्जण मैंढा हरि निरँकारी। दर दुआरा आप आपणा तज्जणा, गुर नानक शब्द करे अस्वारी। पुरख अबिनाशी पड़दा कज्जना, दो जहानां पावे सारी। नाम नगारा एका वज्जणा, अट्ठे पहर रहे धुन्कारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम देवे साचा वर, हरि साजन साचा सज्जणा। पंचम दर सिफ्त सलाह, नानक हरि गुण गाया। वेख वखाणे साचा थाँ, सरगुण दिस ना आया। ना कोई दीसे पिता माँ, बाल गोद ना कोई उठाईआ। ना कोई दीसे चिड़ी काँ, लक्ख चुरासी नज़र ना आया। ना कोई दीसे धुप्प छाँ, सूरज चन्न ना कोई चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम सुहाए इक्क दर, दर दुआरा इक्क रखाया। पंचम घर हरि भगवाना, भगवन रूप समाईआ। नानक देवे नाम निधाना, इक्क तराना तन उपजाईआ। कबीर कबीरे बद्धा गाना, तन्दी तन्द बंधाईआ। आपे होए जाणी जाणा, आप आपणा रूप वखाईआ। ना कोई बाणी ना कोई बाणा, छत्ती राग ना कोई अल्हाईआ। रसना गुण ना कोई वखाणा, बत्ती दन्द ना ताल रखाईआ। मन्दिर अन्दर ना कोए मकाना, गुरुदुआरा ना कोए बणाईआ। एका जोत हरि गुण निधाना, चारों कुन्ट डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दोहां मेला इक्क घर,

१६१
०६

घर बाहरा इक्क वखाईआ। एका मेला इक्क द्वार, आपणा मुख छुपाया। नानक आया विच संसार, जीआं जन्तां दुःख मिटाया। नाम सति गाई साची धार, मरदाना संग रलाया। सारंग सरंगा रिहा उचार, तार सितारा इक्क हिलाया। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, आपणा राह तकाया। पंचम करे बन्द किवाड़, छेवें कुण्डा लाहया। शब्द सरूपी सच्ची धार, आपणी आप वहाया। आपे होया विच्चों बाहर, जोती जोत समाया। जोत सरूपी अगम्म अपार, सत्तवें डेरा लाया। सत्तवें रंग महल्ल अपार, आकाश आकाशा भेव ना पाया। निरगुण रूप हरि निराहार, निरवैर रूप समाया। चारे कुन्ट होए उज्यार, अन्ध अन्धेर दिस ना आया। ना कोई दीसे होर सहार, ना कोई संग रलाया। दर दरवाज़ा ना कोई पाए सार, शब्द सुत सुत ना सके अलाया। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, आप आपणे घर समाया। आपे जाणे आपणी रुत्त, दिवस मास ना कोए जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर द्वारे बैठा आसण लाया। रसना भोग हरि भगवाना, गुरमुखां बणत बणांयदा। गुरमुखां बख्शे चरन ध्याना, आत्म सुख इक्क उपजांयदा। आत्म सुख जगत निशाना, उज्जल मुख करांयदा। उज्जल मुख दो जहानां, दुरमति मैल धवांयदा। दुरमति मैल मिटे निशाना, अमृत जाम प्यांअदा। अमृत जाम इक्क निधाना, तामस तृष्ना मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत संग समांयदा। हरिसंगत दर द्वार सुहाया, आप आया बंक द्वारी। हरिजन साचे लए तराया, देवे नाम वड भण्डारी। साचा मार्ग इक्क वखाया, चार वरनां मीत मुरारी। राउ रंकां एका रंग रंगाया, चाढ़े रंगण नाम ललारी। शब्द घोड़े तंग कसाया, आप आपणी किरपा धारी। सोलां कलीआं आसण लाया, साचे शाह करे अस्वारी। दो जहानी फेरा पाया, लोआं पुरीआं रिहा उधारी। वरभण्डी खोज खुजाया, जन भगतां रिहा अधारी। भेख पखण्डी मेट मिटाया, मारे खण्डा तेज़ कटारी। जेरज अंडी लेखे लाया, हरिजन आए चरन द्वारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क सुहाए बंक द्वारी।

हरि शब्द अभेद, भेव किसे ना पाया। ब्रह्मा गा गा थक्के चारे वेद, आदि अन्त दिस ना आया। वेद व्यासा लिखे कतेब, नौ अठारां पुराण जणाया। शास्त्र सिमरत रहे वेख, वेखणहारा दिस ना आया। आपे धारे आपणा भेख, खाणी बाणी लए उपाया। लक्ख चुरासी लिखणहारा लेख, जीव जन्त रिहा उपाया। साचे लोचन आपे वेख, हरिजन साचे लए जगाया। धुरदरगाही मस्तक मेख, आप आपणी आप लगाया। ना कोई जाणे धारी केस, मुंड मुंडाया ना हरि रघुराया। जोती जामा हरि दस्मेश, काहना कृष्ना रूप वटाया। दो जहानी नर नरेश, निरगुण सरगुण रूप समाया। सरगुण गुरसिख

विच प्रवेश, निरगुण निरँकार हो आया। आपे वसया सद वसेख, घट घट अन्दर डेरा लाया। सेवा लाए ब्रह्मा शिव शंकर गणेश, करोड़ तेतीसा संग रलाया। सुरपति राजा इन्द दर दरवेश, दोए जोड़ सीस झुकाया। आपे जाणे आपणा वेस, जुग जुग आपणा वेस वटाया। बाल जवानी अलड़ वरेस, बिरध बुढापा ना कोई रखाया। जुग जुग चले ना कोई पेश, जुग जुग आपे दए उलटाया। कलिजुग वेखे काली रेख, जूठ झूठ होए हलकाया। भरमे भुल्ले औलीए पीर शेख़, संग मुहम्मद चारे यार नाल रलाया। अल्ला राणी रही वेख, हू हू अल्ला नाअरा लाया। हकीर फ़कीर शाह दरवेश, हथ्थ जंजीर कवण रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, भेखाधारी भेख बावन पतित पावन दिस ना आया। पतित उधारी परम जोत, पारब्रह्म अबिनाशी। ना कोई वेखे वरन गोत, हरिजन तराए बणाए चरन दासी। नेड़ ना आए लाड़ी मौत, हरि दर दर घर घर काया मन्दिर अन्दर लहिणा देणा मूल चुकाए बाकी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत कर, हरिजन अमृत जाम प्याए, सहिंसा रोग चिन्त मिटाए, बण बण साचा साकी। साचा साकी हरि गोबिन्द, भर भर जाम प्यांअदा। बन्दा ख़ाकी चुगली निन्द, निन्दक निन्दया मुख रखांयदा। गुरमुख बणाए साची बिन्द, काया बिन्दरा बन वखांयदा। आप मिटाए तृष्ना भुक्ख, आत्म तृप्त करांयदा। गर्भवास ना उलटा रुक्ख, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। सुफल कराए मात कुख, जन हरिभगत भगती सेवा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन काया जन कढांयदा। धन्न दुआरा धन्न घर, हरिजन धन्न कमाईआ। तन मन्दिर मन गया मन्न, गुर चरन सरन सरनाईआ। धर्म राए ना देवे डन्न, लाड़ी मौत ना करे कुड़माईआ। जोत निरँजण चाढ़े चन्न, सच सच करे रुशनाईआ। भाण्डा भरम प्रभ देवे भन्न, नाम भण्डारा इक्क रखाईआ। पंच विकारा खन्न खन्न, तृष्ना तामस दए मिटाईआ। जन भगतां बेड़ा रिहा बन्न, कलिजुग तेरी अन्त अन्त कन्त वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख सुहाए साचा दर, आप आपणा चरन टिकाईआ।

धन्न भाग धन्नवन्त, धन पाया हरि नाउँ। मिल्या मेल प्रभ साचे कन्त, देवे ठण्ढी छाउँ। आप बणाए मात बणत, दर दर घर घर करे सच न्याउँ। गुरसिख साचा सज्जण सन्त, हरि साचा पिता माउँ। मिले वड्याई विच जीव जन्त, हँस बणाए काउँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पार कराए फड़ फड़ बाहों। सिँघ जरनैल तन लैणा जर, हरि जोबन हरि रंग रतया। हरि नाम वड्याई जगत वर, गुर मन्त्र जगत साची मतया। चरन धूढ़ इशनान कर, कलिजुग

वा ना लग्गे तत्तया। खुल्ला रहे सदा घर, हरि देवे सच समरथया। भगवन्त भगती ना जाए हर, पंचम पंच ना जाए मथया। नाम भण्डारा रिहा भर, इक्क चढ़ाए साचे रथया। आप आपणे जिहा कर, लेख चुकाए हथ्थो हथ्थया। अमृत मेवा देवे वर, शब्द कहाणी अकथ अकथया। सरन सरनाई जाणा तर, लेखा चुक्के साढे तिन्न तिन्न हथ्थया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे रक्खे दे कर हथ्थया। नाम ख़ज़ाना देवे वड भण्डारी। आदि अन्त ना जाए निखुट्ट, वरते वरतावे विच संसारी। गुरमुख लाहा लैण लुट्ट, मनमुख सुत्ते पैर पसारी। काया नगारे ना वज्जे शब्द चोट, नेत्र रोवण ज़ारो ज़ारी। गुरमुख विरला विच्चों कोटी कोट, प्रभ साचा रिहा उभारी। आपे कढ्ढणहारा खोट, पारस परखे परखणहारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख तेरी रिहा पैज संवारी। ना कोई नगर खेड़ा जगत गराउँ, ना कोई शहर वसंदड़ा। गुरमुखां दीसे एका थाउँ, गुर चरन ध्यान रखंदड़ा। धरत सुहावी साची माउँ, प्रभ साचा चरन छुहंदड़ा। गुरमुखां पकड़े आपे बाहों, मेल मिलाए मिल्या मेल ना फेर विछंदड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख इक्क घर जोती नूर जोत जगन्दड़ा। सिख गुर दास रक्ख आत्म आस, प्रभ पूरी आस करांयदा। लेखा जाणे दस दस मास, सास ग्रास वेख वखांयदा। हरि हरि वस्त हरि साचे पास, देवणहार आप अख्वांयदा। आपे करनहारा नास, पूत सपूता आप उपजांयदा। गुर पूरे सद बलि बलि जास, गुरसिख रूप समांयदा। साचा मेला हरि गुणतास, गुणवन्ता हरि गुण झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूरो नूर उपांयदा। गुरसिख सुहाया बंक द्वार, दिवस रैण वज्जे वधाईआ। गुर संगत गाया मंगलाचार, प्रभ साचे साची सेव कमाईआ। आपे बख्शे बख्शणहार, बख़शिश आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरसिख गुरसिख तेरा जगत प्यार, जागरत जोत रिहा जगाईआ। भगत सुहेला मीत मुरार, सेवक सेवा लेखे लाईआ। आपे बणया दर भिखार, प्रेम भिच्छया मंगण आईआ। आपे कारज दए संवार, पूरन इच्छया आप कराईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, साची सिख्या इक्क रखाईआ। नाम खण्डा तेज कटार, गुरमुख साचे तन पहनाईआ। आप कराए सच श्रृंगार, सच दस्तारा सीस टिकाईआ। चरन जोड़ा अपर अपार, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। शब्द पौड़ा एकँकार, आपणा आप वखाईआ। लम्बा चौड़ा विच संसार, दिस किसे ना आईआ। जन भगतां आत्म अन्तर बौहड़ा, आपणी रीती रिहा सखाईआ। वेखे परखे मिट्ठा कौड़ा, हरि रस मिट्ठा अन रस डीठा गुरमुख रिहा खाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख गुर संगत देवे नाम वर, भगत सच्ची वड्याईआ।

✻ २३ मग्घर २०१३ बिक्रमी सरदारा सिँघ दे गृह पिण्ड मनावां तहिसील ज़ीरा ज़िला फिरोजपुर ✻

सतिगुर दाता दीन दयाल, दया निध अख्वांयदा। भगत वछल आप कृपाल, कर किरपा पार लँघांयदा। गुरमुख वेखे साचे लाल, आप सोए मात उठांयदा। देवे शब्द सच्चा दलाल, अकाल अकाला राह वखांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी विच्चों लए भाल, अवल्लड़ी चाल आप रखांयदा। काया गागर वेखे ताल, अमृत आत्म आप सुहांयदा। तोड़नहारा जगत जंजाल, जुगत आपणे हथ्थ रखांयदा। ना कोई शाह ना कंगाल, ठंडा तत्ता ना कोई अख्वांयदा। गुरमुख वेखे साचे लाल, नाम टिक्का तिलक लगांयदा। जुग जुग घालण रिहा घाल, भेखाधारी भेख वटांयदा। कलिजुग काया फल लग्गा डाल, अमृत मेवा नाम रखांयदा। मन मती खाली दिसे खाल, गुर मती रंग चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त दलाल, कर्म धर्म प्रभ रिहा विचार, काया मन्दिर लेख लिखांयदा। काया मन्दिर साचा घर, हरि साचे जोत जगाईआ। भगत सुहेला देवे वर, शब्द सिँघासण आसण लाईआ। बन्द कराए नौ दर, आप आपणा मुख छुपाईआ। दसवें खेल हरी हरि, हरि गोबिन्द जोत सवाईआ। आपणी करनी रिहा कर, हरिजन साचे रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख वखाए इक्क घर, घर बाहरा आप अख्वाईआ। एका घर निरँकार है, जोत सरूपी बलोए। दूजी दिसे शब्द धार है, अवर ना दीसे कोए। तीजे अमृत आत्म धार है, कँवल नाभी मुखड़े चोए। चौथे मेला हरि दातार है, सुणे सुणाए साची सोए। पंचम अगम्म अगम्मा कार है, पवण स्वासी देवे ढोए। छेवें शब्द सरूपी तार है, वजावणहारा एका होए। सत्तवें सति पुरख निरँजण इक्क अकार है, आकाश प्रकाश ना जाणे कोए। अठवें अठ्ठां तत्तां वसे बाहर है, वेस अवेसा आपे होए। नौ दर ना कोई द्वार है, हड्ड रत्त नाड़ी मास ना रक्खे कोए। दसवें दहि दिशा वेखे पृथ्वी आकाश है, पारब्रह्म अबिनाशी एका सोए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां एका देवे नाम धना, दूसर भेव ना जाणे कोए। देवे नाम वड बलकारी, जुग जुग दया कमांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, गुरमुख साचे आप जगांयदा। शब्द खण्डा तेज कटारी, पंचम करे तन श्रृंगारी, पंचम राग उपजांयदा। पंचम रो रो नीर वहांयदा। पंचम करे जोत उज्यारी, पंचम अन्ध अन्धेर समांयदा। पंचम देवे शब्द उडारी, पंचम डूँघी कन्दर आप सुटांयदा। आत्म मेला कन्त भतारी, पंचम विछोड़ा इक्क रखांयदा। पंचम सोहे सच दरबारी, पंचम आपे मुख भवांयदा। पंचम सीस छत्र झुलारी, पंचम ख़ाकी ख़ाक मिलांयदा। वेखे खेल हरि निरँकारी, भाणा आपणे हथ्थ रखांयदा। लक्ख चुरासी काची डोरी, वेले अन्त ना कोई बचांयदा। साध सन्त होए हँकारी, जीव जन्त ना कोई छुडांयदा। माया

भुल्ले भरम गंवारी, आत्म पड़दा कोई ना लांहयदा। वेख वखाए उच्च महल्ल अटारी, अन्दर मन्दिर बंक सुहांयदा। माया ममता होई प्यारी, जीव जन्त होए हँकारी, दे मति ना कोई समझांयदा। पढ़ पढ़ थक्के वेद विचारी, मदीने मक्के हाहाकारी, अल्ला राणी ना कोई मेल मिलांयदा। ग्रन्थी पन्थी ना पावे सारी, अञ्जील कुरानां अन्ध अंध्यारी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, साचा खेल आप खिलांयदा। कलिजुग खेल करावणहारा, पारब्रह्म अबिनाशी। गुरमुख साचे मेलणहारा, जन भगतां दासन दासी। लक्ख चुरासी जीव जन्त साध सन्त सोहँ एका कंडा तोलणहारा, वेख वखाए पृथ्वी आकाशी। शब्द दो अक्खर बोलणहारा, प्रगट होए घनकपुर वासी। आदि अन्त तोलणहारा, धर्म राए खोले फाँसी। सच दुआरा खोलणहारा, चार वरन कराए एका दासी। गुर दर मन्दिर मस्जिद फोलणहारा, पकड़ उठाए पंडत कांशी। कलिजुग काया अन्तिम रोलणहारा, नाम जपाए स्वास स्वासी। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, हरिजन होया दासन दासी। दासी दास हरि गोबिन्दा, गोबिन्द रूप वटांयदा। जन भगतां लाहे आत्म चिन्दा, सागर सिन्ध नीर वहांयदा। वड दाता जोद्धा सूरा मृगिन्दा, शब्द निराला इक्क चलांयदा। आपे तोड़नहारा जिंदा, बजर कपाटी तोड़ तुड़ांयदा। मनमुख जीव करन निन्दा, निन्दक निन्दया मुख रखांयदा। गुरमुख उपजाए साची बिन्दा, आप आपणी गोद उठांयदा। गुरमुख साचे सुत दुलारे, इक्क कराए वणज वपारे, नाम वस्त हरि झोली पांयदा। आत्म अन्तर भरे भण्डारे, वजाए नाद धुन अपारे, जोती नूर करे अकारे, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। सोलां कलीआं तन शृंगारे, वलीआ छलीआ आप निरँकारे, जोद्धा बलीआ शब्द जैकारे, अकल कला रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे इक्क वर, दाता दानी इक्क हो आंयदा। दाता दानी हरि भगवाना, आपणी जोत जगांयदा। जोत सरूपी पहरया बाना, आप उठाए राउ रंक राज राजानां, शाह सुल्तानां आप हिलांयदा। जन भगतां हथ्थीं बन्ने साचा गाना, नाम रंगण साची शब्दी रंग चढ़ांयदा। इक्क झुलाए शब्द निशाना, गुणवन्ता हरि गुण निधाना, ब्रह्मा शिव होए हैराना, भेव अभेदा भेव ना पांयदा। करोड़ तेतीसा मंगे दाना, वेले अन्त ना कोई छुडांयदा। वरभण्डी गाए इक्क तराना, ब्रह्मण्डी राग अलांयदा। मेट मिटाए जीव जन्त पखण्डी, ना कोई दीसे नार अन्तिम दुहागण रंडी, अन्तिम अन्त करांयदा। फड़ कटारा शब्द चण्डी, नौ खण्ड पृथ्वी पाए वंडी, सत्तां दीपां वेख वखांयदा। आपे वेखे जेरज अंडी, उत्भुज सेत्ज नाल रलांयदा। लक्ख चुरासी वड्ढे कंडी, तिक्खी धारा इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वेखे अन्तिम दर, दर दरवाज़ा इक्क खुलांयदा। हरिजन वेखे वेखणहारा, दिस किसे ना आए। गुरमुख विरला पेखे पेखणहारा, भरमे भुल्ले औलीए पीर शेखे, मुल्ला कुतब गौंस

१६७
०६

भेव ना पाया ए। पंडत पांधे वेखण रेखे, कवण कूटे हरि हरि जोत जगाया ए। पुराण पुराणी किसे ना लेखे, गोझ ज्ञान दिस ना आया ए। अन्तिम मिटणी सभ दी रेखे, खाणी बाणी रही कुरलाया ए। ना कोई जाणे धारी केसे, केसाधारी कवण अख्वाया ए। कवण सरूपा हरि दस्मेसे, कवण तीर कमान उठाया ए। कवण जोद्धा नर नरेशे, कवण खण्डा तन लटकाया ए। कवण लेखा लाए लेखे, ब्रह्मण्डां खोज खुजाया ए। सृष्ट सबाई आपे वेखे, वेखणहारा दिस ना आया ए। गुर पीर साध सन्त किसे ना चले पेशे, लोकमाती वेख वखाया ए। खेले खेल देस पर्देसे, देवत देव राह तकाया ए। नजर ना आए गणपति गणेशे, शंकर अंकर कंकर मृदंग रिहा वजाया ए। तक्क तक्क थक्के ब्रह्मा विष्न महेषे, हरि विष्नूं रूप समाया ए। आपणी जोत आप प्रवेशे, आप आपणा रिहा उपाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, काली धार मिटाया ए। कलिजुग काली धार, लक्ख चुरासी चोली रंगीआ। हरि साचा मेला मुहम्मदी यार, यार यारी एका मंगीआ। अल्ला राणी करे प्यार, दो हथ्थीं वाहे कंघीआ। मंगे मंग दर द्वार, मूल ना संगीआ। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, सम्मत चौदां लग्गे जंगीआ। लहिणा देणा कर्ज उतार, अन्तिम होई सिरों नंगीआ। प्रगट हो विच संसार, कलिजुग खेले खेल फरंगीआ। धर्म राए दा खोल्ह किवाड़, लाड़ी मौत वजाए मृदंगीआ। अज़राईल ज़बराईल असराफील मेकाईल साचे लाड़, हथ्थीं पायण आपणी वंगीआ। साचे घोड़े वसीए चार, चौदां तबक अद्ध विच टंगीआ। धरत मात वखाए इक्क अखाड़, संग मुहम्मद एका मंगीआ। पुरख अगम्मी साची धाड़, हरि शब्द लगाए आप आपणी अंगीआ। नौ खण्ड पृथ्वी वेख उजाड़, भारत खण्डी लग्गे चंगीआ। त्रैगुण माया देवे साड़, सम्मत चौदां वंडाउँणी वंडीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे इक्क वर, सुरत सवाणी ना होए रंडीआ।

गोबिन्द काया साचा गढ़, प्रभ साचे आप उसारया। कीरतपुर नाम धर, शब्द सरूपी चार दिवारया। आपे वेखे उप्पर चढ़, दिस किसे ना आ रिहा। ना कोई सीस ना कोई धड़, आप आपणे अंग लगा रिहा। लक्ख चुरासी नाल रिहा लड़, शब्द खण्डा इक्क वखा रिहा। तोड़ी जाए किला हँकारी गढ़, ब्रह्मण्डां खोज खुजा रिहा। लग्गी रहिण ना देवे मात जड़्ह, वेले अन्तिम आप उखड़ा रिहा। साध सन्त भगत सुहेले लए फड़, शब्द डोरी इक्क वखा रिहा। एका अक्खर जाए पढ़, सृष्ट सबाई राह वखा रिहा। ना कोई दिसे गोर मड़्ह, कलिजुग अन्तिम वहिण वहा रिहा। ना कोई पीए हुक्का नड़, मदिरा मास ना रसन लगा रिहा। पुरख अगम्मा इक्क वगाए नाउँ हड़्ह, साची धारा नाम चला रिहा। जगत विकारा जाए सड़,

त्रैगुण माया तत्त समा रिहा। जोत सरूपी अग्गे खड़्, गुरमुख सोए मात जगा रिहा। आप फड़ाए आपणा लड़, भरम भुलेखा दूर करा रिहा। जोत जगाए बहत्तर नड़, अन्ध अन्धेरा आप मिटा रिहा। शब्द चलाए धड़ा धड़, नाद अनादा गीत सुणा रिहा। काया मन्दिर जाए वड़, दस्म द्वारी कुण्डा लाह रिहा। शब्द सिँघासण उप्पर चढ़, दीपक जोती इक्क जगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया किला कोट, शब्द नगारे साची चोट, आप आपणी मात लगा रिहा। गोबिन्द काया चार दिवार, प्रभ साचे रचन रचाईआ। आपे होया मीत मुरार, साक सज्जण सैण आप अख्वाईआ। अमृत आत्म देवे साची धार, दिवस रैण रिहा चलाईआ। शब्द घोड़े साचे चाढ़्, पुरीआं लोआं रिहा दुड़ाईआ। पुरख अगम्मा मारे मार, अगम्म अगम्मी खेल रचाईआ। प्रगट होए विच संसार, एका डंक नाउँ वजाईआ। राज राजानां करे ख़बरदार, साधां सन्तां रिहा हिलाईआ। एका खण्डा दुहरी धार, निरगुण सरगुण बणत बणाईआ। जीव जन्त जन होए गंवार, कलिजुग कार कमाईआ। माया ममता तन शृंगार, लोभ मोह करी कुड़माईआ। गुर का शब्द ना तन प्यार, मनमती जीव हलकाईआ। गोबिन्द गोबिन्द रूप अपार, हरि गोबिन्दा नज़र ना आईआ। सृष्ट सबाई पाए चिन्दा, आप आपणी कराए निन्दा, कलिजुग अन्तिम दए दुहाईआ। गुरमुख उपजाए साची बिन्दा, हरि दाता वड गुणी गहिंदा, गुणवन्ता आप अख्वाईआ। शब्द धारा इक्क वहाए सागर सिन्धा, बजर कपाटी पार कराईआ। आपे तोड़े हँकारी जिंदा, सति सांतक रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया साचा गढ़्, हरि वेखे थाउँ थाँईंआ। गोबिन्द काया नाम निशाना, प्रभ साचा मात चढ़ांयदा। एका रक्खे तीर कमाना, रसना चिल्ला नाउँ रखांयदा। खेले खेल दो जहानां, त्रैलोकां फोल फुलांयदा। चौदां हट्टां वेख वखाना, तीर्थ तट्टां फोल फुलांयदा। आपे जाणे गुरुद्वारे मन्दिर मस्जिद मट्ठां, वेद पुराणां भेव चुकांयदा। धुर दरगाही आए नट्ठा, सर्बकल आप समरथा, लोकमाती फेरा पांयदा। सतिजुग कराए साची चट्ठा, लक्ख चुरासी एका पड़दा पाए चिट्टा लट्ठा, लाड़ी मौत सेवा लांयदा। कलिजुग अन्तिम चरन द्वारे ढठ्ठा, पंच विकारी जाए नठ्ठा, धीरज धीर ना कोई धरांयदा। सतिजुग सति सन्तोख कराए इक्ट्ठा, इक्क रखाए साचा हट्ठा, प्रभ चरन सीस निवांयदा। प्रभ अबिनाशी आप बंन्हाए एका मुट्ठा, कलिजुग वेले अन्तिम तुट्ठा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया वेख घर, दीपक जोती इक्क जगांयदा। गोबिन्द काया साचा घर, हरि शब्दी वज्जी वधाईआ। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, हरि जोत करी कुड़माईआ। नाम विच्चोला आवे दर, वेखे धी जवाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, हरि साचे रचन रचाईआ। सति पुरख निरँजण लाए जड़्, सति सतिवादी नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द

काया तेरा दर, ब्रह्मण्डां खोज खुजाईआ। गोबिन्द काया दर अपार, हरि जोती जोत समांयदा। देवणहारा साचा वर, वरन गोती भेव मिटांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी एका घर, सत्तां दीपां मेल मिलांयदा। राज राजानां शाह सुल्तानां आपणा आप ल्या हर, वेले अन्त ना कोई छुडांयदा। जन भगतां नाम भण्डारा रिहा भर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हांयदा। अमृत आत्म नुहाए साचे सर, तीर्थ तट्ट ना कोई वखांयदा। गंगा गोदावरी आए डर, अट्ठ सट्ठ लहिणा देणा मूल चुकांयदा। प्रगट होए अवतार नर, लिख्या लेख ना कोई मिटांयदा। जीव जन्त साध सन्त आपणा कीता लैण भर, साचा कन्त हरि भगवन्त लेखा लेख मुकांयदा। आप बणाए आपणी बणत, हरि जुग जुग भेख वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया काया धार, हरि नामे नाउँ चलांयदा। गोबिन्द काया नाम अपारा, हरि साचा आप टिकांयदा। आपे देवे देवणहारा दिस किसे ना आंयदा। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी कारा, अगम्मड़े धाम सुहांयदा। जोत सरूपी कर अकारा, शब्दी डंक वजांयदा। लोआं पुरीआं करे ख़बरदारा, ब्रह्मा शिव उठांयदा। करोड़ तेतीसा देवे इक्क हुलारा, देवत सुर सर्ब कुरलांयदा। मातलोक प्रभ लै अवतारा, वरभण्डी खेल खिलांयदा। लक्ख चुरासी पावे सारा, बन्द खुलासी आप करांयदा। धर्म राए दर वेखे फाँसी, मनमुखां आप टंगांयदा। गुरमुखां करे चरन दासी, दासी दास आप हो जांयदा। पारब्रह्म पुरख अबिनाशी, आप आपणी रचन रचांयदा। पकड़ उठाए पंडत कांशी, सम्मत पन्दरां लेख लिखांयदा। गुर मन्दिर अन्दर बहि बहि जो करन हासी, ग्रन्थी पन्थी खिच्च लिआंयदा। अंज़ील कुरानां करे दासी, संग मुहम्मद चार यार हरि गिरधार, नाम खण्डा इक्क वखांयदा। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, जेरज अंडां फोल फुलांयदा। गोबिन्द काया साचा रंग, रंगणहार करतारा ए। आप निभाए आपणा संग, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा ए। नौ द्वारे भुक्ख नंग, तृष्ना अग्नी हाहाकारा ए। गुर दसवें दसवें घर इक्क वज्जे मृदंग, अनहद रखाई साची धारा ए। पंचम मंगे साची मंग, हरि सोहे चरन दुआरा ए। नाम रंगीला सच पलँघ, प्रभ ढाहया उच्च मुनारा ए। दूसर कोए ना सके लँघ, हरि किया बन्द किवाड़ा ए। गुर गोबिन्दे मंगी मंग, दर घर साचे मेलणहारा ए। पुरख अबिनाशी लाया अंग, पूत सपूता कर प्यारा ए। शब्द घोड़े कस तंग, कराए आप उत्ते अस्वारा ए। नीली धारों पार लँघ, नीले वाला हरि निरँकारा ए। नाम डोरी इक्क पतंग, साचा नाम हुलारा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया तेरा रूप, पुरख अबिनाशी साचा भूप, रंग रेख ना कोई वखाया ए। गोबिन्द काया साची रेख, हरि साची बणत बणाईआ। शब्द सरूपी एका लेख, निशअक्खर वक्खर नाउँ रखाईआ। परा पसन्ती रही वेख, मधम बैखरी जुग जुग गाईआ। ना कोई जाणे धारी केस, दस दस्मेश ना रूप समाईआ। घर

घर बैठे कर कर वेस, साधां सन्तां पई लड़ाईआ। बाल जवानी ना बिरध वरेस, हरि एका रंग समाईआ। दो जहानी नर नरेश, थिर घर साचे डेरा लाईआ। ना कोई जाणे ब्रह्मा शिव विष्न गणेश, सारे बैठे राह तकाईआ। जन भगतां होए दर दरवेश, दर दरबाना आप अख्वाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम रेख, प्रभ अबिनाशी जोत जगाईआ। लक्ख चुरासी लिख्या लेख, वेले अन्तिम आप मिटाईआ। सतिजुग साचे लाए मेख, पूत सपूता आप अख्वाईआ। नेत्र लोचन नैणा पेख, सम्मत सम्मती नेड़े आईआ। जोती जामा हरि हरि लेख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया एका राग हरि आपणा रिहा उपाईआ। गोबिन्द काया साचा राग, हरि साचा आप सुणांयदा। पंचम मीता गया जाग, पंचम संग निभांयदा। पंचम बुझाए तृष्ना आग, आत्म तृप्त करांयदा। पंचम पकड़े आपे वाग, डोरी आपणे हथ्थ रखांयदा। पंचम धोवे काला दाग़, दुरमति मैल धवांयदा। पंचम दीपक जोती जगे चिराग, नाम बत्ती एका पांयदा। पंचम मेला कन्त सुहाग, पंचम नारी इक्क हंढांयदा। पंचम लाए साचा भाग, आत्म सेजा इक्क विछांयदा। पंचम देवे इक्क वैराग, आप आपणी सेवा लांयदा। पंचम बणाए हँस काग, सर सरोवर इक्क नुहांयदा। पंचम बन्ने साचा ताग, धुरदरगाही तोड़ निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया साचा सर, सर सरोवर इक्क वखांयदा। गोबिन्द काया साचा सर, हरि वेखे तीर्थ तट्टया। एका अमृत देवे भर, दर द्वारे बहि बहि चट्टया। हरि हरि भाणा रिहा ज़र, जोत जगाए काया मट्टया। आप आपणे जिहा कर, भाग लगाए चौदां हट्टया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख काया साची चोली एका रंग चढ़ाए खट्टया। काया चोली रंग बसन्ती, हरि गोबिन्द तन चढ़ांयदा। साचा मेला हरि हरि कन्ती, पूरन भगवन्ती जोत जगांयदा। मनमुख जीव देव दंती, हउमे हँगता झूठी संगती, जगत विकारा मुख रखांयदा। गुरमुख साचे साची पंगती, अंगीकार नानक अंगदी, अंगीकार आप हो जांयदा। शब्द दुआरा एका लँघती, कट्टणहारा भुक्ख नंगती, नाम भण्डारा इक्क वखांयदा। अमृत धारा चरन धूढ़ साची गंगती, गंगा गोदावरी माण गंवांयदा। कलिजुग अन्तिम वेखे जंगती, शब्द खण्डा हथ्थ उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया तेरा भेख, भेखाधारी आप वटांयदा। गोबिन्द काया कलिजुग भेख, हरि साचे रूप समाया ए। कलिजुग अन्तिम वेला वेख, अन्ध कूप आप हो आया ए। वेख वखाणे औलीए पीर शेख़, मुल्ला काज़ी रिहा हिलाया ए। आपे लिखणहारा लेख, दिस किसे ना आया ए। सृष्ट सबाई रिहा वेख, दर घर साचे डेरा लाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द भण्डारा रिहा भर, सतिजुग साचा राह तकाया ए। गोबिन्द भण्डारा हरि भरपूर, आपणी हथ्थीं आप करांयदा। वड दाता हरि जोद्धा सूर, सूरबीर आप अख्वांयदा।

एका जोती साचा नूर, हर घट में आप टिकांयदा। शब्द अनादी साची तूर, पंचम अनादी धुन आत्मक आप सुहांयदा। लक्ख चुरासी नाता कूड़, कलिजुग अन्त तुड़ांयदा। जन भगतां बख्शे चरन धूढ़, धूढ़ी मजन इशनान करांयदा। एका चाढ़े रंग गूढ़, आदि अन्त उतर ना जांयदा। चतुर सुघड़ बणाए मूढ़, नेत्र अंजन नाम पांयदा। लक्ख चुरासी कटे जूड़, धर्म राए मुख भवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया सच अटारी, पारब्रह्म हरि आप उसारी, बाडी दूसर कोए ना लांयदा। गोबिन्द काया सच महल्ला, हरि आपणा आप उसारया। जोत सरूपी इक्क इकल्ला, बैठा हरि निरंकारया। शब्द रखाए तिक्खा भल्ला, लोआं पुरीआं पावे सारया। दर दुआरा एका मल्ला, नूरो नूर होए उज्यारया। लक्ख चुरासी दूई द्वैती मेटे सल्ला, कलिजुग अन्तिम लए अवतारया। जोत जगाए घड़ी घड़ी पल पला, निहकलंका खेल अपारया। आपे होए वल छला, बावन भेखी भेख अपारया। प्रभ का भाणा अन्त ना टला, हरि लेखा लिखणहार लिखा रिहा। मिल्या मेल गोबिन्द डल्ला, सम्मत चौदां मेल मिला रिहा। आप वखाए निहचल धाम अटला, हरि साचा आसण ला रिहा। जोती शब्दी आपे रला, गुरमुख काया डेरा ला रिहा। किसे दिस ना आए जला थला, अड्ड सड्ड डूँघा वहिण वहा रिहा। दीपक जोती एका बला, कलिजुग मेटे अन्ध अंध्यारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया साचा नाउँ आपणा आप रखा रिहा। गोबिन्द काया साचा नाम है, हरि नामे बणत बणाई। ना कोई तृष्ना ताम है, माया अग्न ना दए जलाई। ना सुबह अन्धेरा शाम है, दिवस रैण ना कोए जणाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया वेख घर, जोती शब्द करे कुड़माई। शब्द कुड़माई नाम कर, वज्जे सच तराना। दहि दिशा इक्क वधाई, अनहद राग महाना। पंचम गावण चाँईं चाँईं, मिल्या मेल श्री भगवाना। आप उठाए फड़ फड़ बांही, वाली दो जहानां। राग छतीसा दन्द बतीसा इक्क इकीसा कहिण ना जाई, नाद अनादी इक्क तराना। बीस बीसा खेल रचाई, जगत जगदीसा हरि रघुराई, गुर गोबिन्दे मेल मिलाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया साचा ताज, हरि साचा सीस सुहाना। दो जहानी एका राज, राजन राज आप अख्वांयदा। लोआं पुरीआं साजन साज, आप आपणी बणत बणांयदा। आपे रचणहारा काज, आपे खेल खिलांयदा। आपे मारनहारा आवाज़, आपे गूढ़ी नींद सवांयदा। आपे जुग जुग देवणहारा दाज, आपे सीस मुंडांयदा। आपे रक्खणहारा लाज, आपे मुख छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया रंग गूढ़ा, एक एक चढ़ांयदा। गोबिन्द काया रंगण गूढ़ा, हरि साचे आप रंगाया। नाम सरूपी पाया चूड़ा, सति सन्तोखी मैहन्दी लाया। जन भगतां कट्टण आया जूड़ा, कलिजुग देवे फंद कटाया। चरन प्रीती

बख्शे धूढ़ा, बत्ती दन्द रहे गुण गाया। माया ममता जूठा झूठा कूड़ा, मनमुखां झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया इक्क अटला, ऊँचो ऊँच वखाया। गोबिन्द काया उच्च अटला, हरि साचा बेअन्त बेअन्तया। आकाश आकाशी दीपक बला, पवण गाए ना कोई स्वास्सया। निरँकार आकार आपे रला, संसकार ना जीव जन्तया। आप वसाया रंग महल्ला, रंग माणे नारी कन्तया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया वेख दर, वखाए निहचल धाम अचल्ला। गोबिन्द काया सति सरूप, हरि सांतक सति वरताया। ना कोई रंग ना कोई रूप, रेख भेख दिस ना आया। वेखणहारा चारे कूट, दहि दिशा फोल वखाया। नाम हुलारा रिहा झूट, हरि जोती सेवा लाया। आपे होया साचा पूत, हरि गोबिन्द पूत अख्वाया। एक तागा साचा सूत, लक्ख चुरासी आप पुराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया इक्क आकार, लोआं पुरीआं विच समाया। गोबिन्द काया जगत आकार, भगत सुहेला मीता। नाम खण्डा तेज कटार, हरि रसना शब्द पलीता। साचे घोड़े हो अस्वार, सृष्ट सबाई आपे जीता। जन भगतां पावे आपे सार, हरि दाता पतित पुनीता। खोलणहारा बन्द किवाड़, एका शब्द जणाए माण गंवाए अठारां ध्याए गीता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया सच मृदंग, आप सुणाए हस्त कीटा। गोबिन्द काया नाम मृदंगा, हरि आपणा आप रखाया। दस्म द्वारी अन्दर टंगा, दिस किसे ना आया। जीव जन्त साध सन्त बिन हरि नामे भुक्खा नंगा, नौ द्वार फिरे हलकाया। अंगीकार ना होए अंगा, जगत नुहावण नुहाया गंगा, साचा संग ना कोई निभाया। एका तार निरँकार नानक नाम सुरंगा, सारंगधर रिहा वजाया। शब्द रंगीला हरि पलँघा, सति सतिवादी सेज विछाया। हरिजन लगाए आपणे अंगा, गोबिन्द गोबिन्द दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया वेख घर, बंक दुआरा इक्क सुहाया। गोबिन्द काया द्वार बंक है, बंक द्वारी आप। ना कोई राउ रंक है, ना कोई पुन्न पाप। ना कोई सहिंसा रोग शंक है, जगत जोग ना कोए संताप। ना कोई मनुआ मन का मनक है, पूजा पाठ ना कोई जाप। खेले खेल बार अनक है, सृष्ट सबाई माई बाप। जोती जोत सरूप हरि, जुग जुग जोती नूर कर, गोबिन्द आसा पूर हरि, करे कराए वड प्रताप। गोबिन्द आसा पूरीआ, लोकमात वज्जी वधाईआ। सर्बकला आपे भरपूरीआ, देवे दरस हरि हर थाँईंआ। नूर नुरानी नूरो नूरीआ, अन्ध अन्धेर रिहा मिटाईआ। कलिजुग माया कूड़ो कूड़ीआ, जगत जंजाला रिहा तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया देवे वर, वर दाता आपे बौहड़ीआ। वर दाता हरि भगवन्त, गुर चेले आप सुहांयदा। आपे जाणे साध सन्त, साचे मेले मेल मिलांयदा। भरम भुलेखा जीव जन्त, माया ममता विच फसांयदा।

हरिजन मेला साचे कन्त, कन्त कन्तूहला दरस दिखांयदा। जुग जुग महिंमा अगणत, लेखा गणत ना कोई गिणांयदा। कलिजुग माया पाए बेअन्त, मायाधारी माया मोह रुढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, डंक अंक एका एक रखांयदा। एका डंक राउ रंक, द्वार बंक जणाईआ। हरिजन उठाए दया कमाए जिउँ जन जनक, वासी पुरी घनक आपणी दया कमाईआ। आत्म जोती लाए तनक, आपे कढ्ढे काया शंक, सति सरूपी दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया मेल दर, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाजा एका एक सुहाईआ।

तन मन्दिर जिस जन देख्या, आए चरन द्वार। कवण द्वारे हरि हरि बहि बहि लिखे लेखया, कवण द्वारे सुणे पुकार। कवण द्वारे मेटे लिखी रेखया, कवण द्वारे लोचन तीजा दए उग्घाड़। कवण द्वारे नाता तुट्टे धारी केस्सया, कवण द्वारे मिटाए पंचम धाड़। कवण द्वारे होए दर दरवेश्या, कवण द्वारे नाता तुट्टे बहत्तर नाड़। कवण द्वारे हरि जू हरि मन्दिर अन्दर देख्या, हरि शब्दी साचा लाड़। जोती जोत सरूप हरि, आपे वेखणवाला दर, घाढ़नहारा साचा घड़। हरि शब्द हरि साची बाणी, अनहद राग अलांयदा। रसना कथ ना सके कहाणी, अकथ कथा समांयदा। महल्ल अटल जाणे जाणी, जो जन आपणा वेख वखांयदा। अमृत आत्म पीता ठंडा पाणी, ताल सुहावा नज़री आंयदा। मिल्या मेल गुर पूरे हाणी, गुर शब्दी शब्द समांयदा। आवण जावण चुक्की काणी, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, सन्तन वेखे इक्क घर, ना कोई नारी ना कोई नर, नर नार ना कोए अख्वांयदा।

भावी भाणा हरि है, दर दर रही बिल्लाए। नुहावण नुहाउँणा साचे सर है, गुर चरन सरन सच्ची सरनाए। मरनी मरना जाणा मर है, गेड़ गेड़ा विच फिराए। हाहाकार दर दर है, घर घर रहे कुरलाए। तृष्ना अग्नी रहे सड़ है, माया ममता तन अग्न जलाए। जूठा झूठा घाड़न घड़ है, जो घड़या भन्न वखाए। गुरमुख साजन साचा लाड़ है, राए धर्म ना दए सज़ाए। दर घर साचे देवे वाड़ है, दर दुआरा इक्क वखाए। आपे जाणे चंगे माढ़ है, कर्म गत भेव ना राए। मनमुखां मगर लग्गी पंचम धाड़ है, दिवस रैण रही डराए। वा तत्ती अग्नी हाढ़ है, जीव जन्त रही जलाए। साड़ सती अधर्म दी धार है, धर्म कर्म ना कोई जणाए। नाम रत्ती वणज वपार है, गुरमुख विरला मात कराए। यती सती शब्द करतार है, तन मन्दिर अन्दर आप टिकाए। दीवा बत्ती इक्क अपार है, जोत निरँजण आप जगाए। राग छत्ती साचा राग है, अनहद

बाणी धुन उपजाए। कमलापाती मीत मुरार है, गुरमुख विरला नारी कन्त हंढाए। नाम रथी वड संसार है, महांसाथीं आप हो जाए। सर्बकल समरथी एकँकार है, आप आपणी कला वरताए। लहिणा देणा हथ्थो हथ्थी कर्ज़ उतार है, कलिजुग वेला अन्तिम आए। अकथना कथी शब्द जैकार है, लोआं पुरीआं रिहा कराए। वरभण्डी खेल अपार है, लक्ख चुरासी वेख वखाए। ब्रह्मण्डी जोत आकार है, निर्मल दीप जगाए। शब्द खण्डी तेज कटार है, निरगुण रिहा हथ्थ उठाए। पाए वंडी जगत सुधार है, सरगुण लेखा रिहा चुकाए। भेख पखण्डी चार दिवार है, माया पड़दा संग संग रलाए। नार दुहागण रंडी अद्ध विचकार है, पति पतिवन्त ना कोई अख्वाए। जगत खुमारी काम क्रोध लोभ मोह हँकार है, अमृत जाम ना कोई प्याए। माया ममता तृष्ना विकार है, धीरज धीर ना कोई धराए। लोभ विकारा रसन आहार है, दुःख भुक्ख ना कोई मिटाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे बख्शे चरन प्यार है। चरन प्रीती साचा नाता, देवणहार दातारा। पारब्रह्म प्रभ पुरख ज्ञाता, भरया शब्द भण्डारा। हरिजन वेखे उत्तम ज़ाता, ऊँच नीच ना कोई विचारा। आपे पिता आपे माता, पूत सपूता नाम उज्यारा। आपे दिवस आपे राता, आपे अन्ध अंध्यार चार कुन्ट सहारा। आपे जागरत जोत जगाए, आपे मानसिक करे उज्यारा। आप चलाए जुग जुग आपणी गाथा, समरथ पुरख हरि खेल न्यारा। आपे होए त्रैलोकी नाथा, आपे वेखे पार किनारा। आप निभाए सगला साथा, आपे वसे सभ तों बाहरा। आपे लेखा लिखे मस्तक माथा, आपे मेटणहार लिखारा। आप उपाए आप सुणाए आपणी गाथा, आप कराए जै जैकारा। गुरमुख विरले सगल वसूरा लाथा, हरि पाया अगम्म अपारा। अगम्म अपार आदिन अन्ता, जुग जुग जोत जगांयदा। आपे साजन मीता पूरन भगवन्ता, गुरमुख सोए मात जगांयदा। आप उठाए साचे सन्तां, दूई द्वैती पड़दा लांहयदा। आप मिटाए जीव जन्ता, आपे आप उपांयदा। आपे मेला नारी कन्ता, आप आपणी सेज हंढांयदा। आपे चाढ़े रंग बसन्ता, आपे काली धार वहांयदा। आप वरते कल अनन्ता, अकल कला आप हो आंयदा। आपे जाणे महिंमा अगणत अगणता, गणत ना कोई गिणांयदा। आपे होए बेअन्त बेअन्ता, गुर पीर भेव ना पांयदा। आपे धूढ़ी साजन सन्ता, आपे सेवा लांयदा। आप बणाए मात बणता, धुर दरगाही मेल मिलांयदा। मिले वड्याई जीव जन्ता, जिस जन आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त दुलार, चरन कँवल हिरदे प्यार, काया चोली रंग रंगांयदा। काया चोली रंगण लाल, हरि साचे हरि रंग रतीआ। एका देवे नाम दुशाल, कलिजुग वा ना लग्गे तत्तीआ। दिवस रैण रैण दिवस करे प्रितपाल, आपे दे समझाए मतीआ। फल लगाए काया डालृ, अमृत आत्म रस लगाए छत्तीआ। मन्दिर अन्दर सुहाए साचा ताल, सर सरोवर एका रक्खीआ। आपे

तोड़नहारा जगत जंजाल, लक्ख चुरासी आपे कट्टीआ। दीपक जोत जगाए मस्तक साचे थाल, नाम बीजे साचे वत्तीआ। आपे शाह आपे कंगाल, धुर दरगाही हरि दलाल, आपे जाणे मित गतीआ। सन्त सुहेले जुग जुग भाल, चले चलाए अवल्लड़ी चाल, आप गिड़ाए उलटी लट्टीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख काया साचा रंग, रंगे एका आपे कन्तीआ। रंग गुलाला सच रूप, हरि साचे आपे रंगणा। मेल मिलाए शाहो भूप, दूसर कोए दर ना मंगणा। शब्द जणाई चारों कूट, नाम मृदंगा एका वज्जणा। आवण जावण जाए छूट, नुहावण नुहाए गुर चरन धूढ़ी साची गंगना। हरि हरि लाहा रिहा लूट, मानस जन्म ना होए भंगणा। पंच विकारा कढ्ढे खोट, वड दाता सूरा सरबंगणा। तीर निराला रिहा छूट, लक्ख चुरासी एका लग्गणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सुहाए इक्क दर, जगत बुझाए लग्गी अग्गना। जगत अग्नी अग्ग है, जीव जन्त रही जलाए। माया ममता रही वग है, एका भट्ठ तपाए। वा तत्ती रही वग है, दिवस रैण ना कोए सहाए। प्रगट होए हरि दाता सूरा सरबग्ग है, गुरमुख साचे लए तराए। फड़ फड़ हँस बणाए कग्ग है, सोहँ साची चोग चुगाए। नाम बन्न्हे साचा तग है, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाए। दरस दिखाए उप्पर शाह रग है, दस्म द्वारी कुण्डा लाहे। सरन सरनाई जो जन गया लग्ग है, लहिणा देणा मूल चुकाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे साचा संग, जुग जुग रिहा निभाए। प्रभ अबिनाशी साचा संगी, जुग जुग जोड़ जुड़ांयदा। हरिजन मंग एका मंगी, दोए जोड़ सीस झुकांयदा। नाम डोरी सच पतंगी, आकाश आकाशां विच उडांयदा। आपे होए कार अंगी, अंगीकार करांयदा। एका रक्खे धार नंगी, तिक्खी धार आप वहांयदा। काया चोली हरिजन रंगी, रंग अणमुला इक्क चढ़ांयदा। काया माटी काची वंगी, अन्तिम भन्न वखांयदा। साची हाटी नाम वस्त एका चंगी, गुरमुख विरले झोली पांयदा। वजावणहारा हरि मृदंगी, नाद अनादी ढोल वजांयदा। पंचम यार ना रहिण कुसंगी, साचा संगी शब्द मिलांयदा। पंचम करे आपे भंगी, पंचम साचा मेल मिलांयदा। मन विच्चोला फिरे फरंगी, चारों तरफ कुरलांयदा। सोहँ कटार दिसे नंगी, दूर दुराडा मुख भवांयदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी हरिजन तेरा साचा संगी, जुग जुग पैज रखांयदा। आउणा जाणा ना कोई जाणे पैरीं नंगी, काया बुत्त ना कोई वखांयदा। सच दुआरा बैठा लँघी, आप आसण लांयदा। एका चाल चले बेहंगी, बेहंगम रूप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख काया वेख घर, साचा दर सुहांयदा। काया घर सच मकाना, हरि साची बणत बणाईआ। जूठ झूठ है जगत निशाना, अन्त रहिण ना पाईआ। माया ममता खोल्ह दुकाना, भेखाधारी भेख वटाईआ। जन भगतां हथ्थीं बद्धा गाना, जोत निरँजण तेल चढ़ाईआ। सुरत सवाणी

करे इशनाना, नाम मैहन्दी हथ्थीं लाईआ। गुर का शब्द नौजवाना, साचे घोड़े वाग गुंदाईआ। आप बिठाए श्री भगवाना, साचा लाड़ा रिहा सजाईआ। एका देवे सच बिबाणा, साचा संग रखाईआ। गुर शब्द बणाए साचा काहना, जन सुरती गोप सुहाईआ। आपे दोहां मेल मिलाना, आपे होए सहाईआ। आप कराए जाण पछाणा, आत्म सेजा इक्क विछाईआ। आप सुणाए राग तराना, गीत संगीत सच इक्क सुणाईआ। आपे देवे पीणा खाणा, अमृत एका जाम प्याईआ। आपे होए बीना दाना, दाना बीना आप अख्वाईआ। आपे करे ठांडा सीना, चरन कँवल सीस जगदीस टिकाईआ। साचा मेल जल जल मीना, गुरमुख गुर एका धाम सुहाईआ। भेव ना जाणे लोकां तीना, भेव अभेदा खेल रचाईआ। कलिजुग वजाए हँकारी बीना, नौ खण्ड पृथ्वी लंका गढ़ इक्क बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सिँघासण उप्पर चढ़, तोड़नहारा किले गढ़ दिवस रैण रिहा लड़, मनमती जीव जायण झड़, हरिजन अक्खर एका जाणा पढ़, पढ़ावणहार हरि रघुराईआ। एका अक्खर हरि पढ़ाउँणा, चार वरन सिक्दारी। नौ खण्ड पृथ्वी गढ़ सोना, हरि साचा छत्र झुलारी। इक्क निशाना मात वखाउँणा, लोआं पुरीआं पावे सारी। नीचो नीच आप हो आउणा, ऊँचो ऊँच जोत निरँकारी। कूचो कूच सृष्ट सबाई कराउँणा, राज राजानां शाह सुल्तानां खाली दिसण बंक द्वारी। सूचो सूच हरि मार्ग लाउँणा, एका एक कराए जै जैकारी। कूटो कूट हरि फेरा पाउँणा, जोत सरूपी शब्द उडारी। जूठ झूठ सभ मात मिटाउँणा, ना कोई जीव हँकारी। कलिजुग काया खाली ठूठ वखाउँणा, अन्तिम आया पासा हारी। गुरमुख साचे एका मुड्ड वखाउँणा, जिस जन बख्शे चरन प्यारी। पुरख अबिनाशी तुठ एह दरस दिखाउँणा, सतिजुग लाए सच्ची फुलवाड़ी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुर गोबिन्दे वसया घर, आप आपणी पैज संवारी। गुर गोबिन्दे फड़या लड़, हरि साचा आप फड़ांयदा। साचे पौड़े गया चढ़, बत्ती दन्द अलांयदा। नाम द्वारी किला गढ़, हरि कीरत नाम रखांयदा। ना ढठ्ठे ना उखड़े जड़, पत्थर इट्ट ना कोए लगांयदा। ना मरे ना जाए सड़, जन्मी जन्म भवांयदा। विद्या अक्खर ना रिहा पढ़, अगम्म अगम्मी धार समांयदा। सरसे वहिण ना वहे हड़, लिख्या लेख ना कोए मिटांयदा। साध सन्त कोई ना सके फड़, चरन ध्यान ना कोए लगांयदा। ना कोई वेखे सीस धड़, नीला पौड़ ना कोए उठांयदा। सच द्वारे अग्गे खड़, आप आपणा रंग वटांयदा। कलिजुग अन्तिम रिहा लड़, खण्डा डण्डा ना वेख वखांयदा। आप उखेड़नहारा जड़, आपणा कर्म कमांयदा। ना कोई सके अग्गे अड़, शाह सुल्तानां आप हिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख काया एका घर, गोबिन्द गढ़ सुहांयदा। गोबिन्द गढ़ नाम दरवाज़ा, हरि साचा इक्क रखांयदा। आपे जाणे

ग़रीब निवाजा, दूसर किसे दिस ना आंयदा। अस्त्र शस्त्र घोड़ा ताजा, पीला बस्त्र तन सजांयदा। जोत जगाए देस माझा, चोला आपणा आप वटांयदा। देस मालवे आए भाजा, कलिजुग जीवां दिस ना आंयदा। वड शाहो हरि राजन राजा, राज नीती विच ना आंयदा। भगत सुहेला रक्खे लाजा, अचन अचेती दया कमांयदा। नाम वजाए साचा वाजा, बन्न्ह् बंन्हांयदा। धर्म राए कर एका हाजा, जीवां जन्तां हज्ज करांयदा। गुरमुखां देवे नाम जहाज़ा, हरि साचा मात लिआंयदा। मनमुखां अन्तिम खोल्हे पाजा, साधां सन्तां वेख वखांयदा। सच सिँघासण आप बिराजा, आपणा मुख छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, गोबिन्द गढ़ साचे चढ़, सृष्ट सबाई वेख वखांयदा। बदले चोला सम्मत सोलां, सोलां कल धारीआ। आपे खेलणहारा होला, हरि खेले खेल खिलारीआ। जन भगतां उठाए आपे डोला, पार कराए मञ्झ मञ्झधारीआ। लक्ख चुरासी धर्म राए दा होए गोला, कलिजुग तेरी अन्तिम वारीआ। सतिजुग तेरा एका बोला, सोहँ शब्द जै जै जैकारीआ। साचा पुरख अबिनाशी तोला, सृष्ट सबाई तोले तोलणहारीआ। आदि अन्त कदे ना डोला, ना डोले वड संसारीआ। सच भण्डारा एका खोल्हा, चार वरन वणज कराए इक्क वपारीआ। साचा शब्द दए झकोला, प्रभ देवणहार हुलारीआ। आत्म पर्दा जिस जन खोल्हा, पावे दरस नर निरँकारीआ। चरन द्वारे होए गोला, रैण दिवस होए पनिहारीआ। पुरख अबिनाशी वसे कोला, हरि सेवक सेवादारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख गुरसिख वेख्या इक्क दर घर, ना कोई दीसे ठग्ग चोर यारीआ।

२०७
०६

❊ २३ मग्घर २०१३ बिक्रमी हरिगोबिन्द सिँघ साहिब दे गुरद्वारे सन्तां नाल बचन होए पिण्ड मनावां ज़िला फिरोजपुर ❊

गुरुद्वार सच दर है, नाम वस्त अमोल। हरि सन्तन मिल्या वर है, आदि अन्त अतोल। सद खुल्ला रक्खण दर है, नाम मृदंग वजावण ढोल। आपणी किरपा देण कर है, सच वस्त जो होवे कोल। नुहावण नुहायण साचे सर है, रंग चाढ़न काया चोल। साची तरनी जाणा तर है, मानस जन्म ना रहे अनभोल। साचा मेला गोबिन्द हरि है, काया पर्दा देवे खोल्ह। शब्द भण्डारा देवे भर है, आत्म डाही एका झोल। आवण जावण चुक्के डर है, लक्ख चुरासी जम की फाँसी ना दिसे कोई कोल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन वसया सच घर, जुग जुग देवणहारा वर, शब्द चहु अक्खर एका आपणा बोल। सन्तन घर हरि हरि वसया, मेला दो जहानीआ। सृष्ट सबाई मार्ग दस्सया, पाया

पद निरबाणीआ। पंच विकारा दर तों नस्सया, ना दिसे पंज शैतानीआ। तीर निराला एका कसया, गुर मन्त्र साची बाणीआ। पुरख अबिनाशी काया मन्दिर साचे अन्दर शब्द सिंघासण बहि बहि हस्सया, धुन आत्मक सुणाए अनहद साची बाणीआ। मिटे रैण अन्धेरी आत्म मस्सया, सर्ब जीआं प्रभ जाणी जाणीआ। सन्त द्वारे आए नस्सया, करे कराए मात पछाणीआ। जगत वसूरा जिस जन लथ्थया, देवे दरस महानीआ। सर्बकला आपे समरथया, जुग जुग खेले खेल खेलणहार आप खिलारीआ। आपे वेखे साढे तिन्न तिन्न हथ्थया, शब्द अनादी पवण वजाईआ। नाम कहाणी अकथ अकथया, राग रागणी आप सुणाईआ। शब्द सरूपी पाए नथ्थया, मनमति रिड़के वांग मधाणीआ। हरि सन्तां रक्खे दे कर हथ्थया, समरथ पुरख वडाणीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन वेखे इक्क घर, एका दाता देवे दानीआ। सन्तन मेला हरि निरँकारा, आत्म जोत जगाईआ। शब्द सरूपी जै जै जैकारा, दिवस रैण सुणाईआ। साचा मेला कन्त भतारा, आत्म सेजा रिहा हंढाईआ। सन्त सुहेला साची नारा, साची सेवा रही कमाईआ। गुर गोबिन्दा कर प्यारा, आत्म चिन्दा सगल मिटाईआ। गुर नानक तेरी साची धारा, तेरां तेरां पूर कराईआ। आपे बैठा सच दरबारा, दिस किसे ना आईआ। गुरमुखां कराए वणज वपारा, एका पल्लू नाम फड़ाईआ। सृष्ट सबाई हाहाकारा, साचा नाउँ दिस ना आईआ। गोबिन्द तेरी साची धारा, अमृत आत्म जाम प्याईआ। किसे हथ्थ ना आए नौ दुआरा, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। आपे करया बन्द किवाड़ा, आपणी हथ्थीं कुण्डा लाहीआ। मनमुखां लग्गी पंचम धाड़ा, दिवस रैण करे हलकाईआ। कलिजुग वेखे इक्क अखाड़ा, आप आपणी कल वरताईआ। गुरमुख साचा सन्त सुहेला साचा लाड़ा, हरि शब्दी शब्द जणाईआ। बहत्तर नाड़ी वज्जे ताड़ा, गीत अनादा अन्दर मन्दिर गाईआ। वेख वखाणे विच ब्रह्मादा, अबिनाशी पुरख आदि जुगादा, आदि जुगादी आप अख्वाईआ। साचा मेला सन्तन साधा, सांतक रूप सति समाईआ। जिस जन मिल्या मेल हरि हरि माधव माधा, मोहण माधव रूप समाईआ। शब्द जणाए बोध अगाधा, वेद पुराणां भेव चुकाईआ। हरि हरि साचा एका लाधा, सच वस्त हरि धन झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती शब्दी आपे बांधा, हरि सन्तन आत्म घर बैठा आसण लाईआ। सन्त दुआरा धन्न है, हरि धन पाया नाम। भरम भुलेखा निकले जन है, पूरन पूर कराए काम। एका साचा घर वखाए ना कोई छप्परी छन्न है, मिले मेल रमईआ राम। राग अनादा कन्न सुणाए, कोए ना मंगे काया दाम। साचा बेड़ा बन्नृ वखाए, मेट मिटाए अन्धेरी शाम। पंच विकारा खिंन खिंन कराए, अमृत आत्म इक्क प्याए जाम। जोत निरँजण चन्न चढ़ाए, पल्ले बंनाए साचा दाम। जोती जोत सरूप हरि, सन्तन वेखे इक्क घर, एका हरि हरि नाम। नाम निधाना हरि मेहरवाना, सन्तन घर रखाया ए। तीर निशाना दो जहाना,

एका शब्द चलाया ए। गोपी काहना हरि सुल्ताना, जुग जुग भेख वटाया ए। मंगे वर दर दरबाना, धुरदरगाही इक्क फ़रमाणा, एका शब्द अल्ाया ए। राग अनादी सच तराना, आपे होए जाणी जाणा, जानणहार मेल मिलाया ए। सन्तन सोहे बंक दुआरा, दीपक जोती इक्क उज्यारा, काया मन्दिर सच मुनारा, दस्म द्वारी शब्द धारा, अमृत आत्म ताल सुहाया ए। देवणहार सर्ब संसारा, सन्तन संग हरि निरँकारा, भरया रहे सदा भण्डारा, निखुट्ट कदे ना जाया ए। आए दर बण भिखारा, तुट्टे गढ़ माण जगत हँकारा, चरन कँवल हरि इक्क प्यारा, एका रूप समाया ए। जोती जोत सरूप हरि, सन्तन वेखे इक्क घर, हरि शब्दी नाउँ वरताया ए। हरि शब्द भण्डार अतोल, अतुट रखाया। घर साचे रिहा बोल, आप आपणा बोल अल्ाया। दर दुआरा एका खोल्, दर घर साचा इक्क सुहाया। भाग लगाए काया चोल, चोली रंगण इक्क चढ़ाया। आपे बैठा सदा अडोल, सृष्ट सबाई रिहा डुलाया। हरि सन्तां पड़दे रिहा खोल्, आत्म दरसी दरस दिखाया। आवे जावे हौली हौल, आउँदा जांदा दिस ना आया। पारब्रह्म ब्रह्म रहिणा मवल, मौल मौला रूप समाया। आपे वेखे नाभ कँवल, अमृत धारा मुख चुआया। देवे वड्याई उप्पर धवल, हरि सन्तन हरि चित लाया। आलस निन्दरा होई बवल, तामस तृष्ना नेड़ ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन वेखे साचा दर, गुरदुआरा मिले वर, अन्तर मन्त्र गुर दए जणाया। सन्तां हथ्थ वड्याई, गुर शब्द करे कुड़माईआ। आदि अन्त विछड़ ना जाई, हरि मेला सहिज सुभाईआ। इक्क इकेला रिहा सेज हंढाई, गुर चेला भेव ना राईआ। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला, हरि सन्तन वेखे इक्क सरनाईआ। आपे वसया रंग नवेला, हर घट बैठा आसण लाईआ। जन भगतां सज्जण सुहेला, जुग जुग तारे फड़ फड़ बांहीआ। जोती जोत सरूप हरि, सन्तन वेखे साचे दर, दर द्वारे ठण्ढीआं छाँ। सन्तन घर उच्च महल्ला, हरि साचे बणत बणाईआ। किसे हथ्थ ना आए जल थला, ना कोई खोजे खोज खुजाईआ। जन हरि साचे दर दुआरा पारब्रह्म घर एका मल्ला, गुण अवगुण भेव ना राईआ। आपे होए अछल अछल्ला, भेखाधारी भेख वटाईआ। हरि सन्त फड़ाए सन्तन पल्ला, विछड़ कदे ना जाईआ। जोत जगाए काया कन्दर डूँघी डल्ला, दिवस रैण करे रुशनाईआ। नाम चलाए साचा हल्ला, आत्म बीज साचा बीजे, साचा फल खवाईआ। दरस दिखाए नैण तीजे, सहिंसा रोग मिटाईआ। सोलां श्रृंगार करे रीझे, गुर गोबिन्द दया कमाईआ। गुरमुख आत्म तन मन भीजे, गुर पूरे दर्शन पाईआ। आपे बैठा दर दहिलीजे, दर दरबान आप अख्वाईआ। हरि सन्त प्यारा वेखे खेल अगम्म अपारा, जोती जोत सरूप हरि, सन्तन वेखे इक्क घर, तन मन सीजे। किरपा कर, नाम उत्तर देणा मोड़। आए दर वेख्या घर, उप्पर चढ़ शब्द घोड़। चुक्के डर, पारब्रह्म प्रभ जाए बौहड़। साचा वर, रीठे मिट्ठे

होइण कौड़। मानस जन्म गया हर, धुर दरगाह ना मिल्या एका पौड़। जगत मरनी जाणा मर, अमृत आत्म लग्गी रही औड़। एका वेखणा साचा घर, ना कोई जाणे लम्भा चौड़। जोती जोत सरूप हरि, सन्तन वेखे साचा घर, कवण सरूप ब्रह्मण गौड़। उत्तर देणा रसना बोल, मंगे मंग उमंगा। बत्ती दन्द दरवाज़ा खोल्ह, रसना नाम अनरंगा। बजर कपाटी पड़दा खोल्ह, वज्जे ढोल मृदंगा। पुरख अबिनाशी कवण कूटे रिहा बोल, कवण सु वेले होए संगा। जोती जोत सरूप हरि, सन्तन वेखे इक्क घर, तोलणहारा पूरे तोल

✻ २५ मग्घर २०१३ बिक्रमी तारा सिँघ दे गृह पिण्ड चम्बल ज़िला अमृतसर ✻

साजण साचा एक है, सतिगुर मीत मुरार। जुग जुग जन भगतां देवे साची टेक, है, चरन कँवल प्यार। करनहारा बुध बिबेक है, अमृत आत्म साची धार। कलिजुग माया ना लाए सेक है, साचा शब्द करे आहार। मनमती जीव वेखण रहे वेख है, भरमे भुल्ले भरम गंवार। हरिजन धुर मस्तक लग्गी रेख है, प्रभ मेले मेलणहार। हरि जोती दस दस्मेस है, गोबिन्द काया शब्द अधार। आपे होए धारी केस है, मूंड मुंडाए खेल अपार। नर नरेशा हरि निरँकार है, आदिन अन्ता एकँकार। दर द्वारे ब्रह्मा विष्न महेष गणेश है, दिवस रैण रहे पुकार। जोती जामा हरि हरि भेख है, भेखाधारी वड बलकार। लक्ख चुरासी लिखणहारा लेख है, अन्तिम मेटे मेटणहार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन साजण मीत मुरार। हरि मीत मुरारा सज्जणा, हरिजन मेल मिलाए। चरन धूढ़ कराए साचा मजना, दुरमति मैल गंवाए। आपे होए पड़दा कज्जना, शब्द दुशाला उप्पर पाए। सच नगारा एका वज्जणा, पंच विकारा दए दुहाए। माटी भाण्डा अन्तिम भज्जणा, थिर रहिण कोई ना पाए। गुरमुख विरले अमृत आत्म पी पी रज्जणा, हरि दर्शन नेत्र पाए। मनमुखां डर डर दर तों भज्जणा, हरि साचा दए दुरकाए। राए धर्म द्वारे गज्जणा, अन्तिम वेले फंद फंदाए। कोई ना रक्खे किसे लजना, मात पित ना कोए छुडाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख मेला साचे दर, साचा मेला सहिज सुभाए। हरि साजण जगदीश है, जुग जुग होए सहाए। नाम झुलाए साचा सीस है, छत्र शत्रु रूप वटाए। लक्ख चुरासी माया ममता पीसण रिहा पीस है, मिले मेल ना हरि रघुराए। अन्तिम मेला बीसा बीस है, बीस बीसे लए मिलाए। गुर मन्त्र राग छतीस है, राग रागनी सेवा लाए। एका नाउँ कुरान हदीस है, हरि साची बणत बणाए। खाणी बाणी इक्क इकीस है, एका रंगण रंग रंगाए। वेद पुराण शाहो शाबीस है, शाह सुल्तान आप बणाए। ना कोई गाए दन्द बतीस है,

जिह्वा रसन ना हरि गुण गाए। जुग जुग करे ना कोई रीस है, आप आपणी जोत जगाए। राज राजाना खाली खीस है, नाम धन ना कोए रखाए। लहिणा देणा अन्त उनीस है, संग मुहम्मद मुख छुपाए। बीस बीसा हरि जगदीस है, गुरमुख साचे लए तराए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण साचे मीत, आप वखाए आपणी रीत, एका राह वखाए। गुरमुख साजन साचा राह, हरि साचा आप वखांयदा। शब्द सरूपी बण मलाह, आपे पार करांयदा। इक्क जपाए साचा नाँ, एका दूजा भेव मिटांयदा। आपे पिता आपे माँ, आप आपणी गोद उठांयदा। सदा सुहेला देवे ठण्ढी छाँ, जन भगतां पैज रखांयदा। लक्ख चुरासी दर दर घर घर उडणे काँ, भेद अभेदा भेव छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण साचा रंग आपणा आप चढ़ांयदा। गुरमुख साजण रंग अपारा, काया चोली रत्तीआ। मिल्या मेल हरि कन्त भतारा, लेखा चुक्कया रागां छत्तीआ। निर्मल जोती कर उज्यारा, सहिंसा रोग चुकाया दीवा बत्तीआ। आत्म भरया नाम भण्डारा, दिवस रैण वा ना लग्गे तत्तीआ। दरस दिखाए अगम्म अपारा, भेव ना जाणे बुध बुध मतीआ। एका रूप एकँकारा, एका चाढ़े रंग बसन्तीआ। अमृत आत्म देवे ठण्ढी धारा, दस्म द्वारी ताल सुहंतीआ। शब्द सिँघासण अपर अपारा, हरि साचा सेज वछंतीआ। आपे खोल्ले बन्द किवाड़ा, आपे राह वखंतीआ। मनमुख भुल्ले नौ दुआरा, मिले मेल ना साचा कन्तीआ। जन भगतां कढ्ढे हरि पंच विकारा, अन्त करंतीआ। मेट मिटाए धुँदूकारा, घर साचा इक्क सुहंतीआ। चतुर्भुज हरि जोत अधारा, आप आपणा खेल खिलंतीआ। गुरमुख उठाए भुजा पसारा, आप आपणा मेल मिलंतीआ। जोती शब्दी एका धारा, पंचम तत्त ना कोए वखंतीआ। वर घर पाया पुरख अपारा, गुरमुख नारी साचा रंग रगंतीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि साजन गुरदेव एका एक अख्वन्तीआ। हरि साजन अबिनाशी, आदि अन्त उधारया। जन भगतां होए दासन दासी, दासी दास आप अख्वा रिहा। निज घर आत्म रक्खे वासी, निज़ानंद रूप समा रिहा। भेव खुल्हाए पृथ्वी आकाशी, गगन पातालां वेख वखा रिहा। आपे जाणे मण्डल रासी, सास ग्रास आप चला रिहा। साचा मेला हरि गुणतासी, हरि हरि हरिजन रूप समा रिहा। शब्द वस्त गुर साचे दासी, धन्न धन्नवन्त गुरमुखां झोली पा रिहा। पंच विकारा करे नासी, मन ममता मोह चुका रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि साजन साचा संग सगला संग निभा रिहा। हरि साजन साचा संग, जुग जुग आप रखांयदा। हरिजन मंगे साची मंग, प्रभ साची भिच्छया पांयदा। आपे कट्टणहारा भुक्ख नंग, अमृत धारा गंग वहांयदा। शब्द वजाए इक्क मृदंग, राग अनादी गीत सुणांयदा। नौ द्वारे आपे लँघ, आत्म कुण्डा लांहयदा। शब्द घोड़े कसया तंग, ब्रह्मण्डां खोज खुजांयदा। एका चाल चले बेहंग, बेहंगम

रूप दिस ना आंयदा। मानस जन्म ना होए भंग, जो जन चरनी सीस निवांयदा। काया माटी काची वंग, अन्तिम भन्न वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि साजन आप अख्वांयदा। हरि साजन साचा शाहो है, जुग जुग होए सहाए। आपे दाता बेपरवाहो है, विछड़े लए मिलाए। करनहारा सच न्याउँ है, दर दरबारा इक्क सुहाए। अगम्म अगम्मा वसे अगम्मड़े थाउँ है, जाणे हरि हर थाईं। हड्ड मास नाड़ी ना कोई चम्म चम्मड़ा ना कोई पिता माउँ है, जोत सरूपी डगमगाए। नगर खेड़ा ना कोई शहर गराउँ है, महल्ल अटल अचल्ल ना कोई वेख वखाए। हरि सन्त सुहेले आप उठाए फड़ फड़ बाहों है, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ जल थल वेख वखाए। एका एक जपाए साचा नाउँ है, खाणी बाणी रही अलाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साजण मीत आप हो जाए। साजण साचा साख्यात, हरि हरि रूप गोबिन्द। गुरमुख बणाए पारज़ात, मनमुख लगाए निन्द। जन भगतां देवे साची दात, आप उपजाए साची बिन्द। हरि हरि नाउँ शब्द वड करामात, अमृत धारा सागर सिन्ध। ना कोई ज़ात ना कोई पात, सगल मिटावणहारा चिन्द। पारब्रह्म अबिनाशी पुरख बिधात, दाता जोद्धा सूरा मृगिन्द। कलिजुग मिटे रैण अन्धेरी रात, हरि दाता गुणी गहिंद। लक्ख चुरासी अन्दर बैठा वेखे मार झात, आपे सास ग्रास देवणहारा जिंद। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि साजण सद बख्शिंद। हरि साजण सच सुल्तान है, वाली दो जहान। दीन दयाला मेहरवान है, गुरमुख साचे करे पछाण। इक्क वखाए धर्म निशान है, नाम सरूपी पाए आण। भरमे भुल्ले जीव निधान है, मिल्या मेल ना हरि भगवान। सन्त कन्त ना सके पछाण है, माया ममता होई गलतान। कलिजुग माया पाए बेअन्त है, नाल रलाए पंज शैतान। एका नाता जीव जन्त है, गुण पाया ना गुण निधान। काया चोली रंग बसन्त है, काली कमली बेपछाण। साची नारी ना कोई पति पतिवन्त है, सति धर्म होए वैरान। गुरमुख साचा इक्क इकन्त है, हरि चरन कँवल ध्यान। कलिजुग माया पाए बेअन्त है, जूठा झूठा देवे दान। हरि दाता गुणी गुणवन्त है, हर घट आपे जाणी जाण। जन भगतां इक्क सुणाए सुहागी छंत है, आत्मक धुंन अनहद माण। तुट्टे नाता माया मोह प्रपंच है, दरस अमोघा धुर संजोगा एका रूप समाए गोपी काहन। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि साजन लए मात पछाण। हरि साजन धुर संजोग है, आप आपणा आप रखंदड़ा। जन भगतां चुगाए साची चोग है, रसना नाम वखंदड़ा। एका आत्म रस साचा भोग है, निज्ज आत्म आप चखंदड़ा। आदि अन्त ना होए विजोग है, चरन ध्यान इक्क रखंदड़ा। मनमती हउमे रोग है, अग्नी भाअ इक्क लगन्दड़ा। कलिजुग नाता जूठा झूठा जोग है, साचा जोग ना कोई कमन्दड़ा। रस रसना रहे भोग है, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, साजन साचा हरि दातार, दानी दाता आप अखवंदड़ा। हरि साजन सच दानीआ देवणहार संसार। गुरमुखां आत्म अन्तर देवे अनहद बाणीआ, पंचम गायण वारो वार। आप सुणाए आपणी अकथ कहाणीआ, लिख ना सके कोई विच संसार। गुर पीर करे पछानीआ, साध सन्त लए विचार। आपे होए जाणी जाणीआ, जानणहार ना पावे सार। जोद्धा सूरा हरि बलवानीआ, शब्द खण्डा तेज कटार। पंचम नामा पंच पंच निशानीआ, आप कराए तन शृंगार। आपे जाणे आपणी आनीआ, सच तख्त सच्ची सरकार। गुरमुख बणाए साची राणीआ, सोलां करे तन शृंगार। पलँघ रंगीला इक्क वखानीआ, दस्म द्वारी महल्ल अपार। फूलन सेजां इक्क विछानीआ, अमृत धारा चार दिवार। अनहद अनाहद गाए साची बाणीआ, पंचम होए सेवादार। सुणनेहार पुरख सुल्तानीआ, आपे बैठा मीत मुरार। गुरमुख साचे सन्त सुहेले एका सच्ची हरि सरनाईआ, साचा मेला कन्त भतार। एका कन्त एका नारी एका रंग समाईआ, साचा मेला इक्क द्वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि साजण सति रूप है, सच समग्री रास। आपे शाहो भूप है, आपे दासी दास। आपे आप अन्धेर चारों कूट है, आपे आप करे प्रकाश। आपे लोआं पुरीआं रिहा लूट है, आपे मण्डल मण्डप बणाए रास। आपे रसना जिह्वा जूठ झूठ है, आपे नाउँ सास ग्रास। आपे लक्ख चुरासी रिहा कुठ है, आपे आप पुरख अबिनाश। आपे आप रिहा तुठ है, आपे करनहारा नास। आपे बन्नृणहारा एका मुठ्ठ है, आपे खेल पृथ्वी आकाश। आपे बैठा रुठ्ठ है, आपे हरिजन हिरदे अन्दर रक्खे वास। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साजन साचा मेहरवान, आदि अन्त ना होए विनास। साजन साचा मेहरवान। सखी सरोवर सुल्तान। जन भगतां देवे जिया दान। आत्म जोती ब्रह्म ज्ञान। चरन धूढ़ सच्चा इशनान। वरन गोती भेव मिटान। मूर्ख मुग्ध मूढ़ कराए चतुर सुजान। दीपक जोत जगाए इक्क महान। धुर शब्द रखाए इक्क निशान। लोआं पुरीआं आप झुलान। हरिजन मेला हरि भगवान। आवण जावण चुक्के कान। जुग जुग खोल्हे मात दुकान। नाम भण्डारा हरि वरतान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि साजण सतिवाद एका एक वखान। हरि साजण सतिवाद है, सति सति समाए। खेले खेल विच ब्रह्माद है, बुधमत भेव ना पाए। एकँकारा आदि जुगादि है, जुग जुग आपणी बणत बणाए। आप उपाए जीव जन्त सन्त साध है, बेअन्त बेअन्त आपे आप हो आए। कथा कहाणी बोध अगाध है, लक्ख ना सके कोई राए। जिस जन देवे साची दाद है, सो जन रसना शब्द अल्हाए। गुर नानक मेला माधव माध है, हरि चरन द्वार गया सीस झुकाए। प्रभ एका दित्ती साची दाद है, वेले अन्तिम भिच्छया पाए। सतिनाम वजाया साचा नाद है, लोकमाती आप सुणाए। आपे गाया सोहँ शब्द इक्क नाद है, दूसर भेव ना राए। पारब्रह्म एका रस एका स्वाद है, हत्थ

किसे ना आए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साजण मेला सच घर, साचा मेल मिलाए। हरि साजन मेला सच घर, गुर पीर अवतारा। खुल्ला रक्खे सदा दर, आदि अन्त एका एकँकारा। गुर पीरां देवे इक्क वर, आपे भरे शब्द भण्डारा। आपणी किरपा हरि हरि कर, लोकमात लए अवतारा। आप आपणा सिर हथ्थ धर, बख्शे चरन कँवल अधारा। जोती शब्दी एका कर, देवे सच हुलारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साजन साचा सर्ब गुण गुणवन्ता हरि भण्डारा। हरि साजण हरि सर्ब गुण, आपे आप भरपूरया। लक्ख चुरासी पुकार रिहा सुण, आपे वसे नेरन दूरया। सन्त सुहेले मात चुण, दरस दिखाए हाज़र हज़ूरया। आपे जाणे गुण अवगुण, जन भगतां आसा मनसा पूरया। लक्ख चुरासी छाण पुण, कलिजुग जूठा झूठा हूंजे कूड़या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि साजण बलवान एका बख्शे चरन धूड़या। हरि साजण बलवान, दो जहानया। जुग जुग खेले खेल महान, आप आपणे रूप समानया। सतिजुग त्रेता द्वापर मिटे निशान, कलिजुग होया मात निधानया। प्रगट होए हरि मेहरवान, जोती जामा हरि गुण निधानया। ना कोई खण्डा तीर कमान, रसना चिल्ला इक्क चढ़ानया। नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां वेखे मार ध्यान, लोआं पुरीआं मेट मिटानया। ब्रह्मा शिव होए हैरान, भेव अभेदा अछल अछेदा दिस ना आए वेद कतेबा, ना कोई जाणे खाणी बाणीआ। देवत सुर तुट्टे माण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि साजण सुखवन्त सुख सहिजे सहिज समाणया। हरि साजण सुखवन्त है, दुःख रोग ना कोए। जोती नूर पूरन भगवन्त है, चिन्ता सोग ना कोए। आपे दाता साध सन्त है, आपे घट घट जोत बलोए। आपे रसना जिह्वा मणीआ मंत है, आपे सभ घट वेखे सोए। आपे नारी आपे कन्त है, पूत सपूता आपे होए। लक्ख चुरासी साची बणत है, ब्रह्मा विष्न शिव देवे साचे ढोए। हरि गणत अगणत है, गिण ना सके कोए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि साजन साचा सच्च, सच घर मिलावा होए। हरि साजन साचा सच है, सच समग्री रास। मेट मिटाए पंच विकारा कच्च है, जो जन होए दासन दास। जन भगतां हिरदे अन्दर रिहा रच है, दिवस रैण वसे पास। माया ममता कलिजुग जीवां रही मच्च है, रसन हलकाई मदिरा मास। नाम रस गुरमुख विरले गया पच है, हरि शब्द बुझाए प्यास। लाड़ी मौत रही नच्च है, वेखे खेल पृथ्वी आकाश। गुरमुख विरला जाए बच है, जिस मिल्या हरि गुणतास। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साजण साचा सच घर, हरि नर पुरख अबिनाश।

२१४
०६

गोबिन्द साचा मीतड़ा, मीत मुरारा आप। कलिजुग काया चोली रंगे चीथड़ा, रंग ललारा आप। मीठा करे कौड़ा रीठड़ा, शब्द सरूपी देवे भाप। फल खवाए इक्क अनडीठड़ा, मेट मिटाए तीनो ताप। प्रभ आपे आप वसीठड़ा, हरिजन माई बाप। नाम निधाना जिस जन हरि दर साचे पीतड़ा, मेट मिटाए कोटन पाप। लेखा जाणे अगला पिछला बीतड़ा, जुग जुग सहाई आप। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि साजन आपे जाणे आपणा वड प्रताप। हरि साजन वड सागरा, हरि हरि गहर गम्भीर। अमृत देवे काया गागरा, निर्मल एका नीर। वणज कराए नाम सौदागरा, तन बस्त्र साचे चीर। निर्मल कर्म करे उजागरा, हउमे कढ्ढे पीड़। रती रंग रत्ते रत्नागरा, काया सांत सरीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि साजन जगमीत वेला अन्त अख़ीर। हरि साजण सच रास है, शब्द रूप अपार। लेखे लाए हड्ड नाड़ी मास है, देवे दरस अपार। अवण गवण पवण स्वास है, सुरत शब्द आस पास। धरती धवल पृथ्वी आकाश है, पुरीआं लोआं साची रास। लहिणा देणा दस दस मास है, मात गर्भवास निवास। देवणहार सास ग्रास है, पूरन पूर कराए आस। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, होए दासी दास। हरि साजन साचा नाम गढ़, चारों कुन्ट दिवारया। सच महल्ले बैठा चढ़, दिस किसे ना आ रिहा। आप आपणा घाड़न घड़, आपणा हिस्सा आप वंडा रिहा। कोई ना सके मात फड़, कोटी कोट जीव फिरा रिहा। लक्ख चुरासी नाल रिहा लड़, एका खण्डा शब्द चला रिहा। आपे लावणहारा जड़, जुग जुग आपे आप उखड़ा रिहा। आपणा अक्खर आपे गया पढ़, लक्ख चुरासी आप सुणा रिहा। दर द्वारे अग्गे खड़, जन भगतां दरस दिखा रिहा। ना कोई सीस ना कोई धड़, जोत सरूपी डगमगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साजण साचा आपे आप अख्वा रिहा।

हरि साजण साची ओट, एका एक रखाईआ। दर दर घर घर भौंदे कोटी कोट, हरि साचा दिस ना आईआ। माया ममता तृष्ना ना भरी काया पोट, दिवस रैण रही हलकाईआ। गुरसिख प्रेम नगारे वज्जे चोट, तन काया आप वजाईआ। आपे कढ्ढणहारा खोट, निर्मल धार वहाईआ। साचा मेला शब्दी जोत, जोत शब्द करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे सेव कमाईआ। हरिजन साचा सच द्वार, खेले खेल अपारा। मिले मेल प्रभ मीत मुरार, गुर चेले इक्क दुआरा। देवे नाम वड भण्डार, वरते वरतावे विच संसारा। आप आपणी किरपा धार, नाम बन्न्हे सीस दस्तारा। जुग जुग विछड़े संगी यार, डोरी बन्न्हे नाम धारा। साचा मेला इक्क द्वार, दर घर सच्चा दरबारा। कोटन

कोट रहे पुकार, मंगण मंग भिखारा। गुरमुख विरला उतरे पार, हरि पाया अगम्म अपारा। आपे बख्शे बख्शणहार, इक्क वखाया पार किनारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम अधारा। नाम अधार सच धरवास, धुर मस्तक लेख लिखाया। सच वस्त गुर साचे पास, गुरमुखां झोली पाया। आपे दासी आपे दास, सेवक सेवा रिहा कराया। करे कराए पूरी आस, देवी देवा रूप समाया। हरिजन मेला शाहो शाबाश, अमृत आत्म मेवा फल खवाया। लेखा चुक्के हड्ड नाड़ी मास, लक्ख चुरासी फंद कटाया। निर्मल दीपक जोत करे प्रकाश, अज्ञान अन्धेरा दए मिटाया। गुरमुख साचे बलि बलि जास, सञ्झ सवेरा इक्क कराया। मिल्या मेल हरि सर्ब गुणतास, आलस निन्दरा दए गंवाया। करे कराए पूरी आस, इच्छया भिच्छया नाम पाया। आदि अन्त ना जाए विनास, साची सिख्या इक्क सिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां, एका देवे नाम धना, रंगण चोली रंग रंगाया। हरिजन साचे सद बलिहारी, धन्न तेरी वड्याईआ। मिल्या मेल हरि निरँकारी, आत्म चिन्त मिटाईआ। जुग जुग पैज रिहा संवारी, भगत भगवन्ती खेल न्यारीआ। आपे होए पहरेदारी, आपे करे ख़बरदारी, आपे होए राम मुरारी, आपे तोड़े गढ़ हँकारीआ। आपे होए कृष्न मुरारी, दर्योधन ढाहे अटल मुनारीआ। आपे होए वड संसारी, बिदर सुदामा पार उतारीआ। आपे होए जगत उधारी, जुग जुग भेख वटाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, हरि जोती नूर सवाईआ। चारों कुन्ट हाहाकारी, जन भगतां जै जै कार कराईआ। कलिजुग रैण अन्ध अंध्यारी, साचा चन्न ना कोई चढ़ाईआ। जूठे झूठे मीत मुरारी, अन्तिम बैठे मुख छुपाईआ। माया ममता मोह सिक्दारी, सगला साथ ना कोई निभाईआ। वेले अन्तिम होए ख्वारी, राए धर्म दए सज़ाईआ। लाड़ी मौत दए बहारी, हथ्थ आपणे रही उठाईआ। गुरमुख साचे लए उभारी, धरतमात रही कुरलाईआ। धर्म राए वेखे अक्ख उग्घाड़ी, पुरख अबिनाशी जोत जगाईआ। मंगे भिख सतारां हाढ़ी, हरि देवे दया कमाईआ। गुरमुखां सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाईआ। रक्खे लाज चरन छुहाई दाढ़ी, सीस जगदीस आपणा हथ्थ टिकाईआ। आपे होए पिच्छे अगाड़ी, समरथ पुरख वड्याईआ। आत्म घर वज्जी वधाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम वड्याईआ। आत्म घर वज्जी वधाई, दिवस रैण मंगलाचारा। सुरत सवाणी करे कुड़माई, हरि पाया कन्त भतारा। आपे मेले फड़ फड़ बांही, ऊँचो ऊँच अगम्म अपारा। दूसर कोई जाणे नाही, अगम्म अगम्मड़ी कारा। देवणहारा ठण्डीआं छाँईं, सति पुरख रूप अपारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत सुहाए चरन दुआरा। चरन दुआरा सच टिकाणा, एका एक रघुबंस्सया। आगे देवे नाम बिबाणा, हरिजन बणाए साची अंस्सया। शब्द

सरूपी पीणा खाणा, पंच दुष्ट सँघारे काहना कंस्सयाा। नाद अनादी एका गाणा, नाम वजाए बंसरी बंस्सया। सोहँ नाम सच तराना, जन्म लगाए लेखे हरि सहंस्सया। आपे वरते आपणा भाणा, हरि हरि विष्नूं रूप सच अंस्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां पूर कराए आसा मनस्सया। मनसा पूर सर्बकल दाता, कुलवन्त कल धारी। आत्म बोधी शब्द ज्ञाना, अकल कला निरँकारी। जन भगतां हिरदा आपे सोधा, बख्शे चरन प्यारी। हरिजन बणाए जोधन जोद्धा, हरि हथ्थ खण्डा शब्द दो धारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे नाम खुमारी। नाम खुमारी साची वस्त, गुर पूरे हथ्थ रखाईआ। देवणहारा दस्त बदस्त, लहिणा देणा मूल चुकाईआ। अट्ठे पहर रक्खे मस्त, लोचन नैणां दरस दिखाईआ। ना कोई जाणे कीट हस्त, हस्त कीट आप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन वसया साचे घर, घर साचा आप सुहाईआ।

✱ पहली पोह २०१३ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✱

हरि खण्डा नाम अपार, प्रभ साचे हथ्थ उठाया। ब्रह्मण्डां पावे सार, दिस किसे ना आया। जेरज अंडां रिहा विचार, उत्भज सेत्ज वेख वखाया। लक्ख चुरासी मारे मार, मारनहारा आप अख्वाया। पारब्रह्म ब्रह्म खेल अपार, जुग जुग आपणा करदा आया। सतिजुग त्रेता उतरे पार, द्वापर लहिणा देण चुकाया। कलिजुग अन्तिम काली धार, काला सूसा तन पहनाया। खेले खेल खेलणहार, नर निरँकारा खेल रचाया। प्रगट होए विच संसार, लोकमाती फेरा पाईआ। जीआं जन्तां पावे सार, साधां सन्तां रिहा हिलाईआ। राज राजानां करे ख़बरदार, शाह सुल्तानां रिहा उठाया। नौ खण्ड पृथ्वी वहे एका धार, सत्तां दीपां वंड वंडाया। लोआं पुरीआं पावे सार, ब्रह्मा शिव रिहा हिलाया। करोड़ तेतीसा हाहाकार, सुरपति राजा इन्द रिहा कुरलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका खण्डा नाउँ उठाया। नाम खण्डा हरि निरँकार, एका एक उठांयदा। आपे रक्खे तिक्खी धार, सृष्ट सबाई वेख वखांयदा। पुरख अगम्मा अगम्मड़ी कार, आदि अन्त ना कोई पांयदा। कलिजुग काला कर्म विचार, जूठ झूठ तन वसांयदा। माया ममता लोभ हँकार, काया भुक्ख इक्क अपार, मनमती जीव फिरांयदा। पुरख अबिनाशी खेल अपार, जोत सरूपी कर आकार, अन्दर मन्दिर खोज खुजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वरन गोती भेव मिटांयदा। शब्द खण्डा हरि बलवाना, एका एक रखाया ए। आप उठाए गुण निधाना, गुणवन्ता कर्म कमाया ए। लोआं पुरीआं वेखे मार ध्याना, वरभण्डी बणत बणाया ए। धर्म झुलाए इक्क

निशाना, भेख पखण्डा दए मिटाया ए। आपे बन्ने हथ्थीं गाना, आत्म रंडी जीव मुकाया ए। आत्मक धुन सुणाए इक्क तराना, अनहद नाम रखाया ए। पंचम मेल श्री भगवाना, घर साचा इक्क सुहाया ए। आपे होए जाणी जाणा, जानणहार सर्ब घट राया ए। पारब्रह्म ब्रह्म इक्क अस्थाना, उच्च महल्ल अटल रखाया ए। जगे जोत नूर नुराना, दीवा बत्ती ना कोई रखाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द खण्डा हरि बलकारी, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, आपणे हथ्थ रखाया ए। नाम खण्डा हरि करतार, एका एक रखांयदा। जुग जुग पाउँदा आया वंडां, कलिजुग आपणी वंड वंडांयदा। चारों कुन्ट भेख पखण्डा, लक्ख चुरासी आत्म रंडा, साध सन्त सुत्ते दे कर कंडा, हरि साचा नाउँ ना कोई जणांयदा। वक्त अख़ीरी अन्तिम कन्ढा, हरिजन वखाए एका डण्डा, साचे पौड़े नाम चढ़ांयदा। पंच विकारा खण्ड खण्डा, प्रभ अबिनाशी देवे दंडा, वंडणहारा आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाम फड़ हथ्थ चण्ड प्रचण्डा, चारों कुन्ट आप वखांयदा। चारों कुन्ट हरि निरँकारा, एका धार वहाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, सृष्ट सबाई होई हलकाईआ। खेले खेल अपर अपारा, माया रैण अन्धेरी छाईआ। ना कोई दीसे धुँदूकारा, गुर पीर साध सन्त बैठे मुख छुपाईआ। प्रगट होए हरि निरँकारा, जोती नूर सवाईआ। एका शब्द जै जै कारा, चारों कुन्ट रिहा सुणाईआ। शब्द सरूपी कर पसारा, हरि शब्दी मेल मिलाईआ। इक्क वसाया सच्चा घर बाहरा, घर बाहरा आप वसाईआ। खेले खेल एकँकारा, ओंकारा रूप सहाईआ। सति नाम तेरी साची धारा, सति पुरख निरँजण विच समाईआ। आपे जाणे जानणहारा, जीव जन्त सार ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाम खण्डा वेख वखाईआ। नाम खण्डा हरि बलवाना, एका एक रखंनया। मेट मिटाए पंज शैताना, भाण्डा भरम गढ़ हँकारी देवे भन्नया। लक्ख चुरासी तुटे माणा, अन्त वसेरा ना कोई दीसे छप्पर छन्नया। पुरख अबिनाशी वरते भाणा, जन भगतां बेड़ा रिहा बन्नया। राग अनादी इक्क सुणाए सच तराना, पूत सपूता साचा मन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाम खण्डा देवे वर, लक्ख चुरासी देवे डन्नया। नाम खण्डा तन गात्रा, हरि साचा आप रखांयदा। भेव ना पायण वेद शास्त्रा, खाणी बाणी ना लेख लिखांयदा। ना कोई लग कन्ना ना दीसे मात्रा, अक्खर वक्खर ना कोई बणांयदा। आपे जाणे हरि हरि कमलापात्रा, गुरमुख साचे तन सजांयदा। होए सहाए दिवस रातरा, अट्ठे पहर सेव कमांयदा। ना कोई पुच्छे ज़ात पात्रा, ऊँच नीच आप हो आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, नाम खण्डा इक्क रखांयदा। हरि खण्डा नाम निरंकारया, निरगुण रूप समाए। गुरमुख साचे तन श्रृंगारया, सरगुण साची बणत बणाए। आपे वसे सभ तों

२१८
०६

बाहरया, सभ घट में रिहा जोत जगाए। जुग जुग खेले खेल अपारया, लोकमाती आवे जाए। गुर पीर साध सन्त आप अख्वा रिहा, खाणी बाणी पावे सारया, वेद पुराणी लेख लिखाए। सेवक सेवा साची ला रिहा, अञ्जील कुरानी आप हिलाए। मेटणहारा आप अख्वा रिहा, लक्ख चुरासी बणत बणाए। ब्रह्मा विष्न शिव साचा संग रखा ल्या, महिंमा अगणत गणी ना जाए। दर दरवेश आप बहा रिहा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे धारी केसा आपे मूंड मुंडा रिहा। हरि रंग ना धारी केस है, ना कोई मूंड मुंडाए। हरि जोती दस दस्मेस है, पुरख नारी ना कोई अख्वाए। जुग जुग धारे आपणा भेस है, वेस अवेसा आप अख्वाए। आपे दाता नर नरेश है, निरगुण समाए। सेवक सेवा ब्रह्मा ब्रह्म विष्न महेष गणेश है, दर बैठे सीस झुकाए। करोड़ तेतीसा रिहा वेख है, दर द्वार रिहा बिल्लाए। राए धर्म करे आदेस है, दूर दुराडा पन्ध मुकाए। चित्रगुप्त अलड़ वरेस है, आपणी भुल्ल रिहा बख्शाए। लाड़ी मौत खुल्हड़े केस है, नेत्र नीर वहाए। प्रगट होए गुर दस्मेस है, नाम खण्डा इक्क उठाए। अष्टभुज ना चले पेश है, सुंभ नसुंभ सृष्ट सबाए। आदि शक्त एका वेस है, जुग जुग आपे करदी आए। गुरमुख साचे विच प्रवेश है, कलिजुग तेरी धार रखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खण्डा निरवैर, कलिजुग अन्तिम मेटे कहर, आप आपणा रिहा चमकाए। निरगुण खण्डा निराहार, आपणा आप रखांयदा। करे कराए आपणा वार, लक्ख चुरासी दिस ना आंयदा। कलिजुग अन्तिम मारे मार, सतिजुग साची बणत बणांयदा। साध सन्त गुरमुख साचे लए उभार, जिस जन आपणी दया कमांयदा। ना कोई पुरख ना कोई नार, बिरध बाल जवान हरि एका रंग समांयदा। आपे गोपी आपे काहन, आपे होए जाणी जाण, मण्डल रासी आप पवांयदा। आपे मारे शब्द तीर निराला बाण, जम की फाँसी आप मिटांयदा। गुरमुख साचे करे पछाण, दासन दासी आप अख्वांयदा। दर द्वारे देवे माण, पंडत कांशी मुख भवांयदा। अछल अछेदा हरि भगवान, चार वेदा भेव ना आंयदा। जगत कतेबा होए हैरान, पुराण अठारां हिसाब मुकांयदा। खाणी बाणी सारे गाण, गावत गा ना कोए सुणांयदा। अंज़ील कुरानां आई हान, ईसा मूसा मुख छुपांयदा। प्रगट होए हरि बलवान, सत्त रंग उठाए इक्क निशान, नौ खण्डां आप वखांयदा। शाह सुल्तान बली बलवान, ब्रह्मण्डां खोज खुजांयदा। रवि ससि मंगे चरन ध्यान, प्रकाश प्रकाश प्रकाश ना कोई रखांयदा। धरत धवल वेख ज़िमीं अस्मान, मण्डल मण्डप आप हिलांयदा। ब्रह्मा तोड़े आत्म माण, ब्रह्म विद्या खोज खुजांयदा। शिव शंकर होए जाणी जाण, बाशक तशका गल सुहांयदा। करोड़ तेतीसा चुक्के कान, हरि एका बाण लगांयदा। लक्ख चुरासी कर पछान, जोती जामा भेख वटांयदा। कलिजुग तेरी कर कल्याण, संग मुहम्मद चार यारां आप निभांयदा। प्रगट होए

शब्द गुर हरि बलवान, रसना चिल्ला नाम चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाम खण्डा इक्क इकल्ला, सृष्ट सबाई वेख वखांयदा। नाम खण्डा इक्क इकल्ला, गुर गोबिन्दे हथ्थ उठाया ए। नौ खण्ड पृथ्वी वेखे इक्क महल्ला, सत्तां दीपां खोज खुजाया ए। मिले मेल गोबिन्द डल्ला, सम्मत चौदां इक्की जेठ लेख लिखाया ए। नाल रलाया घोड़ा नीला, नीले वाला आप हो आया ए। बस्त्र पाए तन साचा पीला, पीली धार कराया ए। पार ब्यासों कर कर हीला, आपणा चरन टिकाया ए। भाग लगाए उच्चा टिल्ला, आपणा बचन निभाया ए। गोबिन्द धारा हरि शब्द सरूपी छैल छबीला, बस्त्र शस्त्र इक्क रखाया ए। लक्ख चुरासी आत्म अन्तर लाए तीला, अग्नी जोती इक्क लगाया ए। गुरमुख साचे नाम निधान प्रभ दर पी ला, हरि अमृत आत्म रिहा प्याया ए। प्रभ मिलण दा साचा हीला, हरि गोबिन्द रूप समाया ए। हरि खण्डा ब्रह्मण्डां ब्रह्म रूप समांयदा। खाणी चारे पाए वंड, आपणी वंड वंडांयदा। माया नार दुहागण रंड, अन्तिम कंड वंढांयदा। लक्ख चुरासी देवे दंड, भेख पखण्ड मिटांयदा। सम्मत सम्मती करे वंड, कलिजुग लहिणा देणा मूल चुकांयदा। सतिजुग साचे पाए ठंड, लोकमाती जन्म दवांयदा। सम्मत चौदां देवे गंढ, गुरमुखां साचा हिस्सा मात वंडांयदा। पंच विकारा खण्ड खण्ड, नाम खण्डा एका वांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया सच घर, साचा खण्डा तन सजांयदा। गोबिन्द काया सच तख्त, हरि साचा आप बिराज्जया। हरि साचा आपे लिखणहारा लिख्त, आप संवारे आपणा काज्जया। आपे जाणे वाक भविख्त, प्रगट होए देस माज्झया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका खण्डा आपणा साज्जया। हरि खण्डा शब्द कटार, भेव भेद ना राया। दो जहानी पावे सार, वेद कतेब ना लेख लिखाया। गुरमुखां देवे कर प्यार, देवी देव हथ्थ ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटाया।

तुरीआ महल्ल हरि अपार, कवण धाम सुहांयदा। कवण सरूप रक्ख चार दिवार, छप्पर छन्न कवण रखांयदा। कवण तख्त ताज सच्ची सरकार, कवण राज कमांयदा। कवण मारे शब्द आवाज़, कवण दर दरबान सुहांयदा। कवण रच्चया हरि हरि काज, कवण खेल खिलांयदा। कवण घोड़ा दिसे ताज, कवण चरन उठांयदा। कवण साजण रिहा साज, कवण मीत मुरार अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, इक्क वखाए सच घर, तुरीआ तेरा रूप समांयदा। तुरीआ रंग शब्द अटारी, नाम सच मुनारा। आपे जाणे किरपा धारी, गुरमुख विरले देवे चरन प्यारा। जिस जन वेख्या नैण मुँधारी, दिसे एकँकारा।

कथना कथी ना रसन उचारी, ना लिखे लेख लिखारा। जोती शब्दी एका धारी, तत्त मति ना पावे सारा। जोती जोत सरूप हरि, सन्तन मेला इक्क घर, तुरीआ गावण हरि हरि पावण ना फिर छुपावण, गुर संगत बैठ अद्ध विचकारा। उठ सन्त आ द्वार। खोलू भेव दस्म द्वार। तुरीआ पाउँणी फेर सार। सुरत सवाणी गई हार। गुर शब्द ना मिल्या साचा यार। गुर गोबिन्द दिवस रैण ना लाहे माया ममता तन बुखार। साध सन्त गुरसिख ना करे निन्दा, पारब्रह्म रूप अगम्म अपार। गुर गोबिन्दा उतारे मन तन चिन्दा, जिस जन देवे दरस अपार। आप बणाए आपणी बिन्दा, अमृत आत्म धार पावे सागर सिन्धा, काया सीतल करे ठंडी ठार। बजर कपाटी तोड़े जिंदा, भगत जनां हरि सद बख्शिंदा, आदि अन्त तारनहार। दाता जोद्धा सूर शब्द मृगिन्दा, पंचम वखाए एका कार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन वेखे इक्क घर, तुरीआ तूरत नाद कवण अपार।

जोत निरँजण कवण घाट, दीपक रही जगाईआ। माया बस्त्र जाए पाट, गुर शब्द तन पहनाईआ। सच वस्त है साचे हाट, हट हटवाणा आप अख्वाईआ। दुरमति मैल देवे काट, आपणी दया कमाईआ। लेखा चुक्के पाठ, गुर शब्दी होए जणाईआ। नहावण जाए ना अट्ठ साठ, तीर्थ ताट ना कोई वखाईआ। दूजा घर दिसे कवण घाट, गुर पूरा दए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन पुच्छे इक्क घर, दूजा भेव खुल्हाईआ।

सावण साँवल शाह, हरि रंग समाया। आपे जाणे बेपरवाह, जीव जन्त भेव ना पाया। आप ना मिल्या साचे थाँ, गुर पूरा दे मति रिहा समझाया। नौ द्वारे उडदे काँ, दसवां राह ना किसे वखाया। गुर शब्द ना मिल्या पिता माँ, गोदी गोद ना किसे उठाया। हरि रंग ना माणी ठण्ढी छाँ, अग्नी अग्ग जलाया। वेले अन्त ना पकड़े कोई बांह, राए धर्म दए सज़ाया। गुर पूरा गुरमुखां वेखे थाँ थाँ, लड़ आपणा आप फड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग समाया। आदि अन्त एकँकारा, अकल कला भरपूरया। जुग जुग मातलोक लए अवतारा, गुरमुखां हाज़र हज़ूरया। लोकमात बन्हे साची धारा, मेट मिटाए कूड़ा कूड़या। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, हरिजन साची देवे चरन धूड़या। विष्नूं भगवान हरि भगवन्ता, नानक रसना गाईआ। पारब्रह्म प्रभ बेअन्त बेअन्ता, बेअन्त आप अख्वाईआ। सार धार जुग साधन सन्ता, आपणी आप बंधाईआ। देवे शब्द सच सुगंधता, गुर पूरा रसना गाईआ। जन भगत बणाए

साची बणता, जो जन आए सरनाईआ। मनमुखां पाए माया बेअन्ता, दर दर फिरे हलकाईआ। हरिजन मेला साचे कन्ता, साची सेजा इक्क हंढाईआ। नाम खुमारी रंग बसन्ता, दिवस रैण चढ़ाईआ। आपे होए पति पतिवन्ता, पतिपरमेश्वर आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भेखाधारी भेख वटाईआ। अन्तिम भेखा भेखा धार, नर नरायण अवतारा। लेखा लिखे हरि संसार, खेले खेल अपारा। जोती जामा भेख अपार, रूप अनूप पसारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एकँकारा। ओंकार जोती जाति, जगत जुगत बणाईआ। जन भगतां मेला कमलापाती, मनमुखां मुख भवाईआ। अमृत आत्म देवे बूंद स्वांती, सीतल धारा आप वहाईआ। अन्दर मन्दिर खोल्हे ताकी, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। जुग जुग देवणहारा बाकी, ना कोई जाणे बन्दा ख़ाकी, लहिणा देणा मूल चुकाईआ। आपे होए पाकन पाकी, पारब्रह्म ब्रह्म समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त दुलार, एका देवे शब्द हुलार, नौ द्वारे पार कराईआ। नौ द्वारे पार किनारा, हरि आपणा आप वखांयदा। साचा मेला कन्त भतारा, सुरत सुहागण आप बणांयदा। महल्ल अटल उच्च मुनारा, आपणा आप वसांयदा। आत्म सेजा हरि गिरधारा, शब्द सिँघासण डेरा लांयदा। शब्द सरूपी कर आकारा, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। पंचम धुन अपर अपारा, अनहद रागी गीत सुणांयदा। आपे बोले बोलणहारा, बोल बोला इक्क वखांयदा। वरन अवरनी हरि वरतारा, वरन गोत ना कोई रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया वेख घर, साचा धाम सुहांयदा। गोबिन्द काया धाम अवल्ला, प्रभ आपणा आप उपाया। आपे वसया इक्क इकल्ला, दूसर ना कोई संग रलाया। वेख वखाणे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ जल थला, उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाया। गुरसिख शब्द स्वासी पवण पवणी रला, आकाश प्रकाश हरि हरि सेवा लाया। दीपक जोती जिस जन बला, रवि ससि रहे शरमाया। गोबिन्द काया हरि हरि रला, हरि आपणा रूप समाया। दरस दिखाए घड़ी घड़ी पल पला, नेत्र लोचन नैण वेख वखाया। सृष्ट सबाई आप भुलाए कर कर वल छला, अछल अछला हरि रघुराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, दर दरवेशा फेरा पाया। दर दरवेशा नर निरँकारा, घर घर आत्म वज्जी वधाईआ। हरि शब्द कराए जै जैकारा, चारों कुन्टां रिहा सुणाईआ। ब्रह्मा उठ उठ करे विचारा, चारे वेदां वेख वखाईआ। लोकमात कलि अन्तिम वारा, शिव शंकर दए दुहाईआ। करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द कोई ना दए सहारा, प्रभ साचा रिहा हिलाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां धुँदूकारा, दीपक जोत ना कोए जगाईआ। खाणी बाणी वेद पुराणी अञ्जील कुरानी करन विचारा, सावण सार कोए ना पाईआ। मस्जिद मन्दिर गुरुदुआरा रोवण धाहां मारा, गुर गोबिन्दा दिस

२२२
०६

ना आईआ। अल्ला हू एका नाअरा, अल्ला राणी संग मुहम्मद चार यारां रही कुरलाईआ। अहिनल हक्क इक्क द्वारे साचा मेला कन्त भतारा, साचा मंगल सुत्तया गाईआ। वेद व्यासा जगत लिखारा, कुतब कतेबां रिहा फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया वेख घर, आसण बैठा लाईआ। गोबिन्द काया सच टिकाणा, हरि आपणा आप सुहांयदा। शब्द सरूपी इक्क बिबाणा, सुंन अगम्मो पार करांयदा। आपे होए जाणी जाणा, दस्म द्वारी दर सुहांयदा। रागी नादी इक्क तराना, तार सितारा आप वजांयदा। आपे जाणे आपणा भाणा, ना कोई मोड़े मोड़ मुड़ांयदा। कलिजुग अन्तिम आई हाणा, लोकमाती जुड़या जोड़ अन्तिम तोड़ वखांयदा। भरमे भुल्ले राजा राणा, साध सन्त ना हरि वखाणा, दर दर घर घर फेरी पांयदा। माया ममता जूठा झूठा तणया ताणा, भेखाधारी भेख भखण्डा पहरे बाणा, साचे हाणी हाण ना कोई मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया वेख घर, आप आपणा रूप समांयदा। गोबिन्द काया साचा गढ़, हरि आपणा आप सुहांयदा। शब्द सरूपी अन्दर वड़, दीपक जोती इक्क जगांयदा। अक्खर अक्खर आपे पढ़, खाणी बाणी रचन रचांयदा। लक्ख चुरासी नाल रिहा लड़, आप आपणा हथ्थ उठांयदा। लोकमात ना कोई सके फड़, भेखाधारी भेख वटांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, आप उखेड़े सभ दी जड़, कलिजुग वहिण वहाए ना कोई पार करांयदा। आदि अन्त ना जाए सड़, ना कोई नाता बहत्तर नड़, हड्ड मास नाड़ी दिस कोई ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द वेख काया घर, घर बाहरा आप सुहांयदा। गोबिन्द काया सच घर, पारब्रह्म आपणा आप बणाया। ना कोई जाणे नौ द्वार, जीव जन्त फिरे हलकाया। आप आपणा महल्ल उसार, अन्दर मन्दिर डेरा लाया। जोत सरूपी पहरेदार, कंचन गढ़ सुहाया। अट्ठे पहर ख़बरदार, आलस निन्दरा विच ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया वेख घर, दर दुआरा बंक सुहाया। दर दुआरा बंक है, बंक द्वारी आप। आपे राउ रंक है, सृष्ट सबाई माई बाप। दर आया मेटे शंक है, जगत मिटाए तीनो ताप। जिस जन हरि जोती मेल एका कनक है, सो जन जाणे आपणा आप। पुरख अबिनाशी जुग जुग खेल बार अनक है, आपे जाणे आपणा वड प्रताप। कलिजुग अन्तिम प्रगट होए वासी पुरी घनक है, गुर गोबिन्दा माई बाप। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया वेख घर, त्रैगुण माया मेटे ताप। त्रैगुण माया जगत खेल है, हरि साचे रचन रचाई। ब्रह्मा विष्न शिव गणेश सज्जण सुहेल है, हरि शब्द करी कुड़माई। आपे गुरू आपे चेल है, आप आपणी वेल वधाई। आपे खेलणहारा खेल है, आपे धी आप जवाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया वेख घर, हरि शब्द करी कुड़माई।

हरि शब्द नाउँ निरंकारया, हरिजन होए कुड़माई। साचा मेला मीत मुरारया, आदि अन्त ना होए जुदाई। आपे होए शाह अस्वारया, शाह सुल्तानां आप अख्वाई। दर दुआरा इक्क सुहा रिहा, निरँकारा नाउँ रखाई। कोटन कोट जीव उपा रिहा, कोटन कोटां विच समाई। गुरमुख साचे शब्द चोट तन लगा रिहा, पंचम बैठे मुख शरमाई। हउमे काया खोट गंवा रिहा, जो आए चल सरनाई। शब्द भण्डारा अतुट इक्क रखा ल्या, दो जहानां रिहा वरताई। बेमुख जड़ पुट्ट आपणी हथ्थीं बाहर सुटा रिहा, कलिजुग वहिंदी धार वहाई। गुरमुख घुट्ट घुट्ट आपणे गले लगा रिहा, हरि आप उठाए फड़ फड़ बांही। सतिजुग सारा वक्त सुहा रिहा, जन भगतां देवे सच सलाही। मनमति जगत गंवा रिहा, हो दाता बेपरवाही। सतो गुण सति सति समा रिहा, राजस तामस वेख वखाई। गोबिन्द साचा मेल मिला रिहा, सच सवाणी लए प्रनाई। पलँघ रंगीला इक्क वखा रिहा, शब्द सिँघासण सेज विछाई। बस्त्र पीला तन पहना रिहा, आप आपणा रंग चढ़ाई। सोहँ नीला नाल रखा ल्या, डोरी आपणे हथ्थ रखाई। लोकमात किला लाल आ, नौ द्वार दरबार वखाई। सम्मत चौदां भेव खुल्ह्आ रिहा, गुरमुखां दे मति रिहा समझाई। सम्मत पन्दरां रंग चढ़ा ल्या, देस प्रदेसा जाए कर कर धाई। सम्मत सोलां सगन मना ल्या, पहली चेत्र शहर लाहौर किला शाही। पुरख अबिनाशी मोड़ा पा ल्या, पंचम जेठ पए दुहाई। गुर संगत संग रला ल्या, हाढ़ सतारां वाहो दाही। सर अमृत थेह करा ल्या, पार ब्यासों दिसण राही। साचा धाम सुहा ल्या, थल कपूर बेपरवाही। आप आपणा कदम उठा ल्या, मस्तूआणे जोत जगाई। शाह संगरूर शब्द मिला ल्या, भज्जा आवे वाहो दाही। शाह पटियाला आप उठा ल्या, मुख विच घास उठाई। वाली हिन्द समझा ल्या, जमन किनारा दए सुहाई। साधां सन्तां नाल रला ल्या, आपणा बेड़ा रिहा बंन्हाई। पार किनारा इक्क वखा ल्या, गुर तेग बहादर पकड़े तेरीआं बांही। सीस गंज चरन छुहा ल्या, प्रगट होए जगत मलाही। नाम वंञ इक्क लगा ल्या, गुर संगत नाल तराई। सवेर सञ्झ इक्क करा ल्या, जन भगतां आत्म जोत करे रुशनाई। पारब्रह्म ब्रह्म रूप समा ल्या, निज घर बैठा आसण लाई। दर्शन देवे चाँईं चाँईं। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द निशाना हथ्थ फड़, मनमुखां दए सज़ाई। अज्ञान अन्धेर अन्ध है, मनमुख ना कोए मुकाए। दूर दुराडा पन्ध है, लेखा लिख ना सके राए। दूई द्वैती अन्दर कंध है, बिन गुर पूरे कोई ना ढाहे। मनमती जीव भागां मन्द है, काम क्रोध लोभ मोह हलकाए। गुर शब्द ना चढ़या साचा चन्द है, दीपक जोत ना कोए जगाए। मदिरा मास रखाया बत्ती दन्द है, रसना गुण ना हरि हरि गाए। आप गंवाया परमानंद है, माया ममता तृष्न हलकाए। गुर पूरा सद बख्शंद है, दर आए लए तराए। दर द्वारे जो जन करन निन्द है, निन्दक निन्दया मुख

रखाए। गुरमुख बणाए साची बिन्द है, पिता पूत आप हो जाए। अमृत धार वहाए सागर सिन्ध है, गंगा गोदावरी बैठी मुख शरमाए। आपे मेटणहारा सगली चिन्द है, आप आपणा दरस दिखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला इक्क द्वार, दुआरा बंक सुहाए। तुरीआ नाद हरि वज्जणा, नाद अनादा एक। दर द्वारे आपे बहि बहि सजणा, सद आपे होया बिबेक। आप आपणी रक्खे लजना, आपे जाणे आपणी टेक। ना घड़या ना भज्जणा, ना ठण्ढा ना लग्गे सेक। ताल नगारा ना कोई वज्जणा, ना कोई नेत्र रिहा देख। पड़दा पा किसे ना कज्जणा, ना कोई दिसे रेख मेख। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच द्वारे आपे सजणा। तुरीआ तख्त सुल्तान है, हरि जोती नूर नुरानी। एका बैठा मेहरवान है, आपे जाणे नाम निशानी। जिस जन देवे जिया दान है, गुर चरन सच्ची कुरबानी। आवण जावण इक्क ध्यान है, हरि जोती खेल महानी। हरि जोती खेल महान है, आप आपणे विच समानी। जोती जोत सरूप हरि, आपे वेख सच घर, तुरीआ तेरी इक्क निशानी। तुरीआ तूर तुरंग, हरि रंग अनरंग हरि हरि रंगया। खेले खेल सूरा सरबन्ग, आपे होए अंग संग, आप वजाए इक्क मृदंगया। आदि अन्त ना होए भंग, ना कोई चले चाल बेहन्गया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणा घर, गुरमुख गुरमुख मनमुख तेरी काया चोली रंगया। चौथा घर कवण रास, हरि साचे आप रखाईआ। कवण वस्त होवे सति पास, घर चौथे जा समाईआ। चौथे घर फिरदे दासी दास, सन्तन राह वखाईआ। सन्तन मेला हरि गुणतास, विछड़ कदे ना जाईआ। कवण रंग पृथ्वी आकाश, वेखे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, सन्तन पुच्छे इक्क घर, चौथा पद कवण ताल वज्जे ना कोई आवाज़ सुणाईआ।

जगत हउमे रोग है, रही जगत जलाए। रस रसना जीव जन्त रहे भोग है, आत्म रस सार ना राए। गुर पूरा जिस जन देवे शब्द साची चोग है, जिह्वा हरि गुण गाए। रस रसना एका भोग है, भगत भगती सेवा लाए। हरि देवे दरस अमोघ है, जगत जुगती आपणे हथ्थ रखाए। जिस जन मेला धुर संजोग है, हरि संजोगी मेल मिलाए। आदि अन्त ना होए विजोग है, विछड़ कदे ना जाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिलाए। हरिजन साचे साचा मेला, गुर पूरे चरन द्वारया। आपे होए सज्जण सुहेला, साची सेवा सेव कमा रिहा। आपे वसे रंग नवेला, धाम अकेला इक्क सुहा रिहा। दर दर घर घर वेखे गुरु गुर चेला, नारी कन्त कवण प्यारया। जोत निरँजण चाढ़े तेला, हरि शब्दी तन श्रृंगारया। साचा खेल आपे खेला, घर पाया अगम्म अपारया। नर नरायण साचा मेला, लेखा चुक्के नौ

द्वारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मन मती जीव आप समझा रिहा। मन मति जगत कंगाल है, दिवस रैण कुरलाए। फल दिसे ना काया डाल है, पंचम तत्त होए हलकाए। माया ममता मोह जंजाल है, दिवस रैण रही भरमाए। सुरत सवाणी होई हाल बेहाल है, मन मनुआ दहि दिशा धाए। बुध मति ना कोई समझाए है, दर द्वार ना कोई पाए। गुरमुख साचे आप जगाए है, हरि आपणी सेवा लाए। देवे नाम सच्ची वड्याई है, कौस्तक मणीआ मस्तक थेवा जोत निरँजण डगमगाए। मिले मेल हरि हरि अलख अभेव है, देवी देवा तरस कमाए। हरिजन गाए रसना जिह्ब है, रस आत्मक निज्झर आप झिराए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचा मार्ग रिहा वखाए। आत्म रस निज आत्मा, परमानंद समानया। परम पुरख परमात्मा, पारब्रह्म हरि जानया। लेखा चुक्के ज़ात पातना, राउ रंक ना कोई राजानया। एका एक निभाए साथना, हरिजन बिठाए सच बिबाणया। प्रगट होए त्रैलोकी नाथना, अनाथ अनाथां दया कमाए। गुर गोबिन्दा साचा साथना, सगला साथ आप हो जाए। लेखे देवे हाथो हाथना, लहिणा देणा मूल चुकाए। आप चलाए अकथा अकाथना, रसना कथ ना सके राए। हरि पुरख समरथ अबिनाशना, अबिनाशी पुरख अखवाए। खेले खेल पृथ्वी आकाशना, आकाश आकाशां विच समाए। जन भगतां दासी दासना, काया अन्दर मन्दिर बैठा डेरा लाए। साचे मण्डल पावे रासना, गोपी काहन आप हो जाए। आप जाणे आपणी वासना, नाम सुगंधी इक्क रखाए। खेले खेल सार पाशना, साची बाजी एका लाए। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपणी उपासना, जुग जुग आपे रिहा कराए। आपे रामा राम है, आपे कृष्न मुरार। आपे मुहम्मदी यार है, आपे अल्ला प्यार। आपे नानक गोबिन्द धार है, आपे शब्द रूप अपार। आदि अन्त एका एकँकार है, लोकमात लए अवतार। कलिजुग अन्तिम वेख विचार है, प्रगट होए विच संसार। निहकलंक कल्की अवतार है, कलधारी आप सरकार। नाम तोड़ा अपर अपार है, जोती जोड़ा हरि गिरधार। जन भगतां बौहड़ अन्तिम वार है, शब्द घोड़े हो अस्वार। सोहँ पौड़ा एका वार है, दर घर साचे देवे वाड़। लम्भा चौड़ा ना कोई विचार है, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे इक्क वर, जोत जगाए बहत्तर नाड़।

हँस होए मात कग्गया, कागी काग उडार। गुरमुख विरले मेला उप्पर शाह रगया, जोत निरँजण पहलां कर प्यार। आप डोरी आपणी बज्झया, आपे आए वारो वार। पंच विकारा हरिजन साचे दज्झया, पी अमृत आत्म उज्यार। घर साचे बहि बहि सज्जया, गुर पूरे चरन द्वार। आप कराए वखाए मक्का काअबा साचा हाज़ी हाजन हज्जया, मस्जिद मन्दिर अन्दर

गुरुद्वार। साची सेजा बहि बहि सज्जया, सोलां कर कर तन श्रृंगार। गुरमुखां पर्दा रिहा कज्जया, दुरमति मैल दए उतार। दूर दुराडा आए भज्जया, सुखमन नाड़ी दए सहार। आपे रक्खणहारा लज्जया, गुर शब्द रूप अपार। बजर कपाटी आपे भज्जया, नाम खण्डा मारे मार। नाद अनादी धुन आत्मक ताल साचा वज्जया, पंचम गायण वारो वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां वखाए इक्क घर, सति पुरख साजण साचा साज्जया। सन्तन घर सच थह है, हरि साचे वस्त टिकाई। भरम भुलेखा ना कोई जन है, एका एक हरि सरनाई। शब्द सुनेहड़ा साचे कन्न है, आप आपणा रिहा जणाई। ना कोई देवे दूसर डन्न है, तीजे लोइण रहे रुशनाई। चौथे घर साचा चन्न है, सञ्झ सवेर ना कोई रखाई। पंचम बेड़ा रिहा बन्नृ है, दर घर आपणे मेल मिलाई। छेवें ना कोई छप्पर छन्न है, हरि महल्ल अटल वखाई। सत्तवें बैठा दर मल है, दर दुआरा इक्क सुहाई। अट्ठ तत्त माटी खल्ल है, नौ द्वारे खोलृ वखाई। दस्म द्वारी वल छल है, प्रभ आपणी बणत बणाई। अमृत आत्म लाया साचा फल है, जन साचे रिहा खवाई। जोत जगाए काया डूँघी डल है, दिवस रैण रहे रुशनाई। गुर शब्दी हरिजन साचा गया रल है, रसना शब्द रिहा ध्याई। बंक दुआरा बैठा मल्ल है, पृथ्वी आकाश ना खोज खुजाई। हरि हरि निहचल धाम अटल है, ऊँच अटल रखाई। आपे रक्खे काया खल्ल है, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां एका देवे नाम धना, तन मन्दिर आप टिकाई। नाम धन हरि मेहरवाना, गुरमखां झोली पांयदा। दर द्वारे कर परवाना, काया चोली रंग रंगांयदा। इक्क सुणाए धुर फ़रमाणा, सोहँ साचा राग अलृांयदा। खाणी बाणी करे पछाणा, गीत सुहागी आपणा गांयदा। सति पुरख निरँजण हरि भगवाना, विष्नूं रूप वटांयदा। लक्ख चुरासी देवे दाना, दाता दानी आप अख्वांयदा। आपे होए चतुर सुघड़ स्याना, राजन राज आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख आत्म एका दर, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाजा आपणा आप सुहांयदा। आत्म दर सच दरवाज़ा, प्रभ आपणा आप सुहाया ए। नाम रखाए चिट्टा ताजा, सोलां कलीआं आसण लाया ए। दस्म द्वारी बहि बहि गाजा, हरि जोती खेल खिलाया ए। प्रगट होए देस माझा, गुर गोबिन्दा गोबिन्द राया ए। सम्बल नगरी साजन साजा, हरि आपणा आप उपाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे रिहा जगाया ए। सम्बल नगरी सच ग्रां, प्रभ आपणा आप वसांयदा। आपे जाणे साचा थाँ, वास निवासा आप करांयदा। गुर गोबिन्दे पकड़े बांह, शब्द डोरी तन्द बंनृांयदा। तेग बहादर तेरी ठण्ढी छाँ, घर साचा आप सुहांयदा। गुरमुख साचे साचा नाँ, पूत सपूता आप उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम हरि

हरि आया, हरि साचा खेल खिलंदड़ा। हरिजन साचे लए जगाया, आप आपणा रंग चढ़ंदड़ा। ब्रह्मा वेता लए उठाया, वेला अन्त वखंदड़ा। अन्तिम जोती मेल मिलाया, बीस बीसा हरि बख़्शंदड़ा। गुरमुख साचा दए सजाया, मस्तक टिक्का आप लगन्दड़ा। त्रैगुण माया झोली पाया, पंचम तत्त सुहंदड़ा। पंझी प्रकिरती सेवा लाया, सगला साथ आप निभंदड़ा। एका चरन प्रीती ध्यान रखाया, दर दुआरा वेख वखंदड़ा। गोबिन्द किरती किरत कमाया, किरतघण ना दीसे कोई मुशटंडड़ा। धरनी धरन धिरत रखाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेल आपणे हथ्थ रखंदड़ा। पंच ग्राँ आत्म घर, पंचम मेल मिलांयदा। पंचम देवे ठण्ढी छाँ, आपणा संग निभांयदा। पंच बणाए हँस काँ, नाम रत्ती चोग चुगन्दड़ा। पंच सहाई पिता माँ, पंचम गोद उठंदड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, काया नगर खेड़ा सच ग्रां, गुरमुख साचे मेल मिलंदड़ा। काया नगर साचा खेड़ा, गुरमुख वंड वंडाईआ। आपे मेटे पंचम झेड़ा, पंचम दए जगाईआ। पंचम बन्ने आपे बेड़ा, पंचम मोह चुकाईआ। पंचम देवे उलटा गेड़ा, पंचम वहिण वहाईआ। पंचम करे खुल्ला वेहड़ा, पंचम दए दुहाईआ। पंचम बन्नणहारा बेड़ा, नगर काया साचा खेड़ा, पंचम ग्रां दए सुहाईआ। पंच ग्रां पंच प्रमुख, पंचम राज कमाया। गुरमुख आत्म एका सुख, जगत झेड़ा मूल चुकाया। मात गर्भ ना उलटा रुक्ख, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाया। सुफल कराए मात कुक्ख, प्रभ दर्शन नेत्र पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया वेखे सच घर, पंचम पंच ग्रां नाउँ रखाया। सतिगुर जगत भण्डार है, वस्त इक्क अनमोल। देवणहार सर्ब संसार है, जुग जुग भण्डारा खोल्ह। आदि अन्त ना करे उधार है, चरन प्रीती जो जन दए घोल। पावणहारा साची सार है, काया मन्दिर अन्दर पर्दा फोल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन दित्ता साचा वर, देवे नाम वस्त अतोल। नाम धन सच ख़ज़ीना, गुर दर साचे पाया। आपे दाना बीना, बीना दाना आप अख्वाया। काया चोली तन मन भीन्ना, सीना सांतक सांत कराया। रसना नाउँ नां हरि हरि चीना, चिन्ता चित समग्री रखाया। गुरसिख बिल्लाए जिउँ जल मीना, जल मीना रूप समाया। चरन कँवल जन होए अधीना, आसा मनसा पूर कराया। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन देवे शब्द वर, वर वरयाम आप हो आया। शब्द ना गाया रसना गुण, मन चित भया ठगोरी। दिवस रैण पुकार रिहा सुण, वेख वखाए काया कवरी। गुरमुख साचे सन्त सुहेले चुण, देवे वड्याई माण उप्पर धवली। आपे करे छाण पुण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे शब्द वर, मिलाए मेल साँवल सँवली। सर्बकल आपे समरथ, अकल कला भरपूरया। जन भगतां रक्खे दे कर हथ्थ, आदिन अन्ता हाज़र हज़ूरया। जुग जुग चलाए अकथना अकथ, पसारा मेटे

कूड़ो कूड़या। नाम चलाए साचा रथ, गुरमुख बणाए मूर्ख मूढ़या। कलिजुग लेखा चुक्के साढे तिन्न हथ्थ, जिस जन बख्शे चरन धूड़या। सगल वसूरे जायण लथ्थ, काया चोली रंगण चाढ़े हरि हरि गूढ़या। पंच विकारा देवे मथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाता जोड़या। साचा नाता उत्तम ज़ाता, कर्म धर्म हरि द्वार। जगत माया भैण भ्राता, मात पित ना कोई मीत मुरार। कलिजुग रैण अन्धेरी राता, चारों कुन्ट अन्ध अंध्यार। भरम भुलेखा ज़ात पाता, गुर दर मन्दिर हाहाकार। हरिजन मेला कमलापाता, लेखा चुक्के नौ द्वार। सति पुरख निरँजण एका ज़ाता, आदि अन्ता एकँकार। शब्द जणाई साची गाथा, सोहँ कराए जै जै जैकार। प्रगट होए त्रैलोकी नाथा, सतिजुग साची बन्ने धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल अपर अपार। कलिजुग धारी, धरत धवल रखाईआ। जोत जगाए हरि निरँकारी, सृष्ट सबाई वेख वखाईआ। शब्द खण्डा तेज कटारी, गुर गोबिन्दे तन छुहाईआ। साचे घोड़े कर अस्वारी, लोआं पुरीआं पार कराईआ। आपे बणया लेख लिखारी, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। ब्रह्मा नेत्र रिहा उग्घाड़ी, प्रभ साचा रिहा हिलाईआ। शिव शंकर चरन छुहाए दाढ़ी, वेले अन्तिम दए दुहाईआ। सुरपति राजे इन्द लेखा चुक्के सतारां हाढ़ी, सम्मत बीसा रुत्त सुहाईआ। लक्ख चुरासी वेखे मौत लाड़ी, लोकमाती राह तकाईआ। धर्म राए फड़ाए हथ्थ बहारी, चारे कुन्टां रिहा वखाईआ। पहली कूटे कर उजाड़ी, लहिंदी दिशा वेख वखाईआ। सम्मत चौदां उठे धाड़ी, प्रभ साचा रिहा उठाईआ। जन भगतां होए पिच्छे अगाड़ी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आपे ढाहे उच्चे मन्दिर महल्ल अटारी, नगर खेड़ा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम औध मुकाईआ। कलिजुग औध अन्तिम वेला, हरि अन्तिम अन्त करांयदा। गोबिन्द गुरू गुरु गुर चेला, हरि गोबिन्द रूप वटांयदा। दर द्वारे साचा मेला, वाली हिन्द आप जणांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी सज्जण सुहेला, साचा लेखा आप लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग काया रंग चढ़ांयदा। कलिजुग काया रंगी चोली, हरि साचे आप रंगाईआ। लाड़ी मौत चुक्के डोली, चारों कुन्ट फिरे हलकाईआ। धर्म राए दर होए गोली, दोवें बैठी सीस झुकाईआ। मनमुखां अन्त व्याहे बोली, लक्ख चुरासी प्रनाईआ। तोलणहारा पूरे तोल तोली, आपे कंडा रिहा उठाईआ। धर्म राए दर साचा खोल्ही, आप आपणा बूहा लाहीआ। गुरमुखां दर होए गोली, दर बैठी मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम दित्ता वर, करे मात कुड़माईआ। कलिजुग आया दर द्वार, मंगे मंग भिखारी। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, आई अन्तिम वारी। संग मुहम्मद चार यार, टुट्टदी जाए यारी। अल्ला राणी हाहाकार, दिवस रैण रही पुकारी। वसदा महल्ला

दए उजाड़, प्रभ साचा खेल खिलारी। जलां थलां पावे सार, मारे शब्द उडारी। पन्दरां पन्दरां तेरी कार, जगे जोत इक्क निरँकारी। सोलां सोलां हाहाकार, सोलां करे तन श्रृंगारी। सत्त सतारां मारे मार, मन्दिर अन्दर ना कोई दीसे चार दिवारी। अट्ठ अठारां जल जल धार, सभ दी रिहा जड़ उखाड़ी। उन्नी उनीसा मौत लाड़, संग मुहम्मद तोड़े यारी। बीस बीसा ख़बरदार, प्रगट होए नर निरँकारी। पंचम मीता पहरेदार, नाम खण्डा इक्क कटारी। इक्क इकीसा विच संसार, ब्रह्मण्डी रिहा उसारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुणवन्ता गुण रिहा विचारी। बीस बीसा हरि जगदीसा, हरि हरि रंग समांयदा। छत्र झुलाए साचा सीसा, पंचम मुख वखांयदा। ना कोई दीसे ईसा मूसा, हिन्दू सिख ना कोई अख्वांयदा। चरन लगाए चीना रूसा, आप आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सम्मत चौदां सतारां हाढ़, देस पर्देशा लेख लिखांयदा। हाढ़ सतारां रुत्त सुहाउँणी, हरि साचे लेख लिखाउँणी। देश बवंजा शब्द जणाउँणी। आप आपणी कलम चलाउँणी। करे कराए जो मन भाउँणी, स्यासत विरासत सर्ब मुकाउँणी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वाली हिन्द देवे वर, जगत ज़ामनी इक्क निभाउँणी। वाली हिन्द उठ जाग, नेत्र अक्ख उग्घाड़। लोकमात लग्गा भाग, पंचम जेठा प्रगट होए सतारां हाढ़। राज राजानां शाह सुल्तानां आत्म जोती बुझे चिराग, हँस होए कल कल काग। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आपणे हथ्थ रक्खे वाग।

जुग करता प्रभ आप है, रचना रचन रचाए। सृष्ट सबाई माई बाप है, हरिजन साचे संग रलाए। मन बुद्धि रही नाच है, हरि देवे दर दुरकाए। माया रक्त झूठी आंच है, दिवस रैण रही जलाए। अन्तिम मेला पंचम पांच है, पंचम मारे पंच लए उठाए। पुरख अबिनाशी एका नाद है, लोआं पुरीआं रिहा वजाए। हरिजन साचे दाद है, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हर घट दीवा बत्ती आप हो जाए। घट दीवा घट मन्दिरा, हर घट होए प्रकाश। जोती नूर कराए अन्दरा, सच समग्री वेखे रास। मोह माया हउमे अन्दर कंधड़ा, ना कोई सके मात ढाहे। जगत विकारा तन मन बन्नूड़ा, बन्दी बन्द ना कोए कटाए। गीत सुहागी इक्क सुणंदड़ा, सोहँ साचा ढोला गाए। सरन सरनाई आप रखंदड़ा, चरन कँवल इक्क रघुराए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे नाम जगत वड्आए। हरि दर अपार सखी सुल्तान, सरवर रूप समाया। देवणहारा जिया दान, जीव जन्त रिहा तराया। आपे देवे पीण खाण, भगत भण्डारी आप

अख्वाया। तीर निराला मारे बाण, राम रामा धनुश उठाया। हरिजन साचे मिले मेल श्री भगवान, बीस बीसा रूप समाया। आप झुलाए धर्म निशान, सागर सहिंसा रोग मिटाया। दर द्वारे कर परवान, आप आपणे अंक समाया। गोबिन्द गोबिन्द घर घर गान, हरि गोबिन्द विरले गुरमुख पाया। काया मन्दिर सच मकान, सागर सिन्ध दया कमाया। जूठी झूठी जगत दुकान, चित वित ठगौरी पाया। ना कोई दीसे पवण मसाण, रुतड़ी रुत्त ना कोए सुहाया। जन भगतां देवे साचा माण, काया बुतड़ी दया कमाया। नाम खज़ाना साची खाण, ना कोई मेटे मेट मिटाया। जुग जुग आप वखाए आपणी आण, भेखाधारी भेख वटाया। बण बण आए गोपी काहन, रासां मण्डल रास रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका मार्ग रिहा वखाया। जोत जगत भगत कन्तूहल, हरि साचे आप जगाईआ। हरिजन चुकाए लहिणा देणा मूल, जुग जुग वड वड्डी वड्याईआ। नाम सिँघासण ना कोई पावा चूल, पलँघ रंगीला नाउँ रखाईआ। आत्म सेजा साचा फूल, बण मालण आप सुहाईआ। गुरमुख ना जाए मात भूल, भरम भुलेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मस्तक लाए मेखा, ना कोई सके मात उखड़ाईआ। हरिजन काया रंग बसन्ती, पुरख निरँजण आप चढ़ांयदा। भेव ना पायण जीव जन्ती, जीव जन्त ना कोई जणांयदा। हरिजन मेला साचे कन्ती, कन्त भतारा अंग लगांयदा। जुग जुग महिंमा अगणत अगणती, लेखा लेख ना कोई गिणांयदा। हरि हरि प्रभ बेअन्त बेअन्ती, बेअन्त रूप समांयदा। मेल मिलावा साधन सन्ती, सन्त सुहेला आप हो जांयदा। सुणे सुणाए सदा बेनन्ती, सुणनेहार आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका अक्खर नाम वक्खर हरिजन साचे आप पढ़ांयदा। नाम वक्खर शब्द भण्डारा, अतोट अतुल रखाया। आपे बणया हरि वरतारा, अकल कल कोए ना लाया। चारों कुन्ट जै जै जैकारा, भुल्ल रहे ना राया। प्रगट होए हरि निरँकारा, नाम भण्डारा गया खुल्ल्ह, पुरख अबिनाशी आप खुल्ह्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सेवक सेवा साची लाया। सेवक सेवा चाकरी, चरन कँवल प्रभ ध्यान। धन्न धन्न जणेंदी मातरी, देवे ब्रह्म ज्ञान। हथ्थ ना आए वेद पुराण शास्त्री, पढ़ पढ़ थक्के जीव नादान। कलिजुग रैण अन्धेरी रातरी, रवि ससि होए हैरान। तट्ट किनारा इक्क वखाए साचा पात्री, चरन धूढ़ इशनान। देवे दरस बहु बहु भातरी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। भगत भगवाना एका धाम सुहञ्जणा। शब्द तराना अनहद गाणा, जोत जगाए हरि निरँजणा। पंचम मेला इक्क टिकाणा, पवण पवणी शब्द बिबाणा, चरन धूढ़ कराए मजना। ना कोई जाणे राजा राणा, चतुर सुघड़ स्याणा गुरमुख विरला पाए शब्द नाम अंजना। जुग जुग वरते आपणा भाणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

२३१
०६

जोत धर, जन भगतां होए सहाई दए वड्याई आप रघुराई, मीत मुरारा साचा सज्जणा। मीत मुरारा साजण मीता, नर हरि निरंकारया। सृष्ट सबाई आपे जीता, आप कराए पासा हारया। आपे होए पतित पुनीता, दीवा बत्ती आप जगा रिहा। आपे वेखे देहुरा मन्दिर गुरुद्वार मसीता, अन्दर मन्दिर कुण्डा ला रिहा। आपे वेखे खाणी बाणी राग छतीसा, अठारां ध्याए गीता खेले खेल भगवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए वर, राग सुणाए अनहद साची बाणीआ। अनहद बाणी साची तूरा, आत्म घर उपजांयदा। निर्मल जोती करे नूरा, पुरख अबिनाशी हाज़र हज़ूरा, मनमुखां दिसे दूरन दूरा, गुरमुखां एका घर वखांयदा। माया ममता झूठा कूड़ा, गुरमुख विरला सन्त सुहेला काया रंगण रंग चाढ़े गूढ़ा, जगत ललारी आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटांयदा।

करता पुरख अगम्म है, अगम्मड़ा थान सुहाया। सतिगुर पूरा लोकमाती देवे थम्म है, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। जीव जन्त रसना जिह्वा गाए दम है, साढे तिन्न हथ्थ लेख चुकाया। वेले अन्तिम आए कम्म है, दूसर कोए ना संग रखाया। आप आपणा जाणे मन है, मन गुर चरन भेंट चढ़ाया। तत्ती वा ना लग्गे तन है, खेवट खेट मेल मिलाया। आपे बेड़ा रिहा बन्नृ है, मात पित बेटी बेट आप हो आया। एका राग सुणाए कन्न है, लिखण पढ़न विच ना आया। नाम चढ़ाए साचा चन्न है, सूरज चन्न रहे शरमाया। इक्क वसेरा इक्क घर है, छपर छन्न ना कोए रखाया। आपे देवणहारा डन्न है, आपे लए तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर साचा साचा शब्द सुणाया। शब्द गुर एक है, जगत जुग प्रधान। आपे होए बिबेक है, आपे दाता दानी दान। लक्ख चुरासी आपे वेख है, आपे भेख वटान। आपे लिखणहारा लेख है, आपे वेख पंज शैतान। आपे लावणहारा मेख है, आपे देवे ब्रह्म ज्ञान। हरिजन साचा रिहा वेख है, जिस जन बख्शे चरन धूढ़ इशनान। चरन कँवल चवर साचे केस है, तन सुरती सेव कमान। मेला मेल इक्क दस्मेश है, दस्म द्वारी वेख वखान। आपे दाता नर नरेश है, राज जोग जगत सुरत सुल्तान। सेवक सेवा ब्रह्मा विष्न महेष है, देवे धुरदरगाही इक्क फ़रमाण। शिव शंकर करे आदेस है, करोड़ तेतीसा निउँ निउँ गान। आपे बिरध जवान बाल अलृड़ वरेस है, गुणवन्ता गुण निधान। जोती जामा धर धर भेस है, गुरमुख साचे करे पछाण। आदि अन्त जुगा जुगन्त सदा हमेश है, निशअक्खर वक्खर रूप भगवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल करता पुरख सुजान। करता पुरख करनहार, करे कराए खेल। गुरमुख साचा सेवणहार, सेवक सेवा मेले मेल। हरिजन साचा देवणहार, लहिणा

देणा देवे नवेल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख वसया काया घर, काया माटी चार दिवारी, अन्दर वसया नर निरँकारी, गुरमुखां दिसे झूठी जेल्ह। मनमुख काया झूठी जेल्ह, हरि साचा बन्द कराया। मिल्या मेल ना सज्जण सुहेल, बत्ती दन्द ना रसना गाया। जोत निरँजण ना चढ़या तेल, गीत सुहागी पंचम सखी ना मिल मिल गाया। आपे खेलणहारा खेल, दीवा बाती ना कोई जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख काया बन्द दर, जूठा झूठा कुफल लगाया।

✻ २५ पोह २०१३ बिक्रमी पिण्ड जेठूवाल हरिभगत द्वार जिला अमृतसर ✻

वड संसारी आप, प्रभ जुग जुग अख्वाया। भगत भण्डारी आप, एका नाउँ रिहा वरताया। जोत निरँकारी आप, निरगुण रूप समाया। शब्द अधारी आप, हर घट में रिहा समाया। कर्म विचारी आप, लेखा आपणे हथ्थ रखाया। वणज वपारी आप, गुरमुख साचे वणज कराया। नाम कटारी आप, आप आपणी रिहा चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटाया। दर दरबारी आप प्रभ, आपे राज दरबारया। खेल खिलारी आप हरि, खेले खेल विच संसारया। मेलण मेली आप हरि, हरिजन साचे मेल मिला रिहा। जोत अकेली आप हरि, एका धाम सुहा रिहा। रंग नवेली आप दर, दर दुआरा इक्क रखा ल्या। जीव जन्त अधारी आप हरि, आप आपणी ओट रखा ल्या। लक्ख चुरासी पावे सारी आप हरि, आपे आप उपा ल्या। गुरमुख चरन उधारी आप हरि, आप आपणा दरस दिखा ल्या। नानक भिखारी आप हरि, दर भिखारी इक्क बुला ल्या। सतिनाम भण्डारी आप हरि, एका वस्तू झोली पा ल्या। जोत अकारी आप हरि, अकल कला वरता रिहा। गोबिन्द तन श्रृंगारी आप हरि, तन बस्त्र शब्द सजा ल्या। तेज कटारी आप हरि, एका खण्डा नाउँ लगा ल्या। किले कोट काया गढ़ उसारी आप हरि, अन्तिम आपे आप ढाह ल्या। पंचम तत्त जीव जन्त साध सन्त गुर पीर अवतार अधारी आप हरि, अन्तिम आपणे विच मिला ल्या। गोबिन्द नानक भिखारी आप हरि, हरि अर्जन सेवा ला ल्या। अर्जन विचारी इक्क दर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्ल्हा ल्या। नाम भण्डारी सच सर, सर सरोवर इक्क बणा ल्या। सुहाए बंक द्वारी किरपा कर, अभेद अभेदा भेव छुपा ल्या। चिट्टे अस्व शब्द घोड़े साचे चढ़, लोआं पुरीआं वेख वखा ल्या। दूर दुराडा ब्रह्मा वेखे खड़, प्रभ साचे भेव ना पा ल्या। शिव शंकर बाशक तशका लग्गे धड़, अंगीकार ना अंग लगा ल्या। करोड़ तेतीसा ना कोई सीस ना कोई धड़, सुरपति राजा इन्द आप रुला ल्या। लक्ख चुरासी रिहा फड़, नाम डोरी इक्क

उपा ल्या। गुरमुख साचे काया मन्दिर अन्दर वेखे चढ़, दस्म द्वारी डेरा ला ल्या। आप आपणा घाड़न घड़, सच सिँघासण इक्क विछा ल्या। ना कोई चोटी ना कोई जड़, भेव किसे ना पा ल्या। मढ़ी गोर ना जाए सड़, ख़ाकी ख़ाक ना किसे मिला ल्या। जगत वहिण ना जाणा सड़, डूँघे सागर ना डुबा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुर गोबिन्दा इक्क मन्ना ल्या। नानक तेरा निज घर रूप, हरि नेत्र नैण विचारया। जोती जामा सति सरूप, सति पुरखां विच समा रिहा। कलिजुग रैण अन्धेरी चारे कूट, दहि दिशा वेख वखा रिहा। तीर निराला रिहा छूट, एका चिल्ला नाम चढ़ा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत तेरां तेरी कर विचार, नानक गोबिन्द पावे सार, शब्द सरूपी एका कार, एका आपणा अंक रखा ल्या। जोत जुगन्ता आप प्रभ, आपणा आप उपाए। भोग भुगंता आप प्रभ, आपणी बणत बणाए। शब्द रचंता आप प्रभ, आपणी धुन उपजाए। नारी कन्ता आप प्रभ, आपणी सेज हंढाए। रुत्त बसन्ता आप प्रभ, फल फुलवाड़ी आप लगाए। धन्न धन्नवन्ता आप प्रभ, हरि नामा धुन रखाए। पति पतिवन्ता आप प्रभ, पतित उधारन हो जाए। जीव जन्ता आप प्रभ, लक्ख चुरासी रिहा उपाए। साधन सन्ता आप प्रभ, सति सन्तोखी धर्म रखाए। आदिन अन्ता आप प्रभ, एका एक अख्वाए। जुगा जुगन्ता आप प्रभ, जुग जुग भेख वटाए। सतिजुग त्रेता द्वापर वेख झब्ब, कलिजुग वेला वेला आए। ब्रह्मा भेव ना जाणे कँवल नभ, कँवल कँवला रिहा उपाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाए। आपे भूपा सति सरूप, आपे होए सिक्दारया। आपे होए अन्ध कूप, चार कुन्ट अन्ध अंध्यारया। आपे होए तृष्ना भूख, आपे तृप्त अधारया। आपे होए दूख सूख, आपे तन पसारया। आपे उलटा बिरख रूप, जड़ चोटी ना कोए वखा रिहा। आपे होए मात कुक्ख, आपे बाहर सुहा रिहा। आपे होए उज्जल मुख, आपे मस्तक टिक्का काला लाह रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निक्का बाला मीत बणा रिहा। निक्का बाला हरि अंञाना, दिस किसे ना आंयदा। ना कोई जाणे सुघड़ स्याणा, भेद अभेदा भेव छुपांयदा। माया भरमे भुल्ला राजा राणा, वेद कतेबा नज़र ना आंयदा। जोत सरूपी पहरया बाणा, रसना जिह्वा मुख छुपांयदा। सोहँ गाए एका गाणा, नाद आपणे हथ्थ रखांयदा। आपे होया जाणी जाणा, जानणहार आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप वटांयदा। रूप वटाया हरि निरँकार, रेख रंग ना कोए। प्रगट होया विच संसार, आप आपणी जोत बलोए। गुर गोबिन्दा संग प्यार, अंगीकार खलोए। शब्द कटारी तिक्खी धार, तन गात्रे ब्रह्मा परोए। दिस ना आए विच संसार, साध सन्त रहे सोए। आप आपणा कर आकार, धन्न दिहाड़ा पोह छब्बी मात होए। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल वेख वखाणे जहानां दोए। धन्न सुभागी दिवस रैण, करे कराए आप। रसना किसे ना सके कहिण, पुरख अबिनाशी वड प्रताप। दरस दिखाए नेत्र नैण, इक्क जपाए साचा जाप। कलिजुग माया झूठे वहिण, ना कोई जाणे पुन्न पाप। माया नागणी डस्से डैण, कलिजुग अन्तिम रिहा कांप। राए धर्म मंगे लहिणा देण, लेखा चुक्के तीनों ताप। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दा वेख दर, आपे बणया साक सज्जण सैण। सतिजुग तेरी साची रीत, गुर गोबिन्द चलांयदा। गोबिन्द गुर पतित पुनीत, हरि हरि विच समांयदा। हरि हरि साचा इक्क अतीत, सदा सुरजीत अख्वांयदा। इक्क सुणाए सुहागी गीत, सोहँ नाउँ रखांयदा। सम्मत तेरां रिहा बीत, नानक नाउँ वडिआंयदा। वेखे परखे हस्त कीट, थाउँ थाँईं फोल फुलांयदा। शब्द चलाए इक्क अनडीठ, दिस किसे ना आंयदा। प्रगट होया बीठला बीठ, माया भरम चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची रीती मात चलांयदा। साची रीती सति पुरख, आपणी मात चलाईआ। जोत निरँजण रिहा परख, अलखणा अलख ना लखया जाईआ। अमृत मेघ रिहा बरस, प्रतक्खणा प्रतक्ख रूप वटाईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, लक्ख चुरासी उपाए दए मिटाईआ। कलिजुग काया पाए निरख, सोहँ कंडा तोल तुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मण्डां खोज खुजांयदा। सतिजुग तेरी सच सलाह, हरिसंगत आप जणांयदा। शब्द सरूपी बण मलाह, लेखा लेख लिखांयदा। नौ दरवाज़े जगत राह, एका एक वखांयदा। गुरमुखां आपे पकड़े बांह, घर दसवें रूप वटांयदा। आपे होए पिता माँ, पिता पूत आप अख्वांयदा। इक्क जपाए साचा नाँ, वणज वणजारा आप करांयदा। काया वसाए नगर ग्राँ, जोती दीपक इक्क जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप सुहाए साचा थाँ, सुहावा थान आप सुहांयदा। हरिसंगत हरि साचा रंग, आपणा आप चढ़ांयदा। अमृत आत्म धारा देवे गंग, सर सरोवर इक्क वखांयदा। ताल तलवाड़ा वज्जे नाम मृदंग, पुरख अबिनाशी आप वजांयदा। मिले मेल हरि सूरे सरबन्ग, दाता योधा सूर मेल मिलांयदा। आपे होए अंग संग, आशा मनसा पूर आप अख्वांयदा। आपे कसणहारा तंग, आपे आसण लांयदा। लोआं पुरीआं पार लँघ, लोकमाती फेरा पांयदा। शब्द रंगीला इक्क पलँघ, जोती जामा भेख वटांयदा। लक्ख चुरासी करनी भंग, ब्रह्मा विष्न शिव दर बहांयदा। त्रैगुण माया मारे डंग, ना कोई किसे छुडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे साचा संग आपणा आप निभांयदा। आपणा संग निभावण आया, बेपरवाह अल्ला। संग मुहम्मद मेल मिलावण आया, नूर अलाही इक्क इकल्ला। अहिमद अहिमदी रूप वटावण आया, वेख वखाणे उच्चे टिल्ले जंगल जूह डला। शाह सुल्तानां आप हिलावण आया, हथ्थ फड़या सोहँ भल्ला।

मनमुखां जीवां आप मुकावण आया, खेले खेल जला थला। गुर गोबिन्दा जोत प्रगटावण आया, मेल मिलाए गोबिन्द डल्ला। नर निरँकार आप अख्खावण आया, हरि होए अछल अछल्ला। गोबिन्द काया विच समावण आया, दीपक जोती एका बला। शब्दी धार चलावण आया, दर दुआरा एका मल्ला। सृष्ट सबाई एका वणज करावण आया, चार वरन दर द्वारे खला। सम्मत तेरां तेरी धार बंन्हावण आया, नानक हरि हरि गाया पाया गल विच पल्ला। गुर गोबिन्दा तेज वखावण आया, रसना इक्क चढ़ाया चिल्ला। चारों कुन्ट मेट मिटावण आया, कलिजुग तेरा पूर कराया शिला। गुरमुख साचे मेल मिलावण आया, पुरख अबिनाशी अग्गे हो हो मिला। साची सिख्या दे मति समझावण आया। नाल रखाया शब्द घोड़ा नीला। जोती जोड़े जोड़ जुड़ावण आया, तन छुहाया बस्त्र पीला। हथ्थीं मैहन्दी रंग रंगावण आया, अंग लाए बस्त्र नीला। चौदां तबकां आप हिलावण आया, जोत सरूपी छैल छबीला। छब्बी पोह जोत जगावण आया, गुर संगत बणाए इक्क कबीला। सम्मत चौदां राह वखावण आया, पार कराए सागर झीलां। काया गागर जोत जगावण आया, प्रेम लाए चुआती तीला। दर द्वारे मंगी एका मंग मंगण आया, प्रभ दर्शन नेत्र नैणा। काया चोली रंग चढ़ावण आया, पंचम तत्त वेखे काया खेता। शब्द घोड़ी गुरमुख सच दुलार चढ़ावण आया, पहली चेत्र रक्खणा चेता। मनमुख वहिंदी धार रुढ़ावण आया, आपे बणया साचा वहिता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, पंचम मीता। पंचम जेठ हरिसंगत उपदेश, निरगुण रिहा जणाईआ। सरगुण विच प्रवेश, सरगुण रूप रिहा बणाईआ। निरगुण सद आदेस, सरगुण रिहा कराईआ। सरगुण धारी केस, गोबिन्द रूप वटाईआ। गोबिन्द नर नरेश, निरगुण नेंह लगाईआ। निरगुण रिखी केश, गोबिन्द गवर्धन रिहा उठाईआ। सरगुण दस दस्मेश, दस धारा रिहा वहाईआ। निरगुण सेजा बाशक शेश, सांगो पांग हंढाईआ। सरगुण दर दरवेस, निरगुण आप हो आईआ। निरगुण निर्धन वेस, सरगुण सहिज मिलाईआ। सरगुण साचे देस, निरगुण डंक वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण दोए खेल खिलाईआ। निरगुण निरवैर सरगुण समाया। सरगुण एका लहर, निरगुण शब्द चलाया। निरगुण निज घर सैर, सरगुण रिहा कराया। सरगुण तारे कर कर मेहर, निरगुण आपणी दया कमाया। निरगुण वसे काया शहर, सरगुण दस्म द्वारी घर वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण रूप वटाया। निरगुण निर्लज है, सरगुण लाजावन्त। सरगुण अन्दर रिहा सज है, बन्द कराए नौ द्वार, पुरख अबिनाशी बन्न्हे धार, कलिजुग सतिजुग मेला। गुरमुखां गुर आप विचार, गुर गोबिन्द गुर चेला। इक्क कराए जै जै जैकार, हरि साचा सज्जण सुहेला। जन भगतां करे ख़बरदार, कलिजुग

२३६ ०६

अन्तिम वेला। नानक मिल्या नर निरँकार, जोत निरँजण चढ़या तेला। आया गया विच संसार, अचरज खेल खेला। गोबिन्द रूप अपर अपार, गोबिन्द काया सच अधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्तिम मेला गुर गुर चेला। गुर चेला सोहे इक्क द्वार, गुर चेला इक्क द्वारया, एका रंग समाए। पुरख अबिनाशी इक्क भतारया, साची सेजा रिहा हंढाए। गोबिन्द काया वणज वपारया, नाम नामा रिहा कराए। जोत निरँजण भरे भण्डारया, हरि शब्दी रूप वटाए। खेले खेल विच संसारया, खेलणहार दिस ना आए। गुर चेला आप उपारया, चेला गुर आप हो जाए। सज्जण सुहेला आप निरंकारया, दर दुआरा इक्क वखाए। नाम कटारा तन श्रृंगारया, बस्त्र सशतर रिहा पहनाए। खण्डा खड़के विच ब्रह्मण्ड अपारया, हरि साचा रिहा खड़काए। पंच उठाए पंच प्यारया, चार वरनां माण दवाए। एका इक्की एका धारया, कलिजुग तेरी अन्तिम पाए। साची सिक्खी विच संसारया, खंडिउँ तिक्खी मात रहि जाए। ना कोई मुनी रिखी पावे सारया, साध सन्त भेव ना पाए। आपे लेखा लिखे विच संसारया, औलीआ पीर शेख़ सर्ब मिट जाए। गुर गोबिन्दे मंगी भिक्खी, प्रभ चरन सरन दर द्वारया, सच वस्त हरि झोली पाए। अन्तिम कलिजुग तेरा काज संवारया, गुर गोबिन्दा संग रलाए। हथ्थ फड़या तेज कटारया, जग चिन्दा सर्ब मिटाए। गुणी गहिंदा नर निरंकारया, साची बिन्दा सुत उपजाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे रिहा जगाए। एका इक्की इक्क इकल्ला, कलिजुग पावण आया। गुरसिक्खी वसे सच महल्ला, प्रभ साचा आप वसावण आया। आपे वेखे जल थला, थल जला हरि वेख वखाया। गोबिन्द काया आपे रला, आप आपणा संग निभाया। आपे फलया आपे फुल्ला, फल अमृत गुरमुखां रिहा वखाया। आपे दीपक जोती प्रकाश आकाशा आपे बला, हरिजन साचे रिहा जगाया। आपे वरन आपे गोती, इक्क इकल्ला लक्ख चुरासी आप समाया। आपे जड़ आपे चोटी, आपे पंज तन ख़ाक रुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां साचा मार्ग रिहा लगाया। गुरमुख साचे सन्त दुलार, हरि साचा आप उठांयदा। एका इक्की वार, जुग छत्ती आपे पांयदा। जुग जुग लए आप अवतार, सरगुण खेल खिलांयदा। जुग छत्ती प्रभ पार उतार, जोती जामा भेख वटांयदा। वाहिगुरू अक्खर वेख वखार, वाह वाह सारे गांयदा। नौ नौ जुग सेवादार, चारे दर द्वार रखांयदा। प्रगट हो निहकलंक नरायण नर अवतार, आप आपणे विच मिलांयदा। राम राम उतरे पार, दो अक्खर मेट मिटांयदा। शब्द रक्खे तिक्खी धार, सो पुरख निरँजण आप चलांयदा। हँ हँगता देवे मार, आप आपणे विच रलांयदा। साची संगता कर त्यार, छब्बी पोह हुक्म सुणांयदा। गुर नानक गाई तेरां धार, नर निरँकारा जोत प्रगटांयदा। सृष्ट सबाई दए इक्क हुलार, एका कुण्डा

लांहयदा। सोहँ डण्डा पूरन काया चार दिवार, ब्रह्मण्डां तोल तुलांयदा। जेरज अंडां पावे सार, उत्भज सेत्ज वेख वखांयदा। मोदीखाना इक्क विचार, प्रभ पूरा तोल करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दे दित्ता वर, वर वरयाम आप हो आंयदा। पंज सिख पंज दुलार, गोबिन्द रूप समाया। आप आपणे कर त्यार, आप आपणे रंग रंगाया। आपे मीता सेवादार, साची सेवा रिहा कमाया। शब्द सरूपी पहरेदार, दर घर साचे आप अख्वाया। पंचम मीता हरि निरँकार, पंचम डोली रिहा उठाया। सोहणा कर तन श्रृंगार, शस्त्र बस्त्र तन सजाया। हौली हौली खिच्ची जाए बाहर, सम्मत तेरां तेरी धार वखाया। ना कोई जाणे नर नार, साध सन्त भेव ना पाया। पुरख अबिनाशी करन आया ख़बरदार, लिख लिख लेखा रिहा पुचाया। जन भगतां मेला सच द्वार, आप आपणा रिहा कराया। कलिजुग रहिणा ख़बरदार, आलस निन्दरा रिहा मिटाया। पंचम मीता मीत मुरार, सुहागी गीता रिहा सुणाया। साची रीता चलाए विच संसार, सतिजुग मार्ग रिहा लगाया। वेद पुराण रहे ना गीता, अंज़ील कुरानां रिहा मिटाया। गुरमुख तेरी काया सीतल सीता, प्रभ दर्शन नेत्र पाया। तन पाटा आपणा सीता, सोहँ धागा इक्क चलाया। गुर शब्द डिट्ठा अनडीठा, ना कोई वेखे वेख वखाया। गुर संगत दर दुआरा प्रभ लागा मीठा, धुर दरगाही चल के आया। लक्ख चुरासी सुत्ता दे कर पीठा, नूरी मुख ना किसे वखाया। अन्तिम भन्ने कौड़ा रीठा, शब्द हथौड़ा हथ्थ उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आप हो आया। हरिसंगत तेरी धूढ़, हरि साचे मस्तक लाईआ। जगत द्वारे मूर्ख मूढ़, प्रभ विद्या इक्क पढ़ाईआ। रंग चाढ़े काया गूढ़, नौ निध फिरे दर हलकाईआ। जगत नाता कूड़ो कूड़, जुग जुग देंदे रहे दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां साची सेवा रिहा लगाईआ। साची सेवा सच द्वार, हरि साचा आप लगांयदा। एका इक्की इक्क अकार, एका रूप समांयदा। दस नारी ते दस नर, नर नारी आप उठांयदा। बीस बीसा कर त्यार, दर द्वारे बंक सुहांयदा। इक्क इकीसा कर विचार, लेख लिखारी इक्क रलांयदा। आपे बन्न्हे आपणी धार, जगत धारा आप जणांयदा। छब्बी पोह दिवस विचार, सम्मत तेरां तेरी धार चलांयदा। सतिजुग साचे विच संसार, साचा राह वखांयदा। लेखा लिखणहार निरँकार, जुग जुग लेख लिखांयदा। शाम रिग युजर अथर्बण गए हार, जुग चौथे मेट मिटांयदा। हरिसंगत साची कर त्यार, जुग साचा मार्ग लांयदा। बरन अठारां सोहण इक्क द्वार, चार वरनां चरन टिकांयदा। पंचम पंचां मेल दर दरबार, पंचम पंचां संग निभांयदा। लेख लिखारा मीत मुरार, आप आपणे अंक लगांयदा। शब्द सिँघासण हरि निरँकार, सच सिँघासण डेरा लांयदा। पंचम पंचम सेवादार, सतिगुर साचा आप जणांयदा। सतिजुग लहिणा दर द्वार,

देवणहार आप अख्वांयदा। गुरमुखां गहणा तन श्रृंगार, हरि सोहँ आप करांयदा। चरन कँवल धरनी धर प्यार, सच सरनी इक्क जणांयदा। मरनी मरे सर्ब संसार, गुरमुख आपणी गोद उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणे अंग समांयदा।

✻ २६ पोह २०१३ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✻

सुख भाग दिहाड़ा छब्बी पोह, प्रभ साचे जोत जगाईआ। सृष्ट सबाई रही रो, गुरमुखां मन वधाईआ। दुरमति मैल रिहा धो, एका रंगण नाम चढ़ाईआ। अमृत आत्म साचा चोअ, कलिजुग तृष्ना रिहा मिटाईआ। करे कराए सोई जग हो, करन करावण आप अख्वाईआ। लक्ख चुरासी पंचां मोह, प्रभ पंचम रिहा मिटाईआ। गुरमुखां बीज आत्म बोअ, फल फुलवाड़ी रिहा लगाईआ। मनमति जीव रहे सोअ, सुत्तयां रैण विहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेल आपणी आप कराईआ। छब्बी पोह मात निशानी, कलिजुग अन्त रखाईआ। ना कोई जाणे गुण निधानी, ज्ञानी ध्यानी सार ना पाईआ। ना कोई जाणे वेद विदंता वड विद्वानी, पुराण पुराणी सार ना पाईआ। पढ़ पढ़ थक्के अञ्जील कुरानी, खाणी बाणी दए दुहाईआ। नानक पाया पद निरबाणी, गोबिन्द गोद उठाईआ। प्रगट होया हरि भगवानी, भगत भगवन रूप वटाईआ। शब्द ल्याए इक्क निशानी, पुरीआं लोआं आप जणाईआ। लक्ख चुरासी मारे कानी, ब्रह्मा शिव रिहा हिलाईआ। भगत जनां हरि जाण जाणी, काया मन्दिर अन्दर बैठा आसण लाईआ। आप चुकाए जम की कानी, राए धर्म मुख छुपाईआ। हत्थीं बन्ने साची गानी, सोहँ तागा संग रलाईआ। एका एक पढ़दा जाए बाणी, अक्खर वक्खर नाउँ रखाईआ। करे कराए आप पछाणी, आदिन अन्ता भेस वटाईआ। कलिजुग माया जूठा झूठा पड़दा बैठे ताणी, नौ खण्ड पृथ्वी हेठ छुपाईआ। सत्तां दीपां आई हानी, सति सन्तोख रही गंवाईआ। गुरमुखां मेला गुर शब्द साचे हाणी, विछड़ कदे ना जाईआ। अमृत आत्म देवे ठंडा पाणी, सारंग बूंद स्वांती मुख चुआईआ। अनहद राग अनादी बाणी, आत्मक धुन उपजाईआ। सुरत सवाणी साची राणी, सच महल्ले रिहा बिठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रचना आप रचाईआ। छब्बी पोह धन्न सुभागा, घर साचे वज्जे वधाईआ। हरि घर अबिनाश एका जागा, निर्मल जोत जगाईआ। गुरमुख हँस बणाए फड़ फड़ कागा, आप आपणी दया कमाईआ। काया कंचन नाम सुहागा, सोहँ उप्पर लाईआ। मानस मैल धोए दाग़ा, कलिजुग शाही मिटाईआ। हरिजन मेला कन्त सुहागा, नर नारी खुशी मनाईआ। दीपक जोती जगे चिरागा, प्रभ

आपे रिहा जगाईआ। इक्क सुणाए शब्द अनरागा, राग रागनी भेव ना पाईआ। माया डस्से ना डस्सणी नागा, तामस तृष्ना नेड़ ना आईआ। जगत बुझाए तृष्ना आगा, सति सरूप समाईआ। सरन सरनाई जो जन लागा, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पोह छब्बी बणत बणाईआ। बणत बणाई आप प्रभ, करनहार दातार। जोत जगाई आप प्रभ, प्रगट होए विच संसार। डंक वजाई आप प्रभ, राउ रंक करे ख़बरदार। गुरमुख साचे लए लभ्भ, दिवस रैण पहरेदार। अमृत आत्म देवे उलटी नभ, काया कँवल खिड़े गुलज़ार। दर द्वारे बहिणा फब, कलिजुग मेला अन्तिम वार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल खेलणहार। कलिजुग खेल खिलावण आया, दो जहानां वाली। गुरमुख सोए मात जगावण आया, धुरदरगाही साचा पाली। जुग जुग विछड़े मेल मिलावण आया, सोहँ देवे नाम दलाली। मोह ममता माया रुठड़े आप मनावण आया, जोत जगाए इक्क अकाली। एका मुठड़े आप बंन्ह्रावण आया, आपे जाणे पत्त पत्त डाली। काया दुखड़े आप मिटावण आया, दर दर वेखे जीव सवाली। उलटे रुखड़े फंद कटावण आया, चरन प्रीती इक्क वखाली। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, छब्बी पोह सति दिहाड़ा, सतिजुग तेरी चले साची चाली। सतिजुग तेरी चाल चलाउँणी। सम्मत सम्मती इक्क बणाउँणी। बीस बीसे हरि सुणाउँणी। जगत जगदीसे एह खेल रचाउँणी। जोती जोत सरूप हरि, कलिजुग तेरी इक्की, एका वार साची सिक्खी, साची सिख्या विच संसार, फड़ फड़ बाहों पार कराउँणी। वीह सद इक्की छब्बी पोह, लेखा लेख मुकावणा। वेद अथर्बण रिहा रो, ब्रह्मे हो ना अग्गे बचावणा। हरि हरि खेल ना जाणे को, शिव शंकर मुख छुपावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा आपे आप लिखावणा। साल अट्ठ अट्ठ तत्त, तत्त रत समाया। जगत महल्ल जाणा ढठ्ठ, ना कोई सके बणाया। आपे अग्न लाए मट्ठ, आपे दए बुझाया। आपे गेड़े उलटी लट्ठ, आपे मार्ग लाया। आप उपाए तीर्थ अट्ठ सट्ठ, अन्तिम आपे आप मिटाया। सतिजुग तेरी साची चट्ठ, पोह छब्बी रिहा कराया। नौ द्वारे इक्क इक्ट्ठ, दसवें आसण लाया। सृष्ट सबाई होए भट्ठ, गुरमुख साचे जै जै जैकार कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दुआरा इक्क सुहाया। नौ द्वार दर दरवाज़ा, लोकमात वखाया। कलिजुग तेरा साजन साजा, हरि आपणा रंग रंगाया। देस माझ रच्चया काजा, गोबिन्द संग रलाया। पुर अनन्द प्रभ मारे आवाजा, कीर्तन कीरतपुर नाम सुहाया। तेग बहादर देवे दाजा, सोहँ चादर चिट्टी पाया। आपे रक्खणहारा लाजा, नानक नाम समाया। गुर मन्दिर अन्दर मारे आवाजा, अर्जन अर्ज़ सुणाया। हरिगोबिन्द हरि साजन साजा, दोए धारा धार चलाया। शब्द चलाया इक्क जहाज़ा, आपे लए चढ़ाया। लक्ख चुरासी खोल्ह्रे पाजा, लहिणा देणा

रिहा चुकाया। चिट्टा अस्व एका ताजा, प्रभ साचे तंग कसाया। खेले खेल मक्का काअबा हाज़ा, हाज़ी हाज़न आप अख्वाया। आपे जाणे पुन्न सवाबा, हरि पुष्कर डेरा लाया। साचा मेला दो दो आबा, विछड़ कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, पोह छब्बी माण दवाया। एकँकार नर निरँकार, एका घर वसंदड़ा। शब्द महल्ला कर त्यार, दर द्वार ना कोई वखंदड़ा। तीजा हल्ला अपर अपार, एका मेल मिलंदड़ा। चौथे घर खोल्ह किवाड़, सन्त सुहेले आप वसंदड़ा। पंचम वेखे पंच प्यार, पंचम हरि बख्शंदड़ा। छेवें छप्पर छत्त अपार, ना कोई बाडी हथ्थ बनंदड़ा। सति पुरख प्रभ साची कार, जुग जुग भेख वटंदड़ा। अट्ठां तत्तां वसे बाहर, आप आपणा भेव छुपंदड़ा। नावें नौ दर कर त्यार, कलिजुग काया राह वखंदड़ा। दसवें बैठ सच्ची सरकार, हरिजन साचे मेल मिलंदड़ा। नाम सिंघासण अपर अपार, दीपक जोती इक्क जगन्दड़ा। पवण उनन्जा छत्र झुलार, अमृत धारा मेघ बरसंदड़ा। आपे खोल्ह बन्द किवाड़, आपे लाए जिंदड़ा। भगत जनां हरि मीत मुरार, जुग जुग आप बख्शंदड़ा। कलिजुग तेरी काली धार, वेले अन्त ना कोई रखंदड़ा। संग मुहम्मद रुले चार यार, अल्ला राणी मुख छुपाए पल्लड़ा। गुर गोबिन्दा कर त्यार, प्रभ सोहँ फड़ाए एका भल्लड़ा। पंच कराए जै जै जैकार, एका ताज सीस रखंदड़ा। आपे गुप्त आपे ज़ाहिर, आप आपणे विच वसंदड़ा। करे कराए घड़नहार, जुग जुग काज रचन्दड़ा। सतिजुग त्रेता उतरे पार, द्वापर सीस झुकंदड़ा। कलिजुग तेरी आई वार, चारे कूटां राह वखंदड़ा। माया ममता लोभ मोह हँकार, जगत माया फाही फसंदड़ा। ना कोई दीसे मीत मुरार, गुणवन्ता होया अन्धड़ा। चारों कुन्ट हाहाकार, शाह सुल्तानां आप भुलंदड़ा। गुरमुखां करे ख़बरदार, आप फड़ाए आपणा पलड़ा। लिख लिख भेजे लेख द्वार, अन्तिम वारी आप जगन्दड़ा। वाली हिन्द रहिणा ख़बरदार, हरि साचा मोह चुकंदड़ा। नौ खण्ड पृथ्वी मारे मार, तीर तलवार ना कोई रखंदड़ा। शस्त्र तीर ना कोए कटार, खाली हथ्थ आप रखदंड़ा। ब्रह्मे देवे शब्द हुलार, पुरी ब्रह्म भाह वहंदड़ा। आदि पुरख प्रभ एकँकार, एका राह वखंदड़ा। इक्क कराए जै जैकार, एका धर्म चलंदड़ा। वरन बरन ना कोई विचार, ऊँचां नीचां हरि वसंदड़ा। भरमे भुल्ला भरम संसार, प्रभ भरम गढ़ तुड़ंदड़ा। हरिजन मेला चरन द्वार, हरि साचा लेख लिखंदड़ा। फड़ फड़ बाहों लाए पार, साची नईआ इक्क वखंदड़ा। आपे आर आपे पार, वंञ मुहाणा आप चलंदड़ा। आपे डोबे देवे तार, जुग जुग खेल खिलंदड़ा। मनमुखां अन्तिम आई हार, जोती जोत सरूप हरि, जगत आपणा भेख वटंदड़ा। आदि शक्त प्रभ आदि भवानी, आदि अन्त अवतारया। पारब्रह्म हरि जोत नुरानी, नूरो नूर समा रिहा। आपे जाणे धुर दी बाणी, आपे आप अला रिहा। आप जणाए वेद पुराणी, ब्रह्मा व्यासा सेवा ला रिहा। अंजील कुरानां दे निशानी, आप आपणा

हुक्म जणा रिहा। नानक मिल्या हरि भगवानी, हरि आपणा रूप वटा रिहा। धुर दरगाही इक्क निशानी, नाम सति वरता रिहा। आपे होया जाण जाणी, जानणहार बणत बणा रिहा। शब्द मारे तीर कानी, तिक्खी धारा आप वखा रिहा। नानक गाए गोबिन्द बाणी, हरि गोबिन्द रंग रंगा रिहा। कोई ना दिसे हरि प्रभ सानी, दूर नेड़े वेख वखा रिहा। तीर्थ वेखे अठ्ठ सठ्ठ पाणी, साचे तीर्थ ना कोए नहा रिहा। पंडत पांधे वेद पुराण पुराणी, गीता ज्ञान ना कोए जणा रिहा। भरमे भुल्ले भरम नादानी, पारब्रह्म ना कोई मिला रिहा। कलिजुग वेखे कहर निशानी, प्रभ साचा राह तका रिहा। लिख्या लेख इक्क महानी, निहकलंक डंक वजा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पोह छब्बी जोत प्रगटा रिहा। पोह छब्बी मात वधाईआ, मति बुध भेव ना राया। गुरमुख विरले मात जणाईआ, जिस जन आपणी दया कमाया। हरि शब्द करे कुड़माईआ, साचा मंगल एका गाया। नौ दर जगत वज्जे वधाईआ, घर दसवें साजण पाया। हरि साजण सहिज सुखदाईआ, हउमे रोग मिटाया। मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ, कलिजुग अन्तिम दए दुहाया। सज्जण सुहेल आप अख्वाईआ, जुग जुग भगतन सेव कमाया। अचरज खेल आप रचाईआ, गुर गोबिन्दे रूप समाया। किसे चले ना मात चतुराईआ, साध सन्त सार ना राया। आपे जाणे आपणी वड्याईआ, आप आपणे विच समाया। गुर पीरां देवे शब्द जणाईआ, आप आपणे धन्दे लाया। छत्ती जुग ना दए वखाईआ, आप आपणा मुख छुपाया। आपे जोत करे रुशनाईआ, आपणी कल रिहा वरताया। अकल कल हरि रघुराईआ, सोलां कल सृष्ट सबाया। लोआं पुरीआं वेख वखाईआ, बेपरवाह भेव ना राया। नानक निरगुण गया गाईआ, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द राया। सरगुण मेला सहिज सुभाईआ, कलिजुग वेला दए सुहाया। साचे मन्दिर आसण लाईआ, आत्म सेजा इक्क विछाया। गोबिन्द काया गढ़ बणाईआ, शब्द खण्डा तन पहनाया। उप्पर चढ़ वेख वखाईआ, महल्ल अटल इक्क रखाया। जोती नूर कर रुशनाईआ, लक्ख चुरासी फोल फुलाया। राए धर्म दए दुहाईआ, प्रभ दर अग्गे सीस झुकाया। धरत मात रही कुरलाईआ, कलिजुग काला रंग वटाया। लाड़ी मौत खुशी मनाईआ, प्रभ साचे दर्शन पाया। दर दुआरा वेखे चाँईं चाँईंआ, पोह छब्बी दिवस सुहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार विच संसार आप आपणी जोत जगाया। जोत जगाए आप प्रभ, अकल कला भरपूरया। अकल कला प्रभ आप हो, वेखे नेड़े दूरया। सो पुरख निरँजण आपे हो, सो साचा हाज़र हज़ूरया। हँ हँगता मिटे जगत मोह, देवे दात साची धूड़या। सोहँ शब्द सदा निर्मोह, आसा मनसा पूरया। काल महांकाल दर सके ना छोह, हरि साचा हाज़र हज़ूरया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन आसा मनसा पूरया।

आपे नर आपे नारी, नरायण आप अख्वांयदा। आपे दर आप द्वारी, दर दरबान आप हो जांयदा। आपे घर आपे घर बाहरी, पैज संवारी आप अख्वांयदा। आपे सर आपे सिक्दारी, सर सरोवर आप हो जांयदा। आपे हरि आपे निरँकारी, आपे निरगुण रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वक्त सुहांयदा। कलिजुग अन्तिम वक्त सुहञ्जणा, हरि साचा आप सुहांयदा। जोत जगाए इक्क निरँजणा, सति पुरख निरँजण आप हो जांयदा। चरन धूढ़ कराए साचा मजना, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। जो घड़या सो भज्जणा, भन्नृणहार आप अख्वांयदा। साक सज्जण सैण सभ तज्जणा, साचा संग ना कोई निभांयदा। वेले अन्त पड़दा किसे ना कज्जणा, दे मति आप समझांयदा। कलिजुग काल लाउण ना देवे अज पजना, होए सहाई ना कोए छुडांयदा। काल नगारा एका वज्जणा, धर्म राए डौरू वांयदा। शब्द ताल एका वज्जणा, प्रभ साचा आप वजांयदा। जन भगतां इक्क कराए साचा हज्जना, मक्का काअबा इक्क वखांयदा। पी अमृत आत्म रज्जणा, नाम भण्डारा आप वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे साजण साचे सन्त साची सेवा लांयदा। साजण साचे मीत, साची कारे लाया। आप चलाई आपणी रीत, दर द्वारे होए सहाया। काया होवे पतित पुनीत, पतित पावन आप अख्वाया। रसना गाए एका गीत, सोहँ साचा नाउँ जणाया। नेत्र परसे गुर चरन प्रीत, अट्ठे पहर वसे चीत, मात गर्भ फेर ना आया। काया होए सीतल सीत, सवा पहर जो सेव कमाया। अट्ठे पहर वसे चीत, हरि विसर कदे ना जाया। सतिजुग तेरी साची रीत, नौवां खण्डां आप चलाया। सत्तां दीपां करे पुनीत, साची सिख्या रिहा समझाया। गाउँदा जाए सुहागी गीत, गोबिन्द रसना सेवा लाया। लक्ख चुरासी परखे नीत, करोड़ तेतीसा एका पल्लू नाम फड़ाया। बैठा आप हरि अतीत, शिव शंकर गोद बिठाया। सृष्ट सबाई आपे जीत, साजन मीत आप हो आया। ब्रह्मा तेरी निभ जाए प्रीत, जो साची रिहा कमाया। अमृत बरखे ठण्ढा सीत, चरन चरनोदक प्रभ आप दवाया। सतिजुग तेरी साची रीत, छब्बी पोह दए लिखाया। सम्मत तेरां रिहा बीत, नानक नामा सेवा लाया। गाउँदा रहे गोबिन्द दे गीत, निरँकार निरँकार रंग रंगाया। आपे वसया हस्त कीट, ऊँचां नीचां विच समाया। साचा पीसण रिहा पीठ, सतिजुग चाकर आप अख्वाया। कलिजुग भन्ने कौड़े रीठ, भन्नृणहार आप अख्वाया। पुरख अबिनाशी बीठला बीठ, जन भगतां दर द्वारे आया। सोहँ देवे नाम बीठला मीठ, घर चौथे आप रखाया। चरन कँवल रखाए इक्क प्रीत, पूजा पाठ ना कोए रखाया। अन्दर मन्दिर बैठा परखे नीत, दस्म द्वारी डेरा लाया। हरिजन गाओ सुहागी गीत, हरि घर साचे जन पाया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सेवक सेवक

बण के आया। सेवक सो प्रधान है, दिवस रैण जगाए। सेवक सो दरबान है, पंज तत्त रिहा दुरकाए। सेवक सो जवान है, चारों कुन्ट खण्डा चमकाए। सेवक सो सुजान है, सच सिख्या दे समझाए। सेवक सच ज्ञान है, सच सुरती संग रलाए। हरि सेवक आप मेहरवान है, जन भगतां दया कमाए। हथ्थ उठाए धर्म निशान है, लोआं पुरीआं रिहा झुलाए। सत्तां दीपां एका आण है, नौवां खण्डां रिहा जणाए। ब्रह्मण्डां पवण मसाण है, वरभण्डी डगमगाए। राज राजाना शाह सुल्तान है, बंक द्वारी आप हो जाए। गुणवन्ता गुण निधान है, निर्धन रूप समाए। सरगुण खेले खेल महान है, हरि निरगुण जोत जगाए। गुर गोबिन्दा विच जहान है, नाम खण्डा रिहा उठाए। हरि शब्द सच्चा बिबाण है, फड़ बाहों उप्पर बिठाए। आपे वेखे मार ध्यान है, दिस किसे ना आए। पंचम तत्त ना कोई निशान है, नेत्र नैण ना कोई वेख वखाए। शब्द धारा इक्क महान है, हरि जोती रिहा जलाए। गोबिन्द पाया साचा हाण है, हरि हाणी हाण मिलाए। नारी कन्ता इक्क मकान है, आत्म सेजा रिहा विछाए। पूरन भगवन्ता नौजवान है, अंगीकार आप कराए। सतिजुग साचा इक्क निशान है, हरि शब्द रिहा जणाए। कलिजुग झूठी मात दुकान है, अन्त रहिण ना पाए। मोह ममता होई हैरान है, जूठ झूठ बैठी मुख शरमाए। चित्रगुप्त बेपछाण है, लेखा लेख रिहा कुरलाए। राए धर्म दर नादान है, रो रो पल्लू गल विच पाए। ब्रह्मा वेखे मार ध्यान है, कवण कूटे हरि जोत जगाए। शिव शंकर कंठ कंठान है, हरि साचा भेव छुपाए। इन्द इन्द्रासण तुट्टा माण है, नर हरि साचा रिहा हिलाए। शब्द सिँघासण विच जहान है, हरि आपणा आप बणाए। नौ द्वारे इक्क मकान है, लक्ख चुरासी वेख वखाए। बीस बीसा करे पछाण है, गुरमुख साचे सेवा लाए। शब्द लिखारी हरि जवान है, बिरध बाल ना वेख वखाए। जोत निरँकारी वड प्रताप है, जुग जुग जोत जगाए। कलिजुग अन्तिम निहकलंक प्रभ आपे आप है, जीव जन्त भेव ना जाणे कोए। शब्द डंक राउ रंक सोहँ सच्चा जाप है, दुरमति मैल धोए। आप सुहाए द्वार बंक है, जन भगतां पाए सोए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दरवेशा आपे होए। दर दरवेश नर निरँकार, जन भगतां आप अख्वांयदा। जुग जुग वेस अवल्लड़ी कार, दस दस्मेश सेवा लांयदा। शब्द खण्डा तेज कटार, रेख केस इक्क रखांयदा। आपे होया पहरेदार, साचा संग निभांयदा। सम्मत तेरां तेरी धार, त्रैगुण रंग वखांयदा। सम्मत चौदां कर प्यार, इक्क मृदंग वजांयदा। वज्जे मृदंग विच संसार, सृष्ट सबाई आप सुणांयदा। कलिजुग माया मारे डंग, डस डसणी रूप वटांयदा। गुरमुख साचे जाणा पार लँघ, हरि साचा राह वखांयदा। गुर गोबिन्दे सिक्खी इक्की मंगी मंग, हरि अन्तिम पूर करांयदा। निक्की निक्की धारों तिक्खी, मुनी रिखी भेव ना पांयदा। धुर दरगाहों मस्तक लेख लिखी, ना कोई

२४४
०६

मेटे मेट मिटांयदा। आपणे नेत्र आपे पेखी, जगत नेत्र ना वेख वखांयदा। महीना चेत्र धारे भेखी, थित वार आप जणांयदा। दर द्वारे लाए मेखी, ना कोई मात उखड़ांयदा। कलिजुग अन्तिम मेटे शेखी, चतुर चतुराई ना कोई वखांयदा। आपे होया धारी केशी, केसाधारी रूप समांयदा। रूप अनूपा दस दस्मेशी, दहि दिश वेख वखांयदा। जोद्धा सूरा नर नरेशी, नर हरि आप अख्वांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम पेशी, एका एक जणांयदा। मिटे पूजा ब्रह्मा शिव शंकर गणेशी, करोड़ तेतीसा ना कोए मनांयदा। पुरख अकाला एका रहसी, दीन दयाला आप हो आंयदा। जोत ज्वाला ढेरी थीसी, उच्चे पर्बत आपे ढांयदा। गंगा गोदावरी पीसण पीसी, अट्ठ सट्ठ मूल चुकांयदा। अञ्जील कुरान खाली खीसी, अन्तिम मुख भवांयदा। वेद पुराणां ताज ना सीसी, नंगे सीस वखांयदा। जोत सरूपी हरि जगदीसी, जोती नूर करांयदा। दे वड्याई बीस बीसी, बीस बीसा वक्त सुहांयदा। इक्क इकीसी शाहो शाबीसी, शाह शहाना आप हो जांयदा। एका ताज झुलेसी सीसी, सीस ताज आप टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण खेल कर, साचा वक्त सुहांयदा। इक्क इकीसी इक्क इकल्ला, एका जोत करे रुशनाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी बणाए इक्क महल्ला, कूड़ कुटम्ब दए मिटाईआ। एका रंग रंगाए जल थला, पर्बत टिल्ले हरि समाईआ। सत्तां दीपां दर दुआरा एका मल्ला, दर घर साचा एका पाईआ। आपे वसया निहचल धाम अटला, जुग जुग हरि रघुराईआ। आवे जावे अछल अछला, अछल छल्ल रिहा कराईआ। जन भगत फड़ाए आपणा पल्ला, सदा सद एह वड्याईआ। होए सहाई डूँघी गार डल्ला, अन्ध कूप लए बचाईआ। कलिजुग अन्तिम बोले हल्ला, अल्ला हू नाअरा लाईआ। चार यांरी संग मुहम्मद रल्ला, दर द्वारे मता पकाईआ। हरि शब्द सुनेहड़ा एका घल्ला, अन्त अन्ती रिहा जगाईआ। दूई द्वैती लाए सल्ला, बिरहों रोग जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकीसा वेख वखाईआ। इक्क इकीसा एक ओंकार, एका घर वसांयदा। वरभण्डी हरि नौ द्वार, दसवां संग रलांयदा। दस दस उप्पर देवे चाढ़, भेव अभेदा भेव कोए ना पांयदा। बीस बीसा घाड़न घाड़, हरि जगदीस आप अख्वांयदा। इक्क इकीसा साचा लाड़, नर निरँकारा आप अख्वांयदा। जन भगतां मेला सतारां हाढ़, लोकमाती आप मिलांयदा। गुर चेला सोहे इक्क द्वार, चेला गुर आप अख्वांयदा। सज्जण सुहेला मीत मुरार, हरि साची सेव कमांयदा। रंग नवेला वसया बाहर, दिस किसे ना आंयदा। पोह छब्बी मेला जगत विहार, सम्मत तेरां आप लिखांयदा। नानक तोले तोलणहार, हरि कंडा नाम लगांयदा। पाए वंडां विच संसार, ब्रह्मण्डां खोज खुजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां, एका देवे नाम धना, साचा राग सुणाए कन्ना, साची धुन उपजांयदा। साचा नाम हरि

जगदीस, आपणा आप अलांयदा। खाणी बाणी लहिणा देणा चुकाए बीसा बीस, लेखा लिखे ना कोए मिटांयदा। एका शब्द छत्र झुल्ले जगत जगदीस, प्रभ साचा आप झुलांयदा। ना कोई पढ़े कुरान हदीस, अल्ला हू ना कोए जणांयदा। वेद पुराणां पीसण ल्या पीस, ऐड़ा अथर्बण झोली आप भरांयदा। एका इक्क इक्क इकीस, हरि साचा आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा रंग आपणा संग, जुग जुग आप निभांयदा। वरन चार प्रभ टेक, अन्तिम इक्क रखाईआ। चार वरन बिबेक, बुध बिबेक कराईआ। चार वरन हरि एक, एका एक कराईआ। चार वरन हरि लेख, साचा लेख लिखाईआ। चार वरन हरि वेख, एका ब्रह्म जणाईआ। चार वरन हरि भेख, गुर पीर साध सन्त उपजाईआ। चार वरन हरि रेख, आप लिखाए आपे दए मिटाईआ। चार वरन हरि वेस, आपणा वेख वखाईआ। चार वरन नरेश, नर दाता आप अख्वाईआ। चार वरन प्रवेश, जोती नूर टिकाईआ। चार वरन आदेस, रसना जिह्वा रिहा जणाईआ। चार वरन इक्क सरन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्तिम कल रिहा वखाईआ। चार वरन पग यात्रा, एका एक रखांयदा। नाम पाए तन साचा गात्रा, साची सिख्या सिख बणांयदा। सस्सा इकल्ला ना लग ना मात्रा, एका होड़ा उप्पर लांयदा। भेव ना पायण वेद शास्त्रा, निरगुण सरगुण मेल मिलांयदा। प्रगट होए कमलापात्रा, हँ हँगता मैल गंवांयदा। ना कोई जाणे ज़ात पात्रा, एका रंग रंगांयदा। कँवल चरन बंधाए साचा नातरा, राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान ऊँच नीच एका धाम सुहांयदा। धुर दरगाही देवे एका दातरा, दाती दाता आप अख्वांयदा। आपे होए पित मात्रा, मात पित आप हो जांयदा। आप जणाए दिवस रातरा, दिवस रैण वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चार वरन एका शरन एका मार्ग लांयदा। चार वरन सच संदेश, एका नर निरंकारया। ना कोई पूजे शिव गणेश, ब्रह्म असमी पार किनारया। ना कोई वेखे औलीआ पीर शेख़, दर दरवेश नूर इल्लाही विच मिला रिहा। वेद पुराण करन अदेस, हरि भेव किसे ना पा ल्या। सहँसर मुख गाए सेश, दोए सहँसर जिह्व हिला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चार वरन इक्क शरन एका दर सुहा रिहा। चार वरन हरि मीतड़ा, जोती ब्रह्म टिकाए। आपे ठांडा सीतड़ा, कर्म कांड वखाए। आपे वसे काया चोली जगत चीथड़ा, अन्दर मन्दिर डेरा लाए। आपे होया कौड़ा रीठड़ा, मनमुख ना रसना लाए। आपे होया हरि हरि मीठड़ा, हरिजन रसना जिह्वा खाए। आपे होया शब्द अनडीठड़ा, लिखण पढ़न विच ना आए। आपे चाढ़े रंग बसीठड़ा, नाम मजीठी इक्क रंगाए। आपे जाणे आपणा कीतड़ा, जीव जन्त भेव ना राए। लक्ख चुरासी परखणहारा नीतड़ा, हर घट में रिहा समाए। कलिजुग वेला अन्तिम बीतड़ा, काली रैण दए

दुहाए। ना कोई गाए सुहागी गीतड़ा, रसना लोभी फिरन हलकाए। आत्म मदि किसे ना पीतड़ा, मदिरा मास मुख रखाए। घर सद ना मिल्या मीतड़ा, सच नाद ना कोए वजाए। मानस जन्म ना कोए जीतड़ा, साध सन्त रहे कुरलाए। गुरमुख विरला इक्क अतीतड़ा, हरि चरन रिहा लिव लाए। नाम निधान एका पीतड़ा, दिवस रैण उतर ना जाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चार वरन सुहाए इक्क दर, दर दरवाज़ा रिहा वखाए। चार वरन सच जोग है, गोबिन्द चरन द्वार। आत्म रस सच भोग है, भोगी भोग करे संसार। जूठ झूठ भगत वियोग है, दर द्वारे दए दुरकार। गुर शब्दी धुर संयोग है, घर मेले मेलणहार। दूई द्वैती कटे हउमे रोग है, हउमे हँगता दए निवार। नैणी नेत्र दरस अमोघ है, हरिजन पाए विच संसार। सोहँ चुगे साची चोग है, माणक मोती अपर अपार। होए सहाई तीन लोक है, घर चौथे पावे सार। इक्क सुणाए नाम सलोक है, हरि जिह्वा रसन उचार। हरि भाणा कोए ना सके रोक है, नौ खण्ड पृथ्वी आई हार। लक्ख चुरासी देवे झोक है, सृष्ट सबाई हाहाकार। गुरमुख विरले अन्तिम मोख है, जिस जन बख्शे चरन प्यार। आप मिटाए तृष्ना भोख है, एका देवे शब्द अधार। दर दर घर घर सुखणा रहे सुख है, प्रगट होए नीले अस्वार। ना कोई गोबिन्द गुर मानस देही मनुक्ख है, गुर शब्द जोत अधार। मात गर्भ ना उलटा रुख है, मरे ना जन्मे विच संसार। ना कोई तृष्ना भुक्ख है, आलस निन्दरा ना तन विचार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, चार वरन रखाए इक्क घर, आपे होए पहरेदार। चार वरन हरि जगत निमाणा, आपे आप अख्वांयदा। आपे रंक राज शाह राजाना, आपे भिखक भीखक आप अख्वांयदा। आपे होए ताण निताणा, निमाणयां माण दवांयदा। आपे होए चतुर सुघड़ स्याणा, मूर्ख मूढ़ां चतुर बणांयदा। गुणवन्ता हरि गुण निधाना, जन भगतां बख्शे चरन ध्याना, आप आपणी गोद उठांयदा। धुर दरगाही देवे माणा, शब्द सरूपी इक्क बिबाणा, आप आपणे संग रखांयदा। चतुर्भुज हरि भगवाना, भेव खुल्हाए कलिजुग सतिजुग साचा राह चलांयदा। लक्ख चुरासी रही भुज, गुरमुख विरला गुर चरन प्रीती रिहा लुझ, हरि साची सेवा लांयदा। भेव चुकाए एका दूज, तीजा चौथा संग मिलांयदा। त्रैगुण माया दीपक जाणा बुझ, ब्रह्मा खाली हथ्थ वखांयदा। पुरख अबिनाशी एका वार जाणा सुझ, आपे मेटे आपे आप उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चार वरन सुहाए इक्क दर, वेद अथर्बण वक्त चुकांयदा। वेद अथर्बण अन्त कराए, ऐड़ा अल्ला आया। सखी सरवर ना कोई सदाए, जल थल ना कोए समाया। परवरदिगार खेल रचाए, पीर दस्तगीर हकीर शब्द जंज़ीर लए बंधाया। तोफ़ीक खुदाए इक्क अख़ीर, सच रफीका लथ्थे चीर, हकीकी पड़दा कोए ना पांयदा। अल्ला उडीके इक्क तारीक, अमाम

मैहन्दी वेखे हरि वसनीक, साचा घर सुहांयदा। आपे होए नीकन नीक, कलिजुग माया मुख छुपांयदा। दर दरवेशा मंगे भीख, काला सूसा तन छुहांयदा। सोहँ होड़ा दो मुखी ताई सीख, ईसा मूसा आप लगांयदा। प्रगट होए हरि जगदीस, बीस इकीसा जगत सुहांयदा। लेखा चुक्के तीस बतीस, छतीस हरि संग रलांयदा। एका चक्की रिहा पीस, हथ्था हरि समरथा आपणे हथ्थ रखांयदा। दो जहानी देवणहारा भत्ता, नाल रलाए पाणी तत्ता, ठंडा ठार ना कोई करांयदा। आपे करे कराए सत्था, आपे मार जिवांयदा। आप चलाए नाम रथा, जुग जुग रथवाही आप हो आंयदा। आपे मस्तक लेखा लिखे मथ्थाा, लिखणहारा आप हो जांयदा। लक्ख चुरासी पावे नत्था, दहि दिशा आप भवांयदा। जन भगतां सगल वसूरा लथ्था, दर द्वारे दर्शन पांयदा। लेखा चुक्के साढे तिन्न तिन्न हथ्था, प्रभ आपणी गोद उठांयदा। गुरमुखां देवे धन इक्ट्ठा, हरि भण्डारा नाम वरतांयदा। आप बंन्हाए एका मुट्ठा, धीरज यति सति भरांयदा। चरन सरोवर अट्ठ सट्ठा, धूढ़ इशनान करांयदा। दर द्वारे जो जन आए ढठ्ठा, फड़ बाहों पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, चार वरन सुहाए इक्क दर, दर दुआरा हरि निरँकारा एका एक जणांयदा। चार वरन तेरा कलिजुग अन्त, हरि साचा आप करांयदा। आपे जाणे साध सन्त, जीव जन्त आप उपांयदा। आपे होए बेअन्त बेअन्त, बेअन्त आप अख्वांयदा। जुग जुग महिंमा गणत अगणत, लेखा लेख ना कोई लिखांयदा। पूरन जोत हरि भगवन्त, जुग जुग आप पलटांयदा। हरिजन मेला साचे कन्त, नारी कन्ता रूप समांयदा। दो जहानां बणाए बणत, ऊँच नीच हरि वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, चार वरन देवे इक्क सरन, सच सरनाई इक्क जणांयदा। सतिगुर चरन साची सरना, हरि एका एक वखाईआ। आदि अन्त होए ना मरना, प्रभ साचा गोद उठाईआ। कर दरस हरि भव जल तरना, हरि बेड़ा पार कराईआ। हरि हरि भाणा सिर ते जरना, गुरमुख साचे शब्द जणाईआ। हरि द्वारे बहि बहि तरना, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। ना कोई जाणे वरना बरनां, ऊँचां नीचां भेव ना राईआ। राउ रंक एका सरना, रघुपत रिहा रखाईआ। आपे होए धरनी धरना, धरत धवल आकाश समाईआ। आपे होए हरना फरना, नेत्र लोचन नैण आप हो आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चार वरनां देवे एका वर, दर दरबार सदा सखाईआ। चार वरन बंक द्वारी, हरि साजण मीत मुरारा। आपे रिहा पैज संवारी, गीत सुणाए गोबिन्द धारा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, सच संगीत सोहँ जै जै जैकारा। पुरख अबिनाशी वड भण्डारी, देवे देवणहार विच संसारा। चरन कँवल जाओ बलिहारी, दोए जोड़ सरन निमस्कारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चार वरन दिखाए इक्क दर, आप सुहाए बंक दुआरा। बंक दुआरा तन है, गोबिन्द

मिल्या राम। हरिजन आत्म गया मन्न है, तन मिटे अन्धेरी शाम। भाण्डा भरम ल्या भन्न है, साची संगता हरि बिसराम। घर साचे एका चन्न है, सूरज चन्न ना कोई निशान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चार वरन सुहाए इक्क दर, दर द्वारे देवे माण। सतिगुर सावण शब्द समाया, शब्द हरि अनादीआ। पारब्रह्म हरि मेल मिलाया, आप फिराए वड ब्रह्मादीआ। अकल कला कल विच रखाया, कल हरि नर आदि जुगादीआ। अछल अछल्ला हरि छल कराया, वल वल भेव उपादीआ। जल थल आपे डेरा लाया, हरि गोबिन्द आप विस्मादीआ। गुरमुखां रंग रिहा चढ़ाया, धुर दी बाण हरि दी वादीआ। अनहद राग गया वजाया, रसना गाए ना कोई स्वादीआ। तीर निराला बाण लगाया, पार कराए एका हादीआ। बजर कपाटी पार कराया, गुरमुख रूह मिली आज़ादीआ। अमृत आत्म धार चुआया, सर सरोवर इक्क रखादीआ। आप आपणा लड़ फड़ाया, पंचम गाया साचा ढाडीआ। रंग महल्ल इक्क वखाया, शब्द सिँघासण आप कराए लाडीआ। सुरत सवाणी शब्द मिलाया, हरि दूर कराया पादीआ। जोती नूर जोत समाया, हरि मिल्या मेल ब्रह्मादीआ। दस्म द्वारी पार कराया, गुरमुख साचे होई शादीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए आदि जुगादीआ। सावण आया हुक्मे अन्दर, हुक्मे शब्द जणाईआ। वेखे खेल काया कन्दर, जैमल जन्दर तुड़ाईआ। सच महल्ला इक्क अटला, पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला, रूप अनूप हरि दरसाईआ। आपे जाणे चारे कूटा, चार वरन करे जणाईआ। कलिजुग काया भन्नया ठूठा, लहिणा देणा मूल चुकाईआ। दर दुआरा एका अतूटा, सति पुरख निरँजण विच गया समाईआ। शब्द जणाया एका मूठा, गुरमुखां जोत जगाईआ। सतिगुर पूरा कदे ना रूठा, विछड़ कदे ना जाईआ। मात गर्भ ना होए पूठा, दस मास ना अग्न जलाईआ। जुगा जुगन्त ना होए झूठा, सच सुच्च करी कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका रंग समाईआ। सस्सा सतिगुर एक है, विष्नूं रूप समाए। सावण सतिगुर टेक है, रसना हरि गुण गाए। अन्तिम वेला एक है, विछड़े लए मिलाए। हरिजन साची टेक है, गुर चरन सच्ची शरनाए। लेखा लिखणहारा लेख है, भुल्ल रहे ना राए। वेखणहारा रिहा वेख है, वड किरती किरत कमाए। आपे नेत्र रिहा पेख है, जगत नेत्र मूँध रहाए। नज़र ना आए धारी केस है, मूंड मुंडाए ना सीस वटाए। जोती नूर नर नरेश है, शब्दी बणत बणाए। गुर शब्दी साध बिबेक है, आपे आप हो जाए। नेत्र नैण लैणा वेख है, सतिगुर मेला सहिज सुभाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर पीरां विच लटकाए। सतिगुर साचा विच समाया। हरि जोत नूर अथाह है, आवण जावण खेल बणाया। हरि दाता बेपरवाह है, हरिजन साचे मेल मिलाया। सत्तां दीपां देवे थाँ है, भगवान भगवान रूप वखाया। अन्दर मन्दिर पकड़े बांह है, साचा

दामन हथ्थ फड़ाया। देवणहारा ठंडी छाँ है, सावण सावण रसना गाया। हरि सावण हँस बणाए काँ है, दर दुआरा एका पाया। पुरख अबिनाशी पिता माँ है, गुर पीरां रिहा गोद उठाया। जुग जुग रिहा जगा है, हरिजन हिरदा सोध वखाया। निशअक्खर वक्खर रखाया नां है, जोधन जोध आप अख्वाया। बजर कपाटी पाड़े पत्थर करे सच न्याउँ है, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम एका दर रिहा सुहाया। सावण सुहणा रूप वटा के, शब्द जड़त जुड़ाईआ। शाहो भूप आप अख्वा के, एका डंक वजाईआ। रंग अनूप सति सरूप हरि जोती जोत प्रगटा के, अन्ध कूप करे रुशनाईआ। दहि दिशा चार कूट एका तन उपजा के, सोहँ शब्द करे कुड़माईआ। गुरमुख साचे सन्त जगा के, आप आपणा दरस दिखाईआ। फड़ फड़ बाहों राहे पा के, सुखमन नाड़ी पार कराईआ। दर दुआरा इक्क वखा के, पंचम नाता तोड़ तुड़ाईआ। साचा डण्डा आप चढ़ा के, ब्रह्मण्डी विच फिराईआ। ब्रह्मण्डी आसण एका ला के, सचखण्डी दए वधाईआ। सचखण्डी अन्तिम विच समा के, सति पुरखे विच समाईआ। सति पुरख साचा रंग चढ़ा के, नाम इनामी इक्क दवाईआ। गुर चरन प्रीती नाम दवा के, अलख अलख करे वड्याईआ। अलख अलख प्रभ भेव छुपा के, अगम्म अगम्मा रूप समाईआ। अगम्म अगम्म महल्ल बणा के, हरि जोती नूर चमकाईआ। हरि जोती नूर आप उपा के, चारों कुन्ट करे रुशनाईआ। चारों कुन्ट वेख वखा के, दहि दिशा नाल लटकाईआ। दहि दिशा भेव खुल्ल्हा के, अलख अलखणा वेख वखाईआ। अलख अलक्खा आप अख्वा के, इनाम इनामी होए आईआ। इनाम इनामी हरि अख्वा के, सति पुरखा रूप समाईआ। सति पुरशा रूप आप वटा के, सचखण्ड होए सहाईआ। सचखण्ड हरि जोत जगा के, दर दसवें बूझ बुझाईआ। द्वार दसवें मेल मिला के, गुरमुख साचे अंग लगाईआ। आत्म साची सेज विछा के, भोग बिलास कराईआ। पंचम साचा राग गा के, खुशीआं रिहा मनाईआ। नाद अनादी ताल वजा के, अनहद धुन वजाईआ। साजन साज आप अख्वा के, दस्म द्वारी पार कराईआ। सोहँ साचा देस वसा के, घर चौथा आप सुहाईआ। आवण जावण भेख वटा के, काल महांकाल परे हटाईआ। जोत सरूपी जोत मिला के, शब्दी शब्द उडाईआ। सुन अगम्मो पार करा के, अकल कला वरताईआ। रूप रंग हरि रेख मिटा के, सतिगुर साचा संग वखाईआ। जोत निरँजण भेख वटा के, सति पुरखे मेला सहिज सुभाईआ। सति पुरखे लेखा लेख लिखा के, पार किनारा आप कराईआ। पार किनारा आप जणा के, बेड़ा बन्ने लाईआ। बेड़ा बन्ने आपे ला के, उप्पर बैठा आसण लाईआ। जोत सरूपी डगमगा के, दिस किसे ना आईआ। नानक कबीरा गए गा के, गावणहारा भेव ना राईआ। पुरख अबिनाशी उत्तों आ के, आप आपणे गले रिहा लगाईआ। सतिगुर सावण गोद उठा के, सिँघ जैमल राह

२५०
०६

तकाईआ। आपे बैठा दूर दुराडा डेरा ला के, हर घट वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम जोत जगा के, गुरसिख साचे विच टिकाईआ। गुर गोबिन्दा नाम उपा के, गुर चेला आप हो जाईआ। सिँघ भगवान साचा मेला, दो जहान विछड़ ना जाईआ। पारब्रह्म प्रभ इक्क अकेला, गुरसिक्खां संग निभाईआ। जोत निरँजण चाढ़े तेला, आपणी हथ्थीं मैहन्दी लाईआ। पंचम सखीआं पावण वेलां, आत्म झोली अग्गे डाहीआ। कन्त भतारे साचा मेला, आत्म सेजा इक्क हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जन भगतां करे शब्द कुड़माईआ। शब्दी नाता पुरख बिधाता, आपणा आप जुड़ांयदा। आपे पुच्छणहारा वाता, दिवस रैण सेव कमांयदा। मेट मिटाए अन्धेरी राता, रैण अन्धेरी रहिण ना पांयदा। जन भगतां देवे सच सुग़ाता, साची भिच्छया झोली पांयदा। गुर पूरे ना तुट्टे नाता, ना कोई तोड़ तुड़ांयदा। कलिजुग नार कमज़ाता, क्रिया कर्म ना कोई कमांयदा। बरस अरस रहे जन साता, सतिगुर साची बणत बणांयदा। ना कोई ज़ात ना कोई पाता, ना कोई गुर पीर अख्वांयदा। पुरख अकाल एका दाता, शब्द रूप हो आंयदा। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क अहाता, चार दिवारी नाम करांयदा। सत्तां दीपां साचा खाता, सोहँ वस्तू आप पांयदा। आपे होए मात राखा, वरभण्डी जोत जगांयदा। जोत सरूपी अलखणा अलाखा, लेखा लिख्त विच ना आंयदा। नानक गोबिन्द शब्द भाखा, रसना हरि गुण गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। गुर चरन द्वार सति है, गुरमुख विरले पाया। गुर चरन द्वार सति है, दे मति रिहा समझाया। गुर चरन द्वार सति है, गुर संगत रिहा सुणाया।

२५१
०६

गुर चरन द्वार सति है, रस फीका बोल ना सतिगुर भाया। चरन द्वार सति है, जन नीकन नीका सेव कमाया। चरन द्वार सति है, भेव ना जानण जीव जीअ का, काग हँस वेख वखाया। चरन दुआरा सति है, लेख चुक्के साढे तिन्न हथ्थ सीं का, आप आपणी गोद उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत रिहा समझाया। गुर संगत साची मति दे, एका राह वखांयदा। सति सन्तोखी धीरज यति दे, शब्द मलाह बणांयदा। चरन प्रीती साचा नत्त दे, एका नाता आप रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां एह समझांयदा। गुरमुख साचा सेवादार, प्रभ साची सेवा लाईआ। बीस बीसा करे ख़बरदार, आप आपणा हुक्म जणाईआ। रसना बोल ना करे कोई विकार, शब्द डण्डा सिर लगाईआ। गुर संगत अन्दर कोए ना होए हाहाकार, काग जिह्वा ना कोए कुरलाईआ। गुर संगत रसना गाए हरि निरँकार, गुर संगत हरि मन भाईआ। जगत मति ना लए उधार, बुध ना कोई चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी जोत धर, बीस बीसा रिहा जगाईआ। बीस बीसा उठ उठ जाग, जागण वेला आया। कलिजुग अन्तिम लग्गा भाग, प्रभ साचे भाग लगाया। हरिजन मेला कन्त सुहाग, नारी कन्ता रूप वटाया। आप बुझाए तृष्ना आग, अमृत आत्म जाम प्याया। माया डस्से ना डस्सणी नाग, धीरज धीर धराया। दीपक जोती जगे चिराग, प्रभ नेत्र दर्शन पाया। फड़ फड़ हँस बणाए काग, जो जन रसना बन्द कराया। आपे धोवणहारा दाग़, काया चोली वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत वेखे काया घर, निज आत्म डेरा लाया। निज आत्म शाह हरि सुल्तान, दिवस रैण बिराज्जया। आपे गोपी आपे काहन, रास मण्डल साजन साज्जया। धुरदरगाही इक्क निशान, हरि देवे साचा साज्जया। मनमुखां लग्गे आत्म बाण, जगत विकारा जाए भाज्जया। गुरमुखां देवे धुर फ़रमाण, शब्द घोड़े चिट्टे अस्व साचे ताज्जया। कलिजुग अन्तिम आई हाण, गुर चरन धूढ़ी मजन साचा माघिआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा साजन साज्जया। आदि पुरख अपार, आदि समाया। आदि पुरख अधार, आपणा आप रखाया। जोत सरूपी कर आकार, जोती जोत जगाया। वेखणहारा आप उज्यार, आपे बणत बणाया। ना कोई मन्दिर चार दिवार, महल्ल अटल ना कोई रखाया। जल थल ना दिसे कोई किनार, ब्रह्मण्ड खण्ड ना कोए जणाया। जेरज अंड ना बन्ने कोई धार, उत्भज सेत्ज भेव ना राया। ब्रह्मा शिव ना पाए सार, सुरपति इन्द ना कोए उपाया। देवी देव ना कोई नर नार, मात पाताल आकाश ना कोई वसाया। ब्रह्मण्ड खण्ड वरभण्ड ना कोई आकार, सागर सिन्ध ना कोई वहाया। सर सरोवर ना जल धार, धरती ख़ाक ना कोए उडाया। गुर पीर साध सन्त ना कोए अवतार, हड्ड मास नाड़ी चम्म ना कोई दिसाया। औलीआ पीर शेख़ ना कोई अधिकार, पंच तत्त ना कोई वखाया। त्रैगुण माया ना पसर पसार, विष्न ब्रह्मा शिव ना सेवा लाया। आप आपणा कर विस्थार, आप आपणा वेख वखाया। पुरख पुरखोतम ना मीत मुरार, नारी नारा रूप वटाया। मच्छ कच्छ ना कोए आधार, सति सरूपी इक्क समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरखा आप अख्वाया। आदि आदि प्रभ एक है, एका रंग समाए। आपे सदा बिबेक है, दूसर कोए ना अंग लगाए। ना कोई सके वेख है, ना कोई बणत बणाए। ना कोई लिखे लेख है, ना कोई गणत गिणाए। ना कोई जाणे रेख है, कवण सरूपा हरि रघुराए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन आदि आप हो जाए। आदि अधारी एक है, आदि रूप अनाद। पसर पसारी आप है, हरि मोहण माधव माध। जोत अधारी आप है, आपे वड प्रताप। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणा जाप। आदि जोत हरि रंग है, रंग रतड़ा लाल। ना कोई भुक्ख नंग है, ना कोई बस्त्र

२५२
०६

तन शब्द दुशाल। ना कोई मीत मुरारा संग है, जोती नूर इक्क अकाल। ना कोई अमृत धारा गंग है, ना बंधप दीन दयाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा होए आप रखवाल। आदिन आदि उपन्नया, हरि हरि रूप अनूप। जनणी जन ना किसे जणया, ना कोई दिसे शाह भूप। भाणा कोए ना किसे मन्नया, ना कोई जणाई चारे कूट। ना घड़या ना भन्नया, ना बद्धा ना जाए छूट। ना फड़या ना डन्नया, ना मन्ने ना जाए रूठ। ना कोई छप्पर छन्नया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे रिहा तूठ। आदि जोत हरि जोत धर, साची बणत बणांयदा। आप आपणा भोग कर, भोगी भोग कमांयदा। सति सतिवादी साचा योग कर, दर साचा इक्क जणांयदा। आप आपणा दरस अमोघ कर, आप आपणा रूप वटांयदा। आपणा मेला धुर संजोग कर, जोती नूर उपांयदा। एका साची चोग कर, भरपूरी भरपूर वखांयदा। जोती इक्क वियोग कर, शब्दी सुरत जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी गोदी आप सुहांयदा। शब्द सुत हरि कर त्यार, साची मति सुणाईआ। काया बुत्त ना वेख विचार, ब्रह्मण्ड रूप समाईआ। अबिनाशी अचुत किरपा धार, आपणा अंग खण्ड कराईआ। वेख वखाए हरि निरँकार, निरवैर नाम रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे माण सच्ची वड्याईआ। शब्द सुत प्रभ देवे माण, एका हुक्म जणांयदा। आप चलाए आपणे भाण, भाणा सहिणा एह समझांयदा। किसे ना वसणा विच मकान, नगर खेड़ा शहर ना कोई वसांयदा। आपणी करनी आप करान, दूसर ओट ना कोई रखांयदा। चरन ध्यान पीण खाण, एका तृप्त रखांयदा। देवणहारा हरि मेहरवान, आप आपणे रूप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, शब्द सुत देवे वर, वर दाता आप हो आंयदा। शब्द सुत हरि कर त्यार, एका रंग चढ़ाया। साचा सुत रिहा पुकार, दोए जोड़ सीस झुकाया। इक्क इकल्ला की पावे तेरी सार, कवण रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप फड़ाए आपणा पल्ला, एका हुक्म जणाया। शब्द सुत हरि दे धरवासा, एका नाम जणाईआ। आपे करे कँवल प्रकाशा, आप आपणी बणत बणाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म किया वासा, ब्रह्मा रिहा उपाईआ। आपे किया दासन दासा, सेवक सेवा साची लाईआ। विष्नूं रूप धरे अबिनाशा, भेखाधारी भेख वटाईआ। साचे सुत दए दलासा, हरि शब्द वड्डी वड्याईआ। जोती नूर होए प्रकाशा, कँवल कँवला रिहा खिड़ाईआ। रक्त बूंद ना जाणे मासा, नारी कन्त ना कोई वखाईआ। ना कोई देवे सास ग्रासा, पवण स्वास ना कोई चलाईआ। आपे वेखणहार तमाशा, आपणी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत हरि देवे वर, साची जोड़ी रिहा जुड़ाईआ। साची जोड़ी हरि जुड़ाए। एका कँवल खिलाया। ब्रह्मा ब्रह्म रूप उपाए, पारब्रह्म रघुराया। साचे

सुत मेल मिलाए, एका राह वखाया। दोहां मेला आप कराए, आपणा भेव छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे भाणे आप रखाया। ब्रह्मा वेखे कर ध्यान, जोती शब्द सुत प्रवेश्या। आपे होए जाणी जाण, दर द्वारे नर नरेश्या। आपे बिरध बाल अञ्जाण, आपे वेसन वेस अनेकया। गुणवन्ता हरि गुण निधान, शब्द जणाए लिख्या लेखया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे नेत्र आपे पेख्या। ब्रह्मे देवे शब्द विचार, हरि शब्द रिहा जगाईआ। सृष्ट सबाई कर त्यार, सेवक सेवा साची लाईआ। साचा सुत करे ख़बरदार, दर द्वारे रिहा जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रचन रचाईआ। ब्रह्मा वेखे करे विचार, भेव कोए ना पाया। कवण तन दए उसार, कवण रंग रंगाया। वस्त दस्त ना कोई अपार, ना कोई धीर धराया। दोए जोड़ करे निमस्कार, हरि अग्गे सीस झुकाया। किरपा कर हरि दातार, होए निमाणा रिहा शरमाया। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, देवे वर साचे घर आप आपणी दया कमाया। त्रैगुण माया अपर अपार, ब्रह्मे पाई दर भिखार, हरि झोली रिहा भराया। पंज पंझी कर त्यार, त्रैगुण सोहणा इक्क शृंगार, हरि साचे रूप चढ़ाया। सुत शब्द हरि भुजा पसार, अंगण अंग समाया। पवण ना देवे कोई हुलार, स्वास स्वासी ना कोए चलाया। वेखे परखे परखणहार, परीख परीख्या विच कदे ना आया। ब्रह्मा ढहि ढहि पया द्वार, प्रभ साचे भेव चुकाया। आपे बख्शे आपणी धार, जोती जोत जगाया दीआ निरगुण वस्त टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मे दित्ता जगत वर, लक्ख चुरासी रिहा उपाया। लक्ख चुरासी आप उपाई, ब्रह्मा सेव लगांयदा। लोआं पुरीआं बणत बणाई, वरभण्डी रचन रचांयदा। धरत मात हरि जल टिकाई, आप आपणा चरन छुहांयदा। विष्नूं सो संग रलाई, रूप अनूपा आप हो जांयदा। आप आपणी जोत जगाई, आप आपणा भेव छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन आदि आप अख्वांयदा। लक्ख चुरासी बणत बणाया, ब्रह्मे वड वड्डी वड्याईआ। प्रभ अबिनाशी कर्म कमाया, एका बूझ बुझाईआ। धुर दी बाण रिहा रखाया, बख्शे सच सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची रचना रिहा रचाईआ। साची रचना आप रचा के, रचनहार अख्वाया। ब्रह्मे साचा शब्द जणा के, वेद विदातां रिहा लिखाया। आप आपणा मुख छुपा के, नाम तराना रिहा जणाया। ब्रह्मा वेता रसना गाए, लेखा लेख रिहा लिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन आदि आदि अख्वाया। जोत सरूपी कर अकारा, अचरज बणत बणाईआ। सृष्ट सबाई हरि पसारा, हर घट में आसण लाईआ। काया गढ़ चार दिवारा, पंचम धार सवाईआ। वेखे खेल बहत्तर नाड़ा, साचा ताड़ा रिहा वजाईआ। पंचम लाया इक्क अखाड़ा, ब्रह्मण्ड रिहा सुणाईआ। आपे बणया साचा लाड़ा, दर

घर बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेख वटाईआ। आप आपणा भेख वटाए, भेखाधार भगवन्ता। ब्रह्मा सुत चार उपाए, हरि साचा साजण सन्ता। सन्त कुमार माण दवाए, खेले खेल अगणता। आप आपणी जोत जगाए, हरि बेअन्त बेअन्ता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे जीव जन्ता। जीव जन्त कर्म लिखारी, आपे लेख लिखांयदा। वरभण्डी हरि कर विचारी, साची वंडण वंड वंडांयदा। सतिजुग रसना नाउँ उचारी, सति सति वरतांयदा। वार अठारां जोत निरँकारी, आपणी जोत प्रगटांयदा। सतिजुग करे पार किनारी, जुग त्रेता चलत चलांयदा। राम परसा राम अवतारी, राम रामा आप अख्वांयदा। लंका तोड़े गढ़ हँकारी, रावण रामा आप अख्वांयदा। भगतां देवे नाम अधारी, दर द्वारे बंक सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन आदि रूप अख्वांयदा। जुग त्रेता पार किनारा। प्रभ अबिनाशी खेल अपारा। द्वापर तेरी आई वारा। वेद व्यास बणे लिखारा। कृष्ना काहना हरि गिरधारा। खेले खेल विच संसारा। मेले मेल भगतन दुआरा। रथ रथवाही जंग मझारा। गीता ज्ञान रसन उचारा। अर्जन अर्जन पाई सारा। जोती जोत सरूप हरि, जुग जुग करे पार किनारा। द्वापर हरि अन्त कराए, कलिजुग साची बणत बणाए, बोध बोधा नाउँ धरा के। ईसा मूसा आप उपा के। अल्ला अलाही नूर जणा के। अथर्बण साचा माण रखा के। संग मुहम्मद मेल मिला के। चार यारां कर प्यारा, आपणा हुक्म जाए सुणा के। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आदि आदि हरि आदि अख्वा के। संग मुहम्मद कर प्यार, हरि साचा दए जणाईआ। सेवक सेवा लाए सेवादार, साची सेवा इक्क वखाईआ। कलिजुग अन्तिम पार किनार, तेरे हथ्थ दए वड्याईआ। इक्क मुहम्मद करे निमस्कार, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। मिल्या मेल हरि दातार, साचा मेला मेल मिलाईआ। ना होए विछोड़ा चार यार, साची यारी रिहा निभाईआ। कलिजुग तेरी काली धार, मुहम्मद मुहम्मदी लेख लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे माण जगत वड्याईआ। जगत माण हरि रखाया, देवे वड वड्याईआ। दर दरबान इक्क रखाया, आपणा भेव छुपाईआ। काला बाणा तन छुहाया, वेस अवेसा आप कराईआ। साचा राणा मात बणाया, दर दरवेशा अलख जगाईआ। नेत्र नैणा दरस दिखाया, प्रतक्ख रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन आदि आदि अख्वाईआ। आदिन आदि हरि करतार, आपे आप अख्वांयदा। नानक आया हरि दर पाया, लोकमाती जन्म दवांयदा। जन्म अजन्मा वेख वखाया, दर दुआरा इक्क सुहांयदा। शब्द सरूपी मेल मिलाया, जोती नूर उपांयदा। भाणा सहिणा हुक्म सुणाया, नेत्र नैणा दरस दिखाया, नाम वस्त हरि झोली पांयदा। कलिजुग साचा मार्ग लाया, नाम सति मन्त्र दृढ़ाया, गुर पूरा राग

अलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन आदि आप अख्वांयदा। नानक गाया हरि हरि निरँकार, सेवक सेव कमाईआ। चारे कुन्टां दहि दिशा विचार, सतिनाम रिहा जपाईआ। अन्तिम गया मात हार, एका ओट रखाईआ। निहकलंक लए अवतार, कलिजुग अन्तिम होए जोत रुशनाईआ। अंगद अंग लगाया कर प्यार, जोती नूर सवाईआ। अमरदास गुर जाए तार, लहिणा देणा रिहा चुकाईआ। अमरदास गुर बन्ने धार, रामदासे सोढी बंस सुहाईआ। रामदास तेरी सुण पुकार, गुर अर्जन जन्म दवाईआ। गुर अर्जन बणया लेख लिखार, जन भगतां अंग लगाईआ। हरि गोबिन्दा तेज कटार, तन आपणे रिहा छुहाईआ। हरि राए हरि सुण पुकार, दे मति रिहा समझाईआ। बाल अवस्था पावे सार, हरि कृष्ना मेल मिलाईआ। गुर तेग बहादर बन्ने साची धार, हरि साची सेवा लाईआ। गुर गोबिन्दा करया ख़बरदार, प्रभ देवे शब्द जणाईआ। आपे होया पहरेदार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मानस देह ना करे विचार, हरि जोती नूर सवाईआ। अनन्द पुर अनन्द करतार, अनन्द अनन्द रिहा गाईआ। गोबिन्द काया अपर अपार, तन बस्त्र शस्त्र हरि पहनाईआ। नैणा देवी तेरी धार, गुर पूरा रिहा धराईआ। प्रगट हो हरि निरँकार, आप आपणा रूप वखाईआ। शब्द खण्डा खिच्च कटार, गुर गोबिन्दे तन छुहाईआ। करना पन्थ इक्क त्यार, केसाधारी रूप वटाईआ। आपे होया पहरेदार, दिस किसे ना आईआ। कर्मी कर्मा रिहा विचार, धर्मी धर्मा रिहा चलाईआ। धरत मात दी सुण पुकार, प्रभ साचे सेवक सेवा लाईआ। गुर गोबिन्दा करे प्यार, दोवें जोड़ सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी सुण पुकार, भाणा सहिणा हुक्म सुणाईआ। काया माटी जाए हार, अटल रहिण ना पाईआ। एका शब्द होए जै जैकार, दूसर कोए दिस ना आईआ। साल त्ताली गया हार, छड्ड पंजाब दक्खण डेरा लाईआ। प्रभ जोती नूर कर आकार, देवे शब्द जणाईआ। गोदावरी कन्ढे सुत्ता पैर पसार, प्रभ साचा रिहा उठाईआ। शब्द सिँघासण इक्क अपार, साचा अंगीठा रिहा विछाईआ। नीले घोड़े हो अस्वार, आप आपणा रूप वटाईआ। मिल्या मेल हरि निरँकार, जोती जोत समाईआ। आप उठाए भुजा पसार, छोटा बाला गोद बिठाईआ। दित्ता वर सच्ची सरकार, गुर गोबिन्द करी पुकार, अन्तिम मेला विच संसार, साची रुत्त दए सुहाईआ। तेग बहादर मीत मुरार, पुरख अबिनाशी बन्ने धार, कलिजुग अन्तिम लए जगाईआ। पूत सपूता करे ख़बरदार, गुर गोबिन्दा दए उपाईआ। कलिजुग अन्तिम आई हार, हरि ब्रह्मे माण गंवाईआ। ब्रह्मा रोवे धाहां मार, गुर तेग बहादर तेरी एह वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम जामा धार, सिँघ पाल नाम रखाईआ। आत्म जोती नूर अपार, हरि साची बिन्द उपाईआ। आप आपणी कल धार, पंज तत्त रत्त उपाईआ। भेखाधारी भेख न्यार, आपणा बैठा मुख छुपाईआ। प्रगट हो विच संसार, सिँघ शेर नाउँ रखाईआ। आपे वसया अन्दर बाहर, गुप्त ज़ाहिर रिहा

समाईआ। काया तजी विच संसार, शब्द उडारी इक्क लगाईआ। आपे गया सच द्वार, आदि रूप आदि हो आईआ। प्रगट हो नर निरँकार, छब्बी पोह वज्जी वधाईआ। वीह सौ बिक्रमी मात विचार, निहकलंका जोत जगाईआ। पंचम जेठ बन्ने धार, गुर गोबिन्दे विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे करी कुड़माईआ। गुर गोबिन्दे जोत टिकाई, गोबिन्द रूप समांयदा। जीव जन्त भेव ना कोए पाई, साध सन्त हरि भुलांयदा। हरिजन जुग जुग विछड़े मेला रिहा मिलाई, आप आपणी दया कमांयदा। चोबदार हरि निरँकार राती सुत्या जा जगाई, फड़ फड़ बाहों आपणा दरस दिखांयदा। गुर गोबिन्दा साचा राही, माछूवाड़ा भुल्लया नाहीं, नंगी पैरीं चरन उठांयदा। गुरमुखां कट्टण आया फाही, दो जहानी बण मलाही, शब्द खण्डा इक्क उठांयदा। देवणहारा ठण्ढीआं छाईं, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान नाउँ रखांयदा। हरि गोबिन्द साची धार, आपे रिहा बंधाईआ। कलिजुग काया कर्म विचार, वेखे थाउँ थाँईंआ। लक्ख चुरासी आई हार, वेले अन्तिम दए दुहाईआ। माया राणी हो त्यार, दर दर रही अलख जगाईआ। जूठा झूठा कर पसार, चुगली निन्दया मुख रखाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार, माया ममता तृष्न वधाईआ। हउमे हँगता रोग हँकार, भुक्खा नंगा जीव कराईआ। गुरमुख विरला मंगता इक्क दरबार, मंगे दरस सदा प्रभातीआ। साची रंगण रंग करतार, आप आपणा रिहा चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया सेवा लाईआ। गोबिन्द काया साचा धड़, साची सेव कमांयदा। पुरख अबिनाशी अग्गे खड़, देवी देव निवांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, सिँघासण आसण इक्क विछांयदा। एका अक्खर गया पढ़, प्रभ साची विद्या आप पढ़ांयदा। लक्ख चुरासी नाल रिहा लड़, नाम खण्डा इक्क उठांयदा। आप उखेड़े लग्गी जड़, कलिजुग तेरी जड़ पुटांयदा। सतिजुग साचा धरत मात दी गोदी जाए वड़, प्रभ साचा जन्म दवांयदा। सन्त सुहेले लए बाहों फड़, साची सिख्या इक्क वखांयदा। किला तोड़ हँकारी गढ़, चरन प्रीती इक्क रखांयदा। ना कोई पीवे हुक्का नड़, पुरख अबिनाशी हुक्म जणांयदा। मदिरा मासी जायण सड़, लेखा अन्तिम हथ्थ रखांयदा। कलिजुग वहिण वहाए हड़, धार्मिक धारा ना कोए रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया वेख दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हांयदा। गोबिन्द काया दर दरवाज़ा, हरि साचे मात खुल्हाया ए। खेले खेल ग़रीब निवाजा, ग़रीब निमाणे गले लगाया ए। चिट्टा अस्व रक्खे ताजा, लोआं पुरीआं रिहा दुड़ाया ए। भगतां मारे घर घर अवाज़ा, दिवस रैण रिहा जगाया ए। कलिजुग अन्तिम रच्चया काजा, देस माझा बणत बणाया ए। गुर गोबिन्दे साजण साजा, शस्त्र बस्त्र इक्क सजाया ए। नाल रलाया अनहद वाजा, राग रागनी

मुख छुपाया ए। धुर दरगाही आया भागा, साचे मन्दिर डेरा लाया ए। एका देवे साचा दाजा, सोहँ पल्लू गंढु बंधाया ए। आपे होए राजन राजा, दर दरबारी आप अख्वाया ए। गुरमुखां रक्खण आया लाजा, लाजावन्त हरि रघुराया ए। नाम चलाए सच जहाज़ा, हरि बेड़ा रिहा तराया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया वेख घर, घर आपणा इक्क सुहाया ए। गोबिन्द काया साचा घर, हरि साचे बणत बणाईआ। बन्द कराए नौ दर, सुरती सुरत मुख छुपाईआ। आप नुहाए साचे सर, कागों हँस बणाईआ। देवणहारा आपे वर, आपे मेल मिलाईआ। बन्द किवाड़ी खोल्हे दर, दर दसवां बूझ बुझाईआ। शब्द सिँघासण उप्पर चढ़, हरि वेखे सर्ब लोकाईआ। हरि सन्त सुहेले आप फड़ाए आपणा लड़, दर द्वारे लए बहाईआ। ना मरे ना जाए सड़, गोर मड़्ह ना कोए टिकाईआ। हर घट अन्दर बैठा वड़, आप आपणा मुख छुपाईआ। अक्खर वक्खर रिहा पढ़, एका राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया वेख सर, सर सरोवर एका थान सुहाईआ। गुरमुख काया साचा सर, हरि साचा ताल सुहांयदा। अमृत आत्म आपे भर, आपे जाल विछांयदा। आवण जावण चुक्के डर, जिस जन दया कमांयदा। आप आपणे जिहा कर, आपणे रंग रंगांयदा। आपे खोल्हणहारा दर, आपे बन्द रखांयदा। आपे घाड़न साचा घड़, आपे भन्न वखांयदा। आप उखेड़े सभ दी लग्गी जड़, आपे मार्ग पांयदा। आपे काया मन्दिर अन्दर लए फड़, आपे मुख भवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया साचा घर, नर नरायण नर हरि डेरा लांयदा। आप आपणी किरपा कर, दर घर एका पाया ए। शब्द भण्डारा जगत भर, हरि साचा रिहा वरताया ए। जोत सरूपी जोत धर, शब्द सरूपी देवे वर, वर वरयाम आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया साचा गढ़्ह, आपे वेखे उप्पर चढ़, वेखणहारा दिस ना आया ए। गोबिन्द काया साचा हाट, प्रभ साचा मात खुल्हांयदा। शब्द रखाए साचा पाट, गुरमुखां तन पहनांयदा। दीपक जोती जगे लिलाट, जिस जन मस्तक टिक्का तिलक लगांयदा। बजर कपाटी जाए पाट, छिलका छिलक लुहांयदा। शब्द हथौड़ा मारे साट, आपे कुण्डा लांहयदा। इक्क वखाए नेड़े वाट, निज घर वासी रूप वटांयदा। लेखा चुक्के आन बाट, आप आपणे रंग रंगांयदा। ना कोई तीर्थ ना कोई ताट, सर सरोवर इक्क वखांयदा। गुरमुख चढ़ना साचे घाट, औखी घाटी पार करांयदा। जगे जोत काया माट, अन्ध अन्धेरा आप मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया देवे वर, वर दाता आप अख्वांयदा। पंचम मीता पंचम प्यारा, पंचम जोत जगांयदा। पंचम सीस नाम दस्तारा, एका एक बंधांयदा। पंचम तन पहनाए कटारा, साचा खण्डा नाउँ रखांयदा। पंचम मेला हरि गिरधारा, साची वंडा वंड वंडांयदा।

२५६
०६

आप बैठ तख्त सच्ची सरकारा, साचा लेख लिखांयदा। प्रगट हो विच संसारा, साची धारा मात चलांयदा। आपे करे ख़बरदारा, हरि सोए मात जगांयदा। एका देवे शब्द हुलारा, पवण पवणी सेवा लांयदा। कलिजुग कर्म हरि विचारा, साचा धर्म धरांयदा। प्रगट होए विच संसारा, निहकलंका नाउँ रखांयदा। गुर गोबिन्दा मीत मुरारा, आपणा संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा लेखा आप जणांयदा। जोत अकाल जोत धर, लोकमात कलि आया। शब्द दलाली इक्क वर, इक्क सलोक रखाया। हक्क हलाली वेख घर, साचा हक्क जणाया। पन्थ वाली जोत धर, गोबिन्द रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नगर खेड़ा इक्क वसाया। नगर खेड़ा साचा, हरि साचा आप वसांयदा। माटी भाण्डा काचा, पंचम तत्त जणांयदा। पुरख अबिनाशी धाम अगम्मे आपे राचा, दिस किसे ना आंयदा। नाम जपाए साचो साचा, सच वस्त हरि झोली पांयदा। सृष्ट सबाई लगाए अग्न तमाचा, अन्तिम मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटांयदा। सतिगुर साचा सच है, साचा वणज कराए। गुरमुख साचा सच है, साची सरन तकाए। मनमुख रिहा नच्च है, दर दुआरा मूल ना भाए। सतिगुर साचा सच है, साचा हट्ट खुल्लाए। गुरमुख साचा सच है, तन साचा पट बंधाए। बेमुख भाण्डा कच्च है, प्रभ अन्तिम भन्न वखाए। सतिगुर साचा सच है, साची जोत जगाए। गुरमुख साचा सच है, वरन गोत विच ना आए। मनमुख माया अग्नी रही मच्च है, कलिजुग काया रिहा जलाए। सतिगुर साचा सच है, साचा नूर करे रुशनाए। गुरमुख साचा सच है, शब्द तूर उपजाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे हरि हर थाँए। सतिगुर साचा मीत है, दो जहानां वाली। गुरमुख इक्क प्रीत है, चरन कँवल रखा ली। मनमुखां परखे नीत है, फल दिसे ना किसे डाल्ली। हरि बैठा इक्क अतीत है, कोटन कोट खड़े सवाली। गुरमुख मानस देही जाए जीत है, हरि देवे शब्द दलाली। मनमुख काया कौड़ा रीठ है, जूठी झूठी तन जंजाली। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे बणया शाह कंगाली। सतिगुर साचा सच है, कराए वणज वपारा। गुरमुख साचा सच है, मंगे चरन प्यारा। सतिगुर साचा सच है, एका भरे नाम भण्डारा। गुरमुख साचा सच है, सोहे बंक दुआरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम देवे वर, मिले मेल अपर अपारा। कलिजुग अन्तिम वर घर पाया, गुरसिख वज्जी वधाईआ। नौ द्वारे पार कराया, प्रभ साचे दया कमाईआ। एका पल्लू नाम फड़ाया, साचे मार्ग रिहा चलाईआ। डूँघी डल्ल वेख वखाया, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। घल्लू घार ना कोए मचाया, हरि पंचां मार मिटाईआ। अमृत आत्म फल इक्क ख्वाया, सच सरोवर नुहावण नुहाईआ। अनहद टल्लू इक्क वजाया,

हरि साचे तार हिलाईआ। आत्म सेजा इक्क विछाया, शब्द सिँघासण डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, जन भगतां नाम करे कुड़माईआ। जन भगतां देवे नाम निधाना, निरगुण हरि रंग राता। हथ्थीं बन्ने नाम गाना, पारब्रह्म पुरख ज्ञाता। इक्क झुलाए धर्म निशाना, नौवां खण्डां दीपां साता। हरिजन साचे मेल मिलाना, साचा मेला कमलापाता। शब्द सुणाए धुर फ़रमाणा, सोहँ देवे सच सुग़ाता। भेव ना जाणे ऊँच नीच राउ रंक राजाना, सृष्ट सबाई पिता माता। सतिगुर साचा शाहो शहाना, मेट मिटाए ज़ाता पाता। एका छत्र सीस झुलाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां मेला इक्क इकांता। इक्क इकांता इक्क इकल्ला, एका धार बंधांयदा। भारत खण्डी सच महल्ला, आपणा आप बणांयदा। सम्मत चौदां कर कर हल्ला, गुरमुख साचे आप जगांयदा। जोती शब्दी आपे रला, पवण सुनेहड़ा हरि सुणांयदा। मिले मेल गोबिन्द डल्ला, साचा मेली मेल करांयदा। लाए भाग हरि थल थला, साचा वक्त सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त दुलार, एका देवे शब्द अधार, आपणा पल्ला आप फड़ांयदा। शब्द अधारी हरि निरँकारी, गुरमुख साचे मात तरांयदा। आपे देवे सच उडारी, लोआं पुरीआं पार उतारी, साचा राह वखांयदा। जोत निरँजण सेवादारी, नेत्र अंजन पहली वारी, आपणी हथ्थीं आपे पांयदा। लक्ख चुरासी होए ख्वारी, चारों कुन्ट हाहाकारी, राए धर्म सेवा लांयदा। हरिजन साचे मीत मुरारी, आप सुहाए बंक द्वारी, आप आपणा दर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती धारा आप चलांयदा। जोती धार विच संसार, आपणी आप चलांयदा। शब्द दो अक्खर कर त्यार, लोआं पुरीआं हरि वरतांयदा। सति पुरख निरँजण अपर अपार, जोत निरँजण सेवा लांयदा। जोत निरँजण ख़बरदार, जन भगतां आप जगांयदा। लहिणा देणा कर्ज उतार, पिछला मूल चुकांयदा। भाणा सहिणा विच संसार, एका चरन ओट धरांयदा। कलिजुग अन्तिम वहिण वहिणा, आप वखाए साचे नैणा, वेखे खेल परवरदिगार दा। नाता तुट्टे भाई भैण मात पित कोई ना रहिणा, नारी कन्त ना पाए ना हंढाए रंग सुहाग दा। साध सन्त कोई दिस ना आए, जीव जन्त फिरन हलकाए, प्रभ साचा एका खण्डा सोहँ विच ब्रह्मण्डां मारदा। कलिजुग तेरा भेख पखण्डा, आपे वढ्ढे हरि हरि कंडां, अन्तिम तेरी झोली डारदा। राज राजानां तोड़ घमंडा, शाह सुल्तानां वढ्ढे कंडां, तख्त ताज महल्ल ना कोई उसारदा। जन भगतां पाए आपे वंडा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत सम्मती आप विचारदा। साचा सम्मत आप विचारे, हरि साचा लेख लिखांयदा। कलिजुग सम्मती हौले भारे, सम्मत सोलां नेड़े आंयदा। साचे सम्मत कर विचारे, जग सम्मती मेट मिटांयदा। गुरमुखां वंड वंडावण आया, जग दाता हरि दलाल। साची

खोज खुजावण आया, हरिजन पकड़ उठाए साचे लाल। एका दूजा भउ चुकावण आया, फल लगाए काया डाल। नेत्र तीजा आप खुलावण आया, एका मारे शब्द उछाल। चौथा घर आप सुहावण आया, दिवस रैण करे प्रितपाल। काया मन्दिर अन्दर डेरा लावण आया, दीपक जोती एका बाल। लहिणा देणा मूल चुकाया, बैठ धर्म सच्ची धर्मसाल। नेत्र नैण दरस दिखावण आया, दानी दाता शाह कंगाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे चले अवल्लड़ी चाल। जगत अवल्लड़ी चाल हरि चलाईआ। जोत इकल्लड़ी दीन दयाल, एका एक प्रगटाईआ। वेखे पेखे काया खलड़ी खाल, कवण द्वार वज्जे वधाईआ। गुरमुख साजण साचे लाल, आपे रिहा उठाईआ। काया मन्दिर सच सच्ची धर्मसाल, हरि शब्द होए जणाईआ। दीपक जोती जगे मस्तक थाल, गगन गगनंतर वेख वखाईआ। सोहँ मन्त्र अपर अपार, काल महांकाल नेड़ ना आईआ। दस्म द्वारी इक्क दलाल, प्रभ बैठा आसण लाईआ। नौ द्वारे जगत जंजाल, माया मोह रही विछाईआ। अमृत आत्म आप वखाए साचा ताल, हरिजन साचा नुहावण नुहाईआ। आप लवाए साची छाल, कागों हँस बणाईआ। आपे होए हाल बेहाल, बेहाला आप अख्वाईआ। जन भगतां करे सदा प्रितपाल, प्रितपालक सद रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत सम्मती रिहा वंडाईआ। सम्मत तेरां तेरी वंड, कलिजुग आप करांयदा। कलिजुग मेटे भेख पखण्ड, साधां सन्तां वेख वखांयदा। राज राजानां तोड़ घमंड, तख्त ताज ना कोई दिसांयदा। आपे करे खण्ड खण्ड, खण्डा आपणे हथ्थ उठांयदा। हरि जोती चमके चण्ड प्रचण्ड, ब्रह्मण्डां तेज वधांयदा। मनमुख नार दुहागण दिसे रंड, कन्त सन्त ना कोई हंढांयदा। जन भगतां पाई साची वंड, रुत्त बसन्ती इक्क सुहांयदा। लेखा चुक्के खाणी जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज मेट मिटांयदा। कलिजुग औध गई हंढ, अन्त बुढेपा आंयदा। जन भगतां पाए आत्म ठंड, हरि साचा जोत जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग काया सोग मनांयदा। कलिजुग काला प्या सोग, तन चिन्ता मन वैरानया। अन्त ना मिले साची चोग, चारों कुंट होए बौरानया। जूठा झूठा भोगया भोग, नाल रलाया पंज शैतानया। दर घर साचे होया वियोग, मिल्या नाम ना धुर निशानया। दूई द्वैती लग्गा रोग, हउमे हँगता मारे कानया। मिल्या मेल ना धुर संयोग, गाया राग ना साची बाणीआ। पाया दरस ना हरि अमोघ, मिल्या मेल ना गुण निधानया। अन्त निखुट्टी मात चोग, चारों कुन्ट होए वैरानया। लक्ख चुरासी देवे झोक, मेट मिटाए जेरज खाणीआ। हरि हरि भाणा कोए ना सके रोक, ग्रन्थी पन्थी वेद पुराणया। जन भगतां सुणाए इक्क सलोक, हरि सोहँ धुर फ़रमाणया। अन्तिम वेले देवे मोख, गुर चरन ध्यान रखानया। कूड़ कुड़यारा मेटे दोख, मेल मिलाए साचे हाणीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत

सम्मती आप पछाणया। सम्मत तेरां तेरा रंग, प्रभ आपणा आप वखांयदा। सन्त द्वारे वेखे लँघ, साचा दर ना कोई सुहांयदा। माया ममता वेख पलँघ, जूठा झूठा आसण लांयदा। जगत विकारा होया नंग, साचा संग ना कोई निभांयदा। शब्द घोड़े कसया तंग, किला कोट हँकारी गढ़ प्रभ आपे ढांयदा। सोहँ फड़या हथ्थ मृदंग, उप्पर चढ़ आप वजांयदा। लक्ख चुरासी होणी भंग, सीस धड़ आप कटांयदा। कलिजुग काया भन्ने काची वंग, नाम हथौड़ा एका लांयदा। जन भगतां होए अंग संग, मिट्ठा कौड़ा वेख वखांयदा। दर दुआरा जाए लँघ, आप आपणा मुख वखांयदा। मंगणहारा एका मंग, हरि साची मंग मंगांयदा। कट्टणहारा भुक्ख नंग, भगत भण्डारी आप हो आंयदा। मानस जन्म ना होए भंग, जो जन साची सेव कमांयदा। कलिजुग माया लाए डंग, प्रभ साचा दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे जगत वर, वर दाता आप अख्वांयदा। हरिजन साचे सच दुलार, कलिजुग अन्त मिले वधाईआ। प्रगट होया नर निरँकार, जोती जोत करे रुशनाईआ। शब्द धारा अपर अपार, वरन गोत रिहा मिटाईआ। नाम खण्डा तेज कटार, आप आपणे हथ्थ उठाईआ। पावे वंडां विच संसार, ब्रह्मण्डां रिहा हिलाईआ। जन भगतां करे ख़बरदार, कलिजुग वेला अन्तिम दए दुहाईआ। ना कोई दिसे मीत मुरार, सगला संग ना कोई निभाईआ। झूठा नाता नार भतार, वेले अन्त ना कोई सहाईआ। पुरख अबिनाशी सांझा यार, चार वरनां आप अख्वाईआ। कलिजुग कर्मा रिहा विचार, सोहँ खण्डा मात लगाईआ। आपे देवे इक्क हुलार, पुन्न पाप हरि वेख वखाईआ। साचा तोला तोलणहार, सम्मत तेरां तोल तुलाईआ। नानक बोला बोलणहार, एका बोला रिहा कराईआ। काया चोला विच संसार, प्रभ साचा दए तजाईआ। खेले होला अपर अपार, लाल रंग इक्क चढ़ाईआ। डोला चुक्के वारो वार, लाड़ी मौत सेवा लाईआ। चारे कूटां कर त्यार, वेख वखाए थाउँ थाँईंआ। राए धर्म खोल्हे बन्द किवाड़, चित्रगुप्त वेख वखाईआ। गुरमुख साचा सन्त दुलार, प्रभ चरनां बैठा ओट तकाईआ। पुरख अबिनाशी पावे सार, तन नगारे शब्द चोट लगाईआ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, सम्मत तेरां छब्बी पोह वज्जी वधाईआ। गुर गोबिन्दा काया कर आकार, निर्मल जोती रिहा जगाईआ। शब्द डंका अपर अपार, राउ रंकां रिहा सुणाईआ। आप सुहाए द्वार बंका, प्रभ बैठा आसण लाईआ। पन्थ ख़ालसा तेरा कढ्ढे शंका, पहली चेत्र लेख लिखाईआ। जन भगतां फेरे मन का मणका, सोहँ धागे सूत्र आप पवाईआ। हरि दासी दास हरि जन जनका, दर द्वारे सेव कमाईआ। प्रगट होए वासी पुरी घनका, कलिजुग अन्त दए वड्याईआ। जन भगतां आत्म जोती लाए तनका, चरन द्वारे खिच्च ल्याए वाहो दाहीआ। होए भिखार सनक सननका, सुकन्दन बैठे मुख शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ

रक्खे वड्याईआ। हरि हथ्थ वड्याई, जुग जुग बणत बणाए। सतिजुग रथ आप चलाई, आपणा भेख वटाए। मच्छ कच्छ हरि जोत प्रगटाई, बराह रूप समाए। महिंमा अकथना अकथ चलाई, जुग जुग लेखा रिहा लिखाईआ। राम रामा रघुपत अख्वाई, नेत्र नीर रिहा वहाईआ। गुर वशिष्ट दे मति रिहा समझाई, साची सिख्या इक्क जणाईआ। त्रेता तेरा रथ चलाई, रिग वेद नाल रलाईआ। कलिजुग अन्तिम मथ वखाई, प्रभ साचे बणत बणाईआ। द्वापर हरि हरि नत्थ पवाई, काहना कृष्ना रूप वटाईआ। अर्जन सेवा आपणे हथ्थ कमाई, रथ रथवान आप अख्वाईआ। जीव जन्त सत्थ विछाई, चिट्टी चादर एका पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग खेले खेल, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। हरि हथ्थ वड्याईआ, कृष्ना लए उभार। सोलां कल जोत जगाईआ, आप आपणा मात उभार। आप आपणा भेव छुपाईआ, अकल कला हरि अपार। नौ खण्ड सत्त दीपां वंड वंडाईआ, तीर निशाना एका मार। दीपत लज्जया आप रखाईआ, बिप्पर सुदामा दित्ता तार। घर बिदर भोग लगाईआ, कलि सुत्ता पैर पसार। दर्योधन हँकार गंवाईआ, पंजे पांडो लए उभार। कलिजुग अन्तिम जोत जगाईआ, प्रभ खेले खेल अपार। संग मुहम्मद जोड़ जुड़ाईआ, मीत मुरारा सांझा यार। अल्ला राणी नाल प्रनाईआ, विच विच्चोला आप करतार। गुर नानक धार बंधाईआ, गाया निरँकार निरँकार। एका जोत आप जगाईआ, अंगद अमरा होया पार। राम दासे हरि सरनाईआ, अर्जन भेख भिखार। गुर गोबिन्दा भेव ना राईआ, हरि बख्शिंदा विच संसार। हरि गोबिन्दे सिर हथ्थ टिकाईआ, हरि राए प्रभ कर प्यार। दे मति समझाईआ, बाली बुध पावे सार। हरिकृष्न रिहा तराईआ, तेग बहादर । चिट्टी चादर इक्क विछाईआ, भारत खण्डी लए उभार। गुर गोबिन्दा साचा पूत उपाईआ, सिर तोड़ा कल्गी सीस दस्तार। हरि जोती मेल मिलाईआ, गुर संगत तेरा इक्क प्यार। लक्ख चुरासी वेख वखाईआ, खिच्चे तीर पहली वार। रसना चिले रिहा चढ़ाईआ, प्रभ खिच्चे आप करतार। बूरे कक्के बिल्ले रिहा हिलाईआ, दूर दुराडा बैठा मारे मार। शब्द सिँघासण इक्क विछाईआ, नौ खण्ड नौ द्वारे पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत मंगण आया दर, हरि बणया भेख भिखार। गुर संगत दर मंगण आया, गुणवन्ता गुण निधानी। आपणी जोती चोली रंगण आया, लै के शब्द निशानी। साचा कंगण गुरसिक्खां तन पहनावण आया, धुर दरगाही एका बाणी। शब्द घोड़े तंग कसावण आया, घर चौथे पद निरबानी। कलिजुग तेरा अन्तिम वेखण जंगण आया, सतिसंग वखाए एका मात निशानी। भारत खण्ड तेरी वंड वंडण आया, जोद्धा सूर बली बलवानी। मनमुखां जीआं अन्तिम दंडण आया, खिच्चे इक्क कटार म्यानी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत सुहाए इक्क दर, आपणी आप करे कुरबानी। आपणा

आप कर कुरबान, आपणी देह तजाईआ। घविंड पिण्ड इक्क निशान, प्रभ साचा बैठा ढेर रखाईआ। जोती जगे मात महान, गुर गोबिन्दे विच टिकाईआ। नौवां खण्डां आप झुलाए इक्क निशान, सत्तां दीपां बणत बणाईआ। गुरमुख बिठाए विच बिबाण, प्रभ साचा आप उडाईआ। ब्रह्मा शिव पए राह तकान, गुरसिख केहड़े रसते जाईआ। धर्म राए नेत्र दर शरमाण, दूर बैठा मुख छुपाईआ। सिँघ मनजीता इक्क जवान, साढे तिन्न हथ्थ वंड वंडाईआ। साढे तिन्न हथ्थ सीआं सच मकान, जगत जगदीसा घर साचे ल्या बणाईआ। इन्द इन्द्रासण होया हैरान, पुरी इन्द्र अन्त तजाईआ। करोड़ तेतीसा मिटे निशान, छत्र सीस ना कोए झुलाईआ। नौ द्वारे जगत मकान, जगत जगदीसा रिहा खुल्हाईआ। कलिजुग तेरा अन्त फनाह मकान, नगर खेड़ा शहर रहिण ना पाईआ। गुरमुख साचे साचा मेला विच जहान, प्रभ आप आपणा मेल मिलाईआ। सोहँ देवे धुर फ़रमाण, गुर चेला आप अख्वाईआ। आपे मेला मेली मेल जाणी जाण, भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत मंगण आया वर, एका वर सच्ची सरनाईआ। सच सरनाई हरि हरि, आप आपणी आप रखांयदा। नौ द्वारे खोल्ह दर, दर दरवेशा बणत बणांयदा। गुरमुखां अमृत आत्म भण्डारे रिहा भर, साचा कलस हथ्थ उठांयदा। ना जन्मे ना जाए मर, आदि अन्त एका रंग समांयदा। कलिजुग पापी आए दर, द्वारे मुख शरमांयदा। सतिजुग साचा मंगे वर, अग्गे झोली डांयदा। पुरख अबिनाशी किरपा कर, गुरमुखां लड़ फड़ांयदा। साचे पौड़े जाणा चढ़, ब्रह्मण गौड़े जोड़ जुड़ांयदा। ना कोई हुक्का नड़, पान खान ना रसन लगांयदा। आप उखेड़े सभ दी जड़्ह, मदिरा मास ना कोए मुख लगांयदा। प्रभ मेट मिटाए फड़ फड़, सम्मत तेरां तेरा लेख लिखांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां अन्दर वड़, ऊँचां नीचां राज राजानां शाह सुल्तानां आप हिलांयदा। आप वेखे मुगल पठाना, फड़ बाहों आप उठांयदा। आप उठाए सत्तर लक्ख, आपे पति लए रक्ख, माझा देस उडे कक्ख, प्रभ साची रचन रचांयदा। पुरख अबिनाशी प्रगट होए मात प्रतक्ख, सर अमृत कर देवे जगत नालों वक्ख, लक्ख हथ्थ ना आंयदा। गुरदर मन्दिर अन्दर होइण सख, ग्रन्थी पन्थी ना कोए संख वजांयदा। गुरमुखां पति लए रख, सम्मत चौदां वक्त सुहांयदा। पहली चेत्र हो प्रगट प्रतक्ख, घर घर लेख लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत मंगण आया वर, अग्गे आपणी झोली डांयदा। हरि साजण जग मीत, भगत द्वारे आया। एका मंगे चरन प्रीत, आपणा पल्लू अग्गे डाहया। काया करे ठण्ढी सीत, पहली चेत्र ख़ुशीआं नाल मनाया। एका गाओ सुहागी गीत, सोहँ जै जैकार कराया। गुरसिख काया पतित पुनीत, प्रभ नेत्र दर्शन पाया। ना कोई देहुरा गुरदुआरा मन्दिर मसीत, शिवदवाला मट्ठ ना कोई वखाया। गुरमुख साचे चेतन्न चीत, काया खेत हरि डेरा

लाया। दरस दिखाए नेतन नेत, जन भगतां करे साचा हेत, आप आपणे अंग लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत मंगण आया दर, दर द्वारे डेरा लाया। मंगण आया बण भिखारी, धुर दरगाही हरि सवाली। जन भगतां करे जगत प्यारी, जोत सरूप जोत अकाली। करे खेल पहली वारी, कलिजुग अन्तिम मेटे घटा काली। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आपे भरया आपे खाली। खाली भरे भण्डार, हरि भगवन्तया। गुरमुखां पैज संवार, देवे माण जीव जन जन्तया। सम्मत चौदां चोर विचार, चौदां हट्टां वेख वखन्तया। तीर्थ तट्टां पावे सार, अट्ठ सट्ठां मेट मिटन्तया। आए नठ्ठा विच संसार, पंचम जेठा रूप वटन्तया। छब्बी पोह दिवस अपार, हरि जोती भेख वटन्तया। गुर गोबिन्दे कर प्यार, आपणे अंग लगन्तया। आपे चेला हरि निरँकार, गोबिन्द काया विच बसन्तया। गोबिन्द काया गुर दरबार, जगत अकार हरि वखन्तया। जोत सरूपी हरि निराधार, निरवैर रूप समवन्तया। शब्द सरूपी कर जैकार, आप आपणा भेव खुलन्तया। जन भगतां करे मात प्यार, लोकमाती वेख वखन्तया। सोलां करे तन श्रृंगार, हरि साचा रूप चढ़न्तया। पुरख अगम्मा अगम्मड़ी कार, कारज आपणे हथ्थ रखन्तया। आपे पैज रिहा संवार, लहिणा देणा मूल चुकन्तया। साचा मेला मीत मुरार, हरि मेली मेल मिलन्तया। लक्ख चुरासी होए ख्वार, कलि हाहाकार करन्तया। जन भगतां सुहाए इक्क द्वार, हरि साचा जुगा जुगन्तया। आपे जाए दर दरबार, देवे दरस बेअन्तया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे दर, सुणे सच बेनन्तया। सच बेनन्ती चरन द्वार, हरि आपे आप सुणांयदा। गुरमुखां करे मात प्यार, आपणी दया कमांयदा। भाग लगाए बंक द्वार, बंक द्वारी आप हो जांयदा। दर दर घर घर वेखे फेरा मार, सेवक सेवा आप कमांयदा। देवी देवा वड गिरधार, अमृत मेवा फड़ ख्वांयदा। रसना जिह्वा हरि उचार, हरिजन साचा सेव कमांयदा। कौस्तक मणीआ मस्तक थेवा अपर अपार, जोत लिलाटी आप जगांयदा। अलख अभेवा मेल करतार, औखी घाटी आप चढ़ांयदा। सेवक सेवा सेवणहार, साची सेवा आप लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत चौदां वेख वखांयदा। सम्मत तेरां गया लँघ, सुत्ती रही लोकाईआ। सन्त सुहेले सुत्ते माया रंगीले इक्क पलँघ, ना कोई सोया रिहा उठाईआ। आत्म अन्तर भुक्ख नंग, हरि वस्त हथ्थ ना आईआ। माया ममता ताप खंघ, हउमे रोग वधाईआ। नौ द्वारे लग्गा रहे जंग, दिवस रैण लड़ाईआ। पंचम मंगण साची मंग, काम क्रोध लोभ मोह हलकाईआ। तामस तृष्ना होई संग, पल्ला रही फिराईआ। जगत जंजाला मारे डंग, झूठी विष्ना रही चढ़ाईआ। काया कोट दिसे नंग, तन बस्त्र ना कोए छुहाईआ। मानस देही होई भंग, जिह्वा काग वांग कुरलाईआ। अनहद ना वज्जे हरि मृदंग, शब्द ताल ना कोए

सुणाईआ। सुरत सवाणी हीर स्यालण झंग, बिन रांझन दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन वेखे काया घर, सुंञी सेजा इक्क विछाईआ। सुंञी सेजा इक्क विछाई, सन्तन भेव ना पाया। रसना जिह्वा रही कुरलाई, पढ़ पढ़ वाद वधाया। एका गुर एका हरि एका एक मिले सरनाई, आप आपणा राह चलाया। गुर शब्द ना वज्जे घर वधाई, मंगलाचार ना कोए कराया। आत्मक धुन ना देवे कोए जणाई, सुन्न मुन ना कोए तुड़ाया। आपे जाणे सभ दे गुण, अवगुण सके ना कोए छुपाया। सन्त सुहेले छाण पुण, प्रभ साचा लेखा रिहा लिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे वेखणहार, दर द्वार फेरा पाया। सिँघ ईश्र जगत दुकान, प्रभ साचे वेख वखाईआ। नाल रलाए पंज शैतान, डोरी पंजां हथ्थ फड़ाईआ। पंजे होए बेईमान, गुरबाणी मूल ना भाईआ। नानक पाया पद निरबाण, निरगुण रूप समाईआ। ईश्र अक्खर आया ना इक्क ध्यान, एका दूजा ना भेव चुकाईआ। चोटी चढ़ ना वेख्या सिखर, जड़्ह हेठां बैठा सिर दबाईआ। उप्पर टिकाया हरि जी पत्थर, मानस देही लथ्थी सथ्थर, ना सके कोई बचाईआ। अन्तिम वेले नीर वहावे अथ्थर, धर्म राए दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लहिणा देणा अगला पिछला मूल, कलिजुग करजा रिहा चुकाईआ। सिँघ रणधीर ना कोई देवे धीर, आत्म होई बौरानया। पंचम मीता ना मिल्या साचा तीर, मारे पंज शैतानया। तन बस्त्र पाए चीर, होया जगत दिवानया। वेला अन्त अखीर, ना मिल्या मेल भगवानया। गुर गोबिन्द अमृत आत्म ना देवे सीर, दर आया ना मात पछानया। अन्तिम हड्डी टुट्टी रीड़, लक्ख चुरासी आप भवानया। कोए ना बन्न्हे तेरी बीड़, हरि साचा लेख लिखानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुनेहड़ा देवे वर, कलिजुग लै के आए दर, साची दरगाह ना होए परवानया। सिँघ मेहर मनमति कमाई। गुरमति हथ्थ ना आई। सिँघ बग्गे लाज लगाई। तन तग्गे ना कोए बंधाई। चिट्टे झग्गे जगत वखाई। चिट्टी पग्गे दाग़ लवाई। उप्पर शाह रगे भेव ना राई। हरि सरबगे दरस ना पाई। माया ममता अग्नी दगे, गुर के बचन जाणे कच्चे, कच्चा भाण्डा वस्त ना समाईआ। नौ द्वारे बहि बहि नच्चे, जोत निरँजण नज़र ना आईआ। आपे होई नार जचे, साचा पूत जगत अवधूत ना आपणी गोद उठाईआ। पुरख अबिनाशी करे निबेड़ा सच्चो सच्चे, अन्तिम लहिणा देण चुकाईआ। गुर पीर ना कोई रक्खे, गुर पूरा बैठा मुख छुपाईआं। नौ द्वारे लौंदे भक्खे, चारों कुन्ट अग्नी ताईआ। काया गागरीआ भाण्डे सखे, सच वस्त ना कोए टिकाईआ। मिल्या मेल ना अलखणा अलक्खे, दर द्वारे एका अलख ना नाउँ जगाईआ। आपे परखणहारा अन्तिम परखे, नाम घसवटी इक्क रखाईआ। ना कोई सोग ना कोई हरखे, आपणा दर कुआड़ा आपे बन्द कराईआ। अन्तिम वेले पाए नर्के, तन कौडीउँ हट्ट विकाईआ।

२६७ ०६

एका जून पए घर खर के, दिवस रैण भार उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे वर जगत दर, भुल्लया कोए रहिण ना पाईआ। गुरचरन चरन ना मिली टेक, आत्म जोत जगाईआ। नेत्र नैण ना ल्या वेख, जोत निरँजण होई कुड़माईआ। ना सावण वाचे लिख्या लेख, सावण सुरती सुरत रमाईआ। सतिगुर बणया धारी भेख, पूरे सतिगुर एका ओट जणाईआ। पहली चेत्र आउणा लेख, दर द्वारे लैणा पेख, जगत विद्या ना चले चतुराईआ। मस्तक लहिणा देणा लाए मेख, कोई सके ना मात मिटाईआ। जोती जामा हरि हरि धरया भेस, भेखाधारी भेख ना छुपाईआ। आपे आया दर दरवेश, लोक लज्जया ना कोए रखाईआ। अन्तिम वेले लए वेख, सम्मत सोलां मूल ना भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दर घर घर वेख वखाणे, नर हरि जाणे बेपछाणे ना कोए जणाईआ। सिँघ तेज जग वेख तेज, जगत नाम उजागर। प्रभ ना मिली साची सेज, ना मिल्या सच सौदागर। शब्द सुनेहड़ा रिहा भेज, काया गागर करनी निर्मल उजागर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन वेखे एका घर, रत्ती नाम रक्खे रत्नगार। सिँघ लाभ हरि नाभ वखाणे, उलटा कँवल भवाए ना। दो दो आब अमृत बूंद चुआणे, सांतक सांत रखाए ना। आपे जाणे आपणे भाणे, भाणे विच एका टेक रघुराए ना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन वेखे नौ दर, दर दरवाज़ा फोल फुलाए ना। सिँघ हरनाम पल्ले दिसे ना नाम, काया झूठा चाम अन्तिम कम्म ना आवणा। कलिजुग मिटे अन्धेरी शाम, ममता मदि पीता जाम, अन्तिम मिटे तामना। प्रगट होया गोबिन्द राम, राम रामा हरि सुहावणा। जन भगतां देवे नाम निधान, पूर कराए कामना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन वेखे खाली दर, दर दुआरा मूल ना भावणा। कृपाल दयाल ना मेल मिलाई, रसना गायण गुणचारी। दीन दयाल बैठा मुख छुपाई, उच्च महल्ल अटल चुबारी। दिवस रैण तन दुःख लगाई, मति बुध कर कर थक्की आप विचारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्तिम मेला एका वार, होए जमन किनारी। सन्त फकीर लथ्थे चीर, सीस चीरा कोई बंधाए ना। मानस देही अन्त अख़ीर, लक्ख चुरासी वज्झा जंजीर, कलिजुग फाही कोई तुड़ाई ना। वेले अन्त आए भीड़, कोई ना बन्ने किसे बीड़, ना दूसर कोई सहाई ना। हउँ हउँ हँगता लग्गी पीड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाणे हर घट जाणे छुपया रहिण कोई पाए ना।

प्रभ अबिनाशी जोत जगा, जागरत दिशा वखाईआ। राज राजानां आप उठा, शब्द सुनेहड़ा रिहा जणाईआ। शाह

संगरूर वेख वखा, मुबारक कोठी चरन छुहाईआ। शब्द सुनेहड़ा दए पुजा, अहिलकारां रिहा समझाईआ। सीस दस्तार इक्क टिका, पिछला मूल चुकाईआ। तख्त ताज आप गंवा, गुर चरन राह वखाईआ। अन्तिम आउणा वाहो वाह, हरि साचा मेल मिलाईआ। शाह पटियाला वेख वखा, हरि आपणी बूझ बुझाईआ। मोती बाग चरन टिका, सच महल्ले लेख लिखाईआ। गुर गोबिन्दा नाम जणा, आपणा भेव खुल्हाईआ। आपे देवे पर्दा पा, सार रहे ना राईआ। दोए जोड़ रिहा सुणा, चरनी सीस झुकाईआ। प्रभ अबिनाशी रिहा जणा, गुर संगत वड वड्याईआ। वेले अन्तिम पकड़े बांह, गुरमुख लज्जया आप रखाईआ। सीस दस्तार देवे ठण्ढी छाँ, गुरसिख सज्जणा चाँईं चाँईंआ। लेखे लाए एका नाँ, लिखणहार आप अख्वाईआ। मस्तूआणा साचा थाँ, सच निशाना रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कोट फरीदे रिहा उठाईआ। कोट फरीदे मुक्का पन्ध, प्रभ साचे अन्त मुकाया। किला द्वारी वज्जा जंद, बाहर डेरा लाया। दर दरबान ना कोई दिसे राज ताज ना दिसे चन्द, प्रभ साचा मेट मिटाया। इक्क द्वारी चढ़या चन्द, कलिजुग दए अन्धेर मिटाया। शब्द सुहागी सुणाए छन्द, नंगी पैरीं फेरा पाया। अन्तिम तोड़े बन्दी बन्द, बन्दी तोड़ आप अख्वाया। दर दरबान आत्म अन्ध, भेव किसे ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आवण जावण पतित पावण आपणा पन्ध मुकाया। थल कपूर हाज़र हज़ूर, हरि साचे जोत सवाईआ। कलिजुग पैंडा नेड़े दूर, आपे रिहा वखाईआ। नाम भण्डारा हरि भरपूर, एका एक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पार ब्यास पूरन आस, देवे चरन छुहाईआ। सम्मत तेरां रिहा निरास, साधां सन्तां सार ना पाईआ। राज राजानां कोई ना करे बन्द खुलास, हरि बंधन बंध बंधाईआ। राजिन्दर हरि वेखे वास, दर साचा वेख वखाईआ। आपे बणया लेख लिखास, शब्द सुनेहड़ा जगत जणाईआ। प्रगट होया हरि गुणतास, निहकलंका डंक वजाईआ। राउ रंकां देवे शब्द सास ग्रास, काया तृप्त रिहा कराईआ। नाता तुट्टे मदिरा मास, राज राजानां रिहा जणाईआ। अन्त बुझाए आप प्यास, जमन किनारा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत तेरां तेरी धार, हरि साचे आप तुलाईआ। सम्मत तेरां तोल अतोल, बण के आया तोला। आप निभाए साचा कौल, नानक रसना बोला। साध सन्त रिहा डावां डोल, वेखे खेल काया चोला। गुरमुख रखाए आप अनभोल, देवे नाम अनमोला। सच वस्त हरि रक्खे कोल, कलधारी कल सोला। सच भण्डारा देवे खोल्ह, सोहँ सच्चा बोला। आप वजाए आपणा ढोल, कलिजुग वेखे होला। नौ खण्ड पृथ्वी रच्चया घोल, सत्तां दीपां लाहे चोला। धरतमात वेखे ढोल, प्रभ अबिनाशी आला भोला। लक्ख चुरासी देवे रोल, गुरमुख विरला चरन प्रीती घोल घोला। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए भगत विच्चोला। भगत विच्चोला आप प्रभ, अन्तिम सखा सखाईआ। शब्द बोला आप प्रभ, घर साचे वज्जे वधाईआ। सोहँ ढोला आप प्रभ, साची रसना रिहा गाईआ। दर दुआरा खोल्ह आप प्रभ, हट्ट हटवाणा आप अख्वाईआ। काया चोला आप प्रभ, विच बैठा आसण लाईआ। कला सोलां आप प्रभ, अनक कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, सम्मत चौदां तेरी वंड, गुरमुखां रिहा वंडाईआ। सम्मत चौदां पहली वंड, पहली चेत्र आप करांयदा। आपे वेखे विच ब्रह्मण्ड, वरभण्डी रचन रचांयदा। गुरमुखां अन्तिम पाए ठण्ढ, सीतल धारा आप वहांयदा। पल्ले बन्न्हे नाम गंढु, आपणी हथ्थीं झोली पांयदा। पहली चेत्र पाई वंड, गुरमुख साचे दर सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी दया कमांयदा। पहली चेत्र कर त्यारी, हरि जोती जोत जगाईआ। शब्द घोड़े कर अस्वारी, सोलां कलीआं आसण लाईआ। शब्द खण्डा अपर अपारी, हरि आपणे तन सजाईआ। कल्गी तोड़ा नाउँ निरँकारी, जगत जगदीश सिर टिकाईआ। फेरा पाए पहली वारी, साची लेख लिख्त लिखाईआ। गगो बूआ हरि निरँकारी, गुर संगत आप तराईआ। सिँघ दलीप वेख विचारी, घर साचे आसण लाईआ। एका इक्की पाए पहली वारी, दु:ख भुक्ख रिहा मिटाईआ। दूजी चेत्र कर त्यारी, सिँघ मनी करे कुड़माईआ। मनी राम तेरी पैज संवारी, सिद्धम डेरा लाईआ। आवे जावे पावे सारी, भुल्ल रहे ना राईआ। पावे मुल्ल वड दरबारी, साचा वणज कराईआ। लोकमात ना आए हारी, साचा धाम सुहाईआ। तन पहनाए शब्द कटारी, दिवस रैण होए सहाईआ। तीजी चेत्र कर त्यारी, चिट्टा अस्व रिहा दुड़ाईआ। सिँघ इन्द्र हरि दरस अपारी, आपणा आप कराईआ। जगे जोत हरि निरँकारी, गुरमुखां मेल कराईआ। पिण्ड बंडाला सहिज सुखदारी, गऊ ग़रीबां मात दवाईआ। आपे वेखे उच्चे टिल्ले चढ़ अटारी, मन्दिर अन्दर सेज विछाईआ। चौथी चेत्र हरि निरँकारी, हरि आपणा कदम उठाईआ। चम्बल डेरा लाए भारी, सिँघ तारा गोद उठाईआ। नाल रलाए संगत सारी, मेला सहिज सुभाईआ। दर दुआरा खोल्ह कुआड़ी पिच्छे अगाड़ी आप हो जाईआ। पक्की फसल अन्तिम हाढ़ी, प्रभ साचा फल खवाईआ। रक्खे लाज चरन छुहाए दाढ़ी, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पार ब्यासों डेरा लाईआ। पंचम चेत्र चेतन्न चित, गुरमुख आप जगांयदा। सिँघ गुरदयाल हरि नेत्र वेख, आपणा रूप वटांयदा। ग़रीब निमाणयां लिखे लेख, रामूआणे चरन छुहांयदा। जोती जामा धर धर भेख, गऊ ग़रीबां गले लगांयदा। मस्तक टिक्का लाए मेख, राज राजानां ख़ाक मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, छे चेत्र आपणा मुख वखांयदा। पुर फिरोज ग्वाल टोली, राम सिँघ प्रभ रंगे काया चोली। आत्म पड़दा रिहा खोल्ही। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,

२६६
०६

आप उठाए साची डोली। सत्त चेत हरि कर त्यारी। गुर संगत कराए जै जै जैकारी। मंगण मंग बण भिखारी। रंगत रंग रंगे हरि ललारी। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। नाथे वाली धर्म अखाड़ी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे पाए वंडी विच वरभण्डी खेले खेल अपर अपारी। सत्त चेत हरि चरन छुहाए, सिँघ नाजर हरि पैर रखाए। इक्की जेठ वेख वखा के। त्रैगुण माया मट्ठ तपा के। अट्ठ सट्ठ तीर्थ धाम मिटा के। हरि गोबिन्दा सेवा ला के। गुर गोबिन्दा जोत जगा के। डल्ला झल्ला पकड़ उठा के। आप आपणा साथ निभा के। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम देवे वर, संगी साथी आप अख्वा के। अट्ठ चेत्र हरि कर विचार। गुरमुखां मानस जन्म दए सुधार। लेख लिखाए अपर अपार। चारे कुन्टां उठ उठ वेखे, सन्त सुहेले मीत मुरार। गुरमुख विरला नेत्र पेखे, लक्ख चुरासी सुत्ती पैर पसार। आपे जाणे बिधना लेखे, पूर्ब कर्मां रिहा विचार। दूर कराए भरम भुलेखे, हउमे हँगता रोग निवार। नौ चेत हरि धारी केसे, आपे जाणे आपणी धार। नौ दर ना दस दस्मेसे, दर दरवाज़ा बन्द कुआड़। सृष्ट सबाई आपे वेखे, वेखणहारा सर्ब संसार। भगत निमाणे लिखे लेखे, लेख लिखारी आप दातार। सिँघ बग्गा दर दुआरा नेत्र पेखे, चरन छुहाए हरि निरँकार। पिण्ड नात हरि मार झात। गुरमुख साचे जाए तार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अपर अपार। दस चेत प्रभ जाए उठ। पिण्ड अजनौध जाए तुट्ठ। शब्द फौज एका मुट्ठ। गुरमुख मौज तीजी गुट्ठ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मनमुखां हथ्थ फड़ाए ठुट्ठ। हरि हरबंस हरि गुण गाया। साची अंस आप बणाया। सतिजुग तेरा सच सरबंस, चार वरनां रिहा कराया। हरिजन साचे राजहँस, सोहँ मोती चोग चुगाया। पंच सँघारे काहना कंस, हरि कृष्ना रूप वटाया। गुरमुख गाए रसना सहँस, सहँसर नामा आप जपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे रिहा जगाया। ग्यारां चेत ग्यारवीं थित, हरि साचे आप विचारया। हरिजन मेला नित नवित्त, खेले खेल अपारया। भगतन मीता करे हित, पिण्ड रंगील पुर नाउँ उचारया। सिँघ जागीरा चेतन्न चित, हरि चेतन्न रूप समा रिहा। वेखणहारा काया खेत, फल फुलवाड़ी आप लगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग विछड़े मेल मिला रिहा। चेत्र बारां आपे बन्न्हे आपणी धार, पुर हुश्यार वधाईआ। ज्ञान चन्द सुण पुकार, मिरज़ापुर चरन छुहाईआ। देवे दरस अगम्म अपार, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गऊ ग़रीबां पार कराईआ। बारां बारां इक्क प्यारा, एका होए जणाईआ। साचा मेला कन्ती नारा, नारी कन्ता आप अख्वाईआ। रुत्त बसन्ता धुर दरबारा, फल फुलवाड़ी आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,

२७१
०६

आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। तेरां चेत्र नेतन नेत, नित नित खुशी मनांयदा। जोती जामा धर धर पेख, भेखाधारी आप अख्वांयदा। आपे लिखणहारा लेख, जुग जुग लेख लिखांयदा। आपे मेटणहारा रेख, जुग रेखा मेट मिटांयदा। गुरमुख साचे नेत्र पेख, साची दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पिण्ड मुध डेरा लांयदा। पिण्ड मुध प्रभ करे सुध, गुरमुख आत्म रिहा जणाईआ। चिट्टे अस्व बहे कुद्द, दिवस रैण रिहा दुड़ाईआ। शब्द सरूप देवे सुध, सति सरूप आप अख्वाईआ। सृष्ट सबाई वेखे बुध, चारों कुन्ट पए दुहाईआ। गुरमुखां अमृत आत्म देवे साचा दुध्ध, हथ्थीं आपणी सीर प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चौदां चेत्र वेख वखाईआ। पन्दरां चेत हरि प्रबीना, आपणी बणत बणांयदा। रवीदास चुमारे ठांडा सीना, एका रंग चढ़ांयदा। पुर भलाई भन्ने हँकारी बीना, आपणा डंक वजांयदा। होए सुभागी चेत महीना, गुरमुख साचे दर सुहांयदा। आप सुणाए आपणा गीत, दूसर राग ना कोए अलांयदा। आपे होए भगत अधीना, दर साची सेव कमांयदा। आपे जाणे मरना जीणा, आपे आप उपांयदा। आपे होए तन मन भीन्ना, आपे सांतक सति वरतांयदा। आपे होए जल जल मीना, जल मच्छली नीर तरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दर साचा वेख वखांयदा। सोलां कलीआं तन श्रृंगार, प्रभ आपणा आप करांयदा। चेत्र सोलां हरि विचार, साचा डोला नाल उठांयदा। सोहँ बोला जै जैकार, एका एक करांयदा। अन्तिम होला विच संसार, एका वार वखांयदा। काया चोला अपर अपार, कलिजुग अन्त मिटांयदा। साचा गोला हरि निरँकार, गुरमुख साचे तोल तुलांयदा। पंज गराईआं चरन द्वार, सिँघ बंता मुख रखांयदा। आपे होए पतित अधार, जुग जुग कर्म कमांयदा। गुरमुख साजण मीत मुरार, एका धर्म वखांयदा। लज पति रक्खे विच संसार, साचा कर्म कमांयदा। सत्त सतारां करे प्यार, दस सत्त रूप वटांयदा। गुरमुख साचे दए उधार, भरमां वट्ट तुड़ांयदा। आप सुहाए बंक द्वार, सिँघ अजीत अतीत रखांयदा। सत्त सतारां पावे सार, मौज बहारां इक्क द्वार, हरि साचा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रचन रचांयदा। अट्ठ अठारां रिहा चुप्प, भूमली वेख वखाईआ। कलिजुग वेखे जेठ धुप्प, अन्ध अन्धेरी रैण छाईआ। आपे वेखे बैठ छुप, एका जोत जगाईआ। अन्तिम वेला रिहा ढुक, सिँघ करतार मिले वड्याईआ। चेत्र उन्नी वेखे मुख, सिँघ गिरधार पार कराईआ। पिण्ड वालीबलो उतरे भुक्ख, आपणा दरस दिखाईआ। चेत्र बीस हरि जगदीस, आपणा रंग रंगाईआ। आपे वेखे सिँघ बख्शीश, कादराबाद रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आवे जावे फेरा पाईआ। चेत्र इक्की इक्क विचार, प्रभ साचा खेल रचांयदा। गुरमुख सिक्खी तिक्खी धार, नीकन नीकी आप जणांयदा। नेत्र पेखी

हरि दातार, लेखन लेखी आप लिखांयदा। जोती जामा भेखन भेखी अपर अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप वटांयदा। इक्की चेत इक्क अकार, प्रभ आपणा आप करांयदा। गुरमुखां वेखे दर द्वार, आपे फेरा पांयदा। गुरमुख साचे सन्त दुलार, साची घोड़ी नाम चढ़ांयदा। जोड़ी जोड़े विच संसार, गुर चेले बणत बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्की चेत एका खेत, चार वरनां कर कर हेत, साचा धाम सुहांयदा। साचा धाम आप सुहाए, इक्की चेत्र वेख वखाईआ। जेठूवाल प्रभ डेरा लाए, नौ द्वारे द्वार वखाईआ। शब्द सिँघासण जोत

हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे थाउँ थाँईंआ। अल्लड़ पिंडी पाए वंड, कत्तक कर्म विचारना। आपे जाणे जेरज अंड, हरिजन साचे काज संवारना। मन मती हरि देवे दंड, गुर शब्दी पार उतारना। भगत सुहेला देवे ठण्ढ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे आर पारना। आप पार प्रभ वेख किनारा, कत्तक कर्म कमांयदा। आपे जाणे आपणी धारा, तेज भान तेरा तन मकान, आपे फोल फुलांयदा। विच कशमीर हरि अख़ीर, आपणा चरन टिकांयदा। सद चौदां मारे एका तीर, पीर फ़कीर हिलांयदा। गुरमुखां आपे कटे भीड़, अन्तिम बेड़ा बन्न्ह वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे नाम वर, सम्मत चौदां चन्द चढ़ांयदा। सम्मत चौदां चाढ़े चन्न, गुरमुख साचे विच संसारया। भरम गढ़ हँकारी भन्न, दीपक जोत करे उज्यारया। साचा देवे नाम धन, ना कोई लुट्टे चोर यारया। मातलोक ना लग्गे संन्ह, घर साचे आप टिका रिहा। भगत जनां हरि बेड़ा बन्न, पार किनारे आप उतारया। रसना कहिणा धन्न धन्न, हरि साचा सिरजनहारया। एका राग सुणाए कन्न, सोहँ साचा रसन उचारया। हरि हरि भाणा लैणा मन्न, एका इक्की एका वारया। मदिरा मासी देवे डन्न, ना खाए हरि भण्डारया। गुरमुख साचे जोत जगाए तन, साचा नूर करे उज्यारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, वणज वपारा इक्क करा रिहा। साची इक्की एका वार, प्रभ वेले अन्तिम पाईआ। तिक्खी रक्खी हरि हरि धार, मदिरा मासी भेव ना राईआ। लेख लिखी अपर अपार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। पहली चेत्र थित विचार, सम्मत ग्यारां आपे बणत बणाईआ। छब्बी पोह अन्त विहार, वीह सौ तेरां बिक्रमी आप कराईआ। गुरमुख साचे सन्त दुलार, साचे नाम धुर धुर धाम, लिख लिख लेख पुजाईआ। अमृत आत्म देवे साचा जाम, हरि साचा आप प्याईआ। एका मेला रमईआ राम, राम रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां दर घर साचे मेला सहिज सुभाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आपणी सेवा आपे रिहा लगाईआ।

✻ २७ पोह २०१३ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✻

गुरमुख गिरहा गोबिन्द गढ़, हरि साचे आप उसारया। आपे वेखे उत्ते चढ़, पारब्रह्म पुरख अपारया। महल्ल अटले बैठा वड़, ना कोई बणाए चार दिवारया। शब्द घाड़न साचा घड़, आप आपणा रूप वटा ल्या। आपे वेखे चेतन्न जड़, अस्थूल लेखे ला ल्या। सुरत सवाणी रिहा फड़, आपणा कर्म कमा ल्या। एका अक्खर रिहा पढ़, साचा मार्ग आप वखा ल्या। हरिजन लाए आपणे लड़, पल्ला आपणा नाम फड़ा ल्या। ना कोई जाणे सीस धड़, पंज तत्त हरि मुख छुपा ल्या। हरिजन साचे मन्दिर वड़, शब्द सिँघासण डेरा ला ल्या। दस्म द्वारी अग्गे खड़, गुरमुख साजण आप मिला ल्या। नाम रंगीले पलँघ उप्पर चढ़, हरि साची सेज हंढा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे सन्त दुलारे, आप कराए चरन प्यारे, साची सेवा इक्क जणा ल्या। हरिजन काया सच घर, प्रभ साचा आप सुहांयदा। आपे करे बन्द दर, आपणी हथ्थीं कुण्डा लाइन्दा। आपे बैठा अन्दर वड़, हरि साचा मुख छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत चौदां देवे वर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। सम्मत चौदां कर त्यारी, हरि चेतन्न रूप समाया। खड़ग खण्डा तेज कटारी, बस्त्र पीला तन छुहाया। चिट्टे अस्व कर अस्वारी, पार किनारा इक्क वखाया। जगे जोत नर निरँकारी, विष्नूं रूप समाया। ब्रह्मा वेखे हरि पुजारी, चारे मुख अट्ठे नेत्र रिहा उठाया। शिव शंकर रोवे ज़ारो ज़ारी, प्रभ साचे हुक्म सुणाया। करोड़ तेतीसा करे खेल हरि जगदीसा, सुरपति राजा इन्द हरि मेला गुणी गहिंद, अचरज खेल करे न्यारी। लोकमाती हरि मार झात, जन भगतां बणाए इक्क बरात, मस्तक टिक्का हथ्थीं मैहन्दी जोत ललाटी तिलक लगाए करे खेल न्यारी। नाम काना धरे हरि भगवाना, धुर फ़रमाणा आपणी हथ्थीं आप बंधाए, गुरमुख साचे सीस गुंदाए, एका छत्र झुलारी। बीस बीसा हरि रघुराए, इक्क इकीसा रिहा जगाए, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त वड्आए एका देवे नाम धन्ना, दर दर घर घर जाए वारो वारी। दर दर घर घर सेव कमाए, सेवक सेवादारी। गुरमुख साचे आप तराए, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। मनमुख जीवां रिहा डुबाए, मञ्झधार डूँघे सागर कोई ना पावे सारी। वेखे खेल काया गागर, अमृत ताल हरि सुहाया, निर्मल कर्म करे उजागर, हरिजन साचा मीत मुरारी। एका वणज आप कराए, गुरमुख बणना मात सौदागर, सोहँ साची वस्त वखाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, राउ रंका द्वार बंका एका अंका आदिन अन्ता रिहा उपजाई। आदिन अन्ता हरि भगवन्ता, एका जोत जगाईआ। हरिजन बणाए साची बणता, कलिजुग तेरी रेख मिटाईआ। सतिजुग तेरी बणाए बणता,

बणावणहार आप अख्वाईआ। जुग जुग महिंमा गणत अगणता, लेखा लिख ना सके राईआ। ना कोई जाणे काशी पंडता, वेद व्यासा गया लिखाईआ। हरिजन मेला साची संगता, कलिजुग तेरी रुत्त सुहाईआ। कट्टणहारा भुक्ख नंगता, गऊ ग़रीबां आपे गले लगाईआ। माया तोड़े हँकारी हँगता, हउमे रोग जलाईआ। दर द्वारे जो जन आए मंगता, प्रभ आत्म इच्छया पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे नाम वर, एका रक्खे हथ्थ वड्याईआ। सम्मत चौदां चढ़ना चन्द, हरि चन्दन टिक्का लांयदा। गुरमुखां खुशी कराए बन्द बन्द, एका सिक्का नाम चलांयदा। आप उपजाए परमानंद, निज़ानंद आप वखांयदा। रसन तजाए मदिरा मास गन्द, हरि बख्शिंद दया कमांयदा। दूई द्वैती ढाहे भरमां कंध, हरि एका धक्का लांयदा। शब्द सुणाए सुहागी छन्द, पंचम सखीआं नाल रलांयदा। बजर कपाटी तोड़े जंद, दीपक जोती इक्क जगांयदा। पंच विकारा खण्ड, खण्डा नाम एका वांहयदा। खेले खेल विच ब्रह्मण्ड, वरभण्डी लेख लिखांयदा। लक्ख चुरासी देवण आया दंड, लेखा कोए रहिण ना पांयदा। राज राजानां शाह सुल्तानां तोड़ घमंड, हरि एका डंका नाउँ वजांयदा। मनमुखां वढ्ढे अन्तिम कंड, चण्ड प्रचण्डा आप उठांयदा। गुरमुखां एका नाम देवे वंड, धुरदरगाही सच सुग़ात लिआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे इक्क वर, एका रंगण रंग चढ़ांयदा। काया रंगण साची चोली, प्रभ साचा आप रंगांयदा। मनमुखां व्याहे अन्तिम बोली, सोहँ डोली आप उठांयदा। गुरमुखां मिलाए हौली हौली, जुग जुग विछड़े मेल मिलांयदा। पूरे तोल रिहा तोल, तोलणहारा आप अख्वांयदा। लक्ख चुरासी होई गोली, राए धर्म हथ्थ फड़ांयदा। गुरमुख साचा सदा अडोल कदे ना डोली, धुर धरवास आप रखांयदा। सोहँ शब्द सुणाए साची बोली, सति पुरख निरँजण आपे आप अल्लांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम खेले होली, आप आपणी रचन रचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां आत्म वेखे दर, आप आपणी दया कमांयदा।

सति पुरख निरँजण जोत धर, सति धर्म रिहा झुलाईआ। वरन गोत इक्क कर, ऊँचा नीचां भेव मिटाईआ। मनमुख कोटी कोट कर, अन्तिम कलिजुग रिहा भुलाईआ। गुरमुख चोटी आप चढ़, सोया रिहा आप जगाईआ। नाम सोटी हथ्थ फड़, आपणे हथ्थ उठाईआ। एका अक्खर आपे पढ़, हरिजन साचे रिहा पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साची बणत बणाईआ। सति पुरख निरँजण कर आकारा, जोती नूर उपांयदा। आप आपणा कर पसारा, लक्ख चुरासी आप समांयदा। आपे वसया सभ तों बाहरा, हर घट रूप वटांयदा। जुग जुग लए मात अवतारा, जगत

जुगीशर आप अख्वांयदा। एका खोल्हे नाम भण्डारा, वड भण्डारी आप हो आंयदा। गुरमुख मंगण चरन दुआरा, साची भिच्छया झोली पांयदा। आपे देवे वारो वारा, दोवें हथ्थीं वंड वंडांयदा। मनमुख जीवां वढ्ढे कंड सोहँ फड़े तिक्खा आरा, लक्ख चुरासी चीर चिरांयदा। नाम खण्डा तेज कटारा, कक्खां कक्ख उडांयदा। वेद अथर्बण आई हारा, अल्ला नाअरा एका लांयदा। संग मुहम्मद यार चारा, हू हू कर कुरलांयदा। पीर पैगम्बर होवण छारा, प्रभ वेला अन्त लिआंयदा। अञ्जील कुरानां सुण पुकारा, सुन्नी सुन्नत मिटांयदा। ईसा वेखे अक्ख उग्घाड़ा, मूसा सीस झुकांयदा। यसू तेरा लम्बा दाहढ़ा, हरि आपणा चरन छुहांयदा। ज़िमी अस्मानां तुट्टे पाड़ा, हरि एका गढ़ बणांयदा। धरतमात तेरा जगत अखाड़ा, वरभण्डी आप बणांयदा। आप उठाए अगम्मी धाड़ा, दिस किसे ना आंयदा। लुट्टी जाए दिन दिहाड़ा, आपे लेख लिखांयदा। उच्चे टिल्ले वेखे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, डूँघी कन्दर फोल फुलांयदा। आप चबाए आपणी दाढ़ा, बेमुख कढ्ढे हाढ़ा, लक्ख चुरासी कोई ना अन्त बचांयदा। धुर दरगाही साचा लाड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका बणत बणांयदा। कलिजुग अन्तिम बणत बणाई, हरि साची जोत जगाईआ। सति पुरख निरँजण कर कुड़माई, हँगता विच समाईआ। दिवस रैण वज्जे वधाई, गुर गोबिन्दे होई कुड़माई, दर साचा मंगल गाईआ। लोकमात ना होए जुदाई, आपे मेले चाँईं चाँईं, दर द्वार बंक सुहाईआ। गुरमुखां पकड़ उठाए फड़ फड़ बांहीं, वेले अन्त कन्त सन्त भगवन्त जीव जन्त आपणी गोद उठाईआ। एका शब्द रसना जिह्वा जणाए मणीआ मंत, सोहँ ओअँ एका सो बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सारे सन्त दुलार, कर किरपा कलि जाए तार, एका रंगण नाम चढ़ाईआ। रंगण चाढ़े नाम गुलाला, हरि साचा रंगण आया। गुरमुख साचा छोटा बाला, प्रभ आपणी गोद उठाया। उप्पर देवे नाम दुशाला, दिस किसे ना आईआ। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाला, भेखाधारी भेख वटाया। आपे शाह आपे कंगाला, दर दरवेश दीन दयाला, एका एक जोत निरँजण हो प्रतक्ख गुरमुखां दर द्वार रिहा जगाया। राज राजानां दर दर घर घर करे सक्ख, गुरमुख साचे करे वक्ख, सम्मत चौदां लए रक्ख, प्रभ साचा लेख लिखाया। लक्ख चुरासी देवे मथ, मनमुख जीवां पावे नत्थ, प्रगट हो हरि समरथ, अचरज अचरज अचरज खेल रचाया। गुरमुखां देवे एका एक साची वत्थ, धुर दरगाही लै के आया। लेखा लेख चुक्के सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, आवण जावण डरन मरन गेड़ चुकाया। नाम चढ़ाए साचे रथ, साचा मार्ग रिहा चलाया। सगल वसूरे जायण लथ्थ, जिस जन दर द्वारे दर्शन पाया। जुग जुग महिंमा अकथना अकथ, कथनी कथ ना सके राया। जोती जोत हरि प्रतक्ख, कलिजुग रावण हरि हरि रामा अन्त मिटावण आया। लंका

गढ़ उडे कक्ख, साचा डोरू डंक वजावण आया। कोए ना सके किसे रक्ख, राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान बैठे मुख छुपाया। प्रगट हो हरि प्रतक्ख, गुरमुखां सिर रक्खे हथ्थ, पंचम जेठी मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप हो आया। नरायण नर हरि निरँकारा, जोती जोत सवाईआ। कलिजुग अन्तिम कर अकारा, गोबिन्द काया रूप वटाया। खेले खेल जगत खिलारा, वाली हिन्दे रिहा जगाईआ। पारब्रह्म प्रभ भेव अपारा, गुणी गहिंदे वड वड्याईआ। देवी देव करन निमस्कारा, करोड़ तेतीसा बैठे सिर झुकाईआ। शिव शंकर मंगे बण भिखारा, देवणहार हरि रघुराईआ। ब्रह्मा बणे लेख लिखारा, चार वेदां रिहा लिखाईआ। चारे वेद अन्त किनारा, प्रभ साचा रिहा कराईआ। इक्क कराए नाम जैकारा, लेखा लिख ना सके राईआ। जुग चौथे तेरी अन्तिम पावे सारा, अथर्बण अल्ला दए दुहाईआ। प्रगट होए नर अवतारा, इक्क इकल्ला जोत जगाईआ। पुरीआं लोआं दए हुलारा, ब्रह्मण्डी मेट मिटाईआ। आपे उत्पत कर संसारा, आपे लए खपाईआ। ब्रह्मा कँवला कर उसारा, अन्तिम आपे ढाहीआ। त्रैगुण माया तत्त निरँकारा, तत्त सति विच समाईआ। पंच तत्त हरि देह उधारा, वरभण्डी रचन रचाईआ। शब्द खण्डा तेज कटारा, वेले अन्तिम आपणा वाहीआ। लक्ख चुरासी कोए ना करे मात अधारा, कलिजुग मेटे लग्गी मस्तक छाहीआ। गुरमुखां बख्शे चरन प्यारा, हरि दाता धुरदरगाहीआ। सोहँ देवे भगत भण्डारा, जगत विद्या मूल चुकाईआ। एका आए एकँकारा, एका रूप समाईआ। चार वरन वसाए इक्क दुआरा, राउ रंक एका धाम सुहाईआ। आप लगाए सच दरबारा, सच सुल्तान आप हो जाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क घर बाहरा, सत्तां दीपां चार दिवार बणाईआ। एका छत्र झुल्ले सीस अपर अपारा, पंचम मुखी आप रखाईआ। गुरमुख साचे सन्त दुलारा, प्रभ आपणे रंग रंगाईआ। पंचां बन्ने सीस दस्तारा, सोहँ टिक्का मस्तक लाईआ। कलिजुग अन्तिम आई हारा, झूठा सिक्का रिहा मुकाईआ। सतिजुग आया दर दुआरा, प्रभ साची भिच्छया पाईआ। सोहँ भरया इक्क भण्डारा, गुरमुखां रिहा वरताईआ। सेवक सेवा करनेहारा, बाल अवस्था रिहा कमाईआ। देवी देव हरनेहारा, देवत देव आप हो जाईआ। जुग जुग करनी करनेहारा, करनहार आप अख्वाईआ। गुरमुख साचा तरनेहारा, प्रभ बेड़ा बन्ने लाईआ। मनमुख मन मरने वाला, वेला अन्तिम नेड़ वखाईआ। हरिजन भाणा जरने वाला, प्रभ चरनी ओट रखाईआ। कलिजुग अन्तिम डरने वाला, जूठ झूठ बैठा भार उठाईआ। सतिजुग साचा चन्द चढ़ने वाला, प्रभ साची जोत करे रुशनाईआ। चार वरनां एका घाड़ घड़ने वाला, हरि शब्दी बणत बणाईआ। चिट्टे अस्व धुरदरगाही चढ़ने वाला, हरि शब्दी बणत बणाईआ। चिट्टे अस्व धुर दरगाही चढ़ने वाला, हरि शब्दी निहकलंकी जोत जगाईआ। सन्त सुहेले अन्दर वड़ फड़ने वाला, दस्म द्वारी

कुण्डा लाहीआ। लक्ख चुरासी नाल लड़ने वाला, शब्द खण्डा रिहा उठाईआ। पंज कटारी हथ्थीं फड़ने वाला, गुर गोबिन्दा रिहा जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे नाम वर, वर दाता आप अख्वाईआ।

कलिजुग माया दास कर, गुरमुखां सेवा लाईआ। प्रभ पूरन आए आस कर, तृष्ना भक्ख मिटाईआ। एका सोहँ शब्द स्वास धर, आप आपणा दए जणाईआ। काया मण्डल रास कर, निर्मल जोती दए जगाईआ। निज घर आत्म वास हरि, दिवस रैण दरस दिखाईआ। मदिरा मास बाहर धर, बेमुख दर द्वार दुरकाईआ। गुरमुख नुहाए साचे सर, चरन धूढ़ रिहा रमाईआ। दर दुआरा बन्द कर, गुरमुख आपणी गोद उठाईआ। मनमुख जीवां आवे डर, काग वांग रहे कुरलाईआ। आपणी किरपा रिहा कर, चौदां लोकां चौदां हट्ट खुल्हाईआ। चौदां तबकां मारे मार, सम्मत चौदां वेख वखाईआ। गुरमुखां तन पहनाए हार, आपणी हथ्थीं सोहणा श्रृंगार कराईआ। इक्क कराए वणज वपार, दूसर किसे हथ्थ ना आईआ। माया ममता मोह निवार, शब्द भण्डारा रिहा भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां, आपणी हथ्थीं फूलन बरखा लाईआ। गुर गोबिन्दा मात फुलवाड़ी, लोकमात लगांयदा। पहली चेत्र कर त्यारी, आत्म काया सिंच वखांयदा। सोहँ बूटा लाए अपर अपारी, अन्तिम वेले फल खवांयदा। आपे होवे पहरेदारी, कलिजुग काग ना कोई आंयदा। शब्द सिँघासण हरि निरँकारी, एका आप सुहांयदा। दहि दिशा वेखे मार उडारी, हरि साचा बाज उडांयदा। सम्मत चौदां तेरी वारी, गुरमुखां माण दवांयदा। सतिजुग साचे पैज संवारी, लोकमाती नींह रखांयदा। आपे बन्न्हे आपणी धारी, अमृत आत्म मेघ बरसांयदा। आप सुहाए बंक द्वारी, दर द्वारे चरन छुहांयदा। संगत जाए हरि बलिहारी, साचा मेला मेल मिलांयदा। एका इक्की कर त्यारी, इक्क इकल्ला सेव कमांयदा। गुरमुखां चोली तन श्रृंगारी, साची रंगण रंग रंगांयदा। सिँघ दर्शन रहिणा नाल लिखारी, पंचम मीता संग रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। सोहँ शब्द सुणाए साची गीता, नाम निधान गुरमुख विरले पीता। हरि आया चरन द्वारी, दो जहानी सदा जीता। प्रभ साचे पैज संवारी। सतिजुग तेरी साची रीता, चले चलाए विच संसारी। कलिजुग तेरी परखे नीता, वेले अन्तिम आई हारी। हरिजन होए पतित पुनीता, दोए जोड़ करे निमस्कारी। ऊँच नीच ना जाणे कोई हस्त कीटा, राउ रंक एका दर बहाली। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां भण्डारे रिहा भर, राज राजानां शाह सुल्तानां विच जहानां करे खाली। राज राजानां आई हार, वेला अन्तिम आंयदा। शाह सुल्तानां मारे मार, ना कोई मात छुडांयदा। गुरमुखां हथ्थीं

बन्ने गाना, गुण निधाना दया कमांयदा। जोत सरूपी पहरया बाणा, नाम खण्डा नाल रखांयदा। आपे होया जाणी जाणा, ब्रह्मण्डां खोज खुजांयदा। सम्मत चौदां देवे माणा, गुरमुखां मेला हरि भगवाना, आप आपणी सरन रखांयदा। नाम रंगाए सत्त रंग निशाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे मात वर, आप आपणी दया कमांयदा। सम्मत चौदां चढ़ के आए, वेखे खेल अगम्मा। कलिजुग माया सड़ के आए, ना कोई पवण स्वासी दमा। ओंकारा एका अक्खर पढ़ के आए, धरत मात आकाश रहाए, आप टिकाए बिन बिन थम्मा। चिट्टे अस्व चढ़ के आए, गुरमुख तेरे दर द्वारे खड़ के आए, पंजां नाल लड़ के आए, ना मरे ना कदे जम्मा। आपणा घाड़न घड़ के आए, गुर गोबिन्दे अन्दर वड़ के आए, लक्ख चुरासी आप बणाए आपणा तमा। काल महांकाल हत्थ फड़ के आए, शब्द डण्डा सीस जड़ के आए, जुग जुग जाणे आपणा कम्मा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे एका वर, मनमुख कौड़ा रीठा भन्ना। गुरमुख साचे जाणा जाग, हरि साचा आप जगांयदा। पहली चेत्र पकड़े वाग, डोरी आपणे हत्थ रखांयदा। आप बणाए हँस काग, चोरी चोरी वेख वखांयदा। दीपक जोती जगे चिराग, दीवा बत्ती ना कोई रखांयदा। सोहँ बन्ने साचा ताग, दो जहानी तन्द बंन्नांयदा। दूर दुराडा आया भाग, मातलोकी जोत जगांयदा। सतिगुर पूरा गया जाग, गुरमुख साचे आप जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख मेला इक्क दर, बंक द्वार आप सुहांयदा। बंक दुआरा धन्न है, गुर सतिगुर साची टेक। हरिजन आत्म जाए मन्न है, प्रभ काया करे बिबेक। एका राग सुणाए कन्न है, कलिजुग माया ना लाए सेक। सदी चौधवीं सम्मत चौदां पारब्रह्मी चढ़या चन्न है, लोआं पुरीआं उप्पर बैठा रिहा वेख। जो घड़या सो देवे भन्न है, आप उखाड़े कलिजुग तेरी काया धरत मात लग्गी मेख। सदा वसेरा ना कोई छप्परी छन्न है, किसे ना रक्खे टेक। जन भगतां बेड़ा रिहा बन्न है, आदि अन्त एका एक। एका देवे नाम धन है, कलिजुग अन्तिम वारी वेख। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, धुर दरगाही लिखणहारा नाम लेख। हरि साचा लेख लिखंदड़ा। हरिजन मात विचार, आत्म तोड़े वज्जा जंदड़ा। वेखे काया गढ़ हँकार, नौ द्वारे फोल फुलंदड़ा। पावणहारा आपे सार, बंक दुआरा इक्क सुहंदड़ा। गुर शब्दी जै जै जैकार, पंचम धाड़ ना कोई वखंदड़ा। तत्ती वा ना दिसे हाढ़, अमृत धारा इक्क वहंदड़ा। काया सीतल धार, हरि कागों हँस बणंदड़ा। चरन धूढ़ी अपर अपार, जुग जुग जन भगतां आप बख्शंदड़ा। दुष्टां दए सँघार, हरिजन वर पाया घर लुड़ंदड़ा। आप सुहाई साची नार, पलँघ रंगीला इक्क विछंदड़ा। प्रभ साचा दस्म द्वार, साची सेजा इक्क वखंदड़ा। उत्ते लाए फूलनहार, जोत सरूपी जोत जगन्दड़ा। आपे बैठा अद्ध विचकार,

मनमुख जीव भागां मन्दड़ा। प्रभ साचे ना पावे सार, माया ममता झूठी कंधड़ा। काया मन्दिर अन्दर इक्क द्वार, गुरसिख गुर चरन बणाए बन्दड़ा। बन्दी तोड़े लक्ख चार, मनमति जीव आत्म अन्धड़ा। मिले मेल दरस नर निरँकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे मात वर, सम्मत चौदां वेख विचार। सम्मत चौदां साची हाटी, प्रभ साची मात खुल्हांयदा। जन भगतां जोत जगाए, तन ललाटी, मस्तक लहिणा मूल चुकांयदा। आप चढ़ाए औखी घाटी, नेत्र नैणां दरस दिखांयदा। इक्क वखाए तीर्थ ताटी, अट्ठ सट्ठ मेट मिटांयदा। अमृत आत्म रस गुरमुख साचे हरि चरन द्वारे रिहा चाटी, निझर धारा आप वहांयदा। साचा लाहा गुर दर साचे मन्दिर अन्दर बहि बहि खाटी, पिछला घाटा पूर करांयदा। आवण जावण चुक्के आण बाटी, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। जोत जगाए काया माटी, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। बजर कपाटी किसे ना पाटी, साध सन्त सर्ब कुरलांयदा। कलिजुग खेल बाजीगर नाटी, स्वांगी आपणा स्वांग वरतांयदा। गुरमुखां तन पहनाए साचा पाटी, सोहँ तन छुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जन हरि देवे इक्क वर, दर दुआरा इक्क वखांयदा। गुर संगत ना जाणा भुल्ल, हरि साचे शब्द जणाईआ। सम्मत चौदां पैणा मुल्ल, वेखे परखे हरि रघुराईआ। हरिजन तेरी साची कुल, सतिजुग साचे करे रुशनाईआ। लक्ख चुरासी जाणा रुल्ल, चारों कुन्ट होए दुहाईआ। पाणी पैणा काया चुल्ह, जोत निरँजण दिस ना आईआ। अमृत आत्म रहे डुल्ह, साची बूंद ना किसे वखाईआ। धुर दरगाही शब्द अटल, हरि साचा आप लिआईआ। आपे होया हरि अभुल्ल, सृष्ट सबाई रिहा भुलाईआ। गुर संगत फुल रिहा फुल्ल, फल फुलवाड़ी मात लगाईआ। आपे पावणहारा मुल्ल, सम्मत तीजे मोह चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सृष्ट सबाई तोल तुलाईआ। अन्तिम वेले वेख वखाए, हरिसंगत दर दुलारी। लिखणहारा लेख लिखाए, चार वरन निभाए साची यारी। ना कोई धारी केस जणाए, मूंड मुंडाए ना करे विचारी। वरन अठारां रहे कुरलाए, वेद पुराणां आई हारी। खाणी बाणी दए दुहाए, अञ्जील कुरानां हाहाकारी। एका नाउँ हरि गिरधारी, लोकमात करे उज्यारी। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन चार कुन्ट दहि दिशा ब्रह्मण्ड वंड जेरज कराए जै जै जैकारी। जै जै जैकार जगत गुर मन्त्रा, जगत जगदीश्र जै। जै जै जैकार जगत गुर अन्तरा, गुरमुख साचे तेरी जै। जै जै जैकार जगत गुर मन्त्रा, कलिजुग लाए अन्त बसन्तरा, लक्ख चुरासी होणा खै। जै जै जैकार गुर मन्त्रा, गुरमुख विरला लोकमात जाए रहे। जै जै जैकार गुर मन्त्रा, गुरदेव स्वामी नमो आदि विच ब्रह्माद एका वहिण साचा वहे। नमो नमो नमो हरि स्वामी दमो दमो दमो स्वामी निहकामी, चमो चमो चमो

हरि पार ग्रामी, वेख कोई ना लए। कलिजुग रैण अन्धेरी शामी, प्रगट होए हर घट हरि हरि अन्तरजामी, जन भगतां इक्क वखाए अमृत आत्म जाम प्याए सोहँ साची नैं। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवण आया वर, भेव चुकाए तूं मैं। तूं मैं मैं तूं आप, आपे विच समाया। आप जपाए साचा जाप, सोहँ नाउँ रखाया। मेट मिटाए तीनों ताप, त्रैगुण माया नेड़ ना आया। आप कराए वड प्रताप, वड प्रतापी हरि रघुराया। गुरमुख साचे सन्त जनां कोटन कोट उतारे पाप, जिस जन रसना गाया। सो सहाई आपे आप, सस्सा किला आपे जाणे आपणा शिला। होड़ा सरगुण निरगुण रूप समाया। दो जहानी जोड़े जोड़ा। नाल रलाए शब्द घोड़ा। आपे परखे मिट्ठा कौड़ा, रूप अनूपा सति सरूपा ब्रह्मण गौड़ा। शाहो भूपा ना कोई जाणे लम्बा चौड़ा। अन्ध कूपा कलिजुग अन्तिम आया दौड़ा। घर घर दर दर मन्दिर अन्दर धुखदे धूपा, पारब्रह्म किसे ना बौहड़ा। गुरमुख वेखण चारे कूटां, आत्म प्रभ दरस दी लग्गी औड़ा। पुरख अबिनाशी मात जोत प्रकाशी, एका देवे सोहँ हूटा। प्रगट होए घनकपुर वासी, गुरमुखां दर दासन दासी, वेले अन्तिम आपे बौहड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुर गोबिन्द एका वर, एका जननी शब्द जोड़ा।

२८०
०६

दर दरवेश नर निरंकारया। पंचम दर द्वार, मंगे मंग अपर अपारया। आपे वेखे विचार, नौ द्वार विच संसारया। जीवां जन्तां बंन्ही धार, दस्म द्वारी खेल अपारया। हरि वसया गुप्त ज़ाहिर, वरभण्डी भेख वटा ल्या। जोती जामा हरि करतार, साची वंडी वंड वंडा ल्या। हरिजन साचे सन्त दुलार, भेख पखण्डी मात मिटा रिहा। निहकलंका लए अवतार, हथ्थीं मैहन्दी एका ला रिहा। शब्द अमाम करे त्यार, अमाम मैहन्दी लेख लिखा ल्या। उम्मत नबी ना पाए सार, एका कूटे डेरा ला ल्या। दिस ना आए हरि गिरधार, पौह फुट्टे विच संसारया। जोती नूर होए उज्यार, माया लूठे जीव हंकारया। प्रभ मारे साची मार, गुरमुख वेखे इक्क द्वारया। हरि भरया नाम भण्डार, आपे बणया मात भिखारया। दर दरवेशा नर निरँकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे रिहा पैज संवारया। अछल छलन हरि आप अखवाए, जुग जुग अवल्लड़ी रीती। बल बावन हरि भेख वटाए, सीता रावण छली, खेले खेल अतीती। कलिजुग काया माया रंग ली, झूठी प्रीती। जगत मुहम्मद एका मंग हरि द्वारे मंग ली, प्रभ वेखे पाक पलीती। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी कीती। आपे जाणे जानणहार, जुग जुग वेख वखांयदा। सतिजुग त्रेता उतरया पार, द्वापर मूल चुकांयदा। शाम युजर ना कोई अधार, रिग रेख मिटांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, जोती

जामा भेख वटांयदा। अथर्बण ऐड़ा कर विचार, अल्ला नाल रलांयदा। शब्द खण्डा तेज कटार, प्रभ आपणे हथ्थ उठांयदा। सोहँ खण्डा अपर अपार, गुर गोबिन्दा कर त्यार, आपणे तन छुहांयदा। आपे होया पहरेदार, चारों कुन्ट फेरा पांयदा। जन भगतां करे ख़बरदार, कलिजुग सेवा आप कमांयदा। फड़ फड़ बेड़ा लाए पार, सम्मत चौदां नेड़े आंयदा। संग मुहम्मद करे ख्वार, चार यारां धक्का लांयदा। अल्ला राणी आए द्वार, प्रभ साचा दर दुरकांयदा। वेले अन्तिम आई हार, ना पल्ला कोई फड़ांयदा। नबी रसूलां हाहाकार, मुल्ला शेख़ सर्ब कुरलांयदा। चौदां तबकां दए हुलार, प्रभ एका हल्ला नाम करांयदा। गोबिन्द डल्ला कर त्यार, दूई द्वैती सिक्खां मेट मिटांयदा। अग्नी जोती लाए झल्ला, ना कोई दीसे सच महल्ला, कूड़ो कूड़ वखांयदा। गुरमुख विरले सन्त दुलार, प्रभ अबिनाशी तेरा दर लोकमात कलि मल्ला, कर किरपा जन जाए तार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, लक्ख चुरासी देवे वर, एका रसना शब्द अपार।

गुरमुख वड्याई धन्न है, गुर पूरा पाया। गुर पूरे वड्याई धन्न है, सच सेवादार अख्वाया। मन सुरती देवे बन्नृ है, बन्नणहार आप अख्वाया। भरम भुलेखा कढ्ढे जन है, जन जणेंदी दए वखाया। काया वस्त सच्चा माल धन है, प्रभ साचे आप टिकाया। सतिगुर पूरा बेड़ा रिहा बन्नृ है, जुग जुग आपणा रूप वटाया। आपे चाढ्नहारा चन्न है, अज्ञान अन्धेर मिटाया। एका अक्खर हरिजन साचा जाए मन्न है, मनसा आसा पूर कराया। आपे देवणहारा डन्न है, डौरू डंका वाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा समां सुहाया। धर जोत निरँकार, अकल कला वरतांयदा। संग मुहम्मद मीत मुरार, कलिजुग शिला कटांयदा। अल्ला राणी नाल प्यार, साचा जोड़ जुड़ांयदा। अहिनल हक्क कर विचार, हू हू सेवा लांयदा। उम्मत उम्मती फल गया पक्क, तूं तूं मनों विसारदा। चार यारी गई अक्क, राह वेखे परवरदिगार दा। मक्का काअबा साची ढक्क, सिँघ शेर इक्क ललकार दा। आपे पाए नक्क नत्थ, सोहँ धागा सच्ची तार दा। फड़ फड़ बाहों करे वक्ख, ला मैहन्दी तन श्रृंगार दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, काला सूसा वेखे खेल मूसा ईसा अन्तिम आया पासा हार दा। काला सूसा जगत मलंग, हरि पेखा भेखा धारीआ। साचे ताजी कसया तंग, शाह ऐली रिहा ललकारया। सखी सरवर दर द्वारे आए लँघ, तोड़े गढ़ तकबक हंकारया। चौदां तबकां देवे टंग, कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। किसे ना सौणा मिले उप्पर पलँघ, पीर फ़कीरां आई हारया। कोए ना लाए किसे अंग, मुहम्मद अहिमद रिहा विसारया। वेले अन्तिम होणा भंग, आए पासा हारया। एका नाद वजाए मृदंग, काली चुंनी सिर दो फाड़या। उच्चे

पर्बत रही लँघ, राह तक्के सतारां हाड़या। लहू मिझ वहाए धारा गंग, वेखण आया इक्क अखाड़या। सदा सुहागण कदे ना होए रंड, मंगे वर इक्क भतारया। सम्मत चौदां हरि जी पाए वंड, सृष्ट सबाई अद्ध विचकारया। सोहँ चिल्ला देवे टंग, जोद्धा सूर बली बलकारया। मुहम्मद मंगता रिहा मंग, किरपा कर गिरधारया। सीस ताज दिसे नंग, ना होए कोए सहारया। चार यारी एका जंग, सदी चौधवीं खेल मदारया। काले चोले प्रभ चाढ़े रंग, शब्द सिँघासण प्रभ संवारया। पहली चेत्र पाए वंड, अमृत वेला वेखे सवा पंज, साचा होए लेख लिखारया। याद कराए पहाड़ गंज, परशाद इन्द्र होणा रंज, प्रभ मारे तेज कटारया। दोहां धिरां किसे ना दिसे सवेर सञ्झ, अट्ठे पहर रैण अंध्यारया। किसे हथ्थ ना आउणे कारू गंज, घर घर फिरना भिखारया। जगत नाता तुट्टा सञ्झ, पंडत नेहरू अन्त स्यासत आए हारया। अन्तिम जगत वञली दिसे साचा वञ, दिस ना आए रांझा यारया। ना कोई मुहाणा ना कोई वञ, ना कोई पतन ना कोई पहरेदारया। ना कोई अस्व ना कोई घोड़ा ना कोई कसे तंग, ना कोई छत्र झुला रिहा। ना कोई काया चोली चाढ़े रंग, ना मिले मात ललारया। कलिजुग माया मारे डंग, शाह सुल्तानां करे ख्वारया। गुरमुखां मंगी एका मंग, पहली चेत्र दिवस विचारया। शब्द रंगीले बैठ पलँघ, प्रभ लेखा लिखे लिखारया। चिट्टे अस्व लाए अंग, नीला नीली धारों कढ्ढे बाहरया। पंचां वेखण आया जंग, सत्तां आप जणा रिहा। आपे जाणे आपणे ढंग, शस्त्र बस्त्र ना कोई रखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, संग मुहम्मद इक्क वर, एका बंक सुहा ल्या। मुहम्मद दर द्वार, हरि पुकारया। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, कलिजुग अन्तिम वारया। काला सूसा तन श्रृंगार, प्रभ साचा वेख विचारया। पहली चेत्र हरि करतार, चौदां लोकां आप जगा रिहा। साची सिक्खी कर त्यार, दे मति आप समझा रिहा। रिखी मुनी रोवण हाहाकार करन पुकार, जंगल जूह उच्चे टिल्ले पर्बत वेख वखा रिहा। पुरख अबिनाशी ना पावे सार, मिल्या मेल ना मीत मुरार, वेला अन्त ना कोए सुहा ल्या। गुरमुख साचे सन्त दुलार, आपे करे मात प्यार, जोत सरूपी हरि निरँकार, आप आपणी गोद उठा ल्या। शब्द जणाए वारो वार, एका दूजा भउ निवार। तीजा नेत्र खोल्ह अपार, चौथे घर पावे सार। पंचम मेला मीत मुरार। छे घर वेखे अपर अपार। सत्तवें रंग हरि करतार। अट्ठां तत्तां एका धार। नौ दर वेखे जगत दरबार। दसवें खेल सच्ची सरकार। ग्यारवें वसे आपे बाहर। बारवें हस्से नर निरँकार। तेरवें तीर कसे निराल। छब्बी पोह दिवस विचार। सम्मत चौदां रैण अन्धेरी मस्से, पन्दरां रवि ससि फिरन नस्से, दर द्वारे आवण वारो वार। सम्मत सोलां ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा चरनां हेठ झस्से, रोवण ज़ारो ज़ार। जगत जगदीसा जन भगतां राह एका दस्से, पंचम जेठी दिवस विचार। दर द्वारे आउणा नस्से,

२८२
०६

एका खोल्हे मात किवाड़। शब्द सिँघासण बहि बहि हस्से, आपे वेखे सतारां हाढ़। माझा देस नाले रोवे नाले हस्से, घर घर अन्तिम दिसे उजाड़। कलिजुग माया पिच्छे पै पै डस्से, पार ब्यासों दए उतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पहली चेत्र वेखे जगत खेत्र, संग मुहम्मद करे इक्क प्यार। संग मुहम्मद यारी, हरि साचा आप लगांयदा। देवे वड्ड वड्ड संसारी, हक्क हकीकत फोल वखांयदा। पंचम जेठ बन्हे धारी, हाढ़ सतारां इक्क तारीख लिखांयदा। आपे हो दुलदुल अस्वारी, अरब अरबानीआं पावे सारी, शाह अफगाना कर त्यारी, दूर दुरानीआं दए हुलारी, बेईमानीआं इक्क द्वारी, पंज शैतानीआं दए ललकारी, प्रभ अबिनाशी खेले खेल अपारी, जोती नूर कर चमत्कारी, सोहँ खण्डा खिच्च दो धारी, आपे चढ़ के वेखे उच्च पहाड़ी, संग मुहम्मद चार यार प्रभ आप सुहांयदा। साचा लाड़ा हथ्थीं मैहन्दी लाल रंगांयदा। धरतमात बणाए इक्क अखाड़ा। मौली तन्द बन्हु वखाए, करे खेल दिन दिहाड़ा। बत्ती दन्द ना कोई जणाए, पीर फ़कीरां आई हारा। साध सन्त कोई भेव ना पाए, गोबिन्द गोबिन्द रसना गायण मंगण एका दाम जगत पहाड़ा। काया चाम किसे हथ्थ ना आए, लाड़ी मौत चबाए आपणी दाढ़ा। मदिरा जाम ना कोई प्याए, भुन्न कबाब ना कोई खाए, अन्तिम वासा विच उजाड़ां। नारी कन्त ना कोई हंढाए, सन्त कन्त ना कोई मिलाए, जीव जन्त फिरन हलकाए, दर द्वारे कढ्ढण हाढ़ा। गुरमुख साचे अन्त मिलाए, प्रभ अबिनाशी दया कमाए, आप आपणे अंग लगाए, मेट मिटाए झूठी धाड़ा। गुरसिख वड्याई धन्न है, हरि गोबिन्द पाया मीत। गुरसिख वड्याई धन्न है, हरि गोबिन्द राखे चीत। गुरसिख वड्याई धन्न है, काया पतित पुनीत। गुरसिख वड्याई धन्न है, मानस देही रिहा जीत। गुरसिख वड्याई धन्न है, बैठा रहे अतीत। गुरसिख वड्याई धन्न है, गाए सुहागी गीत। गुरसिख वड्याई धन्न है, पुरख अबिनाशी लाए चरन प्रीत। गुर पूरा बेड़ा रिहा बन्हु है, सदी चौधवीं रही बीत। गुर पूरा हरि जगदीस है, आदि अन्त निरँकार। कोए ना करे रीस है, हरि साचा छत्र झुलार। वेखे खेल बीसा बीस है, प्रगट होए विच संसार। एका रंगण इक्क इकीस है, इक्क सुहाए बंक द्वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे नाम अधार। नाम अधारी आप प्रभ, आपणा नाउँ जपाए। पैज संवारी आप प्रभ, देवे ठण्ढी छाएं। जोत निरँकारी आप प्रभ, वसाए काया खेड़ा नगर ग्राएँ। गुरसिख उधारी आप प्रभ, आपे पिता आपे माएँ। थित वार विचारी आप प्रभ, गुर पूरे बलि बलि जाएँ। पहली चेत सच सिक्दारी आप प्रभ, कलिजुग करे सच नयाएँ। गुरमुखां पैज संवारी आप प्रभ, बेमुखां मिले ना थाएँ। रसना जै जै जैकारी आप प्रभ, सोहँ जपाए साचा नाएँ। दर दरबारी आप प्रभ, करे कराए सच न्याएँ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां

आपे तारे फड़ फड़ बाहें। फड़ फड़ बाहों पार कराए, बेड़ा बन्नृणहारा। आप आपणा राह वखाए, गोबिन्द बन्ने साची धारा। एका पल्ला नाम फड़ाए, मिले मेल विच संसारा। सोहँ हल्ला इक्क कराए, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। डूँघी डल्ला डेरा लाए, वेखे खेल अन्ध अन्धयारा। वल छला आप कराए, भरम भुलाए सर्ब संसारा। सतिजुग महल्ला इक्क वसाए, शब्द सरूपी आप बणाए चार दिवारा। जल थलां आप समाए, आपे वसे पार किनारा। नौ खण्ड पृथ्वी बणत बणाए, सत्तां दीपां उच्च मीनारा। साध सन्त हरि मात उपाए, लक्ख चुरासी नाल प्यारा। अन्तिम वेले आपे ढाहे, आपे होए लेख लिखारा। वेख वखाणे साचे थाएँ, गुरमुख साचे बंक दुआरा। हँस बणाए फड़ फड़ काएं, एका देवे शब्द अधारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चौदां चौदां लोक इक्क सुणाए सच सलोक, सोहँ होए जै जै जैकारा। चौदां लोकां चौदां हट्ट, कराए वणज वपारया। गुरमुख लाहा लैण खट्ट, लहिणा देणा देवे कर्ज़ उतारया। जोत जगाए काया मट्ट, मेट मिटाए अन्ध अंध्यारया। शब्द सरूपी लाए सट्ट, बजर कपाटी आप तुड़ा रिहा। दरस दिखाए प्रगट जोत झट्ट पट्ट, दर्शन रूप अपारया। नाम पहनाए साचा पट्ट, हट्ट हटवाणा आप अख्वा रिहा। दुरमति मैल देवे कट्ट, चरन धूढ़ मस्तक आप छुहा रिहा। वेखे खेल कलिजुग बाज़ीगर नट, नट नटूआ स्वांग वरता रिहा। मण्डप माढ़ी जाणे ढठ्ठ, गुर दर मन्दिर वेख वखा रिहा। ना कोई दिसे अट्ठ सट्ठ, गंगा गोदावरी वक्त चुका रिहा। सतिजुग तेरी साची चट्ठ, सम्मत चौदां आप करा रिहा। गुरमुखां दर दुआरा वेखे नठ्ठ नठ्ठ, बीस इकीसा हरि अख्वा रिहा। आपे गेड़े उलटी लट्ठ, कलिजुग काया आप भवा रिहा। गुरमुख निभाए एका हट्ठ, दे मति हरि समझा रिहा। चरन कँवल जन जाए ढठ्ठ, फड़ बाहों पार करा रिहा। कलिजुग माया त्रैगुण धार तेरा इक्क बणाए मट्ठ, जेठ इक्की लेख लिखा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सृष्ट सबाई रिहा वर, धर्म राए नाल रला रिहा। धर्म राए उठ बलकार, प्रभ साचा आप जगांयदा। सम्मत चौदां हो त्यार, दर दरबार आप खुल्हांयदा। दोए जोड़ कर निमस्कार, माया घोड़े आप चढ़ांयदा। लाड़ी मौत तन शृंगार, सोहणा सीस गुंदांयदा। नेत्र नैण पाए कज्जल, तिक्खी धारा आप रखांयदा। काल नगारे एका वज्जण, गढ़ हँकारी भाण्डे भज्जण, किसे ना मिले साक सज्जण, मेल विछोड़ा आप करांयदा। राज राजान शाह सुल्तान बंक द्वारे तजण, ग़रीब निमाणे उठ उठ भज्जण, राह खेड़ा ना कोई दिसांयदा। गुरमुख साचे सन्त सुहेले, आप कराए आपणे मेले, अमृत आत्म पी पी रज्जण, साचा मेल मिलांयदा। इक्क कराए मक्का काअबा हाज़ी हज्जण, मनमति जीव कलिजुग अग्नी दज्जण, अग्गे हो ना कोई बचांयदा। गुरमुख साचे सन्त दुलार दर द्वार बहि बहि गज्जण, सोहँ रसना जै जै जैकार करांयदा। सोहँ तेरा

जै जैकारा, तीन लोक वधाईआ। पुरीआं लोआं इक्क हुलारा, हरि साचा रिहा दवाईआ। ब्रह्मा वेखे लेख लिखारा, चारे वेदां फोल फलाईआ। अट्ठे नेत्र आप उग्घाड़ा, राह साचा रिहा तकाईआ। शिव शंकर रो रो कढ्ढे हाढ़ा, बाशक तशक गल विच पाईआ। जगत जगदीशा पाए झाड़ा, वेला अन्तिम आईआ। लुट्टया जाए दिन दिहाड़ा, गणपति ना कोई संग निभाईआ। आदि शक्त तेरा इक्क अखाड़ा, रचना रिहा रचाईआ। साचा वक्त अन्त पहाड़ा, उच्चे टिल्ले रिहा हिलाईआ। पार्बती रोवे विच उजाड़ा, गल पल्लू रही पाईआ। लग्गे अग्ग बहत्तर नाड़ा, अमृत धार ना मुख चुआईआ। करोड़ तेतीसा कढ्ढे हाढ़ा, नेत्र नीर रिहा वहाईआ। विष्नूं बंसी मारे झाड़ा, लेखा रिहा ना राईआ। धरत मात तेरा इक्क अखाड़ा, काहना कंसी रूप वटाईआ। इक्क मुहम्मद साचा यारा, यार यारी रिहा निभाईआ। अल्ला राणी कर त्यारी साची नारा, हिदरे विच समाईआ। हू हू हू करे पुकारा, तूं तूं तूं मेट मिटाईआ। जूह जूह जूह जंगल तेरी धारा, तेरी सार ना पाईआ। मक्का मदीना उच्च चुबारा, कूके दए दुहाईआ। बांग सदा वाहिद, ख़ुदा परवरदिगार बेऐब नूर अलाहीआ। प्रगट होए हरि गैब, सृष्ट सबाई साचा नैब, पकड़ उठाए थाउँ थाँईंआ। अमाम मैहन्दी वेखे दिशा लहिंदी, उम्मत रसूल खहन्दी, हथ्थीं लाए मैहन्दी, लहिणा देणा रिहा चुकाईआ। सदी चौधवीं जाए वहिंदी, गुर संगत गुर चरन द्वारे बहिंदी, प्रभ धीरज धीर रिहा धराईआ। हरि हरि भाणा सिर ते सहिन्दी, सोहँ रसना घर घर कहिंदी, एका इक्की रिहा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। हथ्थ वड्याई हरि समरथ, भेव किसे ना पाया। इक्क चलाया साचा रथ, रथवाही बण के आया। पूरन पाई साची नत्थ, सोहँ घोड़े अग्गे लाया। विच टिकाई एका वत्थ, जोती नूर उपाया। दूसर कोई ना सके लक्ख, साध सन्त किसे भेव ना पाया। नानक रसना गाए अलक्ख अलक्ख, हरि निरगुण रूप समाया। अन्तिम प्रगट होए प्रतक्ख, गुर गोबिन्दा गया जणाया। लजपत तेरी लए रक्ख, कल्गी तोड़ा सीस टिकाया। लक्ख चुरासी दए मथ, जोती जोड़े मेल मिलाया। गुरमुखां दरस दिखाए, पहली चेत्र दरस दिखाया। कलिजुग जीआं भाण्डे सक्ख, साधां सन्तां दए कराया। उत्तों खिच्चे विच ल्याए काया कस, साढे तिन्न हथ्थ पैंडा डेरा लाया। ना कोई सके किसे रक्ख, वासी पुरी घनक, प्रगट होए वार अनक, कलिजुग अन्त घविंड डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साधां सन्तां वेखे दर, जोत निरँजण लए छुपाया। पहली चेत्र हरि निरँकार, अचरज रीत चलावणी। साधां सन्तां आई हार, जोत निरँजण वेख ना पावणी। तट्ट किनारा ब्यास पार, हरि सावण रुत्त सुहावणी। गुर चरन शरन रहिणा ख़बरदार, नैण मूंद ध्यान ना लगावणी। किसे ना मिलणा मीत

मुरार, ना कोई गाए राग मधावणी। नाता तुट्टे विच संसार, सुरत सवाणी होए कामनी। प्रगट होए नर निरँकार, सत्तां दीपां नौवां खण्डां आपे देवे जामनी। सोहँ खण्डा तेज कटार, शब्द सरूपी रिहा हुलार, मारी जाए वारो वार, कोई सके ना सीस उठावणी। जन भगतां होए पहरेदार, अट्ठे पहर ख़बरदार, नाल रलाए मुहम्मद यार, अल्ला राणी करे पछाणी हू हू कर कर दर दर कुरलावणी। गुर संगत करे हरि प्यार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, पहली चेत्र दिवस घर घर दर दर पूर कराए भावनी। प्रगट हो नर अवतार, कलिजुग अन्तिम पावे सार, कोए ना सके मात विचार, भेखाधारी करे भेख जिउँ बल द्वारे बावनी। शिव शंकर मारे शब्द कंकर, आप हिलाए अंकर अंकर, मगर लगाए मोहणी रूप कामनी। ब्रह्मा वेता रिहा कुरलाए, पिछला चेता आप कराए, एका धीरज धीर ना किसे धरावणी। करोड़ तेतीसा दए हुलारा, सुरपति राजा इन्द कुरलाए, अपच्छरां भोग ना कोई कराए, सम्मत चौदां नेड़े आए, गुरमुखां खेड़े तन वसाए, पंजां झेड़े आप मिटाए, जोत जगाए हरि रघुराए, सोहँ सो शब्द सुणाए सच सुनावणी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी खुशी आपे आप मनावणी। आपणा आप हंढावण आया, जोत निरँजण दाता। ब्रह्मण्ड खोज खुजावण आया, पारब्रह्म प्रभ पुरख ज्ञाता। साची वंडण वंड वंडावण आया, नौ खण्ड दीप साता। मनमुख जीवां दंडण आया, वेख वखाए ज़ाता पाता। राज राजानां शाह सुल्तानां जगत माया बंधन आया, करे कराए अन्धेरी राता। गुरमुखां देवे नाम बिबाणा, आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञाना, देवे साची दाता। सतिजुग झुल्ले धर्म निशाना, आप झुलाए श्री भगवाना, नाल रलाए सोहँ गाथा। बीस इकीसा खेल महाना, जगत जगदीसा ना किसे पछाना, राग छतीसा भेव ना पाना, तीस बतीसा होए हैराना, वेद पुराणा तुट्टा माणा, अञ्जील कुराना आई हाना, सोहँ चिल्ले चढ़या इक्क निशाना, तीर अंदाज़ आप अख्वांयदा। ब्रह्मा वेखे खेल हरि गुण निधाना, शिव शंकर होए जाणी जाणा, करोड़ तेतीसा बाल नादाना, वेला अन्त ना किसे पछाना, ना कोई बूझ बुझांयदा। लोकमात प्रभ करे ध्याना, वरभण्डी खेले खेल महाना, जेरज अंडी पंज शैताना, साधां सन्तां जीवां जन्तां झूठी माया तणया ताणा, कलिजुग आपणी फंद फंदांयदा। ना कोई सुघड़ ना स्याणा, ना कोई राजा ना कोई राणा, जूठा झूठा अन्धा काणा, माया लूठा जीव नादाना, अन्तिम मूदा ठूठा पारब्रह्म ना किसे पछाणा, धर्म राए दर लग्गे अंगूठा, चित्रगुप्त दर लेख मिटाना। दर दवारिउँ रहे रूठा, लक्ख चुरासी विच फिराना। गुरमुख कराए एका मुट्ठा, प्रभ आपणी दया कमाना। सम्मत चौदां आपे तुट्ठा, पहली चेत्र दिवस सुहाना। जुगां जुगां दा मेल मिलाए जो गुरसिख दर तों जाए रुट्ठा, हथ्थीं बन्न्हे नाम गाना। लुक्कया रहिण ना देवे कोई गुट्ठा, प्रभ हर घट जाणी जाणा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, लिखे लेख मात महाना। मातलोक हरि शब्द खिलारी, अन्तिम कलिजुग आया। कलिजुग बाज़ी अन्तिम हारी, सार पाशा इक्क विछाया। नरदां सुट्टे वारो वारी, जूठ झूठ नाउँ रखाया। अट्ठ घर वेखे वारो वारी, त्रैगुण नाल रलाया। अद्धविचकारे लीक दो धारी, सृष्ट सबाई दो धड़ रिहा कराया। आपे नटी आपे उप्पर जाए चढ़, जित्त हार जिस आपणा पासा आप बणाया। आपे वेखे दूर दुराडा खड़, आपे अन्दर डेरा लाया। आप बणाए गोर मड़, आपे ख़ाकी ख़ाक मिलाया। आपे अग्नी जाए सड़, पंज तत्त ना नाउँ रखाया। आप वखाणे सीस धड़, आप आपणा रूप छुपाया। सृष्ट सबाई रिहा फड़, आप किसे हथ्थ ना आया। कर किरपा गुरमुखां फड़ाए आपणा लड़, विछड़ कदे ना जाया। साचा घाड़न रिहा घड़, शब्द घोड़े साचे चढ़, कल्गी तोड़ा नाम लगाया। गुर गोबिन्दा साची कारे प्रभ लाया फड़, साची सेवा रिहा कमाया। ना कोई सीस ना कोई धड़, सति पुरख निरँजण जोती नूर कर आकार, आपे किया विच पसार, चेला रूप उपाया। ना कोई जाणे प्रभ की धार, की वरते विच संसार, साधां सन्तां आई हार, आपणा भेव ना किसे जणाया। गुरमुखां करे दर प्यार। नारी कन्ता आपे वरे, आत्म सेजा सुत्ता पैर पसार। एका सेजा कन्त भतार, दस्म द्वारी अपर अपार। भगत रंगीला हरि करतार, छैल छबीला शब्द घोड़ अस्वार। गुरसिक्खी खिच्ची जाए वारो वार। आपे ढाहे दूई द्वैती धाड़। गुरसिख बणाए साचे लाड़। आपे होए पिच्छे अगाड़। जोत जगाए बहत्तर नाड़। कलिजुग माया ना सके साड़। लाड़ी मौत ना चब्बे आपणी दाढ़। गुर गोबिन्दा वाली हिन्दा हरि बख़्शिंदा, लक्ख चुरासी करे निन्दा, जन भगतां तोड़े आत्म वज्जा जिंदा, पहली चेत्र काया खेत्र दरस दिखाए तीजे नेत्र आप आपणी किरपा धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरा सेवादार। हरि सेवक वड्ड सुल्तान है, साचे तख़्त रिहा समाए। दाता दानी मेहरवान है, जुग जुग दया रिहा कमाए। शब्द निशानी दो जहान है, आप आपणा राह वखाए। नाम कानी तीर कमान है, गुरमुखां रिहा लगाए। अनहद बाणी मारे बाण है, प्रभ चिल्ले रिहा चढ़ाए। काया मन्दिर इक्क मकान है, हरि बैठा डेरा लाए। नौ द्वारे सुंञ मसाण है, तृष्न रही बिल्लाए,। गुर पूरा सद बलवान है, आपणा पल्ला नाम फड़ाए। गुरमुख बाला बाल नादान है, प्रभ साचा राह वखाए। मेट मिटाए पंज शैतान है, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आए। चौदां हट्ट वखाए सच दुकान है, तन मन्दिर आप टिकाए। शब्द वस्त इक्क महान है, प्रभ साचा आप रखाए। ना कोई अक्खर ना ज्ञान है, ना कोई विद्या होर पढ़ाए। ना कोई रसना मुख नक्क ना कान है, नेत्र दोए ना कोए दिसाए। बस्त्र शस्त्र ना कोई तन पहनान है, ना कोई वेस

वटाए। ना कोई राग सुनान है, रागी राग ना कोई अल्लाए। साज बाज ना कोई धुन धुनकान है, सारंग किंग ना कोई वजाए। पुरख अबिनाशी आपे जाणी जाण है, हर घट बैठा रिहा समाए। जन भगतां करे पछाण है, आप आपणे लड़ लगाए। जुगा जुगन्तर धुर दी बाण है, हरिभगतां लए तराए। चरन प्रीत रखाए एका आण है, लक्ख चुरासी फंद कटाए। आपे करे पुण छाण है, नीत अनीती वेख वखाए। देवणहारा जिया दान है, दाता दानी आप अख्वाए। हरिजन साचे रसना गान है, गोबिन्द मेला सहिज सुभाए। जोती नूर कोटन भान है, निर्मल नूर रिहा उपाए। राग अनादी एका कान है, अनरंगा रिहा सुणाए। दस्म द्वारी इक्क मकान है, हरिजन विरला वेख वखाए। शाहो भूपी शाह शहान है, हरि बैठा आसण लाए। सीस ताज इक्क महान है, जोती नूर डगमगाए। चारों कुंट वेख वखान है, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण एका रंग समाए। दहि दिशा इक्क ध्यान, है, पर्दा ओहला रहे ना राए। सुरती सुरत ब्रह्म ज्ञान है, पारब्रह्म समाए। आपे होए मेहरवान है, साचा मेला मेल मिलाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन देवे साचा वर, दर दुआरा आप सुहाए। हरिजन मेला इक्क इकेला, होए बंक द्वारया। पुरख अबिनाशी सज्जण सुहेला, आपे गुर आपे चेला, खेले खेल अपारया। आपे वसे रंग नवेला, लोकमात जोत निरँजण चाढ़े तेला, घर घर जोत करे उज्यारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत तेरी सेवा आप कमा रिहा। छत्ती जुग छत्ती राग छत्ती नाद आप वजांयदा। आपे जाणे आदि जुगादि, आदि आपणी खेल खिलांयदा। चार जुग प्रभ देवे दाद, नौ नौ नौ दर खुल्लांयदा। आपे जाणे वाद विवाद, बोध अगाध आपणे हथ्थ रखांयदा। पंज तत्त वखाए इक्क स्वाद, जिह्वा गुण ना कोई जणांयदा। चारे अक्खर आपे अराध, हरि विष्नूं रूप वटांयदा। नौ नौ जुग मिली दाद, वेला वक्त मुकांयदा। आप आपणा ल्या अराध, आप आपणे विच समांयदा। कलिजुग अन्तिम देवे दाद, सोहँ साचा नाद वजांयदा। सतिजुग साचा ल्या लाध, प्रभ सोया मात उठांयदा। शब्द जणाए बोध अगाध, बीस बीसा हुक्म जणांयदा। हरिसंगत वेला रक्खणा याद, फेर गया हथ्थ ना आंयदा। काया माटी लाउँणा भाग, दीपक जोती जगे चिराग, हरि साचा आप जगांयदा। हँस बणाए फड़ फड़ काग, दुरमति मैल धोवे दाग़, मान सरोवर इक्क इशनान करांयदा। आप आपणे हथ्थ पकड़े वाग, चरन कँवल जो गए लाग, वेले अन्तिम दया कमांयदा। जगत तृष्ना बुझाए आग, भोग लगाए अलूणे साग, गऊ ग़रीबां माण दवांयदा। वेले अन्तिम गया जाग, गुरसिक्खां दर लाए भाग, बिदर सुदामा फेर जिवांयदा। माया डस्से ना डस्सणी नाग, गुर चरन प्रीती इक्क वैराग, आपणी रीत वखांयदा। धूढ़ी मजन साचा माघ, मस्तक टिक्का

साचे पाग, तिलक ललाटी आप रमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे नाम वर, दर द्वारे दरस दिखांयदा। दर द्वारे हरि सवाली, गुरमुखां दर सुहांयदा। प्रगट कर जोत अकाली, दर घर वेख वखांयदा। सोहँ देवे जगत दलाली, साचे सर नुहांयदा। दो जहानां आपे वाली, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। भरे भण्डारे करे खाली, खाली आप भरांयदा। गुरमुखां घाल साची घाली, लहिणा देणा मूल चुकांयदा। आपे तोड़ जगत जंजाली, काल महांकाल नेड़ ना आंयदा। आपे करे सच दलाली, जोत निरँजण सेवा लांयदा। फल लगाए पत पत डाल्ही, फल फुलवाड़ी आप लगांयदा। सतिजुग तेरी अवल्लड़ी चाली, प्रभ बूटा साचा मात उगांयदा। गुरसिख भण्डारा होए कदे ना खाली, प्रभ साचा आप वरतांयदा। चरन प्रीती निभे नाली, नाता बिधाता आपणा आप बंधांयदा। ना कोई पुच्छे ज़ाता पाता, ऊँचां नीचां गले लगांयदा। आपे होए पिता माता, गुरसिख साचे बाल अञ्जाणे आपणी गोद उठांयदा। प्रगट होए साचो साचा, निहकलंका नाउँ रखांयदा। हरि का शब्द गुरु नहीं काचा, जुग जुग आप अख्वांयदा। पंज तत्त नौ द्वारे नाचा, हरि सति रूप समांयदा। गुरमुखां हिरदे आपे वाचा, एका ज्ञान कर ध्यान हिरदे विच समांयदा। शब्द सरूपी एका मारे हरि तमाचा, पंच विकारा बाहर कढांयदा। नाड़ बहत्तर आपे राचा, आप आपणा रूप वटांयदा। काया माटी भाण्डा काचा, अन्तिम भन्न वखांयदा। गुर शब्द दुआरा साजन साचा, घर साचा धाम सुहांयदा। आप बुझाए काया लग्गी आंचा, अमृत आत्म आप छिड़कांयदा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, हरिसंगत हरि सेवक साची सेव कमांयदा। हरि सेवक गया लग्ग, आपणी सेवा लाईआ। प्रगट हो सूरा सरबग्ग, देवी देवा आप अख्वाईआ। गुरमुखां मेल कराए उप्पर शाह रग, जोत निरँजण नाल रलाईआ। गुर पूरा पहला रक्खे आपणा पग, पहले पौड़े दए चढ़ाईआ। सोहँ बन्न्हे साचा तग, दूजा दर पार कराईआ। दीपक जोती रही जग, साचा राह वखाईआ। गुर पूरा जाए अग्गे लग्ग, गुरसिख वेखे भज्जा आए वाहो दाहीआ। सुखमन नाड़ी अग्गे जाए झुक, गुर का सिख ना जाए रुक, पंच विकारा पिच्छे सुट्ट, सुरत सवाणी शब्दी लुट्ट, आपे नाल रलाईआ। मान सरोवर अमृत प्याए साचा घुट्ट, दूई द्वैती मेटे फुट्ट, एका लाहा ल्या लुट्ट, गुरसिख आपणा रूप वटाईआ। दस्म दुआरा गया छुट्ट, बजर कपाटी जड़ दित्ती पुट्ट, गुरसिख लगाया गले घुट्ट, शब्द सिँघासण इक्क विछाईआ। आपे बैठा उप्पर चोट, डगमग जोत कराईआ। पंच लगावे साची चोट, नीचे उप्पर गावण वाहो दाहीआ। किसे हथ्थ ना आए कोटन कोट, साध सन्त बे बेअन्त बैठे धूणीआं ताईआ। आत्म भरी ना किसे पोट, नौ द्वार ना निकलया खोट, तन नगारे ना लग्गी चोट, गुर शब्द साचा डंक एका अंक ना कोई किसे वजाईआ। जन भगतां सुहाए

द्वार बंक, प्रगट होए हरि वासी पुरी घनक, इक्क लगाए जोती तनक, खिच्ची जाए वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिसंगत तेरी साची सेवा रिहा कमाईआ। सेवा करे सच द्वार, हरि साचा सच द्वारी। गुरमुख बिठाए अद्ध विचकार, दस्म द्वारी महल्ल उसारी। अग्गे पाए आपे सार, करे खेल अपर अपारी। चारों कुन्ट खोल्ह कुआड़, आवे जावे अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहिरी। गुरमुख साचे कर प्यार, फड़ फड़ बाहों लए तार, आपे करे पार किनार, सचखण्ड प्रभ पाए वंड विच ब्रह्मण्ड, गुरसिख तेरी नंगी ना होए कंड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, आपे दए पैज संवार। हरि गोला गुरसिख है, चाकर चाकरी रिहा कमाए। साचा सोहला सुणाए होए सन्मुख है, पर्दा ओहला ना कोई रखाए। आपे लाहे काया लग्गे झूठे दुःख है, आत्म सुख इक्क उपजाए। सुफल कराए मात कुक्ख है, नौ महीने दिन अठारां जो बैठी पेट छुपाईआ। लेखे लाए मानस देही मानुख है, जो जन चरनी सीस झुकाए। दो जहानी कटे भुक्ख नंग है, एका अमृत जाम प्याए। मात गर्भ ना होए उलटा रुक्ख है, लक्ख चुरासी फंद कटाए। गुर चरन प्रीती साचा सुक्ख है, जुग जुग विरला गुरमुख पाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे सन्त जनां साची सेवा रिहा कमाए। गुर पूरा करे अरदास, गुर संगत रिहा सुणाईआ। सदा सुहेला वसे पास, विछड़ कदे ना जाईआ। गुर संगत बहि बहि रसना गाउँणा स्वास, फीका बोल ना कोई कढाईआ। पुरख अबिनाशी आदि अन्त करनहारा नास, आपे लए उपाईआ। जन भगतां मेला शाहो शाबाश, दर घर मिली वड्याईआ। साचे मण्डल साची रास, गुरमुख विरले वेख वखाईआ। आपे वेखे पृथ्वी आकाश, आकाशां वेख वखाईआ। जन भगत द्वारे होया दासी दास, हरिभगतन ओट रखाईआ। हरि ओट तकाई इक्क जन, एका जन गंवाया। एका वसया काया तन, पूरन पूरन विच समाया। नाल ल्याया साचा धन्न, दिस किसे ना आया। बुध मति नाल रखाया कोई मन, प्रभ साचा धाम सुहाया। काया मन्दिर अन्दर बेड़ा बन्न, छप्पर छन्न वेख वेख वखाया। राग सुणाया इक्क कन्न, जन रसना सेवा लाया। गुर गोबिन्दा गया मन्न, प्रभ चरनी सीस झुकाया। कलिजुग अन्तिम बेड़ा देवे बन्न, सिर साचा सीस टिकाया। चार यार संग मुहम्मद देवे डन्न, वेला अन्त कराया। जुग जुग बेड़ा रिहा बन्न, कलिजुग लहिणा सतिजुग देणा दोहां रिहा चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे सन्त जनां, एका देवे नाम धना, धन्न धन्नवन्ता आप अख्वाया। धन्न धन्नवन्त हरि वड प्रबीना, आपे आप अख्वांयदा। आपे जल गुरसिख बणाए साची मीना, आप आपणे विच टिकांयदा। रसना हरि हरि गोबिन्द गोबिन्द जिस जन चीना, होए

अधीना सेव कमांयदा। काया चोली रंग चाढ़े भीन्ना, ठांढा करे सीना, आप आपणी दया कमांयदा। देवे वड्याई विच लोक तीनां, प्रभ वेखणहार जुगो जुग ना होए नबीना, आप आपणा राह वखांयदा। बिन गुर पूरे लोकमात झूठा जीणा, वेले अन्त ना कोई छुडांयदा। माया ममता सीर सभ ने पीता, अमृत धारा साचा नीर कोए ना मुख चुआंयदा। काया तन पाटा कप्पड़ किसे ना सीणा, लक्ख चुरासी वेखे दीना, प्रभ साचा आप भवांयदा। गुरसिख काया काया मक्का काअबा आप वखाए सच मदीना, एका हाजी शब्द घोड़े चढ़ के ताजी, फड़ फड़ मारे पंजे काजी, आप साजना आपणी साजी, गुर पूरा जां होया राजी, गुरसिख साचे पार करावणा। कलिजुग अन्तिम वंडण आया सोहँ शब्द साची भाजी, गुरसिख गुरसिख झोली अग्गे डाहवणा। किसे हथ्थ ना आए मुल्ला काजी, शेख़ मुसायक पीर फ़कीर जगत अडम्बर कोई ना करे सच सवम्बर, मीत मुरार हरि निरँकार जोत अलाही बेपरवाही नूरो नूर हाज़र हज़ूर किसे ना मेल मिलावणा। गुरसिख तेरी काया चोली जोत जगाए हरि कोहतूर, शब्द भण्डारा करे भरपूर, बेमुखां दिसे दूर, नेड़न नेड़ आप हो जाए पूर कराए भावनी। नबी रसूलां दए जड़ उखेड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, वेखे खेल साचे घर,

२९१ ०६ । शिव शंकर तेरी त्रिसूल। आपणा आप जाए भूल। बीस बीसे चुकावणा मूल। जगत जगदीसे मेला कन्त कन्तूहल। २९१ ०६

फल फुलवाड़ी गई फूल। सतारां हाढ़ी गुर संगत पंघूड़ा लैणा झूल। रक्खे लाज चरन छुहाई दाढ़ी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, ना जन्मे ना जाए मर, सद वसे आपणे घर, उच्चे मन्दिर चढ़, साची खेल दूलो दूल। दूलो दूल हरि बनवारी, गुरसिख दुल्हन इक्क सजाईआ। फूलो फूल हरि निरँकारी, सोहँ फूल बरखा लाईआ। भूलो भूल ना विच संसारी, सोग हरखा रिहा मिटाईआ। मूलो मूल चुकाए वारो वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार, आए द्वार जाए तार बन्ने धार सतिगुर तेरी पैज संवारी।

हरि सन्त हरि नाउँ है, पंज तत्त ना मूल। किसे नगर ना वसे शहर गराउँ है, गुरसिख ना जाणा भूल। हरि शब्द फड़े बाहों है, आदि अन्त चुकाए मूल। जिह्वा कुरलाए ना कोई काउँ है, इक्क पंघूड़ा रिहा झूल। करनहारा सच न्याउँ है, प्रभ साचा कन्त कन्तूहल। आपे पिता आपे मांउँ है, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख खिलाए कवण फूल। सन्त मति अनेक है, कलिजुग अन्तिम वार। गुर शब्दी मति बुध बिबेक है, आपे करे विचार। हरि सन्तन हरि हरि टेक है, ना लेखा नौ द्वार। हरि आपे रिहा वेख है, आप आपणा लए अवतार। लिखणहारा लेख है, करे कराए

आप प्यार। आपे मेटणहारा रेख है, आपे लए उभार। पेखणहारा लए पेख है, पूर्ब कर्मां कर्म विचार। एका लाए साची मेख है, धुर मस्तक हरि करतार। जन भगतां दर दरवेश है, होए भिखारी नर निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका एक राह वखाए, फड़ फड़ साचे मार्ग लाए, दोअँ दोआ रहिण ना पाए, सोहँ सोहा सो हो जाए, ओअँ ओ आप अख्वाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचा मार्ग लाए। सतिजुग साचा मार्ग लाउँणा, एका नाम वधाईआ। दूसर कोई रहिण ना पाउँणा, काया मन्दिर अन्दर करे ना कोई रसाईआ। सोहँ जिस जन रसना गाउँणा, आप चढ़ाए सच चढ़ाईआ। पुरख अबिनाशी घर साचे पाउँणा, सच शब्द करे कुड़माईआ। पंचम धुन एका गाउँणा, हरि एका राग अलाईआ। गुरमुख दिवस रैण ना मिले सौणा, प्रभ साचे शब्द जणाईआ। देवे सुनेहड़ा पवणी पवणा, साचा हवन रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचे देवे वर, सन्त सुहेले आप सुहाए एका दर, गुरमुख नाउँ रखाईआ। गुरमुख नाउँ लए रक्ख, सतिजुग बणत बणांयदा। फड़ फड़ बाहों करे वख, आपणा भेव खुलांयदा। कलिजुग भाण्डे करे सक्ख, वेला वक्त चुकांयदा। सिँघ भगवान प्रभ लए रक्ख, सावण मीत नाल रलांयदा। दर्शन देवे हरि प्रतक्ख, एका गीत सुणांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी उडणे कक्ख, ना कोई मुल्ल पवांयदा। नौ द्वारे लाउँदे भक्ख, अग्नी अग्न जलांयदा। अमृत आत्म लैणा चख, निझर धारा आप चखांयदा। आप उग्घेड़े तीजी अक्ख, नेत्र नैण खुलांयदा। मनमुख जीव मारन झक्ख, साचा सतिगुर ना कोई मनांयदा। कलिजुग अन्तिम हरि प्रतक्ख, निहकलंका डंक वजांयदा। एका एक सोहँ शब्द लए रक्ख, दूसर मेट मिटांयदा। बीस बीसा राह साचा दस्स, इक्क इकीसा दया कमांयदा। अन्तिम मुकणा ईसा मूसा केसाधारी ना कोई मूंड मुंडांयदा। पुरख अबिनाशी छत्र झुलाए आपणा सीसा, सृष्ट सबाई एका शब्द इक्क हदीसा आपणा रूप आपणा मुखड़ा आपे मूंहों वखांयदा। धुर दरगाही मेटे दुखड़ा, जो जन प्रभ द्वारे आए दर्शन भुखड़ा, उज्जल कराए मात मुखड़ा, जोत सरूपी दरस दिखांयदा। सोहँ शब्द चार जुग प्रभ आप उठाया आपणी कुखड़ा, सतिजुग साचे जन्म दवांयदा। बाल अवस्था निक्का मुखड़ा, हाहा टिप्पी आपे बन्द करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे मेले आपे विछड़ा आपे मेल मिलांयदा। गुरसिख सो धन्न है, जो दर वर मंगे जाए। हउमे हँगता निकले जन है, मैं मेरा रूप वटाए। हउँ तेरा सच्चे तन है, गुरसिक्खां हट्ट विकाए। आपे करनहारा खंन खंन है, आपे घाट चढ़ाए। आपे बेड़ा रिहा बन्नू है, आपे भार उठाए। कलिजुग देवण आया डन्न है, गुरसिक्खां कलिजुग माया भुक्ख वरताए। सम्मत चौदां भाण्डा देणा भन्न है, प्रभ उलटा कुम्भ कराए। ग़रीब निमाणया साचा चढ़नां चन्न है,

राज राजानां दए वखाए। शाह सुल्तानां देवे थाउँ सरन है, सम्मत सोलां राह तकाए। सिँघ गिरधारा सुण ला ला कन्न है, प्रभ साचा वणज कराए। प्रभ जोत जगाए साचे तन है, गुर संगत सेव कमाए। राए धर्म ना देवे डन्न है, लाड़ी मौत आप दुरकाए। सन्त वसेरा साचे घर ना कोई छप्परी छन्न है, चारे भुजा अग्गे डाहे। गुरसिख आत्म गई मन्न है, हरि जोती शब्द प्रनाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख जीउँदे जगत मारे भगती रूप जिवाए। गुरसिख मरना सच है, एका चरन द्वार। देह भाण्डा कच्ची कच्च है, लग्गे नौ द्वार। साचा वणज कराउँणा प्रभ साचो सच है, जम्मे वारो वार। गुर संगत अन्दर गुरमुख साचा रिहा नच्च है, अट्ठे पहर ख़बरदार। काम कामनी ना गया मच्च है, दोए जोड़ करे निमस्कार। ना कोई अचार चज्ज है, ना कोई तन श्रृंगार। कलिजुग काया चूड़ा जाणा भज्ज है, अन्तिम रोवे बांह हुलार। चरन द्वारे बहि बहि जाणा सज है, साचा मेला नर निरँकार। ताल नगारा एका जाणा वज्ज है, चारों कुन्ट जै जैकार। सृष्ट सबाई घर बाहरा जाणा तज है, नाता तुट्टे नारी नार। सिँघ गिरधारा प्रभ चरन द्वारे तेरा हज्ज है, आवे जावे ना वारो वार। प्रभ पड़दा रिहा कज्ज है, ग़रीब निमाणयां पावे सार। आत्म सेजा चढ़दा भज्ज है, आप आपणी किरपा धार। अन्तिम वेले रक्खे लज है, हरि सेवक सेवादार। अमृत आत्म प्याए रज्ज है, पहली चेत्र कर विचार। किसे लाउण ना देवे अज्ज पज्ज है, मायाधारी करे ख्वार। गुरसिख गुर संगत प्रीती जाणा बज्झ है, नाता जुड़े ना दूजी वार। देवे दरस उप्पर शाह रग है, आप वखाए सच्चा दरबार। चरन प्रीती गई लग्ग है, आए हार ना विच संसार। जगत तृष्ना साड़े अग्ग है, प्रभ आपणी हथ्थीं देवे डार। मिले मेल सूरे सरबग्ग है, एका बख्शे चरन प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख काया लए वर, आपे कन्त आपे नार आप भतार। कन्त भतारी आप प्रभ, जोती जोत जगांयदा। गुरमुखां वेखे मार ध्यान, नीचों ऊँच करांयदा। राज राजान शाह सुल्तान दर दर धक्के खाण, कलिजुग भिख कोई ना पांयदा। गुरमुखां होया हरि दरबान, कलिजुग अन्तिम कर पछाण, आप आपणा रूप वटांयदा। दाता दानी देवे सच्चा दान, चरन धूढ़ इक्क इशनान, दुरमति मैल धवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर द्वारे देवे माण।

गुरमुख तेरा साचा शिला, अछल अछल्ल कराया। वेखे खेल इक्क इकल्ला, गोबिन्द हरि रघुराया। भारत खण्ड वेख महल्ला, आपणी जोत जगाया। वरन अवरनी मेटे सल्ला, गोती गोत मिटाया। सोहँ शब्द कराए हल्ला, अगम्म अगम्मी

चढ़ के आया। गुरमुखां फड़ाए आपणा पल्ला, साचे मन्दिर वड़ के आया। नाल रलाए गोबिन्द डल्ला, आपणी धार बंधाया। शब्दी पवणी आपे रला, जोती नूर सवाया। वेख वखाणे जल थला, डूँघी कन्दर डेरा लाया। सोहँ वखाए साचा भल्ला, चारों कुन्ट रिहा फिराया। दीपक जोती एका बला, जगत अन्धेर दए मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख देवे साचा वर, दर घर सच्ची सरनाया। सच वस्त हरि कर परवान, सम्मत बीस भेंट चढ़ाईआ। आपे होया निगाहबान, तन हथ्थ ना कोई पहनाईआ। गऊ ग़रीबां देवे माण, दाता दानी आप अख्वाईआ। धुर दरगाही हरि फ़रमाण, हरिसंगत रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा लेखा रिहा लिखाईआ। ना सोना ना रूपा चांदी, प्रभ साचे आस रखाईआ। माया ममता सृष्टी बांधी, काला टिक्का मस्तक छाहीआ। इस दर आ के उस दर जांदी, पल्ले गंढु ना कोई बंधाईआ। जगत फसाया बण बण फांदी, प्रभ अचरज रीत चलाईआ। हरिभगत द्वारे रही शरमांदी, ना सके हथ्थ उठाईआ। रसना गा गा एह सुणांदी, गुर संगत सेवा लाईआ। गुरमुख साचे साचे पान्धी, गुर दर आयण पन्ध मुकाईआ। कलिजुग माया थक्की मांदी, वेले अन्तिम राह तकाईआ। किसे हथ्थ ना आउँणा चांदी, सुंञे महल्ल रहे डराईआ। गुर चरन प्रीती टुट्ट ना जांदी, प्रभ साचा रिहा कमाईआ। गुरसिक्खां दर होया बांदी, बन्दी छोड़ आप रघुराईआ। कलिजुग कहर अन्धेरी वरते आंधी, राह खैहड़ा दिस ना आईआ। चरन धूढ़ गुरसिख कोट जन्म दे पाप लांहदी, जिस जन मस्तक लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां सेवा रिहा कमाईआ। हीरे लाल जड़त जड़ाऊ, सुच्चे पन्ने मोती। कलिजुग तेरे झूठे बाहू, दुरमति मैल किसे ना धोती। गुरमुखां लहिणा देणा रक्खे आप अगाऊ, प्रभ प्रगट होए छेती। गुरसिख सद बलि बलि जाऊ, हरि दर्शन नेतन नेती। लक्ख चुरासी फड़ फड़ काऊँ, किसे सुरत रहे ना नाहती धोती। घर घर अन्तिम काग उडाऊँ, खुशी मनायण पंचम जेठी। हाढ़ सतारां राह भुलाऊँ, माता कुक्ख ना जाणे पूत सपूता कुक्ख पलेठी। गुरमुख साचे नाल रलाऊँ, अग्गे पिच्छे आप हो जाऊँ, मेट मिटाऊँ वड वड सेठी। गुर चरन धूढ़ गुरसिख तेरी नुहाऊँ, हथ्थ रक्खां पैरां हेठी। फड़ फड़ बाहों आप तुराऊँ, साचे नेत्र नैण आपे पेखी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां मंगण आया वर, जुगां जुगां दा आपे भेती। गुरमुख तेरा साचा राह, प्रभ जुग जुग आप तकांयदा। शब्द गुरू पहलां भेज मात मलाह, आपणा राह वखांयदा। प्रगट जोत हरि पकड़े बांह, रूप रंग ना कोए जणांयदा। गुरमुखां काया वेखे साचा थाँ, हरि आपणा आसण लांयदा। आपे पिता आपे माँ, पिता पूत आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत हरि आपणा आप भेंट चढ़ांयदा। आप आपणा भेंट

चढ़ाया, अचरज कल वरताईआ। पंचम तत्त तन भस्म कराया, ख़ाकी ख़ाक उडाईआ। इसमी इसम नज़र ना आया, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। आप आपणा जन्म दवाया, मात पित ना कोए बणाईआ। पिता पूत ना कोए अख्वाया, माता कुक्ख ना सुफल कराईआ। दुःख सुख ना नाल ल्याया, एका रंग समाईआ। तृष्ना भुक्ख ना कोए वखाया, आलस निन्दरा नेड़ ना आईआ। मन्दिर अन्दर ना कोए बणाया, ना कोए छप्पर छाईआ। काया मन्दिर ना कोई लुटाया, ना कोई कुण्डा लाहीआ। डूँघी कन्दर ना वेख वखाया, उच्चा टिल्ला भेव ना राईआ। बस्त्र शस्त्र ना तन सजाया, गुर पीर ना कोई मनाईआ। साध सन्त ना ओट तकाया, गुर मन्त्र ना रसना गाईआ। तन नगारे ना चोट लगाया, ना पंचम आस रखाईआ। शब्द भण्डारा ना हट्ट भराया, हरि साचे भेव ना राईआ। जोती नूर इक्क कराया, लिखण पढ़न विच ना आईआ। दर द्वार प्रभ डेरा लाया, भेव कोए ना पाईआ। नेड़े हो हो खेल रचाया, अचरज रीत चलाईआ। जगत झेड़े रिहा मुकाया, आप आपणा रूप वटाईआ। गोबिन्द खेड़े भाग लगाया, घर साचे वज्जी वधाईआ। हक्क निबेड़े रिहा कराया, साधां सन्तां रिहा उठाईआ। लक्ख चुरासी गेड़े रिहा दवाया, राज राजानां रिहा हिलाईआ। खुल्ल्हा वेहड़ा रिहा कराया, धरतमात दए वधाईआ। जन भगतां बेड़े बन्न्ह वखाया, जोत निरँजण नाल मिलाईआ। साचे बेड़े रिहा चढ़ाया, सोहँ नईआ नाम चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भैणां भईआ ना कोई मनाईआ। ना कोई भैणां भईआ बेबा, ना मात पित अख्वांयदा। ना कोई पढ़े जगत कतेबा, गुर पीर ना कोई अख्वांयदा। रसना जाप ना गाए जिह्वा, ना कोई ध्यान लगांयदा। दूसर घर ना करे वसेरा, आप आपणा घर वसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत तेरा लहिणा देणा जुग जुग मूल चुकांयदा। साचे घर हरि बिसरामा, साची सेज विछाईआ। नूर नुरानी जोती जामा, शब्द सुनेहड़ा भेज सृष्ट सबाई रिहा जगाईआ। हड्ड मास नाड़ी ना कोई दीसे चामा, जोती तेज सवाईआ। पल्ले ना बन्न्हे कोई दामा, ना कोई आपणा भार उठाईआ। गुरमुखां पूर कराए कामा, जुग जुग पैज रखाईआ। कलिजुग मिटे अन्धेरी शामा, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाईआ। लक्ख चुरासी एका तामा, गुर संगत रिहा वखाईआ। सोहँ वज्जा नाम दमामा, प्रभ सोहँ डंका आपणे हथ्थ रखाईआ। जोत सरूपी पहरया जामा, जामावन्त हनवन्त उठाईआ। आपे जाणे आपणा नामा, नाउँ निरँकारा इक्क रघुराईआ। जुग जुग वरताए आपणा भाणा, हरि भाणे विच समाईआ। कोई भेव ना पाए राजा राणा, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। कलिजुग वेला अन्त पछाना, गुरमुखां दए वधाईआ। सम्मत चौदां हट्ट खुल्ल्हाना, हट्ट हटवाणा आप हो जाईआ। दो अक्खर अक्खर हरि नाम बताना, चहु अक्खर मूल बताईआ। रोड़ी सक्खर हरि जोत प्रगटाना, दरस दिखाना नूरो

नूर अलाहीआ। जोती पत्थर डगमगाना, कोहतूर बैठा मुख छुपाईआ। आपे होया जाणी जाणा, दूर नेड़ ना कोई वखाईआ। चीना रूस सुणाए इक्क तराना, हरि आपणा राग अलाईआ। गोबिन्द गाए कलिजुग गाना, गावत रैण विहाईआ। दाअवत देवे इक्क जहाना, लिख लिख लेख पुचाईआ। हाढ़ सतारां खेले खेल महाना, देस बवंजा दए जगाईआ। पकड़ उठाए शाह सुल्तानां, मुस्लिम हिन्दू वेख वखाईआ। शब्द सरूपी बन्ने गाना, ईसा आपे रिहा जगाईआ। एका मारे तीर निशाना, जगत जगदीशा चवी हथ्थ निशान चढ़ाईआ। चवीआं अवतार वरते आपणा भाणा, चारे कूटां दए हिलाईआ। नौ खण्ड कराए सुंञ मसाणा, सत्तां दीपां पए दुहाईआ। गुरमुखां दस्से एका सच टिकाणा, गुर चरन सच्ची सरनाईआ। कलिजुग अन्तिम लौहण आया मुकाणा, काला सूसा तन छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका करे अन्त स्यापा। किसे ना सुझे साचा मापा। त्रैगुण चढ़या जगत तापा। गल पल्लू पाए नेत्र नीर वहाए, ना कोई धीर धराए, ना जपाए साचा जापा। अजपा जाप जग गया मुक्क। साधां सन्तां मूंह पैणा थुक्क। सम्मत सोलां भाणा प्रभ ना जाए रुक। सिंघ शेर दलेर जग रिहा बुक्क। आपणा आपणा भार मनमुख जीवां लैणा चुक्क। गुरमुखां देवे एका सुख। मानस देह मनुख, सोहँ चार जुग रक्खया आपणी कुक्ख। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत देवे इक्क वर, दोए जोड़ करे प्रनाम, गुर पूरे दा सीस जाए झुक। गुर पूरे सीस निवाया, गुर संगत वेख प्यार। नेत्र नीर वहाया, कलिजुग रोवे ज़ारो ज़ार। लाड़ी मौत होई त्यार। धर्म राए दी सुण पुकार। कुँवार कन्या ला हार शृंगार। आई दर सच्चे दरबार। प्रभ अबिनाशी किरपा कर, लक्ख चुरासी लभ्भां इक्क भतार। साचा कन्त कोई दिस ना आया, प्रभ अबिनाशी देवे धक्का मार। चारों कुन्ट लए हुलार, पृथ्वी आकाश दए हिलाया। जीवां जन्तां दए सुधार, दूसर गुर पीर ना होए रखवाल, ना रक्खे सिर हथ्थ टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेव रिहा छपाया।

२९६
०६

✻ २८ पोह २०१३ बिक्रमी नरैण सिँघ दे गृह पिण्ड गुमानपुर ज़िला अमृतसर ✻

हरिभगत सुहाए दर, दर दरवाज़या। जोत निरँजण देवे वर, लोकमात संवारे काज्जया। शब्द भण्डारा देवे भर, पंचम मारे साची आवाज़या। धर्म राए दर चुक्के डर, नाम घोड़ा देवे ताज्जया। आप आपणे जिहा कर, सच द्वारे आपे गाज्जया। सरन सरनाई जाणा तर, लेखा चुक्के नौ दरवाज़या। आप वखाए एका घर, प्रभ रक्खणहारा लाज्जया। ना कोई जाणे

नारी नर, गोबिन्द ग़रीब निवाज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन काया साजन साज्जया। गुरमुख काया सच द्वार, हरि साचा आप सुहांयदा। जोत सरूपी कर आकार, दीपक इक्क जगांयदा। शब्द धुन अपर अपार, आपणी आप उपांयदा। सुणे सुणाए सुणनेहार, दिस किसे ना आंयदा। ताल तलवाड़ा वजाए अपर अपार, अनहद मृदंगा इक्क वजांयदा। सारिंग सारंग नर निरँकार, आपे आप वजांयदा। चिट्टे अस्व कसे तंगा, सोलां कलीआं आसण लांयदा। हरिजन साचे हरि दुआरा एका मंगा, प्रभ एका भिच्छया पांयदा। कलिजुग जीव जूठा झूठा भुक्खा नंगा, नाम धन ना कोई वखांयदा। लक्ख चुरासी होए भंगा, वेले अन्त ना कोई छुडांयदा। पंजां झेड़ा दिवस रैण जंगा, पंचम मीता मुख छुपांयदा। माया डस्सणी मारे डंगा, बचया कोए रहिण ना पांयदा। गुरमुख विरले गुर पूरा लाए आपणे अंगा, आप आपणी गोद उठांयदा। कलिजुग काला वेख नौरंगा, हरि गोबिन्द रूप वटांयदा। लक्ख चुरासी भन्ने काची वंगा, एका खण्डा हथ्थ उठांयदा। कलिजुग धारी वहिण वहाए उलटी धारा गंगा, अट्ठ सट्ठ तीर्थ वेख वखांयदा। गुर दर मन्दिर अन्दर वेखे एका चंगा, दस्म द्वारी महल्ल सुहांयदा। आपे होए अंग संगा, सगला साथी आप अख्वांयदा। साची चोली गुरमुख काया हरि नामे रंगा, लोकमात उतर ना जांयदा। अनहद वजाए एका एक मृदंगा, हरि आपणे हथ्थ रखांयदा। शब्द सरूपी इक्क पलँघा, घर साचे आपे डांयदा। गुरमुख सवाणी लाए अंगा, अंगीकार आप करांयदा। सोहँ जोड़ा पाए वंगा, नाम मैहन्दी हथ्थीं लांयदा। साचे धाम मेल मिलाए हरि तरंगा, दो रंगां जोड़ जुड़ांयदा। प्रगट होया सूरा सरबंगा, गोबिन्द काया जोत जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त दुलार, आपे वेखे कर प्यार, नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां फोल फुलांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी प्रभ मारे झाती, कलिजुग अन्तिम दए दुहाईआ। गुरमुखां लहिणा देणा देवे बाकी, जुग जुग पैज रखाईआ। बन्द किवाड़ा खोल्हे ताकी, निर्मल दीपक जोत जगाईआ। आपे बणया साचा साकी, अमृत आत्म सच सरोवर भर प्याला रिहा प्याईआ। ना कोई जाणे बन्दा ख़ाकी, कलिजुग भरम भुल्ली लोकाईआ। साध सन्त घर घर बण बैठे आकी, गोबिन्द दरस ना नेत्र पाईआ। ना कोई जाणे भविख्त वाकी, रसना गा गा होई हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख काया वेख घर, बैठा आसण लाईआ। गुरमुख काया सच दर, हरि साचे जाणया। मेट मिटाए अन्ध अन्धानयां। मन्दिर महल्ल अटल उच्च मनार, प्रभ एका एक वखानया। ना कोई दिसे चार दिवार, उप्पर छत्त ना कोई वखानया। ना कोई बाडी बणाए विच संसार, लेखा लिखे ना जीव नादानया। पुरख अगम्मा आपे जम्मा, आपे जाणे आपणा कम्मा, करे खेल अपर अपार। लेखा चुक्के पवण स्वासी दमा, सास ग्रासां उतरे पार। नीर ना वहाए

नेत्र छम्मा, रसना गुण ना लए विचार। ना मरे ना कदे जम्मा, आदिन अन्ता एकँकार। गगन पतालां रहाए बिन बिन थम्म्हां, त्रैगुण माया पसर पसार। लक्ख चुरासी ब्रह्मा जम्मा, पंजां तत्तां वेख विचार। काया भाण्डा अन्तिम एका वार हरि हरि भन्ना, आपे बणया हरि ठठयार। लक्ख चुरासी देवे डन्ना, कलिजुग अन्तिम आई हार। गुरमुख विरले पुरख अबिनाशी आत्म मन्ना, ढहि ढहि ढेरी चरन द्वार। होए सहाई हरि रघुराई भोले भाउ जिउँ जट्ट धन्ना, बाहों फड़ फड़ लए तराई। आप वखाए साचा घर ना कोई छप्परी ना कोई छन्ना, हरि साचे सन्त बणाई। भाण्डा भरम गढ़ हँकारी गुर पूरे मातलोक तन भन्ना, शब्द खण्डा एका वाही। निर्मल जोत जगाए काया तना, जोत निरँजण सेवा लाई। दर द्वारे आए भन्ना, गुरमुख तेरी काया अन्दर साचे मन्दिर आपे बैठा सेज विछाई। पंजां चोरां देवे डन्ना, रोंदे जाण वाहो दाही। बजर कपाटी पड़दा भन्ना, दूई द्वैती मेट मिटाई। गुर शब्द फड़ाए साचा पल्ला, औखी घाटी रिहा चढ़ाई। सच सिँघासण पुरख अबिनाशण दासी दासन एका मल्ला, हरिजन साचे रिहा गोद उठाई। एका राग सुणाए कन्ना, पंचम राग सेवा लाई। आपे आपणा रंग वखाए वंन सुवन्ना, सति पुरख निरँजण जोत जगाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे भगती वर, जुग जुग लोकमात रक्खे वड्याई। हरिभगत वड्याई सच है, आदि जुगादि रहाए। हरिभगत वड्याई सच है, विच ब्रह्माद समाए। हरिभगत वड्याई सच है, जुग साचे नाद वजाए। हरिभगत वड्याई सच है, विच ब्रह्माद समाए। हरिभगत वड्याई सच है, काया बुद्धि बिबेक कराए। हरिभगत वड्याई सच है, हरि साचा मेल मिलाए। हरिभगत वड्याई सच है, जोत निरँजण तेल चढ़ाए। हरिभगत वड्याई सच है, सुखमन नाड़ी पार कराए। हरिभगत वड्याई सच है, बजर कपाटी कुण्डा लाहे। हरिभगत वड्याई सच है, साचे हाटे नाम विकाए। हरिभगत वड्याई सच है, तन पाटे जगत चीर वखाए। हरिभगत वड्याई सच है, पीर फकीर ना कोई जणाए। हरिभगत वड्याई सच है, हरि अमृत आत्म सीर प्याए। हरिभगत वड्याई सच है, गुर शब्दी धीर धराए। हरिभगत वड्याई सच है, एका चोटी अख़ीर चढ़ाए। हरिभगत वड्याई सच है, मनमुख जीव ना जाणे राए। हरिभगत वड्याई सच है, कलिजुग माया विच ना जाए मच्च है, अग्न लोभ नेड़ ना आए। हरिभगत वड्याई सच है, नौ द्वार ना रिहा नच्च है, दर घर साचा वेख वखाए। हरिभगत वड्याई सच है, काया माटी भाण्डा कच्च है, थिर रहिण ना पाए। हरिभगत वड्याई सच है, सृष्ट सबाई राह रिहा दस है, गुर चरन सच्ची सरनाए। हरिभगत वड्याई सच है, हरि हिरदे अन्दर रिहा रच है, दिवस रैण दरस दिखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग जन भगतां रिहा बणत बणाए।

२६८ ०६

पारब्रह्म प्रभ एक है, एका एकँकार। लक्ख चुरासी टेक है, वरते विच संसार। हर घट आपे रिहा वेख है, जोती शब्दी कर पसार। आपे लिखणहारा लेख है, लेखा लिखणहार करतार। आपे मेटणहारा रेख है, जुग जुग लए अवतार। गुरमुख साचे रिहा वेख है, आप आपणी किरपा धार। हरि आपे धारी केस है, आपे मूंड मुंडार। दो जहानी दर दरवेश है, आवे जावे वारो वार। कलिजुग कर्मा रिहा वेख है, वेला अन्तिम आप विचार। जोती जामा धरया भेख है, गुर गोबिन्दा तन शृंगार। ना कोई रूप ना कोई रेख है, दिस ना आए हरि निरँकार। शब्द जैकारा चारों कुन्ट है, आप कराए जै जै जैकार। तीर निराला रिहा छूट है, राज राजानां शाह सुल्तानां करे ख़बरदार। मेट मिटाए जूठ झूठ है, कलिजुग रैण अन्धेरी अन्ध अंध्यार। माया राणी खाली ठूठ है, भरे करे खाली प्रभ खाली भरे भण्डार। प्रभ गुरमुखां बन्ने एका मुट्ठ है, एका नाम देवे अधार। सति पुरख निरँजण गया तुठ है, प्रगट होए विच संसार। मनमुखां खाली काया ठूठ है, दर दर फिरन भिखार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखण आया दर, निहकलंक नरायण नर अवतार। कलिजुग अन्तिम वेखण आया, दो जहानां वाली। औलीए पीर शेख़ मुसायक संग मुहम्मद चार यार मेटण आया, जुग जुग चले अवल्लड़ी चाली। ईसा मूसा काला सूसा चीना रूसा दो धड़ां जोड़ जुड़ावण आया, आपे होया हथ्थां खाली। गुरमुख साचे सन्त सुहेले इक्क अकेले नाम घोड़े आप चढ़ावण आया, सोहँ देवे सच दलाली। जोती जोड़े मेल मिलावण आया, धुरदरगाही माली। कलिजुग तेरी काली चोली, धर्म राए दर होई गोली, लक्ख चुरासी आप प्रनावण आया, लाड़ी मौत नाल उठाए डोली। सतिगुर साचा सच भण्डारा खोल्लण आया, गुरमुखां आत्म रंग चढ़ाए एका रंग गुलाली। चिट्टे अस्व तंग कसण आया, नीला मारे पहली छाली। गुरमुखां हिरदे अन्दर वसण आया, दीपक जोत जगाए मस्तक साची थाली। मनमुखां जीवां चरन हेठां झस्सण आया, जोत जगाए अकाली। सतिजुग साचा राह दस्सण आया, वाली हिन्द सुरत संभाली। तीर निराला एका कसण आया, रसना चिल्ला आप बणा ली। पंचां बस्त्र तन छुहावण आया, आपे बणया साचा पाली। एका अस्त्र आप दुड़ावण आया, आपे कल्गी तोड़ा सीस टिकाली। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आपे जाणे आपणी चाली। कलिजुग तेरी साची धार, प्रभ साचा आप मिटांयदा। लक्ख चुरासी कर्म विचार, जोती जामा भेख वटांयदा। गुर गोबिन्दा कर त्यार, पीला बस्त्र तन छुहांयदा। एका शब्द दए अधार, निर्मल जोती नूर करांयदा। लोआं पुरीआं करे बाहर, ब्रह्मा शिव आप उठांयदा। करोड़ तत्तीसा रोवे जारो जार, सुरपति राजा इन्द मुख छुपांयदा। लोकमात आया कलिजुग तेरी अन्तिम वार, सति पुरख निरँजण जोती भेख वटांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां

करे ख़बरदार, सुत्ता कोई रहिण ना पांयदा। सम्मत तेरां तेरी धार, नानक तोला आप अख्वांयदा। मोदीखाना कर विचार, साचा बोला इक्क सुणांयदा। सोहँ ढोला रसन उचार, निरँकार निरँकार ध्यांअदा। होया गोला विच संसार, प्रभ साची सेवा लांयदा। गुर गोबिन्दे कर प्यार, कल्गी तोड़ा सीस टिकांयदा। देवे दरस अगम्म अपार, शब्द खण्डा कढु वखांयदा। वेले अन्तिम पावे सार, हरि शब्दी खोज खुजांयदा। उच्चा डण्डा अपर अपार, प्रभ आपणा आप चढ़ांयदा। अन्तिम होए ना रंडा अन्तिम वार, कलिजुग कन्ढा आप वखांयदा। कलिजुग कन्ढा ढाहे अन्तिम वार, ना कोई किसे छुडांयदा। भेख पखण्डा मेटे अन्ध अंध्यार, साधां सन्तां एका राह वखांयदा। ऊँचां नीचां गऊ ग़रीबां पावे सार, एका दर एका सर एका चरन हरि साचा आप दिसांयदा। आप चुकाए मरन डरन, जिस जन खोल्हे हरन फरन, तरनी तरन आप अख्वांयदा। धन्न गुरसिख गुर पूरे जो सरनी पड़न, प्रभ आपणी गोद उठांयदा। मनमुख कीता आपणा भरन, मानस देही मात हरन, लक्ख चुरासी आप भवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत तेरां तेरी धार, सृष्ट सबाई आप तुलांयदा। सृष्ट सबाई तोल तुलाए, एका तोलणहारा। एका बोला शब्द जणाए, आदि अन्त एकँकारा। काया चोला आप पल्टाए, गोबिन्द रूप अपारा। हल्ला पहला पार कराए, पूत सपूता वारा। ऐली मौला नाम मिटाए, हू हू अल्ला मारे नाअरा। इक्क इकल्ला जोत जगाए, प्रगट नर अवतारा। नाम खण्डा हथ्थ उठाए, लक्ख चुरासी मारे मारा। ब्रह्मण्डां साची वंड वंडाए, प्रभ आपे वंडणहारा। कलिजुग भेख पखण्डा दए मिटाए, प्रगट हो विच संसारा। जेरज अंडां वेख वखाए, उत्भज सेत्ज पार किनारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जोती नूर करे चमत्कारा। जोती नूर हरि अकाल, आपणी जोत जगाईआ। प्रगट होए दीन दयाल, नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां करे रुशनाईआ। एका चले अवल्लड़ी चाला, सम्मत तेरां पहली चेत्र, साची रचन रचाईआ। चौदां लोकां वेखे खेत्र, चौदां तबकां रिहा हिलाईआ। लोआं पुरीआं करे हक्क हक्क निबेड़ा, साढे तिन्न हथ्थ वंड वंडाईआ। नौ द्वारे करे चेतन्न, पंज देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुर गोबिन्दे सेवा लाईआ। गुर गोबिन्दा साचा मीत, प्रभ साचा संग निभांयदा। इक्क सुणाए सुहागी गीत, लोआं पुरीआं आप जणांयदा। सतिजुग चलाए साची रीत, कलिजुग मेट मिटांयदा। लक्ख चुरासी परखे नीत, हर घट बैठा आसण लांयदा। ना कोई बणया देहुरा गुरुदुआरा मन्दिर मसीत, शिवदवाला गुर गोपाला वेले अन्तिम ढांहयदा। प्रगट जोत इक्क अकाला, भगतां होए आप रखवाला, चारों कुन्ट वेख वखांयदा। गुरसिख तेरी सच्ची धर्मसाला, दसम द्वारी उच्च महल्ल हरि अटल शब्द पलँघ इक्क रखांयदा। नौ द्वारे पार लँघ, गुर शब्द निभाए

साचा संग, अनहद वजाए इक्क मृदंग, अमृत धारा सर सरोवर आत्म वखाए एका गंग, गुरमुख साचे आप नुहांयदा। अंगीकार लाए अंग, शब्द घोड़े कस तंग, दस्म द्वारी जाए लँघ, हरि साचे मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदिन अन्ता हरि भगवन्ता वेख वखाए साधन सन्ता, जीआं जन्तां भेव ना कोई छुपांयदा। साध सन्त हरि कलि विचार, शब्दी करे जणाईआ। आदिन अन्ता एकँकार, अकल कला वरताईआ। जलां थलां पावे सार, उच्चे टिल्ले पर्बत जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर वेख वखाईआ। त्रैगुण माया देवे साड़, गोरख मच्छन्दर उच्चे टिल्ले दए दुहाईआ। दर दर भौंदे फिरदे मन्दिर, कोटन कोट बैठे धूणीआं ताईआ। जोत ना जगे किसे द्वार काया मन्दिर, धूंआं धार रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां तोड़े बजर कपाटी लग्गा जन्दर, सोहँ कुंजी आपणी हथ्थीं लाईआ। बजर कपाटी औखा घाट, ना कोई मात चढ़ांयदा। साचा नाम ना मिले किसे हाट, लिखण पढ़न विच ना आंयदा। ना कोई सहाई अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ ताट, सर सरोवर ना कोई नुहांयदा। जोत निरँजण ना जगे लिलाट, काया माट ना वेख वखांयदा। जीवां जन्तां माया पाया घाट, माया ममता लोभ हँकार जगत मोह मूल चुकांयदा। अन्तिम वेले बैठण कोई ना सुणे सो, नेत्र हन्झूआं मुख लैणा धो, सम्मत सोलां नेड़े आंयदा। साचा सीर सके मुख ना चो, चारों कुन्ट वहीर करांयदा। एका शब्द सुहागा लैणा जो, प्रभ माझा पहले ढांयदा। गुरमुख साचे एका शब्द रसना गावणा सोहँ नां करे कराए जो अग्गे हो, दूसर किसे हथ्थ ना आंयदा। आत्म बीज साचा लैणा बो, अमृत फल आप खवाए, निहचल धाम अटल सृष्ट सबाई भुलाए, कर कर वल छल प्रभ आपणा भेव छुपांयदा। लक्ख चुरासी दल, कलिजुग परछावां जावे ढल, गुर संगत देवे इक्क वर, प्रगट होए नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी जोत जगांयदा। नर नरायण हरि निरँकार, सर्बकला भरपूरया। प्रगट होए विच संसार, एका नाद वजाए सोहँ साची तूरया। नौ खण्ड पृथ्वी रिहा सुणाए, लोआं पुरीआं हाज़र हज़ूरया। गुरमुख विरला रसना गाए, प्रभ आसा मनसा पूरया। होए सहाई थाउँ थाँईं, ना जाणे नेड़े दूरया। सन्त सुहेले पकड़ उठाए फड़ फड़ बाहीं, मनमुख जीवां करे चूरो चूरया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अकल कला भरपूरया। गुर गोबिन्द बण लिखार, आपणा लेख लिखांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, सम्बल नगरी धाम सुहांयदा। सम्बल नगर विच संसार, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणांयदा। अन्दर वड़ हरि दातार, आपणा रूप छुपांयदा। शब्द खण्डा कर त्यार, आपणे हथ्थ उठांयदा। नीला घोड़ा इक्क अपार, सोहँ नाउँ रखांयदा। कल्गी तोड़ा साची धार, जोती नूर चमकांयदा। मिठ्ठा कौड़ा वेखे विच संसार, वेखणहार आप अख्वांयदा। नीली छत्तों आए बाहर,

नीले वाला आप हो जांयदा। लोआं पुरीआं पावे सार, ब्रह्मा माण गंवांयदा। ब्रह्मा रोवे धाहां मार, अट्ठे नेत्र नीर वहांयदा। चारे मुख रिहा उग्घाड़, एका शब्द अलांयदा। पुरख अबिनाशी आप गिरधार, दोए जोड़ सीस झुकांयदा। पुरख अगम्मा रिहा विचार, वेला अन्तिम आंयदा। गुरमुखां देवे हरि सिक्दार, सच सिक्दार आप अख्वांयदा। सिँघ पाल प्रभ कर त्यार, पुरी ब्रह्म माण दवांयदा। छत्र झुलाए सीस अपार, छत्रधारी आप अख्वांयदा। अमृत आत्म देवे एका धार, चरनोधक मुख चुआंयदा। जोती नूर कर उज्यार, आत्म शब्द धरांयदा। आत्म शब्द ब्रह्म विचार, पारब्रह्म रूप समांयदा। पारब्रह्म हरि निरँकार, निरवैर आप अख्वांयदा। ना कोई बन्ने सीस दस्तार, बस्त्र शस्त्र ना तन सजांयदा। आपे करे सच प्यार, आपे वेख वखांयदा। पुरी शिव हरि पावे सार, शिव शंकर पकड़ उठांयदा। बाशक तशका गल विच हार, रो रो सीस झुकांयदा। प्रभ अबिनाशी मारे मार, जगत जगदीशा खेल खिलांयदा। कलिजुग अन्तिम आई हार, नर नरेशा जोत जगांयदा। ना कोई पूजे गणपति गणेशा, शिव शंकर मेट मिटांयदा। पुरख निरँजण सति आदेसा, आप आपणी अलख जगांयदा। हरिजन साचे कर प्रवेशा, जोती नूर टिकांयदा। आपे जाणे आपणा वेसा, वेस अनेका आप हो आंयदा। आपे वसे जगत बबेका, दिस किसे ना आंयदा। गुरमुख साचे एका बख्शे चरन टेका, शिवपुरी धाम सुहांयदा। त्रैगुण माया ना लाए, सेका, पंज तत्त ना वेख वखांयदा। आपे होए एकम एका, एका धार बंधांयदा। सुरपति राजा इन्द आपे वेखा, आपे वेख वखांयदा। करोड़ तेतीसा ना कोई जाणे धारी केसा, ना कोई मूंड मुंडांयदा। आप आपणा पीसण पीसा, पीसणहारा आप अख्वांयदा। ना कोई जाणे प्रभ का वेसा, ना भेव किसे जणांयदा। सम्मत चढ़या बीस बीसा, एका हाटी जोत जगांयदा। भारत खण्ड हरि जगदीसा, माझे देस वेस वटांयदा। राज राजानां खाली करे खीसा, आप आपणी बणत बणांयदा। सोहँ शब्द सच हदीसा, सतिजुग साची वस्त लिआंयदा। सम्मत इक्की ना कोई पढ़े कुरान हदीसा, ना कोई सपारे गांयदा। वेद पुराण मिटे बीस बीसा, प्रभ साचा आप मिटांयदा। ना कोई गाए राग छतीसा, लिखिअ लेख ना कोई मिटांयदा। गुर गोबिन्दा इक्क इकीसा, इक्क अकाल हो दयाल चार वेद पुराण अठारां आपणी सरन रखांयदा। ना कोई वज्जे ढोलक छैणा, ताल अनहद ताड़ा, बहत्तर नाड़ा प्रभ साचा ताल वजांयदा। माझा देस इक्क अखाड़ा, सम्मत सोलां साध सन्त कढ्ढुण हाढ़ा, प्रभ साचा मुख भवांयदा। सर अमृत ना कोई छुहाए निउँ निउँ दाहड़ा, प्रभ पार ब्यासों सर्ब करांयदा। आपे वेखे सम्मत सतारां, चारों कुन्ट होए उजाड़ा, धूंआं घर ना किसे धुखांयदा। गुर गोबिन्द बणे टट्टू भाड़ा, धुर दरगाही साचा लाड़ा, जुग जुग आपणी बणत बणांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, तीर्थ तट्टां आई हारां, साधां सन्तां पैणी मारा, मुल्ला शेखां पंडतां

काज़ीआं पीर पैगम्बरां गोरख मच्छन्दरां ना कोई पावे सारा, नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां घर वज्जणा जिन्दरा, हरि साचा लेख लिखारा। सम्मत अठारां वहाए धारा, उच्चे टिल्ले सारे हिले, मेट मिटाए बूरे कक्के बिल्ले, नाल रलाए संग मुहम्मद चार यारा। सम्मत उन्नी सभ दी चोटी जाए मुंनी, ना कोई दीसे मुस्लिम सुन्नी, अल्ला राणी सिर लाहे चुन्नी, चारों कुन्ट हाहाकारा। पारब्रह्म वड गुण गुणी, गुरमुख साचे छाण पुणी, इक्क वखाए साचा दर दरबारा। सम्मत बीस पन्दरां कत्तक जमन किनारा। पार उतारा सीस गंज, वज्जे मृदंग सोहँ शब्द जै जै जैकारा। नीले घोड़े कसया तंग, आपे फिरे विच ब्रह्मण्ड, मनमुख जीव पौंदे डण्ड, नेत्र दिस ना आए दसवां गुर दस अवतारा। जूठयां झूठयां तोड़े आत्म घमंड, माया लूठयां कलिजुग काया करे खण्ड, जीव जन्त नार दुहागण होए रंड, गुरमुख साचे सन्त जनां प्रभ देवे नाम सहारा। आप आपणे कर्मा चुक्कणी पंड, सम्मत चौदां वंडी वंड, किसे तन पंज तत्त ना रहिणी ठण्ढ, राज राजानां शाह सुल्तानां ना कोई दिसे सहारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल घर घर, भरमे भुल्ले नारी नर, प्रगट होए नरायण नर अवतारा। गुरमुख विरले सिर ते भाणा लैणा ज़र, ना जन्मे ना जाए मर। ताल सुहावे साचे सर, लक्ख चुरासी पार किनारा। गुर चरन साचा गुरुदुआरा। नेत्र खोल्हे हरन फरन, मेल मिलाए एकँकारा। मातलोक चुक्के मरन डरन, मात गर्भ ना आए दूजी वारा। मनमुख जीव काची माटी ता ता अग्नी लायण गारा। दिस ना आए पारब्रह्म सति सरूप महिंमा अनूप, उच्चे टिल्ले बैठा अगम्म अपारा। चारों कुन्ट तीर निराला रिहा छूट, सभ दीआं जड़्हां रिहा पूट, कलिजुग तेरा वहिण वहाए एका एका धारा। सतिजुग साचा लाए बूट, गुरमुख लाहा लैण लूट, प्रभ चरन दुआरा। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क घर, प्रभ साचे साजण साज्जया। सच तख्त बैठ जहान माझे देस दित्ता वर, गुर गोबिन्द घोड़े चढ़, गुरसिख ना मारी आवाज़या। शब्द सरूपी आपणा घाड़न घड़, पवण घोड़े आपे चढ़, धुर दरगाही आए भाज्जया। दिस ना आए सीस धड़, सभ दे नाल रिहा लड़, ना कोई छड्डे मुल्ला काज़ीआं। मेट मिटाए तोड़ तुड़ाए किला हँकारी गढ़, कलिजुग खेले खेल अन्तिम वारी एका बाजिया। एका अक्खर रिहा पढ़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वड्डा शाहो राजन राज्जया। माझे आए फेरा पाए। सम्बल नगर धाम सुहाए। रमईआ राम राम समाए। आपणा काम आप कराए। कलिजुग रैण अन्धेरी शाम अन्तिम मेट मिटाए। किसे ना पल्ले दिसे दाम, गुर दर मन्दिर अन्दर रामदास तेरे सर सरोवर बहि बहि खाण मदिरा मास जो रसन लगाए। गुर अर्जन तेरा साचा नाम, गुरू ग्रन्थ लेख लिखाए। अगाध बोध भेव जणाए। कलिजुग जीव होए हलकाए। सर अमृत तेग बहादर करे सक्खणा माण गंवाए। डेरा पार ब्यास कराए। गुर गोबिन्द पूत सपूता जम्मया

सुलक्खणा, माता गुजरी पालया नाल मक्खणा, नीला घोड़ा साचा जोड़ा, धुर दरगाही आया दौड़ा, नाल रलाए ब्रह्मण गौड़ा, प्रगट हो हरि प्रतक्खणा, आप आपणा लए दौड़ाए। सम्मत सोलां भाग लगाए रस मखणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हाढ़ सतारां सम्मत चौदां पन्थ ख़ालसा दए जगाए, पड़दा उहला कोई रहिण ना पाए। आप अभेद, भेद हरि निरंकारया। लेखा लिख ना सकण वेद, ब्रह्मा लिख लिख हारया। शास्त्र सिमरत जगत कतेब, गावण वारो वारया। वेद व्यासा पुराण अठारां, इक्क लक्ख हज़ार सतारां लिखे सलोक, सार ना पाए अगम्म अपारया। इक्क मुहम्मद एका कार, तीस सपार उप्पर पहाड़, बजर कपाट पाड़, प्रभ मारे ओअँ एकँकार। नानक धार दर द्वार गया भिखार। प्रभ किरपा करी अपार। सोहँ रसना गाया अपार। सतिनाम बद्धी सीस दस्तार। लोकमात आया कर सच्चा वणज वपार। मिल्या मरदाना मीत मुरार। नाल बाला सति करतार। इक्क सुरंगा विछड़या, रसना गाए नर निरँकार निरँकार निरँकार। मोदीखाना दए हुलार। तेरां तेरां गाए धार। सम्मत तेरां प्रभ ल्या विचार। सृष्ट सबाई पावे सार। अन्तिम वेले आई हार। बेअन्त बेअन्त बेअन्त आर पार। पारब्रह्म सुणे पुकार। आपे होया विच्चों बाहर। अंगद लाया अंगीकार। शब्दी जोती एका कार। अमरदास आया दर द्वार। शब्द स्वास रसन उचार। गुर पूरे कराए पार किनार। रामदास दित्ता तार। वेदी सोढी इक्क भतार। अर्जन गुरू कर भतार। शब्द भण्डारा दए सहार। आप वरतारा लेख लिखार। गुरदास वसे पास, गुर चरन कँवलार। हरिगोबिन्द जोद्धा मृगिन्द, शब्द कटार तन दो धार। हरिराए हरि मेल मिलाए अन्तिम वार। हरिकिशन बाल निधान, शब्द निशान झुलाए विच संसार। तेग बहादर देवे आदर, चिट्टी चादर गऊ ग़रीबां कर प्यार। गुर गोबिन्दा सागर सिन्धा वड मृगिन्दा प्रभ सेवक सेवा लाए, दस्से राह न्यार। पंचम पंचां संग रलाए, एका खण्डा हथ्थ वखाए, दूसर किसे दिस ना आए, शब्द लाए चार द्वार। हरि आपणी खेल आप खिलाए, जीव जन्त कोई भेव ना पाए, रसना गा गा होए हलकाए, नज़र ना आए, मिल्या मेल ना एकँकार। कलिजुग अन्तिम जामा पाए, सम्बल नगरी धाम सुहाए, शब्द सिँघासण डेरा लाए, पंजे पंज प्यारे नाल रलाए, पंचम गावण वारो वार। साचा तख्त रिहा सुहाए, अकाल तख्त प्रभ आप रचाए, जोत जगे अगम्म अपार। कलिजुग माटी चार द्वार, विच ना दिसे हरि निरँकार। किसे दिस ना आए विच संसार। चारों कुन्ट आई हार, आपे वेखे गुर दरबार। दर दरबारी विच संसार। जोत अकारी आप निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग खेले खेल अपर अपार। माझा देस ना कोई वंड। गुर गोबिन्दे पल्ले बंन्ही ना कोई गंढु। दो धार ब्यासा सारी लिख्त रुढ़ाई, आपे सुत्ता दे कर कंड। साध सन्त कोई भेव ना पाई, आत्म सभ दी होई रंड। ज्ञानी ध्यानी

३०५
०६

आत्म घर ना वज्जे वधाई, जगत विद्या होया घमंड। गुर गोबिन्दे जोत जगाई, पंचम मीता पंचम संग निभाई, काया पाए एका ठण्ढ। नाम निधाना अमृत गुर एका पीणा शब्द सरूपी साचा ताल, आप वजाए दीन दयाल, बैठा तख्त अकाल इक्क अतीता। किसे हथ्थ ना आए मन्दिर मसीता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी जीता। लक्ख चुरासी आप समाया, ना कोई वंड वंडाईआ। सतिजुग साचा राह रिहा चलाया, एका खण्डा हथ्थ उठाईआ। ऊँचां नीचां रिहा मिटाया, नानक रीत चलाईआ। गढ़ हँकारी रिहा ढाहया , जीवण काज़ी सार ना पाईआ। शब्द घोड़ा साचा ताज़ी, आपे तंग रिहा कसाया, चारों कुन्ट पए दुहाईआ। साचा खण्डा रिहा उठाया, तिक्खीआं दोवें धारां रखाईआ। ब्रह्मण्डां खोजन खोज खुजाया, वरभण्डां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दा पंचम मीता सृष्ट सबाई एका रंग रंगाईआ। एका रंग आपे रंगे, सृष्ट सबाई दाता। गुर गोबिन्दा दर साचा मंगे, प्रभ देवे सच सुग़ाता। आपे होए अंग संगे, पारब्रह्म पुरख बिधाता। लोआं पुरीआं आपे लँघे, कलिजुग वेखे अन्धेरी राता। वरभण्डी आ गुरमुख साचे दर साचा मंगे, ना कोई वेखे ज़ाता पाता। शस्त्र बस्त्र तेज कटार किलिआं उप्पर रहि जाण टंगे, कोई ना किसे पुच्छे वाता। पुरख अगम्मा अगम्मी धाड़ आप चढ़ाए, आप कराए आपणा जंगे, पूत हथ्थ ना आए पिता माता। आपे वेखे परखे माढ़े चंगे, जन भगतां होए हरि भैण भ्राता। भगत भिखारी दर द्वारे आउँदा मूल ना संगे, नौ द्वारे गुरमुख तेरी काया लँघे, शब्द सरूपी तन चीर पहनाए। दस्म द्वारी आप बिठाए नाम रंगीले सच पलँघे। फूलन सेजा इक्क विछाए। नारी कन्ता आप हो जाए। रंग बसन्ता इक्क चढ़ाए। साचा कन्ता मेल मिलाए। आदि अन्त विछड़ ना जाए। गुरमुख साची सेव कमाए। ना होवे भुक्खा नंगा, देवी देव ना कोई मनाए। ब्रह्मा शिव अन्त कराए। गणपति गणेश ख़ाक रुलाए। अंजील कुरान दए दुहाए। वेद पुराण बैठे मुख छुपाए। खाणी बाणी ना कोई अलाए। सोहँ जै जैकार चारों कुन्ट कराए। बीस बीसा हरि निरँकार, छत्र सीसा इक्क झुलाए। जगत जगदीसा पाए सार, इक्क इकीसा एका इक्की नौ खण्ड बणाए। साचा सिक्खी माझा देस, नर नरेश ना कोई वेख वखाए। जोती जोत सरूप हरि, आपे रक्खे धार तिक्खी, ना कोई जाणे मुनी रिखी, साध सन्त आदि अन्त हरि भगवन्त चरन कँवल उप्पर धवल रहे ध्यान लगाए। गुरमुख आत्म रिहा मवल, गोपी काहना साँवल सँवल, जोत सरूपी डेरा लाए। उलटा करे नाभ कँवल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, अमृत आत्म साची धारा रिहा मुख चुआए।

३०५
०६

आप उपाए आप मिटाए आपे बणत बणांयदा। चार जुग प्रभ सेवा लाए, नौ नौ रूप वटांयदा। नौ नौ राम कृष्न हो आए, ईसा मूसा संग मुहम्मद नाल रलांयदा। नौ नौ नानक गोबिन्द राए, सिँघ रूप वटांयदा। कलिजुग चौथा वेख वखाए, निहकलंकी भेख वटांयदा। लक्ख चुरासी रेख मिटाए, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। चार जुग लहिणा देण चुकाए, शाम रिग युजर अथर्बण ऐड़ा अल्ला नाल रलाए, इक्क महल्ला आप वसांयदा। सतिजुग साचे झोली पाए, गुरमुखां घर राह वखाए, चुरासी फाह कटाए, जो जन रसना गांयदा। वाह वाहिगुरू हरि गुण गाए, अन्तिम वेला लए मिलाए, पुरख निरँजण तेल चढ़ाए, साचे घोड़े आप चढ़ांयदा। साचे घर आप वसाए, आप उपाए आप मिलाए, भेव अभेदा भेव ना आंयदा। चार चौह अक्खर रंग रंगाए, सृष्ट सबाई सथ मात विछाए, कलिजुग पत्थर भार उठाए, ना कोई वंड वंडांयदा। नेत्र अथ्थर नीर वहाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग साची बणत बणाए। सतिजुग साची बणत बणाए, आदि पुरख अपरम्परा। साध सन्त इक्क रंगाए, गीत सुहागी इक्क सुणाए साचा छंत्रा। अमृत धारा गंग वहाए, गंगा गोदावरी मेट मिटंतरा। शब्द घोड़े तंग कसाए, नीले वाला आप अख्वन्तरा। सृष्ट सबाई जंग कराए, पार किनारा इक्क वखंतरा। मक्का मदीना पहलां ढाहे, देस देसां आप फिरंतरा। रूसा चीना रिहा लिखाए, हाढ़ सतारां लेख लिखंतरा। काला सूसा मुख छुपाए, हरि आपणा भेस वटंतरा। मूसा ईसा रिहा कुरलाए, विच उनीसा करे भसन्तरा। जगत जगदीसा जोत जगाए, मेट मिटाए वेद पुराण शास्त्रा। इक्क हदीसा मात चलाए, सोहँ जै जै जैकार करंतरा। साचा सीस छत्र झुलाए, पंचम मुखी ताज बणंतरा। सत्त रंग निशाना रिहा चढ़ाए, सत्तां दीपां इक्क संदेस सुणंतरा। शब्द सोटी हथ्थ उठाए, गुरमुख साची बणत बणतरा। पंचम मीता आप रघुराए, सीस दस्तार रखंतरा। साचा टिक्का मस्तक लाए, कौस्तक मणीआं आप जगंतड़ा। चरन जोड़ा इक्क छुहाए, प्रभ आपणी आप बणाए बणतरा। चिट्टा घोड़ा मोड़ ल्याए, वाली हिन्द जुगो जुगन्तरा। सतां दीपां एका पौड़ा आप लगाए, नौ खण्डां वेख वखंतरा। ब्रह्मा शिव दरस वखाए, गुरमुख साचे बणत बणंतरा। सुरपति राजा इन्द चरन लगाए, सिँघ मनजीता माण दवन्तरा। सप्त रिखी प्रभ मेट मिटाए, गुरमुख निवास रखंतरा। धू्र दरबान वक्त चुकाए, सिँघ सवरन थाँ सहंतरा। मातलोक प्रभ जोत जगाए, दिल्ली तख्त इक्क रखंतरा। गुरमुख साचे सन्त सुहेले सद्द ल्याए, काया चोली इक्क रगंतरां। धुर दे विछड़े मेले आप मिलाए, गोबिन्द तन पहनाए गात्रा। गुर चेले एका रंग रंगाए, अन्तरजामी जाणे अन्तरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पंचम मीता आप हो जाए। पंचम मीता हरि भगवाना, गोबिन्द रूप समाया। सत्त रंग झुलाए इक्क निशाना, सत्तां दीपां

३०६
०६

वेख वखाया। जन भगतां बन्ने हथ्थीं गाना, सोहँ धागा नाल ल्याया। नानक गोबिन्द गाए एका गाणा, मृदंगा अंग संग निभाया। जोत सरूपी पहरया बाणा, तीर कमान किसे दिस ना आया। रसना चिल्ला इक्क वखाणा, नौ खण्ड पृथ्वी इक्क निशान बणाया। गुरसिख अन्त ना मात लड़ना, गुर गोबिन्दा पिछला लहिणा झोली पाया। गुरुदुआरा गुर चरन कदी ना ढहिणा जगत मकाना, गुरमुख साची आस रखाया। मिट्टी गारा जगत दुकाना, ग्रन्था पन्थां आपणा पेट भराया। प्रगट होए वाली दो जहानां, रामदास सच सरोवर गुर अर्जन तेरी साची सेव कमाया। माया राणी जाए हर, जगत स्यासत निकले दर, गुर गोबिन्दा एका तीर रिहा चलाया। माझे देस मिल्या वर, आप उजाड़े वेखे पार किनारे आपे लए वसाया। कोए ना पीए हुक्का नड़, मदिरा मासी लए फड़, तख्त अकाल आपे चढ़, हरि मन्दिर डेरा लाया। राग छत्ती रिहा पढ़, ना मरे ना जाए सड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, गुर गोबिन्दा नानक रूप शब्दी शब्द समाया। प्रगट होए अन्ध कूप, चारों कुन्ट धुखदे धूप, देस प्रदेस किसे नज़र ना आया। सम्बल नगरी करया वेस, जोत सरूपी कर प्रवेश, लोआं पुरीआं दए संदेस, वरभण्डी खेल रचाया। किसे ना चलणी कोई पेश, दाता सूरा नर नरेश, केसाधारी खेल अपारी सच सिँघासण आसण लाया। भाग लग्गा माझे देस, अन्तिम हथ्थ उठाउँणी खूंडी भूरी खेस, नानक गुर आपे धर छड्ड ननकाणे आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे चले आपणे भाणे, तख्तों लाहे राजे राणे, गऊ ग़रीब आप उठाए, ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां एका रंग रंगाया।

३०७
०६

गुर संगत धन्न कमाईआ। हरि मंगल गाया, चार जुग रहे वड्याईआ। हरि साचे लेख लिखाया, हरि शब्द होए कुड़माईआ। साची दया कमाया, भरम भुलेखा रहे ना राईआ। गीत सुहागी रिहा सुणाया, दो जहानी एका माहीआ। आवे जावे फेरा पाया। फड़ फड़ तारे दोवें बांहीआ। नेत्र नैणां जिस जन दर्शन पाया, सदा सुहेला देवे ठण्ढीआं छाँईआ। इक्क इकेला रिहा सेव कमाया, जोती जोत सरूप हरि, हरिसंगत देवे नाम वर, आत्म झोली रिहा भराईआ। आत्म झोली साचे घर, हरि साचा आप वखांयदा। नाम भण्डारा देवे भर, गुरमुख साचे अग्गे डांयदा। मानस जन्म ना जाए हर, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। ना कोई जाणे नारी नर, बिरध बाल जवान वेख वखांयदा। ऊँचां नीचां एका दर, राउ रंकां भरम चुकांयदा। सति पुरख निरँजण एका हरि, एका गीत सुणांयदा। वड दाता हरि तरनी तर, धरत धवल आकाश प्रकाश अबिनाश आपणा आप करांयदा। अवरनी वरन चार वरनां रिहा वर, ना कोई खाए मदिरा मास सास ग्रास लेखे लांयदा।

साची करनी रिहा कर, गुरमुखां पूर कराए आस, दर घर आए दरस दिखांयदा। लोक लज्जया चुकावे मात डर, आप आपणा रंग चढ़ांयदा। हरिजन साचा घाड़न घड़, जुग जुग बणत बणांयदा। सच महल्ले उच्च अटारी आपे चढ़, हरिजन सोया आप जगांयदा। जोत जगाए बहत्तर नड़, इक्क आकार वखांयदा। ग़रीब निवाज़ा अग्गे खड़, स्वच्छ सरूप शाहो भूप सरूप अनूप वटांयदा। उनन्जा पवण करे धूप, नाम सुगंधी एका एक वखांयदा। होए सहाई चारे कूट, दहि दिशा पाए हिस्सा किसे ना दिसा गुर संगत सेव कमांयदा। वेले अन्तिम छत्र झुलाए सीसा, हरि जगदीसा बीस बीसा वक्त सुहांयदा। राज राजानां खाली खीसा, हाल बेहाला होए उनीसा, हरि साचा आप करांयदा। वीह सद अठारां जल अन्दर धारा, उच्चे टिल्ले आप रुढ़ांयदा। सम्मत सतारां किसे ना दिसे मीत मुरारा, दर दर घर घर रंडीआं रोवण नारां, कन्त सुहाग ना कोई हंढांयदा। सम्मत सोलां लाड़ी मौत चुक्के डोला, धर्म राए धरत मात वेखे एका होला, सच अखाड़ा हाढ़ सतारां प्रभ एका एक लगांयदा। आप उठाए अगम्मी धाड़ा, शब्द घोड़े साचा लाड़ा, उच्चे टिल्ले पर्बत वेखे वड पहाड़ां, जंगल जूहां वेख वखांयदा। कलिजुग पापी कढ्ढे हाढ़ा, अन्तिम वेले आई हारा, अग्नी अग्ग बहत्तर नाड़ा, अट्ठ तत्त ना देवण मति, तत्त सति ना कोई रखांयदा। लहिणा देणा सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ वंड वंडाईआ। हरि समरथ महिंमा जगत चलाए अकथ, भेव कोई ना पांयदा। सम्मत पन्दरां गुरदर मन्दिर मारे जन्दरा, आपे जाणे अन्दरे अन्दरा, आपणा भेव छुपांयदा। सम्मत चौदां चौदां लोक, प्रभ इक्क सुणाए सच सलोक, कोए ना सके मात रोक, आपणी बणत बणांयदा। सृष्ट सबाई देवे झोक, जन भगतां बख्शे अन्तिम मोख, जगत दुआरा हरि निरँकारा विच संसारा एका चरन छुहांयदा। सम्मत तेरां करे निबेड़ा, लक्ख चुरासी देवे गेड़ा, जन भगतां बन्ने मात बेड़ा, जोत निरँजण नेत्र पाए अंजन, चरन धूढ़ कराए साचा मजन, गोबिन्द दिसे एका सज्जण, अन्तिम आया पड़दे कज्जण, नाम दुशाला गुर गोपाला हो रखवाला आपणा उप्पर पांयदा। गुर संगत होए हरि रखवाला, देवे नाम सच्चा धन माला, आपे शाह आपे कंगाला, नाम खज़ीना हरि प्रबीना लोक तीनां आप वरतांयदा। चढ़े सुभागी चेत महीना, शब्द घोड़े पावे जीना, मनमुखां भन्ने हँकारी बीना, हरि स्वांगी स्वांग वरतांयदा। गुरसिख बिल्लाए जिउँ जल मीना, गुर पूरा दरस दिखाए दया कमाए, सांतक सति कराए सीना, आपणी गोद उठाए, जोधन जोध हरि रघुराए, एकँकारा कर आकार एका दर बहांयदा। गुर संगत जाए बलि बलिहार, गुर पूरा चाकर सेवादार, जुग जुग सेव कमांयदा। चरन प्रीती मंगे मंग भिखार, साची नीती विच संसार, पतित पुनीती जोत निरँकार, एका एक रखांयदा। सुहागी गीती हस्त कीटी, हरि साचा आप सुणांयदा। नाम कटोरी आत्म मदि गुरमुख विरले पीती, दिवस रैण खुमार रखांयदा।

सतिजुग चलाए साची रीती, ऊँच नीच एका धाम सुहांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम औध बीती, सतिजुग साचे जन्म दवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन आए दया कमाए, साजन साजन साचा नीती।

सतिगुर साचा साख्यात, शब्दी शब्द समाए। गुरसिख साचा पारज़ात, चरन कँवल लिव लाए। हरि वेख वखाए कायनात, निर्मल जोत जगाए। धुरदरगाही एका दात, साचा शब्द वरताए। चार वरन मेटे ज़ात पात, ऊँचां नीचां एका रंग रंगाए। कलिजुग मिटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाए। गऊ ग़रीब निमाणयां आपे पुच्छे वात, आपणी दया कमाए। प्रगट होया कमलापात, काया कमली दए तजाए। दिवस रैण एका नात, एका नत समाए। लक्ख चुरासी वेखे मार झात, हर घट बैठा आसण लाए। आदि जुगादी माई बाप, पारब्रह्म आप अख्वाए। जन भगतां बन्ने चरन नात, जुग जुग पैज रखाए। लेखा जाणे नात सात, चौदां वेख वखाए। आपे जाणे आपणी गाथ, गुर पीर अवतार साची सेवा लाए। आप चलाए आपणा राथ, रथ रथवाही आप अख्वाए। जन भगतां निभाए साचा साथ, साचे बेड़े दए चढ़ाए। कलिजुग अन्तिम प्रगट हो त्रैलोकी नाथ, निहकलंका डंक वजाए। गुर गोबिन्दा आपे वड़या साढे तिन्न तिन्न हाथ, सम्बल नगरी धाम सुहाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, काया वेखे साचा घर, शब्द सिँघासण डेरा लाए। शब्द सिँघासण नर निरँकारा, आपणी जोत जगाईआ। शब्द खण्डा तेज कटारा, आपे रिहा उठाईआ। लोआं पुरीआं मारे मारा, देवत सुर हिलाईआ। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यारा, अगम्म अगम्मड़ा दिस किसे ना आईआ। साध सन्त जीव जन्त भरमे भुल्ला, भरम गढ़ ना कोई तुड़ाईआ। खाणी बाणी हो हैरान, अंजील कुरानां वेद पुराणा रहे गाईआ। पुरख अबिनाशी इक्क निशान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा आप रिहा बिताईआ। नानक सेवक सेवादार, साची सेव कमांयदा। कलिजुग काया करे ख़बरदार, शब्द जणाई आप सुणांयदा। गुर गोबिन्द मीत मुरार, पीरन पीर आप अख्वांयदा। प्रगट होए विच संसार, अन्त अख़ीर करांयदा। कलिजुग मेटे काली धार, संग मुहम्मद नीर वहांयदा। चार यारां मारे मार, ईसा मूसा मुख भवांयदा। चौदां तबकां आई हार, वेले अन्त ना कोई छुडांयदा। अंज़ील कुरानां ना देवे कोई सहार, ना कोई धीर धरांयदा। प्रगट होए हरि निरँकार, जन भगतां लाहे आत्म शंका, जोती नूर उपांयदा। लक्ख चुरासी कढ्ढे शंका, आप आपणा रूप वटांयदा। सोहँ उठाया एका तीर सच्चा धनुक्खा, रसना चिल्ले चढ़ांयदा। गुरसिक्खां सुहाए द्वार बंका, गुर चेला आप अख्वांयदा। आपे फेरनहारा मन का मणका, सुरती सुरत भवांयदा। लेखा चुक्के सीस धड़ तन तनका, आप आपणा खेल वरतांयदा।

धर्म राए तेरा वज्जे डंका, लाड़ी मौत नाल रलांयदा। गुरसिख आप तराए जोत जगाए जुग जुग बार अनका, भेव किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया वेख घर, आपणा आसण लांयदा। गोबिन्द काया साचा गढ़, हरि साचा आप सुहांयदा। शब्द सरूपी उप्पर चढ़, कीर्तन कीरत करांयदा। पंचम बैठा रिहा लड़, पंचम संग निभांयदा। आप उखेड़े सभ दी जड़, वहिंदे वहिण रुढ़ांयदा। सरसा लग्गी साचे लड़, लहिणा देणा मूल चुकांयदा। मनमुख मन मती जीव लैणे फड़, गुर खण्डे भेंट चढ़ांयदा। भेख पखण्डा जाए सड़, इक्क इकल्ला जोत जगांयदा। ना कोई पीवे हुक्का नड़, मदिरा मासी मेट मिटांयदा। एका अक्खर जाणा पढ़, चार वरनां एका ज्ञान दवांयदा। कोई ना सके अड़, राज राजानां शाह सुल्तानां आप उपाए आपे मेट मिटांयदा। जन भगतां बन्ने हत्थीं गाना, इक्क सुणाए धुर फ़रमाणा, मेल मिलाए वाली दो जहानां, गुर गोबिन्दा जोबनवन्ता साचा कन्ता साचा भेख वटांयदा। आप उठाए हरिजन सन्ता, लोकमात बणाए साची बणता, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया साचा सर, सर सरोवर इक्क वखांयदा। गोबिन्द काया साचा धाम, सम्बल नगर सुहांयदा। राम रमईआ साचा राम, आपणा रूप वटांयदा। एका पल्ले रक्खे दाम, साचा नाम लिआंयदा। किसे हत्थ ना आउणा पंज तत्त मिट्टी चाम, वेला अन्त आप जणांयदा। कलिजुग होए अन्धेरी शाम, गुर पीर ना कोए बचांयदा। चारों कुन्ट आई हाण, पवण मसाण भेव वटांयदा। धुर दरगाही इक्क निशान, आपणे हत्थ उठांयदा। गुर गोबिन्दा पहलवान, नीले घोड़े तंग कसांयदा। सोलां कलीआं कर पछाण, लोआं पुरीआं वेखे मार ध्यान, ब्रह्मा शिव कुरलांयदा। सुरपति राजा इन्द होए हैरान, गुरमुख साचे चतुर सुजान, प्रभ आपणी गोद उठांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी बीआबान, सम्मत उन्नीं आप जणांयदा। हरिजन साचे मेल मिलान, एका राह तकांयदा। जमन किनारा वेखणहारा, प्रभ आपणी जोत जगांयदा। गुर तेग बहादर तेरा दुआरा, शहीद गंज चरन छुहांयदा। वाली हिन्द तेरा तोड़े माणा, आप आपणा तेज वधांयदा। पंचम करे पंच हदीसा, आपणा आप उपांयदा। बीस बीसा सृष्ट सबाई जाए पीस, ना कोई किसे छुडांयदा। ना कोई ग्रन्थी पन्थी मुल्ला मसीत, पंडत पांधा ना कोई वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत चौदां पहली चेत्र देस परदेसा साचा लेख लिखांयदा। लेख लिखावणहारा, सति पुरख निरँजण दाता। आदि अन्त हरि पेखणहारा, जुगा जुगन्त ज्ञाता। रैण अन्धेरी मेटणहारा, मेट मिटाए ज़ात पाता। सतिजुग साचा आप चढ़ांयदा। मेटणहारा अन्धेरी राता, दो जहानी वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सृष्ट सबाई खेल खिलांयदा। कोई ना पावे किसे सारा, भेव अभेदा भेव छुपांयदा।

३११
०६

पहली चेत्र पंचम जेठ कर अकारा, सृष्ट सबाई आप मिलांयदा। खेले खेल अपर अपारा, जोद्धा सूर बली बलकारा, आपणी बणत बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, अनहद नाद एक वजांयदा। हरि मन्दिर अन्दर पावे सारे, आपे वेखे चार द्वारे, गुरू ग्रन्थ तेरा साचा पन्थ, कवण कूटे वेखे जूठे झूठे फिरन खाली हथ्थ, आपे वेखे खेल समरथ, भेव अभेदा हरि भगवन्ता भगतन रूप समाया। लिख लिख थक्के चारे वेदा, अन्तिम वेला आया। पुराण कुरान मिटे कतेबा, वेद शास्त्र रहिण ना पाया। रसना कोई ना गावे जिह्वा, अल्ला हू हू मेट मिटाया। कौस्तक मणीआं लावे थेवा, गुरमुखां रिहा जणाया। अमृत आत्म साचा मेवा, सो पुरख निरँजण आया। जो जन करे साची सेवा, हँ हँगता दए मिटाया। आपे होए वड देवी देवा, देवत सुर रिहा ध्याया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मण्ड रिहा उलटाया। ब्रह्मण्डां हरि खोज खुजन्ता, खोजणहार निरँजणा। ब्रह्मा शिव मेट मिटंता, गुरमुख साचे पाए नेत्र अंजना। करे खेल हरि जुगा जुगन्ता, आपे घड़या आपे भन्नणा। आप बणाए आपणी बणता, आपणा आप आपे मन्नणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुनेहड़ा चार कुन्ट दहि दिशा शब्द सरूपी एका लग्गणा। शब्द सरूपी जगत संदेश, प्रभ साचा रिहा सुणाईआ। अन्तिम मिटे शिव शंकर गणेश, गणपति पूजा रहिण ना पाईआ। प्रगट होए दस दस्मेश, अकाल अकाला रिहा जगाईआ। आपे जाणे आपणा वेस, नर नरेश आप अख्वाईआ। आपे होए धारी केस, आपे मूंड मुंडाईआ। लक्ख चुरासी रिहा वेख, आपणा बैठा मुख छुपाईआ। राज राजानां दर दरबानां शाह सुल्तानां कोई ना चले पेश, प्रभ साचे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी कल वरताईआ। आपणी कल आप वरताए, कलिजुग अन्तिम वारया। वल छल कर सृष्ट भुलाए, हरि दाता वड संसारया। निहचल धाम अटल इक्क सुहाए, गुर गोबिन्दा लए अवतारया। सम्बल नगरी नाउँ रखाए, साढे तिन्न हथ्थ चार द्वारया। शब्द सिँघासण एका डाहे, निर्मल जोत करे उज्यारया। नौ द्वारे जगत वखाए, दसवें आप उपा रिहा। भेव अभेदा भेव छुपाए, जोद्धा सूर बली बलकारया। साचे घोड़े तंग कसाए, हरि नीला नाउँ अपारया। शब्द खण्डा हथ्थ उठाए, तिक्खी रक्खे धारया। धार बार अनडिठा शब्द रिहा अलाए, लक्ख चुरासी करे ख़बरदारया। मिठ्ठा अमृत इक्क रिहा प्याए, रसना नाउँ निरंकारया। लक्ख चुरासी धाम बणाए, सोहँ बाज़ मारे उडारया। नीली छत्तों बाहर आए, नीले बस्त्र पहन वेस अपारया। रसना किसे ना सके कहिण, घर घर बैठे करन विचारया। आप वहाए वहिंदे वहिण, जुग जुग खेल न्यारया। गुरमुख भाणा सिर ते सहिण, एका चरन ओट रखा ल्या। कलिजुग माया ममता वहिण, उच्चे मन्दिर होण ढेरया। चार वरनां लाड़ी

मौत खाए डैण, नाता तुट्टे साक सज्जण सैण, मात पित ना कोए सहारया। नेत्र रो रो पायण वैण, कलिजुग माया तन झूठा गहिण, अन्तिम वेले होए ख्वारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, करे खेल वड संसारया। साढे तिन्न हथ्थ गोबिन्द काया सच ग्रां, हरि साचा आप वसांयदा। ना कोई पिता ना कोई माँ, भैण भ्रा ना कोए दिसांयदा। पूत सपूता आपे जाणे आपणा नाँ, आप आपणी बणत बणांयदा। किसे ना माणे ठण्ढी छाँ, सिर आपणे आपणा हथ्थ टिकांयदा। पारब्रह्म गुर एका थाँ, एका धाम सुहांयदा। गुरमुख जानण गोबिन्द नाँ, गोबिन्द रूप शाहो भूप अन्ध कूप आपणा आसण इक्क विछांयदा। वेख वखाणे चारे कूट, उच्चे टिल्ले शब्द महल्ले आपे डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द दिसाए साचा घर, साचा धाम सुहांयदा। गुर गोबिन्दे मंगी मंग, वेखे विच नंदेड़या। शब्द सरूपी चाढ़े रंग, करे हक्क निबेड़या। आप आपणी गोद बिठाए शब्द रंगीले सच पलँघ, इक्क वसाया साचा खेड़या। गोदावरी धारा चरन धूढ़ मंगे गंग, जन भगतां बन्ने बेड़या। प्रभ होए सहाई अंग संग, अन्तिम मेटे कलिजुग झेड़या। इक्क वजाए साचा मृदंग, आपणा गेड़ आपे गेड़या। चरन लगाए राउ रंक, राज राजानां शाह सुल्तानां आप जगाए आपणे वेहड़या। शाह बहादर मेल मिलाना, किला लाल हरि आप सुहाना, आपे बन्ने बेड़या। पंचम मुखी सिर ताज सुहाना।
३१२ पंचां प्यारया माण दवाणा। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क ज्ञाना। सत्तां दीपां चरन ध्याना। एका राज एका बाज एका साज प्रगट ३१२
०६ जोत देस माझ, साचा लेख लिखाना। सम्बल नगर सति सतिवाद, गुर गोबिन्दे डेरा लाया। मिट ना जाए आदि जुगादि, ०६
हरि साचे आप बणाया। साचा मेला माधव माध, विछड़ कदे ना जाया। भेव ना जाणे सन्त साध, कलिजुग काया काग रही कुरलाया। गुरमुख विरला रसना रिहा अराध, माया ममता तृष्ना मोह जगत विकारा मनो तजाया। धुरदरगाही एका देवे साची दाद, कलिजुग अन्तिम आप ल्याया। आप वरताए विच ब्रह्माद, सतिजुग साची वंड वंडाया। सतिजुग साचा गया जाग, प्रभ साचे आप जगाया। चरन कँवल प्रभ जाए लाग, दुरमति मैल आप धवाया। आपे मेटे तृष्ना आग, सति सन्तोख वसाया। निर्मल जोती जगे चिराग, अन्ध अन्धेर मिटाया। नेड़ ना आए वाद विवाद, प्रभ आपणी दया कमाया। दस्म द्वारी एका मार आवाज़, बजर कपाटी कुण्डा लाहया। शब्द सुणाए, अनहद राग इक्क वजाए, दिस किसे ना आया। शब्द सिँघासण इक्क विछाए, जोती आसण लाया। सुरती सुरत मेल मिलाए, मेलणहार आप रघुराया। गुर गोबिन्दे दया कमाए, गोबिन्द रूप समाया। जोती जोत सरूप हरि, साचा धाम सम्बल नगर इक्क सुहाया। नाम सिँघासण सच महल्ला, गोबिन्द डेरा लाया। होए सहाई सभनी थाँ, जोती जोड़े मेल मिलाया। गोबिन्द डल्ला मेल मिला, इक्की जेठ दए रुत्त

सुहाया। मनमुख जीवां दर दुरका, दरगाह दए सज़ाया। गुरमुख साचे लए जगा, आपणी दया कमाया। जोत निरँजण तेल चढ़ा, साचा सगन मनाया। अनहद ताल दए वजा, वाजा पवण वजाया। दस्म द्वारी दरस दिखा, एका दूजा भेव चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच सिँघासण डेरा लाया। गोबिन्द तेरा साचा राह, प्रभ आपे आप चलांयदा। धर्म राए उठाए फड़ बांह, साची सेवा लांयदा। किसे ना दिसे पिता माँ, वेले अन्त अन्तिम घर घर उडणे काँ, हरि कागी काग उडांयदा। गुरमुख विरला माणे ठण्ढी छाँ, प्रभ चरन ओट रखांयदा। आपे पकड़नहारा बांह, आप आपणा रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द तेरा वेखे घर, कवण दुआरा बंक सुहांयदा। गोबिन्द काया सच महल्ल है, सच सुच्च समाए। ऊँचो ऊँच परबल है, नीचो नीच समाए। एका वेखे आप अखल्ल है, दिस किसे ना आए। आपे डूँघी डल्ल है, जोत प्रकाश अबिनाश आप कराए। आप रक्खणहारा वास है, वाच निवासा आप हो जाए। आपे भगतां दासी दास है, गोबिन्द सेवा रिहा कमाए। आपे करे घनकपुर वास है, सम्बल नगरी धाम सुहाए। नीले घोड़े फड़े रास है, शब्द बाज हथ्थ टिकाए। गुरमुखां मानस जन्म कराए रास है, अन्दर मन्दिर आवाज लगाए। वेख वखाणे पृथ्वी आकाश है, आकाश अकाशां उप्पर डेरा लाए। लक्ख चुरासी अन्तिम होणी नास है, कलिजुग वेला अन्तिम आए। गुरमुख विरले लेखे लग्गण स्वास है, जो रसना हरि गुण गाए। अन्तिम लहिणा देणा चुक्कणा मदिरा मास है, प्रभ कलिजुग झोली पाए। जूठ झूठ होणा नास है, हरि साचा दए सज़ाए। हरिजन तेरा आप बंधाए चरन कँवल धरवास है, गोबिन्द गोबिन्द राए। निज आत्म रक्खे वास है, निज घर डेरा लाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सृष्ट सबाई तेरा लेख, जोती जामा धर धर भेख, कलिजुग कर्मां अन्तिम वेख, लेखा आपणे हथ्थ रखाया। लेखा आपणे हथ्थ रखाया, प्रभ आपणा आप लिखारा। समरथ कला हरि कल वरताया, लोकमात कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। लक्ख चुरासी सथ्थ विछाया, चारों कुन्ट हाहाकारा। सोहँ साचा रथ चलाया, नानक गुर रसना गाया, गोबिन्द रूप हरि समाया, प्रगट जोत नर निरँकारा। महिंमा अकथ इक्क रखाया, मथ वखाया, चार वरनां एका सरना देवे मात सच्चा सिक्दारा। साढे तिन्न हथ्थ वक्त चुकाया, सगल वसूरे जायण लथ्थ, जिस जन दर द्वारे दर्शन पाया। आवण जावण पतित पावन, प्रभ देवे फंद कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दा वेखे घर, घर मन्दिर इक्क सुहाया। गोबिन्द तेरा साचा मन्दिर, हरि साचे आप उसारया। आपे वसया हरि जू अन्दर, आपणी जोत जगा रिहा। होया प्रकाश डूँघी कन्दर, सञ्झ सवेरा एका रंग रंगाया। वेखे खेल परमानंदन, चन्द सूरज कोए ना आप चढ़ाया। इक्क

सुणाए सुहागी छन्दन, जोती सुत उपाया। ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंडन, उत्भज सेत्ज पाए बंधन, ना कोई बंध तुड़ाया। पुरख अबिनाशी रूप वटाए फादकी फंदन, त्रैगुण माया तेरा जाल, आपणे आप लए बंधाया। घेर ल्याए काल महांकाल, भारत खण्ड पाए वंड, वरभण्ड राह तकाया। इक्क चलाए चण्ड प्रचण्ड, वढ्ढुणहारा झूठी कंड, राज राजानां नंगी कंड, संगी साथी हरि रघुनाथी दिस किसे ना आया। गुरमुख विरले आत्म चिन्द जगत लाथी, गुर गोबिन्दे वड मृगिन्दे दर्शन पाया। साचा दर्शन हरि द्वार, गोबिन्द गोबिन्द पाया। मंगे मंग बण भिखार, अग्गे पल्ला डाहया। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, एका चुल्लू अमृत जाम प्याया। वरते वरतावे विच संसार, उच्च पहाड़ी उच्चे टिल्ले कुल्लू डेरा लाया। आपे होए पिच्छे अगाड़ी, वेखे जंगल जूह पहाड़ी, सिन्ध सागरां फोल फुलाया। कलिजुग तेरा मेला अन्त दिवस सुहाए सतारां हाढ़ी, सिर सीस जगत ताज प्रभ साचा देवे लाहया। करे खेल देस माझ, सतिजुग कलिजुग रच्चया काज, भेखाधारी हरि निरँकारी खेल अपारी आपणा भेख वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द तेरा काया घर, नगर खेड़ा इक्क सुहाया। नगर खेड़ा सच द्वार, गोबिन्द आप सुहांयदा। जोत सरूपी कर अकार, आपणा रूप वटांयदा। खण्डा पकड़े तिक्खी धार, साचे हथ्थ उठांयदा। पंचां करे ख़बरदार, आपणी बणत बणांयदा। पंजां शस्त्र तन श्रृंगार, पंचां बस्त्र चीर लांहयदा। पंचां मारे डाहढी मार, पंचां गोद उठांयदा। पंचां करे कलि ख्वार, पंच पंचां विच समांयदा। पंच रोवण हाहाकार, पंचम मुख धवांयदा। पंच कराए जै जैकार, पंचम ख़ाक मिलांयदा। प्रगट हो विच संसार, नीला घोड़ा इक्क वखांयदा। नाम कटारी तेज कटार, तन म्याने आप सजांयदा। हौली हौली खिच्ची आए बाहर, सम्मत तेरां हथ्थ उठांयदा। सम्मत चौदां आए अद्धविचकार, प्रभ साचा आप लशकांयदा। गुर गोबिन्द हो त्यार, हरि अग्गे सीस झुकांयदा। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, मंगे मंग दर कुरलांयदा। देवे दरस हरि सरकार, चिट्टा अस्व आप दुड़ांयदा। मातलोक हरि पावे सार, आप आपणा रंग वटांयदा। दोहां मेला इक्क द्वार, गुर चेला आप हो जांयदा। काया मन्दिर बंक द्वार, इक्क इकेला खेल रचांयदा। सज्जण सुहेला सर्ब संसार, हर घट वेख वखांयदा। जोत निरँजण चाढ़े तेला, सतिजुग साचे हरि चढ़ांयदा। कलिजुग तेरा अन्तिम वेला, हरि बन्द बन्द आप कटांयदा। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला, दिस किसे ना आंयदा। धर्म राए दी भरदे जेल्ह, लाड़ी मौत सेवा लांयदा। चित्रगुप्त हरि सच सुहेला, लिख्या लेख वखांयदा। अमृत फल ना दिसे किसे केला, साचा बीज ना कोई जणांयदा। आपे वसया सदा नवेला, आपणे भाणे आप समांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी अलबेला, अल्ला राणी आप प्रनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द तेरा इक्क दर, दर दुआरा आप सुहांयदा। गुर गोबिन्द

सच द्वार, घर साचे वज्जे वधाईआ। दिस ना आयण नौ द्वार, दस दसवां दसवें डेरा लाईआ। आपे होया पहरेदार, आप आपणी सेव कमाईआ। आदि अन्ता पावे सार, सच समग्री इक्क वखाईआ। बेअन्त बेअन्त बेअन्त नर निरँकार, इक्क अकार जोत कराईआ। साचे सन्तां दए अधार, शब्द सुरत मेल मिलाईआ। दर द्वारे पावे सार, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। लेख चुकाए मुहम्मदी यार, चार यारां संग रलाईआ। अल्ला राणी आई हार, बैठे मुख छुपाईआ। चार वरना इक्क प्यार, साची रीत बताईआ। अमृत आत्म खण्डे धार, ब्रह्मण्डां आप प्याईआ। करोड़ तेतीसा करे प्यार, कलिजुग अन्त रहे बिल्लाईआ। सिँघ मनजीता कर त्यार, कलस कटोरा काया दए भराईआ। वेंहदा जाए वारो वार, शब्द सुनेहड़ा रिहा सुणाईआ। प्रगट होए नर निरँकार, निहकलंका जोत जगाईआ। लहिणा देणा रिहा कर्ज़ उतार, जुग जुग वड वड्याईआ। भाणा सहिणा सिर दातार, दोए जोड़ भुल्ल बख्शाईआ। बीस बीसा रहिणा ख़बरदार, लोकमात जन्म दवाईआ। साचा गहणा तन श्रृंगार, सोहँ तन पहनाईआ। आपे वेखे वारो वार, वेखणहार आप रघुराईआ। जगत जगदीशे कर प्यार, हरि साचा धाम सुहाईआ। शिव शंकर वेखे तेरी धार, एका रंग रंगाईआ। राग नाद अपर अपार, धुर दमामे रिहा वजाईआ। शब्द अनादी हरि करतार, ब्रह्मादी रिहा सुणाईआ। आदि जुगादी साची कार, जुग जुग रिहा कराईआ। गुरमुख कराए साची शादी, जोत निरँजण गुर शब्दी आप प्रनाईआ। मिल्या मेल बाण धुरां दी, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द रूप वटाईआ। गोबिन्द गुर दीन दयाल, दीनां बंधप अख्वांयदा। शब्द उठाए सिँघ पाल, ब्रह्मा वेख वखांयदा। कलिजुग चले अवल्लड़ी चाल, भेव किसे ना आंयदा। गुरसिख उठाए साचा लाल, साचे धाम सुहांयदा। ब्रह्मा उठ करे प्रनाम, दूरों सीस निवांयदा। सोहँ दस्से साचा जाम, गुरसिख साचे पल्ले बन्न्ह लिआंयदा। सतिगुर पूरा आपे करे काम, जिस सिर हथ्थ टिकांयदा। लेखे लाए काया माटी झूठा चाम, चरन चरनोधक अन्तिम जाम प्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा धाम सुहांयदा। तेग बहादर तेरा दर, प्रभ साचे आप खुल्हाया। लक्ख चुरासी दित्ता वर, ब्रह्मे मूल चुकाया। आपणी किरपा आपे कर, कन्त कन्तूहल मेल मिलाया। इक्क नुहाया साचे सर, एका रंग रंगाया। पुरी बन्द कराए साचा दर, दर दरवाज़ा दिस किसे ना आया। ना जन्मे ना जाए मर, ग़रीब निवाजा साची सेवा सेवक रिहा कमाया। आप आपणा साजन साजा, कँवल नाभा फुल्ल खिड़ाया। कलिजुग अन्तिम प्रगट होए देस माझा, गोबिन्द रूप वटाया। नीला घोड़ा चिट्टा अस्व सोहँ ताजा, साचा बाजा नाम उडाया। सीस सुहाए एका ताजा, तख्तों लाहे राजन राजा, हरि साची बणत बणाया। भगत जनां हरि मारे आवाजा, धुरदरगाही देवे दाजा, साचा पल्ले नाम बंधाया। कलिजुग

सतिजुग रच्चया काजा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोहँ साचा देवे वर, चारों कुन्ट जै जैकार कराया। कलिजुग काला कूड़ कुड़यारा, रो रो धांही मारदा। संग मुहम्मद चार यारा, अन्तिम आया पासा हारदा। ना कोई दिसे मीत मुरारा, नाता तुट्टे काम क्रोध लोभ मोह हँकार दा। गुर गोबिन्दा तीर एका छुट्टे, ब्रह्मण्ड खण्ड वंगार दा। लक्ख चुरासी तेरी जड़ जूठी झूठी पुट्टे, सतिजुग तेरे लाए साचे बूटे, गुरमुख साचे तन श्रृंगार दा। सोहँ शब्द देवे साचे झूटे, दो जहानां पार उतारदा। हरिजन लाहा गुर चरन लूटे, अमृत धार देवे सति सरोवर ठण्ढी धार दा। आपे गाए रसना जिह्वे, हरि गुण आपे आप उचारदा। कौस्तक मणीआं लाए थेवे, चौदां रत्नां आप निखारदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया वेख घर, आप आपणा धाम सुहांयदा। गुर गोबिन्दा तेरा साचा थान, हरि साचे वेख वखाया। सम्बल नगरी सच मकान, सति पुरख निरँजण डेरा लाया। ना कोई जाणे जीव जन्त जहान, आप आपणा वेस वटाया। पंचम मीता जोद्धा सूर बली बलवान, रसना चिल्ला सोहँ तीर कमान उठाया। आपे वेखे मार ध्यान, नौ खण्ड पृथ्वी इक्क निशान, सत्तां दीपां आप बणाया। आपे गोपी आपे काहन, राम रमईआ साचा राम, नानक पिया आत्म जाम, गोबिन्द गाया गुण निधान, धर्म झुलाए इक्क निशान, साचा लेख लिखाया। गोबिन्द तेरा धर्म निशाना, प्रभ साचा आप बणांयदा। लम्बा चौड़ा साढे तिन्न हथ्थ रखाना, साचा लेखा लेख लिखांयदा। लक्खण दीप वेखे मार ध्याना, आपणी बणत बणांयदा। पुष्कर उडाए इक्क बिबाणा, हरि आपणा रूप समांयदा। करौच होए निगाहबाना, निझधारी आप हो जांयदा। जम्बु देवे इक्क ज्ञाना, जमधारी आप अख्वांयदा। सलमल देवे सहिज सुख दाना, सहिजधारी आप हो जांयदा। सान देवे एका नाम निशाना, ऐली अल्ला रूप वटांयदा। कुशा तेरा इक्क मकाना, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। आपे वेखे ज़िमी अस्मानां, लोआं पुरीआं फेरा पांयदा। दस्म द्वारी सच टिकाना, अद्ध विचकार आप रखांयदा। ओंकार इक्क ज्ञाना, एका रूप वटांयदा। जोत सरूपी पहरया बाणा, सति सतिवाना नाम तत्त हरि आप पछाना, बुध मति भेव ना पांयदा। गति मित हरि जाणी जाणा, जुग जुग वेख वखांयदा। नाड़ बहत्तर उब्बल रत्त, लक्ख चुरासी आप तड़फांयदा। गुरमुख देवे धीरज यति, आत्म धीर धरांयदा। अन्तिम वेले रक्खे पत, दो पटा चीर आप पहनांयदा। जानणहारा घट घट, जोत जगाए काया मट्ट, शब्द विकाए साचे हट्ट, हट्ट हटवाणा आप अख्वांयदा। अन्तिम लहिणा देणा चुक्के अट्ठ सट्ठ, उच्चे मन्दिर जाणे ढठ्ठ, गुर चरन द्वार मिले नठ्ठ, साचा धाम इक्क सुहांयदा। कलिजुग काया अग्नी चले एका मट्ठ, चारों कुंट जोत निरँजण एका लम्बू लांयदा। पारब्रह्म दर्द दुःख भय भंजन, भगत जनां हरि साचा सजन, चरन धूढ़ कराए एका मजन, रंग गुलाला दीन दयाला हो

कृपाला आपणा आप चढ़ांयदा। आपे चले अवल्लड़ी चाला, शब्द देवे धुर दलाला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया साचा घर, इक्क वखाए सच्ची धर्मसाला, हरि धर्मी धर्म कमांयदा। ना शाह ना कदे कंगाल, मंगण दर ना किसे जांयदा। गुरमुखां जुगां जुगन्तर आपे करनहार प्रितपाल, हरि साचा रिजक सुबांयदा। एका देवे नाम सच्चा धन माल, निखुट्ट कदे ना जांयदा। फल लगाए काया डाल्ह, अमृत आत्म जाम प्यांअदा। सन्त सुहेले जुग जुग भाल, आप आपणे संग मिलांयदा। दीपक जोत जगाए साचे थाल, साची वस्त आप टिकांयदा। पंच विकारा करे हाल बेहाल, शब्द खण्डा इक्क वखांयदा। आप चलाए एका चाल, बेहंगम रूप वटांयदा। अनहद वजाए साचा ताल, ताल तलवाड़ा आप वजांयदा। दर दुआरा दए वखाल, गोबिन्द गोबिन्द रूप समांयदा। दस्म द्वारी सच्ची धर्मसाल, जोत सरूपी डगमगांयदा। दिवस रैण कदे ना होवे बाहर, जगत विछोड़ा ना कोए सतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख साचे देवे वर, दर आए सेव कमांयदा। गुरसिख साचे सद बलिहार, हरि साची सेव कमाईआ। गुर संगत मेला चरन द्वार, आत्म धीर धराईआ। चेला गुर एका घर बाहर, एका रंग रंगाईआ। लहिणा देणा विच संसार, जुग जुग रीत चलाईआ। गुरसिख लहिणा लहिणेदार, देवणहार हरि रघुराईआ। आपे खाली भरे भण्डार, वड भण्डारी आप हो जाईआ। कर्म विचारी विच संसार, जन्मां जन्म भवाईआ। मेला मेले मेलणहार, हरिजन पैज रखाईआ। खेले खेल खेलणहार, हरि साची खेल खिलाईआ। अन्तिम वेला कलिजुग धार, रैण अन्धेरी छाईआ। चारों कुन्ट हाहाकार, कोए ना किसे सहाईआ। आपे वेखे आर पार, किनारा आप हो जाईआ। मनमुख डोबे अद्धविचकार, सागर सिन्ध रुढ़ाईआ। गुरमुखां बंधे तन कटार, शब्द खण्डा आप फड़ाईआ। शब्द घोड़े हो अस्वार, चलदा वाहो दाहीआ। अन्तिम मेला नर निरँकार, विछड़ कदे ना जाईआ। गुर चेला सोहण इक्क द्वार, हरि जोती मेल मिलाईआ। सिँघ नरैण कर प्यार, नेत्र नैणां दरस दिखाईआ। तीजा लोइण कर उज्यार, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। दरस दिखाए अगम्म अपार, अगम्म अगम्मा भेव ना राईआ। वंडी वंड विच संसार, वंडणहार आप अख्वाईआ। भेख पखण्डी आई हार, देवे दंडी शब्द खण्डा हथ्थ उठाईआ। नार दुहागण कलिजुग जीव रंडी, सतिगुर पूरे साचा कन्त ना कोई हंढाईआ। रसना गा गा थक्के इंड पिण्ड ब्रह्मण्डी, सचखण्ड ना कोई वखाईआ। कोटन फसे सुखमन नाड़ी टेडी डण्डी, कोई ना पार कराईआ। कोटन फिरन मन घमंडी, चारों कुन्ट फेरे रिहा फराईआ। मति बुध होई अन्धी, गुर का ज्ञान हथ्थ ना आईआ। दूई द्वैती तन अन्दर कंधी, ना कोई देवे ढाहीआ। नौं द्वारे पाई फंदी, ना कोई सके मात छुडाईआ। बजर कपाटी लग्गा जिंदी, ना कोई कुंजी लाईआ। कलिजुग वासना मुख रक्खी

गन्दी, रसना स्वास ना मुख चलाईआ। जोत निरँजण चढ़या चन्द नौचन्दी, आकाश प्रकाश ना कोई रखाईआ। मदिरा मास बत्ती दन्दी, कलिजुग अन्तिम दए दुहाईआ। आपे मारे फड़ फड़ घमंडी, धर्म राए गल पाए फाहीआ। जन भगत वंडण साची वंडी, गुर चरन सेव कमाईआ। लेखा चुक्के जेरज अंडी, उत्भज सेत्ज ना वेख वखाईआ। साचा मेला हरि ब्रह्मण्डी, ब्रह्मण्ड पार कराईआ। पल्ले बन्ने नाम गंढ्डी, सोहँ साचा देस वसाईआ। चौथा घर चौथा पद, सन्त सुहेले आपे सद्द, पंच वजाए ताल अनाहद, अनहद सेवा लाईआ। चरन कँवल जन गद गद, दस्म द्वारी पार कराए हद्द, आप आपणे विच समाईआ। पंचम तत्त काया लई बध्ध, सुरत शब्द मिटाई अख़ीरी हद्द, एका जोती जोत समाईआ। विष्नूं वंसी इक्क रखाए आपणी यद, आपे आप आपणे विच समाईआ। सति पुरख निरँजण सति सतिवाद, आपे होए आदि जुगादि, जुग जुग आपणा रूप वटाईआ। जन भगतां आत्म रिहा साध, भगत भगती सेवा लाईआ। मेल मिलाए माधव माध, गुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। सिँघ नरैण रसना ल्या अराध, धर्म राए दी कटे फाहीआ। आदि अन्त साध सन्त, साचा मेला पुरख अबिनाशी कन्त, विछड़ कदे ना जाईआ। सोहँ गाउँणा सुहागी छंत, छत्ती रागां बाहर रखाईआ। सो पुरख निरँजण बेअन्त बेअन्त, नानक गया गाईआ। जोत सरूप आदि अन्त, आपणा रूप वटाईआ। गा गा थक्के साध सन्त, जो साची सेवा लाईआ। आपे वेखे जीव जन्त, हँ हँगता दए मिटाईआ। पूरन जोत श्री भगवन्त, सोहँ जाप जपाईआ। सतिजुग बणाए साची बणत, साचा राह वखाईआ। महिंमा आप जणाए जगत अगणत, चार वरनां इक्क सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सुहाए इक्क दर, दरवेशा आप हो आईआ। दर दरवेशा हरि भगवाना, लोकमात कलि आया। आपे होया धारी केसा, गोबिन्द रूप वटाया। पकड़ उठाए ब्रह्मा शिव गणेशा, सुरपति राजा इन्द रिहा हिलाया। प्रगट होए दस दस्मेशा, गुरसिक्खी रिहा माण दवाया। निहकलंका धारया भेसा, माझे देस डंक वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे नाम वर, वड दाता आप हो आया। हरि दाता हरि दानीआ। देवणहार जग मीत, पारब्रह्म इक्क निशानीआ। हरि शब्द सुहागी गीत, अनहद तूर अनाहद बाणीआ। आप सुणाए साचा मीत, काया मन्दिर मारे कानीआ। जगत चलाए अवल्लड़ी रीत, धारा देवे अमृत ठण्ढा पाणीआ। साचे देहुरे ना मसीत, आपे होया जाणी जाणीआ। हरिजन रसना गाए गीत, शब्द पाए जगत मधाणीआ। आपे रिड़के हस्त कीट, गुर गोबिन्दे लेखे लाए साचे हस्त गुरमुखां उत्ते वारी आपणी आप कुरबानीआ। आप सुहाए साची रुत्त, वड्ड दाता फड़ फड़ तारे गुरसिख, निवारे कर कर मेहरबानीआ। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख आत्म देवे वर, एका

राह वखानीआ। गुर संगत चरन द्वारया, आए चल द्वार। रसना मंगे मंग अपारया, देवणहार दातार। तन सोहणा शब्द शृंगारया, लाए हार शृंगार। दुरमति मैल पड़दा उतारया, आप आपणी किरपा धार। दर घर साचे आपे वाड़या, नौ द्वारे कीने पार। पड़्दे हटाए पंचम धाड़या, मारे खण्डा नाम हुलार। इक्क वखाए सच अखाड़या, पंचम गहिण वारो वार। अनहद वज्जे साचा ताड़या, आप वजाए वजावणहार। दस्म द्वारी कुण्डा पाड़या, इक्क सुहाए बंक द्वार। गुरसिख बणाया साचा लाड़या, शब्द घोड़े करे अस्वार। घर दसवें आपे चाढ़या, दसवें मेला एका वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आवे जावे आपणे घर, गुर संगत करे निमस्कारया। निमस्कार गुर पूरया, पूरी करनी आस। आदि अन्त सदा सदा हज़ूर हज़ूरया, रसना स्वास स्वास। निर्मल जोती जगाए कोहतूरया, करे कराए सच प्रकाश। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे देवे वर, आप कटाए गर्भवास। गर्भवास फंद कटाए, गोबिन्द रूप समाना। चरन दासी आप कराए, बख्शे चरन ध्याना। शब्द स्वासी आप चलाए, इक्क सुणाए सच तराना। मण्डल रासी आप वखाए, आपे गोपी आपे काहना। सुरत आकाशी आप चढ़ाए, शब्द बिठाए विच बिबाणा। दस दस मासी लेख चुकाए, नौ अठारां वेख वखाना। आस पास आप हो जाए, हरि साचा खेल खिलाना। पंडत काशी भेव ना पाए, पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराणा। बावन बाणी सारे गाए, पारब्रह्म ना किसे पछाना। खाणी बाणी वेख वखाए, कवण दर झुल्ले धर्म निशाना। गुरमुख साचे पैज रखाए, हथ्थीं बन्न्हे सोहँ गाना। साचा लाड़ा आप सजाए, गुणवन्ता गुण निधाना। एका घोड़ी नाम चढ़ाए, हरि साचा आप प्रनाना। जोती शब्दी जोड़ जुड़ाए, आप आपणा रूप समाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे देवे एका चरन ध्याना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे जिया दाना।

❊ २६ पोह २०१३ बिक्रमी अवतार सिँघ दे गृह पिण्ड कांओके ज़िला अमृतसर ❊

सन्तन घर हरि सति है, भगतन दर भगवन्त। आपणी करनी रिहा कर है, खेले खेल जुगा जुगन्त। जुग जुग देवणहार वर है, प्रभ अबिनाशी साचा कन्त। शब्द भण्डारा रिहा भर है, जन हरि साजन साचे सन्त। अमृत आत्म देवे साचा सर है, नुहाए आदि अन्त। आप आपणे जिहा कर है, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेल खेले बेअन्त बेअन्त। सन्त दुआरा धन्न है, हरि हरि पाया नाउँ। सुणे सुणाए राग कन्न है, मेल मिलाए अगम्म अथाहो। सुरत सवाणी लाए जाग है, हँस बणाए काउँ। जगत तृष्ना बुझाए आग है, सति सरूपी पकड़े बाहों। चरन धूढ़ कराए मजन

३१६
०६

माघ है, करे कराए सच न्याउँ। नाम बन्ने साचा ताग है, हरि सन्तन बलि बलि जाओ। हथ्थ पकड़े आपणे वाग है, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसया घर, वेखे थाँईं थाउँ। सन्त सुहेला मीत है, हरि रंग समाए। बैठा सदा अतीत है, दिवस रैण रिहा गाए। आप आपणा रिहा जीत है, साची बणत बणाए। एका गाए सुहागी गीत है, गोबिन्द गोबिन्द राए। आपे होया पतित पुनीत है, पतित पावन दर्शन पाए। एका रूप हस्त कीट है, ऊँचां नीचां विच समाए। एका सुत्ता दे कर पीठ है, आप आपणा मुख भवाए। शब्द जणाए इक्क अनडीठ है, लिखण पढ़न विच ना आए। माया ममता कौड़ा रीठ है, आपे भन्न वखाए। काया चोली चाढ़े रंग मजीठ है, जिस जन आपणी दया कमाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हर घट आपे वेख वखाए। सन्त साचा सज्जणा, हरि साचे मेल मिलाए। आपे पर्दा कज्जणा, आपे होए सहाए। ताल नगारा एका वजणा, एका रिहा वजाए। भाण्डा भरम गढ़ हँकारी भज्जणा, हरि आपे जाए भनाए। एका हज्ज कराए मक्का काअबा साचे हज्जना, मक्का काअबा आप वखाए। पी अमृत हरिजन साचे आत्म बहि बहि रज्जणा, हरि साचा आप प्याए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रसना अग्न बुझाए। अमृत पीणा सति सरोवर, हरि साचा आप प्यांअदा। किसे हथ्थ ना आए नौ द्वारे हाहाकार करांयदा। आप आपणी किरपा धारे, आप आपणे राह चलांयदा। आपे बैठा अधविचकारे, आपणा मुख छुपांयदा। दस्म द्वारी बन्द किवाड़े, अन्दर कुंडा लांयदा। जोत सरूपी कर अकारे, साची वंड वंडांयदा। सन्त सुहेले करे ख़बरदारे, ब्रह्मण्डां खोज खुजांयदा। जुग जुग मेले मेलणहारे, विछड़ कदे ना जांयदा। इक्क इकेले विच संसारे, एका रूप समांयदा। जोत निरँजण चाढ़े तेले, साचा सगन मनांयदा। आपे वसया सद रंग नवेले, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसया घर, सन्तन मेला साचे दर, एका एक करांयदा।

कवण फूलनहार तन शृंगार दा। कवण दूला कवण दुल्हन, कवण रूप कन्त भतार दा। कवण कन्त कवण कन्तूलण, कवण रूप नर निरँकार दा। कवण मालण कवण फूलण, कवण वेखे रंग बसन्त बहार दा। कवण सखी झुलाए झूलन, कवण हुलारा मीत मुरार दा। जोती जोत सरूप हरि, सन्त सतिगुर वेखे एका घर, एका रूप निवार दा। कवण फूल आत्म सेज, हरि साचा रिहा विछाईआ। कवण सुनेहड़ा रिहा भेज, कवण शब्द जणाईआ। कवण कराए आपणा तेज, होए सति रुशनाईआ। कवण वखाए शब्द नेज, कवण हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेख घर, कवण द्वारे फूलन बरखा लाईआ। फूल हार कवण गुंदाए, कवण फूल रलांयदा। कवण धागा विच परोए, निकल कदे ना जांयदा। कवण सुहागा

कन्त तन छुहाए, आपणी खुशी मनांयदा। कवण नेत्र वेख वखाए, आपणा आप सजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आपे वसया आपणे घर, फल फूल आपणे हथ्थ रखांयदा। फूलन माल कवण दातार, कवण सितार हिलाईआ। कवण करे सच प्यार, कवण धार बंधाईआ। कवण कन्ता कवण नार, कवण रूप वटाईआ। कवण करे तन श्रृंगार, कवण बस्त्र सच हंढाईआ। कवण होवे पहरेदार, कवण रिहा जगाईआ। कवण करे ख़बरदार, कवण रिहा हिलाईआ। कवण मिलाए मीत मुरार, विछड़ कदे ना जाईआ। कवण अख्वाए सांझा यार, सांझीवाल आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसया घर, सन्तन मेला इक्क दर, घर साचे फूलन भेंट चढ़ाईआ। कवण फूल हरि पाए मुल्ल, मुल्ल कोए ना जाणया। कवण तोल जन जाए तुल, चले हरि हरि भाणया। कवण वेखे साची कुल, गुणवन्ता गुण निधानया। कवण बूटा रिहा हुल्ल, फल दिसे ना किसे टाहणया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसया घर, सन्तन मेला इक्क दर, इक्क दूजे दी करन पछाणया। एका दूजा एका घर, एका रंग रंगांयदा। नैण तीजा देवे वर, दरसी दर्शन पांयदा। चौथे जाए वड़, आपणा घर सुहांयदा। पंचम चोटी वेखे चढ़, साचा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, सन्तन मेला इक्क दर, एका दूजा भेव खुल्हांयदा। इक्क इकल्ला इक्क आकार, एका रंग समाया। दूजा वसे शब्द महल्ला, हरि शब्दी बणत बणाया। तीजा पवणी शब्दी आपे रल्ला, आपे रिहा चलाया। चौथे घर अडोल अडुल्ला, आदि अन्त ना किसे डुलाया। पंचम बैठा अछल अछल्ला, वल छल धारी भेख वटाया। छेवें ना कोई वेखे छप्पर छन्ना, बंक दुआरा इक्क सुहाया। सत्तवें सतिवाद बेड़ा बंन्हा, सति पुरख निरँजण जोत जगाया। आप आपणा भाणा मन्ना, आप आपणे विच समाया। आप चढ़ाए आपणा चन्ना, जोती नूर कराया। जोती जोत सरूप हरि, सन्तन मेला इक्क दर, तीजे नैणा वेख वखाया। तीजा नैण खोल्ह किवाड़, हरि साचा वेख वखांयदा। लहिणा देणा विच पहाड़, साचा पर्बत फोल फुलांयदा आपे वेखे पिच्छा अगाड़, आप आपणा रूप वटांयदा। आपे घाड़न घड़े घाड़, घड़नहार आप अख्वांयदा। सन्त सुहेला साचा लाड़, लोचन नैण वेख वखांयदा। शब्द घोड़े साचे चाढ़, साचे राह चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसया घर, सन्तन मेला इक्क दर, दर तीजे दर्शन पांयदा। चौथा घर हरि निरँकार, एका एक बणाया। सन्त सुहेले कर प्यार, आपे रिहा वखाया। जुग जुग मेले मेलणहार, दर द्वार बंक खुल्हाया। सन्त सुहेला मीत मुरार, घर साचे बैठा राह तकाया। एका मेला एकँकार, एका रंग समाया। शब्द महल्ला अपर अपार, चार द्वार ना कोए रखाया। आपे वेखे अन्दर बाहर, गुप्त ज़ाहिर खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, सन्तन मेला इक्क दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाया। दर दरवाज़ा ग़रीब निवाजा आपणा आप लिखांयदा।

शब्द सरूपी मारे आवाजा, आपे आप जगांयदा। नाम रखाए घोड़ा ताजा, दिवस रैण दुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, सन्तन मेला इक्क दर, आप आपणा राह बुझांयदा।

त्रैगुण माया तत्त, प्रभ साचे आप उपाया। अंस बणाई पंज तत्त, पंझी सेवा लाया। नाल रलाई मनमति, बुध आपणा भेव छुपाया। बणत बणाई हड्ड मास नाड़ी रत्त, हाडी जोड़ जुड़ाया। नौ द्वारे जगत रथ, सृष्ट सबाई रिहा वखाया। करे खेल हरि समरथ, आपणा धाम सुहाया। बिन गुर पूरे किसे ना आए हथ्थ, जीव फिरे हलकाया। काया बणाया मात रथ, रथवाही हरि रघुराया। पंचम डोरी रक्खी हथ्थ, पंचम रिहा चलाया। पंचम शब्द जणाए अकथ, पंचम रिहा कुरलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया आपणा जाल विछाया। पंचम तत्त कर त्यार, हरि साचे बणत बणाईआ। आपे खोल्हे नौ द्वार, नौ दर वेख वखाईआ। मन मति बुध पावे सार, एका तट्ट वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सरगुण बणत बणाईआ। सरगुण रूप नौ दरवाज़ा, हरि साचा बणत बणांयदा। आप रचाया आपणा काजा, आपे वेख वखांयदा। आपे रक्खणहारा लाजा, आपे मुख छुपांयदा। आपे होए ग़रीब निवाजा, गुर सतिगुर आप अख्वांयदा। आपे मारनहारा अवाज़ा, आपे सेव कमांयदा। आपे रक्खे घोड़ा ताजा, आपे वाग गुंदांयदा। आपे देवणहारा दाजा, जुग जुग आपणा शब्द चलांयदा। आपे शाहो राजन राजा, तख्त ताज आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दुआरा इक्क सुहांयदा। काया मन्दिर चार दिवारी, हरि साची बणत बणाईआ। खेले खेल अपर अपारी, साची वंड वंडाईआ। आवे जावे वारो वारी, पिण्ड इंड ब्रह्मण्ड खोज खुजाईआ। सचखण्ड प्रभ साची धारी, साची बणत बणाईआ। शब्द सरूपी मार उडारी, सति पुरखां विच समाईआ। सति पुरख एका एकँकारी, अलक्ख ना लखया जाईआ। अलक्ख अलक्खणा हरि निरँकारी, अगम्म अगम्मे धाम सुहाईआ। आत्म अगम्मी भेव न्यारी, नाड़ी चम्मा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे बैठा जोत जगाईआ। जोत जगाए इक्क अकाला, एका नूर रखाया। प्रगट होए दीन दयाला, शब्द तूर उपजाया। शब्द सरूपी खेल निराली, पवणी पवण समाया। पवण पाए गल साची माला, चौथा दर मिल्या वर, हरि साचा वेख वखाया। त्रैगुण माया देवे वर, ब्रह्मा झोली पाया। दोए जहानी खेले हरि, खेलणहार अख्वाया। इक्क इकेला इक्को नर, सृष्ट सबाई नार कन्त हंढाया। इक्क इकेला एकँकारा, एका रंग समांयदा। दूजी बन्न्हे शब्द धारा, आपणी धार चलांयदा। तीजे रूप अपर अपारा, लोचन इक्क वखांयदा। चौथे घर नाम हुलारा, गुर शब्दी

मेल मिलांयदा। पंचम सोहे बंक दुआरा, पंचम मीता मंगल गांयदा। छेवें घर खेल अपारा, हरि भेखी भेख वटांयदा। सत्तवें बैठे उच्च चुबारा, सति पुरख निरँजण रूप हो जांयदा। आपे वसे हो हो बाहरा, जोती जोत जगांयदा। जोत सरूपी जोत अधारा, जोती रंग रंगांयदा। जोती पावे आपणी सारा, जोती सच हंढांयदा। आपे नारी कन्त भतारा, आपणा दर सुहांयदा। भोग बिलासी अपर अपारा, इच्छया नाम रखांयदा। आप उपाए सुत दुलारा, शब्दी नाउँ रखांयदा। शब्दी देवे हरि हुलारा, पवणी पवण मिलांयदा। चौथा घर सच दुआरा, पंचम तत्त दिस ना आंयदा। पंजे बन्न्हे साची धारा, लक्ख चुरासी आप उपांयदा। दूजे वेखे दोए धारा, आप उपाए आपे मेट मिटांयदा। एका एक हरि निरँकारा, एका रूप समांयदा। एका एक इक्क इकल्ला, एका कार कमाईआ। शब्द दुआरा दूजा मल्ला, आपणा धाम सुहाईआ। शब्दी पवणी जोती रल्ला, तीजे घर मिले वड्याईआ। दूई द्वैती मेटे सल्ला, चौथे घर वज्जे वधाईआ। पंचम दीपक आपे बला, करे सच रुशनाईआ। छेवें होए अछल अछल्ला, भेव कोए ना पाईआ। सति पुरख निरँजण दर दुआरा एका मल्ला, दर सत्तवां दए सुहाईआ। आपे जाणे निहचल धाम अटला, ऊँचो उच्च रखाईआ। सच सिँघासण आपे मल्ला, बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेलणहारा आप अख्वाईआ। उच्चा मन्दिर उच्च दुआरा, हरि आपणा आप सुहांयदा। जोत सरूपी कर आकारा, घर सत्तवां वेख वखांयदा। छेवें धुन अपर अपारा, शब्दी ताल वजांयदा। पंचम देवे पवण हुलारा, आकाश आकाशी पार करांयदा। चौथे खोल्हे सच दरबारा, निरगुण सरगुण एका रूप वखांयदा। तीजे त्रैगुण बन्न्हे धारा, सेवक सेवा लांयदा। दूजे वेखे पार किनारा, आर पार वेख वखांयदा। इक्क इकल्ला मीत मुरारा, हर घट आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी सेज हंढांयदा। सति पुरख निरँजण सच्चा थान, आपणा आप सुहाया। जोत सरूपी कर आकार, रंगण रंग रंगाया। रंगे रंग लाल गुलाल, आदि शक्त अख्वाया। सच प्रकाश हरि मेहरवान, आपणा रूप वटाया। दूजे दर मार ध्यान, भेखी भेख कमाया। कंचन जोती धार महान, आपणा तेज वखाया। आपे होया जाणी जाण, सूहा वेस कराया। वेस अनेका हरि करतार, करता पुरख अख्वाया। आपे होया अन्दर बाहर, गुप्त ज़ाहिर भेव ना राया। चिट्टी धारी जोत अकार, सति सपेदी रूप वटाया। जोत सरूपी हरि निरँकार, पीला बस्त्र तन छुहाया। शब्द बस्त्र अपर अपार, पीले रंग रंगाया। पीले रंग करे विचार, नीले नाल रलाया। नीला होया ख़बरदार, आपणा पल्ला छुडाया। आपे करे वेख विचार, वेखणहार अख्वाया। काले सूसे काली धार, काला रंग रंगाया। जगत जगदीसा पावे सार, साची बणत बणाया। हरि दर कँवला अपर अपार, अट्ठां वंड वंडाया। अट्ठां तत्तां वेख विचार, पंजां रिहा जगाया। पंजां करे

ख़बरदार, मन मति बुध रिहा समझाया। बुध मति ना पावे सार, गुर शब्दी शब्द जणाया। गुर शब्दी देवे इक्क हुलार, अन्दर मन्दिर वेख वखाया। साचा मन्दिर हरि निरँकार, काया अन्दर आप टिकाया। ना कोई दिसे नौ द्वार, साचा जन्दर इक्क लगाया। आपे बैठा कर बन्द किवाड़, ना कोई खोले खोल वखाया। चारों कुन्ट अग्नी तत्ती हाढ़, जीव जन्त रहे बिल्लाया। गुरमुख विरला सन्त दुलार, दर साचा वेख वखाया। गुर शब्द रसना नाउँ उचार, एका चरन ध्यान लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसया घर, काया मन्दिर अन्दर शब्द सिँघासण डेरा लाया। शब्द सिँघासण हरि निरँकारा, एका एक सुहाया। गुरमुख साचा सन्त दुलारा, फड़ फड़ राहे पाया। गुर पूरा होए मीत मुरारा, अग्गे पिच्छे होए सहाया। आप कराए पार किनारा, सुखमन नाड़ी अन्ध अन्धयारा टेडी बंक, ना कोई जाणे शाह शहान राज राजान राउ रंक, हरिजन विरला वेख वखाया। आप सुहाए द्वार बंक आपणा लड़ फड़ाया। शब्द सरूपी वजाए डंक, पंजे बैठे मुख छुपाया। आप जणाए एका अंक, एका रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्क चलाया। साचा मार्ग हरि दातार, आपणा आप चलांयदा। जोत निरँजण कर आकार, साचा राह वखांयदा। सन्त सुहेले रहिणा ख़बरदार, साचा मेल मिलांयदा। नाता तुट्टे मीत मुरार, पंचम यार नजर ना आंयदा। वेख वखाए ओंकार, आकार आकारा आप करांयदा। शब्द सरूपी दए सहार, साचा धाम सुहांयदा। सर सरोवर इक्क अपार, एका नुहावण नुहांयदा। कागी काग ना पावे सार, गुर कागी हँस बणांयदा। आप लवाए इक्क उडार, एका रंग रूप समांयदा। राम रमईआ हरि निरँकार, रेख लेख मिटांयदा। आपे वेखे वेखणहार, दिस किसे ना आंयदा। दस्म द्वारी खोल किवाड़, बजर कपाटी पार करांयदा। शब्द सिँघासण अपर अपार, साची सेज वछांयदा। कन्त कन्तूहला हरि निरँकार, गुरमुख नारी साची सेज बहांयदा। करे कराए आप प्यार, प्रेम प्याला इक्क प्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर शब्दी मेला इक्क दर, दर दुआरा बंक सुहांयदा। दस्म द्वारी पार किनारा, गुर पूरा आप करांयदा। एका देवे नाम सहारा, साचा राह वखांयदा। सो देस अपर अपारा, हँ नाल मिलांयदा। एका रूप नर निरँकारा, काल महांकाल ना कोई दिसांयदा। सुन्न अगम्मी पार किनारा, साचा धाम सुहांयदा। जोत सरूपी कर आकारा, सुत्तयां मेल मिलांयदा। पूर्ब पूर्ब करे विचारा, साचे सन्तां एका पल्ला नाम फड़ांयदा। सचखण्ड तेरा खोल किवाड़ा, साचे धाम पुजांयदा। शब्द गुर साचा लाड़ा, साची नारी नाल लिआंयदा। कोई ना मंगे चाम दाम पहाड़ा, लग्गी प्रीती तोड़ निभांयदा। सति पुरख निरँजण मीत मुरारा, हरि सन्त तेरा राह तकांयदा। आउणा चल एका वारा, आपणीआं भुजा उठांयदा। शब्दी देवे शब्द हुलारा, जोती गोद उठांयदा। जोती करे प्यार अपर अपारा, साचा सुत

पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्त आपणे धाम सुहांयदा। हरि सुत तेरी साची रुत्त, प्रभ साचा आप खिड़ांयदा। हड्ड मास नाड़ी चम्म ना कोई दिसे बुत्त, ज्ञान ध्यान राग कोई ना ओथे गांयदा। वेद पुराण अञ्जील कुरान ना कोई तत्त, नेत्र बणत बणांयदा। खाणी बाणी ना कोई करे पछाणा, साचा नाम किसे हत्थ ना आंयदा। आपे देवणहारा दाना, अन्तरजामी हरि भगवन्ता सन्त सुहेले वेख वखांयदा। निहकामी खेल महानी, कोटन भानी तेज वखांयदा। सूरज चन्द ना कोए निशानी, मण्डल रास ना कोई पांयदा। ब्रह्मा शिव वेख ना सकण मार ध्यानी, हरि ऊँचो ऊँच अख्वांयदा। करोड़ तेतीस बाल नादानी, सुरपति राजा मुख भवांयदा। सन्त सुहेले पारब्रह्म बणाए ब्रह्म ज्ञानी, जिस जन आपणी दया कमांयदा। एका देवे धुर निशानी, गुर शब्दी नाउँ रखांयदा। गुरसिख आत्म मारे कानी, बजर कपाटी पार लांयदा। देवणहारा वड्डा दानी, दाता दानी आप अख्वांयदा। चरन धूढ़ कराए सच्चा इशनानी, काग हँस बणांयदा। ना कोई जाणे जीव प्राणी, माण सरोवर ना कोई नुहांयदा। वेद कतेब ना दिसण खाणी बाणी, वेद पुराणां हत्थ ना आंयदा। सन्तां मेला दो जहानी, हरि विछड़ कदे ना जांयदा। सावण तेरी रुत्त सुहानी, हरि हरी धार बहांयदा। इक्क राग गावण इक्क मधावणी, आत्म मेल मिलांयदा। पंचम मिल्या पद निरबानी, एका पद वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द नाद विच ब्रह्माद आदि जुगादि आपणा आप वजांयदा। शब्द नाद हरि आप वजाए, दिस किसे ना आया। अगाध बोध हरि शब्द जणाए, भेव किसे ना पाया। साध सन्त रिहा जगाए, जुग जुग लेख मिटाया। मोहण माधव माध आप अख्वाए, सच सिँघासण डेरा लाया। रसना स्वाद ना कोई लगाए, बत्ती दन्द ना कोई टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, सन्तन मेला साचा घर, घर साचा इक्क सुहाया। कूड़ कुड़यार जगत कलि माया, कर्मगत ना राईआ। मीत मुरार सर्ब दुखदाया, पति ना कोए रखाईआ। पीर फकीर भरम भुलाया, सहिज समत ना कोई रखाईआ। हउमे हँगता जंजीर सर्ब बंधाया, साध सन्त फंद फंदाईआ। चोटी अखीर ना कोए चढ़ाया, जीव जन्त रहे कुरलाईआ। दस्तगीर कोई नज़र ना आया, दीद दीदार ना कोई कराईआ। सीर नीर ना किसे चवाया, आत्म धीर ना कोए धराईआ। हउमे पीड़ ना कोए कढाया, पंच विकारा दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेख वखाईआ। कलिजुग कूड़ कुटम्ब, नाता जोड़या। प्रेम प्यारा विष्टा चम्म, हरि मिल्या ना साचा घोड़या। रसन ना गाया साचे दम, फल होया काया कौड़या। आपे गया मरया पए जम्म, लक्ख चुरासी फंद ना किसे तोड़या। लोभ विकारा खाया तम, पारब्रह्म ना अन्दर बहुड़या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे परखे मिट्ठा कौड़या। कलिजुग काली धार, आपणी आप वहांयदा। वेख वखाए विच संसार, ना कोई अन्त छुपांयदा। पीर फकीरां

आई हार, शाह हकीरां वेख वखांयदा। अट्ठ सट्ठ नीरा कर्म वीचार, कुकर्मी मेट मिटांयदा। लक्ख चुरासी पावे सार, जम की फाँसी वेख वखांयदा। मदिरा मासी कर ख्वार, घनकपुर वासी मेट मिटांयदा। शाहो शाबाशी हरि निरँकार, शब्द स्वामी अन्त बचांयदा। गुणवन्ता सर्ब गुणतासी, दर एका अलख जगांयदा। गुर गोबिन्द जगत रहि जासी, जागरत जोत जगांयदा। त्रैगुण माया लाहे उदासी, साची सेवा लांयदा। वेख वखाणे निवास निवासी, वेखणहारा दिस ना आंयदा। उप्पर बैठा आकाश आकाशी, आकाश आकाशां आप हिलांयदा। जोत सरूप सति प्रकाशी, इक्क प्रकाश वखांयदा। पारब्रह्म प्रभ अबिनाशी, अबिनाश हो आंयदा। गोबिन्द गोबिन्दा करे दासन दासी, दास आप अख्वांयदा। मन्दिर अन्दर करे वासी, वसणहारा भेव छुपांयदा। बणत बणाए साची रासी, साचा शब्द अलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती गोती एका एका अख्वांयदा। कलिजुग तेरा काला रंग, लक्ख चुरासी रंगया। वेले अन्त ना कोए संग, सीस मुहम्मद होवे नंगया। चार यार वजायण मृदंग, अन्तिम होणा भन्गया। पुरख अबिनाशी किरपा कर, खेले खेल बहि बहि अन्गया। आप आपणी जोत धर, चिट्टे अस्व कसे तन्गया। शब्द डोर हथ्थ फड़, किला कोट आवे लँघया। पंजे चोर लए फड़, वड वड दाता सूरा सरबन्गया। हरिजन साचे अन्दर वड़, दानी दाता एका मंग्गया। दस्म द्वारी अग्गे खड़, नाम विछाए सच पलँघया। हरिजन साचे चढ़, उच्च महल्ले आपे टंगया। दूर दुराडा अग्गे खड़, दरस दिखाए कदे ना सन्गया। आप फड़ाए आपणा लड़, अमृत धार वहाए गन्गया। ना मरे ना जाए सड़, मढ़ी गोर ना किसे टंगया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखे भुक्खा नंगया। कलिजुग काले खुल्ले केस, नेत्र नीर वहाईआ। जूठ झूठ ना चले पेश, रो रो देण दुहाईआ। माया राणी कर कर वेस, नट नटूआ स्वांग वरताईआ। उठ उठ वेखे ब्रह्मा शिव गणेश, कवण बैठा जोत जगाईआ। करोड़ तेतीसा दर दरवेश, सुण सुण रिहा कुरलाईआ। वरभण्डी हरि करया वेस, ब्रह्मण्डी रिहा जगाईआ। आपे होए नर नरेश, निरगुण रूप समाईआ। बाल अवस्था अलूड़ वरेस, बाली बुध रखाईआ। जोती जामा धरया भेस, कारज सिद्ध कराईआ। गोबिन्द काया दस दस्मेश, हरि बैठा आसण लाईआ। किसे ना चले कोई पेश, सृष्ट सबाई रिहा हिलाईआ। लक्ख चुरासी लाए ठेस, ना कोई सके बचाईआ। खूंडी भूरी मोढे खेस, गुर नानक आए वाहो दाहीआ। मुख पुकारे नाग शेस, सहँस सहँसना गुण गाईआ। सांगोपांग विछी सेज, प्रभ आपणा आसण लाईआ। सत्तां सत्तां दए संदेश, नीचे उप्पर वेख वखाईआ। चौदां चौदां हो प्रवेश, परम पुरख रिहा जणाईआ। आपे लिखणहारा लेख, जुग जुग लेख लिखाईआ। कलिजुग तेरी काली रेख, प्रभ आपे जाणे धारी केस, वेखे मूंड मुंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण

नर, निरगुण रूप समाईआ। कलिजुग तेरा काला वेस, गल काली कमली पाईआ। दर दर फिरे हो दरवेश, रिहा अलख जगाईआ। पारब्रह्म सद करे आदेश, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। अन्तिम वेला लैणा वेख, मुहम्मद मुहम्मदी गया लिखाईआ। सदी चौधवीं मिटे रेख, मेटणहारा आप हो जाईआ। प्रगट होए हरि माझे देस, साची जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटाईआ। भगतन संग हरि रत्तया, दिवस रैण प्रभात। आपे दे समझावे मतया, ना वेखे ज़ात पात। चेतन्न जगाए चेतन्न सत्तया, चित्त वित देवे साची दात। हरि शब्द चढ़ाए रथया, बेड़ा पार कराए लोकमात। आप सुणाए आपणी गथया, नर हरि त्रैलोकी नाथ। सर्बकला आपे समरथया, आप निभाए आपणा साथ। सगल वसूरा विरले गुरमुख लथया, जिस जन मिल्या कमलापात। लक्ख चुरासी माया जूठा झूठा मथन मथया, धर्म राए गल फाही फाथ। धरत मात विछाए सथया, कोई ना पुच्छे किसे वात। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगतन वेखे इक्क घर, आप निभाए आपणा साथ। सगला संग निभांयदा, अकल कला भरपूरा। अंग संग हो जांयदा, आपे नेड़े दूरा। मंगण मंग मंगांयदा, बख्शे चरन धूढ़ा। कंगण तन पहनांयदा, सोहँ साचा चूड़ा। रंगण रंग रंगांयदा, नाम मजीठी गूढ़ा। अंगण अंग लगांयदा, चतुर कराए मूर्ख मूढ़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे वेख दर, दूई द्वैती दुरमति मैल नौ द्वारे हूंझे कूड़ा। हरिजन एका नत्त है, तत्त धीर समाए। लोभ ना दिसे रत्त है, रत्ती रत्त ना राए। आत्म बीज बीजे साचे वत्त है, साचा नाउँ बीज बिजाए। फल फुलवाड़ी लाए मात है, फूलन फूल रिहा खिलाए। आपे देवे दे समझाए मति है, मन मति दर दुरकाए। गुरमति साची वत्थ है, हरिजन साचे झोली पाए। मेट मिटाए नौ नाथ है, सिद्ध चुरासी वक्त चुकाए। गुरमुख साचा सगला साथ है, संगी साथी हरि रघुराए। पूत सपूता रामा घर दसरथ है, नंद यशोदा कृष्ना राए। प्रगट होए हरि समरथ है, अकल कल वरताए। लक्ख चुरासी पावे नत्थ है, दिस किसे ना आए। लहिणा देणा मुकाए सीआं साढे तिन्न हथ्थ है, धरत धवल वंड वंडाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटाए। गुरमुख साचा सच है, साचे हट्ट विकाए। तन माटी भाण्डा कच्च है, अन्तिम भन्न वखाए। गुर शब्द हरिजन हिरदे रिहा रच है, सांतक सति वरताए। मनमुखां दर घर ना सके पच है, रसन होई हलकाए। अन्तिम वेले कोई ना सके बच है, काल कलन्दर आपणा डौरू वाहे। लाड़ी मौत रही नच्च है, काला घूंगट मुख रखाए। चित्रगुप्त रिहा दस्स है, लहिणा देणा हिसाब मुकाए। राए धर्म रिहा हस्स है, अठाई कुण्डां नर्कां कुंडां लाहे। पुरख अबिनाशी तीर निराला रिहा कस है, लक्ख चुरासी पार कराए। मन मति चरनां हेठां रिहा झस्स है, साचे दर दुरकाए।

किसे ना चले वस है, कलिजुग वेला अन्तिम आए। वेद पुराणां अंजील कुरानां होई बस है, गालब तालब इल्म ना कोई पढ़ाए। खाणी बाणी रही नस्स है, दर बंक ना कोई सुहाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सन्त साजन साचा मेल मिलाए। गुरमुख विरला सोभावन्त, हरि हरि रसना गांयदा। मेल मिलावा साचे कन्त, साची सेज हंढांयदा। रक्खणहारा पति पतिवन्त, पतित पुनीता दया कमांयदा। भेव ना जाणे जीव जन्त, साध सन्त कुरलांयदा। कलिजुग माया पाए बेअन्त, भरमे भरम भुलांयदा। चरन दासी हरि हनवन्त, साची सेव कमांयदा। नाल रलाए जामावन्त, आपणा संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण वेख घर, दर दुआरा बंक सुहांयदा। गुरमुख साजण साचा मीत, साची सेव कमांयदा। पारब्रह्म प्रभ गाए सुहागी गीत, रसना दमा दम चलांयदा। चरन कँवल जन लागी प्रीत, नेत्र नीर छमां छम वहांयदा। आप आपणा जीत, मानस देही पूर कर्मा आप करांयदा। गुरमति काया ठांडी सीत, दुरमति मैल धवांयदा। परखणहारा जुग जुग नीत, नीत अनीता आप अख्वांयदा। आपे बख्शे हस्त कीट, ऊँचां नीचां वेख वखांयदा। मनमुखां सुत्ता दे कर पीठ, गुरमुखां आत्म सच्चा डेरा लांयदा। कलिजुग माया जूठी झूठी चक्की रही पीस, लक्ख चुरासी पीस पिसांयदा। शब्द गुर इक्क अनडीठ, दिस किसे ना आंयदा। कलिजुग जीव कौड़ा रीठ, आपणा हिस्सा आप हंढांयदा। एका हरि बीठला बीठ, दहि दिशा वेख वखांयदा। गुरमुख काया रंग चाढ़े मजीठ, हउमे हँगता विस्सा लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वेखे सच घर, घर सुहञ्जणा जोत निरँजणा अलख अलख जगांयदा। गुरसिख दुआरा साचा दर, जुग जुग आप उपजांयदा। आपे देवणहारा वर, आप चलाए आपणे भाणया। आपणी करनी आपे कर, करे कराए हरि भगवानया। हरिजन साचा जाए तर, आए दर होए परवानया। नेत्र नैण दर्शन कर, मानस देही सुफल करानया। चरन धूढ़ सरोवर नुहाए साचा सर, काग हँस बणानया। ना जन्मे ना जाए मर, गुर चरन दुआरा जिस जन मानया। आवण जावण चुक्के डर, राए धर्म फंद कटानया। साचा घाड़न आपे घड़, गुणवन्ता देवे नाम गुण निधानया। गुरसिख पौड़े पौड़े जाणा चढ़, उच्च महल्ल अटल हरि सुहानया। आप फड़ाए आपणा लड़, नेड़ ना आयण पंज शैतानया। लेखा चुक्के सीस धड़, धड़ सीस ना संग निभानया। साचे मन्दिर जाए वड़, जगे जोत हरि भगवानया। आप आपणी बांह लए फड़, गुरमुख दर करे परवानया। एका अक्खर जाए पढ़, लेखा चुक्के जगत मानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख वेखे सच दर, सुणे सुणाए अकथ कहाणीआ। शब्द कहाणी अकथ, गुर आपणी रिहा सुणाईआ। साची राणी मेल हरि, सुरत सवाणी आप बणाईआ। गुर शब्द प्रीती गई जुड़, मिल्या मेल

साचे हाणीआ। आप चढ़ाए साचे घोड़, साची वाग हथ्थ उठाईआ। अन्दर मन्दिर जाए बौहड़, हरि साचा शाहो शाहानया। धुरदरगाही आया दौड़, वेखे परखे मिट्ठे कौड़, अमृत आत्म जल देवे ठण्डा पाणीआ। पार कराए राह भीड़, आप कर कर आपणी मेहरवानीआं। ना कोई जाणे लम्बा चौड़, दस्म द्वारी सच टिकानया। जोत निरँजण लग्गे औड़, सति पुरख निरँजण वेखे मार ध्यानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए वर, जुग जुग मात सुणाए सच निशानया। गुरसिख प्रभ साचे वरया, साचा मेल मिलाईआ। इक्क वखाया साचा घरया, दर दरवाज़ा दिस ना आईआ। दर द्वारे कारज सरया, सर सरोवर आप नुहाईआ। सर सरोवर आत्म भरया, आत्म ताल सुहाईआ। आत्म परमात्म एका करया, गुर शब्दी मेल मिलाईआ। शब्द भण्डारा हरि हरि भरया, दिवस रैण रिहा वरताईआ। आदि अन्त ना खाली करया, निखुट्ट कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां, आप आपणी गोद उठाईआ। गुरमुख साचे सन्त दुलार, चित चरन कँवल चित लांयदा। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, धरत धवल माण दवांयदा। दरस दिखाए अगम्म अपार, साँवल सँवल रूप वटांयदा। दीपक जोती कर उज्यार, नाभी कँवल उलटांयदा। अमृत झिरना झिरे अपार, निझर धार वहांयदा। कँवल मुखी खिड़ी गुलज़ार, प्रभ साचा फूल खिलांयदा। फल फुलवाड़ी अपर अपार, काया मन्दिर आप सुहांयदा। काया मन्दिर नर निरँकार जोत निरँजण दीप जगांयदा। जोत निरँजण कर आकार, साचा राह वखांयदा। साचा राह अपर अपार, गुर पूरा अग्गे लांयदा। गुर पूरा देवे सदा सहार, पल्ला नाम फड़ांयदा। नाम पल्ला हरि करतार, जलां थलां पार करांयदा। जलां थलां डूँघी गार, चरनां हेठ झसांयदा। गुरमुख साचा कर त्यार, काया कवरी वेख वखांयदा। पारब्रह्म प्रभ मीत मुरार, गहर गवरी गुर रूप अख्वांयदा। हरिजन साचे सर सरोवर, वरन वरनी वरमी पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे वेख घर, साचा धाम सुहांयदा।

गोबिन्द हरि गोबिन्द है, गोबिन्द रूप वटाए। आप मिटाए आपणी चिन्द है, आलस निन्दरा विच ना आए। आप बणाए आपणी बिन्द है, पिता पूत अख्वाए। प्रगट होया अन्तिम हिन्द है, कलिजुग अन्तिम वेख वखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा लेखा रिहा लिखाए। गुर गोबिन्द घर साचा पाया, हरि साचा मेल मिलाईआ। जीउ पिण्ड तन काचा देह तजाया, शब्द शब्द समाईआ, सम्बल नगर लेख लिखाया, वेले अन्तिम जोत जगाईआ। लम्बा चौड़ा कोई दिस ना आया, प्रभ लेखा रिहा जणाईआ। कंचन गढ़ उप्पर चढ़ किसे दिस ना आया, नौ दर फिरे लुकाईआ। अग्गे

३२६
०६

खड़ किसे दरस ना पाया, साध सन्त बैठे धूणीआं ताईआ। सीस धड़ ना कोई गढ़, जोती नूर सवाईआ। गुर गोबिन्दे लड़ फड़, साचे घोड़े चढ़ के आया, लोकमाती फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दा इक्क दमामा रिहा शब्द वजाईआ। गोबिन्द गाया हरि निरँकार, रसना रसन ध्याईआ। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, आपणी दया कमाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, आपणी बणत बणाईआ। अनहद लाया सेवादार, पंचां राग अल्लाईआ। छत्ती राग ना पायण सार, गा गा थक्की लोकाईआ। अक्खर वक्खर ना कोई रिहा विचार, बजर कपाटी पत्थर ना कोई पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हत्थ रक्खी वड्याईआ। गोबिन्द काया सच मकाना, हरि साचे जोत जगाईआ। शब्द सरूपी इक्क बिबाणा, आपणा रिहा उडाईआ। एका देवे धुर फ़रमाणा, सोहँ नाउँ रखाईआ। वेद पुराणां पावे सारा, अञ्जील कुरानां दए खपाईआ। खाणी बाणी आई हाना, दर दर पए दुहाईआ। पुरख अबिनाशी गुण निधाना, आपणी बणत बणाईआ। धर्म झुलाए इक्क निशाना, गोबिन्द हत्थ रखाईआ। सत्तां दीपां कर परवाना, नौवां खण्डां रिहा वखाईआ। ब्रह्मण्डां मारे तीर निशाना, करोड़ तेतीसा पावे माना, सुरपति राजा इन्द दए दुहाईआ। गुरमुख साचे देवे माणा, द्वार बंका आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन देवे फ़रमाणा, हरि साचा धुरदरगाहीआ। धुरदरगाही साचा मीता, नर नरायण नर निरंकारया। सतिजुग चलाए साची रीता, खेले खेल विच संसारया। वेखणहारा दिवस रैण अग्गे नीता, लक्ख चुरासी भेव चुका रिहा। आपे होवे कलिजुग तेरा अन्तिम वेला बीता, चारों कुन्ट धूआँधारया। कलिजुग जीव कौड़ा रीठा, गुर मन्त्र ना किसे उचारया। शब्द ना पाया इक्क अनडीठा, अट्ठे पहर वजाए सितारया। गुर का बचन सदा सद मीठा, गुरमुख विरले मात विचारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सोए अन्त आप जगा रिहा। सन्त सुहेले उठ जाग, हरि साचा आप जगांयदा। मानस देही वड वड भाग, मानस देही फल लगा रिहा। माया डस्से ना डस्सणी नाग, एका देवे नाम भण्डारया। जगत तृष्ना बुझे आग, हरि मानस देही लेखे लांयदा। चरन धूढ़ दर साचा माघ, प्रभ आपणा आप करांयदा। साचा मेला कन्त सुहाग, विछड़ कदे ना जांयदा। कलिजुग माया लाहे दाग़, काया रंगण रंग चढ़ांयदा। अनहद वजाए साचा साज, नाम सितारा इक्क वजांयदा। सीस पहनाए एका ताज, गुर शब्दी नाउँ रखांयदा। मेल मिलाए देस माझ, साची धरत सुहांयदा। गुर गोबिन्दा रक्खे लाज, हरि साची दया कमांयदा। अन्दर मन्दिर मारे आवाज़, अन्दर मन्दिर डेरा लांयदा। आप रचाया साचा काज, साधां सन्तां आप बणांयदा। सोहँ देवे साचा दाज, सतिजुग साचा राह वखांयदा। कलिजुग अन्तिम जाणा भाज,

प्रभ शब्द खण्डा हथ्थ उठांयदा। कोई ना किसे दिसे राज, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलांयदा। करे खेल कल्ल कि आज, सम्मत सोलां नींह रखांयदा। नाम चढ़ाए सच जहाज़, जन भगतां आप बिठांयदा। आपे रक्खणहारा लाज, जुग जुग पैज रखांयदा। एका शब्द उडाए साचा बाज, चारों कुन्ट आप फिरांयदा। कल्गी तोड़ा नाम साज, सिर आपणे हथ्थ टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन मेला इक्क घर, एका घर सुहांयदा। साचा घर गुर दरबार, हरि आपणा आप उपाया। ना कोई बणाई चार दिवार, ना कोई ग्रन्थ रखाया। ना कोई वेखे वेख विचार, ना कोई रसना गाया। तत्त मति ना कोई धार, सार शब्द नाउँ रखाया। आदि पुरख प्रभ आदि कार, आपणी आप कराया। ब्रह्माद ना पाए कोई सार, प्रभ आपणा भेव छुपाया। एका नाद अपर अपार, साचा रिहा वजाया। लोकमात हरि साची दाद, साधां सन्तां झोली पाया। सन्त सुहेले विरले लए लाध, जिस जन प्रभ आपणी दया कमाया। एका मेला माधव माध, दूसर कोए ना संग निभाया। घर घर रसना रहे अराध, नैण नेत्र दिस किसे ना आया। खेले खेल आदि जुगादि, जुग जुग भेख वटाया। जोती जोत सरूप हरि, साचा मन्दिर इक्क सुहाया। साचा मन्दिर हरि निरँकार, आपणा आप उपंनया। आप आपणा ल्या उसार, ना कोई छप्पर छन्नया। ना कोई दीसे पहरेदार, ना जनणी जन कोई जणया। ना कोई दीसे सेवादार, सेवक सेवा विच ना मन्नया। ना कोई दीसे गुर पीर अवतार, साध सन्त ना बेड़ा बन्न्हया। आप आपणा कर अकार, आप आपणे अन्दर मन्नया। आपे सुत्ता पैर पसार, आपे खेल खिलंनया। आप आपणी किरपा धार, लोकमात आवे भन्नया। जुग जुग खेले खेल अपार, मनमुख जीवां देवे डन्नया। गुरमुख साचे लए उभार, भरम भुलेखा कढ्ढे जंनया। साचा मेला दर द्वार, जिस जन भाणा हरि हरि मन्नया। मिले मेल हरि मीत मुरार, सांझा यार एका राग सुणाए कन्नया। अमृत आत्म देवे ठण्ढी धार, पंच विकारा देवे डन्नया। सति पुरख निरँजण साची कार, सच सुनेहड़ा एका घल्लया। जोत निरँजण सेवादार, धुर फ़रमाणा अन्तिम मन्नया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, निहकलंक नरायण नर, लक्ख चुरासी देवे डन्नया। सति सरूप हरि आप अनूपा। रूप रंग रेख ना हरि भूपा। अन्ध कूप किसे ना पेखा। वेद शास्त्र ना लिखे लेखा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसया घर, दूसर किसे ना देखा। सति सरूप सति करतारया, सति सतिवाद समाए। आदि पुरख अपरम्पर अपर अपारया, आपणी बणत बणाए। साध सन्त ना पावे सारया, पुरख अबिनाशी अगम्म अथाहे। आपे लाए आपणी कारया, लोकमाती रिहा घलाए। आपणा बख्शे आप प्यारया, चरन कँवल दरसाए। आपणा देवे नाम अधारया, आपणी आवाज़ अलाए। आप वखाए इक्क द्वारया, नैणी नैण खुल्हाए। जोती जोत भेख वटा ल्या, शब्दी

३३१
०६

बणत बणाए। शब्द डंक वजा ल्या, साध सन्त सुणाए। साध सन्त रसना गा ल्या, प्रभ साचा दया कमाए। घर साचा इक्क वसा ल्या, आप आपणी रचन रचाए। बाडी नाल ना कोई रला ल्या, ना कोई मदद कराए। आप आपणा रंग लगा ल्या, रंगण वाला कोई दूसर नज़र ना आए। आप आपणा संग निभा ल्या, संगी साथी होर ना दीसे कोए। आप आपणा पलँघ विछा ल्या, आपे उठे आपे सोए। आपणा आप नीर वहा ल्या, आपे अमृत धारा चोए। आपे दीपक जोत जगा ल्या, आपे रिहा बलोए। आपे अन्ध अन्धेर वखा ल्या, दिस ना आए कोए। आपे सञ्झ सवेर बणा ल्या। आपे पुरीआं लोआं देवे ढोए। आपे चन्द सूरज उपा ल्या, दर दरबाने साचे होए। आपे ब्रह्मा शिव रखा ल्या, तीर निशाना एका लोए। आपे सुरपति इन्द उपा ल्या, करोड़ तेतीसा मुखड़ा धोए। आपे ब्रह्मण्डी खेल रचा ल्या, रूप रंग ना वेखे कोए। आपे ब्रह्मा वर दवा ल्या, दर दरबानी आपे होए। आपे कँवल फुल्ल खिला ल्या, उत्पत आपे होए। आपे त्रैगुण तत्त उपा ल्या, त्रैगुण माया अंग बलोए। आपे ब्रह्मे झोली पा रिहा, आपे धागे रिहा परोए। आपे ब्रह्मा सेवा ला ल्या, पंज तत्त बणाए ढोए। आपे आपणी वंड वंडा ल्या, पंझी प्रकृती नवें नरोए। आपे आपणा सुत उपा ल्या, वेख ना सके कोए। आपे विष्नूं बंसी अख्वा ल्या, आपे जाणे आपणी सोए। आपे शिव शंकर अख्वा ल्या, बाशक तशका गल विच होए। आपे बाशक सेज हंढा ल्या, सांगो पांग खलोए। आप आपणा तेज वधा ल्या, जोती नूरा होए। आप आपणा शब्द उपा ल्या, लक्ख चुरासी विच परोए। आप आपणा राग अला ल्या, राग रागणी ना जाणे कोए। आपे कन्त सुहाग अख्वा ल्या, नारी कन्ता आपे होए। आप आपणी सेज हंढा ल्या, पूत सपूता आपे होए। आपे जीव जन्त उपा रिहा, आपे वेखे त्रै त्रै लोए। आपे साध सन्त बणा ल्या, आपे देवे शब्द रसोए। आपे कन्त सन्त अख्वा रिहा, मीत मुरारा साचा होए। आपे गति मित जणा रिहा, मित गति ना जाणे कोए। आपे वार थित उपा रिहा, दिवस रैण आपे होए। आपे पिता मात आप अख्वा रिहा, भैण भ्राता आपे होए। आपे अनन्द चित समा रिहा, निरगुण हरि हरि बलोए। आपे काया हित उपा रिहा, सरगुण खेल खिलोए। आपे पारब्रह्म अबिनाशी अचुत अख्वा ल्या, आपे विष्नूं वंसी होए। आपे ब्रह्म ब्रह्म समा रिहा, अंसी बंसी आपे होए। आपे पारब्रह्म समा रिहा, सहँस सहिँसी आपे होए। आपे कोटन कोट वखा रिहा, घट घट वेखे आपे होए। आपे छोटन छोट अख्वा रिहा, दूर दुराडा आपे होए। आपे नीकन नीक समा रिहा, आपे जीअ जन होए। आपे रेखन रेख मिटा रिहा, आपे लेखन लेख लिखोए। आपे वेद पुराणां अल्ला रिहा, आपे शब्द जणोए। आपे अनडीठा शब्द चला रिहा, वेख ना सके कोए। आपे मीठा जाम पया रिहा, अमृत धारा सोहे। आपे रंग मजीठ चढ़ा रिहा, कामी धारा आपे होए। आपे कूड़ा रीठ करा

रिहा, आपे भन्न वखाए। लक्ख चुरासी आप उपा रिहा, आपे फाँसी लाए। धर्म राए आप बहा ल्या, चित्रगुप्त संग रलाए। लाड़ी मौत सेवा ला ल्या, काल महांकाल संग निभाए। आपे भगती रूप वटा ल्या, भगतन विच समाए। आपे शक्ती राम अख्वा ल्या, राम रमईआ सर्ब हो जाए। आपे विअकती हरि अख्वा ल्या, नईआ नाम चढ़ाए। मुक्ती जुगती आपे नाम धरा ल्या, आपे लए मिलाए। आपे जोग जुगती जगत बणा ल्या, तपी तपीश्र आपे होए। रिखी रिखीशर इक्क अख्वा ल्या, मुनी मुनीश्र तन रसोए। जगत जगदीश्र आप अख्वा ल्या, निज घर बैठा वेखे सोए। ईश्वर ईश्र नाम धरा ल्या, गुरदेव गुर गुर होए। साध सन्त सेवा ला रिहा, सति सतिवादी सति पुरख निरँजण एका धाम खलोए। ब्रह्मादी बणत बणा ल्या, अबगत आपे होए। लोआं पुरीआं वेख वखा ल्या, त्रैलोकां देवे ढोए। घर चौथा आप सुहा ल्या, पुरख अबिनाशी एका होए, पंचम गीत सुहागी गा ल्या, मेला सहिज सुभाए। छेवें सहिज सहिज अला रिहा, एका हुक्म सुणोए। सत्तवें सतिवाद समा रिहा, सहिज सहिज सुक्ख होए। आप आपणा रंग उपा ल्या, लेखा लिख ना सके कोए। एका एक आप अख्वा ल्या, लक्ख चुरासी प्रगट होए। लक्ख चुरासी मुख छुपा ल्या, गुरमुख विरला जाणे कोए। जिस जन आपणी दया कमा ल्या, साध सन्त जन होए। साध सन्त रंग माणया, प्रभ वेखे तीजा लोए। नेत्र नैण जिस पछाणया, रसना कहिण ना सके कोए। आप आपणे चले भाणया, आदि पुरख आपे होए। आदि शक्ती नाम धरानया, आदिन अन्ता एका होए। सार शब्द गुरमुख विरले दर द्वारे एका माणया, दूसर कहि कहि रहे रोए। सति नाम धुर फ़रमाणया, सोहँ देवे ढोए। अमृत आत्म धार निथाणया, दस्म द्वारी रिहा चोए। पंचम गायण साचा गाणया, अनहद ताल वजोए। हरि का रंग जिस जन पछाणया, हरि रंग आपे होए। पुरख अबिनाश बहु रंग है, रंग राता भेव ना कोए। आपे ढोल आपे मृदंग है, गुरमुख जगाए सोए। जन सन्तां कटे भुक्ख नंग है, नाम वणज कराए देवे सच्चे ढोए। आपे होए अंग संग है, दर द्वारे रिहा खलोए। दरस दान जिस जन ल्या मंग है, प्रभ देवे तीजे लोए। अबिनाश पुरख सदा साचे रंग है, सच रंग ना धोवे कोए। जोती जोत सरूप हरि, भगतन पुच्छे सच घर, कवण घर भगत सुहेला भगवन मेला होए। सुणो सन्तो सच कन्न लाए, कवण घर कवण बनवारी। कवण रंग हरि वटाए, वेखे खेल दस्म द्वारी। कवण कूट फेरा पाए, शब्द सिँघासण कवण महल्ल अटारी। कवण जोती नूर तेज वधाए, कवण रूप हरि मुखड़ा दिखाए, कवण सेज श्रृंगारी। जोती जोत सरूप हरि, भगवन वेखे साचा घर, कवण द्वारे मिल्या वर, पाया पारब्रह्म पुरख अगम्म अपारी। कवण मन्दिर कवण टिकाणा, कवण जोत जगाईआ। कवण शब्द सच बिबाणा, रिहा आप उडाईआ। कवण दर कवण घर हरिजन साचे पाणा। कवण

दरवाजा ग़रीब निवाजा, एका एक खुल्हाईआ। कवण द्वारे हरि साजण साजा, साधां सन्तां रिहा जणाईआ। कवण रक्खे घोड़ा ताजा, कवण सिँघासण आसण लाईआ। कवण रूप हरि मारे आवाजा, साचे भगत देणा रसन अल्हाईआ। कवण चढ़या नाम जहाज़ा, कवण नईआ रिहा चलाईआ। कवण रक्खणहारा लाजा, साचा सैण कवण अख्वाईआ। राम रमईआ आया भाजा, काहना कृष्ना रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, सन्तन मेला सच घर, भगत सुहेले इक्क दर, दर दरवाज़ा बंक रिहा सुहाईआ। सन्तन मेला सच घर, हरि चौथा घर वखंदड़ा। शब्द सरूपी एका दर, एका नाम जिंदड़ा। दिस ना आए नौ दर, हरि ताकी ताक बन्द रखंदड़ा। आप बणाए किला गढ़, गुरमुख विरला सन्त चढ़ंदड़ा। पंच विकारा रिहा लड़, ना पल्ला कोए छुड़ंदड़ा। माया ममता जगत अग्नी रहे सड़, सीतल धार ना कोई वहदंड़ा। जगत विद्या पढ़ पढ़ गए हढ़, हरि रूप ना वेख वखंदड़ा। ना कोई जाणे चोटी जड़, आदि जुगादि हरि अख्वंदड़ा। लक्ख चुरासी भाण्डे घड़, हरि साची वस्त टिकंदड़ा। जोती नूर शब्द धर, पंच रथ चलंदड़ा। त्रैगुण माया अग्गे धर, आपे भार उठंदड़ा। आपे बैठा अन्दर वड़, आपणा मुख छुपंदड़ा। बन्द कराया आपणा दर, ना कोई खोल्ह खुल्हंदड़ा। गुरमुख विरला आए घर, जिस पल्ला नाम फड़ंदड़ा। साचे अन्दर जाणा वड़, साचे घोड़ चढ़ंदड़ा। शब्द सिँघासण उप्पर चढ़, पुरख अबिनाशी इक्क रखंदड़ा। गुरसिख नारी लए वर, कन्ता साची सेज हढंदड़ा। आप सुहाए आपणा दर, एका मेल मिलंदड़ा। ना कोई पुरख ना कोई नारी हरि, जोती जोत जगन्दड़ा। हउँ हउँ तूं तूं जाणे ज़र, आत्मक धन ना साथ रखंदड़ा। शब्दी शब्द ना जाए घर, दूर दुराडा दिसे पारब्रह्म अगम्मड़ा। साध सन्त निन्दया रहे कर, सुण साचे शाहो बेपरवाहो गल पल्ला पा नेत्र नीर वहंदड़ा। पारब्रह्म वेखे थाउँ थाँ, लोकमात आए भेस वटंदड़ा। शब्द सरूपी पकड़े बांह, दूसर किसे ना आप दिसंदड़ा। आप वखाए साचे थाँ, हरि सन्तां मेल करंदड़ा। रूप रंग हरि साचा नाँ, जुग जुग आपणा आप वटंदड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका रूप सति सरूप अलख अलख आप अख्वंदड़ा।

गुर चरन सदा बलिहार, गुरमुख साचा उतरे पार। गुर चरन सदा बलिहार, जन्म मरन दुःख दए निवार। गुर चरन भरम भउ निवार, मानस जन्म दए संवार। गुर चरन ऊँच नीच उधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे पावणहारा सार। गुर चरन साची रास, गुरमुख विरले पाईआ। शब्द वस्त गुर साचे पास, आत्म झोली रिहा भराईआ। हरिजन होए दासी दास, साची गोली रिहा बणाईआ। निज घर आत्म रक्खे वास, पारब्रह्म सरन सरनाईआ। मानस देही

करे रास, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। जिह्वा रसन स्वास स्वास, हरि गुण सहिज सुभाईआ। मिले मेल अबिनाशी अबिनाश, मेलणहारा आप अख्वाईआ। वेख वखाए पृथ्वी आकाश, लोआं पुरीआं खेल खिलाईआ। गुरमुख साचे सद बलि बलि जास, गुर चरन प्रीती इक्क निभाईआ। गुर चरन प्रीती साचा जोग, हरिजन मात कमांयदा। रसना रस साचा भोग, साचा नाम भोगांयदा। दूई द्वैती हउमे कटे रोग, दरस अमोघ करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे सन्त दुलार आपणी सेवा लांयदा। गुरमुख काया मण्डल रास, निर्मल जोत जगाईआ। दीपक जोत करे प्रकाश, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। हरि हरि मेला शाहो शाबाश, साचा धाम सुहाईआ। दो जहानी दासी दास, दास दासी आप अख्वाईआ। लेखे लाए दस दस मास, फंदन फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहार मात वड्याईआ। देवणहार भगत वड्याई, भगतन दर सुहाया। आत्म दर वज्जे वधाई, कीर्तन नाम अल़ाया। आपे सुणे चाँईं चाँईं, दिस किसे ना आया। मंगलाचार थाँईं थाँईं, पंचम सेवा लाया। पंचम मवला एका नाईं, एकँकारा पाया। एकँकारा सच भतारा, गुरमुख नारी लए प्रनाया। गुरमुख नारी कन्त प्यारी, साची सेवा लाया। सोभावन्ती वड संसारी, गुर देवी देव मनाया। पाया पुरख अगम्म अपारी, घर साचे मेल मिलाया। दोहां मेला जै जैकारी, फूलन बरखा लाया। अमृत मेघा झिरे अपारी, सीतल धार वहाया। खेले खेल सच दरबारी, बंक द्वार सुहाया। आपे वेखे उच्च अटल मुनारी, वाहवा मन्दिर सुहणा इक्क बणाया। सन्त सुहेला मीत मुरारी, मुखड़ा रिहा वखाया। गुरमुख ढहि ढहि पए चरन द्वारी, गुर पूरे हउमे हँगता रोग गंवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत जहाज़ बेड़ा बन्ने लाया।

३३५
०६

✻ पहली माघ २०१३ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✻

हरि जोती नूर अपार, साढे तिन्न करोड़ एका धारया। सर्बकल आपे भरपूर, आप अख्वा ल्या। कोटन कोट धारी किरन, आप आपणे रंग छुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि नूरो नूर अख्वाया। एका धार हरि निरँकार साढे तिन्न करोड़, जो जन आप चलाईआ। कोटन कोट जोड़ी जोड़, चारों कुन्ट रिहा विछाईआ। छिन्न भंगर आप रिहा बौहड़, देर ना लाए राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर सुहाईआ। जोती नूर कर उज्यार, एका किरन चमकाईआ। एका किरन विच संसार, लक्ख चुरासी विच समाईआ। लोआं पुरीआं बन्ने धार, अद्ध विच रिहा टिकाईआ। पाताल आकाशां खेल अपार, आर पार रिहा कराईआ। चौदां लोक इक्क अकार, एका किरन

कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रै लोआं वंड वंडाईआ। एका किरन जोत निरँजण, आपणा नाम वंडाईआ। पंज तत्त हरि पाया अंजन, दोहां जोत जगाईआ। आपे होया पड़दे कज्जण, दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका किरन क्रिया कर्म कमाईआ। लक्ख चुरासी जोत निरँजण जगांयदा। हरिजन मेला साचे सज्जण, जिस जन दया कमांयदा। लक्ख चुरासी साचा सज्जण, मन्दिर अन्दर इक्क सुहांयदा। अन्दर बहि बहि मारे आवाजन, सच सितार वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाथ त्रैलोकी बणत बणांयदा। एका किरना नाथ त्रैलोकी, हरि जोती नूर रखांयदा। लक्ख चुरासी देवे झोकी, आपे मार जिवांयदा। आपे होए दाता मोखी, आपे नर्क पवांयदा। आपे चाढ़े घाटी औखी, आपे पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, किरती किरत करांयदा। जोत निरँजण जगत अधार, हरि साचा आप निभाईआ। एका किरना कर त्यार, लक्ख चुरासी विच टिकाईआ। सूरज चन्द ना पायण सार, रवि ससि बैठे मुख छुपाईआ। तारा मण्डल इक्क उज्यार, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। साढे तिन्न करोड़ वाल उप्पर धार, आप लिलाट कढाईआ। पुरख अगम्म अपार, भेव ना जाणे राईआ। गगन गगनंतर खेल अपार, जगत नाथ जगत बणाईआ। अन्तर बणतर ओंकार, अग्नी रूप वटाईआ। अग्न बसन्तर वेख विचार, निर्मल जोत जगाईआ। निर्मल जोती एका धार, आपणी रही बंधाईआ। चारों कुन्ट होए उज्यार, ब्रह्मण्डां राह वखाईआ। ब्रह्मण्ड हरि वेख विचार, दसवां रिहा खुल्ह्राईआ। दसवें खेले खेलणहार, छत्ती छत्ती जोड़ जुड़ाईआ। बहत्तर किरना एका धार, आपे बंध बंधाईआ। नाड़ बहत्तर कर उज्यार, जोती जोत मेल मिलाईआ। आप आपणा कीता बाहर, आपणी दया कमाईआ। चौथे घर बन्न्हे धार, जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। इक्क सौ अठ्ठ कर प्यार, एका मठ्ठ बणाईआ। सचखण्ड तेरी साची धार, हरि साचा तख्त सुहाईआ। निर्मल जोती सीतल ठण्ढी ठार, बिमल बिमल बिगसाईआ। आप कराए आपणी वंड, आपणी कल वरताईआ। सति पुरख निरँजण साचा चन्द, साची जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेलणहार आप अख्वाईआ। सहँस सहँसर किरना जोड़, वट्टी इक्क वटांयदा। आपे आप जाए बौहड़, आपे वेख वखांयदा। आपे रिहा चारों कुन्ट दौड़, आपे फेरा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति पुरख निरँजण नाउँ रखांयदा। सति पुरख निरँजण जोत महाना, इक्क सहँसर जोड़ जुड़ाईआ। सहँसर किरना बद्धा ताणा, तणनहार आप अख्वाईआ। एका आपे होया राजा राणा, साचा तख्त सजाईआ। चले चलाए आपणे भाणा, ना कोई दूसर हुक्म सुणाईआ। आपे होए गुण निधाना, गुणवन्ता आप अख्वाईआ। आपे पहरे आपणा बाणा, आपणा रूप उपाईआ। खेले खेल आप महाना, साचा हट्ट

सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति पुरख निरँजण साचा घर वखाईआ। साचा घर सच महल्ला, हरि साचा आप बणांयदा। सति पुरख वसे इक्क इकल्ला, आदि अन्त रहांयदा। आपणा धाम आपे मल्ला, आपे आसण लांयदा। आपे होए वल छला, आपणा रूप वटांयदा। उप्पर बणाए निहचल नाम अटला, आपणी रचन रचांयदा। कोटन कोट किरना आपे रला, आप आपणा प्रकाश वधांयदा। आप आपणे नाल आपे मिला, विछड़ कदे ना जांयदा। साचा धाम कदे ना हिला, हरि साचा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे आप सुहांयदा। साचा घर उच्च अपार, अगम्म धाम सुहाया। कोटन किरना कर उज्यार, आपणा मुख वखाया। आपे करे आपणी विचार, एका कर्म कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दूजे फेरा पाया। दूजा घर हरि निरँकार, सति पुरख निरँजण नाउँ रखाया। सहँस किरना कर उज्यार, दीपक जोत रिहा जगाया। आप आपणी पाए सार, भेव किसे ना आया। दर दवारिउँ आपे आए बाहर, सचखण्ड डेरा लाया। सचखण्ड हरि जोत अकार, इक्क सौ अट्ठ किरना जोड़ जुड़ाया। आपे बन्ने आपणी धार, धारी धारा ना कोई वखाया। दर द्वार पार किनार, दस्म द्वारी डेरा लाया। दस्म द्वारी जोत निरँकार, छत्ती छत्ती बंध बंधाया। पंचम आवाजां रहे मार, प्रभ चरनां हेठ दबाया। हौली हौली आए बाहर, आपणा राह तकाया। जोत निरँजण कर आकार, मस्तक डेरा लाया। एका किरना हरि पसार, दीपक दीप जगाया। गगन मग्न इक्क अन्नयार, अग्नी अग्न जलाया। पवण पाणी ना कोए धार, सके कदे बुझाया। जोत निरँजण हरि करतार, दिवस रैण सेवा लाया। अट्ठे पहर करे उज्यार, तेल बाती ना कोए पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी वंड वंडाया। वंड वंडाए वंडणहारा, आपणी वंड वंडांयदा। जोत निरँजण एका धारा, लक्ख चुरासी विच टिकांयदा। दस्म द्वारी खेल अपारा, बहत्तर नाड़ां आप बणांयदा। सचखण्ड हरि इक्क अकारा, अट्ठ अठोतरी बंन वखांयदा। सति पुरख निरँजण सहँस, सहँस जोड़ जुड़ांयदा। ऊँचो ऊँच अगम्म अपार, कोटन कोट आप उपांयदा। कोटी कोट आप उपाए, पारब्रह्म अबिनाशी पारब्रह्म प्रभ दया कमाए, सति पुरख निरँजण सचखण्ड वासी। सचखण्ड हरि वेख वखाए, इक्क सौ अट्ठ कराए दासी, दस्म द्वारी मेल मिलाए, बहत्तर मेला हरि गुणतासी। जोत निरँजण चन्न चढ़ाए, आप कराए चरन दासी। पंज तत्त प्रभ रथ चलाए, वेखे खेल पृथ्वी आकाशी। साढे तिन्न करोड़ वंड वंडाई, रोम रोम जोत प्रकाशी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए पुरख अबिनाशी। जोत निराली लट लट, हरि जगांयदा। दरस देवे घट घट, रूप वटांयदा। शब्द पहनाए पट पट, चीर इक्क पहनांयदा। वणज कराए साचे हट्ट, सच वस्त हरि झोली पांयदा। इक्क

वखाए तीर्थ तट्ट, तट्ट किनारे आसण लांयदा। मिले मेल रांझन जट्ट, नाम वंञली इक्क वजांयदा। सुरत सवाली लट पट, सुरती सुरत भवांयदा। इक्क अंगड़ाई कढ्ढे वट्ट, मुखड़ा उप्पर उठांयदा। बिरहों विछोड़ा मारे सट्ट, आलस निन्दरा लांहयदा। झूठा नगर खेड़ा जाए ढठ्ठ, पया राह वखांयदा। अग्नी लाए मट्ठ, पंचम आप जलांयदा। इक्क रखाए हट्ठ, ना कोई मोड़ मुड़ांयदा। मेल मिलाए नठ्ठ नठ्ठ, दिवस रैण पन्ध मुकांयदा। अन्तिम एका सेजा होए इक्ठ, बस्त्र चीर आप पहनांयदा। मस्तक गहणा देवे गड्ड, ना कोई खोल्ह खुल्हांयदा। पहली चेत्र करे इक्ठ, गुरमुख मेल मिलांयदा। मोह विकारा पाए भट्ठ, त्रैगुण माया आपे गेड़े उलटी लट्ठ, गगन कूंआं उलटे मूंह रखांयदा। गुरमुख पंच वखाए एका मुट्ठ, आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त दुलार, पूर्ब कर्म कर विचार, लहिणा देणा मूल चुकांयदा। परखणहारा गुरमुख लाल, हरि साजन साचा मीतड़ा। धुरदरगाही इक्क दलाल, तन वेखे पाटा चीथड़ा। फल वेखे आत्म डाल, जो जन करे चरन प्रीतड़ा। अमृत आत्म वेखे ठण्ढा ताल, हरि सागर सीतल सीतड़ा। हरिजन मारे एका छाल, काग हँस प्रभ कीतड़ा। माया तोड़े जगत जंजाल, आपे परखे नीतड़ा। नेड़ ना आए काल महांकाल, आपे करे पतित पुनीतड़ा। सम्मत चौदां साचा साल, सतिजुग चलाए साची रीतड़ा। आपे चले नाल नाल, गुरमुख बणत बणाए साचे मीतड़ा। दर घर साचे दए वखाल, रसन लाए गोबिन्द नाउँ मीठड़ा। दिवस रैण करे प्रितपाल, काया चाढ़े रंग मजीठड़ा। धर्म द्वार वखाए धर्मसाल, गुर बैठा इक्क अनडीठड़ा। ना शाह ना कदे कंगाल, ना मिट्ठा ना कौड़ा रीठड़ा। सन्त सुहेले जुग जुग भाल, सखा सहाई साचा मीतड़ा। होए बेहाल दीन दयाल, गुरमुख तेरी सेव कमाए सदा खड़्हा रहे बीठड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख मेला इक्क दर, आप आपणा कीतड़ा। इक्क वखाए दर द्वार, जोती नूर उजाला। गुरमुख साचा मीत मुरार, मिले मेल गुर गोपाला। शब्दी देवे शब्द भण्डार, जन भगतां करे सदा प्रितपाला। आवे जावे वारो वार, हरि खेले खेल निराला। नित नवित्त करे पसार, जुग जुग लए अवतारा। कलिजुग वेखे तेरी अन्तिम थिता, प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा। भाग लगाए पहली चेता, जन भगतां देवे नाम हुलारा। पूत सपूता जम्मया जेठा, हरि जोती नूर अपारा। जन भगतां रक्खे साया हेठा, हरि साचा छत्र झुलारा। मेट मिटाए जगत सेठा, गुरमुखां तन भराए धन भण्डारा। आपणे नेत्र आपे पेखा, जीव जन्त ना पाए सारा। लिखणहारा लेखा पुरख अबिनाशी जुग जुग मेट मिटाए औलीआ पीर शेखा, संग मुहम्मद चार यारा। गुरमुख मस्तक लिखे लेखा, आप आपणी किरपा धारा। जोत निरँजण लाए मेखा, आप सुहाए बंक दुआरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण

नर, जन भगतां कराए वणज इक्क वपारा। तुट्टे गढ़ संसार, किला हँकारी तोड़या। छुट्टे तीर अपार, तिक्खी धार किसे ना मौड़या। गुर शब्दी पाए सार, अन्दर बाहर निरगुण सरगुण जोड़ जोड़या। प्रीत अतीती अनीती विच संसार, हस्त कीटी आपे बहुड़या। पतित पुनीती सुण पुकार, शब्द वखाए साचा घोड़या। हरिजन करे अस्वार, धुरगाही आपे बहुड़या। नेत्र नीर रोवण ज़ारो ज़ार, प्रभ आप चढ़ाए आपणे पौड़या। सज्जण सुहेला इक्क इकेला मीत मुरार, धुरदरगाही आया दौड़या। गुर चेला इक्क द्वार, लेखा चुक्के दिवस थोड़िआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला इक्क दर, दर दुआरा एका खोल्ल्या। शब्द भण्डारा गया खुल्ल, हरि साचा आप खुल्लांयदा। कोई ना लाए मात मुल्ल, आपणी हथ्थीं आप वरतांयदा। गुरमुख पूरे तोल जाए तुल, हरि लहिणा झोली पांयदा। जगत माया ना जाए रुल, फुल फुलवाड़ी तन खिलांयदा। आदि पुरख सदा अभुल्ल, भुल्लयां मार्ग पांयदा। सावण बूटा जाए ना हुल्ल, प्रभ साचा फल लगांयदा। भाग लगाए साची कुल, कुलवन्ता आप अख्वांयदा। सद गौंदे रहिण बुल्ल, हरि रसना आप हिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां एका देवे शब्द हुलारा, आप वखाए पार किनारा, नाम हुलारा इक्क वखांयदा।

आदि पुरख अनाद, आपणा आप रखाया। खेले खेल विच ब्रह्माद, किसे दिस ना आया। आपे जाणे आदि जुगादि, जुग जुग वेस वटाया। साध सन्त रहे अराध, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाया। गुरमुख विरले मेला माधव माध, जिस जन आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेख वटाया। आदि पुरख अपार, जोत अकालीआ। जुग जुग बन्ने धार, ब्रह्मा शिव विष्नूं दर सवालीआ। लक्ख चुरासी पसर पसार, दोवें हथ्थां फिरे खालीआ। आपे अन्दर आपे बाहर, गुप्त ज़ाहिर खेल निरालीआ। आपे जाणे आपणी कार, हरि हरि वाली दो जहानीआ। कलिजुग अन्तिम लए उधार, गुरमुख साचे सन्त जनां एका देवे नाम धना, भाग लगाए काया डालीआ। काया मन्दिर पैज संवार, हरि साचे बणत बणाईआ। शब्द सिँघासण कर त्यार, बैठा आसण लाईआ। जोत सरूपी कर उज्यार, दिवस रैण करे रुशनाईआ। पंचम गायण वारो वार, प्रभ साची सेवा लाईआ। नाद अनादा वज्जे ताल, ताल तलवाड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। अमृत आत्म सुहाए ताल, अमृत धारा रिहा वहाईआ। नेड़ ना आए काल महांकाल, कागों हँस बणाईआ। शब्द सरूपी शब्द अकाल, चारों कुन्ट होए सहाईआ। चले चलाए नाल नाल, दिस किसे ना आईआ। सुरत सवाणी हाल बेहाल, गुर शब्दी दर्शन

पाईआ। नाता तुट्टे काया खाल, घर मन्दिर इक्क वखाईआ। आपे चले आपणी चाल, चल्लणहारा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां एका देवे नाम धना, साचा राग सुणाए कन्ना, आप आपणी आवाज सुणाईआ। शब्द सरूपी मारे बोल, एका घर वसंदड़ा। बजर कपाटी कुण्डा खोल्ह, एका राह वखंदड़ा। तोलणहारा साचा तोल, पूरे तोल तुलंदड़ा। आदि अन्त ना जाए डोल, अडोल धाम रहंदड़ा। त्रैगुण माया तत्त विरोल, साची खेल खिलंदड़ा। सुरत शब्द शब्द सुरत जाए मौल, एका दूजा भेव चुकंदड़ा। आपे वसे रंग नवेल, सभ घट आपे वेख वखंदड़ा। आपे गुर आपे चेल, एका रूप वटंदड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेल एका धाम मिलंदड़ा। इक्क सुहाया साचा घर, काग हँस बणाईआ। पुरख अबिनाशी ल्या वर, साचा कन्त साची सेज हंढाईआ। दर दुआरा हरि निरँकारा, एका एक रखाईआ। ना कोई दीसे चार दिवारा, ना कोई छप्पर छाईआ। ना कोई दीसे मीत मुरारा, ना कोई सूरज चन्नया। मिल्या मेल हरि कन्त भतारा, भाण्डा भरम भउ भन्नया। दर मन्दिर सुहाया इक्क दुआरा, धुन आत्मक शब्दी जोती जनणी जनया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख वखाए इक्क घर, आपे घड़या आपे भन्नया। आदि पुरख अपार, हरि रघुराया। सृष्ट सबाई कर पसार, आप आपणा आसण लाया। लक्ख चुरासी

३४० ०६ बन्ने धार, धरत धवल आकाश समाया। शाहो भूप सच्ची सरकार, दर घर साचे डेरा लाया। हर घट जाणे जानणहार, ३४० ०६

आप आपणा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग लहिणा देणा मूल चुकाया। जुग जुग लहिणा जाए चुक्क, हरि साचे जोत जगाईआ। करे खेल मानस देही मनुक्ख, पारब्रह्म भेव ना राईआ। वेख वखाणे मात कुक्ख, दुःख भुक्ख आपणे रंग रंगाईआ। गुरमुख विरले उज्जल मुख, हरि सरन मिली सरनाईआ। मात गर्भ ना उलटा रुक्ख, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। आवण जावण मिटे तृष्ना भुक्ख, पंज तत्त रुत्त सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। चरन कँवल कँवल चरन, इक्क ध्यान रखाईआ। मिले वड्याई उप्पर धवल, धरनी धर होए सहाईआ। नाभी कँवली कँवल फूल समाईआ। हरिजन मिल्या कन्त कन्तूहल, कन्त सन्त आप अख्वाईआ। नाम पंघूड़ा आपणा झूल, दो जहानां रिहा झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दुआरा बंक सुहाईआ। बंक दुआरा सच घर, हरि साचा आप सुहांयदा। हरिजन मेला सच दर, दरबारी आप अख्वांयदा। कलिजुग अन्तिम एका दर, गुरमुख साचे लेख लिखांयदा। आवण जावण चुक्के डर, जन्म मरन फंद कटांयदा। तरनी बतरनी जाए तर, पार किनारा इक्क रखांयदा। सतिगुर सरनी जाए पढ़, सरन सरनाई आप वखांयदा। शब्द सरूपी बांहों

३४१
०६

फड़, आप आपणे घर बहांयदा। लेखा चुक्के सीस धड़, ब्रह्म पारब्रह्म मिलांयदा। आपणा घाड़न आपे घड़, अन्तिम भन्न वखांयदा। जन्मे मरे ना जाए सड़, हरि साचा रूप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग विछड़े मेल मिलांयदा। मेल विछोड़ा जगत प्रभ, आपणे हथ्थ रखाया। आपे जाणे भगती भगत, भगवन्ता रूप वटाया। आत्म जोती खिच्चे शक्त, वेला वक्त आपणे हथ्थ रखाया। लेखे लाए बूंद रक्त, जन जनणी लेखे लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे मेल मिलाया। साचा घर हरि निरँकार, आदि अन्त अडोल्लया। हरिजन मेला इक्क द्वार, चरन प्रीती घोल घुमा रिहा। सजण सुहेल मीत मुरार, साचे तोल आपे तोल्लया। हस्से ना रोवे ज़ारो ज़ार, रसना दन्द ना कदी बोल्लया। जन भगतां करे सद प्यार, सच दुआरा एका खोल्ल्या। खिच्ची जाए वारो वार, आपे नेड़े दूर दिसे कोल्लया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पवण स्वास इक्क कर, अमृत आत्म एका डोल्लया। पवण स्वासी आत्म रास, हरि साची वस्त रखाईआ। दीपक जोत कर प्रकाश, प्रकाश कराईआ। आपे वेखणहारा रास, काया मण्डल मण्डप रिहा सुहाईआ। आपे जाणे पृथ्वी आकाश, आकाश आकाशां विच समाईआ। आप उपाए करे कराए नाश, आप आपणे रंग रंगाईआ। आपे दासी दास, शब्द सुनेहड़ा जगत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसया घर, गुरमुख मिलण दा साचा वेला अन्तिम रिहा तकाईआ। वेला अन्तिम सच घर, घर साचे दए दुहाईआ। कन्ता नारी एका दर, द्वार बंका इक्क सुहाईआ। आवण जावण चुक्कया डर, धर्म राए लेख मुकाईआ। चित्रगुप्त गया हर, लहिणा देणा मूल ना पाईआ। पुरख अबिनाशी मिल्या वर, हरि साचा कन्त हंढाईआ। नहावण नुहाया साचे सर, दुरमति मैल गंवाईआ। जगत तृष्ना गई हर, हरि साची दया कमाईआ। आपे भाण्डे रिहा भर, आपे खाली दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दिवस रैण दरस दिखाईआ।

❊ पहली फग्गण २०१३ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ❊

सतिगुर साचा धन्न है, धुर दी दया कमाए। सतिगुर साचा धन्न है, गुर का शब्द जणाए। सतिगुर साचा धन्न है, पारब्रह्म मिलाए। सतिगुर साचा धन्न है, जन्म जन्म दी मैल गंवाए। सतिगुर साचा धन्न है, जुग जुग विछड़े मेल मिलाए। सतिगुर साचा धन्न है, गुरमुख साचे सन्त जनां बख्शे चरन सरन सच्ची सरनाए। सतिगुर साचा धन्न है, लेख लिखंदा होए सहाए। गुरमुख आत्म जाए मन्न है, एका भरे नाम भण्डारा। दूई द्वैती निकले तन है, शब्द सरूपी करे शृंगारा।

एका राग सुणाए कन्न है, मेट मिटाए धुँदूकारा। पंचां देवणहारा डन्न है, शब्द खण्डा हथ्थ उठाए। देवे नाम सच्चा माल धन है, ठग्ग चोर ना कोई चुराए। लोकमात ना कोई लाए संन्ह है, घर साचे आप टिकाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए तराए। गुरमुख साजन साचा मीतड़ा, घर साचे आप मिलांयदा। काया चोली रंगे चीथड़ा, शब्द डोरी आप बंधांयदा। जुग जुग आपे जाणे आपणी रीतड़ा, भेखाधारी भेख वटांयदा। एका राग सुणाए साचा गीतड़ा, सोहँ एका अक्खर जगत वक्खर आपणा आप चलांयदा। परखणहारा लक्ख चुरासी नीतड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन सुहेला सच घर दर साचा इक्क सुहांयदा। लोआं पुरीआं वेखे मार ध्यान, ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड हर घट वेख वखांयदा। कलिजुग काया देवे दंड, भेख पखण्डा अन्त मुकांयदा। जन भगतां बन्ने पल्ले नाम गंढ, आत्म झोली आप भरांयदा। मनमुखां सुत्ता दे कर कंड, दिस किसे ना आंयदा। जन भगतां सीतल धारा पाए ठण्ढ, अमृत धारा जाम मुख चुआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख वटांयदा। जोती जामा हरि निरँकार, साची जोत जगाईआ। शब्द खण्डा तेज कटार, गुर गोबिन्दे तन छुहाईआ। अन्दर मन्दिर पावे सार, दहि दिशा वेख वखाईआ। डूँघी कन्दर इक्क हुलार, नाम हुलारा रिहा दवाईआ। जोत निरँजण कर आकार, आदि शक्त रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर बैठा साचे आसण लाईआ। दर घर साचा हरि निरँकार, एका एक सुहञ्जणा। शब्द सरूपी तिक्खी धार, जोत जगाए इक्क निरँजणा। साची सिक्खी कर्म विचार, आपे होया दुःख दर्द भय भञ्जणा। मुनी रिखी ना पायण सार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन धूढ़ कराया साचा मजना। चरन धूढ़ सच इशनाना, हरि साचा आप करांयदा। गुरमुखां बन्ने हथ्थीं गाना, एका डोरी नाम लिआंयदा। आपे होए चतुर सुघड़ स्याणा, चोरी चोरी वेख वखांयदा। इक्क झुलाए धर्म निशाना, दर दुआरा आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, नाम दाता आप हो आंयदा। गुर गोबिन्दे मंगी मंग, हरि एका इक्की पांयदा। शब्द घोड़े कसया तंग, साची सिक्खी वेख वखांयदा। कट्टणहारा भुक्ख नंग, तामस तृष्ना मेट मिटांयदा। अमृत आत्म धारा वहाए गंग, निझर झिरना आप झिरांयदा। आप निभाए आपणा संग, संगी साथी आप हो जांयदा। माया ममता ना मारे डंग, पंज विकारा दर दुरकांयदा। काया चोली चाढ़े रंग, नाम मजीठी इक्क चढ़ांयदा। शब्द डोरी गुरमुख पतंग, आकाशन आकाशां विच उडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, गुर गोबिन्दे दित्ता वर, वेले अन्तिम पूर करांयदा। गुर गोबिन्दा सच सलाह, हरि साचे आप दवाईआ। शब्द सरूप बण मलाह, काया भाण्डे विच

समाईआ। धुरदरगाही देवे साचा राह, दे मति रिहा समझाईआ। इक्क जपाए साचा नाँ, नाम निधाना हरि रघुराईआ। हँस बणाए फड़ फड़ काँ, गुरमुखां दया कमाईआ। आपे पिता आपे माँ, पिता पूत आप हो जाईआ। सदा सुहेला देवे ठण्ढी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दो जहानी पकड़े बांह, पार किनारा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका इक्की हरि साचा वेख वखाईआ। साची सिक्खी हरि वेख विचार, हरि साचा वेख वखांयदा। सम्मत तेरां तेरी धार, नानक रूप वटांयदा। दर द्वारे पावे सार, दर दरवाज़ा आप खुलांयदा। जोत सरूपी कर आकार, शब्द धार आप चलांयदा। लोआं पुरीआं पावे सार, ब्रह्मा शिव आप हिलांयदा। करोड़ तेतीसा हाहाकार, सुरपति राजा इन्द कुरलांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी मारे मार, ना कोई किसे बचांयदा। पहली चेत्र दिवस विचार, हरि चेतन्न रूप समांयदा। गुरमुख सुहाए बंक द्वार, नैण नेत्र दरस दिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटांयदा। जोती जामा हरि निरँकारा, आपणा भेख वटाया ए। शब्द रक्खे तिक्खी धारा, लेखा लिखण विच ना आया ए। गोबिन्द रूप अगम्म अपारा, काया गोबिन्द रूप समाया ए। शब्द खण्डा नाम कटारा, जोत निरँजण हथ्थ उठाया ए। लक्ख चुरासी मारी जाए वारो वारा, गुरमुखां दया कमाया ए। जुग जुग लए मात अवतारा, जामा रामा भेख वटाया ए। आपे होए नारी नारा, नारी कन्ता आप अख्वाया ए। आपे होए पतित उधारा, साधां सन्तां विच समाया ए। हरिजन बहाए चरन दुआरा, चरन धूढ़ मस्तक टिक्का लाया ए। जोत सरूपी कर अकारा, ओंकारा देस सुहाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा भेख वटाया ए। जोती जामा हरि अवल्ला, आपणा भेख वटांयदा। आपे वसया इक्क इकल्ला, दिस किसे ना आंयदा। रूप अनूपा जल थला, शाहो भूप डेरा लांयदा। जाणे जणाए निहचल धाम अटला, दूसर कोए भेव ना पांयदा। जोती शब्दी आपे रल्ला, पवण स्वासी सेवा लांयदा। कलिजुग अन्तिम एका हल्ला, प्रभ साचा आप करांयदा। मेला मिले गोबिन्दे डल्ला, साचा मेल मिलांयदा। आप फड़ाए आपणा पल्ला, विछड़ कदे ना जांयदा। दूई द्वैती मेटे सल्ला, हरि साचे रूप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग भेख वटांयदा। कलिजुग काया भेख वटाया, हरि नूरो नूर नुरानीआ। औलीआ पीर शेख़ वेख वखाया, आपे वेखे अञ्जील कुरानीआ। हरि हरि साचा लेखा लेख लिखाया, हरि हरि बणे वेद पुराणीआ। बाशक तशका गल लटकाया, गल माला साची गानीआ। करोड़ तेतीसा सेवा लाया, सुरपति राजा इन्द खेल महानीआ। नौ खण्ड पृथ्वी वेख वखाया, लोकमात हो जाणी जानीआ। सत्तां दीपां वंड वंडाया, एका अक्खर जगत वखाए साची बाणीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप होए जाणी जाणीआ।

जानणहार समरथ, अचरज बणत बणाईआ। गुरमुखां रक्खे दे कर हथ्थ, समरथ हथ्थ वड्याईआ। सगल वसूरे जायण लथ्थ, हरि नेत्र दर्शन पाईआ। एका शब्द अकथना अकथ, लेखा लिखण विच ना आईआ। नौ खण्ड पृथ्वी पावे नत्थ, हरि शब्द डोरी हथ्थ उठाईआ। अन्तिम लेखा चुक्के सीआं साढे तिन्न हथ्थ, कलिजुग काया आप मिटाईआ। गुरमुख चढ़ाए साचे रथ, रथ रथवाही आप हो जाईआ। पंच विकारा पाए नत्थ, हरि पंचम धुन उपजाईआ। सन्त सुहेले साचे चुण, घर साचे मेल मिलाईआ। काया माटी छाण पुण, तन श्रृंगारा इक्क कराईआ। आपे जाणे आपणा गुण, गुणवन्ता हरि रघुराईआ। सर्ब पुकार रिहा सुण, काया मन्दिर अन्दर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका इक्की साची सिक्खी दे मति रिहा समझाईआ। देवे मति पंज तत्त, तत्त रूप समाया। सगल वसूरे जायण लथ्थ, साची सिक्खी दर्शन पाया। पहली चेत्र होए सम्मत चौदां रुत्त सुहाया। हरिजन साचे लए रक्ख, मदिरा मासी दर दुरकाया। कलिजुग काया उडणे कक्ख, कागी काग रिहा कुरलाया। शब्द द्वारे सच इक्ट्ठ, हरि साचा रिहा कराया। हरिजन वेखे नट्ठ नट्ठ, दूर दुराडा डेरा लाया। मण्डल मण्डप जाणा ढठ्ठ, त्रैगुण तेरा तत्त जलाया। लेखा चुक्के अट्ठ सट्ठ, गंगा गोदावरी रहिण ना पाया। कलिजुग माया होए भट्ठ, हरि साचे दर दुरकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए तराया। हरिजन साचे तारनहारा, दयानिध कृपाल। गुरमुख साचे मेलणहारा, भगत वछल दीन दयाल। आत्म धारा रक्खणहारा, फल लगाए काया डाल्हृ। पंच विकारा झस्सणहारा, सर सरोवर आत्म लवाए एका छाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त दुलार आप उठाए आपणे लाल। साचा लाल गुरमुख प्यारा, हरि आपणे रंग रंगांयदा। पंचम मीता खेल न्यारा, अचरज रीता मात चलांयदा। लक्ख चुरासी मात जीता, हार जित्त आपणे हथ्थ रखांयदा। वेखणहारा हस्त कीटा, ऊँचां नीचां वेख वखांयदा। पारब्रह्म हरि बीठल बीठा, आपणा भेव छुपांयदा। शब्द जणाए इक्क अनडीठा, दिस किसे ना आंयदा। मनमुख भन्ने कौड़ा रीठा, अन्तिम भन्न वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे दया कमांयदा। हरिजन साचे चरन द्वार, चरन कँवल चित लाया। मंगे मंग बण भिखार, हरि साचा दया कमाया। लेखा लिखे अपर अपार, छे चेत्र वेख वखाया। सिंघ राम तेरी साची धार, हरि साचा वेखण आया। पुर हुश्यार प्रभ पाए सार, चन्द ज्ञान तराया। अठारां चेत्र विचार, सिँघ करतार सुहाया। उन्नी चेत्र बन्न्हृ धार, ग़रीब निमाणा गले लगाया। आपे बख्शे चरन प्यार, चेतन्न चित रखाया। शब्द सरूपी दे प्यार, नित नित दरस दिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे डेरा लाया। हरि घर साचा सहिज सुख, हरि साची

जोत जगाईआ। गुरमुखां उज्जल कराए मुख, हरि हथ्थ जगत वड्याईआ। आपे कट्टणहारा काया दु:ख, दर द्वार बंक सुहाईआ। सुफल कराए मात कुक्ख, नौ अठारां लेखे लाईआ। जगत तृष्ना मेटे भुक्ख, मेटणहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे सेवा लाईआ। हरिजन साचा सच दुलार, साची सेव कमांयदा। आपे मेले मेलणहार, विछड़ कदे ना जांयदा। कलिजुग अन्तिम लै अवतार, निहकलंका डंक वजांयदा। अनहद शब्द खण्डा तेज कटार, राउ रंकां आप वखांयदा। आपे बन्ने आपणी धार, द्वार बंका इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वासी पुरी घनका दर घर साचा आप सुहांयदा। सतिगुर दाता जगत है, जुग जुग आप अख्वाए। आपे भगती भगत है, भगवन्ता रूप समाए। आपे शक्ती शक्ता शक्त है, साध सन्त रिहा उपाए। आपे नारी कन्ता कन्त है, कन्त कन्तूहल आप हो जाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग भेख वटाए। कलिजुग अन्तिम काया भेखा, अचरज बणत बणाईआ। लक्ख चुरासी लिखणहारा लेखा, जुग जुग लेख लिखाईआ। गुरमुख विरले नेत्र पेखा, आत्म तृप्त कराईआ। आपे होया धारी केसा, आपे वंड वंडाईआ। आपे होए गुर दस्मेसा, गोबिन्द रूप समाईआ। आपे होए नर नरेशा, निरगुण रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सरगुण साची रचन रचाईआ। सरगुण साचा मीत मुरारा, निरगुण रूप वटांयदा। गोबिन्द काया खेल अपारा, साचा मीत अख्वांयदा। नाम कराए जै जै जैकारा, एका नाद वजांयदा। हरिजन साचे पावे सारा, ब्रह्मद खोज खुजांयदा। ब्रह्मा शिव देवत सुर दए हुलारा, नौ खण्ड पृथ्वी आप हिलांयदा। करे कराए करनेहारा, हरि करनी किरत कमांयदा। गुरमुख सोहे चरन दुआरा, गुर चरनी चित लांयदा। आत्म भरे नाम भण्डारा, काया झोली आप भरांयदा। जुग जुग होए आप वरतारा, आप आपणी दया कमांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, निहकलंका डंक वजांयदा। गुर गोबिन्दे कर प्यारा, एका अंक समांयदा। आपे जाणे जानणहारा, काया मन्दिर वेख वखांयदा। मेट मिटाए धुँदूकारा, आकाश प्रकाश वखांयदा। जन भगतां देवे नाम अधारा, जोत निरँजण सेवा लांयदा। शब्द सरूपी कर अकारा, हरि मेली मेल मिलांयदा। भगत वछल आप गिरधारा, घर साचा इक्क सुहांयदा। नौ द्वारे पार किनारा, हरि दसवें बूझ बुझांयदा। पंचम गायण वारो वारा, धुन आत्मक शब्द अलांयदा। अमृत आत्म ठण्ढी ठारा, सर सरोवर मान सुहांयदा। आपे खोल्हे बन्द किवाड़ा, घर साचा वेख वखांयदा। जोत सरूपी साचा लाड़ा, गुरमुख नारी कन्त प्रनांयदा। मनमुख लुट्टी जाए दिन दिहाड़ा, साध सन्त कन्त भगवन्त आपणा मेल मिलांयदा। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, उच्चे टिल्ले पर्बत वेख वखांयदा। धरतमात तेरा इक्क अखाड़ा, हरि साचा रचन रचांयदा। लेखा

३४५
०६

चुक्के सतारां हाढ़ा, सति सतिवादी आप अख्वांयदा। मनमती अग्न लगाए बहत्तर नाड़ा, ना कोई किसे बुझांयदा। लक्ख चुरासी आप चबाए आपणी दाढ़ा, हर घट आपे वेख वखांयदा। त्रैगुण माया तेरी धाड़ा, हरि ब्रह्मे झोली पांयदा। ब्रह्म सोहे बंक दुआरा, ब्रह्म विद्या पूर करांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, घर साचे मेल मिलांयदा। गुरमुख साचा कर त्यारा, दर साचे आप बहांयदा। सोहँ शब्द जै जैकारा, पुरी ब्रह्म आप करांयदा। शिव शंकर वेखे कर विचारा, जगत जगदीसा दया कमांयदा। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, बीस बीसा आप अख्वांयदा। एका शब्द कराए जै जैकारा, चारों कुन्ट दहि दिशा वेख वखांयदा। चार वरन सोहण इक्क दुआरा, ऊँचां नीचां भेव मिटांयदा। राज राजानां करे ख़बरदारा, शाह सुल्तान आप उठांयदा। साधां सन्तां दए हुलारा, काया मन्दिर वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे पार किनारा, आर पार आप हो जांयदा। आर पार हरि निरँकार, एका जोत सुहाईआ। शब्द सरूपी तिक्खी धार, कलिजुग वेख वखाईआ। जोत निरँजण कर आकार, हरि बैठा आसण लाईआ। आदि शक्त पहरेदार, आदि अन्त सेव कमाईआ। साचा कन्त मीत मुरार, हरि शब्दी बणत बणाईआ नाउँ खण्डा तेज कटार, गुर गोबिन्दे तन छुहाईआ। पंचम मीता कर त्यार, साची रीता रिहा चलाईआ। एका इक्की विच संसार, साची सिक्खी रिहा पाईआ। गुर गोबिन्दे मंगे भिक्खी, प्रभ अग्गे बैठा सीस झुकाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी निक्की सिक्खी, हरि साचा रिहा बणाईआ। ना कोई जाणे मुनी रिखी, पंडत पांधे भेव ना राईआ। मस्तक लहिणा साची लेखी, हरि साचे आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दे दित्ता वर, आप आपणी दया कमाईआ। गुर गोबिन्दे वर घर पाया, हरि मिल्या कन्त भतारा। साचा मन्दिर इक्क सुहाया, दिवस रैण जै जै जैकारा। दीपक जोती इक्क जगाया, अट्ठे पहर रहे उज्यारा। वरन गोती भेख वटाया। जो जन सरन सरनाई साची आया। गुरसिख उधारे विच्चों कोटन कोटी, फड़ फड़ बाहों पार कराया। आपे बैठा उप्पर चढ़े चोटी, दस्म द्वारी आसण लाया। शब्द फड़ के हरि साची सोटी, कुण्डा रिहा खड़काया। मनमुख जीआं आत्म खोटी, गुर मन्त्र मूल ना भाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर भेख वटाया। गुर गोबिन्द चरन द्वार, हरि साचे सीस झुकांयदा। साचा मेला अन्तिम वार, जगत जगदीसा आप करांयदा। गुर चेला सोहे इक्क द्वार, हरिजन साचे वेख वखांयदा। साचा मेला प्रभ चरन द्वार, हरिजन साचे वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया वेख घर, घर साचे आसण लांयदा। गोबिन्द काया साचा घड़, हरि साचे आप सुहाया ए। शब्द सरूपी अन्दर वड़, हर घट वेख वखाया ए। ना कोई सीस ना कोई धड़, आदिन अन्ता दिस ना आया ए। कलिजुग

उखेड़े लग्गी जड़, सतिजुग साचा रिहा लगाया ए। सन्त सुहेले साचे फड़, आप आपणा दरस दिखाया ए। जोत जगाए बहत्तर नड़, अज्ञान अन्धेर मिटाया ए। एका अक्खर जाणा पढ़, जगत विद्या मूल चुकाया ए। मोह ममता ना जाए सड़, दे मति रिहा समझाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया घर सुहाया ए। गोबिन्द काया साचा घर, निर्मल जोत अकालीआ। खुल्ह्रा रक्खे सदा सद दर, मंगदे रहिण सवालीआ। आपे देवणहारा वर, आपे करे सर्ब प्रितपालीआ। गुरमुख विरला भाणा रिहा जर, फल लग्गे काया डालीआ। अमृत आत्म नुहाए साचे सर, आप सुहाया साचा तालीआ। साचा मेला हरी हरि, हरि खेले खेल निरालीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जगत अवल्लड़ी चले चालीआ। गुरसिख वड्याई धन्न है, धन्न हरि नामा पाया। गुरसिख वड्याई धन्न है, पूरन कामा आप कराया। गुरसिख वड्याई धन्न है, अन्धेरी शामा रिहा मिटाया। गुरसिख वड्याई धन्न है, पंचम तामा रिहा कराया। गुरसिख वड्याई धन्न है, पल्ले दामा नाम बंन्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हर घट वेख वखाया। गुरमुखां हरि वेखणहारा, जुग जुग वेख वखांयदा। जोत सरूपी लै अवतारा, कलिजुग भेख वटांयदा। शब्द फड़े तेज कटारा, काया गात्रे आप लटकांयदा। आपे होया पहरेदारा, दिसव रैण सेव कमांयदा। आपे गुप्त आपे ज़ाहिरा, अन्दर बाहर खेल खिलांयदा। एका शब्द कराए जै जै जैकारा, हरि साचा डंक वजांयदा। कलिजुग तेरा अन्त किनारा, आपे वेख वखांयदा। सतिजुग साचे बन्न्हे धारा, सति सन्तोख रूप वटांयदा। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, सम्मत चौदां वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे विच समांयदा। हरिजन साचे साची सेवा, हरि एका एक लगाईआ। प्रगट होए देवी देवा, बुध बिबेक कराईआ। अमृत आत्म देवे जिह्वा, रस रसना भोग लगाईआ। हरिजन गाए साची जिह्वा, दरस अमोघ दिखाईआ। कौस्तक मणीआं मस्तक लाए साचा थेवा, जोत लिलाटी रिहा जगाईआ। पारब्रह्म हरि अलख अभेवा, भेव अभेदा आप हो आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अछल अछल्ल बैठा मुख छुपाईआ। अछल अछल्ला हरि निरँकार, साचा खेल खिलांयदा। लेखा चुक्के वेद चार, अन्तिम आप चुकांयदा। खाणी बाणी ख़बरदार, साध सन्त भुलांयदा। अञ्जील कुरानां पैणी मार, ना कोई किसे बचांयदा। पुराण अठारां हाहाकार, हरि आपे वेख वखांयदा। सोहँ शब्द जै जैकार, लोआं पुरीआं आप करांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी बन्न्हे धार, सत्तां दीपां रूप समांयदा। आदि अन्ता एकँकार, एका रंग रंगांयदा। सतिजुग साचा मीत मुरार, हरि सोहँ झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ओअँ दोअँ भेव मिटांयदा। ओअँ दोअँ सोहँ सो, हरि

साची बणत बणाईआ। हरि बिन अवर ना जाणे को, साध सन्त रहे कुरलाईआ। लक्ख चुरासी रही रो, भेव कोए ना पाईआ। गुरमुखां मैल दुरमति लैणी धो, चरन धूढ़ मस्तक रिहा छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग करे अन्त कुड़माईआ। कलिजुग अन्त करे कुड़माई, राए धर्म खुशी मनांयदा। लक्ख चुरासी होए जुदाई, ना कोई मेला मेल मिलांयदा। मस्तक लहिणा झूठी छाई, लिख्या लेख ना कोई मिटांयदा। कलिजुग काया पैणी फाही, हरि साचा आपे पांयदा। लोकमात अन्त होणी जुदाई, जुग चौथे वक्त चुकांयदा। गुरमुखां वेखे थाउँ थाँईं, दर दुआरा बंक सुहांयदा। आप उठाए फड़ फड़ बांही, मीत मुरारा आप हो आंयदा। देवणहारा ठण्ढीआं छाँईं, गीत सुहागी इक्क सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटांयदा। जोती जामा हरि अकाल, अकल कला भरपूरया। जन भगतां मेला दीन दयाल, आसा मनसा पूरया। दो जहानां होए रखवाल, देवे धुन आत्मक साची तूरया। फल लगाए काया डाल, निर्मल जोती जिउँ कोहतूरया। सुरत सवाणी हाल बेहाल, गुर शब्दी साचा सूरया। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल, वड दाता जोधन जोद्धा सूरया। सन्त सुहेले लए भाल, आपे वेखे नेड़े दूरया। एका इक्की विच संसार, हरि पाए हाज़र हज़ूरया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे सति सरूरया। साची सिख्या साची रत्त, हरि सच्चा आप जणांयदा। लेखा चुक्के पंज तत्त, अट्ठां वक्ख करांयदा। बहत्तर नाड़ ना उब्बल रत, तिन्न सौ सट्ठ हाडी फोल फुलांयदा। काया वेखे कलिजुग मट्ठ, जोती अग्नी लम्बू लांयदा। आपे गेड़नहारा उलटी लट्ठ, शिव शम्भू वेख वखांयदा। मूल चुकाए अट्ठ सट्ठ, अट्ठ सट्ठ भेव मिटांयदा। गुर चरन द्वारे जो जन जाए ढठ्ठ, हरि साचा पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे वेख वखांयदा। गुरमुख साचे साचा रंग, हरि चरन कँवल भरवासा। लंगर सेवा सवा पंज, ढाई होए अरदासा। खाली होवण कारू गंज, मायाधारी जगत तमाशा। आपे जाणे सवेर सञ्झ, कलिजुग काया पाए रासा। लक्ख चुरासी नार बंझ, ना कोई देवे मात धरवासा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाए पृथ्वी आकासा। पृथ्वी आकाश, हरि साचा वेख वखांयदा। जन भगतां वसे आस पास, दिवस रैण दरस दिखांयदा। रसना जिह्वा स्वास स्वास, सेवक सेवा साची लांयदा। भगत सुहेला दासन दास, दासी दास आप अख्वांयदा। आदि अन्त ना जाए विनास, आवण जावण खेल रचांयदा। पारब्रह्म पुरख अबिनाश, पतित पावन आप अख्वांयदा। गुरमुखां लेखे लाए दस दस मास, नौ अठारां वक्त चुकांयदा। गुर पूरे सद बलि बलि जास, शब्द जैकारा इक्क करांयदा। गुरमुखां मेला हरि गुणतास, नाम भण्डारा आप भरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत वरतारा आप अख्वांयदा।

सतिगुर सतिवाद है, आदि जुगादि समाए। खेले खेल विच ब्रह्माद है, पारब्रह्म रूप वटाए। नाम वजाए साचा नाद है, चारों कुन्ट रिहा सुणाए। सन्त सुहेले आपे लाध है, जुग जुग विछड़े मेल मिलाए। शब्द जणाए बोध अगाध है, बोध अगाधा आप हो जाए। हरिजन रसना रहे अराध है, रस रसना मुख चवाए। घर मेला माधव माध है, मन इच्छया पूर कराए। धुरदरगाही एका देवे साची दाद है, सतिजुग साची बणत बणाए। पुरीआं लोआं सुणे फरयाद है, दिवस रैण फेरा पाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भेखाधारी भेख वटाए। भेखाधारी भेख भगवन्ता, हरि साचे भेख वटाया। आपे वेखे साधन सन्ता, जीवां जन्तां रिहा जगाया। गुरमुख विरले साचा मेला साचे कन्ता, आत्म सेजा रिहा हंढाया। आप बणाए आपणी बणता, आपणे भाणे विच समाया। खेले खेल आदिन अन्ता, जुग जुग वेस करेंदा आया। किसे हथ्थ ना आए कांशी पंडता, वेद पुराणां सार ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेद व्यासा अंग लगाया। वेद व्यासा शब्द लिखारी, लेखा लेख लिखन्तया। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, प्रगट जोत हरि भगवन्तया। शब्द मारे इक्क उडारी, लोआं पुरीआं वेख वखन्तया। गुरमुख सुहाए बंक द्वारी, बंक द्वारी आप अख्वन्तया। आपे जाए पैज संवारी, हरि साचा पति पतिवन्तया। खेले खेल खेलणहारी, कलिजुग काया काज रचन्तया। लक्ख चुरासी बन्ने धारी, सतिजुग साचा राह वखन्तया। चार वरनां इक्क सिक्दारी, शाहो भूप आप अख्वन्तया। बीस बीसे शब्द उडारी, काया चोला रंग बसन्तया। गुर गोबिन्दा मीत मुरारी, साचा वेला आप सुहन्तया। इक्क अकेला हरि गिरधारी, साची सेवा आप करन्तया। चार वरनां चरन प्यारी, चरन चरनोदक मुख चुअन्तया। आत्म भरे नाम भण्डारी, सोहँ जैकार करन्तया। नवां खण्डां पावे सारी, सत्तां दीपां वेख वखन्तया। ब्रह्मा शिव चरन द्वारी, सुरपति राजा सीस झुकन्तया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, विष्नूं वेस आप अख्वन्तया। हरि विष्नूं विष्न अपार, साची सेवा लाया। जोत सरूपी कर अकार, साचा मन्दिर इक्क सुहाया। शब्द रक्खी तिक्खी धार, माया जन्दर आप तुड़ाया। आप सुहाए बंक द्वार, सच महल्ले डेरा लाया। आत्म सेजा नर निरँकार, एका आसण लाया। जोत सरूपी कर अकार, साचा शब्द रिहा अलाया। अनहद वजाए साची तार, धुन अनादी रिहा सुणाया। गुरमुखां बख्शे चरन प्यार, साची सेवा सेवक रिहा कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचे मेल मिलाया। दर घर साचा सच महल्ला, हरि शब्द होए कुड़माईआ। आपे वसया इक्क इकल्ला, जोती जोड़े जोड़ जुड़ाईआ। वेख वखाणे जल थला, जंगल जूह थाउँ थाँईंआ। सोहँ फड़या हथ्थ विच भल्ला, हरि साचा नाउँ रखाईआ। दूई द्वैती मेटे सल्ला, एका मार्ग लाईआ। पवणी जोती शब्दी आपे रला, त्रैगुण माया तत्त ना राईआ।

आपे फलया आपे फुल्ला, गुरमुख फल फुलवाड़ी मात लगाईआ। मेल मिलाए गोबिन्द डल्ला, वेखणहारा थांउँ थाँईंआ। सच दुआरा गुरमुख विरले मल्ला, आए सरन सच्ची सरनाईआ। इक्क वखाए निहचल धाम अटला, जोती नूर करे रुशनाईआ। शब्द जणाए घड़ी घड़ी पल पल्ला, धुन अनादी रिहा वजाईआ। सच दुआरा हरिजन साचे मल्ला, ब्रह्मादी ब्रह्मण्ड वंड साची आप कराईआ। आपे वेखे जेरज अंडा, उत्भज सेत्ज फोल फुलाईआ। आपे सुत्ता दे कर कंडा, आपे बैठा सन्मुख आसण लाईआ। कलिजुग काया भेख पखण्डा, काली धारा रिहा चलाईआ। जूठ झूठ नार दुहागण रंडा, सच सपूत ना गोद उठाईआ। पुरख अबिनाशी वंडी वंडा, गुरमुखां झोली पाईआ। आत्म अन्तर बन्ने गंढ्ढा, ना कोई खोले खोल खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटाईआ। जोती जामा भगत अधार, भगवन रूप वटांयदा। चरन कँवल जन सच प्यार, साची सेवा आप करांयदा। एका अक्खर जै जै जैकार, जै देवा आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मीत मुरार, साची बणत बणांयदा। हरिसंगत हरि वसया, दिवस रैण प्रभात। दर द्वारे बहि बहि हस्सया, काया मन्दिर वेखे मार झात। कोटन कोट प्रकाश करे रवि सस्सया, मेट मिटाए अन्धेरी रात। जगत विकारा जाए दर तों नस्सया, अमृत आत्म देवे बूंद स्वांत। सगल वसूरा हरिजन लथ्थया, मिल्या मेल कमलापात। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत निभाए सगला साथ। संगी साथी हरि रघुनाथ, आपणे अंक समांयदा। प्रगट हो त्रैलोकी नाथ, एका डंक वजांयदा। होए सहाई अनाथां नाथ, गऊ ग़रीबां गले लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिसंगत हरि द्वार, एका मंगल गाया। प्रभ बख्शे चरन प्यार, हउमे हँगता रोग गंवाया। शब्द पहनाए फूलनहार, साची संगता मेल मिलाया। दूलो दूला वड करतार, साची रंगण रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चिट्टे अस्व तंगण रिहा कसाया। चिट्टे अस्व कसया तंग, सोलां कलीआं आसण लाईआ। सोहँ फड़या हथ्थ मृदंग, चारे कुन्टां रिहा वजाईआ। सच दुआरा बैठा लँघ, दिस किसे ना आईआ। ग़रीब निमाणे लाए अंग, अंगीकार आप हो जाईआ। रोग सोग प्रभ मंगी मंग, आपणी झोली पाईआ। कट्टणहारा भुक्ख नंग, आत्म तृष्ना रिहा मिटाईआ। अमृत आत्म धारा देवे गंग, साचा जाम प्याईआ। इक्क सुणाए सुहागी छन्द, साचा जाप जपाईआ। हरिसंगत कराए खुशी बन्द बन्द, रोग सोग रहिण ना पाईआ। रसन तजाए मदिरा मास गन्द, बत्ती दन्द लेखे लाईआ। सतिजुग साचा चढ़या चन्द, कलिजुग रैण अन्धेरी छाईआ। आपे वेखे पुरी अनन्द, अनन्दपुर धाम सुहाईआ। जीवण दाता हरि बख्शंद, बख्शणहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,

३५०
०६

हरिसंगत रिहा तराईआ। हरिसंगत मेटणहारा दुःख, आपणी झोली आप भरांयदा। सुफल कराए साची कुक्ख, साचा लेखा आप लिखांयदा। उज्जल कराए मात मुख, जो जन रसना गांयदा। मात गर्भ ना उलटा रुख, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। घर घर धूंएँ रहे धुक्ख, गुर गोबिन्द रूप वटांयदा। सन्त सुहेले सुखणा रहे सुख, हरि साचा वेख वखांयदा। मानस देही वेख मनुक्ख, गुर चेले बणत बणांयदा। मनमती जड़् देवे पुट्ट, तिक्खी धारा इक्क लगांयदा। कलिजुग काया भाग गए निखुट्ट, कूड़ कुड़यारा वंड वंडांयदा। पंच विकारा रिहा लुट्ट, साध सन्त ना कोई बचांयदा। तीर निराला रिहा छुट, रसना चिले आप चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे दया कमांयदा। हरिजन साचे दया कमाए, दयावान निध दाता। गुरमुख साचे गले लगाए, पारब्रह्म पुरख ज्ञाता। धर्म कर्म इक्क कराए, एका उत्तम ज़ाता। वरन बरन हरि मेट मिटाए, सति पुरख निरँजण साता। साची सरन इक्क रघुराए, एका नाम सुग़ाता। वेख वखाए थाउँ थाएँ, हरिजन साचे आप पछाता। हँस बणाए फड़ फड़ कांए, सोहँ साची चोग चुगाता। काल महांकाल नेड़ ना आए, चरन कँवल बंधाए नाता। दीन दयाल दया कमाए, हरिजन हरि रंग साचे राता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग मेला साचे घर, घर साचा एका ज़ाता। एका घर सच इकागर, प्रभ साचा वेख वखांयदा। निर्मल वेखे काया गागर, हरि जोती जोत टिकांयदा। सृष्ट सबाई बणे सौदागर, वणज वपारी वणज करांयदा। साची रती नाम रत्नागर, साचे लेखे आपे लांयदा। निर्मल कर्म होए उजागर, जो जन आए दर्शन पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मेला आप मिलांयदा। साचा मेला मिलावण आया, कलिजुग अन्तिम वारीआ। गुर चेला रुत्त सुहावण आया, गोबिन्द खेल न्यारीआ। पंचां प्रपंच मिटावण आया, तन पहनाए शब्द कटारीआ। सवेर सञ्झ इक्क करावण आया, अट्ठे पहर रहे उज्यारीआ। नाम मुहाणा वंञ ल्याया, भव सागर पार उतारीआ। कारू गंज रुढ़ावण आया, कलिजुग तेरी अन्तिम वारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा वक्त सुहाईआ। साचा वेला हरि सुहेला, गुर शब्दी बणत बणाईआ। अचरज खेल हरि हरि खेला, साचे सन्तां रिहा जगाईआ। आपे गुर आपे चेला, अन्दर मन्दिर बैठा आसण लाईआ। गुर गोबिन्दे साचा मेला, पुरख अबिनाशी रिहा कराईआ। जोत निरँजण चाढ़े तेला, पंच सखीआं मंगल गाईआ। आपे वसे इक्क इकेला, एका धाम सुहाईआ। जन भगत वधावे जुग जुग वेला, सच मार्ग जगत लगाईआ। सति पुरख निरँजण सच सुहेला, आपे आप अख्वाईआ। धर्म राए दी कटे जेल्ह, चित्रगुप्त लेख मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग विछड़े मेल मिलाईआ। मेल मिलाए हरि निरँकार, जुगती जोग कमांयदा। चरन प्रीती इक्क

प्यार, धुर संजोगी वेख वखांयदा। नर नरायणा हरि गिरधार, शब्द गहणा तन पहनांयदा। बस्त्र शस्त्र तेज कटार, सोहँ अस्त्र नाल रलांयदा। नीला नीली धारों आया बाहर, दर साचे राह तकांयदा। आपे होया शाह अस्वार, दहि दिशा आप करांयदा। पवण उनन्जा सेवादार, सेवक सेवा साची लांयदा। पहला पौड़ा विच संसार, ब्रह्मण गौड़ा वेख वखांयदा। लम्मा चौड़ा ना कोई जाणे जीव गंवार, जोती जामा भेख वटांयदा। मिठ्ठा कौड़ा परखणहार, कूड़ कुड़यारा वेख वखांयदा। गुरमुखां रक्खे रक्खणहार, दर दुआरा इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे पार करांयदा। हरिजन साचे काया चोली, प्रभ रंगण रंग रंगांयदा। पूरे तोल रिहा तोली तोलणहारा आप अख्वांयदा। मनमुख जीव मारन बोली, गुर मती भेव ना आंयदा। जन भगतां पर्दे रिहा खोल्ही, वा तत्ती दर दुरकांयदा। शब्द जणाए हौली हौली, अनाद अनादी नाद वजांयदा। उलटी करे नाभ कँवली, कँवल नाभ आप उलटांयदा। मिले वड्याई उप्पर धवली, धरत धवल आप सुहांयदा। हरिजन मेला साँवल सँवली, साँवल सुन्दर रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग चौथे वेख वखांयदा। चौथा जुग ऐड़ा अथर्बण, अल्ला रूप वटाया। आपे जाणे अरबण खरबण, सच महल्ला इक्क सुहाया। आपे जाणे नारी मरदन, नारी नारा वेख वखाया। आपे जाणे निर्धन सरधन, सरधन निर्धन वेख वखाया। हरिसंगत कर्म पहाड़ गवर्धन, प्रभ आपणे सीस उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत जगदीश दया कमाया। गुरसिख रोग जगत संताप, प्रभ साचा झोली पांयदा। जुग जुग कराए वड्ड प्रताप, साची डोली आप उठांयदा। आपे होए माई बाप, आप आपणी गोद उठांयदा। लेखा जाणे पुन्न पाप, रैण दिवस वेख वखांयदा। इक्क जपाए अजपा जाप, रसना जिह्वा आप चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिजन साचा सच दुलारा, पुरख अबिनाशी वेख वखांयदा। जन्म कर्म धर्म कराए पार किनारा, मानस देही लेखे लांयदा। शब्द कराए तन श्रृंगारा, तन बस्त्र इक्क सुहांयदा। नाम छुहाए इक्क कटारा, साचे तन लटकांयदा। वेख वखाणे सर्ब संसारा, सृष्ट सबाई वेख वखांयदा। आदि पुरख हरि एकँकारा, एका रूप समांयदा। जोत सरूपी कर अकारा, साचा धाम सुहांयदा। शब्द शब्दी कर प्यारा, एका राग अलांयदा। पवण स्वासी दए हुलारा, हर घट आप समांयदा। जन भगतां बख्शे चरन प्यारा, गुरमति आप जणांयदा। इक्क कराए वणज वपारा, अक्खर वक्खर झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत लेख लिखांयदा। आए दर जन भिखारी, आसा मनसा पूरीआ, मंगण मंग चरन द्वारी, भुक्ख तृष्ना होए दूरीआ। सभ दी पैज रिहा संवारी, हरि साचा हाज़र हज़ूरीआ। आपे बन्न्हणहारा धारी, आपे वसे नेड़े दूरीआ। जिस

३५२
०६

जन बख्शे चरन प्यारी, लेखा चुक्के काया कूड़ीआ। हरिसंगत तन शांत, मन मनुआ बंध बंधाईआ। अमृत देवे बूंद स्वांत, काया ठंडी ठार कराईआ। चरन कँवलां बख्शे साचा नात, धूढ़ी मस्तक रिहा रमाईआ। हरिजन बणाए पारज़ात, फल साचा इक्क खवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग विछड़े मेल मिलाईआ।

❋ २४ फग्गण २०१३ बिक्रमी गुरमुख सिँघ दे गृह पिण्ड भलाई पुर ज़िला अमृतसर ❋

आदि पुरख अकाल दीन दयालया। गुरमुख वेखे साचे लाल, जुग जुग करे प्रितपालया। फल लगाए काया डाल्ह, करे कराए आप रखवाल्या। दीपक जोती मस्तक थाल, अमृत आत्म सर सरोवर दर दरबारे इक्क रखा ल्या। नेड़ ना आए काल महांकाल, जोती अग्नी सेवादार जगत जवाल्या। भाग लगाए काया खाल, काया मन्दिर अन्दर चले नाल नालया। तोड़नहारा जगत जंजाल, इक्क वखाए सच्ची धर्मसालया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए मात दलालया। जगत दलाली आप कर, कलिजुग रचन रचांयदा। भगत रखवाली आप कर, गुरमुख बचन निभांयदा। साचा माली आप बण, फुल फुलवाड़ी मात लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग बणत बणांयदा। जुग जुग बणत बणावणहारा, एका एक एकँकारा। आप आपणा रूप वटावणहारा। लोआं पुरीआं पावे सारा। हरिजन सोए मात जगावणहारा। निर्मल नूर करे उज्यारा। नाद अनादी अनहद ताल वजावणहारा। पंचम लाया सेवादारा। दस्म द्वारी मेल मिलावणहारा, खोल्ह बन्द किवाड़ा। आत्म सेजा इक्क विछावणहारा, मेट मिटाए पंचम धाड़ा। नारी कन्ता सन्ता रुत्त बसन्ता पुरख अबिनाशी आपणे अंक लगावणहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल बहत्तर नाड़ा। आप आपणा मेल मिलाए, गुरमुख साची नारी। साची नारी बंक द्वार सुहाए, प्रभ पाया पुरख अपारी। सईआं मंगल साचा गाए, फूलण बरखा अपर अपारी। पंचम मीता वजाए, मृदंगा सहिज धुन्कारी। आप अपरम्पर बोल सुणाए, छन्द सुहागी राम मुरारी। राग रागणी भेव ना पाए, छत्ती रागां वसे बाहरी। नानक निरगुण रिहा ध्याए, मंगे मंग दर भिखारी। सरगुण जीव भेव ना राए, भुल्ले भरम गंवारी। पुरख अबिनाशी खेल रचाए, वड दाता हरि संसारी। जुग जुग आपणा मेल मिलाए, भगत भगवन्ता जोत अधारी। गुरू चेले आप बणाए, आपे वसया सभ तों बाहरी। सज्जण सुहेल सर्ब अख्वाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी धारी। आपणी धार चलावणहारा, हरि साजण मीत मुरारा। कलिजुग रेख मिटावणहारा, जोती नूर करे उज्यारा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका रूप समावणहारा, खेले खेल अपारी। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखे तेरी अन्तिम वारी। अन्तिम वारी कलिजुग दात, हरि साचा वेख वखांयदा। लोआं पुरीआं वेखे मार झात, लक्ख चुरासी दिस ना आंयदा। जन भगतां देवे साची दात, आत्म ब्रह्म जणांयदा। आपे बैठा इक्क इकांत, सच क्रिया कर्म कमांयदा। जुग जुग बन्ने आपणा नात, कर्म धर्म आपणे हथ्थ रखांयदा। लक्ख चुरासी देवे जरम, आपे मेट मिटांयदा। आप मिटाए वरन बरन, एका सरन जणांयदा। अगम्म अगम्मा धरनी धरन, धरत धवल आकाश समांयदा। आपे होया करनी करन, करन करावणहार आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा अन्तिम मूल, लहिणा देणा मात चुकांयदा। लहिणा देणा अन्तिम वार, हरि साचा आप चुकांयदा। नानक निरगुण करे पुकार, सरगुण झोली पांयदा। गुर चेला इक्क द्वार, साचा चेला आप बणांयदा। शब्द खण्डा तेज कटार, तन गात्रे आप लटकांयदा। नीला नीली छत्तों करे बाहर, कल्गी तेड़ा सीस टिकांयदा। जोती जोड़ा हरि निरँकार, शब्दी डंक वजांयदा। लोआं पुरीआं करे ख़बरदार, ब्रह्मा शिव आप उठांयदा। करोड़ तेतीसा हाहाकार, सुरपति राजा इन्द कुरलांयदा। लोकमात प्रभ रिहा विचार, नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां एका पौड़ा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हांयदा। कलिजुग तेरा अन्तिम रंग, लक्ख चुरासी आप चढ़ंनया। जूठा झूठा बणया संग, माया ममता मोह हँकार आपणा भार बन्न्हया। साध सन्त जीव जन्त होइण नंग, मिले नाम ना कोई धन्न धन्नया। गुर दर मन्दिर अन्दर होवे जंग, ना किसे वसेरा छप्पर छन्नया। लाड़ी मौत वजाए मृदंग, धर्म राए देवे डन्नया। चारों कुन्ट दिसे नंग, संग मुहम्मद चार यार, अन्तिम वेखे होए ख्वार, ना कोई बेड़ा बन्न्हया। ईसा मूसा आई हार, जगत जगदीसा मारे मार, शब्द सरूपी तेज कटार, गुर गोबिन्दा रिहा चलाए वाली हिन्दा ख़बरदार, जो घड़या सो भन्नया। लक्ख चुरासी करे निन्दा, गुरमुख दर घर साची बिन्दा, पारब्रह्म आत्म तोड़े वज्जा जिंदा, आत्म धार वहाए सागर सिन्धा, साचा राग सुणाए कन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा वेख घर, शब्द सरूपी लाए सन्न्हया। कलिजुग तेरा बंक दुआरा, चारों कुन्ट द्वारया। ना कोई जाणे जीव गंवारा, पारब्रह्म प्रभ पावे सारा, दिवस रैण करे विचारया। लोआं पुरीआं मारे मारा, निहकलंक नरायण नर अवतारा, सच धर्म ना कोई विचारा, मिले मेल ना हरि निरंकारया। गुरमुख विरले मेला मेलणहार आप करतारा, जुग जुग मेल मिला रिहा। वेखण आया जगत दुआरा, आप आपणी बणत बणा रिहा। नीला करे चरन निमस्कारा, दिस किसे ना आ रिहा। गोबिन्द काया खेल अपारा, सम्बल नगरी धाम सुहा रिहा। लेखा लिखे दस्म दुआरा, गुर दसवें जोत जगा रिहा। आपे घाड़न घड़नेहारा, आपे मेट मिटा रिहा। साचे पौड़े चढ़नेहारा, सोहँ

पौड़ा इक्क लगा रिहा। अन्दर मन्दिर आपे वड़नेहारा, साचा मन्दिर इक्क सुहा रिहा। गुरमुख साचे फड़नेहारा, दिवस रैण जगा रिहा। लक्ख चुरासी नाल लड़नेहारा, दिस किसे ना आ रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख दर, बेमुखां गूढ़ी नींद सवा रिहा। बेमुख सोए गूढ़ी नींद, कलिजुग आप सवांयदा। कलिजुग तेरी अन्धेरी रात, मात पित ना कोई उठांयदा। रसन विकारा साचा नात, गुर मन्त्र ना कोई जणांयदा। वेले अन्त ना कोई पुच्छे वात, राए धर्म वेख वखांयदा। अन्तिम लहिणा देणा चुक्कणा दिवस रात, नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां उच्चे मन्दिर गुर दर मस्जिद फोल फुलांयदा। लुकया रहिण ना देवे कोई फोल फुलावे चारे कूटां, रसना तीर एका छूटा, ना कोई मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग काया रहिण ना देवे कोई बूटा, आपणी हथ्थीं जड़ पुटांयदा। पंज तत्त तन साज्जया, जगत जुगत अपार। बणत बणाए ग़रीब निवाज्जया, खोल्हे नौ द्वार। मन मति बुध रक्खे लाज्जया, पंचम तत्त कराए प्यार। आपे मारनहारा आवाज्जया, करे कराए ख़बरदार। आप चढ़ाए शब्द घोड़े साचे ताज्जया, आपे होणा पहरेदार। आपे नंगी पैरीं फिरे भाज्जया, गुरमुखां दर द्वार। आपे रक्खणहारा लाज्जया, जुग जुग रिहा पैज संवार। चरन कँवलां एका लागया, सुरत सवाणी होई उज्यार। गुर शब्द दर पंचम देवे आवाज़या, नेत्र नैण दए उग्घाड़। मेल मिलाए राजन राज्जया साचे सच द्वार। आपे पर्दा रिहा काज्जया, आपे खोल्हे बन्द किवाड़। जोती जोत सरूप हरि, जिस जन किरपा देवे कर, साचा मेले साजन साज्जया। गुर गोबिन्द हरि शब्द है, शब्द रूप समाए। क्या कोई करे निन्द है, निन्दक निन्दया मुख़ फिराए। हरिजन आप बणाए साची बिन्द है, जुग जुग आपे रिहा मिलाए। मेट मिटावणहारा सगली चिन्द है, आत्म दरसी दरस दिखाए। जोद्धा सूरा हरि मृगिन्द है, जन भगतां रिहा तरस कमाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे सन्त दुलार दे मति रिहा समझाए। गुर गोबिन्दे बणत बणाई, मिल्या मेल हरि निरंकारया। साध सन्त करे जणाई, शब्द सरूपी वारो वारया। रूप अनूपा आप वटाई, शाहो भूपा आप अख्वा रिहा। सति सरूपा सो धुन उपजाई, आत्म सुन्न तुड़ा रिहा। गुण अवगुण वेख वखाई, पूर्ब लहिणा आप चुका रिहा। सरगुण निरगुण खेल रचाई, रचणहारा आप अख्वा रिहा। काया कोट गढ़ बणाई, निर्मल जोती आप टिका रिहा। सीस धड़ ना वेख वखाई, कल्गी तोड़ा आप लगा रिहा। जोती जोड़ा हरि रघुराई, गुर शब्दी वेख वखा रिहा। इक्की जेठ दए वड्याई, विछड़े फेर मिला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा भगत वर, जगत विद्या मूल चुका रिहा। दानी दाता आप प्रभ, देवणहार दातार। सर्ब ज्ञाता आप प्रभ, भरे शब्द भण्डार। नाता बिधाता आप प्रभ, चरन कँवल

प्यार। पिता माता आप प्रभ, पूत सपूता करे प्यार। अन्ध अन्धेर आप प्रभ, नूरो नूर होए उज्यार। हर घट पसारा आप प्रभ, आपे वसया सभ तों बाहर। तीर्थ तट्ट किनारा आप प्रभ, आपे ढाहे लए उसार। साचा हट्ट वणजारा आप प्रभ, आपे वणज करे वपार। खेले खेल बाजीगर नट आप प्रभ, स्वांगी स्वांग करे वरतार। आपे गेड़नहारा उलटी लट्ठ आप प्रभ, जुग जुग मात लए अवतार। लक्ख चुरासी करे भट्ठ आप प्रभ, गुरमुख साचे लए उभार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख वेखे आत्म घर, पहली चेत्र दिवस विचार। आत्म घर सच अस्थान, हरि साचे आप सुहाया। आपे जाणे जाणी जाण, दूसर कोए भेव ना राया। पंचम बहि बहि सारे गाण, ताल तलवाड़ा रिहा वजाया। पवण पवणी सेव कमाण, ताल सुहावा रिहा सुहाया। चारे कुन्टां वेख वखान, दहि दिशा फेरा पाया। काया मन्दिर अन्दर सच मकान, हरि मन्दिर आप सुहाया। दर दरवाज़े दर दरबान, हरि साचा आप अख्वाया। अट्ठे पहर निगाहबान, सेवक सेवा रिहा कमाया। गुरमुखां वेखे मार ध्यान, साची कूट फोल फुलाया। निशअक्खर वक्खर सारे गाण, रसना रसक रस ना आया। आपे होए मेहरवान, जन भगतां लए जगाया। धुरदरगाही देवे इक्क निशान, आप आपणा नाउँ जपाया। कलिजुग अन्तिम मेट मिटान, सतिजुग साचा दए झुलाया। सोहँ सो ब्रह्म ज्ञान, धुर फरमाण रहे जणाया। तीर निराला वज्जे बाण, बजर कपाटी पार कराया। पंचां करे पुण छाण, पंचम मेल मिलाया। एका देवे नाम बिबाण, हरिजन साचे लए चढ़ाया। पहली चेत्र कर पछाण, भाण्डे काचे दए भन्नाया। साचा मन्दिर उच्च महान, दस्म द्वारी दए वखाया। आत्म सेजा इक्क महान, शब्द रंगीला पलँघ विछाया। जोत सरूपी हरि भगवान, आपे बैठ डगमगाया। गुरमुख नारी बाल नादान, साचा पल्लू नाम फड़ाया। आप रखाए चरन ध्यान, साचा मार्ग इक्क रखाया। साचा मेला मेल मिलान, घर साचे मेल मिलाया। दर घर पाया शब्द जवान, ना मरे ना जाया। नारी कन्ता एका थान, एका रंग रंगाया। सईआं मंगल साचा गाण, पंचम राग अलाया। विछड़ कदे ना जाण, साचा मेला मेल मिलाया। दस्म द्वारी भूमिका अस्थान, हरि साचे शाहो सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख नुहाए साचे सर, चरन धूढ़ इक्क इशनान कराया। चरन धूढ़ सच इशनाना, जुग जुग आप करांयदा। आत्म देवे ब्रह्म ज्ञाना, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ांयदा। सोहँ मारे तीर निशाना, दूई द्वैती मेट मिटांयदा। हथ्थीं बन्ने गाना, शरअ शरायती वेख वखांयदा। राग सुणाए एका गाणा, सुन्न मुन्न तुड़ांयदा। आपणी कराए आप पछाणा, गुरमुख चुण चुण आप जगांयदा। दर द्वारे देवे माणा, हउमे हँगता रोग मिटांयदा। चरन प्रीती सच ध्याना, अट्ठ सट्ठ डेरा ढांयदा। अन्तिम वेला वेद पुराणां, अञ्जील कुरानां वक्त चुकांयदा। राग छतीसा गायण गाणा, गोबिन्द रूप वटांयदा। खाणी

बाणी होए हैराना, सागर सिन्ध वहांयदा। धर्म झुलाए इक्क निशाना, रंग सत रंगांयदा। लिखे लेख आप महाना, अक्खर वक्खर वेख वखांयदा। प्रगट होए वाली दो जहानां, रोड़ी सथ्थर चरन छुहांयदा। मुहम्मद मुहम्मदी मेल मिलाना, चार यारां भेव खुल्हांयदा। हथ्थीं मैहन्दी मौली गाना, नीला चोला तन छुहांयदा। अमाम मैहन्दी सच सुल्तानां, ख़ैबर पार करांयदा। ऐली शाह होए हैराना, मक्का काअबा वेख वखांयदा। चरन लगाए शाह अरबाना, इराक इराना डेरा ढांयदा। मुख नकाब इक्क रखाना, नेत्र नैण छुपांयदा। सोहँ मारे तीर निशाना, पीरन पीर मिटांयदा। दस्तगीर होए हैराना, हकीर शाह फकीर फड़ांयदा। आपे होए बेपछाना, बेऐब परवरदिगार अख्वांयदा। महिबान बीदो रहिमान रहिमाना, रहिमत रसूल ना कोई जणांयदा। अल्ला राणी वेखे मार ध्याना, हज्ज कबूल ना कोई करांयदा। पंचम रोवण जगत शैताना, धीरज धीरज ना कोई धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सुहाए इक्क दर, दर दरबाना आप अख्वांयदा। अल्ला राणी तन श्रृंगार, कलिजुग अन्त श्रृंगारया। मनमति नाल हँकार, करे इक्क प्यारया। संग मुहम्मद चार यार, ईसा मूसा वेख विचारया। कलिजुग होया पहरेदार, आप उठाए करे ख़बरदारया। धरतमात रही विचार, घर साचे करे पुकारया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, कलिजुग रैण होई अंध्यारया। जूठा झूठा पसर पसार, ना कोई दीसे सच द्वारया। पीर फ़कीरां आई हार, अहिनल हक्क ना कोई विचारया। मुल्ला शेख़ काज़ी रोवण धाहां मार, अल्ला हू हू एका नारया। पीर दस्तगीर सुत्ते पैर पसार, तूं तूं मनों विसारया। चुक्कया ना जाए मैथों भार, लक्ख चुरासी जीव गंवारया। प्रगट हो विच संसार, नानक गोबिन्द लेख लिखा रिहा। शब्द खण्डा तेज़ कटार, आप आपणा लए संवारया। ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड पायण सार, उत्भज सेत्ज पार किनार, नार दुहागण दीसे रंड, लक्ख चुरासी सन्त कन्त ना कोई हंढा रिहा। कूड़ कुड़यारा भेख पखण्ड, घर घर बैठा कर पसारया। निहकलंका तेरी वंड, साचा लेखा आप लिखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, पहली चेत्र नौ खण्ड पृथ्वी वेखे खेत्र, लेखा आपणे हथ्थ रखा रिहा। ना कोई जाणे धारी केसा, मूंड मुंडाए दिस ना आंयदा। कलिजुग तेरा अन्तिम वेसा, नर नरेशा आप करांयदा। मेल मिलाया दस दस्मेशा, दहि दिशा वेख वखांयदा। भेव ना पायण ब्रह्मा शिव गणेशा, दर दरवेशा सीस झुकांयदा। जोत सरूपी हरि प्रवेशा, आप आपणी कल वरतांयदा। दो जहानां नर नरेशा, सृष्ट सबाई मूल चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे भगती वर, दे मति पंज तत्त आप समझांयदा।

✻ २४ फग्गण २०१३ बिक्रमी डा० पाल सिँघ दे गृह पिण्ड भलाई पुर ज़िला अमृतसर ✻

धन पाया नाम सन्तोख, गुर पूरे चरन द्वारया। जगत मिटे तृष्ना भुक्ख, मिले नाम अधारया। सुफल कराए मात कुक्ख, आवण जावण पार करा रिहा। अन्तिम वेला अन्तिम मोख, नर हरि आपणी गोद उठा रिहा। मेट मिटाए हरख सोग, अठ्ठे पहर एका रंग रंगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा मेल मिला रिहा। मिल्या मेल हरि निरँकार, घर साचे वज्जे वधाईआ। सोहँ डंक अपर अपार, दिवस रैण रिहा वजाईआ। सुणे सुणाए सुणनेहार, जीवां जन्तां दिस ना आईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार, पंज तत्त मिटाईआ। शब्द खण्डा तेज कटार, तन गात्रे आप लटकाईआ। पंचम सोहणा कर शृंगार, शस्त्र बस्त्र इक्क सजाईआ। साचे घोड़े कर अस्वार, चौथे पौड़े आप चढ़ाईआ। जगत विच्चोला हरि दातार, आपणा मेल मिलाईआ। ऊँचो नीच नीचो ऊँच खेल अपार, जुग जुग रिहा कराईआ। रवीदासा दरस भिखार, दरसी दरस दिखाईआ। बाल्मीक तेरा कर्ज उतार, राम रामा रूप वटाईआ। कलिजुग मेला विच संसार, गुर चेला जोड़ जुड़ाईआ। अचरज खेला अपर अपार, सज्जण सुहेला सद अख्वाईआ। फड़ फड़ बाहों लाए पार, साचे बेड़े रिहा चढ़ाईआ। आपे बणया सेवादार, सेवक सेवा रिहा कमाईआ। शब्द अधारी इक्क अहार, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। मेल मिलाए निन्दक दुष्ट दुराचार, पंचम तन्द बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका सुणाए सुहागी छन्द, सोहँ ढोला सच्चा बोला रसना हरिजन गाईआ।

✻ पहली चेत्र २०१४ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल शब्द दी किरपा कीती, इक्की दिन तक्क इकी इक्की परिवार इक्ठे होए अते सभ दा सांझा लंगर चलाया गया अते सवा पंज रुपए ✻

	नाम	पिण्ड	डाकखाना	ज़िला
१.	दलीप सिँघ	गग्गोबूआ	ख़ास	अमृतसर
२.	मनी राम	सिध्धम	खालड़ा	अमृतसर
३.	इन्द्र सिँघ	बंडाला	ख़ास	अमृतसर
४.	मसा सिँघ	नौरंगाबाद	ख़ास	अमृतसर

५.	गुरदयाल सिँघ	रामू वाला	ख़ास	फिरोज़पुर
६.	राम सिँघ	मकान नं० ३८६	ग्वाल टोली	फिरोज़पुर
७.	नाज़र सिँघ	नाथे वाला	लंझे वाली	फिरोज़पुर
८.	निरँजण सिँघ	लुध्याणा	ख़ास	लुध्याणा
६.	बद्धा सिँघ	नत्तां	सान्हेवाल	लुध्याणा
१०.	हरबंस सिँघ	अजनौध	दोराहा	लुध्याणा
११.	जगीर सिँघ	रंगील पुर	रोपड़	अम्बाला
१२.	ज्ञान चन्द	मिरजापुर	कोटलानौध सिँघ	हुशयापुर
१३.	सरूप सिँघ	मुध	ख़ास	जलन्धर
१४.	बिशन सिँघ	नूरपुर	ख़ास	जलन्धर
१५.	गुरमुख सिँघ	भलाईपुर डोगरा	ख़ास	अमृतसर
१६.	बंता सिँघ	पंज गराईआं	ख़ास	गुरदासपुर
१७.	अजीत सिँघ	बटाला	बटाला	गुरदासपुर
१८.	करतार सिँघ	भूमली	ख़ास	गुरदासपुर
१६.	गिरधारा सिँघ	बलोवाल	राम दिवाली	अमृतसर
२०.	बख्शीश सिँघ	कादराबाद	रसयालका	अमृतसर
२१.	महाराज पूरन सिँघ जी	जेठूवाल	ख़ास	अमृतसर

३५६ ०६

३५६ ०६

✲ पहली चेत २०१४ बिक्रमी सवेर दे समें शब्द दी रहिमत कीती
हरिभगत द्वार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✲

हरि का नाउँ अपार है, समरथ कल वरताईआ। हरि का नाउँ अपार है, अकथ कथा कहाईआ। हरि का नाउँ अपार है, साची वथा इक्क वखाईआ। हरि का नाउँ अपार है, लक्ख चुरासी पाए नत्था, दिस किसे ना आईआ। हरि

का नाउँ अपार है, सगल वसूरा जिस जन लथ्था, जो जन रसना गाईआ। हरि का नाउँ अपार है, मस्तक लहिणा लेख साचे मथ्था, जोत निरजंण आप जगाईआ। हरि का नाउँ अपार है, दो जहानी साचा रथा, जन भगतां पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग वटाईआ। हरि का नाउँ अपार, हरि समाया। हरि का नाउँ अधार, जीव जन्तां रिहा तराया। हरि का नाउँ अपार, हरिजन साचे आप प्यार कराया। हरि का नाउँ जैकार, जै जैकारा इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, आपे वेखे वेख वखाया। हरि का नाउँ अपार, लेख अमोल्लया। हरि का नाउँ अपार, पूरा तोल किसे ना तोल्लया। हरि का नाउँ अपार, आदि अन्त कदे ना डोल्लया। हरि का नाउँ अपार, साध सन्त जीव जन्त भण्डारा खोल्ल्या। हरि का नाउँ अपार, सचखण्ड बणाए गोल्लया। हरि का नाउँ अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल कला सोल्लया। हरि का नाउँ अपार, जोग जगत है। हरि का नाउँ अपार, हरिजन साची भगत है। हरि का नाउँ अपार, सच दुआरा एका मुक्त है। हरि का नाउँ अपार, पार कराए निन्दक दुष्ट है। हरि का नाउँ अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी सार। हरि का नाउँ अपार, जगत दलालया। हरि का नाउँ अपार, गुरमुख विरले रसना गा ल्या। हरि का नाउँ अपार, एका एक सच धन मालया। हरि का नाउँ अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे चले अवल्लड़ी चालया। हरि का नाउँ अपार, रंग मजीठया। हरि का नाउँ अपार, नेत्र नैण किसे ना डीठया। हरि का नाउँ अपार, मिट्ठे करे कराए रीठया। हरि का नाउँ अपार, गुरमुख विरले लैण रसना साचा मीठया। हरि का नाउँ अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी करे परीख्या। हरि का नाउँ अपार, दो जहानया। हरि का नाउँ अपार, मेल भगवानया। हरि का नाउँ अपार, गुरमुख साचे सन्त जगानया। हरि का नाउँ अपार, ना कोई जाणे जीव निधानया। हरि का नाउँ अपार, आदि अन्त ना होए पुराणया। हरि का नाउँ अपार, नेत्र नैण ना कोई वखानया। हरि का नाउँ अपार, रसना जिह्वा हरिजन गा ल्या। हरि का नाउँ अपार, तिक्खा तीर बाण निरालया। हरि का नाउँ अपार, शब्द चीर तन पहनानया। हरि का नाउँ अपार, शब्द सीर मुख चुआनया। हरि का नाउँ अपार, कट्टणहारा भुक्ख नंग, मेट मिटाए पंज शैतानया। हरि का नाउँ अपार, एका रंग रंगाए भेव चुकाए शाह सुल्तानया। हरि का नाउँ अपार, आदि जुगादी संग निभाए सगला साथ निभानया। हरि का नाउँ अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणे भाणया। हरि का नाउँ अपार, राग अनादया। हरि का नाउँ अपार, खेले खेल विच ब्रहमादया। हरि का नाउँ अपार, धुरदरगाही

साची दादया। हरि का नाउँ अपार, गुरमुख विरले मात लाध्या। हरि का नाउँ अपार, भेव अभेदा बोध अगाध्या। हरि का नाउँ अपार, गुरमुख विरले रसन अराध्या। हरि का नाउँ अपार, दो जहान सुणे फरयादया। हरि का नाउँ अपार, जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, चरन नाता एका बाध्या। हरि का नाम अपार, सति सतिवन्त है। हरि का नाम अपार, पूरन भगवन्त है। हरि का नाम अपार, अधार जीव जन्त है। हरि का नाम अपार, प्यार साध सन्त है। हरि का नाम अपार, एका धार एका कन्त है। हरि का नाम अपार, जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, रक्खणहारा पति पतिवन्त है। हरि का नाउँ अपार, जुगो जुग अतीतया। हरि का नाउँ अपार, ठांढा सीतया। हरि का नाउँ अपार, परखणहारा नीतया। दिवस रैण करे विचार, हरि का नाउँ अपार, जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, आपे वेखे हस्त कीटयां। हरि का नाउँ अपार, हरि हरि गाया। भेव अभेदा विच संसार, दिस किसे ना आया। अछल अछेदा दाता दातार, चार वेदां सेवा लाया। पुराण अठारां रहे पुकार, हथ्थ किसे ना आया। खाणी बाणी करे विचार, चारे कुन्टां वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ छुपाया। हरि का नाम अपार, दिस ना आंयदा। अञ्जील कुरान रहे पुकार, परवरदिगार मुख छुपांयदा। कलिजुग काला हो त्यार, तेरा तेरे विच समांयदा। भेखाधारी हरि निरँकार, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। नानक गोबिन्द लाए कार, सेवक सेवा सच करांयदा। मंगण आए दर दरबार, एका भिच्छया झोली पांयदा। लोकमात रहिणा ख़बरदार, आत्म इच्छया पूर करांयदा। शब्द विचोला मीत मुरार, साचा हिस्सा आप वंडांयदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका कार, एका रूप समांयदा। दूर दुराडा सांझा यार, मेल विछोड़ा आप करांयदा। नानक ढहि पया द्वार, गोबिन्द गोबिन्द गांयदा। पारब्रह्म प्रभ पुरख अपार, सति पुरखा रूप वटांयदा। आदि अन्त एकँकार, एका रंग समांयदा। नानक बैठा दर भिखार, भीखक भिच्छया एका नाउँ पांयदा। मस्तक लेखा अपर अपार, आपणा आप लिखांयदा। इक्क कराया वणज वपार, आप आपणी बणत बणांयदा। आपे वसणा सभ तों बाहर, साची सरन तकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी बणत बणांयदा। एका नाउँ अपार, नानक दर भिखारया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, सुहाए बंक द्वारया। निर्मल जोती कर अकार, वज्जे शब्द धुन जैकारया। साची सोटी हथ्थ दातार, लै के आए पार किनारया। उप्पर चोटी दस्म द्वार, साचा मार्ग इक्क रखा ल्या। कोटन कोटी गए हार, साध सन्त भेव ना पा ल्या। कबीर लंगोटी बोटी कर प्यार, अतुट अतोटी मेल मिला रिहा। नानक जोती इक्क अपार, हरि जोती खेल खिला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जागरत जोत जगा रिहा। हरि का नाउँ

अपार, नूर निरालया। गोबिन्द साची धार, गोबिन्द विच समा ल्या। सरगुण मेल अपार, निरगुण वेख वखा ल्या। नानक निर्धन पावे सार, सरधन हरि सुल्तानया। सति सन्तोखी धर्म जैकार, एका राह वखा ल्या। ना कोई जाणे आर पार, जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, आपणा धाम सुहा ल्या। हरि का नाउँ अपार, साचे धाम सुहांयदा। नानक नामा वणज वपार, एका एक करांयदा। साचा मेला मीत मुरार, गुर चेला रूप वटांयदा। इक्क इकेला हरि निरँकार, पंचम सुहेला आप अख्वांयदा। अमृत आत्म साची धार, साचा मेघ बरसांयदा। आपे वसया सभ तों बाहर, आप आपणा रूप छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग रंगांयदा। आप आपणा रंग रंगाए, पारब्रह्म बेअन्त बेअन्ता। हरिजन साचा साची मंग मंगाए, मेल मिलाए साचे कन्ता। एका नाउँ शब्द मृदंग वजाए, जुग जुग सुणाए साध सन्ता। हरिजन साचे अंग लगाए, लोकमात बणाए साची बणता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर द्वार इक्क सुहंता। हरि का नाउँ अपार, शब्द अमोल्लया। जुग जुग बन्ने धार, साचा तोलण आपे तोल्लया। लोकमात लए अवतार, अक्खर वक्खर आपे बोल्लया। साधां सन्तां पावे सार, वेख वखाए काया चोल्लया। वरन बरन कर्म विचार, ऊँचां नीचां रिहा विरोल्लया। सतिजुग साचे कर प्यार, सति फुलवाड़ी आपे मौलया। त्रेता तीआ उतरे पार, राम रामा घोल घोल्लया। द्वापर तेरी तिक्खी धार, काहना किशना खेले होल्लया। कलिजुग काला रिहा पुकार, जूठ झूठ बूहा खोल्ल्या। धरतमात रोवे धाहां मार, पेट आपणा आपे फोल्लया। पूत सपूता होया गंवार, लक्ख चुरासी बणया गोल्लया। माया ममता मोह हँकार, जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, अन्तिम तोले पूरा तोल्लया। कलिजुग काया साचा रंग, आत्म इक्क चढ़ाया। पंज तत्त वज्जे मृदंग, मति बुध फिरे हलकाया। मनमति रलाए साचा संग, चारों कुन्ट डंक वजाया। हउमे हँगता धारा गंग, साधां सन्तां नीर वहाया। मानस देही होई भंग, राम रामा मनों भुलाया। काया माटी काची वंग, जूठ झुठ तन श्रृंगार कराया। मात पित भाई भैण साक सज्जण सैण कोई ना जाए संग, कूड़ कुड़यारा मोह चुकाया। सम्मत तेरां रिहा लँघ, नानक दोए जोड़ बैठा सीस झुकाया। दर द्वारे मंगी मंग, प्रभ अबिनाशी दया कमाया। साचा नाउँ सदा संग, सच वस्तू इक्क रखाया। शब्द घोड़े प्रभ कसे तंग, जोत निरँजण सेवा लाया। पंच वजाए इक्क मृदंग, सोहँ डौरू हथ्थ फड़ाया। लोआं पुरीआं वेखे पार लँघ, ब्रह्मा शिव देवत सुर बैठे सीस झुकाया। मातलोक साढे तिन्न हथ्थ पारब्रह्म तेरा इक्क पलँघ, कलिजुग अन्तिम सेज विछाया। लक्ख चुरासी होणा नंग, कोए ना पर्दा पाया। माया राणी मारे डंग, डस डसणी रूप वटाया। गुरमुखां मंगी एका मंग, गोबिन्द नानक नाल रलाया। कलिजुग तेरा मुक्कणा पन्ध, दोए कर्मा रिहा उठाया। सतिजुग

साचा लाया अंग, गुरमुख साचे लए जगाया। अमृत आत्म धारा निज बरखे गंग, आप आपणी सेवा लाया। दो जहानां निभाए साचा संग, विछड़ कदे ना जाया। गुरमुख साचे नौ द्वारे आए लँघ, नेत्र दर्शन साचा पाया। शब्द रंगीली सेज इक्क पलँघ, दस्म द्वारी आप विछाया। पंचम वजायण सच मृदंग, पंचम आपणा साथ निभाया। आपे बैठा अद्ध विच टंग, जोत निरँजण राह रिहा वखाया। सुरत सवाणी हीर स्सयाली झंग, सोहँ रांझा गुरमुख प्रेम धारा नाम चरन सेवा साची वंझली रिहा वजाया। आप लगाए आपणे अंग, कट्टणहारा भुक्ख नंग, जुग जुग भेख वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक पूर करया वर, तेरां तेरां तोल तुलाया। तेरां तेरां तोल तुलावणहारा, पारब्रह्म बेअन्ता। साचा बोल बोलणहारा, जुगा जुग जुगन्ता। शब्द भण्डारा खोल्हणहारा, आदि पुरख आदिन अन्ता। सच जैकारा बोलणहारा, आप सुणाए साधन सन्ता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे मेले गुर गुर चेले, आपे नारी आपे कन्ता। गुर चेला नारी कन्त समांयदा। दर द्वारे साचा मेला, साची बणत बणांयदा। कलिजुग तेरा वक्त सुहेला, गुरमुख सोए मात उठांयदा। आप चढ़ाए साचा तेला, जोत निरँजण सेवा लांयदा। आपणा खेल आपे खेला, भेव कोए ना पांयदा। नानक गोबिन्द इक्क इकेला, गोबिन्द हरि ध्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत तेरां तेरा प्यार, त्रैगुण माया करे विचार, पंज तत्त रोवे धाहां मार, ना कोए मूल चुकांयदा। सम्मत तेरां अन्तिम बीता, सतिगुर दया कमाईआ। आप चलाए आपणी रीता, धुर दी एह वड्याईआ। ना कोई देहुरा गुरुदुआरा मन्दिर मसीता, प्रभ चरन सरन सरन चरन सच्ची सरनाईआ। ना कोई हस्त ना कोई कीटा, ऊँच नीच राउ रंक शाह सुल्तान एका रंग रंगाईआ। नाम जणाए जुगो जुग अनडीठा, अनडिठ्ठी वस्त हरि झोली पाईआ। गुर शब्द गुर लागा मीठा, अमृत आत्म फल खवाईआ। मनमती जीव जूठा झूठा पीसण पीसा, वेले अन्तिम होए जुदाईआ। कलिजुग काया कौड़ा रीठा, प्रभ साचा भन्न वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा जोत समाईआ। जोत समाया जोती जामा, जुगत जगत ना आईआ। आपे जाणे आपणा कामा, भगत भुगत रिहा बणाईआ। लक्ख चुरासी करे एका तामा, आदि शक्त एका कल वरताईआ। कलिजुग मिटे रैण अन्धेरी शामा, सतिजुग साचा चन्न चढ़ाईआ। सम्मत चौदां वज्जे नाम दमामा, सोहँ जै जै जैकार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली चेत्र सवा पंज तेरा बैठा राह तकाईआ।

३६३
०६

❊ पहली चेत २०१४ बिक्रमी सवेरे सवा पंज वजे विहार होया हरिभगत द्वार जेठूवाल ❊

सवा पंज पहली चेत, वीह सौ चौदां बिक्रमी चन्द चढ़ाया। गुरमुखां वेखे काया खेत, आप आपणा अन्दर बन्द कराया। प्रगट होए नेतन नेत, सोहँ रिहा चन्द चढ़ाया। भाग लगाए महीना जेठ, पंचम मेल मिलाया। रक्खणहारा साया हेठ, सेवक सेवक सेवक आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग लहिणा मूल चुकाया। सवा पंज चेत्र चित, एका थित वखाईआ। जन भगतां मेला नित नवित्त, निज घर रूप समाईआ। करनहारा सच्चा हित, भेखाधारी भेख वटाईआ। आपे होया मात पित, पिता पूत सुखदाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, अकल कला अख्वाईआ। आप आपणा ल्या जित्त, काया भेंट चढ़ाईआ। चौदां वेख वखाई थित, चौदां लोकां रिहा हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग वटाईआ। ठाकर सेवक अबिनाश, सेवा आप कमांयदा। गुरमुखां होया दासी दास, चरन धूढ़ी मस्तक लांयदा। मेल मिलाए पृथ्वी आकाश, विछड़ कदे ना जांयदा। पंचम पावे साची रास, हरि पंचम भेंट चढ़ांयदा। निज घर साचे करे वास, सच सुनेहड़ा इक्क सुणांयदा। खेले खेल घनकपुर वास, सम्मत सम्मती वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी होणी नास, हरिसंगत आप तरांयदा। लहिणा देणा दस दस मास, जुग जुग आप चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सेवक सेवा सच कमांयदा। सेवक सेवा करनेहारा, पारब्रह्म करतारा। ना जन्मे ना मरनेहारा, आदि अन्त एका एकँकारा। आपणी करनी करनेहारा, जुग जुग लए मात अवतारा। जन भगतां लड़ फड़नेहारा, देवे नाम सहारा। काया मन्दिर अन्दर साचे पौड़े चढ़नेहारा, सोहँ शब्द कराए जै जैकारा। कलिजुग माया सड़नेहारा, पंचम तत्त ना किया प्यारा। आपणा घाड़न आपे घड़नेहारा, जोती जोत किया उज्यारा। शब्द खण्डा हथ्थ फड़नेहारा, गुरमुखां होए पहरेदारा। पुरीआं लोआं लड़नेहारा, एका मार अगम्मी मारा। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, आप सुहाया बंक दुआरा। हरि सेवक करतार, सेव कमाईआ। आपे बणया भेख भिखार, आपे लेख लिखाईआ। मातलोक प्रभ कर विचार, पहली चेत्र रुत्त सुहाईआ। सम्मत चौदां ख़बरदार, हरि आपे रिहा कराईआ। गुरमुख मेला एका वार, एका रंग चढ़ाईआ। आप आपणी पावे सार, हरि बैठा मुख छुपाईआ। जन भगतां दुरमति मैल दए उतार, आपणा पर्दा आपे लाहीआ। तेरां साल ना पाई सार, बैठा मुख छुपाईआ। नानक तेरा लहिणा देण कर्ज़ उतार, सम्मत तेरां पूर कराईआ। नाम सति पार किनार, सच पुरखा आपणी झोली पाईआ। ना कोई जाणे आर पार, वंञ मुहाणा रिहा चढ़ाईआ। गोबिन्द मेला इक्क द्वार, दर दुआरा रिहा खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे अंक लगाईआ। सेवा

सतिगुर साख्यात, करन करावण आया। गुरमुख बणाए पारज़ात, धूढ़ी मस्तक लाया। मेट मिटाए अन्धेरी रात, चौदस चौदां चन्न चढ़ाया। ना कोई पुच्छे ज़ात पात, ऊँचो नीच नीचो ऊँच कराया। सखा सहाई पिता मात, नाम घोड़ी रिहा बिठाया। साचा मेला कमलापात, आप आपणा रिहा कराया। धुरदरगाही देवे दात, कलिजुग अन्तिम लै के आया। अन्तिम लहिणा देण दिवस सात, सति पुरखा रिहा जणाया। पंचम सिक्खां बणी बरात, हरि साचा विच सुहाया। नाम अनमुल्लड़ा देवे दात, सुरत सवाणी नाल प्रनाया। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, सेवक सेवादार अखवाया। सेवक सेवा करन जोग, जुग जुग करदा आया। पंचम रस लैणा भोग, पंचम रिहा सुणाया। मिल्या मेल धुर संजोग, जुग जुग लेख लिखदा आया। दूई द्वैती मिटे तृष्ना रोग, मस्तक मेख रिहा लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग समाया। साल बवंजा काया कूड़, कूड़े रंग रंगाईआ। भरम भुलाए मूर्ख मूढ़, गुरमुख मेल मिलाईआ। सम्मत तेरां बख्शे चरन धूढ़, तेरां तेरां रिहा तुलाईआ। सम्मत चौदां चाढ़े रंग गूढ़, पहली चेत्र वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटाईआ। उठ शेर सिँघ दलेर, लई मात अंगड़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी लैणी घेर, सोहँ खण्डा हथ्थ उठाईआ। पंचम जेठ ना लाउँणी देर, हाढ़ सतारां राह तकाईआ। कलिजुग मेला अन्तिम एका वेर, लख चुरासी दए दुहाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी छेड़ां छेड़, साचा छेड़ू आप अख्वाईआ। अन्तिम लहिणा देण निबेड़, लहिणा देणा मूल चुकाईआ। गुरमुखां वसे नगर खेड़, काया इक्क सुहाईआ। जुग जुग जाणे आपणा गेड़, थित्त रुत्त वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वसया दूर नेड़, दिस किसे ना आईआ। सिँघ शेर शब्द बहादर, खण्डा नाम उठांयदा। सोहँ करे जगत उजागर, ब्रह्मण्डां खोज खुजांयदा। गुरमुखां मेला काया गागर, निर्मल नीर मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पहली चेत्र खुशी मनांयदा। पहली चेत्र धन्न सुभागा, लोकमात कलि आया। सतिगुर पूरा आपे जागा, आपणी कल वरताया। गुरमुखां मेल चरन धूढ़ साचे माघा, हरि हरि नाम जपाया। फड़ फड़ बणाए हँस कागा, एका रूप समाया। जुग जुग धोवे काला दाग़ा, सहिँसा रोग मिटाया। जगत बुझाए तृष्ना आगा, दर दर फेरा पाया। धन्न धन्न गुरसिख सरन सरनाई लागा, प्रभ सेवक सेवादार अख्वाया। दीपक जोती जगे चिरागा, अन्ध अन्धेर मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा पर्दा लाहया। आप आपणा मुख वखाए, अकल कला भरपूरा। जन भगतां तृष्ना भुक्ख मिटाए, उतरे सगल वसूरा। आत्म एका सुख उपजाए, सेवा लाए अनहद तूरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सुघड़ चतुर बणाए मूर्ख मूढ़ा। गुरमुख पंज प्यारया, गुर सतिगुर

आप जगाया। कलिजुग माया पड़दा उतारया, प्रतक्ख रूप वटाया। लेखे लग्गे चरन छुहाया दाड़िआ, अलख अलख अलख जगाया। धन्न धन्न धन्न सुभाग सतारां हाड़या, देश देशां रिहा सुणाया। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटाया। देस प्रदेसा सति उपदेस, आपणा आप जणाईआ। दाता जोद्धा नर नरेश, निरगुण हरि रघुराईआ। सरगुण साजण विच प्रवेश, गोबिन्द रिहा धराईआ। दर द्वारे ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, दर दरवेश बैठे सीस झुकाईआ। आपे जाणे बाशक सेज, सांगोपांग हंढाईआ। वेखणहारा धारी केस, मूंड मुंडाया फोल फुलाईआ। करे कराए अवल्लड़ा वेस, ब्राह्मण शूद्र वैश भेव ना राईआ। वरन बरन ना चले पेश, मुल्ला काजी पांधे ग्रन्थी देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, कल आपणी आप वरताईआ। आपणी कल आप वरताए, एका एकँकारा। जल थल मईअल आप समाए, वेख वखाए डूँघी गारा। ऊँच नीच नीच ऊँच एका रंगण रंग रंगाए, सत्त रंग वेखे पार किनारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कुन्ट चार कराए जै जै जैकारा। सत्त रंग निशान, प्रभ आपणा आप चढ़ांयदा। आपे होया निगाहबान, सृष्ट सबाई वेख वखांयदा। पकड़ उठाए राज राजान, शाह सुल्तान आप हिलांयदा। इक्क रखाए साची आण, शब्द जणाई आप जणांयदा। अन्तिम तुट्टे जगत माण, हँकार विकार मिटांयदा। धर्मी धर्म झुलाए इक्क निशान, निहकरमी कर्म कमांयदा। ऊँच नीच राउ रंक रंक राजान, चरन धाम इक्क वखांयदा। गीत सुहागी सोहँ गाण, साचा मार्ग लांयदा। सो पुरख निरँजण देवे इक्क ज्ञान, हँ हँगता मेट मिटांयदा। चतुर्भुज श्री भगवान, देवत सुर सुणांयदा। ब्रह्मा शिव करे पछाण, दूर नेड़े वेख वखांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क ज्ञान, साची गीता नाम पढ़ांयदा। खाणी बाणी वेद पुराण, सोहँ रीता आप चलांयदा। अञ्जील कुरानां तुट्टे माण, चीता चित आप वसांयदा। आप झुलाए सच निशान, मीतन मीता आप अख्वांयदा। गुरमुखां बख्शे चरन प्यार, सरन सरनाई इक्क जणांयदा। आपे गोपी आपे काहन, कृष्ना रूप वटांयदा। राम रामा करे पछाण, गुरमुख काया सुत्या सुरती आपे आप प्रनांयदा। कलिजुग अन्तिम अकाल मूर्ति, आदि शक्त आदि पुरख जोत निरँजण सेवा लांयदा। जन भगतां बख्शे चरन धूढ़ती, सो सेवक सेव कमांयदा। काया चोली रंग गूढ़ती, रंग गुलाला आप चढ़ांयदा। मेट मिटाए पसारा कूड़ कूड़ती, सोहँ ढोला इक्क सुणांयदा। गुरमुखां आसा मनसा पूरती, अनहद बोला इक्क जणांयदा। वसया नेड़े दूर दूरती, आप आपणा पड़दा लहंदा। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त दुलार, आप आपणी किरपा धार, जुग जुग विछड़े मेल मिलांयदा। सत्त रंग निशाना सति सतिवाद, प्रभ चरनां हेठ रखांयदा। आपे जाणे आदि जुगादि, ब्रह्माद वेख वखांयदा। उच्चा कूक वजाए नाद, राग रागणी भेव ना पांयदा।

३६६
०६

गुरमुख साचे सन्त सुहेले साजन साध, सति पुरखां मेल मिलांयदा। मेल मिलावा माधव माध, मोहणी रूप वटांयदा। सुणे सुणाए हरि फरयाद, दहि दिशा वेख वखांयदा। सम्मत चौदां रक्खणा याद, पहली चेत्र वक्त सुहांयदा। धुन आत्म वज्जे साचा नाद, जो जन चरन ध्यान रखांयदा। सतिगुर पूरा ल्या लाध, पंज तत्त ना कोई रखांयदा। लेखा चुक्के सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथ, काया अग्नी भेंट चढ़ांयदा। गुरमुखां धूढ़ी मस्तक माथ, जोती नूर आप टिकांयदा। सर्बकला आपे सर्ब रूप, अनूपा सति सरूपा शाहो भूपा आपणा भेख वटांयदा। शब्द चलाए अकथना अकथ, लिख लिख लेखा ना कोई समझांयदा। मेल मिलाए जिउँ रामा दसराथ, रावण दुष्टां मार मुकांयदा। काहना कंसा त्रैलोकी नाथ, नाथ अनाथां आप बचांयदा। पारब्रह्म प्रभ सगला साथ, कलिजुग अन्त निभांयदा। सगल वसूरे जाणे लाथ, जो जन दर्शन पांयदा। अमृत आत्म धार मारे ठाठ, इक्क उछाल लगांयदा। लहिणा देणा चुक्के तीर्थ अट्ठ साठ, गंगा गोदावरी मूल चुकांयदा। गुरसिख साची पूजा एका पाठ, सोहँ नाम रखांयदा। वेख वखाणे तत्त आठ, बुध सुरती मन रलांयदा। विरले हरिजन रहे हट्ठ, मन मती तोड़ तुड़ांयदा। कलिजुग अन्तिम गिढ़नी उलटी लट्ठ, चौदां चौदां वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, साची सेवा आप कमांयदा। सेवक सेवा हरि बलकारा, आपणे रंग रंगाईआ। सत्तां दीपां पहरेदारा, मुख आपणा रिहा वखाईआ। लुकया रिहा अन्ध अन्धयारा, उप्पर पड़दा पाईआ। जोती नूर होए चमत्कारा, चारों कुन्ट करे रुशनाईआ। सोहँ शब्द कराए जै जै जैकारा, एका नाअरा लाईआ। कलिजुग तेरा पार किनारा, हरि साची नींह रखाईआ। गुरमुखां मेला इक्क दुआरा, सुरत शब्द दरसाईआ। भरया रहे शब्द भण्डारा, साढे तिन्न हथ्थ सीस झुकाईआ। दो जहानां मीत मुरारा, एका एक अख्वाईआ। जुग जुग पावणहारा सारा, जीव जन्त भेव ना राईआ। काया मन्दिर सच गुरुदुआरा, चार दुआरा ना कोई बणाईआ। जोती नूर कर उज्यारा, पलँघ रंगीला हरि बैठा आसण लाईआ। हरि मिल्या मेल पुरख अपारा, उच्चा मन्दिर इक्क चुबारा, अटल महल्ल नाउँ रखाईआ। सति पुरख निरँजण तेरी धारा, आवे जावे खेल रचाईआ। कूक पुकारे वारो वारा, शब्द शब्दी दए जणाईआ। जोती नूर हरि निरँकारा, आप आपणे रंग समाईआ। सति पुरख चरन बलिहारा, सति सरूप समाईआ। इक्क इकल्ला एकँकारा, अकल कला अख्वाईआ। जुग जुग मात लए अवतारा, सतिजुग त्रेता पार कराईआ। जुग त्रेता प्रभ पावे सारा, सोलां कल वखाईआ। कलिजुग अन्तिम वेख विचारा, लोकमात करे लड़ाईआ। नाउँ रखाया हरि गिरधारा, सिँघ शेर कहे लोकाईआ। मनी सिँघ दर बण भिखारा, उच्चा कूके दए दुहाईआ। निहकलंका लए अवतारा, अमाम मैहन्दी मुख छुपाईआ। राम कृष्ना हरि अवतारा, एका रंग समाईआ। नानक बणया दर भिखारा, गोबिन्द रसना गाईआ। संग

३६७
०६

मुहम्मद चार यारा, लेखा रिहा चुकाईआ। ईसा मूसा मीत मुरारा, आपणा मेल मिलाईआ। धरत मात दी सुण पुकारा, प्रगट होवे हरि रघुराईआ। गऊ ग़रीबां पावे सारा, दिवस रैण होए सहाईआ। राज राजानां करे ख़बरदारा, शाह सुल्तानां बणत बणाईआ। शब्द खण्डा तेज कटारा, एका आपणे हथ्थ उठाईआ। दिस ना आए विच संसारा, ना कोई भेव जणाईआ। माया पड़दा पाया भारा, आप आपणा रिहा मुख छुपाईआ। प्रगट होए नर अवतारा, पंचां मेल मिलाईआ। पंचां मिल मिल किया ख़बरदारा, गुर पूरे सेवा लाईआ। उठ शेर सिँघ सरदारा, गुरमुख आत्म दए दुहाईआ। चारों कुन्ट हाहाकारा, ताअने मारे जगत लुकाईआ। ढहि ढहि पए चरन दुआरा, बाहों फड़ लए उठाईआ। पंज प्यारे कर त्यारा, प्रभ पंचां रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा अंक रखाईआ। पंचां एका मता पकाया, एका दर द्वारया। रंग सत्तां हरि निशान वखाया, सोहँ लेख लिखा रिहा। दे मतां आप समझाया, तुट्टा माण मोह लोभ तन हंकारया। धीरज यता आप रखाया, आत्म तृष्ना भुक्ख निवारया। चरन प्रीती नाता आप बंधाया, दो जहानां मेल मिला रिहा। आत्म वत्ता बीज बिजाया, सोहँ आप खिलारया। कमलापता आप अख्वाया, सेवक सेवा साची ला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत ज्वाला इक्क अकाला पंचम तेल चढ़ा रिहा। पंचम सिक्खां पंच प्रधाना, पंचम रूप वटाया। पंचम बन्न्हया गुर पूरे हथ्थीं गाना, गुर पूरा सेवा लाया। उठया शेर सिँघ निधाना, दिस किसे ना आया। फड़या तीर इक्क निशाना, रसना चिल्ले आप चढ़ाया। आपे मारे मुगल पठाणा, हिन्द हिन्दवाणी दए हिलाया। खेले खेल दो जहानां, पंज शैताना रिहा जगाया। सर्ब जीआं प्रभ जाणी जाणा, जानणहार आप अख्वाया। गुरमुख विरले मात पछाणा, जिस जन आपणी दया कमाया। दर द्वारे देवे माणा, माण अभिमान मिटाया। आवण जावण चुक्के काणा, काल महांकाल नेड़ ना आया। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी जोत धर, आप आपणा रिहा जणाया। सत्त रंग निशाना साची धार, आपणी आप चलांयदा। प्रगट होए नर निरँकार, नर निरँकार रूप वटांयदा। पंज तत्त ना कोई अकार, मन मति बुध ना कोई रखांयदा। शब्द शब्दी इक्क प्यार, एका धार वहांयदा। गुर मन्त्र दए चरन प्यार, सो पुरख निरँजण दया कमांयदा। तन बुझाए लग्गी बसन्तर, मोह माया आप चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, तन विकारा मेट मिटांयदा। कलिजुग छाया धूआँधार, चार कुन्ट रैण अन्धेरीआ। भारत खण्डी जगत सरकार, हरि पावे साचा फेरया। अन्तिम तज्जणा सर्ब घर बाहर, बीस बीसा ना लाए देरया। साचा सज्जण भबीखण यार, लहिणा देणा मेरी तेरया। कलिजुग बैठा अद्ध विचकार, त्रैगुण माया घुंमण घेरीआ। कवण लँघाए अन्तिम पार, उलटे चक्र देवे गेड़या। मुख प्रमुख राज दरबार, सच सुल्तान ना दिसे खेड़या। लाड़ी

मौत विछोड़े कूंजा डार, लहिणा देणा जगत निबेड़या। शाह सुल्तानां होणा हुश्यार, सम्मत चौदां छेड़े छेड़या। नौ जेठ मिलणा इक्क वार, अन्तिम ढहि ढहि होए ढेरया। लिख्या लेख दिल्ली दरबार, आप लिखावे सिँघ शेर दलेरया। मंगो मंग बण भिखार, गुर चेला चेला गुर एका वेरया। पारब्रह्म प्रभ पावे सार, कर कर आपणी मिहरया। दीप जम्बु अद्ध विचकार, प्रभ चरन छुहाए ना लाए देरया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर कलिजुग अन्तिम वेरया।

✻ पहली चेत २०१४ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल विच्चों
राष्ट्रपती राजिन्दर प्रसाद नूं शब्द भेज्जया गया ✻

वाली हिन्द जगत राजान, उठ जाग प्रभ साचा आप जगांयदा। जूठ झूठ माया जगत दुकान, कलिजुग आप चलांयदा। लहिणा देणा पीण खाण, नाम निधान इक्क वखांयदा। सत्त रंग वेखणा इक्क निशान, दे मति आप समझांयदा। पंचम ताज मुख महान, सहिज सुक्ख समांयदा। पंचम मीता पंच निशान, सोहँ लेख लिखांयदा। सोटी चोटी वड बलवान, खण्डां ब्रह्मण्डां नाउँ वखांयदा। चरन जोड़ा चरन ध्यान, कँवल कँवला आप रखांयदा। शब्द घोड़ा इक्क बलवान, धुरदरगाही आप दुड़ांयदा। रसना चिल्ला तीर कमान, सोहँ आप उठांयदा। मारे जोद्धे सूर बली बलवान, राज राजानां मेट मिटांयदा। त्रै देशां वेखे इक्क मकान, धरत मात लेख लिखांयदा। धरत मात मंगे साचा दान, हरि साचा झोली पांयदा। दो गज दुपट्टा लाल निशान, सिँघ दर्शन आप रंगांयदा। कलिजुग खेल बाजीगर नट, हरि साचा आप खिलांयदा। लहिणा देणा चुक्कया तीर्थ तट्ट, अट्ठ सट्ठ मूल ना सुहांयदा। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई ना कोई दीसे जट्ट, जोती लट्ट लट ना कोई जगांयदा। राज मन्त्री कोई ना लाहा रिहा खट्ट, स्यासत विरासत ना कोए बणांयदा। शब्द नगारे वज्जे सट्ट, हरि साचा आप लगांयदा। पंचम जेठ होए इक्ट्ठ, डौरू डंका इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर द्वारे देवे वर, शंका रोग मिटांयदा। दर द्वारे आए लेख, चौदां भेव खुल्हांयदा। पंडत पांधे रहे वेख, भेव कोई ना पांयदा। औलीआ पीर मुल्ला शेख़, पीर दस्तगीर सर्ब मिटांयदा। आप बणाए जगत रेख, अन्तिम मेट मिटांयदा। जोती जामा धरया भेख, निहकलंका नाउँ रखांयदा। आपे होया धारी केस, मूंड मुंडाए आप हो जांयदा। नेत्र लोचन दर्शन पेख, भुल्ल भुल्ल भुल्ल क्यों वक्त गंवांयदा। कोए ना लावे मस्तक मेख, ना कोए मूल चुकांयदा। कलिजुग काया लैणी वेख, हरि अग्नी तत्त जलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, दे मति आप समझांयदा। देवे

३६८
०६

मति जगत निरँजण, उठ शाह निधानया। प्रगट होया हरि साचा सज्जण, देवे धुर फ़रमाणया। चरन धूढ़ी एका मजन, रक्खे लाज दो जहानया। काल नगारे सिर ते वज्जण, सम्मत चौदां होए प्रधानया। जो घड़या सो अन्तिम भज्जण, भन्नणहार श्री भगवानया। कोए ना दिसे पड़दे कज्जण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे वर धुर फ़रमानया। शब्द लेख हरि द्वार, हरि आपणा आप घलाईआ। उत्तर मंगणा एका वार, प्रभ देवे भेव खुल्हाईआ। सम्मत चौदां करे ख़बरदार, सोया कोए रहिण ना पाईआ। दे मति समझावे मीत मुरार, कलिजुग रावण करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सोया रिहा मात उठाईआ। उठ नादान जीव अल्पग, सरबग्ग हथ्थ वड्याईआ। कलिजुग माया अग्गनी अग्ग, चारों कुन्ट रही जलाईआ। सरन सरनाई साची लग्ग, दर दुआरा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रै देशां वेख वखाईआ। त्रै देशां देस देसन्तरा, हरि साचा आप जणांयदा। आप लगाए जगत बसन्तरा, ना कोई मात बुझांयदा। महिंमा जगत गणत अगणतरा, ना कोई गणत गणांयदा। ध्यानी ध्यान लगा लगा बैठे साध सन्त, कन्त सन्त वेख वखांयदा। भरमे भुल्ले जीव जन्त, ना कोई बणत बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तत्त मति इक्क वखांयदा। राज इन्द्र इन्द्र प्रसाद, चेत्र चित विचारना। साल बसाला सुणे फरयाद, लेख लिख्या इक्क विचारना। बणत बणाए आदि जुगादि, आपे ढाहे आप उसारना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा लिखे दर द्वारना। लिख्या लेख शब्द अनमोल, अनमुल्लड़ा लाल अख्वाईआ। त्रै देशां होवे मात घोल, हरि खुल्हड़ा लेख लिखाईआ। मर्द मृदंगा वजाए ढोल, साचा बोला अल्हाईआ। अस्सू पंज कीता कौल, प्रभ पूरा पूर कराईआ। सम्मत तेरां तोल्लया तोल, अधूरा रहिण ना पाईआ। सम्मत चौदां पड़दा खोल्ह, शब्द लेखा रिहा लिखाईआ। ना कोई जाणे कला सोल, अकल कला रघुराईआ। कलिजुग माया खेले होल, रंग गुलाला इक्क चढ़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी पड़दा लैणा फोल, दर द्वारे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आप आपणी रिहा जणाईआ। लिखणा लेख दर द्वारे, हरि साची रुत्त सुहांयदा। पाउँणा भेव अगम्म अपारे, भेव अभेदा आप खुल्हांयदा। वरते वरतावे जो विच संसारे, लिख्त लेख दर पुचांयदा। जुग जुग पावणहारा सारे, कलिजुग सार्थी आप अख्वांयदा। कलिजुग ढहि पया द्वारे, प्रभ लहिणा मूल चुकांयदा। सतिजुग साचा करे प्यारे, सत रंग निशान वखांयदा। चरन छुहाए निहकलंक नरायण नर अवतारे, उप्पर आसण लांयदा। जम्बु दीप अद्ध विचकारे, भारत खण्ड सुणांयदा। सुर नर मुन जन ना पायण सारे, वेद पुराण कुरान अंजील खाणी बाणी ना कोए अल्हांयदा। एका दर इक्क दरबारे, दूसर दर

ना कोई वखांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क सरकारे, सच शाहो इक्क अख्वांयदा। अन्तिम बणना चरन भिखारे, कलि वेला वक्त चुकांयदा। सोहँ शब्द साची धारे, चार वरनां आप जणांयदा। आप उठाए आपणी धाड़े, मनमुखां मगर लगांयदा। धरत मात मंगे मंग अखाड़े, कवण कूटे खेल खिलांयदा। पंचम जेठी वेखे साचे लाड़े, तन शृंगारा आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सम्मत चौदां तेरा सगन, शब्द सिँघासण बैठ मग्न आपणा आप लगांयदा। वाली हिन्द जगत स्यास, अन्त रहिण ना पाईआ। लेख लिखारी वेद व्यास, सेवक सेवा लाईआ। हरि हरि खेल पृथ्वी आकाश, पातालां भेव ना राईआ। लक्ख चुरासी दासन दास, बैठा आसण लाईआ। आपे करनहारा नास, आपे लए उपजाईआ। पंचम जेठी साचा मास, पंचम तत्त करे लड़ाईआ। त्रैगुण माया पाए रास, आपणा स्वांग वरताईआ। जीव जन्त अधारी मदिरा मास, रसना गोबिन्द रहे भुलाईआ। सदा सुहेला वसे पास, गुरमुख विरले खोज खुजाईआ। जो दीसे सो होवे नास, अन्त रहिण ना पाईआ। लिख्या लेख पुरख अबिनास, दर द्वारे रिहा घलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप हो जाईआ। नर नरायण सर्ब गुणवन्ता, हरि गुण रूप समाया। राज राजानां बणाए बणता, शाह कंगाल दए उपाया। आप उधारी जीव जन्तां, साधां सन्तां रिहा तराया। आपे नारी आपे कन्ता, साची सेज हंढाया। आपे धन्न धनाढ होए धनवन्ता, धन्न धरनी लेख लिखाया। पूरन जोत श्री भगवन्ता, करनी करन आप अख्वाया। कलिजुग महिंमा गणत अगणता, वेद पुराणां भेव ना पाया। मेट मिटाए जगत महंता, ब्रह्मा विशण शिव गणेश ना कोई पूजे पूज पुजाया। बाशक सेजा कोई ना वेखे सहँसा, सहँसर मुख ना नज़री आया। दोए सहँसर लिख्या लेख, दिवस रैण रिहा गाया। कलिजुग अन्तिम नेत्र पेख, पुरख अबिनाशी दिस ना आया। पीला बस्त्र धारी केस, दिल्ली द्वारे फेरा पाया। मीत मुरारा बहि बहि लिखे लेख, सम्मत चौदां आप जणाया। त्रै देशां मेटणहारा रेख, लेखा आपणे हथ्थ रखाया। नेत्र नैण लैणा पेख, भुल्ल रुल्ल क्यों वक्त लँघाया। आपणी हथ्थीं लिखणा लेख, प्रभ देवे भेव खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, घर साचे आसण लाया। लिखणा लेख जगत महल्ला, मन चित्त सुरती लाईआ। देवे शब्द इक्क इकल्ला, सम्मत चौदां भेव खुल्हाईआ। जगत अखाड़ा जल थला, उच्चे टिल्ले फेरा पाईआ। पंचम जेठी फड़या भल्ला, प्रभ साचा रिहा उठाईआ। जगत सुनेहड़ा एका घल्ला, कर किरपा हरि रघुराईआ। ना कोई करया वला छला, विछड़े रिहा मेल मिलाईआ। जोती शब्दी पवणी रल्ला, तत्त मति ना कोई वखाईआ। काया माटी ना कोई खल्ला, ना कोई बणत बणाईआ। एका वसया निहचल धाम अटला, जुग जुग लहिणा

देण मूल चुकाईआ। आप फड़ाया आपणा पल्ला, लंका गढ़ होए सहाईआ। कलिजुग अन्तिम करे हल्ला, बख्शे सच सच्ची सरनाईआ। मातलोक फलया फुला, फल फुलवाड़ी वेख वखाईआ। जूठा झूठा बूटा मात हुल्ला, रुत्त पतझड़ नेड़े आईआ। शब्द अन्धेर एका झुल्ला, सभ दी रिहा जड़ हिलाईआ। त्रै देशां वज्जे पहला बुल्ला, पंचम जेठ आप हिलाईआ। धरत मात घर मंगे खुल्ला, आपणा पल्लू अग्गे डाहीआ। त्रैगुण माया आप बणाई बैठा चुल्ला, अग्नी भेंट चढ़ाईआ। पंचम तत्त तेरा कोई ना पैणा मुल्ला, तन माटी ख़ाक रुलाईआ। अमृत आत्म मनमुख डुल्ला, निझर धार ना कोई वहाईआ। कोई ना कराए किसे दी सुल्ला, सम्मत चौदां रिहा समझाईआ। प्रभ चरन द्वारे पैणा मुल्ला, कूड़ी जगत शाहीआ। पंडत नेहरू फिरदा भुल्ला, प्रभ आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। भाग लगाए एका कुला, चार वरन इक्क सरनाईआ। जगत विद्या जीव रुला, जागरत दिशा ना किसे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोए रिहा उठाईआ। उठ जाग जगत विद्वान, हरि साचा वेख विचारना। चारों कुन्ट मारे ध्यान, ना दिसे कोए सवारना। रूसा चीना बाल नादान, हरि साचा पैज रखावणा। ईसा मूसा संग शैतान, कलिजुग मेल मिलावणा। संग मुहम्मद इक्क कमान, चार यारी चिल्ला उठावणा। मक्का काअबा वेख दुकान, कलि एका हट्ट चलावणा। हिन्द हिन्दवायण बेपछाण, घर साचा किसे ना पावणा। मुगल पठाणी होए हैरान, शाह इरानी अन्त पछतावणा। विच पतालां सारे गायण, वड्ड जोद्धे सूर बलवानणा। अन्तिम तोड़े सभ दा माण, प्रगट होए हरि भगवानणा। सत्त रंग बणाया इक्क निशान, राज इन्द्र वेख वखानणा। उप्पर बैठा श्री भगवान, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानणा। सम्मत चौदां वेखे मार ध्यान, आपे होया जाणी जानणा। राज राजानां शाह सुल्तानां आई हाण, ना कोई जाणे जीव जहानणा। पंचम जेठी इक्क मकान, हरि आपणा आप वखानणा। राज जोग पुच्छ पुछाण, दे मति आप समझावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली हिन्द कराए चानणा।

❋ पहली चेत २०१४ बिक्रमी हरिभगत द्वार तों जेठूवाल तों अकाल तख्त अमृतसर विखे
ख़ालसा पन्थ दे प्रधान नूं लिख्या गया ❋

उठ मलेश दर दरवेश, हरि आए बंक द्वार। भरमे भुल्ले धारी केस, जोत शब्द ना पायण सार। गोबिन्द काया दस दस्मेस, नूरो नूर हरि निरँकार। कलिजुग अन्तिम करया वेस, निहकलंक लए अवतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पन्थ पन्थी करे ख़बरदार। उठ ख़ालसा पन्थ जीव नादानया। लिख्या लेख शब्द ग्रन्थ, ना कोई दूसर वेख विखानया। जोती शब्दी बणाए साची अंस, धुरदरगाही सदा परवानया। पंज तत्त हँकारी कंस, हरि मेटे गुण निधानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द करे परवानया। गुर गोबिन्द दर परवान, हरि साचे लेखे लाया। अन्तिम देवे धुर फ़रमाण, लहिणा देणा मूल चुकाया। नानक गुण इक्क वखाण, गोबिन्द विच समाया। जीव जन्त ना करे पछाण, साध सन्त भेव ना राया। खाणी बाणी बहि बहि गाण, गोबिन्द किसे हथ्थ ना आया। माया ममता जगत दुकान, हरि मन्दिर आप बणाया। जूठ झूठ सभ रहे छाण, हउमे हँगता रोग वधाया। अन्तिम कीता आपणा पाण, गुर गोबिन्दा दए सज़ाया। शब्द खण्डा तीर कमान, साचे चिल्ले रिहा चढ़ाया। जोद्धा सूरा बली बलवान, निहकलंका नाउँ रखाया। चार वरन रखाए एका आण, ऊँचो नीच नीचो ऊँच एका रंग रंगाया। सम्मत चौदां वेखे मार ध्यान, आप आपणी दया कमाया। सम्मत पन्दरां भेव छुपाण, दिस किसे ना आया। सम्मत सोलां हाणीआं छुट्टणे हाण, ना कोई मेल मिलाया। सम्मत सतारां लेखे चुक्के पीण खाण, सर अमृत मुख भवाया। सम्मत अठारां मार ध्यान, जल धारा रूप समाया। उन्नी उनीसा मिटे निशान, मुस्लिम सुन्नी कोए रहिण ना पाया। बीस बीसा हरि भगवान, पन्दरां कत्तक देवे रुत्त सुहाया। गुर तेग बहादर तेरी शान, सीस गंज चरन टिकाया। वाली हिन्द उठे नादान, देवे दरस हरि रघुराया। जमन किनारा इक्क मकान, साधां सन्तां रिहा जणाया। शब्द सरूपी हरि भगवान, फड़ फड़ बाहों लए उठाया। दहि दिशा होए जाणी जाण, ढूँघी कन्दर उच्चे पर्बत फोल फुलाया। चरन प्रीती वखाए इक्क अस्थान, दर द्वारका नाउँ धराया। रसना गोबिन्द सारे गाण, सो पुरख निरँजण मेल मिलाया। धर्म उठाए हथ्थ निशान, इक्क इकीसा राह तकाया। दिल्ली दर करे परवान, एका इक्की दए उपाया। साची सिक्खी हरि भगवान, पहली चेत्र रिहा बणाया। धार तिक्खी इक्क महान, मदिरा मास रसन तजाया। सत्त रंग विछाए हेठ निशान, उप्पर आसण लाया। सति पुरख निरँजण जगत बणाए इक्क विधान, पंचम प्यारा पंचम मीता पंचम राज जोग मोख मन्त्र सच मन्त्री नाम धराया। खण्डां दीपां एका आण, करे कराए निगाहबान, हरख सोग दए मिटाया। धर्म झुलाए धर्म निशान, ना कोई दीसे बेईमान, मेट मिटाए पंज शैतान, कुरान हदीसा ना कोए पढ़ाया। जगत जगदीसा हरि बलवान, इक्क इकीसा गुण निधान, छत्र झुलाए साचे सीसा गुरमुख साचे सेव कमान, साचा मार्ग रिहा वखाया। आपे जाणे राग छतीसा, राग रागनी आप अल़ाया। सतिजुग तेरी सच हदीसा, सोहँ मन्त्र दृढ़ाया। कलिजुग जूठा झूठा पीसण पीसा, आत्म झोली देवे पाया। सतिजुग तेरी कोई ना करे रीसा, गुरमुख साचे मेल मिलाया। मिले वड्याई

बीस इकीसा, दर द्वार दिल्ली लिखवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सम्बल नगरी डेरा लाया। सम्बल नगर साढे तिन्न हथ्थ, गोबिन्द गढ़ सुहाया। प्रगट होया हरि समरथ, उप्पर चढ़ वेख वखाया। लोआं पुरीआं पावे नत्थ, ब्रह्मण्ड खण्ड बंध बंधाया। कलिजुग अन्तिम गेड़ लट्ठ, दूई द्वैती मेट मिटाया। लहिणा देणा मिटाए अट्ठ सट्ठ, चरन धूढ़ी इक्क इशनान रखाया। पहली चेत्र करे चट्ठ, सेवक सेवा रिहा कराया। मिलणा मेल नठ्ठ नठ्ठ, सम्मत सोलां लेख लिखाया। उच्चे मन्दिर जाणे ढठ्ठ, इट्ट नाल इट्ट रहिण ना पाया। कलिजुग माया बणया मट्ठ, मनमुखां रिहा चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द घर सुहाया। गोबिन्द घर सच महल्ला, ना कोई चार दिवारया। मिल्या मेल इक्क इकल्ला, एका एकँकारया। होए सहाई जल थला, लोआं पुरीआं वेख वखा रिहा। आप उठाए गोबिन्द डल्ला, लहिणा देणा मूल चुका रिहा। शब्द उठाए साचा भल्ला, सम्बल नगरी भाग लगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर निरँकारा आप अखवा रिहा। सम्बल नगरी साचा जोड़ा, हरि जोती शब्द मिलांयदा। इक्क रखाए नीला घोड़ा, नीली छत्तों पार करांयदा। गुरमुखां मन लग्गी औड़ा, कलिजुग अन्त मिटांयदा। पुरख अबिनाशी आपे बौहड़ा, आप आपणी बणत बणांयदा। वेखे परखे मिट्ठा कौड़ा, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। सम्मत चौदां मारे पहला पौड़ा, त्रै त्रै मेट मिटांयदा। ना कोई जाणे लम्मा चौड़ा, ना कोई वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख वटांयदा। गोबिन्द काया साचा मेला, हरि साचा मेल मिलाईआ। आपे गुर आपे चेला। पंचम हथ्थ रक्खे वड्याईआ। प्रगट होया सज्जण सुहेला, आप आपणा पड़दा लाहीआ। आपे वसया रंग नवेला, हर घट बैठा आसण लाईआ। पहली चेत्र चाढ़े तेला, साचा सगन रिहा मनाईआ। एका इक्की पाए वेला, गुर गोबिन्द आस रखाईआ। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला, इक्की कुलां रिहा तराईआ। आपे गुरू गुरु गुर चेला, गोबिन्द चेला हरि आपणा आप बणाईआ। आप कराया आपणा मेला, जोती शब्द मिलाईआ। कलिजुग तेरा अन्तिम वेला, जन भगतां रिहा जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पन्थ पन्थीआं रिहा उठाईआ। ज्ञानी ध्यानी जगत विद्वानी, दिवस रैण लड़ाईआ। गुर गोबिन्दे कवण निशानी, ना कोई भेव खुल्हाईआ। दूई द्वैती मारन कानी, एका राह ना कोई जणाईआ। अमृत आत्म सच्चा पाणी, नीर सीर ना कोई पिलाईआ। रसना पढ़ पढ़ थक्के बाणी, पंज तत्त ना कोए बंधाईआ। अन्दर मन्दिर पंज शैतानी, हरि मन्दिर दिस ना आईआ। आत्म अन्ध जीव नादानी, अज्ञान अन्धेर वधाईआ। मिल्या मेल ना पुरख सुल्तानी, घर साचा मूल ना भाईआ।

कलिजुग काया गई जवानी, अन्त बुड़ेपा आईआ। लाड़ी मौत मंगे दानी, अग्गे झोली डाहीआ। किरपा कर हरि भगवानी, गुर गोबिन्दा संग रलाईआ। कलिजुग तेरी अन्त निशानी, सम्मत चौदां रिहा वखाईआ। क्या कोई मारे घर साचे भानी, ना चले किसे चतुराईआ। सर्ब जीआं प्रभ जाण जाणी, ना कोई पढ़े ना रिहा पढ़ाईआ। आपे जाणे आपणी बाणी, अक्खर वक्खर किसे हथ्थ ना आईआ। गुर नानक मिली इक्क निशानी, लोकमात ल्याया चाँईं चाँईंआ। पढ़ पढ़ थक्के जीव नादानी, साचा शाहो सति सरूप दिस किसे ना आईआ। आत्म होई जगत नादानी, साचा शाहो सति सरूप परमानंद सहिज सुखदाईआ। गुर गोबिन्दा वड बलवानी, तीर कमाना रिहा उठाईआ। नानक अंगद अमरदास महानी, रामदास गुर अर्जन खेल खिलाईआ। हरि गोबिन्द हरि राए इक्क निशानी, चरन ध्यान रखाईआ। हरिकृष्न निधाना बाल जवानी, प्रभ चरनां भेंट चढ़ाईआ। गुर तेग बहादर साचा दानी, साचा सीस दान कराईआ। गुर गोबिन्दा जोद्धा बलवानी, सूरबीर आप अख्वाईआ। सहँस सहँसर कर कुरबानी, पूत सपूता भेंट चढ़ाईआ। पुरी अनन्द होए वैरानी, उठ चल्लया कर के धाईआ। गंगा गोदावरी पार किनारी, साचा धाम सुहाईआ। इक्क नदेड़ रहे निशानी, दक्खण दिशा विखाईआ। गुर मति सिक्खां आप समझानी, आवे जावे मरे ना जाईआ। कलिजुग अन्तिम वेख वखानी, निहकलंका नाउँ रखाईआ। शब्द डंका इक्क महानी, राउ रंकां रिहा जणाईआ। मेटे दूई द्वैती शंका, हथ्थ रक्खे वड्ड वड्याईआ। इक्क सुहाए द्वार बंका, चार वरन सच्ची सरनाईआ। ना कोई ऊँच नीच राउ रंका, ज़ात पात मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द मेल मिलाईआ। गोबिन्द मिल्या सच द्वार, दिवस रैण वज्जे वधाईआ। नानक पाया पुरख अपार, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाईआ। नाड़ी चमड़ा ना किया वणज वपार, जूठी झूठी प्रीत तजाईआ। नाम सति इक्क आधार, जीवां जन्तां गया जपाईआ। सोहँ अक्खर कर प्यार, ओअँ दोअँ रूप समाईआ। पारब्रह्म प्रभ पाए सार, अन्तिम लेखा गया लिखाईआ। निहकलंक लए अवतार, सोहँ साचा जाप जपाईआ। सो पुरख निरँजण आप करतार, करता पुरख आप अख्वाईआ। हउमे हँगता दए निवार, हँ संग आप निभाईआ। साची संगता कर त्यार, सम्मत तेरां अन्त वखाईआ। आप मंगता बणे भिखार, सम्मत चौदां पहली चेत्र रुत्त सुहाईआ। कलिजुग बेड़ा डुब्बा अद्ध विचकार, गुरमुख साचे पार कराईआ। वंञ मुहाणा सच्ची सरकार, शब्द सिँघासण इक्क रखाईआ। सिँघ शेर सेवादार, सन्त मनी सिँघ गया लगाईआ। साचे सन्त तैथों बलिहार, सीस आपणा गुरमुखां भेंट चढ़ाईआ। नूरी जोत कर उज्यार, गुरमुखां विच समाईआ। गुर गोबिन्दे तेरा पहरेदार, नर हरि आप अख्वाईआ। धरनी धरत सुण पुकार, जोती नूरो नूर जगाईआ। एका जोती शब्द अधार, सच्ची वस्त हरि झोली पाईआ। सोहँ खण्डे

अमृत कर त्यार, अमृत धार इक्क वखाईआ। अट्ठे पहर ख़बरदार, दिवस रैण सेव कमाईआ। गुर तेग बहादर कर त्यार, दिल्ली दरबारे खेल खिलाईआ। पूत सपूता दित्ता वार, नौ द्वारे खोल्ह वखाईआ। शब्द सिँघासण इक्क अपार, साढे तिन्न हथ्थ सेज विछाईआ। उत्ते बैठ सच्ची सरकार, गुर गोबिन्दे मेल मिलाईआ। गुर गोबिन्दा वड मृगिन्दा बलकार, आपणी खेल खिलाईआ। पंचम गुर लेख लिखार, हरि जू हरि मन्दिर आईआ। पन्थ ख़ालसा रहिणा ख़बरदार, प्रभ लेखा रिहा मुकाईआ। माया धन जन झूठी लालसा, अन्त रहिण ना पाईआ। दो जहानां हरि भगवाना झुलाए धर्म निशाना, सत्त रंग लेख लिखाईआ। उप्पर बैठ श्री भगवाना, माण गंवाए जगत विद्वाना, वड प्रधाना कोए रहिण ना पाईआ। चरन बहाए शाह सुल्ताना, राज राजानां भीख मंगाईआ। गुरमुखां होए दर दरबाना, पहली चेत्र रिहा सेव कमाईआ। हथ्थीं बन्न्हे साचा गाना, एका इक्की रिहा पाईआ। गुर गोबिन्दे तेरी मंग परवाना, प्रभ पूरन रिहा कराईआ। सम्मत चौदां वेखे मार ध्याना, सोहँ साचा जाम पिलाईआ। नेड़ ना आए पंज शैताना, सुरत सवाणी चरन कँवल बंधाईआ। आपे गोपी आपे काहना, घर आपणे मण्डल रास रचाईआ। आपे होया बेपछाणा, दिस किसे ना आईआ। पन्थ ख़ालसा उठ जवाना, हरि गोबिन्द मेल मिलाईआ। ना कोई जाणे पीणा खाणा, ना कोए आस धरवास जणाईआ। चरन प्रीती इक्क ध्याना, हरि सरन सच्ची सरनाईआ। राग रागणी गायण गाणा, ना कोई मेल मिलाईआ। अन्दर बैठा हरि भगवाना, हरि मन्दिर रिहा सुहाईआ। चार कुन्ट चार दरबाना, सेवा सेवक लाईआ। सति पुरख निरँजण देवे इक्क ज्ञाना, पंचम बैठा शब्द जणाईआ। नाद अनादी ताल वजाना, सिर आपणे हथ्थ रखाईआ। ढोलक छैणा जगत वजाना, अनहद राग ना कोई अल्हाईआ। गुर गोबिन्दा घर साचे पाणा, नानक रूप समाईआ। नानक निरगुण इक्क वखाणा, सरगुण रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख वटाईआ। (२१ चेत २०१४ बिक्रमी नूं एह शब्द अकाल तख़्त अमृतसर भेज्जया गया परन्तू कोई उत्तर ना मिल्या)

✻ पहली चेत २०१४ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल तों डेरा बाबा जैमल सिँघ,
सन्त चरन सिँघ नूं शब्द लिख्या गया ✻

जैमल सावण शब्द मिलावा, सुरत करी कुड़माईआ। सिँघ चरन क्यों दित्ता बेदावा, प्रभ साचे सार ना पाईआ। माया ममता तन माटी काचा आवा, आदि अन्त रहिण ना पाईआ। जगत जवानी नादानी ढल्ले परछावां, ना कोई होए सहाईआ।

सन्त सुहेले सतिगुर पूरे दीआं साचीआं बाहवां, दोवें भुजां उठाईआ। सावण सिँघासण साचा पावा, मूल चूल ना कोई रखाईआ। काग हँस मानण छाँवा, मोती चोग चुगाईआ। पंज शब्द साचा नामा, नाम नामा रिहा जणाईआ। पंज तत्त ना बणया तामा, ना आपणी भेंट चढ़ाईआ। पुरख अबिनाशी अन्तर जामा, घट अन्तर वेख वखाईआ। साचा नाम ना पल्ले दामा, दम विद्या जगत गाईआ। लेखा लिखे ना काया चामा, काया गढ़ रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्दर मन्दिर वेखे चढ़, दूर दुराडे थाउँ थाँईंआ। शब्द वर जगत निधान, हरिजन विरले पाया। पंचम मेला पंच शैतान, लेखा मूल गंवाया। नाम निधाना सच बिबाण, कन्त कन्तूहल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दरवेशा शब्द भिखारी, दर द्वारे फेरा पाया। शब्द भिखारी दर दरबान, आए बंक द्वारयाा। अठ्ठ चेत्र वेखणा मार ध्यान, सच मन्दिर होया बाहरया। नौ चेत्र आया इक्क ज्ञान, मिल्या मेल दर द्वारया। पुच्छ गिछ दु:ख सुख महान, काया खेल खिला रिहा। भेव ना पाया हरि भगवान, शब्दी शब्द ना कोए जणा रिहा। गुणवन्ता हरि गुण निधान, भेव अभेदा आप अख्वा रिहा। सावण धरती धर्म निशान, सम्मत सोलां आप झुला रिहा। आपे होया बेपछाण, लाड़ी मौत आप चढ़ा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पन्दरां कत्तक पार करा रिहा। पन्दरां कत्तक सर अमृत साचा मेल मिलंनया। कौल इकरार होया दर, भरम भुलेखा क्यों भुलंनया। सवा पंज लक्ख इक्ठ्ठ कर, सावण रूप वटाए दरस दिखाए हरि भगवंनया। साधां सन्तां जीवां जन्तां नूं क्यों रिहा डर, खाली खाली सभ दी छप्पर छन्नया। सावण चुबारे बैठा चढ़, जो अड़या सो भन्नया। पुरख अबिनाशी फड़या लड़, आप चढ़ाए साचा चन्नया। सन्त जन्त ना कोई सके अड़, करे कराए खंन खंनया। माया ममता कलिजुग गढ़ जगत कराया अन्नयां। तृष्ना अग्नी गए सड़, भाणा सतिगुर किसे ना मन्नया। सावण अक्खर एका पढ़, घर घर बणाई बैठे बन्नया। पुरख अबिनाशी आप उखेड़े सभ दी जड़, अन्तिम देवे डन्नया। सावण मेला ना कोई सीस ना कोई धड़, जनणी जन ना किसे जणया। सरन सरनाई साची पढ़, सति पुरख निरँजण एका मन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपे बणया। (२१ चेत २०१४ बिक्रमी नूं एह शब्द भेज्जया गया)

३७८
०६

३७८
०६

✻ पहली चेत २०१४ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✻

हरिसंगत हरि रंग रत्तया, एका रंग रंगाईआ। प्रभ दे समझावे मत्तया, भुल्ल रहे ना राईआ। मिल्या मेल कमलापतया, पति पतिवन्त आप अख्वाईआ। आप रखाए धीरज यतया, सति सन्तोख इक्क जणाईआ। बीज बीजे साचे वत्तया, आपणी हथ्थीं आपे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिसंगत रूप समाईआ। हरिसंगत तन साचा गहणा, एका तन छुहावणा। हरि दर्शन लोचन साचे नैणा, नेत्र सुरमा पावणा। भाणे अन्दर सभ ने रहिणा, एका पुरख मनावणा। दर द्वारे साचे बहिणा, बंक द्वार इक्क सुहावणा। जूठे झूठे वहिण ना वहिणा, माया मोह चुकावणा। कलिजुग अन्तिम कोए ना रहिणा, ना कोई किसे बचावणा। गुरमुखां चुकाए लहिणा देणा, गुर गोबिन्द संग उठावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पहली चेत्र चरन उठावणा। पहली चेत्र चरन उठाए, जाए बंक द्वारया। गुरमुख साचे लए तराए, सोहँ देवे नाम सहारया। आप आपणे गल लगाए, दो जहान करे प्यारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, साची सिख्या दे समझा रिहा। साची सिख्या देवे मति, अकल कला भरपूरया। नाड़ी नाड़ ना उब्बल रत्त, प्रभ आसा मनसा पूरया। शब्द चढ़ाए साचे रथ, जगत नाता कूड़ो कूड़या। मिले मेल हरि समरथ, बख्शे चरन धूड़या। इक्क सुणाए साची गत्थ, सोहँ हाजर हज़ूरया। सगल वसूरे जायण लथ्थ, पंच विकारा चूरो चूरया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे नाम सरूरया। नाम सरूर शब्द खुमारी, साचे तन चढ़ाईआ। हरिसंगत हरि कर न्यारी, बेड़ा बन्नृ वखाईआ। सम्मत चौदां तेरी वारी, गुरमुखां वंड वंडाईआ। मनमुखां दर हाहाकारी, ना कोई होए सहाईआ। नीला घोड़ा नर निरँकारी, गोबिन्द संग निभाईआ। लिख्या लेख शब्द लिखारी, हरि सरन सच्ची सरनाईआ। पंचम मीता पंच प्यारी, पंचम नाल रखाईआ। एका इक्की कर त्यारी, गोबिन्द भुजां रिहा उठाईआ। मेल मिलाए वारो वारी, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। आपे जाए चल द्वारी, सेवक सेवा आप कमाईआ। जन भगतां हरि पैज संवारी, फल मेवा इक्क खवाईआ। देवे नाम वड भण्डारी, सोहँ नाउँ रखाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, एका दूजा भेव चुकाईआ। नेत्र तीजा दरस अपारी, हरि नर साचा रिहा कराईआ। घर चौथे मेला पुरख भतारी, सन्त साजन आप मिलाईआ। पंचम दर हरि भिखारी, पंचम रिहा बणाईआ। छेवें छप्पर छन्न ना कोए उसारी, घर साचे आसण लाईआ। सति पुरख निरँजण बन्नृे धारी, कलिजुग रुत्त सुहाईआ। अट्ठां तत्तां खेल खिलारी, खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। मनमुख नौ द्वारे वसे बाहरी, मदिरा मास रसन तजाईआ। गुरमुख साचे चरन कँवल बलिहारी, हरि साचे पैज रखाईआ। मिल्या

३७६
०६

मेल हरि शाहो गिरधारी, दस्म द्वारी जोत जगाईआ। शब्द धुन सच्ची धुन्कारी, आत्म रिहा उपजाईआ। नारी कन्ता सन्त भतारी, एका सेज हंढाईआ। आपे सुत्ता पैर पसारी, आपे लए अंगड़ाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, हरि खेले खेल दिस किसे ना आईआ। गुरमुखां फिरे पिच्छे अगाड़ी, सतिजुग वेल वधाईआ। माछीवाड़े लुकया अन्दर झाड़ी, निरँकारा रिहा ध्याईआ। राज ताज ना कोए सिक्दारी, घोड़ा जोड़ा दिस ना आईआ। पंचम सिख ना कोए प्यारी, पंचम रिहा रसना गाईआ। पारब्रह्म तेरी खेल न्यारी, भेव कोए ना पाईआ। गोबिन्द बणया दर भिखारी, दोवें जोड़ सीस झुकाईआ। पूत सपूता हरि गिरधारी, सुत निवाज़ दित्ती सरनाईआ। वेखे खेल बाज़ी हारी, जित्त हार किसे हथ्थ ना आईआ। अन्तिम ढहि पया द्वारी, प्रभ तेरी वड वड्याईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धारी, दोवें भुजा लए उठाईआ। गुर गोबिन्दा करे त्यारी, शब्द हुलारे रिहा झुलाईआ। जोती नूर अपर अपारी, सृष्ट सबाई विखाईआ। मंगे मंग दर भिखारी, आत्म वपारी इक्क कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दे शब्द जणाईआ। गुर गोबिन्दे खुशी मनाई, मिल्या पारब्रह्म। साचे घर वज्जी वधाई, लेखे लाया दमा। मिल्या मेल विछड़ ना जाई, ना मरे ना मरया जम्मा। पारब्रह्म तेरी सच सरनाई, पूर कराउँणा अन्तिम मेरा कम्मा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सरूपी देवे साचा थम्मा। गुर गोबिन्दे बचन अलाया, एका मंग मंगाईआ। पन्थ ख़ालसा जगत रचाया, गुरू ग्रन्थ बणाईआ। साचा सालस इक्क रखाया, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वर दाता झोली पाईआ। मंग्गया वर दर दर दरबार, हरि साचा झोली पांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, गुर गोबिन्दा संग निभांयदा। निहकलंकी लए अवतार, रूप अनूपा हरि वटांयदा। शब्द डंकी सच्ची धुन्कार, राउ रंकां आप सुणांयदा। खेले खेल वासी पुरी घनकी, पुर घनक धाम सुहांयदा। रक्खे लाज जीव जन जन की, जन भगतां पैज रखांयदा। प्रीत तजाए झूठे तन तन की, अग्नी भेंट करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दे दित्ता वर, गोबिन्द काया विच समांयदा। गोबिन्द मंगी मंग अपार, एका एक अकालीआ। दर द्वारे बणे भिखार, होए सच सवालीआ। हरिजन मेला अन्तिम वार, शब्द वजाउँणा मात दमालया। एका इक्की विच संसार, सोना पासा दिसे ढालया। पंचम मेला मीत मुरार, निर्मल जोत जगे अकालया। ग्रन्थां पन्थां वसे बाहर दीनां बंधप दीन दयालया। लक्ख चुरासी पावे सार, दर द्वार काल महांकालया। आप उपाए आपे दए सँघार, खेले खेल निरालया। गुर गोबिन्दा करे पुकार, आदि शक्त साची भगत साचा वक्त आप सुहा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, फल लगाए काया डालया। फल लगाया साचे डाल, गोबिन्द फल फुलवाड़ीआ।

कलिजुग चली अवल्लड़ी चाल, साचा मेल साचे हाणीआ। गुर गोबिन्दा आपे भाल, साची वस्त टिकाए साची थालीआ। आपे होया हाल बेहाल, डेरा लाए सच्ची धर्मसालया। दिवस रैण नाल नाल, अकाल अकाला जोत अकालया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेले अन्त करे प्रितपालया। वेले अन्त करे प्रितपाल, आपणा संग निभांयदा। पुरी अनंद दा सच्चा दलाल, साचा संग निभांयदा। सरसा भेंट कीते साचे लाल, गुरमुख नाउँ रखांयदा। जगत शहीदी बेमिसाल, लेख ना कोई लिखांयदा। जन्म दवाए कलिजुग भाल, अन्तिम मूल चुकांयदा। जोती जोत मिलाए इक्क अकाल, पूरा कौल करांयदा। संसार सागर मारे इक्क उछाल, गुरमुख लाल पार करांयदा। इक्क इकीसा जगत दलाल, आप आपणी दया कमांयदा। पहली चेत्र हो रखवाल, दर दर फोल फुलांयदा। सम्मत सोलां लए उठाल, आपणे लड़ बंधांयदा। सोहँ देवे सच्चा धन माल, चोर यार लुट्ट ना कोए लै जांयदा। फड़ फड़ बाहों लाए पार, कलिजुग बेड़ा आप चलांयदा। एका इक्की एका वार, पहला पूर तरांयदा। साची सिक्खी कर त्यार, निक्की धार वखांयदा। नेत्र पेखी आप करतार, दिवस रैण पन्ध मिटांयदा। भेखन भेखी वड करतार, भेखा भेखी भेख वटांयदा। नर नरेश सिरजणहार, निरगुण रूप समांयदा। काल कलेशी दर देवे दुरकार, सांतक सति वरतांयदा। ब्रह्मा विष्न महेषी बणन भिखार, गुरमुख साचे आपणे संग निभांयदा। धुरदरगाही इक्क दरबार, दूसर कोई ना वेख वखांयदा। सोहँ सो करे पार, दस्म द्वारी वसया बाहर, एका राह वखांयदा। सति पुरख निरँजण आवे उत्तों एका वार, गुरमुख साचे लए उभार, मनमुखां गूढ़ी नींद सवांयदा। तीजा नेत्र ना वेखे कोई उग्घाड़, साध सन्त ना कोई जणांयदा। तत्ती वा गुरमुखां ना लग्गे हाढ़, पंचम साचा जोड़ जुड़ांयदा। आकाश आकाशां आवे पाड़, जोत सरूपी साचा लाड़, गुरमुख साची नारी कन्त सुहागी कर प्यारी, आप आपणी सेज बहांयदा। जोत निरँजण कर अकारी, सज्जण सुहेला मीत मुरारी, गुरसिक्खां खोल्हे बन्द किवाड़ी, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, साजण सक्खी कर प्यारी, निहकलंक लए अवतारी, आपणा सीस जगत जगदीस गुर संगत भेंट चढ़ांयदा। गुरमुख साचे विच प्रवेश, गुर को सदा आदेस, ना कोई मेटे मेट मिटांयदा। दाता दानी दर दरवेश, खुल्हड़े रक्खे आपणे केस, आपणी भिक्ख आपणी हथ्थीं आपणी झोली पांयदा। हरिसंगत तेरे लेख लिख, किसे हथ्थ ना आए मुन रिख, जोती शब्दी बणत बणांयदा। साध सन्त छुपाई बैठे मुख, दर आए ना दर्शन कोई पांयदा। पहली चेत्र जगत लेखा रिहा मुक्क, पकड़ उठाए मुल्ला शेख़ काज़ी हक्क हलाल ना कोए मात करांयदा। परवरदिगार दर द्वार नूर अलाही आकाश पातालां नूरो नूर करांयदा। मिले मेल अहिनल हक्क, कलिजुग फल गया पक्क, पीर फ़कीर ना कोई बचांयदा। अमाम मैहन्दी वेखे दिशा लहिंदी चोला बस्त्र नील आपणे

तन सुहाए साचा गहणा, मक्का मदीना वेख वखांयदा। आपे वेख अलाही नूर, माण तोड़े जगत ग़रूर, सर्बकला आपे भरपूर, हरि हरि आप अख्वांयदा। नाद अनादी वज्जे तूर, ना दिसे दूर, आदि जुगादी जन भगतां आसा मनसा पूर, जुग जुग पैज रखांयदा। कलिजुग काया कूड़ो कूड़, गुरमुख विरले बख्शे चरन धूढ़, छत्ती जुग लुक लुक मुख छुपांयदा। गुरमुखां उज्जल करे मुख, मात गर्भ ना उलटा रुक्ख, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। गुरमुखां झोली पाई जगत भुक्ख, आप तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। आप उठाए आपणी कुक्ख, जोती माता नाउँ रखांयदा। शब्द सपूता गुरमुख वखाए साचा मुख, अमृत साचा मुम्मा सीर प्यांअदा। ना कोई व्यापे जगत दुःख, जो जन चरनी सीस झुकांयदा। सम्मत तेरां बैठा लुक, तेरां साल पर्दा उप्पर पांयदा। पंच प्यारयां पर्दा दित्ता चुक्क, फड़ बाहों आप उठा रिहा। गुर सतिगुर वखाए साचा मुख, ना मुखड़ा फेर छुपा रिहा। ना एह मानस ना मनुक्ख, पारब्रह्म भेव ना कोए जणा रिहा। गुर गोबिन्दे साची मंग मंगी सुखणा सुक्ख, प्रभ साचा संग निभा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पहली चेत्र लैणा चित, चेतन्न रूप वखा रिहा। धन्न सुभाग पहली चेत, गुर संगत दया कमाईआ। पुरख अबिनाशी नेत्र पेख, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। आप लिखाया आपणा लेख, जुग लेखा भेंट चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां संग आपणा आप निभाईआ। दिवस इक्की भगत विहार, हरि हरि आप करांयदा। फूलन पाए ना कोई हार, साची माला नाम गल लटकांयदा। गुरमुखां करे तन श्रृंगार, गुरसिख काया आप रंगांयदा। आपे होया सेवादारा, सेवक सेवा सच कमांयदा। इक्क इकल्ला एकँकार, एका धार बंधांयदा। एका इक्की खेल न्यार, नव सत पंज रूप वटांयदा। खेले खेल अपर अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मार्ग इक्क वखांयदा।

सतिगुर शब्द दयाल, सति समाया। सतिगुर शब्द अकाल, अकाल रूप हो आया। सतिगुर शब्द प्रितपाल, जुग जुग करदा आया। सतिगुर शब्द रखवाल, जन भगतां होए सहाया। सतिगुर शब्द निशान आप आपणा रिहा झुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द शब्दी रूप वटाया। सतिगुर शब्द अटल है, सदा सदा सुरजीत। वसे धाम सदा अचल है, जन भगतां रक्खे प्रीत। वेख वखाए जल थल है, परखणहारा नीत। दर दरवाज़ा जन हरि बैठा मल्ल है, काया सीतल सीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख करे पतित पुनीत। गुरमुख फुलवाड़ी सच मात, हरि साचे मात लगाईआ। आपे वेखे मार झात, होए सदा सहाईआ। देवणहारा धुर दी दात, दर दर सेव

कमाईआ। सोहँ शब्द वड करामात, हरि शब्दी बणत बणाईआ। जोती शब्दी कमलापात, रूप अनूप समाईआ। आपे पुच्छणहारा वात, सदा सदा सहाईआ। सच प्रीती बंधे नात, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। मेट मिटाए ज़ात पात, रीठे कौड़े भन्न विखाईआ। हरिसंगत बैठी इक्क जमात, सोहँ विद्या रिहा पढ़ाईआ। सति पुरख निरँजण साचा साथ, आपणा रिहा निभाईआ। जोत निरँजण सेवा लाई त्रैलोकी नाथ, आपणी सेवा रिहा कमाईआ। पुरख अबिनाशी सदा समराथ, अकल कला रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूसर किसे हथ्थ ना आईआ।

✻ पहली चेत्र २०१४ बिक्रमी दलीप सिँघ दे घर इक्की परिवारां दा इक्ठ होया ते शहनशाह जी ने शब्द दी किरपा कीती पिण्ड गग्गोबूआ ज़िला अमृतसर ✻

पारब्रह्म सर्ब घट वासी, हर घट वेख वखांयदा। प्रगट होए घनकपुर वासी, साचा डंक वजांयदा। दूर कराए दर दवारिउँ मदिरा मासी, साचा हुक्म जणांयदा। गुरमुखां मानस जन्म करे रासी, दीपक जोत जगांयदा। चार कुन्ट लाए उदासी, मनमुख जीव सर्ब कुरलांयदा। कलिजुग माया अन्त विनासी, चरन दासी जन भगतां आप करांयदा। पकड़ उठाए पंडत कांसी, वेद पुराणां फोल फुलांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी करे हासी, शाहो शाबाश ना कोई पांयदा। भगत सुहेला दए दलासी, वेला वक्त सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे पार करांयदा। हरिजन साचे बन्ने बेड़ा, अकल कला भरपूरया। ना कोई नगर शहर खेड़ा, कूड़ो कूड़या। पंचम तत्ती लग्गा झेड़ा, मिले मेल ना हरि दाता जोद्धा सूरया। लक्ख चुरासी रुड़िआ बेड़ा, कलिजुग उतरे कोए ना साचे पूरया। पारब्रह्म करे हक्क निबेड़ा, आपे वसे नेड़े दूरया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वेखे साचे दर, मस्तक लाए साची धूड़या। गुरमुख तेरा दर दरवाज़ा, लोकमात सुहांयदा। प्रगट होए ग़रीब निवाजा, दिस किसे ना आंयदा। सतिजुग कलिजुग हरि साजन साजा, साचा जोग कमांयदा। पकड़ उठाए राजन राजा, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलांयदा। आत्म दरसी शब्द सरूपी मारे आवाजा, अनहद सेवा लांयदा। पंच संवारे पंचम काजा, पंचम मोह चुकांयदा। सतिजुग तेरा साचा दाजा, गुरमुखां झोली पांयदा। चरन द्वार इक्क वखाए मक्का काअबा, हाजन हाजा अठ्ठ सठ्ठ वेख वखांयदा। शब्द घोड़ा चिट्टा अस्व नीला ताजा, सोलां कलीआं आसण लांयदा। कलिजुग काया खोल्हे पाजा, सम्मत चौदां वेख वखांयदा। धुरदरगाही राजन राजा, शाह

कंगाल आप अख्वांयदा। जोत जगाए देस माझा, गुर गोबिन्दा लेख लिखांयदा। आप रचाया आपणा काजा, वाली हिन्द हरि उठांयदा। लाड़ी मौत मंगे दाजा, लक्ख चुरासी झोली पांयदा। जूठा झूठा वज्जया वाजा, कलिजुग आपणा ताल वजांयदा। पंच विकारा भर जहाज़ा, अन्तिम शाहो डुबांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वेखे साचा घर, शब्द सरूपी वेख वखांयदा। गुरमुख साचे बंक द्वार, हरि साचे वेख वखाणया। भरमे भुल्ले भरम गंवार, धर्म झुलाए इक्क निशान, हर घट आपे जाणया। दो जहानां सर्ब जीआं प्रभ जाणी जाण, आत्म जोती मेल मिलानया। हरिजन साचे लए पछाण, खेले खेल श्री भगवानया। साचा शब्द देवे दान, दाता दानी धुर फ़रमाणया। कलिजुग काला आया दाग़ मिटाण, सतिजुग साचा चन्न चढ़ानया। एका इक्की विच जहान, एका वार वखानया। साची सिक्खी कर परवान, गुर गोबिन्दे मेल मिलानया। अमृत आत्म पीण खाण, निझर धारा आप वहानया। पंचम रागा साचा गान, राग छत्ती वेख वखानया। कन्त सुहागा मेल मिलान, नारी कन्त इक्क हंढानया। सोया जागा सूरा बलवान, निहकलंकी हरि भगवान, कलिजुग माया लग्गी अग्गा, ना कोई मात बुझानया। गुरमुख विरला चरनी लागा, प्रभ बख्शे चरन ध्यानया। सोहँ बन्न्हे साचा तागा, ना कोई तोड़ तुड़ानया। आप आपणे हथ्थ रक्खे वागा, प्रभ साचे रथ चढ़ानया। गुरमुख साचे वड वड भागा, वड भागी मेल मिलानया। हँस बणाए फड़ फड़ कागा, हरि साची चोग चुगानया। दुरमति मैल धोवे दाग़ा, दर दरवेश गुण निधानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरा वेखे घर, जोती जगे इक्क महानया। गुरमुख साचे दर द्वार, आत्म जोत जगाईआ। आत्म धुन सच्ची धुनकर, अट्ठे पहर जणाईआ। सुणे सुणाए सुणनेहार, आत्म सेजा आसण लाईआ। मीत मुरारी कन्त भतार, साची नार इक्क बणाईआ। वेख वखाणे सगल संसार, सृष्ट सबाई फोल फुलाईआ। कलिजुग माया हाहाकार, चारों कुन्ट रही कुरलाईआ। लोभ मोह हँकारा धूआँधार, सच सुच्च दिस ना आईआ। गोबिन्द गुर लए अवतार, जोती शब्दी बणत बणाईआ। शब्द खण्डा तेज कटार, तन गात्रे आप लटकाईआ। आपे वेखे वेखणहार, सृष्ट सबाई दिस ना आईआ। नौ खण्ड पृथ्वी मारे मार, सत्तां दीपां रिहा सुणाईआ। ब्रह्मा शिव इन्द करे ख़बरदार, करोड़ तेतीसा आप जगाईआ। दो जहानां एकँकार, एका रंग रंगाईआ। कलिजुग तेरी काली धार, लोकमात अन्धेरा छाईआ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, सम्मत चौदां वेख वखाईआ। हरिसंगत साची कर त्यार, पुरख अगम्मा ना मरे ना कदे जम्मा, शब्द ध्यानी लेखे लाईआ। पवण स्वासी दमां, दिवस रैण जो रहे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आया दर दवारउँ रुल्ला । गुरमुख साचे साचा धाम, एका एक सुहाया।

मिल्या मेल साचा राम, राम रामा रूप समाया। कलिजुग मिटे अन्धेरी शाम, अज्ञान अन्धेर मिटाया। पंच विकारा होया ताम, रसना भोग लगाया। अमृत आत्म पिया जाम, हउमे रोग मिटाया। पूर कराए हरि हरि काम, बंक द्वारी बण के आया। सतिजुग साचे साचा नाम, चार वरनां रिहा जणाया। लेखे लाए हड्ड मास नाड़ी चाम, मानस मनुख रिहा तराया। कोई ना मंगे हरि जी दाम, चरन प्रीत इक्क सिखाया। अक्खर वक्खर इक्क निधान, सच मन्त्र नाम दृढ़ाया। गोबिन्द काया जगत निशान, शब्दी बणत बणाया। दर द्वार करे परवान, पारब्रह्म सदा सुखदाया। आप रखाए आपणी आण, कलिजुग अन्तिम भेख वटाया। जन भगतां देवे दो जहानी माण, आवण जावण आपणे हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका डंक राउ रंक द्वार बंक इक्क इकेला भगत सुहेला साचा रिहा सुणाया। भगत सुहेला साचा मीता, अचरज कल वरताईआ। आपे गुर आपे चेला आपे परखणहारा नीता, आपे मेल मिलाईआ। ना कोई मन्दिर गुरद्वार मसीता, दस्म द्वारी बैठा आसण लाईआ। वेख वखाए हस्त कीटा, हरि एका रंग रंगाईआ। शब्द जणाए इक्क अनडीठा, लिखण पढ़न विच ना आईआ। कलिजुग काया कौड़ा रीठा, अन्तिम भन्न वखाईआ। हरि हरि शब्द हरिजन लागा मीठा, अमृत फ़ल खवाईआ। मनमुख जीवां जूठा झूठा पीसण पीसा, रसन होई हलकाईआ। गुरमुख तेरी कोई ना करे रीसा, काया चोली आपणे हथ्थीं आप रंगाईआ। पुरख अबिनाशी बीठला बीठा, पारब्रह्म अचुत्त आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप हो आईआ। नर नरायण आप निरँकारा, निरगुण रूप समाया। सरगुण बख्शे शब्दी धारा, जोती मेल मिलाया। आवे जावे अद्ध विचकारा, दिस किसे ना आया। सच द्वारी बन्द किवाड़ा, आपणी हथ्थीं कुण्डा लाया। नौ द्वारे जगत अखाड़ा, लक्ख चुरासी लड़े लड़ाया। गुरमुखां लाज रखाए चरन छुहाई दाहड़ा, वेले अन्त होए सहाया। सखा सुहेला जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, उच्चे टिल्ले फोल फुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचा घर साचे बैठा आसण लाया। हरि घर साचा आत्म सेज, एका एक विछाईआ। शब्द सुनेहड़ा रिहा भेज, दिवस रैण जणाईआ। जोती नूर जगे हमेश, ना कोई मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरे साचे घर, चरन कँवल उप्पर धवल आर पार रिहा लिखाईआ। धरत धवल कर आकार, हरि जोती जोत जगांयदा। आदि जुगादी भगत प्यार, कलिजुग पूर करांयदा। सति सतिवादी नर निरँकार, सति पुरख निरँजण आप हो जांयदा। गुर चेला सोहे इक्क द्वार, साचा मेला आप मिलांयदा। सज्जण सुहेला मीत मुरार, गोबिन्द काया रूप वटांयदा। गुर संगत चढ़ाए साचा तेला, पहली चेत्र रुत्त

सुहांयदा। आप वसया सद नवेला, आप आपणे रंग समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वेखे तेरा एका घर, एकँकारा रूप वटांयदा। एकँकारा इक्क इकल्ला, अकल कला भरपूरया। गुरमुखां वसे सच महल्ला, आपे वसे नेड़े दूरया। निहचल धाम इक्क अटला, हरि साचा हाज़र हज़ूरया। हरि होए सहाई जला थला, आसा मनसा पूरया। शब्द सुनेहड़ा एका घल्ला, आदि जुगादी साची तूरया। दर दुआरा विरले मात मल्ला, सृष्ट सबाई कूड़ो कूड़या। शब्द फड़ाए साचा भल्ला, चरन बख्शे साची धूड़या। दूई द्वैती मेटे सल्ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरे साचे घर, नाद वजाए अनहद साची तूरया। अनाद अनादा अनहद तूर, प्रभ साचा आप वजांयदा। पंचम मीता शाहो सरूर, सति सन्तोख उपांयदा।

३८५
०६

आदि जुगादी वसया, एका एकँकार। जुग जुग राह निराला दस्सया, पावणहारा सार। तीर निराला रिहा कसया, दहि दिशा करे शृंगार। शब्द सिँघासण बहि बहि हस्सया, पुरख अगम्मा अगम्मड़ी धार। दूर दुराडा आए नस्सया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार। वेखे रैण अन्धेरी मस्सया, चारों कुन्ट धूआँधार। पंच विकारा घर घर मन्दिर अन्दर वसया, ना कोई जाणे जीव गंवार। दूतां दुष्टां फड़ फड़ झस्सया, अन्तिम डोबे अद्ध विचकार। गुरमुख विरले हिरदे अन्दर वसया, हरि साजण मीत मुरार। कोटन कोट करे प्रकाश रव रवि सस्सया, जोती नूर करे उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां पावणहारा सार। भगत दुआरा धन्न है, हरि साचा वेख वखाणदा। एका राग सुणाए कन्न है, देवे खज़ाना सच्चे धन माल दा। भाण्डा भरम गढ़ हँकारी देवे भन्न है, अन्तिम वेला पुण छाण दा। भरम भुलेखा कढ्ढे जन है, वेख खेल निगाहबान दा। जन्त जीवां पंच विकारा लाए सन्न्ह है, लहिणा देणा चुक्के पीण खाण दा। राए धर्म देवणहारा डन्न है, लक्ख चुरासी वेख वखाण दा। गुरमुख विरले आत्म जाए मन्न है, मिले मेल श्री भगवान दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल दो जहान दा। दो जहानां हरि हरि वाली, साची बणत बणांयदा। धरत मात तेरा साचा पाली, आपे आप अख्वांयदा। शब्द वखाए जगत दलाली, वणज वपारा इक्क करांयदा। खेले खेल हक्क जलाली, अहिनल हक्क नाल रलांयदा। आपे होया हथ्थां खाली, सृष्ट सबाई मुख भवांयदा। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाली, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। फल ना दिसे किसे डाल्ही, लक्ख चुरासी कोई ना करे बन्द खुलासी, चित्रगुप्त लेख लिखांयदा। गुरमुख साचे चरन प्रीती निभे नाली, हरि साचा जोड़ जुड़ांयदा। नार दुहागण सुरत सवाणी मारे ताली, मनमुख अखाड़ा

३८५
०६

लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निज घर वेख वखांयदा। निज घर मेला शाहो शाबाश, साचा वक्त सुहांयदा। वेख वखाणे पृथ्वी आकाश, पुरीआं लोआं फेरा पांयदा। ब्रह्मा शिव होए उदास, सुरपति राजा इन्द मुख शरमांयदा। कलिजुग अन्तिम होए निरास, काला सूसा तन छुहांयदा। खेले खेल घनकपुर वास, ईसा मूसा फड़ हिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत तेरां पहली चेत्र साचा लेख लिखांयदा। साचा लेखा लिखणहारा, आदि पुरख अगम्मा। कलिजुग अन्तिम लए अवतारा, लक्ख चुरासी वेखे कर्मा। शब्द खण्डा तेज कटारा, चार वरन बणाए एका धर्मा। धरत मात तेरा इक्क अखाड़ा, नौ खण्ड पृथ्वी इक्क करना। आप उठाए अगम्मी धाड़ा, गुर गोबिन्द पया सरना। धुर दरगाही साचा लाड़ा, नीले घोड़े आपे चढ़ना। जीव जन्त पंज तत्त अग्नी साड़ा, ना कोई जीवत मरना। मगर लग्गी पंचम धाड़ा, मोह विकारे सड़ना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पुरीआं लोआं आपे वरना। पुरीआं लोआं पावे सार, लोचन नैण वखांयदा। ब्रह्मा शिव दए हुलार, लहिणा देणा चुकांयदा। सुरपति इन्द हो त्यार, वेला वक्त सुहांयदा। मातलोक प्रभ लए अवतार, एका डंक वजांयदा। शब्द खण्डा तेज कटार, राउ रंकां आप वखांयदा। राज राजानां करे ख़बरदार, शाह सुल्ताना आप अख्वांयदा। कल्गी तोड़ा नाम अपार, साचे सीस टिकांयदा। साचा घोड़ा सच्ची सरकार, एका एक रखांयदा। धुरदरगाही आपे बौहड़ा, वेख वखाए मिठ्ठा कौड़ा, ब्रह्मण गौड़ा वेख वखांयदा। दो जहानी लाए एका पौड़ा, सो पुरख निरँजण सो साचा नाम जणांयदा। नानक बुझाई आत्म औड़ा, दोए अक्खर रूप ध्यांअदा। पारब्रह्म प्रभ आत्म बौहड़ा, तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेखे दर, दर दुआरा इक्क खुल्हांयदा। दर दुआरा इक्क खुल्हाए नरायण नर अवतारा। चार वरन इक्क सरन बहाए, शब्द कराए तन श्रृंगारा। अमृत आत्म जाम प्याए, बख्शे चरन प्यारा। सोहँ सच्चा नाम जपाए, सतिजुग साची धारा। दूजा दोऊँ मिटाए, प्रगट होए विच संसारा। तीजा लोचन खोल्ह वखाए, जो जन मंगे बण भिखारा। चौथे घर मेल मिलाए, हरि सन्तां मीत मुरारा। पंचम अनहद शब्द वजाए, दिवस रैण सुणे धुन्कारा। छेवें छप्पर छन्न ना कोए रखाए, जोती नूर करे उज्यारा। सत्तवें सति पुरख निरँजण आदि शक्त आप समाए, एका एकँकारा। अठ्ठां तत्तां भेव ना राए, आपे वसया बाहरा। नौ द्वारे खोल्ह वखाए, मनमुख भुल्ले जीव गंवारा। दसवें गुरमुख विरला सोझी पाए, जिस जन बख्शे चरन प्यारा। आत्म गुझ भेव खुल्हाए, खोल्हे बन्द किवाड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मेल मिलाए दस्म दुआरा। दस्म दुआरा सच टिकाणा, गुरमुख विरले पाया। नौ द्वारे जगत मकाना, मनमति रही कुरलाया।

अट्ठां तत्तां तीर निशाना, एका नाम चलाया। सति पुरखा हरि गुण निधाना, सति सतिवादी नाम धराया। छे घर वेखे वेख वखाना, राज राजानां हरि रघुराया। निज सुणाए एका गाणा, साची सेवा लाया। चौथे घर पद निरबाणा, सरगुण निरगुण मेल मिलाया। बख्शे नेत्र दरस महाना, आत्म दरस आप वखाया। दूजे वेखे दो जहानां, आवण जावण रचन रचाया। इक्क अकाला हरि भगवाना, साचे आसण डेरा लाया। दूजा रखाना शब्द तीर कमाना, चारों कुन्टां रिहा हिलाया। पंचां वेखे जगत मैदानां, कलिजुग वेला वक्त सुहाया। चौथे बन्ने जन भगतां हथ्थीं गाना, सम्मत चौदां तेल चढ़ाया। पंचम फड़ाए हथ्थ धर्म निशाना, साची सेवा लाया। छेवें मेल श्री भगवाना, विछड़ कदे ना जाया। सत्त रंग झुलाए इक्क निशाना, सत्तां दीपां रिहा जणाया। अट्ठ सट्ठ तीर्थ मेट मिटाना, गंगा गोदावरी रहिण ना पाया। नौ दर मिटे जगत निधाना, लक्ख चुरासी ख़ाक रुलाया। गुरमुख साचा चतुर सुजाना, घर दसवें वेख वखाया। आत्म सेजा इक्क श्री भगवाना, आपणी हथ्थीं रिहा विछाया। जोती नूर जगे महाना, दीपक होर ना कोए रखाया। अनहद शब्द वजाए ढोल मृदंगा इक्क सुणाए साचा गाणा, ढोलक छैणा ना कोई वजाया। जन भगतां देवे दरस महाना, आपे गोपी आपे काहना, नारी कन्ता आप समाया। गुरमुख साचे मेल मिलाना, वेले अन्त दरस दिखाना, आप आपणी दया कमाया। नौ दर भुल्ले जीव नादाना, माया ममता मोह वधाया। अट्ठां तत्तां वेख वखाना, मन मति बुध रही कुरलाया। सत्तां वेखे कर ध्याना, सति सतिवादी आप रघुराया। छेवें छेड़े छेड़ वाली दो जहानां, पंचम जेठी लेख लिखाया। वाली हिन्द उठ नादाना, राष्ट्रपति प्रभ रिहा जणाया। पंचम जेठ बन्नया गाना, लाड़ी मौत मौली तन्द हथ्थ उठाया। उम्मत नबी रसूल आप पछाना, संग मुहम्मद चार यारी मता पकाया। नाल रलाए शाह ईराना, हरि अफगाना रूप वटाया। हिन्द हिन्दवानी खेल महाना, सोहँ चिल्ले तीर कमाना, आपणा खेल खिलाया। राष्ट्रपति भेव ना पाना, पंडत नेहरू रिहा भुलाया। इक्की चेत आवे दर परवाना, सम्मत चौदां भेव खुल्हाया। आपे वेखे मार ध्याना, जगत भगत साची शक्त दए वखाया। एका झुल्लणा सच निशाना, सत्त रंग चढ़ाया। अन्तिम टुट्टणा सभ दा माणा, सम्मत सोलां कोए रहिण ना पाया। हाढ़ सतारां दिवस महाना, माझा देस होए वैराना, मनमुख जीव कोए रहिण ना पाया। मुगल पठानी तीर कमाना, चार कुन्ट इक्क निशाना, पार किनारा इक्क ब्यास वखाया। गुरमुखां बख्शे चरन ध्याना, दर द्वारे देवे माणा, फड़ बाहों पार कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द मेल मिलाया। गोबिन्द गुर शब्द बलवान, हरि जोत करी कुड़माईआ। साचा मिल्या हाणी हाण, वरन गोत ना कोई रखाईआ। इक्क दूजे दी करन पछाण, कलिजुग रैण अन्धेरी छाईआ। शब्द सुणाए राग कान, अनहद धुन उपजाईआ।

जोती दीपक इक्क महान, राह साचा रही वखाईआ। गोबिन्द मंगे साचा दान, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। प्रभ अबिनाशी मेहरवान, साची भिच्छया झोली पाईआ। दो जहानां करे परवान, पूरन इच्छया आप कराईआ। ना कोई दीसे सखी सरवर सुल्तान, मुल्ला काज़ी शेख़ मुसायक दस्तगीर हकीर कोए रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी एका नायक, जन भगतां होए सदा सहायक, गोबिन्द नाउँ रखाईआ। गोबिन्द नाउँ नर निरँकार, गोबिन्द रंग समाया। शब्द चलाए अपर अपार, चार वरनां रिहा जणाया। चार वरन सुहाए इक्क द्वार, राउ रंकां भेव चुकाया। सम्मत चौदां बन्ने धार, एका इक्की इक्क कराया। साची सिक्खी अपर अपार, मदिरा मास रसन तजाया। वालों निक्की धारों तिक्खी, भेव किसे ना पाया। हत्थ ना आवे मुनी रिखी, ग्रन्थी पन्थी पढ़ पढ़ थक्के पंडत कांशी बहि बहि अक्के, वेद पुराणां दिस ना आया। गुर संगत गुर गोबिन्द बणाई भैण भाई सके, दूसर विच ना कोई रखाया। मनमुख जीवां पैण धक्के, पंचम जेठ नेड़े आया। प्रभ छेड़ छिड़ाए मदीने मक्के, बूरे कक्के मेल मिलाया। कलिजुग फल अन्तिम पक्के, मनमुख जीवां दए खवाया। शब्द नकेल पावे नत्थे, चारों कुन्ट दए फिराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द मेल मिलाया। गोबिन्द काया तन शृंगार, हरि पाए शब्द कटारया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, सोलां करे तन शृंगार, सोहँ खण्डा तेज कटार, हरि गोबिन्द आप उठा रिहा। मीरी पीरी एका धार, साचा सीरी मुख चुआ रिहा। वक्त अखीरी कलि संसार, जगत जंज़ीरी इक्क बंधा रिहा। कलिजुग तेरी चौथी पीहड़ी, जुग जुग नौ नौ जोड़ जुड़ा रिहा। आपणी हत्थीं तोड़े हड्डी रीड़ी, साचा खण्डा इक्क वखा रिहा। लक्ख चुरासी जाए पीड़ी, शब्द वेलणे आप पिड़ा रिहा। त्रैगुण माया तेरी अन्तिम सीड़ी, इक्की जेठ आप बणा रिहा। गुरमुखां पार कराए गली भीड़ी, सुखमन नाड़ी वेख वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द संग निभा रिहा। गोबिन्द दाता शब्द भण्डारा, एका एक अख्वांयदा। सृष्ट सबाई चरन भिखारा, दाता दानी आप हो आंयदा। पुरीआं लोआं पावे सारा, नाम निशानी इक्क वखांयदा। दूतां दुष्टां करे सँघारा, साची कानी चिले आप चढ़ांयदा। जुग जुग मारनहारा मारा, गगन पाताली वेख वखांयदा। खाणी बाणी कर त्यारा, आपे मेट मिटांयदा। जीव निधानी पावे सारा, मन मति विच कुरलांयदा। चतर सुजानी गए हारा, कलि मीत रहिण ना पांयदा। जिस जन बख्शे चरन प्यारा, धीरज सति धरांयदा। जोती नूर करे उज्यारा, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। अमृत कँवला एका वारा, साचा झिरना आप झिरांयदा। धरनी धरत धवला हरि निरँकारा, साँवल सँवला रूप वटांयदा। राम रामा लए अवतारा, कृष्ना काहना रूप वटांयदा। नानक गोबिन्द एका कारा, एका धन्दे लांयदा। पन्थ ख़ालसे रहिणा ख़बरदारा,

प्रभ साचा जोत जगांयदा। हरि मन्दिर वेखे चार दिवारा, चारे कुन्टां आप पछाणदा। साधां सन्तां पावे सारा, आप आपणे रंग रंगांयदा। आदिन अन्ता हरि भगवन्ता मीत मुरारा, साचा यार घर साचा वेख वखांयदा। भाण्डे काचे अन्ध अन्धयारा, घड़े भन्ने भन्नणहारा आप अख्वांयदा। गुरमुख जुग जुग थक्के मांदे, प्रभ आपणी गोद उठांयदा। चरन कँवल प्रीती साची बांधे, ना कोई तोड़ तुड़ांयदा। सतिजुग चढ़ाए साचे चांदे, आपणी बणत बणांयदा। ब्रह्मा शिव देवत सुर तेरा नाउँ गांदे, सोहँ रसन उचारदे। सन्त भगत सति पुरख निरँजण, दर तेरे विच आंदे जांयदे। चौथे घर मिले वर जाण तर, काया हँस तजाउँदे। शब्द डोरी फड़ हथ्थ, मिले मेल हरि समरथ, शब्द जणाए अकथना अकथ, लेखे लिख्त विच ना आउँदे। मनमुख जीव रहे सख, प्रभ का भेव ना सकण लक्ख, अन्तिम घर घर उडणे कक्ख, ना कोई किसे बचाउँदे। प्रगट होए हरि प्रतक्ख, भगत सुहेले लए रक्ख, पहली चेत्र साची रीती चरन प्रीती बहि बहि खुशी मनाउँदे। प्रभ दरस दिखाए नित नवित्त, सोए पूत हरि साचा आप उठाउँदे। वेख वखाए दहि दिशा चारे कूट, ब्रह्मण्डां खण्डां फोल फुलाउँदे। उत्भज सेत्ज जेरज अंडा पाई वंडा, साची वंड वंडाउँदे। मनमुख नार दुहागण रंडा, गुरमुख साचे सन्त सुहेले इक्क इकेले कन्त सुहागी आप हंढाउँदे। आपे गुर आपे चेले, गोबिन्द गुर गुर गोबिन्द मिले मेल दो जहानी सज्जण सुहेले, विछड़ कदे ना जांयदा। ना कोई पल्ले पैसे धेले, अचरज खेल हरि जी खेले, जुग जुग विछड़े करे इक्ट्ठे, आप बंधाए एका मुट्ठे, पारब्रह्म कलिजुग अन्तिम तुट्ठे, दयानिध दयावान हरि भगवान, एका देवे नाम निधान, धर्म झुलाए इक्क निशान, ना कोई मेटे मेट मिटांयदा। सर्ब जीआं प्रभ जाण, लक्ख चुरासी करे पछाण, धर्म राए तेरी अन्तिम फाँसी मनमुख पैंदे जाण, ना कोई किसे छुडांयदा। गुरमुख साचे बहि बहि गाण। काया मन्दिर सच मकान। नौ दर दिसे जगत दुकान। शब्द झुल्ले प्रभ साचे सीसे, बीस इकीसे खेल महान। वेख वखाए राग छतीसे तीस बतीसे रसन विखान। अञ्जील कुरानां खाली खीसे, संग मुहम्मद चार यार होए हैरान। अन्तिम लहिणा देणा चुक्कणा विच उनीसे, इक्क दूजे दी करन पछान। अल्ला राणी जूठा झूठा पीसण पीसे, कलिजुग आया लौहण मुकाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, उम्मत उम्मती देवे इक्क निशान। इक्क निशाना शब्द रसूल, हरि साचा रिहा जणाईआ। दीन मुहम्मदी कर कबूल, अल्ला हू वखाईआ। सदी चौधवीं चुक्कणा मूल, परवरदिगारा रिहा जगाईआ। शिव शंकर लए हथ्थ त्रिसूल, वेले अन्त जुदाईआ। ब्रह्मा उठे नेत्र खोल्ह वेखे कवण द्वारे कन्त कन्तूहल, बैठा जोत जगाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी सत्त दीप ना जाए भूल, लोकमात होए कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका शब्द लड़े लड़ाईआ। एका

शब्द जोद्धा बलवान, हरि साचा आप उठांयदा। सोहँ बख्शे तीर कमान, चिल्ले इक्क चढ़ांयदा। नाम निधाना पीण खाण, गढ़ हँकारी उच्चे टिल्ले आपे ढांयदा। गुरमुख बिठाए विच बिबाण, लोआं पुरीआं पार करांयदा। आपे होया चतुर सुजान, मूर्ख मूढ़ आप अख्वांयदा। आपे आत्म जोती ब्रह्म ज्ञान, अन्ध अज्ञानी आप हो आंयदा। आपे शब्द निशानी दो जहान, जुग जुग आप झुलांयदा। नानक गया दर दरबान, प्रभ आपणे गले लगांयदा। चरन द्वारे हरि भगवान, दोए जोड़ सीस झुकांयदा। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, शब्दी शब्द जणांयदा। नानक विटहो दर कुरबान, एका मंग मंगांयदा। साचा बख्शे जिया दान, जीव जन्त जगत कुरलांयदा। सतिनाम मन्त्र प्रधान, प्रभ साचा झोली पांयदा। आपे होया निगाहबान, गुर नानक सेवा लांयदा। सेवक सेवा करे महान, नीचो नीच सदांयदा। चार वरनां इक्क ज्ञान, मुल्ला काज़ी शेख़ आप समझांयदा। पंडत पांधे वड विद्‌वान, इक्क ज्ञान रखांयदा। सतिनाम कर प्रधान, लोकमात बणत बणांयदा। चारे कुन्टां वेख वखान, अगणत ना कोई गिणांयदा। आपे वेखे अन्तर मार ध्यान, बेअन्त बेअन्त बेअन्त पारब्रह्म वखांयदा। रेण धूढ़ साध सन्त, मस्तक टिक्का लांयदा। गुरमुख वड्‌याई जीव जन्त, जो जन गुर पूरे सेव कमांयदा। मेल मिलावा साचे कन्त, साची बणत बणांयदा।
३९० जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग भेख वटांयदा। नानक अन्तिम वेख विचार, एका नाम दृढ़ाया। ३९०
०६ काया चोली छड्ड प्यार, अंगद अंग लगाया। लहिणा गहणा तन अपार, साचा नाम चढ़ाया। भाणा सहिणा विच संसार, ०६
अमर निथावां अमर कराया। रामदास तेरा सच दरबार, चार द्वार चार वरनां आप खुल्हाया। गुर पूरा होया पहरेदार, शब्द जणाए गुर अर्जन बाण गुर ग्रन्थ साध सन्त इक्क इकन्त जीव जन्त कर बहाया। हरि गोबिन्द सागर सिन्ध, साची धारा इक्क चलाया। हरिराए हरि सरनाए, हरिकृष्न किसे ना दिसणा, बाल अवस्था हरि साचे मेल मिलाया। गुर तेग बहादर तेरी धर्म दी चादर, जीवां जन्तां गऊ ग़रीबां देवे आदर, दिल्ली दरबार अद्ध विचकार, आपणा सीस भेंट चढ़ाया। गुर गोबिन्दा घर न्यार। प्रभ अबिनाशी पावे सार। पंचम करे तन शृंगार। पंचम मेला विच संसार। आपे गुर आपे चेला, आपे बणया लेख लिखार। साध संगत तेरा सज्जण सुहेला, गुरमुख साचे रिहा उभार। जुगा जुगन्तर चाढ़े तेला, कन्त सुहागी जगत त्यागी भगत वैरागी आप बणाए साची नार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल अपर अपार। गुर गोबिन्द जोद्धा सूरा, वड बली बलकारया। लिख्या लेख करे पूरा, कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। आपे वसया नेड़े दूरा, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहरया। जन भगतां सद हाज़र हज़ूरा, कल्गी तोड़ा जोती जोड़ा शब्द सीस सजा दस्तारया। नाल रखाए नीला घोड़ा, पंचम जेठ उठाए पहला पौड़ा, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी सिर तेरे विच मारया। धुरदरगाही आए दौड़ा,

आपे वेखे मिट्ठा कौड़ा, शब्द हथौड़ा, एका हथ्थ उठा रिहा। ना कोई जाणे लम्मा चौड़ा, सम्बल नगर हरि आपे बौहड़ा, उच्चे मन्दिर साचे टिल्ले एका पौड़ा ला रिहा। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, वेद व्यासा दे भरवासा पुराण अठारां इक्क लक्ख हज़ार सतारां, सलोक सलोकां वेख वखा रिहा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, फड़े खण्डा नाम दो धारा, नौ खण्ड पृथ्वी पावे सारा, सत्तां दीपां दए हुलारा, ब्रह्मा रोवे हाहाकारा। शिव शंकर मंगे भिक्ख भिखारा। करोड़ तेतीसा ढहि पया दुआरा। विष्नूं तेरा खेल अपारा। हर घट वसया सभ तों बाहरा। भगवन जोती एका गोती, दुरमति मैल गई धोती, साचा मेल मिलाईआ। सृष्ट सबाई रही सोती, गुरमुख साचे माणक मोती, प्रभ सोहँ धागे साचा हार आप परोए, आपणे कंठ लगाईआ। आप जगाए साची जोती, ना कोई वरन ना कोई गोती, सिर रखाए शब्द सोटी, मनमुख जीव नेड़े कोई रहिण ना पाईआ। भरमे भुल्ले कोटन कोटी, गुरमुख विरला चढ़या चोटी, पुरख अबिनाश होए दासी दास, निज घर आत्म रक्खे वास, फड़ बांहो पार कराईआ। लेखे लाए स्वास स्वास, दरस दिखाए पृथ्वी आकाश, धुरदरगाही मेल मिलाईआ। जिस जन तजाया मदिरा मास, पुरख अबिनाशी घर में पाया। साचे मण्डल वेखे रास, गोपीआं काहन एका ताल वजाया। आपे गोपी आपे काहना, आप सुणाए नाम तराना, सुरत सवाणी संग रलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वेखे साचे दर, दर दुआरा वेख विखाया। दर दुआरा नेत्र वेख, गुरमुख बाल अञ्जाणया। पारब्रह्म प्रभ लिखणहारा लेख, ना कोई जाणे सुघड़ स्याणया। किसे दिस ना आए धारी केस, भेव ना पाए मूंड मुंडाणया। जोती शब्दी दस दस्मेस, आपे पहने आपणा बाणया। शब्द बणाया नर नरेश, साचा तख्त इक्क सुहानया। दर द्वार ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, दोए जोड़ बैठे सीस झुकानया। आपे जाणे आपणा वेस, खेले खेल दो जहानया। बाशक सेजा माणे महेष, सांगोपांग हंढानया। चार भुजां गवर्धन धारी रिखी केश, चतुर्भुज श्री भगवानया। जुग जुग लिखणहारा लेख, आप उपाए आप मिटाए, ना कोई दूसर संग रखानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक एका डंक वजाए राउ रंक सुणाए, भुल्ल रहे ना राए, किसे सौणा मिले ना विच मकानया। ना कोई मन्दिर ना मकान, अन्त विछोड़ा आया। कलिजुग माया झूठ मकान, दिन थोड़े वक्त लिखाया। इक्की जेठ खेल महान, प्रभ साचा रिहा लिखाया। मनमुख आपणा कीता आपे पाण, ना कोई दूसर होए सहाया। मात पित भाई भैण साक सज्जण सैण सर्ब तज जाण, ना कोई पल्लू दए फड़ाया। कलिजुग जीव जूठी झूठी ख़ाक रहे छाण, नाम अनमुल्ला किसे हथ्थ ना आया। प्रभ आपे होया बेपछाण, दरस खुल्ला ना किसे कराया। दर दर घर घर बैठे साध सन्त राह रहे तकान, निहकलंकी केहड़ी कूटे डेरा लाया। सम्बल नगर तेरा सुहाए

द्वार बंक, हरि साची जोत जगाया। उच्चे अटले महल्ले आप वजाए डंक, ओंकार दए सुहाया। अगम्म अगम्मा खेले खेल बार अनक, अलख अलखणा लेख लिखाया। प्रगट होया वासी पुरी घनक, पंजां तत्तां मेट मिटाया। सम्मत चौदां सृष्ट सबाई तेरे कढ्ढे शंक, जो जन दर आए वेखे घर नुहाए सर, ना जन्मे ना जाए मर, लक्ख चुरासी गेड़ कटाया। मनमुख जीव लए फड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, सभ दे अन्दर बैठा वड़, तोड़े किला हँकारी गढ़, शब्द खण्डा तेज कटार, आपणे हथ्थ रखाया। जीव जन्त करे ख्वार, देव दंत अन्तिम ख़ाक मिलाया। साध सन्त कर प्यार, एका देवे शब्द अधार, फड़ फड़ बाहों लाए पार, वंञ मुहाणा आपे रिहा चलाया। सुघड़ स्याणा ना कोई पावे सार, राजा राणा होए ख़बरदार, सम्मत पन्दरां वेख वखाया। सम्मत सोलां दर दर घर घर होए ख्वार, पुरख अबिनाशी तेरा राह सारे रहे तकाया। गुरमुखां मिल्या जगत मलाह, पारब्रह्म बेपरवाह, इक्क जपाए साचा नाँ, सोहँ धारा मुख चुआया। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, आपे पिता आपे माँ, गुरमुख साचे गोद उठाया। सदा सुहेला देवे ठण्ढी छाँ, शब्द सरूपी पर्दा पाया। दरस दिखाए थाँ थाँ, लेखा कोए रहिण ना पाया। गुरमुखां वंड वंडाई एका नाँ, प्रभ आत्म झोली दए भराया। पहली चेत्र फड़ फड़ बांह, एका इक्की मेल मिलाया। गुर गोबिन्दे करी हाँ, साची सिक्खी जोड़ी जोड़ जुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, साची घोड़ी चढ़ के आया। साची घोड़ी शब्द अपारा, हरि साचे आप बणाईआ। आपे होया शाह अस्वारा, चारे कुन्टां रिहा दुड़ाईआ। लोआं पुरीआं करदा आए ख़बरदारा, ब्रह्मा शिव देवत सुर आप हिलाईआ। नीली छत्तों आए बाहरा, नीले वाला साचा माहीआ। गल बस्त्र पीला, प्रभ मिलण दा कर लओ हीला, अन्तिम होए मात जुदाईआ। सम्मत चौदां पहली चेत्र प्रभ चढ़या छैल छबीला, जोती नूर करे रुशनाईआ। गुर संगत बणाए इक्क कबीला, एका इक्की पहली पाईआ। सिँघ दलीप नाम निधान दो जहानी रज्ज रज्ज पी ला, आवण जावण रिहा फंद कटाईआ। सृष्ट सबाई जोती अग्नी लाए तीला, चारों कुन्ट पए दुहाईआ। गुरमुखां मिल्या सोहँ शब्द वकीला, कलिजुग नाल करे लड़ाईआ। धर्म देवे इक्क इक्क दलीला, प्रभ चरन सच्ची सरनाईआ। आत्म बीज साचा बीअ ला, सोहँ रसना गाईआ। सम्मत चौदां वेखण आया नाल रलाया घोड़ा नीला, नीली धारों पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, रंग रंगाए लाल गुलाला, खेले खेल दीन दयाला, लच्छमी चरन झस्सण लाईआ। लच्छमी तेरा भूषण लाल, प्रभ साचे रंग रंगाया। जोती लाल इक्क अकाल, सति पुरख निरँजण आप अख्वाया। कंचन रूप हरि दलाल, शब्दी भेख वटाया। सूहा रंग वेखे बेमिसाल, साची धारी पार कराया। चिट्टी धारी दस्म द्वार, अद्ध विचकार लटकाया। पीले तेरा भेख अपार,

प्रभ आपे रिहा कराया। नीला बस्त्र तन अपार, मातलोकी वेख विखाया। काला सूसा कलिजुग तेरा तन श्रृंगार, प्रभ साचे लेख लिखाया। अन्तिम अन्त आई हार, ना कोई संग निभाया। जूठे झूठे मीत मुरार, बैठे मुख छुपाया। खाली होए काया ठूठे, अमृत जाम ना कोए प्याया। दर दवारिउँ बैठे रूठे, घर साचे ना कोई मेल मिलाया। धर्म राए फड़ टंगे पुट्ठे, अठाई कुण्डां कुण्डा लाहया। गुरमुख बणाए आप एका मुट्ठे, एका इक्की नाउँ रखाया। सन्त सुहेला आपे तुट्ठे, गुर चेले मेल मिलाया। गुर गोबिन्दे जो सरसे सुट्टे, प्रभ साचे जन्म दवाया। मनमुख जीव भेव ना जानण जूठे झूठे, लेखा आपणे हथ्थ रखाया। लुकया रहिण ना देवे कोई गुट्ठे, माझा मालवा देस दोआबा रिहा जगाया। तीर निराला एका छुट्टे, कलिजुग तेरी काली धार डूँघी जड़ फड़ फड़ पुट्टे, शब्द हलूणा रिहा लगाया। अन्तिम वारी जो सरसे सुट्टे, गुर गोबिन्दा लहिणा देणा रिहा चुकाया। गुरमुख लगाए साचे बूटे, सतिजुग तेरी सच फुलवाड़ी रिहा मात लगाया। सोहँ शब्द दवाए साचे हूटे, आप फिराए दहि दिशा चारे कूटे, आवण जावण पतित पावन लक्ख चुरासी गेड़ कटाया। जुगां जुगां दे विछड़े रूठे, प्रभ साचा मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, नर दाता वड दातार, देवणहार सर्ब संसार, जुग जुग भेख वटाया। कलिजुग भेख अवल्लड़ा, हरि जोती नूर सवाईआ। प्रगट होए इक्क इकल्लड़ा, ना कोई दूसर संग रखाईआ। भगत दुआरा एका मलड़ा, साचा डंका रिहा वजाईआ। आपे वसया निहचल धाम अटलड़ा, दिस किसे ना आईआ। जन भगतां दर द्वारे खलड़ा, सेवक सेवा रिहा कमाईआ। शब्द सुनेहड़ा अन्तिम कलिजुग घल्लड़ा, हरिजन सोए रिहा जगाईआ। सोहँ शब्द फड़ाए पलड़ा, सतिजुग साचा राह वखाईआ। दर दुआरा गुरमुख विरले मलड़ा, हरि चरन मिली सरनाईआ। कलिजुग अन्तिम बोलणहारा हल्लड़ा, सृष्ट सबाई वाहो दाहीआ। किसे हथ्थ ना आवे पैसा धेला दमड़ा, पिता पूत जुदाईआ। कलिजुग काया अग्नी लाए झल्लड़ा, लाट लिलाटी दूण सवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख चढ़ाए औखी घाटी, लेख चुकाए तीर्थ ताटी, सर सरोवर इक्क वखाईआ। तीर्थ तट्टां पार किनारा

कलिजुग अन्त करांयदा। ना कोई दिसे शिवदवाला मट्ठ, पूजा पाठ ना कोई विखांयदा। गुरमुख तेरा एका हट्ठ, चरन प्रीती साची रीत सिखांयदा। मन्दिर मस्जिद जाणे ढट्ठ, सम्मत सोलां नेड़े आंयदा। कलिजुग गेड़नहारा उलटी लट्ठ, आपणी हथ्थीं आप चलांयदा। पंचम जेठी करे इक्ट्ठ, सम्मत चौदां नींह रखांयदा। गुर संगत मेला नट्ठ नट्ठ, दर दुआरा इक्क विखांयदा। पंचम मीता कर इक्ट्ठ, साचा बेड़ा आप बंन्ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुखां देवण आया वर, घर घर फेरी पांयदा। घर घर सोए मात जगाए, गुरमुख साजण मीत। एका

सूत्र आप परोए, ऊँच नीच हस्त कीट, ना कोई हस्से ना कोई रोए, हरि शब्दी शब्द अनडीठ। जन भगतां फड़ फड़ मुखड़ा धोए, साचा पीसण रिहा पीठ। बिन गुर पूरे अवर ना जाणे कोए, कलिजुग काया कौड़े रीठ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, मनमुखां सुत्ता दे कर पीठ। मनमुख सोए जगत बेहाले, कलिजुग रैण अन्धेरी छाईआ। भेव ना पायण जोत अकाले, अकल कला वरताईआ। गुरमुखां मेला दीन दयाले, दर घर वज्जी वधाईआ। आपणा बिरद आप संभाले, जुग जुग काया पैज रखाईआ। मनमुखां मुख होए काले, निन्दक निन्दया मुख रखाईआ। पारब्रह्म तेरी अवल्लड़ी चाले, भेव कोए ना पाईआ। साचा मेला सच्ची धर्मसाले, गुर सतिगुर मेल मिलाईआ। तोड़नहारा जगत जंजाले, जुग जुग तोड़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आपे शाह आपे कंगाले, आप भिखारी दीन दयाले, देवणहार आप अख्वाईआ। देवणहार नाम निधाना, मंगे चरन प्रीती। शब्द बन्ने तन हथ्थीं गाना, सतिजुग साची रीती।

धर्म निशाना, काया करे पतित पुनीती। पंच सुणाए इक्क तराना, अमृत आत्म धारा सीतल सीती। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेले खेल जगत अनडीठी। हरि का खेल अनडीठ, भेद भेव अभेदया। साची गिरहा सवा गिट्ठ, अछल अछल्ल अछेदया। अमृत आत्म धारा एका मुट्ठ, हथ्थ ना आए चार वेदया। जीव जन्त साध सन्त आपणा झगड़ा आपणे घर नजिट्ठ, राह दस्से एका सीध्या। पारब्रह्म प्रभ सुत्ता दे कर पिठ, दरस होए ना नेत्र दीदया। माया ममता ताया मठ, तन मन ना आपणा चेतया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे एका वर, मिट्ठे करे कौड़े रीठया। एका इक्की इक्क महल्ला, एका कुल अख्वांयदा। इक्क वखाए धाम अटला, एका मुल्ल पवांयदा। वलीआ छलीआ अछल अछल्ला, अछल अछल्ल करांयदा। गुरमुखां फड़ाए आपणा पल्ला, दूई द्वैती सला मेट मिटांयदा। मेल मिलाए गोबिन्द डल्ला, सम्मत चौदां रुत्त सुहांयदा। शब्द फड़ाए हथ्थ विच भल्ला, आपणी दया कमांयदा। गुरमुख आत्म अन्तर रल्ला, जोती जोत समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, संगत देवे एका वर, पहली चेत्र थित सुहांयदा। पहली चेत इक्क प्रविष्टा, परम पुरख प्रभ पाया। चरन कँवल दृढ़ाए सच दृष्टी दृष्टा, एका इष्ट वटाया। मानस जन्म ना होए भृष्टा, लेखा लेखे लाया। आपे राम गुरू वशिष्टा, राम रामा रूप समाया। वेखण आया हरि हरि सृष्टा, जग सृष्टी मूल चुकाया। कागी काँ खायण विष्टा, अमृत फल ना कोए खवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे साचा वर, दर दुआरा इक्क वखाया। दर दुआरा इक्क सुहञ्जणा, एका एकँकारया। मिले मेल जोत निरँजणा, मोखी मोख अपारया। हरि दाता दर्द दु:ख भय भंजना, रोग

सोगां पार उतारया। चरन धूढ़ कराए साचा मजना, सर सरोवर इक्क इशनान करा रिहा। गुरमुख मीत मुरारे सज्जणा, दिवस रैण चरन ध्यान जणा रिहा। जो घड़या सो अन्तिम भज्जणा, घड़न भन्नणहार आप अख्वा रिहा। कलिजुग किसे ना पड़दा कज्जणा, ना कोई पड़दा पा रिहा। काल नगारा अन्तिम वज्जणा, लाड़ी मौत करे श्रृंगारया। चित्रगुप्त लेखा मंगणा, बहि बहि धर्म द्वारया। राए धर्म वेखे भाण्डा सक्खणा, रसना नाउँ ना मात उचारया। आपे करे फड़ फड़ वक्खना, देवे दुःख अपारया। बिन गुर पूरे किसे मात ना रक्खणा, ना कोई लाए पार किनारया। अन्तिम मुल्ल ना पैणा कक्खना, तन बस्त्र तन श्रृंगारया। गुरमुख साचे साचा शाहो नेत्र पेखना, दर्शन नेत्र नेती नैण अपारया। कलिजुग कूड़ कुड़यारा अन्यारा एका भखणा, चारों कूट धूआँधारया। प्रभ दया कमाए देस दक्खणा, दक्खण दिशा आप विचारया। आपे करे पच्छिम सक्खणा, निहकलंक लए अवतारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवणहारा वर, आप आपणे ढहि पया द्वारया।

३६५
०६
एका दूजा संग कर, सगला संग निभांयदा। दर दुआरा मंग मंग, भगत भिखारी आप अख्वांयदा। काया चोली रंग रंग, रंग गूढ़ा इक्क चढ़ांयदा। नौ द्वारे लँघ लँघ, प्रभ साचा दरस दिखांयदा। सेज सुहावणी इक्क पलँघ, पावा चूल ना कोई रखांयदा। दस्म द्वारी दित्ती टंग, बाडी कोई ना मात बणांयदा। चारों कुन्ट रखाई अमृत धारा गंग, सर सरोवर इक्क विखांयदा। गुरमुख सवाणी लाए अंग, अंगीकार हो जांयदा। मेटणहारा तृष्ना तम, दर शब्द आहार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची जुगत बणांयदा। जुगत जणाए जगत जोग, हरि दाता नाम भण्डारी। मेल मिलाए धुर संजोग, कलिजुग अन्तिम वारी। कट्टणहारा हउमे रोग, मेटे तन बिमारी। दरस विखाए इक्क अमोघ, हरि मेला दस्म द्वारी। सोहँ चुगाए साची चोग, माणक मोती भरी पटारी। आत्म सेजा माणे भोग, रस रसीआ आप निरँकारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए सच्चा दरबारी। सच दरबार तख्त सुल्तान, हरि मन्दिर आप बिराज्जया। दाता दानी मेहरवान, गऊ ग़रीबां देवे दाज्जया। रसना नाउँ इक्क विखान, अन्तिम रक्खणहारा लाज्जया। नाम निधाना पीण खाण, आपणा साजन साज्जया। दर द्वारे देवे माण, सरन सरनाई जो जन आए भाज्जया। मेट मिटाए राज राजान, दर दरबान किसे घर ना दिसे घोड़ा ताज्जया। सच सुच्च झुलाए इक्क निशान, अन्तिम मेटे मुल्ला काज़ीआ। गोबिन्द काया खेल महान, पड़दा पाया ग़रीब निवाज्जया। शब्द चढ़ाए इक्क बिबान, जन भगतां मारे अवाज़या। गुरसिख सोया उठ नादान, प्रभ रच्चया कलिजुग काज्जया। मिले जग हाणी हाण, इक्क वखाए दर दरवाज़या। माया राणी मोह

ममता तणया ताण, दर द्वारे बहि बहि करे नाचिआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार होया जवान, सृष्ट सबाई अग्नी दाज्जया। प्रगट होए हरि भगवान, चिट्टे अस्व आप संग निभाए साचे ताज्जया। सोहँ फड़े तीर कमान, नौ खण्ड पृथ्वी फड़ फड़ मारे गाज्जया। गुरमुखां देवे दरस महान, लेखा चुक्के कल कि आज्जया। सतिजुग तेरा सच ध्यान, सति पुरखां मेल ग़रीब निवाज्जया। दर दरवेशा दर दरबान, सेवक सेवा हरि घनकपुर वास्सया। सन्त सुहेले करे पछान, निज घर आत्म रक्खे वास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धरत धवल धरवास्सया। गुरमुख तेरी सच पुकार, धुरदरगाह कुरलाईआ। सति पुरख निरँजण किरपा धार, कलिजुग अन्तिम आवे वाहो दाहीआ। प्रगट होए विच संसार, गुर पीर देण गवाहीआ। निहकलंका वड्ड बलकार, हरि दाता बेपरवाहीआ। शब्द खण्डा तेज कटार, तन गात्रे आप लटकाईआ। निहकलंका वड बलकार, हरि दाता बेपरवाहीआ। राज राजाना करे ख़बरदार, शाह सुल्तानां मेट मिटाईआ। गऊ ग़रीबां पावे सार, ऊँचां नीचां भेव चुकाईआ। वरनां बरनां इक्क प्यार, साची सरना इक्क रघुराईआ। हरना फरना खोल्ह किवाड़, बजर कपाटी पार कराईआ। तीर निराला मारे मार, सोहँ मुखी इक्क रखाईआ। जोत अकाला विच संसार, दीन दयाला नाउँ रखाईआ। अग्नी खिच्चे जोत ज्वाला, हरि जोती जोत मिलाईआ। कलिजुग तेरा अन्त वज्जा ताला, सम्मत तेरां ख़ुशी मनाईआ। नानक गाया गुर गोपाला, रसना हरि गुण गाईआ। गुर गोबिन्द होया दलाला, पूत सपूता आप अख्वाईआ। पारब्रह्म तेरी अवल्लड़ी चाला, भेव कोए ना पाईआ। जुग जुग दस्से राह सुखाला, आपणी बणत बणाईआ। आपे शाह आपे कंगाला, धन माल आप अख्वाईआ। आपे फल लगाए डाला, फल फुलवाड़ी वेख वखाईआ। आपे होए हाल बेहाला, आपे ख़ुशीआं रिहा मनाईआ। आपे अट्ठ सट्ठ तीर्थ सुहाए ताला, आपे मेट मिटाईआ। कलिजुग अन्तिम आपे भाला, हरि वेखे थाउँ थाँईंआ। इक्क रखाए सच्ची धर्मसाला, दर द्वार बंक सुहाईआ। अट्ठ अठोतरी पाए माला, दो अक्खर वक्खर जाप जपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे मात वड्याईआ। हरिजन तेरी सच वड्याई, जुग जुग करदा आया। गुरमुख तेरी धन्न कमाई, पुरख अबिनाशी जुग जुग वेख वखाया। आत्म दर वज्जे वधाई, गुरमुख सोए रिहा जगाया। आप आपणी दे सरनाई, तृष्ना अग्ग रिहा बुझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां दर द्वारे मेल मिलाया। होए भाग वड सुभागी, पाया पुरख अगम्मा। बुझी दीपक जोत चिराग जगाया, आप संवारे आपणा कम्मा। माया डस्सणी ना डस्से नाग, जगत तृष्ना मेट मिटाए गमा। साचा मेला कन्त सुहाग हंढाए, ना कोई रोवे छम्म छम्मा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां एका नाम देवे साचा धना।

३६६
०६

जगत चोला काया तज, साचे तख्त बिराज्जया। सच सिँघासण बैठा सज, प्रभ साचा ग़रीब निवाज्जया। आपणा पड़दा आपे कज, गुरमुखां रक्खे लाज्जया। आपे घड़या आपे गया भज्ज, आप आपणे चढ़या जहाज़या। जगत सबंधी सारे तज्ज, जन भगतां रच्चया काज्जया। पंचम जेठी रिहा गज्ज, वड शाहो राजन राज्जया। प्रगट होया देस माझ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन जन जन हरि मारे आवाज़या। छुट्टा तन जगत प्यार, जोती जोत समाया। आप आपणी किरपा धार, आपणा रूप वटाया। सति पुरख निरँजण सांझा यार, एका एक अख्वाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, लिख्या लेख आपणे हथ्थ रखाया। सतिजुग साची बन्ने धार, साचा मार्ग लाया। सोहँ शब्द अपर अपार, धुरदरगाही लै के आया। वणज कराए इक्क वपार, एका दूजा भउ चुकाया। नर नरायण नर निरँकार, निरगुण रूप समाया। सरगुण तेरा शब्द प्यार, गोबिन्द पूत जगाया। तेग बहादर तेरी धार, आपे रिहा चलाया। पूत सपूता साचा वार, एका मार्ग रिहा वखाया। पुरख अबिनाशी आपे होया निराधार, तेरां साल भोजन कोए ना रसना लाया। तेरां साल निराधार, आपे नर निरंकारया। गुरमुखां रिहा पैज संवार, भोगी भोग इक्क करा रिहा। तृष्ना भुक्ख गुर संगत निवार, आप आपणा बिरद रखाया। सम्मत चौदां पावे सार, पहली चेत्र वेख विखाया। मीत मुरार सांझा यार, गुर गोबिन्द नाल रलाया। पंचम मीता इक्क दातार, पंचम संग निभा ल्या। सतिजुग साची बन्ने धार, साची सेवा आप कमा ल्या। एका इक्की एकँकार, दो जहानां आपे पा ल्या। दस्म द्वारी अद्ध विचकार, लोकमाती डेरा ला ल्या। दस घर उप्पर वेख विचार, त्रै दर भवा ल्या। सप्तम दर हरि निरँकार, आदि पुरख निरँजण आप अख्वा ल्या। अठवें करे जोत आकार, लाट लिलाटी इक्क विखा रिहा। नौवें रूप अगम्म अपार, अलख अलख लेख ना कोई लिखा ल्या। दसवां दस धुंआंधार, हरि साचे मुख छुपा ल्या। दस दस बीस हरि जगदीस, दो जहानां बणत बणा ल्या। साची सिक्खी इक्क इकीस, एका एक आप अख्वा ल्या। एका दूआ दूआ एका हरि जगदीस, अग्गे पिच्छे राह तका ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, लाल गुलाला साची जोती रंग एका एक विखा ल्या। आदि शक्त आदि भवानी, चोला लाल रंगाईआ। गुरमुखां वेखे साची भगत, जुग जुग पैज रखाईआ। आपे जाणे आपणी रंगत, ना कोई दूसर वेख वखाईआ। आप सुहाए साचा वक्त, हरि दाता बेपरवाहीआ। लेखे लाए बूंद रक्त, जिस जन साची सेव कमाईआ। कलिजुग कूड़ा चढ़या कटक, चारों कुन्ट पए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत चौदां तेरी धार हरि हरि कीता इक्क प्यार, गुरमुखां बणत बणाईआ। गुरमुख तेरी सच सलाह, हरि साचा आप पकांयदा। एका बणया जगत मलाह, दो जहानां पार करांयदा।

३६७
०६

लक्ख चुरासी कटे फाह, राए धर्म दर दुरकांयदा। इक्क जपाए साचा नाँ, सोहँ नाउँ रखांयदा। सो पुरख निरँजण पिता माँ, हँ हँगता आपणी झोली पांयदा। आपे फड़न आया बांह, गुरमुखां मेल मिलांयदा। गुर संगत तेरी ठण्ढी छाँ, गुर पूरा सीस झुकांयदा। कलिजुग अन्तिम घर घर उडणे काँ, इच्छया भिच्छया कोए ना किसे पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे साची सिख्या, दे मति आप समझांयदा। गुरमुख साची सिख्या, प्रभ साचा आप दवांयदा। हरि मंगणहारा एका भिच्छया, लाल चोली अग्गे डांयदा। रक्खणी लाज गुर पूरे दी करनी रक्खया, उलटी धार वहांयदा। आउँदा जांदा किसे ना दिस्सया, जन भगतां दरस दिखांयदा। सृष्ट सबाई दिसे मिथ्या, ना कोई तोड़ निभांयदा। भाग निभागा आपे लिख्या, मेटणहारा आप अख्वांयदा। नेत्र लोचन नैण हरि हरि साचा पेख्या, सम दरसी दरस दिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सम्मत चौदां पहली चेत्र साची ख़ुशी मनांयदा। सम्मत तेरां नानक धार, कलिजुग मात चलाईआ। आपे छुपया नैण मुँधार, उप्पर रिहा पड़दा पाईआ। पहली चेत्र हो त्यार, जगत सूसा दित्ता लाहीआ। गुरमुखां करे तन शृंगार, साची चोली रिहा रंगाईआ। सोहँ पड़दा अपर अपार, चारे कुन्टां रिहा उठाईआ। एका होया सेवादार, सेवक सेवा रिहा कमाईआ। गुरमुख तेरे दर भिखार, मंगण आया हरि रघुराईआ। भोग लग्गे तेरे लंगर द्वार, तोट रहे ना राईआ। किरपा कर अपर अपार, एका एक झोली पाईआ। प्रभ अबिनाशी करे प्यार, दो जहानां सहिज सुखदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, लोकमात तेरी सच निशानी, गुर गोबिन्दा बणया बानी, पल्ले साची गंढु बंधाईआ। गुरमुख तेरा नाम भण्डार, प्रभ आपणे पल्ले बन्नृया। ब्रह्मा शिव रहे पुकार, राह वेखण सूरज चन्नया। करोड़ तेतीस रिहा विचार, दोए जोड़ मंगे मंग्गया। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, कलिजुग मारन आया जिंदया। सतिजुग साचा खोल्ह किवाड़, दाता बणे आप बख़्शंदया। गुरमुख साचे दर द्वारे आपे वाड़, दूर दुराडा लेखा बंध्या। लेखा लग्गे सतारां हाढ़, मनमुख जीव चारों कुन्ट करन निन्दया। आप उठाए अगम्मी धाड़, सागर सिन्ध वहाए सिन्धया। अग्नी जोती देवे साड़, मन मति कोई ना रहे बन्दया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेले खेल भारत खण्ड ब्रह्मण्ड विच हिंदया। मांगे दान भगत निहकेवा, निरगुण निर्धन धारी। धन्न धन्न धन्न गुरसिख तेरी सेवा, तेरी पैज संवारी। एका इक्की लाए मेवा, वड दाता विच संसारी। कौस्तक मणीआ साचा थेवा, निर्मल जोत करे उज्यारी। रसना गाया हरि गुण जिह्वा, अन्तिम पैज संवारी। पारब्रह्म प्रभ अलख अभेवा, आदि अन्त जुगा जुगन्त एका एकँकारी। चरन दासी करोड़ तेतीसा देवी देवा, ब्रह्मा शिव होए भिखारी। विष्नूं बंसी इक्क

३६८
०६

दसेवा, भगवन जोती वड बलकारी। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साचा जन भगतां रिहा पैज संवारी। पैज संवार जगत गुर दाता, सोहँ नाम दृढ़ाया। गुरमुख आई उत्तम ज़ाता, ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलाया। मिल्या मेल हरि कमलापाता, धर्मी धरन धर्म कमाया। आपे पुच्छणहारा वाता, दिवस रैण आलस निन्दरा विच ना आया। सगला मीत होए पित माता, पिता पूत सपूता गोदी रिहा उठाया। जगत वणजारा साची दाता, आत्म झोली रिहा भराया। कलिजुग काया कप्पड़ पाटा, अन्तिम दए वखाया। चार वरन दिसाए एका हाटा, चौदां लोकां खोल्ह वखाया। सम्मत चौदां साचा बाटा, जन भगतां काया तन भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत तेरा दित्ता आपे खाया।

३९९ ०६

✻ २ चेत २०१४ बिक्रमी मनी राम दे घर इक्की परिवारां दा इक्ठ होया ते शब्द रहिमत कीती पिण्ड सिद्धम ज़िला अमृतसर ✻

आपे अन्दर आपे बाहर आपे गुप्त जाहरया। हरिजन वेखे काया मन्दिर, उच्च महल्ल अटारया। बजर कपाटी तोड़े जन्दर, सोहँ मारे तेज कटारया। जोत जगाए डूँघी कन्दर, कराए सच उज्यारया। मेल मिलाए अन्दरे अन्दर, साचा धाम सुहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी बणत बणा ल्या। बणत बणाए हरि बनवारी, जुग जुग रचन रचाईआ। रामा कृष्न नर अवतारी, द्वापर त्रेता पार कराईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, अकल कला वरताईआ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारी, वेद व्यासा जोड़ जुड़ाईआ। पुरख अगम्मा पावे सारी, अगम्मड़े धाम सुहाईआ। भगत सुहेला मीत मुरारी, जुग जुग मेल मिलाईआ। त्रेता विछड़े वड संसारी, कलिजुग राह विखाईआ। अन्तिम मेला चरन द्वारी, हरि साचा जोड़ जुड़ाईआ। ना कोई जाणे जीव गंवारी, भरमे भुल्ली लोकाईआ। नौ द्वारे पंचम धाड़ी, मनमुख जीवां रही सताईआ। गुरमुख साचे पौड़े चाढ़ी, प्रभ आपणी बणत बणाईआ। आपे होया पिच्छे अगाड़ी, दर दुआरा बंक सुहाईआ। जोत जगाए बहत्तर नाड़ी, दिवस रैण करे रुशनाईआ। नेड़ ना आए मौत लाड़ी, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। भाग लगाए काया मण्डल मण्डप माढ़ी, शब्द सिँघासण सेज विछाईआ। फड़ फड़ बाहों रिहा तारी, दस्म द्वारी मेल मिलाईआ। मानस मनुक्ख पावे सारी, नर नरैण रूप वटाईआ। शब्द सुणाए सच धुन्कारी, पंचम राग अल्हाईआ। अनहद गाए आपणी वारी, हरि साची सेवा लाईआ। जोत निरँजण कर उज्यारी, निरगुण खेल खिलाईआ। सरगुण तेरी पैज संवारी, मन मती मिले वड्याईआ। पारब्रह्म कल कर प्यारी, दर आवे कर कर धाईआ। जोत सरूपी वड संसारी, जोद्धा सूरबीर आप अख्वाईआ।

शस्त्र बस्त्र ना कोए विचारी, ना कोई हथ्थ उठाईआ। सोहँ खण्डा फड़ दो धारी, ब्रह्मण्डां खोज खुजाईआ। जेरज अंडां पावे सारी, उत्भज सेत्ज भेव ना राईआ। ब्रह्मा शिव खड़े द्वारी, दोवें बैठे सीस झुकाईआ। सुरपति राजा इन्द करे प्यारी, करोड़ तेतीसा रिहा जगाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, जगत जगदीसा आप अख्वाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी आप कराए चरन पनिहारी, सत्तां दीपां माण गंवाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां करे कराए हरि भिखारी, माण ताण रहिण ना पाईआ। गुरमुख सुहाए बंक द्वारी, द्वार बंका आप सुहाईआ। भगत जनां हरि पैज संवारी, राउ रंकां रिहा उठाईआ। प्रगट होए वासी पुरी घनका, सोहँ शब्द वजाए साचा डंका, लोआं पुरीआं रिहा सुणाईआ। गुरसिख तरे हरिभगत तराए जिउँ जन जनका, जोती नूर सुहाईआ। फेरनहारा मन का मणका, ममता मोह चुकाईआ। देवे नाम खज़ाना सच्चे धन धन का, तोट रहे ना राईआ। भरम भुलेखा कढ्ढे जन जन का, शब्द चोट तन नगारे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे सन्त जनां साचे शब्द करे कुड़माईआ। हरिजन तेरा सच द्वार, जुग जुग रहे वड्याईआ। पुरख अबिनाशी बण भिखार, मंगे वस्त पराईआ। ना कोई दिसे चार दिवार, उच्च महल्ले डेरा लाईआ। ओअँ सोहँ एकँकार, एका एक अख्वाईआ। इक्क कराए शब्द जैकार, चार वरनां रिहा सुणाईआ। ऊँचां नीचां इक्क द्वार, रंक राजानां शाह सुल्तानां एका धाम सुहाईआ। आपे तोड़े गढ़ हँकार, शब्द खण्डा हथ्थ उठाईआ। कलिजुग रोवे धाहां मार, ना होए कोई सहाईआ। सतिजुग साचा करे प्यार, प्रभ साचा राह तकाईआ। भगत जनां सद दए हुलार, आपणी गोद उठाईआ। पारब्रह्म प्रभ अगम्म अपार, भेव ना कोए पाईआ। सिँघ मनी तेरा सच द्वार, हरिसंगत रिहा वखाईआ। खेले खेल नर नरायण अवतार, निज घर बैठा आसण लाईआ। भरमे भुल्ले भरम गंवार, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। सच वस्त हथ्थ करतार, दूसर किसे हथ्थ ना आईआ। पहली चेत्र बण वरतार, आपणी सेवा रिहा कमाईआ। करे कराए अन्त भण्डार, लहिणा देणा मूल चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका अंक रखाईआ। एका अंक एकँकार, एका रंग रंगाया। एका डंक शब्द जैकार, लोआं पुरीआं रिहा सुणाया। सतिजुग तेरी बन्ने धार, सच्चा मार्ग रिहा लगाया। कलिजुग तेरा पार किनार, जूठ झूठ झोली पाया। प्रगट होए जोद्धा सूर बली बलकार, आप आपणा रूप वटाया। आदि शक्त दए ललकार, सति पुरख निरँजण सेवा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, खेल खेल जन भगतां मेल कलि कल रिहा वरताया।

आदि पुरख आदि गुरदेवा, एका एक अख्वांयदा। जुग जुग करे साची सेवा, सेवक सेव कमांयदा। अमृत आत्म फल रक्खे साचा मेवा, जन भगतां मुख लगांयदा। कौस्तक मणीआ साचा थेवा, मस्तक तिलक लगांयदा। नाम जपाए साची जिह्वा, साचे मार्ग लांयदा। पारब्रह्म प्रभ अलख अभेवा, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी बणत बणांयदा। आदि पुरख जोत निरँजण, एका एकँकारया। हरिभगत बणाए साचे सज्जण, मेल मिलाए विच संसारया। चरन धूढ़ कराए साचा मजन, दुरमति मैल दए उतारया। जूठे झूठे भाण्डे भज्जण, तोड़े गढ़ हंकारया। अनहद ताल नगारे साचे वज्जण, साचा ताल आप वजा रिहा। पारब्रह्म जन भगतां आया पड़दे कज्जण, कलिजुग लै मात अवतारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे बन्हे साची धारया। आदि पुरख जोत प्रकाशी, अकल कला भरपूरया। पारब्रह्म पुरख अबिनाशी, आपे वसे दूर नेड़या। भगत जनां हरि दासन दासी, सेवक सेवा करे भरपूरया। शब्द जणाए इक्क स्वासी, साची सेव कमा रिहा। काया मण्डप पाए रासी, उच्च महल्ले शब्द अटले दीपक जोत जगा रिहा। वेखे खेल घनकपुर वासी, भेव ना पायण पंडत काशी, वेद पुराणां गा रिहा। जन भगतां करे बन्द खुलासी, कलिजुग कटे अन्तिम फाँसी, राए धर्म आ समझा रिहा। लाड़ी मौत चरन दासी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा पल्लू नाम फड़ा रिहा। आदि पुरख आदि ना अन्ता, जुग जुग भेख वटांयदा। पकड़ उठाए साचे सन्ता, साचा मार्ग लांयदा। मनमुख जीवां माया पाए बेअन्ता, दिस किसे ना आंयदा। रोग लगाया हउमे हँगता, दर्द दुःख आपणे हथ्थ रखांयदा। हरिजन मेला साचे कन्ता, जुग जुग विछड़े मेल मिलांयदा। काया चोली रंगण रंगता, सोहँ भट्ठी इक्क चढ़ांयदा। दर द्वारे होए मंगता, प्रेम भिच्छया झोली पांयदा। आपे होया भुक्खा नंगता, हरिजन भण्डारा भरपूर करांयदा। अमृत आत्म जाम प्याए भेव ना पाए गोदावरी गंगता, अट्ठ सट्ठ तीर्थ दिस ना आंयदा। गौड़ ब्रह्मण वेद व्यास पूत सपूता, आपणी गोद उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लिख्या लेख लिखांयदा। आदि पुरख आदि भवानी, हरि जोती नूर सवाया। शब्द चलाए इक्क निशानी, जुग जुग भेख वटाया। जन भगतां मारे आत्म कानी, अज्ञान अन्धेर मिटाया। अनहद सुणाए साची बाणी, पंचम राग अलाया। अमृत आत्म ठण्ढा पाणी, दस्म द्वारी रिहा पिलाया। सेज रंगीली इक्क वखानी, सुरत सवाणी हाणी हाण मिलाया। जोत निरँजण खेल महानी, खेलणहारा दिस ना आया। दाता जोद्धा सूर वड बलवानी, दयावान अख्वाया। गुरमुख विरला चतुर सुजानी, घर साचा बूझ बुझाया। भरमे भुल्ले जीव नादानी, निज घर भेव कोई ना पाया। माया रुले वड विद्वानी, जगत विद्या मूल चुकाया। गुरमुख विरला दर द्वारे करे कुरबानी, गुर चरनी

सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखण आया दर, चारे कुन्टां वेख वखाया। कलिजुग तेरा दर दरवाज़ा, हरि साचा वेख वखांयदा। प्रगट होए ग़रीब निवाज़ा, दहि दिशा फोल फुलांयदा। जोत जगाए देस माझा, गुर गोबिन्दा भेख वटांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी रच्चया काजा, सत्तां दीपां फोल फुलांयदा। जन भगतां मारे अन्दर बहि बहि आवाज़ा, गीत सुहागी इक्क सुणांयदा। शब्द चढ़ाए सच जहाज़ा, सो पुरख निरँजण एका नाम लिआंयदा। मनमुख जीवां खोल्हे पाजा, सम्मत चौदां वेख वखांयदा। चिट्टा अस्व साचा ताजा, लोआं पुरीआं आप फिरांयदा। मातलोक तेरा करे हाजा, मक्का काअबा वेख वखांयदा। आपे शाह आप नवाबा, राजन राज आप अखवांयदा। आपे जाणे पुन्न सवाबा, भेद अभेदा भेव खुल्हांयदा। चरन घोड़े दे रकाबा, नीली धारी पार करांयदा। शब्द उठाए साचा बाजा, गोबिन्द संग रलांयदा। कल्गी तोड़ा जोती जोड़ा शब्द सरूपी साजन साजा, जगत जगदीसा साचे सीसा आप टिकांयदा। धुरदरगाही आया भाजा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग वेखे तेरा दर, दर दुआरा वेख वखांयदा। कलिजुग वेखे दर दरबान, चारों कुन्ट पछानया। जूठा झूठा जीव नादान, ना कोई जाणे ब्रह्म ज्ञानया। खाणी बाणी वेद पुराणी अञ्जील कुरानी पुण छाण, मिल्या मेल ना हरि भगवानया। गुरमुख साचे बाल अञ्जाणे जगत नादान, प्रभ देवे जिया दानया। नाम अनमुल्लड़ा एका पान, साचा मेला गुण निधानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा वेखे दर, दो जहानां मार ध्यानया। कलिजुग तेरी काली धार, रैण अन्धेरी छाईआ। गुर गोबिन्दा हो त्यार, प्रगट होए बेपरवाहीआ। सम्बल नगरी अपर अपार, बैठा आसण लाईआ। साचा खण्डा तेज कटार, तन गात्रे आप लटकाईआ। वढ्ढे कंडां मारे मार, वेद पुराणां भेव ना राईआ। खाणी बाणी रही पुकार, निहकलंक हरि निरँकार, आपणी कल वरताईआ। राउ रंकां करे ख़बरदार, राज राजानां रिहा उठाईआ। वाली हिन्द रहिणा त्यार, इक्की चेत्र दिवस सुहाईआ। लिख्या लेख आए दिल्ली दरबार, सम्मत चौदां भेव खुल्हाईआ। पंचम जेठी वड बलकार, चौदां लोकां वेखे थाउँ थाँईआ। ईसा मूसा आपे वेखे काला सूसा फोल फुलाए चीना रूसा, संग मुहम्मदी चार यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरा वेखे दर दरबार, लोकमात वखाईआ। कलिजुग तेरा दर दरबार, लोकमात वखांयदा। चारों कुन्ट कूड़ कुड़यार, हथ्थ खाली ठूठा आप वखांयदा। भरमे भुल्ले जीव जन्त साध सन्त गंवार, प्रभ साचा भेव कोई ना पांयदा। माया ममता काम क्रोध लोभ मोह हँकार, गुर का शब्द ना कोई रखांयदा। मात पित भाई भैण साक सज्जण सैण कर प्यार, नेत्र नैण दरस कोई ना पांयदा। दूर दुराडे बैठे रहिण, गुर दर अन्दर मन्दिर ना कोई आत्म सेजा चरन

टिकांयदा। शब्द सुनेहड़ा हरि जी भेजा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, वेखे दर धुरदरगाही आपे आंयदा। निहकलंक नरायण नर, आपणी कल वरताईआ। कलिजुग वेखे साचा घर, एका शब्द वज्जी वधाईआ। पुरख अबिनाशी मारे मार, दिस किसे ना आईआ। सम्मत चौदां कर विचार, पंचम जेठी वेख वखाईआ। मेट मिटाए अन्धेरी राता, राज राजानां शाह सुल्तानां रिहा मिटाईआ। सोहँ चिल्ले चढ़े समराथा, चारों कुन्ट करे लड़ाईआ। पारब्रह्म प्रभ नीकन नीका, दिस किसे ना आईआ। खेले खेल तीन लोका, त्रैलोकी नाथ आप अख्वाईआ। ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा, वेख वखाए थाउँ थाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग वेखे तेरा घर, गुर गोबिन्दा संग रलाईआ। गुर गोबिन्दा कर त्यार, प्रभ साचे संग निभाया। सम्बल नगर वेख विचार, जोती दीप जलाया। शब्द चलाए तिक्खी धार, सार कोई ना पाया। नौ द्वारे वसे बाहर, घर एका एक सुहाया। पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ी कार, हड्ड मास नाड़ी तेरे विच ना आया। सोहँ शब्द कराए जै जैकार, पुरीआं लोआं आप जपाया। सतिजुग बन्ने साची धार, सो पुरख निरँजण दया कमाया। हँ हँगता देवे मार, एका रूप वटाया। साची संगता इक्क प्यार, ऊँचां नीचां रंक राजानां शाह सुल्तानां एका धाम सुहाया। बन्ने हथ्थीं नाम गाना, साची तन्दी तन्द बंन्नाया। धर्म झुलाए इक्क निशाना, नौ खण्ड रिहा वखाया। जोत सरूपी पहरे बाणा, निहकलंका नाउँ रखाया। पारब्रह्म होए विष्नूं भगवाना, हरि भगवन रूप समाया। विष्नूं देवे साचा दाना, आत्म झोली इक्क भराया। लक्ख चुरासी पीणा खाणा, राजक रिजक सबाया। गोबिन्द पाया पद निरबाणा, पारब्रह्म सरनाया। नानक आया दर दरबाना, हरि साची भिच्छया झोली पाया। सतिनाम कर परवाना, लोकमात सुणाया। भरमे भुल्ले जीव नादाना, गुर पूरे ना मेल मिलाया। निहकलंक जोद्धा सूर बली बलवाना, कलिजुग अन्तिम दए मिटाया। पंज तत्त ना दिसे कोए निशाना, त्रैगुण माया मूल चुकाया। गुरमुखां करे दर परवाना, जुग जुग आपणा बिरद रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर रूप समाया। नर नरायण हरि निरँकार, जोत निरँजण इक्क जगाईआ। सति पुरख निरँजण मीत मुरार, सज्जण सैण अख्वाईआ। गुरमुखां मेला अद्ध विचकार, दस्म द्वारी रिहा मिलाईआ। आपे वसया सभ तों बाहर, हर घट आप समाईआ। नौ द्वार खोल्ह किवाड़, सृष्ट सबाई रिहा वखाईआ। अट्ठां तत्तां कर त्यार, मन मति बुध करी कुड़माईआ। सप्तम रूप हरि अपार, घर साचे आसण लाईआ। छेवें शब्द धुन धुन्कार, आपणी रिहा उपाईआ। पंचम मेला मीत मुरार, पवण पवणी रिहा समाईआ। चौथे घर सन्त दुलार, आपणा संग निभाईआ। तीजे खोल्हे बन्द किवाड़, नेत्र नैण दरस दिखाईआ। दूसर दोआँ मेटे धाड़, एका दूजा भउ चुकाईआ। इक्क इकल्ला एका

एकँकार, एका रंग रंगाईआ। गुरमुख साचे कर त्यार, दूजा दर खुल्हाईआ। तीजे खेल अपर अपार, दिवस रैण इक्क रखाईआ। चौथे मेला मीत मुरार, विछड़ कदे ना जाईआ। पंचम गायण वारो वार, अन्दर मन्दिर सेवा लाईआ। छेवें वेखे हरि करतार, शब्द शब्दी करे जणाईआ। सति पुरख निरँजण जोत अपार, निर्मल इक्क जगाईआ। अट्ठ अठोतर वेख विचार, अन्त सन्त समाईआ। नौ दर वेखे जगत किवाड़, लक्ख चुरासी भरम भुलाईआ। दसवें लेख सच्ची सरकार, शब्द सिँघासण आसण लाईआ। सन्त सुहेले वेखे उठ उठ वारो वार, लोकमाती राह तकाईआ। फड़ फड़ बाहों लाए पार, जोत निरँजण पहली बाती, आपणी आप जगाईआ। अमृत आत्म देवे बूंद स्वांती, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। मेल मिलाए कमलापाती, घर मन्दिर इक्क सुहाईआ। एका सेजा दिवस राती, प्रभ आपणे रंग रंगाईआ। अट्ठे पहर रहे प्रभाती, गुरमुख वेखण चाँईं चाँईंआ। धुरदरगाही देवे दाती, देवणहार आप अख्वाईआ। दुरमति मैल रिहा काटी, जन भगतां दया कमाईआ। साचा मन्दिर एका हाटी, चौदां हट्ट विखाईआ। अन्तिम लहिणा देणा चुकणा तीर्थ ताटी, अट्ठ सट्ठ मूल चुकाईआ। कलिजुग खेल बाज़ीगर नाटी, हरि सच स्वांग वरताईआ। गुरमुख विरला चढ़े औखी घाटी, सोहँ पौड़ा एका लाईआ। जगे जोत काया माटी, निर्मल नूर सवाईआ। मस्तक टिक्का तिलक लिलाटी, हरि आपणी हथ्थीं लाईआ। बजर कपाटी जिस जन पाटी, मिल्या मेल साचे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग वेखण आया तेरी शाहीआ। कलिजुग अन्तिम चौथा शाह, राजन राज अख्वाया। माया ममता पकड़ी बांह, जूठ झूठ सरकार रखाया। नाता तुट्टे पुत्तरां माँ, पिता पूत ना कोए जणाया। रैण अन्धेरी गई छा, काम क्रोध लोभ फिरे हलकाया। पारब्रह्म तेरा भुल्लया नाँ, हउमे हँगता रोग वधाया। दर दर पुकारे धरत माँ, दर अग्गे सीस झुकाया। चरन कँवल सद बलि बलि जाँ, जुग जुग पैज रक्खदा आया। कलिजुग जीव बुद्धि होई काँ, वांग काग रहे कुरलाया। ईसा मूसा फड़ फड़ खायण गाँ, हिन्द हिन्दवैणी जीव जन्त सताया। वेख विखाए थाँईं थाँ, नौ खण्ड पृथ्वी दीप सत्त तेरे अग्गे झोली डाहया। जन भगतां पकड़ी आपे बांह, दोए जोड़ आपणा सीस झुकाया। पुरख अबिनाशी कर दे हाँ, वेले अन्तिम कलिजुग नेड़े आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति रिहा समझाया। देवे मति हो दलेर, हरि साचा बणत बणांयदा। प्रगट होए सिँघ शेर दलेर, शेर सिँघ नाउँ रखांयदा। सृष्ट सबाई लए घेर, जोती खेल खिलांयदा। जगत मेटे अन्ध अन्धेर, दीपक इक्क जगांयदा। डगमगाए एका वेर, सम्मत सोलां लेख लिखांयदा। आप चुकाए मेर तेर, चार वरनां बूझ बुझांयदा। सृष्ट सबाई मारे भेड़ भेड़, गुरमुख साचे चरन बहांयदा। ईसा मूसा मारे घेर घेर, अल्ला राणी मुख छुपांयदा। धरत मात तेरा

खुल्ला वेहड़, अन्तिम कलि करांयदा। मनमुख जीव चुरासी गेड़, धर्म राए लेख लिखांयदा। आपे रिहा छेड़ां छेड़, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरा संग निभांयदा। कलिजुग काला वड बलवाना, अन्तिम कलि हंकारया। नाल रलाए पंज शैताना, कराए जै जैकारया। जीव जन्त कर नादाना, जूठ झूठ भरया तन भण्डारया। रसना रस ना कोई वखाना, मदिरा मास प्यारया। अमृत आत्म भेव ना जाना, ना मिल्या मीत मुरारया। धर्म ना बद्धा हथ्थीं गाना, जूठा झूठा तन श्रृंगारया। दर घर ना साचा इक्क सुहाना, खाली दिसण महल्ल अटारया। चौथा जुग वेख वखाना, प्रभ पावणहारा सारया। सतिजुग त्रेता पार कराना, कलिजुग अन्तिम आई तेरी वारया। राम कृष्न रहे निशाना, निहकलंकी खेल अपारया। शब्द जोद्धा सूर बली बलवाना, गुर गोबिन्दा नाउँ रखा रिहा। रसना मिले नीर महाना, सोहँ सो पढ़ा रिहा। उच्चे टिल्ले कक्के बिल्ले सारे हिले, फड़ उठाए कक्के बिल्ले, ना कोई किसे छुड़ा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरा वेखे घर, कवण द्वारे आसण ला रिहा। कलिजुग तेरा कवण टिकाणा, कवण द्वार सुहा रिहा। वेखण आए गुण निधाना, लोकमात लए अवतारया। एका देवे धुर फ़रमाणा, सम्मत चौदां रहिणा ख़बरदारया। पन्दरां आउणा विच मैदाना, राज राजानां करे ख़बरदारया। सम्मत सोलां मेट मिटाए निशाना, खेले खेल महाना, सम्मत सतारां तेल चढ़ानया। ना कोई दिसे जीव निधाना, अट्ठ अठारां खेल वखानया। जल धारा मेल मिलाना, उन्नी उनीसा मुल्ला शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर हकीर फ़कीर शाह सुल्तान कोई रहिण ना पावणा। बीसा बीस हरि जगदीस, पन्दरां कत्तक रुत्त सुहावणा। गुर तेग बहादर तेरा लेखे लाए सीस, चरन छुहाए दिल्ली दरबानया। नौ खण्ड पृथ्वी आपणा पीसण रही पीस, प्रभ साचा कलिजुग चक्की आप चलानया। सभ दे खाली होए खीस, माया राणी मुख भवानया। सोहँ छत्र झुल्ले प्रभ साचे सीस, वेखे खेल दो जहानया। मेल मिलाए इक्क इकीस, एका इक्की दर परवानया। साची सिक्खी राग सुणाए हरि छतीस, बीस बीस भेव ना जानण वेद पुराणया। लेखे लाए गुरमुख साचे सीस, चरन धूढ़ कराए इशनानया। पारब्रह्म तेरी कोई ना करे रीस, खाणी बाणी बहि बहि गानया। चार वरनां इक्क हदीस, एका अक्खर आप पढ़ानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सत्त रंग झुलाए जगत निशानया। सत्त रंग निशाना जाए चढ़, हरि साचा आप चढ़ांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी एका गढ़, अन्तिम आप बणांयदा। शब्द सरूपी अन्दर वड़, आपे वेख वखांयदा। आपे लए घाड़न घड़, आपे मेट मिटांयदा। राज राजानां शाह सुल्तानां लए फड़, लुकया कोई रहिण ना पांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, कलिजुग अग्नी ना जाए सड़, दिस किसे

ना आंयदा। ना कोई मढ़ी गोर मढ़, मठ शिवाला ना कोई रखांयदा। अक्खर वक्खर रिहा पढ़, ना कोई लेखा लेख लिखांयदा। जन भगतां जोत जगाए बहत्तर नड़, आकाश प्रकाश विखांयदा। शब्द सरूपी अग्गे खड़, दरस द्वारी दरस दिखांयदा। आप फड़ाए पल्लू लड़, सोहँ नाम धरांयदा। हौली हौली जाणा चढ़, सस्से किले मूंह तुड़ांयदा। होड़ा उप्पर लए फड़, सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण खेल खिलांयदा। हँ हँगता जाए मर, जो जन चरनी सीस निवांयदा। साची संगता जाए तर, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। धर्म राए आए दर, लहिणा देणा मूल चुकांयदा। जुग जुग देवे जन भगतां वर, साची भगती भगत करांयदा। ना जन्मे ना जाए मर, आदि शक्ती रूप वटांयदा। बूंद रक्ती एका धर, जीव जन्त उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरा वेख घर, अन्तिम फेरा पांयदा। अन्तिम फेरा एकँकार, एका एक रखाया। इष्ट दृष्ट हरि वेख विचार, सृष्ट सबाई फोल फुलाया।

हरि दाता मेहरवान, भगत तरांयदा। हरि दाता मेहरवान, शब्द जणांयदा। हरि दाता मेहरवान, दरस दिखांयदा। हरि दाता मेहरवान, गुरमुख उपजांयदा। हरि दाता मेहरवान, आत्म सुख विखांयदा। हरि दाता मेहरवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोग जुगत जणांयदा। जोग जुगत जगत अपार, आपणी आप रखाईआ। भगत सुहेला मीत मुरार, मेला मेल मिलाईआ। आवे जावे वारो वार, गुर चेला रूप वटाईआ। फड़ फड़ बाहों लाए पार, सज्जण सुहेला सहिज सुखदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया विच समाईआ। गोबिन्द गुर जगत जन चेला, आपे आप अख्वाया। पुरख अबिनाशी सज्जण सुहेला, मात पित बणाया। कलिजुग अन्तिम होए मेला, साचा लेख लिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नेत्र पेखण आपे आया। गुर गोबिन्दा बाल अञाणा, दर साचे हरि पुकारया। पुरख अबिनाशी देवे माणा, कलिजुग अन्तिम वारया। सिर ते सहिणा पैणा भाणा, खेले खेल खिलारया। दर द्वारे देवे माणा, एका एकँकारया। मेल मिलाए हाणीआं हाणा, बीस बीसा वेख विचारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे वर कन्त भतारया। कन्त भतारा साचा मीता, नर हरि आप अख्वांयदा। आप बणाए आपणी रीता, गुर गोबिन्दा संग निभांयदा। ना कोई देहुरा मन्दिर मसीता, गुर दर मन्दिर वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी परखे नीता, नित नित लेख लिखांयदा। जन भगतां देवे नाम अनडीठा, दिस किसे ना आंयदा। लक्ख चुरासी सुत्ता दे कर पिठा, आपणा मुख भवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोहँ सो साचा जाप सतिजुग झोली पांयदा। सोहँ सो

४०६
०६

साख्यात, हरि साची जोत जगाईआ। गुरमुख बणाए पार ज़ात, वरन गोत मिटाईआ। धुरदरगाही एका दात, पुरख अगम्मा लै के आईआ। हरिजन बंधाए चरन नात, विछड़ कदे ना जाईआ। आपे पिता आपे मात, आपणी गोद उठाईआ। नाथ अनाथां त्रैलोकी नाथ, दीना नाथ आप अख्वाईआ। जुग जुग निभाए सगला साथ, संगी साथी आप हो जाईआ। आप चलाए साचा राथ, जन भगतां रिहा चढ़ाईआ। लहिणा देणा मस्तक माथ, अन्तिम मूल चुकाईआ। कलिजुग सीआं साढे तिन्न हाथ, लक्ख चुरासी वंड वंडाईआ। प्रगट होए राम रमईआ जिउँ घर दसराथ, लंका गढ़ हँकार तोड़ तुड़ाईआ। काहना कृष्ना प्रान नाथ, द्वापर मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग डंक वजाईआ। कलिजुग अन्तिम डंक वजाए, निहकलंक नरायण नर अवतारा। रंक राजान शाह उठाए, करे कराए ख़बरदारा। साध सन्त प्रभ रिहा जगाए, वेखे अन्दर बाहरा। हरिजन साचे संग मिलाए, भरे नाम भण्डारा। दाता दानी आप हो जाए, जुग जुग लए अवतारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सुहाए बंक दुआरा। बंक दुआरा धन्न है, गुर मति बूझ बुझांयदा। सन्त सुहेला जाए मन्न है, साचे तत्त समांयदा। सोहँ देवे नाम सच्चा माल धन है, चोर यार ना कोए चुरांयदा। पंजां चोरां देवे डन्न है, डंका डौरू एका वांहयदा। भाण्डा भरम देवे भन्न है, भन्नृणहार आप अख्वांयदा। जोत जगाए साचे तन है, दीपक साचा इक्क विखांयदा। राग सुणाए साचा कन्न है, सुणनेहार आप हो आंयदा। जुग जुग बेड़ा रिहा बन्नृ है, आप आपणा भार उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति कमलापत, बहत्तर नाड़ी उब्बल रत्त है, आत्म धीरज साचा सति, सति सन्तोख सति आत्म झोली पांयदा। सति सन्तोखी शब्द ज्ञान, एका एक रखांयदा। पारब्रह्म प्रभ करे ध्यान, साचा मेल मिलांयदा। शब्द जपाए नाम निधान, लोआं पुरीआं पार करांयदा। आपे होया निगाहबान, अन्दर मन्दिर पैज रखांयदा। मनमती जीव आपणा कीता पाण, राए धर्म लेख लिखांयदा। गुरमुख साचे चतुर सुजान, रसना जिह्वा गुण रखांयदा। नाउँ निरँकारा एका गाण, गुणवन्ता हरि समझांयदा। अमरापद घर साचे पाण, परम पुरख मिलांयदा। शब्द अनादी वज्जे निधान, नाद अनादी आप वजांयदा। वेख वखाए सुणे सुणाए कान, भेद अभेदा विच समांयदा। खेले खेल आदि जुगादि, जुग जुग भेख वटांयदा। सन्त सुहेले लए लाध, आपणा मेल मिलांयदा। शब्द जणाए बोध अगाध, बोध अगाधा आप लेख लिखांयदा। धुरदरगाही देवे दान, मस्तक लेखा लहिणा मूल चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण रूप समांयदा। निरगुण रूप हरि निरँकार, निहकलंक अख्वांयदा। जोत सरूपी कर उज्यार, आपणा भेव छुपांयदा। शब्द वजाए डंक अपार, दिस किसे ना आंयदा।

गुरमुखां करे मात प्यार, आत्म ब्रह्म जणांयदा। सोलां करे तन श्रृंगार, तन इच्छया पूर करांयदा। नाम वजाए इक्क नगार, तन काया आप वजांयदा। तोड़े गढ़ जगत हँकार, उप्पर चढ़ वेख वखांयदा। दर द्वारे अग्गे खड़, दर दरसी दरस विखांयदा। पंच विकारे नाल रिहा लड़, गुरमुख साचा मार्ग पांयदा। बंक द्वारे जाए वड़, सच पल्लू नाम फड़ांयदा। पारब्रह्म प्रभ अग्गे खड़, आपणी गोद उठांयदा। लेखा चुक्के गोर मड़, गुरमुख गुर पूरे विच समांयदा। ना जन्मे ना जाए मर, आवण जावण फंद कटांयदा। साची तरनी जाए तर, नईआ नौका नाम चढ़ांयदा। एका सईआ लए वर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेल मिलांयदा। मेल मिलाए साचे शाहो, हरि भूपो भूप भुविन्दरा। दाता दानी बेपरवाहो, दर भिखारी इन्द्र इन्द्रा। गुरमुख रखाए थाँईं थाउँ, बजर कपाटी तोड़े जन्दरा। दो जहानी करे न्याउँ, मेले मेल काया मन्दिरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जन भगतां होए बख्शिंदड़ा। बख्शणहार दर्द दु:ख भंजन, पारब्रह्म बेअन्ता। हरिजन बणाए साचे सज्जण, मेल मिलाए साचे कन्ता। अमृत आत्म पी पी रज्जण, दिस ना आयण पंचम दंता। ताल नगारे साचे वज्जण, हरि साचा राग सुणंता। जोती जोत सरूप हरि, हरिजन जन हरि वेखे इक्क दर, घर साचा धाम सुहंता। घर सुहाया सहिज सुख, आत्म जोग कमाईआ। उज्जल होए जगत मुख, रसना भोग लगाईआ। सुफल कराए मात कुक्ख, धुर संजोग मिलाईआ। मेट मिटाए तृष्ना भुक्ख, सोहँ चोग चुगाईआ। मात गर्भ ना उलटा रुक्ख, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे रिहा तराईआ। हरिजन साचे पार किनारा, गुर पूरे चरन द्वारया। दो जहानी दए सहारा, सोहँ चप्पू नाल रखा रिहा। आए जाए दर दुआरा, साचा मेला मेल मिला रिहा। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, उच्चे टिल्ले पर्बत वेख वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां साचा राह तका रिहा। हरिजन साचे सन्त दुलार, प्रभ पूरन आस कराईआ। अन्तिम मेला विच संसार, इक्क इकेला वेख वखाईआ। गुर चेला सोहण दर द्वार, बंक दुआरा आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। निरगुण रूप नर निरँकार, सरगुण विच समाया। सरगुण साचा कर प्यार, शब्दी शब्द जणाया। साचा शब्द डंक अपार, निरगुण रिहा वजाया। सरगुण बोले विच संसार, रसना जिह्वा रिहा हिलाया। निरगुण नर हरि तेरी धार, निर्धन दए तराया। सरगुण ढहि पै द्वार, दर दरवेशा रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे धारी केसा, मेल मिलाए दस दस्मेसा, मूंड मुंडाया दिस ना आया। धारी केस ना मूंड मुंडाए, जोती नूर सवाया। मुच्छ दाढ़ी ना कोई रखाए, शब्दी तत्त बणाया। पंच तत्त

विकारी ना वेख वखाए, हड्ड नाड़ी मास भरम चुकाया। सति सतिवादी सति समाए, सति पुरख हरि रघुराया। आदि जुगादी आप हो जाए, जुग जुग भेख वटाया। कलिजुग तेरी लाज रखाए, लहिणा देणा मूल चुकाया। धरत मात तेरा भार उठाए, आप आपणी सेवा लाया। सतिजुग साचा मार्ग लाए, साचा राह वखाया। चार वरनां एका जाप जपाए, मन्त्र अन्तर इक्क रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, वर दाता आप हो जाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सेवक सेवा रिहा कमाया।

गोबिन्द जगत मलाह, मात अख्वाया। कलिजुग कटे फाह, दे मति समझाया। पंचम मीता एका राह, सखा सुहेला रिहा वखाया। दो अक्खर जपाए साचा नाँ, एका रूप समाया। पारब्रह्म बणी साची माँ, पूत सपूता गोबिन्द जाया। आपे फड़े हथ्थीं बांह, लोकमात रिहा उठाया। देवणहारा ठण्ढी छाँ, छप्पर छत्त ना कोई छाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जनणी जन आप अख्वाया। जनणी जणे पूत सपूता, गोबिन्द दया कमाईआ। वेख वखाणे चारे कूटां, भैणां भाईआ भेव चुकाईआ। कलिजुग काया माटी भाण्डा काचा जूठा झूठा, ना कोई पोच पुचाईआ। मनमुख जीवां हथ्थ खाली ठूठा, दर दर रिहा फिराईआ। गुरमुख विरला जुग जुग रूठा, कलिजुग अन्तिम मेल मिलाईआ। सतिगुर साचा पूरा तुठ्ठा, धुर दी बाण रखाईआ। एका इक्की इक्क कराए मुठ्ठा, बीस इकीसा हरि रघुराईआ। लक्ख चुरासी टंगे पुठ्ठा, राए धर्म हुक्म जणाईआ। लुकया रहे ना कोई गुठ्ठा, माया पड़दा देवे लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द साची सेव कमाईआ। गोबिन्द सेवा दर परवान, करे हरि निरंकारया। आपे वेखे मार ध्यान, कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। सृष्ट सबाई होए नादान, अज्ञान अन्धेर वधा ल्या। गुरमुख विरले दर घर साचा पाण, जिस जन आपणी दया कमा रिहा। साचा मेला मेल श्री भगवान, आत्म जोती शब्द ज्ञान आपे ब्रह्म वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया साचा घर, सर सरोवर इक्क वखा ल्या। सर सरोवर सच दुआरा, एका एक रखांयदा। ना कोई जाणे पार किनारा, दिस किसे ना आंयदा। गुरमुख विरला सन्त दुलारा, प्रभ आपणा तरस कमांयदा। शब्द सरूपी दए हुलारा, नौ दर पार करांयदा। दरस वखाए अगम्म अपारा, जोती मेल मिलांयदा। घड़े भन्ने भन्नणहारा, जुग जुग बणत बणांयदा। सतिजुग द्वापर त्रेता उतरा पारा, कलिजुग वक्त सुहांयदा। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, गुर गोबिन्द भेख वटांयदा। सम्बल नगरी धाम न्यारा, साढे तिन्न हथ्थ बणत बणांयदा। उच्च अटल महल्ल मुनारा, सच

दुआरा इक्क वखांयदा। जोती नूर कर उज्यारा, शब्द सरूपी साची धारा, पवणी पवण ना पायण सारा, लेखा लिख्त ना कोई लिखांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म इक्क दुआरा, शब्द सिँघासण अपर अपार, जोत अबिनाशण आपणा संग निभाए एका धाम सुहांयदा। गुरमुख तेरा धन्न द्वार, शब्द कराए वणज वपार, दो जहानी उतरे पार, हरि साचा मेल मिलांयदा। मेल मिलाए हरि गुणवन्ता, जुग जुग भेख वटांयदा। दर द्वारे साचे सन्ता, हरि भगवन्ता फेरा पांयदा। आदि जुगादी आदिन अन्ता, ब्रह्मादी खोज खुजांयदा। शब्द अनादी इक्क वजन्ता, अनहद सेवा लांयदा। गुरमुख साचे धाम सुहंता, फूलन सेज विछांयदा। आप आपणा मेल मिलंता, विछड़ कदे ना जांयदा। मेट मिटाए हउमे हँगता, साची संगता इक्क विखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगत द्वारे आए मंगता, एका मंगण मंग मंगांयदा। मंगण आए नर निरँकार, भगत सुहेले सज्जणा। दर दरवेशा बण भिखार, धूढ़ी वेखे मस्तक मजना। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहिर पावे सार, आपे होए पड़दा कज्जणा। भगत सुहेले जुग जुग मेले करे कराए ख़बरदार, जो घड़या सो अन्तिम भज्जणा। कलिजुग तेरी काली धार, चारों कुन्ट रैण अंध्यार, ना कोई दीसे मीत मुरार सजणा। गुरमुख विरले हरि हरि रसना रहे विचार, पारब्रह्म प्रभ पावे सार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, इक्क नगारा वज्जणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, भाग लगाए देस मज्झना। माझे देस गोबिन्द धार, शब्दी आप चलाईआ। निहकलंकी नर अवतार, जोती नूर सवाईआ। अछल अछेदा विच संसार, अकल कला वरताईआ। भरमे भुल्ले जीव गंवार, माया भरम भुलाईआ। गुरमुख विरला पावे सार, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। आपे मेले चरन द्वार, मस्तक धूढ़ छुहाईआ। मेट मिटाए अन्ध अंध्यार, ज्ञान ध्यान समझाईआ। हरिजन साचा मीत मुरार, घर साचे वेख वखाईआ। फल फुलवाड़ी अपर अपार, जुग जुग आप लगाईआ। सतिजुग साची बन्ने धार, आपणी बणत बणाईआ। एका इक्की एकँकार, इक्क इकल्ला रिहा पाईआ। पहली चेत्र दिवस विचार, हरिजन सोए रिहा जगाईआ। इक्क सुहाए बंक द्वार, दर दरबान आप हो जाईआ। शब्द कराए वणज वपार, भगत विच्चोला आप हो आईआ। नारी कन्ता मेल भतार, पीत पीतम्बर सीस टिकाईआ। गुरमुख सोभावन्ती नार, हरि रक्खे दर सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आत्म सेजा कर त्यार, फूलन बरखा लाईआ। आत्म सेजा सच टिकाणा, हरि एका एक बणांयदा। गुरमुखां देवे शब्द बिबाणा, राह साचा आप जणांयदा। आप आपणा मेल मिलाना, दूसर कोए ना संग रखांयदा। जोत सरूप श्री भगवाना, जोती बणत बणांयदा। शब्द सुणाए सच तराना, साचा ताल वजांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म साचा पाना, भाण्डा भरम भनांयदा। सोहँ बन्ने हथ्थीं गाना, साचा सगन मनांयदा। गुरमुख साचा नौजवाना,

प्रभ साचे घोड़ चढ़ांयदा। सईआं रल मिल मंगल गाणा, गीत सुहागी इक्क सुणांयदा। चरन धूढ़ सच्चा इशनाना, घर मजन आप अख्वांयदा। नेत्र सुरमा नाम पाणा, नैणी दरस दिखांयदा। सीस दस्तार शब्द महाना, लज पति आप रखांयदा। तन बस्त्र हरि इक्क छुहाना, उतर कदे ना जांयदा। बसन्त कन्त इक्क भगवाना, चोली रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचा काया डोली आपे आप बहांयदा। काया डोली कर त्यार, गुरमुख नारी आप बहाईआ। पारब्रह्म बण कुहार, आपणे कंध उठाईआ। सुरत सवाणी रोवे ज़ारो ज़ार, नौ द्वारे मुड़ मुड़ वेख वखाईआ। मन हत्यारा मीत मुरार, पचीसे दए दुहाईआ। बुद्धी सखी सखा सहार, बैठी संग तजाईआ। जोत निरँजण कर उज्यार, बैठा बूहा लाहीआ। गुरमुख साचा कर श्रृंगार, सोलां तन तन आप कराईआ। जोत सरूपी हरि करतार, अग्गे आवे वाहो दाहीआ। टेडी डण्डी बंक करे पार, आपणा पल्लू आप फड़ाईआ। बजर कपाटी देवे पाड़, झूठा घूंघट मुख चुकाईआ। साची लाड़ी नाल प्यार, बैठा उंगली लाईआ। साचा मेला मीत मुरार, घर आया मुड़ के धाहीआ। पंचम वेखण वारो वार, गावण चाँईं चाँईंआ। ढोल ढमक्का अनहद धार, साचा डंका आप लगाईआ। दस्म द्वारी सच दरबार, लाड़ी लाड़ा दोवें चाँईं चाँईं सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी अपर अपार, आपणा रूप वटाईआ। साची सेजा कर त्यार, शब्द सिँघासण नाउँ रखाईआ। चारों कुन्टां मार नगार, अमृत धारा इक्क वहाईआ। जोत निरँजण आत्म अमृत उत्तों वार, साची मात आप अख्वाईआ। साचे द्वारे अन्दर ल्या वाड़, पिच्छा वेखण मूल ना भाईआ। रलाई नाल पंचम धाड़, घर आपणे मुड़ मुड़ जायण वाहो दाहीआ। गुरमुख साचा करे प्यार, साची नारी कन्ता मेल मिलाईआ। कन्त भातारा मीत मुरार, आपणी गोदी रिहा उठाईआ। दोहां धिरां दा इक्क प्यार, भेव कोए ना राईआ। नाता तुट्टे हड्ड मास नाड़ी चम्म जम जंधार, हरि साचे दया कमाईआ। गुरमुख साचा पार किनार, प्रभ आपे रिहा कराईआ। दस्म द्वारी कढ्ढ बाहर, सुन अगम्म वेख वखाईआ। सुन अगम्मा काली धार, हरि आपणी वेख वखाईआ। चौथा घर वेख विचार, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। शब्द सरूपी साचा सस्सा चारों कुन्ट चार दिवार, चार दिवार एका किला बणाईआ। निरगुण सरगुण भेव निवार, एका रंग रंगाईआ। जीव हँगता ना कोई आकार, ना कोई रूप दिखाईआ। एका जोती शब्द धार, धार शब्द विच समाईआ। आप आपणी करे कार, एका दूजा भेव चुकाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, एका रंग वटाईआ। सन्त सुहेले आप वसाए सच दरबार, गुरमुख बणाए साचे चेले प्रभ चल्लया उंगली लाईआ। मेल मिलाए दर द्वार, ओंकारा देस सुहाईआ। सतिनाम तेरी सुण पुकार, चरन धूढ़ तेरे सीस टिकाईआ। पंचम घरों होया बाहर, छेवां वेखे हरि रघुराईआ। आपे शब्द आपे धुन्कार, आपे

४११
०६

धुन उपजाईआ। आपे होया सुनणेहार, दूसर कोई दिस ना आईआ। पारब्रह्म प्रभ किरपा धार, आपणा भेव खुल्हाईआ। सति पुरख निरँजण आदि जोत शक्त भवानी, नूरो नूर सवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर साचे बैठा आसण लाईआ। सति पुरख निरँजण सच टिकाणा, आपणा आप रखाया। ना कोई पुज्जे शब्द बिबाणा, घर छेवें बन्द कराया। सत्तवें बैठ श्री भगवाना, जोती नूर सवाया। जोती बख्शे सच तराना, शब्दी सुत उपजाया। शब्द सुत वड्ड बलवाना, पंचम राह तकाया। पंचम घर इक्क महाना, प्रभ आपणा खेल खिलाया। चौथा घर पद निरबाना, गुरमुख विरले सन्तां पाया। तीजा घर हरि दरबाना, दस्म द्वारी डेरा लाया। गुरमुख विटहों सद कुरबाना, जिन हरि साचा रसन ध्याया। चेत्र दो दिवस महाना, सम्मत चौदां लेख लिखाया। सिँघ मनी तेरा दर परवाना, प्रभ लेखे लए लगाया। साध संगत बख्शणा पीणा खाणा, अतुट्ट भण्डारा चलाया। चार जुग प्रभ मात चुणा, प्रभ साचे नाउँ धराया। अमृत आत्म ठण्ढा पाणी पीणा, सांतक सति वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर भिखार सेवक सेवक बण के आया।

४१२
०६

❊ ३ चेत २०१४ बिक्रमी इन्द्र सिँघ दे घर इक्की परिवारां दा इक्ठ होया अते शब्द दी रहिमत कीती पिण्ड बंडाला ज़िला अमृतसर ❊

दर द्वार एक है, पारब्रह्म सरनाई। चरन कँवले बख्शे साची टेक है, आदि अन्त होए सहाई। काया करे बुध बिबेक है, अमृत आत्म जाम पयाई। कलिजुग माया ना लाए सेक है, गुर पूरे पैज रखाई। आत्म अन्तर रिहा वेख है, बैठा आसण लाई। जुग जुग लिखणहारा लेख है, गऊ ग़रीब निमाणयां देवे आप वड्याई। आपे होया धारी भेख है, भेखाधारी हरि रघुराई। मेटणहारा काली रेख है, लेखा आपणे हथ्थ रखाई, इक्क इकेला नर नरेश है, चारे कुन्टां रिहा धाई। गुरमुख मेला दस दस्मेस है, आप आपणा रिहा कराई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बंक दुआरा रिहा सुहाई। बंक दुआरा सच घर, एका एक वखानया। पुरख अबिनाशी किरपा कर, देवे दरस महानया। चरन कँवल प्रभ अन्दर धर, धर धरनी लेख लिखानया। आवण जावण चुक्के डर, राए धर्म फंद कटानया। आपणी किरपा रिहा कर, दाता मेहरवान वड मेहरवानया। वेखणहारा पुरखा नारी नर, नर नरायण रूप अख्वानया। जन हरि नुहाए साचे सर, सर सरोवर इक्क महानया। नाम भण्डारा रिहा भर, देवे माण दो जहानया। हरि हरि भाणा लैणा जर, कलिजुग अन्तिम एह निशानया। जीवां

जन्तां साधां सन्तां वेख ना जाणा डर, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर एका देवे धुर फ़रमानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिलाए, आप आपणी दया कमाए, जगत विछोड़ा मेट मिटाए, जन चरन सरन जगत विकारा करे कुरबानया। जगत विकारा चरन भेंट, गुरमुख बाल अञ्जाणया। आपे बणया खेवट खेट, सोहँ रक्खया वंञ मुहाणया। आप होया मात पित बेटी बेट, पिता पूत आप अख्वाणया। शब्द दुशाले लए लपेट, गऊ ग़रीबां करे प्रितपालया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचा मीत मुरार, आप सुहाए बंक द्वार, दर द्वार करे परवानया। दर द्वार हरि सुहाए। साचा गढ़ बणाए। जोत सरूपी फेरा पाए। उप्पर चढ़ वेख वखाए। हेरा फेरा मात चुकाए। बाहों फड़ गले लगाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका इक्की साची सिक्खी आप आपणे अंग लगाए। साची सिक्खी लगाए अंग, अंगीकार अख्वांयदा। मानस जन्म ना होए भंग, मानुख लेखे लांयदा। काया माटी काची वंग, अन्तिम भन्न वखांयदा। शब्द घोड़े कसया तंग, गुरमुखां वेख वखांयदा। सृष्ट सबाई भुक्ख नंग, हरि का नाउँ किसे दर दिस ना आंयदा। गुरमुख पार किनारा जाए लँघ, प्रभ साचा पार करांयदा। साची मंग एका मंग, भेखाधारी भेख वटांयदा। दर दरबान लाए अंग, आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत तेरा साचा संग आप निभांयदा। गुरमुख दरस प्यास, एका एक रखाईआ। रसना गाए स्वास स्वास, गुर पूरा रिहा ध्याईआ। पुरख अबिनाशी होया दास, हरिभगत द्वारे आईआ। दर घर साचे पावे रास, साचा मण्डल इक्क सुहाईआ। लेखे लाए दस दस मास, आप आपणी दया कमाईआ। निज आत्म हरि घर रक्खे वास, निज घर दरस दखाईआ। मेल मिलाए सर्ब गुणतास, विछड़ कदे ना जाईआ। आप कराए आकाश प्रकाश, जोती नूर सवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे सेवा लाईआ। हरिजन साचा जागया, प्रभ साचा आप जगांयदा। कलिजुग माया रिहा तयाग्गा, मोह ममता जगत चुकांयदा। गुर पूरे सरन सरनाई लागया, सोहँ सो साचा जाप जपांयदा। जगत बुझाए तृष्ना आग्गा, निर्मल निर्मोह करांयदा। आप आपणे हत्थ पकड़े वागया, रथ रथवाही आप हो जांयदा। चरन धूढ़ बख्शे मजन साचा माघिआ, गुर संगत साचे सन्त आप बणांयदा। दुरमति मैल जन्म जन्म दे धोवे दागया, नाम रत्ती एका लांयदा। फड़ हँस बणाए कागया, साचे मोती सो चुगांयदा। माया डस्से ना डस्सणी नागया, साचा शब्द खण्डा हत्थ फड़ांयदा। धुरदरगाही आया भागया, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखांयदा। आप चलाए आपणी आग्गा, सद भाणे विच समांयदा। आपे सोया आपे जागया, जागरत दिशा वेख वखांयदा। एका एक सुणाए शब्द अनरागया, रागी नादी आप हो जांयदा।

अन्दर मन्दिर बहि बहि मारे आवाज़या, दिवस रैण जगांयदा। चिट्टा अस्व साचा ताज्जया, सोलां कलीआं आसण लांयदा। जोत जगाए देस माज्झया, सम्बल नगरी धाम सुहांयदा। इक्क चलाए नाम जहाज़या, सतिजुग साचा राह विखांयदा। शाह सुल्तान सूरबीर जोद्धा सतिगुर गाज्जया, दूसर कोई रहिण ना पांयदा। जन भगतां चरन कँवल कराए साचा हाज्जया, हाजी हज्ज आप अख्वांयदा। दो जहानी रक्खे लाज्जया, लाजावन्त आप हो जांयदा। हरिसंगत रच्चया तेरा काज्जया, एका इक्की एका वार एकँकार पांयदा। गुर गोबिन्दे मस्तक लेख लिखी, ना कोई मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण रूप सरगुण वेखे शाहो भूप, सच सुल्ताना आप हो आंयदा। सच सुल्तान नर निरँकार, निरवैर दो जहानया। भगतन करे इक्क प्यार, साची प्रीत आप वखानया। शब्द कराए तन शृंगार, बस्त्र गहणा तन पहनानया। जोत निरँजण कज्जल धार, नेत्र नैण करे मस्तानया। लोचन तीजा दए उग्घाड़, देवे दरस श्री भगवानया। मेट मिटाए पंचम धाड़, नेड़ ना आयण पंज शैतानया। गुरमुख साचे देवे चाढ़, दर घर करे परवानया। मनमुखां देवे जड़ उखाड़, सोहँ तीर लगानया। लक्ख चुरासी तेरा घाड़न घाड़, प्रभ अन्तिम भन्न विखानया। कोई ना दीसे लंका गढ़, हँकारी दुष्ट मेट मिटानया। जन भगतां जोत जगाए नाड़ नाड़, दिवस रैण वेख वखानया। राए धर्म रिहा वेख सतारां हाढ़, करे निबेड़ा श्री भगवानया। आप उठाए मौत लाड़, दाता जोद्धा सूर बली बलवानया। धरतमात तेरा इक्क अखाड़, हरि वेखे वेख वखानया। गुरमुख साचे साचे लाड़, दर घर करे परवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आपणा देवे धुर फ़रमानया। धुर फ़रमाणा साचा जाप, सतिजुग कल वरताईआ। देवणहारा आपे आप, जुग जुग बणत बणाईआ। मेट मिटाए तीनो ताप, जो जन रसना गाईआ। सृष्ट सबाई माई बाप, गुरमुख साचे पूत आपणी गोद उठाईआ। कलिजुग काया रही कांप, वेले अन्त दए दुहाईआ। गुरदर मन्दिर अन्दर मस्जिद भुल्ले जाप, अट्ठ सट्ठ तीर्थ दए दुहाईआ। माया ममता मोह विकारा वध्या पाप, धरत मात रो रो रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दा ल्या वर, इक्क खुल्हाया साचा दर, एका इक्की नींह रखाईआ। हरि जोती नूर अपार, भेव किसे ना पाया। शब्द रक्खी तिक्खी धार, एका एक चलाया। लोआं पुरीआं पावे सार, ब्रह्मण्ड खोज खुजाया। ब्रह्मा विष्न शिव किरपा धार, साची सेवा लाया। आप आपणी कर विचार, आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे विच टिकाया। जोती नूर नर निरँकारा, अकल कला भरपूरया। आदि पुरख अगम्म अपारा, आपे वसे नेड़े दूरया। जोत निरँजण कर उज्यारा, त्रैलोकां आसा मनसा पूरया। ब्रह्मा देवत सुर शिव दए हुलारा, नाद

४१४ ०६

अनादी शब्द वजाए साची तूरया। शब्द जणाए बोध अगाधी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए हाज़र हज़ूरया। आदि पुरख शब्द अनादी, एका एक वजांयदा। खेले खेल सदा ब्रह्मादी, भेव कोए ना पांयदा। गुरमुखां देवे नाम दादी, सच सुग़ात सुहांयदा। मेल मिलाए माधव माधी, अन्दर बैठ जोत जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, हरिजन सोए आप उठांयदा। गुरमुख सोया आप उठाए, आपणी कल धारया। शब्द सरूपी डंक लगाए, अनहद साची सेवा ला रिहा। पारब्रह्म प्रभ मेल मिलाए, जोत निरँजण तेल चढ़ाए, खेले खेल अपर अपारया। बजर कपाटी तोड़ तुड़ाए, साची हाटी इक्क वखाए, चौदां हट्टां पार कराए, तीर्थ तट्टां दिस ना आए, घट घटां हरि रिहा समाए, जोत जगाए काया मटा, जिस जन आपणी दया कमा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वर, बंक दुआरा इक्क सुहा रिहा। बंक दुआरा दर दरवाज़ा, प्रभ साचा आप सुहांयदा। शब्द रक्खे घोड़ा ताजा, जन भगतां वेख वखांयदा। जोद्धा सूर बली बलवान वड राजन राजा, दो जहानां आप अख्वांयदा। जुग जुग जन भगतां रक्खण आया लाजा, लाजावन्त आप हो आंयदा। सोहँ शब्द दए साचा दाजा, काया चोली रंग वखांयदा। खेल खिलाए देस माझा, हरि गोबिन्द मेल मिलांयदा। मनमुख जीवां खोल्हे पाजा, पड़दा कोए रहिण ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका डंक राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान वाली दो जहान आप हो आंयदा। राउ रंक राज राजाना, हरि साचा रिहा सुणाईआ। गोबिन्द मेला हरि भगवाना, जोती शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। ना कोई तीसर विच रखाना, आप आपणा मुख छुपाईआ। कलिजुग तेरा वक्त चुकाना, लहिणा देणा मूल मिटाईआ। चार यार संग मुहम्मद मेट मिटाना, अल्ला राणी दए दुहाईआ। वेद पुराणा मूंह छुपाना, ब्रह्मा नेत्र रिहा उठाईआ। खाणी बाणी होए हैराना, गोबिन्द जोती नूर सवाईआ। शब्द सुणाए इक्क तराना, ना कोई लिखे लेख लिखाईआ। जन भगतां देवे नाम निधाना, अमृत आत्म जाम प्याईआ। पंचम होए दर प्रधाना, पंचम बैठे मुख छुपाईआ। पंचम बद्धा कलिजुग गाना, पंचम रोवण मारन धाहीआ। गुरमुख विरले मिले हरि भगवाना, एका देवे शब्द निशाना, दूतां दुष्टां मार मिटाईआ। साचा राह इक्क वखाना, अन्दर मन्दिर ढोल मृदंग वजाना, जोत निरँजण सेवा लाना, अनहद राग अनादी ताल तलवाड़ा रिहा वजाईआ। पारब्रह्म खेल महाना, आत्म सेजा इक्क विछाना, साचा धाम सुहाईआ। जोत सरूपी बैठ भगवाना, गुरमुखां मेले मेल दो जहानां, दस्म द्वारी अद्ध विचकार शब्द सिँघासण उच्च महल्ले बैठा आसण लाईआ। गुरमुख मेला कन्त भतारी, मिल्या मेल एका वारी, विछड़ कदे ना जाईआ। साचे मन्दिर करे त्यारी, जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जुग जुग लए मात अवतारी। कलिजुग तेरा अन्तिम वेला, हरि साचा जोत जगांयदा। खेले खेल गुरू गुर चेला, गोबिन्द रूप वटांयदा। भगत जनां हरि सज्जण सुहेला, आपे आप हो आंयदा। लोकमात कराए साचा मेला, भेव अभेदा भेव खुल्ह्रांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, अछल अछेद भेव ना पायण चारे वेदा, लक्ख चुरासी भरम भुलांयदा। लक्ख चुरासी भरम भुला, कलिजुग कल वरताईआ। गुरमुख साचे लए मिला, आत्म ब्रह्म ज्ञान जणाईआ। राग अनादी रिहा सुणा, दिवस रैण जणाईआ। दीपक जोती इक्क जगा, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। धुन आत्मक ताल रिहा वजा, घर बैठा आसण लाईआ। चारे भुजा आप उठा, चतुर्भुज रूप वटाईआ। एका दूजा भेव चुका, एका रंग रंगाईआ। निजानंद दए वखा, जन भगतां दया कमाईआ। घर चौथे आपे दए बहा, सन्त सुहेले लए मिलाईआ। पंचम सेवा आपे ला, सेवादार अख्वाईआ। छेवें छप्पर छन्न ना कोई दिसा, हरि शब्दी बणत बणाईआ। सत्तवें सति पुरख रिहा समा, निर्मल जोती रिहा जगाईआ। अट्ठ तत्त ना कोई बणा, त्रैगुण माया दिस ना आईआ। नौ दर ना दीसे जगत निशान, ना कोई बणत बणाईआ। आपे वेखे मार ध्यान, जन भगतां दस्म द्वारी मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द काया वेख वखाईआ। गोबिन्द काया रंग महान, हरि साचा आप चढ़नया। निहकलंक लए अवतार, सम्बल नगरी डेरा बन्ह्रया। ना कोई दीसे चार दिवार, मनमुख जीवां आत्म अन्नयां। कलिजुग रैण अन्ध अंध्यार, सच दीसे ना कोई चन्नया। गुरसिख विरला कर प्यार, प्रभ गढ़ हँकारी भन्नया। शब्द जणाए जै जै जैकार, दिवस रैण सुणंनया। जोती दीपक कर उज्यार, अज्ञान अन्धेरा भन्नया। साचा मेला पुरख भतार, नारी कन्ता एका धाम विखंनया। साची सेजा दए हुलार, घर घर एका एक सुहंनया। अमृत आत्म प्याए ठण्ढा ठार, आप आपणा बेड़ा बन्ह्रया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी देवे डन्नया। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, हरि साचा वेख वखांयदा। चारों कुन्ट जीव हँकारी, माया भरम भुलांयदा। जूठा झूठा तन श्रृंगारी, मन हँगता रोग वधांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म ना पायण सारी, भरमे भरम भुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरसिख साचे मेल मिलांयदा। गुरमुख साचे सज्जणा, हरि मेला मेल मिलाए। चरन धूढ़ कराए मजना, अट्ठ सट्ठ रिहा मूल चुकाए। काल नगारा एका वज्जणा, राए धर्म डौरू वाहे। लाड़ी मौत घर घर बहि बहि नच्चणा, तन रही श्रृंगार कराए। जो घड़या सो भज्जणा, रहिण कोई ना पाए। ना दीसे मक्का काअबा काज़ी हज्जना, शेख़ पीर मुसायक दस्तगीर शाह, हरि दाता बेपरवाह अन्तिम दए मिटाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,

निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरा वेख दर, सम्मत चौदां चौदां हट्ट वेख वखाए। तीर्थ तट्ट गुरु दर मन्दिर अन्दर मस्जिद हरि साचा फोल फुलाए। तीर्थ तट्ट पार किनारा, कलिजुग दए दुहाईआ। गंगा गोदावरी रोवे जारो जारा, ना कोई होए सहाईआ। अंजील कुरानां पैणी मारा, ईसा मूसा बैठण मुख छुपाईआ। वेद पुराणां आई हारा, वेद व्यासा ब्रह्मा रिहा समझाईआ। खाणी बाणी जगत विचारा, नानक गया गाईआ। तेरां धार सम्मत तेरां रिहा तुलाईआ। सम्मत चौदां वेख विचारा, प्रगट होए हरि निरँकारा, शब्द रक्खे तिक्खी धारा, वाली हिन्द रहिणा ख़बरदारा, हरि साचे जोत जगाईआ। शब्द खण्डा तेज़ कटारा, लक्ख चुरासी पार किनारा, लक्ख चुरासी पावे सारा, लोआं पुरीआं रिहा भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, धरत मात तेरा वेख घर, इक्क अखाड़ा रिहा बणाईआ। धरत मात तेरा इक्क अखाड़ा, हरि साचा आप बणांयदा। पंचम जेठ उठाए धाड़ा, ना कोई मेट मिटांयदा। त्रैगुण माया अग्नी साड़ा, पंचम तत्त मेट मिटांयदा। मनमुख जीवां मगर लग्गे धाड़ा, मन मति बुध ना कोई रखांयदा। शब्द उठाए अगम्मी धाड़ा, गुर गोबिन्द सेवा लांयदा। सृष्ट सबाई आप चबाए आपणी दाढ़ा, आप आपणा खेल खिलांयदा। गुरमुख बणाए साचा लाड़ा, शब्द घोड़े आप चढ़ांयदा। आपे होया पिच्छे अगाड़ा, डूँघी कन्दर पार करांयदा। खेले खेल जंगल जूह उजाड़ पहाड़ां, उच्चे टिल्ले पर्बत आप हिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, निहकलंक डंक वजांयदा। निहकलंक डंक अपार, हरि साचा आप वजांयदा। राउ रंकां करे ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पांयदा। साधां सन्तां नेत्र रिहा उग्घाड़, माया पड़दा लांहयदा। सन्त सुहेले दर घर साचे वाड़, काया खेत्र जोत जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाए सम्मत चौदां पहली चेत्र नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां मारे मार, हरि साचा बणत बणांयदा। पंचम जेठ दिवस विचार, लेखा वेख वखांयदा। देस प्रदेसां करे ख़बरदार, पंडत नैहरू विच विच्चोला आप रखांयदा। प्रगट होया मीत मुरार, साचा सज्जण राम रामा रूप वटांयदा। प्रगट होए कृष्न घनईआ, इक्क चलाए साची नईआ, ना कोई पावे सार, कलिजुग तेरा वक्त चुकांयदा। ना कोई संगी साथी सईआ, ना कोई मेल मिलांयदा। नाता तुट्टा भैणा भईआ, साक सज्जण सर्ब छुडांयदा। राए धर्म कढ्ढे वहीआ, चित्रगुप्त लेख लिखांयदा। सम्मत सोलां हाढ़ सतारां, इक्क तारीख लिखांयदा। नाता तुट्टे भैण भईआ, पिता पूत मात पित ना कोई मिलांयदा। गुरमुख विरला मात रहीआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका राह विखांयदा। सृष्ट सबाई एका राह, वरन चार जणाईआ। शब्द सरूपी हरि मलाह, कलिजुग नईआ आप चलाईआ। सन्त

सुहेले पकड़े बांह, आपे लए उठाईआ। सोहँ सो जपाए साचा नाँ, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। हँ हँगता दए मिटा, एका दूजा रहिण ना पाईआ। सस्सा किला इक्क सुहा, चार द्वारी वेख विखाईआ। एका होड़ा उप्पर ला, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। साचे घर दए बहा, एका धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां एका रंग रंगाईआ। एका रंगण रंग रंगाए, पारब्रह्म बेअन्ता। भगत जनां हरि संग निभाए, सदा सुहेला साधन सन्ता। जगत तृष्ना भुक्ख नंग कटाए, मेट मिटाए हउमे हँगता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप हो आया। नर नरायण हरि बनवारी, आपे आप अख्वांयदा। निर्मल जोती कर आकारी, शब्दी डंक वजांयदा। दहि दिशा करे ख़बरदारी, चारे कूटां आप हिलांयदा। सच सुल्तान तख्त ताज वड दरबारी, दो जहानां आप अख्वांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, लोकमात वेख वखांयदा। संग मुहम्मद चार यारी, वेला वक्त चुकांयदा। ईसा मूसा कर ख्वारी, काला सूसा तन पहनांयदा। गोबिन्द नानक एका धारी, एका रंग रंगांयदा। प्रगट होए वड्ड संसारी, जोती जामा भेख वटांयदा। गौड़ ब्रह्मण पूत सपूता, सति सतिवादी आप हो आंयदा। वेद व्यासा लेख लिखारी, इक्क लक्ख हज़ार सतारां सलोक रखांयदा। गुर गोबिन्दा वड बलकारी, सम्बल नगरी धाम सुहांयदा। तीर खण्डा नाम कटारी, तन गात्रे आप लटकांयदा। कल्गी तोड़ा सीस अपारी, जोती जोड़ा शब्द मिलांयदा। साचा घोड़ा शब्द उडारी, नीला नीली धारों पार करांयदा। पहला पौड़ा रिहा मारी, त्रै देसां मेट मिटांयदा। सम्मत चौदां वेख विचारी, थित वार आपणे हथ्थ रखांयदा। भरमे भुल्ले जीव गंवारी, साध सन्त भेव ना पांयदा। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारी, ब्रह्मा अट्ठे नेत्र वेख वखांयदा। शिव शंकर बणे दर भिखारी, सुरपति राजा इन्द रो रो नीर वहांयदा। करोड़ तेतीसा करे विचारी, प्रभ हथ्थ किसे ना आंयदा। नौ खण्ड पृथ्वी पावे सारी, सत्तां दीपां मेल मिलांयदा। पुरीआं लोआं वसे बाहरी, गुरमुख हिरदे डेरा लांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म रिहा विचारी, अगम्मे धाम सुहांयदा। नाड़ी चम्म ना करे प्यारी, मन मति बुध ना कोई रखांयदा। शब्द सरूपी इक्क उडारी, आवे जावे वारो वारी, निहकलंक नरायण नर, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, जगे जोत एका एक एकँकारी। एका एक एकँकारा, अकल कला वरतांयदा। कलिजुग तेरा पसर पसारा, कूड़ो कूड़ मिटांयदा। मेट मिटाए धुँदूकारा, अन्त रहिण ना पांयदा। सतिजुग मंगे मंग दुआरा, अग्गे झोली डांयदा। पुरख अबिनाशी किरपा धारा, चोली नाम भरांयदा। सतिजुग देवे इक्क प्यारा, लोकमात वेख वखांयदा। बीस बीसा होए वरतारा, पन्दरां कत्तक थित विखांयदा। जगत जगदीसा नर निरँकारा, दिल्ली चरन छुहांयदा। सीस गंज धाम अपारा,

जमन किनारा पार करांयदा। वाली हिन्द ढहि पया दुआरा, चरनी सीस झुकांयदा। सत्त रंग निशान दए हुलारा, चवी हथ्थ आप चढ़ांयदा। सत्त दीप बन्ने एका धारा, साची बणत बणांयदा। कलिजुग काले हारा, दे मति ना कोए समझांयदा। शब्द कराए इक्क जैकारा, सोहँ नाउँ रखांयदा। चार वरन सोहण इक्क दुआरा, ऊँचां नीचां मेट मिटांयदा। राज राजानां शाह सुल्तानां बणन भिखारा, प्रभ साची भिच्छया झोली पांयदा। सीस छत्र इक्क अपारा, जगत जगदीस आप झुलांयदा। इक्क इकीस दए हुलारा, सृष्ट सबाई वेख वखांयदा। गुरमुख बणाए साची नारा, कन्त कन्तूहल आप हो जांयदा। सतिजुग चले सच बहारा, फल फुलवाड़ी मात लगांयदा। सम्मत सम्मती पार किनारा, लहिणा देणा मूल चुकांयदा। सतिजुग तेरा सच पसारा, प्रभ आपणी हथ्थीं मात लगांयदा। आपे बणे जगत वरतारा, झोली सच भरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, विष्नूं विष्नूं इक्क अख्वांयदा। गुरमुख सदा सुरजीत है, ना मरे ना आए। चरन कँवल जिस जन लागी प्रीत है, लक्ख चुरासी फंद कटाए। प्रभ परखणहारा नीत, है, घट घट अन्दर वेख वखाए। काया मन्दिर देहुरा मसीत है, अहिनल हक्क शब्द अलाए। मेल मिलाए जगत जुगत अनडीठ है, दिस किसे ना आए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले लए वर, नारी कन्त आप हो जाए। गुरमुख सन्त साजण दर, आपणी दया कमांयदा। चरन दुआरा साचा घर, एका राह विखांयदा। आवण जावण चुक्के डर, धर्म राए मुख छुपांयदा। इक्क नुहाए साचे सर, दुरमति मैल धवांयदा। गुर संगत मिल जाणा तर, दो जहानी पार करांयदा। आदि जुगादी देवे वर, लिख्या लेख ना कोई मिटांयदा। लहिणा देणा अग्गे धर, पिछला मूल चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख देवे साचा वर, वेले अन्त मिले कन्त हरि प्रतक्ख लए रक्ख स्वच्छ सरूपी दरस वखांयदा। शब्द गुर तख्त सुल्तान, तन मन्दिर आप बिराज्जया। आपे होया निगाहबान, जन भगतां रक्खे लाज्जया। नेड़ ना आयण पंज शैतान, हरि रक्खणहारा लाज्जया। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान हरिजन गान, दर द्वारे धुरगाही आवे भाज्जया। दरस्म द्वारी सच मकान, हरि बैठा ग़रीब निवाज्जया। आत्म अमृत देवे पीण खाण, आप आपणा साजन साज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा भगत वर, वड शाहो राजन राज्जया।

पारब्रह्म प्रभ पुरख अपार। सति पुरख निरँजण जोत अधार। आदि अन्त एकँकार। शब्द शब्दी वणज वपार। रूप अनूपा शाहो भूपा, सच सच्ची सरकार। वेख विखाए चारे कूटां, दहि दिशां पावे सार। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, आपे करया पसर पसार। आदि पुरख पारब्रह्म अबिनाशी, अकल कला भरपूरया। काल महांकाल करे चरन दासी, आसा मनसा पूरया। गुरमुख वेखे शब्द स्वासी, अनाद अनादी देवे साची तूरया। मेल मिलाए पृथ्वी आकाशी, आपे होए नेड़े दूरया। कलिजुग अन्तिम मेटण आया मदिरा मासी, जूठा झूठा डोबे पूरया। पकड़ उठाए पंडत काशी, त्रैगुण माया वेख विखासी, खेले खेल हाज़र हज़ूरया। गुर पूरे सद बलि बलि जासी, जन भगतां देवे साचा नूरया। भगत जनां हरि साचा मीता, जुग जुग बणत बणांयदा। आप चलाए आपणी रीता, महिंमा गणत ना कोई जणांयदा। कलिजुग परखणहारा नीता, हरिजन सोए मात उठांयदा। सोहँ शब्द सुणाए सुहागी गीता, अक्खर वक्खर नाउँ धरांयदा। जन हरि होए पतित पुनीता, रसना जिह्वा सेवा लांयदा। चरन कँवल इक्क प्रीता, एका राह विखांयदा। लक्ख चुरासी परखे नीता, निज घर आत्म डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे सन्त दुलार, चरन प्रीती बख्श प्यार, फड़ फड़ बाहों पार करांयदा। गुरमुख साचे मीत मुरार, दर घर करे परवानया। नौ द्वारे वेख द्वार, देवे शब्द गुण निधानया। शब्द डंक अपर अपार, मेट मिटाए पंज शैतानया। पंज शैतानां आई हार, पंचम खुशी मनानया। सुरत सवाणी करे ख़बरदार, आप आपणा रंग रंगानया। जोत निरँजण सेवादार, दीपक जोती इक्क जगानया। राह वखाए एकँकार, ओंकार रूप वटानया। शब्द धुन अपर अपार, आत्म धुन उपजानया। पंचम गायण वारो वार, अनहद साची बाणीआ। ओअँ रूप होए करतार, भेव ना जानण वेद पुराणया। त्रैगुण माया वसया बाहर, जोती शब्दी खेल महानया। गुरमुख साचे मेल मिलार, आत्म सेजा इक्क सुहानया। दस्म द्वार खोल्ह किवाड़, बजर कपाटी आप तुड़ानया। मेट मिटाए झूठी धाड़, सोहँ मारे तीर निशानया। सो पुरख निरँजण पावे सार, गुरमुख साचे चतुर सुजानया। आपे मेले मेलणहार, घर चौथे आप बहानया। एका दूजा भउ निवार, सुरती शब्द शब्द सुरत एका रंग रंगानया। जीव जन्त ना कोई पावे सार, हरि का खेल महानया। नाम सति दर वणज वपार, घर पंचम खोल्ह वखानया। एका रूप अनूप सति सतिवादी एका धार, एका धाम सुहानया। अलख अलखणा आपे जाणे आपणी सार, ना कोई लेख लिखानया। अगम्म अगम्मा आप सुहाए बंक द्वार, महल्ल अटल अचल्ल इक्क रखानया। सति पुरख निरँजण एका जोती कर उज्यार, धूआँधार सर्ब मिटानया। खाणी बाणी वेद पुराणी अञ्जील कुरानी गुर पीर ना पावे कोई सार, प्रभ साचा खेल महानया। आदि जुगादी कर पसार, आपे मेटे मेटणहार, आपे उत्पत आप करानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर मन्दिर इक्क सुहानया। घर मन्दिर हरि सुल्तान, आपणा आप बणाया। जोत नुरानी इक्क निशान, चारे कुन्टां रही डगमगाया। राग नाद ना कोई गान, सुर ताल ना कोई वजाया।

ना कोई वेख विखान, दूसर कोई दिस ना आया। आदि पुरख आदि शक्त श्री भगवान, एका तख्त सुहाया। सच महल्ला इक्क मकान, चार दिवार ना कोई रखाया। छप्पर छन्न ना कोई वखान, बाडी सेवादार ना कोई कराया। आप आपणी किरपा धार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी बणत बणाया। बणत बणाए हरि बनवारी, आपणा रूप वटांयदा। आप आपणी पैज संवारी, आपणा राह विखांयदा। आप रचाए महल्ल अटारी, दर द्वार वेख वखांयदा। लोआं पुरीआं खेल न्यारी, अगम्म अगम्मा अगम्मे धाम सुहांयदा। ब्रह्मा शिव गणेश देवत सुर ना कोए पुजारी, नारी नर कोई दिस ना आंयदा। जोत सरूपी जोत कर अकारी, आप आपणे अंग लगांयदा। आपे कन्त हरि भतारी, आपे नारी रूप वटांयदा। आपणी सेजा करे प्यारी, आपे आप हंढांयदा। दो जहानां वसया बाहरी, दिस किसे ना आंयदा। आपणी इच्छया आप उचारी, आपणा मार्ग लांयदा। जोती माता कर त्यारी, शब्दी सुत उपजांयदा। शब्द सुत वड्ड बलकारी, प्रभ चरनी सीस झुकांयदा। प्रभ अबिनाशी रिहा सतिकारी, वरभण्डी राह विखांयदा। कोटन कोट ब्रह्मण्डां पावे सारी, साची वंडा वंड वंडांयदा। लोआं पुरीआं करे ख़बरदारी, मात पाताल आकाश वेख वखांयदा। ब्रह्मा शिव दए अधारी, सुरपति राजा इन्द आप जणांयदा। लोकमात करे ख़बरदारी, नौ खण्ड सत्तां दीपां आप जगांयदा। लक्ख चुरासी कर्म विचारी, लेखा लिखणहार आप हो जांयदा। आपे ढाहे लए उसारी, आप आपणी बणत बणांयदा। आपे राधा कृष्न होए अवतारी, आप आपणे विच समांयदा। साध सन्त गुर पीर औलीए शेख़ मुसायक दस्तगीर, सेवक सेवादार साची सेवा लांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म खेल न्यारी, भेव कोई ना पांयदा। नानक निरगुण रिहा उचारी, बेअन्त बेअंत कहांयदा। गोबिन्द बणया दर भिखारी, दोए जोड़ सीस झुकांयदा। आदि पुरख सभ तों वसया बाहरी, हर घट आसण लांयदा। जमना गंगा जुग जुग रिहा पैज संवारी, भेखाधारी भेख वटांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, निहकलंकी जामा पांयदा। शब्द खण्डा तेज कटारी, सोहँ नाउँ रखांयदा। सो पुरख निरँजण पावे सारी, हँ हँगता जीव मिटांयदा। आपे बणे वड संसारी, भगत भण्डारी आप अख्वांयदा। नाम निधाना देवे वारो वारी, आत्म झोली आप भरांयदा। दर द्वारे गऊ ग़रीबां आपे रिहा पैज संवारी, सिँघ इन्द्र गोद उठांयदा। चौथा दर ना पायण सारी, जुग जुग विछड़े मेल मिलांयदा। मिल्या मेल कन्त साची नारी, आत्म सेजा इक्क विछांयदा। फूलन बरखा लाए भारी, साची सेवा लांयदा। तन बस्त्र पहनाए अपर अपारी, सोहँ साचा चीरा सीस धरांयदा। कल्गी तोड़ा हथ्थ गिरधारी, साचा टिक्का मस्तक लांयदा। गुरमुख साचे रिहा तारी, जुगत आपणे हथ्थ रखांयदा। भरमे भुल्ले जीव गंवारी, माया पड़दा पांयदा। गुर संगत हरि कर प्यारी, सेवक सेवा आप कमांयदा। चार वरनां इक्क द्वारी, सतिजुग साचा राह विखांयदा। ऊँच नीच

राउ रंक आप सुहाए बंक द्वारी, राज राजानां शाह सुल्तानां ख़ाक मिलांयदा। सतिजुग तेरी बन्ने धारी, साचा मार्ग लांयदा। कलिजुग रोवे ज़ारो ज़ारी, वेला अन्तिम आंयदा। धरत मात दर रहे पुकारी, प्रभ साचा दया कमांयदा। चित्रगुप्त लेख लिखारी, कढु हिसाब विखांयदा। धर्म राए खोल्हे बन्द किवाड़ी, लक्ख चुरासी तेरा राह तकांयदा। लाड़ी मौत करे श्रृंगारी, हथ्थीं मैहन्दी रंगण इक्क रंगांयदा। अन्तिम मेला सतारां हाढ़ी, मनमुख सईआं इक्क दूजे नाल मिलांयदा। धर्म राए तेरी फले फुल्ले फल फुलवाड़ी, जूठ झूठ पाणी एका पांयदा। तोरी जाए पिच्छे अगाड़ी, सम्मत चौदां नींह रखांयदा। गुरमुख विरले आप तराए जिन्हां चरन छुहाई दाढ़ी, लोकमात तजांयदा। दस्म द्वारी बैठा रिहा ताड़ी, दिवस रैण आप समझांयदा। जोत जगाए बहत्तर नाड़ी, अन्ध अज्ञान मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे नाम वर, वर दाता आप अख्वांयदा।

❋ ४ चेत २०१४ बिक्रमी मस्सा सिँघ दे घर इक्की परिवारां दा इक्कु होया ते शब्द दी किरपा कीती पिण्ड नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ❋

४२२ दाता दानी मेहरवान, एका एक अख्वांयदा। जन भगतां वेखे मार ध्यान, जुग जुग बणत बणांयदा। धर्म झुलाए इक्क ४२२
०६ निशान, आपणा संग निभांयदा। नाम बिठाए सच बिबाण, पुरीआं लोआं पार करांयदा। इक्क जणाए धुर फ़रमाण, साचा ०६
शब्द मिलांयदा। चरन कँवल बख्शे जिस ध्यान, आत्म ब्रह्म जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग जुगती आपणी आप वटांयदा। भगत सुहेला साचा मीता, हरि हरि गोबिन्दा। वेख विखाणे हस्त कीटां, आपे जाणे दुष्ट दुराचार जो करन निन्दा। गुरमुख विरले नाम निधान अमृत मदि पीता, दूई द्वैती तोड़े जिंदा। साचा राग शब्द इक्क अल्हाए, अनहद साची सेवा लाए, वेख वखाए अठारां ध्याए गीता। पारब्रह्म प्रभ भरम चुकाए, एका राग कन्न सुणाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भाग लगाए काया देहुरा मन्दिर मसीता। काया मन्दिर सच दुआरा, हरि साचे जोत जगाईआ। मेट मिटाए धुँदूकारा, अज्ञान अन्धेर रहिण ना पाईआ। शब्द सिँघासण अपर अपारा। पावा चूल ना कोई रखाईआ। गुरमुख साचे कर प्यारा, बैठा गोद उठाईआ। कन्त सुहागी साची नारा, आपणे अंग लगाईआ। एका देवे नाम हुलारा, साचा झूला रिहा झुलाईआ। ना कोई दीसे चार दिवारा, छप्पर छन्न ना कोए टिकाईआ। चारों कुन्ट अमृत धारा, ठण्ढी ठार रखाईआ। पंचम गायण वारो वारा, प्रभ साची सेवा लाईआ। अनहद वज्जे ताल तलवाड़ा, बहत्तर नाड़ा रिहा हिलाईआ। दस्म द्वारी सच अखाड़ा, हरि साचा मंगल गाईआ। गुरमुख साजन साचा लाड़ा, साचे घोड़े रिहा चढ़ाईआ।

दर द्वारे साचा वाड़ा, मिल्या मेल साचे माहीआ। ना कोई दीसे पंचम धाड़ा, हड्ड मास नाड़ी रत दिस ना आईआ। चन्द सूरज मण्डल ना कोई तारा, बैठा चरनां हेठ दबाईआ। पारब्रह्म प्रभ पुरख अपारा, एका धाम सुहाईआ। सुन अगम्मी पार किनारा, एका एक रखाईआ। सोहँ शब्द सच सितारा, सतिगुर पूरा रिहा चढ़ाईआ। सो पुरख निरँजण एकँकारा, एका रंग समाईआ। हँ हँगता देवे मारा, आत्म ब्रह्म मिलाईआ। एका दूजा भेव निवारा, एका एक अख्वाईआ। आपे वसया हो हो बाहरा, आप आपणी बणत बणाईआ। नाम सति करे चरन निमस्कारा, पंचम वेख वखाईआ। पंचम घर सोहे बंक दुआरा, वेखणहारा हरि रघुराईआ। ना कोई करे बन्द किवाड़ा, अट्ठे पहर रिहा खुल्ह्राईआ। छेवें घर साची धारा, अलख अलक्खणा रिहा वखाईआ। शब्द शब्दी जै जैकारा, साची धुन रिहा वजाईआ। सति पुरख निरँजण खेल अपारा, घर सत्तवें बैठा आसण लाईआ। आदि पुरख जोत निरँजण चमत्कारा, जोती जोत रिहा जगाईआ। आप आपणा साजण साजे

४२३ मीत मुरारा आप अख्वाईआ। आप आपणा करया मजना, आपणे तीर्थ आपे नुहाईआ। आप आपणा होया पड़दे कज्जना, आपणा पड़दा आपे रिहा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत समाईआ। जोत समाया हरि रघुराया, अकल कला भरपूरा। आदि अन्त किसे भेव ना पाया, वड दाता गहर गम्भीरा। अगम्म अगम्मे धाम सुहाया, ना कोई जाणे पीरन पीरा। मरे ना जम्मे आया जाया, पूत सपूता ना होए साचा पीरा। दम दमे ना पवण स्वास चलाया, नेत्र नीर ना वहाया नीरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप बंधाए आपणी धीरा। आपणे घर आप वसंदड़ो, दिस किसे ना आंयदा। दीपक जोती इक्क रखंदड़ो, भेव कोई ना पांयदा। पवण पवणी ना कोई वेख वखंदड़ो, ना कोई राह तकांयदा। चारों कुन्ट आपे आप भवंदड़ो, पुरीआं लोआं शब्द जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच घर इक्क रखंदड़ो, सोहँ नाउँ रखांयदा। थिर घर हरि दातार, आपणा आप बणाया। ना कोई बणाए चार दिवार, कोई बाडी दिस ना आया। करे कराए करनेहार, आप आपणी सेवा लाया। उच्च महल्ल अटल अगम्म अपार, ऊँचो ऊँच टिकाया। गुर पीर ना कोए पाए सार, साध सन्त दिस ना आया। चौथे घर बहि बहि गए हार, दर द्वारे बैठे राह तकाया। पारब्रह्म तेरा खेल अपार, आप आपणा मुख छुपाया। जिस जन किरपा देवे धार, शब्द पल्लू दए फड़ाया। सोहँ शब्द तेरी साची धार, घर चौथे दए मिलाया। दस्म द्वारी पार किनार, राह विच ना कोई अटकाया। सति नाम तेरा मीत मुरार, वेखण दर द्वारे आया। छेवें छप्पर खोल्ह किवाड़, साची धुन वजाया। घर सत्तवें बैठा मीत मुरार, सति पुरख निरँजण डेरा लाया। आपे वेखे वेखणहार, दिस किसे ना आया। सर्ब जीआं दा सांझा यार, लोकमात हरि अख्वाया। जुग

०६

जुग लए जगत अवतार, आप आपणी बणत बणाया। साध सन्त ना चुक्कण जीआं जन्तां भार, आपणा रहे कर्म कमाया। धरत मात करे पुकार, गल पल्लू दए दुहाया। पारब्रह्म प्रभ किरपा धार, एका शब्द जणाया। धरत मात तेरी सुण पुकार, आप आपणी जोत जगाया। निहकलंका लए अवतार, नानक गोबिन्द लेख लिखाया। वेद व्यासा बण लिखार, पूत सपूता गौड़ ब्रह्मण आप जणाया। प्रगट होए आप दातार, राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान वेख वखाया। शब्द खण्डा तिक्खी धार, दो जहानां वेख वखाया। ब्रह्मा शिव देवत करे ख़बरदार, लोक चौदां वेख वखाया। पहली चेत्र दए हुलार, सोया कोई रहिण ना पाया। गुरमुख साचे सन्त सुहेले उभार, दर दर घर घर जाए लए उठाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, काला टिक्का मस्तक लाया। जन भगतां मेला मीत मुरार, गोबिन्द मेल मिलाया। जुग जुग रिहा पैज संवार, निन्दक दुष्ट रिहा खपाया। सतिगुर साजण मीत मुरार, सखा सुहेला आप अख्वाया। आदिन अन्ता एकँकार, एका रूप समाया। सतिजुग बन्ने तेरी धार, सच सुच्च रिहा वरताया। मदिरा मासी करे ख्वार, कलिजुग वेला अन्तिम आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण रूप अख्वाया। नरायण नर हरि निरँकारा, निरगुण रूप समाया। सतिजुग बन्ने सच्ची धारा, शब्दी बणत बणाया। जोत सरूपी करे अकारा, भेखाधारी भेख वटाया। कलिजुग तेरा पार किनारा, अन्तिम अन्त रिहा कराया। सतिजुग साचा बणे भिखारा, दर द्वारे मंगण आया। पुरख अबिनाशी पावे सारा, दे मति रिहा समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सेवक सेवादार जुग जुग भगतां सेवा करदा आया।

❋ ४ चेत २०१४ बिक्रमी तारा सिँघ दे गृह पिण्ड चम्बल ज़िला अमृतसर ❋

चौथे घर अन्दर वड़, आपणा रंग वखांयदा। गुरमुख साचे आपे फड़, आपणे रंग रंगांयदा। दो जहानां लावे जड़, ना कोई मात उखड़ांयदा। इक्क वखाए साचा गढ़, महल्ल अटल रखांयदा। हरिजन साचा जाए चढ़, प्रभ साचा राह विखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्दर बहि बहि खेल खिलांयदा। चौथा घर सच द्वार, आपणा आप रखाया। एका दूजा भेव निवार, एका रूप समाया। पारब्रह्म ब्रह्म ना रहे न्यार, निरगुण निरगुण पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सरगुण लेखा रिहा चुकाया। चौथा घर सच द्वार, सति पुरख आप बणांयदा। आप आपणी किरपा धार, गुरमुखां विच बहांयदा। आपे होया पहरेदार, दिवस रैण सेव कमांयदा। सरसा किला कर त्यार, सतिगुर

पूरा दया कमांयदा। तत्ता तृष्ना दए निवार, आत्म जाम पिलांयदा। गग्गा गोबिन्द मेल मिलार, हरि हरि रूप समांयदा। रारा राम रहीम करतार, लहिणा देणा मूल चुकांयदा। सतिजुग साचा कर वरतार, साची बणत बणांयदा। शब्द रखाए इक्क भण्डार, चार वरनां आप वरतांयदा। ना कोई जाणे नारी नार, नर नरेशा रूप वटांयदा। आपणा आप किया शृंगार, अग्ग भिबूती आपणी नाम लगांयदा। जोत निरँजण कर प्यार, साची गुफा वखांयदा। कलिजुग मेटे अन्ध अंध्यार, सतिजुग साचा चन्द चढ़ांयदा। सन्त सुहेले कर त्यार, दे मति आप समझांयदा। सखी सखीआं धर्म द्वार, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारे, प्रभ अबिनाशी वागां मोड़े, लोकमाती फेरा पांयदा। सन्त सुहेले जुग जुग विछड़े जोड़े, चरन कँवल ध्यान लगांयदा। चिट्टे अस्व चढ़या घोड़े, चारो कुन्ट फेरा पांयदा। वेखे परखे मिट्ठे कौड़े, ग़रीब निमाणे वेख वखांयदा। भगत सुहेले आत्म बौहड़े, जुग जुग पैज रखांयदा। आप चढ़ाए सारे पौड़े, सोहँ खण्डा हथ्थ फड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर चौथा इक्क वसांयदा। चौथे घर शब्द हुलारा, एका एक रखाया। देवणहार दातारा, दिवस रैण रिहा झुलाया। गुरमुख साचा मीत मुरारा, विच बैठा आसण लाया। उठ उठ वेखे चार दुआरा, चारे कुन्टां निरगुण नर हरि निरवैर रूप दिस ना आया। सरगुण ना वसया थिर घर, मातलोकी डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, दर दुआरा इक्क वखाया। चौथा घर शब्द बुलंद, जोती एका एक रखाईआ। दस्म द्वारी अद्ध विच कंध, प्रभ साचे आप टिकाईआ। आप आपणा किया किवाड़ बन्द, किवाड़ बन्द आपे दए खुल्हाईआ। सोहँ गाए सुहागी छन्द, घर चौथे मेल मिलाईआ। भेव ना पायण बत्ती दन्द, रसना गुण ना गाईआ। सर्ब जीआं आपे बख्शंद, हरि दाता वड रघुराईआ। दूर दुराडा जन भगतां आप मुकाए पन्ध, फड़ बाहों पार कराईआ। चरनां हेठ रखाए सूरज चन्द, मण्डल मण्डप बैठे मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरा साचा घर, चौथा नाउँ रखाईआ। चौथा घर शब्द अडोल, एका एक रखाया। दर दुआरा रिहा खोल्ह, सोहँ देवे नाम दलास्सया। साचे अन्दर रिहा बोल, आप वजाए आपणा तालया। भगत सुहेला सद वसया कोल, फल लगाए काया डालया। काया धरती रही मौल, रुत्त बसन्ती इक्क वखा ल्या। सृष्ट सबाई रही अनभोल, कलिजुग वेला अन्त मुका ल्या। प्रभ तोलण आया कलिजुग तेरा तोल, सोहँ वट्टा इक्क रखा ल्या। लक्ख चुरासी चारों कुन्ट लटकाए अन्दर वड़ मुख ना कोई छुपा ल्या। सम्मत चौदां वजाए ढोल, मृदंगा आपणा हथ्थ रखा ल्या। पन्दरां हुलारा रसना बोल, दोवें पासे आप हिला ल्या। सम्मत सोलां छाछ दए विरोल, माणक मोती बाहर कढा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख

तेरा साचा घर, दर साचा इक्क वखा ल्या। साचा घर शब्द सुहञ्जणा, निर्मल जोत जगाईआ। गुर चरन द्वारे साचे मजना, पूजा पाठ वक्त चुकाईआ। मिल्या मेल दर्द दुःख भंजना, नेत्र अंजन एका नाउँ पाईआ। मीत मुरारा साचा सज्जणा, पारब्रह्म अख्वाईआ। ताल तलवाड़ा एका वज्जणा, आत्मक धुन रिहा उपजाईआ। गढ़ हँकारी अन्तिम भज्जणा, प्रभ साचा रिहा भन्नाईआ। पी अमृत आत्म रज्जणा, आत्म अमृत ताल सुहाईआ। गुर पूरे पड़दा कज्जणा, मनमुख भोले मुख लाई काली छाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवणहारा वर, दर दुआरा बंक सुहाईआ। बंक दुआरा इक्क अनमुल्ला, गुरमुख विरले पाया। लोकमाती पूरे तोल तुला, माया ममता मोह चुकाया। आपे फलया आपे फुला, फल आपणा रिहा खवाया। पाणी पया ना काया चुल्ह, उलटी नभी कँवल भवाया। अमृत आत्म अजे ना डुल्ह, हरि झिरना रिहा झिराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर द्वारे देवे वर, दर दरबाना आप अख्वाया। दर दरबान ग़रीब निवाजा, दर साचे सेव कमांयदा। अट्ठे पहर मारे आवाजा, दिवस रैण जगांयदा। शब्द उठाए घोड़ा ताजा, गुरमुख साचे आप चढ़ांयदा। अनहद वजाए एका वाजा, पंचम सेवा लांयदा। धुरदरगाही आया भाजा, फड़ बाहों पार करांयदा। चरन कँवल वखाए हाजी हाजन हाजा, मक्का काअबा इक्क करांयदा। आप उलटाए कँवल नाभा, अमृत आत्म मुख चुआंयदा। जोती नूर ना झल्ले ताबा, आप आपणा रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरा वेखे घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। दर घर साचा इक्क सुहाया, एका एकँकारया। दूसर किसे दिस ना आया, भरमे भुल्ले जीव गंवारया। भगतां जनां हिस्सा सच वंडाया, आदि जुगादी तेरी कारया। आत्म तृष्ना भुक्ख मिटाया, एका भरया शब्द भण्डारया। दूई द्वैती विसना आपे लाहया, देवे नाम खुमारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरे साचे घर होए मात भिखारया। मात भिखारी दर दातारा, निरगुण खेल खिलांयदा। मंगे मंग कर प्यारा, चरन कँवल प्रीत सिखांयदा। मेला मेल नर निरँकारा, आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, बंक दुआरा वेख वखांयदा। सो पुरख निरँजण साची धार, आपणी आप चलाईआ। खेले खेल अपर अपार, खेलणहार आप अख्वाईआ। मेले मेल विच संसार, साची बणत बणाईआ। गुर चेले सोहण इक्क द्वार, द्वार बंका आप सुहाईआ। सज्जण सुहेले मीत मुरार, हरि साचा गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सो पुरख निरँजण सेवा रिहा कमाईआ। सो सतिगुर साचा साख्यात, वाली दो जहानया। चरन प्रीत बंन्हाए साचा नात, आप आपणी दया कमानया। सखा सहाई माई बाप, पिता पूत आप हो जानया। वेखे परखे ज़ात पात, ऊँचां नीचां राउ रंक राजानया।

४२६
०६

जन भगतां देवे साची दात, एका अक्खर धुर फ़रमाणया। अन्तिम वेले पुच्छे वात, दर द्वार करे परवानया। कलिजुग रैण मिटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा राह विखानया। हरिजन मेला पुरख बिधात, घर साचा इक्क विखानया। पुरख निरँजण आपे आप, आप आपणा खेल खिलानया। खेलणहारा हरि समराथ, अकल कला वरताईआ। सतिजुग चलाए आपणा राथ, नईआ नाम जहाज़ बणाईआ। लक्ख चुरासी पाए नाथ, डोरी शब्दी इक्क रखाईआ। कलिजुग लहिणा देणा मूल चुकाए साढे तिन्न हाथ, सीआं वंड वंडाईआ। सर्बकला आपे समराथ, घड़न भन्नणहार आप हो आईआ। गुरमुख विरले सगल वसूरा सगला लाथ, दर घर साचे दर्शन पाईआ। चरन कँवल कँवल चरन उप्पर धवल जो जन ढठ्ठा, पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाईआ। धुरदरगाही आया नठ्ठा, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। सतिजुग तेरी करे कराए चठ्ठा, सम्मत चौदां पहली चेत्र रुत्त सुहाईआ। त्रैगुण माया तेरा तत्त कर इक्ठ्ठा, इक्की जेठ रिहा जलाईआ। मेट मिटाए तीर्थ अठ्ठ सठ्ठा, गंगा गोदावरी रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति पुरख निरँजण सति सतिवाद, सो सेवा साची रिहा कमाईआ। सो साजण हरि मीत, सतिगुर अख्वांयदा। ना देहुरा ना मन्दिर मसीत, गुरु दर ना कोई बणांयदा। आप बणाए आपणी रीत, गीत सुहाग सुणांयदा। घट घट अन्दर बैठा परखे नीत, आप आपणा मुख छुपांयदा। गुरमुख विरला मानस देही रिहा जीत, हरि साचे विच समांयदा। इक्क इकेला सदा अतीत, हर घट आप हो आंयदा। एका रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँच नीच एका धाम सुहांयदा। मनमुखां सुत्ता दे कर पीठ, आपणा मुख छुपांयदा। जन भगतां देवे शब्द अनडीठ, नेत्र नैण ना कोई वखांयदा। कलिजुग जूठा झूठा पीसण रिहा पीस, माया राणी चक्की आप चलांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी बीठला बीठ, पारब्रह्म तुठ्ठ मुठ्ठ गुरमुख इक्क बणांयदा। मनमुखां हथ्थ फड़ाए खाली ठूठ, दर द्वारे आप भवांयदा। अन्तिम लहिणा देणा मूल चुकाए जूठ झूठ, कलिजुग अन्त हिसाब मुकांयदा। सतिजुग साचा बैठा रूठ, प्रभ आपे आप मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सो पुरख निरँजण साची सेवा आप कमांयदा। सो दाता मेहरवान, सदा दयालया। जन भगतां वेखे मार ध्यान, जोत सरूपी इक्क अकालया। लक्ख चुरासी आत्म देवे जिया दान, दीपक जोती एका बालया। शब्द शब्दी ब्रह्म ज्ञान, काया मन्दिर अन्दर आप लगाए साचा तालया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सो पुरख निरँजण एका वर, आपणा आपे पा ल्या। सो पुरख निरँजण साचा सज्जण, गुरमुख विरले पाया। मनमुख जीव दर दवारिउँ भज्जण, घर साचा मूल ना पाया। गुरमुख साचे सन्त सुहेले अमृत आत्म पी पी रज्जण, निजानंद निज घर मात पाया। ताल तलवाड़े साचे वज्जण, सच सेवा रिहा लगाया। गढ़ हँकारी किला कोट तज्जण, राह साचा

इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सो पुरख निरँजण देवे वर, सति सतिवाद आप अख्वाया। सो पुरख निरँजण सति सतिवाद, आदि अन्त बेअन्तया। खेले खेल आदि जुगादि, पारब्रह्म प्रभ साचा कन्तया। वेख वखाए कोटन कोट ब्रह्माद, भेव ना पायण जीव जन्तया। शब्द रखाए इक्क नाद, आप सुणाए साधन सन्तया। जुग जुग देवे नाम दाद, सतिजुग द्वापर त्रेता बणाए बणन्तया। पुरख अबिनाशी माधव माध, आप मिटाए उत्पत कराए आपे वेख विखन्तया। कोटन कोट रहे अराध, गुरमुख विरले तेल चढ़न्तया। साची नारी एका मेला कन्त सुहाग, आत्म सेजा इक्क हढन्तया। मोनी सोनी बैठे कर वैराग, महिंमा अगणत ना कोई गणन्तया। दीपक जोत ना दिसे चिराग, अन्ध अन्धेर इक्क रखन्तया। माया डस्सणी कलिजुग जीवां डस्सया नाग, होर ना कोई विखन्तया। जूठा झूठा तन बद्धा ताग, राए धर्म राह विखन्तया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सो पुरख निरँजण रिहा वर, गुरमुख साचे इक्क इकन्तया। सो पुरख निरँजण साचा सस्सा, आपणा रूप वटांयदा। हरिभगत बणाए साचा बंसा, साचा राह विखांयदा। कोटन कोट गायण जिह्वा सहँस सहँसा, सेवक सेवा लेखे लांयदा। कलिजुग जीव सँघारे दुष्ट जिउँ काहना कंसा, एका खण्डा नाम वसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सो पुरख निरँजण वसया घर, बंक द्वार इक्क सुहांयदा। सो पुरख निरँजण शब्द अनादी, एका नाद वजांयदा। जाप जपाए बोध अगाधी, अभेव अभेदा भेव कोई ना पांयदा। धुर दी बाण जुग जुग वादी, शब्द निशान झुलांयदा। जन भगतां आत्म रिहा साधी, सुरती शब्दी मेल मिलांयदा। इक्क कराए साचा हाजी, काया काअबा हज्ज करांयदा। पंचम ढाहे फड़ फड़ गाजी, शब्द खण्डा इक्क वखांयदा। चिट्टा अस्व साचा ताजी, गुरमुख दर द्वारे आप लिआंयदा। सो देवे जन साची भाजी, आत्म भिच्छया झोली पांयदा। जगत विकारा होया पाजी, बैठा मुख छुपांयदा। गुरमुखां रक्खणहारा लाजी, अग्गे पिच्छे सेव कमांयदा। आप चढ़ाए सच जहाज़ी, एका नाम रथ चलांयदा। दिवस रैण अन्दर मन्दिर काया बहि बहि मारी आवाज़ी, गुरमुख सोए आप उठांयदा। साची साजना रिहा साजी, बन्द किवाड़ी आप खुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सो पुरख निरँजण साचा मीता, दस्म द्वारी धाम सुहांयदा। सो मिल्या हरि पाया, घर साचे वज्जे वधाईआ। एका मंगल गाया, मेल मिल्या साचे माहीआ। जगत जंजाला संगल कट्ट वखाया, धर्म राए तोड़े फाहीआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर पार कराया, सुखमन नाड़ी बैठा शरमाईआ। गुर पूरे पल्लू नाम फड़ाया, एका धुन रिहा सुणाया, दर द्वारे रिहा सुहाईआ। अन्दर बहि बहि राग अनादी रिहा सुणाया, शब्द सिँघासण सेज विछाईआ। मिट्ठी धारा दस्म दुआरा जोत सरूपी कर आकारा, चारों कुन्ट करे रुशनाईआ। जन भगतां करे इक्क प्यारा,

सच्ची भुजा रिहा उठाईआ। अमृत आत्म मुख चुआए ठण्ढी धारा, सीतल सीत कराईआ। एका दूजा भेव निवारा, एका रंग रंगाईआ। नाम पलँघ अपर अपारा, सो पुरख निरँजण आपणा आप विखाईआ। नारी कन्त मेल भतारा, साची सेजा इक्क हंढाईआ। आपे नारी आपे नारा, एका रूप हो जाईआ। गुरमुख तेरा सच दुआरा, सो पुरख निरँजण रिहा सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सस्सा होड़ा उप्पर लाईआ। सस्सा होड़ा इक्क इकल्ला, प्रभ साचा आप लगांयदा। शब्द बणाया सच महल्ला, चार दिवारी ना कोई रखांयदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण दोवें राह मल्ला, आर पार कोई संग ना जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सस्सा सो आपे आप उपांयदा। सो पाया प्रभ आपणा, घर साचे वज्जे वधाईआ। मेट मिटाए तीनों तापना, रसना लेख रहिण ना पाईआ। लेखा चुक्के जाप जपना, जगत विद्या लेख लिखाईआ। कोटन कोट उतारे पापना, जिस जन मिल्या हरि रघुराईआ। ना कोई देवे वर सरापना, ना कोई मस्तक टिक्का लाईआ। आप बुझाए गुरमुखां आप आपणा, देवे ब्रह्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सस्सा हाहा नाल मिलाईआ। हाहा अक्खर हरि करतार, हरी हरि समाया। आपणे घरों कीता बाहर, दूजा रूप वटाया। पारब्रह्म सच्ची सरकार, हार जित रिहा कराया। पारब्रह्म कोई ना पावे सार, ब्रह्म ब्रह्म रूप उपाया। ब्रह्म होया सेवादार, पारब्रह्म तेरी सेवा रिहा कमाया। ना मरया ना पया जम्म, माता गोद ना किसे उठाया। हड्ड मास नाड़ी चम्म, बूंद रक्त ना कोए रखाया। पवण स्वासी ना कोई दम, रसना जिह्वा ना गाणा गाया। नेत्र नैण ना वहाए छम्म छम्म, आलस निन्दरा विच ना आया। आपे जाणे आपणा कम्म, आप आपणी सेवा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सस्सा घर पिच्छे कर, हाहा अग्गे लाया। हाहा हरी आप निरँकारा, आपणा रंग रंगांयदा। लोकमात लए अवतारा, लक्ख चुरासी जून उपांयदा। आपे वसया हरि हरि बाहरा, आपे विच समांयदा। नाल रलाए पंचम यारा, पंचां तत्तां मेल मिलांयदा। त्रैगुण माया कर पसारा, तेरी झोली पांयदा। पारब्रह्म तेरा खेल अपारा, हाहा दोए जोड़ सीस झुकांयदा। हाहा हर दम याद कर, एका आस रखाईआ। शब्द स्वास कर, रसना रिहा ध्याईआ। लोकमात जंगल जूह उजाड़ पहाड़, प्रभास बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोहँ तेरा पहला घर रिहा बणाईआ।

४२६
०६

❊ ५ चेत २०१४ बिक्रमी केहर सिँघ दे गृह पिण्ड रजीवाल ज़िला फिरोज़पुर ❊

तृष्ना अग्ग जलाए, ना कोई होए सहाया। सूरा सरबग्ग ना कोई दिसाए, चारे कुन्टां वेख वखाया। कलिजुग माया

जग वरताए, जूठ झूठ झोली रिहा भराया। गुरमुख विरला पग लगाए, रस अनूठ इक्क वखाया। हँस बगढ़े बप्प बणाए, साची चोग चुगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला इक्क घर, आपणा आप मिलाया। कलिजुग माया जुगती जाल, एका एक रखाया। लक्ख चुरासी रिहा भाल, वेखणहारा आप अख्वाया। गुरमुख साचे साचे लाल, आप आपणे अंग लगाया। वरन बरन होए कंगाल, साची सरना ना कोई रखाया। फल ना दिसे किसे डाल, अमृत मेवा ना कोई खवाया। दर दर घर घर कूक पुकारे कलिजुग काल, अवल्लड़ी चाल रखाया। पल्ले दिसे ना किसे धन माल, नाम खज़ाना किसे हथ्थ ना आया। गुर पूरा ना मिल्या मात दलाल, राह साचा दए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साजन आपे भाल, आप आपणी सरन लगाया। गुरमुख साचा लाल अनमुल्ला, हरि आपे वेख वखांयदा। भाग लगाए साची कुला, कलि कलवन्त आप हो जांयदा। पूरे तोल रिहा तोला, तोलणहार आप अख्वांयदा। चरन द्वारे करे गोला, धूढ़ी मस्तक ख़ाक रमांयदा। सुणे सुणाए साचा ढोला, पुरी अनन्द मेल मिलांयदा। पुरी अनन्द काया चोला, पंच अक्खर आप विखांयदा। पंचम गायण एका बोला, हरि साची सेवा लांयदा। दर द्वारे साचे होला, मिल सखीआं आप खिलांयदा। धर्म दुआरा एका खोल्ह्ा, शब्द सिँघासण इक्क विछांयदा। आपणी सेजे आपे मौला, आपणा रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख मेला एका दर, दर दुआरा आप सुहांयदा। गुरमुख गोबिन्द काया रंग, सगली बणत बणाईआ। नाम डोरी चाढ़ु पतंग, आकाश आकाशां पार कराईआ। चिट्टे अस्व कसया तंग, दूर दुराडा वेखे फेरी पाईआ। आप लगाए आपणे अंग, अंगीकार आप हो जाईआ। दाता जोद्धा सूरा सरबंग, सगला साथ निभाईआ। कट्टणहारा भुक्ख नंग, जुग जुग विछड़े मेल मिलाईआ। माया ममता मोह विकारा हउमे तृष्ना ना मारे डंग, सांतक सति वरताईआ। सति सुहञ्जणी शब्द रंगीला इक्क वखाए पलँघ, बैठा आसण लाईआ। सोहँ चूड़ा साचा नाम तन्दन, एका वंग रिहा तन पहनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवणहारा वर, एका साचा माहीआ। वर पाया पुरख अपार, घर सुहञ्जणा। मिल्या मेल पुरख भतार, जगे जोत निरँजणा। वेखे दर सच्चा दरबार, बैठा हरि शाहो दर्द दु:ख भय भंजना। लहिणा देण मूल चुकाए ना करे कोई हुदार, एका चाढ़े नाम रंगणा। पूर्ब कर्म कर्ज उतार आप लगाए आपणे अंगणा। सोहँ शब्द तिक्खी धार, गुरमुख विरले पार लँघणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला इक्क दर, दर दुआरा आपे मंगणा। दर द्वारे शब्द भण्डारा, एका एक वरतांयदा। पारब्रह्म प्रभ पुरख अपारा, गोबिन्द रूप वटांयदा। गोबिन्द गुर सेवक सेवादारा, हरि साची सेवा लांयदा। शब्द वजाए तन नगारा, आपणी

बणत बणांयदा। जोती नूर कर अकारा, अन्दर मन्दिर मुख छुपांयदा। आवे जावे वारो वारा, दिस किसे ना आंयदा। लक्ख चुरासी पावे सारा, लोआं पुरीआं फोल फुलांयदा। गुरमुखां करे सच प्यारा, साचा राह वखांयदा। आदि शक्त प्रभ एकँकारा, अन्त कन्त मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर साजण साचा शब्दी बणत बणांयदा। साजण मीता हरि बनवारी, एका एक अख्वाया। गुरमुखां पैज रिहा संवारी, दर दर घर घर फेरा पाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, अन्ध अन्धेर रिहा मिटाया। सतिजुग तेरी बन्न्हे धारी, सति पुरख निरँजण जोत जगाया। भरमे भुल्ले जीव गंवारी, लक्ख चुरासी दिस ना आया। शब्द खण्डा तेज कटारी, आप आपणे हथ्थ उठाया। पहली चेत्र कर त्यारी, सम्मत चौदां लेख लिखाया। एका दूजा पावे सारी, तीजे तीजा मेल मिलाया। चौथे घर खोल्ह किवाड़ी, सन्त जनां हरि राह विखाया। पंचम होवे सच दरबारी, पंचम मेला मेल मिलाया। गुरमुखां करे ख़बरदारी, ब्यास किनारा वेख वखाया। गुर गोबिन्दा खेल न्यारी, आप आपणा राह तकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द मलाह बेपरवाह एका एक एक हो आया। एका एक शब्द वणजारा, नर नरायण आप अख्वांयदा। गुरमुखां करे जगत वपारा, साची वस्त लिआंयदा। दर दर घर घर भरदा जाए नाम भण्डारा, अतोट अतुट रखांयदा। आपे बणया कलि वरतारा, दिस किसे ना आंयदा। जोत सरूपी कर आकारा, शब्दी धार चलांयदा। शब्द सरूपी डंक अपारा, जोती सेवा लांयदा। पवण पवण गाए वारो वारा, लोआं पुरीआं आप जणांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क हुलारा, सत्तां दीपां राग सुणांयदा। गुरमुख अन्दर वेखे सच दुआरा, हरि आपणा आसण लांयदा। जोत जगाए अगम्म अपारा, मेल मिलाए मेलणहारा, आप आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख लेख सच घर पंचम चेत्र नेतन नेत दरस विखांयदा।

✻ ५ चेत २०१४ बिक्रमी मल्ल सिँघ दे गृह पिण्ड रज्जीवाल ज़िला फिरोज़पुर ✻

आप आपणी किरपा धार, साचा सुख उपजांयदा। रोग सोग चिन्ता दुःख निवार, आत्म सुख उपजांयदा। चरन कँवल इक्क प्यार, साचा राह वखांयदा। गऊ ग़रीबां पावे सार, गति मित आपणे हथ्थ रखांयदा। जगत सुहाए दर द्वार, भगत भगती सेवा लांयदा। आपे देवे नाम अधार, झोली शब्द भरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन सरन सरन चरन एका एक रखांयदा।

✻ ५ चेत २०१४ बिक्रमी गुरदयाल सिँघ दे घर इक्की परिवारां दा इक्ठ होया पिण्ड रामू वाला ज़िला फिरोज़पुर ✻

जोती नूर कर अकार, शब्द जणाईआ। लोकमात लए अवतार, हरि साची रचन रचाईआ। लक्ख चुरासी पावे सार, लोआं पुरीआं वेख वखाईआ। ब्रह्मा शिव देवत सुर नेत्र रहे उग्घाड़, कवण कूटे निहकलंक करे रुशनाईआ। मनमुख जीवां लाहे चम्म, गुरमुखां पार कराईआ। गुरमुखां काया जोत धर, शब्दी रचन रचाईआ। महिंमा अगणत अपर अपार, प्रभ आपणी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जन भगतां दए मात वड्याईआ। भगत जनां हरि साचा मीता, जुग जुग जोत जगांयदा। कलिजुग तेरी परखे काली रीता, काया वेख वखांयदा। गुरमुख विरले देवे निधान, आप आपणी दया कमांयदा। सतिजुग झुलाए धर्म निशान, साचा राह विखांयदा। एका एक कराए राउ रंक राज राजान, शाह सुल्तान वेख वखांयदा। शब्द उडाए इक्क बिबाण, लोआं पुरीआं आप उडांयदा। प्रगट होए श्री भगवान, जोती जोड़ा मेल मिलांयदा। नाम तोड़ा जगत निशान, जोती जोड़े मेल मिलांयदा। वेखे परखे मिट्ठे कौड़े विच जहान, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। शब्द घोड़ा हरि बलवान, एका एक दुड़ांयदा। जुड़या रहिण ना देवे कोई जोड़ा, नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां आप जगांयदा। सम्मत चौदां पहली चेत्र मारन आया मात पौड़ा, नीला आपणा पौड़ उठांयदा। धरत मात तेरा खुल्ला वेहड़ा, कलिजुग अन्तिम वार करांयदा। भगत जनां हरि आपे बौहड़ा, जुग जुग विछड़े मेल मिलांयदा। धुरदरगाही आया दौड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वेखे साचा घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। साचा घर हरि बनवारी, एका एक रखाया। निर्मल जोत कर उज्यारी, एका चन्द चढ़ाया। शब्द खण्डा तेज कटारी, आपणे हत्थ उठाया। खण्डां ब्रह्मण्डां पावे सारी, जेरज अंडां वेख वखाया। लेखा लिखणहार लिखारी, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, अचरज खेल रचाया। जोद्धा सूरबीर बलकारी, दहि दिशा फेरा पाया। लक्ख चुरासी करे ख़बरदारी, मनमुखां रिहा जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दुआरा वेख वखाया। दर दुआरा शब्द टिकाणा, हरि साचा वेख वखांयदा। गुरमुख विरले मात पछाणा, मनमुख गूढ़ी नींद सवांयदा। आपे वरते आपणा भाणा, हरि भाणे विच समांयदा। भरमे भुल्ले जीव अञ्जाणा, साध सन्त जीव जन्त कोए ना राह वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, चार वरनां एका सरना, एका धाम सुहांयदा। चार वरन इक्क द्वार, एका एक वखांयदा। प्रगट हो विच संसार, साचा मार्ग लांयदा। ऊँचां नीचां कर प्यार, एका धाम सुहांयदा। मेल मिलाए वारो वार, गुरमुख साचे

आप मिलांयदा। गोबिन्द मेला गुर अपार, गुर चेला आप अख्वांयदा। सज्जण सुहेला मीत मुरार, सतिगुर आप अख्वांयदा। खेले खेल अपर अपार, जोती शब्दी बणत बणांयदा। वेख वखाणे लोकमात पावे सार, कलिजुग तेरी वंड वंडांयदा। साढे तिन्न तिन्न हथ्थ सीआं बन्ने धार, चार कुन्टां आप जणांयदा। गुरमुख विरले पैज संवार, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। गुर शब्द सम्मत चौदां बन्ने धार, तेरा वक्त चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पहली चेत्र भगत सुहेला वेखे काया खेला, आत्म जोती नूर टिकांयदा। पहली चेत्र कर त्यारी, भरमे भरम मिटाईआ। चिट्टे अस्व कर अस्वारी, घर पहला वेख वखाईआ। इक्क इकल्ला रक्खणहारा एका रूप समाईआ। आपे बन्ने आपणी धारी, साची रचन रचाईआ। शब्द उपाए संग रलाए वड संसारी, दिस किसे ना आईआ। जन भगतां तीजा नेत्र रिहा उग्घाड़ी, आप आपणा रूप विखाईआ। शब्द बिबाणे रिहा चाढ़ी, नौ दर पार कराईआ। आपे होया पिच्छे अगाड़ी, सेवक सेवा रिहा कमाईआ। जोत जगाए बहत्तर नाड़ी, दिवस रैण डगमगाईआ। मेट मिटाए पंचम धाड़ी, शब्द खण्डा रिहा विखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चेत्र चार दिवस विचार, घर चौथा खोल्ह वखाईआ। चौथा घर पद निरबाणा, हरि हरि एक रखाया। गुरमुख मेला श्री भगवाना, घर साचा इक्क सुहाया। आपे जाणे गुण निधाना, गुणवन्ता दया कमाया। शब्द वखाए सच निशाना, एका पल्ला नाम फड़ाया। आपे देवे पीणा खाणा, पंचम राग सुणाए अनादी गाणा, आत्म सेजा इक्क विछाणा, गोबिन्द मेल मिलाया। प्रभ शब्दी छैल छबीला, घर साचे बैठ आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे साचा वर, घर साचे मेल मिलाया। घर साचा हरि सुहांयदा, अकल कला भरपूरया। हरिजन साचे मेल मिलांयदा, पंचम पंचां करे चूरया। जोत निरँजण तेल चढ़ांयदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त दुलार, जुग जुग फड़ फड़ बाहों लाए पार, आत्म घर इक्क सुहांयदा। चौथा घर शब्द अधार, प्रभ साचे रचन रचाईआ। गुरमुख विरला पावे सार, भरमे भुल्ली लोकाईआ। आदि अन्ता एकँकार, आपे आवे जावे खेल खिलाईआ। जुग जुग लए मात अवतार, करता पुरख हरि रघुराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर उतारया पार, कलिजुग अन्तिम वारी आईआ। ईसा मूसा गए हार, संग मुहम्मद चार यार, दिवस रैण रहे कुरलाईआ। रसना गाया निरगुण अपर अपार, तेरां तेरी धार बंधाईआ। गोबिन्द वेखे नैण उग्घाड़, नेत्र नैणा दर्शन पाईआ। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, देवे शब्द सच्ची जणाईआ। दोए जोड़ करे निमस्कार, मंगे मंग तेरी सरनाईआ। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, आपणे रंग रंगाईआ। कलिजुग अन्तिम मेला विच संसार, गुर गोबिन्दे रिहा सुणाईआ। सम्बल नगरी साची धार, आपणी बणत बणाईआ। साढे

४३४
०६

तिन्न हथ्थ महल्ल उसार, हरि जू नाउँ रखाईआ। हरि मन्दिर वेखे खेल अपार, निर्मल जोती इक्क जगाईआ। शब्द जणाए अपर अपार, अट्ठे पहर रिहा कुरलाईआ। गोबिन्द मेला नर निरँकार, विछड़ कदे ना जाईआ। कलिजुग तेरी पावे सार, अन्तिम लेखा लेख लिखाईआ। देवत सुर ब्रह्मा शिव दर रो रो बांह रहे हुलार, भुल्ल रहे ना राईआ। पुरख अगम्मा ना मरे ना कदे जम्मा निहकलंका लए अवतार, शब्दी डंक वजाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां करे ख़बरदार, साध सन्त रिहा जगाईआ। गुरमुख साचे चतर सुजान, गऊ ग़रीबां गले लगाईआ। हथ्थीं बन्ने नाम गाना, देवे माण धुर फ़रमाणा, आप आपणी गोद उठाईआ। सोहँ शब्द धुर फ़रमाणा सच समग्री देवे दाना, चार वरनां इक्क जणाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी एका गाना, सत्तां दीपां धर्म निशान बीस बीसा रिहा झुलाईआ। मनमुख जीवां अन्त पछताना, सम्मत सोलां नेड़े आईआ। ना कोई सुणे सुणाए वेद पुराणां, अञ्जील कुरानां बहिणा मुख छुपाईआ। सो शब्द इक्क निशाना, सत्तां रंगां रिहा चढ़ाईआ। पारब्रह्म अगम्म समाना, जुग जुग आपणी बणत बणाईआ। काल महांकाल हरि दर रखाए, आपणी सेवक सेवा रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, खेले खेल वड रघुराईआ। कलिजुग खेल खिलावण आया, पारब्रह्म अबिनाशी। जोती जामा भेख वटाया, भेव कोई ना पाया। गोबिन्द गुर संग रलाया, आप कराए दासन दासी। शब्द खण्डा तन पहनाया, पहली चेत्र घनकपुर वासी। चण्ड प्रचण्ड रिहा उठाया, मनमुख जीवां करे नासी। जेरज अंड वेख वखाया, आपे वेखे हर घट वासी। ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाया, चारे कुन्टां दए हुलारी। गुरमुख साचे सन्त दुलारे, आप आपणे करे प्यारे, कलिजुग तेरी अन्तिम वारे, आपे करे बन्द खुलासी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हर घट मन्दिर अन्दर जोत सरूपी पाए रासी। जोत सरूपी हरि अकार, अचरज रचन रचाईआ। सति पुरख निरँजण खेल अपार, घर साचे बैठा आसण लाईआ। शब्द सरूपी दूजी धार, दिस किसे ना आईआ। दीपां लोआं वसया बाहर, आप आपणा धाम सुहाईआ। चौथे घर अगम्म अपार, साधां सन्तां मेल मिलाईआ। पंच पंचायण दे मति समझाए, अनहद ताल वजाईआ। छेवें छप्पर ना कोए अपार, ना कोई धाम विखाईआ। सत्तवें सति सतिवाद एकँकार, एका धाम सुहाईआ। इक्क इकल्ला सच महल्ला, बैठा आसण लाईआ। जीव जन्त ना पावे सार, मन मति बुध फिरे हलकाईआ। नौ दर लक्ख चुरासी पंचम धाड़, दिन रात रही कुरलाईआ। दसवें मेला गोबिन्द साचे सच दरबार, हरि साचा मेल मिलाईआ। बजर कपाटी देवे पाड़, जिस जन आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वेखे साचा दर, पंचम जेठी रुत्त सुहाईआ। पंचम चेत दिवस भागा, हरि साचे जोत जगाईआ। ग़रीब निमाणा चरनी लागा,

मानस देही लेखे लाईआ। दुरमति मैल धोवे दाग़ा, सोहँ साबण लाईआ। जिस जन हँस बणाए कागा, कागों हँस बणाईआ। हरिजन जोत जगाए इक्क चिरागा, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। जगत तृष्न बुझाए आगा, अमृत जाम प्याईआ। माया डस्से ना डस्सणी नागा, धीरज यति सति सन्तोख इक्क रखाईआ। आप आपणे हथ्थ पकड़े वागा, रथ रथवाही आप अख्वाईआ। प्रगट होए त्रैलोकी नाथा, गऊ ग़रीबां गले लगाईआ। भगत जनां हरि सगला साथा, जुग जुग पैज रखाईआ। लेख चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथा, लहिणा देणा मूल चुकाईआ। सोहँ शब्द सुणाए साची गाथा, सो पुरख निरँजण आप आपणी करे जणाईआ। सगल वसूरा गुरमुख साचे लाथा, नेत्र नैणा दरसन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सुहाए साचा दर, पंचम पंचां मेल मिलाईआ। पंचम चेत्र पंच परवान, हरि देवे शब्द निशानया। सच झुलाए धर्म निशान, दिस ना आए हाणी हाणया। पंचम मारे एका बाण, रसना चिल्ले तीर आप चढ़ानया। पंचम रखाए एका आण, एका रंग रंगानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे वेखे घर, दर द्वार करे परवानया। पंचम मेला सहिज सुभाग, पूरा सतिगुर पाया। जगत तृष्ना बुझाए आग, माया ममता मोह कूड़ा तनों तजाया। दीपक जोती जगे चिराग, अन्ध अन्धेर मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त दुलार साचा चन्द चढ़ाया। साचा चन्द सीतल धार, लोकमात चढ़ांयदा। खुशी कराए बन्द बन्द अमृत आत्म देवे धार, परमानंद विच समांयदा। दूई द्वैती तोड़े भरमां कंध साचे मन्दिर देवे वाड़, दसम द्वारी कुण्डा लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे देवे वर, दर दुआरा बंक सुहांयदा। पंचम पाया गुण निधाना, पंचम बैठा रुत्त सुहाईआ। शब्द रखाए धुर फ़रमाणा, आपणे संग रखाईआ। आपे गोपी आपे काहना, आपे मण्डल रास पाईआ। आपे जोती पवण मसाणा, आपे बैठा मुख छुपाईआ। आप सुणाए अनहद पंचम तराना, आप आपणा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां दर घर साचे दए वधाईआ। घर साचे घर वड्याई, गुरमुख विरला पांयदा। जुग जुग प्रभ पैज रखाई, आपणा बिरद रखांयदा। कलिजुग तेरी अन्त कुड़माई, जूठ झूठ प्रभ झोली पांयदा। साचे दर वज्जे वधाई, मन मति नाच करांयदा। गुरमुख बैठे मुख शरमाई, प्रभ आत्म अन्दर फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम वेखे साचा घर, घर बाहरी आप हो आंयदा। पंचम घर तख्त सुल्ताना, हरि आपणा आप वखाया। आपे नर आपे हरि जोत सरूपी हरि भगवाना, आप आपणी बणत बणाया। आपे मर्द आप मरदाना, नारी कन्ता आप हो आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सुहाए इक्क दर, दर दुआरा रिहा सुहाया। दर द्वारे पंचम पाया,

पंचम राग अल्लांयदा। आप आपणा जगत तजाया, प्रभ पूरा दया कमांयदा। हउमे हँगता रोग मिटाया, गुरमुखां मेल मिलांयदा। दर भिखारी बण के आया, नाम निधाना संग रखांयदा। जन भगतां चोली रंगण आया, शब्द घोड़े आप चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम वेखे साचा घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। सच शब्द बिबाणा, एका एक उडाया। किसे हथ्थ ना आए राजा राणा, शाह सुल्तान वेख ना पाया। गुरमुख विरला चतुर सुजाना, प्रभ साचे आप उठाया। हथ्थीं बन्ने नाम गाना, साचा सगन मनाया। एका देवे धुर फ़रमाणा, आदि जुगादी शब्द ब्रह्मादी जुग जुग खेल खिलाया। दर घर साचे कर परवाना, आप आपणे अंग समाया। पंचम चेत्र मार ध्याना, सम्मत चौदां वेख वखाया। गुरमुख साचा बाल अञ्जाणा, गुर पूरे आपणी गोद उठाया। दो जहानी देवे माणा, जम जंधार नेड़ ना आया। धर्म राए पैणा मुख शरमाणा, नेत्र नैण मुख छुपाया। चित्रगुप्त हिसाब मुकाना, लेखा आपणे हथ्थ रखाया। प्रगट होए हरि भगवाना, गुरमुख आपणे अंग लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला इक्क दर, घर साचा रिहा सुहाया। पंचम घर हरि प्रभ पाया, पंचम तत्त वज्जे वधाईआ। साची सईआ मंगल गाया, घर मिल्या साचा माहीआ। आत्म सेजा इक्क हंढाया, परमानंद विच समाईआ। जेरज अंड फंद कटाया, उत्भुज सेत्ज दूर कराईआ। कन्त सुहागी एका पाया, नारी रूप अख्वाईआ। गुरमुख साचे साची सेवा लाया, सेवक सेवा लेखे लाईआ। देवी देवा किसे हथ्थ ना आया, करोड़ तेतीसा रिहा कुरलाईआ। ब्रह्मा शिव भेव ना पाया, गुर पीर गए गाईआ। आप आपणा धाम सुहाया, आपणी कल रिहा वरताईआ। जुग जुग आपणा भेख वटाया, रामा कृष्ना रूप वटाईआ। ईसा मूसा मेट मिटाया, संग मुहम्मद यार इक्क जमाइत बणाईआ। अल्ला राणी तन शृंगार कराया, काला सूसा तन छुहाईआ। नानक निरँकारी जोत अकारा इक्क कराया, चारों कुन्ट रुशनाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा कर सतिनाम झोली पाया, कलिजुग तेरी सच धार चलाईआ। दहि दिशा वेख वखाया, चारों कुन्ट फेरा पाईआ। मन मति बुध हँकार विकार ना किसे तुड़ाया, मनमुख सुत्ते बेपरवाहीआ। गुर गोबिन्दा घर उठाया, साचा चोला तन पहनाईआ। पंचम पंचां शृंगार कराया, पंचम मेल मिलाईआ। अमृत आत्म धार प्याया, आपणा रूप वटाईआ। एका एक अकार कर एका दूजा भउ चुकाया, चार वरनां इक्क रिहा कराया, वरन बरन रहिण ना पाईआ। गुर चेला इक्क द्वार सुहाया, सज्जण सुहेला आप अख्वाया, पूत सपूता वार विखाईआ। अन्तिम वेला इक्क पुकार, प्रभ अग्गे बैठा सीस झुकाईआ। कलिजुग तेरी काली धार तकाया, रैण अन्धेरी छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द गोबिन्द रिहा जणाईआ। पारब्रह्म पुरख अबिनाशी, आपणा कर्म कमाया। आपे होए घट घट वासी, दिस किसे ना आया।

सेवक सेवा दासन दासी, साचा मार्ग इक्क वखाया। कलिजुग अन्तिम जोत करे प्रकाशी, सम्बल नगरी धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका नाउँ रखाया। एका नाउँ निरँकार, अन्तिम कल रखांयदा। शब्द खण्डा तेज कटार, साचे तन सजांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी मारे मार, सत्तां दीपां आप हिलांयदा। राज रजानां शाह सुल्तानां तख्त ताज कोई रहिण ना पांयदा। गऊ ग़रीबां पावे सार, प्रितपालक आप अख्वांयदा। रैण अन्धेरी मेटे अन्ध अंध्यार, जूठ झूठ पार करांयदा। आप आपणी किरपा धार, कलिजुग काया क्रिया कर्म कमांयदा। सन्त सुहेले लए उभार, गुरमुख मेल मिलांयदा। गुर गोबिन्द ख़बरदार, घर साचा इक्क विखांयदा। भारत खण्डी तेरी पावे सार, नौ खण्ड पृथ्वी जाए वंडी, सम्मत चौदां वेख वखांयदा। अल्ला राणी होए रंडी, संग मुहम्मद चार यार रोवण धाहां मार, पल्लू गल विच पांयदा। ईसा मूसा पायण बन्दी, बन्दी बन्द करांयदा। अन्तिम वेला कलिजुग तुट्ठा, सोहँ बाज इक्क उडांयदा। कलिजुग जूठा झूठा पीसण पीठा, हरि खाली ठूठा हथ्थ विखांयदा। पुरख अबिनाशी एका तुठ्ठा, चार वरन कराए एका मुट्ठा, गुरमुख रहिण ना देवे कोई रुट्ठा, आप आपणा मेल मिलांयदा। मनमुख जीवां मारे कर कर पुठ्ठा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्त करांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम घाल, प्रभ साचा पूर करांयदा। मनमुख जीव तेरे लाल, तेरी झोली पांयदा। लाड़ी मौत बणे दलाल, लोकमात रखांयदा। राए धर्म निबेड़ा हक्क हलाल, आपणा आप करांयदा। चित्रगुप्त लेखा रिहा संभाल, सम्मत सोलां खोल्ह विखांयदा। फल ना दिसे किसे डाल्ह, कलिजुग काया खाली आप करांयदा। चारे कुन्ट फिरे काल बेहाल, आप आपणी तृष्णा भुक्ख मिटांयदा। गुरमुख साचे शब्द कंगाल, प्रभ साचा आप उठांयदा। देवे नाम सच्चा धन माल, आत्म झोली आप भरांयदा। काया चोली रंग चाढ़ लाल गुलाल, तृष्णा भुक्ख मिटांयदा। अन्दर मन्दिर इक्क वखाए सच्ची धर्मसाल, चार दिवार ना कोई रखांयदा। अनहद वजाए साचा ताल, बहत्तर नाड़ां इक्क तलवाड़ा आप वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सुहाए तेरा दर, बंक द्वारी आप हो आंयदा। बंक द्वार गुरमुख तेरा, एका एक सुहाया। ना कोई संझ ना सवेरा, एका रंग रंगाया। आप चुकाए मेरा तेरा, हउमे रोग मिटाया। काया वसे नगर खेड़ा, प्रभ साचे आसण लाया। पंच चुकावण आया झेड़ा, पंचां मेल मिलाया। जुग जुग बन्न्हणहारा बेड़ा, पल्लू राम नाम फड़ाया। अन्तिम करे हक्क निबेड़ा, कलिजुग वेला वक्त सुहाया। नौ खण्ड पृथ्वी लाए इक्क उखेड़ा, जड़्ह कोई रहिण ना पाया। राज राजानां भेड़ भेड़ा, त्रै देशां आप उठाया। धर्म मात तेरा खुल्ल्हा वेहड़ा, आपे रिहा कराया। कलिजुग देवे उलटा गेड़ा, बैठा मुख भवाया। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां अन्तिम बन्ने बेड़ा, खेवट खेट आप अखवाया। खेवट खेट हरि निरँकार, जुग जुग आप अख्वांयदा। गोबिन्द पूता सच द्वार, आपणी गोद उठांयदा। दो जहानां दए हुलार, पवण पवणी सेवा लांयदा। नौ द्वारे वसया बाहर, दस्म द्वारी मेल मिलांयदा। तीर निराला कसया विच संसार, सोहँ नाउँ रखांयदा। मनमुख जीवां अन्दर लाए अग्गा, रोवण ज़ारो ज़ार। गुरमुख सज्जण सुहेला गुरचरन द्वारे बहि बहि सजा, वेखे तीजा नेत्र उग्घाड़। मनमुख वेख अन्धेरी मस्सया, मगर लग्गी पंचम धाड़। गुरमुख कोटन कोट प्रकाश रवि सस्सया, जोत जगाए बहत्तर नाड़। भाग लगाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़। मनमुख दर तों जाए नस्सया, दूर दुराडा जाए भाग। भगत जनां हरि हिरदे वसया, दुरमति मैल देवे साड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चार वरनां राह एका दस्सया, आपे जाणे पिच्छे अगाड़। चार वरनां इक्क द्वार, एका एकँकारया। सतिगुर साचा सच वरतार, पारब्रह्म निरंकारया। सोहँ अक्खर भरे भण्डार, सो पुरख निरँजण आप वरता रिहा। हँ हँगता दए निवार, हाहा हुक्म जणा रिहा। सस्सा सतिगुर पुरख भतार, सृष्ट सबाई आप अख्वा रिहा। हाहा हरिजन मांगे दरस अपार, आप आपणा राह विखा रिहा। मेल मिलाए एकँकार, साचा धाम सुहा रिहा। प्रगट होए नर निरँकार, निरगुण जोत जगा रिहा। सरगुण देवे शब्द अधार, एका डंक वजा रिहा। भरमे भुल्ले जीव गंवार, माया पड़दा पा रिहा। गुरमुख करे ख़बरदार, फड़ बाहों राहे पा रिहा। कलिजुग तेरा अन्त हुलार, सम्मत चौदां चौदां लोकां आप दवा रिहा। पवण उनन्जा पावे सार, अवण गवण वेख वखा रिहा। सावण बरखे साची धार, अमृत आत्म आप पया रिहा। गुरमुखां जाए सद बलिहार, एका बणत बणा रिहा। एका रंग रंगे रंगणहार, सन्त सुहागण एका कन्त हंढा रिहा। चरन धूढ़ कराए साचा मजन, अठ्ठ सठ्ठ मेट मिटा रिहा। आत्म उपजे इक्क वैरागण, साची भगती भगत जणा रिहा। दुरमति मैल धोवे दागण, नाम साबण एका ला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मेला इक्क घर, हरि साचा मेल मिला रिहा। पंचम पाया सहिज अनन्द, आत्म घर वधाईआ। रसन तजाया मदिरा मास गन्द, परमानंद समाईआ। शब्द सरूपी चढ़या साचा चन्द, जोती नूर सवाईआ। ज्ञानी ध्यानी पंडत विद्वानी अञ्जील कुरानी मुल्ला शेख़ मुसायक गा गा थक्के बत्ती दन्द, ना कोई पाया पद निरबाणी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे इक्क निशानी। सेवक सेवादार, हरि भगवन्तया। करे कराए वारो वार, खेल खिलाए जुगा जुगन्तया। गुरमुख विरला पावे सार, प्रभ देवे तार हरि साजन साचा सन्तया। चरन कँवल उप्पर धवल ढहि पए द्वार, हरि सुणे सच बेनन्तया। देवे लवे मंग भिख प्यार, चरन प्रीती इक्क

रखन्तया। अन्दर बाहर वेख विचार, नर निरँकार दर द्वार इक्क सुहन्तया। आपे पुरख आपे नार, आपे मीता कन्त भतार, सेवक सेवक आप अख्वन्तया। गुरसिख साजन चरन बलिहार, पारब्रह्म पूरन भगवन्तया। कलिजुग लहिणा देणा रिहा कर्ज़ उतार, पूर्ब मूल चुकन्तया। पंचम जेठा दर द्वारे पाए सार, जोत सरूपी बण भिखार, पंचम भेव खुलन्तया। पंचम पंचां सांझा यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा भेख वटन्तया। सेवक साचा धन्न है, सतिगुर पूरा आप। पंचां चोरां देवे फड़ फड़ डन्न है, बाल अञ्जाणे गुरसिख उठाए आपे होए माई बाप। एका राग सुणाए कन्न है, सोहँ सो अजपा जाप। देवे माल सच्चा नाम धन्न है, कोटन कोट उतारे पाप। जुग जुग बेड़ा रिहा बन्न्ह है, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण वेख दर, दर भिखारी आपे आप।

सति पुरख दयाल, अकाल आप अख्वाया। शब्द बणाए इक्क दलाल, घर साचा रिहा वखाया। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल, आप आपणी चलदा आया। सन्त सुहेले लए भाल, घर चौथे मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क विखाया। चौथा घर कर त्यार, आपणा कर्म कमाया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, साचा राह चलाया। पारब्रह्म प्रभ पाए सार, ब्रह्म मेल मिलाया। गुरमुख साचे सन्त दुलार, सच सुनेहड़ा रिहा दवाया। कलिजुग तेरी अन्तिम धार, काली रिहा वहाया। लक्ख चुरासी कोई ना पावे सार, साध सन्त होए हलकाया। भरमे भुल्ले भरम गंवार, माया पड़दा कोए ना लाहया। पंज शैतानी मारन मार, पंच विकार चलाया। गुण निधानी हरि दातार, आप आपणा खेल रचाया। सतिजुग तेरी साची बाणी, आपणा नाउँ रखाया। सोहँ साचा कर आकार, सो पुरख निरँजण आप रघुराया। चौथे घर महल्ल अटार, अस्थिल रिहा टिकाया। आपे होया पहरेदार, दूसर कोए दिस ना आया। सगल सुहेला मीत मुरार, सरगुण रूप समाया। इक्क इकेला आप निरँकार, घर साचा रिहा सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां सच सुनेहड़ा रिहा घलाया। सच सुनेहड़ा धुर दरगाह, देवणहार अकालया। शब्द बणाए मात मलाह, होए आप रखवाल्या। इक्क जपाए साचा नाँ, जुग जुग आप उपा ल्या। कलिजुग तेरी झूठी छाँ, अन्तिम ढलदा जाए परछाया। धरत मात रोवे लक्ख चुरासी तेरी माँ, मनमुख जीवां मदिरा मास रसन लगानया। हँस बुधी होई काँ, चारों कुन्ट काग वांग कुरलानया। गुरदर मन्दिर मस्जिद कोई ना दिसे सुच्चा थाँ, मिले मेल श्री भगवानया। जूठ झूठ रही खुशीआं मना, नाल रलाए पंज शैतानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर चौथा इक्क सुहानया। चौथा घर हरि बुलंद,

एका एक अटलया। ना कोई दूसर दिसे कंध, ना कोई पावे सार जल थलया। साध सन्त ना कोई मुकाए पन्ध, नौ द्वारे फिरदे डूँघी डल्लया। गुरमुख विरले मस्तक चढ़या साचा चन्द, चरन द्वार जिस जन मलया। खुशी कराए बन्द बन्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे अन्दर रलया। चौथा घर शब्द टिकाणा, हरि आपणा आप उपाया। ना कोई जाणे जीव नादाना, दिस किसे ना आया। सोहँ झुल्ले सच निशाना, प्रभ आपणे हथ्थ उठाया। गुरमुखां वेखे मार ध्याना, लोआं पुरीआं वेख विखाया। सरगुण साचा मेल मिलाना, निरगुण रिहा जगाया। निरगुण वेखे कर ध्याना, सरगुण भेव ना राया। अन्त आपणा मेल मिलाना, गुरमुख साचे आपे वेख वखाया। इक्क सुणाए शब्द तराना, राग अनादी रिहा सुणाया। तेज प्रकाश कोटन भाना, आप आपणा रिहा विखाया। पार कराए आकाश आकाशा, दूर दुराडा धाम सुहाया। लेखे लाए स्वास स्वासा, जिस जन रसना गाया। गुरमुखां पूर कराए आसा, जुग जुग बेड़ा बंधन आया। दुष्ट हँकारी करे नासन, खण्डा नाम रखाया। गोबिन्द काया पावे रासन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर चौथा इक्क सुहाया। चौथा घर शब्द ब्रह्माद, सुहाए आदि जुगादया। आप वजाए आपणा नाद, ना कोई रसना लाए सादया। सन्त सुहेले रक्खणे याद, धुर दी बाण हरि हरि वादया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त सुहेले, आप कराए आपणे मेले, इक्क इकेले सदा सदा विसमादया। चौथा घर हरि अखाड़ा, शब्दी धुन उपजाईआ। पारब्रह्म प्रभ अगम्मा साचा लाड़ा, हरिजन नारी कन्ता आप प्रनाईआ। आपे होया पिच्छे अगाड़ा, साचे सन्तां पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वसया चौथे घर, हड्ड मास नाड़ी रत्त ना कोई रखाईआ। चौथे घर शब्द दरबार, पंच रहे दरबारया। पुरख अबिनाशी सच सुल्तान, बैठा आप भगवानया। जन भगतां करे मात पछान, अट्ठे पहर वेखे मार ध्यानया। विष्नूं बंसी ब्रह्मा शिव सारे गाण, नेत्र नैणी दरस ना पाण गुण निधानया। गुरमुख साचे चतुर सुजान, कलिजुग तेरी जूठी झूठी मात दुकान, मिटदे जाण पंज शैतानया। कोए ना देवे किसे नाम दान, काया मन्दिर अन्दर गुरुदुआरा सच मकान, हरि जोती नूर सुहानया। पंचम बहि बहि मंगल गान, दरस द्वारी राह तकानया। उठे जोद्धा सूर बली बलवान, मारे शब्द तीर निशानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां गढ़ हँकारी आपे तोड़ तुड़ानया। काया गढ़ हँकार, जगत बणाया। नाल रलाया पंज तत्त विकार, साचा सन्त ना कोए दिसाया। मनमति होई गंवार, मनमुख जीवां रही समझाया। बहत्तर नाड़ी एका रत्त, एका धन्दे लाया। मोह विकारा बद्धा नत्त, ना कोई तोड़ तुड़ाया। लक्ख चुरासी कलिजुग भुल्ली सतिगुर मति, सति धीरज सति गंवाया। कोई ना रक्खे किसे पत, नार दुहागण

लक्ख चुरासी रही कुरलाया। प्रगट हो हरि समरथ, कलिजुग अन्तिम जामा पाया। शब्द चलाए साचा रथ, सोहँ नाउँ रखाया। प्रभ का भेव अकथना अकथ, कोई कथ ना सके राया। गुरमुख साजण सन्त जनां पंज विकारा रिहा मथ, नाम खण्डा तन कटार पहनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वेखे साचा घर, घर साचा इक्क सुहाया। साचा घर सुहञ्जणा, चौथे वज्जी वधाईआ। जोत जगाए पुरख निरँजणा, शब्द करे कुड़माईआ। ज्ञान पावे नेत्र अंजना, एका रंग विखाईआ। मिल्या मेल साचा सज्जणा, विछड़ कदे ना जाईआ। जो घड़या सो अन्तिम भज्जणा, कलिजुग अन्तिम दए दुहाईआ। बीस बीसे मदिरा मास सृष्ट सबाई तज्जना, लेखा रिहा लिखाईआ। मनमुख जीवां पड़दा किसे ना कज्जना, राए धर्म दए सज़ाईआ। काल नगारा सिर ते वज्जणा, लाड़ी मौत खुशी मनाईआ। गुरमुख विरला चढ़े नाम जहाज़ना, जिस जन आपे रिहा चढ़ाईआ। शब्द सरूपी मारे आवाजना, अन्दर बैठा आसण लाईआ। चिट्टे अस्व चढ़या साचे ताजना, चारों कुन्ट रिहा दुड़ाईआ। लहिणा देणा चुकणा कल्ल कि आजना, कलिजुग कूके दए दुहाईआ। ना कोई दिसे राज राजना, शाह सुल्तान ख़ाक मिलाईआ। प्रगट होए हरि साचा शाहो शाबाशना, गुरमुखां पूरन आस कराईआ। जोत जगाए पृथ्वी आकाशना, त्रै लोआं आकार कराईआ। आदि पुरख सदा अबिनाशना, बिनस कदे ना जाईआ। नाम जपाए स्वास स्वासना, काया चोली आप रंगाईआ। आपे होया दासी दासना, जन भगत द्वारे सेवा रिहा कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख तेरा साचा दर, दर दरवाज़ा वेख वखाईआ। चौथा दर सच दरवाज़ा, आपणा आपे साज्जया। आपे वेखे ग़रीब निवाजा, आपे मारे आवाज़या। आप रचाया आपणा काजा, वड्ड दाता राजन राज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखे इक्क दर, भाग लगाए देसन माज्झया। माझे देस जोत जगाई, गोबिन्द रूप वटाया। गोबिन्द गुर शब्द कुड़माई, साचा कन्त प्रनाया। आत्म घर वज्जी वधाई, सईआं मंगल गाया। दिवस रैण खुशी संग सुहेला आया। सम्मत चौदां पहली चेत्र वेख वखाई, गुरमुखां राह तकाया। एका इक्की शब्द जणाई, साची सिक्खी रिहा बणाया। खंडिउँ तिक्खी वालों निक्की, एका इक्की पाया। नौ खण्ड पृथ्वी धारे भेखी, सत्तां दीपां रिहा जणाया। ना कोई जाणे मुनी रिखी, पंडत पांधे भेव ना पाया। लक्ख चुरासी तेरी लिख्त लेख लिखी, बिधना सेवा लाया। कलिजुग नेत्र पुरख अबिनाशी पेखी, माया ममता दूर कराया। आपे जाणे धारी केसी, दस दस्मेस अख्वाया। मूंड मुंडाए वेस वेसी, गौड़ ब्रह्मण धाया। पूत सपूता वेख वखाए चारे कूटां, वेद व्यासा नाल रलाया। सतिजुग तेरा साचा बूटा, गोबिन्द आपे रिहा लगाया। सोहँ देवे साचा हूटा, सो पुरख निरँजण सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख

तेरा साचा घर, घर चौथा रिहा वखाया। चौथे घर हरि भगवन्ता, आपणा रंग रंगांयदा। मेल मिलाए साचे सन्ता, साचा संग निभांयदा। रोग गंवाए हउमे हँगता, माया मोह चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क सुहाए साचा घर, साचा धाम अख्वांयदा। चौथा घर सच महल्ला हरि सुल्तान, सस्सा आप बणाया। चारों कुन्ट इक्क मकान, ना कोई दर दरवाज़ा लगाया। आवण जावण खेल महान, आउँदा जांदा कोई दिस ना आया। धर्म झुलाए इक्क निशान, सत्त रंग रिहा रंगाया। चौथा घर वेख वखान, आपणी दया कमाया। चन्द सूरज रवि ससि ना कोई भान, तारा मण्डल कोए दिस ना आया। जोत सरूपी हरि भगवान, आपणी सेवा रिहा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे इक्क घर, सस्सा किला इक्क बणाया। सस्सा किला सच सरकारा, आपणा आप बणाईआ। आपे होया पहरेदारा, चोबदार ना कोई रखाईआ। पंचम पंच रिहा ललकारा, पंचम दिस ना आईआ। अक्खर वक्खर होया बाहरा, हाहा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चौथे घर होया बाहरा, जन विच समाईआ। जन हरि एका रंग रंगाया, एका वस्त टिकाईआ। दूसर ना कोई संग मिलाया, निरगुण हरि अख्वाईआ। शब्द ताल हरि इक्क वजाया, आपणी सेवा लाईआ। दस्म द्वारी बन्द रखाया, अमृत ताल सुहाईआ। त्रैगुण माया जंद लगाया, ना कोई तोड़ तुड़ाईआ।

४४२ ०६ गुरमुख साचा आपणे अंग लगाया, गुर शब्द करी कुड़माईआ। साचे घोड़े तंग कसाया, सतिजुग साचे रिहा चढ़ाईआ। धुरदरगाही साची वस्त लोकमात ल्याया, कलिजुग काले रिहा विखाईआ। सतिजुग सच दरवाज़ा अलख जगाया, प्रभ दर अग्गे बैठा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सस्सा किला कीना पारा, हाहा रूप वटाईआ। हाहा हरी हरि बलवाना, हरि विच समाया। मेट मिटाए पंज शैताना, एका तीर रखाया। मन मति बुध भेव ना पाना, जीव जन्त हलकाया। ब्रह्म पारब्रह्म ना किसे पछाना, भेद अभेदा आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाया। आप आपणा अंक कटाए, एका अंक जुदाईआ। दाता सूरा सरबंग अख्वाए, राउ रंक उपाईआ। आपे भुक्ख नंग रखाए, राज राजानां शाह सुल्तानां आप हो आईआ। आप आपणा बंक द्वार खुल्हाए, आपे बैठा बन्द कराईआ। पंज शैताना आप उपाए, आपे दए मिटाईआ। पंज तत्त हरि सेवा लाए, काया मन्दिर रिहा बिठाईआ। अमृत आत्म मेवा फल खवाए, जो जन नेत्र नैण लोचन गुर पूरे दर्शन पाईआ। कौस्तक मणीआं मस्तक थेवा आप लगाए, साक सज्जण सैण मात पित भाई भैण आप हो जाईआ। रसना हरि गुण जो जन गाए, लहिणा देणा मूल चुकाईआ। वेख वखाए थाउँ थाँईं, आवे जावे कर कर धाईआ। पकड़ उठाए फड़ फड़ बाहीं, लुकया रहिण ना कोई पाईआ। आपे पिता

आपे माई, पूत सपूता आप हो जाईआ। गुरमुखां उठाए फड़ फड़ बाहीं, कलिजुग अन्तिम मेल मिलाईआ। कलिजुग जीव काग वांग रहे कुरलाए, साची चोग ना कोई चुगाईआ। सस्सा रूप हाहा हँगता आप बणाए, साची संगता रिहा मिलाईआ। आत्म धारा इक्क वहाए गंगता, गंगा गोदावरी बैठी मुख छुपाईआ। जो जन दर भिखारी आए मंगता, शब्द दाता हरि झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चौथे घर देवे वर, निरगुण सरगुण विच समाईआ। निरगुण सरगुण रूप समाया, आपणा रूप वटांयदा। पंज तत्त ना कोई रखाया, हड्ड नाड़ी मास ना कोई दिसांयदा। बूंद रक्त ना कोई उपाया, नौ दर ना वेख वखांयदा। मति बुध ना नाल रलाया, जीवां जन्तां संग निभांयदा। शब्द सरूपी एका साचा रथ चलाया, गुरमुख सुरत सवाणी साची आप बहांयदा। अकथ अकथना अजप्पा जाप जपाया, रसना जिह्वा ना कोई विखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चौथा घर होया बाहर, पंचम राह तकांयदा। पंचम घर पुरख अबिनाशा, एका एक उपाया। एका मण्डल एका रासा, एका रंग रंगाया। आदि पुरख खेले खेल तमाशा, चारों कुन्ट वेख वखाया। ना कोई पृथ्वी ना आकाशा, लोआं पुरीआं दिस ना आया। लक्ख चुरासी आपे रक्खे वासा, देवत सुर ना कोई जणाया। ब्रह्मा विष्नूं ना होए निरासा, प्रभ साची सेवा लाया। पंचम घर सर्ब गुणतासा, आपणी जोत जगाया। आपणा आप दए भरवासा, संगी साथी आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर सच धाम सुहाया। पंचम धाम हरि बनवारी, आपणा आप सुहाया। खेले खेल खेलणहारी, आपणी खेल रचाया। त्रैगुण माया ना कोई पसारी, पंज तत्त ना कोई दिसाया। आप आपणी कल आपे धारी, कलधारी आप अख्वाया। आप आपणी पैज स्वारी, आप आपणा पर्दा लाहया। निर्मल जोत कर उज्यारी, निरँकारी रूप वटाया। शब्द ना दिसे कोई जैकारी, हरि साची सेवा लाया। सतिनाम हरि वड भण्डारी, घर साचे इक्क टिकाया। नानक बणया दर भिखारी, प्रभ साचे झोली पाया। कबीरा रोवे ज़ारो ज़ारी नेत्र नैण मुँधारी, साजन लक्ख चुरासी गई हारी, चार जुग पारब्रह्म किसे हथ्थ ना आया। चौथे घर मार उडारी, साध सन्त बैठे डेरा लाया। गुरमुख साचे करो त्यारी, प्रभ साचा राह विखाया। निहकलंक जोद्धा सूर बली बलकारी, लोआं पुरीआं पार किनारा इक्क वखाया। आवे जावे वारो वारी, आपणी रचन रचाया। गोबिन्द काया करे प्यारी, साचा मेल मिलाया। सोहँ चोले नाल श्रृंगारी, पहला रंग रंगाया। कल्गी तोड़ा सीस दस्तारी, साचा नाम लगाया। शस्त्र खण्डा फड़ दो धारी, ब्रह्मण्डां रिहा जगाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, मनमुखां कंडां रिहा वढाया। जेरज अंडां पावे सारी, हरि आपणी बणत रिहा बणाया। सम्मत चौदां तेरी थित विचारी, एका इक्की एकम जणाया। सतिजुग तेरी बन्न्हे साची धारी, मनमुख जीवां भेव

ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पंचम घर सुहाया। पंचम घर हरि भगवाना, भगवन रूप समाया। जन भगतां देवे साचा दाना, दाता दानी आप अख्वाया। तन बन्हे एका नाम गाना, मुख साचा सगण मनाया। प्रकाश कोट तेजन भाना, इक्क आकार रिहा कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मेला सच घर, हरि सहिजे रिहा समाया। पंचम घर शब्द अनाद, अट्ठे पहर धुन्कारया। आप वजाए हरि ब्रह्माद, सुणे सुणाए वड्ड बलकारया। खेले खेल आदि जुगादि, खेलणहारा वड संसारया। सन्त सुहेले साचे लाध, देवे दरस अगम्म अपारया। मेल मिलाए माधव माध, नेत्र नैण रिहा उग्घाड़या। वेख वखाए सन्त साध, मनमुख चबाए आपणी दाढ़या। जो जन दिवस रैण रसना जिह्वा रहे अराध, नेड़ ना आए पंचम धाड़या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मेला सच घर, घर पंचम देवे वाड़या। पंचम घर शब्द जणाई, नाम सति उपाया। नाम सति हरि सेवा सतिगुर साचा रिहा सुणाया। तत्त मति हरि इक्क बुझाई, चरन नत्त बंधाया। धीरज सन्तोख हरि झोली पाई, अन्तिम मोख रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे सच घर, सच द्वार रिहा सुहाया। पंचम घर धुर फ़रमाणा, एका शब्द जणाईआ। आपे जाणे हरि तराना, छत्ती राग भेव ना पाईआ। ना कोई जाणे वेद पुराणा, खाणी बाणी रही गाईआ। हथ्थ ना आए अञ्जील कुरानां, ईसा मूसा दए दुहाईआ। संग मुहम्मद वेखे मार ध्याना, अल्ला हू हू नाअरा लाईआ। अहिनल हक्क दर परवाना, घर साचे रिहा कराईआ। चौथा घर पद निरबाना, अल्ला राणी पर्दा पाईआ। पंचम घर हरि मकाना, बैठा आसण लाईआ। ना कोई तीर ना कोई निशाना, तेज कटार ना कोई रखाईआ। ना कोई बस्त्र शस्त्र पीणा खाणा, मीत मुरार ना कोई अख्वाईआ। ना कोई सुणे सुणाए दूसर गाना, साध सन्त बैठे आसण लाईआ। जोत सरूपी हरि भगवाना, आपे वसया सच मकाना, पंचम घर सुहाईआ। पंचम घर उच्च अटला, हरि साचे आप उसारया। आपे बैठ इक्क इकल्ला, खेले खेल अपारया। आपणी जोती आपे रल्ला, हरि शब्द बणत बणा रिहा। नाम रखाए निहचल अचल्ला, भेव कोई ना पा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर पंचम भाग लगा रिहा। पंचम घर वड वड भागी, एका एक सुहांयदा। आदि शक्त आपे जागी, आपणा रूप विखांयदा। शब्द मिल्या साचा रागी, नाम सति नाउँ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम दर कर परवान, हरि साचा आप करांयदा। आपे देवणहारा माणा, आपे मेट मिटांयदा। आप झुलाए जुग जुग निशाना, आपे खाक रुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मीता आप हो आंयदा। पंचम मीता हरि गिरधारी, कलिजुग वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी कलि सिक्दारी,

झूठी रैण छाईआ। भरमे भुल्ले जीव गंवारी, माया ममता तन पिसाईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद हाहाकारी, जूठा झूठा वणज कराईआ। सन्त सुहेले मेले इक्क इकेले ना कोई पावे सारी, गुर पीर आपे अख्वाईआ। मिल्या मेल ना हरि गिरधारी, काया सुंञी सेज रखाईआ। पंचां काया रहे सरदारी, दुरमति मैल ना मन धवाईआ। साचे कन्त ना होए प्यारी, नार दुहागण रही कुरलाईआ। गुरमुख विरला सन्त कन्त सुहागण नारी, साची सेजा रिहा हंढाईआ। फूलन बरखा लग्गे अपर अपारी, आप आपणी दया कमाईआ। आपे बणया भुजा पसारी, साची गोदी रिहा उठाईआ। दिवस रैण करे प्यारी, विछड़ कदे ना जाईआ। शब्द चोला तन शृंगारी, एका रंग रंगाईआ। आप वसाए उच्च महल्ल अटल अटारी, दर दरवाज़ा आपणी हथ्थीं बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। पंचम मेला दर दरबार, आपणा आप कराया। आप कराए ख़बरदार, साचा राह विखाया। कलिजुग तेरी काली धार, मुख काला पल्लू पाया। ईसा मूसा हो त्यार, संग मुहम्मद चार यार डौरू वाहया। अल्ला राणी प्रभ पाए सार, एका पल्लू सिर रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा अन्तिम लेखा, ना कोई जाणे औलीआ पीर शेख़ा, आप आपणे हथ्थ रखाया।

हरि हरि इक्क इकल्ला एकँकार, एक अख्वाया। शब्द बणाए मीत मुरार, आपणा संग निभाया। तीजा नेत्र वेख उग्घाड़, गुरमुख साचे रिहा जणाया। चौथे घर देवे वाड़, हरि सन्तां मेल मिलाया। पंचम मेला इक्क द्वार, पंचां विच समाया। निहकलंका नर अवतार, नर नरायण आप अख्वाया। नर नरायण खेल अपार, नर हरि आप समाया। आदि पुरख अगम्म अपार, अगम्म अगम्मा बण के आया। अलक्ख अलक्खणा वड वड बलकार, कोई लक्ख ना सके राया। होए प्रतक्खना विच संसार, आपणी कल वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम पंचां नाम सुहाया। पंचम अक्खर जगत निशाना, हरि साचा रिहा लगाईआ। निहकलंक बली बलवाना, निरगुण खेल खिलाईआ। सरगुण वेखे मार ध्याना, लक्ख चुरासी बैठा आसण लाईआ। राग सुणाए इक्क तराना, साचा नाउँ वजाईआ। हरिजन मेला मेल श्री भगवाना, आप आपणी बूझ बुझाईआ। जुग जुग झुलाए धर्म निशाना, धर्मी धर्म रिहा कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर पंचम मेल मिलाईआ। पंचम अक्खर जगत विधाता, आपणा आप उपांयदा। आपे होए पिता माता, आपे बणत बणांयदा। आपे देवणहारा दाता, आपे झोली अग्गे डांयदा। आप बणाए चरन नाता, आपे सेव कमांयदा। आपे बैठ इक्क इकांता, निरगुण खेल

खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरवैर आप अख्वांयदा। निरगुण निरवैर नर निरंकारया। दो जहानां आपे करे सैर, आवे जावे वारो वारया। जन भगतां तारे कर कर मेहर, हरि शब्दी मेल मिला रिहा। आप चुकाए मेर तेर, अन्ध अन्धेर मिटा रिहा। चरन ल्याए बहाए घेर घेर, सोहँ खण्डा हथ्थ उठा ल्या पंचम जेठी प्रगट होए शेर दलेर, सम्मत चौदां भेव खुल्ल्हा रिहा। लक्ख चुरासी देवे भेड़, राज राजानां आप उठा रिहा। ब्रह्मा शिव लोआं पुरीआं सभ दी जड़्ह दए उखेड़, सुरपति राजा इन्द करोड़ तत्तीसा मुख भुआ रिहा। कलिजुग देवणहारा एका गेड़, गेड़नहारा आप अख्वा रिहा। पंज तत्त काया अन्दर रिहा छेड़ां छेड़, लोभ मोह कर हंकारया। अन्तिम करे हक्क निबेड़, सम्मत सोलां राह वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण खेल खिला रिहा। निरगुण खेल हरि गोबिन्द, गोबिन्द रूप वटांयदा। प्रगट होया भारत खण्डी हिन्द, जम्बु दीप सुहांयदा। हरिजन उपाए बिन्द, मनमुख लाए चारों कुन्ट निन्द, दहि दिशा भरम भुलांयदा। कलिजुग जूठी झूठी धारा वहिण सागर सिन्ध, लोभ मोह हँकार बेड़ा कर त्यार, वंञ मुहाणा ना कोई वखांयदा। कलिजुग अन्तिम मेट पसार, गोबिन्द काया खेल बणांयदा। निहकलंक लए अवतार, आप आपणी बणत बणांयदा। शब्दी जोती निरगुण धार, हरि हरि हरि विच समांयदा। आपणी करनी रिहा कर, दिस किसे ना आंयदा। जगत मरनी रिहा मर, ना लहिणा मूल चुकांयदा। एका अक्खर जाए पढ़, आवण जावण फंद कटांयदा। दरस दिखाए साचा हरि ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई तत्त रखांयदा। आपे तोड़े किला हँकारी गढ़्ह, शब्द खण्डा हथ्थ उठांयदा। त्रैगुण माया जाए सड़, प्रभ लेखा रिहा चुकांयदा। गुरमुखां जोत जगाए बहत्तर नड़, दीपक इक्क ज्ञान टिकांयदा। दरस दिखाए अग्गे खड़्ह, दस्म द्वारी कुण्डा लांहयदा। आत्म सेजा सच सिँघासण उप्पर चढ़, बैठा भुजा उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निराहार निरवैर हो आंयदा। निरवैर निरँकार हरि निरँजणा, अकल कल वरताईआ। जन भगतां मिले मेल साचे सज्जणा, विछड़े कदे ना जाईआ। चरन धूढ़ कराए मजना, कलिजुग अन्तिम रिहा कराईआ। मदिरा मास जिस जन तजणा, घर साचे मेल मिलाईआ। अमृत पी पी गुरमुख विरले रज्जणा, मनमुख रसना काग वांग कुरलाईआ। गढ़्ह हँकारी भाण्डा प्रभ साचे भन्न्हणा, शब्द खण्डा रिहा उठाईआ। कलिजुग लाउण ना देवे अज्जना पज्जना, देवे अन्तिम वेख वखाईआ। ना कोई करे कराए मक्का काअबा हज्जना, मुल्लां शेख़ां रिहा मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निराहार सज्जण घर बैठा आसण लाईआ। निज घर आसण हरि निरँकार, एका एक रखाया। शब्द सरूपी जै जै जैकार, दिवस रैण कराया। अमृत आत्म ठण्ढी धार, रिहा मुख चुआया।

४४६
०६

नेत्र तीजा लोचन उग्घाड़, आपणा दरस दिखाईआ। नेड़ ना आए पंचम धाड़, आपे मेट मिटाईआ। सभ दी दए जड़ उखाड़, मिल मिल गाईआ। धुर दरगाही साचा लाड़, गुरमुख नारी आप प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नन्ना अक्खर रिहा बणाईआ। नन्ना अक्खर एका अंक, हरि साचा आप रखांयदा। दूसर वस्त ना कोई लए मंग, ना कोई संग रखांयदा। खोल्ल्या मुख अमृत धारा गंग, चार दीवारी आप वहांयदा। शब्द रंगीले बैठ पलँघ, साची खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि नाम साचा धाम गुरमुखां आप खुल्हांयदा। नन्ना नाम एका धाम, हरि साचे हथ्थ रखाया। अमृत आत्म आप प्याया साचा जाम, तृष्ना भुक्ख मिटाया। करे कराए कवण काम, जुग जुग करदा आया। कलिजुग मिटे अन्धेरी शाम, निर्धन रिहा जगाया। दर घर साचे कर बिसराम, आपणी खुशी मनाया। जन भगतां लेखे लाए चाम, मानस जन्म पार कराया। कोए ना मंगे हरि हरि दाम, चरन प्रीती रिहा सिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नन्ना निरगुण वेख घर, एका मुख खुल्हाया। नन्ना उप्पर बन्द दर दरवाज़ा, ग़रीब निवाज करांयदा। चारों कुन्ट रच्चया काजा, हेठां मुख रखांयदा। गुरमुखां बहि बहि मारे आवाजा, लोकमात राह तकांयदा। नाल रखाए घोड़ा ताजा, शब्दी जोड़ जुड़ांयदा। आप चलाए आपणा जहाज़ा, रथ रथवाही आप हो आंयदा। कलिजुग वेखे तेरा काजा, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। लाड़ी मौत मंगे दाजा, मनमुख जीवां झोली पांयदा। गुरमुखां साचा साजन साजा, हरि साचा मेल मिलांयदा। किसे हथ्थ ना आए वड शाहो राजन राजा, शाह सुल्तानां भिख मंगांयदा। इक्क वजाए अनहद वाजा, गुरमुख तेरी काया मन्दिर अन्दर आपे बैठा काया अन्दर गुरुदुआरा सो सुहांयदा। बजर कपाटी तोड़े जन्दर, किसे हथ्थ ना आए गोरख मच्छन्दर, उच्चे टिल्ले बहि बहि वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नन्ना नाउँ रखांयदा। नन्ने उट्ठे एका ताल, हरि साचा आप लगाईआ। टेडी बंक रिहा लगा, हरि प्रमुख कराईआ। एका धारा रिहा चुआ, आपणी आप प्रगटाईआ। उप्पर दए टिका, विस्मादी रूप समाईआ। आप आपणा हरि छुपा, बैठा आसण लाईआ। नन्ना हेठां मूंह खुल्ल्हा, शब्द धारा रिहा चलाईआ। मातलोक तेरा एका राह, प्रभ एका रिहा तकाईआ। बण बण आए जुग जुग मलाह, सज्जण सुहेला आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका राह चलाईआ। एका डण्डा उप्पर रक्ख, प्रभ साचा राह रखांयदा। आदि निरँजण हो प्रतक्ख, एका धाम सुहांयदा। पुरख अबिनाशी गया तुट्ठ, आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण निरवैर घर साचे आसण लांयदा। नन्ना रक्खे हरि निरँकार, एका एक उपाया। हाहा हरि हरि वेख विचार, हरि साचा

रिहा उपाया। पारब्रह्म पुरख अपार, आपणी दया कमाया। लक्ख चुरासी कर्म विचार, एका धार रखाया। आपे वसया अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहिर खेल रचाया। आपे नारी आपे नार, कन्त सुहागी रिहा अख्वाया। जुग जुग करन करावण करदा आया कार, सतिजुग त्रेता द्वापर पार कराया। कलिजुग तेरी काली धार, साचा वहिण रिहा वहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हाहा हरि गुण सरगुण वेख वखाया। हाहा हुक्म सच्ची सरकार, आपे वेखे विच संसार जीव गंवारया। पंज तत्त पाए सार, काम क्रोध लोभ मोह हंकारया। गुरमुखां बख्शे चरन प्यार, देवे नाम अधारया। पूर्ब कर्म रिहा विचार, लहिणा देणा मूल चुका रिहा। भाणा सहिणा नर निरँकार, कलिजुग अन्तिम अन्त जगा रिहा। साध सन्त ना पायण सार, पुरख अगम्मा अगम्मड़ी कार कमा रिहा। सम्मत चौदां वेख विचार, हरि आपणा खेल खिला रिहा। नेतन नेता चेतन्न चेता, रुत्त बसन्ती इक्क बणा रिहा। गुरमुख वेखे काया खेता, फल फुलवाड़ी आप उपा रिहा। आपे होए माँ प्यो बेटा, पूत सपूता आप अख्वा रिहा। प्रगट होए पंचम जेठा, निहकलंक नाउँ रखा रिहा। नन्ना हाहा साचा संग, एका धाम टिका ल्या। गुरमुखां परखे अन्तिम नीता, अमृत मेघ बरसा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दो अक्खर जोड़ जुड़ा ल्या। एका अक्खर नन्ना नर नरायण है, आदि अन्त एकँकारया। हरिजन देवे लहिण देण है, जुग जुग आप चुका रिहा। ना कोई तीजा साक सज्जण सैण है, भैण भाई ना कोई अख्वा ल्या। लाड़ी मौत ना खाए डैण है, जिस जन आपणी दया कमा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नन्ना हाहा मेल मिला रिहा। नन्ना कर्म विचार, हरि साचे जोत जगाईआ। कलिजुग तेरी काली धार, रैण अन्धेरी छाईआ। साध सन्त रहे पुकार, दिवस रैण रसना गाईआ। धरत मात रोवे ज़ारो ज़ार, प्रभ चरन दए दुहाईआ। धर्म राए खोल्हे किवाड़ खाली कुण्डा रिहा विखाईआ। लाड़ी मौत कर श्रृंगार, दोवें नैण बैठी शरमाईआ। चित्रगुप्त लेख लिखार, दर बैठा हिसाब मुकाईआ। ब्रह्मा वेखे अट्ठे नेत्र उग्घाड़, चारे मुख रसना गाईआ। शिव शंकर रिहा पुकार, दोवें जोड़ सीस झुकाईआ। करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द रिहा कुरलाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी जूठा झूठा अखाड़, सच वणज ना कोई कराईआ। सत्तां दीपां पंचम धाड़, दिवस रैण रही सताईआ। गुरमुख विरला साचा लाड़, प्रभ चरन ध्यान बैठा इक्क रखाईआ। नेत्र नैणां रिहा उग्घाड़, सच दरसी दरस विखाईआ। बजर कपाटी आपे पाड़, आपणा भेव खुल्हाईआ। जोत जगाए बहत्तर नाड़, जोत निरँजण सेवा लाईआ। खेले खेल इक्क द्वार, एकँकारा रूप समाईआ। चार वरनां कर प्यार, साचा राह चलाईआ। सतिजुग तेरी साची धार, प्रभ आपणे हथ्थ रखाईआ। हरि सन्तन मेला मीत मुरार, जुग जुग रिहा कराईआ। गुर चेला

सोहे इक्क द्वार, गुर गोबिन्दा संग रलाईआ। सज्जण सुहेला मीत मुरार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, सम्मत चौदां वेख वखाईआ। चौदां तबकां मारे मार, चौदां लोकां रिहा हिलाईआ। पुरीआं लोआं करे ख़बरदार, चारे खाणी रिहा उठाईआ। खाणी बाणी वसया बाहर, प्रभ साचा भेव खुल्हाईआ। ईसा मूसा आई हार, गल बैठे पल्लू पाईआ। वेद पुराणां आई हार, ब्रह्मा रो रो दए दुहाईआ। सोहँ तेरी तिक्खी धार, प्रभ साचा रिहा चलाईआ। सो पुरख निरँजण अपर अपार, आपणी खेल वरताईआ। आदि पुरख जोत अकाल, अकाल मूर्त हो जाईआ। साची सूरत शब्द कमाल, दिस किसे ना आईआ। नाद तूरत नूर नुरानी जल्वा जलाल, नूर नूर कराईआ। जन भगतां फल लगाए काया डाल्ह, आप आपणा खवाईआ। अमृत आत्म सीर सर सरोवर इक्क रखाईआ। आपे चले नाल नाल, अन्दर बाहर होए सहाईआ। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल, हरि दाता बेपरवाहीआ। कलिजुग जीव उठ सुरत संभाल, मस्तक लग्गी काली छाहीआ। पारब्रह्म इक्क अकाल, एका रंग रंगाईआ। शब्द बणाए सच दलाल, लोकमात पार कराईआ। नौ खण्ड पृथ्वी हाल बेहाल, सत्तां दीपां आप भवाईआ। प्रगट होए वाली दो जहान, दो जहानां रचन बणाईआ। एका झुल्ले शब्द निशान, सत्त रंगा रंग रंगाईआ। आपे गोपी आपे काहन, आपे राम रमईआ होया राम, गुरमुख सुरती साची सीता आप व्याहीआ। एका शब्द जणाए अठारां ध्याए माण, गीता काहना बंसरी रिहा नाम वजाईआ। वेद व्यासा लिखे पुराण, अठारां लिख लिख गया समझाईआ। ईसा मूसा वेखे नीता, अञ्जील कुराना फोल फुलाईआ। सम्मत चौदां होया चेतन्न चीता, चित वित ठगोरी पाईआ। पकड़ उठाए हस्त कीटा, राज राजानां रिहा जगाईआ। जूठा झूठा पीसन पीसा, मोह विकारा चक्की आप चलाईआ। हरि शब्द चलाए इक्क अनडीठा, दिस किसे ना आईआ। भन्नृणहारा कौड़ा रीठा, जुग जुग भेख वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा वेख कल, कलि कर्म कमाईआ। करनहार समरथ, एका एक अखवाया। जुग जुग चलाए नाम रथ, रथ रथवाही बण के आया। सृष्ट सबाई पाई सत्थ, कलिजुग वेख वखाया। लक्ख चुरासी पावे नत्थ, डोरी आपणे हथ्थ रखाया। गुरमुखां शब्द जणाए अकथना अकथ, अकथ कथा रिहा सुणाया। सगल वसूरे जायण लथ्थ, अन्तिम लहिणा देणा दए चुकाया। आप जणाए आपणी गथ, गुर गोबिन्दे सेवा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कक्का कर्म कमाया। कक्का कर्म निरगुण निरगुण भेद अभेदया। वेख वखाए सरगुण, कर कर अछल अछेदया। नेड़ ना आए त्रैगुण, माया वेदन वेदया। जन भगतां पुकार आप सुण, पावण सार ना वेदन वेदया। आत्मक नाद वजाए धुन, सुणे सुणाए विच ब्रहमादया। प्रगट होया बीस गुन, हरि साचे साजन साज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

४४६
०६

धर, कक्का काल अराध्या। कक्का कूड़ कुड़यार, हरि कूड़ दए मिटाया। शब्द खण्डा तेज कटार, आपणे हथ्थ उठाया। गुरमुख मेला इक्क द्वार, आपणा आप मिलाया। सज्जण सुहेला ख़बरदार, कलिजुग अन्तिम रिहा कराया। कल्गी तोड़ा सीस दस्तार, नीला घोड़ा रिहा विखाया। जोती जोड़ा शब्द भण्डार, आपणा आप वरताया। वेखे परखे मिट्ठा कौड़, वेखणहार आप अख्वाया। धुरदरगाही आया दौड़, लोकमाती फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कक्का कमी कर्म कमाया। कक्का कलिजुग काल है, काली धार वहाए। ना कोई जाणे धर्म निशान है, मनमुख बैठे मुख छुपाए। धुरदरगाही आप भगवान है, जुग जुग वेस करेंदा आए। सम्मत चौदां मार ध्यान है, आप आपणी बणत बणाए। पंचम जेठी इक्क निशान है, सृष्ट सबाई दए हिलाए। आप कराए जन भगतां जाण पछाण है, आत्म ब्रह्म जणाए। पारब्रह्म देवे जिया दान है, आत्म झोली रिहा भराए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धुर दा लेख रिहा मिटाए। लल्ला लेख अपार, हरि आपणे हथ्थ रखाया। आप उपाए आप मिटाए करे कराए करावणहार, दूसर ना कोई संग रखाया। द्वापर त्रेता सतिजुग करे पार, आप आपणा राह बताया। निरगुण सरगुण दोवें दो धारा रिहा विखाया। सोहँ खण्डा तेज कटार, कलिजुग ब्रह्मण्डां रिहा वखाया। जेरज अंडां पावे सार, उत्भज सेत्ज रिहा डराया। गुरमुखां पाए साची वंडा, आप आपणा रिहा जणाया। धर्म राए ना देवे दंडा, दर द्वारे दिस ना आया। भुक्ख तृष्ना तेरा अन्तिम कन्ढा, लक्ख चुरासी पूर बणाया। मनमुख जीव आत्म होई रंडा, साचा कन्त भगवन्त ना कोए हंढाया। काम क्रोध लोभ मोह हँकार माया वंडा, पंज तत्त भरया घमंडा, साचा राह ना कोए विखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लल्ला लेख रिहा चुकाया। लल्ला लेख अपार, हरि लिखाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, ईसा मूसा संग रलाया। नाल रलाए मुहम्मदी यार, अल्ला राणी लए प्रनाया। लाल चुंनी अपर अपार, आपे उत्ते रखाया। मुस्लिम सुनी आई हार, कलिजुग अन्तिम दए दुहाया। वेख वखाणे वड वड गुण गुणी, वेद पुराणां रिहा जणाया। ग्रन्थी पन्थी वेखे वज्जदी धुनी, धुन आत्मक आपणे हथ्थ रखाया। सृष्ट सबाई छाण पुणी, नौ खण्ड पृथ्वी फेरा पाया। जन भगतां पुकार रिहा सुणी, दर द्वारे सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लल्ला लिखणहारा आप अख्वाया। लल्ला लिख्या धुर करतार, ना कोई मेट मिटाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, औलीए पीर शेख़ दए मिटाईआ। काशी पंडत रहे विचार, प्रभ साचा हथ्थ ना आईआ। हरि मन्दिर अन्दर सुणे पुकार, ना कोई वेखे वेख विखाईआ। मक्का काअबा होया हैरान, गौंस धौंस रहे जणाईआ। अमाम मैहन्दी लए अवतार, नीला चोला तन छुहाईआ। उम्मत रसूल रहे खहन्दी, सम्मत चौदां बणत बणाईआ।

भाणा वरते दिशा लहिंदी, हरि आपणी रचन रचाईआ। लाड़ी मौत प्रभ दर अग्गे हो हो कहिंदी, दोवें बैठी सीस झुकाईआ। दर द्वारे भाणा सैहन्दी, दिवस रैण रही सेव कमाईआ। लाल लाए हथ्थीं मैहन्दी, पंचम जेठ नेड़े आईआ। कलिजुग तेरी धार वहिंदी, ना कोई लए बचाईआ। हरिसंगत प्रभ चरन द्वारे इक्ठी हो हो बैहन्दी, हरि गुण रसना जिह्वा गाईआ। चरन द्वारे ढहि ढहि पैंदी, जुग जुग विछड़े मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लिखणहारा लेख जुग जुग आप अख्वाईआ। लेखा लिखणहार दातार, अकल कला भरपूरा। कलिजुग तेरी पावे सारा, मेट मिटाए कूड़न कूड़ा। गुरमुख साचे कर त्यार, चरन प्रीती बख्शे साची धूढ़ा। निर्मल जोती कर अकार, काया रंगण रंग चढ़ाए गूढ़ा। शब्द डंक अपर अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा लिखणहार चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा। लल्ला लेप ना देत है, आदि पुरख अडोल। आपे खेले खेल काया होल है, करे कराए साचे चोल्ह। फल लगाए महीना चेत है, गुरमुखां पड़दे रिहा फोल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लल्ला लिख्या लेख, सृष्ट सबाई होई अनभोल। कक्का काज रचाया, हरि वाली दो जहानया। हरि साजण साचा साज वजाया, वजावणहार श्री भगवानया। सीस ताज किसे दिस ना आया, वड राजन राज शाह सुल्तानया। देस माझन जोत जगाया, गोबिन्द चेला दर परवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा बेड़ा आपे बन्न्हया। कक्का कलावन्त है, कर्म जोग दो जहानी। दाता सूरा हरि भगवन्त है, देवे शब्द निशानी। रसना जिह्वा मणया मंत है, सोहँ मारे कानी। महिंमा गणत अगणत है, भेव ना जाणे कोई विद्वानी। आपे जाणे साध सन्त है, वेख वखाए वेद पुराणी। पारब्रह्म ब्रह्म नारी कन्त है, सुरत शब्द वेख विखानी। भरमे भुल्ले जीव जन्त है, कोई ना जाणे निहकलंक तेरी शब्द निशानी। आदि पुरख एका एक आदि अन्त है, लोकमात खेल महानी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कक्का करे इक्क कुरबानी। कक्का कर कुरबान, कर्म विचारया। जोत सरूपी कर ध्यान, वेखे वड संसारया। गुरमुख साचे चतुर सुजान, नर हरि शब्दी मेल मिला रिहा। मिल मिल सखीआं मंगल गान, पंचम सेवा ला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग मेला मेल मिला रिहा। पंचम अक्खर कर प्रधान, पंचम मेल मिलाया। नन्ना हाहा इक्क निशान, साचा नेह कराया। कक्का कर्म कर वख्यान, लल्ला लेख लिखाया। कूड़ कुड़यारा जगत जहान, अन्तिम मेट मिटाया। पंचम बण बली बलवान, पंचम अक्खर मीत बणाया। शब्द बणाए सच निशान, साचा मार्ग रिहा विखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाया। निहकलंक अगम्म अथाह, भेव किसे ना पाया। आपे दाता बेपरवाह, परवरदिगार अख्वाया। जुग जुग बणाए

आपणा नाँ, भेखाधारी भेख वटाया। शब्द बणाए जगत मलाह, एका पल्लू नाम फड़ाया। आपणी करे आप सलाह, दूसर ना कोई संग रखाया। कलिजुग तेरा लहिणा ना, देणा रिहा चुकाया। सतिजुग गहणा देवे पा, सोहँ कंगण रिहा घड़ाया। गुरमुख देवे संग रला, साची रंगण रंग रंगाया। धर्म द्वारे दए बहा, एका धाम सुहाया। चार वरन एका थाँ दए बहा, ऊँचां नीचां भेव मिटाया। राज राजानां लए सरन लगा, तख्त ताज कोई रहिण ना पाया। एका छत्र सीस झुला, जगत जगदीसा आप अख्वाया। सतिजुग साचा समां सुहा, साची इक्की रिहा पाया। निक्की सिक्खी आप बणा, आप आपणी झोली पाया। धर्म राए दा कटया फाह, लक्ख चुरासी मेट मिटाया। आपे होया पिता माँ, आप आपणी गोद उठाया। अन्तिम पार कराए फड़ फड़ बांह, सागर सिन्ध ना कोई रुढ़ाया। गुरमुख साचे बलि बलि जाँ, जिस कलिजुग माया पड़दा लाहया। कलिजुग जीव कुरलायण काँ, मदिरा मास विष्टा मुख रखाया। साची दरगाह मिले ना थाँ, नानक गुर शब्द गया लिखाया। नानक निरगुण पारब्रह्म एका करी हाँ, नाम सति झोली पाया। दो जहानी देवे ठण्ढी छाँ, सज्जण सुहेला आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम अक्खर मेल कर, पंचम पंचां रिहा मिलाया। पंचम अक्खर एका रंग, हरि साचा आप रंगांयदा। आप आपणा ल्या मंग, आप आपणी झोली डांयदा। आपणे घोड़े कसया तंग, शाह अस्वारा आप अख्वांयदा। आप वहाए धारा गंग, अमृत आत्म आप पिलांयदा। पुरीआं लोआं आपे लँघ, खण्ड ब्रह्मण्ड वेख वखांयदा। आपे कट्टणहारा भुक्ख नंग, आपे राज राजान हो जांयदा। जुग जुग सुणाए सुहागी छन्द, जुग जुग बणत बणांयदा। शब्द मौली बन्ने तन्द, गुरमुख आत्म साचा सगन मनांयदा। खुशी कराए बन्द बन्द, अनहद शब्द जणांयदा। आप उपजाए परमानंद, निजानंद वखांयदा। वेख वखाणे मार ध्यान पुरी अनन्द, अनन्द पुर आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण रूप वटांयदा। निहकलंका शब्द अभेद, दिस किसे ना आया। जोती शब्दी गायण वेद, वेद पुराणां सेवा लाया। आपे होया अछल अछेद, जुग जुग वेस करेंदा आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, पंचम मेल मिलाया। पंचम अक्खर पारज़ात, हरि पंचम मेल मिलांयदा। लक्ख चुरासी आप निभाए नात, आपे तोड़ तुड़ांयदा। पारब्रह्म ना कोई ज़ात ना कोई पात, ब्रह्म अंस उपांयदा। बंस सरबंस इक्क वखाए साचा नात, साचा साचा धाम सुहांयदा। कलिजुग मेट रैण अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चढ़ांयदा। चार वरन अठारां बरन आप बणाए भैण भ्रात, एका थाँ सुहांयदा। सृष्ट सबाई अन्तिम लहिणा देणा चुक्कणा दिवस सात, हरि लेखा झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप हो आंयदा।

४५२
०६

निहकलंक हरि शब्द है, शब्दी शब्द समाए। ना कोई बणाए बणत है, मात पित ना कोई अख्वाए। भेव ना पायण साध सन्त है, पारब्रह्म भेव ना राए। ना कोई जाणे जीव जन्त है, वेद पुराणां हथ्थ ना आए। आपे आप पारब्रह्म प्रभ साचा कन्त है, गुरमुख साचे लए मिलाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाए। कलिजुग वेला अन्त दर, हरि साचा वेख वखांयदा। आपे जाणे नारी नर, देवत सुर फोल फुलांयदा। ना जन्मे ना जाए मर, जुग जुग फेरा पांयदा। आपे वसया थिर घर, महल्ल अटल उपांयदा। गोर मढ़ी ना जाए सड़, गंगा जल ना कोई रुढ़ांयदा। सभ दे अन्दर बैठा वड़, दिस किसे ना आंयदा। आपणा घाड़न आपे घड़, आपणी बणत बणांयदा। दस्म द्वारी उप्पर चढ़, किला कोट बन्द करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पंचम मेल मिलांयदा। निहकलंक डंक अपार, एका एक वजाया। राउ रंकां करे ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पाया। आप मिटाए मुहम्मदी यार, ईसा मूसा रिहा हिलाया। वेद पुराणां सुणे सुणाए पुकार, खाणी बाणी भेव खुल्ाया। करे कराए आप विहार, दूसर ना कोई संग रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा अन्तिम मूल आपे रिहा चुकाया। कलिजुग तेरा अन्तिम मूल, हरि साचा आप चुकांयदा। ब्रह्मा मेला हरि कन्तूहल, आपणे विच समांयदा। शिव शंकर फड़े हथ्थ त्रिसूल, आपणी भुल्ल बख्शांयदा। करोड़ तेतीसा रिहा फूल, फल फुलवाड़ी वेख वखांयदा। गुरमुख साचा शब्द पंघूड़ा रिहा झूल, हरि साचा आप झुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पंचम अक्खर रक्खे वक्खर, आपणे अंग समांयदा। पंचम अक्खर वस्त अनमोल, प्रभ आपणे हथ्थ रखाईआ। आपे अन्दर रिहा बोल, आपे मुख छुपाईआ। आप वजाए नाद अनादी ढोल, आपणा ताल मिलाईआ। आपे पड़दे देवे खोल्, साचा राह तकाईआ। भगत सुहेला जुग जुग करे चोल्, जन भगतां बैठा खेल वरताईआ। काया धारी कला सोल, सरगुण रूप अख्वाईआ। निरगुण सृष्ट सबाई रिहा मौल, अकल कला रघुराईआ। जन भगतां उलटा करे कँवल नाभी कौल, अमृत रिहा चुआईआ। अमृत आत्म प्याए साची पहुल, ना कोई वेख वखाईआ। देवे वड्याई उप्पर धौल, नाम खण्डा तन गात्रे आप पहनाईआ। गुर गोबिन्दा पूर कराए कौल, आप आपणा गया सिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एकँकार भेव खुल्ाईआ। निहकलंक भेव अपार, भेव किसे ना आंयदा। जीव जन्त फसाए नौ द्वार, साध सन्त अद्ध विच लटकांयदा। आप वसया सभ तों बाहर, महिंमा अगणत ना कोई गिणांयदा। पारब्रह्म प्रभ पुरख अपार, अगम्मड़े धाम सुहांयदा। छप्पर छन्न ना कोए विचार, चार दिवार ना कोई विखांयदा। ना कोई मन्दिर ना कोई गुरद्वार, मन्दिर शिवदवाला

ना कोई रखांयदा। शब्द जणाए सच्ची धुन्कार, ढोलक छैणा ना कोई खड़कांयदा। आपे सुणे सुणनेहार, सुन्न समाध सुणांयदा। आपे जाणे पार किनार, आप आपणा भेव छुपांयदा। सत्तवें घर हरि निरँकार, सति पुरख निरँजण आप अख्वांयदा। ना कोई दिसे धूआँधार, अन्ध अन्धेर ना कोई चुकांयदा। ना कोई देवे सेवणहार, अवण गवण ना कोई जणांयदा। अमृत बरखे ना कोई सवण धार, ना कोई नीर चलांयदा। पारब्रह्म तेरा धाम न्यार, थिर घर नाउँ रखांयदा। थिर घर बैठ सच्ची सरकार, सच सिँघासण आसण लांयदा। आप आपणी पावे सार, आप आपणी सेज हंढांयदा। पूत सपूता कर त्यार, जोती माता आप बणांयदा। साचा सुत इक्क दुलार, हरि शब्दी नाउँ रखांयदा। ब्रह्मण्डां पावे पावणहारा सार, साल साली वंड वंडांयदा। आपे करे ख़बरदार, साची सेवा आप करांयदा। आदि पुरख हरि एकँकार, एका धार चलांयदा। इक्क सुहाए बंक द्वार, आपणा आप बणांयदा। सृष्ट सबाई बण वरतार, ब्रह्मा मेल मिलांयदा। उत्पत ब्रह्मा कर त्यार, कँवल कँवला आप अख्वांयदा। रक्त बूंद ना लाया गार, साची बणत आप बणांयदा। वेला वक्त कर विचार, आप उपाए आप मिलांयदा। त्रैगुण माया कर पसार, ब्रह्मे झोली पांयदा। पंज तत्त कर शृंगार, लक्ख चुरासी बणत बणांयदा। प्रभ का भेव सदा न्यार, ब्रह्मा भेव कोए ना पांयदा। दोए जोड़ करे निमस्कार, चरन द्वारे ढहि ढहि खुशी मनांयदा। प्रभ अबिनाशी खोल्ह भण्डार, निरगुण विष्नूं झोली पांयदा। शब्द सरूपी कर उज्यार, हर घट रूप समांयदा। जुग जुग खेल खेलणहार, सतिजुग त्रेता द्वापर पार करांयदा। कलिजुग अन्तिम लए अवतार, आपणा भेख वटांयदा। राम कृष्न हरि निरँकार, नानक सेवा लांयदा। गोबिन्द गोबिन्द गुर अपर अपार, चेला गुर आप अख्वांयदा। कलिजुग तेरी काली धार, हरि साचा वेख वखांयदा। धरत मात तेरी सुण पुकार, आपणा कर्म कमांयदा। निहकलंक लए अवतार, जोती जामा पांयदा। शब्द डंक अपर अपार, चारे कुन्टां आप वजांयदा। जीवां जन्तां करे ख़बरदार, सुत्ता कोई रहिण ना पांयदा। ब्रह्मा शिव दए हुलार, सुरपति आप उठांयदा। नौ द्वारे खोल्ह किवाड़, नौ खण्ड पृथ्वी आप विखांयदा। सत्तां दीपां वेख उजाड़, शब्द डंक इक्क वजांयदा। पंचम मेटे झूठी धाड़, सतिजुग साचा लांयदा। सम्मत सोलां सतारां हाढ़, ब्यास किनारा वेख वखांयदा। चरन छुहाए देस मालवे धरत मात वेख अखाड़, आपणी कल वरतांयदा। भाग लगाए जमन किनार, हरि साचा चरन छुहांयदा। वाली हिन्द कराए ख़बरदार, आप आपणी बणत बणांयदा। गुर तेग बहादर तेरा सच द्वार, सीस गंज चरन टिकांयदा। किसे हथ्थ ना आए कारू गंज, मायाधारी डूँघे वहिण वहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव आपणे विच छुपांयदा।

❊ ६ चेत २०१४ बिक्रमी उजागर सिँघ दे गृह पिण्ड रामू वाला ज़िला फिरोज़पुर ❊

गुण अवगुण आपे जाण, जानणहार अख्वाया। करे कराए पुण छाण, लक्ख चुरासी छाण वखाया। गुरमुख उठाए बाल अञ्जाण, आत्म पड़दा लाहया। आपे बख्शे चरन ध्यान, चरन कँवल सरनाया। दाती दाता देवे सच्चा दान, सोहँ झोली पाया। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान, अज्ञान अन्धेर मिटाया। सति सन्तोखी पीण खाण, अमृत जाम प्याया। आवण जावण चुक्के काण, राए धर्म ना दए सज़ाया। शब्द बिठाए इक्क बिबाण, घर साचा रिहा विखाया। सरन सरनाई जो लग्ग जाण, कलिजुग अन्तिम लए तराया। मिल्या मेल हरि भगवान, विछड़ कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मनमुख जीवां रिहा भुलाया। मनमुख जीव भरमे भुल्ले, सुध रहे ना राया। जूठी झूठी माया रुल्ले, आपणी पति गंवाईआ। भाग ना लग्गा काया कुले, दीपक जोत ना कोई जगाईआ। गोबिन्द सगन ना लाया साचे बुल्ह्ले, हरि शब्द ना रसन छुहाईआ। शब्द अन्धेर एका झुल्ले, प्रभ साचा रिहा झुलाईआ। मनमुख पूरे तोल कोई ना तुले, गुरमुख साचे आप तुलाईआ। कलिजुग बूटा अन्तिम हुल्ले, फल कोई रहिण ना पाईआ। हरिजन साचे लाल अनमुल्ले, शब्द दुशाले रिहा लगाईआ। गुरमुख विरला चरन प्रीती घोल घुल्ले, सच दुआरा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दुआरा बंक सुहाईआ। भगत वछल आप गिरधार, आपणी दया कमांयदा। कलिजुग माया वसया बाहर, दूई द्वैती पर्दा लांहयदा। राह साचा आपे दस्सया नर निरँकार, एका दूजा भउ चुकांयदा। आपे बणया मीत मुरार, सखा सहाई आप हो आंयदा। कलिजुग काला वेस उतार, दर दरवेशी बाणा लांहयदा। सतिजुग साचे कर प्यार, चिट्टी चादर तन छुहांयदा। आप आपणा दिवस विचार, करता कादर आप अख्वांयदा। सम्मत सम्मती पावे सार, लहिणा देण चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरी काया घर, आप आपणा चरन रखांयदा। साचा घर पंज तत्त, हरि आपणी रचन बणाईआ। आपे बैठा कमलापत, पति पतिवन्त आप अख्वाईआ। चरन प्रीती बन्न्हे नत्त, ना कोई तोड़ तुड़ाईआ। सति सन्तोखी धीरज यति, सति सन्तोखी रिहा वखाईआ। बहत्तर नाड़ी ना उब्बल रत्त, तामस तृष्ना बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे देवे वर, वरयाम आप अख्वाईआ। घर पाया पुरख अगम्मड़ा, मेला सहिज सुभाए। हड्ड मास ना दीसे चम्मड़ा, ना कोई तत्त बणाए। ना कोई पल्ले दिसे दमड़ा, एका वस्त नाम रखाए। गुरमुखां भारी कराए पल्लड़ा, लक्ख चुरासी हौले भार फिराए। कलिजुग होया भागां मन्दड़ा, मुख शाही टिक्का लाए। सोहँ शब्द जगत बख्शंदड़ा, गुरमुख साचे लए तराए। भेव ना पाए आत्म अन्धड़ा, ना जिंदड़ा कोई तुड़ाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, गुरमुख साचे वेखे घर, घर बाहरी आप हो जाए। घर बाहर हरि निरँकार, एका एक रखाया। शब्द सिँघासण कर त्यार, जोत सरूपी आसण लाया। जोत सरूपी कर आकार, दिवस रैण अन्धेर मिटाया। दिवस रैण पावे सार, सेवक सेवा लाया। चन्न सूरज बन्ने धार, आप आपणी जोत जगाया। तारा मण्डल चरन द्वार, हरि आपणे हथ्थ रखाया। उप्पर बैठ सच्ची सरकार, आप आपणी किरत कमाया। करे कराए करनेहार, जुग जुग रिहा बणत बणाया। कलिजुग तेरी काली धार, हरि काला रूप वटाया। केसाधारी ना पायण सार, ना कोई जाणे मूंड मुंडाया। भरमे भुल्ले जीव गंवार, भाण्डा भरम ना किसे भन्नाया। गुरमुख भुल्ले रुल्ले विच संसार, सतिगुर पूरा पाया। माया रुल्ले ना डोबे मँझधार, साचे बेड़े रिहा चढ़ाया। जूठे झूठे मीत मुरार, मात पित भाई भैण ना कोई संग निभाया। इक्क सुहाए दर दरबार, दर दरवेशा हरि रघुराया। भगत सुहेला लए उभार, गुर चेला रूप वटाया। शब्द खण्डा तेज कटार, हरि आपणा रिहा उठाया। पंचां करे ख़बरदार, चोर यार कोई नेड़ ना आया। ठग्ग ठगोरी ठग्गे संसार, ठग्गणहारा दिस ना आया। उप्पर शाह रग्गे बैठ सरकार, गुरमुख साचे राह वखाया। लग्गे अग्ग नारी नार, नर नरायण रिहा लगाया। मट्ठ तपे अग्नी अन्यार, ना कोई सके बुझाया। मनमुख जीवां आई हार, मनमती धर्म चलाया। गुरमुख विरले तन श्रृंगार, एका शब्द कराया। पारब्रह्म प्रभ पावे सार, वेस करेंदा आया। गुरमुख साजण मीत मुरार, आप आपणा निहों लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरा साचा घर, हरि आपणा आप टिकाया। घर मन्दिर सोहे बंक, प्रभ साचा चरन छुहांयदा। आप लगाए आपणे अंक, एका शब्द वखांयदा। नौ दर रसन फीका डंक, ना कोई शब्द वजांयदा। प्रगट होए वासी पुरी घनक, बार अनक मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवणहारा वर, जुग जुग मेल मिलांयदा। जुग जुग वर पाया घर आपणे, मेला सहिज सुभाईआ। कलिजुग माया नेड़ ना आए तीनो तापने, वज्जदी रहे वधाईआ। इक्क जपाए साचा जापने, गुण अवगुण वेख वखाईआ। ना कोई पुन्न सरापने, गुरमुख देवे आप वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क सुहाए बंक द्वार, दर द्वारे फेरा पाईआ। दर द्वारे फेरा पाया, हरि सच्ची सरनाईआ। मेरा तेरा रिहा चुकाया, हउमे हँगता रोग मिटाईआ। नेरन नेरा दरस दिखाया, दर दुआरा शब्द वखाईआ। सञ्झ सवेरा इक्क कराया, गुर संगत चन्द चढ़ाईआ। भरमां डेरा आपे ढाहया , अन्ध अज्ञान रहिण ना पाईआ। कन्त सुहागी एका छंत सुणाया, गुरमुख नारी रसना गाईआ। खुशी बन्द बन्द कराया, चिन्ता रोग सोग मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख गुरसिख तेरे हथ्थ रक्खी आपणी आप वड्याईआ।

४५७
०६

❊ ६ चेत २०१४ बिक्रमी शाम सिँघ दे गृह पिण्ड रामू वाला ज़िला फिरोजपुर ❊

घर मन्दिर हरि भाग लगाया, शब्द वज्जे वधाईआ। अन्दरे अन्दर मेल मिलाया, करी नाम कुड़माईआ। जगत जन्दरा तोड़ वखाया, वड वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि बख्शे सच सच्ची सरनाईआ। सच सरनाई हरि निरँकार, एका एक विखांयदा। लक्ख चुरासी पार किनार, अन्तिम कलि करांयदा। साचा नाम दए अधार, दे मति आप समझांयदा। सोहँ अक्खर वस्त अपार, हरिजन झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मेला मेल मिलांयदा। मेला घर सच द्वारी, आपणा आप कराया। इक्क इकल्ला एकँकारी, एका रंग वटाया। कोई दिस ना आए जीव गंवारी, सहँस सहँसा रिहा अल्लाया। गोबिन्द खेले खेल खिलारी, खेलणहार आप अख्वाया। मेटणहारा पंच हँकारी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे रिहा उठाया। उठ जाग जगत त्याग, कलिजुग अन्तिम आया। चरन लाग जन जाणा जाग, प्रभ साचा रिहा जगाया। हउमे तृष्ना बुझाए आग, अमृत जाम प्याया। हँस बणाए फड़ फड़ काग, दुरमति मैल धवाया। साचा मेला कन्त सुहाग, वर दाता आप हो आया। आपे बैठा आपे गया जाग, जग जगावणहारा आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति रिहा समझाया। धीरज यति शब्द ज्ञान, गुरमुख विरले पाया। आपे वेखे मार ध्यान, दिवस रैण सेव कमाया। नाम बिठाए इक्क बिबाण, हरि साचा रिहा उडाया। गुरमुख साचे चतुर सुजान, आप आपणे रंग रंगाया। देवणहारा देवत दान, जुग जुग देंदा आया। कलिजुग अन्तिम कर पछाण, लहिणा देणा मूल चुकाया। गुर गोबिन्दा मिल्या मेल साचा हाण, आप आपणा वक्त सुहाया। आप चुकाए जम की कान, धर्म राए नेड़ ना आया। सतिजुग ढोला धुर फरमाण, हरिजन रिहा सुणाया। आपे कँवला दर दरबान, दर दरवेशा रूप वटाया। शब्द सुहेला मेहरवान, जन भगतां मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा रंग रिहा रंगाया। रंग रंगाए शब्द ललारी, आपणे हथ्थ रखांयदा। गुरमुख साचे कर प्यारी, हरि साचा राह वखांयदा। कलिजुग अन्तिम होए भिखारी, दर भिच्छया कोई ना पांयदा। सतिजुग तेरी साची यारी, गुरमुखां नाल लगांयदा। आपे बैठा अद्ध विचकारी, दो जहानां जोड़ जुड़ांयदा। सोहँ करे तन श्रृंगारी, शस्त्र बस्त्र तन सजांयदा। सोलां इच्छया पूर हरि निरँकारी, एका भिच्छया नाम पांयदा। दहि दिशा पावे सारी, चारे कुन्टां भरम मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख मेला इक्क घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। हरि साचा शाह सुल्तान, वाली दो जहानया। जन भगतां मेल मिलान, आपणे अंक समानया। खेले खेल महान, ना कोई जाणे जीव निधानया। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी जोत धर, हरिजन करे आप पछानया। हरिजन साचे शब्द जणाई, घर साचे आप करांयदा। पंचां चोरां करे जुदाई, पंचम मेल मिलांयदा। काया मन्दिर कर कुड़माई, आपणा रंग रंगांयदा। आप वजाए शब्द वधाई, साचा मंगल गांयदा। तख्त ताज इक्क सुहाई, साचा आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे साचा घर इक्क विखांयदा। एका घर सच दरबार, हरि आपणा आप रखाया। ना कोई दिसे चोबदार, ना कोई पहरेदार रखाया। शब्द खण्डा तेज कटार, जोती नूर रिहा चमकाया। किला कोट सच द्वार, आपणा गढ़ उपाया। शब्द सिँघासण अपर अपार, साची सेजा रिहा वछाया। उप्पर बैठ सच्ची सरकार, शाहो भूप अख्वाया। सति सरूप हरि निरवैर, आप हो आया। गुरमुखां साचा साक सज्जण सैण, तीजे नैण दरस विखाया। कलिजुग वहे डूँघे वहिण, ना कोई पार कराया। घर घर मन्दिर अन्दर बहि बहि सारे गाण, दिस किसे ना आया। आपे होया जाणी जाण, जानणहार सृष्ट सबाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा रूप वखाया। कलिजुग तेरा काला रंग, चारों कुन्ट रिहा विखाईआ। लक्ख चुरासी होई नंग, पल्लू कोई ना पाईआ। दर दर घर घर भिच्छया रहे मंग, राज राजानां रिहा फिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द साचे सन्त जनां एका देवे नाम धना, धन्न धन्ना आप अख्वाईआ। नाम धन सच ख़ज़ाना, प्रभ आपणे हथ्थ रखाया। प्रभ आपे होया दानी दाना, जुग जुग देंदा आया। वेख वखाए लोक तीना, घर चौथे डेरा लाया। चौथा दर जिउँ जल मीना, गुरमुख सुरत समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका घर एका वर एका हरि एका सर वेखण आया। दर घर हरि दातारा, हरि आपे वेख वखांयदा। चौथे घर भर भण्डारा, जन भगतां आप वरतांयदा। अन्तिम करे पार किनारा, पंचम आप विखांयदा। छेवें छप्पर छन्न ना कोए उसारा, ना कोई वेखे ना कोई पेखे ना कोई भेव खुल्हांयदा। आपे लिखणहारा लेखे जुग जुग लेख लिखांयदा। कलिजुग तेरी मिटे रेखे, प्रभ साचा आप मिटांयदा। आपे होया धारी केसे, गोबिन्द काया रूप वटांयदा। दर द्वारे ब्रह्मा विष्नूं महेष गणेशे, दोए जोड़ सीस झुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी काली धार, प्रगट करे विच संसार, आप आपणी किरपा धार, ना कोई मेट मिटांयदा। कलिजुग तेरी काली धार, अन्तिम मेट मिटाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी करे ख़बरदार, सोहँ डंक वजाईआ। सत्तां दीपां लए हुलार, आपे आप रिहा हिलाईआ। त्रैगुण माया वेख पसार, ब्रह्मे खुशी मनाईआ। लक्ख चुरासी भरमे भुल्ली, ना कोई होए सहाईआ। प्रभ अबिनाशी खेल न्यार, भेव कोई ना पाईआ। चिट्टे अस्व हो अस्वार, सोलां कलीआं आसण लाईआ। पहलां पौड़ा रिहा उठा, पंचम जेठी

आप उठाईआ। ना कोई किसे दीसे वड वड सज्जण शाह, शाह सुल्तानां रिहा मिटाईआ। गुरमुखां देवे नाम वस्त बेपरवाह, अनडिठ दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवणहारा वर, दर मन्दिर इक्क सुहाईआ। दर दरबारा इक्क खुल्हाया, चार वरन द्वारया। राउ रंकां रिहा सुणाया, ऊँचां नीचां भेव निवारया। शाह सुल्तानां दर फिराया, भेखाधारी भेख अपारया। मस्तूआणा धाम सुहाया, हरि खेले खेल नर हरि नर निरंकारया। सम्मत सोलां पन्दरां कत्तक रिहा लिखाया, चरन छुहाए सच घर बाहरया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द तेरा साचा दर, हरि आपे पूर करा रिहा। लहिणा मूल जाए चुक्क, देवणहार दातारा। जन भगतां पैंडा जाए मुक्क, लक्ख चुरासी पार किनारा। आपणा भार आपे चुक्क, प्रभ देवे शब्द सहारा। काया बूटा मनमुख जीवां रिहा सुक्क, अन्तिम देवे जड़्ह उखाड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात मार झात इक्क कराए शब्द अखाड़ा।

४५६
०६

✻ ६ चेत २०१४ बिक्रमी फिरोजपुर छाउँणी मकान नं० ३८६ ग्वाल टोली इक्की परिवारां दा इक्ठ होया ते शब्द दी रहिमत कीती ✻

पंचम गाया इक्क हरि, एका सेव कमाईआ। पंचम पाया इक्क घर, एका घर वधाईआ। पंचम नुहाया साचे घर, सर सरोवर इक्क रखाईआ। पंचम पाया साचा दर, एका एक रघुराईआ। पंचम मेला हरी हरि, हरि हरि रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम लेखे लाईआ। पंचम होए दर परवान, हरि साचे विच समांयदा। छेवें घर छे निशान, छे गुण वेख वखांयदा। आपे जाणे धुर फ़रमाण, एका हुक्म अल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा आप सुहांयदा। छेवें घर शब्द उपदेश, आपणा रिहा सुणाईआ। आपणा जाणे आपे वेस, भेव किसे ना राईआ। मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, ना कोई मूंड मुंडाईआ। आप आपणा करे आदेस, ना कोई रसना गाईआ। ब्रह्मा शिव ना कोई गणेश, पूजा पाठ ना कोई रखाईआ। शाह सुल्तान ना चले कोई पेश, तख्त ताज ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे आसण लाईआ। छेवां घर छप्पर छन्न, हरि साचे इक्क रखाईआ। आप आपणा बेड़ा बन्न, बैठा आसण लाईआ। ना कोई सूरज ना कोई चन्न, मण्डल मण्डप ना कोई दिसाईआ। ना कोई माल ना कोई धन, ना कोई संग रखाईआ। ना कोई घड़े ना देवे भन्न, ना कोई बणत बणाईआ। ना कोई मति मन बुध दिसे मन, पंच तत्त वेख वखाईआ। ना कोई दर दुआरा नौ ना दिसे हथ्थ नक्क कन्न, जिह्वा रसना ना कोई लगाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा रिहा सुहाईआ। साचा घर सच द्वार, हरि आपे आप उपाया। आपे जाणे बन्द किवाड़, आपे खोल्ह वखाया। आपे वेखे आपणी धाड़, आपे रिहा मिटाया। आप बणाए आपणा पिच्छा अगाड़, आप आपणी सेवा रिहा कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे अंक समाया। आप आपणा रंग वखाया। ना कोई माई ना कोई बाप, भैण भाई ना कोई रखाया। ना कोई रोग ना संताप, तृष्ना भुक्ख ना कोई मिटाया। ना कोई जोग ना सन्यास, वैराग त्याग ना कोई जणाया। ना कोई मण्डल ना कोई रास, गोपी काहन दिस ना आया। पारब्रह्म पुरख अबिनाश, घर बैठा आसण लाया। आदि अन्त ना जाए विनाश, लेखा लेख ना कोई लिखाया। आप आपणा होया दास, आप आपणी सेवा लाया। आपे अन्दर किया वास, आप आपणा रिहा जणाया। ना कोई पृथ्वी ना आकाश, पताल पुरी ना कोई दिसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे फेरा पाया। साचा घर हरि अगम्म, आपणा आप सुहाया। ना कोई दिसे थम्म्हण थम्म्ह, ना कोई भार उठाया। ना कोई चार कुन्ट दिसाए कंध, ना कोई शब्द बंध बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा घर हरि सुल्तान, आपणा आप बणाया। ना कोई मण्डल मण्डप ना मकान, चार दिवार ना कोई दिखाया। ना कोई झुले झुलाए निशान, खण्डां ब्रह्मण्डां वेख वखाया। ना कोई उत्भज सेत्ज जेरज अंडा, खाणी बाणी दिस कोई ना आया। आपे जाणे आपणा कन्ढा, आर पार कोए भेव ना पाया। आप सुहागी आपे रंडा, आपे नारी कन्त हंढाया। आपे जाणे आपणा डण्डा, घर साचे आप लटकाया। आपे पाए आपणी वंडा, दूसर हिस्सा ना कोई रखाया। आपे सुत्ता दे कर कंडा, आप आपणा मुख भवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा रिहा सुहाया। साचा घर हरि निरवैर, एका एक रखाया। ना कोई तत्त मति ना दिसे कहर, सागर सर ना कोई चलाया। आप बणाए कर कर आपणी मेहर, मेहरवान आप अख्वाया। उसारे ढाहे ना लाए देर, आप आपणी रचन रचाया। आप आपे रिहा घेर, चारों कुन्ट घेरा पाया। आपे जाणे सञ्झ सवेर, दिवस रैण ना कोई विखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा धाम सुहाया। साचा धाम कर आकार, आपणी सेवा लाईआ। लक्ख चुरासी ना कोई मीत मुरार, ना कोई धीर धराईआ। पुरीआं लोआं मात पाताल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ना कोई वेख वखाईआ। साचा धाम हरि निरँकार, छप्पर छन्न ना कोई रखाया। आपे आप बैठ सरकार, आपणा हुक्म सुणाया। आपे बन्न्हे आपणी धार, तख्त ताज सीस टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, छे घर एका सेज वछाया।

शब्द सुहाया थान, जोत जगाईआ। पारब्रह्म श्री भगवान, आपणी कल वरताईआ। आप झुलाए इक्क निशान, ना कोई दूसर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे आसण लाईआ। साचा घर हरि भगवाना, एका एक रखाया। राग नाद ना कोई तराना, ना कोई साज वजाया। खाणी बाणी ना कोई वेद पुराणा, अञ्जील कुरानां दिस ना आया। साध सन्त जीव जन्त ना कोई खेले खेल बाल निधाना, पिता पूत कोई दिस ना आया। ना कोई सुघड़ चतर स्याना, मूर्ख मूढ़ ना कोई वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क सुहाया। साचा घर हरि दातार, आपणा आप बणाया। किला कोट ना कोई द्वार, बाडी ना कोई रखाया। ना कोई दिसे मीत मुरार, नर नारी ना कोए उपाया। संग सुहेला ना कोई सांझा यार, अंगीकार ना कोई कराया। इक्क इकल्लड़ा एकँकार, साचा धाम सुहाया। दीपक जोती कर उज्यार, अन्ध अन्धेर मिटाया। सञ्झ सवेर पार किनार, दिवस रैण ना कोई कराया। आप आपणा महल्ल उसार, सच भूमिका धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा वेख वखाया। साचा घर द्वार बंक, हरि एका एक सुहांयदा। राज राजान शाह सुल्तान ना कोई दिसे राउ रंक, ऊँच नीच ना कोई दिसांयदा। ना कोई सतिजुग सुहेला दिसे मीत सीता सपुत्री ना कोई व्यांहयदा। आपे जाणे आपणी खेल बार अनक, आप आपणी खुशी मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क सुहांयदा। साचा घर हरि बनवारी, आपणा आप उपाया। निर्मल जोती कर आकारी, एका रूप समाया। शाहो भूप वड सिक्दारी, तख्त ताज रिहा सुहाया। आप आपणी कल कल निरँकारी, आपणा भेख वटाया। आपे जोद्धा वड सूर बलकारी, एका एक अख्वाया। शब्द पहन तेज कटारी, साचा बस्त्र तन सजाया। इक्क इकल्ला नर निरँकारी, नरायण रूप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच महल्ला रिहा बणाया। सच महल्ला उच्च अटला, हरि आपणा आप उसारया। किसे दिस ना आए निहचल धाम अटला, जल थल धरत धवल ना कोई पसारया। आपणी जोती आपे रल्ला, आपे होया बाहरया। बंक दुआरा एका मल्ला, ना कोई दिसे बन्द किवाड़या। ना कोई गोबिन्द ना कोई डल्ला, ना कोई गुर पीर सदा रिहा। मूर्ख मूढ़ ना दीसे झल्ला, जगत विद्या ना कोई पढ़ा रिहा। पारब्रह्म इक्क इकल्ला, थिर घर साचे आसण ला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा धाम सुहा रिहा। साचा धाम जोत निरँजणा, निरगुण रूप वखाया। आपणे नेत्र पाए अंजना, आपणी धूढ़ी मस्तक रिहा लगाया। आपणा पड़दा आपे कज्जना, शब्द दूत ना कोए रखाया। आपे घड़या ना कोई भज्जना, आवे जावे ना फेर चुकाया। ताल नगारा ना कोई वज्जना, ढोलक छैणा ना कोई रखाया। सीर पी पी ना किसे रज्जणा,

ना कोई भण्डार वरताया। ना कोई मक्का काअबा हज्जना, पीर दस्तगीर शाह हकीर ना कोई घर वसाया। आपणे घर बहि बहि सज्जणा, पुरख अगम्मड़े अगम्मड़ा धाम सुहाया। ना पल्ले कोई पैसा धेला दमड़ा, ना कोई हिसाब कराया। एका वसे निहचल धाम अटलड़ा, घर आपणा रिहा सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच सज्जण आप अख्वाया। साचा घर नर निराहार, निज घर आप रिहा बणाया। आप आपणी किरपा धार, आपणा रूप समाया। ना कोई दिसे चार दिवार, छप्पर छन्न ना कोई दिसाया। सूरज चन्न ना कोई अवतार, गुर पीर दिस ना आया। साध सन्त ना सुणाए कोए पुकार, जीव जन्त ना कोए बिल्लाया। आप आपणी बन्ने धार, सच सिँघासण डेरा लाया। पुरख अबिनाशण एका एकँकार, एका आपणा नाउँ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे डेरा लाया। साचे घर हरि सुल्तान, एका एक रहांयदा। आपे दाता मेहरवान, दानी दाता आप हो आंयदा। आपे गोपी आपे काहन, आपे मण्डल रास रचांयदा। आप उपजाए इक्क निशान, धर्म कर्म ना कोए जणांयदा। त्रैगुण माया ना होए हैरान, पंज तत्त ना वेख वखांयदा। शिव शंकर ना ब्रह्मा कोई विष्नूं वेस ना कोई वटांयदा। करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द ना मिले माण, हाणी हाण ना कोई संग रखांयदा। धरत धवल आकाश प्रकाश ना कोए निशान, लोआं पुरीआं ना कोए वसांयदा। लोक परलोक अवण गवण, शब्द सलोक ना कोई सुणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा धाम सुहांयदा। साचा घर हरि टिकाणा, एका एक रखाया। ना कोई शाह राज राजाना, गऊ ग़रीब ना कोए बणाया। ना कोई सीस ताज ना जगत मलाह, वंञ मुहाणा ना कोए चलाया। पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, घर आपणे बैठा आसण लाया। आपे जाणे आपणा नाँ, भेव कोई ना पाया। आपे पकड़े आपणी बांह, आपे गले लगाया। आपे पिता आपे माँ, जनणी पूत ना कोई जाया। आप आपणी रक्खे छाँ, ठण्ढी ठार अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा घर इक्क बणाया। साचा घर इक्क अस्थूल, असथिर नाउँ रखाईआ। आदि अन्त ना जाए भूल, एका दर रखाईआ। ना पावा ना चूल, हरि आसण रिहा विछाईआ। आपे कन्त आपे कन्तूहल, नारी कन्त आप अख्वाईआ। आपे दाता दूलो दूल, आप आपणे अंक समाईआ। आपे दए हुलारा झूल, चारों कुन्टां आप भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क सुहाईआ। साचा घर हरि अथाह, एका एक रखाया। ना कोई जाणे जगत मलाह, भेव किसे ना पाया। गुर पीर साध सन्त जुग जुग चलायण मात राह, प्रभ साची सेवा लाया। आप जणाए आपणा नाँ, धुर फ़रमाणा रिहा घलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा वेख वखाया। साचा घर हरि भगवन्ता, एका

एक रखानया। एका एक रुत्त सदा बसन्ता, ना कोई बहार रखानया। ना कोई जीव जन्ता, ना कोई साध ना कोई सन्ता, ना कोई नारी ना कोई कन्ता, ना कोई सेज हंढानया। आप बणाए आपणी बणता, पारब्रह्म पुरख अबिनाशी आदि ना अन्ता, आप आपणे विच विसमन्तया। आपणा ताल ढोल मृदंगा हरि आप वजन्ता, रागी नादी नाद ना कोई सुणन्तया। आपे खोजे खोज ब्रह्मादी, लोआं पुरीआं आप रहन्तया। आदि जुगादि धुरां दी वादी, हरि साचा खेल खिलन्तया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका वेखे आपणा घर, एका नाउँ रखन्तया। एका नाउँ साचे घर बाहर, हरि साचे आप रखाया। थिर घर बैठे सुणे पुकार, दिस किसे ना आया। आपे अन्दर आपे बाहर, आपे गुप्त जाहर समाया। आपे करे साची कार, करन करावणहार आप अख्वाया। आप आपणी इच्छया धार, आपणा लेखा रिहा लिखाया। आप आपणा नाउँ उचार, आपे जोती जोत उपाया। पूत सपूता कर त्यार, शब्द महल्ले डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाणे साचा घर, घर साचा आप सुहाया। साचा घर हरि भगवाना, एका एक रखाया। जोती देवे साचा दाना, शब्दी शब्द जणाया। शब्द सुणाए इक्क तराना, साची सेवा लाया। पंचम खेल श्री भगवाना, घर पंचम वेख वखाया। नाम सति होए दर परवाना, हरि साचा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर द्वार बंक सुहाया। बंक द्वारी आप प्रभ, आपे आप उपांयदा। वेख विखाणे खेल भेद अभेदा अछल अछेदा अछल अछल्ला आपणा भेव छुपांयदा। ना कोई दिसे कँवल नभ, पूत सपूता ब्रह्मा कोए ना रूप वटांयदा। त्रैगुण माया ना रही फब, दर दुआरा ना कोए सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाणे साचे घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। पंचम घर हरि दरवाज़ा, एका एक रखाया। शब्द वजाए साचा वाजा, एका ताल रखाया। सुणे सुणाए राजन राजा, शाह सुल्तान भूप हो आया। आपे रक्खे आपणी लाजा, दिवस रैण सेव कमाया। एका रक्खे अस्व ताजा, साचा घोड़ा वाग उठाया। जोती जोड़ा ग़रीब निवाजा, सच रकाबे चरन टिकाया। शब्दी जोती रच्चया काजा, दोहां मेल मिलाया। आप आपणा साजन साजा, एका दूजा वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क वखाए साचा घर, पंचम धाम सुहाया। पंचम घर हरि निरँकारा, एका एक सुहाईआ। आपे होया उठ उठ बाहरा, थिर घर वेख वखाईआ। चौथे घर खोल्ह किवाड़ा, बैठा जोत जगाईआ। ना कोई दीसे पंचम धाड़ा, ना कोई पंचम तत्त रखाईआ। ना कोई दिसे बहत्तर नाड़ा, हड्ड मास मन मति बुध दिस ना पाईआ। ना कोई अग्नी साड़े हाढ़ा, सीतल धार इक्क वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क सुहाईआ। चौथा घर पद निरबाण, हरि एका एक रखाया। सन्त

सुहेले कर पछाण, हरि शब्दी मेल मिलाया। ना कोई ज्ञान ना कोई राग नाद ना कोई अल्ाया। एका एक श्री भगवान, एका रूप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर चौथे डेरा लाया। चौथा घर पुरख अबिनाश, एका एक सुहांयदा। सन्त सुहेले करे दासन दास, हरि आपणे विच समांयदा। खेले खेल पृथ्वी आकाश, आकाश आकाशां पार करांयदा। आप आपणा रक्खया वास, घर साचे वास करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बंक द्वार इक्क सुहांयदा। चौथा घर सच द्वार, हरि साची जोत जगाईआ। सन्त सुहेले मात दुलार, आपणे अंक लगाईआ। आपे मेले मेलणहार, साचा मेल मिलाईआ। शब्दी शब्द जणाए एका तार, निरगुण सतार रिहा खड़काईआ। सरगुण खेले खेल अपार, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर एका बैठा आसण लाईआ। दर सच्चा दरबार, आप उपाया। लोआं पुरीआं महल्ल उसार, आप आपणी रचन रचाया। ब्रह्मा विष्न शिव सेवादार, सेवक सेव अख्वाया। त्रैगुण माया कर त्यार, आपणी बणत बणाया। पंचम तत्त इक्क अधार, सरगुण वेख वखाया। निरगुण शब्द अधार, जोती नूर सवाया। लक्ख चुरासी पसर पसार, वरभण्डी खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे लाए लेखे, लेखा लिखणहार आप अख्वाया। लक्ख चुरासी बणत बणाई, पारब्रह्म अबिनाशी। धरत धवल जल धार टिकाई, पावे साची रासी। सेवक सेवादार अख्वाई, आपे करे बन्द खुलासी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग बणाए मण्डल रासी। जुग उपाए दया कमाए, देवे नाम निधानया। सतिजुग त्रेता पार कराए, द्वापर खेल खिलानया। कलिजुग तेरी धार चलाए, काला सूसा तन छुहानया। ईसा मूसा संग रलाए, सगला संग निभानया। मुहम्मद मुहम्मदी सुत उपजाए, चार यार बंध बधानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाम अलानया। आप आपणा नाम अल्ाया, हू अल्ला पुकारया। ऐड़ा अथर्बण वेख वखाया, दोए मुख उग्घाड़या। तूं तूं मैं मैं वेस वटाया, लोकमात आकारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल वड संसारया। अल्ला अलाहू नूर धर, शब्द अमाम बणाया। जोती कोहतूर कर, नूरो नूर सवाया। आपे जाणे आपणा घर, पीर फ़कीर रिहा उपाया। नबी रसूलां मात धर, शरअ शरायती रिहा चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल सहिज सुभाया। कलिजुग खेले खेल खिलारी, भेव अभेद छुपांयदा। नानक प्रगट गुर अवतारी, हरि साची सेवा लांयदा। देवे नाम शब्द खुमारी, जोती नूर टिकांयदा। आपे देवे आपे लेवे, आपे आपणे दर बुलांयदा। दिवस रैण रसना सेवे, साची सेव कमांयदा। पारब्रह्म अलख अभेवे, अलख अलक्खणा आप अख्वांयदा। नानक गुर खाली हथ्थ गया सक्खणा, दोए

जोड़ सीस झुकांयदा। पारब्रह्म प्रगट हो प्रतक्खणा, दर द्वारे दरस दिखांयदा। नाम निधाना तेरी झोली रक्खणा, चतुर्भुज दया कमांयदा। दो जहानी बणया वक्खणा, तिन्नां लोकां दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची वस्त हरि झोली पांयदा। साची वस्त धुर दी बाण, नानक झोली पाईआ। नाम सति इक्क निशान, राह साचा रिहा वखाईआ। देवणहार गुण निधान, गुणवन्ता आप अख्वाईआ। दर द्वार करे परवान, दो जहानां रिहा मिलाईआ। हत्थ फड़ाए सच निशान, लोकमात राह तकाईआ। आप आपणी कराए जाण पछाण, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। शब्द मिलाया साचा हाण, विछड़ कदे ना जाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी वेख विखान, सत्तां दीपां फोल फुलाईआ। चार वरन रसना गान, साचा मार्ग लाईआ। ऊँच नीच राउ रंक ना कोई राजान, सभ एका थान सुहाईआ। भरमे भुल्ले जीव नादान, नानक निरँकार रिहा समझाईआ। अन्तिम गया छड्ड मैदान, प्रभ तेरी ओट रखाईआ। प्रगट होए श्री भगवान, निहकलंका नाउँ रखाईआ। मेट मिटाए पंज शैतान, पंच अक्खर नाम धराईआ। रसना चिल्ला बणाए इक्क कमान, सोहँ साचा तीर चलाईआ। लोआं पुरीआं मारे मार ब्रह्मा शिव होए हैरान, कवण कूटे हरि बैठा जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव रिहा खुल्हाईआ। नानक रसना हरि हरि गाया, घर साचे वज्जी वधाईआ। एका मन्त्र नाम दृढ़ाया, जीवां जन्तां रिहा जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ भेव ना पाया, बेअन्त बेअन्त गया लिखाया। साचे सन्तां रिहा जगाया, एका राह वखाईआ। काया मन्दिर अन्दर महल्ल टिकाया, प्रभ साचा बैठा आसण लाईआ। जोत निरँजण दीप जगाया, अन्ध अज्ञान मिटाईआ। सुखमन नाड़ी पार कराया, आप आपणा लड़ फड़ाईआ। पंचम धाड़ी परे हटाया, साचा खण्डा हत्थ उठाईआ। बजर कपाटी पाड़ वखाया, साची हाटी रिहा खुल्हाईआ। तीर्थ ताटी ना कोई नुहाया, अमृत आत्म इक्क इशनान कराईआ। अट्ठ सट्ठ सरोवर कोई दिस ना आया, प्रभ चरन चरनोधक इक्क प्याईआ। रागी राग ना कोई सुनावण आया, ना कोई राग अलाईआ। पंचम मीता आप अख्वाया, पंचम संग निभाईआ। जोती अग्नी मट्ठ तपाया, पंचां तत्तां रिहा जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे बैठा आसण लाईआ। साचा घर इक्क अवल्ला, हरि आपणा आप रखाया। दस्म द्वारी सच महल्ला, साचा धाम सुहाया। दीपक जोती एका बल्ला, अन्ध अन्धेर मिटाया। आत्म सेजा बैठ इकल्ला, गुरमुख साचे तेरा राह तकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे बैठा आसण लाया। अंगीकार अंग लाया, नानक किरपा धारया। पारब्रह्म दर सीस झुकाया, सेवा करी अपारया। जगत जगदीश अन्त कलि वेख वखाया, निहकलंक लए अवतारया। छत्र साचे सीस झुलाया, बीस बीसे दए हुलारया। इक्क उनीस खेल रचाया,

४६५
०६

चारों कुन्ट जै जै कारया। राग छतीस ना कोए गाया, वेद पुराण ना कदे उचारया। कुरान अञ्जील हदीस ना कोए पढ़ाया, शास्त्र सिमरत होए ख्वारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक तेरा वेखे घर, आप आपणा फेरा पा ल्या। आपणा फेरा आपे पाए, अकल कला भरपूरा। गुरमुख सोए मात जगाए, देवे शब्द सरूरा। चारे कूटां वेख वखाए, आपे वसे नेड़े दूरा। मनमुखां खाली ठूठा हथ्थ फड़ाए, विच रखाए जूठा झूठा कूड़ा। गुरमुख जुगां जुगां दा विछड़या रुठा, कलिजुग अन्तिम लए मिलाए। लुकया रहिण ना देवे कोई गुझा, शब्द सरूपी फेरा पाए। आप बंधाए एका मुट्ठा, सोहँ तन्द रखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा वेखे घर, गुर चेला भाग लगाए। कलिजुग तेरा अन्तिम घर, प्रभ साचा वेख वखांयदा। सम्मत चौदां गया चढ़, पहली चेत्र खुशी मनांयदा। जन भगतां देवे वर घर, वर घर साचा मूल चुकांयदा। पंचम जेठ आउणा डर, सृष्ट सबाई आप हिलांयदा। घर घर रोवण नारी नर, ना कोई किसे बचांयदा। साध सन्त बैठे दड़, माया राणी पड़दा पांयदा। गुर मन्दिर अन्दर बहि बहि रहे लड़, ग्रन्थी पन्थी भरम भुलांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी होवे दो धड़, प्रभ साचा आप करांयदा। सम्मत पन्दरां अन्दर वड़, सृष्ट सबाई आप उठांयदा। अग्ग लगाए बहत्तर नड़, शाह सुल्तानां ना कोई बुझांयदा। कलिजुग चबाए आपणी दाढ़ ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई मढ़ी गोर समांयदा। सन्त सुहेले लए फड़, आप आपणी गोद उठांयदा। लक्ख चुरासी उखेड़ जड़, ब्रह्म मूल चुकांयदा। बलिहार जन भगतां फड़ाए आपणा लड़, सतिजुग साचा राह विखांयदा। ना कोई पीवे हुक्का नड़, मदिरा मास ना रसना लांयदा। दस्म द्वारी उच्च महल्ले आपे चढ़, प्रभ साचा शब्द जणांयदा। जन भगतां दर द्वारे अग्गे खड़, शब्द घोड़ा इक्क वखांयदा। कलिजुग माया ना जाए सड़, पंज तत्त मूल चुकांयदा। किला तोड़ हँकारी गढ़, सीतल धारा इक्क वहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सोए मात जगांयदा। गुरमुख सोया उठ जाग, प्रभ सोया आप जगांयदा। आत्म धुन उपजाए साचा राग, आप आपणी सेव कमांयदा। दुरमति मैल धोवे दाग़, निर्मल नीर वहांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काग, साची जोत जगांयदा। आप आपणे हथ्थ रक्खी वाग, धर्म राए मुख भवांयदा। सरन सरनाई जाए लाग, सम्मत चौदां वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल खिलांयदा। निरगुण खेले खेल खिलारी, साची कल वरताईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, करे जोत रुशनाईआ। शब्द उपजाए दर द्वारी, लोआं पुरीआं रिहा सुणाईआ। भारत खण्ड करे ख़बरदारी, राष्ट्रपति रिहा जगाईआ। कोई ना करे किसे कारी, सारे बैठण मुख छुपाईआ। सम्मत सोलां सतारां हाढ़ी, सभ ने भज्जणा वाहो दाहीआ। किसे ना दिसे पिच्छा अगाड़ी, सर अमृत खाली

आप कराईआ। ब्यास किनारा पार किनारी, ख़ालसा पन्थ रोवे जारो जारी, माझा देस होए उजाड़ी, प्रभ साचा लेख लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नानक मिल्या एका वर, कलिजुग अन्तिम पावे सारी। नानक मंगी मंग अपार, निरगुण हरि ध्यानया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, लोकमाती फेरा पाया। रूप रंग रेख ना कोई कीता त्यार, ना कोई तत्त वखाया। अगम्म अगम्मा प्रगट होया अगम्मी धार, साची धारा रिहा चलाया। जोती शब्दी गया जम्म, आप आपणी गोद उठाया। गुरमुख लेखे लाए काया चम्म, गोबिन्द विच समाया। माया ममता खाधा तम, आलस निन्दरा परे हटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम वेखण आया। कलिजुग अन्तिम वेख वखाए, गुर शब्दी मेल मिलाया। गोबिन्द साची सेव कमाए, हरि साची सेवा लाया। गुर चेला आप हो जाए, गुर चेला रूप वटाया। अन्तिम वेला मेल मिलाए, सम्बल नगरी धाम सुहाया। साढे तिन्न हथ्थ रिहा उपाए, ना कोई दूसर रिहा बणाया। नौ दर द्वारे आप खुलाए, मनमुख जीवां रिहा विखाया। दसवें डेरा इक्क रखाए, सन्त सतिगुर रिहा बुझाया। प्रभ अबिनाशी जोत जगाए, घर साचा वेख वखाया। आए जाए बणत बणाए, आप आपणा कर्म कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण रूप समाया। नर नरायण नर निरँकार, जुग जुग भेख वटांयदा। शब्द खण्डा तेज कटार, तन गात्रे आप लटकांयदा। तिक्खी रक्खे दोवें धार, मनमुख गुरमुख वेख विखांयदा। मारी जाए वारो वार, जेरज अंड वंड वंडांयदा। जन भगतां करे कराए ख़बरदार, जीउ पिण्ड ब्रह्मण्ड खोज खुजांयदा। मनमुख सुत्ते पैर पसार, कलिजुग गूढ़ी नींद सवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा लहिणा देणा मूल चुकांयदा। कलिजुग अन्तिम जोत जगाई, वज्जी मात वधाईआ। चार यार संग मुहम्मद आए सरनाई, दोवें बैठे सीस झुकाईआ। अल्ला राणी मुख तों पड़दा रही लाही, नेत्र नैणा रही शरमाईआ। ना कोई धी ना जवाई, उम्मत नबी रसूलां मुख बैठी लाई छाहीआ। धुर दरगाही होए कबूल, सदी चौधवीं वेख वखाईआ। फल फुलवाड़ी गई फूल, अमाम मैहन्दी वेख वखाईआ। नीला चोला कन्त कन्तूहल, साचा ताजी इक्क रखाईआ। आपे नबी आप रसूल, अल्ला हू नाअरा साचा रिहा गाईआ। कलिजुग फल गया पक्क, प्रभ साचा रिहा तुड़ाईआ। जन भगतां पड़दे देवे ढक, रोड़ी सक्खर रिहा उठाईआ। चारों कुन्ट उडणे कक्ख, बूरे कक्के रिहा हिलाईआ। मक्का मदीना होवे सक्ख, सम्मत पन्दरां दए दुहाईआ। प्रगट होए हरि प्रतक्ख, जोती नूर करे सवाईआ। खेले खेल अलखणा अलक्ख, कोए भेव ना पावे राईआ। सन्त सुहेले फड़ फड़ करे वक्ख, गुर गोबिन्दे मंग मंगाईआ। एका इक्की साची सिक्खी धारों तिक्खी,

सम्मत इक्की वेख विखाईआ। नेत्र पेखी घर चौथे वेखी, सच मेल मिलाईआ। ना कोई दिसे औलीआ पीर शेखी, दस्तगीर रहिण ना पाईआ। पंडत पांधे ग्रन्थी पन्थी मेटे रेखी, चार वरन इक्क सरनाईआ। आपे जाणे धारी केसी, आपे मूंड मुंडाईआ। दाता जोद्धा सूर बली दस दस्मेसी, निहकलंक संग निभाईआ। गोबिन्द काया हरि करया वेसी, शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। शब्द सुनेहड़ा देवे देस प्रदेसी, पंडत नेहरू विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका डंक रिहा वजाईआ। वज्जे डंक राज दरबार, हरि साचा आप वजांयदा। शाह हँकारी करे ख़बरदार, वाली हिन्द उठांयदा। अन्तिम कलिजुग पैणी मार, सीस ताज ना कोई हंढांयदा। दर दरबान होण ख्वार, राजे राणयां संग तुड़ांयदा। ना कोई गाए राग मलार, मधावणी सोहले ना कोई पढ़ांयदा। वेद पुराणां पैणी मार, अञ्जील कुरानां पार करांयदा। प्रगट होए नर निरँकार, कलिजुग तेरा अन्त करांयदा। सतिजुग बन्ने साची धार, साचा मार्ग लांयदा। सोहँ शब्द अपर अपार, हरि पुरख निरँजण झोली पांयदा। भगत जनां हरि कर त्यार, आपणा दरस दिखांयदा। फड़ फड़ बाहों तार, जुग जुग विछड़े मेल मिलांयदा। आपे घड़े आपणा घाड़, घाड़नहारा आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक गोबिन्द एका घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। गोबिन्द काया तख्त सुल्तान, हरि साचा आप बराज्जया। जोती नूर चमके सत्त रंग, सत्तां वेखे खेल ग़रीब नवाज्जया। जुग जुग देवणहारा दान, जन भगतां मारे आवाज़्जया। मनमुख कीता आपणा पाण, ना कोई रक्खे लाज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरी आत्म घर, आप आपणा रच्चया काज्जया। गुरसिख आत्म रही कुरला, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। प्रभ अबिनाशी झोली पा, जो रक्खी वस्त लोकाईआ। काग अवस्था कागों हँस बणा, सतिजुग साची चोग चुगाईआ। फड़ फड़ बाहों राहे पा, पिछला मूल चुकाईआ। वेख वखाणे थाउँ थाँ, सतिगुर पूरा सेवक, आपणी सेवा रिहा कमाईआ। आपे पिता आपे माँ, गुरमुख साचे बाल अञ्जाणे बैठा गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर आपणे मेल मिलाईआ। गोबिन्द गुर हरि गोपाल, जुग जुग वेख वखांयदा। जन भगतां रिहा सुरत संभाल, शब्दी मेल मिलांयदा। फल लगाए काया डाल्, अमृत इक्क खवांयदा। नेड़ ना आए काल महांकाल, लक्ख चुरासी फंद तुड़ांयदा। आवण जावण तोड़ जंजाल, अन्धेर अज्ञान अन्ध मिटांयदा। ना कोई शाह ना कोई कंगाल, एका रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरा साचा दर, दर द्वार आप सुहांयदा। गुरमुख साचे दया कमाए, आपणी किरपा धारया। नौ द्वारे पार कराए, खेले खेल अपारया। सुरत सवाणी शब्द मिलाए, साचा मेला हाणी हाणया। डूँघी कन्दर रिहा लँघाए, हरि दाता

गुण निधानया। साचा राग इक्क सुणाए, अनहद साची बाणीआ। पंचम साजा रिहा वजाए, करे कराए आप पछानया। बजर कपाटी तोड़ तुड़ाए, एका दूजा भेव चुकानया। अमृत आत्म ताल सुहाए, आप विखाए निगाहबानया। दस्म द्वारी मेल मिलाए, साची सेजा इक्क सुहानया। नारी कन्ता कन्ता नारी इक्क हो जाए, गुरमुख साचा घर साचा वेख वखानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दरवेश होए दरबानया। आपे सुरत संभाल, करे शब्द कुड़माईआ। नाम वजाए साचा ताल, तलवाड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग जुग चले चलाए नाल नाल, गुरमुख साचे मात उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सिँघ राम रामा रूप वटाईआ। राम रामा हरि हरि पाया, घर साचे वज्जी वधाईआ। रैण अन्धेरी शामा रिहा मिटाया, निर्मल जोत करे रुशनाईआ। शब्द दमामा इक्क वजाया, ढोल मृदंग ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका नामा नाउँ रखाया, सो पुरख निरँजण आप अख्वाईआ। शब्द शस्त्र तीर कमान, चिल्ला इक्क रखाईआ। गुर गोबिन्दा नौजवान, कमरकसा रिहा कराईआ। सन्त सुहेले वेखे मार ध्यान, दूर दुराडा आसण लाईआ। सम्मत चौदां कर पछाण, साचा मेल मिलाईआ। एका एक देवे पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। धर्म वखाए सच निशान, आप आपणे हथ्थ उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी एका आण, हरि साचा रिहा कराईआ। गुरमुख साचा चतुर सुजान, आपे वेखण आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चेला गुर गुर चेला आप हो जाईआ। गुर चेला रंग बसन्तया, फल फुली फुलवाड़या। साचा मेला साचे कन्तया, आपे होए लाड़ी लाड़या। देवे नाम वड्डा धन धन्नवन्तया, जगत तृष्ना देवे साड़या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरा साचा घर, दरस दिखावे उप्पर चढ़, किला तोड़ हँकारी गढ़, दस्म द्वारी अन्दर वाड़या। दस्म द्वारी उप्पर चढ़, किला कोट तुड़ांयदा। जोत सरूपी अन्दर वड़, शब्द सरूपी आप मिलांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई तत्त विखांयदा। सन्त सुहेले गुरमुख गुरु गुर चेले लए फड़, आप आपणा राह विखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कर किरपा मेल मिलांयदा। प्रभ हथ्थ वड्याईआ, भेव कोई ना पाए। जीव जन्त उपाईआ, मन मति बुध संग रलाए। निरगुण खेल खिलाईआ, सुरती सुरत समाए। सरगुण धन्दे लाईआ, आप आपणा बैठा मुख छुपाए। दूई द्वैती कंध विच रखाईआ, बैठा पड़दा पाए। भागांमन्द रहे शरमाईआ, ना कोई वेखे वेख विखाए। सद बख्शिंदा आप अख्वाईआ, आत्म जिंदे दए तुड़ाए। सुरत सवाणी शब्द बंध बंधाईआ, आपणी हथ्थीं गंढु दवाए। नाम तन्द इक्क रखाईआ, दिस किसे ना आए। गुरमुखां खुशी बन्द बन्द कराईआ, निर्मल जोती नूर कराए। बत्ती दन्द ना कोई गाईआ, रसना जिह्वा ना कोई

लेख लिखाए। निर्मल जोत कर आकार, एका चन्द चढ़ाईआ, अन्ध अन्धेर मिटाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे किरपा कर, चरन ध्यान इक्क रखाए। चरन ध्याना सच टिकाना, हरि एका एक रखाया। देवे नाम सच बिबाणा, गुरमुखां रिहा चढ़ाया। दूसर ना कोई वंञ मुहाणा, एका चप्पू लाया। सुरत शब्द मेल मिलाना, पंचम मेट मिटाया। अनहद सुणाए साचा गाना, राग अनादी रिहा जणाया। जन्म कर्म प्रभ आपणे हथ्थ रखाना, लेखा लिखणहार आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, दे मति रिहा समझाया। गुर मति जगत अधार है, लक्ख चुरासी पार कराए। धीरज यति सति चरन प्यार है, पंचम तत्त ना कोए हलकाए। रत्ती रत्त ना होए ख्वार है, हरि साचा बूझ बुझाए। दुरमति मैल कट्ट इक्क कराए वणज वपार है, साचा नाम झोली पाए। काया मन्दिर एका एक सच दुकान है, सच वस्तू रिहा टिकाए। आप वखाए सच निशान है, दूसर किसे दिस ना आए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सुरत सवाणी लए वर, शब्दी जोड़ जुड़ाए। सुरत ज्ञान शब्द ध्यान, आत्म ब्रह्म जणाईआ। अमृत आत्म पीण खाण, एका एक वखाईआ। दाता दानी देवे जिया दान, गुणवन्त हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, गुर संगत रिहा रलाईआ।

०६ ०६

एका एक अकार, ओंकारया। इक्क ओअँ खेल अपार, आपणी आप बणा रिहा। अक्खर वक्खर कर त्यार, आपणा आप उपा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा मार्ग आपे ला ल्या। एका अक्खर हरि अकाला, आपणा आप उपाया। आपे जाणे दीन दयाला, देवत सुर भेव ना पाया। ब्रह्मा शिव कर रखवाला, विष्नूं सेवा लाया। आप बैठ दर घर सच्ची धर्मसाला, घर साचे आसण लाया। सति पुरख निरँजण दीन दयाला, दयावान अख्वाया। आप उपाए काल महांकाला, आपणा खेल रचाया। सूरज चन्न फल लगाए डाल्ला, वेखणहार अख्वाया। लोक परलोक पुरीआं लोआं पाताल आकाश मात प्रभ बख्शी दात, आपणा नाता बंधाया। आपे बैठा इक्क इकांत, दूर दुराडा वेखे मार झात, सुख सहिजे सहिज समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी बणत बणाया। आदि पुरख आदि शक्त आदि भवानी, एका जोत जगाईआ। एका शब्द इक्क निशानी, एका धार वहाईआ। एका तराना प्रभ भाना गुण निधानी, गुणवन्ता आप अख्वाईआ। एका जाता एका नाता तोड़े जोड़े आपणा बंध बंधाईआ। एका वणज एका हाटा, एका बस्त्र एका खाटा, इक्क सिँघासण रखाईआ। एका जोती एका लाटा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप

आपणी रचन रचाईआ। आदि पुरख आदि स्वामी, एका रूप वटाया। एका एक एक निहकामी, शाहो भूप अख्वाया। ना कोई भुक्ख तृष्ना कामी, आलस निन्दरा विच ना आया। पढ़े सुणे ना कोई बाणी, इष्ट देव ना कोई रखाया। सृष्ट सबाई आप उपानी, पूत सपूता ब्रह्मा जाया। भेव ना पाए कोए विद्वानी, ज्ञानी ध्यानी पंडत पांधे लिख लिख लेख लिखाया। आपे जाणे आपणी इक्क निशानी, पारब्रह्म पुरख सुल्तानी, गहर गम्भीर अख्वाया। आपे राजा आपे राणी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच शाहो भूप अख्वाया। शाहो भूप हरि निरँकार, साचे तख्त बिराज्जया। आपे आप होए सिक्दार, वड वड राजन राज्जया। आप आपणा देवे पहरा, आप संवारे आपणा काज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग लए मात अवतारा, एका चलाए नाम जहाज़या। लोकमात प्रभ लए अवतारा, आपणी बणत बणांयदा। आप आपणा कर अकारा, आपणा खेल रचांयदा। जोती शब्दी खेल अपारा, एका धार वहांयदा। पंज तत्त हरि कर पसारा, आसण सिँघासण लांयदा। शब्द सुनेहड़ा एका वारा, धुरदरगाही आप सुणांयदा। काया खेड़ा नगर अपारा, सति पुरख निरँजण संग रलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा राह बुझांयदा। साचा राह हरि टिकाणा, एका एक रखाया। एका अक्खर कर ध्याना, आपणा आप उपाया। ऊड़ा उठ श्री भगवाना, त्रैलोकां बणत बणाया। ४७१ ०६ तिन्न घर देवे वर, किरपा कर दोवें बन्द कराया। मुखड़ा खोल्ह तीजे घर, हरि इक्क आकार लगाया। आकाश आकाशां बाहर कर, राह बैठा रिहा तकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ओंकारा निरँकारा एका रूप समाया। ऐड़ा अक्खर अक्ख उग्घाड़, दो लोचन खोल्ह्या। आपे बैठा रिहा ताड़, निरगुण सरगुण खेल खिलाया। घड़े घड़ाए साचे घाड़, घाड़नहार आप अख्वाया। चढ़े चढ़ाए महल्ल अटल अपार, उच्चे मन्दिर डेरा लाया। धरनी धरत धवल धौल पावे सार, लक्ख चुरासी वेख वखाया। ब्रह्मा शिव देवत सुर दए हुलार, पुरीआं लोआं धाम सुहाया। आप आपे वसया सभ तों बाहर, हर घर बैठा आसण लाया। अक्खर वक्खर करे ख़बरदार, अनूप सरूपा आपणा आप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात वेख वखाया। ईड़ी इष्ट इक्क अधार, एका एक करांयदा। खोल्हे सृष्ट सर्ब संसार, आपणी दया कमांयदा। शब्द गुर राम वशिष्ट, राम रामा रूप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका एक टेक रखांयदा। सस्सा सहिज सुभा, सो पुरख निरँजण उपंनया। आप आपणी बणत बणा, आपणा भाणा आपे मन्नया। गुर पीर साध सन्त अवतार उपा, लोकमात चढ़ाए साचा चन्नया। दोऔँ दो रिहा विखा, आप घर आपणे लाई सन्न्या। सो पुरख निरँजण दया कमा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा देवे डन्नया। सस्सा

सतिगुर धार, सो साची आप चलाईआ। किरपा कर अपर अपार, दीवा बाती इक्क जगाईआ। मेट मिटाए अन्ध अंध्यार, रैण राती रहिण ना पाईआ। हाहा हँगता देवे मार, आप आपणे अंक समाईआ। सोहँ शब्द अपर अपार, आदि जुगादी बणत बणाईआ। ओअँ सोहँ इक्क प्यार, सो पुरख निरँजण रिहा पाईआ। दो जहानां सांझा मीत मुरार, लोकमाती मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम अक्खर पंच निशाना, मेल मिलाए श्री भगवाना, विछड़ कदे ना जाईआ। हाहा हरिजन साचा पाया, आत्म वज्जी वधाईआ। सस्सा सतिगुर मेल मिलाया, विछड़ कदे ना जाईआ। ईड़ी इष्ट इक्क रखाया, दूसर कोई दिस ना आईआ। तीजी अक्ख खोल्ह विखाया, नेत्र तीजा अक्ख खुल्हाईआ। ऊड़ा ओंकारा देस सुहाया, नर निरँकारा बैठा जोत जगाईआ। पंचम मेला इक्क कराया, घर मन्दिर बंक सुहाईआ। अन्दरे अन्दर रिहा जगाया, दिस किसे ना आईआ। काया अन्धेरी डूँघी कन्दर डेरा लाया, आप आपणी रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम पंचम रिहा जगाईआ। ओंकारा इक्क इकल्ला, एका मुख उग्घाड़या। ऐड़ा वेखे कर प्यारा, धुरदरगाही साचा लाड़या। ईड़ी मंगे बण भिखारा, दर साचे करे पुकारया। सस्सा सभ तों वसे बाहरा, आपे गुप्त आपे जाहरया। हाहा हस्त कीट इक्क प्यारा, ऊँच नीच राउ रंक राज राजान एका एक वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मार्ग इक्क बणा रिहा। साचा मार्ग साचा राह, एका एक रखाया। छेवें घर बण मलाह, इक्क उपदेस रखाया। सति पुरख निरँजण फड़ बांह, सति सतिवाद आप हो आया। अट्ठां तत्तां एका नाँ, लोकमाती रिहा जणाया। नौ दर जूठे झूठे उडणे काँ, साचा थाँ ना कोई सुहाया। दसवें नाता तोड़े पिता माँ, आप आपणा दरस दिखाया। सदा सुहेला देवे ठण्ढी छाँ, जुग जुग पैज रक्खदा आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे रिहा जगाया। जुग जुग धारे भेख, हरि बनवारया। आपे लिखणहारा लेख, आप आपणे लए अवतारया। आपे होए धारी केस, आपे मूंड मुंडा ल्या। आपे नर नरेश, आपे भेखी भेख भिखारया। आपे होए रिखी केश, केशव केश मोहण माधव आप अखवा ल्या। आपे दाता दस दस्मेश, आपे कृष्ना रूप वटा रिहा। आपे विष्नूं शिव शंकर गणेश, आपे ब्रह्मा नाम उपा रिहा। आपे होए दर दरवेश, जन भगतां द्वारे फेरी पा रिहा। आपे करे कराए आपणा वेस, आप आपणा रूप वटा रिहा। लक्ख चुरासी करे आदेश, गुरमुख विरले नेत्र नैण दर्शन पा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा कूड़ कुड़यारा गवर्धन आपणे हथ्थ उठा ल्या। आप आपणा लए अवतारा, आपणी कल वरतांयदा। एका दूजा कर प्यारा, तीजी धार वहांयदा। चौथे घर खोल्ह दुआरा, सन्त सुहेले आप मिलांयदा। पंचम मेला मीत मुरारा, पंचम धाड़

मिटांयदा। छेवें खेले खेल अपारा, एका धाम सुहांयदा। सत्तवें सति पुरख निरँजण कर आकारा, निर्मल जोती दीप जगांयदा। मन मति बुध ना कोए अधारा, अट्ठां तत्तां विच समांयदा। नौ दर खोल्हे जगत किवाड़ा, लक्ख चुरासी बणत बणांयदा। दस्म महल्ल अटल न्यारा, हरि आपणा आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा भेख वटांयदा। भेख वटाए हरि भगवाना, हरि आपणी जोत जगाईआ। सतिजुग त्रेता खेल महाना, राम रावण दुष्ट मिटाईआ। जन भगतां देवे नाम निधाना, गऊ ग़रीबां गले लगाईआ। सीता सुरती कर परवाना, गुरमुख साचे रिहा प्रनाईआ। जोत निरँजण दीप महाना, साचे गगन रिहा टिकाईआ। आकाश प्रकाश कोटन भाना, आपणा रिहा कराईआ। नाम निधाना साचा गाणा, धुन आत्मक रिहा वजाईआ। आप फड़ाए तीर कमाना, रसना चिल्ले आप चढ़ाईआ। मेट मिटाए पंज शैताना, हउमे हँगता रोग मिटाईआ। सोहँ बन्न्हे हत्थीं गाना, साचा सगन मनाईआ। मिले मेल श्री भगवाना, विछड़ कदे ना जाईआ। जीव जगत लोकमात देवण ताअना, मस्तक टिक्का काली शाही लाईआ। गुरमुख विरले मात पछाना, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। जूठा झूठा पीणा खाणा, राज जोग रहिण ना पाईआ। बस्त्र शस्त्र अस्त्र तन मन बाना, साचा चीर ना कोई दिसाईआ। गुरमुख विरले बख्शे चरन ध्याना, दो जहानां लज्जया रिहा रखाईआ। काहना कृष्ना रूप सुहाना, मुकंद मनोहर लखमी नरायण आप अख्वाईआ। मोर मुकट सिर सीस टिकाना, चतुर्भुज अंक समाईआ। कलिजुग तेरा लेख चुकाना, जूठा झूठा दाग़ मिटाईआ। सतिजुग साचा मार्ग लाना, आपणे हत्थ रक्खे वड्याईआ। लेख चुकाए वेद पुराणा, अञ्जील कुरान रहिण ना पाईआ। खाणी बाणी कर पछाना, गुरमुख साचे आप जगाईआ। धुरदरगाही इक्क निशाना, हरि सोहँ वस्त वखाईआ। प्रगट होए हरि बलवाना, कलि कल वरताईआ। जोती शब्दी खेल महाना, खेलणहार आप अख्वाईआ। निहकलंक नरायण नर श्री भगवाना, कलिजुग तेरी अन्तिम वार नौ खण्ड पृथ्वी दीप सत्तां आपे वेखण आईआ। सत्त दीप हरि वेख विखाए, लक्खण चरन छुहांयदा। करौच दीप हरि डेरा लाए, भगत सुहेले आप उठांयदा। पुष्कर देवे जड़्ह उखड़ाए, ना कोई किसे बचांयदा। जम्बु निर्मल जोत जगाए, आकाश प्रकाश वखांयदा। सान सहिज धुन उपजाए, आत्म ब्रह्म जणांयदा। सलमल बैठा डेरा ढाहे, त्रैगुण ताल वजांयदा। कुशा चरन ध्यान इक्क रखाए, दहि दिशा वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड नव खण्ड वेख वखांयदा। पुरख अबिनाशी एका धार, वेख वखाए वारो वार, नानक गोबिन्द पाए सार, साची जोत जगाईआ। खण्डा फड़ तेज कटार, मारी जाए वारो वार, मनमुख जीवां दए हुदार, अन्तिम मेट मिटाईआ। गुरमुख साचे लाए पार, चरन प्रीती इक्क प्यार,

नौ खण्ड पृथ्वी विच संसार, हर घट वेख वखाईआ। सुहागी गीत इक्क अधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा भेख वटाईआ। नानक काया हरि प्रभ पाया, गोबिन्द सेव कमाईआ। अलख अलखणा रसना गाया, देवी देव ना कोई मनाईआ। होए प्रतक्खणा प्रभ साचा दरस दिखाया, नाम सति हरि झोली पाईआ। आपे दे मति समझाया, लोकमाती राह वखाईआ। अन्तिम कलि चारों कुन्ट अन्यार मच्चणा, ना कोई सके बुझाईआ। जूठ झूठ दर दर घर घर बहि बहि नच्चणा, माया ममता वेस कराईआ। गुरमुख विरले लोकमात बचणा, जिस जन प्रभ आपणी बूझ बुझाईआ। काया माटी भाण्डा कच्चना, अन्तिम भन्न वखाईआ। एका एक गुर शब्द साचा सजना, आदि जुगादि सदा रहि जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गऊ ग़रीबां होए सहाईआ। गऊ ग़रीबां पावे सार, पूरन हरि भगवन्तया। रोग सोग चिन्ता भुक्ख निवार, दूई द्वैती मेट मिटन्तया। एका सुख आत्म शब्द धुन्कार, अनहद ताल वजन्तया। सुणे सुणाए हरि पुकार, गुर मन्दिर सुणे बेनन्तया। फड़ फड़ बांहों लाए पार, जो जन रसना जिह्वा गुण गवन्तया। मूर्ख मुग्ध भरमे भुल्ले जीव गंवार, सुत्ते पैर पसार, मिले मेल ना साचे कन्तया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन पार रिहा कर, बेड़ा आपणा आप चलन्तया। साचा बेड़ा कर त्यार, एका चप्पू लाया। खेवट खेट आप सरकार, निरगुण रूप समाया। सरगुण साचे कर प्यार, गुरमुख नाउँ उपाया। आपे होया अद्धविचकार, दोहां मेल मलाया। मन मति बुध ना पावे सार, करता काया रूप ना किसे चढ़ाया। अकथ समरथ भेव निवार, निहचल धाम सुहाया। सगल वसूरे जायण लथ्थ, सन्त सुहेले इक्क इकेले जिस जन दर्शन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा जुग जुग वर, आपे होए सहाया। कथा कहाणी राम जगत, रसना बहि बहि गांवदे। कोई ना जाणे आत्म शक्त, ब्रह्म विद्या ना कोई पढ़ावंदे। लेखे लग्गे ना बूंद रक्त, मानस ढोर अख्वावंदे। पंचां लग्गा मगर कटक, दिवस रैण मुख छुपावंदे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे नाम वर, चरन द्वारे जाए अटक, दोए जोड़ सीस झुकावंदे। रसना गाई आत्म वधाई, सुणे लुकाई भेव ना आनया। पंचां घर करे लड़ाई, नारी कन्त होए जुदाई, साचा कन्त ना कोई हंढानया। गुर मति ना होए कोई कुड़माई, साची डोली ना तन सजाई, रंग मजीठ ना कोई चढ़ानया। दूआ दर हरि रघुराई, दिवस रैण वेख वखानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां आत्म बूझ बुझानया। आत्म जोती ब्रह्म ज्ञान, शब्दी भगत जणाईआ। साचे मन्दिर बैठ मकान, निर्मल जोत जगाईआ। एका राग सुणाए कान, हरि आपणा आप अल्लाईआ। ना कोई जाणे वेद पुराण, गा गा थक्की सर्ब लुकाईआ। भरमे भुल्ले भरम नादान, पारब्रह्म पूरन

परमेश्वर पतिप्तवन्ता किसे हथ्थ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन सुहाए इक्क दर, एका नाम दए वड्याईआ। नाम निधाना सर्ब गुण पूरा, प्रभ एका एक रखाया। नेड़े दूर हाज़र हज़ूरा, निज घर आत्म बैठा आसण लाया। नाद अनादी उपजाए साची तूरा, आपणी आप वजाया। दाता जोद्धा वड्डा सूरा, गुरमुख साचे रक्खे हेठ साया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन छुहाए साचे दर, मेट मिटाए जूठा झूठा कूड़ा।

✻ ७ चेत २०१४ बिक्रमी नाज़र सिँघ दे घर इक्की परिवारां दा इक्ठ होया ते शब्द दी रहिमत कीती पिण्ड नाथेवाल ज़िला फिरोजपुर ✻

सति पुरख सतिवादया, साचे घर समाए। आदिन अन्ता आदि जुगादया, एका धाम सुहाए। खेले खेल वड ब्रह्मादया, पारब्रह्म रघुराए। शब्द वजाए साचा नादया, लोआं पुरीआं रिहा समाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क वखाए। सच घर हरि निरँकार, आपणा खेल करांयदा। जोती निर्मल कर उज्यार, रूप अनूप समांयदा। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़ी धार, अगम्म अगम्म रूप समांयदा। आप आपणा मीत मुरार, आपे हरि अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा आप सुहांयदा। साचा घर इक्क टिकाणा, एक उच्च महल्लया। जोती नूर हरि भगवाना, आपे रिहा बलया। साचा शब्द तीर निशाना, आपे चाढ़े आपणे चिल्लया। खेले खेल दो जहानां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे धुर फ़रमाणा। सति पुरख निरँजण सति सतिवाद, सति सतिवाद अन्त कला वरताईआ। लक्ख चुरासी दिवस रैण रही अराध, हथ्थ किसे ना आईआ। चेतन्न चित सन्त साध, कोटन कोट रहे उपाईआ। गुरमुख विरले माधव माध, प्रभ आपणा आप रिहा मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख निरँजण सद अख्वाईआ। सति पुरख निरँजण आप करतारा, करता पुरख अख्वाईआ। निर्मल जोती कर उज्यारा, लोआं पुरीआं रिहा जगाईआ। ब्रह्मा शिव देवत सुर करे प्यारा, आप आपणी लाईआ। आपे वसया सभ तों बाहरा, आपे बैठा आसण लाईआ। जुग जुग वेखे भेख न्यारा, आपणा भेख वटाईआ। आपे परखे परखणहारा, पूत सपूता आप हो आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा भेख वटाईआ। आपणा भेख आप वटाए, अकल कला समाया। मुन रिख कोई भेव ना पाए, खाणी बाणी सार ना राया। वेद पुराणी रहे गाए, गावणहार दिस ना आया। अञ्जील कुरानी रहे हलकाए, अल्ला हू हू नाअरा लाया। गुरमुख साचे चतुर सुजानी प्रभ आप उठाए, आत्म ब्रह्म जणाया। शब्द निशाना

तीर लगाए, बजर कपाटी चीर चिराया। गुण निधाना दया कमाए, हाणी हाण इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति पुरख निरँजण नाउँ धराया। सति पुरख निरँजण हरि निरवैरा, निरगुण रूप समाईआ। आप चुकाए मेरा तेरा, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। लक्ख चुरासी ढाहे भरमां डेरा, एका दूजा भेव चुकाईआ। आपे बैठा आत्म सेजा, आत्म दरसी दरस दिखाईआ। घर चौथे वेखे दर दहिलीजा, सन्त सुहेले बैठे राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति सतिवन्त आप हो जाईआ। सति सतिवन्ता नर निरँकार, एका एक अख्वाया। लक्ख चुरासी पसर पसार, ब्रह्मा शिव सेवा लाया। त्रैगुण माया कर उज्यार, पंज तत्त उपाया। मन मति बुध कर प्यार, आपणी धार चलाया। आप उपाए आपणी रत्त, रक्त बूंद अख्वाया। शब्द जणाए एका तत्त, सहिजे सहिज जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति सन्तोखी भेख वटाया। सति सन्तोख शब्द गुर पूरा, जुग जुग सेवा लाईआ। इक्क वजाए नाद अनादी साची तूरा, दीपक आत्म रिहा जगाईआ। गुरमुख विरले बख्शे चरन धूढ़ा, दुरमति मैल रिहा धवाईआ। काया चोली रंग चढ़ाए गूढ़ा, शब्द ललारी रिहा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भेखाधारी भेख वटाईआ।
४७६ जुग जुग भेख वटावणहारा, आदि पुरख अबिनाशी। गुरमुख साचे सोए जगावणहारा, निर्मल जोत करे प्रकाशी, सोहँ शब्द ४७६
०६ दे मति आप समझावण आया, किसे हथ्थ ना आए पृथ्वी आकाशी। बहत्तर नाड़ी एका रत्त आपणी आप मलावण आया, जोती ०६
जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग समासी। आपणे रंग हरि समाए, आपणी कल वरता रिहा। सतिजुग त्रेता पार कराए, द्वापर बन्ने धारया। कलिजुग बेड़ा बन्ने वखाए, चारों कुन्ट वेखे भुजा पसारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे जीव जन्त बाल अञ्जाणे, जन भगतां करे प्यारया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, हरि साचा वेख वखांयदा। कर्म धर्म ना कोई विचार, कुकर्मी कर्म कमांयदा। लक्ख चुरासी कर्म विचार, गुर गोबिन्द मेल मिलांयदा। शब्द खण्डा तेज कटार, आपणे हथ्थ उठांयदा। मारी जाए वारो वार, दो जहानां वेख वखांयदा। ब्रह्मा शिव देवत सुर रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैण नीर वहांयदा। लक्ख चुरासी तेरा एका ताम, त्रैगुण माया आप बणांयदा। जन भगतां मेटे अन्धेरी शाम, दीपक जोती इक्क जगांयदा। पल्ले बन्ने नाम दान, दो जहानी गंढु बंन्नांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, घर साचा आप सुहांयदा। कलिजुग तेरा अन्तिम वेला, वज्जी जगत वधाईआ। ना कोई दिसे सज्जण सुहेला, कूड़ो कूड़ होई लोकाईआ। ना गुरू ना कोई चेला, साध सन्त ना कोई अख्वाईआ। गुर दर मन्दिर अन्दर मस्जिद मठ शिवदवाले लग्गा मेला, धीआं भैणां रहे तकाईआ। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला, आप

आपणा भेख वटाईआ। जन भगतां बणे सज्जण सुहेला, गोबिन्द दरस दिखाईआ। जोत निरँजण चाढ़े तेला, साची सेवा आप लगाईआ। पंचम सखीआं मिल पावण वेला, अनहद साचा राग ताल वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा अन्तिम घर, बेमुखां रिहा विखाईआ। बेमुख जीव आत्म अन्ध, होए मात नादानया। लक्ख चुरासी ना मुक्कया पन्ध, हरि गेड़े गेड़ दवानया। गुर मन्त्र शब्द ना चढ़या साचा चन्द, मिले मेल ना श्री भगवानया। दूई द्वैती ढाही भरमां कंध, मगर लग्गे पंज शैतानया। बजर कपाटी ना कोई तोड़े जंद, नाम खण्डा ना कोई वखानया। आपे सुत्ता प्रभ दे कर कंड, आत्म सेज हंढानया। जन भगतां मेला विच ब्रह्मण्ड, जेरज अंड वेख वखानया। नाम भण्डारा रिहा वंड, कलिजुग तेरी अन्त निशानीआ। नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां करे खण्ड खण्ड, लाड़ी मौत मंगे कुरबानीआ। सोहँ खण्डा तेज चण्ड प्रचण्ड, तिक्खी धार विखानया। घर घर दिसे नार रंड, कन्त सुहाग ना कोई हंढानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा वेखे घर, जोती नूर श्री भगवानया। कलिजुग तेरा कूड़ पसारा, रो रो दए दुहाईआ। लक्ख चुरासी आई हारा, गुर पीर बैठे मुख छुपाईआ। देवत मुन ना कोई पावे सारा, आप आपणा पन्ध रहे मुकाईआ। विष्न शिव ब्रह्मा गणपति ना कोई दुआरा, दर द्वारे बैठे आसण लाईआ। पंडत पांधे ना वेद विचारा, आत्म ब्रह्म ना कोए जणाईआ। खाणी बाणी भर भण्डारा, साची वस्त किसे हथ्थ ना आईआ। पढ़ पढ़ थक्के जीव गंवारा, गुर पूरा दिस ना आईआ। माया रुल्ले तन हँकारा, पंचां चोरां नाल लड़ाईआ। हथ्थ ना फड़या तेज कटारा, तन गात्रे ना रिहा पाईआ। मिल्या मेल ना कन्त भतारा, ना साची सेज हंढाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, हरि साचे जोत प्रगटाईआ। जोत जगाए हरि भगवन्ता, कलिजुग दए दुहाईआ। वेख वखाए साधां सन्तां, अन्दर मन्दिर डेरा लाईआ। इक्क इकल्ला आपे कन्ता, आपणी सेज सुहाईआ। दस्म द्वारी बणाए बणता, महल्ल अटल वखाईआ। रक्खे भेव अगम्म अगम्मता, अगम्मड़ा धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे साचा वर, साचा राह वखाईआ। सतिजुग तेरा साचा राह, एका एक विखानया। शब्द सरूपी बण मलाह, पार कराए दो जहानया। सोहँ शब्द साचा नाँ, चार वरनां इक्क वखानया। पकड़ उठाए थाँ थाँ, राज राजानां शाह सुल्तानां दो जहानां आप अख्वानया। तिक्खा मारे तीर निशाना, रसना चिल्ले आप चढ़ानया। वाली हिन्द उठ नादाना, प्रभ सोया आप जगानया। पंचम जेठ लाड़ी मौत बंनॄणा गाना, ना कोई किसे छुडानया। करे खेल श्री भगवाना, आप आपणी बणत बणानया। धरतमात तेरा इक्क मैदाना, हथ्थीं आपणी नींह रखानया। मेट मिटाए पंज शैताना, संग मुहम्मद चार यार रहिण ना पानया। ईसा मूसा मेट मिटाना, हरि खिजरे

धार रुढ़ानया। अल्ला हू दर परवाना, बिस्मिला कर विखानया। तूं मैं तूं गुण निधाना, अहिनल हक्क नाल रलानया। गोबिन्द गुर तेरा घर परवाना, प्रभ साचा आसन लानया। आपे वेखे मार ध्याना, लोआं पुरीआं हेठ रखानया। सुरपति तेरा लेख लिखाना, लोकमाती जन्म दवानया। छोटे बाले माण दवाना, शाह सुल्तान आप बणानया। दो जहानी बन्ने बेड़ा, तन्दन नाम पवानया। आपे मर्द हरि मर्दाना, मृदंगा शब्द वजानया। चार कुन्ट वेखे भुक्खा नंगा, दहि दिशा जीव जन्त कुरलानया। ना कोई धार वहाए गोदावरी गंगा, अट्ठ सट्ठ मेट मिटानया। चिट्टे अस्व शब्द घोड़े कसया तंगा, सोलां कलीआं प्रभ आसण लानया। लोआं पुरीआं आपे लँघा, नीला नीली धारों पार करानया। मन्दिर अन्दर इक्क महल्ला, हरि साची सेज विछानया। लक्ख चुरासी वेखे परखे मन्दा चंगा, नाम कसवटी इक्क लगानया। जन भगतां दर द्वारे आपे लँघा, चरन प्रीती एका मंग मंगानया। चेत्र सत्त ना उब्बल रत, चरन प्रीती जन भगतां इक्क बंधानया। सोहँ तेरा चलाए रथ, पारब्रह्म अबिनाशी समरथ, अकथ कथा वखानया। सृष्ट सबाई रिहा मथ, अन्तिम लहिणा देणा मूल चुकाए साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, साची वंड वंडानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति पुरख निरँजण वसया सच घर, घर साचा इक्क सुहानया। एकँकार एक है, एका रूप समाए। दूसर धारा टेक है, हरि शब्दी रिहा जणाए। तीजे नेत्र रिहा वेख है, एका एका रखाए। चौथे घर शब्द सुहेले आपे पेख, है, साचा मेल मिलाए। पंचम घर हरि विसेख है, पंचम जोड़ जुड़ाए। छेवें दर ना कोई लिख्त लेख है, गुर पीर ना कोई वसाए। घर सत्तवां आपणा वेख है, हरि बैठा आसण लाए। सत्त चेत एका टेक है, जन भगतां रिहा जणाए। जुग जुग लिखणहारा लेख है, आपे लेखा रिहा गिणाए। आपे जाणे धारी केस है, मूंड मुंडाए भेव ना राए। आपे दाता नर नरेश है, जीवां जन्तां देवे रिजक सबाए। अन्तिम मेटे कलिजुग तेरी काली रेख है, लहिणा देणा मूल चुकाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा कर्म कमाए। आपणी कार आप कमाए, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। गुरमुख साचे लाए, रसना जिह्वा रिहा हिलाईआ। देवी देवा आप हो जाए, आप आपणा रूप वटाईआ। कौस्तक मणीआं मस्तक थेवा इक्क लगाए, निर्मल जोती जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सुहेले रिहा जगाए। गुरमुख साचे आप उठाए, वेखे दर द्वारया। गोबिन्द काया डेरा लाए, हरि दाता नर निरंकारया। शब्द सरूपी घेरा इक्क रखाए, आपे देवे पहरया। साचे मीता माण दवाए, कलिजुग अन्तिम लए अवतारया। ईसा मूसा दए मिटाए, नबी रसूलां वक्त चुका रिहा। खाली खीसा सर्ब रखाए, त्रैगुण माया मेट मिटा रिहा। छत्र सीसा ना कोई झुलाए, राज राजानां शाह सुल्तानां दर फिरा रिहा। राग छतीसा ना कोई गाए, कलिजुग वेला अन्त कुरला रिहा। वेद

पुराणां ना कोई उठाए, पंडत पांधे मुख भवा रिहा। अञ्जील कुरान किसे हथ्थ ना आए, मुल्ला शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर बेऐब परवरदिगार शाह हकीर लथ्थे चीर, हरि ख़ाक रला रिहा। भगत जनां दर सांझा यार, जुगो जुग अख्वा रिहा। आपे बणे दर भिखार, निहकलंक लए अवतार, शब्द डंका इक्क वजा रिहा। राउ रंकां करे ख़बरदार, चार वरनां हरि जणा रिहा। एका सरना एका वार, दूसर कोई ना भेख वटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा राह तका रिहा। आपणा राह आप तकाए, आपणी खेल खिलाईआ। नानक गोबिन्द गया गाए, दिवस रैण सहाईआ। मंगी इक्क शरनाए, लक्ख चुरासी लए प्रनाईआ। खण्ड ब्रह्मण्ड कोई रहिण ना पाए, देवणहारा डण्ड सबाईआ। मनमुख जीवां अन्तिम कंड वढाए, गल पाए धर्म राए दी फाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ऐड़ा अक्खर अल्ला नूर, हरि हज़ूर जोती कोहतूर, नैणां देवी आप जगाईआ। जोती नूर हरि निरंतरा, एका जोत अकालीआ। कलिजुग लाए अन्तिम घर घर बसन्तरा, धर्म राए वेखे लग्गी दिवालीआ। ना कोई कन्त नार हंढाए, ना कोई सुहाग सुहागण वखाए, ना कोई पढ़े मन्त्र मन्त्रा, ना कोई दिसे दर सवालीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द धार वहंतरा। शब्द धार हरि निरँकार, आपणी आप चलाईआ। सो पुरख निरँजण पावे सार, हाहा नाल रलाईआ। हउमे हँगता देवे मार, जीवां जन्तां रिहा समझाईआ। साची संगता कर त्यार, सम्मत चौदां वेख वखाईआ। पहली चेत्र दिवस विचार, आप आपणे आसण बैठा हरि रघुराईआ। सोलां कर तन शृंगार, आप आपणा मुख भवाईआ। लोआं पुरीआं वसया बाहर, गुरमुखां हिरदे विच समाईआ। आपे बख्शे चरन प्यार, अमृत धारा मुख चुआईआ। नेत्र नैण दए उग्घाड़, नैण कज्जल साचा नाउँ पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग मेल मिलाए जूठे झूठे अन्तिम ख़ुशी मनाईआ। कलिजुग तेरा साचा सज्जण, एका मीत मुराराया। तूं बणना साचा हाजी हज्जन, वेखण इक्क द्वाराया। लक्ख चुरासी दर दर घर घर छड्ड छड्ड भज्जण, सर सरोवर मच्छ कच्छ वरोले वांग मधाणया। मुख छुपायण रवि ससि, तारा मण्डल दए दुहाईआ। ब्रह्मा वेखे नस्स नस्स, अट्ठे पहर नैण खुल्हाईआ। विष्नूं राह दस्स दस्स, आपणी सेव कमाईआ। शिव शंकर तलीआं हरि झस्स झस्स, जटा जूट धूढ़ रमाईआ। सुरपति राजा इन्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्तिम मेट मिटाईआ। अन्तिम मिटे कलि पसार, कूड़ी रैण अन्धेरया। चारों कुन्ट धूआँधार, ना कोई दिसे सञ्झ सवेरया। जुग जुग गुर पीर लए मात अवतार, आप आपणी वेरया। पंज तत्त छड्डणा पैणा ना कोई मीत मुरार, गए मार उडारया। साची सिख मति रहि जाए संसार, गुर बणे लेख लिखारया। अन्तिम वर बीजे बीज साचे वत, आप सिंचे तन क्यारया। गुरमुख विरले हिरदे

जाए रच, मनमुख भुल्ले नौ द्वारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक प्रगट होवे वड संसारया। वड संसारी हरि निरँकारी, जुगो जुग अख्वाया। रामा कृष्ना रावण कंसा बण हँकारी, आपणी बणत बणाया। जोत जगाए नानक निरँकारी, निरगुण सेवा लाया। शब्द खण्डा तेज कटारी, गोबिन्द हथ्थ फड़ाया। दोए जोड़ करे निमस्कारी, गुर गोबिन्दे सीस झुकाया। मंगे मंग बण भिखारी, आपणा पल्लू अग्गे डाहया। पारब्रह्म प्रभ किरपा धारी, सीस आपणा हथ्थ रखाया। मातलोक तेरी पावे सारी, साचा धर्म चलाया। चार वरनां करे ख़बरदारी, ऊँचां नीचां एका रंग रंगाया। आपे देवणहारा पहरेदारी, पुरी अनन्द धाम सुहाया। पुरी अनन्द पंचम अक्खर करे विचारी, ऐड़े अक्खर अक्ख उग्घाड़ी, नन्ना निरगुण खेल इक्क अपारी, दद्दा दुष्ट मुकाया। पप्पा पुरख हरि सुल्ताना, राम रहीम रहिमाना, मगर बैठा आसण लाया। धर्म झुलाए इक्क निशाना, आपणी हथ्थीं रिहा रंगाया। पूत सपूता हथ्थीं बन्हे गाना, गुरमुख तन्द बंन्हाया। मनमुख भुल्ले जीव नादाना, गुर पूरा दिस ना आया। मदिरा मास करन पाना, हरि मन्दिर अन्दर चोरां यारां डेरा लाया। अट्ठे पहर सुणन तराना, आत्म धुन ना कोए वजाया। ना कोई गाए राग रागनी बाणी बाना, शब्द सुरत ना कोई मनाया। जोत प्रकाशी ना होए कोटन भाना, जूठा झूठा दीप इक्क जगाया। लाड़ी मौत मंगे वर दर भगवाना, धर्म राए नाल रलाया। चित्रगुप्त बाल नादाना, रो रो रिहा कुरलाया। धरतमात नेत्र नीर वहाना, दर बैठी मुख छुपाया। ब्रह्मा करे चारे वेद कलयाना, प्रभ साचे भेव ना राया। शब्द त्रिसूल इक्क उठाना, सिर धूढ़ी ख़ाक रमाया। सुरपति राजा इन्द मंगे वर दिवाना, प्रभ साची सेवा लाया। करोड़ तेतीस सिर झुकाना, अमृत जाम प्याया। लोआं पुरीआं आप उपजाए हरि भगवाना, वेखणहार आप अख्वाया। नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां झुल्ले झूठ दुकानां, सच वस्त ना कोए रखाया। साध सन्त भरमे भुले माया रुल्ले वड्ड विद्वाना, ज्ञानी ध्यानी भेव ना पाया। आपणा आप अग्गे धर पंज शैतानां, दर बैठे सीस झुकाया। मिल्या मेल ना हरि सुल्तानां, दर बैठा आसण लाया। गोबिन्द गुर वड बली बलवाना, गुरमुखां विछड़ ना जाया। कलिजुग तेरा मूल पछाना, आप आपणा भेख वटाया। निहकलंकी पहरया बाना, रूप अनूपा आप हो आया। पकड़ उठाए राज राजानां, शाह सुल्तानां रिहा हिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा अन्तिम रिहा कराया। कलिजुग तेरा अन्त मैदाना, नौ खण्ड पृथ्वी करांयदा। धरतमात तेरा इक्क मैदाना, हरि साचा आप बणांयदा। लेखा लिखे जग महाना, गोबिन्द सेव कमांयदा। खाणी बाणी होई हैराना, दिस किसे ना आंयदा। वेद पुराणां पढ़ पढ़ थक्के रसना बहि बहि गाना, पारब्रह्म ना कोई मिलांयदा। अञ्जील कुरान कुरान अञ्जील इक्क मकाना, माया ममता मोह चुकांयदा।

धर्म ना झुल्ले कोई निशाना, सच रंग ना कोई चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लिख्या लेख मिटांयदा। कलिजुग तेरा लेख चुकावणा, जुग जुग साची रीता। साचा शब्द साचा मार्ग लावणा, एका शब्द सुणाए सोहँ, ग्यारां ध्याए माण गीता। सो मिटाए एका दोआँ, हरिजन करे पतित पुनीता। साचा जाप सोहँ सोहँ, मन तन करे सीतल सीता। हरिजन हरि दर ना जाणे दोआँ, रस रसना गाया बैठ अतीता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे नाम वर, एका बख्शे चरन प्रीता। चरन प्रीती साचा नात, आपणा आप बंधाईआ। साचा मेला पुरख बिधात, विछड़ कदे ना जाईआ। कलिजुग रैण अन्धेरी रात, बैठी पड़दा पाईआ। ना कोई पित ना कोई मात, भैण भाई साक सज्जण सैण अन्त रहिण ना पाईआ। मनमुख जीव भुल्ले माया वहिण, डूँघी धार वहाईआ। जन भगतां चुकाए लहिण देण, लहिणा देणा रिहा चुकाईआ। रसना किसे ना सके कहिण, हरि हथ्थ रक्खी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका डंका रिहा वजाईआ। एका डंका हरि निरँकारा, आपणा आप वजाया। नौ खण्ड पृथ्वी करे ख़बरदारा, सम्मत चौदां रिहा जगाया। दीपां लोआं दए हुलारा, ब्रह्मण्डां रिहा डुलाया। जेरज अंडां उत्भज सेत्ज वेख वखाया। आपे होए नारी नारा, कन्त भतारी आप हो आया। कलिजुग भुल्ले भरम गंवारा, भरम गढ़ ना कोई तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे मन्दिर आपे वड़, बैठा आसण लाया। साचा मन्दिर इक्क इकेला, हरि एका एक सुहांयदा। जोती शब्दी साचा मेला, साची बणत बणांयदा। जुग जुग होए भगत सुहेला, आदि जुगादी आप हो आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा वेखे मेला, अन्तिम मेल मिलांयदा। कलिजुग तेरा अन्तिम मेला, सम्मत सोलां रिहा वखाईआ। ना कोई दिसे गुर चेला, चवर सीस शब्द ना कोई झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर वेखे सहिज सुभाईआ। मेहरवान समरथ, आपणी कल वरताईआ। जुग जुग चलाए साचा रथ, रथ रथवाही आप अख्वाईआ। लक्ख चुरासी पाए नत्थ, डोर आपे रिहा उठाईआ। महिंमा शब्द चलाए अकथना अकथ, आपणी धार बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग चौथे पार कराईआ। चौथा जुग चार दिवारी, अन्तिम ढहि ढहि ढेरया। वरनां बरनां सभ होए ख्वारी, ना कोई तारे कर कर मेहरया। लहिणा देणा चुक्के चार यारी, पंचम देवे पहरया। नाम उडे सच उडारी, नौ खण्ड पृथ्वी पावे घेरया। करे कराए ख़बरदारी, सिँघ शेर शेर दलेरया। एका खण्डा रिहा उभारी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे हक्क निबेड़या। कलिजुग करे हक्क निबेड़ा, आपे वेख विखांयदा। आपणी हथ्थीं देवे गेड़ा, औलीए पीर शेख़ मिटांयदा।

कोई ना दिसे नगर खेड़ा, काया कुले अग्नी आप लगांयदा। धरतमात तेरा खुल्ला वेहड़ा, हरि साचा आप करांयदा। त्रै देशां रिहा भेड़ भेड़ा, आपणी बणत बणांयदा। राज राजानां शाह सुल्तानां रिहा जड़ उखेड़ा, आपे मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मदीना मक्का वेख वखांयदा। सम्मत चौदां गुरमुखां धीर धराए। चौदां तबकां एका सबका, हरि साचा रिहा पढ़ाए। लेखा चुक्के नबी रसूल का, पीर फ़कीरां रिहा सुणाए। अन्तिम लहिणा देणा चुका सभी का, मूल रहिण ना पाए। मेले मेल दो दो आब अबी का, ना कोई वेख वखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लहिणा देणा रिहा मुकाए। लहिणा देणा संग मुहम्मद चार यारी, रिहा चुकाईआ। अल्ला राणी कर प्यारी, एका चुन्नी सीस टिकाईआ। उन्नी उनीसे करे ख़बरदारी, ईसा मूसा मुख छुपाईआ। अञ्जील कुरानां आई हारी, सच हदीस ना कोए पढ़ाईआ। बीस बीसे जोत निरँकारी, वेखे खेल सभ सभ थाँईंआ। दिल्ली तख्त वड दरबारी, हरि बैठे आसण लाईआ। पंचम सिक्खां कर शृंगारी, बस्त्र बैठा तन पहनाईआ। सोहँ बन्ने साची धारी, सति पुरख निरँजण सेवादार मात बणाईआ। चार वरन कराए इक्क जैकारी, आपणा आप रिहा सिखाईआ। कलिजुग मिटे कूड़ पसारी, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाईआ। सतिजुग साचा होए उज्यारी, गुरमुखां रिहा जगाईआ। गुरमुखां कराए इक्क प्यारी, दे मति रिहा समझाईआ। चरन कँवल होए पार उतारी, दिवस रैण सेव कमाईआ। अमृत आत्म पीणा ठण्ढी ठारी, सर सरोवर कोई दिस ना आईआ। आप उठाए दया कमाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, डूँघी कन्दर रिहा उठाईआ। बहत्तर नाड़ी वजाए ताड़ी, अनहद साचा राग अलाईआ। इक्क वखाए धर्म अखाड़ी, दसम द्वारी कुण्डा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे तेरा दर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका एक रिहा वखाईआ। गुरमुख तेरा साचा दर, लोकमात उपाया। मंगण आया बण भिखारा, वेसी वेस करेंदा आया। गोबिन्द डल्ला कर प्यारा, बस्त्र पीला आप कराया। वसदा रहे इक्क महल्ला, प्रभ साचे चरन छुहाया। चारों कुन्ट जल थला, सम्मत अठारां रिहा वहाया। पाए सार उप्पर थला, थल मीना उप्पर तराया। सोहँ फड़या साचा भल्ला, सम्मत सतारां रिहा वखाया। जोती पवणी आपे रल्ला, अवण गवण समाया। कलिजुग तेरा अन्तिम हवन, प्रभ जूठ झूठ समग्री तेरी झोली पाया। इन्द्र मेघ ना बरसे सवण, बैठा मुख छुपाया। मनमुख जीव हँकारी रावण, बैठे गढ़ बणाया। राम रामा गुर गोबिन्द दुष्ट दमन, जोती जामा पा के आया। आपे कृष्ना शामा शमन, मोहण रूप वटाया। आपे नामा नाम नमन, साचा नाम रिहा उपाया। आपे चमके तेज दामनी दमन, एका दमक विखाया। हरि बिन सार ना पाए कवन, गुरमुख मात रहे कुरलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण

नर, दर घर साचे वेखण आया। साचा घर गुरमुख महल्ला, हरि एका जोत जगाईआ। गुरमुख मेल गोबिन्द डल्ला, इक्की जेठ रुत्त सुहाईआ। मेट मिटाए वड वड सेठ, माया ख़ाक रुलाईआ। गुरमुख रक्खे साया हेठ, हरि शब्द रिहा तणाईआ। वेखे खेल पंचम जेठ, सम्मत चौदां रिहा जणाईआ। कलिजुग जीव भन्ने कौड़े रेठ, एका खण्डा रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरा साचा घर, घर साचे बैठा आसण लाईआ। गुरमुख तेरा सच द्वार, हरि मंगे मंग भिखारया। चरन प्रीती इक्क प्यार, साचा खेल विच संसारया। आप आपणी बन्ने धार, हरिजन सोए मात जगा रिहा। सोहँ अक्खर अपर अपार, एका दोअँ दोअँ एकँ रूप वटा ल्या। सो पुरख निरँजण सो, हँ एका शब्द उचारया। हरि बिन अवर ना जाणो कोआ, पढ़ पढ़ थक्के जीव गंवारया। ना जन्मे ना कदे मोआ, आदि अन्त एका एकँकारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरा वेख घर, घर मिल्या इक्क प्यारया। सतिजुग तेरा सच सहारा, प्रभ आपणा आपे आप बणांयदा। त्रैगुण माया मठ न्यारा, निरगुण आप उपांयदा। जीव ना पायण सारा, भेव अभेद भेव छुपांयदा। किसे हथ्थ ना आए जगत कतेबा, जन भगतां भगती मार्ग एका लांयदा। आपे जाणे आपणा आप वसेबा, लिख्या लेख ना कोई मिटांयदा। रसना गा गा थक्की जिह्वा, सति श्री ना कोई जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां वेखे दर, दर द्वारी आप अख्वांयदा। दर द्वारी जोत निरँजण, एका आसण लाया। जन भगतां बख्शे धूढ़ी नेत्र अंजन, दूई द्वैती पड़दा लाहया। मिले मेल साचे सज्जण, हउमे दुखड़े रिहा गंवाया। अन्तिम कलिजुग आया पड़दे कज्जण, कीता कौल निभाया। जूठे झूठे ताल दर दर वज्जण, साचा ताल ना कोई वजाया। जो घड़या सो अन्तिम भज्जण, भन्नणहार आप अख्वाया। गुरमुख विरले अमृत आत्म पी पी रज्जण, प्रभ साचा रिहा प्याया। आपे वेखे हाज़ी हज्ज मक्का काअबा कब्बन, चार मुनारी डेरा लाया। आपे वेखे पुन्न सवाबन, हज़रत शाह आप हो आया। आपे दुलदुल देवे चरन रकाबन, अमाम मैहन्दी रिहा राह तकाया। मुख रखाए इक्क नकाबन, काला सूसा तन छुहाया। प्रगट होए हक्क ज़नाबन, ईसा मूसा खेल रचाया। अन्तिम लहिणा देण चुकाए दो दो आबन, आबी ख़ाक मिलाया। धारा अगम्मी अग़ैब गाबन, हरि आपणी रिहा चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरे बैठ घर, लक्ख चुरासी लेखा रिहा लिखाया। लक्ख चुरासी तेरा लेखा, हरि आपणे हथ्थ रखाया। लक्ख चुरासी लोकमात कढ्ढे भरम भुलेखा, साधां सन्तां रिहा जणाया। राज राजानां दर द्वारे जा जा वेखा, बाहों पकड़ उठाया। इन्द्र प्रसाद पया भरम भुलेखा, सम्मत तेरां रुत्त सुहाया। सम्मत चौदां आपे जाणे धारी केसा, रूप अनूपा आप हो आया। धरया भेस दस दस्मेसा, लहिन्दी दिशा फेरा पाया। आपे वेखे

शिव गणेशा, संख नाद धुन वजाया। आपे होए ब्रह्मा विष्न महेषा, विष्नूं रूप आप वटाया। आपे जाणे बाशक सेजा, सांगो पांग हंढाया। आप झुलाए सीस आपणा सीसा, एका छत्र झुलाया। प्रगट होए जगत जगदीसा, निहकलंका नाउँ रखाया। जै जै कराए बीस बीसा, हरि आपणी रिहा कराया। सृष्ट सबाई इक्क हदीसा, सम्मत इक्की रिहा जणाया। लक्ख चुरासी जूठा झूठा पीसण पीसा, कलिजुग चक्की आप चलाया। माया राणी खाली खीसा, प्रभ साचा रिहा कराया। गुरमुख तेरी कोई ना करे रीसा, प्रभ साचे गोद उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरा वेख घर, कवण दुआरा धाम सुहाया। कवण दुआरा धाम सुहञ्जणा, हरि बैठा आसण लाईआ। जगे जोत इक्क निरँजणा, चारों कुन्ट करे रुशनाईआ। चार वरन कराए एका मजना, इक्क द्वार खुल्हाईआ। सोहँ ताल नगारा वज्जणा, हरि जोत रिहा टिकाईआ। गढ़ हँकारी सभ दा भज्जणा, प्रभ साचा रिहा जगाईआ। चारों कुन्ट उठ उठ भज्जणा, अट्ठां तत्तां साथ छुडाईआ। गुरदुआरा मन्दिर मस्जिद अन्दर किसे ना सजणा, सारे बैठण मुख छुपाईआ। गुर पूरे पारब्रह्म अबिनाशी जोती जामा पा पा गज्जणा, साचा डंक इक्क वजाईआ। मदिरा मास नौ खण्ड पृथ्वी तज्जणा, ना कोई सके हथ्थ उठाईआ। कलिजुग तेरा भाण्डा अन्तिम भज्जणा, प्रभ तेरे सिर भन्नाईआ। लाड़ी मौत लहू पी पी रज्जणा, तन बैठी श्रृंगार कराईआ। हथ्थीं मैहन्दी लाल रंग चूड़ा सोहणा सजणा, जूठ झूठ पई फाहीआ। मनमुख जीव तेरा पड़दा किसे ना कज्जणा, गोबिन्द बैठा मुख छुपाईआ। गुरमुख विरले मेल मिलाए साचे सज्जणा, आपे दर द्वारे फेरा पाईआ। मदिरा मास जिस जन तज्जणा, सम्मत सोलां लए बचाईआ। पार ब्यासों सभ ने भज्जणा, बचया कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी देवे वर, अन्तिम अन्त कन्त सन्त भगवन्त मेल मिलाईआ। सन्त भगवन्त साचा मेला, एका दर द्वारया। आपे गोबिन्द गुर आपे चेला, आप आपणे विच समा रिहा। आप आपणा चाढ़े तेला, आप आपणा सगन मना रिहा। गुरमुखां घर पावण आया तेला, कलिजुग तेरा नाद वजा रिहा। साची सखीआं सज्जण सुहेला, एका धाम बहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लहिणा देणा मूल चुका रिहा। लहिणा देणा मूल चुकाए, आप आपणा कर्म कमाए, कलिजुग तेरी अन्तिम वारीआ। साची सिक्खी बणत बणाए, तिक्खी धार इक्क रखाए, रसना जिह्वा बन्द करा रिहा। धारी केसा आप समाए, मूंड मुंडाए गले लगाए, चार वरन इक्क सरनाए, ऊँचां नीचां भेव चुका रिहा। आपे गले लगा रिहा। राज राजान तख्त ताज तजाए, शाह सुल्तानां कोई रहिण ना पाए, लाड़ी मौत वेख वखाए, सम्मत चौदां नींह रखा रिहा। सम्मत पन्दरां तेरी हद्द, हरि साचा आप रखाईआ। वज्जे नाद इक्क शब्द, हरि साचा रिहा सुणाईआ। धर्म राए आपणे मित्रां लए

सद्द, बैठा थाउँ थाँईंआ। भाग लगाए चित्रगुप्त दी यद, मनमुखां कलिजुग रिहा समझाईआ। फड़ फड़ प्याले प्याए मध, रसना जिह्वा करी हलकाईआ। जूठा झूठा भार ल्या लद्द, माया ममता हँगता पंड उठाईआ। आपणी हथ्थीं बन्ने गंढु, सिर आपणे रिहा टिकाईआ। पुरख अबिनाशी फड़े तेज चण्ड प्रचण्ड, शब्द खण्डा नाउँ रखाईआ। सम्मत चौदां पाए वंड, गुरमुखां दर द्वारे जाईआ। मनमुखां औध गई हंढ, अन्त बुड़ेपा आईआ। पुरख अबिनाशी सुत्ता दे कर कंड, ना कोए कन्त मनाईआ। आपणी सीआं रहे वंड, आपणे कर्मां लेख लिखाईआ। नार दुहागण दिसे रंड, नेत्र वेख सृष्ट सबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख तेरा दर सुहाईआ। गुरमुख दर दरबाना, हरि आपणी सेव कमांयदा। लै के आए धुर फ़रमाणा, जन भगतां आप जगांयदा। मक्का मदीना होए वैराना, नबी रसूलां मेट मिटांयदा। मारे तीर इक्क निशाना, पंचम जेठ रुत्त सुहांयदा। आपे होया जाण पछाणा, दो जहानां वेख वखांयदा। लोआं पुरीआं ना कोई टिकाना, नौ खण्ड ना धीर धरांयदा। सत्त रंग रंगाए इक्क निशाना, सत्तां दीपां आप विखांयदा। दर द्वार करे परवाना, जो जन सीस झुकांयदा। आत्म बन्ने साचा गाना, साची तन्दी आप बंधांयदा। इक्क सुणाए नाम तराना, आत्मक धुन उपजांयदा। पंचम राग इक्क सुणाना, पंचम सेवा लांयदा। दस्म द्वारी खोलू मकाना, आत्म सेज वखांयदा। उप्पर बैठ श्री भगवाना, आपणी खुशी मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति मार्ग आप लगांयदा। जगत द्वार भगत जन, मिले मात वड्याईआ। नाम रखाए साचा तन, जीव जन्त करे कुड़माईआ। आप उपजाए राग एका कन्न, वज्जे सच्ची वधाईआ। घर वसाए ना छप्परी ना छन्न, महल्ल अटल रघुराईआ। कलिजुग जोती रही बल, दिवस रैण होए रुशनाईआ। आपे बले घड़ी घड़ी पल पल, दिवस रैण एका रंग समाईआ। आप समाया जल थल, आकाश पातालां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जोत ज्वाला रिहा खिचाईआ। जोत ज्वाला छड्ड टिकाना, उच्चे उच्च पहाड़या। आप बिठाए विच बिबाणा, इक्क वखाए सच द्वारया। आवण जावण चुक्कया पीणा खाणा, अग्नी अग्ग ना कोए वखा रिहा। आप आपणे विच समाना, आप आपणा आप वटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख तेरे घर साचा खेल खिला रिहा। साचा खेल खेलणहारा, एका आप अख्वांयदा। त्रैगुण माया तेरा पार किनारा, प्रभ साचा आप करांयदा। इक्की जेठ दिवस दिहाड़ा, आप आपणा आप मनांयदा। वेख वखाए धरत मात तेरा अखाड़ा, चारों कुन्ट डौरू वांयदा। जन भगतां जोत जगाए बहत्तर नाड़ा, आप आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटांयदा। जोती जामा हरि बलकारी,

आपणा आपे पाया। गुर गोबिन्दा वड शिकारी, चार कुन्टां रिहा दुड़ाया। आपे होया भगत अधारी, आस प्यास बुझाया। आपे करे तन शृंगारी, तन बस्त्र इक्क सुहाया। करे कराए पहरेदारी, दिवस रैण सेव कमाया। अन्तिम टुट्टणी जूठी झूठी यारी, ना कोई तोड़ निभाया। साचा नाउँ अपर अपारी, गुरमुखां हरि फड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे अन्दर वड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, उच्च महल्ले आप चढ़, दरस द्वारी दरस दिखाया। भिन्नड़ी रैण सुहञ्जणी, उठ रही जगाईआ। मंगे दरस जोत निरँजणी, अग्गे झोली डाहीआ। चरन धूढ़ी साचा मजनी, इक्क इशनान कराईआ। पी अमृत संगत बहि बहि रज्जणी, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। आप आपणे रक्खे बचनी, पति पतिवन्ते पई शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाए थाउँ थाँईंआ। भिन्नड़ी रैण नेत्र खोल्ह, नेत्र नीर वहांयदा। अक्खर वक्खर एका बोल, मुखों आप सुणांयदा। कलिजुग काया रही डोल, ना कोई किसे बचांयदा। वजावणहारा आपे ढोल, प्रभ साचा आप खड़कांयदा। भगत सुहेला सद वसया कोल, साचा दरस दिखांयदा। काया मन्दिर रिहा मवल, मौला रूप वटांयदा। उलटा करे नाभ कँवल, अमृत मेघ चुआंयदा। देवे वड्याई उप्पर धवल, धाम उप्पर धवल सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन तेरा नाम आपे आप वडिआंयदा। नाम वड्याई जगत जगदीशर, एका एक रखाईआ। रसना गा गा थक्के तपी तपीशर, दर दर अलख जगाईआ। भेव ना पायण मुनी मुनीशर, मोन सोन कराईआ। आपे वेखे ईश्र ईश्र, ईश्वर रूप हो आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। निरगुण रूप निहकलंका, एका एक रखाया। सरगुण वजाए साचा डंका, गोबिन्द नाल रलाया। इक्क सुहाए द्वार बंका, राउ रंकां भेव ना राया। आपे वसया पुरी घनका, साचा धाम सुहाया। बणत बणाए खेले खेल जनणी जन जनका, पिता पूत रिहा उपाया। लेखा चुक्के पवण स्वास तन का, प्रभ साचा रिहा मुकाया। कलिजुग खेले खेल बार अनका, लक्ख चुरासी रिहा मिटाया। राज मन्त्रीआं मेटे शंका, साचा लेखा रिहा लिखाया। देश पर्देशा एका अंका, नाम वखाया। जोत सरूपी लाए तनका, सन्त सुहेले लए जगाया। आप सुहाए आपणा बंका, बंक द्वारी आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भारत खण्ड तेरा वसया घर, अन्तिम फेरा पाया। अन्तिम फेरा हरि जी पाए, वेद व्यास लिखा रिहा। पुराण अठारां गया गाए, अन्तिम रोवे ज़ारो ज़ारया। गीता ज्ञान रसन सुणाए, अर्जन दए सहारया। ईसा मूसा रिहा कुरलाए, अञ्जील कुरानां ल्या उचारया। नानक सतिनाम गया उपाए, भरमे भुल्ले जीव गंवारया। हरिजन लेखा गया लिखाए, चार वरन इक्क द्वारया। गोबिन्द भेख गया वटाए, ऊँचां नीचां भेव निवारया। इक्क इकेला मनमुख

जीव गए भुलाए, तन वसया इक्क हंकारया। कौल इकरार ना कोई निभाए, विच नंदेड़ अंगीठा साड़या। आपणी हथ्थीं ना कोई फुलाए, समरथी होए पुकारया। सृष्ट सबाई जाए मथी, गुर पूरा ना होए सहारया। अन्तिम लहिणा देण चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थीं, सम्बल वसया डेरा ला रिहा। नौ खण्ड पृथ्वी नौ दरवाज़े प्रभ आप चलाए तेरा झूठा रथी, उत्ते आप बहा रिहा। बस्त्र चीर गए लथ्थी, खाली तन वखा रिहा। त्रैगुण माया कर इक्ठी, प्रभ आपणी भेंट चढ़ा रिहा। जोती अग्नी डाहे मट्ठी, आपणी सेवा ला रिहा। दर द्वारे चरन कँवल ढठ्ठी, रोवे ज़ारो ज़ारया। होई वैरागण फिरे अट्ठ सट्ठी, ना कोई धीर धरा रिहा। गुर दर मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मट्ठ मट्ठी, पतिवन्त कन्त ना कोई मिला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जन कलिजुग अन्तिम जगा रिहा। सन्त जनां हरि आप जगाए, एका दए हुलारा। विछड़यां कन्त लए मिलाए, होए सुहागण नारा। आप आपणी बणत बणाए, गुरमुख मीत मुरारा। काया चोली रंग बसन्त कराए, जोत जगाए बहत्तर नाड़ा। जीव जन्त कोई भेव ना पाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख वेखे इक्क दर, आप सुहाए बंक दुआरा। बंक दुआरा शब्द सवाली, आए दर द्वारया। दोवें हथ्थां रक्खे खाली, एका नाम भण्डारया। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाली, लोकमात लए अवतारया। शब्द कराए नाम दलाली,
४८७ साचा वणज वपारया। इक्क सिखाए हक्क हलाली, जल्वा नूर अपारया। दो जहानां जोत अकाली, आप अख्वा रिहा। ४८७
०६ लक्ख चुरासी फल वेखे लग्गे डाल्ही, कलिजुग माली नाल रला रिहा। गुरमुखां घर वज्जे ताली, मनमुख नेत्र नीर वहा रिहा। ०६
सन्त सुहेले आपे भाली, जुग जुग विछड़े मेल मिला रिहा। इक्की जेठ उठाए पन्थ ख़ालसा अकाली, प्रभ साचा लेख पुजा रिहा। अन्तिम होए हाल बेहाली, साचा खण्डा कोई ना हथ्थ उठा रिहा। काया चोली सभ दी खाली, नाम धन ना कोई उठा ल्या। पढ़ पढ़ थक्के साध सन्त बाणी, आप आपणा मुल्ल पवा ल्या। लैंदे भेंटा जीव नादानी, सेवक सेवा ना कोई कमा रिहा। गुर गोबिन्दे किया सरबंस कुरबानी, गुरसिख मन ना कोए भेंट चढ़ा रिहा। प्रगट जोत इक्क अकाली, निहकलंका नाउँ रखा ल्या। गुर गोबिन्दा आपे भाली, आप आपणी गोद उठा ल्या। जोत जगाए दीपक थाली, साचा गगन आप सुहा ल्या। करे कराए सदा प्रितपाली, आदि जुगादी बणत बणा रिहा। इक्क वखाए सच्ची धर्मसाली, धारा नाम चला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुखां मंगण आए दर, अग्गे आपणा पल्लू डाह ल्या। गुर गोबिन्द पिछला लहिणा, अगला मूल चुकांयदा। डल्ले पाए तन साचा गहणा, जिउँ अंगद अंग लगांयदा। सृष्ट सबाई रोवे पा पा वैणा, गुरमुख साचा खुशी मनांयदा। आपे बणया साक सज्जण सैणा, गुरमुखां

साक सज्जण मिलांयदा। एका इक्की पाई साची सिक्खी, तेरा पिछला मूल चुकांयदा। जूठे झूठे वहिण किसे ना वहिणा, माया लूठे अन्त रुढ़ांयदा। धर्म राए दर टंगे पुट्ठे, कलिजुग अन्त हिसाब मुकांयदा। लुकया रहिण ना देवे किसे गुट्ठे, जोत सरूपी फेरा पांयदा। कलिजुग अन्तिम भगत सुहेला आपे तुट्ठे, आत्म दरसी दरस दिखांयदा। सतिजुग द्वापर त्रेता जो गए रुट्ठे, कलिजुग अन्त मनांयदा। आप कराए एका मुट्ठे, घर घर जाए लेख चुकांयदा। कौड़े भन्ने जीव कलिजुग रीठे, सोहं खण्डा हथ्थ उठांयदा। नाम धारा चार वरन विखाए इक्क अनडीठे, लिखण पढ़न विच ना आंयदा। आपणा बंस आपे पेखे, गुरमुखां सेव कमांयदा। अमृत फल खवाए मीठे, सोहँ चोग चुगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप अख्वांयदा। नर नरायण हरि निरँकार, एका एक अख्वाया। जन भगतां करे तन शृंगार, सोहँ बस्त्र नाल रलाया। दो जहानां कर प्यार, शब्द शस्त्र तन पहनाया। अमृत धारा अपर अपार, निझर रिहा झिराया। नेत्र नैण इक्क उग्घाड़, अन्ध अन्धेर मिटाया। आप मिटाए पंचम धाड़, पंचम रिहा जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सुहाए तेरा दर, दर दरवेशा आप अख्वाया। दर दरवेशा दर भिखारी, मंगण आया मंगता। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, गुर संगत तेरी झोली पाए आपणी हउमे हँगता। चार वरन बख्शे चरन प्यारी, काया चोली आपे रंगता। गऊ ग़रीबां पावे सारी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आप लगाए आपणे अंगता। आपणे अंगण आप लगाया, गुर पूरे सच सरनाईआ। साचा सगन दर मंगाया, जन भगतां वड वड्याईआ। सोहँ कंगण तन पहनाया, साचा सगन मुख रखाईआ। चिट्टे अस्व तंग कसाया, आप आपणा आसण लाईआ। गुरमुख तेरे दर द्वार अन्दर लँघ वखाया, दिस किसे ना आईआ। शब्द रंगीला पलँघ विछाया, एका सेज सुहाईआ। पंचम नाद मृदंग वजाया, साचा डोरू वाहीआ। चारों कुन्ट अमृत धार वहाया, सीतल सति कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचा अंग लगाया, अंगीकार आप हो जाईआ। पुरख अबिनाशी दया कमा, जन भगतां रिहा जगाईआ। खेवट खेट बण मलाह, बेड़ा बन्ने लाईआ। फड़ फड़ बाहों रिहा चढ़ा, दूर दुराडे वेख वखाईआ। सदा सुहेला देवे ठण्ढी छाँ, साया आपणी हेठ रखाईआ। सखा सुहेला पिता माँ, दर आपणी गोद उठाईआ। गुर संगत वसाए साचा थाँ, एका इक्की रिहा कराईआ। नौ खण्ड पृथ्वी अन्तिम उडणे काँ, घर मन्दिर ना कोई वेख वखाईआ। होए विछोड़ा पुत्तरां माँ, भैणां भईआ संग तुड़ाईआ। कोई ना वेखे आपणा थाँ, चारों कुन्ट पए दुहाईआ। मनमुख दर दर मारन धाह, जूठ झूठ रही कुरलाईआ। गुरमुख पूरे सद बलि बलि जां, मिली मात वड्याईआ। एका गाया साचा नाँ, गोबिन्द रसना जिह्वा गाईआ।

गुर गोबिन्दा कर के गया हां, अन्तिम लए मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पिछला रिहा मूल चुकाईआ। गुर गोबिन्द कर सलाह, अग्गे हरि पुकारया। पारब्रह्म मेरी पकड़ी बांह, दुष्ट दमन रोवे ज़ारो ज़ारया। पारब्रह्म सुहाए साचा थाँ, पिता पूत भेख वटा ल्या। लहिणा देणा चुकाउणा थाउँ थाँ, तिन्नां लोका वेख वखा रिहा। कलिजुग एका एक हँकारी रावण, राम रामा रूप वटा ल्या। नैण मुँधारी आपे दुष्ट दमन, हरि साचा खण्डा चमका रिहा। अन्तिम मेला किनारा जमन, साधां सन्तां आप जगा रिहा। लक्ख चुरासी तेरा इक्क कराए हवन, त्रैगुण माया विच रखा ल्या। सेवा लाए उनन्जा पवण, पुरीआं लोआं आप लहरा ल्या। गुरमुख साचे साची नहाउँणी नहावन, चरन धूढ़ इशनान करा ल्या। मेटे तामन तमन, आलस निन्दरा मूल चुका रिहा। अन्ध अन्धेर ना दिसे शामन, सोहँ साचा चन्द चढ़ा रिहा। आप फड़ाए आपणा दामन, साचा पल्लू इक्क फड़ा ल्या। धुरदरगाही साचा जामन, निहकलंका आप अखवा रिहा। नेड़ ना आए कामनी कामन, पंच विकार मोह चुका रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे दे मति आप समझा रिहा। साची मति एका तत्त, गुर पूरे दर पाईए। बहत्तर नाड़ ना उब्बल रत्त, मन मति बुध समझाईए। रक्खणहारा आपे पत, चरन कँवल ध्यान रखाईए। आपे जाणे मित गति, दो जहानां होए सहाईए। सगल वसूरे जाण लथ्थ, आत्म दरसी दर्शन पाईए। सोहँ देवे साची वथ, सति सन्तोखी झोली अग्गे डाहीए। शब्द चलाए इक्क अकथ, रसना जिह्वा कोई ना गाईए। मिले मेल हरि समरथ, विछड़ कदे ना जाईए। आपे रामा घर दसरथ, आपे कृष्ना रूप वटाईए। आपे लिख्या लेख चुकाए साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, लक्ख चुरासी हिसाब मुकाईए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाए कलिजुग दर, कालख टिक्का मस्तक छाहीए। कलिजुग तेरा अन्तिम अन्त दुआरा, हरि साचा वेख वखांयदा। सतिजुग मंगे बण भिखारा, अग्गे झोली डांयदा। सति सन्तोख बण वरतारा, धीरज यति मति झोली भरांयदा। नाम नामी अपर अपारा, सोहँ जाम प्यांअदा। सो पुरख निरँजण अपर अपारा, अगम्मड़े धाम सुहांयदा। हाहा हरी हरि खेल न्यारा, हरि गोबिन्द मेल मिलांयदा। गोबिन्द मेला इक्क दुआरा, शब्दी चन्द चढ़ांयदा। निर्मल दीपक जोत कर उज्यारा, भरमां कंध ढांयदा। नाम कल्गी तोड़ा इक्क अपारा, जोती जोड़े सीस टिकांयदा। जगत जगदीस खेल अपारा, आप आपणा राग अलांयदा। छत्ती राग ना पायण सारा, सुरसती मात नारद सुत उपजांयदा। पारब्रह्म तेरी अगम्मी धाड़ा, अगम्मड़ी धार वहांयदा। शब्द ना करे पुकार, सुरत ना बन्ने कोई ताल, ना कोई जाणे जणांयदा। आप आपणा पसर पसार, करे कराए सच विहार, लोआं पुरीआं इक्क आकार, खण्डां ब्रह्मण्डां पावे सार, जेरज अंडां वेख वखांयदा। मेट मिटाए भेख पखण्ड, कलिजुग

तेरी अन्तिम वंड, सोहँ फड़या हथ्थ विच डण्डा, राज राजानां वड्ढे कंडां, शब्द खण्डा आपे वांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंडत नैहरू सोया पूत सपूत आप जगांयदा। उठ सोहँ जप, राज मन्त्री प्रधानया। अन्तिम स्यासत जाणी छुट्ट, अन्त ना होए कोई दर दरबानया। खाली दिसे काया बुत, पल्ले कोई ना नाम निधानया। पंज जेठ सुहाउँणी रुत्त, लेख लिखाए दर परवानया। फड़ फड़ बाहों रिहा कुट्ठ, राज मन्त्री नौजवानया। पुरख अबिनाशी गया तुट्ठ, सत्त रंग झुलाए इक्क निशानया। नौ खण्ड पृथ्वी रिहा लुट्ट, तख्त बैठ गुण निधानया। जगत जगदीशा जोग जुगीशरो बैठा रुट्ठ, नेत्र नैण ना दिसे हरि भगवानया। अन्तिम सभ दी जड़् देवे पुट्ट, सोहँ मारे तिक्खा तीर निशानया। दर द्वारे लए लुट्ट, राज राजानां शाह सुल्तानां कोई ना सीस ताज टिकानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल वाली दो जहानया। राज मन्त्री रक्खणा याद, प्रभ साचा आप सुणांयदा। सम्मत सोलां किसे ना सुणे कोई फरयाद, राज भाग सर्ब तजांयदा। नौ द्वारे अग्नी आग, ना कोई मात बुझांयदा। उच्च मन्दिर ना कोई जगे चिराग, दीवा बत्ती ना कोई रखांयदा। माया डस्सणी डस्से किसे ना नाग, कलिजुग खण्डा इक्क वखांयदा। गुरदर मन्दिर मस्जिद बहि बहि कोई ना गाए राग, राग रागनी मेट मिटांयदा। सज्जण मीत इक्क दूजे नूं जाण त्याग, रसना गीत ना कोई सुणांयदा। राम सीता वेखे भाग, राधा कृष्न फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका नैण विखांयदा। एका नैण भगत त्रैलोकी नंदन, हरि आपणा आप खुल्हांयदा। गुरमुखां देवे परमानंदन, परमानंद विच समांयदा। खुशी कराए बन्द बन्दन, बन्दी तोड़ आप हो जांयदा। इक्क सुणाए सुहागी छन्दन, सोहँ नाद वजांयदा। आप पहनाए आपणे तन्दन, दूसर कोई हथ्थ ना लांयदा। गुरमुख काया आप बणाए साचा चन्दन, साची मइक्क महिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निज घर आत्म डेरा लांयदा। आसण लाया हरि निरँकार, जोती जोत जगाईआ। शब्द सरूपी कर प्यार, आपणा भेव खुल्हाईआ। आवण जावण करया पार, जिस जन आपणी दया कमाईआ। मेट मिटाए मुहम्मदी यार, सखा सुहेला ना कोई रखाईआ। औलीए पीर शेख़ मुसायक आई हार, साचा नायक ना कोई हंढाईआ। ख़लक ख़ुदाए रिहा मिटाईआ। अन्तिम मेटे पंच शैतानां, अल्ला हू ना नाअरा लाईआ। महिबान बीदो बी खैरीया अल्हा, महिबान ना कोई अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, अमाम मैहन्दी रूप वटाईआ। अमाम मैहन्दी रूप वटाए, शब्दी शब्द कलमी कलमा अल्हाईआ। हथ्थीं मैहन्दी दिशा लहिंदी वेख वखाए, अल्ला राणी रही कुरलाईआ। अञ्जील कुरान इक्ठी हो हो बहिंदी, दिवस रैण इक्क दूजे नूं

कहिंदी, नेत्र नैण रही शरमाईआ। आप वहाए धार वहिंदी, संग मुहम्मद चार यार, इक्क कराए जगत प्यार, वंञ मुहाणा हथ्थ फड़ाईआ। कलिजुग काला करे प्यार, मंगी मंग सच दरबार, मिल्या मेल मुहम्मद यार, चौदां तबकां संग निभाईआ। अन्तिम वेला होए ख्वार, पुरख अबिनाशी मारे मार, दर दर करे कराए भिखार, कलिजुग रोवे वाहो दाहीआ। गुरमुख साचे कर त्यार, सेवक सेवा करे अपार, निहकलंका लए अवतार, एका इक्की रिहा पाईआ। साची सिक्खी गुर विचार, अमृत धारा ठण्ढी ठार, नाम किरपाना, मार ध्याना तन गात्रे आप लटकाईआ। एका बैठा मीत मुरार, गुरमुखां मेल मिलाईआ। सीस केस हरि जगदीस, लेखे रिहा लाईआ। कूड़ा दूर कराए पंचम धाड़, सखी सखावत हथ्थ उठाईआ। कक्का कंघा प्रभ नाम रंगा, एका रंग रंगाईआ। उप्पर सीस साचे टंगा, दस्म द्वारी पार कराईआ। अन्दर विछाया इक्क पलँघा, उप्पर पड़दा पाईआ। चारों कुन्ट वजाए मृदंगा, साची सेवा लाईआ। अमृत धारा साची गंगा, चारों कुन्ट रखाईआ। गुरमुखां लगाए आपणे अंगा, साची सेज हंढाईआ। आपे कट्टणहारा भुक्ख नंगा, जुग जुग दया कमाईआ। दाता सूरा सरबंगा, जोद्धा सूर अख्वाईआ। अन्तिम कलिजुग दर दुआरा लँघा, सतिजुग साचा लए अंगड़ाईआ। साचे घोड़े कसया तंगा, चरन रकाबे रिहा छुहाईआ। धरत मात वर साचा मंगा, आप आपणी झोली रिहा भराईआ। लाड़ी मौत पाए वंगां, दोवें हथ्थ रही छणकाईआ।
४६१ धर्म राए अद्ध विचकार टंगा, प्रभ साचे सेवा लाईआ। चित्रगुप्त हिसाब एका मंगा, लक्ख चुरासी लहिणा देणा मूल चुकाईआ। ४६१
०६ पारब्रह्म एका शब्द सोहँ करे नंगा, अनहद पड़दा लाहीआ। दो जहानी वज्जे मृदंगा, घर चौथे रिहा सुणाईआ। सो पुरख ०६
निरँजण नेत्र देवे अंजन, दर्द दुःख भय भंजन, सन्त सुहेले साचा सज्जण, एका एक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर सच वेख वखाईआ। साचा सज्जण मीत मुरार, एका एक अख्वांयदा। तन वजाए नाम मृदंगा, चोट आपणे हथ्थ रखांयदा। सुणे सुणाए सुणनेहार, अचरज खेल वरतांयदा। गावत पावत ना कोई सार, देवत सुर मुन रिख वेख वखांयदा। गुरमुखां लहिणा देणा चुकाए, गुण अवगुण झोली पांयदा। दरस दिखाए नैणी नैण, एका मस्तक चन्द चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, अमृत आत्म जाम प्यांअदा। अमृत आत्म ठांढा सीता, भरया सच पयालया। गुरमुखां दर दर नाम निधान पीता, देवणहार दीन दयालया। आदि जुगादि सदा जग जीता, मिल्या जोत अकालया। आपे होए पतित पुनीता, पतित पावणहार आप अख्वा ल्या। आपे होए हस्त कीटा, ऊँचां नीचां विच समा ल्या। आपे होया कौड़ा रीठा, आपे मिट्ठे फल खवा रिहा। आपे शब्द जणाए इक्क अनडीठा, ना कोई वेख वखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मार्ग इक्क वखा ल्या। साचा मार्ग सच सलाह,

हरि आपणी इक्क कराईआ। चार वरनां एका राह, लोकमात रिहा जणाईआ। इक्क जपाए साचा नाँ, सोहँ नाउँ रखाईआ। आप बहाए साचे थाँ, ऊँचो ऊँच अख्वाईआ। कोई ना खावे गऊ माँ, कोई ना सीस कटाईआ। मदिरा मदि ना देवे कोई पिला, लाड़ी मौत गूढ़ी नींद सवाईआ। जन भगतां जपाए सच्चा नाँ, सतिजुग साचा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका अक्खर रिहा पढ़ाईआ। एका अक्खर वड विद्वान, हरि आपे रिहा पढ़ाया। कलमी कलम ना लेख महान, लेखा लिखण विच ना आया। पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराण, वेद व्यासा लेख लिखाया। शास्त्र सिमरती सारे गान, शास्त्र रिहा जणाया। अञ्जील कुरानां वेख निशान, हरि साचा काला रंग रंगाया। खाणी बाणी वेखे मार ध्यान, कवण नाद वजाया। आपे करे पुण छाण, धुरदरगाही दाता आया। जन भगतां देवे साचा दान, सच वस्तू इक्क रखाया। आप बिठाए नाम बिबाण, लोआं पुरीआं पार कराया। दो जहानां वेखे मार ध्यान, साचा रंग रंगाया। काया मन्दिर सच मकान, गुरमुख तेरा रिहा सुहाया। चौदां लोकां झूठ दुकान, चौदां तबकां रिहा मिटाया। सच हदीस हरि जगदीस, मुल्ला शेख़ काजी होए हलकाया। साचा राग ना सुणाए कोई कान, पढ़ पढ़ वेद विधानया। पारब्रह्म अबिनाशी किरपा कर गुरमुखां वखाए इक्क निशान, घर चौथे आप टिकाया। सो पुरख निरँजण किरपा कर, एका अक्खर रिहा पढ़ाया। सोहँ अक्खर कर परवान, लोकमात रिहा धराया। धरत मात तूं कर ध्यान, प्रभ तेरी गोद उठाया। पूत सपूता सच सुल्तान, साचे तख़्त सजाया। सतिजुग साचे राज राजान, एक एक अख्वाया। नौ खण्ड पृथ्वी वेखे मार ध्यान, राउ रंकां रिहा जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गोबिन्द काया भेख धर, भेखाधारी भेख वटाया। गोबिन्द काया रंग अपार, एका एक चढ़ाया। आपे रंगे रंगणहार, दूसर ना कोई रंगाया। लाल अनमुल्लड़ा कर प्यार, आपणी गोद उठाया। पूरे तोल तुलड़ा विच संसार, चरन प्रीती सेव कमाया। लोकमाती फलया फुलया, साची फल फुलवाड़ी मात लगाया। कलिजुग माया विच ना रुलड़ा, हरि चरन ध्यान रखाया। सद पाउँदे आपणा मुल्लड़ा, शब्द ज्ञान तजाया। गुरमुख साचा ग्रन्थी पन्थी भुल्लड़ा, गुर पूरा दिस ना आया। कलिजुग फल अन्तिम हुल्लड़ा, पत्त डाल्ही दिस ना आया। जूठ झूठ अन्धेर झुलड़ा, सभ दी देवे जड़ उखाड़या। अमृत आत्म सभ दा डुल्हड़ा, मनमुख जीव फिरे हलकाया। गुरमुख पूरे तोल तुलड़ा, प्रभ सोहँ कंडे रिहा तुलाया। दर दुआरा रक्खे खुल्हड़ा, ज़ात पाती भेव चुकाया। भाग लगाए साचे कुलड़ा, जो जन सरन सरनाई साची आया। अन्तिम आपे पाए मुलड़ा, धन धनाढी रिहा वरताया। पाणी पए ना काया चुल्हड़ा, जोती जोत ना कोई बुझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरे वसया घर, दर दुआरा बंक सुहाया।

दर दुआरा बंक अपार, हरि साचा आप सुहांयदा। शब्द सरूपी तिक्खी धार, एका एक वखांयदा। मुनी रिखी ना पावण सार, पंडत पांधे भेव छुपांयदा। ग्रन्थी पन्थी ना पायण सार, नानक गोबिन्द दिस ना आंयदा। कूड़ कूड़ा कर पसार, मलेशी पुच्छ पुछांयदा। दर दरवेशी नर निरँकार, पहली चेत्र जोत जगांयदा। पन्थ ख़ालसा रहिणा ख़बरदार, इक्की चेत्र आप सुहांयदा। दो जहानी रिहा पैज संवार, लोकमात जोत प्रगटांयदा। गोबिन्द गोबिन्द मीत मुरार, नित नवित्त कर कर हित्त, गुरमुख साचे आप उठांयदा। आपे होया पाक पवित्त, आपे जाणे वार थित, आप आपणा ल्या जित्त, आप आपणा मात उपजांयदा। जन भगतां तन क्यारी देवे सित, सुत दुलारे सुहाए साची रुत्त, काया ठण्ढी ठार करांयदा। साढे तिन्न तिन्न हथ्थ सीआ लए वेंत, आप आपणी वंड वंडांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी खड़के इट्ट नाल इट्ट, महल्ल अटल कोई रहिण ना पांयदा। चारे कुन्टां रिहा लुट्ट, धीरज पति गंवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ना जन्मे ना जाए मर, जुग जुग पैज रखांयदा। मरे ना जन्मे आवे जाए। थिर घर बैठा आसण लाए। पुरख अगम्म अगम्मड़ा, अगम्मड़े धाम सुहाए। जन भगतां देवे नाम दाम दमता, पवण स्वासी आप चलाए। लेखा चुक्के हड्ड मास नाड़ी चम्म का, चम्म दृष्टी रहिण ना पाए। एका अमृत आत्म जाम प्याए जन का, तृष्ना भुक्ख मिटाए। मिटे रैण अन्धेरी शामन शमका, प्रकाश आकाश समाए। वेखे खेल दुष्ट दमन का, दमन दुष्टां भेख वटाए। पावे सार अवन गवन का, गोबिन्द लेखा रिहा लिखाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण वेखे खेल, सरगुण तेरी अन्तिम वार धार बंधाए।

गुरमुख सदा सलाहीए, अन्त ना पारावार। नाम निधाना गाईए, कोटन दए पाप उतार। श्री भगवाना इक्क मनाईए, आदि अन्त एकँकार। शब्द निशाना इक्क रखाईए, जुग जुग बेड़ा लाए पार। नाद अनादी तराना इक्क उपजाईए, आप वजाए साचा ताल। सुन्न समाधी खोल्ह वखाईए, सुन्न मुन गण गुर पूरे अग्गे डाल। बोध अगाधी शब्द जणाईए, मेल मिलाए दीन दयाल। विस्मादी विस्माद समाईए, नेड़ ना आए काल महांकाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख उपजाए अनमुल्लड़े लाल। लाल अनमुल्ला हरि उपाया, गुरमुख नाउँ धराईआ। सतिजुग साचा सिख उपजाया, आपणी गोद उठाईआ। राम रामा बण के आया, भीलणी दर द्वारे फेरा पाईआ। गऊ ग़रीबां गले लगाया, हँकारीआं निन्दकां रिहा मिटाईआ। रामा रावण मार मुकाया, भबीखण दए वड्याईआ। कलिजुग सतिजुग त्रेता द्वापर आपणे हथ्थ रखाया, दोए

खेल खिलाईआ। काहना कृष्ना रूप वटाया, बिदर सुदामा ल्या उपजाईआ। द्रोपद लज्जया रक्खदा आया, एका बस्त्र तन छुहाईआ। अर्जन गीता ज्ञान जणाया, अठारां ध्याए जणाईआ। दे मति भगत आप समझाया, साची बूझ बुझाईआ। रथ रथवाही आप चलाया, बैठा हरि रघुराईआ। सृष्ट सबाई मथ विखाया, अक्षूणीआं गरक कराईआ। दुर्योधन हँकारी दिस ना आया, ना कोई छप्पर छाईआ। इक्क युधिष्टर गले लगाया, धर्म सुत उपजाईआ आप आपणा अन्त कराया, यादव बैठे मुख शरमाईआ। कलिजुग साचा सुत उपजाया, धरतमात मात बणाईआ। काला मुख आप कराया, प्रभ साचे लाई शाहीआ। हउमे रोग दुःख झोली पाया, जीवां जन्तां रिहा प्याईआ। आत्म सुक्ख आपणे हथ्थ रखाया, दस्म द्वारी कुण्डा बैठा लाईआ। तृष्ना भुक्ख जगत वधाया, अग्नी अग्न जलाईआ। मात कुक्ख ना कोई सुफल कराया, ठग्ग चोर यार निन्दक दुष्ट दुराचार रिहा उपाईआ। गुरमुख विरले उज्जल मुख कराया, रसना जिह्वा रिहा गाईआ। निहकलंका तेरी सच सरनाया, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। गुर गोबिन्दा बैठा सीस झुकाया, दर दुआरा रिहा सुहाईआ। नानक निरगुण निज घर डेरा लाया, आप आपणा मेट मिटाईआ। सरगुण भरमा डेरा ढाया, भेख पखण्डा दए मिटाईआ। चण्डी चण्डा रिहा उठाया, जुग चौथा चौथा डण्डा पार कराईआ। आपे चढ़या हरि ब्रह्मण्डा, हर घट वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि साजन मीत आप हो जाईआ साजण मीता पारब्रह्मा, ब्रह्म रूप समाया। आप कराए आपणा कर्मा, कर्म कुकर्मी आप हो आया। जुग जुग चलाए साचा धर्मा, अधर्मी मेट मिटाया। ना कोई दिसे ज़ात पाता वरनां बरनां, अठारां बरन दए दुहाया। इक्क रखाए साची सरना, चार वरनां राह तकाया। गुरमुख विरले साची तरनी तरना, कलिजुग डूँघा सागर आप वहाया। धर्म राए तेरा दर द्वार अन्तिम भरना, कलिजुग साचा संग निभाया। लाड़ी मौत घर घर नर नारी वरना, बैठी तन श्रृंगार कराया। गुरमुख विरले आप रखाए आपणी सरना, सरन सरनाई इक्क रघुराया। देवे वड्याई उप्पर धरत धवल धरनी धरना, सँावल सुन्दर रूप वटाया। माण दवाए इन्द इन्द्रा, सुरपति रहिण ना पाया। बीस बीसे मारया जन्दरा, ना कोई सके खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे रिहा जगाया। गुरमुख साचे आप जगाए, सर्बकला समरथा। नाम धन हरि झोली पाए, सिर रक्खे दे कर हथ्था। साची गोली आप अखवाए, शब्द जणाए अकथ अकथा। चेत्र सत्त हरि दे मति गुरमुख समझाए, नाम चढ़ाए साचे रथा। गुर गोबिन्द घर डेरा लाए, सगली चिन्दा दए मिटाए, सागर सिन्धा हरि धार वहाए, गुरमुख बणाए साची बिन्दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगत सुहेला देवे वर, मनमुख लगाए निन्दा। मनमुख निन्दया मुख रखाई, प्रभ अग्न अग्न जलाईआ। गुरमुखां

चिन्दया रिहा मिटाई, साचा सगन कराईआ। सम्मत चौदां रुत्त सुहाई, पहली चेत्र खुशी मनाईआ। दूजे घर दए वधाई, तीजे घर वेखण आईआ। चौथे घर शब्द कुड़माई, पंचम सहिज सुखदाईआ। छेवें ढोल मृदंग ना कोई रखाई, सत्तवें सति पुरख निरँजण बैठा आसण लाईआ। अट्ठ तत्त वस्त हरि रत्ती एका नाम रखाई, नौ दर खेल सर्ब लुकाईआ। दस लेखे हरिजन लाईआ। गुरमुख विरला चढ़े जगत चढ़ाई, प्रभ साचा आप चढ़ाईआ। पंजां चोरां कर लड़ाई, मूंह दे भार सुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख आत्म लई वर, शब्द करे कुड़माईआ। गुरमुख आत्म सति सवानी, घर साचा वेख वखाईआ। दस्म द्वारी बहि गई बण के राणी, साचा तन श्रृंगार कराईआ। जोत निरँजण वारया पाणी, हरि साची सेवा लाईआ। अनहद सुणाए इक्क साची बाणी, राग अनादा रिहा वजाईआ। पुरख अबिनाशी साची आत्म बैठा सेजा चिट्टे बस्त्र तन ताणी, चिट्टी धार रखाईआ। आपे होया जाण जाणी, जानणहार हरि रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, डल्ला तेरा बाग़ सुहाईआ। जगत डल्ला ना होए वैराना, गुर गोबिन्दा गया लिखाईआ। काया मन्दिर इक्क मकाना, हरि बैठा आसण लाईआ। देवे नाम गुण निधाना, दर द्वारे रिहा टिकाईआ। नाम फड़ाए तीर कमाना, साचे चिल्ले आप चढ़ाईआ। सोया सुत उठाए श्री भगवाना, पूत सपूता आप बणाईआ। आत्म अन्तर बन्न्हे गाना, जगत बसन्तर रिहा लगाईआ। पंचम पंचां कर प्रधाना, पंचां मेट मिटाईआ। आदि जुगादी हरि भगवाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रूप वटाईआ। सो पुरख निरजंण साख्यात, भेखी भेख अपारया। हँ निभाए साचा नात, वड वड्डा संसारया। वावा वेखे मार झात, भेव अभेदा भेव निवारया। सस्सा शाम मेटे अन्धेरी रात, कलिजुग रैण अंध्यारया। नन्ना निरगुण वेखे मार झात, एका नैण उग्घाड़या। दोआ औंकड़ इक्क इकांत, दो जहानां वेख वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निर्धन गले लगा ल्या। धन्न सुभागी रैण, नेत्र दर्शन पाया। जन भगतां चुकाए लहिण देण, वड वडभागी दरस दिखाया। गुर संगत बणाए भाई भैण, नाता बिधाता रिहा जुड़ाया। प्रभ का भाणा सिर ते सहिण, कलिजुग अन्त अन्धेरा छाया। माया ममता वहे वहिण, बेमुखां रही रुढ़ाया। दर दर घर घर मन्दिर अन्दर सारे बहि बहि कहिण, गोबिन्द किसे हथ्थ ना आया। हरिजन नेत्र लोचण परखे नैण, कल्गी तोड़ा सीस सजाया। बस्त्र शस्त्र तन साचा गहिण, एका नाम रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति सरूप शब्द विस्माद अनूप रूप समाया। रूप अनूप शाहो भूपा, जोती जोत जगांयदा। करे प्रकाश अन्ध कूपा, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। दर दर घर घर धुखदे धूपा, साचा हवन

ना कोए करांयदा। पारब्रह्म ना कोए रंग ना कोए रूपा, रूप रंग ना कोए विखांयदा। आपे वेखे दहि दिशा चारे कूटा, लोआं पुरीआं भेव उपांयदा। गुरमुखां देवे शब्द हुलारा साचा हूटा, आपणी हथ्थीं आप हिलांयदा। कलिजुग द्वारे बैठा रूठा, मुड्ड खाली हथ्थ विखांयदा। लक्ख चुरासी टम्गाया पुट्ठा, राए धर्म खुशी मनांयदा। जीवां जन्तां वणज वपारा कीता झूठा, जगत मलाह ना कोई बचांयदा। भगत सुहेला इक्क इकेला पुरख अबिनाशी आपे तुठ्ठा, हरिजन साचे आप जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाणे देवत सुर नर, गण गंधरब आप अख्वांयदा।

✻ ८ चेत २०१४ बिक्रमी बूड़ सिंघ दे गृह पिण्ड नाथेवाल ज़िला फिरोज़पुर ✻

गुरसिख वड्याई धन्न है, धन पाया हरि हरि नामा। गुरसिख वड्याई धन्न है, लेखे लाया काया चामा। गुरसिख वड्याई धन्न है, तन वजाए शब्द दमामा। गुरसिख वड्याई धन्न है, एका रक्खे चरन ध्याना। गुरसिख वड्याई धन्न है, रसना गाए गुण निधाना। गुरसिख वड्याई धन्न है, सेवक सेवा करे श्री भगवाना। गुरसिख वड्याई धन्न है, देवी देव ना कोई मनाना। गुरसिख वड्याई धन्न है, शिव शंकर ना सीस झुकाना। गुरसिख वड्याई धन्न है, ब्रह्मे मेल ना विच जहाना। गुरसिख वड्याई धन्न है, एका इष्ट गुरदेव रखाना। गुरसिख वड्याई धन्न है, सृष्ट सबाई वेख वखाना। गुरसिख वड्याई धन्न है, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर द्वारे देवे माणा। गुरसिख वड्याई धन्न है, आत्म तन श्रृंगारया। आपणा बेड़ा आपे बन्नॣ है, आप आपणा भार उठा रिहा। भरम भुलेखा कढ्ढे जन है, जिस जन बख्शे चरन प्यारया। निर्मल जोत जगाए तन है, अज्ञान अन्धेर मिटा रिहा। एका एक देवे सच्चा माल धन है, ठग्ग चोर यार ना कोई चुरा रिहा। राग रागनी सुणाए कन्न है, रसना जिह्वा ना कोई हिला रिहा। जोत निरँजण चाढ़े चन्न है, एका दीप वखा रिहा। गा गा थक्के गंधरब गन है, अरंभा नाच करा रिहा। गुरमुख विरले आत्म गई मन्न है, प्रभ साचा आप मना रिहा। धर्म राए ना देवे डन्न है, लहिणा देणा मूल चुका रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखा रिहा। गुरमुख वड्याई धन्न है, पाया हरि भगवन्ता। गुरसिख वड्याई धन्न है, शब्द जणाए साचे सन्तां। गुरमुख वड्याई धन्न है, मेल मिलाए आदिन अन्ता। गुरमुख वड्याई धन्न है, पाया कन्त सुहागी कन्ता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग बणाए साची बणता। गुरमुख वड्याई धन्न है, गुर साचा पाया। गुरमुख वड्याई धन्न है, जीउ पिण्ड तन काचा जूठ झूठ रखाईआ। पंच द्वार ना दर ते नाचा, एका एक राह तकाईआ। गुरसिख वड्याई

धन्न है, गुर का शब्द हिरदे वाचा, मन मति बुध ना विच चतुराईआ। गुरसिख वड्याई धन्न है, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्तिम रिहा पैज रखाईआ। गुरसिख तेरा धन्न दुआरा, वज्जदी रहे वधाईआ। सतिजुग साचा खोल्ह किवाड़ा, चार वरन रिहा जगाईआ। आप जणाए सुभागी दिहाड़ा, प्रभ खुशीआं नाल रिहा मनाईआ। धर्म राए दर वज्जे ताड़ा, अचरज खेल रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख तेरा सच दर, दर दुआरा रिहा सुहाईआ। गुरसिख वड्याई धन्न है, मिल्या मेल हरि राए। एका आत्म गई मन्न है, पारब्रह्म ब्रह्म सरनाए। जगत विकारा कीता खंन खंन है, एका दूजा भउ चुकाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तीजे लोचन दरस विखाए। तीजा लोचन हरि निरँकार, आपे बन्द कराईआ। आपे होया किरपा धार, दूई द्वैती गन्द मिटाईआ। निर्मल जोती कर आकार, नूर नुरानी दरस दिखाईआ। शब्द सरूपी कर प्यार, जन भगतां रिहा जगाईआ। सम्मत चौदां वेख विचार, गोबिन्द गोबिन्द सेव कमाईआ। रैण दिवस करे प्यार, उठ उठ आवे जावे कर कर धाईआ। मानस जन्म लाए लेखे, हरि साचे वड्डी वड्याईआ। आपे होया दस दस्मेसे, दहि दिश वेख वखाईआ। जोद्धा सूर नर नरेशे, शब्द सिँघासण बैठा आसण लाईआ। जोती जामा धरया भेसे, निहकलंका नाउँ रखाईआ। ब्रह्मा विष्नूं शिव खड़े दर दरवेशे, कलिजुग अन्तिम रो रो दए दुहाईआ। घर सद साचे सन्त सुहेले, साचा मेला आपे मेले, लोआं पुरीआं धाम सुहाईआ। आपे लिखणहारा रेखे, जुग जुग आप मिटाईआ। आप आपणे नेत्र पेखे, जगत नेत्र नैण दोवें बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया रिहा वर, सुरती शब्द सरनाईआ। सुरती शब्द हरि सरनाए, साचा कन्त भतारया। साची थित वार लिखाए, पहली चेत्र दिवस विचारया। एका इक्की रिहा पाए, धुरदरगाही साचा लाड़या। साची सिक्खी रिहा बणाए, नेड़ ना आए पंचम धाड़या। लिखी रेख ना कोई मिटाए, गुर गोबिन्द रसना जिह्वा आप चला रिहा। सगल चिन्ता अन्त मिटाए, साची बिन्दा आप अखवा ल्या। सागर सिन्धा धार वहाए, जल धारा नीर उपा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचा साचे धाम सुहा रिहा। गुरसिख वड्याई धन्न है, एका नाउँ जोग। साची जोत धरे तन है, रसना तजाए माया भोग। राग सुणाए कन्न है, होया धुर संजोग। गढ़ हँकारी देवे भन्न है, आदि अन्त ना होए वियोग। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख तेरा साचा घर, देवे वड्याई त्रैलोक। नाथ तैलोकी, आपणे हथ्थ रखाईआ। इक्क सुणाए शब्द सलोकी, सोहँ जै जै जैकार कराईआ। भरमे भुल्ले कोटन कोटी, गुरमुख विरले रिहा उठाईआ। आपे चढ़या दस्म द्वारी उप्पर चोटी, बैठा मुख छुपाईआ। लक्ख चुरासी होई खोटी, अन्तिम कल

कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क उठाए शब्द सोटी, नौ खण्ड पृथ्वी रिहा उठाईआ। शब्द सोटी वड बलवान, प्रभ आपणे हथ्थ रखाईआ। चारों कुंटां वेखे मार ध्यान, राज राजानां रिहा हिलाईआ। पंचम मीता मेट मिटाए पंच शैतान, पंचम डोरी रिहा बंधाईआ। गुरमुख साचे चतुर सुजान, आप आपणे रंग रंगाईआ। दर द्वारे देवे माण, दर दरवेशा हरि अख्वाईआ। आपे रक्खे एका आण, दूसर दर ना कोए सीस झुकाईआ। कलिजुग विद्या होई हैरान, पारब्रह्म रिहा धक्का लाईआ। ना कोई करे जगत पछाण, नौ निध्या रही कुरलाईआ। अठारां सिद्धिआं डुब्बी डूँघे वहिण, ना कोई पार कराईआ। गुरसिख विरले आत्म विध्या, गुर शब्द तीर चलाईआ। साढे तिन्न हथ्थ काया अयुध्या, राम रामा बैठा जोत जगाईआ। कलिजुग रावण तेरे मारन दी कर कर वेखे बिध्या, आपणे हथ्थ रक्खे चतुराईआ। हनवन्ता राह तकावे सिद्धिआ, उच्चे पर्बत रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरा साचा घर, दर बैठा खेल खिलाईआ। काया नगर सच द्वार, अवध अयुध्या रखाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, मन मति बुध विच टिकाईआ। एका फड़े तीर कमान, रसना चिल्ले रिहा चढ़ाईआ। गुरसिख साचे नौजवान, सस्से किले विच बहाईआ। चारों कुन्ट फिरे भगवान, एका राम बांह उठाईआ। दो जहानी वेखे मार ध्यान, हाहा थल्ले मुख छुपाईआ। आपे मोड़े मोड़ मुड़ान, अन्दर राह तकाईआ। आपे खोल्ह्रे जगत दुकान, नौ द्वारे रिहा वखाईआ। कलिजुग भुल्ले जीव नादान, प्रभ साचे भेव ना राईआ। सीता सुरती होए हैरान, साचा राम दिस ना आईआ। खुल्ल्हे केस तन वैरान, बन बिन्दरा दए दुहाईआ। पंखी पंछी सुंञ मसाण, बैठे राह तकाईआ। राम रामा मारे बाण, रावण रिहा कुरलाईआ। अन्तिम वेला कलिजुग मिटे निशान, प्रभ साचे रचन रचाईआ। सोहँ चिल्ला इक्क कमान, हरि आपणे हथ्थ उठाईआ। बूरा कक्का करे पछाण, पंचम जेठी बणत बणाईआ। पकड़ उठाए मुगल पठाण, कलिजुग तेरा लहिणा झोली पाईआ। नाल रलाए शाह अफगान, ईरान होए जुदाईआ। कलिजुग तेरा इक्क मकान, फनाह नाउँ रखाईआ। आप बैठ शब्द बिबाण, प्रभ साचा वेखण आईआ। नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां एका आण, हरि साचा रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरा साचा घर, देवे नाम वड वड्याईआ। कलिजुग तेरा गढ़ हँकार, चार कुन्ट वखाया। रावण फड़ तेज कटार, दहि दिशा वेख वखाया। गऊ ग़रीबां मारे मार, दिवस रैण रिहा सताया। दर दर घर घर होए पकार, पुरख अबिनाशी राह तकाया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, अन्तिम भेख वटाया। राउ रंकां करे ख़बरदार, सोहँ डंका रिहा वजाया। भगत जनां हरि मीत मुरार, द्वार बंका इक्क सुहाया। गोबिन्द काया खेल न्यार, जन जन का रूप समाया। देस देसन्तर पावे सार, दर दरवेशी भेख वटाया।

अन्तर मन्त्र इक्क अधार, सोहँ नाउँ जपाया। जगत बसन्तर कर उज्यार, त्रैगुण रिहा लाया। त्रैगुण वस्त हथ्थ करतार, आपणे रिहा कराया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, लहिणा देण चुकाया। इक्की जेठ करे विहार, एका लम्बू लाया। वड वड सेठी मारे मार, कौड़े रेठी भन्न वखाया। आप कराए धुँदूकार, ज़िमी अस्मानां रिहा छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा सगन रिहा मनाया। त्रैगुण माया तेरा अन्त, प्रभ अन्तिम अन्त कराईआ। ना कोई दिसे धीरज यति, सति सन्तोख दिस ना आईआ। जूठी झूठी काया रत्त, अन्त रहिण ना पाईआ। सृष्ट सबाई लथ्थी पत, पति पतिवन्ता रिहा गंवाईआ। आप तपाए आपणी हथ्थीं मट्ठ, चारों कुन्ट लकार लगाईआ। ठण्डे ठार कराए अट्ठ सट्ठ, सच वस्त रहिण ना पाईआ। गुरदर मन्दिर जाण ढठ्ठ, रागी राग ना कोई अलाईआ। गुर संगत मेला इक्क इकट्ठ, एका इक्की रिहा पाईआ। आपे गेड़े उलटी लट्ठ, कलिजुग रिहा भवाईआ। सम्मत सोलां आउणा नठ्ठ, हरि चरन सच्ची सरनाईआ। सम्मत चौदां करे चट्ठ, गुर संगत संग रलाईआ। लेख चुकाए तत्त अठ, त्रैगुण माया रूप चढ़ाईआ। नौ द्वारे जूठी झूठी गेड़े लट्ठ, काया गठड़ी फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा रिहा एका मट्ठ तपाईआ। कलिजुग तेरा मट्ठ तपावणा, हरि साचा हवन करांयदा। लक्ख चुरासी भेंट चढ़ावणा, आपणी सेव कमांयदा। जूठा झूठा कोई रहिण ना पावणा, खाली ठूठा आप करांयदा। जगत सुगंधी देवे पवणा, पवण पाणी सेवा लांयदा। तख्त ताज ना मिले किसे सौवणा, जगत खाट खटोला ना कोई विछांयदा। खेले खेल राम रामा रावना, दुष्ट हँकारी मार मुकांयदा। नाल रलाए दुष्ट दमना, दामन आपणा आप फड़ांयदा। नेत्र नीर किसे हथ्थ ना आए जमना, गंगा गोदावरी वहिण वहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लेख लिखांयदा। त्रैगुण माया तेरा मठ दवाला, आपे आप बणाईआ। जोती जगे इक्क अकाला, दूसर कोई रहिण ना पाईआ। दीना बंधप दीन दयाला, चार वरन करे सरनाईआ। गुरमुख उठाए साचा लाला, तन गहणा इक्क पहनाईआ। दिवस रैण होए रखवाला, नेत्र नैणां दरस दिखाईआ। सेवक सेवा लाए काल महाकाला, गुर गोबिन्द सेव कमाईआ। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाला, कलिजुग तेरी धार वहाईआ। साची इक्क वखाए धर्मसाला, हरि बैठा आसण लाईआ। ना कोई शाह ना कंगाला, पल्ले धन ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरे साचे दर बैठा आसण लाईआ। त्रैगुण माया तेरी गत्त, प्रभ साचा अन्त मिटांयदा। पुरख पुरखोतम वेखे मार झात, नेत्र नैण उठांयदा। जूठी झूठी जगत बरात, लाड़ी मौत नाल प्रनांयदा। कोई ना दिसे अन्तिम मात, लहिणा लहिणे झोली पांयदा। गुरमुख तेरी साची दात, प्रभ तेरे आत्म घर टिकांयदा। चरन

कँवल बंधाए साचा नात, विछड़ कदे ना जांयदा। एका एक कराए ज़ात पात, ऊँच नीच आप हो आंयदा। अमृत आत्म बख़्शे सांतक सांत, सीतल धारा आप वहांयदा। आपे बैठा इक्क इकांत, आप आपणा कर्म कमांयदा। जुग जुग पुच्छे आपे वात, जग दाता आप हो आंयदा। कलिजुग द्वापर तुट्टा नात, कलिजुग जोड़ जुड़ांयदा। सतिजुग तेरी पुच्छे वात, संग मुहम्मद नाल रलांयदा। दोहां सौणा इक्क खाट, प्रभ साचा आप करांयदा। काला काया चोली गई पाट, दूजा बस्त्र ना कोई वखांयदा। साचा शब्द ना विके किसे हाट, चौदां हाट खाली आप करांयदा। ना कोई तीर्थ ना कोई ताट, अट्ठ सट्ठ ना कोई माण रखांयदा। ना कोई चढ़ाए औखा घाट, बजर कपाटी ना कोई खुल्हांयदा। साध सन्त ला ला बैठे ठाठ, आसण सिँघासण ना कोई हंढांयदा। दीपक जोत ना जगे लिलाट, रसना पढ़ पढ़ जगत सुणांयदा। दुरमति मैल ना देवे कोई काट, नेत्र नैण ना कोई तृखा बुझांयदा। दूर दुराडी ना कोई जाणे वाट, जीव जन्त ना भेव खुल्हांयदा। खेले खेल बाजीगर नाट, कलिजुग नाटक इक्क रचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण देवणहारा वर, आप आपणी झोली पांयदा। त्रैगुण तेरा अन्तिम लहिणा, प्रभ साचा आप चुकांयदा। दरस दिखाए साचे नैणा, सम्मत चौदां रुत्त सुहांयदा। लक्ख चुरासी वहिण वहिणा, एका धक्का लांयदा। गुरमुख विरले भाणा सहिणा, हरि साचा बेड़ा बन्न्ह वखांयदा। दर दर घर घर खाए लाड़ी मौत डैणा, डौरू डंका एका वांहयदा। गुर पूरे दा साचा कहिणा, गुर गोबिन्द भेख वटांयदा। अन्तिम वहिण कलिजुग वहिणा, ना कोई किसे छुडांयदा। जुग जुग देवणहारा लहिणा देणा, दाता दानी आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया दर झोली पांयदा। त्रैगुण तेरी सुग़ात, प्रभ लक्ख चुरासी इक्क रखाईआ। अन्तिम निभाए तेरा साथ, जगत डोली रिहा बहाईआ। प्रगट होए त्रैलोकी नाथ, तेरी गोली दए बणाईआ। मस्तक टिक्का काला माथ, दोवें नैण रिहा शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूर कराए तेरा वर, अन्त हिसाब मुकाईआ। त्रैगुण माया कर विचार, रो रो करे पुकारया। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, दु:ख ना जाए सहारया। चारों कुन्ट कूड़ कुड़यार, धर्म राए करे पुकारया। ना कोई दिसे साचा यार, अन्तिम मुहम्मद आपणा मुख छुपा रिहा। ख़ालस ख़ालसा ना पावे सार, गुर गोबिन्द ना वेख वखा रिहा। जगत लालसा मारी मार, तृष्ना अग्न वधा रिहा। तामस रूप क्रोध लोभ मोह हँकार, काम कामन समा रिहा। सांतक सति करे सरना, साचा डंका इक्क वजा रिहा। उब्बल रत्त ना विच संसार, पंचम तत्त आप सुहा ल्या। मति मन हथ्थ करतार, आप आपणी बणत बणा रिहा। इक्क वछाए सत्थ लक्ख चुरासी तेरे अधविचकार, प्रभ साची सफा उठा रिहा। गुरमुख विरले सन्त दुलार, एका आपणा चरन वखा रिहा।

दर द्वारे बण भिखार, हरि मंगण मंगता आ रिहा। आपे वेखे दर द्वार, हरिसंगत जोड़ जुड़ा रिहा। एका इक्की एकँकार, ओंकार आपे पा रिहा। साची सिक्खी कर त्यार, सतिजुग तेरी धार बंन्हा रिहा। मदिरा मास तन निवार, मुख साचा सगन लगा रिहा। पारब्रह्म प्रभ पावे सार, वेद शास्त्र ना कोई पढ़ा रिहा। खाणी बाणी ना करे विचार, वेद पुराणी वक्त चुका रिहा। शब्द निशानी इक्क सरकार, दो जहानी आप वखा रिहा। सोहँ कानी तेज कटार, पंचां दुष्टा मार मुका रिहा। पद निरबानी इक्क दरबार, हरि सिक्खां आप जणा रिहा। अमृत आत्म ठंडा पाणी, सुरत सवाणी दर पया रिहा। मिल्या मेल साचे हाणी, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द खुशी मना रिहा। निहकलंका चुकाए अन्तिम कानी, आप आपणा संग निभा रिहा। नौ खण्ड सत्त दीप रिड़के शब्द मधाणी, एका नेत्रा नाउँ रखा रिहा। सत्त सागर पाए ठण्ढा पाणी, गुरमुख साचे मक्खण विरोल बाहर करा रिहा। लक्ख चुरासी झूठी छाछ विखाणी, प्रभ वहिंदे वहिण वहा रिहा। ना कोई दिसे राजा राणी, राज राजानां ना कोई सदा रिहा। गुरसिख साचा हरि चरन बलिहारी, चरन कँवल विच बहा रिहा।

हरिभगत अधारी आप, प्रभ जगत उपांयदा। हरि नाम भण्डारी आप, जुग जुग वरतांयदा। हरि जोत निरँकारी आप, आपणी जोत जगांयदा। हरि गुर पीर साध सन्त अवतारी आप, आपणी बणत बणांयदा। हरि शब्द अधारी आप, आप आपणा शब्द अलांयदा। हरि मीत मुरारी आप, सज्जण आप अख्वांयदा। हरि शब्द कटारी आप, आपणी आप उठांयदा। हरि सन्त अधारी आप, बस्त्र आपणा तन सजांयदा। हरि नाम खुमारी आप, आपणा जाम प्यांअदा। हरि सृष्ट अधारी आप, ब्रह्मण्ड खण्ड सजांयदा। हरि जुग जुग अधारी आप, आपणा नाउँ रखांयदा। रूप रंग रेख भेख न्यारी आप, आपणा लेख लिखांयदा। आप आपणा करे वारी प्रताप, आप आपणे विच समांयदा। हरि आपे जाणे आपणा जाप, आपे आप अलांयदा। हरि आपे पुन्न आपे पाप, आपे मेट मिटांयदा। आपे वर आपे सराफ, जगत जुगत आप बणांयदा। आपे माई आपे बाप, लक्ख चुरासी आप उपांयदा। त्रैगुण माया थापण थाप, आपणी रचन रचांयदा। वेद कतेब जापण जाप, सेवक सेवा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भेव अभेदा दिस किसे ना आंयदा। आप आपणी जोत अधारा, एका एक अख्वाया। शब्द सरूपी हरि जैकारा, जुग जुग रिहा कराया। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, चार वरनां रिहा जगाया। राम रमईआ पार किनारा, राधा कृष्न ना कोई ध्याया। वाह वाह गुरू गुर दरबारा, नाम सति हरि झोली पाया। आपे बण मात वरतारा, साची सेवा लाया। आपे जाणे हरि भण्डारा, घर आपणे आप सुहाया। आप आपणी पावे सारा, जुग जुग वेख वखाया। कलिजुग तेरा लाहया भारा, निहकलंक लए अवतारा, सतिजुग साचा खोल्ह दुआरा, हरि साचा सुत बणाया। सोहँ

शब्द इक्क जैकारा, धुरदरगाही लै के आया। ब्रह्मा विष्न शिव मंगण बण भिखारा, करोड़ तेतीसा दर द्वार रिहा फिराया। जगाए जोत इक्क निरँकारा, जोत निरँजण इक्क आकार रखाया। गुरमुख साचे सोहण बंक दुआरा, हरि साचा मेल मिलाया। आदि अन्त इक्क इकल्ला एकँकारा, शब्द महल्ला रिहा वसाया। ना कोई बांग हथ्थ मसल्ला, स्वांगी स्वांग ना कोई वरताया। पंडत पांधा ना कोई बहे इकल्ला, मस्तक तिलक ना कोई लगाया। पारब्रह्म चार वरनां रला, ब्रह्म अंस आपणी आप उपाया। आप उठाए दया कमाए गोबिन्द डल्ला, साचा धाम सुहाया। सृष्ट सबाई भुलाए कर कर वल छला, अछल अछल्ल कराया। शब्द सिँघासण जल थला, जल धारा उप्पर वहाया। वेखे खेल घड़ी घड़ी पल पला, दो जहानां आवण जावण बणत बणाया। गुरमुखां दर द्वार मल्ला, आत्म बैठा आसण लाया। दूई द्वैती मेटे सला, एका रंगण रंग चढ़ाया। सोहँ फड़े हथ्थ विच भल्ला, दूतां दुष्टां मुकाया। पंचम जेठी करे पहला हल्ला, एका राह तकाया। सीस गुंदाए करे रंगा, साचा सीस लशकाया। गुरसिख तेरा धाम अटला, प्रभ साचे आप सुहाया। जोती शब्दी आपे रल्ला, पवणी पवण जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत वेख्या इक्क दर, दूसर दर दिस ना आया। गुर संगत तेरा दर दरवाज़ा, गुर पूरा करे प्यारया। प्रगट होए ग़रीब निवाजा, आवे जावे अन्दर बाहरया। चिट्टा अस्व साचा ताजा, वागां आपणे हथ्थ रखा रिहा। कलिजुग अन्तिम रक्खे लाजा, सेवक सेवा आप कमा रिहा। धुरदरगाही आया भाजा, गोबिन्द सोया आप जगा रिहा। शब्द अगम्मा मारे आवाज़ा, दिस किसे ना आ रिहा। ना कोई सुणाए अनहद राग साचा वाजा, ताल होर ना कोई खड़का रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुर संगत तेरी सेवा आप कमा रिहा। सतिगुर पूरा मेहरवान है, गुरसिक्खां सेव कमाए। अट्ठे पहर निगाहबान है, ठग्ग चोर नेड़ ना आए। आपे वेखे मार ध्यान है, अन्ध घोर होए सहाए। पंच उठाए तीर निशान है, आपणे चिल्ले रिहा चढ़ाए। दस्म द्वारी सच मकान है, बैठा बन्द कराए। हरि दाता दर दरबान है, गुरसिख तेरा राह तकाए। आपे करे कराए जाण पछाण है, आपणी दया कमाए। देवणहार सर्ब जहान है, गुरमुख साचे लए तराए। सेवा लाए पवण मसाण है, आपणा राह वखाए। गुर पूरा जगत निशान है, गुरसिक्खां हथ्थ फड़ाए। गुरमुख साचा बली बलवान है, दो जहानां रिहा झुलाए। साचा मेला श्री भगवान है, जोती शब्द जगाए। चरन धूढ़ बख्शे माण है, राए धर्म ना दए सज़ाए। अमृत आत्म पीण खाण है, तृष्ना भुक्ख मिटाए। काहना कृष्ना ना बाल नादान है, राम रमईआ इक्क रघुराए। नानक गोबिन्द धुर फ़रमाण है, लोकमाती रिहा जगाए। निहकलंका डंका इक्क महान है, प्रभ साचा रिहा वजाए। मेट मिटाए पंज शैतान है, रहिण कोई ना पाए। सतिजुग तेरा इक्क बणाए विधान

५०२
०६

है, आप आपणी सेव कमाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत तेरे आया दर, सेवक सेवा रिहा कमाए। सेवक सेवक सेवादार, गुर पूरा आप हो आंयदा। गुरमुखां करे ख़बरदार, फड़ बाहों आप उठांयदा। एका इक्की पहली वार, लोकमात हरि आपे पांयदा। ना कोई जाणे मुनी रिखी, पंडत पांधे भेव ना पांयदा। दर दर घर घर गुरसिक्खां लेख रिहा लिखी, लिख्या लेख ना कोई मिटांयदा। आपे मंगे चरन प्रीती साची भिखी, अग्गे झोली डांयदा। चरन धूढ़ गुर संगत तेरी प्रभ साचे आपणे मस्तक लिखी, धूआँधार जगत करांयदा। नेत्र लोचन नैण लैण वेखी, प्रभ साचा आप वखांयदा। जोती जामा धरया भेसी, दस दस्मेसी संग रलांयदा। तख्त सुल्तान राज राजान हरि शाह नर नरेशी, नूर नुराने धाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगती रूप समांयदा। भगवान भगवन्त भगत समाया, भेव रहे ना राईआ। आदिन अन्ता जुगा जुगन्ता साधां सन्तां मेल मिलाया, धुर दी बाण रखाईआ। देव दंता होए नंग मेट मिटाया, शब्द खण्डा इक्क उठाईआ। भुक्खा नंगा गले लगाया, हँकार विकारा रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर दरवेशा नर नरेशा धारी केशा दस दस्मेसा गुरसिक्खां रिहा सेव कमाईआ।

५०३ ०६

हरिजन भाग मथोर, हरि हरि पाया। सृष्ट सबाई अन्ध घोर, चार कुन्ट अन्धेर छाया। पंचम लुट्टी जायण चोर, सच धन रहिण ना पाया। काया झूठी मढ़ी गोर, सुत्ता हरि रघुराया। जन भगतां वेखे दौड़ दौड़, आर पार अद्ध विचकार बैठा आसण लाया। चढ़े चढ़ाए साचे घोड़, नाम कटार उठाया। लोकमाती पए बौहड़, आपणी धार वहाया। प्रभ मिलण दी गली सौड़, ना कोई सके पन्ध मुकाया। जीव जन्त साध सन्त वेखे मिट्ठे कौड़, जूठे झूठे भन्न वखाया। जगत विकारा डुब्बे जौहड़, दिवस रैण दु:ख उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर साचा आप अख्वाया। सतिगुर हथ्थ वड्याईआ, गुरमुख सेवा लाए। गुरसिख कमाई धन्न है, प्रभ अबिनाशी पाए। प्रभ अबिनाशी दए सलाहीआ, एका शब्द जणाए। शब्द धुन उपजाईआ, सुन्न मुन तुड़ाए। सुन्न मुन्न रहिण ना पाईआ, शब्द हथौड़ा लाए। सच शब्द उपजाईआ, लोआं पुरीआं रिहा सुणाए। लोआं पुरीआं पार कराईआ, हर घट बैठा आसण लाए। हर घट बैठा आसण लाईआ, दिस किसे ना आए। दिस किसे ना आईआ, कोटन कोट साध सन्त फिरन हलकाए। साध सन्त भेव ना पाईआ, प्रभ अबिनाशी अगम्म अथाहे। अगम्म अथाह बेपरवाहया, गुर पीर रहे ध्याए। गुर पीरां नाउँ ध्याया, हरि साचा रिहा जणाए। आप आपणी

बणत बणाया, नानक साची सेवा लाए। दर भिखारी इक्क रखाया, हरि बैठा साचे थाएँ। एका अग्गे झोली डाहया, दोए जोड़ रहे सरनाए। हौली बोल आख सुणाया, पारब्रह्म होए सहाए। आप आपणा मेल मिलाया, ब्रह्म पारब्रह्म भेव ना राए। आप आपणा अंग कटाया, नानक रूप समाए। नानक निरगुण अंक लगाया, सरगुण रूप वटाए। सरगुण दे मति समझाया, कलिजुग मार्ग इक्क चलाए। आप आपणा तत्त रखाया, आपे दए विच टिकाए। सर्बकल समरथ आप अख्वाया, नानक भेव ना पाए। सतिगुर साचा नानक रिहा गाया, रसना जिह्वा सेवा लाए। पारब्रह्म तेरी सरनाया, दोए जोड़ बैठा सीस झुकाए। पुरख अबिनाशी घर बैठा रिहा सुणाया, शब्द विच्चोला इक्क रखाए। दो जहानी धार चलाया, साचा ढोला सोहँ आप उपाए। नानक गोला आप अख्वाया, एका बोला रसना गाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे वेख आसण लाया। नानक मंगे शब्द निधान, हरि साचा कर परवानया। इक्क वखाए धुर फ़रमाण, बन्ने साचा गानया। लक्ख चुरासी कर परवान, वड देवे दात दानी दानया। नानक गाए जगत सुणाए, ना कोई जाणे जीव नादानया। अन्तिम कलिजुग नानक गया समझाए, निहकलंक वजाए डंका राउ रंका मिटाए पंच शैतानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण रूप वटाए। नानक ओट रखाईआ, कलिजुग अन्तिम वारया। प्रभ साचा जोत जगाईआ, शब्द डंका अपर अपारया। राउ रंकां लए उठाईआ, निहकलंक लए अवतारया। गुरमुख साचे बणाए भगत जनका, आप छुहाए चरन सच्ची दाहड़या। हउमे हँगता रोग शंका मेट मिटाईआ, आपे होए पिच्छे अगाड़या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक गुर आपे वर, वर दाता आप हो जाईआ। नानक रसना गांयदा, गोबिन्द ओट रखाईआ। प्रभ साचा वेख वखांयदा, कलिजुग तेरी रुत्त सुहाईआ। निहकलंका डंक वजांयदा, चोट एका तन नगारे लाईआ। गोबिन्द साचा नाल सजांयदा, बस्त्र एका तन सजाईआ। गात्रा नाम लटकांयदा, सस्से किले विच बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक तेरा वेखे घर, कलिजुग लेखा गया लिखाईआ। नानक मंगे साचा दान, दर करे पुकारया। अन्तिम मेला विच जहान, होवे दर द्वारया। देवे वड्याई वाली दो जहान, साचा शब्द धुर फ़रमाणया। अन्तिम प्रगटे निहकलंक बली बलवान, भेव चुकाए खाणी बाणीआ। नानक अग्गे दर दरबान, प्रभ साचा करे परवानया। हत्थ फड़ाए सोहँ शब्द निशान, बीस बीसा खेल महानया। छत्र झुलाए इक्क जहान, इक्क इकीसा इक्क विधानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणे भाणया। हर गुण हरि समाया, भेव किसे ना आंयदा। आपे छाण पुण कराया, आपे ख़ाक रलांयदा। माण अभिमान आप वधाया, निमाणया माण आप दवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका खेल खिलांयदा। साचा खेल हरि खिलाए, बीस बीसा रिहा जगाईआ। नानक सतिगुर प्रभ साची सेवा लाए, सोहँ झण्डा हथ्थ फड़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी रिहा फिराए, शब्द घोड़े आप चढ़ाईआ। आप आपणा लड़ फड़ाए, जुग जुग आपणा संग निभाईआ। गुर गोबिन्द बैठा सीस झुकाए, प्रभ तेरा राह तकाईआ। वड मृगिन्दा हरि रघुराए, सगली चिन्त मिटा रिहा। लक्ख चुरासी करे निन्दा, कलिजुग जीआं दिस ना आ रिहा। हरिजन उपजाए साची बिन्दा, पूत सपूता आप बणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा धाम सुहा ल्या। बीस बीसा वड बलकारी, आपणी रचन रचावणी। नाल रलाए नानक निरगुण हारी, साची सेवा इक्क वखावणी। खेले खेल अगम्म अपारी, चार कुन्ट एका रसना जै जै जैकार करावणी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द पूर कराए भावनी। गोबिन्द तेरी अन्तिम आसा, प्रभ साचा पूर कराईआ। दो जहान दित्ता भरवासा, चरन धूढ़ साची ख़ाक रमाईआ। आपे वेखण आया तमाशा, निहकलंका जामा पाईआ। वेख वखाए पृथ्वी आकाशा, लोआं पुरीआं भेव चुकाईआ। भगत जनां दर होया दासा, दर दर आवे जावे फेरा पाईआ। साचे मण्डल एका रासा, एका स्वांग वरताईआ। प्रगट होए सर्ब गुणतासा, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। निज घर आत्म रक्खे वासा, जन भगतां रिहा जगाईआ। साचा मेला हरि शाहो शाबासा, शाहो भूप विछड़ ना जाईआ। किसे हथ्थ ना आए रत्ती तोला मासा, नाम गठड़ी प्रभ बैठा तन छुपाईआ। साध सन्त जीव जन्त गुर दर बहि बहि करन हासा, महल्ल अटल ना डेरा लाईआ। अन्तिम कलिजुग सर्ब विनासा, सच तख़्त ना कोई हंढाईआ। गुर पूरे हउँ बलि बलि जासा, जिस जन साची सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक तेरा लेख लिखाईआ। नानक लेखा अपर अपार, हरि साचा आप लिखांयदा। सतिजुग तेरी बन्ने धार, साचा मार्ग लांयदा। सेव कमाए सेवादार, पुरीआं लोआं सेव करांयदा। गोबिन्द शब्द इक्क जैकार, चार वरनां आप जणांयदा। अन्ध अन्धेरा मिटे धूआँधार, साचा चन्द चढ़ांयदा। गुरमुखां खोले बन्द किवाड़, अट्ठे पहर दरस दिखांयदा। वा ना लग्गे तत्ती हाढ़, अमृत मेघ बरखांयदा। आकाश प्रकाश नाड़ नाड़, नाड़ी नाड़ आप उपजांयदा। नेड़ ना आए पंचम धाड़, एका खण्डा हथ्थ उठांयदा। त्रैगुण माया देवे साड़, साची वंड आप वंडांयदा। धरत मात तेरा वेख अखाड़, ब्रह्मण्डां खोज खुजांयदा। जंगल जूह उजाड़ पहाड़, उच्चे टिल्ले फोल फुलांयदा। गुरमुख बहाए साचे किले, ना कोई तोड़ तुड़ांयदा। आपे वेखे चढ़ के घोड़े नीले, नीली छत्तों पार करांयदा। तन छुहाए बस्त्र पीले, रुत्त बसन्ती इक्क करांयदा। प्रभ मिलण दे अन्तिम वेले, दे मति समझांयदा। जोती अग्नी लाए तीले, बचया कोई रहिण ना पांयदा।

गुरमुख विरला नाम निधान अमृत पी ले, प्रभ साचा आप प्यांअदा। तन पाटा नाम धागा, साची सूई सी लै, दूई द्वैती पड़दा मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन वेखे साचा घर, कवण आसण कवण सिँघासण पुरख अबिनाशण मेल मिलांयदा। ना कोई आसण धाम भूमिका, पुरख अबिनाशी मेल मिलांयदा। ना कोई पृथ्वी ना कोई आकाशन, ना कोई पवण ना स्वासन, ना कोई शब्द ना जोत प्रकाशन, हरि कवण धाम सुहांयदा।

उठ सिख चढ़ कर अस्वारी, प्रभ साचा आप करांयदा। नौ द्वारे वेख बाहरी, निर्मल जोत वखांयदा। शब्द धुन अपर अपारी, धारा गुरसिख बिल्लांयदा। वसाए महल्ल उच्च अटारी, दर दरवाज़ा आप खुल्हांयदा। नाम रंगीली सेज प्यारी, साची आप सुहांयदा। मिल सखी वर पाया कन्त भतारी, घर साचे वेखण आंयदा। सति सतिवादन साची नारी, मुख पल्लू आपे लांहयदा। चरन प्रीती बख्श न्यारी, निरगुण सेवा लांयदा। आपणे तन आप श्रृंगारी, सच श्रृंगार करांयदा। तन बस्त्र गहणा इक्क अपारी, आपणा नाम पहनांयदा। सम्मत चौदां गुरसिख खारिउँ रिहा उतारी, सतिजुग घोड़े आप चढ़ांयदा। धरत मात पाणी रही वारी, जोती जोड़े मेल मिलांयदा। सुरत सवाणी चरन पनिहारी, सस्से होड़े राह तकांयदा। गुरसिख सद सद सद बलिहारी, नेत्र अक्ख प्रतक्ख आप खुल्हांयदा। नेत्र खोल्ह जल्वा नूर, आपणा आप दिखाईआ। शब्द बोल साची तूर, सर्ब भरपूर समाईआ। आपे होया हाज़र हज़ूर, वड्ड शाहो बेपरवाहीआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, छुट्टी जगत जुदाईआ। मस्तक लाए साची धूढ़, सोहँ शब्द करे कुड़माईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, बजवाड़ा लेखे लाईआ। साचा मेला कन्त कन्तूहल, दिन दिहाड़ा रिहा मिलाईआ। रवीदासे कट्टणहारा जूड़, कुलाहीण पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निर्मल जोती इक्क विखाईआ। निर्मल जोती दीपक जगा, करे आप रुशनाईआ। काग हँस रिहा बणा, वेखे थाउँ थाँईंआ। जूठा झुठा दाग मिटा, फड़ फड़ तारे हथ्थीं बांहीआ। एका साचा राह वखा, साची सेवा रिहा कमाईआ। राग अनादी दए सुणा, अक्खर वक्खर इक्क अल्हाईआ। ब्रह्मादी ब्रह्म रिहा समा, पारब्रह्म सरनाईआ। आदि जुगादी खेल खिला, जन्म मरन कटाईआ। बूंद स्वांती अमृत आत्म पिला, गुर चेला रूप समाईआ। सृष्ट सबाई आप हिला, गुरमुख साचे रिहा तराईआ। चौदां चौदस लेख लिखा, लहिणा झोली पाईआ। चेत्र चित ठगोरी करे ना, हरि साचा दए सज़ा। काया कवरी मरे ना, देवे बाहर कढा। अवणी गवणी फिरे ना, हरि बख्शे सच सरना। कामनी कामन हढ़े ना, नाम रसना दए चखा। डूँघी कन्दर वड़े ना, थिर घर आसण देवे ला। माया ममता सड़े ना, देवे ठण्ढी छाँ।

कलिजुग वहिण हड़े ना, सतिगुर फड़े बांह। अग्गे कोई अड़े ना, सोहँ खण्डा हथ्थ उठा। बिन गुर पूरे ना भन्ने कोई घड़े ना, घड़न भन्नृणहार आप अख्वा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख मेले रिहा मिला।

आदि पुरख शब्द अनादी, आपणी बणत बणांयदा। शब्द जणाए बोध अगाधी, जुग जुग लेख लिखांयदा। भगत सुहेले आपे लाधी, लोकमात उपजांयदा। दिवस रैण रहे अराधी, भगवन्त भेव खुलांयदा। मेल मिलाए मोहण माधव माधी, रूप अनूपा सति सरूपा शाहो भूपा आपणा दरस दिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सुहेले रिहा वर, दर दर घर घर वेख वखांयदा। सन्त सुहेला साचा मीता, जुग जुग संग रखाया। आपे परखणहारा नीता, देहुरा मन्दिर मसीत ना कोई रखाया। अट्ठे पहर वसया चीता, जिस जन चरन ध्यान रखाया। अर्जन सुणाए इक्क गीता, एका नाम अलाया। नाम निधाना गुरमुख विरले पीता, दूई द्वैती पड़दा लाहया। इक्क कराए हस्त कीटा, ऊँचां नीचां विच समाया। जगत माया जूठा झूठा पीसण पीसा, सच वस्त हथ्थ ना आया। लक्ख चुरासी कौड़ा रीठा, पंज तत्त हँकार भराया। गुरमुख विरला आत्म मीठा, आत्म रस रिहा चुआया। देवे शब्द दान इक्क अनडीठा, लिखण पढ़न विच ना आया। पारब्रह्म पुरख अबिनाशी बीठला बीठा, हरिजन साचे रिहा तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वेखे साचे दर, दर दुआरा खोल्ह वखाया। दर दरवाज़ा आपे खोल्ह, आपणी कल वरताईआ। शब्द सरूपी अन्दर बोल, सुरत सवाणी रिहा जगाईआ। नाद वजाए अनहद ढोल, साची सेव कमाईआ। इक्क इकेला सदा सुहेला आत्म सेजा वसे कोल, मनमुख भेव ना राईआ। जन भगतां आत्म अन्तर पड़दा रिहा खोल्ह, आपणी दया कमाईआ। जो जन चरन प्रीती देवे घोल, चरन चरनोधक साचा मुख चुआईआ। बजर कपाटी पड़दा खोल्ह, साची हाटी इक्क वस्त दिखाईआ। औखी घाटी आप चढ़ाईआ। ना कोई तीर्थ ताटी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त दुलारे सर सरोवर इक्क इशनान कराईआ। तीर्थ तट्ट इक्क किनारा, हरि एका एक रखाया। एका हट्ट इक्क वणजारा, एका शब्द टिकाया। भगत जनां हरि कर प्यारा, जुग जुग आपे देवण आया। शब्द रखाए सच भण्डारा, तोट कदे ना आया। दो जहानी पावे सारा, शब्द नाम पल्ले गंढु बंधाया। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर, नेत्र नैण दिवस रैण दरस दिखाया। रसना किसे ना सके कहिण, जिस जन दर्शन पाया। कलिजुग जीव माया रुल्ले जूठे झूठे वहण वहिण, सागर सिन्ध ना कोई पार कराया। अन्तिम राए धर्म चुकाए लहिण देण, चित्रगुप्त हिसाब दिखाया। लाड़ी मौत खाए डैण, तन रही शृंगार कराया। गुरमुख विरले प्रभ चरनी

रहिण, अन्तिम जोती शब्दी मेल मिलाया। एका नाम साध सन्त भाई भैण, सज्जण मीत हरि आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिलाया। जन हरि साचा दर प्यार, प्रभ आपणा आप कराया। आपे बणे दर भिखार, दर दरवेशा हो के आया। शब्द देवे नाम भण्डार, आत्म ब्रह्म जणाया। पारब्रह्म भेव न्यार, आपणे हथ्थ रखाया। शब्द डंका अपर अपार, कलिजुग अन्त वजाया। कलिजुग अन्तिम रिहा विचार, राउ रंकां करे ख़बरदार, शाह सुल्तानां रिहा हिलाया। साधां सन्तां पावे सार, जीवां सन्तां रिहा उठाया। कलिजुग तेरा धुँदूकार, चारों कुन्ट अन्धेरा छाया। जूठा झूठा कर पसार, हउमे हँगता रोग वधाया। कोई ना पावे पुरख अपार, मन मती जगत चलाया। गुर सतिगुर वेखे जगत किनार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेखण आया। कलिजुग तेरा अन्तिम भेख, हरि साचा वेख वखांयदा। आपे लिखणहारा लेख, आपे मेट मिटांयदा। वेख वखाणे धारी केस, मूंड मुंडाए कोई रहिण ना पांयदा। आपे दाता दस दस्मेश, काहना कृष्ना रूप वटांयदा। ब्रह्मा शिव शंकर गणेश, आपे सेवा लांयदा। आपे जोद्धा सूरा नर नरेश, सच सिँघासण आसण लांयदा। कलिजुग अन्तिम करया वेस, निहकलंक नाउँ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगतन देवे भगती वर, सोए मात उठांयदा। सोया पूत आप उठाए, आपणी कल धारया। चारे कुन्टां वेख वखाए, दहि दिशा पावे सारया। शब्द निराला तीर इक्क चलाए, चारों कुन्ट रहे ख्वारया। जोत ज्वाला इक्क वखाए, आप आपणा वेस वटा ल्या। आदि शक्त हरि बणत बणाए, निर्मल जोती इक्क जगा ल्या। वरन गोत कोई दिस ना आए, मात पित ना कोई अख्वा ल्या। साध सन्त प्रभ आप बणाए, गुर पीरा बणत बणा ल्या। लोकमात हरि जन्म दवाए, आप आपणी सेवा ला ल्या। आप आपणा दरस दिखाए, भेखाधारी भेख वटा ल्या। सतिजुग द्वापर त्रेता पार कराए, कलिजुग भेख वटा ल्या। कलिजुग वेला अन्तिम आए, चारों कुन्ट वेख वखा ल्या। निहकलंका जामा पाए, सोहँ शब्द चला ल्या। दूसर कोई रहिण ना पाए, सतिजुग तेरा राह तका ल्या। पुरख अबिनाशी इक्क सरनाए, चार वरनां आप सिक्खा ल्या। धुर दरगाही बण मिलाए, लोआं पुरीआं राह विखा ल्या। ब्रह्मा शिव देवत सुर रिहा जणाए, एका अक्खर आप पढ़ा ल्या। नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां राहे पाए, एका ज्ञान जणा रिहा। ज़ात पात कोई रहिण ना पाए, ऊँचों नीच नीचो ऊँच बणा ल्या। धर्म निशान इक्क झुलाए, सोहँ अक्खर जगत विखा ल्या। राज राजानां शाह सुल्तानां जीव अञ्जाणा कोई दिस ना आए, हरि साचा मार्ग ला रिहा। गुणवन्ता गुण निधाना हरि आप अख्वाए, गुरमुखां शब्द जणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे भगती वर, आत्म ज्ञान जणा रिहा। आत्म ब्रह्म शब्द जणाई,

देवे आप भगवानया। गुर शब्द करे मात कुड़माई, धुरदरगाही इक्क निशानया। साचे मन्दिर काया अन्दर वज्जे वधाई, नेड़ ना आयण पंज शैतानया। पंचम गायण चाँईं चाँईं, अनहद शब्द सुणा रिहा। दस्म द्वारी कुण्डा लाही, आपे वेखे श्री भगवानया। घर मन्दिर साचा धाम आप सुहाई, दर घर करे परवानया। जोती जोत रिहा मिलाई, शब्दी शब्द तरानया। सो पुरख निरँजण दया कमाई, हँ हँगता मेट मिटानया। घर चौथा पद रिहा वखाई, सोहँ शब्द बणानया। सो साजण हरि रघुराई, हर घट वेखे गुण निधानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरा साचा दर, आपे रिहा सुहाई। साचा दर दर दरवाज़ा एका एक बणाईआ। किसे हथ्थ ना आवे नौ दरवाजा, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जन भगतां देवे चिट्टा अस्व साचा शब्द घोड़ा ताजा, आपे उप्पर चढ़ाईआ। दरस दिखाए ग़रीब निवाजा, सच सरूप आप हो आईआ। जुग जुग रक्खणहारा लाजा, जन भगतां पैज रखाईआ। अन्दर मन्दिर बहि बहि मारे आवाज़ा, दिवस रैण रिहा जगाईआ। सतिजुग चलाए सच जैकारा, सोहँ नाउँ रखाईआ। आप रचाया आपणा काजा, बण के आया हरि रथवाहीआ। लक्ख चुरासी देवे दाजा, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, एका वार वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला इक्क दर, एका रिहा कराईआ। इक्क इकल्ला हरि निरँकारा, एका रंग समाया। शब्द रखाए साची धारा, ब्रह्मण्डां आप वहाया। जेरज अंडां पावे सारा, उत्भज सेत्ज विच समाया। जुग जुग मात लए अवतारा, आपणा शब्द जणाया। आपे राम कृष्न मुरारा, आपे लेख लिखाया। ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यारा, ऐड़ा अथर्बण अल्ला राणी नाल व्याहया। नानक गोबिन्द शब्द धारा, हरि आपणी सेवा लाया। लिख लिख थक्के लेख लिखारा, वेद व्यासा रिहा अल्हाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, निहकलंक जोती जामा भेख वटाया। गोबिन्द मेला एका वारा, हरि साचा मेल मिलाया। शब्द खण्डा तेज कटारा, सोहँ नाउँ रखाया। सो पुरख निरँजण पावे सारा, आदि शक्त आदि भवानी जोत बनवाली साचा संग निभाया। मारे तीर तिक्खी कानी, दो जहानां पार कराया। पढ़ पढ़ सुण सुण वड विद्वानी, ज्ञानी ध्यानी दिस ना आया। पढ़ पढ़ थक्के अंज़ील कुरानी, अहिनल हक्क ना कोई गाया। पंडत पांधे होए हैरानी, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, दिस किसे ना आया। वाचक वाचन वेद पुराणी, उच्चा पौड़ा ना कोई लम्मा चौड़ा चढ़ाए पार ना कोई कराया। धुरदरगाही आया दौड़ा, भगत जनां घर आपे बौहड़ा, वेखे परखे मिट्ठा कौड़ा, आत्म दरसी दरस दिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त जनां हरि वसया घर, घर बाहर इक्क रखाया। एका घर एका दर एका वर एका हरि, एका राम अख्वांयदा। ना जन्मे ना जाए मर, जुग जुग भेख वटांयदा। सन्त सुहेले लए फड़, आप आपणा लड़ फड़ांयदा। काया मन्दिर अन्दर

जाए चढ़, दिस किसे ना आंयदा। आपे तोड़ किला हँकारी गढ़, सांतक सति वरतांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, साची बणत बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगत सुहेला वसया इक्क घर, दूसर घर ना कोई विखांयदा।

✻ ६ चेत २०१४ बिक्रमी बग्गा सिंघ दे गृह पिण्ड नत्त ज़िला लुध्याणा विखे इक्की परिवारां दा इक्ट्ठ होया ते शब्द दी रहिमत कीती ✻

हरि नामा धनवन्त है, आदि जुगादि समाए। देवणहारा हरि भगवन्त है, गुरमुख साचे रिहा जगाए। मेल मिलावा साचे सन्त है, गुर शब्दी मेल मिलाए। हरि एका साचा कन्त है, सृष्ट सबाई वेख वखाए। आप उपाए जीव जन्त है, लक्ख चुरासी रचन रचाए। जुग जुग माया पाए बेअन्त है, कलिजुग काला टिक्का मस्तक लाए। पारब्रह्म अबिनाशी आदि पुरख बेअन्त है, लिख्या लेख ना सके कोई मिटाए। जन भगतां पति पतिवन्त है, दिवस रैण होए सहाए। आप बणाए साची बणत है, जुग जुग भेखी भेख वटाए। इक्क जपाए साचा जाप है, अक्खर वक्खर आप उपाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा रिहा लिखाए। जन भगतां पति पतिवन्त है, दिवस रैण होए सहाए। आप बणाए साची बणत है, जुग जुग भेखी भेख वटाए। इक्क जपाए साचा कन्त है, अक्खर वक्खर आप उपाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा रिहा गिणाए। लेखा लिखणहार दातारा, जुग जुग लेख लिखांयदा। जुग जुग लए मात अवतारा, आपणी बणत बणांयदा। साध सन्त दए शब्द हुलारा, आप आपणा नाम जपांयदा। जन भगतां बख्शे चरन सहारा, चरन प्रीती इक्क विखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग रंगांयदा। रंग रंगाए शब्द ललारी, एका रंग चढ़ांयदा। जन भगतां पैज रिहा संवारी, जुग जुग मेल मिलांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। चारों कुन्ट रैण अंध्यारी, दहि दिशा अन्धेरा छांयदा। भरमे भुल्ले भरम गंवारी, नाम हिस्सा ना कोई वंडांयदा। काया मन्दिर अन्दर लोभ मोह पंचम तत्त हँकारी, सीतल सांतक सति ना कोई वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे रिहा वर, आप आपणे अंक लगांयदा। गुरमुख साचे सच निशान, तेरा मात उपांयदा। शब्द ल्याए इक्क बिबान, लोआं पुरीआं पार करांयदा। गुणवन्ता हरि गुण निधान, आत्म जोती ब्रह्म

ज्ञान, आत्म ब्रह्म जणांयदा। दस्म द्वारी इक्क मकान, साचे मन्दिर आसण लांयदा। फूलन सेजा हरि अपार, आपणी आप वखांयदा। उप्पर बैठ श्री भगवान, गुरमुख साचे मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला इक्क घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। साचा घर हरि निरँकार, एका एक बणाया। ना कोई दिसे चार दिवार, छप्पर छन्न ना कोई रखाया। ना कोई दिसे पहरेदार, राज राजानां शाह सुल्तानां कोए नज़र ना आया। एका जोत हरि निरँकार, नूरो नूर कराया। शब्द सुत हरि बलवान, एका आपे जाया। ब्रह्मण्डां वेखे मार ध्यान, जेरज अंड विच समाया। जुग जुग देवे साधां सन्तां जिया दान, गुर पूरा सेवा लाया। कलिजुग तेरी अन्त करे पछान, निहकलंका जामा पाया। गुरमुखां वेखे मार ध्यान, सोहँ खण्डा हथ्थ उठाया। तेज प्रचण्ड विच जहान, हरि साचा रिहा चलाया। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क ज्ञान, सत्तां दीपां रिहा कराया। आपे वेखे मार ध्यान, दिस किसे ना आया। ना कोई जाणे चतुर सुघड़ स्याण, ज्ञानी ध्यानी भेव ना राया। पढ़ पढ़ थक्के अञ्जील कुरान, खाणी बाणी होई हैरानया। चारों कुन्ट अन्ध अंध्यार, जूठा झूठा अन्ध अंध्यानया। सन्त सुहेले अन्दर बहि बहि कुरलाण, मनमुख जीवां मात सुणाया। मनमुख जीव होए प्रधान, हउमे हँगता रोग वधाया। रसना मदिरा मास खाण, आत्म ब्रह्म गंवाया। भेव ना पायण श्री भगवान, पारब्रह्म दिस ना आया। गुर का शब्द ना रसना गाण, गोबिन्द गुर भुलाया। नानक नाउँ ना नाम विखाण, दर द्वार बन्द कराया। नौ द्वारे भुल्ले नादान, कूड़ो कूड़ समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका डंका रिहा वजाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, तेरा एका डंक वजांयदा। करे कराए ख़बरदारा, राउ रंकां आप उठांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी दए हुलारा, सत्तां दीपां आप जगांयदा। लक्ख चुरासी पावे सारा, चारे खाणी वेख वखांयदा। शब्द खण्डा तेज कटारा, हरि आपणे हथ्थ उठांयदा। सम्मत चौदां मारे पहली वारा, पंचम जेठी रुत्त सुहांयदा। सृष्ट सबाई करे दो फाड़ा, सीस धड़ हरि वखांयदा। धरतमात तेरा इक्क अखाड़ा, हरि आपे वेखण आंयदा। शब्द उठाए अगम्मी धाड़ा, आपणी बणत बणांयदा। धुरदरगाही साचा लाड़ा, साध सन्त आप प्रनांयदा। नेड़ ना आए पंचम धाड़ा, काम क्रोध लोभ मोह चुकांयदा। जोत जगाए बहत्तर नाड़ा, आकाश प्रकाश विखांयदा। रक्खे लाज चरन छुहाए दाहड़ा, सतिजुग साचा राह वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वसया घर, सच घर इक्क सुहांयदा। साचा घर हरि सुल्तान, एका एक सुहाया। ना कोई जाणे जीव जहान, भेव किसे ना पाया। नौ दर फिरन मूर्ख मुग्ध अञ्जाण, दसवां कोई ना वेख वखाया। मन्दिर अन्दर बहि बहि सर्ब कुरलान, रसना जिह्वा कलि हलकाया। गुणवन्ता गुण कोए ना सके वखाण, हरि मेल ना कोई मिलाया। कलिजुग

५११
०६

अन्त जीव जन्त सर्ब पछतान, ना कोई होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगतन देवे भगती वर, भगवन्ता मेल मिलाया। हरि भगवन्त सर्ब समरथ, अकल कला अख्वाया। जन भगतां रक्खे दे कर हथ्थ, सृष्ट सबाई कर कर वल छल जगत भुलाया। जुग जुग चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही आप अख्वाया। सृष्ट सबाई दए मथ, लक्ख चुरासी दए मिटाया। जन भगतां आत्म डोरी शब्द सरूपी पाए नत्थ, दर साचे खिच्च ल्याया। जीवां जन्तां सीआं देवे साढे तिन्न हथ्थ, कलिजुग लहिणा देणा मूल चुकाया। सतिजुग शब्द चलाए इक्क अकथ, सोहँ नाउँ रखाया। चार वरनां इक्क सरना, सगल वसूरे जायण लथ्थ, पुरख अबिनाशी दर्शन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हर घट वेखे वेख वखाया। हर घट वेखे वेखणहारा, निज घर आसण लाया। भरमे भुल्ले भरम गंवारा, पारब्रह्म भेव ना राया। अन्तिम कलिजुग होइण ख्वारा, कर्म धर्म जरम कोए ना लेखे लाया। माया रुल्ले भरमे भुल्ले ना मिल्या नाम अधारा, फड़ पल्लू कोए ना पार कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नरायण नर आप अख्वाया। नर नरायण सदा निहकामी, आदि ना आदि अन्ता। हर घट वेखे अन्तरजामी, पारब्रह्म बेअन्त बेअन्ता। जन भगतां मेटे रैण अन्धेरी शामी, मेल मिलाए साचे सन्तां। इक्क जपाए साचा नामी, महिमा गणत अगणता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचा मेल कर, आपे होए पति पतिवन्ता। पति पतिवन्ता हरि परमात्म, एका एक अख्वांयदा। आपे जल मीना जीव आत्म, भेव अभेद चुकांयदा। ना कोई जाणे धर्म सनातम, वरन बरन ना कोई जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वसया बाहर ज़ातम, ज़ात पात औलीए शेख़ मुसायक राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान एका धाम सुहांयदा। रंक राजानां इक्क दुआरा, हरि साचे आप रखाया। जन भगतां देवे नाम भण्डारा, आपे आप वरताया। जुग जुग लए मात अवतारा, लक्ख चुरासी वेख वखाया। सतिजुग द्वापर त्रेता उतरया पारा, कलिजुग लहिणा देणा रिहा चुकाया। नानक निरगुण पाया पुरख अपारा, रसना सो कमाया। गोबिन्द बणया लेख लिखारा, हरि नेत्र वेख वखाया। अगम्मा अगम्मड़ा अगम्मड़ी धारा, आप आपणी रिहा चलाया। निहकलंक लए अवतारा, जोती जोत उपाया। शब्द खण्डा तेज कटारा, एका एक रखाया। लोआं पुरीआं करे ख़बरदारा, ब्रह्मा शिव देवत सुर रिहा हिलाया। नौ खण्ड पृथ्वी तेरी वारा, सम्मत चौदां रिहा जगाया। सत्तां दीपां हाहाकारा, भाणा आपणे हथ्थ रखाया। वेख वखाए सर्ब संसारा, वड संसारी आप हो आया। भरमे भुल्ले जीव गंवारा, भरम गढ़ ना कोई तुड़ाया। जन भगतां पावे आपे सारा, बाहों फड़ पार कराया। एका देवे नाम अधारा, अन्दर वड़ साचे मन्दिर चढ़, प्रभ साचा दरस दिखाया।

ना कोई सीस ना कोई धड़, चौथे पौड़े बैठा चढ़, घर साचा धाम सुहाया। भगत जनां हरि अग्गे खड़्, आप आपणा दरस दिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगतन मीता देवे वर, भगत भगती सेवा लाया।

नौ दर जगत द्वारया, काया तन मकान। मनमति रुल्ले जीव गंवारया, नाल रलाए पंज शैतान। जूठा झूठा पीण खाणया, माया ममता मोह मति बुध करे वैरान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे मार ध्यान। आपे वेखे मार ध्याना, पारब्रह्म अबिनाश्या। ज्ञानी ध्यानी चतुर सुजाना, जाण पछाण पृथ्वी आकाश्या। गुरमुख विरले बख्श चरन ध्याना, नाम जपाए रसन स्वास्सया। आत्म जोती मेल मिलाना, शब्दी गुर भरवास्सया। जोत निरँजण तेल चढ़ाना, साचा सगन मनास्सया। पंचम राग अनाद एका गाना सुणाना, राग नादी इक्क अनादया। गुर पूरा हरि एका पाना, मेल मिलाए विच ब्रहमादया। देवणहारा जीवां दाना, दाता दानी आदि जुगादया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेखे घर, गुरमुख आपे लाध्या। गुरमुख लाधा पारब्रह्म, आपणी किरपा धारया। मन मति बुध काया चम्म, नौ दर उपा ल्या। रसन स्वास लेखे लाए चम्म, जिह्वा साची सेव कमा रिहा। एका आहार खवाए तम, तृष्ना भुक्ख मिटा रिहा। ना मरे ना पए जम्म, लक्ख चुरासी फंद कटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा बेड़ा इक्क बणा ल्या। कलिजुग बेड़ा बन्न् कर त्यार, एका एकँकारया। जोत सरूपी लए अवतार, खेले विच संसारया। भगत जनां हरि कर प्यार, दरस दिखाए अगम्म अपारया। आत्मक धुन शब्द जैकार, अनहद राग सुणा रिहा। आत्म सेजा धाम न्यार, आपणा मेल मिला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचा एका सर, तीर्थ नुहावण सच नुहा रिहा। साचा तीर्थ प्रभ चरन द्वार, जन भगतां आप विखांयदा। अट्ठ सट्ठ ना पावे कोई सार, वेले अन्त ना कोई छुड़ांयदा। कलिजुग काया काली धार, मुख माया पड़दा पांयदा। लक्ख चुरासी जीव गंवार, साध सन्त ना कोई जणांयदा। प्रगट होए हरि अवतार, गोबिन्द गोबिन्द मेल मिलांयदा। शब्द खण्डा तेज कटार, साचे तन पवांयदा। आपे वेखे दर द्वार, गुरमुख साचे मात जगांयदा। अन्दर बाहर गुप्त जाहिर, हर घट बैठा आसण लांयदा। नारी कन्ता सच भतार, आत्म सेजा इक्क हंढांयदा। शब्द सुनेहड़ा भेजा विच संसार, जुग जुग बणत बणांयदा। जोती नूर अपर अपार, निहकलंक आप करांयदा। सोहँ डंका अपर अपार, पुरीआं लोआं पावे सार, ब्रह्मण्डां आप जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरे नवें दर, अन्तिम वेख वखांयदा। नौ दर

नौ खण्ड, एका भेख वटाया। जगत तृष्ना घर घर, अमृत आत्म ना कोए प्याया। भेव ना पायण नारी नर, नरायण दिस ना आया। ना कोई नुहाए साचे सर, सच सरोवर किसे हथ्थ ना आया। ना कोई तोड़े किला हँकारी गढ़, पंचां गढ़ बणाया। भगत जनां प्रभ अग्गे खड़, साचा राह वखाया। शब्द सरूपी अन्दर वड़, साचे मन्दिर चढ़, शब्द सरूपी दए तुड़ाया। आप आपणा घाड़ण घड़, गुर शब्द फड़े साचा लड़, साचा धाम सुहाया। लेख चुकाए बहत्तर नड़, आप आपणे संग निभाया। एक अक्खर जाणा पढ़, एका दूजा भउ चुकाया। त्रैगुण माया गया सड़, पंचां लेख लिखाया। चौथे घर जाणा वड़, हरि साचा मेल मिलाया। पंचम फड़ाए आपणा लड़, सिँघ शेर रूप वटाया। छेवें ना कोई सीस ना कोई धड़, हरि आपणा रूप विखाया। सति पुरख निरँजण ना जन्मे ना जाए मर, आदिन अन्ता एका धाम सुहाया। अट्ठां तत्तां घाड़न घड़, लक्ख चुरासी आप उपाया। आप सुहाए नौ दर, काया मन्दिर आप सुहाया। दस्म द्वारी साचे मन्दिर, आपे रहिणा दिस किसे ना आया। त्रैगुण माया मारे जन्दर, आपे बन्द कराया। मनमुख जीव भौंदे बन्दर, राह साचा हथ्थ ना आया। कोटन कोट साध सन्त बैठे डूँघी कन्दर, प्रभ साचा दिस ना आया। उच्चे टिल्ले भौंदे गोरख मच्छन्दर, पारब्रह्म भेव ना राया। गुरमुख तेरे साचे अन्दर, दीपक जोती इक्क जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, रिहा लेख लिखाया। कलिजुग तेरा अन्तिम भेख, हरि साचा जगत मिटाए झूठी रेख, ना कोई मात बचांयदा। नेत्र लोचन नैणा लैणा वेख, जन भगतां वेख वखांयदा। आप मिटाए औलीए पीर शेख़, दस्तगीर ख़ाक मिलांयदा। आपे जाणे धारी केस, मूंड मुंडाया विच समांयदा। दाता जोद्धा सूरा दस दस्मेस, दहि दिशा वेख वखांयदा। शब्द सिँघासण नर नरेश, कल्गी तोड़ा सीस झुकांयदा। नीला घोड़ा आपे वेख, सोलां कलीआं आसण लांयदा। लोकमात लाए मेख, पहला पौड़ा आप उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, राज राजानां शाह सुल्तानां राउ रंकां आप उठांयदा। राउ रंक हरि आप उठाए, कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। द्वार बंका इक्क सुहाए, चार वरन करे भिखारया। ऊँचों नीच इक्क थाँ बहाए, सूचो सूच वड बलकारया। सृष्ट सबाई एका नाम जपाए, सतिजुग तेरी साची धारया। कलिजुग तेरी काली धार मेट मिटाए, संग मुहम्मद चार यार, ईसा मूसा पायण सार अंज़ील कुरानां करे ख्वारया। एका खण्डा तेज कटार उठाए, सोहँ नाउँ उपाए, सो पुरख निरँजण हरि रघुराए, हँ हँगता दए निवारया। एका एक कराए जै जै जैकार, चारों कुन्ट जै जै कारया। लेख चुकाए तूं तूं मैं, मेट मिटाए वड हंकारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोद्धा सूर बली बलकारया। जोद्धा सूर बली बलवाना, आदि पुरख अबिनास्सया।

लक्ख चुरासी बन्ने गाना, लोआं पुरीआं विच ब्रहमादया। कलिजुग अन्तिम मेटे पंच शैताना, हरि मोहण माधव माध्या। ना कोई गाए राग तराना, रसना जिह्वा ना लाए साध्या। गुरमुखां हथ्थीं बन्ने गाना, देवे दात धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका शब्द चलाए बोध अगाध्या। शब्द जणाए बोध अगाध, हरि आपणे हथ्थ रखाईआ। वेख वखाणे सन्त साध, लक्ख चुरासी रिहा जगाईआ। राग सुणाए अनादी अनाद, धुन आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा गुण आपे रिहा जणाईआ। हरि गुणवन्ता गुण निधान, दिस किसे ना आया। पंचम मिल्या विच जहान, पंचम मेल मिलाया। आप आपणा कर ध्यान, सतिजुग साचा रिहा चलाया। किसे हथ्थ ना आए देहुरे मन्दिर मसीता, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। आपे परखणहारा नीता, काया मन्दिर अन्दर आसण लाईआ। गुरमुख विरला रक्खे चीता, प्रभ साचा दरस दिखाईआ। सम्मत तेरां मात बीता, नानक तेरां तेरां गाईआ। गोबिन्द वेखे हस्त कीटा, ऊँचां नीचां विच समाईआ। जीव जन्त कौड़ा रीठा, अन्तिम वेखण आईआ। शब्द चलाए इक्क अनडीठा, दिस किसे ना आईआ। कलिजुग माया जूठा झूठा पीसण पीठा, मोह ममता नाल रलाईआ। त्रैगुण माया तेरा इक्क अंगीठा, प्रभ साचा रिहा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आप आपणा खेल खिलाईआ। त्रैगुण माया तेरा अन्त, अन्तिम कलि करांयदा। भेव ना पायण साध सन्त, मन मनुआ आप डुलांयदा। मनमुखां उब्बल बहत्तर नाड़ी रत्त, ना कोई धीर धरांयदा। गुरदर मन्दिर अन्दर ना दिसे धीरज यति, सति सन्तोख ना कोई रखांयदा। आपे जाणे मित गति, जुग जुग वेख वखांयदा। लेख चुकाए अट्ठ सट्ठ, हिन्दू मुस्लिम हिसाब चुकांयदा। अन्दर मन्दिर जाए ढठ्ठ, गढ़ हँकारी आप तुड़ांयदा। सम्मत सम्मती रहिण ना पाए लक्ख चुरासी चारे कुन्ट रही नठ्ठ, साधां सन्तां राज राजानां शाह सुल्तानां भिक्ख मंगांयदा। गुरमुख विरले लए रक्ख, गुर चरन ध्यान लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे शब्द वर, आत्म ब्रह्म जणांयदा। आत्म ब्रह्म शब्द जणाई, हरि एका एक करांयदा। तन मन्दिर अन्दर वज्जे वधाई, राग अनादी इक्क सुणांयदा। जोत निरँजण कर कुड़माई, साचा सगण मनांयदा। पंचम राग रहे गाई, अनहद ताल वजांयदा। आत्म सेजा इक्क सुहाई, फूलन बरखा लांयदा। पलँघ रंगीला हरि विछाई, उप्पर आसण लांयदा। गुरसिख गोबिन्द एक थाँईं, हरि सच्चा मेल मिलांयदा। आप पकड़े फड़ फड़ बांही, विछड़ कदे ना जांयदा। गुरसिख आए चाँईं चाई, दरस द्वारी धाम सुहांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए कांईं, साची चोग चुगांयदा। आप रखाए ठण्ढी छाईं, दिवस रैण सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया साचा गढ़, हरि साचा

आप सुहांयदा। गोबिन्द काया गढ़ अपार, हरि साचे आप सुहाया। उप्पर चढ़ नर निरँकार, शब्द सिँघासण डेरा लाया। सोहँ खण्डा तेज कटार, हथ्थ उठाया। ब्रह्मा शिव देवत सुर करोड़ तेतीसा करे ख़बरदार, सम्मत चौदां रिहा जगाया। ईसा मूसा हो त्यार, संग मुहम्मद चार यार अहिनल हक्क अल्ला राणी कर प्यार, हू हू नाअरा लाया। काले बस्त्र देवे पाड़, कलिजुग फिरे दर हलकाया। आप उठाए आपणी धाड़, दिस किसे ना आया। जीवां जन्तां अग्ग लगाए नाड़ नाड़, अग्नी जोत लगाया। गुरसिख सन्त सुहेले आप कराए आपणे मेले साचे अन्दर देवे वाड़, आत्म दरसी दरस दिखाया। घड़े घड़ाए आपणे घाड़, घड़न भन्नणहर आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वेखे मात दर, दर द्वार इक्क रखाया।

गुर गोबिन्दा बण भिखार, प्रभ अग्गे सीस झुकांयदा। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, आपणी झोली अग्गे डांयदा। साची सिक्खी कर प्यार, एका इक्की पांयदा। एका इक्की विच संसार, साची गणत गिणांयदा। साची सिक्खी कर हरि विचार, आपणा मेल मिलांयदा। नाम धारा रक्खी तिक्खी, दिस किसे ना आंयदा। भेव ना पायण मुनी रिखी, आप आपणा खेल खिलांयदा। आपणे नेत्र आपे पेखी, आपणी जोत जगांयदा। वेख वखाए धारी केसी, धर्म सति आप रखांयदा। लिखणहारा जुग जुग लेखी, लिख्या लेख मंगांयदा। दो जहानां नर नरेशी, निरगुण सरगुण खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द देवणहारा वर, वर दाता आप अख्वांयदा। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आपणी दया कमाईआ। गुर गोबिन्दा खेल अपार, आपणा संग निभाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, घर साचा मेल मिलाईआ। सम्बल नगर गढ़ अपार, किला कोट इक्क सुहाईआ। उप्पर चढ़ नर निरँकार, शब्द चोट इक्क लगाईआ। चार कुन्ट सुणाए एका वार, इक्क इकल्ला करे जणाईआ। जलां थलां पावे सार, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ां आपे रिहा जणाईआ। जुग जुग मारनहारा मार, कलिजुग अन्तिम वार मिटाईआ। गुर गोबिन्दे कर प्यार, आपणे अंग लगाईआ। पारब्रह्म प्रभ मीत मुरार, गोबिन्द गुर इक्को यार, आपणी गोद उठाईआ। आपे चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक्क रखाईआ। हरि शब्द बणाए विच दलाल, दोहां मेल मिलाईआ। संग कराए काल महांकाल, सेवक सेवा साची लाईआ। दयावान हरि दीन दयाल, दयानिध अख्वाईआ। गुरसिख काया फल वेखे डाल्ह, नेत्र आपणा आप उठाईआ। सन्त सुहेले रिहा भाल, जुग जुग विछड़े मेल मिलाईआ। सृष्ट सबाई हाल बेहाल, सुरती सुरत भवाईआ। काल नगारा वज्जे ताल, डौरू डंक वजाईआ। राज राजानां होए दिवाल, दीवा बत्ती किसे दर रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम

वर, वा तत्ती नेड़ ना आईआ। गोबिन्द हरि इक्क सलाह, एका मता पकाया। चेला गुर एका राह, धीरज यति इक्क रखाया। लेखा धुर एका नाँ, साचा रिहा जपाया। आपे पिता आपे माँ, वेख वखाणे थाउँ थाँ, गुरमुख साचे गोद उठाया। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, सोहँ साची चोग चुगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द गोबिन्द सेवा लाया। गोबिन्द हरि गोपाल, सेवक सेवा लाईआ। दीनां बंधप दीन दयाल, दीनां नाथां होए सहाईआ। सन्त सुहेले परखे साचे लाल, जुग जुग सगला साथ निभाईआ। जूठी झूठी काया माटी खाल, अन्तिम संग ना जाईआ। काया मन्दिर अन्दर सच सच्ची धर्मसाल, गुर पूरा बैठा आसण लाईआ। पंचम गायण साचा राग, किरती कीर्तन रहे सुणाईआ। जन भगतां मेला आदि जुगादि, जुग जुग विछड़े मेल मिलाईआ। रसना जिह्वा रहे अराध, आत्म तृष्ना भुक्ख रखाईआ। दो जहानां सुणे सुणाए हरि फरयाद, आवे जावे फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी झूठा डेरा देवे ढाहीआ। सोहे डेरा गढ़ हँकार, पंचम तत्त वसाया। जूठा झूठा महल्ल उसार, मन मति नाल प्रनाया। बुध मति गई हार, कलिजुग माया पड़दा पाया। रत्ती रत्त ना नाम अधार, सतिगुर पूरा दिस ना आया। करे कराए करनेहार, आप आपणा कर्म कमाया। मरनी मरे जगत संसार, धर्म राए राह तकाया। दर दर घर घर फिरन भिखार, साची वस्त एका नाउँ किसे हथ्थ ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सर्बकला समरथ, समरथ पुरख अख्वाया। सर्बकल आपे समरथ, पारब्रह्म अबिनाशा। जन भगतां रक्खे दे कर हथ्थ, होए सहाई पृथ्वी आकाशा। सोहँ देवे साची वत्थ, निज घर आत्म करे वासा। लहिणा देणा चुकाए साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, होया दासी दासा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, लिख्या लेख वखाए मस्तक माथा। सतिगुर साचा मीतड़ा, जुग जुग आदि जुगादि। काया चोली रंगे चीथड़ा, सन्त सुहेले लाध। आपे जाणे आपणी रीतड़ा, आप वजाए आपणा नाद। आप सुणाए शब्द सुहागी गीतड़ा, गोबिन्द रसन अराध। आपे परखणहारा नीतड़ा, आपे बैठ रिहा विस्माद। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द जणाए बोध अगाध। सतिगुर साचा सज्जणा, एका मीत मुरार। चरन धूढ़ कराए मजना, लक्ख चुरासी उतरे पार। जो घड़या सो भज्जणा, अन्त अन्तिम वार। लोकमात पड़दा किसे ना कज्जणा, राए धर्म करे ख्वार। गुरमुख अमृत आत्म पी पी रज्जणा, तृष्ना भुक्ख दए निवार। नेत्र नैण दर्शन मक्का काअबा हाजी हज्जना, चरन कँवल सच प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां भरे नाम भण्डार। नाम भण्डारा हथ्थ दातारा, आपणे हथ्थ रखाया। वरते वरतावे विच संसारा, जुग जुग भेख वटाया। साधां सन्तां पावे सारा, भगत सुहेले

लए मिलाया। आदिन अन्ता एकँकारा, एका धन्दे रिहा लगाया। कलिजुग तेरी काली धारा, काला टिक्का रिहा लगाया। चारों कुन्ट कूड़ कुड़यारा, सच सुच्च दिस ना आया। माया ममता तन शृंगारा, एका बस्त्र पाया। आत्म अन्ध अन्धयारा, ज्ञान गोझ किसे भेव ना पाया। नाम खण्डा तेज कटारा, तन गात्रे ना कोई लटकाया। मिल्या मेल ना पुरख भतारा, नारी कन्त ना कोए हंढाया। गुरमुख मेला सच दुआरा, आप आपणा रिहा कराया। इक्क इकेला विच संसारा, नौ खण्ड पृथ्वी बणत बणाया। सत्तां दीपां इक्क हुलारा, एका राह वखाया। चार वरन दर दरबान, दहि दिशां वेख वखाया। प्रगट होए श्री भगवान, नर नरेशा रूप वटाया। हरिजन देवे जिया दान, साची वस्तू झोली पाया। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा धर्म इक्क रखाया। साचा धर्म धुर दी बाण, एका एक रखांयदा। चार वरन इक्क ध्यान, एका नाउँ रखांयदा। इक्क बिठाए शब्द बिबाण, लोआं पुरीआं पार करांयदा। गुरमुख साचे चतर सुजान, पुरख निरँजण आप मिलांयदा। आप चुकाए जम की कान, आवण जावण फंद कटांयदा। एका देवे नाम निशान, दो जहानां आप झुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग तेरा साचा राह, शब्द सरूपी बण मलाह, लोकमात आप झुलांयदा। लोकमात दर द्वार, हरि एका एक खुल्हांयदा। प्रगट हो ग़रीब निवाज, गुरमुख साचे पकड़ उठांयदा। चिट्टा घोड़ा साचा ताजा, सोलां कलीआं आसण लांयदा। शाहो भूप वड राजन राजा, लोआं पुरीआं वेख वखांयदा। ब्रह्मा देवता मारे आवाज़ा, चारे मुख उठांयदा। शिव शंकर वेखे कल कि आजा, नेत्र नैण खुल्हांयदा। लाड़ी मौत मंगे दाजा, वेला अन्तिम अल्हांयदा। जन भगतां धोवे दुरमति मैल दाग़ा, आपणी दया कमांयदा। दीपक जोती जगे चिराग़ा, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। सुरपति राजा इन्द रिहा भाजा, करोड़ तेतीसा संग रलांयदा। कोई ना अन्तिम पड़दा काजा, कलिजुग आपणा कर्म कमांयदा। जूठा झूठा वज्जया वाजा, साचा राग ना कोई अल्हांयदा। इक्क वजाए शब्द अनहद वाजा, चरन धूढ़ कराए अन्त मजन माघा, काया चोली रंग रंगांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए कागा, सो पुरख निरँजण साची चोग आप चुगांयदा। अन्तिम वेले रक्खे लाजा, आप आपणे लड़ बंधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे वेख वखांयदा। सतिगुर साचा सति है, मीत मुरारा एक। इक्क सुणाए सुहागी गीत है, चरन कँवल जन टेक। मानस देही गुरमुख विरला रिहा जीत है, मानस देही बुध बिबेक। करे काया ठण्ढी सीत है, नेत्र लोचन आपे वेख। एका रंग रंगाए हस्त कीट है, लिखणहारा लेख। पारब्रह्म अबिनाशी करता बीठला बीठ है, हर घट अन्दर मन्दिर बैठा रिहा वेख। लक्ख चुरासी जूठा झूठा पीसण रिहा पीठ है, अन्तिम वेले लाए ठेस। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

५१८
०६

जोत धर, गुरमुख साचे लए वर, कलिजुग भन्ने कौड़े रेठ। कलिजुग जीव कौड़ा रीठा, तन विकार वधाया। गुर का शब्द ना नेत्र डीठा, रसना गुण ना गाया। मदिरा मास करया मीठा, गोबिन्द तनों भुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दर दर घर घर फेरा रिहा पाया। सतिगुर साचा साख्यात, अकल कला भरपूरा। गुरमुख बणाए पारज़ात, अनहद उपजाए साची तूरा। मेल मिलाए पुरख बिधात है, आपे वसे नेड़े दूरा। चरन प्रीती साचा नात है, लक्ख चुरासी नाता कूड़ा। ना कोई पुच्छे ज़ात पात है, चतर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा। मेट मिटाए अन्धेरी रात है, जिस जन बख्शे चरन धूढ़ा। आपे गेड़नहारा उलटी लाठ है, काया चोली एका चाढ़े रंग गूढ़ा। अमृत आत्म देवे दात है, नाम प्याए सतिगुर पूरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे वेख दर, जगत जहानी नाता कूड़ा। सतिगुर साचा साचा रंग, काया चोली आप चढ़नया। गुरमुख विरला लए मंग, भाण्डा भरम प्रभ साचे भन्नया। अमृत आत्म धारा गंग, एका एक वहंनया। आपे कट्टणहारा भुक्ख नंग, आदि अन्त बेड़ा बन्नया। नाम वजाए इक्क मृदंग, भेव ना जानण गण गंधरब भवंनया। भगत सुहेला साचा संग, दिस ना आए आत्म अन्नयां। कलिजुग काया काची वंग, अन्तिम देवे भन्नया। मानस जन्म ना होए भंग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख चढ़ाए साचा चन्नया। गुरमुख साजण साचा चन्न, लोकमात आप चढ़ांयदा। दो जहानी बेड़ा बन्न, आपे पार करांयदा। ना कोई छप्परी ना कोई छन्न, साचा धाम सुहांयदा। एका राग सुणाए कन्न, गीत सुहागी इक्क अलांयदा। देवे नाम सच्चा माल धन, साचा धन ना कोई लुटांयदा। पंजां चोरां देवे डन्न, शब्द खण्डा हथ्थ उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मेला इक्क दर, दर दरबारा आप सुहांयदा। दर दरबार एकँकार, एका एक रखाया। सति सरूपी पहरेदार, दूसर कोई दिस ना आया। तीजे नेत्र वेख वखाए, हरि बैठा आसण लाया। ना कोई दिसे पंचम धाड़, मन मति बुध भेव ना पाया। जगत तृष्ना देवे मार, गुर पूरा जिस जन दया कमाया। वा ना लगे तत्ती हाढ़, सीतल सांतक तन कराया। आपे होया पिच्छे अगाड़, दो जहानी सेव कमाया। जोत जगाए बहत्तर नाड़, आकाश प्रकाश रखाया। दर द्वारे देवे वाड़, अन्दर मन्दिर कुण्डा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दहि दिशा वेख वखाया। दहि दिशा हरि वेख वखाए, नेत्र नैण उग्घाड़या। भेव ना पायण राजे राणे, भरमे भुल्ले जीव नादानया। गुरमुख साचे आप पछाणे, देवे धुर फ़रमाणया। एका बख्शे चरन ध्याने, धुरदरगाही देवे माणया। गऊ ग़रीब गले लगाणे, दिवस रैण वेख वखा रिहा। राज राजानां शाह सुल्तानां दर दर फिराने, कलिजुग अन्तिम वेस वटा ल्या। भेव ना पाए खाणी बाणे, पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराणया। अञ्जील

कुरानां आई हाणे, मुल्ला शेख़ मुसायक पीर फ़कीर दस्तगीर शेख होए मस्तानया। तीर मारे एका बाणे, सोहँ तिक्खा कानया। गुरमुख साचे चतर सुघड़ स्याणे, दर द्वार करे परवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका दर राउ रंकां नौ खण्ड पृथ्वी आप सुणानया। एका डंका हरि करतार, आपणा आप वजांयदा। राज राजानां शाह सुल्तानां करे ख्वार, गऊ ग़रीब आप उठांयदा। नाम खण्डा तेज कटार, लोआं पुरीआं आप वखांयदा। मनमुख जीवां पाए सार, राए धर्म सीस निवांयदा। सम्मत चौदां तेरी धार, लोकमात आप बंधांयदा। लक्ख चुरासी पैणी मार, ना कोई किसे छुडांयदा। गोबिन्द मेला हरि निरँकार, आपणा रूप समांयदा। चेला गुर पुरख भतार, नारी कन्त आप अख्वांयदा। सन्त सुहेले सच दुलार, गुरमुख साचे आप उठांयदा। सज्जण सुहेले विच संसार, साचा नाता आप तुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा राह विखांयदा। कलिजुग तेरी अन्त बरात, प्रभ एका एक रखाईआ। लक्ख चुरासी देवे दात, लाड़ी मौत डोली पाईआ। जूठ झूठ सच्चा नात, अन्तिम तोड़ निभाईआ। पारब्रह्म बैठ इकांत, दहि दिशा वेख वखाईआ। निहकलंक वेखे मार झात, चारों कुन्ट रही कुरलाईआ। सच सुच्च खटोले सुत्ता खाट, नेत्र नैण रिहा उग्घड़ाईआ। एका वस्त साचे हाट, घर साचे वेख वखाईआ। आदि अन्त ना आए घाट, हरि बैठा बेपरवाहीआ। जन भगतां वेखे काया माट, सोहँ धार चलाईआ। निर्मल जोती जगे लिलाट, जोत निरँजण आप जगाईआ। बजर कपाटी जाए पाट, आत्म दरसी दरस वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां अन्तिम तरस कर, आत्म हरस मिटाईआ। कलिजुग तेरा जगत द्वार, हरि खोल्हे नौ दरवाज़या। भरमे भुल्ले जीव गंवार, आपणा साजन ना किसे साज्जया। मिल्या मेल ना हरि मीत मुरार, ना रच्चया काया काज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए वर, आप संवारे आपणा काज्जया। आप आपणा रचया काजा, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। सतिजुग तेरी रक्खे लाजा, लोकमात जन्म दवाईआ। धुरदरगाही आए भाजा, हरि शब्द करे कुड़माईआ। दो जहानां राजन राजा, शाह सुल्ताना आप अख्वाईआ। आप आपणी मारे आवाजा, आप आपणा रिहा जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचे देवे वर, चार वरनां इक्क पढ़ाईआ। चार वरन इक्क अक्खर, हरि साचा आप पढ़ांयदा। बजर कपाटी पाड़े पत्थर, साचा तीर चलांयदा। नेत्र नीर वरोले अत्थर, अमृत झिरना इक्क झिरांयदा। पंजां चोरां करे सथ्थर, नाम खण्डा इक्क विखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, ब्रह्मण्डां पावे वंडां, एका नाम जपांयदा। एका नाम जगत अपार, हरि साचा मात धरांयदा।

५२०
०६

चार वरनां इक्क द्वार, एका धाम सुहांयदा। ऊँचां नीचां भेव निवार, राउ रंकां राज राजानां एका धाम वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विष्नूं बंसी आप अख्वांयदा। विष्नूं बंसी शब्द इकाग्र, एका एक बणाया। काया वेखे साचा सागर, अमृत जल भराया। गुरमुख विरले बणे सौदागर, रत्न अमोलक पाया। निर्मल कर्म होए उजागर, हरि साचे मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग रंगाया। आपणे रंग आपे रंग राता, दो जहानां वाली। जन भगतां देवे साची दाता, आप रहे सदा हथ्थ खाली। आपे पिता आपे माता, फल वेखे काया डाल्ही। कलिजुग मेटे अन्धेरी राता, सृष्ट सबाई हाल बेहाली। गुरमुखां बन्न्हे चरनी नाता, गुर शब्द करे दलाली। मेट मिटाए ज़ाता पाता, एका देवे नूर हक्क जलाली। रंग रंगाए दीप साता, नौ खण्ड गाए सोहँ सच कवाली। पारब्रह्म कमलापाता, गुरमुख साचे दर सवाली। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, प्रगट जोत होए अकाली। इक्क अकाल, आपणी कल वरतांयदा। दीनां बंधप दीन दयाल, गुर चेले मेल मिलांयदा। काया मन्दिर सच धर्मसाल, सतिगुर पूरा आसण लांयदा। दिवस रैण करे रखवाल, दे मति आप समझांयदा। सन्त सुहेले भाल, जोती रूप समांयदा। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल, भेखाधारी भेख वटांयदा। शब्द बणाए नाम दलाल, सच वणजारा वणज करांयदा। नेड़ ना आए काल महांकाल, जिस जन सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। सोहँ देवे शब्द धन माल, चोर यार लुट्ट ना कोई लै जांयदा। आपे शाह आपे कंगाल, दाता दानी आप अख्वांयदा। आपे बिरध बाल जवान, आप आपणे रंग समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि रूप वखांयदा। नर हरि हरि निरँकार, हरि हरि रूप समाया। आदि पुरख अपरम्पर, भेव कोई ना पाया। कलिजुग काया रच्चया इक्क सवम्बर, सच निशान लगाया। लक्ख चुरासी झूठ अडम्बर, अन्तिम लए मिटाया। ना कोई दिसे पीर पैगम्बर, गुर पीर रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा वहिण वहाया। कलिजुग तेरा झूठा वहिण, एका एक वहांयदा। मनमुख जीव सारे वहिण, प्रभ साचा आप रुढ़ांयदा। नेत्र लोचण वेखण नैण, ना कोई किसे बचांयदा। दर मंगे लाड़ी मौत डैण, प्रभ साचा झोली पांयदा। भगत सुहेला साक सज्जण सैण, गुर चेला मेल मिलांयदा। आप चुकाए लहिण देण, गोबिन्द साची सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत जुगत जोग आपणे हथ्थ रखांयदा। कलिजुग तेरा अन्तिम जोग, एका एक वखाया। लक्ख चुरासी होए वियोग, ना कोई मेल मिलाया। हउमे हँगता लग्गा रोग, हँकार विकार वधाया। रसना रस लैणा भोग, आत्म रस किसे हथ्थ ना आया।

फिरे दुहाई लोक परलोक, सच सलोक ना कोई सुणाया। प्रभ का भाणा ना कोई सके रोक, सम्मत चौदां वेख वखाया। सृष्ट सबाई दए झोक, त्रैगुण माया एका मट्ठ तपाया। धर्म राए अन्तिम वेख, दर दरवाजा आपणा आप खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द साचा संग निभाया। गोबिन्द गुर साचा मीता, एका एक अख्वांयदा। भगत जनां सद वसया चीता, आपणे रंग रंगांयदा। आप चलाए आपणी रीता, अमृत जाम प्यांअदा। सच वखाए मन्दिर मसीता, गुरुदुआरा देहुरा धाम सुहांयदा। नाम जपाए इक्क अनडीठा, लेखा लेख विच ना आंयदा। भगत जनां सद लागे मीठा, बेमुख ना रसन लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सच सलोक इक्क अल्हांयदा। साचा शब्द नाम धन, एका एक जणाईआ। गुरमुख साचे रहे मन्न, मनमुख बैठे मुख भवाईआ। आपे जाणे गुण अवगुण, ज्ञानी ध्यानी भेव ना राईआ। साजण साचा मीत जन, आत्म घर वज्जे वधाईआ। लक्ख चुरासी छाण पुण, जन भगत करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सतिगुर साचा आप अख्वाईआ। सतिगुर साचा साचा कन्त, एका एक अख्वाया। मेल मिलावा साचे सन्त, दर घर साचा इक्क वखाया। आप बणाए आपणी बणत, दूसर कोए ना नाल रलाया। जुग जुग महिंमा गणत अगणत, लिख्या लेख ना कोई लिखाया। आपे खेले आदि अन्त, जुग जुग खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरा अन्तिम लहिणा देणा रिहा चुकाया। कलिजुग तेरा अन्तिम अन्त, अन्त होए जुदाईआ। भरमे भुल्ले जीव जन्त साध सन्त, आत्म सुख सहिज कोई ना पाईआ। मिले मेल ना नारी कन्त, सुरत शब्द ना मेल मिलाईआ। काया चोली ना चाढ़े रंग बसन्त, रुत्त ना कोई मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां रिहा सेव कमाईआ।

सति पुरख प्रभ एक, एका घर वसाया। शब्द रखाए टेक, दूजा दर खुल्हाया। तीजे नेत्र वेख, भगत मेल मिलाया। चौथा घर विसेख, हरि सन्तन डेरा लाया। पंचम लिख्या लेख, दो जहानी रिहा मिटाया। छेवां मूंड मुंडाए ना धारी केस, रूप अनूपा आप अख्वाया। घर सत्तवें इक्क आदेस, आपणी आप कराया। अट्ठ तत्त दर दरवेश, दिवस रैण मंग मंगाया। नौ दर भुल्ले नर नरेश, नर नरायण दिस ना आया। घर दसवें रहे हमेश, आत्म सेजा आसण लाया। भेव ना पायण ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, हरि भगवन्ता इक्क इकन्ता साचे धाम सुहाया। आपे जाणे आपणे वेस, जुग जुग करदा आया। आपे

गोबिन्द दस दस्मेस, कल्गी तोड़ा सीस टिकाया। आपे होया दर दरवेश, जन भगत द्वारे अलख जगाया। बाल अवस्था अल्लड़ वरेस, बाली बुध अख्वाया। लोआं पुरीआं रिहा वेख, दिस किसे ना आया। कलिजुग तेरी अन्तिम मेटे रेख, लेखा आपणे हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दुआरा इक्क खुल्हाया। दर दुआरा इक्क निरँकार, आपणा आप खुल्हाया। कलिजुग सतिजुग होए भिखार, दोए बैठे सीस झुकाया। कलिजुग रोवे ज़ारो ज़ार, वेले अन्त दए दुहाया। सतिजुग साचे करे प्यार, चरनी सीस झुकाया। सोहँ शब्द अधविचकार, प्रभ सालस आप कराया। कलिजुग कर्मा करे विचार, कूड़ कुड़यार अग्गे डाहया। सतिजुग धर्म करे जैकार, एका नाअरा लाया। सो पुरख निरँजण हरि करतार, आपे वेखण आया। हउमे हँगत होए ख्वार, ना दिसे कोई सहाया। सतिजुग मंगता दर दरबार, प्रभ अग्गे झोली डाहया। भरनहारा आप भण्डार, घर साचा वेख वखाया। जोती जामा भेख अपार, लोकमाती फेरा पाया। लक्ख चुरासी अन्दर बाहर, गुप्त ज़ाहिर फोल फुलाया। लोआं पुरीआं इक्क अधार, एका अंक वखाया। सम्मत चौदां बन्न्हे धार, दस चेत्र दिवस सुहाया। सन्त सुहेले लए उभार, आप आपणे अंग लगाया। मनमुख जीव दुष्ट दुराचार, राए धर्म दए सज़ाया। सोहँ खण्डा तेज कटार, ब्रह्मण्डां रिहा वखाया। शाह सुल्तानां करे ख़बरदार, लिख्या लिख्त लेख लिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चार वरन इक्क दर, साची सिक्खी रिहा सिखाया। चार वरन इक्क भण्डार, आपे आप वरतांयदा। सतिजुग साचा खोल्ह द्वार, कलिजुग मेट मिटांयदा। शब्द शब्दी जै जैकार, जै जै जैकारा आप करांयदा। नर नरायण लै अवतार, निहकलंका नाउँ रखांयदा। गोबिन्द काया कर प्यार, जोती शब्द मेल मिलांयदा। गुरमुख गुरसिख भगत अधार, भगती भगत सेवा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अगम्म अपारा दरस दिखांयदा।

✻ १० चेत २०१४ बिक्रमी हरबंस सिँघ दे गृह इक्की परिवारां दा इक्ठ होया
पिण्ड अजनौध ज़िला लुध्याणा ✻

जुग जुग माण निमाणयां, देवणहार दातार। चले चलाए आपणे भाणया, वरते वरतावे विच संसार। किसे हथ्थ ना आए राजे राणया, भरमे भुल्ले जीव गंवार। जन भगतां करे आप पछाणया, पारब्रह्म प्रभ पाए सार। एका बख्शे जिया दानया, साचा धर्म विचार। नाम निधाना देवे गुण निधानया, पूर्ब कर्म विचार। दर द्वार करे परवानया, आप आपणी किरपा धार,

दर घर साचा मेल मिलानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, फड़ बांहो लाए पार। गुरमुख साचा बाल अञ्जाणा, प्रभ साचा आपणी गोद उठांयदा। किसे हथ्थ ना आए राजे राणा, भरमे भुल्ले भरम भुलांयदा। दर द्वारे देवे माणा, होए निमाणा जो सीस झुकांयदा। शब्द बिठाए सच बिबाणा, पुरीआं लोआं आप उडांयदा। अमृत आत्म पीणा खाणा, साचा राग अलांयदा। धुरदरगाही इक्क फ़रमाणा, जुग जुग मात सुणांयदा। भगत जनां दर कर परवाना, आपणी सेवा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे पार करांयदा। हरिजन साचा साजण मीता, हरि एका एक रखाया। जुग जुग चलाए अचरज रीता, आप आपणे रंग रंगाया। इक्क सुणाए सुहागी गीता, साचा छन्द सुणाया। इक्क कराए हस्त कीटा, ऊँचो नीच कराया। देवे शब्द नाम अनडीठा, अन्तिम झोली रिहा पाया। मनमुख वेखे कौड़ा रीठा, गढ़ हँकार तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिलाया। साचा मेला हरि बनवारी, आपणा आप करांयदा। भगत जनां सद पहरेदारी, दिवस रैण अख्वांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, आप आपणा रंग रंगांयदा। खेले खेल वड संसारी, लेखा लेख ना कोई लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वसया घर, घर बाहरी इक्क अख्वांयदा। गुरमुख चतर सुजान, एका एक अख्वाया। आत्म जोती ब्रह्म ज्ञान, दीपक एका शब्द जगाया। शब्द फड़ाए धर्म निशान, चारे कुन्टां रिहा वखाया। ऊँच नीच राउ रंक शाह सुल्तान, एका दूजा भेव चुकाया। जोद्धा सूर बली बलवान, हरि वड्डा शाहो भूप आप अख्वाया। जन भगतां देवे नाम निधान, अमृत आत्म इक्क प्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे आत्म घर, घर बाहर इक्क सुहाया। गुरसिख तेरी आत्म सिक्क, हरि साचा आप बुझांयदा। धुरदरगाही लेख लिख, अन्तिम मेल मिलांयदा। नेत्र लोचन आपे पेख, दर द्वार अन्त सुहांयदा। मस्तक लाए साची मेख, ना कोई जड़ उखड़ांयदा। दूई द्वैती लाहे विक्ख, एका रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा संग निभांयदा। पारब्रह्म प्रभ सगला साथ, एका एक रखाया। मस्तक लहिणा देवे माथ, जुग जुग मूल चुकाया। नाम चढ़ाए साचे राथ, रथ रथवाही आप अख्वाया। मिल्या मेल त्रैलोकी नाथ, विछड़ कदे ना जाया। शब्द चलाए महिंमा अकथ, जिह्वा कथ ना सके राया। सगल वसूरे जायण लथ्थ, आत्म दरसी दर्शन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे देवे वर, ग़रीब निमाणा गले लगाया। गुरमुख साचे साचा हित, हरि साचा आप कराया। दो जहानां साचा मित, एका एक अख्वाया। दरस दिखाए नित नवित्त, आपणा भेख वटाया। लेखे लाए बूंद रित, मानस देही लेखे लाया। पारब्रह्म प्रभ दस चेत, चित वत ना ठगोरी पाया। अमृत

आत्म काया सित, हरि हरि हवन रिहा कराया। आपे मात आपे पित, आपणी गोद उठाया। आपे जाणे वार थित, गुरमुख साचे लए तराया। धन्न भाग दिहाड़ा महीना चेत, दस दसवां दस घर आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे देवे वर, आत्म तृष्ना भुक्ख मिटाया। गुरमुख साचे सद बलिहार, हरि साची सेव कमाईआ। दो जहानां लाए पार, बेड़ा बन्ने लाईआ। मनमुख जीव डोबे विच मँझधार, कलिजुग कूके दए दुहाईआ। मीत मुरार साक सज्जण मात पित भाई भैण कोए ना संग निभाईआ। जूठे झूठे जीव गंवार, खाली ठूठे हथ्थ फड़ाईआ। माया रूठे विच संसार, भेव कोई ना पाईआ। भगत जनां हरि साचा तुट्ठे, अतुट भण्डार रखाईआ। आप बंधाए एका मुट्ठे, गुर संगत पैज रखाईआ। चरन द्वारे चरनोधक रस साचा लुट्टे, आत्म तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। होए प्रकाश दहि दिशा चार कूटे, लोआं पुरीआं आप कराईआ। सतिजुग लगाए साचे बूटे, फल फुलवाड़ी आप रखाईआ। सोहँ शब्द हुलारा देवे झूटे, दो जहानां पार कराईआ। जुगां जुगां दे विछड़े रूठे, कलिजुग अन्तिम रिहा मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे वसया तेरे घर, दर द्वार बंक सुहाईआ। गुरमुख साचे चरन प्यार, एका एक रखाया। आप आपणा कर अधार, एका नाउँ जणाया। संगी साथी मीत मुरार, सगला साथ तजाया। गुर संगत इक्क विहार, इक्क द्वार सुहाया। नाम रंगत तन श्रृंगार, काया चोली आप चढ़ाया। जिउँ नानक अंगद पहला अपर अपार जोती जोत टिकाया। दूसर दर ना कोई मंगत, भिख्या भिच्छया रिहा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निर्धन एका एक अख्वाया। गुरमुख तेरा शब्द मलाह, हरि साचा आप बणांयदा। तख्त सुल्तान बैठ बेपरवाह, दो जहानां वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी कटे फाह, साचे मार्ग लांयदा। इक्क जपाए साचा नाँ, निरगुण मेल मिलांयदा। सरगुण उठाए साचा थाँ, आपणी बूझ बुझांयदा। शब्द सरूपी पकड़े बांह, जगत विछोड़ा आप कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख आपणी गोद उठांयदा।

जन मजन इशनान, चरन गुर धूड़या। अमरापद पान, मूर्ख मुग्ध मूढ़या। हरि साचा मेहरवान, लक्ख चुरासी कटे जूड़या। जिस जन देवे जिया दान, नाता तोड़े कूड़ो कूड़या। मिले मेल श्री भगवान, एका रंग चढ़ाए गूढ़या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन बख्शे चरन धूढ़या। चरन धूढ़ सच्चा इशनाना, मस्तक ख़ाक रमाईआ। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञाना, अन्ध अज्ञान मिटाईआ। दीपक जोती जगे महाना, जोत निरँजण आप जगाईआ। शब्द बिठाए सच बिबाणा, गुर पूरा आप उडाईआ। जगत द्वारे पार कराना, भगत दुआरा इक्क विखाईआ। नाम शस्त्र इक्क महाना,

हरि साचा तन पहनाईआ। तीर निशाना इक्क रखाना, दो जहानां रिहा चलाईआ। आत्म धुन शब्द तराना, अनहद रिहा उपजाईआ। भगत भगवन्ता मेल मिलाना, सन्त सुहेला आप अख्वाईआ। जीव जन्त भेव ना पाना, मन ममता रही कुरलाईआ। आदि अन्त धुर फ़रमाणा, जुग जुग रिहा सुणाईआ। कलिजुग खेले खेल महाना, चार वरनां इक्क बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ग़रीब निमाणे जगत निधाने आप आपणे गले लगाईआ। सति पुरख निरँजण आपणी धार, साची आप बणाईआ। आप आपणा कर आकार, आपे रिहा समाईआ। जोती नूर अपर अपार, एका एक करे रुशनाईआ। ना कोई दिसे गुरदर मन्दिर चार दिवार, खाणी बाणी कोए नज़र ना आईआ। पारब्रह्म प्रभ पुरख अपार, एका एक रूप समाईआ। ना कोई शस्त्र बस्त्र तेज कटार, ना कोई खण्डा हथ्थ उठाईआ। लक्ख चुरासी जीव जन्त साध सन्त ना कोए धार, देवत सुर दिस ना आईआ। ब्रह्मा विष्न शिव ना कोए पसार, ना कोई बणत बणाईआ। ना कोई नर ना कोई नार, पूत सपूत ना कोए जणाईआ। ना कोई बस्त्र तन शृंगार, नेत्र नैण ना कोई वखाईआ। रूप रंग ना कोए करतार, करता पुरख आप अख्वाईआ। सर सरोवर ना कोई गंग, अठ्ठ सठ्ठ दिस ना आईआ। वेद पुराण अञ्जील कुरान ना कोई मंगे मंग, ईसा मूसा मुहम्मद दिस ना आईआ। ना कोई सूरबीर दिसे संग, राज राजान शाह सुल्तान तख्त ताज ना रिहा वखाईआ। चार दिवारी ना दिसे कोई मकान, अंडज जेरज उत्भज सेत्ज खाणी कोई दिस ना आईआ। आप आपणी महिंमा विच रिहा लुझ, आपणे भाणे विच समाईआ। अवर ना सके कोई बुझ, अभेद अभेदा हरि रघुराईआ। आपणा भेव रखाया गुज्झ, सच घर बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका एक अख्वाईआ। आदि पुरख इक्क आकारा, एका एक कराया। आपे जाणे आप पसारा, भेव कोए ना राया। लोआं पुरीआं ना कोई पार किनारा, ब्रह्मण्ड खण्ड कोई दिस ना आया। गगन पाताल आकाश प्रकाश, सूरज चन्द रवि ससि ना कोए चढ़ाया। एका एक सर्ब गुणतास, घर साचे बैठा आसण लाया। पारब्रह्म पुरख अबिनाश, पुरख अबिनाशी आप अख्वाया। साचे मण्डल पावे रास, एका रचन रचाया। आदि अन्त ना जाए विनाश, एकँकार एका धाम सुहाया। रैण दिवस ना कोई मास, साल सम्मती ना कोए जणाया। जंगल जूह उजाड़ पहाड़, जल थल ना कोई वास, पाताल पाताली दिस ना आया। धरत धवल ना कोए धरवास, पवण पवणी ना सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर एका रिहा सुहाया। सति पुरख निरँजण आदि अन्त, एका एक अख्वांयदा। ना कोई साध ना कोई सन्त, जीव जन्त ना कोई वखांयदा। ना कोई देव ना कोई दंत, पारब्रह्म महिंमा अगणत, ना कोई गणत गिणांयदा।

आप बणाए आपणी बणत, आपणा धाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर द्वार इक्क रखांयदा। आदि पुरख इक्क अकाल, एका एक अख्वाया। आपे होए दीन दयाल, आपणे बंधन आप कटाया। आपणी करे आप रखवाल, पहरेदार कोई दिस ना आया। आपे बैठ सच्ची धर्मसाल, ग्रन्थ पन्थ ना कोए रचाया। ना कोई काल महांकाल, धर्म राए ना वेख वखाया। चित्रगुप्त ना दिसे नाल, ना कोए हिसाब कराया। पंज तत्त ना दिसे डाल़, त्रैगुण माया ना मूल विखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क सुहाया। आदि पुरख आदि अन्ता, एका एक अख्वांयदा। आप बणाए आपणी बणता, आपे पति आप पतिवन्ता, आपे नारी आपे कन्ता, आप आपणी सेज हंढांयदा। आपे जीव आपे जन्ता, आपे काया चोली रंग बसन्ता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क वखाए साचा घर, साचा धाम सुहांयदा। आदि पुरख इक्क अकाला, एका धाम सुहाया। नाम रखाए सच महल्ला, घर बैठा आसण लाया। ऊँचो ऊँच ऊँच अटला, थिर घर रिहा उपाया। जोती जोत आपे रला, आप आपणा आसण लाया। दर दुआरा एका मल्ला, साची सेज हंढाया। सर सरोवर ना कोई दिसे थला, नीर सीर ना कोए रखाया। दुष्ट दूत दुराचार संग ना कोई ठग्ग चोर यार, काम कामनी नज़र ना आया। मन मति बुध ना दूई द्वैती सल्ला, एका धार ना कोई वखाया। तीजा चौथा ना कोई रल्ला, पंचम राग ना कोई अल़ाया। छेवां सत्तवां ना कोई करे मेला, सति पुरख निरँजण आदि जुगादी एका धाम सुहाया। सन्त साध ना कोई दर द्वार खला, ना कोई भिख मंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आदि निरँजण आपणे रंग रंगाया। आदि पुरख नर निरँकार, एका रंग रंगाईआ। आपे बणे दर भिखार, आपे भिच्छया पाईआ। आपे बणे हरि वरतार, आपे मंगण जाईआ। आपे भरनहार भण्डार, आपे खाली रिहा कराईआ। आप आपणा दए हुदार, आपे मुख भवाईआ। आपे कराए वणज वपार, लेखा रिहा लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख निरँजण एका घर साचा धाम सुहाईआ। साचा धाम जोत निरँजण, एका एक जगाईआ। पुरख अबिनाशी साचा सज्जण, घर साचे बैठा आसण लाईआ। दूसर ना कोई दिसे पड़दे कज्जण, दूसर कोए ना संग निभाईआ। ताल तलवाड़े ना कोई वज्जण, अनहद राग ना कोई सुणाईआ। ना कोई हाजी करे हज्जन, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ ना कोए नुहाईआ। दर मन्दिर अन्दर मजन, दर द्वार ना कोई सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वसया साचे घर, घर साचा इक्क सुहाईआ। साचा धाम खुल़ड़ा, एका एक सुहाया। आपे बैठा इक्क इकल्लड़ा, आप आपणा संग निभाया। सति पुरख निरँजण इक्क वसाए सच महल्लड़ा, साची बणत बणाया। ना कोई छप्पर छन्न छन्नड़ा, चार दिवार

ना कोई रखाया। आपणा बेड़ा आपे बंनृड़ा, खेवट कोए ना नाल रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति पुरख निरँजण एका घर साचा शाहो आप वसाया। साचा घर हरि अगम्म अथाह, आपणा आप उपा रिहा। उत्ते बैठा बेपरवाह, सति सरूप समा रिहा। ना कोई शब्द ना कोई राग, ना कोई जिह्वा गा रिहा। ना कोई पिता ना कोई माँ, पूत सपूता ना कोई गोद उठा रिहा। ना कोई धुप्प ना कोई छाँ, सूरज चन्न ना कोई चढ़ा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाणे साचा घर, दर द्वार इक्क सुहा रिहा। दर द्वार हरि भगवन्ता, एका एक सुहाया। आदि जुगादी जुगा जुगन्ता, जगत जगदीसा आप अखवाया। आप बणाई आपणी बणता, आप आपणी सेवा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति पुरख निरँजण दित्ता वर, आपणी दया कमाया। सति पुरख निरँजण वड दातार, आपणी दया कमांयदा। निर्मल जोती कर प्यार, एका रूप वटांयदा। शब्द शस्त्र हरि अपार, सार नाउँ रखांयदा। तिक्खी रक्खे आपे धार, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे अंग लगांयदा। आप आपणे अंग लगाया, शब्दी पूत उपांयदा। दूसर दर ना मंगण जाया, साचा संग निभांयदा। जोती रंगण इक्क चढ़ाया, नूरो नूर करांयदा। चिट्टे अस्व तंग कसाया, सोलां कलीआं आसण लांयदा। साचा दर द्वार लँघ वखाया, पुरख अबिनाशी सीस हथ्थ टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख देवे वर, पूत सपूता आप अखवांयदा। शब्द सुत हरि बलवान, आपणा आप उपाया। आपे वेखे मार ध्यान, दिवस रैण सेव कमाया। हथ्थ फड़ाए इक्क निशान, ना कोई मेटे मेट मिटाया। एका नूर इक्क ज्ञान, इक्क ध्यान रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मार्ग रिहा उपाया। साचा शब्द हरि सिक्दार, आपणा आप बणाया। आपे कीता ख़बरदार, दे मति समझाया। ब्रह्मण्डां खण्डां पौणी सार, लोआं पुरीआं राह वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची धारा रिहा विखाया। साची धारा हरि निरँकार, आपणी आप चलाईआ। शब्द सरूपी कर जैकार, एका खण्डा रखाईआ। पंचम मीता हो त्यार, आपणी बणत बणाईआ। आपे अन्दर आपे बाहर, गुप्त जाहिर हरि समाईआ। चौथे घर खोलृ किवाड़, बैठा आसण लाईआ। ना कोई दिसे पंचम धाड़, हरि निरँकार आपणी आप सलाहीआ। ना कोई दिसे बहत्तर नाड़, नौ दर ना वेख वखाईआ। वा ना लग्गे तत्ती हाढ़, प्रभ साची रुत्त सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर चौथा रिहा वखाईआ। चौथे घर शब्द निशान, हरि एका एक रखाया। आपे होए पुरख सुल्तान, साचे राह चलाया। दर द्वारे कर परवान, सेवक सेवा लाया। गुणवन्ता हरि निधान, लेखा आपणे हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर साचा

आप सुहाया। चौथा घर हरि भगवन्त, एका एक सुहांयदा। आपे मेले साचे सन्त, साचा राह वखांयदा। एका नारी एका कन्त, एका सेज हंढांयदा। एका एक शब्द सुत्त, एका रंग चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा आप सुहांयदा। चौथा घर हरि निरँकार, एका एक रखाया। ना कोई पवण ना मसाण, ना कोई दीप जगाया। सति सरूप हरि भगवान, रूप अनूप रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ना कोई दिशा ना कोई कूट, एका रंग वखाया। चौथा घर हरि भगवन्त, एका एक सुहाया। आप बणाए आपणी बणत, बाडी कोए ना नाल लगाया। मेल मिलावा साचे कन्त, हरि साचा रिहा मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा लेखा रिहा लिखाया। चौथे घर खोल्ह किवाड़, आप आपणी कल धारया। त्रैगुण माया कर पसार, ब्रह्मा सेवा ला रिहा। कँवल कँवला कर उज्यार, पूत सपूता आप उपा रिहा। धरती धवला धरत अपार, जल धारा आप टिका रिहा। लोआं पुरीआं कर आकार, पाताल आकाशां बणत बणा रिहा। सूरज चन्द पसर पसार, तारा मण्डल हरि लटका रिहा। आपे वसया सभ तों बाहर, हर घट आसण ला रिहा। आपे लिखे लेख लिखार, आपे शब्द जणा रिहा। ब्रह्मा नेत्र रिहा उग्घाड़, मुख चारे रसना गा रिहा। पुरख अबिनाशी किरपा धार, एका ओट रखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा शब्द जणा रिहा। ब्रह्मा मंगे दर भिखार, प्रभ साचे दया कमाईआ। बख्शे दाता शब्द भण्डार, लेखा रिहा लिखाईआ। चारे वेदां पावे सार, गणत गणी ना जाईआ। सतिजुग द्वापर त्रेता कलिजुग धार, लेखा रिहा लिखाईआ। पंचम तत्त कर त्यार, पंझी मेल मिलाईआ। अट्ठां वक्खर भेव न्यार, नौ दर खोल्ह वखाईआ। दसवें बैठा नरायण नर निरँकार, साची सेजा आसण लाईआ। बहत्तर नाड़ी जोड़ जुड़ार, एका धार वहाईआ। तिन्न सौ सट्ठ हाडी साची कार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा संग निभाईआ। सेवक सेवा दर परवान, आपे आप करांयदा। आपे वेखे मार ध्यान, दे मति आप समझांयदा। इक्क शब्द इक्क ज्ञान, एका ब्रह्म समझांयदा। नूरो नूर हरि भगवान, नूर नुरानी जोत जगांयदा। नाद तूरत इक्क महान, आत्म धुन उपजांयदा। साचा मीता विच जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे धन्दे आपे लांयदा। आपणे धन्दे आपे लाए, दिस किसे ना आया। विष्नूं वंसी आप हो जाए, भेखाधारी भेख वटाया। शिव शंकर बैठा संग रलाए, बाशक तशका गल लटकाया। इक्क भण्डारी इक्क संसारी, मारनहार इक्क अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोआं पुरीआं बणत बणाया। लोकमात हरि बणत बणाई, वरभण्डी बणत बणांयदा। लक्ख चुरासी रिहा उपाई, साची वंड वंडांयदा। निरगुण सरगुण खेल खिलारी, आपे मेल विछोड़े विछड़े मेल मिलांयदा। जोत

५२६
०६

निरँजण दीप जगाई, एका राह वखांयदा। साचे शब्द करे कुड़माई, साचा सगन मुख लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप वसया आपणे घर, जुग जुग बणत बणांयदा। जुग जुग बणत बणाई, आपणा पसर पसारया। आपे वेखे खेल रघुराई, भेव किसे ना पा ल्या। सतिजुग त्रेता रचन रचाई, आप आपणा रूप वटा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भेखाधारी भेख अख्वा ल्या। आप आपणा भेख वटाए, लए जुग अवतारा। साचा लेखा लेख लिखाए, करे पसर पसारा। सतिजुग साचा पार कराए, वार अठारां जोत जगाए इक्क इकल्ला एकँकारा। त्रेता तेरी धार वहाए, दोए दोई वारा। राम रामा आप हो जाए, रावण दुष्ट करे सँघारा। द्वापर बेड़ा बन्न्ह विखाए, वेद व्यासा लेख लिखाए, काहना कृष्ना रूप वटाए, मेट मिटाए धुँदूकारा। कलिजुग अन्तिम रचन रचाए, ऐड़ा अल्ला नूर उपाए, अत्थरबण वेद गया लिखाए, ईसा मूसा लए जगाए, संग मुहम्मद चार यार रलाए, अल्ला राणी लेख लिखाए, वेखे वारया। नानक निरगुण सेवा लाए, लोकमाती जन्म दवाए, वड देवी देवा आप अख्वाए, भेव अभेदा भेव ना पा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वसया साचे घर, घर साचा इक्क सुहा रिहा। नानिक नानक जोत जगाई, हरि साचे हथ्थ वड्याईआ। दिवस रैण रिहा रसना गाई, प्रभ मिलण दी आस रखाईआ। पुरख अबिनाशी दया कमाई, शब्दी मेल मिलाईआ। दर द्वारे आया चाँईं चाँईं, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। पारब्रह्म प्रभ पकड़े बांही, आपे वेखे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वसया साचे घर, लोआं पुरीआं दे मति रिहा समझाईआ। नानक एका गोबिन्द धार, हरि गोबिन्द दया कमांयदा। मंगे मंग बण भिखार, हरि साचा झोली पांयदा। सति नाम इक्क अधार, साची वस्त विखांयदा। सति पुरख इक्क इकल्ला ओंकार, निरँकार रूप समांयदा। नानक वर पाया पुरख भतार, साची नारी आप हो जांयदा। मिल्या मीत हरि मुरार, विछड़ कदे ना जांयदा। हरबंस दरस अपार, सगली चिन्त मिटांयदा। आत्म तृष्ना भुक्ख निवार, एका राग अलांयदा। शब्द सरूपी साची धार, निझर इक्क झिरांयदा। आपे अन्दर आपे बाहर, दस्म द्वारी भेव खुलांयदा। सुन अगम्मो होया बाहर, ओंकारा देस सुहांयदा। सति पुरख निरँजण पावे सार, आप आपणी बूझ बुझांयदा। निर्मल जोती कर अकार, दीपक एका एक जगांयदा। शब्द खण्डा तेज कटार, साची हथ्थ फड़ांयदा। लोकमात कराए वणज वपार, लक्ख चुरासी दे मति समझांयदा। नानक छड्डया दर दरबार, दर द्वारे सीस झुकांयदा। मातलोक आए विच संसार, साची सेव कमांयदा। नाम सति जगत अधार, चार वरन ज्ञान दृढ़ांयदा। चारों कुन्ट मार उडार, जीआं जन्तां साधां सन्तां गढ़ हँकारी तोड़ तुड़ांयदा। कलिजुग काया गई हार, मनमुख जीव भेव ना पांयदा। नानक अंगद कर प्यार,

आप आपणी जोत टिकांयदा। पारब्रह्म प्रभ तेरी सार, भेव कोई ना पांयदा। जीव जन्त होए विभचार, साध सन्त आत्म ब्रह्म ना कोई ज्ञान जणांयदा। कलिजुग होए अन्तिम अन्त, निहकलंक वजाए डंक, आप उठाए राउ रंक, जूठ झूठ माया लूठ, अन्त निशान मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नाउँ रखांयदा। निहकलंका नर निरँकार, एका एक अख्वाया। एका खण्डा तेज कटार, साचे तन सजाया। नौ खण्ड पृथ्वी मारे मार, सत्तां दीपां रिहा हिलाया। राज राजानां शाह सुल्तानां करे ख़बरदार, राउ रंकां रिहा जगाया। गुरमुखां करे सद प्यार, सज्जण सुहेला आप अख्वाया। अमृत आत्म बख्शे ठण्ढा ठार, निझर रस चुआया। मेल मिलावा सच द्वार, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाया। साची हाटी सच दरबार, सोहँ अक्खर जगत वक्खर वणज वपार कराया। एका देवे नाम अधार, तृष्ना भुक्ख मिटाया। काया गढ़ तुट्टे हँकार, काया सांतक सति वरताया। उप्पर चढ़ सच्ची सरकार, आत्म सेजा आसण लाया। गुरमुख साचे कर प्यार, आप आपणी भुजा उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दूजा भेव चुकाया। एका दूजा भउ चुकाए, मिले मेल अबिनाशा। तीजा नेत्र खोल्ह विखाए, जोत जगाए पृथ्वी आकाशा। चौथे घर सहिज समाए, निज घर आत्म रक्खे वासा। पंचम ढोल मृदंग वजाए, अनहद पावे रासा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे मेल मिलाए, नाम जपाए रसन स्वास स्वासा। साचा मेला आत्म घर, आपणा आप करांयदा। आपे बख्शे किरपा धार, आपणी दया कमांयदा। आपे करे बन्द किवाड़, आपे मुख भवांयदा। आप उठाए पंचम धाड़, आपे मेट मिटांयदा। आपे जोत जगाए बहत्तर नाड़, अन्ध अन्धेर गंवांयदा। आपे माया ममता मोह अग्नी देवे साड़, सांतक सति आप करांयदा। आप प्रनाए नाल मौत लाड़, आपे शब्द बिबाण उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख मेला साचे घर, घर साचा आप सुहांयदा। साचा घर साचा बंक, हरि एका एक सुहाया। ना कोई राउ ना कोई रंक, ऊँच नीच दिस ना आया। भगत सुहेला मेल मिलाए जिउँ जन जनक, साचा राह विखाया। प्रगट होए वासी पुरी घनक, निहकलंका नाउँ रखाया। साधां सन्तां गुरुआं पीरां राज राजानां शाह सुल्तानां कढ्ढे शंक, नौ खण्ड पृथ्वी भेख मिटाया। इक्क वजाए साचा डंक, सोहँ जै जैकार कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण रूप वटाया। निहकलंक नरायण नर, आपणी कल वरताईआ। कलिजुग तेरी काली धार, अन्तिम वेख विखाईआ। गुर गोबिन्द कर त्यार, साचा संग निभाईआ। सम्बल नगर इक्क अपार, बैठा आसण लाईआ। अन्तिम वेला कर प्यार, गुरमुख आत्म जोत जगाईआ। भरमे भुल्ले जीव गंवार, दिस किसे ना आईआ। जन भगतां देवे सद दरस अपार, आत्म

दरसी दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द तेरा वेखे घर, दर साचा आप सुहाईआ। गोबिन्द तेरा साचा घर, आत्म वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी आवे डर, ना कोई भेव पांयदा। पारब्रह्म प्रभ बैठा वड़, किला बणाए कोट गढ़, ना कोई तोड़ तुड़ांयदा। सन्त सुहेले लए फड़, नौ द्वारे पार करांयदा। एका शब्द सरूपी लए फड़, अन्दर मन्दिर मेल मिलांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, सिँघ शेर सीस कटांयदा। कलिजुग अग्नी गया सड़, जोती जामा पांयदा। लोआं पुरीआं रिहा लड़, ब्रह्मा शिव उठांयदा। करोड़ तेतीसा रिहा सड़, अमृत मेघ ना कोई बरसांयदा। दिशा लहिंदी करे दो धड़, साचा लेख लिखांयदा। पंचम जेठी इक्क वहाए हड़, लक्ख चुरासी आप रुढ़ांयदा। कलिजुग तेरा काया गढ़, हरि आपे तोड़ तुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग तेरी रुत्त सुहाए मनमुखां वढ्ढे नक्क गुत, लज पति ना कोए रखांयदा। सम्मत चौदां तेरी धार, प्रभ साचा रिहा वहाईआ। पहली चेत्र दिवस विचार, गुरसिक्खां रिहा जगाईआ। एका इक्की एका वार, कलिजुग रिहा पाईआ। गुर गोबिन्दा साची सिक्खी कर प्यार, वाली हिन्दे रिहा उठाईआ। नेत्र पेख विच संसार, जो सरसे गया रुढ़ाईआ। लेख लिखे अपर अपार, दर साचे लेख लिखाईआ। पढ़ पढ़ थक्के जीव गंवार, जगत विद्या भेव ना राईआ। अक्खर वक्खर हरि निरँकार, आपणा आप लिखाईआ। बजर कपाटी पाड़े पत्थर, जो जन रसना गाईआ। सो पुरख निरँजण साची वस्त, सस्से होड़े नाल रलाईआ। हँ हँगता देवे मार, हरि हथ्थ रक्खी वड्याईआ। साची संगत कर प्यार, दर द्वारे फेरा पाईआ। आपे मंगता बण भिखार, एका मंगण मंग मंगाईआ। भुक्खा नंगता ना कोई दरबार, बीस इकीसा दए दुहाईआ। जगत जगदीसा होए उज्यार, छत्र सीसा इक्क झुलाईआ। विच उनीसा होए ख्वार, अल्ला राणी बैठी मुख छुपाईआ। अठ्ठ अठारां जल जल धार, दहि दिशा रही ढाहीआ। सम्मत सतारां मारे मार, सर अमृत थेह कराईआ। सम्मत सोलां वेख विचार, ब्यास किनारा पार कराईआ। पन्दरां वेखे इक्क जैकार, सृष्ट सबाई रिहा रुलाईआ। चौदां लोकां सम्मत चौदां पावे सार, पंचम जेठ रिहा उठाईआ। वाली हिन्द रहिणा ख़बरदार, निहकलंक रिहा कराईआ। शब्द डंका वज्जे अपर अपार, सुणे सर्ब लुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, स्यासत विरासत किसे रहिण ना पाईआ। ना कोई सुघड़ ना कोई स्याण, राज राजान ना कोई अख्वांयदा। प्रगट होए श्री भगवान, भाणा आपणे हथ्थ रखांयदा। रसना चिल्ले चाढ़े तीर कमान, सोहँ मुखी तिक्खी धार करांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क निशान, मुनी रिखी भेव ना पांयदा। ना कोई जाणे वेद पुराण, अञ्जील कुरान दिस ना आंयदा। खाणी बाणी होए हैरान, अभेद अभेदा मुख छुपांयदा।

❊ ११ चेत २०१४ बिक्रमी बचन सिँघ दे गृह पिण्ड ध्यान पुर ज़िला अम्बाला ❊

गुर सतिगुर गुरदेव, एका एक मनाया। पारब्रह्म प्रभ एका एक अलख अभेव, दूसर कोई दिस ना आया। हरिजन लगाए साची सेव, आप आपणी दया कमाया। अमृत आत्म बख्शे साचा मेव, रसना जिह्वा फल खवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मूल मूला रिहा चुकाया। चुक्कया मूल हरि आप चुकाई, आपणी दया कमाईआ। जगत भूल रहे ना राई, साचा सईआ मेल मिलाईआ। नाम कन्ढे तोल तुलाई, तोलणहारा हरि रघुराईआ। शब्द भण्डारा खोल्ह वखाई, गुरमुख साचे संग निभाईआ। आप अडुल अडोल डुल्ल कदे ना जाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे साचा वर, धीरज यति मति इक्क समझाईआ। गुरसिख साचा चतर सुजान, चरन कँवल चित लाया। आपे वेखे मार ध्यान, नित नवित्ता मेल मिलाया। दरस दिखाए दर घर आए, मानस देही लेखे लाया। लक्ख चुरासी फंद कटान, धर्म राए ना दए सज़ाया। साचा मेला श्री भगवान, विछड़ कदे ना जाया। आत्म देवे जिया दान, जीवत जीव हरि हरि सुक्ख पाया। तुट्टे माण अभिमान, आत्म उपजे इक्क ब्रह्म ज्ञान, इक्क ध्यान रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन हरि देवे भगती वर, नाम दात हरि झोली पाया। नाम दात सच सुग़ात, धुरदरगाही लिआईआ। मेट मिटाए अन्धेरी रात, साचा चन्द चढ़ाईआ। ना कोई पुच्छे ज़ात पात, नीच ऊँच ऊँच नीच एका रंग रंगाईआ। साचा मेला कमलापात, कन्त कन्तूहल सखा सखाई आप सहाईआ। दुरमति मैल देवे काट, साचा नाम जाप जपाईआ। एका वस्त साचे हाट, हरि साचे आप रखाईआ। भाग लगाए काया माट, जोत निरँजण आप जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एक विखाए तीर्थ ताट, अट्ठ सट्ठ मूल चुकाईआ। तीर्थ तट्ट सच किनारा, एका चरन द्वारया। गुर पूरा करे पार उतारा, जुग जुग पावे सारा, कलिजुग अन्तिम लए उतारा, गऊ ग़रीबां रिहा उधारया। आत्म भरे नाम भण्डारा, आपे बणया मात वरतारया। देवण देवे वारो वारा, आदिन अन्ता एकँकारया। आपे जाणे गुण अवगुण, पारब्रह्म पुरख अपारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख आत्म देवे वर, एका वस्त झोली पा रिहा। एका वस्त नाम ख़ज़ाना, हरि साचा झोली पांयदा। दानी दाता दातार, दिस किसे ना आंयदा। अमृत आत्म जाम प्याए ठांढा सीना, सांतक सति वरतांयदा। काया चोली रंग चाढ़े मजीठा, साची रुत्त सुहांयदा। वेख वखाए लोक तीना, जोत सरूपी फेरा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वेखे दर, दर दुआरा इक्क सुहांयदा। हरिजन तेरी सच पुकार, दिवस रैण रही जगाईआ। पारब्रह्म होए ख़बरदार, जन भगतां राह तकाईआ। लोकमात लए अवतार, जुग जुग विछड़े लए मिलाईआ।

पंचम मीता हरि निरँकार, एका एक सुहाईआ। गुरमुख साचे कर त्यार, हरि साची सेवा लाईआ। कलिजुग तेरी काली धार, मनमुख जीवां रही भुलाईआ। रैण अन्धेरी सुत्ते पैर पसार, कलिजुग माया रही सवाईआ। गुरमुख विरले देवे शब्द हुलार, आप आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन हरि हरि जन आपणे अंक रखाईआ। अंगीकार करे प्रभ अंक, बिरद समालया। ना कोई राउ ना कोई रंक, राज राजान शाह सुल्तान ना कोई अख्वा ल्या। जन भगतां सुहाए द्वार बंक, बंक द्वारी आप अख्वा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत वड्याई भगत जिउँ जन जनक, दर द्वारे दर्शन पा ल्या।

✼ ११ चेत २०१४ बिक्रमी जगीर सिँघ दे गृह इक्की परिवारां दा इक्ठ होया पिण्ड रंगीलपुर ज़िला अम्बाला ✼

पारब्रह्म प्रभ एक, एका एक अख्वांयदा। लक्ख चुरासी टेक, चरन कँवल धरांयदा। भगत सुहेले आपे वेख, आपणा मेल मिलांयदा। आपे लिखणहारा लेख, लेख लिखारा आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग भेख वटांयदा। पारब्रह्म प्रभ सच सुल्तान, एका एक अख्वाया प्रगट जोत श्री भगवान, हर घट बैठा आसण लाया। भरमे भुल्ले जीव नादान, दिस किसे ना आया। गुरमुख साचे चतर सुघड़ स्याण, प्रभ आपणी गोद उठाया। एका देवे शब्द गुण निधान, आत्म ब्रह्म जणाया। दीपक जोती जगे महान, अन्ध अन्धेर मिटाया। धर्म वखाए सच निशान, साचे हथ्थ उठाया। नौ द्वारे झूठ दुकान, लक्ख चुरासी रिहा विकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सुहेले लए वर, आप आपणी बणत बणाया। पारब्रह्म हरि निरँकार, एका गोबिन्द राया। शब्द खण्डा तेज कटार, आपणे हथ्थ उठाया। जुग जुग लए मात अवतार, लक्ख चुरासी दए सवाया। भगत जनां हरि कर प्यार, आप आपणा मेल मिलाया। मनमुख जीवां पार उतार, दुष्ट दुराचार मेट मिटाया। सतिजुग त्रेता द्वापर पार किनार, कलिजुग अन्तिम आया। नानक गोबिन्द बण लिखार, लिख्या लेख मुकाया। संग मुहम्मद चार यार, दिवस रैण रहे ध्याया। हरिभगत साचा मीत मुरार, एका राह तकाया। धरत मात करे पुकार, रो रो नीर वहाया। गोबिन्द काया घर अपार, सम्बल नगर धाम सुहाया। पूत सपूत ब्रह्मण गौड़ उच्च मिनार, उच्चा टिल्ला पर्बत आसण लाया। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, धरत मात तेरी साची गोद बहाया। निहकलंक नरायण नर, हरि जोती जोत जगाईआ। शब्द सुहेले लए वर, वेखे थाउँ थाँईंआ। लक्ख चुरासी आउणा डर, अन्तिम होणी मात जुदाईआ। ना कोई नुहाए तीर्थ सर, गुर दर मन्दिर मस्जिद ना फेरा पाईआ।

५३५
०६

आपणा कीता लैण भर, कलिजुग घेरा रिहा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त दुलार, आप आपणा मेल मिलाईआ। मेल मिलावा हरि निरँकार, आपणी किरपा धारया। शब्दी जोती इक्क जैकार, एका रूप समा रिहा। वरनां बरनां वसे बाहर, आदि अन्त ना कोई रखा रिहा। अमृत आत्म देवे ठण्ढी धार, साचा जाम पया रिहा। सोहँ करे तन शृंगार, साचा बस्त्र तन सजा रिहा। साचे घोड़े कर अस्वार, चौथे पौड़े आप चढ़ा रिहा। नौ द्वारे पार किनार, दसवें बूझ बुझा रिहा। आपे करे बन्द किवाड़, आपणी हथ्थीं कुण्डा लाह रिहा। मेल मिलाए दस्म द्वार, शब्द सिँघासण इक्क वखा रिहा। आत्म सेजा कर प्यार, गुरमुख साचे विच बहा रिहा। अनहद सेवक सेवादार, पंचम राग सुणा रिहा। जोती नूर कर उज्यार, साध सन्त जगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सुहेले लए वर, दर दर घर घर फेरी पा रिहा। सन्त सुहेला साचा मीता, हरि एका एक वखानया। आपे वसया अन्दर बाहर आत्म चीता, घट घट आपे जाणया। लक्ख चुरासी परखे नीता, वेख वखाए राजे राणया। ना कोई हस्त ना कोई कीटा, गुर शब्दी जन लागा मीठा, मेल मिलाए आपणे हाणीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे देवे वर, धुर दरगाही एका वारया। धुर दरगाही एका दात, हरि आपणे हथ्थ रखाईआ। आत्म जोती ब्रह्म ज्ञान, जन भगतां भरे भण्डारया। एका नाम शब्द बिबाण, लोआं पुरीआं पार करा रिहा। मेल मिलाए श्री भगवान, दिवस रैण सेव कमा रिहा। भरमे भुल्ले जीव नादान, माया भरम भुल्ला रिहा। साधन सन्ता जिया जन्ता आदिन अन्ता हरि भगवान, दिस किसे ना आ रिहा। गुरमुख मेला साचे कन्ता, नार सुहागण इक्क वखा रिहा। काया चोली रंग चाढ़े बसन्ता, उतर कदे ना जा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगत बणाए तेरी बणत, जुग जुग विछड़े मेल मिला रिहा। जुग जुग विछड़े साचा मेला, आपणा आप कराया। आपे गोबिन्द गुरू गुर चेला, आप आपणे धाम सुहाया। आपे होए सज्जण सुहेला, राम रमईआ आप अख्वाया। आपे वसया सद नवेला, सद भेद अभेद चुकाया। कलिजुग तेरा अन्तिम वेला, गुरमुख साचे रिहा तराया। जोत निरँजण चाढ़े तेला, प्रभ साची सेवा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे लए वर, शब्द सरूपी बण मलाह, घर साचा इक्क विखाया। साचा घर एकँकारा, एका एक सुहांयदा। गुरमुख कंचन बंक दुआरा, हरि साचे धाम सुहांयदा। शब्द सुहागी छंत सुणे सुणाए सुणनेहारा, एका एक अलांयदा। सति पुरख निरँजण अपर अपारा, साचा मीता आप हो आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सन्त सुहेले इक्क इकेले घर साचे मेल मिलांयदा। घर साचे परवान, गुर पूरा पाया। मेटे पंज शैतान, पंचम

मेल मिलाया। साचा मेला गुण निधान, पंचम नाद वजाया। धुर फ़रमाण, साचा राग अल़ाया। आप चुकाए झूठी कान, राए धर्म नेड़ ना आया। गुरमुख साचा चतर सुघड़ स्याण, आत्म ब्रह्म जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाए जरम कर्म, कर्म जरम आपणे हथ्थ रखाया। गुरसिख तेरी धन्न कमाई, गुर पूरा पाया। आत्म दर वज्जी वधाई, मंगलाचार कराया। पंचम गायण चाँईं चाँईं, साची सेवा लाया। आपे वेखे थाउँ थाँईं, हरि साचा थान सुहाया। पकड़ उठाए फड़ फड़ बाहीं, जुग जुग विछड़े मेल मिलाया। हँस बणाए फड़ फड़ काईं, सोहँ साची चोग चुगाया। इक्क जपाए साचा नाईं, नर निरँकारा आप अख्वाया। दूसर कोई जाणे नाहीं, अभेव अभेदा भेव छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए जगाया। गुरसिख तेरी धन्न कमाई, गुर पूरा पाया। आत्म दर वज्जी वधाई, मंगलाचार कराया। पंचम गायण चाँईं चाँईं, साची सेवा लाया। गुर शब्द होई कुड़माई, मिल सईआं मंगल गाया। नौ द्वारे देण दुहाई, बैठे मुख भवाया। पंचम रोवण मारन धाईं, नैणां नीर वहाया। पंचम मेला चाँईं चाँईं, ताल तलवाड़ा इक्क रखाया। दस्म द्वारी अगम्म अथाही, हरि बैठा आसण लाया। जन भगतां राग रिहा सुणाई, दिवस रैण वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, काया मन्दिर साचे अन्दर बैठा आसण लाया। काया मन्दिर सच टिकाणा, हरि बैठा आसण लाईआ। आपे पुरख शाह सुल्ताना, आप आपणा तख्त सजाईआ। हरि भगवाना राज राजाना, शाहो भूप आप अख्वाईआ। ना कोई सूरज चन्न , आपे बैठा मण्डल रास रचाईआ। आपे तीर आप निशाना, शब्द कटार आप हो जाईआ। आपे नाम गुण निधाना, आप आपणा गाईआ। आपे देवे धुर फ़रमाणा, आप आपणी सेवा लाईआ। आपे जोती दीपक इक्क महाना, बैठा हरि जगाईआ। भेव अभेदा भेव जहाना, सच महल्ला इक्क सुहाईआ। ना कोई जाणे वेद पुराणा, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। अञ्जील कुरानां ना मिले निशाना, गा गा होई हलकाईआ। खाणी बाणी होए हैराना, अगम्म अगम्मड़ा भेव ना राईआ। ज्ञानी ध्यानी पंडत पांधे रोवण छम्म छम्म, जोत निरँजण किसे दिस ना आईआ। मायाधारी लुट्टयां माल धन, नाम धन ना कोई वरताईआ। छत्ती राग सुण सुण थक्के कन्न, आत्म नाद ना कोई वजाईआ। भाण्डा भरम ना कोई देवे भन्न, साध सन्त बैठे धूणीआं ताईआ। भरम भुलेखा ना कोई कढ्ढे जन, गोबिन्द काया ना मेल मिलाईआ। धर्म राए ना मेटे कोई डन्न, ना कोई होए अन्त सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरे साचे दर, बैठा आसण लाईआ। गुरमुख तेरी धन्न कमाई, पाया धन हरि नामा। आदि अन्त ना होए जुदाई, मिटे अन्धेरी शामा। साचे घर वज्जे वधाई, एका राग अनादी सोहँ सच्चा गाना। जोती जोत सरूप हरि, आप

५३६
०६

आपणी जोत धर, देवे धुर फ़रमाना। धुर फ़रमाणा नाम निरँकार, एका एक सुणाया। जुग जुग लए मात अवतार, आपणी बणत बणाया। सन्त सुहेले लए उभार, सेवक सेवा रिहा कमाया। गुर चेले सोहे इक्क द्वार, बंक द्वारी आप अख्वाया। कंचन गढ़ महल्ल अटल उच्च मुनार, हरि इक्क रखाया। दीपक जोती कर उज्यार, आकार आकाशी कराया। आप आपणी पाए सार, आप आपणे विच समाया। ना कोई साजण मीत मुरार, दूसर कोई दिस ना आया। जुग जुग किरपा आपणी धार, लोकमात लए अवतार, लक्ख चुरासी वेखण आया। कलिजुग तेरी वेखे धार, चारों कुन्ट कूड़ कुड़यार, जीवां जन्तां हाहाकार, साधां सन्तां साचा राह दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सुहेले रिहा वर, दर दरवेस आप अख्वाया। गुरमुख तेरी धन्न कमाई, चरन कँवल बलिहारया। प्रभ अबिनाशी मेल मिलाई, मेल मिलाए विच संसारया। काल महांकाल नेड़ ना आई, हरि साचे दर दुरकारया। अन्तिम वेले होए सहाई, दरस दिखाए अगम्म अपारया। दर घर साचा धाम सुहाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, राउ रंक इक्क करा रिहा। गुरमुख तेरी वड वड्याई, वड वड्डा हरि पाया। जोत निरँजण इक्क जगाई, अज्ञान अन्धेरा मिटाया। साचा गहणा तन पहनाई, घर साचे वेखण आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक तेरी अन्तिम वार, साचा मार्ग रिहा लाया। गुरमुख साचा सन्त दुलार, हरि आपणे अंग लगाया। आप आपणी भुजा पसार, आपणी गोदी रिहा टिकाया। शब्द दुशाला कर त्यार, एका उप्पर पाया। उतर ना जाए दूजी वार, चेत्र चित ना कोई रखाया। आपे होए पहरेदार, सेवक सेवा रिहा कमाया। शिव शंकर तीर कटार, सोहँ खण्डा तन गात्रे आप लटकाया। पंचां करे ख़बरदार, पंचां रिहा जगाया। पंचम मेला मीत मुरार, पंचम मोह चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल दर, दर दुआरा इक्क सुहाया। दर दुआरा अगम्म अथाह, हरि आपणा आप रखाया। हरि बैठा आपे बेपरवाह, दिस किसे ना आया। दो जहानी बण मलाह, जन भगतां बेड़ा पार कराया। सोहँ शब्द देवे सच सलाह, सतिजुग साचा राह चलाया। आपे पिता आपे माँ, पूत सपूता गोद उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे तेरे दर, दर दरवेशा बण के आया। दर दरवेशा हरि भिखारी, एका मंग मंगाईआ। गुरमुख तेरी पहली वारी, जगत काज रचाईआ। शब्द सरूपी खेल न्यारी, शब्दी शब्द जणाईआ। आत्म ब्रह्म पारब्रह्म रिहा विचारी, जीव जन्त भेव ना राईआ। पूर्ब कर्मां पावे सारी, लहिणा देणा मूल चुकाईआ। लहिणा देणा दर चुकाए कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, भाणा सहिणा हुक्म जणाईआ। भाणा सहिणा वड्ड संसारी, हरि साचे रचन रचाईआ। आदि अन्त एकँकारी, एका धारा रिहा

चलाईआ। पुरख पुरखोतम खेल न्यारी, जन भगतां रिहा वखाईआ। साचा वेख इक्क लाड़ा नारी, नारी कन्त आप हो जाईआ। अमृत आत्म देवे ठण्ढी धारी, सीतल सांतक सति वरताईआ। आपे खोल्हे बन्द किवाड़ी, बजर कपाटी तोड़ वखाईआ। इक्क वखाए सच द्वारी, चौदां हट्टां भेव खुल्हाईआ। आपे होए पसर पसारी, हरि आपणी रचन रचाईआ। गुरमुख साचे कर त्यारा इक्क कराए वणज वपारी, एका नाम वस्त झोली पाईआ। सोहँ शब्द रसना जै जै जैकारी, एका आप कराईआ। मिले मेल पुरख भतारी, देवे माण जगत वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर शब्दी बणत बणाईआ। गुर शब्द अभेव, भेद ना राया। गा गा थक्के देवी देव, करोड़ तेतीसा सेवा लाया। शिव शंकर लाए रसना जिह्व, हरि साचा आपे मुख उग्घड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे देवे वर, हरि शब्दी शब्द जणाया। शब्द भण्डार अतुट्ट, हरि रखाया। तन नगारे लाए चोट, गुरमुख सोए रिहा जगाया। हउमे काया कढ्ढे खोट, दुरमति मैल दए गंवाया। मनमुख जीवां माया ममता हउमे हँगता अजे ना भरी पोट, जूठ झूठ भेख वटाया। साध सन्त अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ भौंदे कोटी कोट, प्रभ बैठा मुख छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरे साचे दर, दर द्वारे फेरा पाया। साचा घर गुरसिख साजन मीत, मुरार एका एक सखाया। इक्क सुणाए सुहागी गीत, साचा छन्द अल्हाया। काया करे पतित पुनीत, अचरज रीत वखाया। ना कोई जाणे हस्त कीट, ऊँच नीच एका रंग समाया। पारब्रह्म अबिनाशी बीठला बीठ, आप आपणे रंग रंगाया। देवे नाम शब्द अनडीठ, दिस किसे ना आया। कलिजुग काया कौड़ा रीठ, आपे भन्न वखाया। आत्म सेजा सुत्ता दे कर पीठ, मनमुखां दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे मेल मिलाया। गुरमुख तेरी आत्म धन्न, हरि साचा मेल मिलंनया। एका राग सुणाए कन्न, भाण्डा भरम भउ भन्नया। चोट लगाए साचे तन, आप चढ़ाए साचा चन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे तेरे दर, वर दाता आपे बणया। आत्म शब्द वज्जे वधाई, आपे आप अल्हांयदा। जुग जुग मेला सहिज सुभाई, एका एक वेख वखांयदा। भगत वछल आप रघुराई, भगत रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख मेले बाल अञ्जाणे आपणी गोद उठांयदा। गुरमुख साचा बाल नीका, नीका नीक अख्वाया। भेव ना जाणे हरिजन जीअ का, जीव जन्त भेव ना राया। भेव चुकाए साढे तिन्न हथ्थ सीअ का, आवण जावण फंद कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचा मेल मिलाया। गुरमुख तेरी धन्न कमाई, सच निशान बणाया। सृष्ट सबाई वेख वखाई, हरि साचा वेखण आया। साढे तिन्न हथ्थ चारों कुन्ट रखाई, सत्त रंग आप रंगाया। लाल कंचन

सूहा वेस हरि नरेश, आपणा आप वटाया। चिट्टी धारी दस दस्मेश, दस्म द्वारी डेरा लाया। पीली धारी जगत वेस, लोकमाती राह तकाया। नीला नीली धारी करे प्यार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, एका राह वखाया। काला कलिजुग सूसा देवे पाड़, अग्न लगाए बहत्तर नाड़, ना कोई सके बुझाया। अल्ला राणी तेरी चुंनी देवे पाड़, ईसा मूसा बैठे मुख छुपाया। संग मुहम्मद चार यार रोवण ज़ारो ज़ार, कोए ना अन्त सहाया। वेद पुराण अञ्जील कुरान करन पुकार, कलिजुग काला टिक्का मस्तक लाया। खाणी बाणी गई हार, कोई ना सुणे अन्त पुकार, माया ममता मोह वधाया। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, शब्द खण्डा तेज कटार, एका हथ्थ उठाया। लोआं पुरीआं करे ख़बरदार मारे मार, आप आपणा समां सुहाया। गुरमुख साचे लए उभार, फड़ फड़ बांहो रिहा तार, सम्मत चौदां साची थित वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण रूप समाया। निरगुण हरि निरँजणा, एका रंग रंगांयदा। आपे मीत मुरार सज्जणा, आपे शत्तरू रूप वटांयदा। आपे चरन धूढ़ी मजना, आपे काला टिक्का मस्तक लांयदा। आपे होया पड़दा कज्जणा, आपे चीर सबाह लुहांयदा। आपे अमृत आत्म पी पी रज्जणा, आपे तृष्ना तृप्त मिटांयदा। आपे रक्खणहारा लजना, आपे लज पति मात रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लाए लड़, लक्ख चुरासी जो घड़या सो भज्जणा। घड़े भन्ने भन्नणहार, अकल कला भरपूरा। गुरसिख सन्त सुहेले लए फड़, बख्शे चरन धूढ़ा। गुरमुख चेले सोहण अग्गे दर, गोबिन्द गुर गुरु गुर चेले हरि दाता जोद्धा सूरा। सोहँ शब्द पैज रिहा संवार, आपे वसे नेड़े दूरा। मनमुख जीव गंवार, जूठा झूठा रस रसना कूड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे देवे वर, एका एक चरन धूढ़ा। चरन धूढ़ सच्चा इशनाना, एका एक कराईआ। सोहँ बैठे शब्द बिबाना, दो जहानां होए सहाईआ। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञाना, निर्मल जोत रिहा जगाईआ। मेट मिटाए पंज शैताना, नेड़ रहिण ना पाईआ। पंच रखाए वड्ड बलवाना, एका रूप वखाईआ। गुरमुख साचा चतर सुघड़ स्याणा, गुर शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। सुरत सवाणी मिले साचा हाणा, साचा हाणी हाण मिलाईआ। दर द्वार कर परवाना, पल्लू इक्क फड़ाईआ। डूँघी कन्दर पार कराना, औखी घाटी आप चढ़ाईआ। सोहँ गाए इक्क तराना, साचा नाउँ वखाईआ। दस्म द्वारी महल्ल महाना, वेखे चाँईं चाँईंआ। एका एक श्री भगवाना, बैठा राह तकाईआ। चरन धूढ़ विटहों कुरबाना, गुरसिख बैठा सीस कटाईआ। मिल्या मेल वाली दो जहानां, विछड़ कदे ना जाईआ। दस्म द्वारी पार टिकाना, हरि साचा इक्क वखाईआ। चौथा घर पद निरबाना, आपे रिहा उपाईआ। चार दिवारी ना कोई दिसे हरि भगवाना, सच मकाना इक्क सुहाईआ। चौदां लोक ना कोई दुकाना, त्रैलोक ना वेख विखाईआ। ब्रह्मा

शिव करोड़ तेतीसा सुरपति खाणी बाणी ना कोई गाईआ। पारब्रह्म इक्क सुल्तानां, बैठा आसण लाईआ। सन्त सुहेले कर परवाना, आप आपणे अंग लगाईआ। राग सुणाए सच तराना, सोहँ नाउँ जपाईआ। सो पुरख निरँजण वड बलवाना, आपे रिहा विच समाईआ। हाहा हँगता ना कोई निशाना ना कोई वेख वखाईआ। ना कोई माण ना अभिमाना, मति तत्त दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण साचे घर, आप बहाए धुरदरगाहीआ। धुरदरगाही सतिगुर पूरा, एका एक अख्वांयदा। जन भगतां देवे साची धूढ़ा, मस्तक टिक्का इक्क लगांयदा। नाम तन श्रृंगार कराए सोहँ साचा चूड़ा, एका कंगण हथ्थ पहनांयदा। एका चाढ़े रंग गूढ़ा, आत्म अन्तर मैल गंवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे साचे दर बहांयदा। साचा शब्द हरि ब्रह्मादी, एका एक अख्वाया। जीव जन्त ना कोई निधानी, साध सन्त साचा मेल मिलाया। आपणा रस रसना गाण, ना कोई दूसर रिहा अल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वसया साचे घर, सन्त सुहेले लए मिलाया। सन्त सुहेले दर बुलाए, आपणी किरपा धारया। आपे वेखे मार ध्याने, चारों कुन्ट पसर पसारया। सति पुरख निरँजण पकड़े बांहे, दर दुआरा पार करा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सुन्न अगम्म ना कोई पवण स्वासी लए दम, ना कोई हड्ड मास नाड़ी चम्म, रक्त बूंद ना कोए रखा रिहा। ना कदे मरे ना पए जम्म, ना कोई सुरत ना कोई नाम, ना कोई दूजा शब्द पढ़ा रिहा। ना कोई खाए पीए तम, ना कोई नेत्र रोए छम्म छम्म, जल धार ना कोई प्या रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसया घर, गुरसिख फड़ाए आपणा लड़, आप आपणा राह वखा रिहा। गुरमुख साचे लड़, हरि आपणा आप फड़ांयदा। पौड़े पौड़े गया चढ़, दर साचा इक्क सुहांयदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, रंग अनूप समांयदा। ना कोई किला ना कोई गढ़, बन्द मकान दिस ना आंयदा। अग्नी हवन ना जाए सड़, ना कोए धरती ख़ाक दबांयदा। जगत विद्या ना जाए पढ़, ना कोई अक्खर होर पढ़ांयदा। ना कोई सके नाल लड़, शस्त्र बस्त्र ना कोई वखांयदा। उच्चे मन्दिर आपे चढ़, आपे कुण्डा लांहयदा। गुरमुख साचे तेरे दर, एका आसण लांयदा। अबिनाशी पुरख जामा धर, साची नारी कन्त सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दुआरा इक्क सुहांयदा। दर द्वार हरि निरँकार, एका एक सुहाया। गुरमुख साचे कर प्यार, जोती जोत समाया। पवण पाणी ना कोए अधार, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, जोत सरूपी एका हरि, एका रंग रंगाया। एका रंग हरि रंग राता, एका कल वखाईआ। ना कोई पिता ना कोई माता, ना कोई बाल गोद उठाईआ। ना कोई देवे दानी दाता, ना कोई भगत भिखारी दिस आईआ।

ना कोई दिवस ना कोई राता, सञ्झ सवेर ना कोई वखाईआ। ना कोई भैण ना कोई भ्राता, ना कोई जोड़े संगी सगला नाता, साजण ना कोई अख्वाईआ। ना कोई ज़ात ना कोई पाता, राउ रंक राजान कोए दिस ना आईआ। ना कोई देवे साची दाता, जोती जोत ना कोई उपाईआ। एका एक पुरख बिधाता, घर साचे बैठा आसण लाईआ। त्रैगुण माया ना दिसे नार कमज़ाता, दुहागण रूप ना कोए वटाईआ। पंचम तत्त ना दिसे जगत सुग़ाता, ना कोई बणत बणाईआ। आपणी पुच्छे आपे वाता, आप आपणा होए सहाईआ। आपे होया कमलापाता, आपे नारी सच हंढाईआ। निर्मल जोती इक्क इकांता, हरि एका रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, घर एका एक वखाईआ। एका घर हरि इकल्ला, आपणा आप सुहाया। दूजा दर शब्द महल्ला, साची बणत बणाया। तीजा दर निहचल धाम अटला, सो पुरख निरँजण रूप वटाया। चौथा घर दसम द्वारी, जोत उज्यारी पावे सारी, गुरमुखां लए मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम मीता प्रभ शब्द सुणाए साची गीता, अनाद अनादा इक्क सुणाया। राग अनाद आत्म धुन, हरि साचे इक्क जणाईआ। आपे तोड़े सुन्न मुन्न, बजर कपाटी रिहा तुड़ाईआ। सन्त सुहेले साजण चुण, गुण अवगुण वेख वखाईआ। दो जहानां एका धुन, एका बख्शे चरन सच्ची सरनाईआ। सृष्ट सबाई छाण पुण, एका इक्की रिहा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, घर साचे साची सिख्या रिहा समझाईआ। साची सिख्या गुर विचार, एका धाम जणाईआ। आत्म विद्या ब्रह्म विचार, आपे रिहा समझाईआ। लेखा लिख्या धुर दरबार, अन्तिम वेखण आईआ। कलिजुग कूड़ा कुड़यार, चारों कुन्ट रैण अन्धेरी छाईआ। जीव जन्त गए हार, कलिजुग माया दए दुहाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, गुरमुख साचे लए तराईआ। देवे शब्द इक्क हुलार, चारों कुन्ट रिहा भवाईआ। आपे होए पहरेदार, दिवस रैण सेव कमाईआ। गुरमुख सुत्ते पैर पसार, आवे जावे सुत्तयां दरस दिखाईआ। कलिजुग जीवां मानस जन्म गया हार, ना कोई होए सहाईआ। अन्तिम वेला पैणी मार, सम्मत चौदां लेख लिखाईआ। सम्मत पन्दरां हाहाकार, सृष्ट सबाई रिहा कराईआ। सम्मत सोलां दुष्ट दुराचार, धरतमात तेरी गोद दए सवाईआ। सम्मत सतारां नारी नार, खुल्हड़े केस देण दुहाईआ। अठु अठारां तेरी धार, जल रूप इक्क समाईआ। इक्क उनीसा ओंकार, ईसा मूसा दए मिटाईआ। बीस बीसा होए ख़बरदार, जगत जगदीसा आप अख्वाईआ। छत्र सीसा दिल्ली दरबार, पंचम मुख ताज रिहा टिकाईआ। इक्क इकीसा कर प्यार, एका इक्की रिहा पाईआ। साची सिक्खी कर त्यार, चार वरनां बख्शे सच सच्ची सरनाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी एका धार, सत्तां दीपां शब्द जणाईआ। सोहँ शब्द जै जैकार, राज राजान एका रसना गाईआ। ब्रह्मा शिव

दर द्वार, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। करोड़ तेतीसा वेखे मार ध्यान, कलिजुग तेरी अन्तिम आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख विछड़े मेल मिलाईआ। गुरमुख सिख गुरु गुर चेला, अन्तिम मेल मिलाया। आपे होया सज्जण सुहेला, आप आपणा मूल चुकाया। पारब्रह्म खेल कलि खेला, खेलणहार इक्क अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरे वसया घर, घर बाहरा इक्क सुहाया। सतिजुग बन्ने साची धार, सति सति वरताईआ। गुरसिख रलाए नाल करतार, सगला संग निभाईआ। एका नाउँ नाम भण्डार, आपे रिहा वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची सेव कमाईआ। सतिजुग साचा इक्क ज्ञान, एका एक जणाईआ। चार वरन इक्क ध्यान, एका पुरख रघुराईआ। राउ रंक राज राजान, एका धाम सुहाईआ। एका राग सारे गाण, एका नाद वजाईआ। एका नाम पीण खाण, एका रंग समाईआ। उत्तम ज़ाता विच जहान, जो जन रसना रहे गाईआ। मिले मेल श्री भगवान, हरि साचा आप मिलाईआ। अमृत आत्म देवे पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। सच कटारा नाम किरपान, आपणी हथ्थीं पहनाईआ। पंचम तत्त कर पछाण, तीनो तत्त समाईआ। गुरमति विच जहान, प्रभ आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग वखाए इक्क दर, दर दुआरा इक्क वखाईआ। सतिजुग साचा शब्द मलाह, एका एक रखांयदा। दाता दानी बेपरवाह, आपे झोली पांयदा। इक्क रखाए साचा नाँ, सोहँ सो उपांयदा। जन भगतां फड़े आत्म अन्तर बांह, आप आपणा राह विखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सतिगुर पूरा आप अख्वांयदा। सतिगुर पूरा दीन दयाल, दीना बंधप तोड़या। दरस दिखाए इक्क अकाल, हउमे हँगता रिहा रोड़िआ। गुरसिख उठाए साचे लाल, कलिजुग अन्तिम आपे बहुड़या। फल लगाए काया डाल, मनमुख वेखे मिठ्ठा कौड़या। चरन प्रीती जन रहे घाल, इक्क चढ़ाए शब्द साचे घोड़या। आपे होए नाल नाल, काया मन्दिर दस्म द्वारी साचे पौड़या। साचा घर साचा वर साचा सर साची धर्मसाल, गुरसिख वर पाया जिहा लोड़या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए वागां मोड़या। आपे आए जगत जोग कमाए, हरि दाता सिरजनहारया। गुर गोबिन्द भेख वटाए, सगली चिन्दा मेट मिटाए, दरस दिखाए अगम्म अपारया। मनमुख जीव जन्त रलाए, सागर सिन्ध धार वहाए, ना कोई दिसे पार किनारया। गुरमुख साचे सुत उपजाए, दे मति आप समझाए, रसन कराए जै जैकारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे आप उठा रिहा। उठ जाग सन्त दुलार, हरि साचा आप जगांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, लोकमात फेरा पांयदा। सोहँ खण्डा

तेज कटार, आपणे हथ्थ रखांयदा। जीआं जन्तां मारे मार, अग्गे हो ना कोई बचांयदा। ब्रह्मा रोवे ज़ारो ज़ार, अट्ठे पहर नीर वहांयदा। शिव शंकर करे ख़बरदार, बाशक तशका नाल रलांयदा। करोड़ तेतीसा करे प्यार, सुरपति राजा इन्द गले ना कोई लगांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी नार विभचार, कन्त सुहाग ना कोई हंढांयदा। सत्तां दीपां एका धार, इक्क इकल्ला आप बंधांयदा। सच महल्ला विच संसार, जलां थलां आप समांयदा। गोबिन्द डल्ला इक्क प्यार, साचा धाम वेख वखांयदा। जोती शब्दी आपे रल्ला, जन भगतां फड़ाए आपणा पल्ला, बेमुख दिस ना आंयदा। पंचम घर करया हल्ला, दूई द्वैती लग्गा सल्ला, काम क्रोध लोभ मोह हँकार जीवां जन्तां मात जलांयदा। गुरमुख साचा गुर संगत साची रल्ला, एका वसया निहचल नाम अटला, ऊँचो ऊँच आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख वटांयदा। जोती जामा हरि निरँकार, एका एक अख्वाया। सतिजुग कलिजुग दोहां बन्ने धार, निरगुण सरगुण खेल खिलाया। त्रैगुण माया तेरा पसर पसार, अन्तिम मेट मिटाया। मति मन बुध गई हार, सति सन्तोख रहिण ना पाया। धीरज यति हाहाकार, पंचम बैठा मुख छुपाया। अट्ठ सट्ठ करे पुकार, तीर्थ तट्ट दए दुहाया। गुर दर मन्दिर अन्दर मस्जिद शिवदवाला मठ, बेमुख बैठे डेरा लाया। गुरमुख साचे सन्त सुहेले प्रभ चरन द्वारे इक्क इक्ठ, हरि साचे दरस दिखाया। कलिजुग गेड़े उलटी लट्ठ, लक्ख चुरासी रिहा हिलाया। उच्चे मन्दिर जाणे ढठ्ठ, राज राजान कोई दिस ना आया। जोती अग्नी लाए मट्ठ, एका एक तत्ती वाओ वगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख दुआरा इक्क दर, गोबिन्द संग रलाया। गोबिन्द संग हरि रंग राता, एका रंग रंगांयदा। जन भगतां आत्म धार वहाए गंगा, अमृत साची धार वहांयदा। अनहद वजाए सच मृदंगा, एका ढोल वजांयदा। दर दुआरा एका मंगा, साची भिच्छया झोली पांयदा। शब्द घोड़े कसया तंगा, सोलां कलीआं आसण लांयदा। चिट्टा अस्व सच दुआरा आपे लँघा, पुरीआं लोआं राह तकांयदा। आपणी हथ्थीं पाए वंडा, जेरज अंडां वेख वखांयदा। उत्भज सेत्ज होई रंडा, धरती धवल आकाश प्रकाश ना कोई वेख वखांयदा। जीव जन्त आत्म रंडा, तत्त विकार भरया घमंडा, झूठा गढ़ बणांयदा। पारब्रह्म हथ्थ फड़या खण्डा, नौ खण्ड पृथ्वी पावे वंडा, साची वंड वंडांयदा। मेट मिटाए भेख पखण्डा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग सतिजुग एका दर, दोहां मेल मिलांयदा। कलिजुग सतिजुग इक्क द्वार, बैठे सीस झुकाईआ। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, जगत जगदीश हथ्थ वड्याईआ। कलिजुग रोवे ज़ारो ज़ार, जूठ झूठ रही शरमाईआ। सतिजुग मंगे भिक्ख अपार, सच वस्त हरि झोली पाईआ। दोहां बणया सांझा यार, एका एक हरि रघुराईआ। आपे वेखे विच संसार,

५४३
०६

पर्दा ओहला रहिण ना पाईआ। संग मुहम्मद चार यार, कलिजुग तेरा संग निभाईआ। ईसा मूसा नाल त्यार, अल्ला राणी नाल प्रनाईआ। हू हू नाअरा रही मार, तूं तूं रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग सतिजुग देवे वर, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। कलिजुग तेरा साचा संग, संग मुहम्मद आप निभांयदा। एक रंगाया काला रंग, काला सूसा तन छुहांयदा। चार कुन्ट भुक्ख नंग, ईसा मूसा वेख विखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, उम्मत नबी रसूल दी बिस्मिला आप करांयदा। बिस्मिला नूर अलाही, एका एक अख्वाया। आपे जाणे धुरदरगाही, परवरदिगारा आप अख्वाया। एका एक सच सुल्तानी, खुदी खुदाई लै के आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग सतिजुग ल्या वर, दोहां लहिणा देणा रिहा मुकाया। कलिजुग तेरा अन्तिम लहिणा, गैहणा तन पहनाया। संग मुहम्मद वेखे नैणा, प्रभ साचा दए विखाया। मक्का मदीना अन्तिम ढैहणा, हरि आपणी बणत बणाया। अल्ला राणी तेरा कोई ना मन्ने कहिणा, नेत्र नैणा झूठा खेल रचाया। प्रभ का भाणा सिर ते सहिणा, सम्मत चौदां वेख वखाया। लाड़ी मौत खाए डैणा, औलीआ पीर शेख़ दस्तगीर शाह हकीर कोए रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा पल्ला रिहा लाहया, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, आपणा मेला रिहा मिलाया। कलिजुग मेला आप कराए, संग मुहम्मदी दीना। साचा मृदंग इक्क वजाए, आप सुणाए रूसा चीना। दूई द्वैती विच कंध रखाए, चार कुन्ट वजाए हँकारी बीना। सम्मत चौदां तेरा पन्ध मुकाए, धरत मात तेरा ठण्ढा सीना। सृष्ट सबाई अन्ध कराए, पाणी ठण्ढा किसे ना पीना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग सतिजुग एका दर, वेख वखाए लोक तीना। सतिजुग साचा दर दरवेशे, प्रभ अग्गे करे निमस्कारया। गल पाए खुल्ह्ड़े केसे, रोवे ज़ारो ज़ारया। मेल दस दस्मेसे, सुणे मात पुकारया। पवण पवणी रला ब्रह्मा विष्नूं शिव गणेशे, मंगण वारो वारया। एका दाता मिले रिखी केसे, लोकमात आप उठाए गवर्धन भारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग देवे साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिका रिहा। सतिजुग तेरी मति, प्रभ एका एक रखाईआ। भगत जनां दी रक्खी पत, साचा संग निभाईआ। बहत्तर नाड़ ना उब्बल रत्त, रत्ती रत्त रहिण ना पाईआ। मेल मिलाए कमलापत, पुरख अबिनाशी रिहा सुणाईआ। सति सन्तोख धीरज यति, गुर शब्दी बंध बंधाईआ। सोहँ चढ़ाउणा साचे रथ, वंञ मुहाणा तेरे हथ्थ रखाईआ। रक्खे हथ्थ सिर समरथ, जुग जुग होए सहाईआ। एका बख्शे साची वत्थ, तेरी झोली पाईआ। पंजां चोरां पाए नत्थ, सोहँ शब्द करे कुड़माईआ। लहिणा देणा चुकाउणा सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। जगत विकारा देणा वत्थ,

५४४ ०६

नाम मधाणा इक्क रखाईआ। सगल वसूरे जायण लथ्थ, जो जन दर द्वारे आए दर्शन पाईआ। शब्द जणाए अकथना अकथ, अकथ कथ रही लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचे देवे वर, हरि मेला सहिज सुभाईआ। सतिजुग साचे दर साचा पाया, आत्म खुशी मनाईआ। एका काया रंगण रंग चढ़ाया, उतर कदे ना जाईआ। गुरमुख दर द्वार मंगण आया, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचे देवे वर, गुरमुख साचे साचे दर बैठा आसण लाईआ। सतिजुग तेरा साचा संग, जन भगतां आप करांयदा। नौ द्वारे पार लँघ, दसवें मेल मिलांयदा। शब्द रंगीला इक्क पलँघ, आत्म सेज वछांयदा। चारों कुन्ट अमृत धारा गंग, सर सरोवर इक्क विखांयदा। एका चले चाल बेहंग, बेहंगम रूप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए वर, घर साचा धाम सुहांयदा। गुरसिख वड्याईआ। हरि सेवक सेवादार, पारब्रह्म सरनाईआ। प्रभ पाया एकँकार, गुर शब्द सच्ची कुड़माईआ। दो जहानी उतरे पार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरवैर रूप समाईआ। निरवैर निरँकार निरगुण समाया। जन भगतां उधारे कर कर मेहर, आप आपणी दया कमाया। नेड़ ना आयण ऐर गैर, पंचम कहर रिहा वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे मेल कर, गुर संगत रिहा मिलाया। गुर संगत धन्न कमाई, गुर पूरा पाया। आत्म सुख मेल सदा सुखदाई, हउमे दुःख गंवाया। सुफल कराउँणी मात कुक्ख, आवण जावण फंद कटाया। मात गर्भ ना उलटा रुख, धर्म राए ना दए सज़ाया। आप उतारे तृष्ना भुक्ख, जिस जन नेत्र लोचन नैण दर्शन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हउमे हँगता रिहा रोग गंवाया। हउमे हँगता रोग कट्ट, प्रभ साचा रंग चढ़ांयदा। चरन धूढ़ नुहावे साचे तीर्थ तट्ट, इक्क इशनान करांयदा। दूई द्वैती कढ्ढे वट, भरमां गढ़ तुड़ांयदा। तन नगारे लाए सट्ट, सोहँ चोट लगांयदा। इक्क वखाए साचा हट्ट, चौदां तबकां वेख विखांयदा। तन पहनाए नाम पट्ट, उतर कदे ना जांयदा। जोत निरँजण लट लट, साचे सुत आप जगांयदा। रसना जिह्वा ल्या रट, सोहँ साचा जाप जपांयदा। भाग लगाए काया मट, पंचम मोह चुकांयदा। कलिजुग खेल बाज़ीगर नट, जीव जन्त भुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण साचा सन्त, साचे धाम सुहांयदा। गुरमुख साजण साचा सन्त, हरि साचे मेल मिलाया। मेल मिलावा साचे कन्त, साची सेज हंढाया। आप गिणाए महिमा अगणत, भेव किसे ना पाया। रसना जिह्वा मणीआ मंत, साचा शब्द लाया। रक्खे पति पति पतिवन्त, जुग जुग रक्खदा आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण साचा मीत, सरन सरनाई इक्क रखाया।

✲ १२ चेत २०१४ बिक्रमी सुरजीतम सिँघ दे गृह पिण्ड राजो माजरा ज़िला अम्बाला ✲

गुरमुख पूरा जाणीए, हरि नाम दृढ़ाए। गुरमुख पूरा जाणीए, अन्तर लिव लाए। गुरमुख पूरा जाणीए, रसना गुण गाए। गुरमुख पूरा जाणीए, नेत्र दर्शन पाए। गुरमुख पूरा जाणीए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन साचे लए मिलाए। गुरमुख पूरा जाणीए, मिले मेल भगवन्ता। गुरमुख पूरा जाणीए, हरि मीता साजन सन्ता। गुरमुख पूरा जाणीए, मेल मिलाए एका कन्ता। गुरमुख पूरा जाणीए, मिले नाम धन धन्नवन्ता। गुरमुख पूरा जाणीए, पारब्रह्म अबिनाशी पाया पति पतिवन्ता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा धाम सुहंता। गुरमुख पूरा जाणीए, आत्म तन वैराग। गुरमुख पूरा जाणीए, जगत तृष्ना बुझाए आग। गुरमुख पूरा जाणीए, गुर चरन धूढ़ी मस्तक लाए वड वड भाग। गुरमुख पूरा जाणीए, हँस सरोवर नुहाए काग। गुरमुख पूरा जाणीए, चरन कँवल उप्पर धवल जन जाए लाग। गुरमुख पूरा जाणीए, सुरत सवाणी जाए जाग। गुरमुख पूरा जाणीए, मिले मेल गुर साचे हाणी, माया डस्से ना डस्सणी नाग। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां पकड़े वाग। गुरमुख पूरा जाणीए, होए चतर सुजाना। गुरमुख पूरा जाणीए, दिवस रैण रक्खे चरन ध्याना। गुरमुख पूरा जाणीए, दर दरसी दर परवाना। गुरमुख पूरा जाणीए, एका बन्ने नाम हथ्थीं गाना। गुरमुख पूरा जाणीए, सच सुच्च रखाए धर्म इक्क निशाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवे नाम निधाना। गुरमुख पूरा जाणीए, मिले मेल भतार। गुरमुख पूरा जाणीए, हरि देवे पैज संवार। गुरमुख पूरा जाणीए, एका शब्द अधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे दरस अगम्म अपार। गुरमुख गोबिन्द पाया, आत्म भया अनन्द। काया रंग चढ़ाया, एका एक परमानंद। हउमे रोग मिटाया, रसना गाया बत्ती दन्द। धुर संजोग मिलाया, जोत चढ़ाया साचा चन्द। रसना भोग लगाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मेट मिटाए अन्धेर अन्ध। अन्ध अन्धेर जगत गुबार, तन रहिण ना पाईआ। जगत तृष्ना झूठी धार, प्रभ साचा रिहा मिटाईआ। एका देवे नाम प्यार, एका राह चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत मलाह आप अख्वाईआ। जगत मलाह साचा बेड़ा, एका एक रखाया। चार वरन कराए हक्क निबेड़ा, लहिणा देणा रिहा चुकाया। आपे जाणे काया नगर खेड़ा, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहिर डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिलाया। गुरमुख तेरा सच द्वार, होए थान सुहञ्जणा। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, जोत जगाए इक्क निरँजणा। शब्द सरूपी दए अधार, चरन धूढ़ कराए साचा मजना। मूर्ख मुग्ध गुर अधार लाए पार, अन्तिम पड़दा कज्जणा। आपे

होया मीत मुरार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख देवे आत्म वर, अमृत पी पी रज्जणा। अमृत आत्म सच प्याला, एका एक लिआईआ। भगत सुहेला सद रखवाला, जुग जुग पैज रखाईआ। फल लगाए काया डाला, जिस जन आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ग़रीब निमाणे आपणी बैठा गोद उठाईआ।

✻ १२ चेत २०१४ बिक्रमी ज्ञान चन्द दे गृह इक्की परिवारां दा इकट्ठ होया पिण्ड मिरज़ापुर ज़िला हुश्यार पुर ✻

आदि पुरख अकाल, एका जोत जगाईआ। दीनां बंधप दीन दयाल, घर साचे बैठा आसण लाईआ। आपणी करे आप प्रितपाल, शब्द सिँघासण इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा वेख वखाईआ। साचा घर इक्क सुहञ्जणा, हरि आपणा आप रखाया। जगे जोत आदि पुरख निरँजणा, दूसर कोए दिस ना आया। ना कोई दिसे गुर पीर साध सन्त साक सैण सज्जणा, सगला साथ ना कोई निभाया। ना कोई कर्म जरम धर्म मजना, मस्तक सीस ना कोई निवाया। ढोल मृदंग नगार ताल ना कोई वज्जणा, ना कोई रसना जिह्वा गाया। ना घड़या ना भज्जणा, मात पित पिता पूत ना कोई जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क सुहाया। साचा घर सति दर, एका एक बणाया। निर्मल जोती कर अकार, आपणी बणत बणाया। आपे बैठ सच्ची सरकार, सच सिँघासण आप सुहाया। ना कोई दिसे चार दिवार, महल्ल अटल उच्च मुनार इक्क रखाया। गुर पीर ना पाए सार, साध सन्त भेव ना पाया। बेअन्त बेअन्त बेअन्त करतार, करता पुरख आप अखवाया। देव दंत ना कोई अधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख निरँजण एका धाम सुहाया। साचा धाम हरि निरँकार, एका एक रखाया। ना कोई खाणी ना कोई बाणी ना कोई वेद पुराण, अञ्जील कुरान ना कोई जणाया। ना कोई शब्दी शब्द जणाए, लक्ख चुरासी दिस ना आया। ना कोई वेला ना कोई वक्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वसया साचे घर, साचा धाम इक्क सुहाया। साचा घर पुरख अबिनाश, एका एक रखाया। सर्ब घट किया वास, दिस किसे ना आया। ना कोई पृथ्वी ना आकाश, गगन पाताल ना डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे बैठा आसण लाया। साचा घर पुरख सुल्तान, एका एक सुहाया। आदि जुगादी आदिन अन्ता, एका रंग वटाया। आप बणाए आपणी

बणता, घड़न भन्नणहार आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति पुरख निरँजण घर साचा इक्क सुहाया। साचा घर हरि सुहाए, जोती नूर सवाया। अकाल पुरख आदि शक्त, एका रूप वटाया। ना कोई जोग जुगत ना भगत, ना साध सन्त कोई रखाया। ना कोई दिवस रात ना वक्त, सञ्झ सवेर ना कोई रखाया। ना कोई बूंद रक्त, हड्ड मास नाड़ी चम्म दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क सुहाया। घर साचे हरि साजण मीता, एका एक उपांयदा। आपे पतित पुनीता, आप आपणे रंग रंगांयदा। आपे ठण्ढा आपे सीता, आपे आपणी जोत जगांयदा। आपणी जोत आप जगा, आपणा राग अलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा नाद वजांयदा। पूत सपूता इक्क उपाया, शब्दी नाउँ रखाईआ। साची सेवा आपे लाया, ब्रह्मण्डां विच रिहा समाईआ। पार कन्ढा किसे दिस ना आईआ। साध सन्त गुर पीर बेअन्त बेअन्त गए गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे साचा घर एका राह रखाईआ। शब्द सुत हरि बलवान, एका एक उपाया। आप फड़ाए हथ्थ निशान, जुग जुग रिहा झुलाया। सूरज चन्न ना कोई वखान, तारा मण्डल दिस ना आया। पवण हवण ना कोई गवण सवण, कोई वरन दिस ना आया। कामनी ना कमन, ना कोई राम रामा कृष्न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे साचा घर, अन्तिम आप सुहाया। पंचम दर खोल्ह किवाड़, प्रभ आपणी दया कमांयदा। शब्द सुत अन्दर वाड़, एका नाद वजांयदा। आप बणाए साचा लाड़, साचा तन सजांयदा। ना कोई दिसे बहत्तर नाड़, पंज तत्त ना कोई विखांयदा। आपे होए पिच्छे अगाड़, आप आपणी सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क सुहांयदा। पंचम घर इक्क निशान, प्रभ साचे आप रखाया। सति पुरख निरँजण इक्क ज्ञान, आपणा आप दवाया। सतिनाम कर प्रधान, घर साचे रिहा टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति रिहा समझाया। साचा घर इक्क इकल्ला, हरि आपणा आप वसाया। चौथा दर नाम महल्ला, आपे ल्या उपाया। ना कोई जल ना कोई थला, सर सरोवर दिस ना आया। ना कोई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चा टिल्ला, ना कोई पेड़ बन खण्ड नज़री आया। ना कोई तीर कमान दिसे चिल्ला, ना कोई खण्डा हथ्थ उठाया। ना कोई जाणे घोड़ा (नीला), ना कोई पौड़ा रखाया। ना कोई वेखे बस्त पीला, ना कंचन रंग वटाया। पारब्रह्म एका सीतल सीतला, घर साचे बैठा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे चौथा घर, एका हरि उपाया। चौथा घर एका हरि, साचा नाद वजाया। नाम वजाए साचा नाद, धुन आत्मक रिहा वजाया। सुणे सुणाए ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मादी वेख वखाया।

महल्ल अटल आदि जुगादि, जुगा जुगादी आप रखाया। सन्त सुहेले हरि हरि लाध, आप आपे लए बुलाया। साचा मेला माधव माध, घर चौथे मेल मिलाया। मनमुख जीव रसना लैण स्वाद, अन्दर मन्दिर साचे वाड़, चौथे पौड़े डण्डे चढ़ सतिगुर पूरा हथ्थ ना आया। जूठा झूठा घाड़न घड़, पंजां चोरां नाल लड़, हउमे हँगता गए सड़, काम क्रोध लोभ मोह हँकार तन वसाया। जोत ना जगे बहत्तर नड़, मिल्या मेल ना प्रभ, कलिजुग अग्नी गए सड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क वखाया। चौथा घर पद निरबाणा, हरि एका एक रखाया। आपे चतर सुघड़ स्याणा, सन्त सुहेला आप अख्वाया। आपे जोती मेला श्री भगवाना, आपे शब्दी शब्द जणाया। आपे राग आप तराना, आपे सुणे सुणाए काना, सुणन सुणावणहार आप अख्वाया। आसण सिँघासण इक्क वछाना, पावा चूल ना कोए रखाया। उप्पर बैठ श्री भगवाना, निर्मल जोती इक्क जगाया। पारब्रह्म (ना) छप्पर छन्नना, ना कोई बाडी रिहा बणाया। पंचम चोर ना देवे डन्नणा, धर्म राए दिस ना आया। ब्रह्मा शिव देवत सुर मुख बैठे बंन्नणा, राग नाद ना कोई सुणाया। ना कोई जाणे रिख मुन, ज्ञान ध्यान ना कोई जणाया। पारब्रह्म प्रभ आपे जाणे गुण अवगुण, गुरमुख साचे लए जगाया। लक्ख चुरासी गुरमुख चुण, धुन आत्मक दए उपजाया। मनमुख जीव छाण पुण, नाम मधाणा एका पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वड़या चौथे घर, सन्त सुहेले रिहा मिलाया। चौथा घर हरि भगवन्त, एका एक रखाया। मेल मिलावा साचे कन्त, नारी कन्ता एका रूप समाया। साची सेजा रंग बसन्त, रुत्त सुहञ्जणी दए विखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वड़या आपणे घर, आप आपणा नाद वजाया। किंगरी नाद हथ्थ करतार, आपणा आप वजांयदा। भेव ना पायण जीव गंवार, रसना पढ़ पढ़ वाद वधांयदा। सति सांतक निरगुण रूप अपार, प्रभ साची सेवा लांयदा। नानक मंगे दर भिखार, प्रभ साचा भिच्छया पांयदा। आप आपणा कर आकार, जोत सरूपी दरस दिखांयदा। सतिनाम दए अधार, लोकमात राह तकांयदा। आपे होया पहरेदार, सीस, आपणा हथ्थ टिकांयदा। लक्ख चुरासी करना ख़बरदार, भाणा सहिणा नेत्र नैणा हुक्म जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक दित्ता इक्क वर, एका मति रखांयदा। एका मति एका नत्त, इक्क ध्यान रखाया। नानक पाया प्रभ कमलापत, साची नारी आप अख्वाया। बहत्तर नाड़ ना उबली रत, सीतल शांतक अमृत धार साची मुख चुआया। बीजे बीज जीआं जन्तां आत्म वत्त, धुरदरगाही लै कै आया। पारब्रह्म तेरा साचा नत्त, रसना बहि बहि गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक देवे इक्क वर, वर दाता आप अख्वाया। नानक पाया पद निरबान, आत्म दर वज्जी वधाईआ। मिल्या मेल श्री भगवान, दिवस रैण रसना गाईआ।

चारे कुन्ट वेखे मार ध्यान, लक्ख चुरासी भरम भुलाईआ। एका देवे शब्द ज्ञान, आत्म बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक दित्ता इक्क वर, चार वरन सची सरनाईआ। चार वरन इक्क सरनाई, नानक गुर सिखाईआ। कलिजुग जीव भेव ना राई, फिरे भुल्ली सर्ब लुकाईआ। आदिन अन्ता ना दर्शन पाई, साचा कन्त ना कोई मेल मिलाईआ। जीवां जन्तां देण वधाई, रसना कहि कहि गुर दर मन्दिर अन्दर माया ममता वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग खेले खेल रघुराईआ। नानक आपणी किरपा धार, एका अंक बणाया। अंगद लहिणा पार उतार, साचा रंग चढ़ाया। अमरदास कर प्यार, अमरापद दवाया। रामदासे कर प्यार, सेवक सेवा लाया। गुर अर्जन बख्शे चरन प्यार, दोए जोड़ बैठे सीस झुकाया। शब्द बोध अगाध सुणे सुणाए सुणनेहार, रसना जिह्वा रिहा गाया। इकवंजा बवंजा बन्ने धार, भेव अभेदा भेव ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा लेख लिखाया। अर्जन लिख्या लेख अपार, गोबिन्द रसना गाईआ। पुरख अबिनाशी कर प्यार, साचा राह गया विखाईआ। जो जन मंगे बण भिखार, देवणहार हरि कन्त सभनीं थाँईंआ। भरमे भुल्ले जीव गंवार, हउमे गढ़ ना कोई तुड़ाईआ। मिल्या मेल ना पुरख भतार, आत्म सेज ना किसे हंढाईआ। निर्मल दीपक जोती कर उज्यार, नाद धुन ना कोई वजाईआ। पंचम शब्द ना गायण वारो वार, आप आपणा राग अलाईआ। पुरख अबिनाशी ना करे प्यार, अन्दर मन्दिर बैठा आसण लाईआ। दस्म द्वारी बन्द किवाड़, ना कोई कुण्डा लाहीआ। मनमुखां मगर लग्गी पंचम धाड़, दिवस रैण रही भवाईआ। सच धीरज ना वेख इक्क आकार, वरन गोत ना कोई अख्वाईआ। धुरदरगाही एका लाड़, हरि आपे आप अख्वाईआ। जुग जुग मात लै अवतार, आप आपणी रचन रचाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, निहकलंक नरायण नर, शब्द खण्डा तेज कटार, आपणा रिहा उठाईआ। भेव खोल्ह दस्म द्वार, चौथा घर हरि जणाईआ। सति पुरख निरँजण हरि गिरधार, हउमे हँगता रिहा मिटाईआ। सोहँ अक्खर वणज वपार, सतिजुग साचे रिहा कराईआ। कलिजुग अन्तिम पार किनार, बीस इकीसा दए दुहाईआ। छड्डणा पए महल मुनार, उच्चा मन्दिर कोई दिस ना आईआ। अमृत आत्म मिले ना ठण्डी ठार, अड्ड सड्ड भरम भुलाईआ। गुर शब्द ना मिल्या मीत मुरार, दो जहानां पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वसया साचे घर, साचा धाम सुहाईआ।

नानक जोत कवण रंग, काया तन रखाईआ। कवण बैठा आप पलँघ, बैठा आसण लाईआ। कवण वजाए ढोल मृदंग, शब्द करे कुड़माईआ। कवण आत्म धारा गंग, चारों कुन्ट रिहा वहाईआ। कवण सरूप लाए अंग, अंगीकार आप अख्वाईआ।

कवण द्वारे रिहा लँघ, दर दुआरा कवण खुल्हाईआ। कवण मारे तीर तुफंग, शब्द खण्डा हथ्थ उठाईआ। मानस जन्म मनमुखां होया भंग, गुर पूरा दिस ना आईआ। मनमति जगत प्रधान है, मनमुख होए हलकाए। गुर शब्द सच्चा ज्ञान है, गुरसिख हिरदे लए वसाए। चरन प्रीती इक्क ध्यान है, एका दूजा भउ चुकाए। एका एक धुर निशान है, ना कोई मेटे मेट मिटाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चार वरनां रिहा जणाए। चार वरन इक्क द्वार, एका हरि निरंकारया। वरते वरतावे विच संसार, जुग जुग लए मात अवतारया। सतिजुग त्रेता उतरे पार, द्वापर वेख वखा रिहा। कलिजुग तेरी अन्तिम धार, काला वेस वटा ल्या। पढ़ पढ़ थक्के जीव गंवार, कलिजुग विद्या गढ़ बणा ल्या। सच शब्द ना कोई प्यार, दर आत्म इक्क भुला ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी वेख घर, कलिजुग अन्तिम जोत जगा ल्या। लक्ख चुरासी तेरा आत्म रथ, दिवस रैण रिहा चलाया। आवे जावे वारो वारया। मनमुख जीव भरम भुलाया, मानस जन्म ना कोई संवारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखे अन्ध अंध्यारया। कलिजुग तेरा अन्धेर अन्ध, लक्ख चुरासी रसन लगाया मदिरा मास गन्द, शब्द ना चढ़या साचा चन्द, आत्म धुन ना सुणी परमानंद, बजर कपाटी ना तुट्टा जंद, नौ द्वारे खेल न्यारा। आपे सुत्ता दे कर कंड, पैर पसारा। मनमति मनमुख जीवां रिहा वंड, काम क्रोध लोभ मोह हँकारा। करे खण्ड खण्ड, प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा। शब्द चण्ड प्रचण्ड, हरि रक्खे तिक्खी धारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल अपर अपारा। मनमति अञ्जाण सुरती सुरत भवाईआ। भरमे भुल्ले जीव नादान, पंज तत्त करे कुड़माईआ। गुणवन्ता हरि गुण निधान, दिस किसे ना आईआ। साधां सन्तां जीआं जन्तां आदिन अन्ता हरि भगवन्ता, जुग जुग सेवा लाईआ। किसे हथ्थ ना आए काशी पंडता, ग्रन्थी पन्थी भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका वसया साचे घर, हरि मन्दिर इक्क सुहाईआ। हरि मन्दिर हरि भगवाना, एका एक रखाईआ। चढ़े चढ़ाए शब्द बिबाणा, दहि दिशा ना कोई रखाईआ। आपे बैठ श्री भगवाना, शाह सुल्तान आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायणा रूप वटाईआ। गुरमुख आत्म सद बिबलाए, आत्म तृखा रखाईआ। गुर पूरा अमृत आत्म वरखाए, बूंद स्वांती रिहा मुख चुआईआ। धुरदरगाही लिख्या लेख मिटाए, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे आत्म दर, दर दुआरा वेख वखाईआ। गुरमुख चात्रिक सद बिल्लाए, दिवस रैण पुकारा। पुरख अबिनाशी दया कमाए, मेल मिलाए विच संसारा। आप आपणा दरस दिखाए, फड़

फड़ बाहों लाए पारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगत सुहेले रिहा उधारा। भगत सुहेला साचा सज्जण, एका एक अख्वाया। चरन धूढ़ कराए साचा मजन, दुरमति मैल गंवाया। आपे होया पड़दे कज्जण, दे मति रिहा समझाया। मदिरा मास जो जन तज्जण, आप आपणे रंग रंगाया। ताल नगारे एका वज्जण, राग अनाहद रिहा सुणाया। भाण्डे भरम गढ़ हँकारी भज्जण, हरि साचा रिहा भन्नाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला आप मिलाया। मेल मिलाए नर अवतारा, जुग जुग लेख लिखांयदा। जुग जुग देवे नाम अधारा, आप आपणी बूझ बुझांयदा। निर्मल जोती कर उज्यारा, अन्ध अज्ञान मिटांयदा। अमृत आत्म ठण्ढी धारा, एका जाम प्यांअदा। आपे बणे हरि वरतारा, जुग जुग मात वरतांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, एका दात हरि सुग़ात धुरदरगाही आप लिआंयदा। मेट मिटाए अन्धेरी रात, जूठे झूठे रहिण ना पांयदा। जन भगतां पुच्छे अन्तिम वात, रूप अनूपा सति सरूपा आप आपणा रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे चारे कूटां, दहि दिशा वेख वखांयदा। दहि दिशा इक्क हुलारा, हरि साचा रिहा दवाईआ। गुरमुख साचा मीत मुरारा, आप आपणी गोद उठाईआ। वेख वखाए दर दुआरा, शब्द सिँघासण हरि सुहाईआ। इक्क इकल्ला एकँकारा, एका रूप वटाईआ। जुग जुग लए मात अवतारा, आप आपणी रचन रचाईआ। कलिजुग तेरी काली धारा, चारों कुन्ट दए दुहाईआ। लक्ख चुरासी रोवे ज़ारो ज़ारा, धीरज धीर ना कोई धराईआ। साध सन्त होए गंवारा, सति सन्तोख ना कोई रखाईआ। भरमे भुल्ले सर्ब संसारा, भरम भुलेखा रिहा पाईआ। एका एक विसरया करतारा, राम रामा हरि हरि साचा कोए ना रसना गाईआ। भेख पखण्डा जगत अखाड़ा, चारे कुन्टां वंडां रिहा वंडाईआ। मनमुख जीवां लग्गी मगर धाड़ा, पंचम रिहा लगाईआ। एका वा तत्ती हाढ़ा, कलिजुग रिहा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख आत्म लए वर, दर द्वारे आप बहाईआ। गुरमुख आत्म कर परवाना, आपणी दया कमांयदा। आप बिठाए विच बिबाणा, साचे मार्ग लांयदा। आवण जावण चुक्के काना, धर्म राए नेड़ ना आंयदा। लक्ख चुरासी फंद कटाना, हरि गोबिन्द मिटांयदा। हरिजन साचा चतर सुघड़ स्याना, आप आपणे रंग रंगांयदा। लोआं पुरीआं वेखे मार ध्याना, ब्रह्मा विष्नूं शिव आप उठांयदा। एका राग सुणाए काना, दो अक्खर आप लिखांयदा। करोड़ तेतीसा इक्क ज्ञाना, सुरपति राजा इन्द अल्लांयदा। नौ खण्ड हरि गुण विखाना, एका गुण लक्ख चुरासी पुकार सुण आपणा आप उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगत सुहेले रिहा वर, वर दाता आप हो आंयदा। वरभण्डी हरि बणत बणाए, एका रंग रंगाईआ। शब्द चण्डी हथ्थ उठाए, चार कुन्ट रिहा विखाईआ। भेख पखण्डी दए मिटाए, कलिजुग अन्तिम दए

दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे रिहा उपाईआ। हरिजन साचे आप उपाया, आप आपणा दरस दिखाया, एका दूजा भउ चुकांयदा। आत्म तृष्ना विस मिटाया, सांतक सति वरतांयदा। काहना कृष्ना रूप वखाया, मुकंद मनोहर लखमी नरायण मोर मुकट सीस टिकांयदा। पीर दस्तगीर औलीए शेख़ भरम भुलांयदा। नौ खण्ड सत्त दीप ब्रह्मण्ड वंड वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी तेरा घर आपे फोल फुलांयदा। लक्ख चुरासी तेरा दर, आपे फोल फुलाया। आपे वेखे अन्दर वड़, गुण अवगुण वेख वखाया। सन्त सुहेले लए फड़ आप आपणी दया कमाया। आप बंधाए आपणे लड़, आप आपणे अंग लगाया। जोत जगाए बहत्तर नड़, अज्ञान अन्धेर मिटाया। बजर कपाटी दए तोड़, हरि साचे मन्दिर आपे वड़, आत्म सेजा दए सुहाया। पुरख अबिनाशी लए फड़, आपणी गोद उठाया। ना जन्मे ना जाए मर, हरि एका रंग रंगाया। आप नुहाए साचे सर, सर सरोवर इक्क विखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे साजण मीत आपणा मेल मिलाया। मेल मिलाए दो जहान, अकल कला भरपूरया। मेट मिटाए पंज शैतान, आत्मक धुन उपजाए अनहद साची तूरया। दर द्वार कर परवान, मस्तक बख़्शे साची धूड़या। चरन धूढ़ इक्क इशनान, काया चोली रंग चाढ़े गूढ़या। भरमे भुल्ले भरम नादान, मन मूर्ख मति मूढ़या। आत्म ब्रह्म ब्रह्म पछाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे नाम वर, जगत नाता कूड़ो कूड़या। जगत नाता कूड़ कुड़यार, सतिसंग ना भाईआ। मात पित भाई भैण साक सज्जण सैण मीत मुरार, सगला संग तजाईआ। पारब्रह्म प्रभ एका पाए सार, वेले अन्तिम होए सहाईआ। अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़े धाम, गुरमुख साचे दए बहाईआ। लेखे लाए काया चम्मड़ा, जो जन दर्शन पाईआ। कोई ना मंगे पैसा धेला दमड़ा, चरन प्रीती इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे तेरे दर, दर द्वारे इक्क सुहाईआ। जोत निरँजण इक्क अलख जगाईआ। गुरमुख मीत मुरार सज्जणा, हरि वेखे चाँईं चाँईंआ। अमृत आत्म पी पी रज्जणा, हरि कागों हँस बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे नाम वर, एका रंगण रंग रंगाईआ। नाम रंगण काया चोली, गुरमुख विरला मात रंगांयदा। सुणे शब्द अनहद अनाहद हौली हौली, आत्मक धुन उपजांयदा। काया खेत्र सभ दी मौली, मौला किसे हथ्थ ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सुन्दर सँवला रूप वटांयदा। साँवल सुन्दर हरि मुरार, आपणी जोत जगाईआ। गऊ ग़रीबां पावे सार, वरन गोत भेव मिटाईआ। अगम्म अगम्मड़ा एका आकार, ओंकारा रूप कराईआ। शब्द रखाए तिक्खी धार, सोहँ नाउँ जपाईआ। सो पुरख निरँजण अपर अपार, घर साचे बैठा आसण लाईआ।

हँ हँगता दए मार, साची संगता रिहा मिलाईआ। आपे मंगता दर भिखार, जन भगत द्वारे आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटाईआ। जोती जामा हरि हरि रामा, आपणा भेख वटाया। इक्क रखाए शब्द दमामा, दो जहानी रिहा वजाया। जुग जुग जाणे आपणा कामा, करन करावणहार आप अख्वाया। आप उपाए आपणा नामा, आप आपणे विच समाया। अमृत आत्म प्याए साचा जामा, अट्ठे पहर खुमार रखाया। त्रैगुण माया करे अन्तिम तामा, लोकमात रहिण ना पाया। कलिजुग मिटे अन्धेरी शामा, सतिगुर साचा चन्द चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख देवे साचा वर, अन्ध अज्ञान मिटाया। अन्ध अज्ञान होए विनास, हरि दरसी दर्शन पाईआ। आत्म जोती ब्रह्म ज्ञान, दीपक इक्क जगाईआ। ब्रह्मा वेख होए हैरान, कलिजुग अन्तिम दए दुहाईआ। शिव शंकर मारे उठ ध्यान, हरि खेले खेल रघुराईआ। सुरपति राजा इन्द बाल नादान, भेव ना जाणे राईआ। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क ज्ञान, हरि साचा रिहा जणाईआ। सत्तां दीपां एका आण, आपणी आपे पाईआ। कलिजुग तेरा मिटे निशान, लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा सुत सति सरूपा धरत मात तेरी गोद बिठाईआ। भरमे भुल्ले जीव नादान, गोबिन्द काया भेख वटाईआ। भेखाधारी खेल महान, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। एका देवे धुर फ़रमाण, सोहँ साचा गीत अलाईआ। जन भगतां आत्म जोती ब्रह्म ज्ञान, शब्दी शब्द मिलाईआ। पारब्रह्म प्रभ वेख वखान, एका दूजा भउ चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वेखे साचे दर, नेत्र तीजा खोल्ह वखाईआ। नेत्र तीजा शब्द ज्ञान, हरि एका एक रखाया। चौथा घर मार ध्यान, आप आपणे विच समाया। पंचम मेटे इक्क निशान, एका एक अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेख इक्क दर, दर रिहा तराया। दर दुआरा एक, एका एक अकालया। हरि शब्द रखाई साची टेक, मेल मिलाए दो जहानया। कलिजुग माया ना लाए सेक, आपे बैठा नाम बिबाणया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखे अन्त निशानीआ। कलिजुग तेरी अन्त निशानी, प्रभ साचा वेख वखांयदा। चार कुन्ट होए वैरानी, लक्ख चुरासी मेट मिटांयदा। शब्द मारे तिक्खी कानी, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलांयदा। भेव ना पायण वड विद्वानी, जगत विद्या मूल चुकांयदा। गा गा थक्के वेद पुराणी, खाणी बाणी दिवस रैण अल्हांयदा। अंजील कुरान होए हैरानी, संग मुहम्मद रो रो नीर वहांयदा। अल्ला राणी दर प्रनानी, घर पहला इक्क वखांयदा। कलिजुग खेले खेल महानी, चारों कुन्ट अन्धेरा छांयदा। लाड़ी मौत खुशी मनानी, सम्मत चौदां हरि अल्हांयदा। पंचम जेठ रुत्त सुहानी, साचा सगन मनांयदा। आपे बणे साची राणी, कन्त सुहागी वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

५५५
०६

धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे आप उठांयदा। कलिजुग तेरा अन्तिम वेख, हरि साचा वेख वखांयदा। आपे होए धारी भेख, भेखाधारी भेख मिटांयदा। आपे होए धारी केस, मुंड मुंडाए ना भेव छुपांयदा। जोती जामा नर नरेश, निरगुण रूप समांयदा। आपे होए दस दस्मेश, आपे गोबिन्द रूप वटांयदा। सो रखाए ब्रह्मा विष्न महेष, आप आपणे विच मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा संग निभांयदा। कलिजुग तेरा दर दरवाजा, एका एक खुल्हाया। नौ खण्ड पृथ्वी रच्चया काजा, लक्ख चुरासी लए प्रनाया। लाड़ी मौत मंगे दाजा, मनमुख जीव डोली पाया। जन भगतां मारे शब्द सरूपी आवाजा, दिवस रैण रिहा जगाया। चिट्टा अस्व साचा ताजा, धुरदरगाही चढ़ के आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लहिणा देणा रिहा चुकाया। कलिजुग तेरा लहिणा देणा, अन्तिम आप चुकांयदा। जूठ झूठ तन पाए गहणा, माया लोभ मोह हँकार वकार तेरे संग रलांयदा। मनमुख जीव वेख नैणा, चारों कुन्ट कुरलांयदा। माया वहिण अन्तिम वहिणा, त्रैगुण मूल चुकांयदा। प्रभ का भाणा सभ ने सहिणा, राज राजान ना कोई बचांयदा। नाता तुट्टे मात पित भाई भैणां, साक सज्जण कोई दिस ना आंयदा। गुरमुख विरला मात रहिणा, जिस जन हथ्थ समरथ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका डंक वजांयदा। निहकलंक एका डंक, राउ रंक जणाईआ। प्रगट होए वासी पुरी घनक, साचे धाम सुहाईआ। जन भगत उधारे जिउँ जनक, आप आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए वर, जोत निरँजण तेल चढ़ाईआ। जोत निरँजण तेल चढ़ाए, हरि साचे ख़ुशी मनाईआ। पंचम सईआं मिल मिल गाए, साचा राग अल्हाईआ। शब्द ताल इक्क वजाए, ताल तलवाड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। दर दुआरा इक्क सुहाए, दर दरवाज़ा खोल्ह वखाईआ। आत्म सेजा डेरा लाए, ग़रीब निवाजा वेख वखाईआ। गुरमुखां सद मेल मिलाए, एका रूप समाईआ। निन्दक दुष्ट दुराचार कोए दिस ना आईआ। साची सिक्खी आप उपाए, हरिभगत सुहेले नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगत द्वारे वेखे घर, घर साचा इक्क सुहाईआ।

त्रैगुण माया तेरी धार, जुग जुग दए दुहाईआ। पंज तत्त होए विभचार, साचा कन्त ना कोए हंढाया। धरत मात करे पुकार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, कलिजुग रैण अन्धेरी छाईआ। पारब्रह्म प्रभ पावे सार, आत्म जोत जगाईआ। निहकलंक लए अवतार, साचा डंक इक्क वजाईआ। राज राजानां करे ख़बरदार, शाह सुल्तानां

रिहा उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क जैकार, सत्तां दीपां आप सुणाईआ। ब्रह्मा शिव करे प्यार, आपणी सेवा लाईआ। सुरपति बाला वड हुश्यार, प्रभ नेत्र दर्शन पाईआ। जोत अकाला विच संसार, आपणी कल वरताईआ। चाल निराला अपर अपार, भेखी भेख वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। त्रैगुण माया तेरा रंग, लक्ख चुरासी आप चढ़ाया। ब्रह्मा कीना संग, साचा संग निभाया। शिव शंकर मंगे आत्म मंग, खाली बुत्त रखाया। विष्नूं वेखे भुक्ख नंग, सच वस्त हथ्थ ना आया। जोत निरँजण वजाए मृदंग, पंचम सेवा लाईआ। लोकमात ना दिसे धारा गंग, सर सरोवर दिस ना आया। साध सन्त गुर पीर ना लाए कोई अंग, अंगीकार ना कोई अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया तेरा दर, चारों कुन्ट वेख वखाया। त्रैगुण माया तेरा जाल, लक्ख चुरासी रिहा फसाईआ। आपे वेखे दीन दयाल, दयानिध आप अख्वाईआ। भगत सुहेला सद कृपाल, अछल अछल्ल आप हो जाईआ। लक्ख चुरासी फल वेखे डाल्ह, अन्दर मन्दिर खोज खुजाईआ। भगत सुहेला नाल नाल, आप आपणा चरन उठाईआ। नेड़ ना आए काल महांकाल, काल महांकाला आप अख्वाईआ। जिस जन देवे नाम सच्चा धन माल, नाम ख़ज़ाना इक्क भराईआ। आदि अन्त ना होए कंगाल, इक्क भण्डार कराईआ। आत्म जोती नूर महान, आकाश प्रकाश वखाईआ। धर्म झुलाए इक्क निशान, हथ्थ आपणे रिहा उठाईआ। चार वरनां इक्क ज्ञान, एका शब्द जणाईआ। रसना जिह्वा सारे गाण, भुल्ल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया तेरा रूप आपे वेख विखाईआ। त्रैगुण माया तेरा रूप, आपे आप वखानया। भरमे भुल्ले शाहो भूप, ना कोई दिसे सुघड़ स्यानया। रैण अन्धेरी चारों कूट, कोई ना चले हरि हरि भाणया। मोह हुलारा रहे झूट, जूठा झूठा छत्र ताणया। पंच विकारा रिहा लूट, रसना गाए ना हरि हरि बाणया। धर्म राए दर टंगे पुठ्ठ, अन्तिम लहिणा देण चुकानया। जन भगतां हरि जाए तुठ्ठ, देवे दरस महानया। लुकया रहे ना कोई गुड्ड, दहि दिशा वेखे मार ध्यानया। आप कराए एका मुड्ड, सम्मत चौदां पहली चेत्र साची बणत बणानया। पंच विकारा देवे कुड्ड, मेट मिटाए पंज शैतानया। जुगां जुगां दे विछड़े गए रुड्ड, कलिजुग अन्तिम मेल मिलानया। मनमुख जीवां खाली हथ्थ ठुठ, दर दर फिरानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया तेरा दर अन्त करे पछानया। त्रैगुण माया तेरा राज, चारों कुन्ट करे जैकारया। राज राजानां सीस लथ्थे ताज, ना कोई दिसे दर दरबानया। जूठा झूठा रच्चया काज, लोकमात होए परधानया। जन भगतां कोए ना रक्खे लाज, मनमुख जीव मारन ताअनया। प्रगट होए ग़रीब निवाज, दर द्वार करे परवानया। शब्द रखाए साचा जहाज़, दो जहान करे परवानया। त्रैगुण माया तेरा काज,

हरि साचा आप रचानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौ दर वेख विखानया। कलिजुग माया तेरा साथ, मनमुख रहे निभाईआ। एका भुल्लया हरि रघुनाथ, बैठे मुख भवाईआ। मिले मेल ना त्रैलोकी नाथ, त्रैगुण माया झोली पाईआ। अन्तिम सीआं साढे तिन्न हाथ, आपणी वंड वंडाईआ। लहिणा देण चुक्के मस्तक माथ, चित्रगुप्त हिसाब मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे रिहा जगाईआ। त्रैगुण माया जगत प्रधान, चारों कुन्ट करे जणाईआ। अन्तिम मेटे जगत निशान, लक्ख चुरासी दिस ना आईआ। गुरमुख साचे सन्त पछान, जम की फाँसी आप कटाईआ। एका बख्शे चरन ध्यान, एका रीत सिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कीट हस्त एका रंग रंगाईआ। रंगे रंग हरि अनमुल्ला, सिर आपणा हथ्थ रखाया। गुरमुख विरला पूरे तोल तुला, हरि साचे कंडे नाम तुलाया। भाग लगाए साची कुला, कलि कुलवन्ता नाम पाया। दर द्वारे जो जन आए भुल्ला, दुरमति मैल रिहा मेट मिटाया। लोकमात फलया फुल्ला, फल फुलवाड़ी फल लगाया। कलिजुग बूटा अन्तिम हुल्ला, पत डाल्ही रहिण ना पाया। अन्ध अन्धेर इक्क झुल्ला, सम्मत चौदां वेख वखाया। पंचम जेठ मारे बुल्ला, नौ खण्ड दए हिलाया। धरत मात तेरा वेहड़ा खुल्हा, प्रभ साचा दए कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया तेरा घर, अन्तिम देवे ढाहया । त्रैगुण माया उच्च मुनार, एका एक उसारया। निहकलंका लए अवतार, अन्तिम करे पार उतारया। कलिजुग रोवे धाहां मार, ना दिसे कोई सहारया। सतिजुग सच्चा दर भिखार, मंगे मंग अपर अपारया। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, सो साचा राह विखा ल्या। सतिजुग तेरी सुण पुकार, संग मुहम्मद नाल रला ल्या। सम्मत चौदां मारे मार, चौदां तबकां आप हिला रिहा। अल्ला राणी होए ख्वार, ईसा मूसा वेख वखा रिहा। सतिजुग साचा ख़बरदार, पूत सपूता आप अख्वा ल्या। पुरख अबिनाशी किरपा धार, दोए जोड़ सीस झुका ल्या। शब्द विच्चोला इक्क अपार, प्रभ साचा झोली पा रिहा। सोहँ ढोला विच संसार, चार वरनां इक्क जणा रिहा। सच दुआरा एका खोल्हा, साचा मार्ग ला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया तेरा वर, तेरी झोली पा रिहा। त्रैगुण माया तेरी दात, तेरे संग रखाईआ। ब्रह्मा वेता ना पुच्छे वात, बैठा मुख छुपाईआ। अन्तिम विकणा हाटो हाट, साचा शब्द हाथ ना आईआ। धीरज धीर ना देवे कोई तीर्थ ताट, अट्ठ सट्ठ रोवण देण दुहाईआ। गुर दर मन्दिर शिवदवाला मट्ठ, निर्मल जोत रहिण ना पाईआ। प्रभ चरन द्वारे इक्क इकट्ठ, साचा धाम सुहाईआ। उच्चे मन्दिर नौ खण्ड पृथ्वी जाणे ढठ्ठ, सम्मत पन्दरां नेड़े आईआ। प्रभ गेड़नहारा उलटी लट्ठ, लक्ख चुरासी पीड़ पिड़ाईआ। अग्नी जोती लाए मट्ठ, सम्मत सोलां एका रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया तेरा दर, आपे वेख वखाईआ। त्रैगुण माया तेरा मूल, हरि साचा आप चुकांयदा। शिव शंकर फड़े हथ्थ त्रिसूल, प्रभ अग्गे सीस झुकांयदा। ब्रह्मा वेखे कन्त कन्तूहल, साचा कन्त वेख वखांयदा। करोड़ तेतीसा रिहा फूल, सुरपति राजा सेव कमांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी गई भूल, पारब्रह्म ना कोई मिलांयदा। कलिजुग फल गया फूल, प्रभ अन्तिम तोड़ विखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया दे मति आप समझांयदा। अन्तिम मिटणा जगत निशान, लिख्या लेख चुकांयदा। सतिजुग साचा दर परवान, प्रभ साची भिच्छया पांयदा। कलिजुग अन्तिम होए वैरान, लोकमात रहिण ना पांयदा। चार वरनां वेखे मार ध्यान, ज्ञान ध्यान दिस ना आंयदा। सतिजुग साचा निगाहबान, एका एक अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, त्रैगुण माया तेरा लेख मिटांयदा। त्रैगुण माया तेरा भेख, कलिजुग रंग रतड़ा। आपे वेखे औलीए पीर शेख़, जीव जन्त साध सन्त मुशटंडड़ा। आपे मेटणहारा रेख, आपे दे समझावे मतड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया तेरा चुक्के डर, आपे पाए डूँघे खतड़ा, त्रैगुण माया डूँघे खात, प्रभ साचा आप रखांयदा। आपे वेखे मार झात, दिस किसे ना आंयदा। सतिजुग देवे साची दात, सति सन्तोख धीरज यति झोली पांयदा। जन भगतां बंधावे साचा नात, सम्मत चौदां वेख वखांयदा। मिले मेल कमलापात, विछड़ कदे ना जांयदा। अमृत आत्म देवे सातक सांत, सति सरोवर इक्क नुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी माया धार, आपे वेख वखांयदा। त्रैगुण माया रही कुरला, अन्तिम होई जुदाईआ। जूठ झूठ पाया फाह, ना सके कोई तुड़ाईआ। ना कोई दिसे मात मलाह, फड़ फड़ बन्ने लाईआ। ना कोई बख्शे जगत गुनाह, रो रो दए दुहाईआ। ना कोई पिता दिसे माँ, ना कोई दिसे धी जवाईआ। ना कोई भैण ना भ्रा, नारी कन्त ना कोई हंढाईआ। ना कोई जपाए साचा नाँ, सोहँ अक्खर जगत तराईआ। आपे पिता आपे माँ, गुरमुख साचे बाल अञ्जाणे बैठा गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया तेरा घर अन्तिम पूर कराईआ। त्रैगुण माया तेरा घर, अन्तिम बन्द करांयदा। चारों कुन्ट दिसे डर, कलिजुग दर ना कोई बहांयदा। सर सरोवर ना कोई दिसे सर, तीर्थ तट्ट ना कोई वखांयदा। ना कोई नारी ना कोई नर, नर नरायण ना कोई मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा अन्तिम घर, घर बाहरा वेख वखांयदा। कलिजुग उठ बाल नादान, हरि साचा आप जगांयदा। नेत्र खोल्ह मार ध्यान, लक्ख चुरासी अन्त कुरलांयदा। किसे ना दिसे ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या ना कोए पढ़ांयदा। मगर लग्गे पंज शैतान, चारों कुन्ट मुख भवांयदा। गुरमुख विरला चतर सुजान, प्रभ

चरनी सीस झुकांयदा। प्रगट होए श्री भगवान, भगत भगती सेवा लांयदा। इक्क वखाए सच मकान, नौ दर द्वारे बन्द करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग तेरा साचा वर, तेरी झोली पांयदा। सतिजुग साचा सच मलाह, एका एक कराया। गुर शब्दी देवे इक्क सलाह, साचा मार्ग लाया। इक्क जपाए साचा नाँ, चार वरनां रिहा जणाया। ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान एका थाँ, हरि साचा रिहा बहाया। ज़ात पात मिटे निशान, बीस बीसा रिहा लिखाया। सोहँ रसना सारे गान, इक्क इकीसा दए दुहाया। जगत जगदीसा छत्र सीस झुलान, राज राजान रहिण ना पाया। एका मारे रसना बाण, चिल्ला आप चढ़ाया। खाणी बाणी होए हैरान, वेद पुराण रहिण ना पाया। आपे करे पुण छाण, अञ्जील कुरान दए दुहाया। कलिजुग तेरा अन्त निशान, प्रभ साचा दए मिटाया। सम्मत सोलां तेरी आण, पुरीआं लोआं रिहा कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, तेरी धार चुकाया। सम्मत सोलां कर शृंगार, लाड़ी मौत खुशी मनाईआ। प्रगट होवे विच संसार, चारों कुन्ट पए दुहाईआ। धर्म राए दी सति सपुत्री धी मुटियार, लक्ख चुरासी लए प्रनाईआ। नाल रलाए संग मुहम्मद चार यार, आपणा संग निभाईआ। पुरख अबिनाशी मारे मार, एका खण्डा हथ्थ उठाईआ। दर दर घर घर रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका अन्त कराईआ। सम्मत सोलां तेरा रंग, धरतमात आप चढ़ांयदा। धरत मात मंगी मंग, लक्ख चुरासी फंद फंदांयदा। चिट्टे अस्व कसया तंग, दहि दिशा फेरा पांयदा। एका वहे धारा गंग, लहू मिझ आप वहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरा अन्तिम दर, एका रंग रंगांयदा। कलिजुग अन्तिम रंगे रंग, हरि साचा लाल गुलालया। साचे अस्व कसया तंग, नाल रखाए काल महांकालया। लोआं पुरीआं पार लँघ, नौ खण्ड रिहा सुरत संभालया। लक्ख चुरासी देवे टंग, धर्म राए खोल्ह द्वार दर दरवाज़या। मनमुख जीवां मानस देही होई भंग, मिल्या मेल ना गुर गोपालया। झूठी काया काची वंग, किसे ना चले नालया। किसे ना लाउणा अन्तिम अंग, ना कोई गोद उठालया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका सथ्थर मात विछा ल्या। धरत मात तेरी साची गोद, लक्ख चुरासी आप टिकांयदा। शब्द जणाए अगाध बोध, बोध अगाधा आप अख्वांयदा। दाता सूरा वड जोधन जोध, सूरबीर आप हो जांयदा। कलिजुग तेरा मिटे क्रोध, सतिजुग सीतल सति वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, घर साचे आसण लांयदा। कलिजुग तेरी अवल्लड़ी चाल, प्रभ अन्तिम रिहा मिटाईआ। सृष्ट सबाई हाल बेहाल, दिवस रैण रही कुरलाईआ।

५५६
०६

गुरमुख साचे भाल, आप आपणा मेल मिलाईआ। अट्ठे पहर करे प्रितपाल, प्रितपालक आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख गुरमुख हरिभगत भगती वर एका झोली पाईआ। भगत जनां दर साचा पाया, एका पुरख अपारा। जूठा झूठा मोह तजाया, विसरया संसारा। सोहँ साचा रसना गाया, मिटे रैण अन्धयारा। एका दूजा भउ चुकाया, मेला कन्त भतारा। तीजा नेत्र खोलू वखाया, दरस दिखाए अगम्म अपारा। चौथे दर लए बहाया, आवण जावण फंद कटाया। पंचम मेला सहिज सुभाया, साचा चन्द चढ़ाया। छप्पर छन्न कोई दिस ना आया, हरि साचे सहिज सुखदाया। सति पुरख निरँजण पाए अंजन नेत्र खोलू, शब्द बोल ढोल मृदंग इक्क वजाया। सन्तां भगतां वसे कोल, मन मति बुध रिहा वरोल, आत्म अन्तर वेख वखाया। नौ द्वारे कढ्ढे पोल, मनमुख जीव होए हलकाया। दस्म द्वारी रिहा मौल, आत्म सेजा आसण लाया। आपे करे उलटा कँवल, नाभी कँवली रिहा उलटाया। मेल मिलाए साँवल सँवल, काहना कृष्ना आप अख्वाया। लक्ख चुरासी होई बवल, भेखाधारी भेख वटाया। कलिजुग हँकारी दुष्ट रवण, राम रामा दए खपाया। जन भगतां होए सच्चा जामन, अन्तिम बेड़ा बन्ने लाया। आप फड़ाए आपणा दामन, कामनी काम नेड़ ना आया। मेट मिटाए अन्धेरी शामन, जोत प्रकाश कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखाया। हरिजन साचे साचा मीता, एका एक अख्वाया। एका शब्द जणाए अठारां ध्याए गीता, अर्जन कृष्ना रूप वटाया। आप चलाए आपणी रीता, ना कोई देहुरा ना कोई मन्दिर मसीता, चरन कँवल ध्यान रखाया। जुग जुग परखणहारा नीता, अन्दर मन्दिर वेख वखाया। आपे होए पतित पुनीता, पतित पावन आप अख्वाया। आपे रामा आपे सीता, आपे दुष्ट हँकारी रावण मार मिटाया। आपे हस्त आपे कीटा, आपे लछमण बीर बणाया। आपे मिट्ठा आपे कौड़ा रीठा, आपे हनुवन्त विच समाया। आपे आप होए अनडीठा, निरगुण रूप समाया। आपे आपणी करे परीखा, सरगुण भेख कराया। आप आपणा लिखे लेखा, भेख भिखारी आप अख्वाया। आप बणाए आपणी रेखा, आपे दए मिटाया। आपे नेड़े आपे दूर, आपणे नेत्र आपे वेखा, आपे दिस किसे ना आया। जुग जुग धारे हरि जी भेसा, वरभण्डी रिहा तराया। आपे दर आपे दरवेशा, भिक्खक भिख्या मंगण आया। आपे आप होए नर नरेशा, तख्त ताज इक्क सुहाया। आपे करे वेस अनेका, जुग जुग वेस कराया। आपे आप नानक गोबिन्द दस दस्मेशा, केसाधारी रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी धार विखाया। आपे राज जोग सुल्ताना। आपे शब्द राग निराला। आपे भगत वछल भगवाना। आपे नाम देवे जिया दाना। आपे चरन धूढ़ इशनाना। आपे गोपी आपे काहना। मुकंद मनोहर लक्खमी नरायण आप अख्वाना।

आपे मोर मुकट सिर ताज रखाना। आपे गऊ ग़रीबां गले लगाना। आपे शब्द बिबाणया। आपे तीर कमान आपे अर्जन भगतन निधानया। आपे रथ रथवाही अख्वानया। आपे जोद्धा सूर बली बलवानया। निर्धन रूप आप समाया, आपे मारे तीर निशानया। आपे मुख भवाना, आपे हँकार अभिमानया। आपे बणत बणाना, आपे मेटे जगत निशानया। जुग जुग खेले खेल महाना, द्वापर तेरा दर विखानया। दुर्योध्न होया बाल नादाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोकल नंदन रूप वटानया। गोकल नंदन नंद विहारी, आपणी जोत जगाईआ। द्वापर तेरी अन्तिम वारी, सृष्ट सबाई वेख वखाईआ। भगत सुहेला भगत अधारी, बिदर सुदामा गले लगाईआ। द्रोपत लज्जया आप निवारी, बस्त्र चीर तन पहनाईआ। खेले खेल हरि गिरधारी, जगत गवर्धन हथ्थ उठाईआ। नाम बंसरी वज्जे इक्क अपारी, राधका अराध रसना रही ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप वटाईआ। द्वापर अन्तिम भेख वटाया, कृष्न काहन अख्वांयदा। विष्न वराटी रूप वटाया, भेव कोए ना पांयदा। चौदां लोक एका हाटी तन वसाया, लोआं पुरीआं मुख रखांयदा। पार घाट किसे दिस ना आया, ना कोई पार करांयदा। एका भगत माण गंवाया, एका रूप वखांयदा। भरम भुलेखे जगत भुलाया, भेव कोए ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, द्वापर तेरा अन्तिम सगन, आपणी हथ्थीं आपे पांयदा। द्वापर तेरा अन्त करा, आपणे विच समाया। कलिजुग साचा मात धरा, अथर्बण राह वखाया। ऐड़ा अक्खर रिहा अल्ह, अल्ला नूर धराया। ईसा मूसा लए उपा, आप आपणी सेवा लाया। संग मुहम्मद चार यार रला, एका नाअरा लाया। बिस्मिला करे सर्ब खुदा, खुदी ना रत्ती इक्क वखाया। आप आपणी दया कमा, नानक सेवा लाया। आप जगाए दीपक लए बुझा, दीवा बत्ती आपणे हथ्थ रखाया। राग छत्ती दए जणा, नार सुरसती नाल रलाया। पुरख अबिनाशी रिहा गा, आत्म दरसी दर्शन पाया। आप चलाए आपणा राह, साचा हुक्म जणाया। गुर गोबिन्दा लए उपा, पूत सपूता नाउँ रखाया। लोकमाती जन्म दवा, आप आपणा विच टिकाया। जगत भगत बण मलाह, सेवक सेवा रिहा कराया। अन्तिम मेला लए मिला, आवण जावण गेड़ कटाया। गोबिन्द रसना गया गा, कलिजुग अन्तिम दए दुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर आप अख्वाया। कलिजुग तेरा अन्तिम अन्त, प्रभ हथ्थ वड्याईआ। ना कोई सहाई साध सन्त, सति पुरख ना कोई मिलाईआ। चारों कुन्ट कुरलायण जीव जन्त, धीरज धीर ना कोई धराईआ। होए विछोड़ा नारी कन्त, कन्त सुहाग ना कोई हंढाईआ। पारब्रह्म महिमा अगणत, गणत गणी ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे सन्त दुलार आपे गले लगाईआ।

५६१
०६

सुण अरदास प्रभ दया कमाई। सोया सुत उठाया, देवे दरस आप रघुराई। रुठयां रिहा मनाया, पकड़ उठाए फड़ फड़ बाहीं। सतारां मास दिवस सतारां, लिख्या लेख लिखाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैबैणी नैणी रिहा विखाई। पूत सपूत जोग स न्यास, एका मात कराया। मिले मेल शब्द अबिनाश, विछड़ कदे ना जाया। पंचम मेला भैण भ्रात, भईआ बेबे संग रलाया। सिँघ अजीत प्रभ पुच्छे बात, गुर पूरा पूरन पूरन रिहा जगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बारां चेत नेतन नेत नैण नैणी वेख वखाया।

❊ १३ चेत २०१४ बिक्रमी दीदार सिँघ दे गृह पिण्ड आलो वाल हुश्यार पुर ❊

आप सुहाए थान, चरन छुहाया। वड दाता मेहरबान, देवे रिजक सबाया। चरन कँवल बख्शे इक्क ध्यान, लेखा लेखे रिहा लाया। साचा मेला श्री भगवान, सति पुरख निरँजण आप मिलाया। एका शब्द सच निशान, घर मन्दिर आप टिकाया। देवणहार विच जहान, जग जीवण दाता आप अख्वाया। करे कराए जाण पछाण, गऊ ग़रीबां आप उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रोग सोग चिन्त वैराग अन्तिम मेट मिटाया। करता पुरख हरि अबिनाश, आपणी दया कमाया। हरिजन होया दासन दास, नेत्र नैण नीर वहाया। सच वस्त हरि साचे पास, झोली नाम भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दाम घर साचे आप टिकाया। गुरमुख आत्म बुध बिबेक, एका एक रखाईआ। आपे बैठा रिहा वेख, एका टेक सिखाईआ। मेटणहारा लिख्या लेख, लिख्या लेख दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख गोबिन्द दरस दिखाईआ। गुरमुख आस प्यास तृष्ना, दिवस रैण बिल्लाए। किरपा करे भगवान विष्ना, विष्नूं रूप वटाए। नेत्र नैण किसे ना दिसना, सृष्ट सबाई रिजक सबाए। कलिजुग अन्तिम जन भगतां वंडाए साचा हिस्सना, आप आपणी वंड कराए। मेट मिटाए जगत तृष्ना, भुक्ख रहिण ना पाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आत्म सुख सुख सहिजे सहिज उपजाए। आत्म सुख आत्म रस, आत्म दर परवानया। मेल मिलाए नस्स नस्स, खेले खेल विच जहानया। तीर निराला कस कस, मारे शब्द निशानया। आपे होया भगतां वस, भगत अधीन श्री भगवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर द्वार करे परवानया। दर परवाना हरि भगवाना, एका एक कराया। आपे देवे जिया दाना, जीवण दाता आप अख्वाया। आपे होए बीना दाना, दाना बीना हरि रघुराया। जन भगतां करे ठांडा सीना, अमृत नाम मुख चुआया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर द्वारे दरस दिखाया।

❊ १३ चेत २०१४ बिक्रमी सरूप सिँघ दे गृह इक्की परिवारां दा इक्ठ होया पिण्ड मुध ज़िला जलन्धर ❊

चरन धूढ़ गुरदेव, गुरमुख विरला पांयदा। चतर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, आप आपणा रंग रंगांयदा। जगत नाता कूड़ो कूड़, पुरख बिधाता दया कमांयदा। लक्ख चुरासी कटे जूड़, घर साचे इक्क बहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां मस्तक टिक्का आप लगांयदा। चरन धूढ़ गुरदेव, गुरमुख विरले मस्तक लाईआ। लेखे लाए साची सेव, आत्म वेख वखाईआ। हरि हरि गाया जिह्वा जिह्व, गुणवन्ता गुण झोली पाईआ। कौस्तक मणीआ मस्तक थेव, अलख अलखणा रिहा लगाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी अभेव, भेव अभेदा आप अख्वाईआ। सोहँ शब्द सच्चा मेव, आत्म भोग लगाईआ। किसे हथ्थ ना आए देवी देव, करोड़ तेतीस रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां देवे मात वड्याईआ। चरन धूढ़ गुरदेव, देवे नाम निधानया। गुरमुख साचे लाए साची सेव, दर द्वार करे परवानया। चार वेद ना पायण भेव, खाणी बाणी गाए तरानया। दर दर घर घर मन्दिर अन्दर बैठे रहे सेव, सेवा करे ना कोई परवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त दुलार, एका देवे नाम निधानया। नाम निधाना हरि गुणवन्ता, एका एक रखांयदा। जन भगत बणाए साची बणता, दुरमति मैल धवांयदा। सतिजुग उपजाए साचे सन्ता, साचा मार्ग इक्क वखांयदा। पारब्रह्म बेअन्त बेअन्ता, बेअन्त रूप हो आंयदा। साचा मेला नारी कन्ता, हरि साजण मीत मुरार आप अख्वांयदा। एका राग कन्न सुणंता, अनाद अनादी धुन उपजांयदा। देवे वड्याई जीव जन्ता, जीव जन्त आप तरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त दुलार, कर किरपा पार करांयदा। चरन धूढ़ मस्तक टिक्का, गुरमुख विरला लांयदा। पारब्रह्म प्रभ नीकन नीका, दिस किसे ना आंयदा। अन्तिम लेखा चुक्के साढे तिन्न हथ्थ सींअ का, नेत्र लोचन नैण दर्शन पांयदा। भेव चुकाए जीव जन जीअ का, चेतन्न रूप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे चतर सुजान, आपे वेखे मार ध्यान, सोए मात उठांयदा। गुरमुख सोए आप उठाए, कलिजुग तेरी अन्तिम वारीआ। जोत निरँजण सेवा लाए, देवे शब्द दलासीआ। शब्द सुरत इक्क ध्यान बंधाए, एका दूजा भेव निवारया। तीजे नैण वेख वखाए, घर चौथे आप समा रिहा। पंचम मीता इक्क रघुराए, गोबिन्द गोबिन्द विच समा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुख साचे सन्त दुलार, पावे साजन सारया। साजन मीता हरि निरँकार, एका एक अख्वाया। जन भगतां करे मात प्यार, कलिजुग अन्तिम आया। जूठा

झूठा मीत मुरार, सतिजुग साचा राह वखाया। एका अक्खर रसन जै जैकार, जै जै जैकार कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा लेखा रिहा लिखाया। साचा लेखा हरि करतार, आपणे हथ्थ रखाया। सम्मत चौदां वेख विचार, आपणी कल वरताया। सन्त सुहेले करे ख़बरदार, पहली चेत्र दिवस सुहाया। दूजी चेत्र कर प्यार, साध सन्त लए मिलाया। तीजे चेत्र लोकमात विहार, त्रैलोकां रिहा हिलाया। चौथे चेत्र साचे यार, घर दसवें वेख वखाया। पंचम चेत्र पंचम मीता हरि करतार, राग अनादी धुन वजाया। छे चेत्र बन्ने धार, छप्पर छन्न कोए रहिण ना पाया। सत्त चेत्र सति करतार, सति पुरख निरँजण विच समाया। अट्ठ चेत्र जोद्धा बलकार, अट्ठां तत्तां रिहा रंगाया। नौ चेत्र नौ द्वार, लक्ख चुरासी रिहा फिराया। दस चेत्र शब्द विहार, गुरसिक्खां घर कराया। ग्यारां चेत एका तत्त सृष्ट सबाई नार, कन्त कन्तूहल आप अख्वाया। बारां चेत्र मारे मार, बारां मास रहिण ना पाया। तेरां चेत्र तेरी धार, नानक निरगुण गाया। नानक अन्तिम गया हार, कलिजुग डंक वजाया। कलिजुग होया ख़बरदार, आपणी धारा रिहा वहाया। गोबिन्द ल्या अन्त अवतार, प्रभ चरनी ओट रखाया। खण्डा तेज हथ्थ कटार, वंडां रिहा वंडाया। जेरज अंडां करे विचार, भेख पखण्डा रिहा मिटाया। कलिजुग करया आपणा वार, आपणा हथ्थ रिहा उठाया। गुर गोबिन्दा दोए जोड़ करे निमस्कार, प्रभ चरनी सीस झुकाया। बंस सरबंसा दित्ता वार आपणा आप गंवाया। कल्गी तोड़ा सीस दस्तार, आपणे हथ्थ रखाया। दिवस रैण करे विचार, प्रभ चरन ध्यान रखाया। एका एक सुण पुकार, रसना जिह्वा रिहा अलाया। पुरख अबिनाशी सुण पुकार, धुन नाद वजाया। सुणे सुणाए सुणनेहार, गोबिन्द रिहा सुणाया। पूत सपूता विच संसार, सति पुरख आप उपाया। वेख वखाए चारे कूटां पावे सार, दहि दिशा फोल फुलाया। अन्तिम झूला इक्क हुलार, हरि शब्दी दए झुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए वर, कलिजुग अन्तिम वक्त सुहाया। कलिजुग अन्तिम वड बलवान, लोकमात हंकारया। गुर गोबिन्दे फड़ी तीर कमान, गया चरन द्वारया। प्रभ अबिनाशी वेखे मार ध्यान, तेरी कलि अन्तिम वारया। जूठ झूठ होई प्रधान, जीव जन्त साध सन्त होए गंवारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख वटा रिहा। तिन्न दस तेरां तेरी रुत्त, हरि साचा आप सुहांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, आपणी खेल खिलांयदा। सन्त सुहेले जो गए रुठ्ठ, अन्तिम कलि मिलांयदा। अगम्म अगम्मा गया तुठ्ठ, अमृत आत्म जाम प्यांअदा। तीर निराला रिहा छुट्ट, तिक्खी धार विखांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी लए लुट्ट, अन्दर मन्दिर कोए रहिण ना पांयदा। शाह सुल्तानां हथ्थ खाली ठुठ्ठ, दर दरबान ना कोई वखांयदा। धर्म राए दर टंगे पुठ्ठ, लहिणा देणा

मूल चुकांयदा। गुर संगत बणाए एका मुट्ठ, एका इक्की पांयदा। नेड़ ना आए जूठ झूठ, साची सिक्खी नाउँ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत तेरां तेरा वर, तेरी झोली पांयदा। तेरां तेरा धर्म विचार, हरि साचे जोत जगाईआ। कलिजुग काया होई ख्वार, ना कोई दिसे मात सहाईआ। चारों कुन्ट धुँदूकार, गुरदर मन्दिर मस्जिद पई दुहाईआ। साध सन्त गए हार, मति बुध विभचार आप बणाईआ। माया ममता तन हँकार, हउमे हँगता दूर कराईआ। भुक्खा नंगा नाम विहूणा कलिजुग रोवे ज़ारो ज़ार, संग मुहम्मद मीत मुरार दए दुहाईआ। नानक वेखे लहिणा अंगद, अमरदास सरनाईआ। रामदास तेरी साची संगत, अर्जन रिहा वड्याईआ। हरि गोबिन्द वखाए दुहरी धारा, खण्डा हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, हरिजन साचे रिहा जगाईआ। हरि चरन धूढ़ गुरदेव, गोबिन्द मेल मिलांयदा। लक्ख चुरासी करे खेल, हरि साचा दिस ना आंयदा। गुरमुख उपजाए साचे मेल, आप आपणी बूझ बुझांयदा। अन्त मिटाए सगली चिन्द, भाण्डे भरम गढ़ हँकार तुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरां तेरी धार वहांयदा। तेरां तेरा अन्त किनार, हरि साचे आप कराया। नानक करया जगत विहार, सतिजुग साचा रिहा जगाया। सोहँ अक्खर दोह वक्खर कर विचार, चौह अक्खर भेव मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क वसाया। सम्मत तेरां तेरा रंग, त्रैगुण आप चढ़नया। चारों कुन्ट दिसे नंग, लक्ख चुरासी आत्म अन्नयां। जल नीर ना दिसे जमना गंग, वेले अन्तिम अट्ठ सट्ठ डन्नया। मन्दिर अन्दर किसे हथ्थ ना आए सेज रंगील पलँघ, पारब्रह्म गुर पूरा किसे ना मन्नया। जूठ झूठ जन रहे मंग, मिले नाम ना सच्चा धन धनया। अन्तिम भज्जणा काची वंग, जो घड़या सो भन्नया। गुरमुख विरला उडे शब्द डोरी नाल पतंग, आकाश चढ़ाए साचा चन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चेत्र तेरां तेरा वर, घर गुरमुख विरले मात मंग्गया। बीस सद चौदां सम्मत चढ़या, चौदां लोक वज्जे वधाईआ। गुर गोबिन्दा गुरमुखां दर द्वारे अग्गे खड़्या, वेखे सर्ब लोकाईआ। शब्द खण्डा हथ्थ फड़या, दोवें धारा रिहा वखाईआ। अग्गे कोए ना दिसे अड़या, अन्तिम मेट मिटाईआ। भगत जनां दे अन्दर वड़या, बैठा आसण लाईआ। ना जन्मे ना मरे ना कदे सड़या, जोती जोत समाईआ। पारब्रह्म गुर सरनी पड़या, अन्तिम दए वड्याईआ। पुरख अबिनाशी घाड़न घड़या, लोकमात जन्म दवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा संग निभाईआ। साचा संग आप निभाए, अकल कला भरपूरा। अंग संग आप हो जाए, वसे नेड़े दूरा। वस्त कोई ना संग ल्याए, एका जोती साचा नूरा। गुर गोबिन्दा अंग लगाए, लिख्या लेख कराए पूरा। गुरमुख साचे सन्त

५६५
०६

जनां संग निभाए, दिवस रैण अट्ठे पहर हाज़र हज़ूरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौ खण्ड पृथ्वी करे चूरा। लाल रंग हरि गोपाल, एका एक रखाया। उप्पर बैठ दीन दयाल, अकल कला वरताया। आपे आपणा मार उछाल, आप आपणे विच समाया। आपे निकाले साचा लाल, साचा बस्त्र तन छुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर सत्तवें बैठा आसण लाया। सत्तवां घर हरि करतार, एका रंग गुलालया। जोत सरूपी कर आकार, आपे वेख वखा ल्या। आपे जाणे आपणी धार, दीपक दूसर ना कोई वखा ल्या। सति पुरख निरँजण एका कार, एका रूप समा ल्या। लाल भूशन बस्त्र अपार, लच्छमी तन छुहा ल्या। सेवक सेवा करे दर दरबार, चरनां विच बहा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेख वटा ल्या। साचा संग हरि निरँकार, आपणा आप टिकाया। छेवें घर पावे सार, कंचन रूप वटाया। साचा सुत हरि दातार, एका शब्द उपाया। बस्त्र तन हरि नाम शृंगार, आपणे रंग रंगाया। ना कोई जाणे जीव गंवार, साध सन्त दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द बाणा आपे आप रंगाया। शब्द बाणा हरि सुल्तान, कंचन रंग रंगांयदा। वेखे खेल दो जहान, वाली दो जहान आप अख्वांयदा। मेट मिटाए आप निशान, आपणा आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द गुर लिख्या धुर, आपणे लेख आपणे हथ्थ रखांयदा। शब्द गुर हरि वड बलवान, एका एक अपारया। इक्क फड़ाए नाम कमान, एका चिल्ला रिहा चढ़ाया। आपे वेखे मार ध्यान, दिस किसे ना आया। कंचन रूप कंच समान, हरि साचा विच समाया। जोती नूर इक्क महान, जोती रंग वटाया। द्वार बंका इक्क विखान, एका दूजा संग निभाया। शब्दी जोती एका हाण, एका रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कंचन वेस आपणा कर, शब्दी नाउँ रखाया। कंचन वेस हरि निरँजण, शब्द सुत करांयदा। चरन धूढ़ बख्शे अंजन, सच इशनान करांयदा। एका ताल घर साचे वज्जण, वजावणहार आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क बणाए शब्द गुर, जुग जुग वेस वटांयदा। कंचन रंग इक्क अपार, एका एक रंगाया। शब्द सुत कर प्यार, साचा सेहरा तन सजाया। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, आपणी खेल आप रचाया। ना कोई जाणे काया बुत्त, पंज तत्त दिस ना आया। ना कोई बरख मास रुत्त, दिवस रैण ना कोई जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग वटाया। कंचन रंग हरि निरँकार, एका एक रंगाया। दूजे घर पावे सार, शब्दी शब्द जणाया। करे खेल अगम्म अपार, अगम्मड़े धाम सुहाया। जोती नूर इक्क चमत्कार, अन्ध अन्धेर दिस ना आया। पारब्रह्म एका एकँकार, एका रूप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,

कंचन काया कोट ना कोई वसाया। कंचन गढ़ हरि अपार, एका नाम रखाया। उप्पर चढ़ सच्ची सरकार, सच सिँघासण आसण लाया। आवे जावे वारो वार, जुग जुग भेख वटाया। खेले खेल विच संसार, लिखिअ लेख रिहा लिखाया। सच दर खोल्ह किवाड़, हरि आपणा रूप वखाया। वेस वटंदड़ा हरि निरँकार, सूही धार चलाया। सो पुरख निरँजण अपर अपार, घर बैठा वेख वखाया। इक्क इकल्ला मीत मुरार, साची रीता रिहा चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर वेखे वेख विखाया। सूहा वेस दर दरवेश, शब्द सुत कराया। ना कोई नर ना नरेश, जीव जन्त ना कोई रखाया। ना कोई मूंड मुंडाए धारी केस, ज़ात पात ना कोई रखाया। ना कोई गुरू ना गोबिन्द ना दस दस्मेस, हरि जोती जोत समाया। आपे जाणे आपणा वेस, जुग जुग करदा आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका रंग रिहा रंगाया। सूहा रंग सूही धार, हरि आपणी आप कराईआ। जोती नूर अपर अपार, आपणा रूप वटाईआ। सुन्न अगम्मो आया पार, घर दसवां वेख वखाईआ। चौथा घर हरि निरँकार, चिट्टी धारा रिहा वखाईआ। आपे बैठ नर निरँकार, शब्द सिँघासण आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अबिनाशण दया कमाईआ। सच सिँघासण अपर अपार, हरि आपणा आप सजाया। जोत सरूपी वेखे धार, दस्म द्वारी रिहा वखाया। आपे बैठ नर निरँकार, शब्द सिँघासण आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा दर खुल्हाया। दर खुल्हाए दस्म द्वार, चारो कुन्टां वेख वखांयदा। पीला बस्त्र तन शृंगार, जीआं जन्तां आप वखांयदा। भरमे भुल्ले भरम गुआर, पंज तत्त मोह विच समांयदा। कोई ना पावे हरि हरि सार, हरि भाणा भेव ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कंचन वेस नर नरेश, आपणा रूप वटांयदा। पीला रंग पीली धार, हरि आपणी आप रखाईआ। जोती नूर अपर अपार, आपणा वेस वटाईआ। गुरमुख विरला पाए सार, जिस जन बूझ बुझाईआ। त्रैकुटी छूटे लाहा साचा लूटे, अमृत धारा मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग रंगाईआ। नीली धार नीला अस्वार, नीली छत्तों पार करांयदा। वेख वखाए विच संसार, लोकमाती फेरा पांयदा। अजपा जाप ना विसरे, बेपरवाह एका धार रसन चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा आप आप जणांयदा। काला रंग काला सूसा, कलिजुग रंग शृंगारया। आपे वेखे देवे डन्न, पर्दा खोल्ह चार द्वारया। घड़े भन्ने अन्त डन्ने, वड वड जीव हंकारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल विच संसारया। सत्त रंग हरि सच निशान, एका एक जणाईआ। मातलोकी खेल महान, आपे वेख वखाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उप्पर लेख लिखाईआ। सो पुरख निरँजण गुण

निधान, जीआं जन्तां रिहा जणाईआ। हँ हँगता मिटे जगत निशान, साची संगता रिहा बणाईआ। लक्खण दीप एका आण, आपणी रिहा कराईआ। आपे वेख गुण निधान, गुरमुख सोए रिहा जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि शब्द रक्खे वड्याईआ। हरि शब्द वड्याई, हरि आपणे हथ्थ रखाईआ। करौच करौच वज्जे वधाई, हरि साचा रिहा सुणाईआ। जूठ झूठ होए जुदाई, सम्मत चौदां नेड़े आईआ। करौच वेखे चाँईं चाँईं, प्रभ साचे खेल रचाईआ। जन भगतां पकड़े आपे बाहीं, सुत्या रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सत्तां दीपां वेख वखाईआ। पुष्कर दीप करे जुदा, अन्तिम दए दुहाईआ। पंचम जेठ दिवस विचार, प्रभ साचा लेख लिखाईआ। गुरमुख साचे लए उभार, आप आपणा दरस दिखाईआ। पूर्ब लहिणा कर्म विचार, पिछला मूल चुकाईआ। देवे दरस अगम्म अपार, आत्म जोती नूर सवाईआ। शब्द खण्डा तेज कटार, आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरमुखां करे ख़बरदार, पहरेदार आप हो आईआ। कलिजुग रैण अन्ध अंध्यार, चार कुन्ट अन्धेरा छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुष्कर वेखे तेरी वड्याईआ। जम्बु दीप ना जम्बक ग्रासे, हरि जोती नूर उपाया। शाह सुल्तान रहिण चरन भरवासे, प्रभ साचा लेख लिखाया। वेख वखाए पृथ्वी आकासे, लोआं पुरीआं वेख वखाया। साचे मण्डल पावे रासे, आप आपणा भेख वटाया। आदि अन्त ना कदे विनासे, अबिनाशी करता आप अख्वाया। भगत जनां हरि हिरदे रक्खे वासे, आत्म ब्रह्म जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जम्बु देश देवे वर, वर दाता आप अख्वाया। सत्तां दीपां सुण पुकार, चार कुन्ट रहे कुरलाईआ। ना कोई माई ना कोई बाप, बैठे मुख छुपाईआ। त्रैगुण माया चढ़या ताप, बैठी मठ तपाईआ। मनमुख जीवां भुल्ले आपणा आप, सुध रहिण ना पाईआ। आपे वेखे पुन्न पाप, वेखणहार आप अख्वाईआ। एका भुल्लया हरि हरि जाप, राए धर्म दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सान दीप तेरी कल आपणे हथ्थ रखाईआ। सलमल दीप रिहा पुकार, दोए जोड़ करे निमस्कारया। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, ढहि पया द्वारया। पारब्रह्म प्रभ पावे सार, सम्मत चौदां चरन छुहा रिहा। सम्मत चौदां दए हुलार, सिर आपणा हथ्थ टिका रिहा। दूसर कोई ना मारे मार, ना कोई शस्त्र वेख वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा आपणे हथ्थ रखा रिहा। कुशा दीप कर कल्याण, हरि एका रंग रंगावना। आपे वेखे मार ध्यान, सगला संग ना कोए निभावणा। जीव जन्त बाल नादान, अग्गे हो ना किसे बचावना। रसना चिल्ला तीर कमान, साचा तीर आप चलावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दीपां लोआं वेख विखावणा। सत्तां दीपां वेख विखाए, हरि आपणी जोत अधारया। आपणा लेखा रिहा लिखाए, वरते वरतावे

विच संसारया। सम्मत चौदां चौदां लोक मिटाए, चौदां लोकां बूहा लाह रिहा। चौदां तबकां मार मराए, संग मुहम्मद नाल रला ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भेखाधारी भेख वटा ल्या। भेखाधारी भेख वटाए, जोती नूर सवाया। कुला खण्ड हरि वेख वखाए, पंचम जेठी फेरा पाया। इलाबुत दए दुहाए, ना कोई धीर धराया। केतमाल प्रभ आप सुहाए, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। किंपुरख पया सरनाए, हरि साचा लए बचाया। हरवरख दए दुहाए, अंग अंग रिहा तुड़ाया। हरणयमह एका लिव लाए, प्रभ चरनी ओट रखाया। रमक रो रो गल पलड़ा पाए, नेत्र नीर वहाया। भद्र बैठा रिहा शरमाए, ना कोई मेली मेल मिलाया। भारत खण्ड हरि पाए वंड, पुरख अबिनाशी जोत जगाया। नौ खण्ड पृथ्वी देवे दंड, एका खण्डा हथ्थ उठाया। आपे वेखे जेरज अंड, उत्भज सेत्ज वेख वखाया। मेट मिटाए भेख भखण्ड, कलिजुग तेरी धारा रिहा मुकाया। लक्ख चुरासी नार दुहागण रंड, सुहागी कन्त ना कोए हंढाया। राज राजानां शाह सुल्तानां तन घमंड, मोह विकारा इक्क वसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौ खण्ड सत दीप आपणे भाणे विच रखाया। नौ खण्ड हरि वंड वंडाई, आपणी बणत बणाईआ। शब्द चण्ड प्रचण्ड हथ्थ उठाई, चौदां लोकां रिहा वखाईआ। सम्मत चौदां कर कुड़माई, गुर गोबिन्दे संग मिलाईआ। जन भगतां घर वज्जे वधाई, मनमुख रोवण मारन धाईआ। हरिजन मेला चाँईं चाँईं, चेत्र तेरां तेरी रुत सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया वेख दर, दर दरवाज़ा रिहा खुल्हाईआ। गोबिन्द काया साचा घर, हरि साचे मात उसारया। आपे देवणहारा वर, आपे कर्म कमा रिहा। आप चुकाए आवण जावण डर, आपे लेख लिखा रिहा। आप नुहाया साचे सर, चरन सरोवर इक्क विखा रिहा। शब्द भण्डारा आपे भर, जगत वरतारा आप करा रिहा। तीर कटारा हथ्थ फड़, सोहँ खण्डा मात चमका रिहा। नौवां खण्डां एका पौड़े चढ़, एका डण्डा मात वखा रिहा। शब्द भण्डारा आपे भर, जगत वरतारा आप करा रिहा। तीर कटारा हथ्थ फड़, सोहँ खण्डा मात चमका रिहा। भगत जनां दे दर द्वारे अग्गे खड़्, हरि आपणी बूझ बुझा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, लिख्या लेख लिख्त भविख्त सज्जण सखा आप वरता रिहा।

सति पुरख मेहरवान, साचा सति रखाया। सति सतिवादी दो जहान, एका एक हो आया। एका दूजा भेव कटान, हरि साचा संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोद्धा सूर आप अख्वाया। एका दूजी धार मिटाए, एका जोत अकालया। दीनां बंधप दीन दयाल अख्वाए, जन भगतां करे सदा प्रितपालया। गुर भण्डार हरि वरताए, दिवस

रैण रहे सवालीआ। प्रभ अबिनाशी भिख्या पाए, धुरदरगाही साचा मालीआ। लोकमात हरि जन्म दवाए, आप आपणे मेल मिला ल्या। कलिजुग अन्तिम संग निभाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द जोती रूप समा ल्या। गोबिन्द काया शब्द धार, हरि एका एक रखाया। आपे वसया नर निरँकार, आपे सेवा लाया। आप सुहाए बंक द्वार, दर दरवाज़ा आप सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द हरि हरि गोबिन्द एका धाम सुहाया। हरि गोबिन्द एका धाम, एका रूप समाया। आपे कृष्ना आपे शाम, आपे राम रूप हो आया। आपे अमृत मध प्याए जाम, आपे सद दर घर लए बहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द साचा घर सुहाया। गोबिन्द घर हरि सुल्तान, एका एक सुहाया। धर्म विखाए शब्द निशान, साचे हथ्थ उठाया। रसना चिल्ला तीर कमान, एका एक रखाया। सोहँ शब्द नौजवान, साचा संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर चेला आप अख्वाया। गुर चेला भगवन्त, एका एक अख्वाया। आपे जाणे साध सन्त, साजण मीत आप हो आया। गोबिन्द पाया साचा कन्त, घर साची खुशी मनाया। लोकमात बणाए बणत, कलिजुग अन्तिम दए सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सीस हथ्थ रिहा टिकाया। गोबिन्द हथ्थ हरि समरथ, आपणा सीस रखांयदा। शब्द देवे साची वत्थ, काया तन भरांयदा। आप चढ़ाया साचे रथ, रथ रथवाही आप अख्वांयदा। सृष्ट सबाई दए मथ, नाम खण्डा एका उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, कुलाखण्ड वेख वखांयदा। कुलाखण्ड तेरा काला दाग़, अन्तिम मेट मिटांयदा। नारी कन्त इक्क सुहाग, कन्त कन्तूहल हंढांयदा। एका उपजे शब्द वैराग, अट्ठे पहर ध्यांयदा। चरन कँवल जाए लाग, मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमांयदा। आप बुझाए तृष्ना आग, तामस मिटांयदा। हँस बणाए प्रभ साचा काग, सोहँ चोग चुगांयदा। आप आपणे हथ्थ रक्खे वाग, दो जहानां आप फिरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द दर सुहांयदा। इलाबुत तेरा एका एक, अल्ला नूर अलाहीआ। पारब्रह्म प्रभ आपे वेख, ना कोई दूसर लए सलाहीआ। अमाम मैहन्दी धारे भेख, नीले बस्त्र तन छुहाईआ। जाणे पछाणे औलीए पीर शेख़, गौंस मजौर रिहा हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ऐली अल्ला नाम रखाईआ। ऐली अल्ला अलाही नूर, एका एक अख्वाया। शब्द वजाए साची तूर, हरि परवरदिगार रिहा सुणाया। तोड़ तुड़ाए माण ग़रूर, चारों कुन्ट होए हलकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, डंका डौरू वाहया। डौरू डंका नाम अमाम, हरि साचा आप अख्वांयदा। आप प्याए मदि मदिरा जाम, आबे हयात आपणे हथ्थ रखांयदा। आप कराए

एका ताम, काया तृप्त करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इलाबुत तेरी वेखे रुत्त, सम्मत चौदां वेख वखांयदा। इलाबुत तेरा अलाही नूर, हरि साचे वेख वखानया। आपे वेखे जोती नूर कोहतूर, आपे आप करे पछानया। वज्जे डंका कूड़ो कूड़, अन्तिम होए वैरानया। चारों कुन्ट उडे धूढ़, मिटे मात निशानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल श्री भगवानया। केतमाल हो बेहाल, खुल्हड़े केस रखाईआ। ना कोई दिसे मात दलाल, वेले अन्त लए छुडाईआ। फल ना दिसे किसे डाल्ह, कलिजुग हलूणा रिहा लगाईआ। कलिजुग घर घर खाए काल, काली धार वहाईआ। पारब्रह्म तेरी अवल्लड़ी चाल, मुल्ला शेखां हथ्थ ना आईआ। अमाम मैहन्दी रहे भाल, रो रो देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, केतमाल आपणा डंक वजाईआ। केतमाल हरि मृदंग, एका एक वजावणा। लाड़ी मौत मैहन्दी लाल लाए अंग, साचा वेस करावणा। दर द्वारे मंगे मंग, जीव जन्त फंद कटावणा। धर्म द्वारे देवे टंग, संग ना कोई रखावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पूर कराए भावना। किंपुरख किरपा कर, किरतम वेख वखांयदा। गुण अवगुण जीआं जन्तां अग्गे धर, छाण पुण आप करांयदा। सन्त सुहेले लए वर, आप आपणा दरस दिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, (भावना पूर आप करांयदा)। हरवरख हरि मार ध्याना, राज राजानां रिहा जगाईआ। नाता तुट्टे पंज शैताना, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। चौदां लोकां इक्क दुकाना, हरि साचा हट्ट खुल्हाईआ। सृष्ट सबाई फनाह मकाना, अन्तिम रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरवरख एका वरखा लाईआ। हरणयमह अन्तिम गया हर, हरि हरि रसन ध्याया। चारों कुन्ट आउणा डर, साचा खेत्र आप बणाया। इक्क दूजे नूं लैण वर, लाड़ी जोड़ी रिहा बणाया। आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे घोड़ी रिहा चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाए घट घट जाए घर, अन्दर डेरा लाया। रमक राम रिहा चितार, दिवस रैण अराध्या। पुरख अबिनाशी सुण पुकार, लेखे लाए सुन समाध्या। मनमुख डोबे अद्ध विचकार, अन्तिम बेड़ा बांध्या। सम्मत चौदां धक्का देवे मार, ढाहे कल्लर रेती कांध्या। आपे ढाहे लए उसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे पाए फांदी फांदया। भदर भरम दए मिटा, हरि साचे जोत जगाईआ। एका शब्द डंका वजा, चारे कुन्टां रिहा सुणाईआ। राज राजानां दए सुणा, एका डंक वजाईआ। गुरमुख साचे गले लगा, आपणी गोद उठाईआ। अमृत आत्म जाम पया, तृखा तृष्न मिटाईआ। फड़ फड़ बाहों राहे पा, साचा राह वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, भरम गढ़ रिहा तुड़ाईआ।

भारत खण्ड तेरी अन्तिम वंड, चौथे जुग कराईआ। पुरख अबिनाशी मेट मिटाए भेख पखण्ड, नौ खण्ड दिसे रंड, गुरमुख विरले शब्द कुड़माईआ। सोहँ फड़ाए चण्ड प्रचण्ड, सृष्ट सबाई खण्ड खण्ड, लक्ख चुरासी दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। नौ खण्ड तेरा अन्त विहार, प्रभ आपे आप करांयदा। सन्त सुहेले साचे भाल, आपणे संग निभांयदा। फल लगाए काया डाल्ह, अमृत आत्म फल खवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत चौदां रुत्त सुहांयदा। सम्मत चौदां साचा चन्न, गोबिन्द गुर चढ़ाया। पारब्रह्म प्रभ बेड़ा बन्न्ह, गुरमुखां दरस दिखाया। इक्क रखाया नाम धन, घर घर वंडण आया। राग सुणाए साचा कन्न, सोहँ शब्द अल्हाया। आपे बेड़ा देवे बन्न, आपे होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द गोबिन्द भेख वटाया। गोबिन्द भेख अपर अपार, कलिजुग अन्त कराईआ। प्रगट हो विच संसार, गुर चेला आप अख्वाईआ। शब्द खण्डा तेज कटार, तन गात्रे रिहा लटकाईआ। पीले बस्त्र तन श्रृंगार, नीले वाला आप रघुराईआ। नीला नीली छत्तों करे बाहर, वाग आपणे हथ्थ उठाईआ। लोआं पुरीआं करे ख़बरदार, ब्रह्मा शिव उठाईआ। देवत सुर दए हुलार, एका शब्द जणाईआ। सत्तां दीपां पाए सार, कलिजुग अन्तिम वज्जे वधाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क अधार, सोहँ शब्द रखाईआ।

५७२ ०६ चारों कुन्ट जै जै जैकार, चार वरनां रिहा कराईआ। ऊँच नीच एका धार, एका धाम सुहाईआ। प्रगट होए निहकलंक ५७२ ०६

नर अवतार, रूप वटाईआ। सोहँ अक्खर अपर अपार, धुरदरगाही लै के आईआ। गोबिन्द गुर पूत सपूता सेवादार, सेवा रिहा कमाईआ। गुरमुखां करे ख़बरदार, पहली चेत्र रिहा जगाईआ। मनमुख जीवां आई हार, मानस जन्म गए गंवाईआ। कलिजुग अन्तिम पैणी मार, धर्म राए दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द डंका इक्क वजाईआ। गोबिन्द डंक अपर अपार, एका एक वजांयदा। आपे होया ख़बरदार, गुरमुख सोए मात जगांयदा। शब्द खण्डा तेज कटार, आपणे हथ्थ उठांयदा। चारों कुन्ट पहरेदार, दिवस रैण सेव कमांयदा। गुरमुख सुत्ता पैर पसार, प्रभ सुत्तयां आप जगांयदा। सृष्ट सबाई अन्ध अंध्यार, दिस किसे ना आंयदा। जूठा झूठा मोह प्यार, जगत विकार हर घट आप टिकांयदा। नाता तुट्टे मीत मुरार, सम्मत चौदां सगन मनांयदा। पंचम जेठी कर विहार, प्रभ आपणी बणत बणांयदा। चिट्टे अस्व हो अस्वार, एका खण्डा हथ्थ लिशकांयदा। ब्रह्मण्डां वंडां रिहा वंडाए अपर अपार, आप आपणा खेल खिलांयदा। चण्ड प्रचण्ड सच्ची सरकार, चारों कुन्ट वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द तेरी साची सेवा अन्तिम कलि लगांयदा। गोबिन्द सेवा कर परवान, अन्तिम ख़ुशी मनाईआ। आपे उठया नौजवान,

गुरमुख साचे रिहा जगाईआ। ना कोई तीर ना कमान, ना कोई शस्त्र तन सजाईआ। एका चिल्ला रसना तीर कमान, सोहँ रिहा चलाईआ। जोद्धा सूर बली बलवान, सम्मत चौदां विच मैदाने आईआ। खेले खेल दो जहान, दिस किसे ना आईआ। गुरमुखां वेखे मार ध्यान, लेखा कोई रहिण ना पाईआ। सरसा तेरी रक्खी शान, जोद्धे भेंट चढ़ाईआ। अन्तिम मेला आप मिलान, पारब्रह्म आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सूरबीर रिहा उपजाईआ। सूरबीर बली जोद्धे, गुरसिख आप रखांयदा। गुर चरन ध्यान शब्द अगाध बोधे, ब्रह्म ज्ञान जणांयदा। शब्द खण्डे पंचम सोधे, पंचम जोड़ जुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द संग निभांयदा। गोबिन्द सूरा हरि बलवाना, एका एक उपाया। एका बख्शे नाम निधाना, पहरेदार आप अख्वाया। गुणवन्ता हरि श्री भगवाना, साची सेवा रिहा कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दे दित्ता वर, देवी देव ना कोई मनाया। ना कोई देवी ना कोई देव, ना कोई सलाह पकाईआ। पुरख अबिनाशी बद्धा नत्त, सीस आपणा हथ्थ टिकाईआ। आपे वसया नेड़े दूर, अन्दर बैठा आसण लाईआ। कलिजुग तेरा नाता तोड़ कूड़ो कूड़, चार वरन विखाईआ। गुरमुखां बख्शे चरन धूढ़, दर द्वारे फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, काया चोली रंग चढ़े गूढ़, उतर कदे ना जाईआ। काया चोली रंग बसन्ता, हरि एका एक चढ़ाया। गोबिन्द पाया हरि साचा कन्ता, एका सेज सुहाया। मेल मिलावा आदिन अन्ता, विछड़ कदे ना जाया। पावे सार लक्ख चुरासी जीव जन्ता, प्रभ अन्तिम जामा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द तेरा धाम सुहाया। गोबिन्द गुर हो त्यार, प्रभ साचा आप जगांयदा। सम्मत चौदां वेख विचार, नेत्र नैण उठांयदा। शब्द खण्डा तेज कटार, आप जगदीस साचे सीस टिकांयदा। लक्ख चुरासी मारे मार, बीस इकीस वक्त सुहांयदा। ना कोई जाणे भेव राग छतीस, खाणी बाणी दिस ना आंयदा। लख ना सके कोई बतीस, तीस ना सेव कमांयदा। ना कोई जाणे पारब्रह्म तेरी हदीस, एका शब्द चलांयदा। लक्ख चुरासी जूठा झूठा पीसण पीस, कलिजुग माया चक्की आप चलांयदा। राज राजानां खाली खीस, दर दर आप फिरांयदा। एका छत्र झुल्ले प्रभ साचे सीस, जगत जगदीस आप हो आंयदा। गोबिन्द तेरी कोई ना करे रीस, पूत सपूता भेंट चढ़ांयदा। गुर तेग बहादर एका सीस, प्रभ साचा लेखे लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण रूप वटांयदा। गुर तेग बहादर तेरी धार, प्रभ साचा रिहा बणाईआ। मातलोक पैज संवार, साचे धाम सुहाईआ। आप आपणा बख्शे चरन प्यार, सिँघ पाल रिहा धराईआ। आपे वेखे करे विचार, ब्रह्मा

ब्रह्म धाम बैठ रिहा कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति रिहा समझाईआ। पारब्रह्म अचुत्त अबिनाशी, दे मति आप समझांयदा। प्रगट होए घनकपुर वासी, ब्रह्मे मूल चुकांयदा। जो उपजे सो होए विनासी, अन्त कोई रहिण ना पांयदा। एका एक आदि पुरख अबिनाशी, जुग जुग आपणी बणत बणांयदा। लोआं पुरीआं मण्डल मण्डप पावे रासी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे साचे धाम सुहांयदा। साचा धाम हरि द्वार, एका एक सुहाया। आपे बख्शे चरन प्यार, चरनोदक मुख लगाया। अमृत आत्म देवे अपर अपार, हरि साचे सीर झिराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि भेख वटाया। निरगुण भेख अपार, भेव ना जाणया। प्रगट होए विच संसार, खेले खेल श्री भगवानया। गोबिन्द मेला अपर अपार, चले चलाए आपणे भाणया। गुर चेला सोहे इक्क दरबार, दर दुआरा इक्क वखानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां किरपा देवे कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानया। उठ जीव जाग, प्रभ साचा आप जगांयदा। उठ जीव जाग, कलिजुग अन्तिम लग्गा भाग, हरिजन साचा मेल मिलांयदा। उठ जीव जाग, सुण साचा राग, हरि साचा आप उपांयदा। उठ जीव जाग, चरन धूढ़ मजन माघ इक्क करांयदा। उठ जीव जाग, धो काया दाग़, हरि दर साचा आप धवांयदा। उठ जीव हँस बण काग, सोहँ चोग मोती आप चुगांयदा। तन बुझा तृष्ना आग, अमृत मेघ आप बरसांयदा। उठ जीव जाग, ना डस्से डस्सणी नाग, माया ममता मोह चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सोए आप जगांयदा। उठ जीव जाग, जागण वेला अन्तिम आया। आपे गुर आपे चेला, आप आपणा रूप वटाया। आपे होया सज्जण सुहेला, जन भगत द्वारे आया। अचरज खेल आपे खेला, कलधारी कल वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे रिहा जगाया। उठ जीव जाग, मिल साजण मीता। उठ जीव जाग, प्रभ इक्क सुणाए सुहागी गीता। उठ जीव जाग, एका बख्शे हरि चरन प्रीता। उठ जीव जाग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द माण रखाए अठारां ध्याए, गीता। उठ जीव जाग, मन होए वैराग। बुझे तृष्ना आग, चरन कँवल लाग। मानस जन्म धो दाग़। दीपक जोती जगे चिराग। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आप हँस बणाए काग। उठ जीव जाग वक्त सुहञ्जणा, हरि साची जोत जगाईआ। नेत्र नैण दरस गुर शब्द सच्चा अंजना, अन्ध अन्धेर रिहा मिटाईआ। काया भाण्डा अन्तिम भज्जणा, सम्मत चौदां दए दुहाईआ। काल नगारा सिर ते वज्जणा, कोए ना किसे बचाईआ। घर बाहर मन्दिर अन्दर सभ तज्जणा, ना कोई सौवे लेफ तलाईआ। अमृत पी पी किसे ना रज्जणा,

नीर सीर हथ्थ ना आईआ। लोकमात बिन गुर पूरे पड़दा किसे ना कज्जणा, तन बस्त्र चीर लिआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति रिहा समझाईआ। गुरमति जगत निशान, हरि साचा आप उठांयदा। जन भगतां मारे ध्यान, दर द्वारे वेख वखांयदा। रसना सारे सोहँ गान, गोबिन्द मेल मिलांयदा। घर दर पाया श्री भगवान, एका धाम साचा शाम विच बिबाण सम्बल नगरी इक्क नाउँ रखांयदा। सम्बल नगर सच ग्राम, गोबिन्द आसण लांयदा। गोबिन्द गुर कर बिसराम, साची सेज सुहांयदा। मनमुख जीवां दस्से काया माटी चाम, साची हाटी शब्द ना कोई विखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां दे मति आप समझांयदा। साची मति गुर एक रखाई, लोकमात वज्जे वधाईआ। एका सगन मुख लगाई, आत्म अन्तर वज्जे वधाईआ। कलिजुग बसन्तर रिहा बुझाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका गुर मन्त्र एका एक जणाईआ। गुर मन्त्र जगत शब्द अनमोल, हरि एका एक रखाया। गुरसिख रसना बोल, दिवस रैण रसना जिह्वा गाया। मेल मिलाए कन्त कन्तूहल, दर द्वारे फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सोए पूत रिहा उठाया। सोया सुत दुलार, रैण अन्धेरी छाईआ। आपे होया ख़बरदार, पिता पूत समाईआ। दिवस रैण पहरेदार, गोबिन्द भेख वटाईआ। सेवक सेवा करे अपार, नौ खण्ड वेख विखाईआ। भारत खण्ड तेरी बन्न्हे धार, गुरमुख साचे लए जगाईआ। जम्बु दीप अद्धविचकार, प्रभ बैठा आसण लाईआ। पुष्कर नेत्र वेखे उग्घाड़, सान चरनां हेठ दबाईआ। करौंच लग्गे पंच द्वार, सलमल बैठा दए दुहाईआ। लक्खण करे इक्क प्यार, कुशा मेट मिटाईआ। गुरमुख साचे सन्त दुलार, हरि आपणी गोद उठाईआ। आपे बणया दर भिखार, दर द्वारे मंगण आईआ। एका इक्की विच संसार, गुर गोबिन्द तेरी रिहा पाईआ। मंगी मंग दर दरबार, हरि गोबिन्द कराईआ। आपे रक्खे तिक्खी धार, दोए धारां रिहा चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति रिहा समझाईआ। गुरमति जगत प्रधान, हरि एका एक कराईआ। हथ्थ फड़ाए धर्म निशान, चौदां कुन्टां रिहा विखाईआ। ना कोई दिसे जीव शैतान, नौ दर ना कोई भवाईआ। एका दाता दानी दान, गुण निधान नाम भण्डारा रिहा वरताईआ। सोहँ साचा धर्म निशान, एका एक रखाईआ। सोहँ सारे रसना गान, प्रभ साची सेवा लाईआ। जै जै जैकार श्री भगवान, लोआं पुरीआं आप कराईआ। ब्रह्मा वेखे मार ध्यान, अट्ठे नेत्र खोल्ह वखाईआ। शिव शंकर मंगे एका दान, प्रभ साचा झोली पाईआ। सुरपति राजा चरन ध्यान, दिवस रैण लगाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी एका आण, हरि साचे अन्तिम पाईआ। सत्तां दीपां कर पछाण, एका धार वहाईआ। लक्ख चुरासी तुट्टे माण, कलिजुग अन्तिम दए सज़ाईआ। लाड़ी मौत होए प्रधान,

हथ्थीं बैठी मैहन्दी लाईआ। मनमुख जीव शैतान, अन्त लए प्रनाईआ। गुर चरन प्रीती विटहों कुरबान, सीस जगदीस भेंट चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द सेवा रिहा कर, आप आपणा मूल चुकाईआ।

आप आपणा मूल चुकाया, गुर संगत भेंट सीसा। पंचम तत्त दिस ना आया, खेले खेल बीस इकीसा। गति मित आप जणाया, छत्र झुलाए साचा सीसा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आपे जाणे आपणा वेसा। उठ जीव जाग, कलिजुग रैण दए दुहाईआ। चारों कुन्ट लग्गी आग, ना सके कोई बुझाईआ। अन्तिम घर घर बुझणा मात चिराग, दीवा बत्ती ना कोई जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साचे रिहा उठाईआ। उठ जीव जाग, वक्त विहांयदा। प्रभ अबिनाशी चरनी लाग, सम्मत चौदां राह तकांयदा। लग्गे अग्ग कोल वाघ, हरि साचा आप लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्बल नगरी धाम सुहांयदा। सम्बल नगरी धाम उजागर, हरि साचे धाम सुहाया। गुर गोबिन्दा बण सौदागर, वणज वणजारा इक्क अख्वाया। आपे वसे काया गागर, दिस किसे ना आया। अमृत धार सिन्ध सागर, हरि साचा रिहा वहाया।
हरिजन उठ उठ जाग, हरि साचा आप उठांयदा। लक्ख चुरासी तुट्टा ताग, तन्दन तन्द ना कोई बंधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग रंगांयदा। चौदां लोक हट्ट पसारा, आपणा आप करांयदा। आपे जाणे पार किनारा, वंञ मुहाणा आप चलांयदा। आपे बन्नृणहारा धारा, आपे मेट मिटांयदा। आपे बणे हरि वणजारा, आपे वणज करांयदा। आपे भरया नाम भण्डारा, आपे आप पिलांयदा। आपे खोलृ इक्क दुआरा, आपे राह वखांयदा। चार वरन सच प्यारा, चरन प्रीती इक्क वखांयदा। सतिजुग तेरा खेल न्यारा, सति सन्तोखी रूप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा राह चलांयदा। चौदां लोक साचा घर, एका एक खुलृाया। इक्क शब्द इक्क सलोक, एका रसना गाया। कोई ना सके दो जहानां रोक, त्रैलोकां बणत बणाया। मनमुख जीवां देवे झोक, त्रैगुण माया अग्नी मट्ठ तपाया। जूठ झूठ भोगण भोग, आत्म रस किसे ना आया। अन्तिम होए मात विजोग, सगला संग ना कोई निभाया। हउमे हँगता लग्गा रोग, विकार हँकार चलाया। गुरमुखां देवे साचा जोग, सोहँ तन भबूत रमाया। देवे दरस हरि अमोघ, चारे कुन्ट होए सहाया। अन्तिम मेला धुर संजोग, हरि संजोगी मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चौदां लोकां वेख वखाया। चौदां लोकां मार ध्यान, हरि साचा वेख वखांयदा। इतल वितल सितल इक्क ज्ञान, एका रूप वटांयदा। तलातल महातल शब्द निशान, हरि साचा आप झुलांयदा। रसातल तलातल इक्क ध्यान, हरि आपे आप निभांयदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क ज्ञान इक्क ध्यान एका नाम जपांयदा। एका नाम धुर फ़रमाण, हरि साचा मात लिआंयदा। जीव जन्त सर्ब गान, साध सन्तां सेवा लांयदा। पारब्रह्म प्रभ बणया काहन, दर मन्दिर अन्दर इक्क सुहांयदा। देवे दरस कँवल काहन, काहना कृष्ना रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा हट्ट इक्क वखांयदा। चौदां लोक नाम हट्ट, प्रभ साचे मात खुल्हाया। जन भगतां तन पहनाए साचा पट्ट, इक्क श्रृंगार कराया। दुरमति मैल देवे कट्ट, रोग सोग रहिण ना पाया। दीपक जोती लट लट, गुरमुखां अन्धेर मिटाया। शब्द तीर मारे सट्ट, सोहँ चोट लगाया। इक्क विखाए तीर्थ तट्ट, सर सरोवर रिहा सुहाया। खेले खेल काया मट, चौदां हट्ट रिहा उपाया। आप उसारे किरपा धारे अन्तिम बणाए जूठा मट्ठ, अग्नी जोत लगाया। गुरसिख प्रभ चरन द्वारे इक्ट्ठ, साचा धाम सुहाया। पंचम जेठी आउणा नठ्ठ, वेले अन्त होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे रिहा जगाया। गुरसिख अधार, पार कराया। आए चरन द्वार, दर्शन पाया। दरस अमोघा विच संसार, नेत्र नैण विखाया। नेत्र नैण खोल्ह किवाड़, शब्दी जोड़ जुड़ाया। शब्द डंक अपर अपार, तन मन्दिर आप वजाया। तन मन्दिर अन्दर सच दरबार, दस्म द्वारी इक्क रखाया। दस्म द्वारी सच घर बाहर, हरि साचे आसण लाया। हरि साचा जोत निरँकार, निरगुण रूप समाया। निरगुण मेला अपर अपार, सरगुण लेखे लाया। सरगुण साचा लए अधार, आप आपणी दया कमाया। दयानिध वड दातार, कारज सिध्ध कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे रिहा तराया। गुरसिख साचे चरन प्यास, एका एक रखाईआ। सतिगुर पूरा होया दास, दर द्वारे अग्गे दर्शन पाईआ। रसना गाए स्वास स्वास, सेवक सेवा लेखे लाईआ। वेख विखाए पृथ्वी (आकाश), गुप्त ज़ाहर भेव ना राईआ। लेखे लाए दस दस मास, गर्भवास फंद कटाईआ। निज घर आत्म रक्खे वास, आत्म ब्रह्म जणाईआ। जोती नूर करे प्रकाश, कोटन भान तेज सवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां सेवा रिहा कमाईआ। गुर संगत गुर द्वार, साचा मंगल गाया। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, जम का संगल रिहा कटाया। दर द्वारे बण भिखार, भेखाधारी बण के आया। मंगे मंग इक्क अपार, चरन प्रीती रिहा सिखाया। मनमुख अन्तिम गया हार, मुख काला टिक्का मस्तक लाया। सतिजुग साचा हो त्यार, साचा चन्द रिहा चढ़ाया। गुरमुख साचे नाल प्यार, आपणा रिहा बंधाया। शब्द विचोला विच संसार, सोहँ इक्क रखाया। साचा ढोला हरि निरँकार, एका बोला रिहा जणाया। कला सोलां हरि अवतार, निहकलंका नाउँ रखाया। काया चोला तज गिरधार, गुर संगत भेंट चढ़ाया। शब्द सिँघासण इक्क

अपार, हरि आपणा आसण लाया। जोती नूर कर उज्यार, चारे कुन्टां वेख वखाया। प्रगट होवे विच संसार, गोबिन्द काया विच समाया। गोबिन्द काया खेड़ा अपर अपार, सम्बल नगरी नाउँ धराया। सम्बल नगरी विच संसार, साढे तिन्न हथ्थ रिहा बणाया। साढे तिन्न हथ्थ महल्ल उसार, नौ द्वारे आप लगाया। दसवें खेल अपर अपार, आपणी बणत आप जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां साचे मार्ग रिहा लगाया। साचा मार्ग इक्क लगावना, चार वरन जणाईआ। ऊँचां नीचां राज राजानां एका थाँ बहावना, ज़ात पात रहिण ना पाईआ। एका नाम एका खण्डा एका तीर एका बस्त्र एका शस्त्र तन पहनावना, दूई द्वैती मेट मिटाईआ। एका नेत्र एका नैणा एका शब्द साचा गहणा तन छुहावना, तन शृंगार कराईआ। एका नाता भाई भैणां, गुर संगत आप कराईआ। कलिजुग जीवां झूठे वहिण वहिणा, कलिजुग अन्तिम रिहा रुढ़ाईआ। ना कोई साक सज्जण दिसे सैणा, मात पित ना कोई अख्वाईआ। गुर पीर जुग जुग चुकाए लहिणा देणा, लहिणा देणा मूल चुकाईआ। हरि भाणे अन्दर गुरसिख रहिणा, भाणा सहिणा शब्द जणाईआ। दरस दिखाए तीजे नैणा, नेत्र नैण वेख वखाईआ। लाड़ी मौत ना खाए डैणा, शब्द खण्डा रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जेरज अंडां फंद रिहा कटाईआ। जेरज अंड कटे फंद, आप आपणी कल धारया। जो जन गाए बत्ती दन्द, लक्ख चुरासी पावे सारया। सदा सुहेला सद बख्शंद, आप कराए पार किनारया। जो जन तजाए मदिरा मास गन्द, निर्मल जोत करे उज्यारया। खुशी कराए बन्द बन्द, मेट मिटाए धूआँधारया। इक्क सुणाए सुहागी छन्द, राग नाद इक्क सुणा रिहा। दूई द्वैती ढाहे भरमां कंध, सतिगुर साचा मेला आप मिला रिहा। मनमुख जीव भागां मन्द, प्रभ साचा दर दुरका रिहा। गुरमुख चढ़ाए साचे चन्द, सतिजुग साची बणत बणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख उपजाए साचे सन्त, सन्त कन्त भगवन्त एका धाम सुहा रिहा।

जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, जुग जुग मेल मिलांयदा। जिस जन रक्खे दे कर हथ्थ, दे मति आप समझांयदा। सगल वसूरे देवे मथ, आत्म ब्रह्म जणांयदा। पंचां चोरां पाए नत्थ, शब्द डोरी इक्क रखांयदा। नाम जणाई महिंमा अकथ, अकथ कथा अख्वांयदा। जिस जन चढ़ाए साचे रथ, फड़ बाहों पार करांयदा। एका नाम धुरदरगाही वत्थ, जन भगतां झोली पांयदा। सगल वसूरे जाण लथ्थ, जो जन दरसन पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुमुख साचे सन्त जनां दे मति आप समझांयदा। साची मति गुर चरन ध्यान। पंचम तत्त मिटे निशान। नौ दर झूठ मकान। काया

माटी जगत दुकान। औखी घाटी विच जहान। बजर कपाटी जिस जन पाटी, साचा मेला श्री भगवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन बख्शे सच सच्ची सरनाईआ। नौ द्वारे जगत द्वार, हरि साची रचन रचाईआ। गुरमुखां करे आप प्यार, आपणी बूझ बुझाईआ। नेड़ ना आए पंचम धाड़, शब्द खण्डा रिहा डराईआ। डुंघी भवरी पार किनार, आपे आप कराईआ। काया कवरी अन्ध अंध्यार, हरि साचा वेख विखाईआ। गुर पूरा करे इक्क प्यार, आपणा पल्ला नाम फड़ाईआ। आप तजाए नौ द्वार, दर दुआरा इक्क सुहाईआ। सुखमन नाड़ी करे पार, टेडी बंक लँघाईआ। साचे घोड़े हो अस्वार, अग्गे पिच्छे रिहा दुड़ाईआ। बजर कपाटी पड़दा पाड़, साचा राह वखाईआ। हरिजन साचा साचा लाड़, प्रभ साचा रिहा उठाईआ। दस्म द्वारी अन्दर वाड़, आपणा मुख छुपाईआ। जोत निरँजण कर आकार, जोत सरूपी डगमगाईआ। एका जोत कर आकार, आपणा रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगत गुरसिख दे मति रिहा समझाईआ। दस्म द्वारी साचा घर बाहर, हरि साचे आप बणाया। निर्मल जोती कर आकार, आपणा रंग रंगाया। खेले खेल अपर अपार, साचा संग निभाया। दस्म द्वारी निज घर, आपणा आप वखानया। आपे वसया आपणे दर, गुरमुख सिख सुघड़ स्याणया। आपणी जोती आपे वर, आपे नारी कन्त हंढानया। आप नुहाए आपणे सर, सर सरोवर इक्क वखानया। बिन गुर पूरे दस्म द्वारी ना सके पार कर, ना दिसे वंञ मुहाणया। दस्म अधविचकार, लोकमात बणया हरि टिकाणया। सरन सरनाई जो जन जाए पड़, प्रभ पार कराए दो जहानया। ना जन्मे ना मरे ना जाए सड़, लक्ख चुरासी फंद कटानया। दर द्वारे अग्गे खड़, देवे दरस श्री भगवानया। सन्त सुहेले आप फड़ाए आपणे लड़, चरन धूढ़ सच इशनानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सति सरूप हरि शाहो भूप देवे दरस महानया। देवे दरस हरि प्रतक्ख, वड्ड वड्डी वड्याईआ। दो जहानां रिहा रक्ख, बख्शे चरन सच्ची सरनाईआ। अगम्म अगम्मा अलखणा अलक्ख, लिख्या लेख ना सके कोए मिटाया। सन्त सुहेले चुण चुण कढ्ढे वक्ख, कलिजुग तेरी एका इक्की पाईआ। साधां सन्तां काया भाण्डे कीने सक्ख, दीपक जोत ना कोई जगाईआ। गुर शब्द ना चढ़ना किसे रथ, कलिजुग मन्त्र मूल चुकाईआ। सोहँ शब्द हरि समरथ, सम्मत चौदां धार चलाईआ। चौदां लोकां दए वत्थ, लोकमात आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दास दासन हरि हर थाँईआ।

✱ १४ चेत्र २०१४ बिक्रमी नसीब सिँघ दे गृह पिण्ड बोपराए ज़िला जलन्धर ✱

मस्तक लेख लिलाट, जुग जुग वेख वखांयदा। आप चढ़ाए औखे घाट, गुर पूरा दया कमांयदा। एका वणज कराए साचे हाट, सच वणजारा आप अख्वांयदा। लेखा चुक्के आण बाट, आवण जावण गेड़ कटांयदा। सच सरोवर तीर्थ ताट, चरन दुआरा इक्क सुहांयदा। निर्मल जोती काया माट, अन्ध अज्ञान मिटांयदा। शब्द पहनाए तन साचा पाट, एका बस्त्र आपणे हथ्थ रखांयदा। जन भगतां नेड़े दस्से वाट, मनमुख भेव ना कोई पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे आप तरांयदा। चरन कँवल प्यास, दिवस रैण रखाईआ। हरिजन मेला हरि गुण तास, आत्म तृखा बुझाईआ। निज आत्म अन्तर रक्खे वास, वास निवासा आप अख्वाईआ। काया जंगल जूह उजाड़ प्रभास, प्रभ साचे जोत जगाईआ। जन भगतां होया आपे दास, दर द्वारे फेरा पाईआ। साचे मण्डल एका रास, आप आपणी रिहा वखाईआ। आदि अन्त ना होए विनास, अबिनाशी करता आप अख्वाईआ। भगत सुहेला सद वसे पास, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे पार कराईआ। चरन कँवल जन प्रीत, एका ओट रखाईआ। काया ठण्ढी सीत, हउमे रोग मिटाईआ। आपे करे पतित पुनीत, सोहँ चोग चुगाईआ। अमृत धारा सीतल सीत, एका मुख चुआईआ। इक्क सुणाए सुहागी गीत, नाद अनादी धुन उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे दे मति रिहा समझाईआ। अट्ठे पहर दरस भगवान, एका आस रखाईआ। चरन कँवल कर ध्यान, सद बैठा सीस झुकाईआ। दर द्वार कर परवान, हरि साचा मेल मिलाईआ। देवे नाम गुण निधान, गुणवन्ता झोली पाईआ। एका अमृत आत्म पीण खाण, सोहँ नाउँ रखाईआ। आप बिठाए विच बिबाण, शब्द बिबाणा इक्क उपाईआ। हरिजन वेखे मार ध्यान, इक्क इकल्ला सेव कमाईआ। आत्म जोती ब्रह्म ज्ञान, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। दर द्वार करे परवान, एका धाम सुहाईआ। आवण जावण चुक्के काण, जुगत जोग रिहा इक्क वखाईआ। दीपक जोती कोटन भान, धुर संजोग मिलाईआ। देवणहारा दाता दानी दान, शब्द भण्डारा इक्क खुल्हाईआ। दो जहानी साचा माण, दरगाह साची साचा धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। हरिजन मेला सच दरबार, एका एक सुहाया। सखा सुहेला मीत मुरार, चोबदार बण के आया। आपे होया पहरेदार, सोए पूत रिहा जगाया। नाम खण्डा तेज कटार, एका एक रिहा वखाया। आप पहनाए तन विच संसार, साचे तन रिहा लटकाया। गुरमुख साचे कर शृंगार, हरि आपे वेखण आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर निरवैर आप अख्वाया। नरायण

निरवैर निरँकार, एका एक रंग रतया। जन भगत उधारे कर कर मेहर, एका बख्शे चेतन्न सतया। दरस दिखाए ना लाए देर, आत्म बीज बीजे साचे वत्तया। भाण्डा भरम ढहि ढहि होए ढेर, पैज संवारे गुरु गुर मितया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पूर कराए जन भगतां लोकमात घाटयां। लोकमात कलिजुग घाट, एका एक रखाईआ। हरि शब्द ना विके किसे हाट, चौदां हट्ट वेख विखाईआ। चारौं कुन्ट खेल बाज़ीगर नाट, कलिजुग नटूआ नाच कराईआ। नाम खटोला ना मिले खाट, ना कोई बैठा आसण लाईआ। ना कोई तीर्थ ना कोई ताट, सर सरोवर बैठे मुख छुपाईआ। गुरमुख साचे मस्तक लेख लिलाट, हरि साचा तिलक लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तत्त अट्ठ लेखे लाईआ। अट्ठ तत्त तन शृंगार, हरि आपणा आप कराया। पंचम मेला विच संसार, मन मति बुध नाल रलाया। खेले खेल अपर अपर, कलिजुग काया तेरा युद्ध, प्रभ साचे मात रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द घोड़े बैठ कुद्द, शाह अस्वार आप अखवाया। दिवस रैण एका धार, एका रंग वखाया। जिस जन बख्शे चरन प्यार, एका संग निभाया। फड़ फड़ बाहों लाए पार, वंञ मुहाना रिहा चलाया। लहिणा देणा कर्ज उतार, पिछला मूल चुकाया। नाम गहणा तन शृंगार, तीजे नेत्र कज्जल पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचा सज्जण मेल मिलाया। हरि साजण पुरख अबिनाश, एका एक अख्वांयदा। आदि अन्त ना जाए विनास, दासन दास आप अख्वांयदा। दिवस रैण सद वसे पास, विछड़ कदे ना जांयदा। होए सहाई दस दस मास, मात गर्भ आप तजांयदा। हरिजन कदे ना होए निरास, जुग जुग पूरन आस करांयदा। रसना जिह्वा शब्द स्वास, पवण पवणी सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। गुर चरन द्वार साचा सचखण्ड। गुर चरन द्वार नेत्र दरस नैण ब्रह्मण्ड। गुर चरन द्वार लेखा चुक्के आवण जावण जेरज अंड। गुर चरन द्वार गुरमुख विरला पाए विच वरभण्ड। गुर चरन द्वार हरि चरन प्रीती एका रिहा वंड। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्तिम मेटे भेख पखण्ड। सचखण्ड हरि चरन द्वारे, साचा धाम सुहाया। चरन छुहाए जिस घर बाहरे, घर साचा मात वसाया। जन भगतां हरि कर प्यारे, जुग जुग दर दर अलख जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ नसीब बण रकीब आपणा संग निभाया।

पारब्रह्म पुरख अबिनाशा, एका एकँकारया। वेखे खेल पृथ्वी आकाशा, लोआं पुरीआं पसर पसारया। आदि अन्त ना कदे विनासा, जुग जुग लए अवतारया। भगत जनां हरि दासन दासा, दर द्वारे दरस दिखा रिहा। साचे मण्डल पावे

रासा, अचरज रीत चला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग रंगा रिहा। आदि पुरख आदि शक्त, अकल कला भरपूरया। आपे जाणे साध सन्त, जीव जन्तां दए अधारया। महिंमा अगाध बोध भेव अगणत, कोए जीव ना पा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग भेखाधारी भेख वटा रिहा। भेखाधारी हरि भेख वटाए, आप आपणी कल धारया। सतिजुग त्रेता पार कराए, द्वापर जोत जगाया। राम कृष्न आप हो आए, राम रमईआ आप अख्वाया। कलिजुग तेरी बणत रिहा बणाए, ऐड़ा अथर्बण संग निभाया। संग मुहम्मद वेख वखाए, आप आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक गोबिन्द साची सेवा लाया। नानक गोबिन्द मात, हरि साचे सेव लगाया। एका बख्शे चरन दात, चरन धूढ़ ख़ाक रमाया। अन्तिम पुच्छे आपे वात, जोती जामा भेख वटाया। लक्ख चुरासी जूठ झूठ नात, गोबिन्द रसना रिहा सुणाया। किसे ना मिल्या कमलापात, साची नारी कन्त ना कोई हंढाया। भरम भुल्ले ज़ात पात, ऊँच नीच रोवण थाउँ थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा लेखा रिहा लिखाया। कलिजुग तेरा काला रंग, हरि साचा वेख विखांयदा। कोई ना दिसे किसे संग, जीव जन्त सर्ब कुरलांयदा। नाम विहूणे होए नंग, काया चोली रंगण ना कोई चढ़ांयदा। जूठ झूठ धारा वहे गंग, अमृत जाम ना कोई प्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भाणा आपणे हथ्थ रखांयदा। कलिजुग तेरा अन्तिम भाणा, प्रभ आपणे हथ्थ रखाया। ना कोई जाणे चतर सुघड़ स्याणा, राज राजानां भेव ना पाया। पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराणां, अञ्जील कुरानां मुख भवाया। खाणी बाणी होए हैराना, पारब्रह्म भेव अभेदा अछल अछल्ला दिस किसे ना आया। कलिजुग तेरा अन्त इक्क निशाना, हरि साचा रिहा बणाया। लक्ख चुरासी लाड़ी मौत मंगे दाना, प्रभ साचा झोली पाया। धर्म राए होए निमाणा, बैठा सीस झुकाया। ब्रह्मा शिव देवत सुर वेखण मार ध्याना, प्रभ साचा वेखण आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग लहिणा देणा आपणे हथ्थ रखाया। कलिजुग लहिणा जाए मुक्क, हरि साचे जोत जगाईआ। जूठा झूठा काया बूटा जाणा सुक्क, ना हरया कोई कराईआ। सम्मत चौदां पैंडा रिहा मुक्क, प्रभ साचा लेख लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटाईआ। जोती जामा जोत निरँजण, लोकमात जगांयदा। ताल नगारे साचे वज्जण, चारों कुन्ट आप वजांयदा। आपे घाड़न घड़नेहार

घड़न भन्न्णहार आप अख्वांयदा। भाई भैण मात पित साक सैण सर्ब तज्जण, ना कोई संग निभांयदा। ना कोई मक्का काअबा हाजी हज्जन, मुल्ला मुसायक शेख़ दस्तगीर कोई दिस ना आंयदा। ना कोई ढोलक छैणे वज्जण, सम्मत सोलां

५८२
०६

नेड़े आंयदा। सम्मत सतारां सर अमृत छड्ड छड्ड भज्जण, ब्यास किनारा राह वखांयदा। सम्मत अठारां कोई ना रक्खे किसे लजण, जल धारा आप वहांयदा। उन्नी उनीसा ना कोई दिसे ईसा मूसा, अल्ला राणी लाल चुन्नी जगत जगदीश आप पहनांयदा। बीस बीसा हरि जगदीसा एका छत्र झुलाए सीसा, दूसर कोई दिस ना आंयदा। इक्क इकीसा त्रैगुण माया पीसण पीसा, अन्तिम मूल चुकांयदा। राज राजानां खाली खीसा, दर दर घर घर आप फिरांयदा। पारब्रह्म कोए ना करे तेरी रीसा, वरन बरन चरन सरन आपणी आप रखांयदा। ना कोई गाए राग छतीसा, वेद पुराण ना कोई अलांयदा। सोहँ शब्द इक्क हदीसा, चार वरन हरि आप सुणांयदा। सतिजुग मार्ग अनडीठा, जन भगतां आप वखांयदा। कलिजुग काया भन्ने कौड़ा रीठा, सम्मत चौदां नींह रखांयदा। सम्मत पन्दरां माया राणी जूठा झूठा पीसण पीसा, कलिजुग चक्की आप चलांयदा। आप बणाए इक्क अंगीठा, माया ममता मोह विकार हँकार नर निरँकार निराकार सरगुण विच समांयदा। सरगुण जीव बन्ने धार, निरगुण खेल अपर अपार, दो जहानां पावे सार, लोआं पुरीआं बंध बंधांयदा। शब्द खण्डा तेज कटार, आप आपणे हथ्थ उठांयदा। लक्ख चुरासी मारे मार, जम की फाँसी ना कोई कटांयदा। गुरमुख साचे लए उभार, आप आपणा दरस दिखांयदा। फड़ फड़ बाहों लाए पार, चेत्र चौदां लिख्त लिखांयदा। भरमे भुल्ले जीव गंवार, भरम गढ़ ना कोई तुड़ांयदा। माया रुल्ले विच संसार, साचा राह ना कोई वखांयदा। जूठ झूठ गढ़ हँकार, तन मन्दिर इक्क बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत भाणा आपणे हथ्थ रखांयदा। भाणा हरि समरथ, जुग जुग वेख वखांयदा। आप चलाए साचा रथ, रथ रथवाही आप अख्वांयदा। सृष्ट सबाई दए मथ, आपे आप उपांयदा। शब्द चलाए जगत अकथ, भेव कोई ना पांयदा। मनमुख जीवां पाए नत्थ, राए धर्म हथ्थ फड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चारों कुन्ट लहिणा देणा मूल चुकांयदा। कलिजुग तेरा अन्तिम वेला, कलिजुग रैण अन्धेरी छाईआ। ना कोई दिसे सज्जण सुहेला, साचा संग ना कोई निभाईआ। पारब्रह्म प्रभ अबिनाशी इक्क इकेला, चारों कुन्ट दहि दिशा वेख वखाईआ। ना कोई गुरू ना कोई चेला, भेख पखण्डा वेखे सृष्ट सबाईआ। गुरमुख विरले काया मन्दिर अन्दर गुर पूरे मेला, शब्द शब्दी मेल मिलाईआ। जोत निरँजण चाढ़े तेला, घर साचे खुशी मनाईआ। पंचम मिल मिल पायण वेला, अनहद राग सुणाईआ। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला, जन भगतां रिहा जगाईआ। आपे होया सज्जण सुहेला, शब्द सिँघासण आत्म द्वारी डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण खेल लोकमात रिहा कराईआ। भाणा हथ्थ करतार, आपणी कल वरतांयदा। वेख वखाए साचा ,

चौदां लोकां आप हिलांयदा। चौदां तबकां मारे मार, संग मुहम्मद ख़ाक रलांयदा। ईसा मूसा हाहाकार, अल्ला हू हू नाअरा लांयदा। जीव जन्त साध सन्त आत्म सतया गए हार, सति धर्म ना कोई विखांयदा। जूठ झूठ तपया अन्यार, अग्नी अग्ग लगांयदा। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आप आपणी जोत जगांयदा। गुरमुख साचे लाए पार, सोहँ साचे रथ चढ़ांयदा। सो पुरख निरँजण किरपा धार, सागर सिन्ध आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, भाणा राणा आप हो आंयदा।

✻ १४ चेत्र २०१४ बिक्रमी बिशन सिँघ दे गृह इक्की परिवारां दा इक्ठ होया पिण्ड नूरपुर ज़िला जलन्धर ✻

५८४ अमृत नाम भण्डार, हरि रखाया। वरते वरतावे विच संसार, दिस किसे ना आया। जन भगतां कर प्यार, अमृत आत्म इक्क जाम प्याया। आपे खोल्हे बन्द किवाड़, दूई द्वैती पड़दा लाहया। जोत जगाए बहत्तर नाड़, अन्ध अज्ञान मिटाया। हरिजन बणाए साचे लाड़, दर द्वारे दए बहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अमृत आत्म इक्क वखाया। ५८४

०६ अमृत आत्म नाम निधान, गुरमुख विरले पाया। आपे देवे पीण खाण, आत्म तृष्ना भुक्ख मिटाया। आवण जावण चुक्के काण, लक्ख चुरासी फंद कटाया। मनमुख भुल्ले जीव नादान, हरि रस किसे हथ्थ ना आया। रसना बहि बहि सारे गान, आत्म ब्रह्म ना कोए जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां रिहा प्याया। अमृत आत्म जाम न्यार, हरि आपणे हथ्थ रखाया। ना कोई जाणे जीव गंवार, रसना रस ना कोई वखाया। गुरमुख विरले पावे सार, जिस जन आपणी दया कमाया। काया सीतल ठण्ढी ठार, एका एक रिहा कराया। इक्क इकल्ला एकँकार, सच महल्ला रिहा वसाया। शब्द सरूपी बण वरतार, लक्ख चुरासी रिहा वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका वेखे सच दर, अमृत आत्म ताल सुहाया। अमृत आत्म साचा ताल, हरि साचे आपे आप बन्न्हया। सन्त सुहेले आप भाल, आप प्याए साचे तनया। नेड़ ना आए काल महांकाल, धर्म राए ना देवे डन्नया। दो जहानां करे प्रितपाल, अन्दर मन्दिर दिवस रैण आवे भन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख नुहाए एका सर, सर सरोवर एका बन्न्हया। सर सरोवर हरि निरँकार, एका एक रखाया। गुरमुख विरला पावे सार, नेत्र दए वखाया। तीजा नेत्र अपर अपार, तीजा लोइण वेख वखाया। आपे खोल्हे बन्द किवाड़, बन्द किवाड़ा रिहा कराया। मेट मिटाए पंचम धाड़, शब्द खण्डा हथ्थ ०६

उठाया। आपे होए पिच्छे अगाड़, गुरमुख साचे लए तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन आत्म देवे वर, आत्म दरसी दरस दिखाया। अमृत आत्म सच वस्त, हरि आपणे हथ्थ टिकाईआ। ना कोई जाणे कीट हस्त, ऊँचां नीचां रंग रंगाईआ। गुरमुख विरला करे प्रीत, चरन कँवल ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अमृत आत्म साचे दर, एका धाम रखाईआ। एका धाम हरि निरँकार, आपणा आप सुहाया। जोत सरूपी कर आकार, सच सिँघासण लाया। शब्द सिँघासण उच्च मुनार, आपे आप डाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे नाम वर, अमृत जाम प्याया। अमृत जाम निझर रस, गुरमुख विरले पाया। जन भगतां देवे हस्स हस्स, आदि जुगादी जुग जुग देंदा आया। मातलोक वेखे नस्स नस्स, नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां वेख वखाया। तीर निराला मारे कस, बजर कपाटी पार कराया। एका राह साचा दस्स, नौ द्वारे बाहर कढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन किरपा देवे कर, एका राह रिहा वखाया। नौ द्वारे पार किनार, जन भगतां आप करांयदा। शब्द सरूपी पहरेदार, दिवस रैण सेव कमांयदा। आपे होए पिच्छे अगाड़, डूँघी कन्दर पार करांयदा। मनमुख जीव दुष्ट दुराचार, एका बख्शे शब्द प्यार, हउमे हँगता देवे साड़, अग्नी जोती लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे नाम वर, नाम रंगण इक्क चढ़ांयदा। नाम रंगण इक्क करतार, गुरमुख विरले चढ़ाईआ। फड़ बांहों लाए पार, सति सरूपी दया कमाईआ। अन्दर मन्दिर खेल अपार, हरि साचा मेल मिलाईआ। डूँघी कन्दर टेडी धार, आपे पार कराईआ। वेख विखाए सुणे सुणाए हरि पुकार, जन भगतां संग रलाईआ। आपे खोल्ले दस्म द्वार, आपणी हथ्थीं कुण्डा लाहीआ। पंचम गावण वारो वार, हरि साची सेवा लाईआ। आत्म सेजा कर श्रृंगार, बैठा हरि रघुराईआ। जोत सरूपी इक्क अधार, एका ओट रखाईआ। जन भगतां वेखे भुजा पसार, आप आपणी गोद उठाईआ। सृष्ट सबाई एका धार, एका रंग रंगाईआ। सच खटोला अपर अपार, पावा चूल ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच सिँघासण पुरख अबिनाशण बैठा जोत जगाईआ। पुरख अबिनाशी घर साचे वसया, एका जोत जगाईआ। जन भगतां राह साचा दस्सया, गुर शब्द करे कुड़माईआ। मनमुख दर तों जाए नस्सया, चारों कुन्ट रिहा धाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे अमृत आत्म सर, सर सरोवर आप नुहाईआ। सर सरोवर कर इशनान, गुरसिख पार कराया। आपे वेखे मार ध्यान, चारों कुन्ट वेख विखाया। जिस जन देवे जिया दान, दाता दानी आप अख्वाया। जुग जुग दाता हरि मेहरवान, मेहरवान आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे

किरपा कर, चरन धूढ़ मस्तक लाया। चरन धूढ़ मस्तक लेख, गुरमुख विरले पाया। लक्ख चुरासी रही वेख, साधां सन्तां दिस ना आया। ना कोई जाणे धारी केस, मूंड मुंडाया भेव ना पाया। आपे गोबिन्द दाता दस दस्मेस, नानक निरगुण समाया। दर द्वारे तक्कण ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, दर दरवेश सीस झुकाया। गुरमुख साचे सन्त दुलार, प्रभ अबिनाशी किरपा धार, अमृत आत्म साचा जाम प्याया। गुरमुख चाढ़े साचा रंग, हरि काया चोली रत्तीआ। एका मंगे नाम मंग, दर द्वार होए सहाईआ। मानस जन्म ना होए भंग, निर्मल जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल सभ घट घटी, घट घट अन्तिम आप समाईआ। आदि पुरख अबिनाशा, भगत जनां हरि रसना गाया। देवे शब्द भरवासा, आदि जुगादी खेल रचाया। खेले खेल जगत तमाशा, ना मरे ना कदे जाया। आपे पाए मण्डल रासा, गुरमुख साचा रिहा तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, मिले मेल पृथ्वी आकाशा। अमृत आत्म रसना रस पी, हरिजन खुशी मनाईआ। निर्मल होया हरिजन जीअ, जीव जन्त रिहा तराईआ। लेखा चुक्के साढे तिन्न हथ्थ सीं, धर्म राए बैठा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धुरदरगाही लै के आईआ। धुरदरगाही एका नाम, लोकमात लिआंयदा। जन भगतां देवे थाउँ थाँईं, दहि दिशा वेख वखांयदा। खेले खेल बेपरवाही, लेखा लेख ना कोई लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा कर्म कमांयदा। आप आपणी बूझ बुझाए, अकल कला कल धारया। एका दूजा भउ चुकाए, देवे दरस अपारया। चौथे दर मेल मिलाए, चौथे घर बहा रिहा। पंचम मेला सहिज सुभाए, धुनी नाद वजा रिहा। छेवें छप्पर ना कोई रखाए, हरि बैठा पुरख सुल्तानया। सत्तवें घर हरि रघुराए, जोत सरूपी जोत जगा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे नाम वर, अमृत आत्म जाम पया ल्या। अमृत आत्म जाम, गुरमुख विरले पाया। कोई ना लाए हरि जी दाम, दिवस रैण सेव कमाया। मेट मिटाए तृष्ना ताम, रसना रस रिहा गंवाया। अन्ध अन्धेरी मिटे शाम, अज्ञान अन्धेर रहिण ना पाया। इक्क वरताए साचा नाम, नाउँ निरँकारा आप रखाया। भगत जनां हरि संवारे काज, जुग जुग साचा काज रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अमृत आत्म एका वर, जन भगतां झोली पाया। पाया वर पुरख अबिनाशा, ना होए मात जुदाईआ। अट्ठे पहर दासी दासा, सेवक सेवा रिहा कमाईआ। वेख वखाणे पृथ्वी आकाशा, पुरीआं लोआं पार कराईआ। साचे मण्डल पावे रासा, सूरज चन्न रवि ससि बैठे सीस झुकाईआ। जन भगतां वखाए आपणा आप तमाशा, काया मण्डल मण्डप इक्क विखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे एका वर, वर दाता

आप अख्वाईआ। देवणहार हरि दातार, एका आदि जुगादया। भगत सुहेले लए उभार, खेले खेल विच ब्रह्ममादया। शब्द कराए तन जैकार, लेखा चुक्के नौ दरवाज़या। शब्द सरूपी पहरेदार, अग्गे पिच्छे फिरे भागया। अनहद राग अनाहद धार, आप वजाए साचा वाज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे वेख घर, आपे चढ़े चिट्टे अस्व साचे ताज्जया। चिट्टे अस्व हरि निरँकार, एका आसण लांयदा। सोलां कलीआं तन श्रृंगार, जोती नूर उपांयदा। जोती नूर अपर अपार, नूरी बणत बणांयदा। शब्द गुर सच्चा सरदार, उप्पर आसण लांयदा। नाम खण्डा तेज कटार, आपणे हथ्थ उठांयदा। सरगुण निरगुण खेल अपार, दोवें धारा मात चलांयदा। लोकमात लए अवतार, शब्द रंग रंगीला भेख अपणा आप वटांयदा। लक्ख चुरासी पावे सार, आप उपाए आपे मेट मिटांयदा। जन भगतां देवे एका धार, अमृत जिह्वा नाम प्यांअदा। मनमुख भुल्ले भरम गंवार, भाण्डा भरम ना कोई भनांयदा। माया रुल्ले भरम संसार, त्रैगुण माया झोली पांयदा। पंज तत्त होए त्यार, हरि पंचम जोड़ जुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए उभार, जोती जोड़े मेल मिलांयदा। शब्द घोड़ा हरि सुल्तान, एका एक रखाया। आपे वेखे मार ध्यान, गुरमुख साचे रिहा जगाया। प्रगट होए वाली दो जहान, दिस किसे ना आया। धर्म झुलाए सच निशान, नौ खण्ड पृथ्वी रिहा झुलाया। आपे गोपी आपे काहन, राम रमईआ आप अख्वाया। निरगुण नानक रिहा वखाण, रसना जिह्वा सेव कमाया। गोबिन्द पाया गुण निधान, दोए जोड़ सीस झुकाया। पूत सपूता वड बलवान, लोकमाती शब्द जणाया। नाम खण्डा सच किरपान, आप आपणा रिहा वखाया। पंचम मेटे जगत निशान, पंचम मेल मिलाया। वेखे खेल श्री भगवान, पंचम जोड़ जुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे जगत वर, जीवन दाता आप अख्वाया। जगत जोग शब्द अभ्यास, गुरमुख विरले पाया। ना कोई वेखे पृथ्वी आकाश, धुँदूकार जगत कराया। लेखे लाए ना कोई स्वास, रसना जिह्वा होई हलकाया। गुर का शब्द गुरसिख विरले पास, लोचन नैण पेख एका ओट रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी वेख वखाया। लक्ख चुरासी तेरा अन्त दर दरवाज़ा, कलिजुग अन्त खुल्हांयदा। जूठ झूठ मारे आवाज़ा, माया लोभ संग रलांयदा। माया राणी कसया ताजा, चारों कुन्ट दुड़ांयदा। त्रैगुण तेरा रच्चया काजा, ब्रह्मा नेत्र नीर वहांयदा। शिव शंकर उठ उठ मारे आवाज़ा, विष्नूं बंसी भेव ना पांयदा। सुरपति राजा इन्द तेरी कोई ना रक्खे लाजा, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। लोकमात ना कोई मक्का काअबा हाजा, ना कोई हाजी हज्ज करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे इक्क दर, दर दुआरा इक्क सुहांयदा।

सति पुरख निरँजण आदि जुगादि, एका रंग समाया। खेले खेल विच ब्रह्माद, दिस किसे ना आया। शब्द जणाए बोध अगाध, अगाध बोध आप अख्वाया। तूरत नाद वजाए साचा नाद, अनहद सेवा लाया। साध सन्त दिवस रैण रसना रहे अराध, आपे वेखे वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति पुरख निरँजण दर एका एक सुहाया। सति पुरख निरँजण नर निरँकार, एका धाम सुहाया। ना कोई दिसे चार दिवार, छप्पर छन्न ना कोई छाया। शब्द सुरत ना कोई प्यार, गुर पीर दिस ना आया। सन्त कन्त ना कोई नारी ना भतार, जीव जन्त ना वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला सच महल्ला बैठा आसण लाया। शब्द महल्ला हरि निरँकार, एका एक रखाया। किसे दिस ना आए जल थला, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर हथ्थ ना आया। जोती शब्दी आपे रला, आप आपणा वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दुआरा इक्क सुहाया। दर दरबारा हरि दातार, एका एक सुहाया। जोत सरूपी कर अकार, दीपक जोत जगाया। आप आपणा कर पसार, आपे वेख वखाया। आप आपणी बन्ने धार, आपे धन्दे लाया। आपे वेखे कर विचार, आपे बैठा मुख छुपाया। आत्म जोती नूर अपार, सुत शब्दी आप उपाया। सच शब्द करे जै जैकार, दोए जोड़ सीस झुकाया। पारब्रह्म प्रभ पावे सार, दे मति रिहा समझाया। ब्रह्मण्ड वंड हरि गिरधार, एका एक रिहा कराया। जेरज अंड कर पसार, उत्भज सेत्ज विच समाया। पंज तत्त शब्द अधार, जोत निरँजण संग रलाया। आपे वसया सभ तों बाहर, हर घट बैठा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख निरँजण निरगुण रूप समाया। निरगुण रूप हरि अगम्म, अगम्मड़े धाम सुहाया। ना मरे ना पए जम्म, ना कोई गोद उठाया। आप उपाए आप आपणा नाउँ रखाए, नर निरँकार आप अख्वाया। आपे जाणे आपणा कम्म, लोआं पुरीआं बणत बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दुआरा हरि निरँकारा एका एक सुहाया। जोत सरूपी कर अकारा, आपणा राह चलांयदा। शब्द सुत वड बलकारा, जोद्धा सूर अख्वांयदा। आप बणाए साचा लाड़ा, लोकमात वेख वखांयदा। ब्रह्मा बख्शे चरन प्यारा, कँवल कँवली मेल मिलांयदा। निरगुण सरगुण कर प्यारा, सार शब्द सार रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी धारा मात चलांयदा। साची धार विच संसार, जुग जुग मेल मिलाईआ। खेले खेल अपर अपार, वल छल सृष्ट सबाईआ। जन भगतां दरस घड़ी घड़ी पल पल, रूप अनूपा सति सरूपा रिहा कराईआ। आपे बावन रिहा छल, बल द्वारे फेरा पाईआ। आपे राम रामा रिहा रम, रावण हँकारी मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात वेख वखाईआ। राम रावण दुष्ट हँकार, अचरज

खेल वखाईआ। सीता सुरती कर प्यार, भगत सुहेले रिहा प्रनाईआ। अकाल मूर्ति इक्क अकार, आपणा आप कराईआ। नाद तूरती डंक अपार, राउ रंकां करे ख़बरदार, चारे कुन्टां रिहा वखाईआ। लेखे लाए सपुत्री जनक, आप आपणे संग मिलाईआ। आप सुहाए द्वार बंक, दर द्वारे चरन छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग त्रेता वेख विखाईआ। सतिजुग साचा सागर, लए मात अवतारा। आपे वेखे काया गागर, खेले खेल अपर अपारा। निर्मल कर्म करे उजागर, लक्ख चुरासी बन्ने धारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग त्रेता द्वापर निरगुण खेल सरगुण मेल वड वड्डा संसारा। निरगुण खेल हरि ब्रह्मण्डा, आपणा भेख वटाया। दर द्वार जन भगतां मंगा, भेखाधारी भेस कराया। आपे होया भुक्खा नंगा, काल नगारा हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, राम रामा रूप समाया। भेखाधारी हरि भगवाना, भगत दए वड्याईआ। हथ्थीं बन्ने नाम गाना, देवे नाम वड्याईआ। इक्क सुणाए राग अनाद तराना, आत्मक धुन रिहा उपजाईआ। तोड़े माण गढ़ अभिमाना, सांतक सति वरताईआ। एका बख्शे चरन ध्याना, दिवस रैण दरस दिखाईआ। एका शब्द सुणाए काना, एका नाद वजाईआ। मिले मेल पुरख सुल्ताना, आत्म सेजा रिहा हंढाईआ। गोबिन्द मेला गुरसिख चतर सुजाना, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, राम रामा रूप समाईआ। राम रामा हरि करतार, खेले खेल संसारया। द्वापर मेला अपर अपार, जोद्धा सूरबीर बलकारया। काहना कृष्ना कृष्न मुरार, अर्जन रथ चला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी रिहा मथ, लहिणा देणा मूल चुका रिहा। लक्ख चुरासी आपे मथ, आपे रथ रथवाहीआ। गुरमुख साचे लए रक्ख, देवे मात वड्याईआ। महिंमा जगत सदा अकथ, कोई कथ ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, द्वापर तेरा लेख चुकाईआ। द्वापर लेखा गया चुक्क, होणी मात जुदाईआ। कलिजुग नेड़े गया ढुक, धरतमात गोद उठाईआ। अन्तिम लहिणा देणा जाए मुक्क, सम्मत चौदां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, रिहा बणत बणाईआ। सम्मत चौदां चौदां लोक, हरि साचा आप जगांयदा। सोहँ शब्द सच सलोक, लोआं पुरीआं वेख विखांयदा। हरि का भाणा ना कोई सके रोक, राज राजानां शाह सुल्तानां ख़ाक मिलांयदा। लक्ख चुरासी देवे झोक, साध सन्त ना कोई बचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका डंक राउ रंकां आप सुणांयदा। एका डंक हरि करतार, आपणा आप वजाया। सम्मत चौदां करे ख़बरदार, सृष्ट सबाई रिहा जगाया। जन भगतां मेला मीत मुरार, आप आपणा रिहा कराया। आप सुहाए बंक द्वार, दर द्वार आप सुहाया।

गऊ ग़रीबां कर प्यार, चरन प्रीती रिहा सिखाया। इक्क कराए जै जै जैकार, एका शब्द चलाया। नाता तोड़े भाई भैण साक सैण सर्ब संसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त दुलार, आपणा लड़ फड़ाया।

दया सिँघ दया प्रभ धार, लोकमात जन्म दवाया। आप आपणा करे प्यार, आपणी सेवा लाया। शब्द खण्डा तेज कटार, तन गात्रे आप लटकाया। आपे होए पहरेदार, वेद शास्त्र भेव ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सगला संग रिहा निभाया। दया सिँघ हरि दयाल, दया रूप समांयदा। आप उपाए साचा लाल, सिँघ बिशन नाम रखांयदा। फल लग्गा काया डाल्ह, गोबिन्द मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर चेला रूप वटांयदा। चेला गुर गुर गोबिन्द, गोबिन्द रूप समाया। लिख्या लेख मस्तक चन्द, लहिणा देणा मूल चुकाया। सन्त मनी सिँघ जोड़े जोड़, विछड़ कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर द्वारे दर्शन पाया। दया सिँघ दयानिध धार, आपणी दया कमाईआ। गुर शब्द मेला अपर अपार, सज्जण सुहेला आप अख्वाईआ। चेला गुर इक्क द्वार, एका रूप वटाईआ। साचा मेला विच संसार, सतिगुर पूरा रिहा मिलाईआ। सज्जण सुहेला मीत मुरार, सेवक सेवा रिहा कमाईआ। नाम धन अपर अपार, आत्म झोली आप भराईआ। सच कराए वणज वपार, एका वस्त रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे मेल मिलाईआ। सन्त मनी सिँघ दया कमाई, अन्तिम राह वखाया। आत्म घर वज्जी वधाई, सतिगुर पूरा पाया। सतिगुर पूरा शब्द कुड़माई, सुरत सवाणी लए प्रनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरा काज रचाया। गुरमुख रच्चया साचा काज, मिले मात वड्याईआ। आपे रक्खणहारा लाज, गोबिन्द रूप वटाईआ। जोती जोड़ा सीस ताज, नीला घोड़ा इक्क वखाईआ। प्रगट होए देस माझ, सम्बल नगरी धाम सुहाईआ। सति सरूपी मारे आवाज़, दिवस रैण रिहा जगाईआ। आपे रक्खणहारा लाज, जुग जुग विछड़े मेल मिलाईआ। लक्ख चुरासी नार बांझ, पूत सपूता कोई ना जाईआ। गुरमुख विरले साची सांझ, जगत रहि जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नेत्र नैणां दरस दिखाईआ। नेत्र नैणां दरस अपार, निर्मल जोत जगाईआ। नाम गहणा तन शृंगार, साचा बस्त्र पाईआ। मिले मेल कन्त भतार, नारी कन्त रूप समाईआ। आत्म सेजा कर प्यार, बैठा आसण लाईआ। हउमे दुखड़ा दए निवार, उज्जल मुखड़ा रिहा कराईआ। सुफल कुखड़ा विच संसार, मात पित पिता पूत आपे मेल मिलाईआ। नेत्र नैण दरस भुखड़ा, आत्म तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। मात गर्भ ना होए उलटा रुखड़ा, लक्ख चुरासी

फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे रिहा तराईआ। गुरमुख साचा सति सतिवाद, इक्क ध्यान लगाया। आत्म वज्जे शब्द नाद, अनादी धुन उपजाया। हरि दर्शन वेखे विच ब्रह्माद, प्रभ साचा रिहा वखाया। भगत सुहेला आदि जुगादि, जुग जुग मेल मिलाया। गुर गोबिन्दा आपे लाध, गुरमुख साचा रिहा तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त मनी सिँघ तेरा वर, अन्तिम पूर कराया। गुर पूरा हाज़र हज़ूर, दिवस रैण प्रभात। आपे वसे नेड़े दूर, आपे पिता मात। जगत नाता तोड़े कूड़ो कूड़, अमृत आत्म देवे बूंद स्वांत। जिस जन बख्शे चरन धूढ़, मेट मिटाए अन्धेरी रात। मनमुख भुल्ले मूर्ख मूढ़, भरम भुलेखा ज़ात पात। गुरमुख काया चोली रंग चाढ़े गूढ़, दुरमति मैल देवे काट। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लाल, इक्क रखाए आपणा हाट। गुरमुख साचा लाल, हरि आपणे हट्ट रखाया। मिल्या मेल गुर गोपाल, तन साची बणत बणाया। सिँघ बिशन प्रभ आपे भाल, आत्म सेजा साची खाट, शब्द शब्द मिलाया। फल लगाए काया डाल्, जोती नूर नूर लट लट कराया। दो जहानां पुच्छे वात, नेड़ा दूर दिस ना आया। गुर गोबिन्दा पूरा करे घाट, कलिजुग अन्तिम दए सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वसया साचे घर, घर साचा धाम सुहाया। चरन प्रीती साची भेंट, करे दर परवानया। आपे होए खेवट खेट, पार कराए दो जहानया। आपे मात पित बेटी बेट, गुरसिख गोबिन्द रूप समानया। शब्द दात लए लुट्ट, आप आपणी सेव कमानया। जूठी झूठी दूई द्वैती कलिजुग काली धार दए रुढ़ा, सतिजुग साचा चन्न चढ़ानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरा अन्तिम प्यार, मेल मिलाए श्री भगवानया। गुरमुख तेरी आत्म सिक्क, दिवस रैण रही जगाईआ। किसे हथ्थ ना आए मुन रिख, कोटन कोट बैठे धूणीआं ताईआ। साध सन्त दर दर मंगदे भिक्ख, नाम वस्त कोए ना झोली पाईआ। जीव जन्त आपणा लेख बहि बहि रहे लिख, अन्तिम लेख ना कोई मिटाईआ। कोटन कोट धारी भेख, भेखाधारी भेख पखण्ड तन बैठे ख़ाक रमाईआ। कोटन कोट धारी दस दस्मेश, नेत्र नैण वेख ना पाईआ। कोटन कोट पूजण शिव शंकर गणेश, नाम त्रिसूल कोए ना हथ्थ फड़ाईआ। कोटन कोट नर नरेश, राज राजान शाह सुल्तान रो रो देण दुहाईआ। कोटी कोट मुल्ला शेख़ मुसायक, पीर दस्तगीर दिस ना आईआ। कोटन कोट उठण रात, आत्म खुल्या ना किसे ताक, जूठे झूठे रहे कुरलाईआ। कोटन कोट विचारे भविख्त वाक, प्रभ साचा भेव ना राईआ। लक्ख चुरासी आपे वेखे मार झात, अन्दर बैठा आसण लाईआ। गुरमुख सज्जण सुहेले साचे साक, आप आपणे मात बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख तेरा साचा घर, द्वार बंका आप सुहाईआ। द्वार बंका गुर गोबिन्द,

५६१
०६

एका चरन छुहंदड़ा। जीव जन्त करन निन्द, दाता दानी आप बख्शिंदड़ा। गुरमुख उपजाए साची बिन्द, आप आपणा लड़ फड़ंदड़ा। प्रगट होए विच हिन्द, वाली हिन्द आप उठंदड़ा। दाता जोद्धा सूरा वड मृगिन्द, सूरबीर आप अख्वंदड़ा। जन भगतां मेटे सगली चिन्द, नेत्र नैणां दरस दिखंदड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा धाम सुहंदड़ा। साचा धाम हरि सुहाए, रैण भिन्नड़ी खुशी मनाईआ। गुरमुख साचे संग रलाए, दर दर वज्जी वधाईआ। ब्रह्मा शिव देवत सुर सुणने आए, दर बैठे सीस झुकाईआ। पारब्रह्म प्रभ जोत जगाए, लोआं पुरीआं करे रुशनाईआ। एका शब्द डंक वजाए, चारे कुन्टां रिहा सुणाईआ। राउ रंक आप उठाए, राज राजानां रिहा हिलाईआ। द्वार बंका गुरसिख सुहाए, गुर पूरा दया कमाईआ। जगत वड्याई जिउँ जन जनका, वासी पुरी घनका आप कराईआ। लहिणा देणा मुकाए जिउँ नानक अंगदा, आप आपणे रंग रंगाईआ। काया चोली आपे रंगता, नाम रंगण इक्क रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूर्ब लहिणा रिहा चुकाया। पूर्ब लहिणा जगत अधार, प्रभ आपणा आप चुकाया। आपे बख्शे चरन प्यार, सेवक सेवा लाया। नेत्र नैण अक्ख उग्घाड़, लोचन तीजा रिहा खुल्हाया। दर द्वारे साचे वाड़, चौथे पद मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरे काया घर अनहद सेवा लाया। अनहद सेवा सेव कमाए, गुर पूरे आप लगाईआ। गुरमुख सोए रिहा उठाए, अन्दर मन्दिर आप जगाईआ। एका सर एका ताल रिहा खड़काए, धुन आत्मक वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सिँघ बिशन तेरा द्वार बंक रिहा सुहाईआ।

५९२
०६

✻ १५ चेत्र २०१४ रेशम सिँघ दे गृह पिण्ड खहरा मजा ज़िला जलन्धर ✻

पूर्ब लहिणा भगत अधार, जुग जुग आप चुकांयदा। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आपणा आप मेल मिलांयदा। सुरती शब्द कर प्यार, सच नाता जोड़ जुड़ांयदा। मेट मिटाए अन्ध अंध्यार, दूई द्वैती फंद कटांयदा। अमृत आत्म ठण्ढी धार, गुरमुखां मुख चुआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मात जगांयदा। जुग जुग लहिणा चुक्कणा मूल, गुरमुख आप चुकाया। मेल मिलावा कन्त कन्तूहल, आत्म सेजा इक्क सुहाया। शब्द बरखा साचे फूल, आपे रिहा कराया। शब्द पंघूड़ा साचा झूल, दो जहानी रिहा झुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख साचा जगत अधार, कर किरपा पार कराया। जगत लेखा लहिण देण, आदि अन्त चुकांयदा। दरस दिखाए तीजे नैण,

साचे सन्त आप उपांयदा। होए सहाई दिवस रैण, अट्ठे पहर सेव कमांयदा। हरिजन साचे भाणा सहिण, लोक लाज तजांयदा। तन पहनाए शब्द गहिण, बस्त्र शस्त्र इक्क विखांयदा। मनमुख वहे झूठे वहिण, कलिजुग धार वहांयदा। अन्तिम खाए लाड़ी मौत डैण, धर्म राए वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां, पिछला मूल चुकांयदा। लहिणा देणा जगत जग, देवणहार दातार। गुरमुख साचे आपे चुग, बख्शे चरन प्यार। दरस दिखाए इक्क अमोघ, प्रगट हो नर निरँकार। साचा मेला धुर संजोग, करे कराए करावणहार। दूई द्वैती हउमे कटे रोग, एका शब्द अधार। सोहँ शब्द साची चोग, हरि हँसा रिहा खलार। आत्म रस रसना भोग, एका एक अपार। आदि अन्त ना होए विजोग, मिल्या मेल मीत मुरार। गुर का शब्द साचा जोग, दो जहानी करे पार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लहिणा देणा रिहा कर्ज़ उतार। लहिणा देणा आदि जुगादि, जुग जुग बणया आया। वेख वखाए हरि ब्रह्माद, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाया। सन्त सुहेले आपे लाध, लोकमात मेल मिलाया। आत्मक धुन उपजाए साचा नाद, नाद अनादी आप वजाया। शब्द जणाए बोध अगाध, भेव किसे ना पाया। कोटन कोट करे अराध, पारब्रह्म दिस किसे ना आया। गुरमुख विरले मेला माधव माध, जिस जन कर किरपा लए मिलाया। नाम वस्त देवे साची दात, धुरदरगाही लै के आया। सुणे सुणाए सद फरयाद, दो जहानां वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लहिणा देणा झोली पाया। जगत लहिणा गुरमुख हक्क, हक्का हक्क वड्याईआ। भगती फल गया पक्क, जन्म लहिणा लेखे लाईआ। पारब्रह्म प्रभ आपे तक्क, दूर दुराडे लए उठाईआ। एका शब्द जणाए नाअरा अहिनल हक्क, हक़ हकूक इक्क वखाईआ। साध सन्त जीव जन्त पढ़ पढ़ जगत विद्या गए थक्क, गुर पूरा दिस ना आईआ। कलिजुग माया नकेल पाए नक्क, चारों कुन्ट रिहा फिराईआ। खाली दिसे मदीना मक्क, हू हू नाअरा कोई ना लाईआ। गुरदर मस्जिद मन्दिर दिसण ढक्क, चोर यार ठग्ग बैठे आसण लाईआ। चारों कुंट अन्तिम उडणे कक्ख, कलिजुग अग्नी रिहा लगाईआ। दर द्वारे होए सक्ख, भरया कोए रहिण ना पाईआ। लक्ख चुरासी कोए ना सके रक्ख, रक्खणहारा आप भुलाईआ। कलिजुग अंगीठा रिहा भख, नौ खण्ड पृथ्वी धूणी ताईआ। सत्तां दीपां हो प्रतक्ख, अग्नी लम्बू लाईआ। जूठ झूठ पाए कक्ख, हँकार विकार नाल रलाईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले पारब्रह्म प्रभ लए रक्ख, जिस जन चरनी ओट रखाईआ। दरस विखाए हो प्रतक्ख, निहकलंका डंक वजाईआ। तीर निराला एका कस, सोहँ रसना चिल्ले रिहा चढ़ाईआ। भगत जनां दर होया वस, सेवक सेवा रिहा कमाईआ। कलिजुग रैण अन्धेरी मस्स, साचा चन्द ना कोई चढ़ाईआ। रवि ससि रहे नस्स, दिवस रैण पन्ध मुकाईआ।

धर्म राए रिहा हस्स, कलिजुग अन्तिम रुत्त सुहाईआ। लाड़ी मौत रही दस्स, हत्थीं लाल मैहन्दी लाईआ। चित्रगुप्त लेखा करे बस्स, अन्त हिसाब वखाईआ। पुरख अबिनाशी लक्ख चुरासी चरनां हेठ देवे दब्ब, ना कोई सके बचाईआ। त्रैगुण माया डस्सणी डस्स, पंजां तत्तां डंग चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरे साचे दर, लहिणा देणा रिहा चुकाईआ। लहिणा देणा हरि दातार, जन भगतां आप चुकांयदा। प्रगट हो विच संसार, शब्दी शब्द मिलांयदा। एका बख्शे चरन प्यार, नाता बिधाता आप करांयदा। नाम खण्डा तेज कटार, साचा शस्त्र तन पहनांयदा। आपे रक्खे तिक्खी धार, पंजां चोरां मार मुकांयदा। मन पंखी ना उडे उडार, शब्द डोरी आप बंधांयदा। मति बुध करे निमस्कार, भय भयानक रूप वखांयदा। भगत जनां करे कारज सुध, काया मन्दिर इक्क सुहांयदा। शब्द घोड़े चिट्टे अस्व कुद्द, शाह अस्वार आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे देवे वर, एका नाम झोली पांयदा। नाम वर हरि निरँकार, एका एक झोली पाया। गुरमुखां जुग जुग कर प्यार, दर दरवेशा देवण आया। भगवन्त भगत लए अधार, भगवन मेल मिलाया। आदिन अन्ता ओंकार, एका एक रूप समाया। सोहँ शब्द विच संसार, सतिजुग साचा राह चलाया। कलिजुग अन्तिम आई हार, बैठा मुख छुपाया। संग मुहम्मद चार यार, ना कोई होए सहाया। अल्ला राणी हाहाकार, नेत्र नीर रही बहाया। वेद पुराणां पैणी मार, ना कोई सके बचाया। खाणी बाणी होए हैरान, चारों कुन्ट रही कुरलाया। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, आप आपणी बणत बणाया। धरत मात तेरी सुण पुकार, जोती जामा भेख वटाया। नानक गोबिन्द इक्क प्यार, एका धार विखाया। गोबिन्द मेला कन्त भतार, साची सेजा अपर अपार, पुरख अबिनाशी इक्क सुहाया। पुरख अबिनाशी वड सिक्दार, दो जहानां आप अख्वाया। दर दरबान पावे सार, लोकमाती फेरा पाया। लोकमाती कर विचार, आप आपणा रंग रंगाया। सोहँ खण्डा तेज कटार, हरि साचे हत्थ उठाया। देवत सुर ब्रह्मा शिव करे ख़बरदार, लोआं पुरीआं दए हिलाया। निहकलंका लए अवतार, साचा डंका इक्क वजाया। राज राजान शाह सुल्तान होण ख्वार, दर दर मंगण भिख्या जाया। मनमुख रोवण ज़ारो ज़ार, साची सिख्या गए भुलाया। गुर गोबिन्दे लिख्या लेख अपार, कलि सके ना कोई मिटाया। नेत्र लोचन नैण गुरमुख पेखा, आत्म दरसी दरस दिखाया। आपे जाणे धारी केसा, दस दस्मेसा रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरे साचे दर, दर द्वारे फेरा पाया। दर द्वार गुरमुख तेरा, साची सेव कमाईआ। भरमां ढाहे आपे डेरा, दूई द्वैती मेट मिटाईआ। इक्क कराए सञ्झ सवेरा, निर्मल जोत जगाईआ। पंचां तोड़े गढ़ हँकारी पंचां मेल मिलाईआ। सतिगुर पूरा शेर दलेरा, सिँघ रूप आप

कराईआ। काया मन्दिर सच वसेरा, आत्म सेजा आसण लाईआ। आपे करे हक्क नबेड़ा, जन भगतां लेख चुकाईआ। भाग लग्गे साचे खेड़ा, धाम साचा इक्क सुहाईआ। इक्क वखाए खुल्ह्वा वेहड़ा, चारों कुन्ट आप फिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरे साचे दर, लहिणा देणा मूल चुकाईआ। लहिणा देणा देवणहार, आदि पुरख अबिनाश्या। जन भगतां देवे किरपा कर, रसना स्वास स्वास्सया। फड़ फड़ बाहों करे पार, वेख विखाए पृथ्वी आकाश्या। आपे पुरख आपे नार, साचे मण्डल पावे रास्सया। सति पुरख निरँजण साची धार, सच आत्म रक्खे वास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरे साचे दर, साचा दीप करे प्रकाश्या। दीपक जोती इक्क निरँजणा, एका जोत जगाईआ। चरन धूढ़ साचा मजना, आपणा आप कराईआ। मिल्या मेल गुर पूरे सज्जणा, विछड़ कदे ना जाईआ। साचा हाजी हज्ज कराए मजना, चरन धूढ़ इक्क विखाईआ। लोकमात आया पड़दे कज्जणा, मानस जन्म लेखे लाईआ। जूठे झूठे ताल घर घर वज्जणा, तन नगारे चोट ना कोई लगाईआ। ना कोई रक्खे मात लजणा, कूड़ो कूड़ सृष्ट सबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरे साचे दर, तेरा मूल चुकाईआ। गुरमुख तेरा अन्तिम रंग, हरि साचा वेख वखानया। शब्द सरूपी साचा संग, आप आपणा हरि निभानया। नाम डोरी इक्क पतंग, उडाए दो जहानया। अमृत आत्म धारा बख्शे गंग, सर सरोवर इक्क इशनानया। आपे कट्टणहारा भुक्ख नंग, देवे माण जगत निमाणया। आप लगाए आपणे अंग, शब्द जणाए धुर फ़रमाणया। पंच विकारा देवे टंग, पंचम गाए साचा गाणया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरा वसया घर, मिल्या मेल श्री भगवानया। हरि भगवन्ता हरि रंग राता, दिवस रैण प्रभात। जन भगतां देवे साची दाता, आपे पिता आपे मात। चरन प्रीती साचा नाता, मेट मिटाए अन्धेरी रात। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई पुच्छे ज़ात पात।

५६५
०६

❋ १५ चेत्र २०१४ बिक्रमी गुरमुख सिँघ दे गृह इक्की परिवारां दा इक्ठ होया
पिण्ड भलाई पुर डोगरां ज़िला अमृतसर ❋

पारब्रह्म प्रभ एक है, एक एक सरनाए। सृष्ट सबाई एका टेक है, एका ओट रखाए। गुरमुख विरले बुध बिबेक है, प्रभ साचा हरि घर पाए। जीव जन्त रहे वेखी वेख है, वेखणहार दिस ना आए। आपे लिखणहारा लेख है, आपे देवे अन्त मिटाए। आप उपाए मुल्ला शेख़ है, गुर पीर मात उपाए। आपे वेखे धारी केस है, वेखणहार मूंड मुंडाए। आपे

दाता दस दस्मेस है, गोबिन्द रूप वटाए। आपे नानक नर नरेश है, निरगुण मेल मिलाए। आपे वेखे ब्रह्मा विष्न महेष है, आप आपणी सेवा लाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए जगाए। हरिजन साचे मात वड्याई, अन्तिम मात सखाईआ। गुर शब्द होई कुड़माई, मिल्या मेल साचे माहीआ। आत्म दर वज्जी वधाई, पंचम गायण चाँईं चाँईंआ। जोत निरँजण एका पाई, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। साक सज्जण सैण बण रघुराई, नाता तुट्टे जूठे झूठे भैण भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरी अन्तिम वर, वर दाता आप अख्वाईआ। गुरमुख तेरी वड वड्याई, पाया एकँकारया। आदि अन्त ना होए जुदाई, दो जहानी पावे सारया। एका नाम मिली वड्याई, घर साचे सेव कमा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटा रिहा। जोती जामा हरि निरँकार, कलिजुग अन्तिम पांयदा। शब्द खण्डा तेज कटार, आपणे हथ्थ उठांयदा। गुरमुखां कराए चरन प्यार, साची रीती आप वखांयदा। भरमे भुल्ले भरम संसार, मन्दिर मसीती डेरे लांयदा। मानस देही किसे ना जीती, रो रो दर दर घर घर नेत्र नीर वहांयदा। आत्म मदि हरि का नाउँ किसे ना पीती, नाम ख़ुमारी ना कोई चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सुहाए साचा दर, दर दुआरा आप सुहांयदा। गुरमुख साचे दर द्वार, एका एक विखाया। निर्मल जोती कर आकार, आकाशा प्रकाश समाया। शब्द सुरत सच्ची धुन्कार, अनहद रिहा नाद वजाया। सुणे सुणाए सुणनेहार, दिस किसे ना आया। लक्ख चुरासी रही पुकार, साध सन्त रहे कुरलाया। पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराण, पारब्रह्म भेव ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अगम्म अगम्मड़ा अगम्मड़े धाम सुहाया। गुरमुख तेरी आत्म सेज, हरि एका एक विछाईआ। शब्द संदेसा रिहा भेज, दिवस रैण रिहा जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख वेखे तेरा साचा घर, पन्दरां चेत काया खेत, पुर भलाई वज्जी वधाईआ। वज्जे वधाई डंक अपार, हरि साचा आप वजांयदा। बेमुख जीवां करे ख़बरदार, अन्तिम वेला आंयदा। साध सन्त करन हाहाकार, ना कोई किसे बचांयदा। निहकलंका लए अवतार, गुर गोबिन्दे संग रलांयदा। शब्द खण्डा तेज कटार, दो जहानां आप वखांयदा। ब्रह्मा शिव देवत सुर रोवण धाहां मार, हरि साचा भेख वटांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी मारे मार, सत्तां दीपां आप हिलांयदा। लक्ख चुरासी वेख विचार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, एका धार वहांयदा। जन भगतां करे प्यार, जोती नूर करे उज्यार, आत्म ब्रह्म जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका अंक समांयदा। आत्म जोती नूर आकार, एका एक जगाईआ। गुरमुख साचे मेटे धुँदूकार, दीपक इक्क करे रुशनाईआ। शब्द आपणा हरि सुणाए

साची धार, अन्दर मन्दिर काया इक्क बणाईआ। मिले मेल मोहण माधव माध, जुग जुग विछड़े रिहा मिलाईआ। प्रगट होवे आदि जुगादि, जुग जुग भेखाधरी भेख वटाईआ। सन्त सुहेले लए लाध, पूर्ब लहिणा झोली पाईआ। रसना रस जो जन रहे अराध, हरि गोबिन्द आपे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आपे आईआ। गोबिन्द तेरा सच दरबार, हरि साचे आप पछानया। प्रगट हो विच संसार, जोती जामा भेख वटानया। कल्गी तोड़ा सीस दस्तार, जोती जोड़ा मेल मिलानया। शब्द घोड़ा इक्क अपार, नीली छत्तों पार करानया। वेखे परखे मिट्ठा कौड़ा, हरि वाली दो जहानया। कलिजुग तेरा दूर किनार आपे वेखे लम्बा चौड़ा, खेले खेल श्री भगवानया। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, वेद व्यासा कर परवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सम्बल नगरी आप सुहानया। सम्बल नगरी धाम अवल्ला, हरि साचे जोत जगाईआ। गोबिन्द जोती इक्क इकल्ला, निरगुण खेल खिलाईआ। जन भगतां मेटे दूई द्वैती सल्ला, मनमुखां अग्नी रिहा लगाईआ। सोहँ फड़या हथ्थ विच भल्ला, चारे कुन्टां रिहा विखाईआ। मेल मिलाए गोबिन्द डल्ला, इक्की जेठ रुत्त सुहाईआ। लक्ख चुरासी आप भुलाए कर कर वल छला, अछल अछल्ल आप कराईआ। आपे वसे निहचल धाम अटला, उच्च महल्ला डेरा लाईआ। कलिजुग तेरी मिटे कल,
सोला कल मात वरताईआ। आपे वेखे जल थला, उच्चे पर्बत जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर फोल फुलाईआ। गुरमुख साचा सन्त दुलार प्रभ चरन दुआरा बैठा मल्ला, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निज घर आत्म बैठा आसण लाईआ। निज घर आसण सच टिकाणा, हरि साची जोत जगाईआ। शब्द सरूपी इक्क बिबाणा, गुरमुखां रिहा चढ़ाईआ। भरमे भुल्ले राजा राणा, राज राजानां हथ्थ ना आईआ। लक्ख चुरासी अन्त कुरलाणा, कलिजुग देवे मात दुहाईआ। सम्मत चौदां धुर फ़रमाणा, प्रभ साचा रिहा जणाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क मैदाना, पंचम जेठी रिहा बणाईआ। एका रसना तीर कमाना, गोबिन्द चिल्ले रिहा चढ़ाईआ। आपे वेखे दो जहानां, लोकमात फेरा पाईआ। लाड़ी मौत बन्ने गाना, वेले अन्तिम खुशी मनाईआ। गुरमुख विरले चतर सुजाना, प्रभ आत्म बूझ बुझाईआ। एका देवे जिया दाना, दाता दानी आप अख्वाईआ। मिले मेल श्री भगवाना, गुर पूरे वड्ड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जन साचे रिहा तराईआ। हरिजन साचे तेरा सच द्वार, हरि साचा आप सुहांयदा। आपे खोल्हे बन्द किवाड़, बजर कपाटी पार करांयदा। साची हाटी इक्क वणजार, साचा वणज करांयदा। सृष्ट सबाई होए ख्वार, अट्ठ सट्ठ मूल चुकांयदा। त्रैगुण माया तपी भट्ठी, अन्तिम आप जलांयदा। ना कोई जाणे पूजा

पाठी, आत्म अज्ञान ना कोए मिटांयदा। गुरमुख विरला साचा हाठी, प्रभ चरन ध्यान लगांयदा। दुरमति मैल दर तों जाए नाठी, अमृत आत्म सर सरोवर जिस जन इशनान करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे पार करांयदा। हरिजन साचे बेड़ा बन्नृ, आपे आप चलाया। एका राग सुणाए कन्न, राग रागणी भेव ना पाया। आत्म चढ़या साचा चन्न, गुर शब्दी आप चढ़ाया। पंजां चोरां देवे डन्न, भाण्डा भरम दए भनाया। आपे बख्शे चरन ध्यान, नाम धन, चोर यार लुट्ट कोए ना लै जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखाया। हरिजन साचे आत्म वेख, आपणी बूझ बुझाईआ। आपे लिखणहारा लेख, मस्तक मेख लगाईआ। नेत्र लोचन साचे पेख, सोए सुत रिहा जगाईआ। गोबिन्द काया धारी केस, सच धर्म इक्क वखाईआ। साचा मेला दस दस्मेस, दस्म द्वारी आप कराईआ। आपे धारे आपणा भेस, भेखाधारी आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आत्म सेजा नर नरेश बैठा आसण लाईआ। आत्म सेजा सच द्वार, बैठा आसण लाईआ। ना कोई दिसे अन्ध अंध्यार, जूठ झूठ दिस ना आईआ। कूड़ कूड़ा ना कोई पसार, ना कोई दिसे भैण भाईआ। एका शब्द सच्ची धुन्कार, अनहद रिहा सुणाईआ। अमृत आत्म ठण्ढी ठार, निझर धारा रिहा वहाईआ। आपे खोल्हे बन्द किवाड़, दर दुआरा आप खुल्हाईआ। गुरसिख साजण साचा लाड़, शब्द घोड़े आप चढ़ाईआ। दस्म द्वारी देवे वाड़, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां घर मेला सहिज सुभाईआ। दस्म द्वारी साचा मेला, हरि आपणा आप कराया। चुक्कया भेव गुरु गुर चेला, चेला गुर एका रूप समाया। गोबिन्द गुर सज्जण सुहेला, घर साचे वेख वखाया। जोत निरँजण चाढ़े तेला, पंचम मंगल साचा गाया। मिल मिल सखीआं पावण वेला, सन्त सुहेले संग रलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुर शब्दी शब्द जणाया। शब्द गुर वड भण्डार, एका एक वरतांयदा। कोटन कोट खड़े द्वार, देवणहार आप अख्वांयदा। मनमुख भुल्ले जीव गंवार, गूढ़ी नींद सवांयदा। मदिरा मास रसन अहार, आप आपणा मूल गंवांयदा। नानक निरगुण खेल अपार, सति पुरख निरँजण संग सुहांयदा। एका अंजन विच संसार, सतिनाम नेत्र पांयदा। चरन धूढ़ मजन हरि दातार, तीर्थ तट्ट आप विखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां दुरमति मैल देवे कट्ट, आप आपणी दया कमांयदा। दुरमति मैल हरिजन कट्ट, आत्म जोत जगाईआ। मेल मिलाए काया मट्ट, आप आपणी बूझ बुझाईआ। लेखा चुक्के तीर्थ तट्ट, जिस जन आत्म अमृत सर सरोवर इक्क इशनान कराईआ। एका सौदा एका हट्ट, इक्क वणजारा राम कराईआ। आपे वसया घट घट, हर घट बैठा आसण

लाईआ। जुग जुग खेले खेल बाज़ीगर नट, आवे जावे फेरी पाईआ। जोत अकाला लट लट, आदि जुगादा इक्क रहाईआ। ना जन्मे ना मरे ना उसरे ना जाए ढठ्ठ, ना कोई बणत बणाईआ। ना कोई गुरदर मन्दिर मस्जिद मठ्ठ, प्रभ बैठा आसण लाईआ। शब्द सरूपी इक्क इक्ठ्ठ, हरि शब्दी धुन उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क सुहाईआ। साचा घर हरि निरँकार, आपणा आप सुहाया। आपे बैठ सच्ची सरकार, आपणा रंग वटाया। ना कोई साजण मीत मुरार, गुर पीर ना कोई अख्वाया। सन्त सुहेला ना कोई अधार, गुर चेला कोई दिस ना आया। इक्क इकल्ला जोत अकार, आप आपणी रिहा कराया। शब्द सरूपी पहरेदार, आप आपणी सेव कमाया। आपे होया ख़बरदार, जन भगतां रिहा जगाया। भगत सुहेला मीत मुरार, जुग जुग पैज रक्खदा आया। प्रगट होए विच संसार, आप आपणी कल वरताया। सतिजुग त्रेता उतरे पार, द्वापर खेल खिलाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, प्रभ साचा वेखण आया। निहकलंक लए अवतार, गोबिन्द संग रखाया। गोबिन्द खेले खेल अपार, गुर चेला आप अख्वाया। सज्जण सुहेला मीत मुरार, शब्द खण्डा रिहा उठाया। पाए वंडां विच संसार, नौ खण्डां रिहा हिलाया। जेरज अंडां मारे मार, उत्भुज सेत्ज दए हिलाया। विच ब्रह्मण्डां हाहाकार, लोआं पुरीआं दए सज़ाया। गुरमुख साचे सन्त सुहेले लए उभार, सम्मत चौदां मेल मिलाया। सम्मत पन्दरां हाहाकार, दर दर घर घर दए कराया। सम्मत सोलां लाड़ी मौत कर शृंगार, मनमुख जीव फिरे हलकाया। सम्मत सतारां छड्डुणा घर बाहर, छप्पर छन्न ना कोई वसाया। अठ्ठ अठारां एका धार, हरि साचा जल वहाया। उन्नी उनीसा मेट मिटाए हरि ईसा मूसा, अल्ला राणी लाहे काली चुन्नी मुख आपणा रही वखाया। बीस बीसा हरि जगदीसा, एका छत्र झुलाए सीसा, आप आपणा भेख वटाया। इक्क इकल्ला इक्क इकीसा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण सरगुण दोवें खेल खलाया। निरगुण रूप अपार, दिस किसे ना आया। सरगुण शब्द अधार, साचा शब्द सुणाया। दोहां मेला विच संसार, विछड़ कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण आप अख्वाया। निरगुण खेल अपार, जगत अमोल्लया। सरगुण शब्द अधार, पूरे तोल तोल्लया। आपे बैठा अद्धविचकार, आदि अन्त कदे ना डोल्लया। निरगुण रूप हरि निरँकार, एका एक अख्वाया। सरगुण मेला विच संसार, गुर पीर लए उपाया। आपे देवे शब्द अधार, आपे जोती नूर सवाया। ईसा मूसा लाए पार, वेले अन्त सुहाया। संग मुहम्मद चार यार, आप आपणे रंग रंगाया। अल्ला राणी तेरी सुण पुकार, हरि गोबिन्द भेख वटाया। चारों कुन्ट हाहाकार, जीव जन्त रिहा कुरलाया। नानक गाया अपर अपार, दर दुआरा वेख वखाया। एका मेला सच दरबार, साची भिच्छया पूरन इच्छया मंगण

मंग मंगाया। मंगणहारा किसे ना दिस्सया, गुरुआं पीरां देवे सिख्या, साचा शब्द जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग लोकमात आपणा खेल वेखण आया। जुग जुग खेले खेल वड संसारया। कलिजुग अन्तिम वेल, लक्ख चुरासी पासा हारया। ना कोई दीसे सज्जण सुहेल, ना कोई मीत मुरारया। ना कोई गुरू ना कोई चेल, ना कोई सेवक सेव कमा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका नाउँ उपा ल्या। गुर चेला ना कोई सदाए, कलिजुग कला वरताईआ। भुल्ल भुल्ल माया भरम भुलाए, झूठे वहिण वहाईआ। काया डाल्ह ना फल कोई लगाए, अमृत फल ना कोए खवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी तेरा मुल्ल, प्रभ साचे अन्तिम पावणा। कलिजुग बूटा रिहा हुल्ल, फल किसे ना खावणा। माया ममता साध सन्त रहे रुल्ल, हरि हरि नाउँ ना किसे ध्यावणा। कलिजुग अन्धेर रिहा झुल्ल, गढ़ हँकारी आप डुबावणा। मदिरा मास ना कोई लाए बुल्ल्ह, प्रभ साचा समां सुहावणा। धरत मात तेरा वेहड़ा जाए खुल्ह, नौ खण्ड पृथ्वी एका रंग रंगावणा। गुरमुख विरला उपजे साची कुल, जिस जन प्रभ आपणा मेल मिलावणा। गुरमुख नाउँ कोए ना तेरे तुल्ल, राए धर्म मुख भवावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम रसना करावणा। कलिजुग तेरा अन्त करा, हरि साचे भेव चुकावणा। जूठे झूठे मेट मिटा, सच सुच्च वरतावणा। गोबिन्द खण्डा हथ्थ फड़ा, लक्ख चुरासी मेट मिटावणा। धर्म झण्डा इक्क चढ़ा, सच निशान वखावणा। ब्रह्मण्डां शब्द दए जणा, हरि रसना आप अल्हावणा। जेरज अंडा राहे पा, साचा मार्ग इक्क वखावणा। भेख पखण्डा दए मिटा, भेखाधारी कोई दिस ना आवणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरा अन्त करावणा। कलिजुग तेरी अन्तिम धार, हरि साचा रिहा मिटाईआ। खेले खेल अपर अपार, जोती जामा भेख वटाईआ। गोबिन्द चेला इक्क द्वार, सज्जण सुहेला वेख वखाईआ। आदि पुरख एकँकार, ओंकारा रूप सुहाईआ। नाम सति जगत वरतार, सति सन्तोख धीरज मति रिहा दवाईआ। कलिजुग भुल्ले भरम गंवार, माया पड़दा रही पाईआ। जूठे झूठे तोल तुले विच संसार, साचा तोल ना कोई तुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नानक दर द्वार पुकार, सृष्ट सबाई रिहा तुलाईआ। कलिजुग तेरा अन्तिम राह, हरि साचे वेख वखावणा। लक्ख चुरासी दए फाह, धर्म राए अन्त विखावणा। गुरसिख विरले मिल्या साचा नाँ, गोबिन्द गुर मिलावणा। आपे पकड़े हरि जी बांह, आप आपणा भेख वटावणा। आपे पिता आपे माँ, आप आपणी गोद उठावणा। देवणहारा जुग जुग ठण्ढी छाँ, जन भगतां सिर हथ्थ

टिकावणा। मनमुख जीव काग रहे कुरला, जूठा झूठा विष्टा मुख रखावणा। गुरमुख सन्त सुहेले सच सरोवर साचे हँस दए नुहा, आत्म साचे मोती चोग चुगावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लहिणा देणा मूल चुकावणा। कलिजुग तेरा वेख द्वार, प्रभ साचा खुशी मनांयदा। कूड़ कुड़यारे मीत मुरार, कूड़ा डंक वजांयदा। कूड़ कुड़यारा कर पसार, राउ रंक पिसांयदा। कूड़ कुड़यारा बध्धी धार, कूड़े मोह चलांयदा। गुरमुख विरला मंगे भिक्ख प्रभ चरन द्वार, दोए जोड़ सीस झुकांयदा। जीव जन्त ताअना रहे मार, निन्दक निन्दया मुख रखांयदा। भगतन मेला हरि द्वार, हरि साचा आप मिलांयदा। निर्मल जोती कर आकार, दीपक जोत जगांयदा। नाम खण्डा तेज कटार, तन गात्रे आप लटकांयदा। आपे होया पहरेदार, दिवस रैण सेव कमांयदा। गुर गोबिन्दा ख़बरदार, सम्बल नगरी वेख वखांयदा। सर सरोवर अपर अपार, चारों कुन्ट वहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त दुलार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, फड़ बाहों पकड़ उठांयदा। कलिजुग तेरी अन्धेरी रात, चारों कुन्ट छाईआ। लक्ख चुरासी भरमे भुल्ली ज़ात पात, वरन बरन रक्खे मुख वखाईआ। पारब्रह्म तेरा एका नात, ना कोई भेव जणाईआ। सृष्ट सबाई देवे दात, देवणहारा हरि रघुराईआ। इक्क इकल्ला बैठ इकांत, जीवां जन्तां जोती देवे नूर सबाईआ। जन भगतां देवे अमृत आत्म बूंद स्वांत, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। वेले अन्तिम पुच्छे वात, लोकमात ना होए जुदाईआ। आप चढ़ाए औखे घाट, वंञ मुहाणा इक्क चलाईआ। शब्द चढ़ाए साचे राथ, रथ रथवाही आप अख्वाईआ। प्रगट होए त्रैलोकी नाथ, त्रै लोआं रचन रचाईआ। कलिजुग तेरा लहिणा चुकाए साढे तिन्न हाथ, मनमुख जीवां सीआं वंड वंडाईआ। जन भगतां सगल वसूरे जाण लथ्थ, प्रभ नेत्र दर्शन पाईआ। शब्द जणाए अकथना अकथ, कथनी कत्थ ना सके राईआ। जिस जन देवे साची वत्थ, आत्म दर दए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, गुरमुख साचे पार कराईआ। गुरमुख साचे शब्द अधार, एका शब्द जणाईआ। आदि अन्त एकँकार, एका रंग रंगाईआ। जूठी झूठी मिटे पंचम धाड़, नेड़ रहिण ना पाईआ। इक्क वखाए धर्म अखाड़, पंचम शब्द ताल वजाईआ। जोत जगाए बहत्तर नाड़, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। आपे होए पिच्छे अगाड़, जन भगतां सेव कमाईआ। मनमुख चबाए आपणी दाढ़, बचया कोई रहिण ना पाईआ। कलिजुग अग्नी तत्ती हाढ़, जीवां जन्तां रही जलाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार, तन बैठे घर बणाईआ। गुर शब्द ना करे कोई प्यार, नानक गोबिन्द गया समझाईआ। पढ़ पढ़ थक्के जीव गंवार, रसना होई हलकाईआ। मिल्या मेल ना कन्त भतार, आत्म सेज ना किसे हंढाईआ। ना कोई शब्द करे तन शृंगार, सोहणी सूरत

अकाल मूर्त किसे दिस ना आईआ। ना कोई वजाए नाद तूरत, झूठे संख रहे वजाईआ। जगत जुगत नाता कूड़ो कूड़त, अन्त रहिण ना पाईआ। गुरमुख विरला मंगे चरन धूढ़त, हरि बख्शे सच सरनाईआ। काया चोली रंग चाढ़े गूढ़त, उतर कदे ना जाईआ। चतर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़त, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरा अन्तिम दर, आपे वेख वखाईआ। कलिजुग तेरा काला रंग, चारों कुन्ट होए प्रधानया। जूठ झूठ वजाए मृदंग, भज्जे फिरन पंज शैतानया। जीव जन्त होए नंग, कोई ना पाए पद निरबानया। साधां सन्तां काया भंग, तन वसया माण अभिमानया। गुरमुख विरला नौ द्वारे जाए लँघ, प्रभ रक्खे चरन ध्यानया। दस्म द्वारी वेख पलँघ, साची खुशी मनानया। सतिगुर पूरा होए संग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका बख्शे चरन ध्यानया।

हरि गोबिन्द गोबिन्द गुर गुर गोबिन्द उपाया। आप मिटाई सगली चिन्द, आत्म तृप्त कराया। मिल्या मेल हरि मृगिन्द, हरि हरि मंगल गाया। अमृत आत्म धारा सागर सिन्ध, आपे मुख चुआया। मनमुख जीव करन निन्द, गुर साचा दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द रूप वटाया। गोबिन्द रूप हरि निरँकार, आपणा आप वटाया। जोत सरूपी कर अकार, शब्दी बणत बणाया। पंज तत्त तन कर प्यार, नूरो नूर दरसाया। आपे गुप्त आपे ज़ाहिर, अन्दर बाहर आप हो आया। काया मन्दिर कर त्यार, साचा आसण लाया। गुर गोबिन्दा सच दुलार, पूत सपूता आप उपाया। दो जहानां पावे सार, चारे कुन्टां वेख वखाया। नाम खण्डा तेज कटार, तन श्रृंगार कराया। बस्त्र शस्त्र अपर अपार, एका एक तन पहनाया। पंचम मीता पंचम प्यार, पंचम रक्खदा आया। पंचम मेला कन्त भतार, पंचम रूप वटाया। पंचम चिन्ता विच संसार, पंचम मोह चुकाया। पंचम रीता अपर अपार, पंचम सो कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया विच समाया। गोबिन्द काया शब्द धार, हरि एका एक रखाईआ। चरन कँवल बख्शे प्यार, लोकमात पावे सार, हरि नैणा दरस दिखाईआ। हरि हरि रूप अगम्म अपार, लेखा लेख ना लिख्या जाईआ। आवे जावे वारो वार, जुग जुग आपणी खेल रचाईआ। लक्ख चुरासी वसे बाहर, लेख लिख्त आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द तेरी पूरन आस अन्तिम कलि कराईआ। गोबिन्द आसण प्रभ चरन द्वार, करे सद बेनन्तीआ। सुणे सुणाए हरि पुकार, काया चोली चाढ़े रंग बसन्तीआ। एका देवे शब्द अधार, मेल मिलाए साचे कन्तया। प्रगट होए

६०२ ०६

नर अवतार, निहकलंक जुग जुग बणाए बणतया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द वसया काया घर, साचा धाम सुहन्तया। गोबिन्द मंगी साची भिख, प्रभ साचे झोली पाईआ। साची सिख्या एका सिक्ख, चरन कँवल ध्यान रखाईआ। आपे लेखा रिहा लिख, आपे मेट मिटाईआ। नेत्र लोचन आपे पेख, गुरमुख साचे रिहा जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द साचा मेल मिलाईआ। गोबिन्द गुरद्वार इक्क, एका धाम सुहाया। भेव ना पायण मुन रिख, साध सन्त दिस ना आया। दूई द्वैती जगत लग्गी तृख, आत्म अन्ध अन्धेर कराया। माया ममता मंगण भिख, सच वस्त नाम ना कोई झोली पाया। हरि का नाउँ शब्द अनडिठ, गुरमुख विरले वेख वखाया। मनमुखां सुत्ता दे कर पिठ, अन्तिम भन्ने कौड़े रेठ, कलिजुग दए दुहाया। मायाधारी कोई रहिण ना पाया। वेख वखाए पंचम जेठ, सम्मत चौदां रुत्त सुहाया। जन भगतां रक्खे साया हेठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। नेत्र लोचन लैणा वेख, गोबिन्द गोबिन्द रूप वटाया। धुर मस्तक लावण आया मेख, जुग जुग विछड़े लए मिलाया। जोती जामा धरया माझे देस, साचा धाम सुहाया। पकड़ उठाए नर नरेश, राज राजानां शाह सुल्तानां रिहा हिलाया। प्रगट होए दस दस्मेस, पन्थ ख़ालसा रिहा जगाया। इक्की चेत्र जाए लेख, हरिमन्दिर आप पुजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द साचा वेख वखाया। गोबिन्द जोद्धा सूर बलवान, एका एक रखाया। संग रखाया श्री भगवान, शब्द घोड़े तंग कसाया। लोआं पुरीआं वेखे मार ध्यान, आप आपणा पन्ध मुकाया। लोकमात आवे विच बिबाण, शब्द खण्डा हथ्थ उठाया। जन भगतां करे आप पछाण, लहिणा देणा मूल चुकाया। सरसा तेरा रक्खे माण, पुरी अनन्द आप तजाया। लक्ख चुरासी जूठा झूठा पीण खाण, अमृत आत्म किसे हथ्थ ना आया। खाणी बाणी होई हैरान, हरि का भेव किसे ना पाया। ना कोई करे जाण पछाण, ग्रन्थी पन्थी पढ़ पढ़ वाद वधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द वेखे साचा घर, काया सेज इक्क बणाया। गोबिन्द गुर शब्द सुल्तान, लोकमात लए अवतारा। मेट मिटाए जीव नादान, जूठ झूठ पसर पसारा। ना कोई दिसे बेईमान, ना कोई मदिरा मास रसना करे अहारा। एका देवे नाम निधान, सोहँ शब्द जै जै कारा। चार वरन रसना गान, ऊँच नीच पार किनारा। एका एक चरन ध्यान, पुरख अबिनाशी एकँकारा। ना कोई पूजे शिव शंकर ब्रह्मा करोड़ तेतीसा अन्त विचारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द तेरा सच वरतारा। गोबिन्द तेरी साची धार, पारब्रह्म करांयदा। अमृत आत्म अपर अपार, गुरमुखां आप प्यांअदा। नाम खण्डा तेज कटार, तन गात्रे आप पहनांयदा। सीस जगदीस शब्द दस्तार, आपणी हथ्थीं आप पहनांयदा। चार वरनां इक्क विहार, एका धार

बंधांयदा। राउ रंक कराए ख़बरदार, साचा संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दे तेरा वर, अन्तिम पूर करांयदा। गुर गोबिन्द चढ़या चाअ, घर साचे खुशी मनाईआ। पुरख अबिनाशी मिल्या इक्क मलाह, लोकमात बेड़ा बन्ने लाईआ। हरि शब्दी देवे सच सलाह, सुत्ता कोई रहिण ना पाईआ। एका अक्खर एका नाँ, एका गुर एका गोबिन्द एका रसना गाईआ। एका पिता एका माँ, पूत सपूता एका जाईआ। इक्क वखाए सच्चा थाँ, चरन द्वार सच्ची सरनाईआ। चार वरनां फड़ाए बांह, वरन बरन भेव मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द तेरी खेल लोकमात वरताईआ। गोबिन्द तेरा साचा खेल, लोकमात वरताया। गुरमुख साचे साजण मेल, साचा मेल मिलाया। आपे वसया रंग नवेल, गुर चेल रूप वटाया। आपे होया सज्जण सुहेल, सखा सहाई आप अख्वाया। कट्टणहारा धर्म राए दी जेल, लक्ख चुरासी फंद कटाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वेल, जन भगतां होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द साचा वेख वखाया। गोबिन्द गुर हरि सरनाई, दोए जोड़ करे निमस्कारया। प्रभ अबिनाशी दया कमाई, मिल्या मेल विच संसारया। साचे घर वज्जे वधाई, नौ खण्ड हाहाकारया। गोबिन्द करे गुरसिख कुड़माई, साचा सगन मुख लगा रिहा। पंचम मेला सहिज सुभाई, सतिगुर पूरा आप करा रिहा। मनमुख भुल्ले कोई पाए ना थाँईं, चारों कुन्ट फिरा रिहा। जन भगत उठाए फड़ फड़ बांही, सेवक सेवा आप कमा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवी देवा ना कोई रखा रिहा। देवी देव ना कोहतूर, ना पर्बत वेख वखाईआ। गुर गोबिन्दा आसा मनसा पूर, पूरन पूर कराईआ। शब्द अनादी वज्जे तूर, अनहद धार चलाईआ। आपे वसे नेड़े दूर, दूर नेड़े आप हो जाईआ। सदा सुहेला हाज़र हज़ूर, अट्ठे पहर नेत्र नैण रिहा दरस दिखाईआ। मनमुख जीवां नाता कूड़, अन्तिम रिहा तुड़ाईआ। गुरमुखां बख्शे चरन धूढ़, बैठे मस्तक लाईआ। काया चोली रंग चढ़या गूढ़, ना कोई सके लाहीआ। भरमे भुल्ले मूर्ख मूढ़, गुर गोबिन्दा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटाईआ। गुर गोबिन्द चढ़या घोड़, वाग आपणे हथ्थ रखाईआ। धुरदरगाही आया दौड़, लोकमात जोत जगाईआ। उच्चे पर्बत लभ्भदे पूत सपूता ब्रह्मण गौड़, दिस किसे ना आईआ। सम्बल नगरी ना कोई जाणे लम्मा चौड़, गुर बैठा आसण लाईआ। वेखे परखे मिट्ठे कौड़, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। शब्द खण्डा रिहा दौड़, आपणे हथ्थ उठाईआ। नीला मारे पहला पौड़, सम्मत चौदां पंचम जेठी रुत्त सुहाईआ। जन भगतां अमृत आत्म लग्गी औड़, निझर धारा मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द अपणी गोद उठाईआ। गोबिन्द सच सपूत, प्रभ आपणी गोद उठाया। वेख

वखाणे चारे कूट, दहि दिशा उठ उठ धाहया। सन्त सुहेले जुग जुग विछड़े गए रूठ, वेले अन्तिम लए मनाया। मनमुख जीव हथ्थ खाली ठूठ, दर दर फिरन हलकाया। तीर निराला रिहा छूट, रसना चिल्ला सोहँ एका नाम चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पूत सपूता साचे धाम बहाया। पूत सपूता जोद्धा बीर, हरि हरि एका एक रखाया। सोहँ बख्शे साचा तीर, रसना चिल्ले आप चढ़ाया। मेट मिटाए पीर फ़कीर, औलीआ शेख़ कोई रहिण ना पाया। काया लथ्थे चीर, चारों कुन्ट दए दुहाया। साधां सन्तां होई अख़ीर, माया ममता मन हलकाया। दूई द्वैती ना कोई कढ्ढे पीड़, सांतक सति ना कोई वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाणे पंचम तत्त, त्रैगुण माया फोल फुलाया। गुर गोबिन्द साचा चीरा, आपणे सीस टिकाया। नाम रखाया साचा हीरा, मस्तक वेख वखाया। मिल्या मेल गुणी गहीरा, एका दूजा भउ चुकाया। इक्क रखाया साचा तीरा, तिक्खी धार बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची सिख्या सिक्खी दे मति रिहा समझाया। गुर गोबिन्दे दे मति, प्रभ साचा आप समझांयदा। सृष्ट सबाई एका तत्त, चार वरनां मात धरांयदा। सति सन्तोखी धीरज यति, साची कच्छ पवांयदा। सच धर्म हरि समरथ, एका एक विखांयदा। पंजां चोरां पाई नत्थ, आत्म ब्रह्म ज्ञान जणांयदा। जन भगती देवे साची वत्थ, सोहँ झोली पांयदा। कलिजुग अन्तिम गुरदर मन्दिर मस्जिद जाणे ढठ्ठ, उच्चा टिल्ला कोई रहिण ना पांयदा। गेड़नहारा उलटी लठ्ठ, आपे वेख वखांयदा। नाता तुट्टे तीर्थ अठ्ठ सठ्ठ, गंगा गोदावरी नीर सुकांयदा। ना कोई शिवदवाला दिसे मठ्ठ, गणपति गणेश ना कोई मनांयदा। प्रभ चरन द्वारे जो जन जाए ढठ्ठ, आप आपणी सरन रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द गुर गुर गोबिन्द सगली चिन्द मिटांयदा। गोबिन्द आसा हरि हरि पूर, आत्म तृप्त कराईआ। सर्बकला आपे भरपूर, आप आपणा रिहा वखाईआ। नाद अनादी बख्शे साची तूर, धुर फ़रमाण जणाईआ। लक्ख चुरासी जूठ झूठ करनी चूर, कूड़ कुड़यारा दए मिटाईआ। जन भगतां बख्शे चरन धूढ़, नेत्र नैणा दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेख वटाईआ। भेख वटाया हरि अवल्ला, अवल्लड़ी कार कमाईआ। गुर गोबिन्दे वसाया इक्क महल्ला, साचा धाम सुहाईआ। आपे होया अछल अछल्ला, दिस किसे ना आईआ। शब्द जोती आपे रला, पवण पवणी रिहा समाईआ। आपे वसया जल थला, डूँघी कन्दर डेरा लाईआ। शब्द सुनेहड़ा आप आपणा घल्ला, गुर गोबिन्द रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका डंका रिहा वजाईआ। एका डंका हरि वजाए, चारों कुन्ट जै जै जै कारया। राउ

रंक रिहा उठाए, चार वरनां आप उठा रिहा। सृष्ट सबाई दे मति समझाए, सोहँ खण्डा तेज कटारया। गति मित आपणे हथ्थ रखाए, वड दाता जोद्धा सूर बली बलकारया। बुध मति कोई भेव ना पाए, पढ़ पढ़ थक्के जीव गंवारया। देवी देव रहे मनाए, करोड़ तेतीसा सेव कमा रिहा। शिव शंकर बैठे सीस झुकाए, नाम त्रिसूल ना कोई चला रिहा। ब्रह्मा ब्रह्म रूप समाए, अट्ठे नेत्र वेख वखा रिहा। चारे मुख रसना गाए, प्रभ चरन ध्यान लगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण रूप समा रिहा। निरगुण निरँकार, निराहार अख्वाया। कलिजुग अन्तिम लए अवतार, निहकलंका नाउँ रखाया। निहकलंका डंक अपार, एका एक वजाया। आप उठाए राउ रंकां, रंक राजानां रिहा जगाया। सृष्ट सबाई ज्ञानीआं ध्यानीआं वड विद्वानीआं वेद पुराणीआं अञ्जील कुरानीआं कढ्ढे शंका, जो जन चल द्वारे आए। प्रगट होए वासी पुरी घनका, सम्बल नगरी धाम सुहाए। खेले खेल जुग जुग बार अनका, अनक कल वरताए। जन भगतां जोती लाए तनका, आत्म बूझ बुझाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगवन रूप वटाए। हरि भगवाना तीर निशाना, एका एक उठाया। खेले खेल वाली दो जहानां, मेट मिटाए पंज शैताना, लोकमात डेरा लाया। गुरमुखां बन्ने हथ्थीं गाना, आपे देवे नाम दाना, धुरदरगाही लै के आया। आपे गोपी आपे काहना, रास मण्डल आप सुहाया। सच समग्री इक्क रखाया। आपे राग आप तराना, आपे रिहा नाद वजाया। आपे गुर जोद्धा सूर बली बलवाना, शस्त्र धारी आप अख्वाया। आपे खण्डा रक्ख म्याना, आपे लोकमात रिहा चमकाया। आपे जाणे वेद पुराणां, आपे आप रिहा उपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निज घर बैठा आसण लाया। निज घर आसण हरि हरि लाए, हरि हरि रूप समाया। थिर घर कोई ना वेखण जाए, दिस किसे ना आया। लोकमात प्रभ फेरा पाए, जुग जुग भेख वटाया। नानक गोबिन्द गया गाए, गोबिन्द गोबिन्द रूप समाया। दर दरवेशा आप हो जाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरसिख साचे लए मिलाए। गुरमुख मेला सच द्वार, आपणा आप कराया। पारब्रह्म ब्रह्म पाए सार, एका दूजा भउ चुकाया। तीजे नेत्र दरस अपार, चौथा घर चौथा पद हरि दर सच सुहाया। पंचम सुहाए सुहागी छन्द, एका राग अलाया। छेवें खुशी कराए बन्द बन्द, हउमे दुखड़ा मेट मिटाया। सत्तवें सति पुरख उपजाए परमानंद, निजानंद वेख वखाया। अट्ठां तत्तां दूई द्वैती ढाहे कंध, आपणा पड़दा लाहया। नौ द्वारे करे बन्द, दसवें मेल मिलाया। इक्क ग्यारां पुरी अनन्द, हरि साचा वेख वखाया। दो बारां चढ़े चन्द, सतिगुर साचा वेखण आया। त्रै तेरां त्रैगुण बंधा तन्द, तेरां

६०६
०६

तेरां गया नानक गाया। सम्मत चौदां प्रभ भए अनन्द, गुरमुख सोए मात जगाया। सोहँ शब्द सुणाए सुहागी छन्द, चौदां लोकां आप जणाया। जो जन रसना लगाए मदिरा मास गन्द, राए धर्म दए सज़ाया। पंचम पन्दरां चढ़या चन्द, गुरमुख गुरसिख साचा धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सतिगुर साचा इक्क अख्वाया।

जानणहार सर्ब कुछ दाता, अगम्म अथाह बेपरवाहीआ। भगत जनां दी उत्तम ज़ाता, एका एक रखाईआ। मेटण आया अन्धेरी राता, साचा चन्द चढ़ाईआ। मिल्या मेल पुरख बिधाता, विछड़ कदे ना जाईआ। चरन कँवल हरि बद्धा नाता, जोड़ी जोड़ जुड़ाईआ। लेख चुकाए आन बाटा, गर्भ वास फेर ना आईआ। नाम वणजारा साचा हाटा, एका एक कराईआ। अमृत जाम प्याए सोहँ बाटा, दिवस रैण ख़ुमार रखाईआ। दीपक जोती जगे लिलाटा, जोत निरँजण डगमगाईआ। आपे करे नेड़ वाटा, सिँघ पाल गले लगाईआ। भाग लगाए काया वाता, नेत्र नीर रिहा वहाईआ। इक्क वखाए तीर्थ ताटा, चरन धूढ़ इशनान कराईआ। करनहारा पूरा घाटा, जुग जुग विछड़े रिहा मिलाईआ। धुरदरगाही आया नाठा, लोकमात फेरा पाईआ। गुरमुख तेरा साचा हाठा, अन्तिम तोड़ निभाईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अमृत आत्म मारे ठाठां, गुरसिख साचा रिहा तारीआं लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लहिणा देणा झोली पाईआ। गुरसिख नारी कन्त भतार, रो रो करे पुकारया। पुरख अगम्मा पावे सार, आए चल द्वारया। लेखे लाए दम दमा, रसना जिह्वा नाम उचारया। नेत्र नीर वहाए छम्म छम्मा, रोवे ज़ारो ज़ारया। पारब्रह्म प्रभ आपणा जाणे आपे कंमा, गुरमुख साचे गोद उठा रिहा। ना मरे ना कदे जम्मा, आवण जावण खेल बणा ल्या। एका देवे नाम तमा, आत्म तृप्त करा रिहा। सर सरोवर एका जामा, आपणी हथ्थीं आप पिला रिहा। मेटे तन अन्धेरी शामा, अन्ध अन्धेर गंवा रिहा। शब्द वजाए सच दमामा, आपणा ताल वजा रिहा। आपे होया अन्तर जामा, अन्दर मन्दिर वेख वखा रिहा। इक्क जपाए साचा नामा, सोहँ नाउँ रखा ल्या। आपे दाता होए दानी दाना, देवणहार आप अख्वा ल्या। आप बिठाए शब्द बिबाणा, नौ द्वारे पार करा रिहा। साचा हवन इक्क कराना, इक्क समग्री पा रिहा। त्रैगुण माया तेरा अन्त वखाना, कलिजुग मोह चुका रिहा। जन भगतां बन्ने हथ्थीं गाना, एका तन्द रखा रिहा। एका देवे धुर फ़रमाना, बोध अगाध शब्द जणा रिहा। प्रगट हो श्री भगवाना, गुरमुख साचे मेल मिला रिहा। एका तीर इक्क निशाना, एका चिल्ले आप चढ़ा रिहा। एका गोबिन्द

मेहरवाना, गुरसिख रूप समा रिहा। एका राग एका गाना, एका नाद वजा रिहा। एका गोत एका वरन ज़ात पात ना कोई राखाना, एका धाम सुहा रिहा। राउ रंक ना कोए राजाना, शाह सुल्तान ना कोए वेख वखा ल्या। ना कोई पवण ना कोई मसाणा, रूप रंग किसे दिस ना आ रिहा। ना कोई वेद ना कोई पुराणा, ना कोई ब्रह्म ब्रह्मा रसना गा रिहा। ना कोई अञ्जील ना कुराना, ईसा मूसा दिस ना आ रिहा। ना कोई खाणी बाणी गाए गुण निधाना, भेखाधारी भेख वटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख बहाए साचे घर, एका धाम सुहा ल्या। गुरसिख आत्म रही रो, हरि साचे सुण पुकारया। दुरमति मैल काया धो, कलिजुग अन्तिम पासा दिसे हारया। मनमति तन ना जाए छोह, एका देवे नाम भण्डारया। मेल मिलावा घर साचे हो, बजर कपाटी कुण्डा लाह रिहा। आप चुकाए जगत नाता झूठा मोह, सच वस्त इक्क विखा रिहा। तीजे नेत्र करे लोअ, आत्म दरसी दरस दिखा रिहा। सोहँ बीज साचा बो, एका फल लगा रिहा। सस्से होड़ा एका हो, सोहँ नाम जपा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति आप समझा रिहा। गुरसिख बाल नादाान, ढहि पया द्वारया। पुरख अबिनाशी कर पछान, देवे मात सहारया। अन्तिम मेला विच जहान, मिल्या कन्त भतारया। ना कोई जाणे जीव नादान, लहिणा देणा मूल चुका रिहा। त्रेता तेरा चुकया काण, कलिजुग अन्तिम वेख वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखा रिहा। हरिजन साचा आपे वेख, आपे रिहा जगाईआ। लिखणहारा जुग जुग लेख, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। धुर मस्तक लाए आपे मेख, आपे मेट मिटाईआ। आपे दाता नर नरेश, निज घर बैठा आसण लाईआ। जोती जामा दस दस्मेस, गोबिन्द गोबिन्द नाउँ रखाईआ। आपे जाणे आपणा वेस, जुग जुग रिहा वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां देवे नाम वड्याईआ। माण वड्याई भगती भगत, एका एक रखाईआ। सोहँ शब्द जुगती जुगत, साचा जाप जपाईआ। दर द्वारे मुक्ती मुक्त, दिवस रैण फिरे हलकाईआ। इक्क वखाए आत्म शक्त, नूरो नूर जोत सवाईआ। लेखे लाए बूंद रक्त, मानस देही आपणी झोली पाईआ। आपे जाणे आपणा वक्त, कवण द्वारे आवे जावे फेरी पाईआ। पंचम धाड़ मिटावे कटक, शब्द खण्डा रिहा उठाईआ। मनमति बुध हँकार देवे झटक, पंचम मीता पंचम रिहा उठाईआ। मनमुख जीव अद्ध विचकारे रहे लटक, पार किनार ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे आप आपणी गोद उठाईआ। गुरमुख दर भिखार, एका मंग मंगाईआ। आपे खोल्ह़े बन्द किवाड़, अन्दर मन्दिर कुण्डा लाहीआ। सच घर देवे वाड़, बजर कपाटी जन्दर रिहा तुड़ाईआ। दुरमति मैल देवे साड़, अग्नी जोती लाईआ। वा ना लग्गे तत्ती

हाढ़, सांतक सति वरताईआ। आपे होया पिच्छे अगाड़, गुर सेवक सेवा रिहा कमाईआ। गुरमुख साजण साचे लाड़, शब्द घोड़े आप चढ़ाईआ। आपे होए पिच्छे अगाड़, चारे कुन्टां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे रिहा तराईआ। हरिजन साचे एका ओट, प्रभ चरन दुआरया। पुरख अबिनाशी लाए चोट, सोहँ शब्द जै जै जैकारया। भरमे भुल्ले कोटी कोट, हरि दिस किसे ना आ रिहा। माया ममता अजे ना भरी पोट, गुर दर मन्दिर डेरा ला ल्या। प्रभ कढ्ढुण आया खोट, सम्मत चौदां लेख लिखा ल्या। सम्मत पन्दरां आलि्णउँ डिग्गे बोट, ना कोई किसे बचा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सच दुलार, आपे वेख वखा ल्या। गुरमुख तेरी सुण पुकार, हरि साचा वेख वखांयदा। आदि अन्ता एकँकार, एका रूप समांयदा। शब्द सरूपी कर जैकार, लोआं पुरीआं आप जगांयदा। नाम तराना अपर अपार, चार वरनां आप सुणांयदा। धुर फ़रमाणा विच संसार, आपणी रसना आप अलांयदा। शब्द गाना अपर अपार, जन भगतां हथ्थ आप बंन्हांयदा। दो जहानी कर प्यार, समरथ संग मिलांयदा। फड़ फड़ बाहों लाए पार, अकथ कथा इक्क सुणांयदा। जीव जन्त होए गंवार, गवणहारा दिस ना आंयदा। प्रगट हो निहकलंक नरायण नर अवतार, एका डंक वजांयदा। लक्ख चुरासी सुत्ती पैर पसार, माया पड़दा पांयदा। जूठा झुठा तन शृंगार, माया ममता वेस करांयदा। अन्तिम होणा मात ख्वार, ना कोई किसे बचांयदा। सन्त सुहेले लए उभार, आप आपणी दया कमांयदा। जो जन डुब्बे सरसा तेरे अद्धविचकार, लोकमात जन्म दवांयदा। खाणी बाणी कर प्यार, गुर गोबिन्द संग रलांयदा। माणक मोती अपर अपार, सोहँ तन पहनांयदा। शब्द सुहागी छन्दे हरि निरँकार, आपणा आप अलांयदा। वाक भविख्त कोई ना पावे सार, गुर सरसे भेंट चढ़ांयदा। आपे कढ्ढुणहार पार, सम्मत चौदां वेख वखांयदा। जूठे झूठे मीत मुरार, चारो कुन्ट आप दुरकांयदा। सन्त सुहेले कर त्यार, गुरमुख नाउँ रखांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, एका इक्की मात उपांयदा। साची सिक्खी कर त्यार, गोबिन्द रंग चढ़ांयदा। गोबिन्द गुर अपर अपार, धार तिक्खी इक्क विखांयदा। शब्द खण्डा तेज कटार, दो धारा नाउँ रखांयदा। जन भगतां कर प्यार, तन शृंगार आप करांयदा। आपे वेखण आया विच संसार, सम्बल नगरी जोत जगांयदा। पंचम मीता कर त्यार, सिँघ प्रीतम पहरेदार, हरि साचा आप अख्वांयदा। सिँघ बिशन हरि सेवादार, दिवस रैण दरस दिखांयदा। इन्द्र इन्द्रासण कर प्यार, आत्म सेजा इक्क हंढांयदा। गुरमुख पाल साचे लाल, कन्ता नारी आप अख्वांयदा। विछड़ ना जायण विच संसार, साचा जोड़ा जोड़ जुड़ांयदा। एका रक्खे सांझा प्यार, एका दूजा भेव चुकांयदा। हीर रांझा सुरत शब्द प्यार, नाम वंञली इक्क वजांयदा। नार बांझ सर्ब संसार, पूत सपूता

ना कोई गोद उठांयदा। प्रगट देस विच माझा, जन भगतां रच्चया साचा काजा, कलिजुग अन्तिम वंड वंडांयदा। चिट्टे अस्व चढ़या ताजा, धुरदरगाही आया भाजा, नाल रखाया अनहद वाजा, सोहँ सेवा लांयदा। भगत जनां दी रक्खे लाजा, दर दर घर घर मारे आवाजा, एका धाम वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख साजण साचे मीत, आप आपणे अंग लगांयदा। गुरमुख तेरी अन्तिम धार, प्रभ साचे आप चलाईआ। प्रगट होया बेपरवाह, लोकमात जोत जगाईआ। इक्क जपाए साचा नाँ, चार वरन इक्क सरनाईआ। सन्त सुहेले आपे फड़े बांह, आप आपणा मेल मिलाईआ। लक्ख चुरासी दर दर घर घर उडदे काँ, खाली मन्दिर रिहा वखाईआ। कोए ना देवे किसे ठण्ढी छाँ, कलिजुग अग्नी इक्क लगाईआ। नाता तुट्टे पुत्तरां माँ, ना कोई वेखे धी जवाईआ। गुरमुख साचे सद बलि बलि जाँ, आए हरि शरनाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, सोहँ चोग चुगाईआ। एका एक गुर चरन टेक, प्रभ साचा रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे रिहा उठाईआ। हरिजन साजण साचा मीत, एका एक अख्वाया। आप चलाए अचरज रीत, साचा राह विखाया। ना कोई देहुरा गुरदुआरा मन्दिर मसीत, चरन द्वार इक्क रखाया। ना कोई हस्त ना कोई कीट, ऊँच नीच ना कोई रखाया। ना कोई जूठ झूठ बीसन बीस, माया ममता लोभ ना कोई हलकाया। रहिण ना देवे कूड़ा पखण्ड, शब्द खण्डा हत्थ उठाया। एका शब्द जणाए तराना ब्रह्मण्ड, खाणी बाणी हत्थ ना आया। भगत जनां हरि कर प्रीख, वेले अन्तिम वेखण आया। पहली चेत्र सच तारीख, सम्मत चौदां आप पवाया। आपे मंगण आया भीख, आपणी झोली अग्गे डाहया। साची सिख्या लैणी सीख, दे मति रिहा समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे तेरी अन्तिम वर, तेरी आत्म अन्तर हरि वसेरा, आत्म जोत जगाया। आत्म अन्तर हरि वसेरा, रिहा जोत जगाईआ। आपे करे सच निबेड़ा, दिवस रैण वेख वखाईआ। भाग लग्गे काया खेड़ा, सिँघ पाल ना होए जुदाईआ। आप चुकावणहारा झेड़ा, होए अन्त सहाईआ। आत्म वखाए खुल्ला वेहड़ा, आत्म सेजा इक्क विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरी काया बैठा आसण लाईआ। काया मन्दिर आत्म सेज, हरि बैठा आप निरंकारया। आपे नेत्र रिहा वेख, दिस ना आए जीव संसारया। आपे लिखणहारा लेख, लेख लिखारा आप अख्वा रिहा। आपे होया धारी केस, दस दस्मेसा रूप वटा रिहा। किसे ना चलणी मात पेश, नौ खण्डां आप उठा रिहा। मनमुख जीव रहे वेखी वेख, वेला गया हत्थ ना आ रिहा। अन्तिम मिटणी सभ दी रेख, लोकमात दिस कोई ना आ रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन मीत आपणे आप बणा रिहा।

मीत मुरारा साचा सज्जण, गोबिन्द रूप समाया। चरन धूढ़ कराए साचा मजन, शाहो भूप अख्वाया। आपे होया पड़दे कज्जन, शब्द दुशाला हथ्थ उठाया। ताल तलवाड़े साचे वज्जण, अनहद सेवा लाया। गढ़ हँकारी झूठे भज्जण, प्रभ साचा दए भन्नाया। मदिरा मास जो जन तजण, आप आपणी गोद उठाया। अमृत आत्म पी पी रज्जण, सर सरोवर इक्क वखाया। इक्क वखाए मक्का काअबा हाजी हजन, साचा दर खुल्हाया। ग्रन्थी पन्थी गुर दर मन्दिर छड छड भज्जण, सम्मत चौदां नेड़े आया। महल्ल अटारी सारे छड्डुण, उच्च निशान ना कोई चढ़ाया। गुरमुख साचे साचे राजन, सोहँ जै जै जैकार कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जन भगतां सेवक सेवा करने आया। सेवक सेवा हरि निरँकार है, दिवस रैण कमाए। अट्ठे पहर ख़बरदार है, हरिजन सोए रिहा जगाए। चारों कुन्ट वेख विचार है, दहि दिशा फेरी पाए। नाम खण्डा अपर अपार है, हथ्थ आपणे रिहा रखाए। ब्रह्मण्डां पावे सार है, जेरज अंडां वेख वखाए। उत्भज सेत्ज बन्न्हे धार है, आप आपणी कल वरताए। नौ खण्ड पृथ्वी मारे मार है, सत्तां दीपां दए सजाए। जन भगतां करे प्यार है, आप आपणा मेल मिलाए। साची नारी कन्त भतार है, आत्म सेज हंढाए। रंग बसन्ती एका धार है, एका रंग रंगाए। जीव जन्त ना पायण सार है, मदिरा मास होए हलकाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सेवा रिहा कमाए। सेवक आया चरन भिखार, गुर संगत संग रलाईआ। मंगे मंग अपर अपार, विच संसार एका मंग मंगाईआ। जूठा झूठा छड्ड विहार, सच सुच्च वरताईआ। माया लूठा होए ख्वार, जगत रहिण ना पाईआ। खाली ठूठा फिरे दर द्वार, भिच्छया कोए ना पाईआ। गुरमुख साजण होए त्यार, प्रभ शब्द रिहा जणाईआ। वेख वखाए चारे कूटां, सेवक साची सेव कमाईआ। जन भगतां देवे नाम हूटा, इक्क हुलार वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निर्धन आप अख्वाईआ। निर्धन हरि निरँकार, है, निरगुण रूप समाया। निर्धन हर घट पसर पसार है, निरगुण सेवा रिहा कमाया। निरगुण दिस ना आए विच संसार है, आप आपणा काज रचाया। गुरमुख साजण लए उभार है, हरि सरगुण वेख वखाया। चरन प्रीती इक्क प्यार है, गुर गोबिन्दा मेल मिलाया। सागर सिन्ध एका अमृत धार है, पंचम मीता रिहा प्याया। आपे होया सच्चा सिक्दार है, साची सिख्या रिहा समझाया। सृष्ट सबाई विच मँझधार है, कलिजुग बेड़ा रिहा डुबाया। जिस जन अन्तिम उतारना पार है, सोहँ चप्पू लए लगाया। आप वखाए पार किनार है, वंञ मुहाणा रिहा चलाया। निहकलंका नर अवतार है, जन भगत द्वारे आप आपणी सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत जोग एका एक वखाया।

जोग जगत शब्द अभ्यास, एका एक वखाईआ। एका जपु जी एका रहिरास, एका नाम ध्याईआ। एका मन्दिर एका अन्दर एका वास, एका रंग रंगाईआ। एका संग रक्ख पुरख अबिनाश, विछड़ कदे ना जाईआ। एका आस एका प्यास, तृष्ना रिहा मिटाईआ। एका राम इक्क स्वास, एका कृष्न रसन अल्लाईआ। एका अल्ला विच प्रभास, हू हू नाअरा लाईआ। जन भगतां हरि सदा वसे पास, ज़ात पात ना वेख वखाईआ। वेख वखाणे पृथ्वी आकाश, गऊ ग़रीबां गले लगाईआ। जिस जन मिले मेल सर्ब गुणतास, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। जो दीसे सो अन्त विनास, थिर रहिण ना पाईआ। पारब्रह्म हरि जोत प्रकाश, आदि अन्त इक्क अख्वाईआ। आपे वेखे मण्डल रास, साची रसना रास रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगतन करे पूरी आस, पूरन ब्रह्म रिहा जणाईआ। पूरन ब्रह्म पारब्रह्म जणाई, आत्म जोत जगाईआ। जन्म कर्म हरि वेख विखाई, पूर्ब लहिणा झोली पाईआ। साचा धर्म इक्क जणाई, गुर संगत संग प्यारया। गुर शब्द होए नाम कुड़माई, दिवस रैण इक्क प्यारया। आत्म घर वज्जे वधाई, पंचम सईआं मंगल गा ल्या। पारब्रह्म तेरी इक्क सरनाई, दूसर कोए ना ओट रखा ल्या। गुरमुख साचे रिहा तराई, एका पल्लू नाम फड़ा ल्या। पार किनारा इक्क वखाई, बीस बीसा हुक्म सुणा ल्या। इक्क इकीसा छत्र झुलाई, हरिसंगत संग रला ल्या। चार वरन हदीसा आपे पाई, सतिजुग साचा मार्ग ला रिहा। वरन अवरन आप अख्वाई, वरन बरन मेट मिटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण रूप वटा ल्या। नर नरायण रूप वैराट, आपणा आप वटाया। लोआं पुरीआं वेखे एका घाट, पार किनारा कोई रहिण ना पाया। चौदां लोक वखाए एका हाट, वणज वणजारा आप हो आया। आपे वेखे तीर्थ ताट, गुरदर मन्दिर अन्दर फोल फुलाया। आपे जाणे पूजा पाठ, गायत्री मन्त्र रिहा उपजाया। आपे गेड़नहारा उलटी लाठ, आप आपणे विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम प्रगट, जन भगतां दरस दिखाया।

हरिसंगत हरि चरन ध्यान, एका लिव लाईआ। एका शब्द ब्रह्म ज्ञान, पूजा पाठ ना कोई कराईआ। एका नाम धर्म निशान, सोहँ रिहा चढ़ाईआ। एका जाम पीण खाण, अमृत आत्म रिहा प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिर हथ्थ रिहा टिकाईआ। सिर हथ्थ समरथ, सगल भउ विनास्सया। आदि अन्त लए रक्ख, पारब्रह्म पुरख अबिनाश्या। जो जन चढ़ाए सोहँ रथ, घर सच कराए वास्सया। सगल वसूरे गए लथ्थ,

जिस जन मिल्या हरि शाहो शाबास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिसंगत देवे चरन कँवल धरवास्सया। गुरमुख मंग है मंगदा, प्रभ अग्गे रसना बोल। लोक लाजों मूल ना संगदा, रसना कहि कहि गजाए ढोल। हरि एका चोली रंगदा, एका नाम वस्त अनमोल। चिट्टे अस्व तंग कसदा, जन भगतां वसे सद कोल। नौ द्वारे आपे लँघदा, दसवें कुण्डां लैणा खोल्। लेखा चुक्के काया काची वंग दा, एका शब्द सुणाए सोहँ सच्चा बोल। पुरीआं लोआं आपे लँघदा, ज़िमी अस्माना रिहा फोल। गुर साजण साची मंग एका मंगदा, जोती जोत मोल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सदा सदा सद रखे आपणे कोल।

✻ १६ चेत २०१४ बिक्रमी कैप्टन बंता सिँघ दे गृह इक्की परिवारां दा इक्ठ होया
पिण्ड पंज ग्रांईआ ज़िला गुरदासपुर ✻

६१३
०६
सति पुरख सुल्तान, एका एक एकँकारया। रूप रंग ना वेखे कोई निशान, दिस किसे ना आ रिहा। आपे वेखे मार ध्यान, वेखणहारा आप अख्वा रिहा। ना कोई शब्द ना कोई ज्ञान, ना कोई विद्या कोल रखा रिहा। ना कोई ब्रह्म ना करे पछान, पारब्रह्म आपणा आप उपा रिहा। ना मरे ना पए जम्म, लक्ख चुरासी ना कोई रखा रिहा। ना पवण स्वासी लए दम, नेत्र नीर ना कोए वहा रिहा। आपे जाणे आपणा कम्म, साध सन्त ना कोई नाल रखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति पुरख निरँजण आप अख्वा रिहा। सति पुरख निरँजण हरि निरँकार, एका एक अख्वाया। साचा मन्दिर कर त्यार, थिर घर नाउँ रखाया। छप्पर छन्न ना कोई दीवार, बाडी कोई ना लाया। ना कोई साध मीत मुरार, ना कोई संग निभाया। ना कोई पंडत काशी वेखे वेद विचार, मुल्ला पीर शेख मुसायक पीर दस्तगीर कोई दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति पुरख निरँजण एका धाम सुहाया। एका रूप हरि शाबाश, आपणा आप उपाया। आदि अन्त ना जाए विनास, एका धाम सुहाया। साचे मण्डल पावे रास, साध सन्त वेखण कोए ना जाया। ना कोई पृथ्वी ना कोई आकाश, चन्द सूरज कोई दिस ना आया। ना कोई दिवस ना कोई रात, ना कोई बरस ना कोई मास, घड़ी पल ना कोई गिणाया। ना कोई दासी ना कोई दास, ना कोई सेवक सेव कमाया। ना कोई रसन ना स्वास, बत्ती दन्द ना कोई रखाया। आप आपणे विच रक्खया वास, आपणा बैठा मुख छुपाया। एका एक धुर धरवास, घर साचे आप रखाया। पारब्रह्म पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप ६१३ ०६

आपणी जोत धर, सति पुरख निरँजण नाउँ रखाया। सति पुरख निरँजण एका नाउँ, हरि आपणा आप उपाया। बेअन्त बेअन्त बेअन्त अगम्म अथाहो, अलख अलखणा लिख ना सके कोई राया। वड दाता बेपरवाहो, साचे सिँघासण आसण लाया। आपे करे आपणा आप न्याउँ, आपणा लेखा आप लिखाया। आपे पकड़े आपणी बाहों, आप आपणा संग रलाया। आपे पिता आपे माउँ, पिता पूत ना कोई रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति पुरख निरँजण साचा वेस कराया। सति पुरख निरँजण एका वेस, आपणा आप कराया। आपे करे आपणा वेस, आपे रिहा अलख जगाया। ना कोई दिसे धारी केस, मूंड मुंडाया दिस ना आया। ना कोई ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, करोड़ तेतीसा ना बणत बणाया। ना कोई गुर पीर साध सन्त दए उपदेश, खाणी बाणी ना कोई अलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख निरँजण एका घर आपणा आप वसाया। सति पुरख निरँजण साचा घर, एका एक वसाया। किसे दिस ना आए साचा दर, दरवाज़ा इक्क रखाया। ना कोई नारी ना कोई नर, नरायण नैण ना वेखण पाया। ना कोई खुशी ना कोई ग़म, लाड़ी मौत ना देवे डर, धर्म राए ना लेख चुकाया। अक्खर वक्खर ना जाए पढ़, ना कोई विद्या रिहा अलाया। ना कोई सीस ना कोई धड़, पंज तत्त दिस ना आया। उप्पर ना कोई वेखे चढ़, साध सन्त बैठे धूणीआँ ताया। अन्तिम मेटे गोर मड़,

६१४ साढे तिन्न हथ्थ सीं वंडाया। पुरख अगम्म अगम्मा आपणे धाम आपे बैठा चढ़, थिर घर आसण लाया। आप बणाए अपणा ६१४

०६ गढ़, किला कोट नाउँ रखाया। आपणा घाड़न आपे घड़, आप आपणी सेज हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी ०६

जोत धर, सति पुरख निरँजण सति सतिवाद, सति सरूपी आप समाया। सति सरूपी सति सतिवाद, एका एक रखाया। आपे शाह आपे भूप, आप आपणी कल वरताया। आपे जाणे आपणी कूट, आपणी दिशा वेख वखाया। आपणा हुलारा रिहा झूट, आपे रिहा दवाया। आप आपणे उत्ते गया तुठ्ठ, आपणा रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति पुरख निरँजण एका घर, एका बंक सुहाया। सति पुरख निरँजण एका बंक, दर द्वार खुल्हाया। ना कोई राउ ना कोई रंक, ज़ात पात दिस ना आया। ना कोई ढोलक छैणा वजाए डंक, राग नाद ना कोई गाया। मति बुध ना मनुआ मनक, हड्ड मास नाड़ी बुत्त दिस ना आया। आपणा खेल खेले बार अंक, आप आपणे धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति पुरख निरँजण साचा सर इक्क सुहाया। साचा सर हरि द्वार, एका एक रखाया। आप आपणा भर भण्डार, आपे रिहा वरताया। आपे पावणहारा सार, आप आपणा भेव छुपाया। ना कोई दिसे नौ द्वार, दस्म द्वार ना बणत बणाया। चौथा पद चौथा घर ना ल्या उसार, ना कोई राह वखाया। पंचम बोल ना धुन्कार, नाद अनादा

ना कोए वजाया। छप्परी छन्न ना कर त्यार, मन्दिर अन्दर ना कोई वखाया। सति पुरख निरँजण जोत अकार, जोती नूर सबाया। ना कोई धूंआँ धुँदूकार, आकाश प्रकाश रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणा घर, थिर घर नाउँ रखाया। साचा दर दस्म द्वार, एका एक बणाया। आपे वसया नर निरँकार, निरगुण रूप समाया। सरगुण भेव ना पाए कोई संसार, गुर पीर साध सन्त प्रभ साचे सेवा लाया। आपे वसया सभ तों बाहर, घट घट आपे वेख वखाया। आप बणाए महल्ल अटल अचल उच्च मुनार, आप आपणी सेव कमाया। ना कोई लाए इट्ट गारा, ना कोई जोड़ जुड़ाया। आप आपणा कर पसारा, आपणा रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति पुरख निरँजण सति सतिवाद एका एक रखाया। सति पुरख निरँजण सति सन्तोख, एक एक वखाया। ना कोई मुक्ती ना कोई मोख, सुरग नर्क ना कोई वखाया। ना कोई हरख ना कोई सोग, चिन्ता आलस निन्दरा विच ना आया। ना कोई रसना ना कोई भोग, ना कोई संजोग हंढाया। ना कोई शब्द ना कोई चोग, ना जिह्वा रिहा हिलाया। ना कोई दरस दए अमोघ, तृप्त ना कोई कराया। आपे जाणे आपणी मौज, आप आपणे घर वसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति पुरख निरँजण साचे धाम सुहाया। साचा धाम पुरख अबिनाश, एका एक रखाया। आपे करया आपणा
६१५ वास, इक्क वसेर रखाया। आपे होया दासन दास, आप आपणी सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत ६१५
०६ धर, देवी देव ना कोई रखाया। देवी देव ना कोई द्वार, हरि आपणे रंग समाया। विष्नूं वंसी ना कर आकार, ना कोई ०६
रूप वटाया। शिव शंकर ना मंगे दर भिखार, बाशक तशका ना गल लटकाया। ब्रह्मा नेत्र वेखे उग्घाड़, चारे मुख ना रसना गाया। आप आपणे घर आया वाड़, आपणी बणत बणाया। आपे लाड़ी आपे लाड़, कन्ता नारी आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति पुरख निरँजण एका अंजन नेत्र पाया। साचा अंजन हरि निरँकार, आपणे नेत्र पाया। आपे सज्जण मीत मुरार, मीत मुरारा आप अख्वाया। आपे दर आपे दरबार, दर दरबार सेव कमाया। आपे तख्त सुल्तान सच सरोवर, सिक्दार आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति पुरख निरँजण घर सत्तवें बैठा आसण लाया।

हरि साजण जग मीतड़ा, एका एक अख्वाए। जुग जुग चलाए साची रीतड़ा, आप आपणी जोत जगाए। जीव जन्त भन्ने कौड़ा रीठड़ा, शब्द खण्डा हथ्थ उठाए। जन भगतां देवे नाम अनडीठड़ा, लिखण पढ़न विच ना आए। काया चोली

चाढ़े रंग मजीठड़ा, उतर कदे ना जाए। रसना जिह्वा फल खवाए मीठड़ा, हरि नाउँ नाँ रखाए। अमृत आत्म नाम निधान गुरमुख विरले पीतड़ा, दिवस रैण खुमार रखाए। दो जहानी आपे जीतड़ा, जुग जुग मेल मिलाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भेखाधारी भेख वटाए। हरि साचा जग मीतड़ा, वाली दो जहानया। जन भगतां परखे नीतड़ा, वेख वखाए काया मन्दिर सच मकानया। आपे जाणे आपणा कीतड़ा, वजाए नाद अनाहद धुन साची बाणीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग खेले खेल महानया। जुग जुग खेले खेल, हरि निरंकारया। जन भगतां लए मेल, विच संसारया। जोत निरँजण चाढ़े तेल, हरि जी सेवा ला रिहा। आपे वसया रंग नवेल, दिस किसे ना आ रिहा। आपे गुर आपे चेल, आपे गोबिन्द रूप वटा ल्या। लक्ख चुरासी माया ममता जूठी झूठी खेल, हरि का नाउँ भेव ना पा ल्या। अन्तिम धर्म राए दी सुट्टे जेल्ह, ना कोई किसे बचा ल्या। गुरमुख साचे सज्जण सुहेल, प्रभ जोती सीस झुका ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भेखाधारी भेख वटा ल्या। भेखाधारी हरि अबिनाशा, जुग जुग भेख वटांयदा। वेखे खेल पृथ्वी आकाशा, दिस किसे ना आंयदा। लक्ख चुरासी तेरा वेखे अन्त तमाशा, कलिजुग धार वहांयदा। ना कोई मण्डल ना कोई रासा, मण्डप ना कोई सुहांयदा। गुरमुख साचा होए दासी दासा, दासन दास आप अख्वांयदा। एका नाम गुर चरन रक्खे भरवासा, गोबिन्द साचा मेल मिलांयदा। निज घर आत्म रक्खे वासा, विछड़ कदे ना जांयदा। चरन प्रीती धुर भरवासा, दो जहानां पार करांयदा। लेखे लाए नाड़ी हड्ड काया मासा, आप आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा रूप वटांयदा। रूप वटाए हरि अगम्मा, अकल कला वरताईआ। पंज तत्त रलाए नाड़ी चम्मा, अट्ठां तत्तां संग रलाईआ। मन मति बुध रहाए बिन बिन थम्म्हा, दिस किसे ना आईआ। त्रैगुण माया तेरा तामा, आपे रिहा बणाईआ। नाम अनमुल्ला एका नामा, हरि आपणा नाउँ रखाईआ। मेट मिटाए अन्धेरी रैण शामा, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। शब्द वजाए सच दमामा, अन्दर मन्दिर करे जणाईआ। धुन आत्मक सुणाए साचे काना, सुणनहार आप अख्वाईआ। बजर कपाटी तोड़ तुड़ाना, साची हाटी इक्क वखाईआ। औखी घाटी इक्क चढ़ाना, गुर शब्दी मेल मिलाईआ। शब्द गुर जोद्धा सूर बली बलवाना, हरि गोबिन्द रूप समाईआ। गोबिन्द रूप श्री भगवाना, सच सिँघसण बैठा आसण लाईआ। वेखे खेल विच जहानां, आवण जावण रचन रचाईआ। गुरमुख साचे चतर सुघड़ स्याणा, आप आपणी बूझ बुझाईआ। इक्क सुणाए नाम तराना, आप आपणा आपे गाईआ। हथ्थीं बन्न्हे सगनी गाना, साचा मंगल इक्क सुणाईआ। आत्म सेजा हरि सुहाना, हरि साचे आप वछाईआ। शब्द रंगीला पलँघ बणाना, पावा चूल ना कोई रखाईआ।

तख्त ताज सीस जगदीश हरि सुल्तानां, आपणा आप टिकाईआ। आपे होए मेहरवाना, दयानिध दयावान आप अख्वाईआ। आप झुलाए सच निशाना, धर्म निशाना इक्क वखाईआ। गुरमुख साचे मेल मिलाना, सुरत सवाणी लए प्रनाईआ। शब्द कन्त घर साचे पाना, आत्म वज्जी इक्क वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, भेखाधारी रिहा भेख वटाईआ। भेखाधारी भेख अवल्ला, अकल कला भरपूरा। आपे वसया निहचल धाम अटला, वड दाता जोद्धा सूरा। पावे सार जला थला, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर वेख वखाए पसारा कूड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे नाम वर, बख्शे मस्तक धूढ़ा। मस्तक धूढ़ी हरि इशनान, जन भगतां आप करांयदा। काया रंगण चाढ़े गूढ़ी, सच ललारी आप अख्वांयदा। नाता तोड़े कूड़ो कूड़ी, पंच विकारा नेड़ ना आंयदा। धर्म राए कटे जूड़ी, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। मनमुख मुग्ध ना जानण मूढ़ी, प्रभ का भेव कोई ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग अलख जगांयदा। जुग जुग अलख हरि जगाए, लोकमात फेरा पाया। हरिजन साचे लए जगाए, दिवस रैण वेख वखाया। प्रगट हो प्रतक्ख दरस दिखाए, जिस जन चरन ध्यान लगाया। नेत्र नैण लोचन अक्ख खुल्हाए, आत्म दरसी दरस दिखाया। अन्तिम वेले रक्ख वखाए, गुर शब्दी भेख वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोद्धा सूर बली बलवाना, इक्क रखाए तीर कमाना, रसना चिल्ला इक्क रखाया। कलिजुग अन्तिम आप चढ़ाए, एका चिल्ला नर निरंकारया। चारों कुन्ट वेख वखाए, साध सन्त होए हलकाए, जीव जन्त भरम भुलाए, ना देवे कोई सहारया। गुरमति साची गए भुलाए, अन्तिम वेला ओंकारया। पंच तत्त रहे बिल्लाए, पंचां मोह विकारया। पंचां दे मति समझाए, पंचां राग अल्हा रिहा। पंचां आपणी बूझ बुझाए, पंचां संग मिला ल्या। पंचां एका दूजा भउ चुकाए, तीजा नैण आप खुल्हाए, चौथे घर हरि मिलाए, सन्त सुहेले इक्क इकेले आपणा धाम सुहा ल्या। पद निरबाणा श्री भगवाना एका एक रखाए, डोरी आपणे हथ्थ रखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग लेखा मात कर, आपणा वेस वटा ल्या। आपे होए जगत बिबेका, आप आपणा संग बणाईआ। आप बंधाए आपणी टेका, आप आपणा नाद वजाईआ। आपे होए लिखणहारा लेखा, अन्तिम लहिणा देणा मूल चुकाईआ। गुरमुख साचे सुघड़ स्याणे नेत्र पेखा, सुरत शब्द मेल मिलाईआ। आपे जाणे धारी केसा, प्रगट होए दस दस्मेसा, गोबिन्द काया भेख वटाईआ। ना कोई जाणे नर नरेशा, निरगुण अचरज खेल खिलाईआ। सरगुण तेरा साचा वेसा, पंचां तत्ता रिहा उपाईआ। त्रैगुण माया करया वेसा, ब्रह्मे झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निर्मल जोती इक्क जगाईआ। निर्मल जोती कर उजागर,

एका एक रखांयदा। गुरमुख विरला मात सौदागर, मनमुख जीव भुलांयदा। भाग लगाए काया गागर, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। एका नाम रत्ती रत्नागर, काया चोली आप रंगांयदा। अमृत आत्म धार वहाए साचा सागर, अट्ठ सट्ठ भेव चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेख वखांयदा। कलिजुग तेरा अन्तिम गहणा, तेरे तन पहनाया। आप चुकाए लहिणा देणा, जोती जामा भेख वटाया। लक्ख चुरासी भाणा सहिणा, हरि साचा वेख वखाया। जन भगतां वखाए नेत्र नैणा, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। कलिजुग जीव जूठी झूठी धार वहिणा, हरि आपे रिहा वहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटाया। जोती जामा हरि बलकारी, आपणा आप वटाया। शब्द खण्डा तेज कटारी, तन गात्रे आप लटकाया। खिच्ची आए वारो वारी, वेद शास्त्रां भेव ना पाया। निहकलंक नरायण नर अवतारी, नर नरायण आप हो आया। सतिजुग तेरी बन्ने साची धारी, एका राह चलाया। चार वरनां इक्क दरबारी, इक्क सलाह बणाया। सोहँ शब्द सच सिक्दारी, त्रै लोआं रिहा जणाया। खेले खेल मात खिलारी, कलिजुग खेलण आया। सम्मत चौदां करे दारी, पहली चेत्र वेखण आया। जन भगतां करे मात प्यारी, सोए रिहा जगाया। चिट्टे अस्व कर अस्वारी, सोलां कलीआं आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत चौदां तेरी धार चलाया। निहकलंक हरि नरायण, आपणी कल वरतांयदा। कलिजुग तेरा लहिणा देण, अन्त हिसाब मुकांयदा। नाता तुट्टे भाई भैण, पंचम जेठी दिवस सुहांयदा। लाड़ी मौत घर घर फिरे डैण, मनमुख कोई ना बचया पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सम्मत चौदां तेरी धार चलांयदा। सम्मत चौदां चौदां हट्ट, हरि साचा वेख वखांयदा। आपे वेखे तीर्थ तट्ट, गुर मन्दिर अन्दर मस्जिद फेरा पांयदा। खेले खेल बाजीगर नट, नट नटूआ स्वांग वरतांयदा। जन भगतां दुरमति मैल रिहा कट्ट, नेत्र लोचन दरस दिखांयदा। तन पहनाए साचा पट, एका नाउँ रखांयदा। दीपक जोती लट लट, आपणी आप जगांयदा। भाग लगाए काया मट्ट, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। शब्द ताल मारे सट्ट, साची सेव कमांयदा। गढ़ हँकारी जाए ढट्ठ, उच्चा टिल्ला दिस ना आंयदा। त्रैगुण माया अग्नी मट्ठ, आपे आप बुझांयदा। पंज तत्त कर इक्ट्ठ, आपणे विच समांयदा। धुरदरगाही आया नठ्ठ, सन्त सुहेले गुरु गुर चेले सोए मात जगांयदा। आपे गेड़नहारा उलटी लट्ठ, जुग जुग गेड़ा आप गिड़ांयदा। सर्बकला आपे समरथ, समरथ कल आप वरतांयदा। लक्ख चुरासी पाए नत्थ, चारों कुन्ट दहि दिशा आप भवांयदा। लोआं पुरीआं दए मथ, ब्रह्मा शिव आप उठांयदा। करोड़ तेतीसा दए झस्स, सुरपति राजा इन्द कुरलांयदा। त्रैगुण माया तेरा कोई ना चले वस, आप उपाए आप मिटांयदा। पंचां

तत्तां रिहा दस्स, भुल्लया कोई रहिण ना पांयदा। अन्तिम पैंडा मुक्कणा नस्स नस्स, भुजा पसार ना कोई उठांयदा। तीर निराला प्रभ रिहा कस, नौ खण्ड पृथ्वी आप चलांयदा। सत्तां दीपां चरनां हेठां रिहा झस्स, एका मार्ग लांयदा। किसे ना चलणा कोई वस, कलिजुग आपणा काल मृदंग वजांयदा। जोती अग्नी खिच्च ज्वाला, आप आपणे विच समांयदा। संग मुहम्मद चार यार गए थक्क, अल्ला राणी हू हू नाअरा लांयदा। संग रलाए काल महांकाला, साचा शब्द जणांयदा। धर्म राए तेरी सच्ची धर्मसाला, मनमुखां नाल फिरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा पांयदा। जोती जामा हरि बलवाना, एका एक उपाया। मेट मिटाए पंज शैताना, पंचम रहिण ना पाया। जन भगतां देवे नाम निधाना, आत्म तृष्न मिटाया। एका राग इक्क तराना, एका धुन उपजाया। एका काहन सुण सुणाना, अगाध बोध रिहा जणाया। आप आपणी जोत जगाना, गुरमुख साचे रिहा उपाया। गुरमुख साचा सच द्वार, प्रभ चरन ध्यान लगाया। आप आपणा कर प्यार, दे मति रिहा समझाया। शब्द खण्डा तेज कटार, साचे तन पहनाया। आपे होए पहरेदार, मन मनुआ आप बंधाया। वेखी जाए वारो वार, सुरत सवाणी एका पल्लू नाम फड़ाया। सुखमन नाड़ी करे पार, अग्गे पिच्छे आप हो जांयदा। इक्क वखाए सच दरबार, दर द्वार इक्क सुहांयदा। अमृत आत्म ठण्ढी धार, निझर मुख चुआंयदा। कँवल कँवला कर उज्यार, बूंद स्वांती इक्क वखांयदा। दस्म द्वारी सच घर बाहर, गुरमुख साचे आप मिलांयदा। इक्क इकल्ला ओंकार, एकँकार रूप समांयदा। एका शब्द अपर अपार, तीजे लोइण आप वखांयदा। चौथे घर मीत मुरार, साजण मीत मिलांयदा। पंचम मेला पंच घर बाहर, पंचम जोड़ जुड़ांयदा। छेवें छप्पर छन्न ना ल्या उसार, आप आपणा घर सुहांयदा। सति पुरख निरँजण कर आकार, एका रूप वटांयदा। अट्ठां तत्तां वसे बाहर, दिस किसे ना आंयदा। नौ द्वारे भरमे भुल्ले जीव गंवार, गुर का शब्द ना कोई जणांयदा। दस दस्मेसा पावे सार, जो जन चरनी सीस झुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका डंक वजांयदा। एका डंक नर निरँकार, आपणा आप वजाया। राउ रंकां करे ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पाया। सम्मत तेरां नानक गाई तेरां तेरां धार, सृष्ट सबाई तोल तुलाया। सम्मत चौदां तेरा सच विहार, पुरख अबिनाशी करने आया। पंचम जेठी दरस दिखाए वड वड सेठी करे ख्वार, राज राजानां शाह सुल्तानां दर दर रिहा फिराया। गुरमुख साचे बाल नादान, आप आपणी गोद उठाया। एका देवे ब्रह्म ज्ञान, जगत विद्या ना कोए पढ़ाया। नेत्र लोचन इक्क निशान, त्रैगुण माया फंद कटाया। पंचम शैतान होए हैरान, बैठे मुख छुपाया। पुरख अबिनाशी वड बलवान, शब्द खण्डा रिहा

उठाया। जोती नूर इक्क महान, दो जहान करे रुशनाया। काया मन्दिर सच मकान, प्रभ साचे डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच सिँघासण एका धाम सुहाया। सच सिँघासण हरि निरँकार, एका एक रखाया। जोत सरूपी कर उज्यार, एका रंग रंगाया। आप आपणी भुजा पसार, गुरमुख साचे रिहा उठाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, निहकलंक नाउँ रखाया। हरिजन उपजाए जिउँ जन जनका, सहिंसा रोग मिटाया। प्रगट होए वासी पुरी घनका, बार अनका जोत जगाया। जुग जुग मेटणहारा शंका, एका दूजा रिहा चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, हरि साचा वेख वखांयदा। कोई ना दिसे सच मलाह, बेड़ा बन्ने लांयदा। ज़ात पातां पया फाह, जम का फास ना कोई कटांयदा। इक्क जपाए साचा नाँ, जन भगतां पार करांयदा। होए सहाई सभनी थाँ, घट घट वेख वखांयदा। आपे पिता आपे माँ, पूत सपूता आप अख्वांयदा। हँस बणाए फड़ फड़ काँ, चरन धूढ़ सच सरोवर इक्क इशनान करांयदा। कलिजुग अन्तिम देवे ठण्ढी छाँ, जगत जगदीश आपणे हथ्थ उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा वजाए नाम दमामा, एका डंक रखांयदा। नाम दमामा वज्जे डंक, चारों कुन्ट जणाईआ। जन भगतां आत्म जोती लाए तनक, खिच्ची जाए वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटाईआ। जोती जामा हरि मेहरवान, आपणा आप उपाया। जोद्धा सूर बली बलवान, एका एक अख्वाया। शब्द खण्डा तीर कमान, आपणे हथ्थ रखाया। सम्मत चौदां मार ध्यान, नौ खण्ड पृथ्वी रिहा जगाया। पंचम जेठी इक्क मैदान, सृष्ट सबाई रिहा जणाया। सम्मत पन्दरां पावे आन, राज राजानां शाह सुल्तानां बचया कोई रहिण ना पाया। लाड़ी मौत मंगे दान, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। धर्म राए दर कर परवान, हरि साचा नाउँ झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चौदां लोकां वेख वखाया। सम्मत चौदां कर ध्याना, चौदां लोक वेख वखांयदा। मनमुख जीवां बन्ने गाना, साचा सगन मनांयदा। आपे मारे तीर निशाना, सम्मत चौदां रुत्त सुहांयदा। सम्मत सोलां होए वैराना, माढ़ी मण्डप कोई दिस ना आंयदा। साध सन्त ना कोए बचाया प्रभ का भाणा, ना कोई मेट मिटांयदा। जुग जुग जोती पहरया बाना, निरगुण सरगुण खेल खिलांयदा। कलिजुग तेरा खेल महाना, निरगुण सरगुण हरि अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आप आपणा भेख वटांयदा। भेखाधारी भेख अपार, आपणा आप वटाया। जुग जुग वेखे वेख विचार, जीव जन्त रिहा तराया। साध सन्त प्रभ पावे सार, जो जन रसना रिहा गाया। आपे खोल्हे बन्द किवाड़, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाया। औखी घाटी

फड़ फड़ बाहों पार कराया। जोत लिलाटी प्रभ मस्तक रिहा जगाया। नेड़े वाटी सच दरबार, आपणा राह वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन मेला इक्क दर, घर साचा इक्क सुहाया। सन्तन मेला सच द्वार, हरि आपणा आप करांयदा। आपे खोल्हे बन्द किवाड़, चारे कुन्टां वेख वखांयदा। ना कोई दिसे जूठी झूठी धाड़, माया मोह ना कोई रखांयदा। सन्त सुहेला साचा लाड़, साचे घोड़े आप चढ़ांयदा। दर द्वारे देवे वाड़, आप आपणा मेल मिलांयदा। एका जोती नूर अपार, निर्मल जोत जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सुहेले साचे वर, नारी कन्त आप हो आंयदा। सन्त सुहेला साची नारी, पाया हरि हरि कन्ता। विछड़ ना जाए दूजी वारी, आप बणाई साची बणता। आत्म सेजा इक्क श्रृंगारी, आत्म धाम सुहंता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सुहेले लए वर, महिंमा अगणत अगणता। सन्त सुहेले साचे मीता, आपणे आप बणांयदा। इक्क सुणाए सुहागी गीता, नाद अनादी धुन उपजांयदा। आप आपणे जिहा कीता, भेव अभेदा भेव चुकांयदा। जोती निर्मल ठांढा सीता, सति सति विच समांयदा। ना कोई हस्त ना कोई कीटा, ऊँच नीच ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सुहेले लए वर, वर दाता आप अख्वांयदा। सन्त सुहेला साचा सज्जणा, आए सच द्वारया। पारब्रह्म बख्शे चरन धूढ़ मजना, साचा कर प्यारया। अमृत आत्म पी पी रज्जणा, तृष्ना तृप्त करा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग जन भगतां आया पड़दे कज्जण, शब्द दुशाला एका पा रिहा। शब्द दुशाला साचा लाल, आपणे हथ्थ रखांयदा। सन्त सुहेले मात भाल, साची वत्थ झोली पांयदा। कंचन रूप इक्क अकाल, आपणा आप चढ़ांयदा। सूहा वेस शब्द जलाल, साचा संग निभांयदा। चिट्टी धारा दस्म द्वार, हरि आपणी आप विखांयदा। पीली करे अपर अपार, त्रैकूटां वेख वखांयदा। नीला नीली आया बाहर, भेव कोए ना पांयदा। कलिजुग काला कर्म विचार, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। शब्द खण्डा तेज कटार, नर निरँकारा हथ्थ उठांयदा। आपे वेखे वेखणहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सुहेले लए वर, आप आपणी दया कमांयदा। दया कमाए हरि रंग राता, आसा मनसा पूरया। मिले मेल पुरख बिधाता, वसे नेड़े दूरया। मेट मिटाए अन्धेरी राता, प्रगट होए हाज़र हज़ूरया। ना कोई पुच्छे ज़ाता पाता, एका नाता गुर चरन साची धूढ़या। मिले मेल प्रभ कमलापाता, काया चोली रंग चाढ़े गूढ़या। लक्ख चुरासी नार कमज़ाता, साचा कन्त ना कोई हंढा रिहा। जन भगतां देवे साची दाता, एका नाउँ झोली पा रिहा। वेले अन्तिम पुच्छे वाता, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द काया मेल मिला रिहा।

६२१
०६

गोबिन्द काया साचा गढ़, प्रभ साचे आप उसारया। शब्द सरूपी अन्दर वड़, वेखे सर्ब संसारया। ना कोई सीस ना कोई धड़, नेत्र नैण ना कोई वखा रिहा। तोड़ विखाए किला हँकारी गढ़, कलिजुग अन्तिम तोड़ तुड़ा रिहा। लक्ख चुरासी माया ममता वहिणा झूठे हड़, सम्मत सोलां आप वहा रिहा। गुरमुख साचे सन्त सुहेले लए फड़, गुर शब्दी जोड़ जुड़ा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका डंक वजा रिहा। सम्मत सोलां तेरी धार, चारों कुन्ट करे ख्वारया। अल्ला राणी हाहाकार, संग मुहम्मद रो रो रिहा पुकारया। ऐली अल्ला छुडाया नाअरा, हू हू ना कोए वखा रिहा। खुदी खुदाई मारे मार, बेऐब परवरदिगार एका नाअरा हक्क वखाया। अहिनल हक्क चरन द्वार, तूं ही तूं जणा रिहा। चारों कुन्ट होइण सक्ख, मक्का मदीना आपे ढाह रिहा। गौंस पीर शेख़ मुसायक जायण नस्स, अमाम मैहन्दी भेख वटा रिहा। सृष्ट सबाई राह साचा रिहा दस्स, निहकलंकी जामा पा ल्या। लोआं पुरीआं रिहा झस्स, ब्रह्मा अड्डे नेत्र वेख वखा रिहा। शिव शंकर चारों कुन्ट रिहा नस्स, दूर दुराडा पन्ध मुका रिहा। इन्द इन्द्रासन खिड़ खिड़ रिहा हस्स, अन्तिम मेला हरि साचा आप मिला रिहा। नौ खण्ड पृथ्वी रिहा वस, सत्तां दीपां विच समा रिहा। लक्ख चुरासी तीर निराला कस कस, इक्क निशान बणा रिहा। पंज तत्त प्रभ देवे झस्स, त्रैगुण माया मट्ठ तपा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, समरथ कला अख्वा ल्या। समरथ कला हरि वरतारा, आपणी कल वरताईआ। चारों कुन्ट धुँदूकारा, सम्मत सतारां दए वखाईआ। माझा देस पार किनारा, आपे रिहा कराईआ। आप उठाए अगम्मी धाड़ा, गोबिन्द खण्डा हथ्थ उठाईआ। धुरदरगाही साचा लाड़ा, कल्गी तोड़ा सीस लटकाईआ। मनमुख जीवां मारे झाड़ा, बचया कोई रहिण ना पाईआ। वरते खेल दिन दिहाड़ा, पंचम जेठ रिहा लिखाईआ। मावां पुत्तरां नाता तुट्टे सतारां हाढ़ा, भुल्ल रहे ना राईआ। लग्गे अग्ग बहत्तर नाड़ा, राज राजानां शाह सुल्तानां चारों कुन्ट रिहा फिराईआ। आपे जाणे धरत मात तेरा इक्क अखाड़ा, लक्खण दीप वेख वखाईआ। करौच तेरा मिटे पसारा, पुष्कर चरन छुहाईआ। जम्बु दीप कढ्ढे हाढ़ा, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। सान तेरा कोई ना दिसे लाड़ा, नारा नारी कन्त ना कोई हंढाईआ। सलमल दीप मंगे भाड़ा, अन्तिम बैठा मुख छुपाईआ। कुशा तेरी अन्तिम वारा, हरि चरन दए छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका एक रिहा कराईआ। सत्तां दीपां वेख विचार, सम्मत तेरां लेख लिखाया। प्रगट हो विच संसार, एका खण्डा नाम चमकाया। वाली हिन्द रहिणा ख़बरदार, इक्की चेत्र लेख लिखाया। साध सन्त कोई ना पावे सार, प्रभ गूढ़ी नींद सवाया। मात सेजा कर त्यार, गुरमुख आसण रिहा विछाया। पंजां तत्तां कर प्यार,

मनमति नाल प्रनाया। कलिजुग तेरी काली धार, आपणा रंग चढ़ाया। जूठ झूठ कर पसार, साचा दर सुहाया। पंचम खाली दिसे ठूठ ना कोई दिसे बंक द्वार, ना किसे सुहाया। धुरदरगाही लए फड़, काम क्रोध लोभ मोह हँकार तन वसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख वटाया। सम्मत तेरां तेरा साचा रंग, नौ खण्ड पृथ्वी आप चढ़ांयदा। धरत मात मंगी मंग, प्रभ साची पूर करांयदा। हत्थीं लाल मैहन्दी रंग, मौत लाड़ी खुशी मनांयदा। इक्क वहाए धारा गंग, लहू मिझ कांग वहांयदा। कोई ना सके पार लँघ, कलिजुग त्रैगुण माया जाल विछांयदा। किसे ना मिलणा सौणा उप्पर पलँघ, धरत मात तेरी गोद आप उठांयदा। जीव जन्त साध सन्त होए नंग, सच वस्त किसे हथ्थ ना आंयदा। लहिणा देणा चुक्के गोदावरी गंग, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ ना कोई नुहांयदा। जीव जन्त भन्ने काची वंग, शब्द हथौड़ा हथ्थ उठांयदा। माया राणी मारे डंग, पंज तत्त कोई बच ना पांयदा। मनमुख जीव मानस देही होई भंग, गुर गोबिन्दा दिस ना आंयदा। सतिजुग चढ़ना साचा चन्द, प्रभ साचा आप चढ़ांयदा। जन भगतां कराए खुशी बन्द बन्द, आत्म जोती नूर रखांयदा। इक्क सुणाए सुहागी छन्द, सोहँ नाउँ रखांयदा। जो जन तजाए मदिरा मास गन्द, धर्म राए दी जेल्ह कटांयदा। दूई द्वैती ढाहे भरमां कंध, सम्मत अठारां वेख वखांयदा। जल धारा वहाए एका पन्ध, उच्चे टिल्ले आप रुढ़ांयदा। ना कोई गाए बत्ती दन्द, रसना जिह्वा ना कोई हिलांयदा। मनमुख जीव कोई ना मेटे लग्गी चिन्द, सगला साथ ना कोई निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरा अन्तिम काजा, धुरदरगाही साचा राणा भाणा आपणे हथ्थ रखांयदा। सम्मत अठारां अठ्ठ तत्त, प्रभ साचा दए रुढ़ाईआ। कोई ना किसे सके रक्ख पत, बैठण मुख छुपाईआ। नाता तुटे झूठे तत्त, सति सन्तोख दिस ना आईआ। दर दर घर घर बहत्तर नाड़ी उब्बल रत्त, तिन्न सौ सठ हाडी रही कुरलाईआ। त्रैगुण माया तपया भठ्ठ, अग्नी रही जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची रचना आप रचाईआ। इक्क इकीसा हरि जगदीसा, आपणी रचन रचांयदा। ना कोई दिसे ईसा मूसा, संग मुहम्मद ख़ाक मिलांयदा। चार यारां खाली खीसा, दूसर कोई ना संग निभांयदा। ना कोई गाए तीस बतीसा, ना कोई नाअरा लांयदा। इक्क सुणाए सच हदीसा, साचा राह विखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां वेखे साचा घर, आप आपणा मेल मिलांयदा। बीस बीसा हरि निरँकार, आप आपणी जोत जगाईआ। आपे वेखे जमन किनार, चरन कँवल छुहाईआ। सन्त सुहेले लए उभार, जोती शब्द जणाईआ। इक्क अकाला मीत मुरार, एका धाम सुहाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क प्यार, साची बणत बणाईआ। ऊँचां नीचां भेव निवार,

राउ रंकां एका रंग रंगाईआ। साधां सन्तां पावे सार, जीवां जन्तां रिहा उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बीस बीसे कर शब्द कुड़माईआ। बीस बीसा हरि जगदीसा, एका एक अख्वाया। छत्र झुल्ले प्रभ साचे सीसा, दूसर कोई दिस ना आया। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क हदीसा, एका शब्द चलाया। जूठा झूठा पीसण जाए पीठा, मातलोक रहिण ना पाया। वेखे खेल हरि बीस बीसा, बीस बीसा आप हो आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां सेवा सेवक रिहा कमाईआ। इक्क इकीसा हरि करतार, आपणी कल वरताईआ। नौ खण्ड पृथ्वी पावे सार, एका धार चलाईआ। आपे गुर पीर होए अवतार, साध सन्त आप अख्वाईआ। जीव जन्त आपे लए उभार, आप लए मिटाईआ। चार वरनां इक्क प्यार, हरि शब्दी रिहा जणाईआ। एका दूजा भउ निवार, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वेखे सृष्ट सबाईआ। इक्क इकीसा हरि निरँजण, अकल कला भरपूरा। सृष्ट सबाई बख्शे मजन, चरन साची धूढ़ा। एका ताल नगारे वज्जण, ना कोई मूर्ख मूढ़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरा मेटे अन्त पसारा कूड़ा। एका बोल शब्द जैकारा। जुग जुग लए मात अवतारा। हरि का नाउँ अपर अपारा। वरते वरतावे विच संसारा। पारब्रह्म प्रभ भेव न्यारा। देवी देव ना पायण सारा। मनमुख भुल्ले मुग्ध गंवारा। गुरमुख साचे सोहण सच दुआरा। आत्म खोल्ह्ले बन्द किवाड़ा। अमृत आत्म मिल्या साची धारा। निर्मल जोती दीप होए उज्यारा। वरन गोती मिटया भेव, ऊँच नीच पार किनारा। सतिगुर पूरा साचा खेवट खेट, इक्क वखाए वंञ मुहाणा। चरन प्रीती बेटी बेट, पिता पूत एक अख्वाणा। हरिजन साचे साचे शब्द लए लपेट, आप आपणी किरपा धारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल हरि गिरधारा। शब्द जैकार हरि निरँकार, आपणा आप करांयदा। आपे बन्न्हणहार धार, आपे मात उपांयदा। आप चलाए विच संसार, जीआं जन्तां धन्दे लांयदा। नाम अमोला अपर अपार, बन्दी बंधन कट्ट वखांयदा। जो जन थिर घर पाए चरन द्वार, साचा ढोला इक्क सुणांयदा। साचा बोला एकँकार, एका एक करांयदा। जिस जन आत्म पड़दा खोल्हा, सो जन दर्शन पांयदा। एका तोलणहारा साचा तोला, निरगुण सरगुण तोल तुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कला सोलां कल वरतांयदा। शब्द नाउँ सच जैकार, जन भगतां आप कराया। आपे होया पहरेदार, दिवस रैण सेव कमाया। मनमति करे ख्वार, गुरमति बेड़ा बन्ने लाया। धीरज यति गया हार, सति सन्तोख बैठा मुख छुपाया। कलिजुग काला कर पसार, कूड़े धन्दे रिहा लगाया। आत्म होई अन्ध अंध्यार, ज्ञान गुर किसे हथ्थ ना आया। पंचम लुट्टण ठग्ग चोर यार, दिवस रैण

रिहा तकाया। गुरमुख मंगण मंग चरन भिखार, गुर पूरा झोली पाया। आप साया बंक द्वार, काया डोली आप उठाया। चरन प्रीती कँवल घोल घोली, हउमे हँगता रोग गंवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत साचा रंग चढ़ाया। हरिसंगत हरि रूप समाए, एका रंग रत्तया। शाहो भूप इक्क अख्वाए, आपे दे समझाए मतया। चारे कूट वेख वखाए, पंच तत्त ठण्ढा तत्तया। जूठ झूठ अन्त मिटाए, किसे रहिण ना देवे हड्डया। हरिजन साचे आप तराए, दरस वखाए दर द्वारे आए नड्डया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला सच महल्ला करे सच इकड्डया। शब्द महल्ला सच टिकाणा, हरि आपणा इक्क रखाया। गुरमुख बिठाए विच बिबाणा, लोआं पुरीआं पार कराया। ना कोई जाणे जीव नादाना, निज आत्म ना वेख वखाया। सुरत शब्द ना मेल मिलाना, नारी कन्त ना रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा साचा सर, सच समग्री इक्क रखाया। सच समग्री साची रास, गुरमुख विरले मात रखाईआ। मिले मेल पुरख अबिनाश, विछड़ कदे ना जाईआ। आदि अन्त ना होए विनास, मनमुख भुल्ले जीव देण दुहाईआ। लेखे लग्गे ना सास ग्रास, जो जन बैठे मुख भवाईआ। गुरमुख विरले मेला सर्ब गुणतास, साचे धाम सुहाईआ। पूर कराए जन भगतां आस, जुग जुग पैज रखाईआ। निज आत्म सद रक्खे वास, निजानंद समाईआ। परमानंद हरि पुरख शाहो शाबाश, सिख सुहेले सहिज मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोती सच कोहतूर, आपणी आप जगाईआ। जोती नूर सच रुशनाई, आपणी आप करांयदा। गुरमुख वेखण चाँईं चाँईं, साचा दीपक इक्क जगांयदा। आपे मेले फड़ फड़ बाहीं, शब्द मिलावा आप करांयदा। पकड़ उठाए थाउँ थाँईं, गुरमुख सोए मात उठांयदा। जूठे झूठे रोवण मारन धाईं, काग वांग कुरलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका धाम सुहांयदा। कलिजुग जीव उठ जाग, सोया रैण विहाईआ। माया ममता लग्गा दाग़, दूसर ना कोए धवाईआ। दीपक जोती बुज्झया चिराग, सच बाती ना कोए लगाईआ। हउमे हँगता तृष्ना लग्गी आग, ना कोई सके बुझाईआ। कोई ना पकड़े दो जहानां वाग, ना देवे सच सरनाईआ। चरन कँवल प्रभ एका लाग, वड वड्डी वड्याईआ। साचा मजन धूढ़ी माघ, धूढ़ी रिहा कराईआ। हँस बणाए फड़ फड़ काग, दुरमति मैल धवाईआ। इक्क सुणाए शब्द अनराग, अनहद धुन उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा धाम इक्क वखाईआ। साचा धाम साचा नाउँ, एका एक वसाया। एका नगर एका गराउँ, एका थाँ सुहाया। एका पिता एका माउँ, एका गोद उठाया। एका देवणहारा ठण्ढी छाउँ, जुग जुग देंदा आया। जुग जुग करे सच न्याउँ, जोती जामा भेख वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक

नरायण नर, हरि हरि शब्द अलाया। हरि हरि शब्द गहर गम्भीर, गुणवन्ता गुण निधाना। जन भगतां करे शांत सरीर, तोड़े माण अभिमाना। हउमे कढ्ढे विच्चों पीड़, एका रंग रंगाना। दो जहानां बन्ने बीड़, हरि साजन शाह सुल्तानां। आपे जाणे हस्त कीड़, ऊँच नीच रंक रजाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां बन्ने हथ्थीं गाना। काया बन्ने डोरी, आपणी दया कमांयदा। मनमुखां कोलों करे सदा चोरी, दिस किसे ना आंयदा। आपे वसया कन्दर अन्धेर घोरी, आप आपणा मुख छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन तेरा सहिंसा रोग जगत दुःख तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। जगत दुःख रोग संताप, जन भगतां आप मिटांयदा। इक्क जपाए साचा जाप, जुग जुग मात रखांयदा। मेट मिटाए तीनों ताप, त्रैगुण माया तत्त समांयदा। ना कोई पुन्न ना कोई पाप, हरि एका रंग समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे आप उठांयदा। उठ जाग कलिजुग जीव, काली रैण अन्धेरी छाईआ। पुरख अबिनाशी धोवे दाग़, भिन्नड़ी रैण रसना रही गाईआ। भिन्नड़ी रैण पकड़े वाग, गुरमुखां सेव कमाईआ। नेत्र लोचन दरस नैण, निरगुण रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे नाम वर, भिन्नड़ी रैण संग रलाईआ। भिन्नी रैनड़ीए तेरा वक्त सुहेला, जन भगतां मंगल गाया। आपे गुरू आपे चेला, आप आपणे विच समाया। दर द्वारे साचा मेला, मेलणहार आप अख्वाया। आपे होया सज्जण सुहेला, मीत मुरार बण के आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भिन्नड़ी रैण तेरा वेला रिहा सुहाया। भिन्नड़ी रैण चढ़या चाअ, साची खुशी मनाईआ। पुरख अबिनाशी सच मलाह, बेड़ा बन्ने लाईआ। जन भगतां कटे जम का फाह, लक्ख चुरासी फंद कटाया। आप जपाए साचा नाँ, चार वरनां इक्क सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत एका तत्त बुझाईआ। गुरमति साचा जगत ज्ञान, आपे आप दवांयदा। सतिजुग वेखे मार ध्यान, साचा राह विखांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी एका आन, आपणी आप रखांयदा। तीर निराला शब्द बान, रसना चिल्ले आप चढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, उच्चे टिल्ले पर्बत वेख वखांयदा। उच्चे टिल्ले जंगल जूह उजाड़ पहाड़, प्रभ साचा वेखण आया। सन्त सुहेले साचे लाड़, आपणे संग रखाया। दर घर साचे देवे वाड़, साचे घोड़े तंग, कसाया। मनमुख चबाए आपणी दाढ़, आपणे भाणे विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटाया। नानक निरगुण रूप है, थिर घर रिहा समाया। आपे सति सरूप है, सत्तवें आसण लाया। आपे रक्खणहारा लज पति है, पारब्रह्म इक्क सरनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक गुर मात उपाया। नानक गुर मात उपाया, प्रभ आपणी दया कमाईआ।

शब्दी शब्द मेल मिलाया, दिवस रैण करे जणाईआ। आप आपणे दर बुलाया। लोआं पुरीआं पार कराईआ। सचखण्ड हरि डेरा लाया। निरँकारा नूर सवाईआ। जोत सरूपी खेल रचाया, भेव कोई ना पाईआ। नानक दर द्वारे बण भिखारा, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपारा, छड्ड सिँघासण बाहर बैठा आईआ। नानक गुर कर प्यारा, आपणी गोद उठाईआ। दरस दिखाए अगम्म अपारा, बेअन्त बेअन्त बेअन्त रसना गाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धारा, गुर नानक दए वड्याईआ। सतिनाम अपर अपारा, वस्त झोली पाईआ। लोकमात बण वरतारा, जीवां जन्तां पार कराईआ। नानक गुर सच वस्त, धुरदरगाही लै के आईआ। चार वरन चार कुन्ट, जीवां जन्तां साधां सन्तां राउ रंकां झोली पाईआ। मनमुख ना समझण जीव गंवारा, मनमति होई हलकाईआ। नानक गोबिन्द अन्तिम वारा, आप आपणी दया कमाईआ। छड्डया तन पंचम तत्त दित्ता डन्न, जोत अंगद विच टिकाईआ। अंगद अंग लगा ल्या, लहिणा लहिणे झोली पाया, पिछला मूल चुकाईआ। अमरदास अमर कराया, चरन कँवल सेव कमाईआ। रामदास गले लगाया, बाली बुध तराईआ। गुर अर्जन दे वड्आया, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। बोध अगाधा शब्द जणाया, गुरू ग्रन्थ सेव कमाईआ। इकवंजा बवंजा एका धाम सुहाया, छत्ती रागां राग अलाईआ। मनमुख जीवां हँस काग रिहा बणाया, जो जन रसना रहे गाईआ। गुर गोबिन्द हरि हरि गोबिन्द पाया, मीरी पीरी आप अख्वाईआ। हरिराए हरि जोत टिकाया, सप्तम गुर मिली वड्याईआ। हरिकृष्न बाल अवस्था लेखे लाया, साची सेवा सेव कमाईआ। सिँघ तेग बहादर ल्या वर, प्रभ देवे आदर, दिल्ली जाए सीस लगाईआ। गुर गोबिन्दा प्रगट होया वाली हिन्दा, जगत मिटाए सगली चिन्दा, पन्थ ख़ालसा रिहा रचाईआ। बाल वारे मिटाए कलिजुग चिन्दा, आप आपणा संग निभाईआ। जोद्धा सूर वड मृगिन्दा, पंज प्यारे कर त्यार, आपणा रूप वटाईआ। दोए जोड़ करे निमस्कार, झोली अग्गे डाहीआ। आपे गुर चेला वसे विच संसार, चेला गुर आप अख्वाईआ। गया अनन्दपुर अन्तिम हार, जूठ झूठ ख़ाक मिलाईआ। दक्खण दिशा वेख विचार, गंगा गोदावरी दए सुहाईआ। तीर निराला एका मार, सच तख्त धाम सुहाईआ। अन्तिम तज्या मात संसार, गुरमुखां गया सुणाईआ। प्रगट होणा विच संसार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, अन्तिम वेला आईआ। शब्द खण्डा तेज कटार, आप आपणे हथ्थ उठाईआ। गुरमुख साचे लए उभार, जो सरसे भेंट चढ़ाईआ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, पंज तत्त दिस ना आईआ। जोत शब्द गुर अवतार, जुग जुग आप अख्वाईआ। जोत सरूपी हरि भगवान, एका एक अख्वाईआ। एका भूमिका इक्क अस्थान, एका धाम सुहाईआ। एका शब्द इक्क बिबाण, एका रिहा चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। सोलां चेत्र सोलां

कल, आपणी आप वरतांयदा। आपे वेखणहारा जल थल, थल जल आपे वेख वखांयदा। आप आपणे विच गया रल, विस्मादी रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोलां सोलां कल वखांयदा। सोला कल हरि वरतार, आपणी कल वरताईआ। वल छल विच संसार, भेव ना जाणे राईआ। जोती नूर खेले खेल घड़ी घड़ी पल पल अन्दर बाहर, गुप्त ज़ाहर आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी बणता आप बणाईआ। जुग जुग बणत बणांयदा। आप आपणी कल धार, सतिजुग साचा राह वखांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, जोग जुगत जगत इक्क चलांयदा। आप आपणी किरपा धार, साची भगती भगत करांयदा। अक्खर वक्खर नाम अधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मार्ग इक्क लगांयदा। सतिजुग तेरा साचा रंग, हरि आपे आप चढ़ाया। शब्द गुर निभाए साचा संग, सगला साथ आप अख्वाया। इक्क धारा वहाए गंग, अमृत नाउँ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर बैठा आसण लाया। सतिजुग तेरी सच सलाह, होया दर परवानया। साचा शब्द जगत मलाह, देवे गुण निधानया। गुण निधाना हरि निरँकारा, सरगुण रूप समानया। खेले खेल अपर अपारा, सरगुण भेव ना रानया। सरगुण मेले विच संसारा, आप आपणी दया कमानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग सतिजुग तेरा लहिणा देणा मूल चुकानया। कलिजुग तेरा अन्त किनार, लोकमात आप करांयदा। सतिजुग साचे हो त्यार, धरत मात गोद उठांयदा। शब्द सुत कर प्यार, साची बणत बणांयदा। चार वरन इक्क द्वार, एका धाम सुहांयदा। एका शब्द जै जैकार, चारों कुन्ट करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगवन भगवन रूप वटांयदा। हरि भगवान शब्द निशान, एका वार रखाया। आप झुलाए विच जहान, जुग जुग रिहा झुलाया। जन भगतां देवे जिया दान, नाम दान झोली पाया। दर द्वारे बख्शे मान, साचा धाम इक्क सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क सुहाया। साचा घर हरि भगवन्ता, आपणा आप बणाया। आपे वसया आदिन अन्ता, आदि अन्त रहाया। आपे होया साचा कन्ता, साचे सन्तां रिहा मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाए धुर धाम एका एक टिकाया। धुर धाम धुर दरगाह, एका एक सुहाईआ। शब्द सरूपी बण मलाह, जन भगतां रिहा मिलाईआ। सतिजुग साचे पकड़े बांह, सोया पूत रिहा जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चारे कुन्ट दहि दिशा रिहा वखाईआ। सतिजुग साचा नेत्र खोल्ह, चार कुन्ट वेख वखांयदा। सोहँ अक्खर मुखों बोल, साचा गीत अल्हांयदा। सतिजुग साचा वज्जा ढोल, प्रभ साचा आप वजांयदा। भगत जनां प्रभ वसे कोल, दिवस रैण रंग रंगांयदा। आपे वरते कला सोल,

अकल कल आप वरतांयदा। सृष्ट सबाई रिहा मौल, मौला रूप अख्वांयदा। जन भगतां उलटा करे नाभ कौल, अमृत धारा मुख चुआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग सतिजुग तेरा दर घर पूर करांयदा।

धन्न वड्याई भगत जन, हरि नाम जपंदे। धन्न वड्याई सन्त जन, हरि ध्यान रखंदे। धन्न वड्याई भगत जन, एका ओट रखंदे। धन्न वड्याई सन्त जन, जीआं जन्तां पार करंदे। दोहां मेला इक्क दर, मिले मेल गुर भगवन्ते। धन्न कमाई भगत जन, आत्म तृप्त कराईआ। धन्न कमाई सन्त जन, दिवस रैण रहे गाईआ। धन्न कमाई भगत जन, हरि हिरदे लए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दोहां मेला एका थाँईंआ। सन्त सुहेला साचा मीत, एका रंग रंगांयदा। आप सुणाए सुहागी गीत, प्रभ आपणी दया कमांयदा। आपे परखणहारा नीत, हर घट अन्दर डेरा लांयदा। जिस जन बख्शे चरन प्रीत, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। काया करे ठण्ढी सीत, अमृत आत्म जाम प्यांअदा। ना कोई हस्त ना कोई कीट, ऊँच नीच रंक राजान ना कोई अख्वांयदा। एका शब्द गुर अनडीठ, दिस किसे ना आंयदा। जिस जन काया चोली रंग चाढ़े मजीठ, आपे वेख वखांयदा। मनमुख जूठा झूठा पीसण रहे पीठ, सच वस्त ना कोई विखांयदा। काया कलिजुग कौड़ा रीठ, रस रसना ना आत्म कोई विखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। भगत सुहेला साचा सज्जण, वाली दो जहानया। दरस दिखाए दया कमाए धुरदरगाही आया पड़दे कज्जण, होए दर सवाल्या। मदिरा मास जो जन तजण, मिले मेल जोत अकालया। अनहद ताल नगारे साचे वज्जण, पंचम गायण इक्क कवाल्या। भाण्डे भरम गढ़ हँकारी भज्जण, अन्दर मजन जोती नूर लाल गुलालया। आत्म सेजा बहि बहि सजण, जन मिल्या मेल हरि बनवाल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे आए भगतां दर, जुग जुग बणे सवाल्या। धन्न कमाई सन्त जन, पाया परमानंद। धन्न कमाई सन्त जन, दूई द्वैती ढाहे भरमां कंध। धन्न कमाई सन्त जन, गुर शब्द चढ़ाया साचा चन्द। धन्न कमाई भगत जन, मेट मिटाए आत्म अन्ध। धन्न कमाई सन्त जन, इक्क सुणावण सुहागी छन्द। धन्न कमाई भगत जन, मिले वड्याई विच जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन किरपा देवे कर, अन्तिम मेला लए मिलाईआ। किरपा करे आप मेहरवान, मानस जन्म लेखे लांयदा। साची भगती भगत भगवान, गुर चरन ध्यान लगांयदा। आपे देवे नाम निधान, आपणी हथ्थीं आप वरतांयदा। एका शब्द इक्क निशान, एका तीर चलांयदा। एका मन्दिर इक्क मकान, हरि एका एक सुहांयदा। एका जोद्धा सूर बली बलवान,

नर निरँकार आप अख्वांयदा। आपे करे आपणी आप पछाण, दूसर कोई भेव ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सुहेले वेख वखांयदा। सन्त सुहेले साचा गुर, एका रूप समाया। लिख्या लेख गया जुड़, ना कोई तोड़ तुड़ाया। आपे चढ़या शब्द घोड़, चारे कुन्ट रिहा दुड़ाया। जन भगतां लग्गी आत्म औड़, अमृत आत्म दए जाम प्याया। कलिजुग अन्तिम मारे पहला पौड़, चौथा पौड़ा रिहा लगाया। वेखे परखे मिट्ठा कौड़, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, वेख वखाणे सम्बल नगर ना कोई जाणे लम्बा चौड़ा, गोबिन्द डेरा लाया। जन भगतां आत्म अन्तर जाए बौहड़, अन्दर मन्दिर मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त विचोला शब्द बणाया। शब्द विचोला विच संसार, हरि एका एक रखाया। जन भगतां करे ख़बरदार, दिवस रैण रिहा जगाया। पंचम मेटे काम क्रोध लोभ मोह हँकार, पंचां मेल मिलाया। जिस जन किरपा देवे धार, लहिणा देणा मूल चुकाया। एका कन्त इक्क भतार, गुरमुख साची नार कर प्यार, आत्म सेजा रिहा हंढाया। दोहां मेला इक्क द्वार, ना कोई दूसर पहरेदार, शस्त्र बस्त्र कोई दिस ना आया। ना कोई खण्डा ना कोई कटार, आपे पाए आपणी वंडा हरि निरँकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे आप कराए भवजल पार। धन्न कमाई भगत जन, साचा धाम सुहंदड़ा। दूई द्वैती मिटया जन, गुर पाया हरि गोबिन्दड़ा। जोत जगाई काया निर्मल तन, इक्क प्रकाश वखंदड़ा। शब्द डोरी मन मनुआ बन्न, बुध मति आप समझंदड़ा। गुर शब्द जणाए साचे गुण, राग अनादी इक्क वजंदड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां वेख वखंदड़ा। सन्त साजण सहिज सुभाए, रस रसना रिहा गाया। सतिगुर पूरा दए मिलाए, जिस जन संग निभाया। सच वस्त गुर चोली पाए, अंगीकार आप अख्वाया। दूजा दर ना मंगण जाए, जिस जन आपणी दया कमाया। काया काची वंग भनाए, मनमुख जीव रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सुहेले रिहा वर, नौ खण्ड पृथ्वी वेख वखाया। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क दरवाज़ा, प्रभ साचे आप खुल्हाया। वेख वखाए ग़रीब निवाजा, आप आपणा भेख वटाया। जन भगतां मारे अन्दर मन्दिर आवाजा, दिवस रैण रिहा जगाया। शब्द गुर रच्चया काजा, गुरमुख सुरती लए प्रनाया। वेखे खेल कल कि आजा, आपणे भाणे विच समाया। आपे वेखे मक्का काअबा हाजी हाजा, साचा हज्ज इक्क वखाया। जुग जुग रक्खणहारा लाजा, जन भगतां होए सहाया। मनमुखां खोल्हे जूठा झूठा पाजा, पंचम देवे गंढु खुल्हाया। कलिजुग तेरा साजण साजा, वेखे खेल राजन राजा, एका शाहो भूप आप अख्वाया। प्रगट जोत देश माझा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग जीवां रिहा भुलाया। माझे देश प्रभ जोत जगाई, गुर शब्द वज्जी वधाईआ। पंचम तत्त

ना देह उपाई, मन मति बुध ना नाल रलाईआ। रक्त बूंद ना कोई रखाई, पिता पूत ना कोई सदाई, भाई भैण ना मेल मिलाई, नाता जगत ना कोई रखाईआ। आप आपणी खेल रचाई, जोती जामा भेख वटाईआ। गुरमुख साचे कर कुड़माई, आप आपणे दर बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे थाउँ थाँईंआ। वेखणहारा सर्ब संसार, अकल कला भरपूरा। जुग जुग लए मात अवतार, शब्द वजाए नाद अनादी तूरा। सतिजुग त्रेता कराए पार, द्वापर आसा मनसा पूरा। कलिजुग अन्तिम रिहा विचार, मुख शरमाए जूठा झूठा कूड़ा। संग मुहम्मद चार यार, कोई ना देवे साची धूढ़ा। कर्म धर्म गया हार, अन्त पछताए मूर्ख मूढ़ा। पारब्रह्म प्रभ मारे मार, लोकमात मारे झात, इक्क इकांत मेट मिटाए पसारा कूड़ा। कलिजुग अन्तिम रिहा रो, ना दिसे कोई सहाईआ। जूठा झूठा बीज ल्या बो, अन्तिम कोए ना संग निभाईआ। प्रगट होया प्रभ छब्बी पोह, जोत सरूपी जामा पाईआ। नाता तोड़े जूठा मोह, जगत तृष्ना रिहा मिटाईआ। जन भगत हरि बिन अवर ना जाणे को, सृष्ट सबाई बैठी मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन आपे वेख वखाईआ। हरिजन साचा शब्द दुलारा, पूत सपुता जाया। पारब्रह्म प्रभ दए हुलारा, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाया। जीव जन्त ना जाणे पार किनारा, दमड़ी दमड़े हथ्थ ना आया। वरते वरताए विच संसारा, आप आपणा वेख वखाया। कलिजुग तेरी काली धारा, कालख टिक्का मस्तक लाया। सन्त सुहेले रोवण ज़ारो ज़ारा, दिवस रैण रहे कुरलाया। धरत मात करे पुकारा, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। राए धर्म खोल्ह किवाड़ा, नेत्र नीर रिहा वहाया। लाड़ी मौत मंगे एका लाड़ा, लक्ख चुरासी लए प्रनाया। वरते खेल दिन दिहाड़ा, प्रभ साचे आप वरताया। धरत मात तेरा इक्क अखाड़ा, अन्तिम दए बणाया। आप उठाए अगम्मी धाड़ा, धाड़ धाड़वी आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वंड वंडाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वंड वंडाए, लोकमात वेख वखाईआ। कुलाखण्ड हरि कल वरताए, भेव कोए ना पाईआ। इलाबुत हरि डेरा लाए, आप आपणा राह वखाईआ। केतमाल हरि रिहा जगाए, एका शब्द जणाईआ। हरिवरख हरि बूझ बुझाए, एका डंक वजाईआ। किंपुरख भेव खुल्हाए, लेखा लेख दए पुचाईआ। हरणयमह हरि जोत जगाए, जोग जुगीशर रिहा उठाईआ। भदर भरम सर्ब मिटाए, हर घट वेख वखाईआ। रमक रंग रहिण ना पाए, हरि अचरज कल वरताईआ। भारत खण्ड प्रभ जोत जगाए, माझे देस वज्जी वधाईआ। गुरमुख साचे लए जगाए, सोए मात उठाईआ। एका एक बख्शे सच सरनाए, आप आपणा दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची नईआ नाम चढ़ाईआ। साची नईआ विच मँझधार, एका एक चलांयदा। सतिगुर पूरा मीत मुरार, गुरमुखां पार करांयदा। वंञ मुहाणा अपर अपार,

आपणे हथ्थ रखांयदा। मनमुख डुब्बे जीव गंवार, आत्म अन्ध भेव ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां बेड़ा आपे आप तरांयदा।

✻ १७ चेत २०१४ बिक्रमी अजीत सिँघ इक्की परिवारां दे इक्कु समें शब्द दी किरपा कीती बटाला शहर ✻

हरि का शब्द अपार, हरि उपाया। गुर का शब्द अधार, जन भगतां रिहा तराया। जन भगतन पायण सार, रसना जिह्वा गाया। मनमुखां वसे बाहर, आत्म लोअ कोई ना लाया। मनमुख जीव मुग्ध गंवार, शब्द देव ना मनाया। भगत जनां हरि शब्द भण्डार, गुर पूरे वरताया। गुर पूरा वरतावे विच संसार, हरि साची सेवा लाया। पारब्रह्म ब्रह्म खेल न्यार, आपणा आप कराया। हरि शब्द अपार, हरि शब्द रूप वटाया। सतिगुर पूरा मात वरतार, साचे धन्दे लाया। जन भगतां देवे इक्क अधार, आपणी दया कमाया। मनमुख सुत्ते पैर पसार, गुर का शब्द हथ्थ ना आया। हरि का शब्द अमोल, आदि अमोल्लया। गुर पूरा रिहा तोल, अन्दर मन्दिर आपे बोल्लया। जन भगतां वसे कोल, आदि अन्त कदे ना डोल्लया। मनमुख जीव रहे अनभोल, आपणा घर कोई ना फोल्लया। हरि का शब्द अगम्म अथाह है। सतिगुर पूरा बेपरवाह है। इक्क जपाए साचा नाउँ, जन भगतां फड़ फड़ बांहों, आपे पिता आपे माँ है। मनमुख दर दर घर घर उडणे काउँ, दरगाह विच ना कोई थाउँ है। हरि का शब्द अनराग, राग किसे ना गाया। गुर पूरे होइण वड वड भाग, प्रभ साचे झोली पाया। सन्त सुहेले जायण जाग, जिस जन दया कमाया। मनमुख मनमति गए लाग, मानस जन्म गंवाया। हरि का शब्द अतुल, ना कोई तोल तुलांयदा। गुर भण्डार इक्क अतुल, लोकमात रखांयदा। सन्त जनां दी साची कुल, वरन गोत ना कोई रखांयदा। मनमुखां अमृत आत्म रिहा डुल्ल्ह, निझर धार ना कोई मुख चुआंयदा। हरि का शब्द सच भण्डार, आपे आप वरताया। सतिगुर पूरा कर त्यार, लोकमात फेरा पाया। जन सन्तां पावे सार, जुग जुग वेखण आया। मनमुखां होया अन्ध अंध्यार, आत्म पर्दा पाया। हरि का शब्द बलवान, एका एक अख्वाया। सतिगुर पूरा नौजवान, ना मरे ना जाया। जन भगतां देवे इक्क निशान, धुरदरगाही लै के आया। मनमुख भुल्ले जीव नादान, मन का पड़दा किसे ना लाहया। हरि का शब्द बिबान, एका एक रखाया। सतिगुर पूरा देवे आन, एका हुक्म जणाया। जन सन्तां दर घर कर परवान, आपणा भेव खुल्ह्या। मनमुख जीव ना करन पछान, हउमे रोग वधाया। हरि का शब्द अतुट, आप रखाया। तीर निराला जाए छुट्ट, लोकमाती वेख वखाया। जन भगतां बजर कपाटी जाए तुट्ट, आत्म दरसी दरस दिखाया। मनमुख जीवां पंजे चोर

६३२
०६

रहे लुट्ट, दिवस रैण डेरा लाया। हरि का शब्द साचा तीर, एका एक रखाया। गुर पूरा कढ्ढे हउमे पीड़, आपणी दया कमाया। भगत जन सन्त सुहेले चोटी चढ़न अखीर, दिस किसे ना आया। मनमुख जीवां हड्डी टुट्टी रीढ़, ना कोई सके भार उठाया। हरि का शब्द दयाल, इक्क अकालया। सतिगुर पूरा लए भाल, विच जहानया। जन भगतां करे रखवाल, होए सहाई दो जहानया। मनमुख जीव जन्त कंगाल, मिल्या नाम ना घर निधानया। हरि का शब्द अनरंग, ना कोई रंग रंगाया। सतिगुर पूरे साचा संग, आप आपणा संग निभाया। सन्त सुहले दर द्वारे रहे मंग, प्रभ साचा झोली पाया। मनमुख जीव होए नंग, काया पड़दा ना कोई पाया। हरि का शब्द बेपरवाह, भेव किसे ना पाया। सतिगुर पूरा जगत मलाह, जुग जुग बण के आया। साधां सन्तां आपणा आप दए जणा, अन्दर मन्दिर वेख वखाया। मनमुख जीव दए भुला, माया पड़दा पाया। हरि का शब्द सच सुल्तान, एका एक वखाया। सतिगुर पूरा मेहरवान, दयावान अख्वाया। भगतन देवे धुर फ़रमान, एका नाम बताया। मनमुख जीव जगत नादान, बैठे मुख भवाया। हरि का शब्द निरवैर, निज घर वसया। सतिगुर पूरा आपे करे मेहर, जन भगतां राह साचा दस्सया। हरिजन ना लाए देर, दर द्वारे आए नस्सया। मनमुख भुलाए कर कर हेर फेर, तीर निराला एका कसया। हरि का शब्द एका शाह, एका एक अख्वाया। सतिगुर पूरा फड़े बांह, आप आपणा संग निभाया। जन भगतां जपाए एका नाँ, एकँकारा वेख वखाया। बेमुखां ना दिसे कोई थाँ, सच दुआरा दिस ना आया। हरि का शब्द हरि धार, आपणा आप कराया। सतिगुर पूरा कर त्यार, लोकमाती जन्म दवाया। सन्त सुहेले लए उभार, जुग जुग मेल मिलाया। मनमुख जीवां करे ख्वार, अन्तिम मेट मिटाया। सतिजुग त्रेता द्वापर वारो वार, आप आपणी बणत बणाया। सन्त सुहेला इक्क इकेला मीत मुरार, निरगुण रूप समाया। निरगुण रूप हरि निरँकार, सति पुरख निरँजण आप अख्वाया। जन भगतां देवे नेत्र अंजन, शब्द ज्ञान पाया। चरन धूढ़ी सच्चा मजन, दुरमति मैल गंवाया। धुरदरगाही साचा सज्जण, घर बैठा आसण लाया। ताल नगारे साचे वज्जण, पंचम सेवा लाया। भाण्डे भरम हरिजन भज्जण, प्रभ नेत्र दर्शन पाया। आपे रक्खणहारा लजण, आत्म सेजा आसण लाया। हरिजन अमृत आत्म पी पी रज्जण, सर सरोवर इक्क वखाया। लोकमात आया पड़दे कज्जण, शब्द दुशाला इक्क रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि शब्द हरि रंग आपणे आप रंगाया। हरि रंग राता हरि शब्द, एका एक रंग रतया। आप निभाए आपणा संग, दे समझावे मतया। एका अस्व कसे तंग, सृष्ट सबाई रिहा मिथ्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे दर दर, मनमुख सुत्ते सथ्थर घत्तया। हरि का शब्द हर घट वास, एका एक रखाया। सतिगुर पूरा दासी दास,

६३३
०६

जन भगतां आप अख्वाया। हरि सन्तन वेखण मण्डल रास, काया मन्दिर आप वखाया। मनमुख सुत्ते विच प्रभास, चारों कुन्ट अन्धेर छाया। आदि पुरख सदा अबिनाश, ना मरे ना जाया। वेख वखाए पृथ्वी आकाश, लोआं पुरीआं आप उठाया। ब्रह्मा शिव होए उदास, कलिजुग अन्तिम आया। सुरपति राजा इन्द करोड़ तेतीसा इक्क रखाई आस, अन्तिम वेला आया। नौ खण्ड सत्त दीप हरि शाहो शाबाश, एका जोती नूर जगाया। लक्ख चुरासी रक्खे वास, आत्म सेजा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुनेहड़ा मात भेज, निहकलंक नाउँ रखाया। निहकलंक नर नरायण अवतार, निरगुण रूप समाया। सरगुण करे ख़बरदार, शब्द डंका इक्क वजाया। नौ द्वारे वसया बाहर, पंचम धाड़ नेड़ ना आया। सुखमन नाड़ी पार किनार, आपणी आपे रिहा कराया। सहँस दल चरन धोवे रोवे ज़ारो ज़ार, बैठा मुख खुल्ह़ाया। प्रभ अबिनाशी तेरा दरस अपार, जोत निरँजण रिहा दरस दिखाया। आपे वेखे दस्म द्वार, शब्द खण्डा कुण्डा लाहया। जोत सरूपी कर आकार, शब्द सिँघासण आसण लाया। उप्पर बैठ सच्ची सरकार, सच सुल्तान आप अख्वाया। निरगुण निराधार एका धार, सति सफेदी रिहा वहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सुरत सवाणी लए प्रनाया। सुरत शब्द साचा मेला, आपणा आप कराया। मिटया भेव गुरू गुर चेला, एका अंग समाया। आपे होया सज्जण सुहेला, आपणा लड़ फड़ाया। दस्म द्वारी कर त्यारी, आपणा चरन रखाया। चौथे घर हरि निरँकारी, एका धाम सुहाया। ना कोई वजाए नाद नद, ना कोई सुण सुणाया। एका एक हरि ब्रह्मद, पारब्रह्म अख्वाया। सन्त सुहेले लए सद्द, आप आपणा घर वसाया। आपे जाणे बोध अगाध, अगाध बोधा आप अख्वाया। हरिजन मेला माधव माध, मोहणी मोहण रूप वटाया। आपे सन्त आपे साध, आपे सतिगुर विच समाया। सन्त सुहेले जुग जुग लाध, आप आपणा मेल मिलाया। जन भगतां देवे नाम दाद, एका भिच्छया पाया। दिवस रैण रहे अराध, अन्तिम इच्छया पूर कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जीव जन्त बाल अञ्याण किसे दिस ना आया। जन भगतां दर द्वारे रिहा सेव कमाया। शब्द गुर वड बलवान, एका एक अख्वांयदा। ना कोई रक्खे तीर कमान, शस्त्र बस्त्र ना कोई सजांयदा। ना कोई भूमिका ना अस्थान, ना कोई वंड वंडांयदा। ना कोई कर्म ना कोई धर्म, ना कोई ब्रह्म ना कोई ज्ञान, ना कोई ध्यान लगांयदा। एका एक आप मेहरवान, मेहरवाना नाउँ रखांयदा। जुग जुग देवणहारा दान, दाता दानी आप अख्वांयदा। प्रगट हो विच जहान, सतिगुर साचा रूप वटांयदा। जन भगतां देवे नाम निशान, ब्रह्मण्डां खोज खुजांयदा। जेरज अंडां पावे आण, उत्भुज सेत्ज मार्ग लांयदा। वरन अवरना इक्क भगवान, साची सरना इक्क रखांयदा। हरना फरना खोल्ह देवे दरस महान, जिस जन दया कमांयदा। भरमे भुल्ले

जीव शैतान, पंचां संग निभांयदा। जन भगतां देवे नाम बिबान, अन्तिम आप चढ़ांयदा। आपे होया निगाहबान, पिच्छे अग्गे सेव कमांयदा। हरिजन साचे चतर सुघड़ स्यान, एका जोती मेल मिलांयदा। चरन कँवल प्रभ बख्शे इक्क ध्यान, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। औखी घाटी विच जहान, बत्ती दन्द रसना जिह्वा जन हरि गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, वर दाता आप अख्वांयदा। हरिजन साचा साजण मीत, मिल्या कन्त भतारा। एका सुणया सुहागी गीत, नाता तुट्टा नौ दुआरा। पारब्रह्म प्रभ वसया चीत, मिल्या इक्क सहारा। आपे जाणे आपणी रीत, जुग जुग लए मात अवतारा। ना कोई देहुरा मन्दिर मसीत, काया सच्चा सच गुरदुआरा। मनमुखां सुत्ता दे कर पीठ, आत्म होई अन्ध अन्धयारा। जिस जन देवे नाम शब्द अनडीठ, आपे खोल्हे बन्द किवाड़ा। जूठा झूठा काया कौड़ा रीठ, अमृत सर नुहाए दुरमति मैल गंवाए करे पार उतारा। नाम शब्द साचा मीठ, एका रस विचारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क वखाए सच भण्डारा। हरि शब्द एका एक रखाया। जुग जुग करे वरतार, वरतावणहार आप अख्वाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, केसाधारी भेख वटाया। शब्द डंका अपर अपार, राउ रंकां रिहा जणाया। वेख वखाए सृष्ट सबाई पावे सार, वेखणहारा दिस ना आया। इक्क इकल्ला एकँकार, एका धार रिहा चलाया।
६३५ ०६ नाम खण्डा तेज कटार, चार वरनां रिहा वखाया। ऊँचां नीचां भेव निवार, राज राजानां शाह सुल्तानां एका थाँ बहाया। ६३५ ०६
एका अक्खर वणज वपार, जन्त जहानां रिहा कराया। बजर कपाटी पत्थर पाड़, औखी घाटी दए चढ़ाया। वा ना लग्गे तत्ती हाढ़, अमृत ठण्ढा नीर वरताया। पंच विकारा देवे साड़, हउमे पीड़ कढाया। आपे होया पिच्छे अगाड़, एका पल्लू नाम फड़ाया। दर घर साचे देवे वाड़, गुर शब्दी मेल मिलाया। गुर शब्द अपर अपार, हर घट वेख वखाया। तीर्थ तट्ट ना कोई दए उधार, नुहा नुहा थक्के जीव सबाया। हरि गुण रसना जिह्वा हरिजन रहे उचार, प्रभ चरन कँवल ध्यान लगाया। अन्दर मन्दिर पावे सार, डूँघी कन्दर डेरा लाया। आपे तोड़े हँकारी जन्दर, शब्द खण्डा हथ्थ उठाया। मेल मिलावे साचे मन्दिर, नौ दरवाज़े बन्द कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां वसया आत्म घर, निज आत्म आसण लाया। निज आसण हरि बिसराम, आपणा आप कराया। आपे आप रमईआ राम, काहना कृष्ना रूप वटाया। आपे मदि आत्म जाम, आपे साकी बण प्याया। आपे देवे साचा दाम, आपे बन्द ताकी रिहा खुल्हाया। आपे जाणे आपणा काम, बन्दा ख़ाकी भेव ना पाया। कलिजुग तेरी अन्धेरी शाम, सतिगुर साचा शब्द राकी एका घोड़े चढ़ के आया। वेख वखाणे नौ खण्ड पृथ्वी लक्ख चुरासी काया चाम, लहिणा देणा मूल चुकाया। एका एक सुहाए साचा धाम, गुरसिख काया

सेज वछाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोग जगत जुग आपणे हथ्थ रखाया। जोग जुगत जगत करतार, आपणे हथ्थ रखाईआ। भगत सुहेला मीत मुरार, दिवस रैण सेव कमाईआ। इक्क इकेला विच संसार, वरभण्डी बणत बणाईआ। मेट मिटाए भेख पखण्डी, भेख पखण्डा रहिण ना पाईआ। शब्द फड़े हथ्थ साची चण्डी, दोवें धार रिहा चमकाईआ। जूठी झूठी लग्गी मंडी, मनमति फिरे हलकाईआ। साध सन्त लोकमात पायण वंडी, आपणा आपणा बैठे राह चलाईआ। मनमुख जीवां वढ्ढे कंडी, दिवस रैण वाहो दाहीआ। पारब्रह्म तेरे मिलण दी एका डण्डी, नानक कबीरा गया गाईआ। मनमुख जीवां आत्म रंडी, कन्त सुहाग ना कोई हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। कलिजुग तेरा भेख पखण्डा, प्रभ साचे अन्त मिटावणा। आपे वेखे नौ नौ खण्डा, कुलाखण्ड हिलावणा। इलाबुत तेरी पाए वंडा, केतमाल नाल रलावणा। किंपुरश वखाए एका डण्डा, हरिवरख हरि पुरख मनावणा। हरणयमह तेरी आत्म रंडा, रंड रंडेपा इक्क हंढावणा। रमक वेखे आत्म अन्धा, अन्ध अन्धेर इक्क रखावणा। भद्र रोए भागां मन्दां, भरम गढ़ ना किसे तुड़ावणा। भारत खण्ड तेरी पई वंडा, प्रभ साचा धाम सुहावणा। वेख वखाणे जेरज अंडा, उत्भज सेत्ज फोल फुलावणा। खेले खेल विच ब्रह्मण्डां, लोआं पुरीआं आप उठावणा। सूरज चन्न रवि ससि तारा मण्डल ना कोई दिसे चन्न चन्दा, हरि साचे मेट मिटावणा। ना कोई दिसे ख़ाकी बन्दा, पंज तत्त चोला ना किसे हंढावणा। ना कोई सुणाए सुहागी छन्दा, राग रागणी किसे ना गावणा। ना कोई खुशी कराए बन्द बन्दा, अमृत जाम ना किसे पयावणा। मनमुख जीव आत्म अन्धा, रुढ्ढा मात ना किसे मनावणा। धर्म राए गल पाए फंदा, अन्त हिसाब चुकावणा। कुम्भी नर्क मारे जिंदा, जन्मी जन्म भवावणा। सतिगुर पूरा जाणे आपणा आपे धन्दा, जुग जुग खेल खिलावणा। भगत जनां हरि सद बख्शिंदा, आप आपणा मेल मिलावणा। साचा धाम इक्क सुहंदा, गुरमुख तेरी आत्म सेजा डेरा लावणा। आपे जाणे पार कन्ढा, आर पार वेख वखावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मण्ड जेरज अंड नौ खण्ड आपणा आप करावणा।

हरि जोत अगम्म अथाह बेपरवाहीआ। शब्द उपाए सच मलाह, आप आपणी दया कमाईआ। लोआं पुरीआं दए वसा, ब्रह्मण्डां वंड वंडाईआ। आप धराए आपणा नाँ, नर निरँकारा आप अख्वाईआ। वेख वखाणे थाउँ थाँ, हर घट बैठा आसण लाईआ। आपे पिता आपे माँ, गुर पीर अवतार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा घर सुहाईआ। जोत अगम्म बेपरवाह, बेअन्त बेअन्त बेअन्तया। ना कोई दम ना कोई साह, ना कोई साजण सन्तया।

६३६
०६

ना कोई मीत ना कोई मुरार, ना कोई नारी कन्तया। ना कोई देवे ठण्ढी छाँ, ना कोई रुत्त बसन्तया। ना कोई फड़े किसे बांह, ना कोई जोग जुगन्तया। आपे जाणे आपणा नाँ, आप आपणे धाम रहन्तया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे खेल सच खिलन्तया। जोत अगम्म अथाह, नूरो नूर समाया। शब्द उपजाए साची तूर, साचा सुत उपाया। आपे वेखे नेड़े दूर, दूर दुराडे डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आसा मनसा पूर आप अख्वाया। शब्द सुत हरि बलवान, एका एक अख्वाया। आप बिठाए सच बिबान, चारों कुन्ट रिहा फिराया। अट्ठे पहर निगाहबान, दिवस रैण वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा दान आपणी हथ्थीं गुर शब्दी झोली पाया। शब्द मंगे मंग, दोए जोड़ करे निमस्कारया। प्रभ अबिनाशी चाढ़े रंग, उतर ना जाए विच संसारया। लोआं पुरीआं जावां लँघ, राह विच ना कोई अटका रिहा। एका डोर लाल पतंग, लाल डोरी इक्क वखा रिहा। कंचन गढ़ वेख पलँघ, उप्पर आसण ला रिहा। आप आपणा रक्खणा संग, तेरी ओट तका रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति आप समझा रिहा। शब्द सुत बाल निधान, प्रभ साचा आप सुणांयदा। एका बख्शे चरन ध्यान, एका राह विखांयदा। एका ओट हरि भगवान, साची सिख्या दे समझांयदा। जोती नूर सच महान, एका एक वखांयदा। आप बिठाए आपणे हरि बिबान, नौ खण्ड आप भवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ब्रह्मा शिव देवत सुर लए वर, शब्दी बणत बणांयदा। शब्द सुत हो त्यार, चारों कुन्ट वेख विखांयदा। पुरख अबिनाशी तेरी धार, एका रूप समांयदा। इक्क इकल्ला एकँकार, एका रंग रंगांयदा। इक्क वखाया सच महल्ला, दूआ होर ना कोई नज़री आंयदा। दीपक जोती एका बल्ला, एका खेल वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत देवे वर, आप आपणा मेल मिलांयदा। शब्द सुत चढ़या चाअ, प्रभ दर खुशी मनाईआ। आदि पुरख जोत निरँजण कर सलाह, जगत मलाह बणाईआ। आप वखाया आपणा राह, आपे बूझ बुझाईआ। आपे होया पिता माँ, आप आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत देवे वर, साची सिख्या इक्क समझाईआ। शब्द सुत कर प्यार, हरि सुणाए एका रागया। इक्क इकल्ला एका धार, एका देवे नाम वैरागया। जलां थलां पावे सार, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले फिरे भागया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत तेरा दर, दर दुआरा एका जागया। शब्द सुत उठ जाग, हरि साचा आप जगांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड हथ्थ तेरे वाग, आपणी हथ्थीं आप फड़ांयदा। लक्ख चुरासी बंनृणा ताग, एका डोरी नाल रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सुत दुलारे देवे वर, पूरन

इच्छया आप करांयदा। सुत दुलार वर घर पाया, पाया पुरख अगम्मा। आप आपणा मेल मिलाया, ना कोई मरे ना जाया ना मुख मुंमा। भाई भैण साक सैण ना कोई अख्वाया, पंज तत्त हड्ड मास नाड़ी ना कोई दीसे चम्मा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत तेरा दर, आप लगाया आपणा कम्मा। शब्द सुत तेरा साचा काज, प्रभ आपणा आप रचांयदा। एका देवे साचा दाज, धुरदरगाही हथ्थ फड़ांयदा। अगम्म अगम्मी धुन आत्मक मारी एका आवाज, रसना जिह्वा ना कोई हिलांयदा। दो जहानी आउणा जाणा भाग, एका पन्ध रखांयदा। लोआं पुरीआं वेखणा जोती जगे चिराग, तेरा संग निभांयदा। लक्ख चुरासी लाउँणी जाग, निरगुण रूप समांयदा। ब्रह्मा शिव देवत सुर हथ्थ पकड़ी तेरे वाग, त्रैगुण माया तेरा तत्त रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत देवे वर, एका मति समझांयदा। एका मति एका नत्त, एका ब्रह्म ज्ञानया। एका धीरज एका यति, एका सति श्री भगवानया। एका रत एका हड्ड एका इक्ड, वेख वखाणे इक्क दुकानया। लोआं पुरीआं वेखणा नठ्ठ नठ्ठ, चारों कुन्टां फोल फुलानया। लक्ख चुरासी काया तपया मठ, जगे जोत गुण निधानया। शब्द खेड़ा जाए वस, साची धुन उपजानया। आप आपणा राह रिहा दस्स, खेले खेल दो जहानया। ना कोई भेव जाणे रवि ससि, सूरज चन्न ना वेख वखानया। तारा मण्डल कुछ ना सके दस्स, ना कोई ज़िमी असमानया। पुरख अबिनाशी जोत सरूप शब्द सुत होए वस, आप आपणा मेल मिलानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे वर गुण निधानया। शब्द सुत वेख दर, प्रभ अग्गे करे अरदास्सया। एका एक मिल्या वर, चरन कँवल भरवास्सया। ना कोई नारी ना कोई नर, मण्डल मन्दिर रक्खया वास्सया। ना कोई सरोवर ना सर, तीर्थ तट्ट ना कोई नहास्सया। आपणा भण्डारा दित्ता भर, पारब्रह्म पुरख अबिनास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत देवे इक्क दलास्सया। शब्द सुत दए दिलासा, सीस आपणा हथ्थ रखाया। चरन कँवल सच भरवासा, आदि पुरख निरँजण आप रखाया। वेख वखाए पृथ्वी आकाशा, तेरा संग निभाया। आदि अन्त ना होए विनासा, थिर घर धाम सुहाया। ना कोई जाणे दिवस रैण बरस मासा, घड़ी पल ना वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत देवे वर, निहचल धाम सुहाया। शब्द सुत उठ बलकार, साची खुशी मनाईआ। लोकमाती कर विचार, आपे करे धाईआ। ब्रह्मा त्रैगुण तत्त पसार, पंचम तत्त बणत बणाईआ। निरगुण सरगुण खेल अपार, आपणी बूझ ना किसे बुझाईआ। मन मति बुध कर प्यार, जीवां जन्तां संग रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। शब्द सुत हरि दए हुलारा, आपे आप हिलांयदा। आपे जाणे पार किनारा, आपे मेल मिलांयदा। एका दूजा तीजा भेव न्यारा, चौथे

घर सुहांयदा। पंचम मेला मीत मुरारा, साचे धाम रखांयदा। छेवें छप्पर छन्न न्यारा, दिस किसे ना आंयदा। सत्तवें सति पुरख निरँजण अगम्म अपारा, थिर घर आसण लांयदा। अट्ठां तत्तां नर निरँकारा, साची बणत बणांयदा। नौ द्वारे वसे बाहरा, जीआं जन्तां दिस ना आंयदा। दस्म द्वारी इक्क घर बाहरा, गुरमुख विरले मेल मिलांयदा। आत्म सेजा कर त्यारा, शब्द सिँघासण आसण लांयदा। पंचम धुन गायण वारो वारा, साची सेव कमांयदा। आपे पुरख आपे नारा, नारी कन्ता मेल मिलांयदा। गुरमुख मिल्या सच भतारा, साची सेज हंढांयदा। किया वणज नाम वणजारा, साचा वणज करांयदा। सुरत सवाणी भर भण्डारा, शब्दी मेल मिलांयदा। दस्म द्वारी पार किनारा, सुंन अगंम्मो पार करांयदा। चौथे घर खोल्ह किवाड़ा, सन्त सुहेले आप मिलांयदा। ना कोई दिसे पंचम धाड़ा, पंचम तत्त नज़र ना आंयदा। ना कोई राग रागणी लाए अखाड़ा, छत्ती राग ना कोई गांयदा। ना कोई वज्जे बहत्तर नाड़ ताड़ा, बत्ती दन्द ना कोई अल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत दित्ता वर, साचा धाम आप सुहांयदा। साचा धाम हरि अवल्ला, चौथा दर रखाया। आपे बैठ सच महल्ला, गुरमुख साचे लए फड़, आपणा मेल मिलाया। आत्म वजाए एका नद, अनादी आप अख्वाया। अमृत आत्म जाम प्याए साची मदि, उतर कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे बैठा आसण लाया। शब्द सुत करे सलाह, साची खुशी मनाईआ। आपे बणया जगत मलाह, सन्त सुहेले रिहा उठाईआ। फड़ फड़ बाहों लाए पार, आपणी बूझ बुझाईआ। लक्ख चुरासी फंद कटा, आवण जावण फंद कटाईआ। आप बहाए साचे थाँ, ऊँच अगम्म धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचे शब्दी मेल मिलाईआ। शब्द सुत हरि दुलार, एका एक रखाया। जन भगतां करे मात प्यार, दे मति आप समझाया। दिवस रैण सेवादार, सेवक सेवा रिहा कराया। आपे गुप्त ज़ाहिर अन्दर बाहर, आपे डेरा लाया। आपे जाणे पार किनार, डूँघी कन्दर वेख वखाया। आपे जाणे अमृत आत्म साची धार, निझर झिरना रिहा झिराया। आपे जाणे जोत निरँजण घर उज्यार, दीपक जोती इक्क जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत देवे वर, साची सेव कमाया। शब्द सुत सेवादार, प्रभ आपणा आप कराया। जन भगतां करे ख़बरदार, जुग जुग मेल मिलाया। आपे होया पहरेदार, आलस निन्दरा विच ना आया। वेख वखाणे साजण मीत मुरार, दर घर मन्दिर अन्दर डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे देवे वर, बजर कपाटी जिंदा तोड़ वखाया। बजर कपाटी जिंदा तोड़, प्रभ आपणी दया कमांयदा। सुरत सवाणी जाए बौहड़, साचे मार्ग लांयदा। आपे चढ़या साचे घोड़, चिट्टा अस्व आप दुड़ांयदा। पंजां चोरां मारे पहला पौड़, धुरदरगाही आप उठांयदा। हँकार

विकारा भन्ने रीठा कौड़, जूठ झूठ रहिण ना पांयदा। धुरदरगाही आया दौड़, जन भगतां मेल मिलांयदा। ना कोई जाणे लम्बा चौड़, सृष्ट सबाई दिस किसे ना आंयदा। उच्चे टिल्ले पूत सपूता लभ्भदे ब्रह्मण गौड़, गौड़ ब्रह्मण दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत देवे वर, वर दाता आप अख्वांयदा। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, शब्द सुत उपाया। धुरदरगाही आया दौड़ा, लक्ख चुरासी वेख वखाया। गुर गोबिन्दे हरि साचा बौहड़ा, आपणा मेल मिलाया। दो जहानां लग्गी औड़ा, एका अमृत दो जहानां रिहा प्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत दे वर, लोकमाती रिहा वड्आया। शब्द सुत सच सिक्दार, एका एक रखाया। अट्ठे पहर दिवस रैण करे विचार, गऊ ग़रीब निमाणयां लए उठाया। हउमे हँगता देवे मार, शब्द खण्डा रिहा चमकाया। दर दर मंगदे फिरन भिखार, हरिजन सोए रिहा जगाया। भुक्खा नंगा अपर अपार, दिस किसे ना आया। जिस जन काया चोली रंगदा, एका रंग रिहा चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, वर घर एका नाम वखाया। हरि शब्द अधार, एका एक रखाया। जुग जुग वेखे पसर पसार, आप आपणा रूप वटाया। साध सन्त जीव उभार, साचा कर्म कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी धारा रिहा चलाया। साची धार हरि निरँकार, आपणी आप चलाईआ। जुग जुग लए मात अवतार, लोकमात वेख वखाईआ। राम रामा खेल अपार, दुष्ट हँकारी रावण मार मुकाईआ। सीता सुरती कर प्यार, भगत सुहेले लए मिलाईआ। अकाल मूर्ति इक्क आकार, आपणा आप कराईआ। आप उपाए आपे मेटणहार, आदि अन्त आप कराईआ। जुग जुग लेखा लिखणहार, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। मनमुख रखाए भरम भुलेखे, भरम गढ़ ना कोई तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, राम रामा रिहा वड्याईआ। राम रामा राम रमईआ, एका कर्म कमाया। जुग त्रेता पार करईआ, आपणा मुख छुपाया। द्वापर चलाई मात नईआ, वंञ मुहाणा इक्क रखाया। प्रगट होए शाम घनईआ, लहिणा देणा दए चुकाया। अर्जन जोड़ी जोड़ जुड़ईआ, इक्क ज्ञान सुणाया। धर्म राए दर कड्ढे वहीआ, आपणा लेखा रिहा वखाया। कोए ना दिसे साचा सईआ, बैठे मुख छुपाया। पुरख अबिनाशी डोबे नईआ, एका पूर भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, काहना कृष्ना रूप वटाया। शाम सुन्दर, सोलां कल कल धारया। लोकमात वेखे डूँघी कन्दर, लक्ख चुरासी पावे सारया। चार कुन्ट अन्धेरा दिसे धुँदड़, राज राजानां मन हंकारया। अन्तिम सुत्ते मन्दिर अन्दर, दुष्ट दर्योधन दए सँघारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रथ रथवाही आप अखवा रिहा। रथ रथवाही ग़रीब निवाजा, आप आपणी सेव कमांयदा। आप आपणा रच्चया काजा, सतिजुग त्रेता द्वापर

वेखण आंयदा। सीस युधिष्टर देवे ताजा, साची दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा मुख छुपांयदा। द्वापर अन्तिम पार किनारा, लोकमात वज्जी वधाईआ। कलिजुग लै ल्या अवतारा, घर साचे खुशी मनाईआ। मंगी मंग दर भिखारा, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। जूठ झूठ कर प्यारा, पंज तत्त नाल रलाईआ। हँकार विकार इक्क आधारा, माया ममता लई कुड़माईआ। धरत मात कर प्यारा, बैठा गोद आसण लाईआ। आप आपणा करे पसारा, चारों कुन्ट वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची भिच्छया झोली पाईआ। कलिजुग काली रक्ख धार, आपणा कर्म कमाया। जीवां जन्तां आप विचार, आपणा तत्त समाया। जूठ झूठ कर विहार, रसना गुण जणाया। इक्क भुलाए नर निरँकार, निरगुण दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग एका धन्दे लाया। पुरख अबिनाशी शब्द जणाए, कलिजुग कर परवानया। लक्ख चुरासी मस्तक लाउँणी झूठी छाही, मिल्या धुर फ़रमानया। बचया कोई रहिण ना पाई, दर दर घर घर वेख वखानया। त्रैगुण माया जाल विछाई, अन्तिम फास फसानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति आप समझानया। कलिजुग मात लै अवतारा, आपणा कर्म कमाया। दिवस रैण कर विहारा, आपणा समां सुहाया। एका मंगे मंग भिखारा, इक्क इकल्ला की करे विचारा, लक्ख चुरासी भेव ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ऐड़ा अथर्बण वेख घर, अल्ला नाल रलाया। ऐड़ा अल्ला कर त्यार, इलाबुत टिकांयदा। सच महल्ला इक्क पसार, संग मुहम्मद आप अल्लांयदा। चार यारी इक्क प्यार, एका मता पकांयदा। हू हू रही पुकार, एका नाअरा लांयदा। तूं तूं विसरे अन्त करतार, तेरा रूप सुहांयदा। आप आपणी किरपा धार, दोहां संग निभांयदा। संग मुहम्मद चार यार, कलिजुग मता पकाया। खेले खेल विच संसार, सखा सहाई आप अख्वाया। जूठा झूठा कर पसार, काया ठूठा रिहा भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपे वेखण आया। कलिजुग कूड़ा कूड़ कुड़यारा, चारों कुन्ट पसारया। जीव जन्त हाहाकारा, दिवस रैण रोवण ज़ारो ज़ारया। सतिगुर साचा पावे सारा, पारब्रह्म पुरख अपारया। नानक गुर ल्या अवतारा, हरि साचा सेवा ला रिहा। ऐका दित्ता नाम भण्डारा, लोकमात वरता रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुनेहड़ा इक्क सुणा रिहा। नानक गुर शब्द मलाह, एका एक रखाया। दिवस रैण दए सलाह, दो जहानां मेल मिलाया। पारब्रह्म प्रभ पिता माँ, आपणी गोद उठाया। सतिनाम साचा नाँ, लोकमाती रिहा धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दीवा एका बाती, हरि एका रिहा जगाया। एका बाती नाम जगाई, होए मात रुशनाईआ। नानक दर वज्जी वधाई, हरि गाए चाँईं चाँईंआ। हरि शब्द

होई कुड़माई, मिल्या मेल साचे माहीआ। आपे वेखे साचे थाँई, हर घट वेख वखाईआ। अंगद लहिणा लैणा झोली पाई, अन्तिम बैठा मुख छुपाईआ। अमर अमरापद इक्क विखाई, रामदासे होए सहाईआ। अर्जन लेखा आप लिखाई, आपे करे जणाईआ। हरिगोबिन्द हरि दए वड्याई, दो धारा वेख वखाईआ। हरिराए हरि दए सलाही, साचे मार्ग लाईआ। हरिकृष्न बाल निधाना, आपणी गोद उठाईआ। गुर तेग बहादर तेरा निशाना, लोकमात रिहा वखाईआ। दिल्ली दर हो कुरबाना, आप आपणा भेंट चढ़ाईआ। गोबिन्द गुर जोद्धा सूर बली बलवाना, बैठा खुशी मनाईआ। एका रक्खया पारब्रह्म चरन कँवल ध्याना, पुरख अकाल रिहा मनाईआ। पारब्रह्म वेखे मार ध्याना, आप आपणी दया कमाईआ। एका देवे धुर फ़रमाणा, साचे शब्द करे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नैनन नैणी दरस वखाईआ। नैनन नैणी नैणा देव, आपणा रूप वखाया। गुर गोबिन्द करी सेव, अलख अभेवा पाया। रसना लाया साचा मेव, अमृत मुख चुआया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाम खण्डा तेज प्रचण्ड, गोबिन्द तन छुहाया। नाम खण्डा तेज कटार, गोबिन्द हथ्थ उठाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, साचा घर सुहाईआ। आपे वेखे विच संसार, वेखणहार आप अख्वाईआ। शब्द सुनेहड़ा अपर अपार, गुर गोबिन्दे करे कुड़माईआ। पन्थ ख़ालसा कर त्यार, तेरी सेवक सेवा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दे रिहा समझाईआ। गुर गोबिन्द उठया जाग, प्रभ साचे आप जगाया। लोकमात लगाया भाग, हरिजन साचे लए तराया। आप आपणे हथ्थ रक्खी वाग, चारों कुन्ट रिहा दुड़ाया। फड़ फड़ हँस बणाए काग, साची चोग चुगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दे दित्ता वर, गोबिन्द गोबिन्द रूप समाया। गोबिन्द गुर दोए जोड़, प्रभ चरन करे निमस्कारया। पुरख अबिनाशी मात बौहड़, मंगे मंग भिखारया। दो जहानी ना कोई पैंडा लम्मा चौड़, ना कोई दिसे पार किनारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि शब्द विचोला विच रखा रिहा। शब्द विचोला मार फेरा, गोबिन्दे संग अलांयदा। उठ सिँघ शेर दलेरा, एका बुरका तन पहनांयदा। भरमां ढाह जगत डेरा, झूठी कंध मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा पन्ध मुकांयदा। गुर गोबिन्द एका धार, आपणी मात चलाईआ। पंचम मीता कर त्यार, पंचम भेंट चढ़ाईआ। शब्द खण्डा तेज कटार, आपणे हथ्थ रखाईआ। मंगे मंग वारो वार, गुरमुख साचे रिहा उठाईआ। जोद्धा सूर बली बलकार, सूरबीर आप अख्वाईआ। मनमुख जीव आपणा आप गए हार, गोबिन्दे साचे माण दवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। पंच प्यारा कर त्यार, एका रूप समाया। खेले खेल विच संसार, कलिजुग अन्तिम वेख वखाया। चारों

कुन्ट धुँदूकार, धर्म जैकार ना कोई कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, किला कोट गढ़ तुड़ाया। किला कोट हरि अन्तिम अन्त, अन्त तजाया। ना कोई दिसे चार दिवार कंध, दर दरवाज़ा ना कोई लगाया। आप मुकाया आपणा पन्ध, सरसा चरन छुहाया। गुरमुख साजण साचे चन्द, साची भेंट कराया। साढे तिन्न करोड़ लिख्या छन्द, सरसा तेरे विच समाया। कोई गा ना सके बत्ती दन्द, वेद पुराणां भेव ना पाया। खाणी बाणी ना वखाणे अगम्मी छन्द, आपणा लेखा आपणे हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धारी केसा नाम रखाया। आप मिटाई आपणी चिन्द, लेखा लेखे लाया। जोद्धा सूर वड मृगिन्द, नेत्र लेचन पेखे आपणी हथ्थीं आप सुटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दे दए वर, सरसा तेरा साचा सर, अन्तिम दए बणाया। गुर गोबिन्दे खुशी मनाई, मन्नया हरि हरि भाणया। सरसे तेरी भेंट चढ़ाई, सिँघ सूरबीर वड वड जवानया। आपणे हथ्थ कलम चलाई, लिख्या लेख धुर फ़रमानया। वाक भविख्त गया छुपाई, किसे हथ्थ ना आए वंञ मुहानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दे दित्ता वर, कलिजुग अन्तिम वरते तेरा भाणया। गुर गोबिन्दा पार किनारा, आपणा आप करांयदा। दक्खण दिशा वेख विचारा, आसण सिँघासण इक्क विछांयदा। हरिजन तेरे दर दुआरा, हरि गोबिन्द रूप वटांयदा। घोड़ा जोड़ा कल्गी तोड़ा अपर अपारा, हवन हवनी हवन करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दामन आपणा आप फड़ांयदा। गुर गोबिन्द लोकमात तज, साचे धाम सुहाया। शब्द सुनेहड़ा गुर शब्द मेहरवान, एका एक भगवान, जुग जुग वेखे मार ध्यान, वेखणहार आप अख्वाया। एका एक ब्रह्म ज्ञान, अगम्म ब्रह्म जणाया। हरिजन साचे चतर सुजान, आपे मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका रंगण रिहा रंगाया। हरि शब्द सरजीत, एका एक रखाया। जुग जुग रहे अतीत, ना मरे ना जाया। सदा सुहेला ठांढा सीत, एका रंग रंगाया। आपे वसया हस्त कीट, ऊँचां नीचां विच समाया। साजण साचा मीठ, एका रस दिखाया। आपे होया जगत अनडीठ, दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धराया। हरि शब्द जग ज्ञान, एका एक वखाया। सतिगुर पूरा हो मेहरवान, जीवां जन्तां झोली पाया। धुरदरगाही देवे दान, देवणहार आप अख्वाया। सन्त सुहेले कर पछाण, आप आपणा मेल मिलाया। आत्म जोती कोटन भान, दीपक रिहा जगाया। शब्द धुन सच्ची धुनकान, अनहद राग अलाया। काया मन्दिर सच मकान, भरमां डेरा लाया। भरमे भुल्ले जीव नादान, चारों कुंट फिरन हलकाया। पंच रलाए नाल शैतान, डंक डोरू आपणा वाहया। गुरमुखां बख्शे चरन ध्यान, चरन धूढ़ मस्तक लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, भेखाधारी भेख वटाया। भेखाधार हरि निरँकार, एका भेख वटांयदा। सृष्ट सबाई पावे सार, लोआं पुरीआं पार करांयदा। गुरमुख साचे लए उभार, आप आपणा वेस वखांयदा। मनमुख डोबे अद्ध विचकार, कलिजुग बेड़ा शौह दरया डुबांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा खेड़ा इक्क वसांयदा। साचा खेड़ा इक्क वसाए, हरि आपणी जोत जगाईआ। जन भगतां बेड़ा बन्नृ वखाए, नाम मुहाणा इक्क वखाईआ। सञ्झ सवेरा इक्क कराए, एका जोत करे रुशनाईआ। हेरा फेर चुकाए, वरन गोत भेव ना पाईआ। सम्मत तेरां पार कराए, वीह सद तेरी रुत्त सुहाईआ। नानक निरगुण गया गाए, रसना इक्क अलृाईआ। पुरख अबिनाशी सच सरनाई सरन आए, अन्तिम वेख वखाईआ। जोती जामा भेख वटाए, अगम्म अगम्मड़ी कार कमाईआ। लक्ख चुरासी वेख वखाए, दो जहानी डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे रिहा उठाईआ। लक्ख चुरासी वेखणहार, आदि पुरख अबिनाशी। करे खेल अपर अपार, प्रगट होए घनकपुर वासी। गोबिन्द गुर सीस दस्तार, कल्गी तोड़ा इक्क विखासी। नाम खण्डा तेज कटार, एका हथ्थ उठासी। दोवें रक्खे तिक्खी धार, गुरमुखां करे बन्द खुलासी। मनमुख जीवां करे ख्वार, धर्म राए दर देवे फाँसी। सम्मत चौदां करे विचार, साचे मण्डल पावे रासी। ब्रह्मा नेत्र रिहा उग्घाड़, दोए जोड़ होया दासन दासी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां मेल मिलाए पृथ्वी आकाशी। ब्रह्मा अन्तर अक्ख उग्घाड़, चारों कुन्ट वेख वखाईआ। पुरख अबिनाशी कर आकार, लोकमात रिहा जोत जगाईआ। निहकलंका लए अवतार, साचा डंका रिहा वजाईआ। शिव शंकर होया ख़बरदार, हथ्थ त्रिसूल उठाईआ। सम्मत चौदां तेरी धार, प्रभ साचा रिहा बंधाईआ। करोड़ तेतीसा दए हुलार, सुरपति राजा इन्द जगाईआ। पुरी अनन्द ख़बरदार, आपे रिहा कराईआ। नौ खण्ड पृथ्वी मारे मार, सत्तां दीपां शब्द जणाईआ। लक्ख चुरासी पैणी मार, ना सके कोई छुडाईआ। कलिजुग तेरा अन्ध अंध्यार, देवे तत्त मिटाईआ। संग मुहम्मद चार यार, रो रो देण दुहाईआ। अल्ला राणी हो ख्वार, मुख काली चुंनी पाईआ। वेद पुराणां आई हार, बैठण मुख छुपाईआ। खाणी बाणी करे विचार, भेव ना पाया हरि रघुराईआ। प्रगट होए नर निरँकार, सर्ब जीआं दा साचा साईआ। वेख वखाणे वारो वार, काया माटी भाण्डा काचा थिर रहिण ना पाईआ। गुरमुख साचे किरपा धार, एका साचा नाउँ दर गाईआ। वेख वखाणे मदीना मक्का, कलिजुग अन्तिम फल पक्का, उम्मत नबी रसूल दए खवाईआ। पंचम जेठ नाल रलाए बूरा कक्का, आप आपणी बणत बणाईआ। सलमल दीप लग्गे धक्का, हरि साचा वेख वखाईआ। गुर शब्द बणया भाई सका, बाहू बल रिहा वखाईआ। नक नकेल पाए नत्था, शाह सुल्तानां रिहा खिचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सम्मत चौदां पहली चेत्र कर त्यारी, प्रभ साचे जोत जगाईआ। दूजी चेत्र वेख विचारी, दो जहानी फेरा पाईआ। तीजे चेत्र अक्ख उग्घाड़ी, त्रैलोकां वेख वखाईआ। चौथे चेत्र कर त्यारी, चौथा पद रिहा उपाईआ। पंचम चेत्र पंच उधारी, पंचां रिहा मिटाईआ। छेवें चेत्र हरि छत्र झुलारी, घर छेवां इक्क सुहाईआ। सत्तवें चेत्र सति पुरख निरँजण जोत निरँकारी, सत्तां दीपां आप उठाईआ। अट्ठ चेत्र हरि गिरधारी, अट्ठां तत्तां भेव खुल्ह्हाईआ। नौ चेत्र नर निराहारी, सृष्ट सबाई बैठा अग्नी लाईआ। दस चेत जन भगतां वेखे काया खेत, दस्म द्वारी बैठा कुण्डा लाहीआ। दस इक्क ग्यारां जन भगतां देवे नाम सहारा, मनमुखां रिहा जलाईआ। दस दो बारां खेले खेल विच संसारा, हाढ़ सतारां रुत्त सुहाईआ। दस तिन्न तेरां तेरी धार, नानक रसना गया उचार, मोदीखाने तोले तोल अपार, तेरां तेरां रसना गाईआ। प्रगट होए हरि विच संसार, गुरमुख साचे आप अधार, एका बख्शे चरन प्यार, निर्मल जोती कर प्यार, शब्द धुन सच्ची धुन्कार, आत्म धुन उपजाईआ। प्रगट होया विच संसार, सृष्ट सबाई दए हुलार, सोहँ खण्डा अपर अपार, लक्ख चुरासी एका छाबे पाया। गुर गोबिन्दा नाल त्यार, धरत मात रही कुरलाईआ। जीव जन्त गऊ ग़रीब निमाणे करन हाहाकार, साधां सन्तां आत्म होई विभचार, नार दुहागण साचा कन्त ना कोई हंढाईआ। गुरमुख विरला सन्त सुहागण, आत्म उपजिआ इक्क वैरागण, नेड़ ना आई माया नागण, हरि चरन ओट रखाईआ। सम्मत चौदां गुरमुख विरले जागण, प्रभ चौदां चेत चौदां तबकां चौदां लोकां रिहा हिलाईआ। पन्दरां चेत हरि वेखे नेतन नेत, जीव जन्त जूठे झूठे पसू प्रेत, लक्ख चुरासी रिहा भवाईआ। सम्मत सोलां सोलां कल धार, प्रगट होए विच संसार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, निहकलंका डंक वजाईआ। निहकलंका डंक अपार, राज राजानां शाह सुल्तानां करे ख़बरदार, सुत्ता कोई रहिण ना पाईआ। निर्मल जोती कर आकार, आप आपणा वेख विचार, पुरख अबिनाशी बन्ने धार, कलिजुग तेरी रुत्त सुहाईआ। चेत सतारां सति सतिवाद, वेख वखाणे हरि ब्रह्माद, इक्क वजाए सोहँ नाद, साची धुन वजाईआ। शब्द जणाए बोध अगाध, भगत जनां हरि देवे दाद, मिले मेल मोहण माधव माध, विछड़ कदे ना जाईआ। कोटन कोट रहे अराध, कोटन कोट जीव विस्माद, कोटन कोट पान्धी चल चल रहे पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चेत सतारां कर विहार, कलिजुग तेरी वेखे काली धार, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाईआ। सति सतारां सति सतिवाद, आपणा रंग रंगांयदा। जीव जहानां रक्खणा याद, वेला गया हथ्थ ना आंयदा। गुरमुख मनमुख अन्त वरोले आप आपणे लए काढ, नाम मधाणा इक्क रखांयदा। जन भगतां लडाए साचा लाड, हरि आपणी गोद उठांयदा। इक्क इकल्ला अल्ला वाहिद गॉड, खुदी खुदाई सर्ब मिटांयदा। जोती

६४६ ०६ ६४६ ०६

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नरायण रूप वटांयदा। खुदी खुदाई होई जुदाई, अलख नूर छुपाया। प्रगट होया बेपरवाही, परवरदिगार आप अख्वाया। कलिजुग तेरा बण मलाही, बेड़ा रिहा चलाया। अठ्ठ अठारां वहाए एका धारी, एका धार वहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण रूप वटाया। आत्म भिच्छया एका पा, आपणी दया कमांयदा। दीपक जोती एक जगा, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। बजर कपाटी दए तुड़ा, आत्म कुण्डा लांहयदा। दस्म द्वारी लए मिला, आपणा लड़ फड़ांयदा। आत्म सेजा दए विछा, फूलन बरखा लांयदा। चार कुन्ट अमृत जल धारा रिहा वहा, ठण्ढी धारा धार वहांयदा। दर दरवाज़ा किसे दिसे ना, ग़रीब निवाजा आसण लांयदा। प्रगट होए देस माझा, जन भगतां रक्खे अन्तिम लाजा, बेमुखां पार किनारा इक्क वखांयदा। सम्मत सोलां पाए भाजा, चिट्टे अस्व चढ़या ताजा, दर दरबान ना कोई रखांयदा। भगत जनां हरि मारे आवाजा, दूर दुराडा आया भाजा, सम्मत चौदां आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण रूप समांयदा। निरगुण रूप निरँकार, सरगुण रिहा जगाया। शब्द सरूपी करे ख़बरदार, शब्द डंक वजाया। पवण पवणी कर प्यार, त्रै लोआं रिहा कराया। त्रैलोकी नाथ हरि करतार, करता पुरख आप अख्वाया। भगत सुहेला आप निभाए सगला साथ, संगी साथी आप अख्वाया। आपे राम रघुपत रघुनाथ, रावण दुष्ट हँकारी मार मिटाया। आपे काहन घनईआ कृष्न

सांतक रूप वेख वखाया। कलिजुग तेरा वध्या पाप, ना कोई माई ना कोई बाप, पिता पूत ना कोई अख्वाया। त्रैगुण माया चढ़या ताप, पंचां तत्तां रही जलाया। कोई ना जाणे आपणा आप, ब्रह्म पारब्रह्म दिस किसे ना आया। एका भुल्लया हरि हरि जाप, अजपा जाप ना किसे सुणाया। दुरमति मैल ना कोई धोवे दाग़, साध सन्त होए हलकाया। कोई ना चढ़ाए औखे घाट, दस्म द्वार ना डेरा लाया। जगी जोत ना काया माट, गुर का ज्ञान हथ्थ ना आया। अमृत आत्म ना मारी ठाठ, सर सरोवर ना नहावण नुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत चौदां वेख दर, सन्त सुहेले आप उठावण आया। सम्मत चौदां तेरा हट्ट पसार, लोकमात रखांयदा। चौदां तबकां मारे मार, एका खण्डा हथ्थ उठांयदा। चौदां लोकां वेख वखाण, एका सौखा नाउँ पढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां होए पहरेदार, सेवक सेव कमांयदा। चौदां लोक चौदां हट्ट, हरि साचा वेख वखांयदा। जन भगतां तन पहनाए साचा पट, सोहँ नाउँ रखांयदा। भेख मिटाए तीर्थ अठ्ठ सठ्ठ, गंगा गोदावरी ना कोए वखांयदा। जोत जगाए काया मन्दिर लट लट, जोत निरँजण सेवा लांयदा। साचा लाहा लैणा खट्ट, प्रभ चरनी सीस झुकांयदा। दुरमति मैल देवे कट्ट, आप आपणी दया

कमांयदा। मन्दिर काया जूठा झूठा जाणा ढठ्ठ, थिर रहिण ना पांयदा। त्रैगुण माया तेरा मठ, इक्की जेठ आप तपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द देवे वर, गोबिन्द काया विच समांयदा। गोबिन्द काया कर प्यार, हरि जोती इक्क टिकाईआ। सम्बल नगरी पावे सार, वरन गोत ना कोई रखाईआ। महल्ल अटल अचल्ल इक्क उसार, बैठा आसण लाईआ। सोहँ खण्डा तेज कटार, आपणे संग लिआईआ। नौ खण्ड पृथ्वी वेखे मार उडार, चिट्टे अस्व रिहा दुड़ाईआ। चिट्टा अस्व कर त्यार, सोलां कलीआं आसण लाईआ। सोलां कल नर निरँकार, लोकमाती जोत जगाईआ। लोकमाती वेख विचार, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। लक्ख चुरासी हाहाकार, कलिजुग अन्तिम दए दुहाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, धरत मात रही कुरलाईआ। धर्म राए करे पुकार, प्रभ साचे दया कमाईआ। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, राए धर्म रिहा सुणाईआ। राए धर्म खोल्ह किवाड़, अठाई कुण्डां बूहा लाहीआ। अठाई कुण्डां खोल्ह किवाड़, धर्म राए वेखे नेत्र नैण उठाईआ। लाड़ी मौत कर प्यार, धर्म सपुत्री रिहा जगाईआ। एका देवे सच प्यार, हथ्थीं मैहन्दी लाईआ। सूहा वेस अपर अपार, तन बस्त्र इक्क छुहाईआ। लोकमात मार झात, लक्ख चुरासी रही सगन मनाईआ। कलिजुग तेरी अन्धेरी रात, संग मुहम्मद चार यार अल्ला राणी तेरे नाल करे कुड़माईआ। जूठ झूठ माया ममता मोह हँकार बणे बरात, काल नगारा एका डंका रिहा वजाईआ। ना कोई वेखण ज़ात पात, वरन बरन ना कोई तकाईआ। भगत सुहेले गुरु गुर चेले दर द्वारे वेखे घाट, दर घर जा जा फेरा पाईआ। चौदां लोक चौदां हाट, हरि साचा रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत चौदां दिवस सतारां चेत्र महीना साची ख़ुशी मनाईआ। धर्म राए खोल्ह किवाड़, अन्तिम ख़ुशी मनाईआ। प्रभ अबिनाशी चरन द्वार, बैठा सीस झुकाईआ। चित्रगुप्त नाल प्यार, दे मति रिहा समझाईआ। लिख्या लेख अन्तिम वार, लहिणा देणा मूल चुकाईआ। मनमुख जीव होए गंवार, हरि हरि नाउँ गए भुलाईआ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, धरत मात करे सफ़ाईआ। सतिजुग साचे कर प्यार, आप आपणी दया कमाईआ। कलिजुग रोवे धाहां मार, दर दर दए दुहाईआ। दर द्वारे मुहम्मदी यार, ना कोई संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत चौदां तेरा घर, एका एक वखाईआ। सम्मत चौदां दर दरवाजा, एका एक खुल्हाया। प्रगट होए नर निरँकारा, गऊ ग़रीबां गले लगाया। कलिजुग तेरा रच्चया काजा, अन्तिम दए प्रनाया। प्रगट होए देस माझा, गोबिन्द गुर अख्वाया। जन भगत जगाए दया कमाए अनहद वजाए वाजा, एका ताल रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सम्मत चौदां तेरी धार बंधाया। सम्मत चौदां कर प्यार, हरि साची रचन रचाईआ। ब्रह्मा देवत

सुर दए हुलार, शिव शंकर रिहा हिलाईआ। बाशक तशका गल श्रृंगार, कंठ माला एका पाईआ। चारे मुख रिहा उग्घाड़, अट्ठे नेत्र वेख वखाईआ। सुरपति राजा इन्द करोड़ तेतीसा मीत मुरार, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। अन्तिम छड्डणा सभ घर बाहर, हरी मन्दिर रहिण ना पाईआ। प्रगट होया नर अवतार, जन भगतां रिहा वड्याईआ। मन मनवन्तर गए हार, रिखी केश दिस ना आईआ। दर दरवेश कर आकार, जोती जामा भेख वटाईआ। नर नरेश सच्ची सरकार, इक्क सिँघासण आसण लाईआ। ब्रह्मा विष्न महेष बैठे दर द्वार, कोटन कोट बैठे सीस झुकाईआ। गणपति गणेश ना पायण सार, ना कोई भेव खुल्हाईआ। वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी ना रिहा विचार, नानक निरगुण रूप समाईआ। ईसा मूसा अद्धविचकार, संग मुहम्मद बैठे आसण लाईआ। इक्क कबीरा कर दीदार, नानक मेल मिलाईआ। प्रभ अबिनाशी तेरा सच दरबार, दूसर कोई ना वेख वखाईआ। जोत सरूपी इक्क अकार, इक्क इकल्ला रिहा सुहाईआ। सच महल्ला कर त्यार, थिर घर नाउँ रखाईआ। आपे होया पहरेदार, चोबदार ना कोई वखाईआ। गुर पीर साध सन्त ना कोई अवतार, सति पुरख निरँजण एका बैठा जोत जगाईआ। आदि पुरख आदि अबिनाशा आपणा आप कर आकार, आप उपजाए पृथ्वी आकासा, लोआं पुरीआं बणत बणाईआ। ब्रह्मा शिव दए भरवासा, त्रैगुण माया दासी दासा, पंज तत्त करे वासा, लक्ख चुरासी जोत उपाईआ। आवे जावे लोकमात वेखे तमाशा, जुग जुग आपणी रचन रचाईआ। कलिजुग तेरा अन्त विनासा, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाईआ। ना कोई खाए मदिरा मासा, साचा मार्ग एका लाईआ। जन भगतां निज घर आत्म रक्खे वासा, आत्म ब्रह्म जणाईआ। मेल मिलाए सर्ब गुणतासा, सगली चिन्द मिटाईआ। मनमुख जीव ना धरन धरवासा, धीरज धीर गंवाईआ। जो जन चरन ध्यान प्रभ पूरन करे आसा, सगली चिन्द मिटाईआ। कोई ना जाए दर तों निरासा, सर्ब पूर्बक इच्छया आप कराईआ। ना कोई रती ना कोई तोला ना कोई मासा, गुर का शब्द ना कोई तोल तुलाईआ। ना कोई मण्डल ना कोई रासा, ना कोई वेखे हरि का वासा, कवण घर बैठा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत चौदां देवे वर, सच सिँघासण सेज विछाईआ। सच महल्ला कर त्यार, हरि आपणा आप टिकाया। आवे पुरख एकँकार, एका रूप समाया। लोकमात लए अवतार, जुग जुग बेड़ा बन्ने लाया। द्वापर त्रेता सतिजुग पार किनार, अन्तिम कलिजुग आया। ईसा मूसा मुहम्मदी यार, आप आपणा डंक वजाया। नानक गोबिन्द बंन्ही धार, पन्थ ख़ालसा मात रचाया। वेद पुराण रहे पुकार, गीता ज्ञान दवाया। वरन बरन रोवण हाहाकार, साची सरन ना कोई रखाया। ज़ात पाती झूठा नाती, जगत विवाद वधाया। मानस मानसा करन घाती, ब्रह्म ज्ञान ना ब्रह्म रखाया। किसे ना मिल्या कमलापाती, नारी कन्त

ना कोई हंढाया। कलिजुग रैण अन्धेरी राती, चारों कुन्ट अन्धेरा छाया। पारब्रह्म आपे वेखे मार झाती, वेला अन्तिम आया। आपे खोल्ह आपणी ताकी, अन्दर मन्दिर आपे बाहर होया। वेख वखाए पृथ्वी आकाशी, लक्ख चुरासी बन्दा ख़ाकी, पाकी पाक आप अख्वाया। एका अस्व चढ़या राकी, दहि दिशा रिहा दुड़ाया। जन भगतां अमृत जाम प्याए बण बण साकी, सोहँ प्याला इक्क ल्याया। जुगां जुगां दे विछड़े मेल मिलाए प्रभ देवण आया बाकी, दीन दयाला दया कमाया। आपे जाणे आपणा भविख्त वाकी, लेखा आपणे हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण रूप समाया। निरगुण तेरी धार, सरगुण शब्द चलाईआ। सरगुण शब्द अधार, लोकमात वज्जे वधाईआ। लोकमात ख़बरदार, गुरमुख साचे आप कराईआ। गुरमुख साचे कर त्यार, काया खेड़ा वेख वखाईआ। काया खेड़ा अपर अपार, नाम बीज साचा पाईआ। नाम बीज हरि निरँकार, अमृत आत्म तन मन सीज कराईआ। जन भगतां करे आपे रीझ, आपणी हथ्थीं श्रृंगार लगाईआ। दरस दिखाए नैण तीज, लोचन एका एक खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। हरिजन साचे मेल मिलावा, एका एक कराया। ग़रीब निमाणा जगत निथावां, प्रभ आपणी गोद उठाया। आप उठाए आपणीआं बाहवां, दीनां बंधप आप अख्वाया। हँस बणाए फड़ फड़ कावां, सोहँ साची चोग चुगाया। करे प्यार जिउँ पुत्तरां मावां, अमृत आत्म मुख सीर चुआया। सदा सुहेला रक्खे ठण्ढी छावां, तत्ती हाढ़ ना अग्न सताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख नुहाए साचे सर, चरन धूढ़ इक्क इशनान कराया। चरन धूढ़ सच इशनाना, हरि आपणा आप करांयदा। गुरमुख साचे चतर सुघड़ स्याणा, साचे थाउँ इक्क बहांयदा। एका रक्खे प्रभ चरन ध्याना, चरन चरनोदक मुख चुआंयदा। आप आपणी कर पछाना, आप आपणी बूझ बुझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां काया चोली रंग इक्क रंगाना, एका दूजा भउ चुकांयदा। एका दूजा भउ चुकाए, आप आपणी कल धारया। तीजा नैण खोल्ह वखाए, दरस दिखाए अगम्म अपारया। चौथे घर मेल मिलाए, सन्त सुहेले कर प्यारया। पंचम मीता आप अख्वाए, सति शब्द दुआरा हरि दरबारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे देवे वर, जन्म मरन मरन जन्म दु:ख मिटा रिहा। जन्म मरन जग तुट्टा नाता, पूरा सतिगुर पाया। नेड़ ना आए लाड़ी मौत कमज़ाता, दर द्वारे रहिण ना पाया। आप विकाया साचे हाटा, तन मन भेंट चढ़ाया। आए ना जाए आन बाटा, गर्भवास ना वेस रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां दया कमाया। भगत वछल गिरधार, हरि रघुराया। फड़ फड़ बाहों लाए पार, साचा मेल मिलाया। मनमुख सुत्ते पैर पसार, प्रभ गूढ़ी नींद सवाया।

गुरमुख नेत्र रहे उग्घाड़, आलस निन्दरा विच ना आया। दर द्वारे हरि घर साचे देवे वाड़, लक्ख चुरासी फंद कटाया। आपे होए पिच्छे अगाड़, जिस जन बत्ती दन्द गाया। मूर्ख मूढ़ भागां माढ़, आत्म अन्ध अज्ञान रखाया। गुरमुख विरले जोत जगाए बहत्तर नाड़, आकाश प्रकाश रखाया। मनमुख जीव चबाए आपणी दाढ़, सम्मत सोलां रिहा जगाया। आप उठाए अगम्मी धाड़, गुर गोबिन्द संग रलाया। माझा देस होए उजाड़, चारों कुन्ट पए दुहाया। धरत मात तेरा इक्क अखाड़, प्रभ साचा वेखण आया। मंगी मंग मौत लाड़, प्रभ साचे झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख गुरसिख गुर चेला आप अख्वाया। सतिगुर पूरा शब्द भरपूर, आदि अन्त अख्वाया। ना नेड़े ना दिसे दूर, हरिजन तेरे मन्दिर अन्दर डेरा लाया। जगत नाता कूड़ो कूड़, थिर रहिण ना पाया। जो जन मस्तक लाए चरन धूढ़, लिलाट लिलाटी दए जगाया। मनमुख मूर्ख ना समझे मूढ़, बैठे मुख छुपाया। शब्द वेलणे पीड़े बूड़, कलिजुग गेड़ा रिहा दवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर संगत देवे नाम वर, हरि का रूप उपाया। हरिसंगत हरि बलिहार, हरि गुण गाया। दरस अपर अपार, नैनन दरसाया। ना मरे ना पए जम्म, आवण जावण खेल रचाया। लेखे लाए काया चम्म, जिस जन साध संगत बहि बहि मंगल गाया। पार कराए दया कमाए जो जन रसना गाए सोहँ (दमा) दम, सो पुरख निरँजण विछड़ ना जाया। मन वैराग जगत त्याग नेत्र नीर छम छम, दुरमति मैल दए धवाया। ना कोई खुशी ना कोई ग़म, जो जन गुर चरन रिहा लिपटाया। जुग जुग बेड़ा रिहा बन्न्ह, बन्न्हणहार आप अख्वाया। आपे घड़े आपे लए भन्न, लक्ख चुरासी आप फिराया। गुरसिख चढ़ाए साचे चन्न, सतिजुग सच प्रकाश कराया। नौ खण्ड पृथ्वी खंन खंन, जेरज अंड वंड वंडाया। ब्रह्मण्ड प्रभ देवे डन्न, सोहँ खण्डा हथ्थ उठाया। जन भगतां राग सुणाए कन्न, एका अनादी नाद वजाया। जनणी जणया हरि जन, सुफल कुक्ख कराया। गुरमुख विरले आत्म गई मन्न, जिस जन आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, संगत देवे नाम वर, आत्म झोली पाया। जो जन आए दरस प्यास, प्रभ आत्म तृप्त बुझाईआ। जोत सरूपी कर प्रकाश, वेख वखाणे थाउँ थाँईंआ। चरन कँवल सच निवास, एका धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिसंगत सेवक सेवादार अख्वाईआ। सतिगुर पूरा सेवादार, गुर संगत सेव कमांयदा। दिवस रैण सेवादार, जिउँ अंगद अंग लगांयदा। नेड़ ना आए कोई चोर यार, शब्द खण्डा हथ्थ उठांयदा। अट्ठे पहर मारे मार, पंचम तत्त दुरकांयदा। जिस जन बख्शे चरन प्यार, साचा दुआरा इक्क वखांयदा। आप आपणी किरपा धार, जुग जुग विछड़े मेल मिलांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार, गुरमुखां पिछला मूल चुकांयदा।

धूँआं धुखे विच संसार, उलटा रुक्ख आप वखांयदा। मनमुख होया जीव गंवार, आत्म सुक्ख ना किसे दिसांयदा। माया ममता मोह तृष्ना भुक्ख विच (संसार), राज राजानां शाह सुल्तानां दर दर हाहाकार मचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत भगवन्त सन्त जन्त कन्त अन्त मेल मिलांयदा। अन्त कन्त साध सन्त मेल मिलावा, प्रभ आपणी दया कमाईआ। बणाए बणत धुरदरगाही नावां, ना कोई मेट मिटाईआ। पार कराए फड़ फड़ बाहवां, साचे बेड़े रिहा चढ़ाईआ। गुर पूरे सद बलि बलि जावां, गुरसिख साचे संग रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर शब्द हरि रूप, हर घट बैठा आसण लाईआ। शब्द गुर जगत सिक्दार, एका एक अख्वाया। खेले खेल विच संसार, खेलणहार दिस ना आया। मेले मेल भगत दुलार, आप आपणा मेल मिलाया। पूर्ब कर्मां कर्म विचार, जन्म जन्मा सुफल कराया। साचा धर्म प्रभ चरन द्वार, लोक लाज जगत तजाया। गुर पीर तरनी तरना, पार किनारा रिहा वखाया। गुरसिख गुर एका मांगे सरना, गुर मन्त्र एका नाम दृढ़ाया। आपे खोल्हणहारा हरना फरना, आप आपणा दरस दिखाया। प्रभ का भाणा गुरमुख विरले जरना, जीव जन्त होए हलकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग जुग आपणे भाणे विच समाया।

६५१ ६५१

०६ ०६

पारब्रह्म अलक्ख अलक्खणा, लख ना सक्कया जाईआ। ना भरया ना सक्खणा, ना डोले डोल डुलाईआ। ना नेत्र ना कोई अक्खणा, ना कोई बणत बणाईआ। जोती शब्दी हरि प्रतक्खणा, प्रतक्ख रूप वटाईआ। गुरमुख विरोले मक्खणा, लक्ख चुरासी छाछ बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अचरज कल आप वरताईआ। अचरज कल हरि निरँकार, एका एक वरतांयदा। भेव ना पायण जीव गंवार, भेव अभेदा आप अख्वांयदा। देवी देवा रहे पुकार, देवत सुर सर्ब सुणांयदा। सन्त सुहेले रोवण धाहां मार, धीरज धीर ना कोई धरांयदा। हरिजन वेखण नैण उग्घाड़, कवण कूटे प्रभ साचा जोत जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा जोग इक्क विखांयदा। साचा जोग चरन द्वार, एका एक रखाया। एका मेला धुर संजोग, आपणा आप कराया। देवे दरस हरि अमोघ, आत्म तृष्न मिटाया। दूई द्वैती हउमे कटे रोग, अन्ध अज्ञान मिटाया। रस रसना आत्म भोग, रस मीठा इक्क वखाया। सोहँ शब्द चुगाए साची चोग, हँस मुख रखाया। आदि अन्त ना होए विजोग, विछड़ कदे ना जाया। जूठा झूठा माया भोग, नाता रिहा तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे कलिजुग रिहा तराया। हरिजन तेरी अन्तिम कल, आपणी

बणत बणांयदा। सृष्ट सबाई भुलाए कर कर वल छल, अछल छल आप करांयदा। भेखाधारी बावन बल, जन भगत द्वारे मंगण आंयदा। आप आपणे अन्दर रिहा रल, दिस किसे ना आंयदा। सृष्ट सबाई वेखे झूठी झल, साचा संग कोई दिस ना आंयदा। नाम खण्डा एका भल, लक्ख चुरासी चमक आप डरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सरूपी वाहे हल्ल जड़ कोई रहिण ना पांयदा। ना कोई जड़ ना कोई चेतन्न, हरि चेतन्न चित ना आया। हरि आपे वेखे काया नेतन, नैनन नैण आप अख्वाया। जन भगतां होया मीतन, निज घर दरस दिखाया। लक्ख चुरासी जगत प्रीतन, अजून अजूनी रिहा फिराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे नेत्र आपे वेख, आपणा मेल मिलाया। नेत्र लोचन हरि वसाल, एका एक रखाया। गुरमुख साचे साजण लाल, फड़ फड़ बाहर कढाया। सोहँ शब्द बण दलाल, जगत विचोला इक्क रखाया। दर बंधाए काल महांकाल, प्रभ एका डोरी पाया। जन भगतां करे मात संभाल, प्रगट होए दरस दिखाया। एका देवे नाम सच्चा धन माल, चोर यार लुट्ट ना कोई लजाया। काया मन्दिर सच सच्ची धर्मसाल, हरि मन्दिर बैठा आसण लाया। इक्क सुहाए साचा ताल, सर सरोवर इक्क भराया। दिवस रैण सदा सुहेला करे प्रितपाल, प्रितपालक आप अख्वाया। लक्ख चुरासी तोड़े जगत जंजाल, आवण जावण फंद कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साजण मीत साचा चन्द चढ़ाया। गुरमुख साजण तेरी साची लोअ, लोकमात करे रुशनाईआ। हरि बिन अवर ना जाणे को, ना कोई वेखे वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी रही रो, नेत्र नीर वहाईआ। जूठा झूठा लग्गा मोह, पंच विकार वज्जी वधाईआ। गुरमुख विरला भेव ना जाणे सो, सो पुरख निरँजण रिहा जपाईआ। आपणा आप तजाया छब्बी पोह, गुरसिक्खां अग्गे भेंट कराईआ। जोती जामा प्रगट हो, हँ हँगता दए मिटाईआ। पुरख निरँजण सरगुण निरगुण एका दो, दोआ एका रूप वटाया। गुर गोबिन्दा फड़ अग्गे ल्या जोह, साचा रथ साचा शब्द चलाईआ। जन भगतां आत्म अन्दर बी रिहा बो, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। दुरमति मैल कढ्ढे धो, नाम रंगण इक्क चढ़ाईआ। आपे करे कराए सोई कलि हो, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोत निरँजण करे लोअ, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। हरिजन मेला शब्द धुन, आपणा आप कराया। जुग जुग पुकार सुण, भेखाधारी भेख वटाया। लक्ख चुरासी जाणे गुण अवगुण, गुण दाता आप अख्वाया। सृष्ट सबाई छाण पुण, गुरमुख साचे बाहर कढाया। शब्द सुहेले साचे चुण, एका चोग नाम चुगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर दाता दानी दरस पाया। सतिगुर शब्द ज्ञान है, गुरमुख विरले पाया। गुरमुख इक्क

ध्यान है, एका दूजा भउ चुकाया। तीजा नेत्र इक्क निधान है, दिस किसे ना आया। काया मन्दिर सच मकान है, पुरख अबिनाशी डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साजन आपे वेख वखाया। हरिजन साजन साचा मीता, एका एक अख्वांयदा। आपे बैठा विच अतीता, दिस किसे ना आंयदा। अमृत आत्म देवे ठण्ढा सीता, जो जन मंगता आंयदा। एका राग सुणाए छन्द माण रखाए अठारां ध्याए गीता, एका रंग रंगांयदा। वेखणहारा हस्त कीटा, ऊँचां नीचां एका धाम बहांयदा। साचा शब्द हरि अनडीठा, दिस किसे ना आंयदा। कलिजुग जीव जूठा झूठा पीसण पीठा, माया चक्की आप चलांयदा। पंज तत्त कौड़ा रीठा, ना कोई मात भनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे देवे वर, साची वस्त हरि झोली पांयदा। साची वस्त नाम अनमोल, जन भगतां आप दवांयदा। अन्दर मन्दिर कन्त कन्तूहल, साचा राह वखांयदा। नाद अनादी शब्द बोल, ढोल मृदंग वजांयदा। आत्म सेजा रिहा फोल, आपणी हथ्थीं आप करांयदा। सुरती शब्दी रिहा मौल, आपणे रूप समांयदा। आपे करे उलटा कौल, निझर धारा आप वहांयदा। मिले वड्याई उप्पर धवल धौल, जिस जन आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त दुलार, साचे धाम सुहांयदा। साचा धाम हरि निरँकार, एका एक सुहाया। जन भगतां करे प्यार, जुग जुग लए जगाया। वेखे विगसे विच संसार, वेखणहारा दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका खेल रखाया। निरगुण निराकार निरवैर अख्वाया। सरगुण देवे शब्द अधार, पंज तत्त विच समाया। पंज तत्त कर प्यार, दीपक जोती इक्क जगाया। दीपक जोती कर उज्यार, दिवस रैण कराया। मनमुख भुल्ले जीव गंवार, जोत निरँजण ना दर्शन पाया। आदि पुरख आप निरँकार, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाया। ना मरे ना पए जम्म, ना कोई सरूप वटाया। आपे जाणे आपणा कम्म, दूसर किसे भेव ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दर द्वार वेखण आया। कलिजुग तेरा बंक द्वार, हरि साचे नैण वखानया। चारों कुन्ट अन्ध अंध्यार, साचा चन्द ना कोई चढ़ानया। भरमे भुल्ले जीव गंवार, पारब्रह्म ना कोए पछानया। गुर का शब्द ना करे प्यार, आत्म उपजे ना ब्रह्म ज्ञानया। माया ममता मोह हँकार विकार, जीवां जन्तां मिल्या दानया। भरमे भुल्ले सर्ब संसार, हरि रंग गुरमुख विरले माणया। रैण अन्धेरी अन्ध अंध्यार, त्रैगुण माया ताणी बैठी ताणया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए वर, आप चलाए आपणे भाणया। साचा भाणा हरि करतार, एका एक रखांयदा। जुग जुग लए मात अवतार, हरिजन सोए मात जगांयदा। लक्ख चुरासी पावे सार, लोआं पुरीआं वेख वखांयदा। ब्रह्मा शिव

देवत सुर दए हुलार, सुरपति राजा इन्द उठांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी पावे सार, एका धार आपणी आप वहांयदा। कर्म कुकर्मां रिहा विचार, पूर्ब लहिणा झोली पांयदा। धर्म यति सति विच संसार, तीर्थ तट्ट दिस ना आंयदा। गुर मन्दिर अन्दर मस्जिद हाहाहार, साचा गृह ना कोई वसांयदा। पढ़ पढ़ थक्के वेद विचार, आत्म विद्या ना कोई जणांयदा। जगत विद्या कर प्यार, लहिणा मूल चुकांयदा। कोटी कोट भुल्ले विच नौ निध्या, माण ताण इक्क रखांयदा। प्रभ मिलण दी साची बिध्या, एका ओट हरि चरन कँवल ध्यान लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे देवे वर, साची सिख्या झोली पांयदा। साची सिख्या गुर मति है, एका एक रखाई। झूठा नाता पंज तत्त है, अन्त रहिण ना पाई। बहत्तर नाड़ ना उब्बल रत्त है, जो जन रसना रहे गाई। सति सन्तोख धीरज यति है, हरि चरन सीस झुकाई। आत्म बीज बीजे साचे वत्त है, वेला अन्तिम इक्क विखाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग रक्खणहारा पति है, पति पतिवन्ता आप अख्वाई। पति पतिवन्त हरि भगवन्त, जुगा जुगन्तर आप निभाया। रक्खे लाज साध सन्त, आप आपणे अंग लगाया। जूठे झूठे मेट मिटाए जीव जन्त, दुष्ट दूत कोई रहिण ना पाया। हरिजन मेल मिलाए साचा कन्त, कन्त कन्तूहला इक्क सुहाया। आत्म सेजा बणाए साची बणत, फूलन बरखा लाया। पारब्रह्म महिंमा अगणत, ना कोई लेखा लेख लिखाया। लोकमात प्रगटे जोत बार अनक, अंक बारी आप अख्वाया। प्रगट होए वासी पुरी घनक, घनकपुरी आप अख्वाया। गुरसिख उठाए जिउँ जन जनक, मन मणका आप भवाया। इक्क सुणाए शब्द अंक, दिवस रैद रिहा जगाया। आप सुहाए द्वार बंक, बंक द्वारी आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख दर, दर दुआरा इक्क सुहाया। दर दुआरा इक्क दरवेश, एका अलख जगाईआ। आपे नर आपे नरेश, आपणे रूप समाईआ। करनहारा जुग जुग वेस, एक अनेका लक्ख ना सके कोई राईआ। सहँसर मुख गाए शेश, दिवस रैण सेव कमाईआ। कोटन कोट ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, जिह्वा रहे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच सिँघासण पुरख अबिनासण इक्क इकल्ला उच्च महल्ला, प्रभ एका एक सुहाईआ। जोत सरूपी कर आकार, दीपक इक्क जगाया। ना कोई दिसे सज्जण मीत मुरार, सगला संग ना कोई निभाया। ना कोई चन्द सूरज ना दिसे तारा मण्डल, मण्डप कोई दिस ना आया। पृथ्वी आकाश ना कोई विहार, लोआं पुरीआं ना खुशी मनाया। लक्ख चुरासी ना कोई पसार, ना कोई खेल खिलाया। आप आपणा कर उज्यार, आपणे धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर थिर आसण डेरा लाया।

❋ १८ चेत २०१४ बिकमी करतार सिँघ दे गृह इक्की परिवारां दा इक्त्र होया पिण्ड भूमली ज़िला गुरदासपुर ❋

दीन दयाल दयानिध दाता, दयावान अख्वांयदा। जन भगतां देवे साची दाता, आत्म ब्रह्म जणांयदा। आपे होए पिता माता, आप आपणी गोद उठांयदा। मेट मिटाए अन्धेरी राता, एका जोत जगांयदा। धुरदरगाही सच सुग़ाता, आपणा नाम झोली पांयदा। चरन कँवल बंधाए साचा नाता, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ांयदा। प्रगट हो त्रैलोकी नाथा, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। भगत जनां हरि सगला साथा, जुग जुग संग निभांयदा। इक्क चलाए नाम राथा, रथ रथवाही आप अख्वांयदा। सोहँ शब्द अकथना अकाथा, अकथ कथा कहांयदा। सगल वसूरा हरिजन लाथा, जो जन नेत्र दर्शन पांयदा। सर्बकला आपे समराथा, अकल कल वरतांयदा। कलिजुग तेरा लहिणा देणा मूल चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथा, लक्ख चुरासी वंड वंडांयदा। वेख वखाणे नौ खण्ड, सत्तां दीपां फेरा पांयदा। आपे जाणे जेरज अंड, उत्भज सेत्ज फोल फुलांयदा। गुरमुखां नाम रिहा वंड, आत्म झोली आप भरांयदा। मनमुखां सुत्ता दे कर कंड, दिस किसे ना आंयदा। जूठ झूठ बत्ती दन्द पायण डण्ड, हरि का नाम ना कोई ध्यांअदा। प्रभ खेले खेल विच ब्रह्मण्ड, उच्चे टिल्ले वेख वखांयदा। मेट मिटाए भेख पखण्ड, काली रेख रहिण ना पांयदा। कलिजुग जीव नार दुहागण रंड, साचा कन्त ना कोई हंढांयदा। मनमुख जीवां आत्म भरया हँकार विकार घमंड, सीतल सांत ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकांत डेरा लांयदा। इक्क इकांत हरि इकल्ला, एका एक अख्वाया। शब्द वखाए सच महल्ला, आपणा आसण लाया। दीपक जोती एका बला, अज्ञान अन्धेर रहिण ना पाया। आपे होया अछल अछल्ला, वल छलधारी आप अख्वाया। शब्दी जोती आपे रला, दिस किसे ना आया। सोहँ फड़या हथ्थ विच भल्ला, लोआं पुरीआं वंड वंडाया। पुरख निरँजण पाए तरथला, हँ हँगता दए मिटाया। साचा मेला गोबिन्द डल्ला, कलिजुग अन्तिम दए मिलाया। पंचम जेठी बोले हल्ला, नौ खण्ड पृथ्वी दए हिलाया। जन भगतां दूई द्वैती मेटे सल्ला, एका नाम जपाया। निज घर आत्म साचा मल्ला, साची सेजा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे रिहा तराया। हरि चरन साची एका ओट, प्रभ चरन रखाईआ। गुर मारे शब्द चोट, बचया कोई रहिण ना पाईआ। मनमुख आलृणिओ डिग्गे बोट, ना सके कोई उठाईआ। दर दर घर घर अन्दर मन्दिर उच्चे टिल्ले पर्बत जंगल जूह उजाड़ पहाड़ बैठे कोटी कोट, साचा दर ना कोई खुलृाईआ। हरि का तीर निराला रिहा छूट, जन भगतां रिहा जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,

६५५
०६

वेखे मात लुकाईआ। मातलोक हरि वेखण आया, जोती जामा पांयदा। गुरमुख सोए आप जगावण आया, भेखाधारी भेख वटांयदा। शब्द गहणा तन पहनावण आया, लहिणा देणा लेख चुकांयदा। नेत्र नैणां दरस दिखावण आया, दरस अमोघ दिखांयदा। भाणा सहिणा दे मति समझावण आया, गुर मति इक्क रखांयदा। सोहँ शब्द रसना कहिणा, चार वरन एका धाम बहांयदा। ऊँच नीच रंक राजान शाह सुल्तान ना कोई रहिणा, प्रभ साचा हुक्म जणांयदा। जूठ झूठ पंज तत्त विकारी लोकमात अन्तिम कलि वहिणा, प्रभ साचा आप वहांयदा। कलिजुग लहिणा देणा, पिछला मूल चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, सोए मात उठांयदा। गुरमुख सोए आप जगाए, दिवस रैण सेव कमाईआ। मनमुख गूढ़ी नींद सवाए, तन वसाया इक्क विकारया। जोत निरँजण ना कोई जगाए, नौ द्वारे होए ख्वारया। गुरमुख मेला सहिज सुभाए, जिस जन बख्शे चरन प्यारया। डूँघी कन्दर पार कराए, देवे नाम अधारया। पंचम नादी सेव कमाए, अनहद धुन अपर अपारया। आत्म सेजा इक्क वखाए, जोत सरूपी कर आकारया। सर सरोवर इशनान इक्क कराए, दुरमति मैल उतारया। कागों हँस आप बणाए, आपणी किरपा धारया। राग नाद इक्क सुणाए, आत्मक धुन करे उज्यारया। विच ब्रह्माद हरि वेख वखाए, आवे जावे वारो वारया। साध सन्त हरि लए तराए, देवे दरस अपारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, खेले खेल अपारया। कलिजुग खेल खिलावण आया, दो जहानां वाली। नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां आप हिलावण आया, चली अवल्लड़ी चाली। जोती जामा भेख वटाया, शब्द रखाए मात दलाली। लक्ख चुरासी वेख वखाया, कलिजुग रैण अन्धेरी काली। औलीआ पीर शेख़ मुसायक रिहा मिटाया, हथ्थ उठाए एका भाली। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका रिहा डंक वजाया। वज्जे डंक हरि करतार, लोआं पुरीआं करे जणाईआ। ब्रह्मा होया ख़बरदार, लए इक्क अंगड़ाईआ। शिव शंकर नेत्र रिहा उग्घाड़, लोकमात वेखे बेपरवाहीआ। करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द रोवे ज़ारो ज़ार, उच्चीआं बाहीआं उठाईआ। कलिजुग काला करे हाहाकार, वेला अन्तिम आईआ। संग मुहम्मद चार यार, बैठण मुख छुपाईआ। अल्ला राणी जूठ झूठ प्यार, मुख काली चुन्नी पाईआ। ईसा मूसा छुट्टे मीत मुरार, साचा संग ना कोए निभाईआ। पुरख अबिनाशी जामा धार, गोबिन्द काया रूप वटाईआ। सोहँ खण्डा तेज कटार, आप आपणे हथ्थ रखाईआ। नाम तोड़ा सीस दस्तार, जोती जोड़ा मेल मिलाईआ। साचा घोड़ा कर श्रृंगार, सोलां कलीआं आसण लाईआ। लोआं पुरीआं करया बाहर, नीली छत्तों पार कराईआ। अगम्म अगम्मा मारे धाड़, दिस किसे ना आईआ। त्रैगुण माया देवे साड़, एका अग्नी लाईआ। लग्गे अग्ग तत्ती हाढ़, पंचम जेठी रिहा लगाईआ।

जन भगतां फिरे पिच्छे अगाड़, आप आपणी दया कमाईआ। मनमुख चबाए आपणी दाढ़, अन्तिम वेले मात खपाईआ। मंगे वर मौत लाड़, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। साचा मेला सतारां हाढ़, साची सईआ मंगल गाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क अखाड़, हरि साचा रिहा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए वर, वर घर एका एक एक वखाईआ।

हरि साजण जग मीत, जुग जुग अख्वाया। हरि साजण जग मीत, हरिजन साचे लए तराया। हरि साजण जग मीत, दो जहानां वेख वखाया। हरि साजण जग मीत, शब्द निशाना तीर चलाया। हरि साजण जग मीत, गुण निधाना इक्क रखाया। हरि साजण जग मीत, जन भगतां देवे धुर फ़रमाणा, एका नाउँ अलाया। हरि साजण जग मीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखाया। हरि साजण जग सजना, एका एक अख्वाया। चरन धूढ़ कराए साचा मजना, मस्तक टिक्का लांयदा। जूठे झूठे भाण्डे भरम भज्जणा, एका रंग रंगांयदा। काल नगारा एका वज्जणा, एका धुन उपजांयदा। चरन द्वारे गुरमुख बहि बहि सजणा, मनमुख दर दुरकांयदा। पी अमृत आत्म रज्जणा, तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि साजण जुग जुग इक्क अख्वांयदा। हरि साजण जग मीत, एका एकँकारया। जुग जुग चलाए आपणी रीत, आप आपणा कर पसारया। देवे नाम इक्क अतीत, निरगुण खेल खिला रिहा। आपे वेखे हस्त कीट, मिले श्री भगवानया। जिस जन बख्शे चरन प्रीत, दो जहानी पार करा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचा मीत एका एक अख्वा रिहा। हरिजन साचा मीत जोत निरँजणा, आपे जोत जगाईआ। आदि अन्त सतिगुर पूरे पड़दा कज्जणा, दूसर कोई दिस ना आईआ। अन्त नगारा सिर ते वज्जणा, धर्म राए दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि जन साजन मेल मिलाईआ। हरिजन साचा साचा मेल, एक एक कराया। आपे गुर आपे चेल, गोबिन्द रूप वटाया। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेल, दिस किसे ना आया। आपे वसे रंग नवेल, एका धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साजण मीत फड़ बाहों पार कराया। हरि साजण जग एक है, जोती जोत समाया। आपे बख्शे साची टेक है, वरन गोत मेट मिटाया। हरिजन करे काया बुध बिबेक है, दुरमति मैल धवाया। भरमे भुल्ले कोटी कोट है, भरम गढ़ ना कोई तुड़ाया। ना कोई चढ़े उप्पर चोट है, दस्म द्वार डेरा किसे ना लाया। हउमे काया हँगता खोट है, भरम गढ़ ना कोई तुड़ाया। माया ममता

तृष्ना ना भरी पोट है, काम क्रोध लोभ मोह फिरे हलकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि साचे रिहा उपाया। हरिजन साचे आप उपा, आपणी कल धारया। लक्ख चुरासी वेख वखाए, दिवस रैण सेव कमा रिहा। दहि दिशा चारो कुन्ट भरया पाप, डूँघी कन्दर डेरा लाया। अन्ध अन्धेर आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखाया। हरिजन तेरा साचा संग, हरि साचा आप निभांयदा। चरन द्वारे मंगी मंग, एका रंगण रंग चढ़ांयदा। नौ द्वारे पार लँघ, घर साचे बूझ बुझांयदा। शब्द रंगीला इक्क पलँघ, आत्म सेज विछांयदा। माया डस्सणी ना मारे डंग, पंचम नत्त तुड़ांयदा। अमृत आत्म धारा देवे गंग, सर सरोवर इक्क वखांयदा। दर दुआरा पार लँघ, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। आपे वेखणहारा दूई द्वैती भुक्ख नंग मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां खेवट खेट आप अख्वांयदा। खेवट खेटा हरि निरँकार, एका एक अख्वाया। बेटी बेटा हरिभगत दुलार, हरि आपणा आप बणाया। वेख वखाणे जगत संसार, भरमे भरम भुलाया। लिखी लेख ना हरि गिरधार, कलिजुग मोह फसाया। धारी केस ना पायण सार, मूंड मुंडाया दिस ना आया। दस दस्मेसा अपर अपार, आपणी जोत जगाया। शब्द सरूपी इक्क अकार, शब्दी आप समाया। जोत सरूपी इक्क अधार, जोती नूर सवाया। पंज तत्त कर प्यार, सच सिँघासण आसण लाया। आपे गुप्त आपे ज़ाहर, अन्दर बाहर आप अख्वाया। गुरमुख फड़ फड़ जाए तार, कलिजुग अन्तिम वेखण आया। एका देवे नाम अधार, एका दोआ भेव चुकाया। सोहँ अक्खर अपर अपार, सो पुरख निरँजण आप उपाया। चरन धूढ़ साचा मजन विच संसार, अठ्ठ सठ्ठ रिहा माण गंवाया। अन्दर मन्दिर सच्चा गुरद्वार, काया इक्क वखाया। नाता तोड़ नौ द्वार, घर दसवां दए दिखाया। आप आपणी किरपा धार, जन भगतां हिस्सा रिहा वंडाया। कलिजुग तेरी वहाई धार, नौवां खण्डां अन्धेरा छाया। सत्तां दीपां हाहाकार, ना कोई धीर धराया। लक्ख चुरासी रोवे ज़ारो ज़ार, दिवस रैण रही कुरलाया। धरत मात करे पुकार, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। खुल्ल्हे केस दुहागण नार, लाड़ी मौत रही शरमाया। कन्त सुहागी वरन कलिजुग तेरी अन्तिम वार, लक्ख चुरासी एका कन्त बणाया। धर्म राए खोल्ह द्वार, लोकमात बैठा राह तकाया। प्रभ अबिनाशी दोए जोड़ करे निमस्कार, बैठा सीस झुकाया। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, लहिणा देणा देवे मूल चुकाया। जन भगतां करे सच प्यार, शब्द गहणा तन पहनाया। एका देवे दरस अपार, आत्म तृष्ना भुक्ख मिटाया। फड़ फड़ बाहों लाए पार, विष्नूं वंसी आप अख्वाया। मनमुख जीव दए सँघार, शब्द खण्डा हथ्थ उठाया। सोहँ खण्डा तेज कटार, दो जहानी रिहा चलाया। गुरू गुर जोद्धा सूरबीर सच्ची सरकार, साची सेवा रिहा कमाईआ। लोआं

ਪੁਰੀਆਂ मारे मार, ब्रह्मा शिव आप उठाया। देवत सुर दए हुलार, थिर कोए रहिण ना पाया। इक्क इकल्ला एकँकार, एका रंग रंगाया। शब्द महल्ला कर त्यार, आपणी बणत बणाया। आपे होया पहरेदार, सगला साथ ना कोई रखाया। ना कोई पुरख ना कोई नार, पिता पूत ना कोई अख्वाया। जोती शब्दी इक्क प्यार, आप आपणी सेजा रिहा हंढाया। लोकमात हरि लए अवतार, जुग जुग खेल रचाया। सतिजुग त्रेता वेख विचार, द्वापर पार कराया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, निहकलंक लए अवतार, लक्ख चुरासी वेखण आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे मेटे औलीए पीर शेख़ां, पीर दस्तगीर रहिण ना पाया। पीर दस्तगीर वेख वखाए, ऐली अल्ला आप अख्वाया। बिस्मिल्ला रहिण ना पाए, एका तीर नाम चलाए, हू हू नाअरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणा भाणा आपणे हथ्थ रखाया। साचा भाणा हथ्थ करतार, आपणे हथ्थ रखाया। वरते वरतावे विच संसार, सर्बकल समरथ आप अख्वाया। लक्ख चुरासी मारे मार, जम की फाँसी गल पवाया। सन्त सुहेले लए उभार, दासी दास आप हो आया। पंडत काशी दए हुलार, वेद पुराणां रिहा जगाया। अञ्जील कुरानां आई हार, हरि अन्तिम वेख वखाया। खाणी बाणी रही पुकार, सच सुच्च किसे हथ्थ ना आया। कलिजुग काया कीट काम क्रोध लोभ मोह हँकार, पंचां बंध बंधाया। जूठ झूठ तन शृंगार, माया ममता गहणा तन पाया। खाली ठूठा जीव गंवार, काया कासा साचा नाम किसे खैर ना पाया। गए रूठ दर दरबार, मदिरा मास रसन लगाया। पारब्रह्म लहिणा देणा पूर्ब कर्म रिहा विचार, चित्रगुप्त सेवा लाया। धर्म राए वेखे वारो वार, भुल्लया कोई रहिण ना पाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, निहकलंक लए अवतार, जोती जामा भेख अपार, शब्द खण्डा तेज कटार, लक्ख चुरासी मारे मार, आप आपणी दया कमाईआ। प्रभ अबिनाशी दया कमाई, लोकमात वज्जी वधाईआ। जोती शब्द होई कुड़माई, एका रंग रंगाईआ। मिल्या मेला सहिज सुभाई, साचा धाम सुहाईआ। आदि अन्त ना होए जुदाई, विछड़ कदे ना जाईआ। गुरमुख नारी हरि गोबिन्द प्रनाई, नारी कन्त आप अख्वाईआ। अमृत धारा सिन्ध वहाई, तोट रही ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी कल वरताईआ। आपणी कल हरि वरता, अचरज खेल रचाया। लक्ख चुरासी भरम भुला, झूठे धन्दे लाया। माया ममता मोह वधा, हउमे रोग लगाया। काम क्रोध तन वसा, हरि का नाम भुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दर तेरा वेखण आया। कलिजुग तेरी चाल निराली, लोकमात वेख वखाईआ। मनमुख जीव दिसण खाली, साचा नाउँ किसे पास दिस ना आईआ। जूठे झूठे साध सन्त बणे माली, साचा फल ना कोई खवाईआ।

काया सुक्कदी जाए डाली, अमृत सिंच हरी ना कोई कराईआ। जोत निरँजण किसे ना भाली, दीपक दए जगाईआ। हरि का शब्द मिल्या साचा हाली, आत्म बीज दए बिजाईआ। गुर पूरा ना मिल्या करे रखवाली, पंजां चोरां दए दुरकाईआ। गुरमुख विरला बणे दर सवाली, प्रभ भिच्छया देवे पाईआ। शब्द वजाए साची ताली, अनहद राग अलाईआ। दो जहानां आपे वाली, डूँघी कन्दर पार कराईआ। सोहँ शब्द देवे मात दलाली, जन भगतां राह जणाईआ। सन्त सुहेले साचे भाली, रिहा मेल मिलाईआ। पूर्ब जन्म जन्मां घाल घाली, लहिणा देणा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साजण मेला सहिज सुभाईआ। हरिजन मेला सच द्वार, एका एक कराया। नाम खजाना भर भण्डार, आत्म झोली रिहा भराया। दाना बीना नर निरँकार, काया डोली रिहा चलाया। शब्द खण्डा तेज कटार, तन गात्रे रिहा लटकाया। आपे होया पहरेदार, शस्त्र बस्त्र इक्क वखाया। जोती शब्दी इक्क प्यार, एका रंग रंगाया। सति पुरख निरँजण साची धार, साची धारा रिहा वहाया। सत्तम घर पाया अपार, हरि छेवें चरन छुहाया। पंचम खोलू दर दरबार, राग अनादी इक्क अलाया। चौथा घर चौथा पद, सन्त सुहेले लए सद्द, आप आपणा दरस दिखाया। एका जाम प्याए अमृत मदि, उतर कदे ना जाया। दस्म द्वारी साची हद्द, अधविचकार रखाया। एका शब्द नाम ब्रह्मद, ब्रह्माद दए सुहाया। अक्खर वक्खर आदि जुगादि, ना कोई मेटे मेट मिटाया। जुग जुग सुणे जगत फरयाद, जन भगतां खेल रचाया। नित नवित्त कर कर हित, हरिजन साचे लए तराया। धन्न भाग दिहाड़ा महीना चेत, अठारां दिवस दए सुहाया। हरिजन तेरी वेखे काया खेत, साचा बीज बिजाया। मनमुख जीव सिर तत्ती रेत, कलिजुग रिहा अन्तिम पाया। लक्ख चुरासी जूठे झूठे जिन प्रेत, गुरमुख विरला गोबिन्द मेल मिलाया। शब्द गुर करे साचा हेत, सुरत स्वाणी लए प्रनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख दर, दर दरवेशा बण के आया। दर दरवेशा हरि निरँकार, जुग जुग अलक्ख जगांयदा। सन्त सुहेले लए उभार, आप आपणी सेव कमांयदा। नेत्र नैण दरस अपार, अगम्म अगम्मा रूप सुहांयदा। अलक्ख अलखणा कर प्यार, हो प्रतक्खणा वेख वखांयदा। गुरमुख वरोले साचे मक्खना, कलिजुग छाछ आप रखांयदा। गुरमुख कोए ना होए सक्खणा, प्रभ आत्म झोली शब्द पांयदा। कलिजुग अन्तिम उडणे कक्खणा, घर घर अग्न लगांयदा। हो सहाई किसे ना रक्खणा, मात पिता पूत नाता अन्त तुड़ांयदा। चारों कुन्ट अन्न्यार एका भखणा, अग्नी जोती लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत चौदां तेरा सगन मनांयदा। सम्मत चौदां तेरा सगन, प्रभ साचे आप मनाया। गुरमुखां करे आत्म मग्न, देवे नाम दान सवाया। दीपक जोती साचे जगन, अन्ध अन्धेर मिटाया। मनमुख जीव फिरदे

नग्न, शब्द पड़दा ना कोई पाया। अन्तिम कलिजुग माया दगन, तृष्ना ना कोई बुझाया। झूठे धन्दे सारे लग्गन, अन्ध अज्ञान वखाया। ना कोई चढ़े साचे गगन, सच प्रकाश ना वेख वखाया। ना कोई रंगे साची रंगन, नाम मजीठ ना कोई चढ़ाया। सतिगुर पूरा ना मात मंगण, भेख पखण्डा सीस झुकाईआ। अन्तिम भन्ने काची वंगन, थिर रहिण ना पाया। मानस देही होई भंगन, लक्ख चुरसी गेड़ रखाया। जन भगतां हथ्थीं बन्ने सोहँ तन्दन, धुरदरगाही लै के आया। आप रखाए आपणे अंगन, आपणी गोद उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे मेल मिलाया। हरिजन साचा सच सपूता, हरि वेखे वेख वखांयदा। वेखणहारा चारे कूटा, दहि दिशा फोल फुलांयदा। सोहँ तेरा साचा बूटा, फल फुलवाड़ी आप लगांयदा। सोहँ शब्द देवे साचा हूटा, पार किनारा इक्क वखांयदा। धर्म द्वारे राए धर्म बैठा रूठा, गुरमुखां कोलों शरमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साजण साची नींह इक्क इकीसा आप रखांयदा। हरिजन साजण साचे मीत, सोहे बंक द्वारया। इक्क सुणाए सुहागी गीत, साचा राग अला रिहा। काया करे ठण्ढी सीत, सीतल धारा मुख चुआ रिहा। चरन प्रीती सच प्रीत, एका राह वखा रिहा। आपे परखणहारा नीत, ना कोई पड़दा पा रिहा। ना कोई देहुरा ना कोई मसीत, काया मन्दिर अन्दर मेल

६६१ मिला रिहा। बैठा रहे इक्क अतीत, जोती जोत जगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे ६६१

०६ मेल मिला रिहा। हरिजन मेला साचे मन्दिर, आपणा आप कराया। भाग लगाए डूँघी कन्दर, दीपक जोत जगाया। आपे ०६

तोड़े बजर कपाटी वज्जा जन्दर, सोहँ खण्डा हथ्थ उठाया। पंज चोर भौंदे फिरन बन्दर, नेड़ कोई ना आया। आप बहाए साचे मन्दिर, शब्द सिँघासण इक्क विछाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साजण लए मिलाया। हरि साजन कर प्यार, मेल मिलाईआ। निर्मल जोती कर उज्यार, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। शब्द धुन अपर अपार, पंचम सेवा लाईआ। अमृत आत्म साची धार, चारों कुन्ट वहाईआ। सच सिँघासण कर त्यार, पावा चूल ना कोई रखाईआ। उप्पर बैठ सच्ची सरकार, गुरमुख साचे वेख वखाईआ। सुरत स्वाणी कर त्यार, आपणे अंग लगाईआ। मिल्या मेल शब्द साचे हाणी, साचा कन्त रही हंढाईआ। लेखा चुकया खाणी बाणी, जोती जोत समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सुहेले लए वर, एका धाम सुहाईआ। साचा धाम पुरख अबिनाशी, एका एक रखाया। आप आपणा करया दासी, दूसर कोई ना संग रखाया। ना कोई वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी पंडत काशी, मुल्ला शेख़ ग्रन्थी पन्थी कोई दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धुर धाम इक्क सुहाया। साचा धाम हरि अवल्लड़ा,

एका एक सुहाया। आपे बैठ इक्क इकल्लड़ा, आपणा रंग रंगाया। आप वसाए आपणा सच महल्लड़ा, साचा थाँ सुहाया। आप फड़ाया आपणा पलड़ा, आप आपणा लए प्रनाया। ना कोई पैसा ना कोई दमड़ा, माया ममता दिस ना आया। ना कोई हड्ड मास ना दिसे चम्मड़ा, पंज तत्त ना कोई वटाया। पारब्रह्म पुरख अबिनाशी अगम्म अगम्मड़ा, अगम्मड़े धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर द्वार इक्क सुहाया। बंक द्वारी आप प्रभ, एका एक अख्वाया। ना कोई तप ताप जाप हट्ट, पूजा पाठ ना कोई रखाया। ना कोई तीर्थ अट्ठ सट्ठ, गंगा गोदावरी दिस ना आया। ना कोई शिवदवाला मट्ठ, मस्जिद मन्दिर गुरद्वार मठ देहुरा मसीत ना कोई बणाया। ना कोई जप तप हट्ठ, ना कोई भेख वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क सुहाया। साचा घर इक्क सुहाए। आदि पुरख जोत निरँजणा। दूसर कोई दिस ना आए, ना कोई कराए मजना। तीसर ना कोई संग निभाए, साक सैण सजना। चौथे ना कोई मेल मिलाए, ना घड़या ना भज्जणा। पंचम मीता इक्क अख्वाए, धुरदरगाही बेपरवाही एका एक सज्जणा। थिर घर बैठा आसण लाए, आप आपणी बणत बणाए, ना घड़या ना भज्जणा। घड़े ना भज्जे हरि निरंकर, ना कोई बणत बणांयदा। ना चढ़े ना उतरे पार, मञ्झधार ना कोई वहांयदा। लोआं पुरीआं ना कोई संसार, विकार हँकार ना कोई रखांयदा। राज राजान शाह सुल्तान ना कोई दर दरबार, दोए जोड़ ना सीस कोई झुकांयदा। ना कोई पीण ना कोई खाण, ना कोई जाम प्यांअदा। ना कोई माण ना अभिमान, ना कोई ताण चुकांयदा। ना कोई पुण ना कोई छान, सच झूठ ना कोई जणांयदा। ना कोई पवण ना कोई मसान, ना कोई रूप वटांयदा। एका जोती श्री भगवान, आपणी जोत जगांयदा। उप्पर बैठे सच्चे अस्थान, आपणा आसण लांयदा। धुरदरगाही सच मकान, चार दिवार कोई दिस ना आंयदा। छप्पर छन्न ना कोई निशान, ना कोई बाडी बणत बणांयदा। ना कोई देवे ना कोई मंगे दान, ना कोई झोली डांयदा। ना कोई धूढ़ ना इशनान, ना मजन कोई करांयदा। जोत सरूपी इक्क भगवान, घर आपणे आप सुहांयदा। आपणा घर आप सुहाया, पारब्रह्म अबिनाशा। दर द्वार दिस ना किसे आया, भेव ना पावे पृथ्वी आकाशा। गुर पीर साध सन्त अवतार मात उपाया, एका देवे शब्द भरवासा। आप आपणा नूर टिकाया, देवे पवण स्वासा। शब्द सुनेहड़ा रिहा घलाया, निज घर आत्म करया वासा। नानक गोबिन्द सेवा लाया, प्रभ देवे सच भरवासा। कलिजुग अन्तिम दए दुहाया, जीव हँकारी मदिरा मासा। धरत मात रही कुरलाया, विभचारी वेखण मात तमाशा। प्रभ अबिनाशी दया कमाया, धर्म राए हुक्म सुणाया, हथ्थ रखा जम का फासा। निहकलंक जामा पाया, साचा डंक रिहा वजाया, राउ रंक रिहा उठाया, गुरमुखां देवे चरन भरवासा। सम्मत चौदां रुत्त सुहाया। पारब्रह्म अबिनाशी

अचुत, लोकमात डेरा लाया। वेख वखाए चारे कुन्ट, दहि दिशा फेरा पाया। तीर निराला रिहा छुट्ट, रसना चिल्ले आप चढ़ाया। नौ खण्ड पृथ्वी पाए फुट्ट, आपणी बिध आपणे हथ्थ रखाया। सत्तां दीपां पए लुट्ट, पंजां चोरां रिहा कराया। मनमुख जीवां जड़ देवे पुट्ट, इक्क हुलार लगाया। धर्म राए दर देवे सुट्ट, लाड़ी मौत नाल प्रनाया। लहिणा देणा चुक्के जूठ झूठ, अन्त हिसाब चुकाया। सन्त सुहेले जुग जुग विछड़े गए रुठ्ठ, प्रभ साचा मेल मिलाया। पुरख अगम्मा गया तुठ्ठ, शब्दी जोड़ जुड़ाया। आप कराए एका मुठ्ठ, एका इक्की पाया। लुकया रहिण ना देवे कोई गुठ्ठ, साची सिक्खी रिहा बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोहँ रक्खी धार तिक्खी, विरला पार कराया। सोहँ तेरी तिक्खी धार, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। भरमे भुल्ले जीव गंवार, भरम गढ़ ना कोई तुड़ाईआ। माया ममता कर प्यार, रसन करी हलकाईआ। मिल्या मेल ना गोबिन्द मीत मुरार, रैण अन्धेरी छाईआ। लुट्टया जाए अन्तिम घर बाहर, पंचम रहे राह तकाईआ। ना कोई कन्त ना कोई नार, पिता पूत ना कोई अख्वाईआ। भैण भ्राता झूठ प्यार, कलिजुग दए दुहाईआ। धी जवाई हाहाकार, आत्म सुख ना कोए उपजाईआ। कुँवार कन्याा कर श्रृंगार, आपणी पति गंवाईआ। लक्ख चुरासी विभचार नार, गुरमुख विरला कन्त हंढाईआ। शब्द सुहागण करे प्यार, साचे कन्त सेव कमाईआ। गुरमुख सोए जागण विच संसार, मनमुख गूढ़ी नींद सवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर निरवैर रूप समाईआ। निरवैर निरगुण हरि निरँकार, निज घर आत्म वसया। सुणे सुणाए सच पुकार, धुरदरगाही आए नस्सया। मनमुख सुत्ते पैर पसार, आत्म रैण अन्धेरी मस्सया। गुरमुख रसना रहे उचार, गुर पूरे मार्ग दस्सया। जोत निरँजण कर उज्यार, करे प्रकाश कोटन कोट रवि सस्सया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, भगत जनां दे हिरदे वसया। देवे दरस अगम्म अपार, दूई द्वैती लाहे विसया। तन पहनाए साचा हार, दिवस रैण कोल बहि बहि हस्सया। गुरमुख तेरा सच प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, तीर निराला एका कसया। तीर निराला तेज कटारी, हरि एका एक रखाईआ। एका वेखे वड्ड संसारी, राज राजानां रिहा जगाईआ। खाली करे वड भण्डारी, सेठ सिठाणे रिहा मिटाईआ। गऊ ग़रीबां पावे सारी, आप आपणे गले लगाईआ। दिवस रैण बणे भिखारी, मंगण दर इक्क बेपरवाहीआा। पुरख अबिनाशी पैज संवारी, होए मात सहाईआ। सम्मत चौदां कर त्यारी, चारों कुन्ट वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी पावे सारी, धीरज धीर ना कोई धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, खेले खेल खिलारी, आपणी दया कमाईआ। भिन्नी रैनड़ीए तेरी धन्न कमाई, हरि हरि मंगल गाया। भगत जनां दर वज्जी वधाई, सतिगुर पूर पाया।

गुर शब्द होई मात कुड़माई, साचा सगन मनाया। सखीआं मिल मिल गायण चाँईं चाँईं, आप आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे रिहा जगाया। भिन्नी रैनड़ीए तेरी साची रैण, जन भगतां मिले वड्याईआ। दरस पेखण लोचन नैण, जगत तृष्न मिटाईआ। अन्त ना पैण डूँघे वहिण, गुर पूरा लए बचाईआ। आपे होया साक सज्जण सैण, माया ममता भाई भैण आप अख्वाईआ। जुग जुग चुकाए लहिणा देण, जगत विछड़े मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे तेरा दर दुआरा रिहा सुहाईआ। भिन्नड़ी रैण कर सलाह, संग रलाया पुरख अबिनाशी जगत मलाह, लोकमाती फेरा पाया। दो जहानी पकड़े बांह, एका पल्लू नाम फड़ाया। सदा सुहेला देवे ठण्ढी छाँ, सिर आपणा हथ्थ उठाया। सोहँ जपाए साचा नाँ, सतिजुग साचा मार्ग लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भिन्नड़ी रैण तेरा दर सुहाया। भिन्नड़ी रैण धुरदरगाह, गुरमुखां मेल मिलाया। आप कटाए जम का फाह, लक्ख चुरासी गेड़ कटाया। काची माटी ना कोई वसाह, थिर रहिण ना पाया।जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिसंगत तेरा साचा मेल मिलाया। हरिसंगत हरि कर प्यार, आपणी दया कमाईआ। चरन कँवल इक्क प्यार, साची रीती रिहा सिखाईआ। वरन बरन भेव निवार, ऊँच नीच एका धाम बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन जन हरि आपणे रंग समाईआ। सति पुरख निरँजण हरि निरँकार, एका कार कमांयदा। सोहँ शब्द सच सिक्दार, लोकमात बणांयदा। सतिजुग होवे पहरेदार, साचा संग निभांयदा। चार वरन इक्क द्वार, ऊँच नीच एका धाम सुहांयदा। एका एक वखाए मन्दिर मस्जिद गुरुद्वार, दूसर कोए दिस ना आंयदा। आप जाणे मूंड मुंडाए केसाधार, हर घट वेख वखांयदा। एका बख्शे नाम अधार, एका राह चलांयदा। सच सुच्च कर विहार, जूठ झूठ मेट मिटांयदा। नाम खण्डा तेज कटार, लक्ख चुरासी तन पहनांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क प्यार, आपणा आप करांयदा। सत्तां दीपां इक्क विहार, हरि शब्दी बणत बणांयदा। ना कोई राज राजान शाह सुल्तान, विच जहान दिस ना आंयदा। एका एक श्री भगवान, आपणी बणत बणांयदा। धर्म झुलाए सच निशान, लोकमात आप उठांयदा। जीआं जन्तां पाए आन, साधां सन्तां दे मति समझांयदा। एका अक्खर सारे गान, एका दूजा भउ चुकांयदा। ना कोई मढ़ी ना कोई मसाण, ना कोई गोर पूज पुजांयदा। ना कोई शिव शंकर ब्रह्मा करे ध्यान, करोड़ तेतीस ना कोई मनांयदा। गणपति गणेश ना वेख वखाण, ना कोई सीस झुकांयदा। ना कोई वेद पुराण गीता ज्ञान, ना कोई शास्त्र सिमरत वेख निधान, ना कोई ओट रखांयदा। ना कोई अञ्जील ना कुरान, ना कोई सपारे अलांयदा। ना मुहम्मद ना निशान, अल्ला नाअरा

ना कोई लांयदा। ना कोई खाणी ना कोई बान, ना कोई राग छतीसा गांयदा। ना कोई ज्ञानी ध्यानी वड विद्वान, जगत विद्या माण रखांयदा। ना कोई माण ना अभिमान, अन्ध अज्ञान रहिण ना पांयदा। ना कोई ठग्ग चोर यार जगत शैतान, बेईमान दिस ना आंयदा। ना कोई गोपी ना कोई काहन, ना कोई मण्डल रास रचांयदा। ना कोई सीता ना कोई राम, राम रामा रूप समांयदा। ना कोई तीर ना कोई बाण, ना कोई खण्डा हथ्थ उठांयदा। ना कोई झुलाए जगत निशान, ना कोई मन्दिर अटल रखांयदा। ना कोई अमृत आत्म करे पान, ना कोई मार्ग लांयदा। ना कोई विद्या ना कोई ज्ञान, ना ध्यान रखांयदा। ना कोई पीण ना कोई खाण, मदिरा मास दिस ना आंयदा। करे कराए पुण छाण, हरि जोती जामा पांयदा। इक्क रखाए नाम बिबान, लोआं पुरीआं आप उडांयदा। सन्त सुहेले वेख वखाण, आपणे अंग लगांयदा। आपे होया जाणी जाण, जानणहार आप अख्वांयदा। गऊ ग़रीबां देवे माण, आपे गले लगांयदा। राज राजान फिरन हैरान, दर दरबान कोई दिस ना आंयदा। माया ममता तुट्टे माण, त्रैगुण माया ख़ाक रुलांयदा। सोहँ शब्द फड़ मधाण, सागर सिन्ध रिड़क विखांयदा। लोआं पुरीआं एका आण, आपणी आप रखांयदा। कलिजुग अन्तिम लौहण आया मुकाण, सम्मत चौदां वंड वंडांयदा। गुणवन्ता हरि गुण निधान, भेख पखण्डा मात मिटांयदा। देवे दंडा दो जहान, सोहँ खण्डा हथ्थ उठांयदा। कलिजुग तेरा अन्तिम कंडा, नेत्र खोल्ह मार ध्यान, ना कोई पार लँघांयदा। मनमुख पूजण करीर जंडा, देवी देव मुख छुपांयदा। खेले खेल विच ब्रह्मण्डा, गुर पीर आपणे पेटे पांयदा। आदि अन्त ना होया कदी रंडा, एका एक सुहागी कन्त अख्वांयदा। सोहँ फड़ चण्ड प्रचण्डा, नौ खण्डां वेख वखांयदा। मनमुख जीव देवे दंडा, लुकया कोई रहिण ना पांयदा। आपे वेखे जेरज अंडा, उत्भज सेत्ज फोल फुलांयदा। जन भगतां कराए साची वंडा, एका इक्की अन्तिम पांयदा। नाम निधान एका वंडा, हरि साचा झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साची गोली इक्क रखांयदा। हरिजन तेरा शब्द जैकार, चार कुन्ट सुणाया। दहि दिशा हरि वेख विचार, भेखी भेख वटाया। राज राजान इक्क द्वार, गऊ ग़रीबां मेल मिलाया। आपे बैठा अद्धविचकार, जगत विचोला बण के आया। दो जहानी वेख विचार, हरिजन साचे लए जगाया। शब्द कानी तीर कमान, रसना चिल्ले रिहा चढ़ाया। मुगल पठाणी कर त्यार, साचा रंग रंगाया। वेद विदांती करन विचार, वड विद्वानी जगत विद्या मूल ना भाया। कोई ना दिसे ब्रह्म ज्ञानी, भारत खण्डी वेख वखाया। नौ खण्ड पृथ्वी जगत दिवाली, दीवा सच ना किसे जगाया। रसना पढ़ पढ़ थक्के बाणी, साचा बाण किसे ना लाया। माया राणी बैठी चादर ताणी, मनमुखां बैठा पड़दा पाया। आपे वेखे जेरज अंडी खाणी बाणी, हरि वेखणहार अख्वाया। कवण गुर

६६५
०६

कवण चेला कवण सुघड़ स्याणी, कवण साचा घर रिहा सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा राह चलाया। सच राह जगत जगदीस, एका एक चलांयदा। मनमुख जीव जाए पीस, ना कोई मात बचांयदा। चार वरन इक्क हदीस, छत्र झुले प्रभ साचे सीस, दूसर कोई दिस ना आंयदा। चरन कँवल सच्ची धूढ़, मूर्ख मूढ़ चतर सुघड़ बणांयदा। काया चोली रंग चाढ़े गूढ़, जो जन दर्शन पांयदा। धर्म राए दर कटे जूड़, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिजन साचे दर्शन नैण, वड वड वड्याईआ। जप तप हट्ठ सति प्रभ चरन द्वारे बहिण मंगदे रहिण, पूरी भिच्छया कदे ना पाईआ। अभ्यास सन्यास वैराग त्याग ना गया जाग, कलिजुग गूढ़ी नींद सवाईआ। दर दर घर घर मन्दिर अन्दर लग्गी आग, पंचम रहे लगाईआ। माया राणी डस्से डस्सणी नाग, आप आपणा सिर उठाईआ। काम क्रोध हथ्थ पकड़ी वाग, चारों कुन्ट रिहा भवाईआ। दुरमति मैल लग्गा दाग़, ना कोई मात धवाईआ। हँस बुद्धी होई काग, जिह्वा काग वांग कुरलाईआ। गुर चरन धूढ़ मिल्या ना मजन माघ, अट्ठ सट्ठ फिरदे देण दुहाईआ। शब्द ना बन्नृया किसे ताग, जूठा झूठा सीस गुंदाईआ। मिल्या मेल ना कन्त सुहाग, आत्म सेज ना किसे हंढाईआ। दर दर घर घर चारों कुन्ट रहे भाग, आत्म धीर ना कोई धराईआ। गुरमुख विरले चरन कँवल प्रभ गए लाग, प्रभ आपणा लड़ फड़ाईआ। अन्तिम कलिजुग गए जाग, हरि साचा आप जगाईआ। इक्क उपजाए नाम वैराग, जगत चिन्ता दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चार वरनां इक्क जणाईआ। चार वरनां हरि उपदेश, एका एक कराया। ना कोई नर ना कोई नरेश, राज राजान रहिण ना पाया। पारब्रह्म गुर इक्क आदेश, लक्ख चुरासी रिहा तराया। नौ खण्ड पृथ्वी होए दर दरवेश, सत्तां दीपां सीस झुकाया। पुरख अबिनाशी तेरा एका वेस, अनेका रंग वटाया। संग रखाया गुर दस्मेश विशेख, मन्दिर गुरुदुआरा ना कोई दिखाया। पकड़ उठाए धारी केस, दिस किसे ना आया। आप सुहाई बाशक सेज, सागों पांग हंढाईआ। कोटन कोट ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, दर द्वारे बैठे सीस झुकाया। लच्छमी दर घर साचे करे वेस, निव निव चरनी सीस झुकाया। चरन झस्से दर हमेश, हरि साची सेवा लाया। कलिजुग माया तेरी कोई ना चले पेश, प्रभ देवे ख़ाक रुलाया। पंज तत्तां छड्डणा पैणा काया देस, हरि साचा रिहा छुडाया। अन्तिम रोवण गल खुल्हड़े केस, ना सके कोई बचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे मेल मिलाया। चार वरन सच सलाह, हरि आपणी आप जणांयदा। सतिगुर पूरा इक्क मलाह, भवजल पार करांयदा। दो जहानां पकड़े बांह, जम का फंद कटांयदा। आपे पिता आपे माँ, आप आपणी

गोद उठांयदा। हँस बणाए फड़ फड़ काँ, दुरमति मैल गंवांयदा। इक्क जपाए साचा नाँ, सोहँ नाउँ उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, चार वरन एका सरन एका धाम सुहांयदा। चर वरन इक्क द्वार, हरि एका धाम सुहाया। जुग जुग लए मात अवतार, आपणे धन्दे सृष्ट सबाई रिहा लगाया। देवे वर सच्ची सरकार, देवणहार आप अख्वाया। गुरमुख साचे लए उभार, मूर्ख मूढ़ पापी गन्दे दए खपाया। जिस जन बख्शे चरन प्यार, आत्म अन्धे ज्ञान शब्द दए जणाया। आपे होए वड बख्शिंदे, मेहरबान आप अख्वाया। मनमुख जीव लाए झूठे धन्दे, निन्दक निन्दया रिहा लगाया। दो जहानी वज्जे जिंदे, गुर चरन दुआरा दिस ना आया। धर्म राए दी पाए बन्दी, बन्दीखाना इक्क रखाया। गुर संगत विच रक्खी जिस वासना गन्दी, लक्ख चुरासी विच फिराया। जो जन रसना गायण बत्ती दन्दी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान होए सहाया। एका चढ़या गुरसिख चन्द नौ चन्दी, अन्ध अन्धेर मिटाया। सोहँ शब्द सुहागी छन्दी, कन्त सुहाग इक्क सुणाया। गुरसिख तेरी सुरत गुर चरन द्वारे रो रो कहिंदी, विछड़ कदे ना जाया। ब्रह्म रंगण लाए मैहन्दी, चरनी सेव कमाया। प्रभ दा भाणा सिर ते सहिंदी, लक्ख लक्ख शुकर मनाया। साध संगत साची सईआं उठ उठ कहिंदी, वेला गया हथ्थ ना आया। वेखे खेल दिशा लहिंदी, प्रभ साची खेल रचाया। अञ्जील कुरान इक्ठी हो हो बहिंदी, एका मता पकाया। अमाम मुल्ला शेख़ मुसायक मसले पढ़ पढ़ वेखण अमाम मैहन्दी, केहड़ी कूटे डेरा लाया। गुर संगत प्रभ चरन द्वारे इक्ठी हो हो बहिंदी, पहली चेत्र खुशी मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत तेरे अग्गे सीस झुकाया।

❊ १६ चेत २०१४ बिक्रमी गिरधारा सिँघ दे गृह इक्की परिवार इक्ठे होए पिण्ड बलोवाली ज़िला अमृतसर ❊

अकल कला भरपूर, आप अख्वाया। नाद अनादी तूर, एका शब्द अलाया। गुरमुखां सद हाज़र हज़ूर, नेत्र नैणां दर्शन पाया। आपे वसे नेड़े दूर, मनमुखां दिस ना आया। जगत नाता कूड़ो कूड़, थिर कोई रहिण ना पाया। जिस जन बख्शे आपणी चरन धूढ़, दुरमति मैल दए गंवाया। आप मिटाए दया कमाए मूर्ख मूढ़, एका ज्ञान दवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटाया। अकल कला भरपूर, हरि निरंकारया। जन भगतां देवे नाद शब्द साची तूर, अनहद धुन उपजा रिहा। अमृत आत्म बख्शे भूर, सांतक सति वरता रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिला रिहा। हरिजन साचे साचा मेला, जुग जुग आप कराया। आपे गुरू आपे चेला,

चेला गुर आप अख्वाया। भगत जनां हरि सज्जण सुहेला, लोकमाती भेख वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ज़ात पाती भेख मिटाया। ज़ात पात पार किनारा, प्रभ साचा अन्त कराईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, जीव जन्त रिहा जगाईआ। सतिजुग साचा खोल्ह दुआरा, साचा मार्ग लाईआ। सोहँ शब्द जै जै कारा, चार वरनां रिहा जणाईआ। इक्क इकल्ला एकँकारा, एका रूप समाईआ। प्रगट होया विच संसारा, जुग जुग बणत बणाईआ। कलिजुग चारों कुन्ट धुँदूकारा, रैण अन्धेरी छाईआ। जूठ झूठ दर दुआरा, घर घर बैठा आसण लाईआ। जूठा झूठा मीत मुरारा, साक सज्जण मात अख्वाईआ। ना कोई मिलाए पारब्रह्म पुरख अपारा, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। मनमुख जीव भौंदे नौ दुआरा, दर दसवां ना कोई खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे रिहा जगाईआ। हरिजन साचा साचा लाल, हरि साचा आप उठांयदा। लक्ख चुरासी विच्चों भाल, आप आपणी गोद उठांयदा। जोती नूर इक्क अकाल, इक्क इकल्ला धाम सुहांयदा। जिस जन देवे नाम शब्द सच्चा धन माल, आत्म झोली भरांयदा। नेड़ ना आए काल महांकाल, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल, आपणी धारा इक्क बंधांयदा। भगत जनां होए सदा रखवाल, नित नवित्त जोत प्रगटांयदा। कलिजुग माया दए उछाल, माया ममता वहिण वहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। हरिजन साचे सन्त दुलार, हरि साचा वेख वखाईआ। आपे खोल्ह बन्द किवाड़, जोती नूर सवाईआ। नेड़ ना आए पंचम धाड़, दर द्वारे रिहा दुरकाईआ। इक्क वखाए साचा अखाड़, अनहद साचा राग रिहा अल्हाईआ। माया ममता बस्त्र उतार, शब्द गहणा तन पहनाईआ। पंच विकारा आप चबाए आपणी दाढ़, नेत्र नैणां दरस दिखाईआ। वा ना लग्गे तत्ती हाढ़, कलिजुग अग्नी आप बुझाईआ। धुरदरगाही साचा लाड़, हरिजन साचे लए प्रनाईआ। आपे होया पिच्छे अगाड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे सन्त जनां होए आप सहाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम चाला, चार कुन्ट अन्धेरा। हरि का नाउँ किसे ना भाला, ना चुक्कया तेरा मेरा। फल ना लग्गा काया डाल्हा, पंजां चोरां पाया घेरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे सन्त जनां होए सदा रखवाला। कलिजुग तेरी काली रैण, चारों कुन्ट छाईआ। जूठा झूठा नाता मात पित भाई भैण, साक सज्जण सैण कोई दिस ना आया। लक्ख चुरासी अन्तिम लहिणा लैण देण, दर घर हिसाब कराईआ। मनमुख जीव जूठे झूठे वहण वहिण, ना सके कोई बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे रिहा तराईआ। कलिजुग अन्तिम वहण वहिणा, ना सके कोई बचाईआ। गुरमुख साचा वेखे नैणां, हरि साचा आप वखाईआ। सन्त सुहेले मात रहिणा, मनमुख

डुब्बे ना कोई पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग धारा इक्क वहाईआ। कलिजुग तिक्खी धार, रखावे विच संसारया। ना कोई आर ना कोई पार, मनमुख डुब्बे अद्ध विचकारआ। नेत्र नैण रोणा ज़ारो ज़ार, राए धर्म करे ख्वारया। ना कोई देवे मात सहार, हरि का नाउँ ना रसन उचारया। जूठे झूठे मीत मुरार, छड्ड चले ना कोई सहारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन सोए मात जगा रिहा। कलिजुग तेरा अन्तिम वेला, चार कुन्ट दए दुहाईआ। अचरज खेल पारब्रह्म आपे खेल, जोती जामा भेख वटाईआ। भगत जनां हरि सज्जण सुहेला, साचा मीत आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची रीती आप चलाईआ। साची रीती हरि सुल्तान, एका एक चलांयदा। दो जहान मार ध्यान, आपणी बणत जणांयदा। कलिजुग होए अन्त वैरान, थिर रहिण ना पांयदा। सतिजुग त्रेता सच निशान, हरि साचा मात झुलांयदा। आपे होया निगाहबान, निहकलंकी जामा पांयदा। जगत मिटाए पंज शैतान, हउमे हँगता रोग मिटांयदा। एका बख्शे चरन ध्यान, धूढ़ी मस्तक लांयदा। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान, जोती नूर दरसांयदा। चार वरनां देवे माण, दर दर इक्क खुल्ांयदा। ना कोई राउ रंक राज राजान, शाह सुल्तान ना कोई अख्वांयदा। प्रगट होए श्री भगवान, एका खण्डा हथ्थ उठांयदा। जूठा झूठा मेट निशान, ब्रह्मण्डां खोज खुजांयदा। रवि ससि चन्द सूरज सर्ब मिट जाण, आकाश प्रकाश ना कोई करांयदा। ब्रह्मा मंगे जिया दान, वेला अन्तिम आंयदा। शिव शंकर करे प्रभ चरन ध्यान, आपणी भुल्ल बख्शांयदा। करोड़ तेतीसा होए सुञ्ञ मसाण, जगत जगदीसा आप करांयदा। बीसन बीसा हरि निरँकार, एका एक अख्वांयदा। आपे वेखे राग छतीसा, दन्द बतीसा कवण गांयदा। ना कोई राग रागनी हदीसा, सच मार्ग ना कोई विखांयदा। माया राणी जूठा झूठा पीसण पीसा, कलिजुग काला संग रलांयदा। लेखे लाए मूसा ईसा, संग मुहम्मद आप उठांयदा। लेख चुकाए विच उनीसा, अल्ला राणी पड़दा पांयदा। एका छत्र झुल्ले प्रभ साचे सीसा, प्रभ साचा आप झुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण रूप वटांयदा। निरगुण रूप अपार, निज घर आसण लांयदा। शब्द खण्डा तेज कटार, आपणे हथ्थ उठांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी मारे मार, सत्तां दीपां वेख विखांयदा। राज राजानां करे ख़बरदार, राउ रंकां आप उठांयदा। जन भगतां होवे पहरेदार, दिवस रैण सेव कमांयदा। आदि जुगादी सांझा यार, सेवक सेवा आप कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, भेखाधारी भेख वटांयदा। भेखाधारी हरि इकल्ला, अकल कला भरपूरा। आपे जाणे सच महल्ला, निहचल नगरी साचे खेड़ा। जोती शब्दी आपे रल्ला, आप आपणा बन्नया

६६९
०६

बेड़ा। सोहँ उठाया हथ्थ विच भल्ला, कलिजुग तेरा करे हक्क निबेड़ा। दूई द्वैती मेटे सल्ला, लक्ख चुरासी चुक्के झेड़ा। मेल मिलाए गोबिन्द डल्ला, धरत मात तेरा खुल्ला वेहड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, अन्तिम करे हक्क निबेड़ा। अन्तिम निबेड़ा हथ्थ करतार, आपणे हथ्थ रखाया। वेखे विगसे कर विचार, विच संसार समरथ कल अख्वाया। दीपां लोआं पावे सार, वरभण्डी खेल रचाया। ब्रह्मण्डां खोज हरि निरँकार, भेख पखण्डा दए मिटाया। जेरज अंडां वेख विचार, लहिणा देणा मूल चुकाया। मनमुख सुत्ते दे कर कंडी, ना सोए कोई हिलाया। जन भगतां मंग एका मंगी, प्रभ चरन धूढ़ी मस्तक लाया। अमृत आत्म धार साची गंगी, सर सरोवर इक्क वखाया। सुरत सवाणी होई नंगी, दुरमति पड़दा लाहया। मानस जन्म ना होया भंगी, जिस जन गुर पूरे दर्शन पाया। काया चोली आपणी रंगी, एका गूढ़ा रंग चढ़ाया। कट्टणहारा भुक्ख नंगी, तृष्ना भुक्ख मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति रिहा समझाया। दे मति हरि आप समझाए, कलिजुग अन्तिम आया। जीव जन्त कोई रहिण ना पाए, धर्म राए दए सज़ाया। साध सन्त होए हलकाए, धीरज यति गंवाया। पारब्रह्म ब्रह्म कोई ना पाए, पढ़ पढ़ वाद विवाद वधाया। एका नाम ताम ना कोई खाए, रसन विकार चलाया। अन्धेरी शाम ना कोई मिटाए, साचा चन्द ना कोई चढ़ाया। अमृत आत्म जाम ना कोई प्याए, मदिरा मास मुख रखाया। साचा नाम पल्ले दाम ना कोई बंधाए, जूठी झूठी पंड बंधाया। सतिगुर पूरा ना कोई मिलाए, भरमे भरम भुलाया। आवण जावण लक्ख चुरासी गेड़ ना कोई कटाए, जम का फास ना कोई तुड़ाया। बत्ती दन्द हरि बख्शिंद ना कोई गाए, परमानंद किसे दिस ना आया। जीव जन्त आत्म अज्ञान अन्ध, जोत प्रकाश पुरख अबिनाश ना कोई कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दे मति रिहा समझाया। कलिजुग जीव उठ जाग, चारों कुन्ट अन्धेरा छाया। मिल्या मेल ना कन्त सुहाग, नारी कन्त ना मेल मिलाया। दूई द्वैती हउमे लग्गा दाग़, दुरमति मैल ना कोई धवाया। हँस सरोवर ना होया काग, सच इशनान ना कोए कराया। आत्म उपजिआ ना इक्क वैराग, एक दूजा ना भेव चुकाया। चरन धूढ़ मिल्या ना मजन माघ, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ फिरे हलकाया। माया डस्सणी डस्सया नाग, आत्म विख ना कोए गंवाया। गुरमुख विरला प्रभ चरन कँवल जाए लाग, हरि तृष्ना भुक्ख मिटाया। आप बुझाए तन लग्गी आग, अमृत आत्म मेघ बरसाया। आपणे हथ्थ प्रभ रक्खे वाग, दो जहानां होए सहाया। हरिजन साचे वड वड भाग, वडभागी हरिजन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन तेरी अन्तिम वर, आत्म दरसी दर्शन पाया। आत्म दरस हरि भगवन्त, अग्नी अग्ग बुझाईआ। मिल्या मेल साचे कन्त, विछड़

कदे ना जाईआ। एका रुत्त वखाए बसन्त, फल फुलवाड़ी मात लगाईआ। भरमे भुल्ले जीव जन्त, साधां सन्तां दिस ना आईआ। कलिजुग माया पाई बेअन्त, बैठी पड़दा पाईआ। प्रभ का भेव अगम्म अगम्मत, अगम्म अगम्मड़ा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका डंक रिहा वजाईआ। एका डंक हरि करतार, आपणा आप वजाया। लक्ख चुरासी करे ख़बरदार, सम्मत चौदां वेख वखाया। मनमुख जीवां मारे मार, शब्द खण्डा हथ्थ उठाया। नौ खण्ड पृथ्वी हाहाकार, सत्तां दीपां रिहा हिलाया। राज राजानां शाह सुल्तानां दए उभार, आपणी कल वरताया। मस्त दीवाना श्री भगवाना, जन भगतां बन्ने हथ्थीं गाना, धुरदरगाही लै के आया। रसना चिल्ला तीर कमाना, हरि सोहँ तीर चलाया। लक्ख चुरासी करे पुण छाणा, दिस किसे ना आया। मनमुख जीवां तोड़े माण अभिमाना, गढ़ हँकारी उच्चा मन्दिर देवे ढाहया। एका एक हरि निशाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम आया। कलिजुग अन्तिम शब्द निशाना, एका एक रखांयदा। ना कोई जाणे राजा राणा, शाह सुल्तान दिस ना आंयदा। लक्ख चुरासी वहण वहिणा, जूठा झूठा भेख रुढ़ांयदा। जीव जन्त चुकाए लहिणा देणा, अन्त हिसाब मुकांयदा। गुरमुख विरला मात रहिणा, जिस जन आपणी दया कमांयदा। दरस विखाए साचे नैणा, निज घर आसण लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे साचे दर, दर द्वारे आप बहांयदा। सतिजुग तेरी साची धार, प्रभ साचा मात बंधांयदा। लोकमात लै अवतार, चौबीसा हरि अख्वांयदा। आपे खेले जगत अपार, जगत जगदीशा आप हो आंयदा। वरते वरतावे विच संसार, साचा समां सुहांयदा। चार वरनां इक्क द्वार, हरि एका एक खुल्हांयदा। ऊँचां नीचां कर प्यार, राउ रंकां एका धाम बहांयदा। तीर्थ तट्टां पार किनार, अठ्ठ सठ्ठ मेट मिटांयदा। घट घटां हरि कर पसार, हर घट वेख विखांयदा। जोत सरूपी हरि निरँकार, जोती दीप इक्क जगांयदा। शब्द धुन डंक अपर अपार, एका डंक वजांयदा। राग अनादी धुन इक्क संसार, रसना हर खुल्हांयदा। भगत जनां हरि कर वणजार, एका वणज करांयदा। नाता तुटे कूड़ कुड़यार, जूठा झूठा संग तुड़ांयदा। मेल मिलाए कन्त भतार, नारी कन्त आप सुहांयदा। दो जहानी कर प्यार, पंज शैतानी मेट मिटांयदा। तीर कानी गुण निधानी जोत भगवानी, एका एक मिलांयदा। सोहँ शब्द सभ दी बाणी, सो पुरख निरँजण मात लिआंयदा। सतिजुग तेरी सच निशानी, साचा राह वखांयदा। पूजा पाठ ना कोई करानी, चरन कँवल ध्यान इक्क रखांयदा। भरमे भुल्ले वड विद्वानी, आत्म ध्यानी भेव ना पांयदा। दिस ना आए जगत ज्ञानी, गोबिन्द काया भेख वटांयदा। आपे आप हरि ब्रह्म ज्ञानी, एका ब्रह्म रखांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी

निगाहबानी, दिवस रैण वेख वखांयदा। तेज प्रकाश कोटन भानी, रवि ससि ना कोई तेज वखांयदा। देवे दान जिया दानी, जन भगतां झोली पांयदा। आत्म सेजा इक्क सुहानी, शब्द सिंघासण डेरा लांयदा। अमरापद इक्क वखानी, दर घर साचा इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, काला वेसा दर दरवेशा नैणी वेख वखांयदा। काला सूसा तन श्रृंगार, एका एक कराया। संग मुहम्मद चार यार, भरमे भरम भुलाया। अल्ला राणी हाहाकार, दिवस रैण रही कुरलाया। हू हू नाअरा आपणा मार, तूं तूं भेव चुकाया। अञ्जील कुरानां आई हार, ईसा मूसा भेव चुकाया। सम्मत चौदां मारे मार, चौदां तबकां रिहा हिलाया। खुदी खुदाई ख़बरदार, परवरदिगार डेरा लाया। नूर अलाही वेख विचार, ऐली अल्ला नाउँ रखाया। कलिजुग अन्तिम पावे सार, सच महल्ला वेख वखाया। जलां थलां दए हुलार, डूँघी कन्दर उच्च पहाड़ दए हिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम दए सुहाया। कलिजुग काला अन्तिम रोए, नेत्र नीर वहाया। सगला संग ना दिसे कोए, बैठे मुख छुपाया। चार यार संग मुहम्मद अन्तिम संग ना होए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम दए सजाया। सम्मत चौदां जोत निरँजण मात बलोए। सम्मत चौदां दए हुलारा, सृष्ट सबाई आप उठांयदा। प्रगट हो नर अवतारा, निहकलंका डंक वजांयदा। शब्द खण्डा तेज कटारा, हरि आपणे हथ्थ रखांयदा। लोआं पुरीआं पावे सारा, ब्रह्मा शिव देवत सुर आप उठांयदा। कलिजुग तेरा पार किनारा, डूँघे वहिण वहांयदा। सतिजुग साचा लए अवतारा, प्रभ चरनी सीस झुकांयदा। सोहँ शब्द बण वरतारा, लोकमाती आप वरतांयदा। भगत जनां दर होए भिखारा, दर दर फेरा पांयदा। देवे दरस अगम्म अपारा, अगम्मड़ा रूप वटांयदा। जोती नूर कर उज्यारा, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। एका शब्द सच्ची धुन्कारा, जै जै जैकार करांयदा। रिख मुन ना पाए सारा, मुल्ला शेख़ मुसायक काज़ी गौस कुतब पीर दस्तगीर शाह हकीर आप उठांयदा। मनमुख जीवां लथ्थे चीर, तन बस्त्र ना कोई पहनांयदा। हउमे हँगता रही पीड़, दूई द्वैती दुःख ना कोई मिटांयदा। त्रैगुण माया तेरा अन्त अख़ीर, पंज तत्त रहिण ना पांयदा। जन भगतां देवे आत्म सीर, तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,, सम्मत चौदां तेरी धार कलिजुग पूर्ब कर्म विचार, लहिणा देण चुकांयदा। कलिजुग तेरा लहिणा देण, प्रभ अन्तिम अन्त चुकांयदा। मनमुख जीव मात ना रहिण, राए धर्म वेख वखांयदा। नाता तुट्टे भाई भैण, साक सज्जण दिस ना आंयदा। सम्मत पन्दरां वहण एका वैहण, लक्ख चुरासी आप रुढ़ांयदा। सम्मत सोलां खाए मौत लाड़ी डैण, कोई ना मुख छुपांयदा। गुरमुख विरले सन्त सुहेले मात रहिण, जिस जन आपणी दया कमांयदा। साचा दरस नेत्र लोचन साचे

नैण, आत्म दरसी दरस करांयदा। सोहँ सो सारे गाण, चार वरनां इक्क ज्ञान जणांयदा। प्रभ का भाणा सिर ते सहिण, गुर पीर ना कोई बचांयदा। जुग जुग चुकाए लहिण देण, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। समरथ पुरख शब्द अकथ, लक्ख चुरासी पाए नत्थ, आत्म देवे मथ्था, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नरायण रूप वटांयदा। समरथ हथ्थ वड्याई, अकल कला भरपूरया। जीव जन्त साध सन्त ना चले कोई चतुराई, नाता दिसे कूड़ो कूड़या। रैण अन्धेरी मस चारों कुन्ट छाई, साचा चन्द ना कोई भूरया। निहकलंक प्रभ जोत प्रगटाई, प्रगट होए हाज़र हज़ूरया। आपणा शब्द डंक वजाई, चारों कुन्ट रिहा सुणाई, आपे वेखे नेड़े दूरया। सम्मत चौदां सुणे लुकाई, पंचम जेठ मिले वधाई, बेमुख सुत्ते मुख छुपाई, ना कोई लेखा मूढ़ मूढ़या। जन भगतां मेला सहिज सुभाई, दरस दिखाए अगम्म अथाही, आप उठाए फड़ फड़ बाहीं, चरन बख्शे साची धूड़या। सदा सुहेला देवे ठण्ढीआं छाईं, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, काया चोली रंगण रंग चाढ़े गूढ़या। काया चोली रंग गूढ़ा, जन भगतां झोली पांयदा। मनमुख ना समझे जीव मूढ़ा, मनमति जगत भवांयदा। जूठ झूठ हूंझे कूड़ा, सच सुच्च ना कोई झोली पांयदा। माया ममता पाए हथ्थ चूड़ा, साचा सगन ना कोई मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी लग्गी अग्न, ना कोई मात बुझांयदा। कलिजुग अग्नी लग्गी अग्ग, चारों कंट रही जलाईआ। मनमुख पछाड़े शाहरग, ना होए कोए सहाईआ। एका वा तत्ती रही वग, पंचम जेठ अन्धेरी रही छाईआ। धर्म राए तेरा साचा बग्ग, लक्ख चुरासी दए बणाईआ। लाड़ी मौत बन्ने तग, बैठी खुशी मनाईआ। करे खेल सूरा सरबग, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। मनमुख जीव होए कग, काया काग वांग कुरलाईआ। जगत विकारा अग्नी रहे दग, ना कोई तृप्त कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाए सृष्ट सबाईआ। सृष्ट सबाई रिहा वेख, अन्तिम जामा पाया। आप मिटावणहारा रेख, आपे लए उपाया। आपे जाणे धारी केस, आपे होए मूंड मुंडाया। प्रगट होया जोद्धा नर नरेश, नर नरायण नाउँ रखाया। गेड़ कटाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, करोड़ तेतीसा रहिण ना पाया। एका एक दानी दस दस्मेस, गोबिन्द काया रूप वटाया। सम्बल नगरी साचा वेस, सच सिंघासण आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अबिनाशी नाउँ रखाया। पुरख अबिनाशी हर रंग राता, आपणी जोत जगांयदा। प्रगट होए पुरख बिधाता, दिस किसे ना आंयदा। ना कोई पिता ना कोई माता, ना कोई पूत अख्वांयदा। ना कोई वरन ना कोई गोत ना कोई ज़ाता पाता, वरन अवरना आप अख्वांयदा। ना कोई देवे जगत दाता, ना कोई भिच्छया झोली पांयदा। आप आपणी पुच्छे वाता, जुग जुग

भेख वटांयदा। वेख वखाणे नौ खण्ड पृथ्वी दीप साता, सत्तां दीपां वेख विखांयदा। मेटे रैण अन्धेरी राता, सतिजुग साचा चन्द चढ़ांयदा। जन भगतां पुच्छे अन्तिम वाता, सोए मात जगांयदा। चरन कँवल बंधाए साचा नाता, ना कोई तोड़ तुड़ांयदा। दुरमति मैल दर द्वारे रिहा काटा, सच इशनान आप करांयदा। एका नाम दवाए साचा हाटा, चौदां तबकां एका हट विखांयदा। तन पहनाए शब्द पाटा, सच वस्त हथ्थ रखांयदा। लहिणा देणा चुकाए आन बाटा, लक्ख चुरासी पन्ध चुकांयदा। इक्क वखाए तीर्थ ताटा, अट्ठ सट्ठ मूल चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं का एका दाता, जुग जुग आप अख्वांयदा। सर्ब जीआं का एका दाता, एका जोत जगाईआ। पारब्रह्म प्रभ पुरख बिधाता, अबिनाशी करता आप अख्वाईआ। आपे पिता आपे माता, पिता पूत आप अख्वाईआ। लोकमात जुग जुग प्रगट हो पुच्छे वाता, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जोत निरँजण सेवा लाईआ। जोत निरँजण सेवादार, गुरमुखां रही जगाईआ। शब्द डंक अपर अपार, दिवस रैण रही वजाईआ। साचा मेला सच दरबार, धुरदरगाही रही कराईआ। जुगां जुगां दे विछड़े यार, कलिजुग अन्तिम रिहा मिलाईआ। सतिजुग द्वापर त्रेता उतरया पार, जुग चौथे मिले वड्याईआ। निहकलंक हरि लए अवतार, अचरज कल वरताईआ। शब्द खण्डा तेज कटार, आपणे हथ्थ उठाईआ। वरते वरताए विच संसार, सारंगधर भगवान बीठला आप अख्वाईआ। दूतां दुष्टां मारे मार, कौड़ा रीठला भन्न वखाईआ। गुरमुख साचे लए उभार, अनडिठा शब्द जणाईआ। फड़ फड़ बाहों रिहा तार, सच विचोला आप हो जाईआ। शब्द विचोला विच संसार, दो जहानां इक्क रखाईआ। सोहँ ढोला अपर अपार, चार वरनां रिहा सुणाईआ। सतिजुग साची बन्ने धार, सतिजुग साचा मार्ग लाईआ। एका अक्खर जै जैकार, चारे कुन्ट रिहा कराईआ। जन भगतां बजर कपाटी देवे पाड़, निर्मल जोत जगाईआ। दर घर साचे देवे वाड़, दस्म द्वारी कुण्डा लाहीआ। आत्म सेजा अपर अपार, हरि फूलन बरखा लाईआ। जोत निरँजण कर श्रृंगार, नेत्र नाम अंजन पाईआ। सति पुरख तेरी धार, घर साचे रिहा वहाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, एका धाम सुहाईआ। शब्द महल्ला अपर अपार, आपणा आप सुहाईआ। जन भगतां करे मात प्यार, आपणी भुजा रिहा उठाईआ। दो जहानी पावे सार, विछड़ कदे ना जाईआ। तीर निशानी अपर अपार, एका रिहा चलाईआ। ब्रह्म ज्ञानी गुरमुख विचार, जो जन चरन ध्यान लगाईआ। भरमे भुल्ले भरम संसार, भरम गढ़ ना कोई तुड़ाईआ। जीव जन्त आत्म अन्ध अंध्यार, दीपक सच ना कोई जगाईआ। जूठा झूठा जगत प्यार, नाता बिधाता ना कोई जुड़ाईआ। धर्म राए अन्त करे ख्वार, सम्मत सोलां दए दुहाईआ। लक्ख चुरासी पासा

हार, मानस देही मात गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण रूप समाईआ। निरगुण रूप सहिज सुख मन्दिर, हरि आपणा आप वसाया। आपे वसया डूँघी कन्दर, सच सिँघासण आया। बजर कपाटी लाया जन्दर, दिस किसे ना आया। उच्चे टिल्ले चढ़ चढ़ थक्के गोरख मच्छन्दर, पारब्रह्म किसे दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरि जन साचे लए मिलाया। हरिजन साचे तेरी साची रीत, प्रभ जुग जुग मेल मिलाईआ। ना कोई देहुरा गुरुदुआरा मन्दिर मसीत, शिवदवाला ना कोई वखाईआ। दिवस रैण सद वसया चीत, सच सिँघासण आसण लाईआ। अट्ठे पहर परखणहारा नीत, लहिणा देणा रिहा चुकाईआ। हरिजन गाउणा सुहागी गीत, गोबिन्द साचा मेल मिलाईआ। मानस देही जाणा जीत, वेला गया हथ्थ ना आईआ। वेखणहारा हस्त कीट, ऊँचां नीचां विच समाईआ। जूठा झूठा जीव जन्त पीसण पीस, भेव कोई ना पाईआ। हरि का नाउँ इक्क मीठ, गुरमुख रसना लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, दे मति रिहा समझाईआ। दे मति समझावण आया, दो जहानां वाली। गुरमुख सोए मात जगावण आया, धुरदरगाही वाली। नाम निधान आत्म झोली पावण आया, फल लगाए काया डाली। आप आपणे रंग रंगावण आया, चाढ़े रंगण रंग गुलाली। आत्म सेजा इक्क विछावण आया, हरि दाता सच्चा माली। कन्त भतार मेल मिलावण आया, नारी कन्ता एका सेज विछा लई। आप आपणा संग निभावण आया, जुग जुग चले अवल्लड़ी चाली। चिट्टे अस्व शब्द घोड़े तंग कसावण आया, नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां करे चाली। गुरमुखां दर मंग मंगावण आया, आपे बणया दर सवाली। अंग संग संग अंग आप अख्वावण आया, सन्त सुहेले मात पाली। सोहँ कंगन तन पहनावण आया, दीपक जगे जोत दिवाली। लोआ पुरीआं पार लँघावण आया, लोकमात वेख वखाली। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जुग जुग चले अवल्लड़ी चाली। चरन प्रीत ध्यान, हरिजन रखाया। आपे देवे जिया दान, आत्म झोली पाया। हरि हरि शब्द जगत ज्ञान, धुर मन्त्र लेख लिखाया। आप बिठाए विच बबाण, गुरमुख साचे रिहा चढ़ाया। दो जहानी देवे माण, धुरदरगाही मात आया। धर्म झुलाए इक्क निशान, सोहँ डण्डा नाल रलाया। आप चुकाए जम की कान, जिस जन रसना गाया। वड दाता हरि गुण निधान, गोबिन्द रूप वटाया। सन्त सुहेले कर पछाण, आप आपणे अंग लगाया। धुरदरगाही इक्क फ़रमाण, साचा राग सुणाया। आपे होया जाणी जाण, दूसर दिस किसे ना आया। हरिजन वखाए पद निरबान, निज घर वेख वखाया। साची सईआ मंगल गान, घर साचा इक्क सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे दया कमाया। हरिजन साचे चरन प्रीती जोड़,

आपणी दया कमांयदा। वर पाया जिहा लोड़, विछड़ कदे ना जांयदा। अन्दर मन्दिर गया बौहड़, आप आपणा रंग रंगांयदा। वेखे परखे मिट्ठा कौड़, रस एका आप रखांयदा। दर दरवाज़े साचा पौड़, उच्चा डण्डा इक्क रखांयदा। भगत सुहेला अन्तिम बौहड़, ब्रह्मण्डां खोज खुजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत जोग एका एक वखांयदा। गुर चरन ध्यान जगत जोग, ना कोई समाध लगाईआ। हरि गुण गा एका भोग, विस्मादे विस्माद समाईआ। मिल्या मेल धुर संजोग, हरि साचा मेल मिलाईआ। दूई द्वैती कटे रोग, एका एक जणाईआ। साचा दर दरस अमोघ, आप आपणा रिहा वखाईआ। विछड़े मेले जीव जन्त जूठे झूठे लोग, जगत लुकाई रिहा भुलाईआ। इक्क सुणाया सच सलोक, सोहँ ढोला हरि रघुराईआ। वेले अन्तिम साची मोख, चरन दासी रिहा कराईआ। हरि हरि भाणा कोई ना सके रोक, ना लिख्या लेख मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे रिहा तराईआ। चरन प्रीती साचा नाता, आपणा आप बंधाया। दरस दिखाए पुरख बिधाता, गोबिन्द रूप वटाया। आपे पिता आपे माता, आप आपणी गोद उठाया। गुर संगत बणाई सच बराता, साचा सगन मनाया। धुरदरगाही इक्क सुग़ाता, हरि काया डोली झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दुआरा इक्क सुहाया। काया डोली कर त्यार, हरि चाढ़े रंग गुलाला। हौली हौली कर प्यार, मेल मिलाए गुर गोपाला। तोले तोल विच संसार, धुरदरगाही आप दलाला। अडुल अडोले नर निरँकार, गुरमुख पछाणे साचा लाला। चरन प्रीती घोल घोले दर द्वार, दिवस रैण चले नाल नाला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दो जहानां करे संभाला। चरन प्रीती सच टिकाना, एका एक वखाया। हरिजन होए दर दरबाना, गुर पूरे दया कमाया। शब्द बिठाए इक्क बिबाना, आप आपणी सेवा लाया। आपे होए सुघड़ स्याणा, साची सिख्या दे मति रिहा समझाया। मनमुख जीव बाल अञ्जाणा, भेव कोई ना पाया। पुरख अगम्मा हरि भगवाना, गोबिन्द गोबिन्द भेख वटाया। जन भगतां देवे जिया दाना, साचा लेखा आपणे हथ्थ रखाया। धुरदरगाही साचा माना, चरन कँवल कँवल चरन इक्क ध्यान रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गऊ ग़रीब निमाणयां आपणे गले लगाया।

❊ २० चेत २०१४ बिक्रमी बख्शीश सिँघ दे गृह इक्की परिवारां दा इक्ठ होया
पिण्ड कादराबाद ज़िला अमृतसर ❊

हरि साजण जगदीस, जोत जगाया। वेखे खेल बीस बीस, बीस बीसा आप अख्वाया। कलिजुग माया पीसण रही

६७६
०६

पीस, सच सुच्च ना कोई समाया। ना कोई जाणे सच हदीस, रसना जिह्वा गुण ना हरि हरि गाया। पढ़ पढ़ थक्के राग छतीस, नादी धुन ना कोए उपजाया। गा गा थक्के दन्द बतीस, दाता दानी दिस ना आया। गा गा थक्के जगत तीस, रसना जिह्वा जगत हिलाया। हरि हरि खेले खेल दस दस बीस, दो जहानी बणत बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, बीस बीसा दए वधाया। बीस बीसा हरि जगदीसा, अकल कला वरताईआ। मेट मिटाए खेल उनीसा, अल्ला राणी मुख छुपाईआ। छत्र झुलाए प्रभ साचे सीसा, बीस बीसा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटाईआ। जोती जामा जोद्धा बल सूर, सतिगुर साचा साख्यात। शब्द नादी साची तूर, हरिजन वखाए अट्ठे पहर दिवस रैण प्रभात। कलिजुग नाता तोड़े कूड़, देवे नाम शब्द साची दात। चतर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, जिस जन बंन्हाए चरन नात। काया चोली रंग चाढ़े गूढ़, मेट मिटाए अन्धेरी रात। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम पुच्छे वात। कलिजुग वेला अन्त जुदाई। चारों कुन्ट हाहाकार, गुरमुख विरले नाम कुड़माई। शब्द सेहरा सीस बंधाया, साचा मंगल काया मन्दिर बहि बहि रिहा गाई। साचे घर वज्जी वधाई। मिल सईआं साची गाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, बीस बीसा हरि जगदीसा, खेले खेल हरि रघुराई। हरि रघुराई जगत रघुनाथ, एका एक अख्वाया। सखा सुहेला सगला साथ, जुग जुग रिहा निभाया। प्रगट हो त्रैलोकी नाथ, पुरीआं लोआं वेख वखाया। शब्द जणाए मस्तक माथ, लक्ख ना सके कोई राया। शब्द जणाए अकथना अकाथ, कत्थ ना सके कोई राया। सोहँ चलाए साची गाथ, सतिजुग साची बणत बणाया। धूढ़ लाए टिक्का मस्तक माथ, दुरमति मैल दए गंवाया। सगल वसूरे जायण लाथ, जिस जन दर द्वारे आए दर्शन पाया। अन्तिम लेखा चुक्के साढे तिन्न तिन्न हाथ, प्रभ अबिनाशी आप आपणी गोद उठाया। पारब्रह्म पुरख अबिनाशा, अकल कला कल धारया। जन भगतां देवे नाम धरवासा, जोती नूर कर उज्यारया। रसन चलाए शब्द स्वास स्वासा, सोहँ जै जै जैकार कराया। साचे मण्डल पावे रासा, हरि साची खेल खिलाया। वेख वखाणे पृथ्वी आकाशा, गगन पतालां फेरा पाया। जन भगतां लेखे लाए हड्ड नाड़ी मासा, लहिणा देणा मूल चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आपे वेखे हरिजन दर, दर द्वारे फेरा पाया। धुरदरगाही एका दर, अमृत आत्म साचा सर, सर सरोवर इक्क वखाया। बन्द कराए नौ दर, दस्म द्वारी आपे चढ़, गुरमुख साचे लए फड़, जोत सरूपी अन्दर वड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई चोटी ना कोई जड़, सच सिँघासण पुरख अबिनाशी एका डेरा लाया। पुरख अबिनाशी जोत अगम्मी, अगम्मी जोत

जगाईआ। गगन पाताल रहाए बिन थम्मी, एका थम्मी नाम रखाईआ। ना मरे ना कदे जम्मी, आवण जावण खेल रचाईआ। ना हस्से ना रोवे छम छम्मी, नेत्र नैण नीर ना कोई वहाईआ। खेले खेल पुरख अगम्मी, अगम्मड़ी कार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। हरिजन साचे नेत्र पेखा, हरि साचा रंग रंगांयदा। अन्तिम चुकाए लहिणा देणा पिछला लेखा, जुग जुग भेख वटांयदा। आपे जाणे धारी केसा, गोबिन्द काया वेख वखांयदा। आप आपणा करया वेसा, दस दस्मेसा आप अख्वांयदा। कोटन कोट शिव शंकर महेषा, ब्रह्मा देवत सुर सीस झुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा खेल खिलांयदा। साचा खेल खिलावणहारा, एका एकँकारा। गुरमुख साचे मेल मिलावणहारा, देवे शब्द अधारा। राग अनादी इक्क सुनावणहारा, सोहँ जै जै जैकारा। ब्रह्मादी खोज खुजावणहारा, घर चौथे मेल मिलारा। चौथे घर पुरख अपारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, देवे शब्द सहारा। नाम सहारा दो जहान, जन भगतां आप दवांयदा। आप बिठाए सच बिबाण, लोआं पुरीआं पार करांयदा। आवण जावण चुक्के कान, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। मनमुख भुल्ले जीव नादान, गुणवन्ता दिस ना आंयदा। मगर लग्गे पंज शैतान, भरमी भरम भुलांयदा। कोई ना जाणे ब्रह्म ज्ञान, आत्म दीप ना कोई जगांयदा। गुरमुख साचे चतर सुजान, प्रभ साची सेव लगांयदा। देवे दरस दर द्वारे आन, दर दरवेशा आप अख्वांयदा। आपे गोपी आपे काहन, राम रमईआ आप हो आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम नईआ आपे आप चलांयदा। कलिजुग तेरी नईआ, प्रभ साचे आप चलाईआ। वेख वखाए संग मुहम्मद चार यरीआ, कुतब गौंस दिस ना आईआ। धर्म राए कढ्ढे वहीआ, लेखा हिसाब मुकाईआ। पुरख अबिनाशी साचा सईआ, दो जहानां होए सहाईआ। लक्ख चुरासी अन्त ना रहीआ, प्रभ साचा मेट मिटाईआ। माया वहण कलिजुग वहईआ, मनमुख जीव रहे रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरि आपणी कल आप वरताईआ। वरते कल हरि कुलवन्ता, अकल कल भरपूरा। गुरमुख विरले साचे मात जगाए, देवे शब्द अनहद तूरा। सति सन्तोख ज्ञान देवे, नाता तोड़े जूठा झूठा कूड़ा। चरन प्रीती इक्क ध्यान रखाए, काया चोली रंगण गूढ़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जिस जन बख्शे चरन धूढ़ा। चरन धूढ़ साची ख़ाक, गुरमुख विरले मस्तक लाईआ। आपे होया पाकी पाक, पतित पुनीत रिहा कराईआ। लेख लिखाए भविख्त वाक, लिख्या लेख ना कोई मिटाईआ। जन भगतां खोल्हे आत्म ताक, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। नाम वखाए साचा हाट, चौदां

लोकां वेख वखाईआ। दीपक जोती इक्क लिलाट, प्रभ आपणा आप जगाईआ। अमृत आत्म रस निझर झिरना गुरमुख विरला लए चाट, प्रभ साचा रिहा वहाईआ। सतिजुग तेरी नेड़े वाट, कलिजुग रोवे दए दुहाईआ। मोह विकारा जगत हँकारा मारे ठाठ, सम्मत चौदां एका लहर चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप अख्वाईआ। सम्मत चौदां तेरा हाट, प्रभ साचे आप खुल्हाया। ना कोई दिसे तीर्थ ताट, अट्ठ सट्ठ रहिण ना पाया। हरिजन मेला काया माट, साचा मन्दिर दए सुहाया। लेखा चुक्के आन बाट, गर्भवास फेर ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर रखाए साचा वास एका घर सुहाया। साचा घर हरि करतार, एका एक रखाया। जन भगतां बख्शे कर प्यार, आप आपणा राह वखाया। फड़ फड़ बाहों लाए पार, दिवस रैण सेव कमाया। कलिजुग भुल्ले जीव गंवार, हरि हरि भेव किसे ना पाया। गुरमुख साचे सन्त दुलार, प्रभ अबिनाशी किरपा धार, आप आपणा दरस दिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बीस बीसा दए दुहाया। चेत बीस दिवस सुहञ्जणा, प्रभ साचे जोत जगाईआ। जन भगतां चरन धूढ़ कराए साचा मजना, सर सरोवर इक्क वखाईआ। दो जहानी पड़दा कज्जना, प्रभ हथ्थ वडी वड्याईआ। जो घड़या सो भज्जना, भन्नणहार आप अख्वाईआ। घर बाहर लक्ख चुरासी अन्तिम तजना, थिर कोए रहिण ना पाईआ। काल नगारा एका वज्जना, चारो कुन्ट पए दुहाईआ। तख्त ताज राज राजानां अन्त तज्जना, दर दर भिख्या रिहा मंगाईआ। जन भगतां अन्दर साचे मन्दिर दूई द्वैती हउमे रोग कढ्ढणा, हँगता रहिण ना पाईआ। आप फड़ाऐ आपणा लड़ना, दिवस रैण दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, बीस बीसे खुशी मनाईआ। बीस बीसा वेख विचार, दिवस रैण खुशी मनांयदा। प्रगट होए नर निरँकार जगत मलाह अख्वांयदा। शब्द हथ्थ तेज कटर, मनमुख पार करांयदा। गोबिन्द काया नाम अपार, नाम नामा वणज करांयदा। भगत जनां हरि पैज संवार, आपणा बिरद रखांयदा। वेख वखाए वारो वार, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, लक्ख चुरासी तेरा कर्म धर्म जरम आपणे हथ्थ रखांयदा। जन्म कर्म प्रभ हथ्थ, जगत वड्याईआ। जिस भावे तिस लए रक्ख, ना कोई मेट मिटाईआ। लक्ख चुरासी लथ्थे सत्थ, हरि सथ्थर रिहा विछाईआ। पंचम जेठी कर इक्ट्ठ, सच विहारा रिहा बणाईआ। बुरज हँकारी जाणा ढठ्ठ, किला कोट रहिण ना पाईआ। त्रैगुण माया अग्नी मट्ठ, प्रभ साचा आप तपाईआ। आपे गेड़नहारा उलटी लट्ठ, कलिजुग अन्त कराईआ। लेखा चुक्के अट्ठ सट्ठ, गंगा गोदावरी मुख छुपाईआ। गुर दर मन्दिर जाणे ढठ्ठ, शिवदवाला मट्ठ दिस ना आईआ। पारब्रह्म चरन कँवल द्वारे इक्क इक्ट्ठ,

एका धाम सुहाईआ। सतिजुग तेरा साचा हट्ट, सति सन्तोख ज्ञान दवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बीस बीसा दए वर, जगत जगदीसा खेल खिलाईआ। बीस बीसा उठ त्यार, लोकमात लए अंगड़ाईआ। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, हरि शब्द करी कुड़माईआ। कूड़ कुड़यारा मेट पसार, कलिजुग खते पाईआ। इक्क इकल्ला हरि निरँकार, जुग जुग लहिणा देणा रिहा चुकाईआ। खेले खेल अपर अपार, आपणे भाणे विच समाईआ। सतिजुग साचे कर प्यार, लोकमात जन्म दवाईआ। एका शस्त्र एका बस्त्र एका खण्डा तेज कटार, प्रभ साचा हथ्थ फड़ाईआ। पंचम दुष्ट दए सँघार, पंचम दए जगाईआ। पंचम बैठा अधविचकार, साचा मेल मिलाईआ। पंचम मीता हरि निरँकार, एका राग सुहागी गीता चार वरनां रिहा जणाईआ। आपे होया पतित पुनीता, आपे देहुरा आप मसीता, गुर दर मन्दिर आप अख्वाईआ। हरिजन विरले तन मन जीता, प्रभ चरन ओट रखाईआ। वेख वखाए हस्त कीटा, ऊँचां नीचां भेव ना राईआ। नाम निधाना देवे एका मीठा, सोहँ अक्खर वक्खर जगत निधाना आप रखाईआ। कलिजुग भन्ने कौड़ा रीठा, अन्त रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, त्रैगुण तेरा लहिणा देणा तेरी झोली पाईआ। त्रैगुण माया तेरा अन्त, प्रभ साचे अन्त मिटावणा। ब्रह्मा खोल्हे आपणा हट्ट, प्रभ अन्तिम अन्त करावणा। गुरमुख विरला लाहा लए खट्ट, जगत जंजाला तोड़ तुड़ावना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे आप समावणा। चार वरन उपदेश, हरि शब्द जणाईआ। प्रगट होए दस दस्मेश, जोद्धा सूर आप अख्वाईआ। शब्द सिँघासण नर नरेश, पुरख अबिनाशण डेरा लाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड हो प्रवेश, आप आपणे विच समाईआ। भेव ना पायण ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, वेद पुराणां अञ्जील कुरानां खाणी बाणी सार ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वेख वखाईआ। जुग जुग खेले खेल महाना, लोकमात लए अवतारा। नाम ल्याए पंच परवाना, वरते वरतावे विच संसारा। जन भगतां देवे नाम निधाना, मेट मिटाए अन्ध अन्धयारा। आत्म ब्रह्म इक्क ज्ञाना, चरन कँवल सच सहारा। सोहँ शब्द धुर फ़रमाना, चार वरनां करे प्यारा। जन भगतां बन्न्हे हथ्थीं गाना, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। लक्ख चुरासी छुट्टे पीणा खाणा, दहि दिशा हाहाकारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक लए अतवारा। निहकलंक लए अवतार, धरत मात धीर धराईआ। धरत मात रोवे ज़ारो ज़ार, गल पलड़ा नेतर नीर वहाईआ। पारब्रह्म प्रभ किरपा धार, कलिजुग जीव वड्ड गुन्हाईआ। चुक्कया ना जाए अन्तिम भार, जूठ झूठ बैठी सिर उठाईआ। ना कोई करे हौला भार, साधां सन्तां आत्म हलकाईआ। भरमे भुल्ले नर नार, जीव जन्त पति गंवाईआ। दोए जोड़ करे निमस्कार,

रती रत्त ना रही राईआ।जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति रिहा समझाईआ। धरत मात दे दिलासा, प्रभ आपणा आप जणाईआ। आपे वेखण आए मात तमाशा, बीस चौबीसा चवीआं अवतारया। वेख विखाणे पृथ्वी आकाशा, लक्ख चुरासी पावे सारया। तोल तुलावे रत्ती तोला मासा, साचा कंडा नाम लगा रिहा। जो जन खाए मदिरा मासा, हरि साची वंडा आप वंडा रिहा। अन्तिम आउणा हार पासा, कलिजुग कन्ढा नेड़े आ रिहा। ना कोई करे बन्द खुलासा, भेख पखण्डा जगत सुणा रिहा। जो उपजे सो अन्त विनाशा, थिर कोई रहिण ना पा रिहा। जन भगतां हरि दासन दासा, दर द्वारे सेव कमा रिहा। काया मण्डल साची रासा, गोपी काहना खेल खिला रिहा। निज घर आत्म रक्खे वासा, तन आत्म रस विखा रिहा। जोती नूर कर प्रकाशा, अज्ञान अन्धेर मिटा रिहा। लेखे लाए रसन स्वासा, जो जन रसना जिह्वा गा रिहा। सम्मत चौदां वेखे मात तमासा, प्रभ आपणी बणत बणा रिहा। प्रगट होए सर्ब गुण तासा, दूई द्वैती पड़दा लाह रिहा। जन भगतां देवे चरन कँवल सच्चा भरवासा, एका एक राह वखा रिहा। गुर पूरे सद बलि बलि जासा, हाज़र हज़ूरा दरस दिखा रिहा। हरिजन ना होए मात निरासा, जिस जन सीस आपणा हथ्थ टिका रिहा। कदे ना आवे हार पासा, प्रभ साचा होए सहारया। मिल्या मेल हरि शाहो शाबासा, शाह सुल्ताना मेल मिला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सच निशाना इक्क झुला रिहा। सच निशाना सच रंग, प्रभ साचे मात रंगाया। नाम डोरी इक्क पतंग, दो जहानां रिहा चढ़ाया। आप लगाया आपणे अंग, अंगीकार आप अख्वाया। साढे तिन्न हथ्थ सीआं सच पलँघ, प्रभ साचे आसण लाया। धरत मात मंगे मंग, कलिजुग वेला दए दुहाया। लक्ख चुरासी होई भंग, सृष्ट सबाई दए हिलाया। चिट्टे अस्व कसया तंग, नीले वाला नीले घोड़े चरन छुहाया। लोआं पुरीआं आए लँघ, पार किनारा इक्क वखाया। सोहँ शब्द वजाए मृदंग, गुरमुख सोए रिहा जगाया। लक्ख चुरासी दए टंग, चारे कुन्ट वेख वखाया। संगी साथी आप अख्वाए काया चोली चाढ़े रंग, नाम रंगीला इक्क अख्वाया। माया ममता डस्सणी ना मारे डंग, तृष्ना भुक्ख मिटाया। कट्टणहारा भुक्ख नंग, गऊ ग़रीबां गले लगाया। जूठी झूठी कलिजुग काया भन्ने काची वंग, सच वणजारा कोई दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वड दाता सूरा सरबग्ग आप अख्वाया। सूरबीर हरि दातार, वाली दो जहानया। प्रगट हो विच संसार, इक्क मारे तीर निशानया। नौ खण्ड पृथ्वी वेख विचार, खेले खेल गुण निधानया। सत्तां दीपां आई हार, वेला अन्त अन्त करानया। वरभण्ड खण्ड हो त्यार, हरि शब्द खोज खुजानया। जेरज अंडां मारे मार, उत्भज सेत्ज होए वैरानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए वर, देवे सरन चरन

इक्क ध्यानया। चरन कँवल इक्क ध्यान, हरिजन आप रखाया। देवणहारा नाम निधान, आत्म झोली रिहा भराया। सम्मत चौदां सच निशान, चौदां लोकां रिहा वखाया। आपे वेख मुगल पठान, ईसा मूसा रिहा हिलाया। चीना रूसा बण निधान, क्यों बैठा मुख छुपाया। वाली हिन्द बाल अञ्जाण, प्रभ साचा रिहा जगाया। लेखा लिखणहार भगवान, जुग जुग लिखदा आया। कलिजुग अन्तिम वेख भूमिका अस्थान, भारत खण्डी डेरा लाया। जोती जोत जगे महान, भेव किसे ना पाया। पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराण, पंडत काशी रहिण ना पाया। ग्रन्थी पन्थी बहि बहि गान, हरि मन्दिर हरि जी दिस ना आया। अञ्जील कुरान सर्ब पछतान, ऐली अल्ला पढ़ प्रभ सच अमाम, शब्द ना वेख वखाया। खाणी बाणी होई हैरान, वेद पुराणां आई हान, अञ्जील कुरान अन्त पछतान, कलिजुग काली रैण दए दुहाया। जोत सरूप हरि भगवान, शाहो भूप वाली दो जहान, सति सरूप गुण निधान, गुणवन्ता भेव ना पाया। सत्त रंग चढ़ाए धर्म निशान, नौ खण्ड पृथ्वी एका शान, सत्तां दीपां देवे मान, चरन कँवल इक्क सरनाया। बीस बीसा चतर सुजान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण रूप वटाया। निरगुण तेरी नाम धार, दिस किसे ना आईआ। साध सन्त रहे विचार, भेव कोए ना पाईआ। जीव जन्त होए गंवार, रसना मुख हलकाईआ। गुरमुख साचे कर त्यार, प्रभ आपणी सेव लगाईआ। सम्मत चौदां वेख विचार, रैण अन्धेरी रिहा मिटाईआ। पूर्ब जन्मां लहिणा देणा कर्ज उतार, पिछला मूल चुकाईआ। साचा गहणा तन शृंगार, सोहँ तन पहनाईआ। सोलां कलीआं अपर अपार, साची पुरीआं नाल रलाईआ। वलीआ छलीआ हरि निरँकार, वल छल आप कराईआ। निहचल धाम अटल अटलीआ, थिर घर डेरा लाईआ। थिर घर डेरा पुरख भतार, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाईआ। हरि सन्तन मेला सच द्वार, आप आपणा रिहा कराईआ। पहली चेत्र दिवस विचार, थित वार आप उपाईआ। गुरमुख साचे लए उभार, आप आपणी ओट रखाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों कढ्ढे बाहर, लोकमात शब्द जणाईआ। आपे गुप्त आपे ज़ाहर, अन्दर मन्दिर बाहर रखाईआ। भगत सुहेला मीत मुरार, एकँकार आप अख्वाईआ। अमृत आत्म बख्शे ठण्ढी ठार, निझर धार आप चुआईआ। आपे खोल्हणहारा बन्द किवाड़, अन्दर बैठा कुण्डा लाईआ। मेट मिटाए पंचम धाड़, लोभ मोह हँकार काम क्रोध नेड़ ना आईआ। शब्द खण्डा तेज कटार, आपणा आप दिखाईआ। आपे होया पहरेदार, दिवस रैण सेव कमाईआ। जन भगतां करे ख़बरदार, एका इक्की रिहा पाईआ। साची सिक्खी विच संसार, सतिजुग त्रेता मात उपाईआ। गुर गोबिन्दे मंगी भिक्खी, प्रभ आत्म झोली पाईआ। एका धार रक्खी तिक्खी, सच सुच्च सच्ची सरनाईआ। ना कोई जाणे मुनी रिखी, जप तप हठ्ठ सति भेव ना पाईआ। आपणी हथ्थीं लेख रिहा लिखी, दो

६८२
०६

जहान ना कोई मिटाईआ। नेत्र लोचन नैण आपे पेखी, आप आपणी बणत बणाईआ। आप उपाए धारी केसी, मूंड मुंडाए संग रलाईआ। प्रगट जोद्धा सूर दस दस्मेसी, कलिजुग दहिसर मेट मिटाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम पेशी, सम्मत चौदां आपे पाईआ। पूजा मिटाए शिव शंकर ब्रह्मा विष्न महेष गणेशी, करोड़ तेतीसा ना कोए मनाईआ। आकाल आकाला दीन दयाला गुर गोपाला शब्द रखवाला चतुर्भुज प्रभ साचा रहसी, दूसर कोई दिस ना आईआ। जन भगतां फल लगाए काया डाला, आप आपणी रुत्त सुहाईआ। नेड़ ना आए काल महांकाला, प्रभ चरन द्वारे रिहा बिठाईआ। एका दस्से राह सुखाला, सतिजुग साचा मार्ग लाईआ। चार वरन रखाए इक्क सच्ची धर्मसाला, चरन सरन सच्ची सरनाईआ। सोहँ शब्द गल पाए माला, ओअँ सतिजुग भेव चुकाईआ। आपे जोत जगाए जगत ज्वाला, आपे खिच्च वखाईआ। कलिजुग होया हाल बेहाला, चारों कुन्ट दए दुहाईआ। सतिजुग साचा मारे छाला, प्रभ साची रुत्त सुहाईआ। दोहां विचोला शब्द दलाला, हरि सालस इक्क रखाईआ। आपे होया हरि रखवाला, जुग जुग वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका नाम दए वर, लक्ख चुरासी लए प्रनाईआ। लक्ख चुरासी साची नारा, एका कन्त हंढांयदा। प्रगट हो नर अवतारा, गुरमुख साचे आप जगांयदा। देवे दरस अगम्म अपारा, लोकमात आप उठांयदा। रसन कराए जै जै जैकारा, अक्खर वक्खर शब्द जणांयदा। धरनी धरत धवल भण्डारा, ना कोई खाली मात करांयदा। सृष्ट सबाई रिहा मवल, दिस किसे ना आंयदा। आपे रामा कृष्ना साँवल सँवल, मुकंद मनोहर लक्खमी नरायण आप अख्वांयदा। आपे प्रगट होए उप्पर धवल, निहकलंका डंक वजांयदा। जन भगतां उलटा कर नाभ कँवल, अमृत धार वहांयदा। सुरत सवाणी होई बवल, आप आपणा राह वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा सच ज्ञान दवांयदा। सतिजुग तेरा शब्द ज्ञान, हरि एका एक रखाया। काया मन्दिर सच मकान, प्रभ एका ओट तकाया। आपे दाता गुण निधान, देवणहार आप अख्वाया। आपे चतुर सुघड़ सुजान, मूर्ख मूढ़ आप अख्वाया। आपे बैठ विच बिबान, बिठावणहार आप हो आया। लोआ पुरीआं मार ध्यान, हरिजन सोए रिहा जगाया। सम्मत चौदां एका आन, एका इक्की रिहा पाया। लेखा चुक्के पीण खाण, लक्ख चुरासी रिहा जणाया। अन्तिम लहिणा देणा साढे तिन्न हथ्थ सीण, साची वंडा रिहा वंडाया। वेखे खेल रूसा चीन, भारत खण्डी डेरा लाया। दाता जोद्धा सूरा वड प्रबीन, पारब्रह्म अख्वाया। लेखा लिखे लोक तीन, तिन्नां लोकां लेख लिखाया। कलिजुग तेरी भन्ने हँकारी बीन, सतिजुग खण्डा हथ्थ उठाया। नव खण्डां सत्तां दीपां साधां सन्तां लए छीन, दीपक जोत ना कोए जगाया। गुरमुखां करे ठांढा सीन, जिस

जन आपणा दरस दिखाया। नेत्र लोचन वेखण तीन, निज आत्म वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निज घर बैठा आसण लाया। निज घर आत्म हरि हरि वसया, गुरमुख विरले पाया। पारब्रह्म राह साचा दस्सया, नर नारी जोत जगाया। दस्म द्वारी बहि बहि हस्सया, आत्म सेजा आसण लाया। मेट मिटाए रैण अन्धेरी मस्सया, साचा चन्द आप चढ़ाया। तीर निराला एका कसया, दो जहानां पार कराया। धुरदरगाही आया नस्सया, लोकमात फेरा पाया। लक्ख चुरासी जूठी झूठी फाही फस्सया, ना कोई देवे फंद तुड़ाया। माया नागनी डंग मार रही डस्सया, दूई द्वैती विस ना कोई लाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वरभण्डी वंड वंडाया। हरि भंडी हरि वंड वंडाए, आपणी कल धारया। इलाबुत हरि दए हिलाए, पंचम जेठ दिवस विचारया। केतमाल दए दुहाए, ना कोई मात सहारया। किंपुरख प्रभ किरपा कर, आपे दए जगत हुलारया। धरत मात तेरा खुल्ला घर, करे अन्तिम वारया। धर्म राए भण्डारे देवे भर, लक्ख चुरासी कर सँघारया। आप खुलाए अन्तिम दर, सम्मत चौदां वेख वखा रिहा। आपणी करनी रिहा कर, करनहार वड सिक्दारया। ना जन्मे ना जाए मर, खेले खेल वड संसारया। जन भगतां आत्म लए वर, कन्त भतारी आप अख्वा रिहा। इक्क नुहाए साचे सर, चरन धूढ़ी मस्तक ला रिहा। आवण जावण चुक्के डर, लक्ख चुरासी फंद कटा रिहा। इक्क वखाए साचा घर, थिर घर नाउँ रखा रिहा। चार वरन उपाए साचा दर, ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान एक धाम बहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, राम रहीम आप अख्वा रिहा। राम रहीम रहिमाना, अल्ला अलाही नूरया। आपे बन्ने हथ्थीं गाना, वेख वखाए नेड़े दूरया। रसना चिल्ला तीर कमाना, सोहँ आप चढ़ा रिहा। उठे जोद्धा सूर बली बलवाना, लक्ख चुरासी सुंञ मसाना, घर दिसदा ना कोई वसा रिहा। ना कोई गाए शब्द तराना, राग ताल ना कोई रखा रिहा। सम्मत चौदां होए जवाना, बाहू बल रखा रिहा। गुरमुख विरले मेल श्री भगवाना, जिस जन आपणी दया कमा रिहा। आपे आप देवे साचा दाना, दाता दानी आप अख्वा रिहा। जगत मिटे अन्त निशाना, हरि साचा मेट मिटा रिहा। सतिजुग साचा होए प्रधाना, धरत मात गोद बिठा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विष्नूं वंसी आप अख्वा रिहा। विष्नूं भगवान हथ्थ वड्याईआ, कलिजुग अन्तिम वारा। खेले खेल हर घट थाँईंआ, जोत नूर कर उज्यारा। हरिजन उठाए फड़ फड़ बाहींआ, दर दर घर घर आप रखवारा। सदा सुहेला देवे ठण्ढीआं छाँईंआ, एका पल्ला नाम फड़ारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर,

६८४ ०६

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बीस इकीस जगत जगदीस, हरिजन मेला मेल मिलारा, गुरमुख गोबिन्द मेल, हरि हरि गोबिन्द पाया। मिल्या मेल सज्जण सुहेल, जगत चिन्दया दए मिटाया। आपे खेलणहारा खेल, जुग जुग खेल खिलाया। आप वसया रंग नवेल, आपे बैठा हर घट आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका धाम सुहाया। सच धाम सच अस्थान, साची बणत बणाईआ। आपे बैठ श्री भगवान, साध सन्त मात तराईआ। जी आया देवे जिया दान, आत्म घर वधाईआ। चरन धूढ़ सच्चा इशनान, सर सरोवर इक्क वखाईआ। काया मन्दिर अन्दर बहि बहि रसना गाण, गावत गावत हरि सुक्ख सहिज समाईआ। धुरदरगाही देवे माण, जो जन आए सीस झुकाईआ। शब्द बिठाए सच बिबान, आवण जावण गेड़ कटाईआ। लक्ख चुरासी पुण छान, गुरमुख साचे रिहा तराईआ। आपे होया जाणी जाण, हरिजन साचे वेख वखाईआ। दो जहानी देवे माण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सोहँ शब्द धुर फ़रमान, दर दर घर घर रिहा अलख जगाईआ। अमृत आत्म पीण खाण, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। एका एक धुर दी बान, प्रभ साचा रिहा पाईआ। चार वरनां इक्क ज्ञान, एका राह वखाईआ। मिले मेल गुण निधान, गुणवन्ता मेल मिलाईआ। गुरमुख साचे चतुर सुघड़ स्यान, दर घर साचा बंक सुहाईआ। पाया पद इक्क निरबान, निज घर वेख वखाईआ। मेट मिटाए पंज शैतान, जिस जन आपणी दया कमाईआ। चरन द्वार कर परवान, परमानंद विच समाईआ। आत्म शब्दी ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर बाहर द्वार बंक सुहाईआ।

❊ २० चेत २०१४ बिक्रमी जगीर सिँघ दे गृह पिण्ड कादराबाद ज़िला अमृतसर ❊

सतिगुर पूरा एक है, एका एक अकाल। सृष्ट सबाई टेक है, दीनां बंधप दीन दयाल। जिस जन काया करे बुध बिबेक है, देवे नाम सच्चा धन माल। माया ममता ना लाए सेक है, ना शाह ना कंगाल। नेत्र लोचन सतिगुर इक्क विसेख है, काया चोली रंग चाढ़े लाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग विछड़े लए भाल। सतिगुर पूरा सज्जण, एका एक अख्वाया। जिस जन बख्शे चरन धूढ़ साचा मजन, दुरमति मैल गंवाया। आपे होया पड़दे कज्जन, दूई द्वैती पड़दा लाहया। भाण्डे भरम गढ़ हँकारी भज्जण, प्रभ चरन कँवल ध्यान लगाया। अमृत आत्म पी पी रज्जण, जिस जन आत्म तृष्न तृप्ताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन विछड़े लए मिलाया। विछड़े मेले धुर संजोगी, आपणा मेल मिलांयदा। दूई द्वैती कटे रोगी, एका रंग चढ़ांयदा। रसना जिह्वा साचा भोगी, हरि हरि रसना गांयदा।

देवे दरस आत्म अमोघी, आत्म दर खुल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सर सरोवर इक्क विखांयदा। सर सरोवर इक्क इशनान, एका एक वखाया। सतिगुर पूरा गुण निधान, गुर पूरा दया कमाया। जीव जन्त बाल अञ्जाण, भुल्ले रुल्ले गले लगाया। खेले खेल श्री भगवान, आप उपाए आपे दए मिटाया। देवणहारा जिया दान, सृष्ट सबाई वेख वखाया। गुरमुख विरले रसना गान, आत्म दरसी दरस वखाया। जिस जन बख्शे चरन ध्यान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग रंगाया। रंग रंगीला सतिगुर नाउँ, एका एक चढ़ांयदा। वेख वखाए थाँई थाउँ, अन्दर मन्दिर खोज खुजांयदा। आप उठाए फड़ फड़ बाहों, दिवस रैण सेव कमांयदा। पुरख अबिनाशी अगम्म अथाहो, अगम्म अगम्मड़े थाउँ सुहांयदा। करे कराए सच न्याउँ, जगत जगदीस आपणा मूल चुकांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काउँ, सोहँ साची चोग चुगांयदा। आपे पिता आपे माउँ, बाली बाला गोद उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोपाला दीन दयाला हरि रखवाला दिवस रैण रैण दिवस पंचम घर आत्म वेख वखांयदा। निज घर आत्म वेखे विगसे, अकल कला भरपूरा। भगत जनां राह साचा दस्से, अट्ठे पहर हाज़र हज़ूरा। तीर निराला एका कसे, पंच विकारा करे चूर चूरा। मिटे रैण अन्धेरी मस्से, दरस पाया। नेत्र नैण सतिगर पूरा भगत जनां हिरदे वसे, बेमुखां दिसे दूरन दूरा। जोत प्रकाश कोटन कोट रवि ससे, उपजे धुन नाद अनाहद धुन आत्मक तूरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे देवे वर, चतर बणाए मूर्ख मूढ़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन बख्शे चरन मस्तक धूढ़ा।

६८६
०६

६८६
०६

⁕ २१ चेत २०१४ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ज़िला अमृतसर इक्की परिवारां दा इक्ठ ⁕

गोबिन्द तेरी साची धार, प्रभ आपणे हथ्थ रखाईआ। प्रगट हो विच संसार, निहकलंका नाउँ रखाईआ। शब्द डंका अपर अपार, चारे कुन्टां रिहा वजाईआ। राउ रंकां करे ख्वार, राज राजानां रिहा उठाईआ। शाह सुल्तानां एकँकार, सच सिँघासण डेरा लाईआ। शब्द खण्डा तेज कटार, पारब्रह्म अबिनाशी करता आपणे हथ्थ उठाईआ। लोआं पुरीआं खण्डां ब्रह्मण्डां प्रभ पावे सार, समरथ हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द साचा मेल मिलाईआ। गोबिन्द मेला हरि निरँकार, प्रभ साचे आप मिलाया। आप आपणी किरपा धार, आपणा पल्ला नाम फड़ाया। दिवस रैण करे प्यार, अट्ठे पहर वेख वखाया। दो जहानां पावे सार, विछड़ कदे ना जाया। जुग जुग लए मात अवतार, आप धारा

रिहा चलाया। सतिजुग द्वापर त्रेता उतरया पार, कलिजुग अन्तिम आया। प्रगट जोत हरि निरँकार, नाम खण्डा रिहा उठाया। शब्द सरूपी मारे मार, ब्रह्मण्डां खोज खुजाया। ब्रह्मा शिव देवत सुर दए हुलार, जेरज अंडां वेख वखाया। भेख पखण्डा दए निवार, नौ खण्डां आप हिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आप अख्वाया। गोबिन्द तेरा साचा संग, प्रभ साचा आप निभांयदा। साचे घोड़े कस तंग, लोकमात वेख वखांयदा। धरत मात तेरी सेज सुहाई साढे तिन्न हथ्थ नाम पलँघ, सच घर आपणा आप टिकांयदा। सृष्ट सबाई नौ द्वारे रही लँघ, जूठ झूठ भरम भुलांयदा। गुरमुख विरला दस्म द्वारी आए लँघ, प्रभ साचा नजरी आंयदा। काया चोली चाढ़े रंग, दुरमति मैल गंवांयदा। मानस जन्म ना होए भंग, हरिजन चरनी सीस झुकांयदा। दोए जोड़ दर द्वार जो जन लए मंग, प्रभ पूरन इच्छया आप करांयदा। कलिजुग काया काची वंग, अन्तिम भन्न वखांयदा। प्रभ अन्तिम वेखे भुक्ख नंग, सम्मत चौदां रुत्त सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आप अख्वांयदा। गुर शब्द तेरी साची रास, प्रभ साचा आप वखांयदा। दिवस रैण वसे पास, विछड़ कदे ना जांयदा। जोत सरूप पुरख अबिनाश, अबिनाशी पुरख आप अख्वांयदा। आपे होया दासी दास, सेवक सेवा आप कमांयदा। आदि अन्त ना जाए विनास, जुग जुग अटल रहांयदा। कलिजुग मण्डल वेखे रास, लोआं पुरीआं फेरा पांयदा। लक्ख चुरासी तेरा लेखा चुक्के दस दस मास, आवण जावण खेल खिलांयदा। गुरमुख साचे सन्त जनां हरि हिरदे रक्खे वास, दिवस रैण दरस दिखांयदा। निर्मल जोती दीप कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। अन्तिम वेला गाया स्वास स्वास, सम्मत चौदां लेखे लांयदा। काया कलिजुग दिसे प्रभास, साचा मंगल ना कोई गांयदा। लक्ख चुरासी अन्तिम अन्त होए निरास, पल्ले नाम ना कोई बंधांयदा। धर्म राए गल देवे फास, पंचम जेठी हथ्थ रखांयदा। प्रगट होए घनकपुर वास, निहकलंक नाउँ रखांयदा। गुरसिक्खां पूर कराए आस, जुग जुग विछड़े मेल मिलांयदा। हरि दाता सर्ब गुणतास, साची भिच्छया झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची बणत बणांयदा। गुर गोबिन्द तेरी रत्त, हरि आपणे लेखे लाईआ। मिल्या मेला कमलापत, विछड़ कदे ना जाईआ। सति सन्तोख धीरज सति, सांतक सति कराईआ। आत्म बीज बीज्जया साचे वत्त, कलिजुग अन्तिम फल खवाईआ। जुग जुग रक्खणहारा पत, लोकमात दए वड्याईआ। लक्ख चुरासी लेखा चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, जन भगतां मेल मिलाईआ। मनमुख जीवां पाए नत्थ, चारों कुन्ट दए दुहाईआ। जन भगतां सगल वसूरे जायण लथ्थ, जो जन इक्की चेत्र दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द सेवा सेव कमाईआ। गोबिन्द दाता हरि गुर दयाल,

दयावान मेहरबाना। गुरमुख उठाए साचे लाल, सुणाए धुर फ़रमाणा। शब्द लपेटे सच दुशाल, हथ्थीं बन्ने सोहँ गाना। नेड़ ना आए काल महांकाल, राए धर्म मुख छुपाना। एका मेला जोत अकाल, दूसर कोई ना संग रलाना। शब्द वजाए साचा ताल, ढोलक छैणा ना कोई वजाना। सोहँ पहनाए तन शस्त्र बान, रसना चिल्ला इक्क विखाना। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द सारे गान, गोबिन्द हथ्थ किसे ना आना। प्रगट होए जोद्धा सूर बली बलवान, नीले घोड़े संग रखाना। कल्गी तोड़ा इक्क महान, जोती जोड़ा मेल मिलाना। मिल्या मेल श्री भगवान, साचा धाम इक्क सुहाना। सो पुरख निरँजण झुलाए सच निशान, लोआं पुरीआं आप वखाना। चार वरनां देवे इक्क ज्ञान, ब्रह्म ज्ञानी आप हो जाना। सन्त सुहेले आप पछान, आप आपणे चरन लगाना। देवे दात दानी हरि गुण निधान, चार वरन वड मेहरबाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुर गोबिन्द तेरा संग लोकमात आप निभाना। गुर गोबिन्दे चढ़या चाअ, प्रभ अग्गे सीस झुकांयदा। पुरख अबिनाशी मिल्या सच मलाह, जन भगतां बेड़ा बंधांयदा। आवण जावण तुट्टा फाह, जो जन एका इक्की मात पांयदा। मिले मेल हरि बेपरवाह, आप आपणे अंग लगांयदा। लेखे लाए रसन स्वास स्वासा, जो जन रसना गांयदा। मनमुख जीवां ना देवे कोई थाँ, दर द्वारे आप दुरकांयदा। जन भगतां देवे ठण्ढी छाँ, दिवस रैण सेव कमांयदा। आपे पिता आपे माँ, गुरमुख बाल अञ्जाणे गोद उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया रंग रंगांयदा। गोबिन्द रंगाया रंग गुलाल, हरि एका एक चढ़ाया। शब्द बणाया सच दलाल, साचा मेल मिलाया। जोती धार इक्क अकाल, अकल कला अख्वाया। आप आपणी सुरत संभाल, हरिजन साचे रिहा जगाया। वेखे फल काया लग्गे डालू, जिस जन रसना हरि हरि गाया। कलिजुग वजाए जूठा झूठा ताल, काम क्रोध लोभ मोह हँकार संग रलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द तेरा साचा संग, लोकमात रिहा निभाया। गोबिन्द तेरा साचा संग, प्रभ साचे मात निभावणा। दर द्वारे मंगी मंग, पूरी इच्छया आप करावणा। लोआं पुरीआं रिहा लँघ, सम्मत चौदां थित सुहावणा। पंचम जेठ शब्द सिँघासण बैठ पलँघ, नौ खण्ड पृथ्वी आप हिलावणा। चिट्टे अस्व कसया तंग, सोलां कलीआं आसण लावणा। त्रैगुण माया मारे डंग, ना मुख किसे भवावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द देवे एका वर, वर दाता आप अख्वावणा। गुर गोबिन्दा कर निमस्कार, दिवस रैण खुशी मनाईआ। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, देवे मात वड्याईआ। शब्द खण्डा तेज कटार, तन गात्रे रिहा लटकाईआ। कच्छ कड़ा केस कृपान मार ध्यान, शस्त्र बस्त्र एका नाउँ सोहँ तन पहनाईआ। आपे वसया हो मेहरवान, मन्दिर अन्दर डेरा लाईआ।

आपे गुप्त आपे ज़ाहिर, आप आपणा बैठा मुख छुपाईआ। जन भगतां करे ख़बरदार, शब्द सुनेहड़ा दए जणाईआ। सम्मत चौदां रिहा पुकार, कलिजुग रैण अन्धेरी छाईआ। पहली चेत्र हो त्यार, प्रभ साची बणत बणाईआ। गुरमुखां मंगे जाए द्वार, अग्गे आपणी झोली डाहीआ। पारब्रह्म बण भिखार, एका आपणी धार रखाईआ। गुरमुखां करे निमस्कार, जिस मिल्या हरि रघुराईआ। गोबिन्द गुर अद्धविचकार, जगत विचोला रिहा बणाईआ। मनमुख डोबे मँझधार, गुरमुख साचे पार कराईआ। वरन गोतां वसे बाहर, केसाधारी ना मूंड मुंडाईआ। जोत सरूपी इक्क आकार, हर घट बैठा आसण लाईआ। शब्द सरूपी तेज कटार, जुगा जुगन्तर इक्क रखाईआ। निहकलंका लए अवतार, आपणी कल रिहा वरताईआ। नौ खण्ड पृथ्वी हाहाकार, सत्तां दीपां रिहा जगाईआ। लोआं पुरीआं दए हुलार, ब्रह्मा शिव देवत सुर करोड़ तेतीसा पार कराईआ। गुरमुख साचे कर त्यार, साचे धाम बहाईआ। एका शब्द हरि भण्डार, सतिजुग साचे झोली पाईआ। सोहँ शब्द अपर अपार, किसे हथ्थ ना आईआ। कोटन कोट मंगदे प्रभ चरन द्वार, साची भिच्छया किसे हथ्थ ना आईआ। अन्तिम रो रो गए धाहां मार, लोकमात होई जुदाईआ। पारब्रह्म तेरी कोई ना पावे सार, नानक कबीरा गए गाईआ। गोबिन्द बैठा अद्धविचकार, प्रभ साचे सेवा लाईआ। प्रगट हो नर निरँकार, आपणा मेल मिलाईआ। वरभण्डी वेखे कर विचार, भेख पखण्डी दए मिटाईआ। आत्म रंडी नर नार, कन्त सुहाग ना कोई हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द तेरा साचा दर, प्रभ अबिनाशी साचा घर इक्क सुहाईआ। गोबिन्द तेरा सच द्वार, प्रभ साचा अलख जगांयदा। प्रगट हो विच संसार, एका नाम मंग मंगांयदा। जोत सरूपी कर आकार, नौ द्वारे आपे बन्द करांयदा। भेव ना पायण जीव गंवार, गुर दर मन्दिर वेख वखांयदा। जोत सरूपी शब्द अधार, पवणी बणत बणांयदा। साध सन्त होए विभचार, सुरत सवाणी ना कोई प्रनांयदा। जूठ झूठ भरया भण्डार, कलिजुग अन्तिम मात वरतांयदा। अगम्म अगम्मड़ी करे धार, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहांयदा। हड्ड मास नाड़ी जगत वणजार, साचा वणज ना कोई करांयदा। जूठ झूठ पंज तत्त जगत विकार, नाता आप बंधांयदा। गुरमुख विरला करे तन शृंगार, गुर का शब्द तन पहनांयदा। वेखे विगसे कर विचार, नेत्र लोचन नैण खोल्ह वखांयदा। आदि अन्त जुगा जुगन्त भगत भगवन्त हरि पावे सार, लोकमात लेखा कोई रहिण ना पांयदा। देव दंत हरि दए हुलार, सम्मत चौदां वेख वखांयदा। मनमुख जीवां पार किनार, प्रभ साची बणत बणांयदा। धर्म राए खोल्ह किवाड़, लोकमाती राह तकांयदा। धरत मात वेखे इक्क अखाड़, अंग संग आप निभांयदा। आपे वेखे जंगल जूह उजाड़ पहाड़, उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द तेरा साचा दर, एका घर सुहांयदा। गोबिन्द

तेरा दर द्वार, एका एक वखानया। जोत सरूपी करे आकार, मिले मेल श्री भगवानया। शब्द डंक अपर अपार, वजाए वाली दो जहानया। गुरमुख साचे कर प्यार, दरस वखाए इक्क महानयाा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, संगत देवे एका वर, वर दाता आप अख्वानया।

नाम गढ़ अपार, गोबिन्द सुहाया। उप्पर चढ़ नर निरँकार, एका आसण लाया। जोत सरूपी कर आकार, पुरख अबिनाशी नाउँ धराया। खेले खेल घनकपुर वास, दिस किसे ना आया। आपे दाता शाहो शाबाश, शाह सुल्तान आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द संग आप निभाया। गोबिन्द काया सच महल्ला, हरि साची जोत जगाईआ। आपे वेखे इक्क इकल्ला, दूसर दिस ना आईआ। शब्दी जोती आपे रल्ला, आपणी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क सुहाए निहचल धाम अटला, दर घर साचा इक्क वखाईआ। गोबिन्द काया साचा घर, हरि साचे बणत बणाईआ। देवणहारा आपे वर, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। लोकमात हरि लै अवतार, भेखाधारी भेख वटाईआ। गोबिन्द ल्या मात वर, नारी कन्ता रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची बणता रिहा बणाईआ। गोबिन्द नारी कन्त भतार, पाया कन्त कन्तूहला। सूहा करे तन शृंगार, शब्द पवणी एका झूला। आप झुलाए हरि निरँकार, वड दाता दूल्हो दूला। कलिजुग अन्तिम वेख विचार, आपे फलया आपे फूला। लक्ख चुरासी पावे सार, जीवां जन्तां साधां सन्तां लहिणा देणा चुकाए पिछला मूला। गुरमुख साचे लए उभार, सोहँ सुणाए साचा ढोला। बाहों फड़ फड़ लाए पार, धुरदरगाही एका तोला। सम्मत सम्मती रिहा विचार, शब्द बणाए नाम विचोला। सम्मत तेरां साची धार, सच दुआरा एका खोल्हा। चार वरन जै जैकार, भेव चुकाए पड़दा उहला। सोहँ रक्खे तिक्खी धार, नौ खण्ड पृथ्वी बणाए दर द्वारे गोला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी खेलणहारा होला। गुर गुर सति सरूप, सच विच समाया। आपे शाहो आपे भूप, सच तख्त सुल्तान आप बहाया। आपे वेखे चार कूट, दहि दिशा वेख वखाया। तीर निराला रिहा छूट, रसना चिज्ले आप चढ़ाया। दो जहानां इक्क हुलारा रिहा झूट, आपणा झूला रिहा झुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, शब्द त्रिसूल इक्क उठाया। गोबिन्द तेरी जोग जुगती, प्रभ आपणे हथ्थ रखाईआ। आप आपणी देवे शक्ती, एका शक्त वखाईआ। लेखे लाए बूंद रक्ती, हरिजन साचे रिहा तराईआ। आपे जाणे वाक भविख्ती, भविख्त वाक आप जणाईआ। आपे लिखणहारा

६६१
०६

लेख लिख्ती, लिख लिख लेख लिखाईआ। गुरमुख साचे वेख वेखती, साची सिक्खी रिहा बणाईआ। चार वरनां साचा भगती, चरन प्रीती रिहा जणाईआ। लक्ख चुरासी कलिजुग माया अग्नी दगती, चार कुन्ट आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द काया खेल खिलाईआ। गोबिन्द काया साचा खेल, अचरज आप कराया। आप आपणा किया मेल, गोबिन्द रूप समाया। जोत निरँजण चाढ़े तेल, साची सईआ मंगल गाया। आपे वेखे नर नरायण, तीजा नेत्र लोचन खोल्ह वखाया। एका साक सज्जण सैण, हरि गोबिन्द आप अख्वाया। आप चुकाए लहिणा देण, जुग जुग वेस वटाया। तन पहनाए बस्त्र शब्द गहिण, उतर कदे ना जाया। मनमुख जीव जूठे झूठे वहिण, अन्तिम दए रुढ़ाया। रसना किसे ना सके कहिण, प्रभ अबिनाशी तेरी अचरज माया। वेद पुराण पंडत काशी पढ़ पढ़ बहिण, पूत सपूता ब्राह्मण गौड़ा दिस ना आया। खाणी बाणी होए वहिण, ग्रन्थी पन्थी भेव ना राया। अञ्जील कुरान वेखे नैण, सम्मत चौदां हरि रघुराया। अन्तिम घर घर पए वैण, प्रभ सभ दी जड़्ह दए उखड़ाया। लाड़ी मौत फिरे डैण, चारों कुन्ट फिरे हलकाया। गुरमुख विरले भाणा सहिण, जिस जन चरन ध्यान रखाया। नौ खण्ड पृथ्वी लक्ख ग्यारां रहिण, दूसर कोई दिस ना आया। नाता तुट्टे भाई भैण, साक सज्जण ना कोई जणाया। धर्म राए दे खत्ते पैण, चित्रगुप्त हिसाब मुकाया। कलिजुग तेरा चुक्कणा लहिण देण, प्रभ साचा रिहा चुकाया। गोबिन्द बणया साक सज्जण सैण, प्रभ आपणा संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गोबिन्द गुर अख्वाया। गोबिन्द गुर हरि गोबिन्दा, गोबिन्द रूप समाया। भगत जनां हरि उतारे चिन्दा, हरि हरि का नाउँ वसाया। मनमुख लगाए आपणी निन्दा, आपणा कर्म कमाया। हरिजन उपाए साची बिन्दा, घर साचे आप बहाया। आदि अन्त जुगा जुगन्त, सदा सद बख्शिंदा, पैज जुग जुग रक्खदा आया। अमृत आत्म धार वहाए सागर सिन्धा, जिस जन आप आपणी दया कमाया। बजर कपाटी तोड़े जिंदा, दूई द्वैती पड़दा लाहया। अमृत मेघ इक्क बरसिंदा, आत्म झिरना रिहा झिराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द साचा मेल मिलाया। गोबिन्द मेला सच सुल्ताना, घर साचे वज्जी वधाईआ। मिल्या मेल हरि भगवाना, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। एका नाउँ इक्क तराना, एकँकारा रिहा सुणाईआ। एका पुरख इक्क सुल्ताना, वाली दो जहानां शब्द निशाना तीर कमाना रसना इक्क वखाईआ। जोद्धा सूर बली बलवाना, वेख वखाए मुगल पठाना, नाल रलाए शाह इराना, इंग्लिस्तान रिहा हिलाईआ। आपे बैठ मस्त दिवाना, लक्ख चुरासी बन्न्हे गाना, चले चलाए आपणे भाणा, हरि भाणे विच समाईआ। वाली हिन्द उठ नादाना, पुरख अबिनाशी पहरया जामा,

निहकलंक नरायण नर, आप आपणी जोत धर, वेख विखाए सर्ब लुकाईआ। सर्ब लुकाई आपे वेखे, हरि त्रैलोकी नाथा। सृष्ट सबाई मेटे भरम भुलेखे, ना कोई जाणे अगली गाथा। प्रभ अबिनाशी लिखणहारा लेखे, सर्बकला समराथा। दूर दुराडा नेरन नेरा हर घट अन्दर बहि बहि वेखे, जीव जन्त तेरा तमाशा। गोरख मच्छन्दर उच्चे टिल्ले धूणीआं ता ता लायण सेके, मिल्या मेल ना मच्छन्दर गोरख नाथा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप उपाए जुग जुग बणाए बणत, आपे होए सगला साथा। सगला साथी हरि भगवन्त, जुग जुग आदि जुगादया। गुरमुख विरले मेल नारी कन्त, मिले मोहण माधव माध्या। भरमे भुल्ले जीव जन्त, हरि हरि नाम ना रसन अराध्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सोहँ शब्द चलाए बोध अगाध्या। सोहँ शब्द बोध अगाध, हरि शब्दी शब्द जणाईआ। गुर गोबिन्दा रसन अराध, परम पुरख समाईआ। इक्क वजाए साचा नाद, दो जहानां आप सुणाईआ। मिल्या मेल साचे साध, साकत निन्दक दुष्ट रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे रिहा उठाईआ। हरिजन साचे उठ रैण सुहञ्जणी भिन्नड़ी खुशी मनांयदा। पुरख अबिनाशी चरन लाग, जोत निरँजण कलिजुग अन्तिम मेल मिलांयदा। मिले मेल कन्त सुहाग, दुःख भय भंजन भगत भगवन्त रूप अख्वांयदा। चरन कँवल पुरख अबिनाशी लाग, धूढ़ मजन दुरमति मैल गंवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन किरपा देवे कर, नेत्र देवे ज्ञान नाम अंजन अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। अज्ञान अन्धेर जाए विनास, रसना हरि हरि गाया। पुरख अबिनाशी होया दास, गोबिन्द सेव कमाया। निज घर आत्म रक्खे वास, साची नगरी आप सुहाया। थिर घर इक्क शाहो शाबाश, शाह सुल्ताना डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लहिणा देणा रिहा चुकाया। कलिजुग उठ नादान, प्रभ साचे आप जगाया। एका सुण धुर फ़रमाण, सतिजुग साचे लेखे लाया। सोहँ रसना सारे गाण, दूजा कोई रहिण ना पाया। दीन मज़्हब ना कोई ईमान, हिन्दू सिख मुस्लिम इसाई थिर कोई रहिण ना पाया। वेले अन्त होई जुदाई, पंज तत्त झूठ कुड़माई, हँकार विकार वज्जे वधाई, साचा मंगल ना कोई गाया। नौ द्वारे देण दुहाई, माया ममता तन वसाई, दस्म द्वार बूझ ना पाई, भरमे भुल्ले भरम लुकाई, साचा कन्त ना कोई हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सोया रिहा उठाया। उठ जाग होए अञ्जाण, क्यों रैण अन्धेरी छाईआ। लक्ख चुरासी कर पछाण, कवण तेरा संग निभाईआ। सतिजुग लै के आया एका नाम निधान, सोहँ अग्गे रिहा वखाईआ। सम्मत चौदां चौदां लोक रिड़के हरि जहान, पंचम जेठ रुत्त सुहाईआ। पंच शब्द सच बिबाण,

लोआं पुरीआं वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी पुण छाण, गुरमुख साचे शब्द वरोल बाहर कढाईआ। आपे होया निगाहबाान, दिवस रैण वेख वखाईआ। सत्त रंग झुलाए इक्क निशान, साची बणत आप बणाईआ। प्रगट हो श्री भगवान, जीवां जन्तां रिहा समझाईआ। लहिणा देणा जगत चुक्कणा अञ्जील कुरान, विच उनीसा दए खपाईआ। पूजा चुक्के वेद पुराण, ब्रह्मा विष्न ना कोई ध्याईआ। खाणी बाणी ना करे ज्ञान, छत्ती राग ना कोई गाईआ। ग्रन्थी पन्थी पंडत काशी मुल्ला शेख़ मुसायक ना कोई तरान, ना कोई नाअरा लाईआ। अल्ला हू हू बिस्मिल्ला हरि पछाण, आप आपणे विच समाईआ। राम सीता ठांढा सीता राम, कृष्न हरि एका रंग समाईआ। गोबिन्द बेपरवाह नाम सति प्रभ रक्खे पत, लेखा चुक्के अट्ठ तत्त, बीस बीसा पन्ध मुकाईआ। इक्क खुल्हाए साचा हट्ट, ना कोई तीर्थ ना कोई तट्ट, गोदावरी बैठे मुख़ छुपाईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद उच्चे टिल्ले जाणे ढठ्ठ, सच सिंघासण कोए दिस ना आईआ। कलिजुग उलटी गेड़नहारा लट्ठ, सम्मत चौदां प्रभ चरन बैठा सीस झुकाईआ। गुर संगत तेरा इक्क इक्ठ, दर दरबारा इक्क वखाईआ। त्रैगुण माया तेरा मट्ठ, अन्तिम अग्नी लाईआ। जोती जगे लट लट, चारों कुन्ट करे रुशनाईआ। गुरमुखां भाग लगाए काया मट्ट, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। दूई द्वैती मेटे फट्ट, एका रंग चढ़ाईआ। शब्द हथौड़ा मारे सट्ट, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। अमृत आत्म देवे झट्ट, आपणी आप सेव कमाईआ। आपे खेले खेल बाजीगर नट, स्वांगी स्वांग वरताईआ। दस्म द्वारी खोल्ह हट, आत्म सेजा इक्क विछाईआ। हथ्थ रखाए सोहँ साचा पट, जन भगतां तन पहनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द तेरा एका घर, चार वरनां रिहा वखाईआ। चार वरनां इक्क द्वार, हरि साचा इक्क वखांयदा। शब्द भरया नाम भण्डार, जुग जुग आप वरतांयदा। अक्खर वक्खर वस्त अपार, दो अक्खर धार वखांयदा। रोड़ी सक्खर कर प्यार, सोया पूत उठांयदा। सृष्ट सबाई होणा सथ्थर, धरत मात गोद सवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, गोबिन्द तेरी काया रंग चढ़ांयदा। गोबिन्द काया रंग चलूल, हरि एका एक चढ़ांयदा। साध सन्त ना जाए कोई भूल, लहिणा देणा आप चुकांयदा। शिव शंकर फड़े हथ्थ त्रिसूल, दोए जोड़ सीस झुकांयदा। ब्रह्मा दरस मंगे कन्त कन्तूहल, अट्ठे नेत्र आप उठांयदा। करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द बरसे फूल, दिवस रैण सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, साचा धाम आप सुहांयदा। साचा धाम हरि द्वार, एका एक वखाया। जोत सरूपी बैठ घर, आपणी कार कराया। ना किसे फड़ाए आपणा लड़, ना कोई संगी साथ रखाया। दीपक जोती एका बलड़ा, इक्क ज्ञान कराया। सच द्वार आपे मलड़ा, थिर घर नाउँ रखाया। हरि हरि अगम्म अगम्मड़ा, अगम्मड़े

धाम सुहाया। ना कोई हड्ड मास नाड़ी दिसे चम्मड़ा, पंज तत्त दिस ना आया। ना कोई पल्ले पैसा धेला दमड़ा, त्रैगुण माया ना तत्त उपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां दर द्वारे अग्गे खलड़ा, दिस किसे ना आया। गुरमुख तेरा सच द्वार, प्रभ साचा वेख वखानया। आप आपणी किरपा धार, देवे धुर फ़रमाणया। सोहँ शब्द जै जै जैकार, चार वरनां इक्क सुणानया। सतिजुग तेरी साची धार, लोकमात होए परधानया। कलिजुग अन्तिम होए ख्वार, मिट जाए जगत निशानया। सम्मत पन्दरां हाहाकार, घर घर होए वैरानया। सोलां तेरा कोई ना करे श्रृंगार, पट्टी सीस ना कोई गुंदानया। ना कोई महल्ल ना अटार, मन्दिर अन्दर ना कोई राग सुणानया। डूँघी कन्दर वेख विचार, जीव जन्त सीस लुकानया। धरत मात तेरा इक्क अखाड़, प्रभ वेखे जोद्धा सूर बली बलवानया। आप उठाए अगम्मी धाड़, साची खेल खिलानया। नौ खण्ड पृथ्वी देवे झाड़, मेट मिटाए जीव शैतानया। पंज तत्त विकारा देवे साड़, इक्क चलाए तीर निशानया। अन्तिम खेल खेले सतारां हाढ़, ना कोई भुल्ले जीव नादानया। काया चोली शब्दी देवे पाड़, एका मारे सच निशानया। गुरमुख साजण साचे लाड़, दर घर करे परवानया। शब्द घोड़े आपे चाढ़, वाग आपणे हथ्थ रखानया। नेड़ ना आए जगत विकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोहँ खण्डा तेज कटार एका हथ्थ उठानया। सोहँ खण्डा विच वरभण्ड, आपणी वंड वंडाया। मंगे मंग गोबिन्द ब्रह्मण्ड, जेरज अंड उत्भज सेत्ज वेख वखाया। मनमुखां वढ्ढे अन्तिम कंड, नार दुहागण दिसे रंड, साचा कन्त ना कोई हंढाया। साधां सन्तां भरया इक्क घमंड, अन्तिम आपणी वंडां रिहा वंड, जूठ झूठ भार उठाया। अन्तिम मिटे भेख पखण्ड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका दूजा भउ चुकाया। एका दूजा भउ जाए चुक्क, हरि साचे आप चुकावणा। कलिजुग वेला रिहा ढुक, सम्मत चौदां लेख लिखावणा। सम्मत पन्दरां मानस देही वेख मनुक्ख, एका धक्का लावणा। सम्मत सोलां बाल ना दिसे किसे कुक्ख, ना कोई धीर धरावणा। सम्मत सतारां घर घर दुखीए रोंदे दुःख, सांतक सति ना कोए वरतावणा। सम्मत अठारां जीव जन्त मेटे भुक्ख, जल धारा आप वहावणा। उन्नी उनीसा हरि जगदीसा खेल कराए धरतमात तेरी कुक्ख, ईसा मूसा मेट मिटावणा। बीस बीसा सुखणा रिहा सुक्ख, निहकलंक दर्शन पावणा। सतिजुग उतरे तेरी भुक्ख, प्रभ साचे चरन छुहावणा। दोए जोड़ सीस रिहा झुक्क, सोहँ रसना गावना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आपणा रूप वटावणा। बीस बीसा करे विचार, प्रभ चरन ध्यान लगाया। दिवस रैण रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नीर वहाया। गोबिन्द गुर हो त्यार, तेरा राह तकाया। नीले वाला हरि अस्वार, नीली छत्तों बाहर कराया।

पीले बस्त्र तन श्रृंगार, सोहँ शस्त्र हथ्थ उठाया। कल्गी तोड़ा इक्क अपार, जोती जोड़ा मेल मिलाया। चार वरनां बहाए इक्क दरबार, दर दरबारी आप अख्वाया। आपे होया पहरेदार, नंगी पैंरी सेव कमाया। गुरमुखां करे ख़बरदार, कलिजुग अन्तिम रिहा जगाया। आपे होया सेवादार, जुग जुग सेवा रिहा कमाया। मीत मुरारा हरि निरँकार, निरगुण भेख वटाया। सरगुण तेरी बन्न्हे धार, सति पुरख निरँजण दया कमाया। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क विचार, एका ज्ञान दवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बीस बीसा रिहा समझाया। बीस बीसे रक्ख धीर, प्रभ साचा आप धरांयदा। कलिजुग तेरा अन्त अखीर, विच उनीसे आप करांयदा। सतिजुग तेरे साचे बस्त्र चीर, तन श्रृंगार करांयदा। गुरमुख साजण वीर, इक्क दूजे नाल मिलांयदा। गुर गोबिन्द तेरी कटे भीड़, माछीवाड़े जो अल्लांयदा। अन्तिम वेला बन्न्हे बीड़, गुरसिख साचे आप तरांयदा। एका इक्की अन्त अखीर, साची सिक्खी मात उपांयदा। रक्खी धार प्रभ साचे तिक्खी, मदिरा मास कोई नेड़ ना आंयदा। नेत्र लोचन दर दर घर घर जा जा पेखी, आप आपणी सेव कमांयदा। किसे हथ्थ ना आए मुनी रिखी, ज्ञान ध्यान कोटन कोट लगांयदा। नाअरा ला ला थक्के पीर शेख़ी, ऐली अल्ला नूर दिस ना आंयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम पेशी, सम्मत चौदां पंज जेठ करांयदा। नाल रलाए गणपति गणेशी, ब्रह्मा शिव देवत सुर सच गवाह बणांयदा। प्रगट होए दर दरवेशी, दस्तगीर शाह हकीर साचा संग निभांयदा। वेखणहारा धारी केसी, गोबिन्द रूप वटांयदा। जोद्धा सूरा दस दस्मेसी, शब्द खण्डा खिच्च वखांयदा। आप उठाए नर नरेशी, तख्त ताज कोई रहिण ना पांयदा। आपे करया आपणा वेसी, वेस अनेका आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, बीस बीसे तेरी रुत्त सुहांयदा। बीस बीसे तेरे हथ्थ वड्याई, प्रभ साचे आप रखाईआ। चार वरन करे शब्द कुड़माई, सोहँ मुख सगन लगाईआ। कलिजुग अन्तिम होए जुदाई, बैठे मुख छुपाईआ। सतिजुग साचे वज्जे वधाई, चारों कुन्ट होए जणाईआ। हरिजन गायण चाँईं चाँईं, सच महल्ला एका सोहला रिहा सुणाईआ। आप उठाए फड़ फड़ बाहीं, कलिजुग अन्तिम मेल मिलाईआ। देवणहारा ठण्ढीआं छाँईं, सीस आपणा हथ्थ टिकाईआ। फड़ फड़ कागों हँस बणाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, बीस बीसे तेरी रुत्त सुहाईआ। बीस बीसे हरि जगदीस, आपणी कल वरतांयदा। छत्र झुलाए साचे सीस, सच सुल्ताना आप अख्वांयदा। कोए ना करे प्रभ तेरी रीस, सभ भाणे विच समांयदा। खेले खेल हरि बीस बीस, हरि बीस बीसा हो आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण खेल खिलांयदा। बीस बीसे सुण पुकार, हरि साचे दया कमाईआ। भगत जनां हरि सेवादार, सेवक सेवा रिहा कमाईआ।

नौ खण्ड पृथ्वी इक्क अधार, एका शब्द जणाईआ। एका धर्म विच संसार, हरि साचा रिहा लगाईआ। पूर्ब लहिणा कर्म विचार, प्रभ साचा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जूठे झूठे काया माटी भाण्डे भन्न वखाईआ।

पारब्रह्म सरनाई, वड प्रतापया। पारब्रह्म सरनाई, सर्ब भउ व्यापया। पारब्रह्म सरनाई, कोटन कोट उतारे पापया। पारब्रह्म सरनाई, इक्क जपाए साचा जापया। पारब्रह्म सरनाई, मेट मिटाए तीनो तापया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दरस दिखाए आपणा आपया। पारब्रह्म सरनाई, चरन गुर देवया। पारब्रह्म सरनाई, लेखे लाए साची सेवया। पारब्रह्म सरनाई, मिले मेल अलख अभेवया। पारब्रह्म सरनाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सेवक सेवा सच कमाई। पारब्रह्म सरनाई, गुर पूरे मेल मिलाया। गुर पूरे हथ्थ वड्याई, लोकमात रिहा तराया। मातलोक वज्जे वधाई, गुर पूरा रिहा वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धुर मस्तक लेख लिखाया। मस्तक लिख्या साचा लहिणा, अन्तिम अन्त चुकांयदा। नेत्र लोचन दर्शन नैणा, आपे आप करांयदा। आपे जाणे जुग जुग लहिणा, देणा मूल चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, इक्क इकल्ला वेख वखांयदा। इक्क इकल्ला एकँकार, एका धार बंधाईआ। प्रगट हो विच संसार, पुरख अबिनाशी करता आप अख्वाईआ। घट घट अन्दर रक्खे वास, हर घट खोज खुजाईआ। हरिजन मेला शाहो शाबाश, शाह सुल्तानां आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका मण्डल एका रास, एका अन्तिम पाईआ। कलिजुग मण्डल साची रास, एका एक वखांयदा। जोत सरूपी हरि अबिनाश, दहि दिशा वेख वखांयदा। हरिजन वेखे नाम स्वास, शब्दी शब्द जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची सिख्या दे मति समझांयदा। साची सिख्या सच सुल्तान, एका एक रखाईआ। चार वरनां इक्क ज्ञान, एका तत्त बुझाईआ। इक्क वखाए धर्म निशान, धुरदरगाही बणत बणाईआ। दाता दानी हरि मेहरवान, मेहरवाना आप हो आईआ। हरिजन साचे मात पछाण, आप आपणे लड़ बंधाईआ। लक्ख चुरासी जीव नादान, सुत्तयां रैण विहाईआ। अन्तिम फल आपणा खाण, रस रसना रही हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे रिहा उपाईआ। हरिजन साचे मीत मुरार, लोकमात कुड़माईआ। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, सोहँ मौली तन्द बंधाईआ। इक्क इकल्ला पावे सार, नाभी कँवल वेख वखाईआ। सच महल्ला खोल्ह किवाड़, उप्पर धवल

दए वड्याईआ। हरिजन साचे अन्दर वाड़, साँवल सँवला मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती धारा इक्क वहाईआ। जोती धार हरि निरँकार, एका एक वहांयदा। गुरमुख साचे कर त्यार, सोए मात जगांयदा। सम्मत चौदां दिवस विचार, पहली चेत्र रुत सुहांयदा। दूजा तीजा खोल्ह किवाड़, घर चौथे मेल मिलांयदा। अन्तिम मेटे पंचम धाड़, छेवें छप्पर छन्न ना कोए वखांयदा। सति पुरख निरँजण जोत अकार, अट्ठ तत्तां विच समांयदा। नौ द्वारे खोल्ह किवाड़, जगत दुआरा इक्क वखांयदा। सत्तवें बैठ सच्ची सरकार, शब्द सिँघासण आसण लांयदा। दसवां घर अपर अपार, हरि जोती नूर जगांयदा। नौ द्वारे वसया बाहर, दिस किसे ना आंयदा। अट्ठां तत्तां मारे मार, आपणी धार बंधांयदा। सति पुरख निरँजण एका कार, एका रूप समांयदा। छेवें छप्पर ना लए कोई उसार, चार दिवार ना कोई बणांयदा। पंचम मीता पहरेदार, साची सेव कमांयदा। चौथे घर बैठ सच्ची सरकार, सन्त सुहेले आप मिलांयदा। तीजे नैण दरस अपार, आत्म लोचन आप खुल्हांयदा। दो जहानी मेल भतार, नारी कन्ता आप हो आंयदा। एका अक्खर अपर अपार, साची सिख्या दे मति आप समझांयदा। एका अक्खर सो, पुरख निरजंण आप चलाया। दूजा अक्खर अग्गे हो, हाहा नाँ रखाया। तीजे अमृत आत्म चो, ठांढी धार वहाया। चौथे घर नाता तुट्टे जगत मोह, गुर पूरा नज़री आया। पंचम जूठ झूठ ना सके छोह, एका नाद धुन उपजाया। छेवें घर अग्गे हो, प्रभ जोती नूर दरसाया। सन्त सुहेले सति पुरख निरजंण एका दो, दो एका भेव मिटाया। अठवें अट्ठ तत्त रहे रो, नेत्र नीर वहाया। नौ दर आपणी पति रहे खोह, ना कोई होए सहाया। दसवें मेला साजन सो, सस्सा किला रिहा सुहाया। एका होड़ा रक्खे निर्मोह, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क सुहाया। दस्म घर दस्म दुआरा, हरि दहि दिशा वेख वखाणया। नौ द्वारे झूठी धाड़ा, लुट्टे राजे राणया। अट्ठां तत्तां इक्क अखाड़ा, पंजां तत्तां मेल मिलाणया। सति पुरख निरँजण इक्क आकारा, एका रूप समाणया। छेवें खोल्हे शब्द किवाड़ा, जणाए धुर फ़रमाणया। पंचम मेला हरि गिरधारा, गुण गावण गुण निधानया। चौथे घर पद निरबाणा, गुरमुख विरला पाणया। तीजे नेत्र इक्क अखाड़ा, वेखे खेल श्री भगवानया। दूजे मेटे झूठी धाड़ा, नाम खण्डा हथ्थ उठानया। इक्क इकल्ला जगत अखाड़ा, आप बणाए गुण निधानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पहली चेत्र देवे धुर फ़रमाणया। पहली चेत्र शब्द बिबाण, प्रभ एका एक रखाया। दूजे चेत्र मार ध्यान, गुरमुखां रिहा चढ़ाया। तीजे चेत्र कर पछान, आपणा रंग रिहा रंगाया। चौथे चेत्र हरि मेहरबान, जिया दान झोली पाया। पंचम चेत्र शब्द निशान, एका धर्म चलाया। छे चेत्र ब्रह्म ज्ञान, गुरमुखां रिहा दवाया। सत्त चेत्र गुण निधान, जुग जुग विछड़े

रिहा मिलाया। अट्ठ चेत सुंञ मसाण, अट्ठां तत्तां रिहा कराया। नौ चेत्र बण निगाहबान, नौ द्वारे बाहर कराया। दस चेत्र कर पछाण, गुरमुख साचे रिहा जगाया। ग्यारां चेत्र खोल्ह दुकान, गऊ ग़रीबां एका हट्ट वखाया। बारां चेत्र पद निरबान, शब्द डंका रिहा वजाया। तेरां चेत्र तेरी धार सारे गान, ऊँचां नीचां रिहा सुणाया। चौदां चेत्र वेख मकान, गुर गोबिन्द पूर्ब लहिणा रिहा चुकाया। सिँघ दया तेरा मुक्कया आवण जाण, हरि साची गोद उठाया। बिशन सिँघ हरि कर परवान, शब्द पड़दा उत्ते पाया। पंचम मेला हरि भगवान, विछड़ कदे ना जाया। पन्दरां चेत्र एका आण, सृष्ट सबाई रिहा कराया। सोलां चेत्र चरन धूढ़ इशनान, सतिगुर पूरा आप नुहाया। सतारां चेत्र इक्क मकान, काया मन्दिर आप सुहाया। अठारां चेत्र निगाहबान, दिवस रैण सेव कमाया। उन्नी चेत्र सुघड़ स्याण, धुर फ़रमाण रिहा जगाया। वीह चेत्र देवे माण, गुर संगत विच समाया। इक्की चेत्र तेरा चढ़े निशान, सत्त रंगा आप चढ़ाया। सत्तां दीपां वेखे मार ध्यान, नौ खण्ड पृथ्वी वेख वखाया। लक्ख चुरासी तेरा इक्क ज्ञान, सोहँ अक्खर चलाया। पारब्रह्म आप प्रधान, वड प्रधानगी रिहा कमाया। अट्ठे पहर नौजवान, बिरध बाल अवस्था ना कोई रखाया। एका चिल्ला एका तीर कमान, जुग जुग रिहा चलाया। ना कोई कटया चालीआ, गुर पीर कोई दिस ना आया। ना कोई किला ना कोई कोट, ना कोई चार दिवार बणाया। ना कोई पर्बत ना कोई टिल्ला, जंगल जूह उजाड़ ना डेरा लाया। जन भगतां आपणी किरपा कर, पूजा पाठ ना कोई कराया। आप बणाया आपणा चिल्ला, नाल रखाया शब्द नीला, पीला बस्त्र तन छुहाया। अमृत नाम निधान इक्की चेत्र गुर संगत नाम प्याया। दीपक जोती लाए तीला, अज्ञान अन्धेर मिटाया। प्रगट होया छैल छबीला, सिँघ शेर नाउँ रखाया। वेख वखाणे लोक तीना, नाथ त्रैलोकी आप अखवाया। गुरमुख बिल्लाए जिउँ जल मीना, दे दरस तृखा बुझाया। जुग जुग करनहारा ठांडा सीना, जन भगतां गले लगाया। आपे दाता दाना बीना, साची वस्तू झोली पाया। वेखे खेल रूसा चीना, पंचम जेठी दरस दिखाया। माण अभिमान लक्ख चुरासी नौ खण्ड पृथ्वी तेरा छीना, आप आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, इक्क इकल्ला सेव कमाया। पहली चेत्र इक्क आकार, हरि साचे आप कराया। शब्द खण्डा दोहरी धार, दो चेत्र वेख वखाया। तीजे चेत्र खोल्ह किवाड़, जन भगतां दर्शन पाया। चौथे चेत्र अन्दर वाड़, शब्द सुरत मेल मिलाया। पंचम चेत्र पंचम धाड़, जूठी झूठी रहिण ना पाया। छे चेत्र अग्ग ना लग्गे तत्ती हाढ़, सांतक सति वरताया। सत्त चेत्र वखाए साचा लाड़, गुरमुख नारी व्याहवण आया। अट्ठां तत्तां वसया बाहर, हरि दिस किसे ना आया। नौ द्वारे खोल्ह दरबार, मनमुख जीवां रिहा वखाया। दसवें भेव सच्ची सरकार, गुरमुखां अग्गे

सीस झुकाया। ग्यारवां होया ख़बरदार, लाल किले चरन छुहाया। बारहवें वेखे खेल अपर अपार, सतारां हाढ़ी दिवस सुहाया। सम्मत तेरां कर्म विचार, राज राजानां शाह सुल्तानां रिहा मिलाया। चौदां मारे चौदां तबकां मार, आपणा आप हिलाया। चौदां लोक वेख विचार, चारों कुन्ट फिराया। तेरां तेरी साची धार, नानक गया गाया। बारां बारां दिवस विचार, मास वरख वेख वखाया। ग्यारां तेरा इक्क घर बाहर, लक्ख चुरासी दए वखाया। ग्यारां चेत्र नर नार, हरि लीला आप कराया। बारां चेत्र मीत मुरार, आप आपणा दरस दिखाया। तेरां चेत्र नर अवतार, निरगुण रूप समाया। चौदां चेत्र धर्म अखाड़, घर साचे डंक वजाया। पन्दरां चेत्र जड़्ह दए उखाड़, सृष्ट सबाई दए हिलाया। सोलां चेत्र अग्ग लगाए बहत्तर नाड़, हरि सोलां कल वरताया। सतारां चेत्र देवे साड़, पंज तत्त रहिण ना पाया। अठारां चेत्र इक्क वखाए अगम्मी धाड़, चारों कुन्ट दए दुहाया। उन्नी चेत्र खुशी मनाए मौत लाड़, वाहवा मंगल गाया। बीस चेत्र तेरा सच दिहाड़, गुर संगत मेल मिलाया। इक्की चेत्र हरिजन बणाए साचा लाड़, सोहँ शब्द दस्तार साची सीस बंधाया। घड़नहारा साचा घाड़, जुग जुग घड़दा आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटाया। इक्की चेत्र भिन्नड़ी रैण, दर आए सीस झुकाईआ। खोल्ह नेत्र वेखे नैण, गुर संगत दरस प्रभ दरस बैठी तिहाईआ। अग्गे हो हो पावे वैण, वेला गया हथ्थ ना आईआ। गुरमुख विरले मात रहिण, इक्क इकीसा दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भिन्नड़ी रैण दए वधाईआ। भिन्नड़ी रैण खुशी मनाए, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। गुरमुख साचे लए जगाए, मनमुख गूढ़ी नींद सुआया। दे मति रही समझाए, गल पल्लू आपणा पाया। भुल्ल रहे ना राए, निहकलंका जामा पाया। मैनूं सुत्या नींद ना आए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, शब्द सरूपी रिहा जगाया। भिन्नड़ी रैण चढ़या रंग, दर द्वार खुशी मनांयदी। गुर संगत तेरा साचा संग, अग्गे पिच्छे हो आप निभांयदी। प्रभ चरन द्वारे बैठ पलँघ, दे मति जगत समझांयदी। पिता पूत कोलों ना जाए संग, एका नाता मात बंधांयदी। अमृत धारा वहिंदी गंग, गुरमुख फड़ फड़ गुरचरन द्वारे आप नुहांयदी। मनमुख जीवां कीता तंग, काली रैण पड़दा पांयदी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, भिन्नड़ी रैण सीस झुकांयदी। भिन्नड़ी रैनड़ीए तेरा वक्त सुहञ्जणा, जन भगतां वजी वधाईआ। जगे जोत इक्क निरँजणा, सोहँ शब्द होई कुड़माईआ। एका ताल नगारा साचा वज्जणा, प्रभ साचा आप वजाईआ। जो घड़या सो भज्जणा, थिर रहिण ना पाईआ। घर बाहर सभ ने तज्जणा, सच सेज ना कोई हंढाईआ। वेले अन्तिम ना रक्खे कोई लजना, कलिजुग रैण अन्धेरी छाईआ। गुर पीर पड़दा किसे ना कज्जणा, जूठे झूठे बैठण मुख शरमाईआ। गुर संगत

गुर चरन द्वारे बहि बहि सजणा, भिन्नड़ी रैण खुशी मनाईआ। इक्क कराए साचा हाजी हज्जणा, मक्का काअबा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भिन्नड़ी रैण देवे वर, साची भिच्छया झोली पाईआ। भिन्नड़ी रैण दए सलाह, गुरमुख सोए मात उठावंदी। सतिगुर पूरा इक्क मलाह, जुग जुग आप समझावंदी। धर्म राए गल पाए फाह, ना कोई तोड़ तुड़ावंदी। एका एक विखाए साचा नाँ, सोहँ दर दर घर घर सुणावंदी। एका पिता एका माँ, पूत सपूता इक्क वखावंदी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भिन्नड़ी रैण रैण भिन्नड़ी एका रंग रंगावंदी।

* पहली विसाख २०१४ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ज़िला अमृतसर *

सति पुरख दयाल, आप अख्वाया। गुरमुख साचे लाल, लोकमाती लए उठाया। एका देवे शब्द उछाल, साची हाटी फल लगाए साचे डाल्ह, तीर्थ तट्ट ना कोए रखाया। अमृत आत्म नुहाए साचे ताल, दर दुआरा इक्क वखाया। देवे नाम सच्चा धन माल, धुरदरगाही लै के आया। आपे शाह आपे कंगाल, माल खज़ाना आपणे हथ्थ रखाया। जगत चले अवल्लड़ी चाल, भेखाधारी भेख वटाया। दर भिखारी काल महांकाल, दोए बैठे सीस झुकाया। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, दोए जोड़ करन निमस्कार, कलिजुग वेला अन्तिम आया। पुरख अबिनाशी पाए सार, सम्मत चौदां कर विचार, गुर गोबिन्द कर तन श्रृंगार, एका रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका डंक रिहा वजाया।

सतिगुर पुरख सति सतिवाद, सति सरूप समाया। खेले खेल आदि जुगादि, जुग जुग खेल खिलाया। वेखे खेल विच ब्रह्माद, वेखणहारा आप अख्वाया। उठाए जगाए सन्त साध, सन्त सुहेला दया कमाया। मेल मिलाए माधव माध, विछड़ कदे ना जाया। जो जन रसना रहे अराध, नेत्र नैणां दरस दिखाया। शब्द जणाए बोध अगाध, भेव अभेदा भेव खुल्हाया। इक्क वजाए साचा नाद, सोहँ नाउँ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोती जोत कमाया। एका जोती साचा जोग, शब्दी ख़ाक रमाईआ। एका रस एका भोग, इक्क संजोग कराईआ। एका दरस दर अमोघ, आपणा आप कराईआ। एका भोगी भोगे भोग, आत्म तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। एका कट्टणहारा रोग, तृष्ना रहिण ना पाईआ। इक्क चुगाए साची चोग, बत्ती दन्दां मुख लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती शब्दी बणत बणाईआ। जोती शब्दी साचा मेल, करे कराए हरि भगवानया। आपे खेलणहारा खेल, खेले खेल दो जहानया। दो जहानी सज्जण

सुहेल, दो जहान करे परवानया। आपे वसे रंग नवेल, हर घट वेखे वेख विखानया। आपे गुर आपे चेल, आपे शस्त्र बस्त्र तन पहनानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जोती शब्दी धुर फ़रमाणया। जोती शब्दी धुर फ़रमाना, एका एक सुणांयदा। आप उठाए जीव जहाना, जीवां जन्तां आप समझांयदा। वेख वखाए राज राजानां, शाह सुल्तानां आप हिलांयदा। साधां सन्तां देवे नाम निधाना, निरगुण झोली पांयदा। जोत सरूपी बन्ने गाना, सति सन्तोखी गंढु दवांयदा। सोहँ बख्शे तीर कमाना, रसना चिल्ले आप चढ़ांयदा। इक्क सुणाए साचा गाणा, अनहद साची सेवा लांयदा। काया मन्दिर सच मकाना, गुर पूरा दरस दिखांयदा। इक्क रखाए नाम बिबाणा, हरिजन साचे आप चढ़ांयदा। आपे बख्शे पीणा खाणा, धीरज धीर धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जोती शब्दी बणत बणांयदा। जोती शब्दी जुड़या जोड़, हरि साचा आप जुड़ांयदा। लक्ख चुरासी वेखे परखे मिट्ठा कौड़, कलिजुग वेला आप सुहांयदा। धुरदरगाही आया दौड़, भेखाधारी भेख वटांयदा। आदि पुरख ब्राह्मण गौड़, जोत निरँजण पूत उपजांयदा। सम्बल नगर साढे तिन्न हथ्थ लम्बा चौड़, गोबिन्द गढ़ वसांयदा। एका लाया हरि जी पौड़, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जोती शब्दी बणत बणांयदा। जोती शब्द सच बेनन्ती, प्रभ आपणी आप उपाईआ। जुग जुग महिमा अगणत गिणती, कोई गिण सके ना राईआ। भरमे भुल्ले जीव जन्त गोबिन्द काया रंग बसन्ती, एका हरि चढ़ाईआ। जगे जोत भगत भगवन्ती, भगवन रूप वटाईआ। गुरमुखां मिले मेल पति पतिवन्ती, पतिपरमेश्वर आप अख्वाईआ। मेट मिटाए देव दंती, भेख पखण्डा रहिण ना पाईआ। एका एक आकार अकन्ती, सच सिँघासण बैठा आसण लाईआ। जोती खेल अगम्म अगम्मती, अगम्मड़ी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जोती शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। जोती शब्दी जुड़या जोड़ा, हरि साचा आप जुड़ांयदा। सोहँ शब्द साचा घोड़ा, चारों कुन्ट आप दुड़ांयदा। साचा खेल ब्राह्मण गौड़ा, पूत सपूता संग रलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द गढ़ इक्क सुहांयदा। गोबिन्द गढ़ इक्क महल्ला, हरि साचे आप उसारया। वेखे खेल इक्क इकल्ला, जोत सरूपी कर आकारया। शब्द सुनेहड़ा एका घल्ला, जुग जुग लए मात अवतारया। आपे वेखे जल थला, जंगल जूह उजाड़ पहाड़या। मिले मेल गोबिन्द डल्ला, हरि साचा मेल मिला रिहा। दूई द्वैती मिटे सल्ला, सति सतिवादी सांतक सति वरता रिहा। सोहँ फड़या हथ्थ विच भल्ला, चार वरनां मात डरा रिहा। एकँकारा इक्क इकल्ला, धरतमात तेरा अखाड़ा वेख वखा रिहा। पंचम बोले साचा हल्ला, साचा राह वखा रिहा। गुरमुख

७०२ ०६

विरले सच दुआरा कलिजुग अन्तिम मल्ला, प्रभ चरन ध्यान लगा रिहा। मनमुख जीवां जूठी झूठी काया खल्ला, सच वस्त ना कोए विच टिका रिहा। दीपक जोती ना किसे बला, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटा रिहा। जन भगतां फड़ाए आपणा पल्ला, सञ्झ सवेर इक्क करा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जोती शब्दी संग निभा रिहा। जोती शब्दी संग निभाए, साचा फड़ाए दामन। वरन गोती कोई रहिण ना पाए, सोहँ इक्क रखाया जामन। उप्पर चोटी हरि डेरा लाए, नेड़ ना आए कामनी कामन। नाम चौगिर्दी घेरा पाए, मेट मिटाए अन्धेरी शामन। सञ्झ सवेरा इक्क वखाए, कलिजुग दुष्ट सँघारे रावन। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका एक जपाए नामन। कलिजुग रावण दुष्ट हँकार, लोकमात गढ़ उसारया। लक्ख चुरासी सुरती रिहा हर, सीता सुरती छल छिला रिहा। राम रामा वेखे दर, चारों कुन्ट वेख वखा रिहा। हनुवन्ता सोहँ हथ्थ फड़, आप आपणा संग बणा रिहा। पंचम जेठ जाए चढ़, शाह सुल्तान आपे वेखे अग्गे खड़्ह, आप आपणा रूप वटा ल्या। कलिजुग तेरी उखेड़े जड़्ह, रावण रामा मेट मिटा ल्या। सन्त सुहेले लए फड़, सच भबीखण चरन लगा ल्या। आदि अन्त जुगा जुगन्त ना जन्मे ना मरे ना जाए सड़, गोर मढ़ी ना किसे छुपा ल्या। जुगा जुगन्त साध सन्त जीव जन्त हर घट अन्दर बैठा वड़, आप आपणी बणत बणा ल्या। ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई सके मात फड़, ना कोई चोटी ना कोई जड़्ह, पति डाल ना कोई वखा ल्या। आपे तोड़े हँकारी गढ़, शब्द सरूपी खण्डा फड़, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरि जोती भेख वटा ल्या। कलिजुग काया कंस है, दूत दुष्ट दुराचार। जूठ झूठ माया मोह विकार हँकार एहदा बंस है, लोकमाती तेरा वड परिवार। कोटन कोट भरमे भुल्ले सहँसर सहँस है, दिवस रैण करन हाहाकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख धर, खेले खेल विच संसार। कलिजुग कंस वड बलकारा, लोकमात हंकारया। काहना कृष्णा रूप अपारा, हरि साचा भेख वटा ल्या। अर्जन सोहँ इक्क प्यारा, रथ रथवाही आप अख्वा रिहा। जुगा जुगन्तर खेले खेल अपारा, वारो वारा वेख वखा ल्या। शब्द खण्डा तेज कटारा, हरि आपणे हथ्थ उठा ल्या। नौ खण्ड पृथ्वी पावे सारा, सत्तां दीपां आप जगा रिहा। ब्रह्मा शिव दए हुलारा, करोड़ तेतीसा आप हिला रिहा। लक्ख चुरासी पार किनारा, लहिणा देणा मूल चुका रिहा। जन भगतां बख्शे चरन प्यारा, गुर गोबिन्द मेल मिला रिहा। गोबिन्द मेला विच संसारा, सति पुरख निरँजण आप करा रिहा। भरमे भुल्ले जीव गंवारा, भरम गढ़ ना कोई तुड़ा रिहा। माया ममता लोभ मोह हँकारा, जीवां जन्तां मुख रखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग अन्तिम

७०२ ०६

जोत धर, जोती जामा भेख वटा रिहा। कलिजुग अन्तिम वड बलवान, चार कुन्ट हंकारया। पंच रलाए जगत शैतान, जूठा झूठा पैर पसारया। माया ममता खोल्ह दुकान, हउमे हँगता वणज करा रिहा। मदिरा मास पीण खाण, झूठी रंगण रंग रंगा रिहा। गोबिन्द गोबिन्द सारे गान, गोबिन्द गुर दिस किसे ना रिहा। ज्ञानी ध्यानी वड विद्वानी सर्ब पछतान, गुण निधानी भेव ना पा रिहा। वेद पुराणी होई हैरान, पारब्रह्म मुख छुपा रिहा। अञ्जील कुरानी आई हान, अल्ला हू हू नाअरा ला रिहा। खाणी बाणी जगत निधान, हउँ हउँ तू तू भरम भुला रिहा। पुरख अबिनाशी चतर सुजान, हरिजन पड़दा कलिजुग पा रिहा। जिस जन बख्शे चरन ध्यान, एका दूजा भेव मिटा ल्या। आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान, नेत्र तीजा आप खुल्ह्ला ल्या। आत्म दरसी दरस सद पाण, दर घर सोए आप उठा रिहा। एका अक्खर सोहँ गान, गोबिन्द गुर वखा ल्या। अमरापद सारे पाण, हरिसंगत मेल मिला ल्या। वज्जे नद दो जहान, राग रागनी सेवा ला ल्या। आपे लए सद्द श्री भगवान, जिस जन मानस जन्म दवा ल्या। अमृत आत्म प्याए साची मदि, दिवस रैण खुमार रखा ल्या। नौ द्वारे पार लँघ, हरिजन साचे आप करा ल्या। विष्नूं वंसी साची यद, सम्मत चौदां आप बणा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका अक्खर नाँ पढ़ा रिहा। एका एक हरि जगदीश, आपणा आप जणांयदा। भेव ना पायण रीग छतीश, नारद सुरसती सेवा ला रिहा। खेले खेल बीस इकीस, देवी देवा मुख छुपा रिहा। छत्र झुलाए साचे सीस, ब्रह्मा शिव राह तका रिहा। कलिजुग जूठा झूठा पीसण पीस, अन्तिम आपणा आप रखा रिहा। सतिजुग तेरी सच हदीस, नौ खण्ड पृथ्वी आप बणा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोग धुर संयोग हरि साचा मेल मिला रिहा। सतिजुग तेरा साचा जोग, हरि साचे आप विखानया। आत्म दरस साचा भोग, गुणवन्ता देवे गुण निधानया। दूई द्वैती कटे रोग, चार वरन करे दर परवानया। गुरमुख विरले मेला धुर संजोग, लेखा धुर आप पछाणया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द काया रूप वटानया। गोबिन्द काया साची धार, हरि आपणी आप कराईआ। शब्द सरूपी कर जैकार, चार कुन्ट जै जैकार कराईआ। जन भगतां करे ख़बरदार, एकँकार सेव कमाईआ। जोत निरँजण पहरेदार, अठ्ठे पहर रिहा जगाईआ। आपे होए अन्दर बाहर, गुप्त ज़ाहर फेरा पाईआ। आपे मेट मिटाए अन्ध अंध्यार, डूँघी कन्दर वेख वखाईआ। मेल मिलाए मीत मुरार, साचा संग निभाईआ। अनहद वजाए साचा ताल, वारो वार पंचम राग अल्हाईआ। पंचम मेला कन्त भतार, छन्द सुहागी एका गाईआ। छन्द सुहागी सच्ची धुन्कार, काया मन्दिर अन्दर आप उपजाईआ। आपे करे बन्द किवाड़, सच द्वारे कुण्डा लाहीआ। दरस दिखाए अगम्म अपार, दस्म

द्वारी धाम सुहाईआ। जोत सरूपी इक्क आकार, अट्ठे पहर डगमगाईआ। आत्म सेजा सच शृंगार, फूलन बरखा एका लाईआ। अमृत आत्म ठण्ढी धार, चारों कुन्ट रिहा वहाईआ। एका दूजा भेव निवार, तीजे लेखा रिहा मुकाईआ। चौथे घर पैर पसार, आप आपणा रंग चढ़ाईआ। सरगुण निरगुण इक्क आकार, एका रंग समाईआ। सो पुरख निरँजण पावे सार, हँ हँगता मेट मिटाईआ। आप सुहाए बंक द्वार, बंक द्वारी आप अख्वाईआ। चौथा घर सच्ची सरकार, सन्त सुहेले रिहा बहाईआ। पंचम मेला मीत मुरार, आप आपणा आप कराईआ। छेवें शब्दी साची धार, अगम्म अगम्मा रिहा वहाईआ। सति पुरख निरँजण एक एकँकार, एका रूप वखाईआ। इक्क इकल्ला सिरजणहार, थिर घर आसण लाईआ। महल्ल अटल उच्च मुनार, दिस किसे ना आईआ। निर्मल जोती कर आकार, रंग रंगीला आप रघुराईआ। लाल कंचन सूहा चिट्टा पीला नीला काला तन छुहाईआ। सति सतिवादी एका धार, सति पुरख निरँजण आप चलाईआ। खेले खेल वारो वार, वेखणहारा वेख वखाईआ। दस्म द्वारी अधविचकार, हरि बैठा जोत जगाईआ। गुरमुख साचे लए उभार, एका पल्ला नाम फड़ाईआ। शब्द सरूपी लाए पार, इक्क इकल्ला सेव कमाईआ। शाहो भूपी वड सिक्दार, जुग जुग आप अख्वाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, जोती जामा भेख वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुर गोबिन्द गुर गोबिन्द सेवा लाईआ। सतिगुर हथ्थ वड्याई, जुग जुग दया कमांयदा। सतिगुर हथ्थ वड्याई, जुग जुग भेख वटांयदा। सतिगुर हथ्थ वड्याई, जुग जुग लेख लिखांयदा। सतिगुर हथ्थ वड्याई, जुग जुग वेख वखांयदा। सतिगुर हथ्थ वड्याई, जुग जुग मेख लगांयदा। सतिगुर हथ्थ वड्याई, नर नरेश आप अख्वांयदा। सतिगुर हथ्थ वड्याई, ब्रह्मा विष्न महेष सेव लगांयदा। सतिगुर हथ्थ वड्याई, दर दरवेश आप अख्वांयदा। सतिगुर हथ्थ वड्आाई, आपे जाणे धारी केस, मूंड मुंडाए वेस करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बेड़ा आपणे हथ्थ रखांयदा। कलिजुग बेड़ा डूँघी गार, लक्ख चुरासी दए दुहाईआ। कोई ना दिसे पार किनार, जीव जन्त रिहा कुरलाईआ। माया ममता तन शृंगार, साध सन्त बैठे वेस कराईआ। मनमुख जीव दुहागण नार, साचा कन्त ना कोई हंढाईआ। भरमे भुल्ले भरम गंवार, काया गढ़ ना कोई तुड़ाईआ। माया रुल्ले विच संसार, उप्पर चढ़ दरस कोई ना पाईआ। खेले खेल ना विच संसार, अमृत मेघ ना तृखा कोई बुझाईआ। एका अग्नी तत्ती हाढ़, चारों कुन्ट रही जलाईआ। मनमुख काया रही साड़, पंचां दिवस रैण लड़ाईआ। आपे घड़न घाड़नहार, भन्नणहार आप अख्वाईआ। गुरमुख साजण साचा लाड़, कलिजुग अन्तिम सोए रिहा जगाईआ। आप मिटाए पंचम धाड़, पंचमनामा शस्त्र अस्त्र गहणा तन पहनाईआ। लक्ख चुरासी चबाए आपणी दाढ़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तिम तेरी धार, त्रैगुण तत्त विचारना। पुरख अबिनाशी पावे सार, लक्ख चुरासी मारे मारना। मनमुख डोबे अधविचकार, ना कोई दिसे पार किनारना। गुरमुख साजण लाए पार, फड़ बाहों पार उतारना। आपे बैठा अद्धविचकार, शब्द मिलावा एकँकारना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे पार उतारना। हरिजन साचे तेरा बेड़ा, प्रभ आपणे कंध उठांयदा। आपे वेखे काया खेड़ा, दूर दुराडा पन्ध मुकांयदा। पंचां मेटणहारा झेड़ा, एका छन्द सुहागी सुणांयदा। काया मन्दिर अन्दर खुल्ल्हा वेहड़ा, वडभागी दरस दिखांयदा। आपे बन्नणहारा बेड़ा, जुग जुग बन्ने लांयदा। कलिजुग तेरा अन्तिम गेड़ा, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। जन भगतां देवे शब्द सुनेहड़ा, जम की फाँसी आप कटांयदा। आपे वसे दूर नेड़ा, निज घर आत्म डेरा लांयदा। सदा कराए खुल्ल्हा वेहड़ा, आप आपणी दया कमांयदा। करे कराए हक्क निबेड़ा, हक हकीकत वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग लेख लिखांयदा। जुग जुग लेखा लिखणहारा, एका एकँकारया। हरिजन साचा वेखणहारा, लोआं पुरीआं करे पसारया। कलिजुग रेख मेटणहारा, लोकमात लए अवतारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द काया पैज संवारया। गोबिन्द काया एका रंग, साचा हरि चढ़ाया। शब्द डोरी नाम पतंग, दहि दिशा रिहा उडाया। सदा सुहेला अंग संग, सगला संग रिहा निभाया। गुर गोबिन्दे मंगी मंग, प्रभ अन्तिम पूर कराया। शब्द घोड़े कसे तंग, शाह अस्वार चढ़ के आया। लोआं पुरीआं पार लँघ, वरभण्डी डेरा लाया। रवि ससि मोड़न अंग, अंगीकार ना कोए रखाया। ब्रह्मा शिव रहे मंग, प्रभ नेत्र दिस ना आया। करोड़ तेतीसा होया भंग, हरि साचा रिहा मिटाया। नौ खण्ड पृथ्वी मारे डंग, बाशक सेजा सीस उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाए गणपति गणेश, दर दरवेश दिवस रैण करे पुकारया। आपे जाणे आपणा वेस, मिले मेल दस दस्मेस, गुर गोबिन्दे कर प्यारया। निशअक्खर वक्खर धारी केस, निज घर रूप ना किसे विचारया। शब्द सिँघासण नर नरेश, जोती आसण ला रिहा। आपे वेखे पृथ्वी आकाशन, आकाश आकाशां विच समा रिहा। पारब्रह्म पुरख अबिनाशन, अबिनाशी पुरख अख्वा रिहा। जन भगतां दासी दासन, सेवक सेवा अन्त कमा रिहा। साचे मण्डल पावे रासन, काया मण्डप इक्क सुहा रिहा। प्रगट होए घनक पुर वासन, हरि जोती नूर उपा ल्या। दाता दानी शाहो शाबाशण, साचे घोड़े तंग कसा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, साजण मीत वेख वखा ल्या। हरिजन बेड़ा साचा बन्न, जुग जुग नईआ आप चलाईआ। नाल रखाया नाम धन, चोर यार लुट्ट ना जाईआ। दो जहान ना लग्गे संन्ह प्रभ पल्ले गंढ्ढ बंधाईआ।

जनणी जणया साचा जन, गुरमुख साचा नाउँ रखाईआ। भाग लग्गा काया तन, सुरत शब्द होई कुड़माईआ। पंजां चोरां देवे डन्न, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। गढ़ हँकारी देवे भन्न, जेरज अंडां वेख वखाईआ। अन्तिम बेड़ा देवे बन्न्ह, बन्न्हणहार आप अख्वाईआ। गुरमुख चढ़ाए साचे चन्न, सीतल धारा इक्क वहाईआ। लक्ख चुरासी खन खन, चौदां चौदां रिहा कराईआ। जो घड़या सो देवे भन्न, जुग जुग आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। आपे देवणहारा डन्न, आपे पैज रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दे एका वर, एका कन्त मिलाईआ। एका कन्त हरि हरि पाया। गुर गोबिन्दे मन वधाईआ। साध सन्त ना कोई मनाया, जगत चिन्दया नेड़ ना आईआ। जीव जन्त ना भरम भुलाया, साची बिन्दया इक्क उपजाईआ। महिंमा अगणत ना कोई गिणाया, देवी देव ना कोई मनाईआ। आप आपणी बणत बणाया, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दे एका वर, एका दर सुहाईआ। एका वर कन्त भतारा, पारब्रह्म प्रभ पाया। मिल्या मेल दूजी वारा, हरि साचा मेल मिलाया। कलिजुग तेरा अन्त किनारा, वंञ मुहाणा इक्क रखाया। जीव जन्त ना पावे सारा, गुण निधान दया कमाया। प्रगट जोत श्री भगवाना, एका तीर इक्क कमाना, इक्क रखाए नाम निशाना, लक्ख चुरासी पार कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द मिल्या साचा वर, कन्त सुहागी गोबिन्द पाया। पुरख अगम्मा, मन वैरागी इक्क कराया। नाता तुट्टा हड्ड मास नाड़ी चम्मा, वड वडभागी दर्शन पाया। ना मरे ना कदे जम्मा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द मिल्या साचे घर, साचा कन्त मिलाया। साचा कन्त हरि भगवन्त, एका एक अख्वांयदा। आपे दाता पति पतिवन्त, पतिवन्त आप अख्वांयदा। आप उपाए साध सन्त, आपे मेट मिटांयदा। लेखा जाणे जीव जन्त, जुग जुग वेख वखांयदा। गोबिन्द मिल्या साचा कन्त, हरि गोबिन्द रूप समांयदा। शब्द बणाए साची बणत, जोती सेव कमांयदा। जोती सेवा आदि अन्त, सति पुरख निरँजण आप लगांयदा।जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द साचा मेल मिलांयदा। गोबिन्द नार जगत सुहागी, घर साचे वज्जी वधाईआ। मिल्या मेल पुरख अबिनाशी, नेत्र नैणां दर्शन पाईआ। एका राग स्वास स्वासी, दिवस रैण रिहा गाईआ। हरि जी पाया शाहो शाबाशी, सच सिँघासण बैठा डेरा लाईआ। वर घर पाया सर्ब गुणतासी, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। लज पति रक्खे निज घर वासी, घट मन्दिर अन्दर बैठा सेज विछाईआ। आपे करे भोग बिलासी, दिवस रैण खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। गोबिन्द मेला सच दरगाह, आपे आप करांयदा। आपे बैठा बेपरवाह, बिन थम्मां

७०६
०६

गगन रहांयदा। जुग जुग देवे सच सलाह, साचा शब्द उपांयदा। कलिजुग अन्तिम पकड़े बांह, गुरमुख सोए आप उठांयदा। सोहँ शब्द जपाए साचा नाँ, सतिजुग साचा राह रखांयदा। आप पिता आपे माँ, गुरमुख साचे बाल अञ्जाणे आपणी गोद उठांयदा। दो जहानी देवे ठण्ढी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, सोहँ चोग मोती आप चुगांयदा। इक्क वखाए साचा थाँ, दर दुआरा इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द राम राम गोबिन्द आप मिलांयदा।

गुण निधान हरि भगवन्ता, पारब्रह्म अबिनाशा। साधां सन्तां इक्क भरवासा, देवणहार जीआं जन्तां। लक्ख चुरासी बणाए बणता, हर घट अन्दर करे वासा। आत्म सेजा धाम सुहंता, जोती नूर करे प्रकाशा। धुन आत्मक नाद अनाहद इक्क सुणंता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत विद्या कूड़ भरवासा। जगत कूड़ जुगो जुग, प्रभ हथ्थ रक्खी वड्याईआ। मुन रिख भुल्ले मूल मूढ़, नर हरि भेव कोई ना पाईआ। गुरमुख विरले बख्शे चरन धूढ़, कौस्तक मणीआ टिक्का इक्क लगाईआ। काया चोली रंग चाढ़े गूढ़, रसना रस एका एक वखाईआ। चतर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, एका नाउँ सोहँ झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वेखे थाउँ थाँईंआ। जुग जुग खेल खिलावणहारा, आदि पुरख अगम्मा। हरिजन सोए मात उठावणहारा, आपे जाणे आपणा कम्मा। एका नाद अनादी साचा गावणहारा, ना मरे ना कदे जम्मा। शब्द ब्रह्मादी आदि जुगादी लोआं पुरीआं विच समावणहारा, आप जपाए आपणा नमा। लक्ख चुरासी उपाए आप मिटाए खेल खिलाए खिलावणहारा, नेत्र नीर ना वहाए छम छमा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचा इक्क चढ़ाए लोकमात चन्ना। साचा चन्न शब्द गुरदेव, एका एक चढ़नया। नौ खण्ड पृथ्वी लाए सेव, सत्तां दीपां बेड़ा बन्नया। पारब्रह्म प्रभ अलख अभेव, देवी देव देवत सुर ब्रह्मा शिव देवे डन्नया। गुरमुख विरला रसना गाए साची जिह्व, काया गढ़ हँकारी भन्नया। हरि का नामा नाम शब्द निहकेव, निहचल धाम टिकाए बिन हरि हरि थंम्मिआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, शब्द सरूपी शब्दी गुर शब्द जनणी जनया। मात पित पिता पूत सुत उपा, सगल सृष्ट समाया। जुग जुग जाणे अपणा वड प्रतापा, आप आपणा रूप वटाया। जाणे जणाए आपणा जापा, आप आपणा नाउँ धराया। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग थापण थापा, लहिणा देणा मूल चुकाया। प्रगट हो त्रिलोकी नाथा, हुक्म जणाया। जन भगत हरि सगला साथा, साचा संग हरि निभाया। आप

चढ़ाए सोहँ साचे राथा, रथ रथवाही आप अख्वाया। आपे राम पिता पूत दशराथा, रावण दुष्ट मेट मिटाया। काहना कृष्ना सर्बकला समराथा, कंस हँकारी दए मिटाया। कलिजुग अन्तिम अन्त चलाए साची गाथा, एका खण्डा हथ्थ उठाया। लक्ख चुरासी सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथा, चारों कुन्टां रिहा वंडाया। जन भगतां लहिणा देणा देवे मस्तक माथा, धुर कमी कर्म लिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत चौदां साची रुत्त सुहाया। सम्मत चौदां साची धार, आपणे हथ्थ रखाईआ। गुरमुख साचे कर त्यार, साचे बेड़े रिहा चढ़ाईआ। लक्ख चुरासी आर पार, धर्म राए मुख छुपाईआ। ब्रह्मा अट्ठे नेत्र रिहा उग्घाड़, लोकमाती राह तकाईआ। शिव शंकर मीत मुरार, बाशक तशका गल लटकाईआ। करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द कर पुकार, दिवस रैण रिहा गाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी लक्ख चुरासी कलिजुग बेड़ा मँझधार, आपे डोबे आपे लए तराईआ। ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यार, राणी अल्ला मता पकाईआ। चारों कुन्ट धूआँधार, रैण अन्धेरी छाईआ। उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण दिशा विचार, चारे कुन्टां वेख वखाईआ। सुर नर मुन जन ना पायण सार, सारंगधर बीठला एका एक अख्वाईआ। जुग जुग लए मात अवतार, पुरख करता रूप वटाईआ। भगत सुहेले लए उभार, शाहो भूप मेल मिलाईआ। फड़ फड़ बाहों लाए पार, अन्ध कूप बेड़ा पार कराईआ। ना कोई रंग ना कोई रूप, रेख भेख सार ना राईआ। सर्ब जीआं प्रभ रिहा वेख, दिस किसे ना आईआ। लेखा चुक्के धारी केस, धुर दी बाण हुक्म जणाईआ। कलिजुग काला नर नरेश, सभ दी चोटी रिहा मुंनाईआ। जोद्धा सूरा दस दस्मेश, साची सोटी शब्द हथ्थ उठाईआ। आपे होए नर नरेश, निज घर एका वेख वखाईआ। सतिजुग साचा करे अदेश, चरन द्वारे बैठा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखे लाए शिव शंकर गणेश, एका आदेश आपणी आप सुहाईआ।

✻ २५ विसाख २०१४ बिक्रमी गुरमुख सिँघ दी माता ताबो दे अन्तिम संस्कार समें विहार होया भलाई पुर डोगरा ज़िला अमृतसर ✻

जगत नाता तज्ज, तज्ज संसारया। हरि मन्दिर बहिण भज्ज, होए पार किनारया। प्रभ चरन द्वारे जाणा सज, दर दुआरा इक्क वखा रिहा। लोकमात पड़दा ल्या कज्ज, सिँघ गुरमुख पूत सपूता चिट्टी चादर उत्ते पा रिहा। बंस सरबंसा रक्खी लज, लज पति दाता आप अख्वा रिहा। काल नगारा लक्ख चुरासी सिर ते रिहा वज्ज, ना कोई किसे छुडा रिहा। जो घड़या सो गया भज्ज, घड़न भन्नणहार आप अख्वा रिहा। नेत्र दरस अमृत आत्म पिया रज्ज, दो जहानी तृष्न मिटा

रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लहिणा देणा मूल चुका रिहा। लहिणा देणा प्रभ चरन द्वार, आदि अन्त रखांयदा। कोटन कोटी कोट रहे उचार विचार, प्रभ दर्शन कोए ना पांयदा। गुरमुख गुरसिख विरला प्राणी प्राण अधार, परम पुरख पद साचा पांयदा। आपे बख्शे बख्शणहार, जुग जुग भेख वटांयदा। काया कूड़ कुड़यारा कपड़ तन उतार, ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलांयदा। दूसर कोई ना सके अप्पड़ विच संसार, गुर गोबिन्द हथ्थ ना आंयदा। मनमुख रोवण धाहां मार, नेत्र नीर वहांयदा। प्रभ चरन छुहाए सीस शृंगार, जोती लम्बू एका लांयदा। अग्न सगन कलि एका वार, इक्क इकल्ला आप मनांयदा। भेखाधारी भेख अपार, भगत वछल सदा अख्वांयदा। लेखा लिखे विच संसार, लिख्त लेख आपणे हथ्थ रखांयदा। हरिजन साचे आपे वेख, आप आपणे दर बहांयदा। दाता दानी दस दस्मेस, दहि दिशा वेख वखांयदा। थिर घर बैठ नर नरेश, निरगुण खेल खिलांयदा। सरगुण मेल सदा हमेश, विछड़ कदे ना जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्तिम अन्त नारी कन्त साजन सन्त सति पुरख निरँजण आदि अबिनाशी जोत सरूप घनकपुर वासी दर घर वर हरि एका एक सुहांयदा। सुलखणी मात पूत सपूता जाया, मिले मेल हरि पुरख बिधात। चारे कुन्टां वेख वखाया, लक्ख चुरासी रैण अन्धेरी रात। हरि दरसी दरस दिखाया, जन हरि बणाए पारज़ात। मानस मानुख लेखे लाया, अन्तिम वेले पुच्छे बात। उलटा बिरख गर्भ टिकाया, लेखे लाए दस दस मास। सास ग्रास जो पिया खाया, निज घर आपणे किया वास। ना मरे ना आया जाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, प्राणी प्राण पति अधार, परम पुरख पद पाया।

७०६
०६

✻ पहली जेठ २०१४ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✻

सति पुरख दयाल, आप अख्वाया। करता पुरख अकाल, रूप वटाया। सर्ब करे प्रितपाल, दिस किसे ना आया। आपणी आप करे संभाल, पिता पूत ना कोई रखाया। आपे चले आपणी चाल, मार्ग किसे हथ्थ ना आया। आप आपणे वसया नाल, दूसर कोई ना संग रखाया। आपे शाह आपे कंगाल, मंगणहारा आप अख्वाया। जोती नूरा इक्क आकार, नूरो नूर रिहा उपाया। शब्दी शब्द सच्ची धुन्कार, सच नाद धुन आपणी रिहा उपजाया। आप आपे वसया बाहर, घर आपणा आप सुहाया। अन्दर मन्दिर ना कोई चार दिवार, छप्पर छन्न ना कोई टिकाया। दीवा बत्ती ना कोई उज्यार, हवण पवण ना कोए रखाया। खाणी बाणी वेद पाठ ना कोई पुराण, अञ्जील कुरान ना कोई गाया। गुर पीर साध सन्त जीव जन्त

ना कोई वेखे मार ध्यान, पंचम पति ना कोई वसाया। हड्ड मास नाड़ी रत्त ना पवण मसान, मन मति बुध ना डेरा लाया। जेरज अंडज सेत्ज ना कोई दिसे खाणी खाण, ना कोई रचना रचन रचाया। ना कोई जोद्धा सूर बली बलवान, शस्त्र अस्त्र बस्त्र ना कोई वेख वखाया। ना कोई गोपी ना कोई काहन, नारी कन्त ना कोई हंढाया। पुतर धीआं साक सन्बन्ध बिरध बाल ना कोई जवान, माता गोद ना कोई उठाया। कर्म धर्म जरम ना कोए निशान, अप तेज वाए पृथ्वी आकाश, दिस कोई ना आया। खाण पीण ना कोए पकवान, भोजन भक्ख ना कोई रखाया। देवत सुर ब्रह्मा शिव ना कोई खोल्हे किसे दुकान, ब्रह्म हट ना किसे विकाया। तीर्थ तट्ट गुर दर मन्दिर ना कोए अस्थान, मक्का काअबा दोआबा नज़र ना आया। राग रागणी ना कोई रसना गान, बत्ती दन्द ना कोए हिलाया। पंखी पंछी सरवर तरवर ना कोई पछतान, गुंग मुख ना रसन हिलाया। खण्डा तेज कटार ना कोई तीर कमान, राम कृष्न नानक गोबिन्द संग मुहम्मद चार यार दिस कोई ना आया। थिर घर वासी हरि भगवान, घर बैठा आसण लाया। आपे आपणी कर पछान, आप आपणा रंग रंगाया। आप आपणा बणया हाणी हाण, आप आपणी सेज हंढाया। आपे नारी करता पुरख महान, पंचां रस भोगी आप अख्वाया। आपे जनणी माता जोद्धा सूरा पूत सपूता जन बलवान, शब्दी सुत उपजाया। शब्दी सुत करे प्रनाम, दोए जोड़ सीस झुकाया। सति पुरख निरँजण तेरा धाम, नेत्र नैण रिहा तरसाया। पुरख अबिनाशी देवे मान, सीस आपणा हत्थ टिकाया। ब्रह्मण्डां खण्डां पुरीआं लोआं इक्क ज्ञान, एका नाम झोली पाया। नाम निधान हरि मेहरवान, आपणे हत्थ रखाया। दिस ना आए बेपछान, आप आपणा बैठा मुख छुपाया। आपे देवे धुर फ़रमाण, मन्नणहार आप अख्वाया। आपे खेले खेल महान, खेल खिलारी हरि रघुराया। जोती शब्दी इक्क निशान, हरि आपणा आप उपाया। आपणा आप कर ज्ञान, आपे आप रिहा समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक अख्वाया। निहकलंक हरि भगवाना, एका एक अख्वांयदा। आपे जाणे आपणी भूमिका सच अस्थाना, भेव कोई ना पांयदा। आप आपणी हत्थीं बन्न्हे गाना, आप आपणा सगन मनांयदा। आपे दाता गुण निधाना, आपे रंग वटांयदा। आपे भोगी भोग भुगाना, आप आपणी सेज हंढांयदा। आपे उत्पत दो जहानां, आप आपणी बणत बणांयदा। साचा शब्द जोती दाना, दाता दानी आपे झोली पांयदा। आपे देवणहारा माना, आपे हुक्म मनांयदा। आपे जाणे आपणा गाणा, सुणनेहार आप अख्वांयदा। आप उपजाए धुन तराना, राग रागनी भेव कोई ना पांयदा। आपे शाह आप सुल्ताना, रंक राजान आप हो आंयदा। तख्त बैठ श्री भगवाना, साचा शाहो भूप अख्वांयदा। एका तीर इक्क निशाना, एका नाम रखांयदा। खेले खेल हरि महाना, दिस किसे ना आंयदा। निहकलंक बली बलवाना, जोती

जोत समांयदा। निहकलंक हरि भगवाना, एका एक अख्वांयदा। आपे नारी आपे कन्त, आप आपणे धाम सुहांयदा। ना कोई साध ना कोई सन्त, गुर पीर ना कोई संग रखांयदा। ना कोई रसना ना कोई जिह्वा ना कोई मणीआ मंत, गायण गायत्री ना कोई सगन मनांयदा। ना कोई जाणे आदि अन्त, बेअन्त बेअन्त रूप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंका नाउँ रखांयदा। आदि पुरख निहकलंक, एका एक अख्वाया। आप वजाए आपणा डंक, दिस किसे ना आया। राम रामा ना चुक्के धनुख, जनक सपुत्री ना सीता कोई व्याहया। खेले खेल आप आपणे बंक, दूसर दर ना कोई सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंका नाउँ रखाया। निहकलंका हरि भगवाना, एका एक अख्वांयदा। एका तीर इक्क निशाना, आपणे हथ्थ रखांयदा। शब्द सुत वड बलवाना, एका तीर चलांयदा। इच्छया भिच्छया पावे दाना, धुर फ़रमाना आप जणांयदा। ब्रह्मा उत्पत कर निधाना, कँवल कँवला मुख रखांयदा। त्रैगुण तेरा सच मकाना, प्रभ साचा आप बणांयदा। पंज तत्त कर परवाना, सेवक सेवा लांयदा। मन मति बुध धर निशाना, निरगुण झोली पांयदा। सरगुण तेरा खेल महाना, सति पुरख निरँजण वेख वखांयदा। शब्दी शब्द सच तराना, एका राग अला्ंयदा। आपे वेखे मार ध्याना, आपणा मुख छुपांयदा। आपे होया जाणी जाणा, भेव कोई ना पांयदा। आपे शाह सुल्तान राज राजाना, भिक्खक भिखारी आप अख्वांयदा। आपे देवणहारा दाना, आपे झोली अग्गे डांयदा। आपे देवे धुर फ़रमाना, आपे मुख भवांयदा। लक्ख चुरासी आपे हथ्थीं बद्धा गाना, अन्तिम आपे गंढु खुल्हांयदा। खेले खेल महाना, सेवक साची सेव कमांयदा। शिव शंकर वेखे मार ध्याना, अट्ठे पहर राह तकांयदा। ब्रह्मा सुत होए हैराना, पारब्रह्म अबिनाशी अचुत्त कवण खेल खिलांयदा। आपे जाणे आपणी रुत्त, देवत सुर कोई भेव ना पांयदा। लक्ख चुरासी आप उपाए आप मिटाए, ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड आपे वंड वंडांयदा। आपे चढ़या उप्पर चोट, आपे ख़ाकी ख़ाक समांयदा। आप उधारे कोटी कोटन कोट, कोटां कोट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंका नाउँ रखांयदा। निहकलंक हरि बनवारी, अकल कला समाया। खेले खेल वारो वारी, जुग जुग वेस करेंदा आया। सतिजुग तेरा खेल खिलारी, आप आपणा रूप वटाया। बावन गावण नर निरँकारी, नर नरायण दिस किसे ना आया। त्रेता तीआ बन्ह्रे धारी, त्रैगुण विच समाया। राम रामा खेल न्यारी, खेलणहार आप अख्वाया। द्वापर तेरा दर विचारी, नैण मुँधारी आप अख्वाया। काहना कृष्ना कृष्न मुरारी, नाम बंसरी इक्क वजाया। भगत भगवन्ता रिहा तारी, दुष्ट हँकारी रिहा मिटाया। आपे होया खेल खिलारी, जित्त हार आपणे हथ्थ रखाया। कलिजुग मिली मात सिक्दारी, प्रभ दर आए सीस झुकाया। पुरख अबिनाशी किरपा धारी, मुहम्मद संग

७११
०६

रलाया। अल्ला राणी कर प्यारी, लाल चुन्नी उप्पर पाया। अहिनल हक्क आवाज एका मारी, मुकाम हक्क इक्क वखाया। मक्का काअबा चार दिवारी, काया कोट समझाया। उप्पर चढ़ शाह शिकारी, तीर निराला एका लाया। लक्ख चुरासी तेरी पावे सारी, साची वंडन वंड वंडाया। देवे फ़रमाण धुर दरबारी, अज़राईल मेकाईल ज़बराईल असराफील, साची सेवा रिहा कराया। आप रंगाए बस्त्र नील, नीली धारों पार कराया। नानक मिल्या इक्क वकील, प्रभ साचे मात उपजाया। शब्द दित्ती सच दलील, एका राह चलाया। धुरदरगाही करे इक्क अपील, दोए जोड़ सीस झुकाया। पारब्रह्म अबिनाशी करता छैल छबील, घर सत्तवें अनहद मारे तीर, अलक्ख अलक्खणा आया। कंचन धारी साचा घर एका रूप शाहो भूप वेख वखाणे चारों कूट, दहि दिशा फोल फुलाया। एका नाउँ गुण निधाना, साचा इक्क जणाया। आपे होया निगहबाना, नानक निरगुण आपणे गले लगाया। आप आपणी दए पछाना, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। नानक विटहों जाए कुरबाना, प्रभ चरनी सीस टिकाया। पुरख अबिनाशी गुण निधाना, सतिनाम नानक झोली पाया। धुर फ़रमाणा इक्क ज्ञाना, लोकमाती लै के आया। चारों कुन्ट वेख वखाना, जीवां जन्तां रिहा समझाया। गऊ ग़रीबां देवे दर दर माणा, हँकार हँकारीआं रिहा गंवाया। आपे होया दर दरबाना, हथ्थ मसला इक्क रखाया। मक्का काअबा वेख बगल कुराना, हाजी हज्ज करेंदा आया। सतिनाम साचा काजी, प्रभ साचे हथ्थ रखाया। गुर पूरा प्रभ हाजी, पुरख अबिनाशी साची सेवा लाया। प्रगट होए जिस साजना साजी, निहकलंक नाउँ रखाया। भुलणा ना मात मुल्ला काजी, शेख़ मुसायकां आप समझाया। आपे चढ़े साचे ताजी, सोहँ घोड़ा इक्क रखाया। रसना गाए नानक हाजी, दिस किसे ना आया। पारब्रह्म प्रभ मारे आवाज़ी, दिवस रैण रिहा जगाया। अन्तिम वेले रक्खे लाजी, दे मति आप समझाया। पंज तत्त तन झूठा नाजी, नानक गया मात तजाया। गुर अंगद सिर तेरे रक्खी बाजी, आप आपणी दया कमाया। अमरदास तेरी साजना साजी, बिरध बाला रूप वटाया। रामदास मिल्या ग़रीब निवाजी, सच सरोवर इशनान कराया। गुर अर्जन मिल्या इशक मिजाजी, एका रंग रंगाया। हरि गोबिन्द मारे फड़ फड़ गाजी, एका खण्डा हथ्थ उठाया। हरिराए भुलाए जगत निमाजी, राम राए लेखे लाया। हरि कृष्न चढ़या सच जहाज़ी, प्रभ नाम जहाज़ इक्क वखाया। गुर तेग बहादर तेरी रक्खे लाजी, दिल्ली सीस लवाया। गुर गोबिन्द तेरी साजना साजी, नर निरँकार रिहा भेख वटाया। पूत सपूता आपे शाह राजन राजी, आप आपणा हुक्म सुणाया।जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नाउँ रखाया। निहकलंक हरि बलकारा, एका एक अख्वांयदा। जुग जुग लए मात अवतारा, शब्दी सेवा लांयदा। शब्द सुत अपर अपारा, दिवस रैण सेव कमांयदा। गुर गोबिन्दा कर प्यारा, प्रभ आपणी गोद उठांयदा।

७१२
०६

एका देवे नाम हुलारा, साचा झूला आप झुलांयदा। आप कराए पार किनारा, अद्ध विच ना कोई अटकांयदा। आपे वसे सभ तों बाहरा, आप आपणा भेव चुकांयदा। गुर गोबिन्दा सुत दुलार, प्रभ साची सेव कमांयदा। मिल्या मेल पुरख भतारा, एका चण्डी ब्रह्मण्डी आपणी हथ्थ फड़ांयदा। लोकमाती साची डण्डी, साचा राह चलांयदा। एका वंड गुर गोबिन्दे वंडी, चार वरनां एका सरन रखांयदा। कोई ना दीसे जगत घमंडी, सभ दी वढ्ढी जाए कंडी, एका खण्डा हथ्थ उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप हो जांयदा। गुर गोबिन्दे वंड वंडाई, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। दिवस रैण ना होए जुदाई, अग्गे झोली डाहीआ। हरि गोबिन्द गुर गोबिन्द इक्क ध्यान रखाई, आप मिटाए सगली चिन्द, साचा राह वखाईआ। जोद्धा सूर वड मृगिन्द, वड मलाह हो आईआ। आप उपजाए आपणी बिन्द, पिता पूत अख्वाईआ। अमृत बख्शे धारा सिन्ध, आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दे मेल मिलाईआ। गुर गोबिन्दा चरन भिखारी, एका ओट रखांयदा। प्रभ अबिनाशी किरपा धारी, काया चोट लगांयदा। शब्द डंक अपर अपारी, पंज तत्त खोट गंवांयदा। अगम्म अगम्मड़ा पावे सारी, एका रंग रंगांयदा। दम दमड़े करे वणज वपारी, साचा वणज वपारी, साचा वणज आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग मेला मेल मिलांयदा। गोबिन्द मेला हरि गोबिन्द, हरि हरि विच समाया। शब्द शब्दी साची बिन्द, पूत सपूता आप अख्वाया। प्रगट होया हरि हरि हिन्द, सिर मस्तक हथ्थ टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप वखाया। आप आपणा रूप वखाए, अकल कला कल धारी। गुर गोबिन्दे वेख वखाए, दोए जोड़ करे निमस्कारी। पुरख अबिनाशी हुक्म जणाए, वेखे विगसे कर विचारी। पंज तत्त इक्क रुत्त सुहाए, अट्ठ तत्त ना पायण सारी। सति सरूप अनूप शाहो भूप आप वटाए, कल्गी तोड़ा सीस जगदीश अपर अपारी। घोड़ा जोड़ा इक्क वखाए, लोआं पुरीआं वसे बाहरी। साचा पौड़ा इक्क चढ़ाए, एकँकारा इक्क इकल्ला एका वारी। मिट्ठा कौड़ा वेख वखाए, लक्ख चुरासी वेखे परखे साची खेले खेल खिलारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दे दित्ता वर, लोकमात ला सच्ची फुलवाड़ी। लोकमात सच्ची फुलवाड़ी, एका एक लगावनी। गुर नानक नाम शब्द वाड़ी, चारों कुन्ट करावनी। फसल पक्के अन्तिम एका हाढ़ी, निहकलंक ओट रखावनी। आपे होए पिच्छे अगाड़ी, जोत शब्द मेल मिलावनी। रक्खे लाज लोकमात तेरी रक्खी दाढ़ी, पूर कराए भावनी। त्रैगुण माया देवे साड़ी, सम्मत चौदां लोकमात इक्की जेठ देवे जामनी। साधां सन्तां जीआं जन्तां लग्गे अग्ग बहत्तर नाड़ी, ना कोई होए होर बुझावनी। मनमुख जीवां किस्मत होए माढ़ी, चारों

कुन्ट रैण अन्धेरी शामनी। लाड़ी मौत फिरे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, गुर गोबिन्दे तेरी चण्डी चमके दामनी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवे समझावनी। गुर गोबिन्दे शब्द जणा, प्रभ आपणा मुख छुपाया। गुर गोबिन्दा बण मलाह, सेवक सेवा रिहा कमाया। गुरमुख साचे दर बहा, लेखा लेख रिहा चुकाया। पंज प्यारे लए उठा, आपणा भेव खुल्हाया। आपे लेखे लए ला, लेखा किसे हथ्थ ना आया। ज़ात पाती ऊँच नीच एका थाँ बहा, अग्गे झोली डाहया। पारब्रह्म साचा पिता आदि शक्त बणाई साची माँ, शब्द मुंमा सीर प्याया। अमृत आत्म इक्क वखा, नाम खण्डा विच फिराया। रस मिठ्ठा हरि गुण सच्चा गा, दे मति जगत समझाया। गुरमुख तेरा रूप अनडीठा, चार वरन दिस ना आया। साची धारा इक्क सवा गिठ्ठा, घर साचे रिहा वहाया। आपे बैठा प्रभ चरन हेठां, गुरसिख आपणे हेठ रिहा बिठाया। वेखे परखे मिठ्ठा कौड़ा रीठा, फल अमृत एका एक चखाया। आपणी हथ्थीं पीसण पीठा, सच सुच्च पकवान पकाया।जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दे एह समझाया। गुर गोबिन्दे चढ़या चाअ, घर साचे ख़ुशी मनाईआ। पुरख अबिनाशी जगत मलाह, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। एका देवे सच सलाह, पंचम हुक्म जणाईआ। पंचम पंचम दए मिटा, पंचम मेल मिलाईआ। पंचम हरि हरि साचा गा, पंचम भेव चुकाईआ। पंचम वेखे एका थाँ, पंचम दए दुहाईआ। पंचम मीता एका नाम निधान, निरगुण वस्त झोली पाईआ। आपे होया मेहरवान, मेहरवान दया कमाईआ। शब्द खण्डा सच निशान, गुर गोबिन्दे हथ्थ फड़ाईआ। बस्त्र शस्त्र इक्क कमान, रसना चिल्ला रिहा वखाईआ। नेत्र लोचन वेखणा इक्क ध्यान, इक्क ज्ञान जणाईआ। आपे होए बेपछाण, बैठे मुख छुपाईआ। पुरी अनन्द ना सच मकान, अन्तिम ढहि ढहि जाईआ। हरि का शब्द ब्रह्म निशान, जुग जुग अटल रखाईआ। गुर गोबिन्दा वेखे मार ध्यान, नैणा देवी आसण लाईआ। आदि शक्त रूप भगवान, प्रगट होए दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द खण्डा सच किरपान, गुर गोबिन्दे तन गात्रे विच लटकाईआ। गुर गोबिन्दे तेरा जगत तन, प्रभ सच म्यान बणाया। छप्पर छन्न ना किसे किल्ली दित्ता टंग, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। भाई भैण ना कोई खड़े मंग, साक सैण किसे दिस ना आया। आदि पुरख प्रभ चाढ़े रंग, पीला बस्त्र तन छुहाया। सच घर वखाया शब्द सरूपी इक्क पलँघ, पारब्रह्म आसण लाया। चारों कुन्ट ना कोई दिसे संग, प्रभ आलस निन्दरा विच ना आया। गुर गोबिन्दा ना गया संग, दोए जोड़ सीस झुकाया। पुरख अबिनाशी आप लगाया आपणे अंग, पूर्ब झोली लहिणा पाया। तेरा अन्तिम कलि आप वजाए मृदंग, काया ढोल इक्क वजाया। शब्द डोरी चाढ़े पतंग, आकाश प्रकाश दए वखाया। गऊ ग़रीबां कट्टी भुक्ख नंग, जन सरसे जाई रुढ़ाया। नीले घोड़े कसया

तंग, शाह अस्वार आप अख्वाया। जल धारा वेखे साची गंग, पहला पौड़ा विच रखाया। धरत मात मंगे मंग, अग्गे बैठी झोली डाहया। सत्त सरोवर होणे नंग, मेरी तृखा ना कोई बुझाया। गंगा गोदावरी होई भंग, गुर गोबिन्दे मैं तेरी ओट रखाया। गुर गोबिन्दा खोल्हे नीले तंग, शब्द आसण आपणा इक्क वछाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सीस आपणा हत्थ टिकाया। गुर गोबिन्दे शब्द ज्ञान, प्रभ साचे इक्क दवाया। गुर गोबिन्दा हरि वेखे मार ध्यान, लोआं पुरीआं बाहर डेरा लाया। एह सरसे मंगी मंग महान, लेखा लिख्त झोली दए पाया। सिँघ सवा सत्त सौ मंगे दान, प्रभ पहली भेंट चढ़ाया। सत्तां दीपां तेरा झुल्ले निशान, वेला कलिजुग दए सुहाया। नौ खण्ड पृथ्वी बहि बहि सारे गाण, चार वरनां पारब्रह्म दे मति समझाया। गुर गोबिन्दा कर परवान, लेख लिख्त ग्रन्थ पन्थ माल धन साची भेंट चढ़ाया। पुरख अबिनाशी मारे बान, धुरदरगाही इक्क निशान, साचा तीर रिहा चलाया। आपे वेखे विच मैदान, लाल दुपट्टा इक्क रंगाया। साचा चीरा बाल नादान, आपणी हत्थीं सीस बंधाया। खेले खेल विच जहान, जगत नाता मोह चुकाया। गुरमुखां बख्शे इक्क अस्थान, पारब्रह्म तेरा चरन ध्यान वखाया। आपे होया जाणी जाण, जानणहार आप हो आया। आप आपणा कर कुरबान, बंस सरबंसा रूप वटाया। सृष्ट सबाई मंगे दान, दाता दानी बैठा मुख छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दे एका रंग रंगाया। गुर गोबिन्दे रंग गुलाल, एका एक चढ़न्नया। आपे वार आपणे लाल, आप आपणे अन्दर मन्नया। आप आपणा लए भाल, ना कोई दिसे सूरज चन्नया। नानक रक्खया शब्द संभाल, जनणी जन ना किसे जनया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दे दित्ता वर, अन्तिम वारी आपे मन्नया। अन्तिम वार हरि सच टिकाना, एका एक रखाया। मढ़ी गोर ना मट्ठ बनाणा, ना कोई निशान वसाया। अट्ठ सट्ठ तीर्थ ना कोई मनाना, सर सरोवर ना कोई नुहावण नुहाया। मन्दिर मस्जिद गुरुद्वारे जाणे ढठ्ठ, पारब्रह्म लेखा आपणे हत्थ रखाया। विच नदेड़ कर इक्ट्ठ, साध संगत गया समझाया। आत्म अन्दर रक्खणा हट्ठ, गुर गोबिन्द ना मरे ना आया जाया। कोए ना फोले मेरा मट्ठ, साचा धाम सुहाया। मन मती जीव जगत कुरीती पए नठ्ठ, गुर का शब्द भुलाया। अन्तिम वेले पाए भट्ठ, गुर पूरा दए सज़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दा आपणे विच मिलाया। गुर गोबिन्दे मेल मिलाया, पारब्रह्म अबिनाशी। चेला गुर आप अख्वाया, घट घट अन्दर रक्खे वासी। सज्जण सुहेला जुग जुग बणदा आया, जन भगतां दासन दासी। जुग जुग वेला वक्त सुहाया, साची जोत करे प्रकाशी। सतिजुग द्वापर त्रेता पार कराया, कलिजुग वेखे अन्त उदासी। शाम युजर रिग दए तराया, अथर्बण घर घर बहि बहि करे हासी। अल्ला राणी मेल मिलाया,

संग मुहम्मद खेल खिलाया, मनमुख जीव कराए मदिरा मासी। गुर गोबिन्दा रचन रचाया, प्रभ अबिनाशी मेल मिलाया, किरपा कर घनकपुर वासी। चारों कुन्ट अन्धेरा छाया, माँ पुत्तर निहु लगाया, ना कोई दीसे पंडत काशी। गुर दर मन्दिर अन्दर वेसवा घर बणाया, रामदास तेरा साचा सर जल धारा रूप गया वटाया, ना कोई करे साची रासी। इक्क लए अंगड़ाया, जोती नूर करे रुशनाया, पंज तत्त बणत बणाया, आप आपणा भेख वटाया, प्रगट हो हरि शाहो शाबाशी। आपणा मुख रिहा छुपाया, साचे सन्त रिहा जगाया, खेले खेल आदि अबिनाशी। राज राजानां रिहा सुणाया, आप आपणा भेख वटाया, सन्त सुहेले आप उठाया, आपे होया दासन दासी। कलिजुग चोला जगत हंढाया, शब्द बोला ना कोई अलाया, जगत भण्डार ना कोई खुल्हाया, दिस ना आया घनकपुर वासी। बीस बीस वक्त सुहाया। जगत जगदीस जोत जगाया। आप आपणा रचन रचाया। गुर तेग बहादर संग रलाया। चिट्टी चादर सोहँ पड़दा एका पाया। काया गागर अमृत ताल सुहाया। दित्ता नाम सच्चा रत्ती रत्नागर, गुरसिक्खां बेड़ा पार कराया। दो जहान डूँघे सागर, सच धाम सुहाया। आपे बणया घर सौदागर, जोत सपूता वणज कराया। निर्मल जोत करे उजागर, गुर गोबिन्दा रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धुरदरगाही एका वर, वरदाता आप अख्वाया। गुर गोबिन्दा साचा मीत, हरि आपणा आप रखांयदा। इक्क सुणाए सुहागी गीत, दिवस रैण अलांयदा। कलिजुग अन्तिम तेरी चली अवल्लड़ी रीत, भेव कोई ना पांयदा। मुल्ला काज़ी शेख़ मुसायक लभ्भदे फिरदे विच मसीत, उच्ची कूके बांग अलांयदा। खाणी बाणी बहि बहि गाउँदे गीत, गुर गोबिन्दा किसे हथ्थ ना आंयदा। वेद पुराण बैठ अतीत, पंडत काशी ध्यान लगांयदा। हरि हरि का रूप किसे ना वसया चीत, ना कोई संग निभांयदा। आपे वसया हस्त कीट, ग्रन्थां पन्थां मुख छुपांयदा। एका एक जगत जगदीश, अनडिठ वस्त आपणी झोली पांयदा। लक्ख चुरासी अन्दर मन्दिर सुत्ता दे कर पीठ, गुरमुख विरले मुख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगांयदा। बीस इक्क हरि रंग वटाया, अकल कला वरताईआ। दूसर ना कोई संग रखाया, खेले खेल हरि रघुराईआ। तीजा दर वेख वखाया, घर घर बैठा आसण लाईआ। चौथा दर इक्क सुहाया, सन्त सुहेले लए मिलाईआ। पंचम दर साची सेवा लाया, अनहद ताल वजाईआ। छेवें छप्पर छन्न ना कोई रखाया, प्रभ बैठा आसण लाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण जोत जगाया, चारों कुन्ट करे रुशनाईआ। अठवें अट्ठां तत्तां विच ना आया, ना मरे ना जाईआ। नौ द्वार ना कोए उपाया, ना कोई बणत बणाईआ। दसवें दस्म द्वारी सच महल्ला इक्क वसाया, बैठा जोत जगाईआ। दस इक्क ग्यारां इक्क इकल्ला वेख वखाया, चारों कुन्ट सृष्ट सबाईआ। दस दो बारां सृष्ट सबाई तेरी

बन्ने धारा, कलिजुग जीव दए दुहाईआ। गुर संगत साची कर त्यारा, हाढ़ सतारां खुशी मनाईआ। गुर गोबिन्दा कर प्यारा, सिक्खी इक्क वखाईआ। जो जन ढहि पए दुआरा, दुःख रहे ना राईआ। सम्मत तेरां तेरा खेल न्यारा, पहली चेत्र रुत्त सुहाईआ। राज राजानां करे ख़बरदारा, साधां सन्तां रिहा उठाईआ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, माण अभिमान सभ दा दए गंवाईआ। शब्द खण्डा तेज कटारा, हथ्थ आपणे रिहा उठाईआ। दोवें रक्खीआं तिक्खीआं धारा, निरगुण सरगुण भेव ना राईआ। सम्मत तेरां तेरी साची धारा, नानक गया गाईआ। मोदीखाने कर विहारा, एका तोला आप अख्वाईआ। सृष्ट सबाई तोलणहारा, एका कंडा रिहा उठाईआ। सोहँ बोला बोलणहारा, सो पुरख निरँजण वेख वखाईआ। हँ हँगता रोलणहारा, एका छाबा रिहा भराईआ। प्रभ दर मंगण मंगणे वाला, अग्गे झोली रिहा डाहीआ। साची संगता रंगणहारा, निहकलंक तेरी ओट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक तेरी तेरां धारा, साधां सन्तां सुणी पुकारा, आत्म घर वेख विचारा, अन्दर मन्दिर साची सेज ना बैठा कोई विछाईआ। साध सन्त जगत विचार, प्रभ साचा वेख वखांयदा। किसे ना दिसे तन श्रृंगार, फूलन हार ना कोई टंगांयदा। किसे ना मिल्या कन्त भतार, गलवकड़ी कोई ना पांयदा। आसण बहि बहि रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नीर जगत सति वहांयदा। पंडत फ़कीर करे हाहाकार, प्रभ साचा दिस ना आंयदा। काया बस्त्र एका लथ्थे चीर, साल बसाला ख़ाक रमांयदा। सुरत सवाणी ना बणी साची हीर, प्रभ रांझा दिस ना आंयदा। चिट्टे कागज़ कढ्ढदा जाए लकीर, अख़ीर ना कोई वखांयदा। अन्तिम होणा धर्म राए दर फ़कीर, ना कोई किसे बचांयदा। साधां सन्तां एका लग्गी हउमे पीड़, हँगता रोग जलांयदा। माया ममता डस्सणी कीड़, नाग नागणी डंग चलांयदा। पारब्रह्म शब्द वेलणे देवे पीड़, सम्मत सोलां रुत्त सुहांयदा। सतिगुर साचा हरि सन्तां आपे बन्ने बीड़, एका धार वहांयदा। आपे वेखे चोटी चढ़ अख़ीर, पार किनारा डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पंचम जेठ साचा वेख वखांयदा। सम्मत तेरां तेरा रंग, प्रभ साचे वेख वखाणया। साध सन्त बैठे नंग, किसे मिले ना धुर फ़रमाणया। घर घर बैठे सावण सावण रहे मंग, सावण सुरत ना करे परवानया। अन्तिम होणे जन्म भंग, मिले ढोई ना विच दो जहानया। सिर पैर धड़ दिसे नंग, चारों कुन्ट दर दर आप भवानया। किसे मिल्या ना शब्द पलँघ, गुर चरन धूढ़ ना करया इशनानया। एका एक ना मंगी मंग, ना होए दर परवानया। काया माटी काची वंग, थिर कोई रहिण ना पानया। नानक तेरा इक्क मृदंग, सतिनाम सच सितार हरि सुरंगा आप वजानया। आपे गाया निरँकार निरँकार निरँकार, निरगुण रूप पछानया। सरगुण कोई ना पावे सार, प्रभ होया बेपछानया। तेरां तेरी एका धार,

सृष्ट सबाई वेख वखानया। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, खेले खेल दो जहानया। भारत खण्ड वेख विचार, वाली हिन्द उठानया। सम्मत चौदां रिहा खबरदार, आए दर सच्चा परवानया। पारब्रह्म अबिनाशी करता कलिजुग अन्तिम मारे मार, ना कोई किसे बचानया। लोआं पुरीआं हाहाकार, ब्रह्मा उठे नेत्र वेखे लोकमात करे ध्यानया। बाशक तशका गल परोए हार, शिव शंकर होए हैरानया। लोकमात इक्क इकांत, कवण खेले खेल इक्क निधानया। करोड़ तेतीसा करे हदीसा झुकाए सीसा मंगे वर जगत जगदीसा, ना होए दर परवानया। नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां लक्ख चुरासी लोकमात पीसन पीसा, हरि वेखे खाणी बाणीआ। ईसा मूसा खाली खीसा, अञ्जील कुरानां आई हानीआ। ना कोई गाए राग छतीसा, ना कोई गाए पाठ पुराणीआ। ना कोई गाए दन्द बतीसा, रसना जिह्वा ना गुण वखानीआ। वरते खेल हरि जगदीसा, आपे वेखे गुरमुख साचे सुघड़ सवानीआ। कवण सीस झुल्ले छत्र इक्क जगदीसा, कवण सुणाए अकथ कहाणीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दा एका वर, सृष्ट सबाई वेखे दर, सोहँ शब्द हथ्थ फड़, लक्ख चुरासी रिड़के वांग मधानीआ। गुर गोबिन्दा साचा संगी, आपणा आप रखाया। लक्ख चुरासी आए तंगी, कलिजुग अन्तिम दए दुहाया। लाड़ी मौत एका मंग मंगी, लाल चुन्नी अग्गे डाहया। काल सिर वाहे कँघी, साची पट्टी दए गुंदाया। लक्ख चुरासी नार दुहागण लग्गे चंगी, सम्मत सोलां पंचम जेठ सगन देवे झोली पाया। धर्म राए चित्रगुप्त नाल फरंगी, देवे जंञ चढ़ाया। धरत मात इक्क सोहणी थाँ मंगी, जम्बु दीप दए सुहाया। खेले खेल दाता सूरा जोद्धा सरबंगी, दो जहानां पार आसण लाया। इक्क वजाए वड मृदंगी, काल नगारा हथ्थ फड़ाया। गुरमुखां चोली जाए रंगी, जोत निरँजण सेवा लाया। बजर कपाटी पाड़ आत्म करदी जाए नंगी, एका राह वखाया। निहकलंक मिल्या साचा संगी, गुर गोबिन्दे लड़ फड़ाया। जुग जुग जाणे आपणा ढंगी, बिध आपणे हथ्थ रखाया। नानक तेरी नाम सुरंगी, गुरमुख तेरे तन मन्दिर अन्दर दए वजाया। गुर गोबिन्दे मंग एका मंगी, माछूवाड़े झाड़ीं बैठा आसण लाया। नंगी पैरी फिरे प्रभ लाए अंगी, अंगीकार आप अखवाया। तेरी कटे अन्तिम प्रगट हो हो तंगी, किला पुर अनन्द छुडाया। अनन्द पुर ना किसे दा संगी, इट्ट पत्थर नाल रलाया। प्रभ दी जोत सभ तों चंगी, आवण जावण दए मिटाया। गुर गोबिन्दा एका मंग आपणी मंगी, पुरी अनन्द दए समझाया। पारब्रह्म आप समझाए, गुर गोबिन्द सपूता। पुरी अनन्द इक्क विखाए, ना कोई दिसे कूटा। सूरज चन्न ना कोई चढ़ाए, पवण ना देवे हूटा। खाणी बाणी कोई दिस ना आए, लोकमात ना कोई बूटा। पीण खाण कोई दिस ना आए, ना कोई दिसे हथ्थ ठूठा। तीर कमान ना कोए रखाए, ना भथ्था भन्ने पिच्छे मुट्ठा। पहाड़ उजाड़ ना कोई निशान जणाए, ना कोई

विखाए गुड्डा। सच धाम इक्क मकान सुहाए, गुर गोबिन्द सुणाए हरि अनडिड्डा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अमृत आत्म दित्ता भर, रस माणया एका मिड्डा। ऐड़ा आकार हरि निरँकार, एका एक वखाया। आप आपणा खेल अपार, आपणे रंग समाया। नन्ना निरगुण रूप निरँकार, निरवैर अख्वाया। आप आपणा कर त्यार, सरगुण रिहा उपजाया। दद्दा दो जहानां वसया बाहर, लिखण पढ़न विच ना आया। पप्पा पुरख हरि सुल्तान, एका शाहो अख्वाया। इक्क इकल्लड़ा वेख बाल निधान, चरन जोड़ा छुहाया। रारा रेख ना कोई जहान, ना कोई नज़री आया। ना कोई धारी दिसे केस, ना कोई मूंड मुंडाया। नन्ना नानक गुर दस्मेस हरि जोती सवाया। हरि का रूप पंज तत्त प्रवेश, सो सतिगुर आप बणाया। सो पुरख निरँजण करे आदेस, आप आपणा देस रिहा वसाया। पुर अनन्द इक्क नरेश, हरि साचा आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दस दस्मेस मेल मिलाया। दस दस्मेस गुर गोबिन्द, आत्म वज्जी वधाईआ। दो जहानी वज्जी वधाई मिटी चिन्द, हरि जोत होई कुड़माईआ। मिल्या वर वड मृगिन्द, डर रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे रिहा समझाईआ। पारब्रह्म प्रभ आप समझाए, गुर शब्दी शब्द जणाया। दर दुआरा वेख वखाए, कलिजुग दए दुहाया। सम्मत चौदां रुत्त सुहाए, चौदां लोकां हट्ट खुल्हाया। काया बुत्त प्रभ डेरा लाए, दिस किसे ना आया। गुरमुख साचे सन्त उठाए, चरन कँवल उप्पर धवल साचा नाता रिहा बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पंचम जेठ साचा लेख रिहा लिखाया। पंचम जेठ वड बलवान, खेले खेल संसारी। साधां सन्तां कोई ना मिले उच्च मकान, बैठे रहिण नौ द्वारी। मगर लग्गे रहिण पंज शैतान, मंगदे रहिण वारो वारी। गुर पीर सभ मुख छुपान, नज़र ना आयण विच संसारी। थाँ थाँ बैठे सारे गान, ब्रह्मा शिव विष्न वड भिखारी। दोए जोड़ मंगण दान, दर द्वारे बण भिखारी। पुरख अबिनाशी गुण निधान एका वणज कराए, लोआं पुरीआं दे मति समझाए, दो जहानां पावे सारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सोहँ तेरी लोकमात करे जै जैकारी। सोहँ शब्द तेरा जैकारा, दो जहानां आप सुणांयदा। साधां सन्तां बन्द दुआरा, अद्ध विच आप रखांयदा। पंचम जेठ सुभागी दिहाड़ा, कलिजुग तेरा भेख मिटांयदा। कलिजुग अग्गे कढ्ढे हाढ़ा, प्रभ दर सीस झुकांयदा। गुरमुख मंगे नाम भाड़ा, दर द्वारे फेरी पांयदा। मस्तक रगढ़े चरन छुहाए दाहड़ा, काला रूप दरसांयदा। पुरख अबिनाशी इक्क वखाए अखाड़ा, मक्का मदीना नज़री आंयदा। मगर लगाए अगम्मी धाड़ा, रूसा चीना वेख वखांयदा। त्रैगुण माया तेरा तत्त साड़ा, इक्की जेठ रंग रंगांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी तेरा वज्जे ताड़ा, सरसा होड़ा तन्दी विच पांयदा। निरगुण सरगुण वेखे खेल दिन दिहाड़ा,

७१६
०६

जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा उच्चे टिल्ले फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सम्मत सतारां वेख वखाए चार यारां, बूरे बिल्ले कक्कयां उठांयदा। बूरे कक्के बिल्ले प्रभ दए उठा, आपणी बणत बणाईआ। रसना चिल्ले तीर चढ़ा, आपे रिहा चलाईआ। गढ़ हँकारी दए तुड़ा, तोड़नहार आप अख्वाईआ। फड़ फड़ बाहों दए उठा, सुत्या रैण विहाईआ। वाली हिन्द ना अन्तिम पछता, नौ जेठ प्रभ साचा लेख लिखाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां कोई ना मिलणा थाँ, ना सके कोई बचाईआ। अन्तिम नाता तुट्टणा पुतरां माँ, भैणां भईआ होए जुदाईआ। लोकमात घर घर उडणे काँ, सम्मत सोलां दए दुहाईआ। गुरमुख विरले प्रभ देवे ठण्डी छाँ, जिस जन आपणी दया कमाईआ। पंचम जेठ साध सन्त फ़कीर पीर दस्तगीर पंडत पांधा कोई ना करे हां, सुरत सवाणी शब्द मिलाईआ। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ बैठे मुख भवा, गंगा गोदावरी रही शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ तेरी जगत रीत, आपणी हथ्थीं लए मनाईआ। जगत रीत आप मना, आपणी बणत बणाउँणी। बीस सिख नाल रला, साची सिख्या इक्क समझाउँणी। इक्क इकीसा आप अख्वा, निर्मल जोत जगाउँणी। सर अमृत वेखे एका थाँ, पूर कराए भाउँणी। इक्की छटांक अन्न तन बंधा, दो जहानां पार कराउँणी। जूठी झूठी कंध दए ढाह, तेज कटार इक्क उठाउँणी। ग्रन्थी पन्थी भुल्लण राह, साची बूझ किसे ना पाउँणी। सिँघ शेर आपणा तख्त आपे दए हिला, लोआं पुरीआं दए भवाउँणी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पंचम जेठ तेरी साची थित खुशीआं नाल मनाउँणी। बीस सिख प्रभ कर त्यार, आपणा संग निभांयदा। दूसर ना कोई आए द्वार, दे मति समझांयदा। तीजे नेत्र वेख विचार, साची खेल खिलांयदा। चौथे घर पावे सार, सर सरोवर वेख वखांयदा। रामदास तेरा दर दरबार, दर दरवाज़ा इक्क सुहांयदा। हरि जू हरि मन्दिर आवे पहरेदार, सुत्या कोई ना जगांयदा। सम्मत पन्दरां कर विचार, इक्क हलूणा लांयदा। पंचम जेठी हो त्यार, खेल आपणी आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ तेरा दर, कलिजुग तेरा पूर वर, अन्तिम आप करांयदा।

बीस बीसा हरि निरँकारा, खेले खेल संसारी। जगत जोग कर विहारा, दाता वड भण्डारी। नाम खण्डा तेज कटारा, शब्द शस्त्र धारी। रामदास दर दुआरा, करे खेल अपारी। अर्जन गुर गुर अर्जन बण लिखारा, मंगे मंग भिखारी। हरि

जू हरि मन्दिर महल्ल अपारा, शब्द सरूपी चार दिवारी। सर सरोवर ताल सुहावा, अमृत एका धारी। सतिगुर पूरा बण निथावां, आपे वसया बाहरी। हँसां चोग खाधी कावां, ना होए अन्त आधारी। इक्क दूजे गल पा पा रोवण बाहवां, ग्रन्थी पन्थी मास आहारी। गुर तेग बहादर बलि बलि जावां, दर द्वारे गया हारी। गुर गोबिन्दा ना देवे ठण्ढीआं छाँवां, अग्नी अग्न लगाए तत्ती हाढ़ी। पूत सपूता ना जणया मावां, पति गंवाई आपणी दाढ़ी। पंचम जेठ घर साचे जावां, नाल रलावां मौत लाड़ी। आप आपणा भेव छुपावां, लुट्टी जावां दिन दिहाड़ी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी भेख कर, गुर गोबिन्दे अन्दर वड़, आप छुपाया आपणा नावां। पंचम जेठ साढे दस, वेख जगत लुकाई। हरि मन्दिर वेखे हस्स हस्स, भरमी भरम भुलाई। तीर निराला कस कस, माया ममता रिहा जगाई। मनमुखां राह दस्स दस्स, कूड़ी क्रिया रिहा कराई। कलिजुग अन्तिम नस्स नस्स, जुग चौथे पैंडा रिहा मुकाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि मन्दिर अन्दर अन्दर मन्दिर आपणा चरन छुहाई। सज्जा चरन अग्गे टिका, टिक्का मस्तक लाए। साचा सिक्का जगत चला, सोहँ नाम लिखाए। एका एक दए वखा, गोबिन्द नाल रलाए। अकाल तख्त तख्त अकाल वेख वखा, भाण्डा भरम भनाए। लेखा लेख लिख्त लिखा, अर्जन आसा पूर कराए। केसाधारी आप सवा, कलिजुग माया सेवा लाए। सम्मत चौदां रुत्त सुहा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, सन्त मनी सिँघ तेरा लेख लिख्या दए पूर करा। पूरा लेखा आपे कर, आपणी कल वरताए। चरन दहिलीजों अन्दर धर, महल्ल अटल सुहाए। मदिरा मासी जायण हर, अन्दर रहिण ना कोई पाए। सम्मत सोलां आए डर, चारों कुन्ट फिरे हलकाए। आपे जाणे आपणा घर, भेव किसे ना आए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, बीस बीसा इक्क इकीसा गुर संगत संग निभाए। सतिगुर पूरा धन्न है, गुरमुख लए तराए। गुरमुख जाए मन्न है, मन चिन्दया फल पाए। एका देवे माल सच्चा नाम धन है, चोर यार ठग्ग लुट्ट ना कोई लै जाए। साचा राग सुणाए कन्न है, नाद अनादी धुन उपजाए। आपे बेड़ा देवे बन्नू है, बन्नूणहार सदा अख्वाए। भाण्डा भरम देवे भन्न है, गढ़ हँकारी रहिण ना पाए। जोती नूर चढ़ाए साचा चन्न है, अज्ञान अन्धेर मिटाए। पंच विकारा करे खंन खंन है, नाम खण्डा एका वाहे। जगत रत ना दिसे तन है, रंग रती रंग वखाए। आपे देवणहारा डन्न है, दे मति आप समझाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए तराए। सतिगुर पूरा मीत मुरारा, एका एक अख्वाया। आप कराए पार किनारा, एका दूजा भउ चुकाया। तीजे नैण कर उज्यारा, देवे दरस रघुराया। चौथे घर खेल अपारा, सन्त सुहेले लए मिलाया। पंचम मेला कन्त भतारा, साचा

मंगल एका गाया। छेवें छल वल खेल न्यारा, अछल अछल्ल अख्वाया। सति पुरख निरँजण साची धारा, घर साचे डेरा लाया। अट्ठ तत्त वेख दुआरा, तत्त मति समझाया। नौ दर कराए आर पारा, अद्धविचकार दरस दिखाया। दस्म द्वारी सच दरबारा, आपे कुण्डा दए लाहया। आत्म सेजा कर त्यारा, शब्द सिँघासण सेज विछाया। जोती नूर कर उज्यारा, घर बैठा आसण लाया। गुरमुख साजण साची नारा, आप आपणे अंक लगाया। रलीआं माणे सेज भतारा, सहिज सुरत सच पाया। एका रंग रंग करतारा, आपणे रूप समाया। दूजी बख्शे शब्द धारा, अनहद सेवा लाया। तीजे खोल्हे बन्द किवाड़ा, माया मोह चुकाया। चौथे घर ना आए पंच विकारा, रो रो रिहा दुरकाया। पंचम खेले खेल पिच्छे अगाड़ा, सेवक सेवा रिहा कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति पुरख निरजंण सतिगुर पूरा आपे आप हो आया। सतिगुर पूरा साचा सज्जण, निर्मल जोत अकालीआ। आप कराए आपणा हज्जण, सन्त सुहेले साचे भालीआ। अमृत आत्म पी पी रज्जण, दोवें हथ्थ वखाए खालीआ। आपणा पड़दा आपे कज्जण, जिस जन सतिगुर पूरा मिल्या दो जहानीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां फल लगाए काया सच्ची डालीआ।

७२२ ०६

आत्म दरसी दरस अघाए। कर दरस तन मन तृप्ताए। अमृत मेघ बरस, हरि तृखा बुझाए। जगत मिटाए हरस, संसा रोग गंवाए। जोती जोत सरूप हरि, जोती नूर डगमगाए। दरस नैण आत्म तृप्तास्सया। मिटे सगल वसूरा रसना सके ना कहिण, भेव पुरख अबिनास्सया। आपे नेड़े दूरा आप चुकाए लहिणा देण, करे कराए बन्द खुलास्सया। मनमुख जीव आपणे वहिण वहण, मिले मेल ना शाहो शाबास्सया। काया नाता कूड़ो कूड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल मात प्रभास्सया। जन भगतां रंगण रंग चाढ़े गूढ़ा। जगत नेत्र दरस तरस, दिवस रैण बिल्लाए। जन हरि साचा आप मिटाए आपणी हरस, पंचम बंध बंधाए। पंचम लहिणा देणा पिछला कर्ज़, कोए ना मात चुकाए। पंचम मीता रिहा वरज, मन मति बुध समझाए। शब्द अनाहद रिहा गरज, डौरू डंक वजाए। नाद अनादी सुणाए साची तर्ज़, राग रागणी भेव ना पाए। गुरमुख लग्गी एका मरज, वैद हकीम ना कोई हटाए। प्रभ मिलण दी साची गर्ज़, गफ्लत नींद गंवाए। जगत विकारा होवे हर्ज, हरि हरि विसर ना जाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन जन हरि आपे लए जगाए। जागणहारा आप जगाए, जुग जुग अवल्लड़ी रीता। जीव जन्त कोई भेव ना पाए, रसना आए

अठारां ध्याए गीता। वेद व्यासा गया लिखाए, मुनी मुनीसर इक्क अतीता। पुराण अठारां दे मति समझाए, प्रभ मिलण दी साची रीता। आदि पुरख हरि भेव खुल्हाए, सो बैठा रहे अतीता। गौड़ ब्रह्मण पूत उपजाए, ना मरे ना जीता। पिता पूत आप हो जाए, गुर दर अन्दर मन्दिर ना दिसे मसीता। डूँघी कन्दर डेरा लाए, आप आपणा आपे चीता। त्रैगुण माया नार दुहागण रही बिल्लाए, अन्तिम पाए आपणा कीता। कलिजुग शाहो खुशी मनाए, वेखे खेल अनडीठा। पुरख अबिनाशी भेव छुपाए, किसे हथ्थ ना आए हरि रस मीठा। अगम्म अगोचर आप अख्वाए, अलख निरँजण इक्क अनडीठा। दमो दम वेख वखाए, काया हाटी माटी कौड़ा रीठा। नगर धाम इक्क सुहाए, पुरख अबिनाशी बीठला बीठा। सम्बल साचा मेल मिलाए, चाढ़े रंग इक्क मजीठा। अचरज आपणा खेल रचाए, पंच तत्त बणाए इक्क अंगीठा। बुध मति कलि भेव ना पाए, मन मति जगत दी रीता। सुर नर मुन जन रहे ध्याए, आप आपणा मीता। शिव शंकर बाशक तशका गल लटकाए, दिवस रैण रहे उडीका। ब्रह्मा वेता साचा नेता अट्ठे नेत्र खोल्ह वखाए, चारे मुख अल्हाए वेद विदेता। साम युजर रिग पार कराए, अथर्बण तेरी रीता। लोआं पुरीआं वेख वखाए, लक्ख चुरासी हस्त कीटा। वरन बरन हरि रिहा जणाए, इक्क इकल्ला सृष्ट सबाई जीता। चरन सरन इक्क रघुराए, आदि जुगादी साची रीता। पंडत पांधे पढ़ पढ़ थक्के, ज्ञानी ध्यानी वड विद्वानी रहे ध्यान लगाए, हरि मिल्या ना साचा मीता। सार पाशा चौपट बाजी जगत कानी रहे लगाए, हार जित्त ना दिसे पासा। आत्म ध्यानी रहे बिल्लाए, उच्चे टिल्ले पर्बत जंगल जूह उजाड़ पहाड़ किया वासा। रिख मुन फिरन हलकाए, रसना गा गा थक्के स्वास स्वासा। सारंगधर भगवान बीठला बैठा मुख छुपाए, खेले खेल पृथ्वी आकाशा। आपे जाणे आपणी रीता। वेखे खेल दिवस रैण प्रभाता। गुरमुखां काया करे सीतल सीतला, अमृत आत्म जाम पयाता। कलिजुग वेला अन्तिम बीतला, रो रो करे पुकार धरत माता। सतिजुग साचा सज्जण मीतला, मंगे मंग इक्क सुगाता। पुरख अबिनाशी परखे नीतला, धुरदरगाही देवे दाता। सोहँ शब्द इक्क अतीतला, भेव चुकाए ज़ात पाता। लेखा चुक्के गुर दर मन्दिर मसीतला, मक्का काअबा आप पछाता। जन हरि हरि जन साचे काया कप्पड़ होया पलीतला, हरि धोवण आया दाग़ा। जुग जुग चलाए आपणी रीतला, रथ रथवाही हथ्थ आपणे रक्खे वागा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग सतिजुग सतिजुग कलिजुग मेल विछोड़ा आप कराए भाई भ्राता।

७२४
०६

✳ ५ जेठ २०१४ बिक्रमी हरिमन्दिर साहिब अमृतसर विखे भुपिन्दर सिंघ ग्रन्थी नाल बचन होए ✳

सतिगुर शब्द निशान, जुग जुग अटल है। आपे वेखे वाली दो जहान, सृष्ट सबाई वल छल है। ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड पाए वंड हरि भगवान, ना कोई जीव नादान है। लक्ख चुरासी सुत्ता दे कर कंड, होया आप बेपछान है। कलिजुग तेरी अन्तिम वंड, गुणवन्ता पाए गुण निधान है। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हर घट अन्दर वेखे वड़, जीव जन्त काया सुंञ मसाण है। साचा निशान शब्द डोर, प्रभ साचा मात चढ़ांयदा। सन्त सुहेले सतिगुर मात तोर, आपणा हुक्म जणांयदा। करे प्रकाश अन्ध घोर, सच ज्ञान दवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रामदास गुर साचा सर, जगत निशान उच्च महान आपे वेख वखांयदा। वेखणहारा हरि भगवन्ता, अकल कला भरपूरा। दया कमाए साधन सन्ता, आत्म धुन उपजाए साची तूरा। जुग जुग महिंमा गणत अगणता, गोबिन्द काया सति सरोवर सृष्ट सबाई नाता दिसे कूड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वसे आपणे घर, वेखे खेल दर दर, सच निशाना हरि भगवाना एका रंग चढ़ाए गूढ़ा। सच निशान रिहा झुल्ल, प्रभ साचा आप झुलांयदा। सम्मत सम्मती पैणा मुल्ल, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। गुर गोबिन्दे तेरी साची कुल, आपे वेख वखांयदा। मन मती जीवां अमृत आत्म गया डुल्ल, सच जाम ना कोए पिलांयदा। माया ममता रहे रुल्ल, आत्म रस ना कोई चखांयदा। अन्तिम तोलणहारा पूरे तोल, एका खण्डा नाम रखांयदा। जो जन चरन प्रीती गुर सतिगुर पूरे गया घुल, दो जहानी पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दुआरा इक्क सुहांयदा। सच निशान सचखण्ड, प्रभ साचे आप चढ़ाया। लोकमात कलि पाई वंड, रामदास दरस दिखाया। नौ खण्ड पृथ्वी खण्ड खण्ड, हरि भाणे विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे एका दर, दुआरा बंक इक्क सुहाया। साचा धन अग्गे रक्ख, आपणी दया कमांयदा। प्रगट होए हरि समरथ, दिस किसे ना आंयदा। जन भगतां लज्जया लए रक्ख, रक्खणहारा आप अख्वांयदा। मनमुखां पाए नत्थ, ना कोई किसे बचांयदा। जगत दुआरा बन्द, भगत खुल्हाया। शब्द जणाए परमानंद, आत्म ब्रह्म जणाया। हउमे हँगता दूई द्वैती ढाई कंध, कूड़ी काया मुकाया। सदा सुहेला हरि बख्शंद, बख्शणहार आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग भेखी भेख वटाया। जुग जुग भेख अवल्ला, हरि निरंकारया। आपे वसे इक्क अकल्ला, भेव कोए ना पा रिहा। वेख वखाए जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ ड्रूँघी कन्दर फोल फुला रिहा। गुरमुख विरले सन्त दुलार दर दुआरा एका मल्ला, दर घर साचे सेव कमा रिहा। आप बहाए निहचल धाम अटला, ऊँचो ऊँच रखा रिहा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रामदास तेरा साचा दर, दर दुआरा वेख वखा रिहा। सच नगर शब्द द्वार, हरि साची बणत बणाईआ। ना कोई दीसे चार दिवार, छप्पर छन्न ना कोई रखाईआ। दीपक जोती इक्क उज्यार, अट्ठे पहर करे रुशनाईआ। पंचम गायण वारो वार, प्रभ साचा सेवा लाईआ। आपे सुणे सुणनेहार, सुणनहार आप अख्वाईआ। गुण अवगुण ना सके कोई विचार, गुणवन्ता हरि रघुराईआ। भरमे भुल्ले भरम गंवार, प्रभ का भेव कोई ना पाईआ। साध सन्त माया रुल्ले, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, काला टिक्का मस्तक छाहीआ। गुरमुख विरले साजण सन्त प्रभ चरन प्रीती घोल घुल्ले, आत्म दरसी दर्शन पाईआ। लोकमात फले फुले, गुर गोबिन्दे वेल लगाईआ। अन्तिम पूरे तोल तुले, नानक कंडे रिहा चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लक्ख चुरासी वेखे दर, जेरज अंडज फोल फुलाईआ। साचा घर इक्क दरवाज़ा, एका एक वखांयदा। आपे वसे ग़रीब निवाजा, चारों कुन्ट फेरा पांयदा। आप आपणा साजण साजा, इक्क वजाए अनहद वाजा, राग रागनी सेवा लांयदा। शब्द घोड़ा रक्खे लाजा, नीला नीली धारों पार करांयदा। दो जहानां राजन राजा, शाहो भूप आप अख्वांयदा। अन्तिम कलि प्रगट होए देस माझा, सम्बल नगरी धाम सुहांयदा। जन भगतां अन्दर मन्दिर बहि बहि मारे अवाज़ा, बजर कपाटी कुण्डा लांहयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दर दुआरा वेख वखांयदा। दर दुआरा साचा ताल, हरि साचे वेख वखानया। लक्ख चुरासी जगत जंजाल, भरमे भुल्ले जीव नादानया। गुरमुख विरले अमृत आत्म दए उछाल, दुरमति मैल गंवांयदा। मनमुख जीव आपणा कीता पाण, ना कोई अन्त छुडांयदा। मनमति अग्नी अग्ग है, चार कुन्ट प्रधान। हरि दाता सूरा सरबग है, बख्शे जिया दान। आप बणाए फड़ फड़ हँस कग्ग है, देवे नाम सच्चा गुण निधान। मेल मिलाए उप्पर शाह रग है, जोती शब्दी हरि बलवान। कलिजुग वा तत्ती अन्धेरी रही वग है, पारब्रह्म प्रभ भेव अन जबान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिमन्दिर वेखे साचा घर, कवण हँस कवण काग कवण चोग मुख रखान। हँस काग दर द्वार, आप आपणे रंग रत्तया। गुरमुख विरले पायण सार, जिस जन दे समझावे मतया। जोती नूर कर आकार, मेल मिलाए कमलापतया। पति पतिवन्ता हरि निरँकार, हरिजन देवे धीरज सतया। धीरज यति विच संसार, बहत्तर नाड़ ना उब्बले रत्तया। रत्ती रत्त ना होए ख्वार, पंच विकारा होए सथया। पंच विकारा रोवे धाहां मार, आत्म बीज गुर पूरे एका घत्तया। गुर पूरा पूर्ब कर्म लहिणा दए उतार, शब्द चढ़ाए साचे रथया। रथ रथवाही इक्क गिरधार, लक्ख चुरासी रिहा मथया। लक्ख चुरासी तेरी पावे सार, कलिजुग अन्तिम सीआं वंड वंडाए साढे तिन्न तिन्न हथ्थया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,

वेखे खेल सर्बकला समरथया। सर्बकला समरथ, निरगुण समाया। जन भगतां रक्खे दे कर हथ्थ, कलिजुग वेला अन्तिम नेड़े आया। राज राजानां शाह सुल्तानां पाए नत्थ, डोरी इक्क रखाया। ब्रह्मा शिव देवत सुर आपे रिहा उठाया। शब्द जणाए अलखणा अलक्ख, भेव किसे ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसया घर, दर दुआरा इक्क रखाया।

गुरमुख वड वड्याईआ, देवणहार दातार। गुर शब्द सच्ची कुड़माईआ, घर पाया एका वार। दिवस रैण ना होए जुदाईआ, मिले मेल पुरख भतार। आत्म घर वज्जे वधाईआ, पंचम गायण वारो वार। निर्मल जोती इक्क जगाईआ, मेट मिटाए अन्ध अंध्यार। वरन गोत भेव ना राईआ, चार वरनां इक्क द्वार। साध सन्त हरि शब्द जणाईआ, आप कराए एका एकँकार। कलिजुग वेला अन्तिम दए दुहाईआ, गुर गोबिन्दा लेख लिखार। चारों कुन्ट उठ उठ धाईआ, शाहो भूप शब्द सवार। नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां वेख वखाईआ। दर द्वार लोकमात साचा धाम, हरि मन्दिर हरि आप समाईआ। रामदास गुर सेवा कर अपर अपार, गुर अर्जन शब्द जणाईआ। मिल्या मेल हरि निरँकार, अगाध बोध बोध अगाध भगतन हरि सरनाईआ। एका एक शब्द जैकार, गुरू ग्रन्थ दे मति आप समझाईआ। पन्थ ख़ालसा रहिणा ख़बरदार, मन मति बुध ना कोई जगत चतुराईआ। भेव अभेदा अछल अछेदा, एका एक अधार। किसे हथ्थ ना आए चारे वेदा, पढ़ पढ़ थक्के जगत कतेबा वसे बाहर। गुरमुख साचे हरिजन रसना गाए जगत जिह्वा, तन मन्दिर अन्दर कर प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक गुर गुर नानक दित्ता नाम वर, नाम सति जगत भण्डार। नाम सति जगत भण्डार, प्रभ साचा झोली पाया। नानक गुर बण वरतार, चारों कुन्ट आप वरताया। गुर अंगद कर इक्क प्यार, लहिणा लहिणे झोली पाया। अमरदास दरस दर भिखार, सेवक सेवा रिहा कराया। रामदास गुर सतिगुर खोल्ह द्वार, साचा धाम इक्क वसाया। सर सरोवर अपर अपार, अमृत धारा रूप वखाया। गुर अर्जन खोल्हे जगत किवाड़, साचा लेखा लेख लिखाया। नेड़ ना आए पंचम धाड़, जिस जन रसना हरि हरि गुण गाया। गुरमुख गुरसिख साजण सन्त मेल मिलाए दिन दिहाड़, विछड़ कदे ना जाया। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़, दिवस रैण अट्ठे पहर होए आप सहाया। धन्न धन्न गुरमुख गुरसिख जो जन गुर सतिगुर तेरी साची सेवा रहे कमाया। गुर अर्जन वड वड्याईआ, लिख्या लेख अपारा। प्रभ शब्द करी कुड़माईआ, मिटया धुँदूकारा। धुन आत्मक इक्क वजाईआ, पाया पुरख अपारा। पुरख अगम्मा एका धाम सुहाईआ, पंचम तत्त ना कोई अकारा। एका रंगण रंग रंगाईआ, शब्दी जोती दए हुलारा। साचे घर वज्जी वधाईआ, मिल्या मेल पुरख भतारा। गुर अर्जन आस रखाईआ, हरि जू हरि मन्दिर आए दया कमाए, जन भगतां बेड़ा पार कराए देवे दरस अगम्म अपारा।

✻ ५ जेठ २०१४ बिक्रमी मोता सिँघ दे घर सच्चे पातशाह जी ने सिँघासण उलटा कीता कल्सीआं ज़िला अमृतसर ✻

दयाल भए, हरि जू अवतरा। एका एक रहे, ना जन्मा ना मरा। आदि अन्त सदा निर्भय, निरगुण रूप रहा। आप कराए आपणी जै, आपणा भाणा आपे आप सहा। सृष्ट सबाई होवे खै, गुरमुख विरला मात रहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप सुहाए आप उठाए आप बणाए आपणा थाँ। थान थानंतर हरि अगम्म, एका एक रखाया। शब्द सिँघासण ना कोई दिसे थम्म्, आकाश आकाशां उप्पर टिकाया। एका मेला साचे नाम नम, पावा चूल ना कोई रखाया। लोकमात जाणे आपणा कम्म, कारज करता आप अख्वाया। सृष्ट सबाई रोवे छम्म छम्म, धरनी धरत धवल दए उलटाया। मात पित पिता पूत होए ग़म, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुखआसण पुरख अबिनाशण जगत देवे मुख भवाया। सुखआसण प्रभ आप उठा, आपे मुख भवांयदा। पंज तत्त जगत दए लुटा, लुट्टणहारा दिस ना आंयदा। मन मति दए मिटा, मति बुध भेव ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम

७२७ जेठ सम्मत चौदां बीस बीस चौदां नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां चरन हेठ टिका, चार जुग चार पावे आप उलटांयदा। ७२७

०६ खेले खेल अगम्म अथाहो, बेपरवाहो भेव कोई ना पांयदा। सतिजुग द्वापर त्रेता करे आप न्याउँ, कलिजुग सालस शब्द ०६

बणांयदा। जन भगतां देवे ठण्ढी छाउँ, ख़ालसा ख़ालस इक्क वखांयदा। किसे दिस ना आए नगर शहर गराउँ, काया नगर इक्क सुहांयदा। जन हरि उठाए फड़ फड़ बाहों, सेवक सेवा सच कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरीआं लोआं वेख वखांयदा। पंचम जेठ दया कमा, गुरमुखां सेव कमांयदा। सति सन्तोख झोली पा, दे मति समझांयदा। हौली हौली शब्द जणा, सुरती सुरत जगांयदा। आप आपणे राहे पा, मार्ग इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुणदाता अवगुण आपणे हथ्थ रखांयदा। सम्मत चौदां तेरा रंग, लोकमात चढ़ांयदा। पुरख अबिनाशी बैठ पलँघ, सिँघ मनी तेरा लहिणा कर्ज लांहयदा। दर द्वारे मंगी मंग, भाणा सहिणा हुक्म जणांयदा। आप लगाए आपणे अंग, अंगीकार आप अख्वांयदा। सृष्ट सबाई भुक्ख नंग, जन भगतां भुक्ख मिटांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी दिसे नंग, हरिजन पड़दा नाम पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

साचा संग निभांयदा। शब्द रंगीला पलँघ, सेज विछाईआ। जगत द्वारे आपे लँघ, हरि मन्दिर वेख वखाईआ। आपे जाणे धारा गंग, आपे आप रिहा वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ खुशीआं नाल मनाईआ। पंचम जेठ भगत सुल्तान, जगत वेख वखांयदा। हरिजन देवे जिया दान, मनमुख खाली हथ्थ फिरांयदा। आपणा कीता आपे पाण, ना कोई किसे छुडांयदा। पाए मुल्ल विच जहान, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ साढे दस शब्द रंगीले नाम पलँघ बैठे हस्स हस्स उलटा मुख करांयदा। उलटा मुख उलटी धार, उलटी गंग वहाईआ। उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण दिशा विचार, दहि दिशा वेख वखाईआ। चार कुन्ट सुण पुकार, मात पाताल आकाश गगन गगनंतर लग्गी बसन्तर ना सके कोई बुझाईआ। ब्रह्मा तेरा पूरन पूर करे मनवन्तर, मन इच्छया पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती नूरो नूर सवाईआ। जोती नूर जगत उजाला, इक्क प्रकाश रखाया। प्रगट होए हरि गोपाला, दीन दयाला नाउँ रखाया। लेखा लेख लिखाए साल बसाला, हाल बेहाला वेख वखाया। कलिजुग चले अवल्लड़ी चाला, भेव किसे ना पाया। एका शब्द इक्क दलाला, दो जहानां आप रखाया। चरन भिखारी दर द्वारे काल महांकाला, रो रो रहे नीर वहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा खेल आपे रिहा खिलाया। साल बवंजा सेज हंढाई, लोकमात अवतारा। बाल जवानी खेल खिलाई, बुड़ेपा वेख विचारा। मात पित भईआ भैणा साक सज्जण सैण अख्वाई, नारी कन्त किया प्यारा। सेवक सेवा गुरसिख लगाई, चरन कँवल दए अधारा। दु:ख भुक्ख सुक्ख इक्क रंग समाई, चिन्ता सोग वसया बाहरा। मुन सुन इक्क जोग हंढाई, जोती नूर प्यारा। पारब्रह्म भोग इक्क रखाई, अट्ठे पहर अधारा। आप आपणा मुख छुपाई, जीव जन्त ना पाए सारा। दिस ना आए धी जवाई, खेले खेल अपर अपारा। पिता पूत भेव ना राई, सेवक सेव ना करे बण भिखारा। दोए जोड़ ना सीस झुकाई, दर द्वार ना कर निमस्कारा। आप आपणा खेल खिलाई, आपे खेले विच संसारा। जगत सिँघासण इक्क बणाई, उप्पर आसण लाए पारब्रह्म निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण अवतारा। पंज तत्त हरि जोत छुपाई, काया मन्दिर इक्क वखाई, हड्ड मास नाड़ी रत्त लाया इट्टां गारा। काली छत्त इक्क टिकाई, घास फूस रिहा उगाई, पड़दा पाए सीस दस्तारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अपर अपारा। आप आपणा खेल खिलाया, पारब्रह्म बेअन्ता। सन्त मनी सिँघ संग रलाया, सेवा लाई साचे सन्तां। कलम लेखणी हथ्थ फड़ाया, लेखा लिखे जीवां जन्तां।

दो जहानां मेख रिहा लगाया, शब्द जणाए साचे कन्ता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए बेअन्त बेअन्ता। सन्त मनी सिँघ शब्द जैकारा, एका धुन उपजाईआ। अट्ठे पहर बण लिखारा, दिवस रैण सेव कमाईआ। दोए जोड़ करे निमस्कारा, कागज़ कलम दोवें रहे मुस्कराईआ। गुर सतिगुर वेखे इक्क दुआरा, दर दरवाज़ा खोल्ह वखाईआ। प्रगट होए ग़रीब निवाजा, सृष्ट सबाई अनभोल रखाईआ। जगे जोत देस साझा, दिस किसे ना आईआ। अन्तिम रच्चया कलिजुग काजा, सति पुरख निरँजण रिहा साह सुधाईआ। जन भगतां मारे मात आवाजा, साची बणत रिहा बणाईआ। वेले अन्त रक्खे लाजा, लाजावन्त आप अख्वाईआ। इक्क चलाए नाम जहाज़ा, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सरगुण काया विच समाईआ। सरगुण काया पंज तत्त, आपणी आप हंढांयदा। आपे बणया कमलापत, पतिपरमेश्वर आप अख्वांयदा। आपे रंगण रंगा रत्त, एका रंगण रंग चढ़ांयदा। आपे चढ़या शब्दी रथ, रथ रथवाही आप हो जांयदा। आपे सुत्ता अन्तिम सत्थ, लोकमाती सेज विछांयदा। आपे वंड वंडाई सीआं साढे तिन्न हत्थ, समरथ आसण लांयदा। आपे महिंमा रखाए अकथना अकथ, भेव कोए ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत सिँघासण इक्क रखांयदा। जगत सिँघासण हरि निरँकार, एका एक रखाया। अट्ठे पहर ख़बरदार, आलस निन्दरा विच ना आया। सेवक सेवा करे अपार, चारों कुन्ट वेख वखाया। देवी देवत आयण द्वार, दर दवारउँ दए दुरकाया। ब्रह्मा शिव रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नीर रहे वहाया। गुरमुखां करे इक्क प्यार, आप आपणा दरस दिखाया। मनमुखां मारे अन्तिम मार, मदिरा जाम इक्क प्याया। खेले खेल अपर अपार, लक्ख चुरासी ताम बणाया। भरमे भुल्ले जीव गंवार, हड्ड मास नाड़ी चम्म किसे हत्थ ना आया। कलिजुग रैण अन्धेरी शाम, अन्ध अन्धेरा रिहा छाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा मुख छुपाया। आप आपणा मुख छुपाए, नेत्र नैण मुधाईआ। दुःख सुख विच ना कदे आए, तृष्ना भुक्ख ना कोई रखाईआ। मानस देही मनुक्ख अख्वाए, मात कुक्ख सुफल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर द्वारे बैठा आसण लाईआ। दर दुआरा सिँघ जवंद, तेरा आप सुहाया। चार दीवारी होया बन्द, दिस किसे ना आया। माया पड़दा पाया कंध, अन्ध अन्धेर रखाया। गुरमुखां वखाए साचा चन्द, एका नूर दरसाया। खुशी कराए बन्द बन्द, जिस जन आपणी दया कमाया। दिवस रैण गायण बत्ती दन्द, सेवक सेवा आप लगाया। अन्तिम मुकाए कलिजुग पन्ध, लहिणा देणा रिहा चुकाया। इक्क सुणाया सुहागी छन्द, अक्खर वक्खर नाम धराया। गुरमुख समाया परमानंद, निज घर आसण डेरा लाया। मदिरा मास तजाया रसना गन्द, गोबिन्द रूप वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, काया लेखा रिहा मुकाया। काया लेखा हरि संसार, आपणा आप चुकांयदा। पंचम जेठी लै अवतार, कलिजुग वेख वखांयदा। मनमुख जीवां मारे मार, मारनहारा मुख छुपांयदा। करे कराए करनेहार, करता पुरख आप अख्वांयदा। मनी सिँघ गया हार, राज राजानां शाह सुल्तानां जीवां जन्तां आप हिलांयदा। पारब्रह्म प्रभ भेव अपार, भाणा आपणे हथ्थ रखांयदा। गुरमुखां लहिणा देणा कर्ज़ उतार, आपणी भेंटा आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रूप समांयदा। जगत नाता तोड़, जोती जोड़ जुड़ाया। शब्द चढ़या साचे घोड़, घर साचे आसण लाया। सति पुरख निरँजण आपे बौहड़, आपे रिहा विच समाया। धुरदरगाही आया दौड़, जोती जामा भेख वटाया। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़, लेखा वेख वखाया। वेखे परखे मिट्ठा कौड़, लक्ख चुरासी वेख वखाया। सम्बल नगर साढे तिन्न हथ्थ लम्बा चौड़, गुर गोबिन्दा संग रलाया। नीला मारे पहला पौड़, सोहँ नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमाती खेल खिलाया। लोकमात खेल खिलाए, हरि हरि इक्क इकल्ला। ज़ात पाती मेट मिटाए, आप वसाए सच महल्ला। तीर्थ ताटी रहिण ना पाए, शब्द उठाए साचा भल्ला। औखी घाटी आप चढ़ाए, संग निभाए गोबिन्द डल्ला। पंचम हाटी शब्द विकाए, सच सुनेहड़ा एका घल्ला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जगत सिँघासण वेख वखाए। जगत सिँघासण हरि निरँकार, आपे वेख वखांयदा। हड्ड मास नाड़ी रत्त छड्ड प्यार, पंज तत्त मुख भवांयदा। जोती शब्दी मीत मुरार, साची रीत चलांयदा। छब्बी पोह दिवस विचार, आप आपणे रंग रंगांयदा। रंग रंगीला अपर अपार, सूहा पीला वेस वटांयदा। छैल छबीला विच संसार, सच कबीला इक्क बणांयदा। नीला नीली धारों करे बाहर, सोहँ चीरा तन सजांयदा। मस्तक हीरा गुरसिख प्यार, नाम टिक्का एका लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम जेठी जोत प्रगटांयदा। पंचम जेठी जोत जगा, आपणा राह वखाया। पुत्तर धीआं भरम भुला, भेव किसे ना पाया। आप आपणा स्वांग वरता, पुरी घनक चरन छुहाया। सच सिँघासण डेरा ला, साढे तिन्न हथ्थ वेख वखाया। सिँघ शेर रखाया आपणा नाँ, आप आपणी रसना गाया। गुरमुख विरला करे दर द्वारे हां, जुग बैठा मुख भवाया। पुरख अबिनाशी लग्गा सच्चा थाँ, थान थनंतर इक्क सुहाया। आपे वेखे उडदे काँ, आपे हँसां चोग चुगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत सिँघासण जगत संजोग धुर दा लेख लिखाया। पंचम जेठ जगत सिँघासण, बीस सद चरन छहाया। सचखण्ड वजाया एका नद, ब्रह्मण्ड होए जणाया। पंज तत्त तेरी पार हद्द, तन माटी खेह कराया। सन्त सुहेले साचे सद्द, शब्द करे कुड़माया। भाग लगाए विष्नूं यद, भगवन रूप वटाया। इक्क

प्याए साची मदि, अमृत नाउँ रखाया। आपणा भार आपे लद्द, सीस आपणे गया उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचाया। आप आपणी रचन रचाए, खेले खेलणहारा। शब्द जणाई इक्क कराए, देवे नाम अधारा। साचा धाम इक्क सुहाए, चार कुन्ट चार दुआरा। चार मुख आप रखाए, अद्ध विच किया उतारा। सृष्ट सबाई रिहा हिलाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे पार किनारा। पार किनारा आपणे हथ्थ, प्रभ साचे आप रखाया। सृष्ट सबाई पाई नत्थ, दिस किसे ना आया। कलिजुग तेरा कूड़ा रथ, कूड़ कुड़यारा रिहा चलाया। पुरख अबिनाशी पाई नत्थ, चारों कुन्ट रिहा भवाया। मनमुख जीव होए सत्थ, सथ्थर हेठ विछाया। गुरमुखां सगल वसूरे गए लथ्थ, नेत्र नैण दर्शन पाया। हरि चरन द्वारे सच इक्खु, साचा धाम सुहाया। मण्डल मण्डप जाए ढठ्ठ, थिर कोई रहिण ना पाया। आपे गेड़नहारा उलटी लट्ठ, उलटे वहिण वहाया। लेखा चुक्के अट्ठ सट्ठ, तिन्न सौ सट्ठ मूल ना भाया। लहिणा देणा गुर दर मस्जिद मट्ठ, प्रभ साचा रिहा मिटाया। जुग जुग करनेहारा चट्ठ, एका दूजा तीजा चौथा पंचम राग मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग लहिणा रिहा चुकाया। बीस सौ सद हरि निरँकारी, एका जोत जगाईआ। बीस सौ दो खेल अपारी, चारों कुन्ट वखाईआ। वीह सौ तिन्न शब्द उडारी, सच सिँघासण इक्क विछाईआ। वीह सौ चार कर ख्वारी, आर पार रिहा कराईआ। बीस पंज खेल न्यारी, पंचम मीता मेल मिलाईआ। बीस सद छे जगत शिकारी, सोहँ चिल्ला रिहा चढ़ाईआ। बीस सत जोत अधारी, जोती शब्दी बणत बणाईआ। बीस अट्ठ अट्ठ विचारी, ब्यास किनारा पार कराईआ। बीस नौ नौ द्वारी, सृष्ट सबाई वेख वखाईआ। बीस दस हरि गिरधारी, गुरमुखां दर सुहाईआ। बीस ग्यारां वड सिक्दारी, जगत माया लहिणा देणा मूल सन्त मनी सिँघ तेरा आप चुकाईआ। सम्मत बारां धाम अस्थूल, हाढ़ सतारां गुर संगत रिहा बणाईआ। सम्मत तेरां चुकाए मूल, पहली चेत्र राज राजानां शाह सुल्तानां साधां सन्तां वेख वखाईआ। नानक तेरा तोल्लया तोल, वाली हिन्द करे जणाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी आपे फोल, पुरीआं लोआं वेख वखाईआ। आदि अन्त बैठ अडोल, भगत जनां सद वसे कोल, मनमुखां दिस ना आईआ। सम्मत चौदां चौदां लोकां पड़दे खोल्ह, एका हट्ट रिहा वखाईआ। शब्द मृदंगा वजाए ढोल, चारे कुन्टां रिहा जणाईआ। पहली चेत्र तोल्लया तोल, गुरमुख साचे तोल तुलाईआ। एका इक्की सिक्खी कोल, इक्क इकल्ला हरि रघुराईआ। साची सिक्खी पूरा बोल, गुर गोबिन्दे इक्क कराईआ। आत्म अन्तर आपे मौल, आप आपणी रुत्त सुहाईआ। आपे अन्दर रिहा बोल, राग रागनी आप अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत चौदां तेरी धार प्रभ साचा आप चलाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी पावे सार, सत्तां

७३१
०६

दीपां आप हिलांयदा। ग्रन्थी पन्थी करे ख़बरदार, पंचम जेठी दिवस सुहांयदा। रामदास तेरा दर दरबार, हरि अन्तिम लेखे लांयदा। पंचम गुर मंगे मंग भिखार, हरि भिख्या झोली पांयदा। हरि मन्दिर अन्दर हरि निरँकार, आप आपणा रंग वटांयदा। खेले खेल विच संसार, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भाणा आपणे हथ्थ रखांयदा। पंचम जेठ दिवस सुभागा, सम्मत चौदां रुत्त सुहाईआ। आपे सोया आपे जागा, आपे लए मात अंगड़ाईआ। आप आपणा धोवण आया दाग़ा, आप आपणी सेवा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जगत सिँघासण वेख वखाईआ। जगत सिँघासण जगत महल्ला, हरि साचा वेख वखांयदा। पंचम जेठी करया हल्ला, पहला वार करांयदा। आपे उप्पर आपे थल्ला, आपे मुख भवांयदा। आपे होया वल छल्ला, अछल अछल्ल करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, शब्द सिँघासण आप वखांयदा। जगत सिँघासण आप उलटा, आपणी कल वरताईआ। चारे पैर उप्पर उठा, चारे जुग झोली पाईआ। सन्त सुहेले चरन बिठा, आप आपणा संग निभाईआ। प्रभ का भाणा लागे मीठा, हरि शब्दी शब्द जणाईआ। खेले खेल जगत अनडीठा, वेख कोए ना पाईआ। जगत पलँघ उलटी पिड्ठा, धरत मात बैठी सत्थ वछाईआ। हरिजन रक्खे साया हेठां, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। वक्त सुहाए पंचम जेठा, वीह सौ चौदां खुशी मनाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उलटी लट्ठ गिढ़ाईआ। जगत तख्त आप उलटाए, आपणी कल वरताईआ। शाह सुल्तान होण हलकाए, ना कोए धीर धराईआ। फड़ फड़ बाहों लए जगाए, सोया कोई रहिण ना पाईआ। पहली कूटे मेल मिलाए, लेखा लिख्या पूर कराईआ। खाली ठूठे हथ्थ फड़ाए, ईसा मूसा दए दुहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, दो जहानां वेख वखाईआ। जगत सिँघासण होया पुट्ठा, उलटी रीत चलाईआ। पुरख अबिनाशी आपे तुट्ठा, मन्दिर मस्जिद गुरदुआरा जगत मसीत कोई रहिण ना पाईआ। राज राजान लुकया रहे ना कोई गुट्ठा, सभ दी रिहा जड़ हिलाईआ। आसण चुक्कया जूठा झूठा, उप्पर हेठां रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ वीह सद चौदां तेरी धार विच संसार अन्तिम वार उलटी आप चलाईआ। उलटी धार उलटी नभ, उलटी गंग वहांयदा। नाता तुट्टे साक सज्जण सैण सभ, धर्म राए लेखा मंगे कढ्ढ कढ्ढ वहीआ, चित्रगुप्त वेख वखांयदा। ना कोई भाई मात पित पिता पूत मईआ, भैणां भईआ संग निभांयदा। गुरमुख विरला गुर चरन द्वारे मात रहीआ, राह खैहड़ा बन्द करांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, एका डंक वजांयदा।

७३३
०६

❊ ५ जेठ २०१४ बिक्रमी सैनापती कृष्ना मैनन अते राष्ट्रपती डा० राजिन्दर प्रसाद नूं शब्द भेजे गए
पिण्ड कल्सीआं ज़िला अमृतसर ❊

भारत खण्ड सैनापत, उठ बाल नादान। पुरख अबिनाशी दे समझावे मति, राज इन्द्र वेख विखान। जूठा झूठा लेखा पंचम तत्त, मनमुख जीव अन्त पछतान। लक्ख चुरासी टुट्टे धीरज यति, दर घर सर्ब पछतान। नाड़ी नाड़ उब्बल रत्त, वेखे खेल मुगल पठान। जगत स्यासत पाई नत्थ, भुल्लया गुण निधान। पंचम जेठ मंगी इक्क वत्थ, लिखणा लेख महान। सम्मत चौदां चढ़या साचे रथ, जोत सरूप श्री भगवान। जुग जुग महिंमा अकथना अकथ, राम रामा कृष्ना काहन। पूत सपूता आपे दशरथ, गोकल मथरा वेख विखान। कलिजुग अन्तिम वेखे वत्थ, नौ खण्ड पृथ्वी मार ध्यान। जगत हँकारी झूठा यश, राज मन्त्री सर्ब कुरलान। अन्तिम नेत्र नीर वहायण अत्थ, रो रो मात कुरलान। जगत मुनारा जाए ढठ्ठ, एका झुल्ले धर्म निशान। लेखा चुक्के अड्ड सड्ड, तीर्थ तट्ट मुख छुपान। कलिजुग काला रिहा नठ्ठ, दहि दिशा वेख वखान, पंचम जेठी साची चट्ठ, जगत सिँघासण चरनां हेठ रखान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नेत्र खोल्ले इक्क ज्ञान। नेत्र बन्द जगत किवाड़ा, बुध मति चतुराईआ। कलिजुग माया लुट्टी जाए दिन दिहाड़ा, पंचम चोरां नाल रलाईआ। अट्ठे पहर धाड़ा, सुखआसण चैन ना पाईआ। प्रगट होया धुरदरगाही साचा लाड़ा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। धरत मात वेखे इक्क अखाड़ा, शाह ईरान रिहा जगाईआ। लाल गुलाला रंग चाढ़े गाढ़ा, साचा पल्लू रिहा रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम लेखा रिहा जणाईआ। पंचम लेखा धुर फ़रमान, देवे हरि भगवानया। वेले अन्त सर्ब पछतान, शाह सुल्तान राज राजानया। सुंञा दिसे मन्दिर मकान, लोकमात होए वैरानया। प्रभ का भाणा खेल महान, खेले खेल दो जहानया। रसना चिल्ला तीर कमान, सोहँ खण्डा हथ्थ उठानया। आप उठाए मुगल पठान, शाह तहिरान संग अफगानया। मक्का काअबा वेख दुकान, देवे दान धुर फ़रमानया। संग फरंगी जगत शैतान, एका दूजा संग निभानया। ईसा मूसा एका गान, एका नाद तरानया। चीना रूसा वेख नादान, काला सूसा तन पहनानया। शब्द हदीसा विच जहान, हरि साचा वेख वखानया। खाली खीसा शाह सुल्तान, माया राणी मुख भवानया। बीस इकीसा हरि भगवान, धर्म झुलाए इक्क निशानया। विच उनीसा होए वैरान, अल्ला राणी मुख छुपानया। अट्ठ अठारां बेपछान, जल धार रूप समानया। सत्त सतारां सर्ब कुरलान, मुगल पठाण संग हिन्दवानया। सम्मत सोलां जाणी जाण, ब्यास किनारा पार करानया। पन्दरां अन्दर वेखे मार ध्यान, डूँघी कुन्दरा जीव शैतानया। सम्मत चौदां लिख्या लेख महान, इक्की चेत्र

दिवस सुजानया। मंगी मंग इक्क अन्जाण, लिखणा लेख दर परवानया। पंचम जेठ गुण निधान, खेले खेल दो जहानया। जगत सिँघासण मुख भवान, उलटी कल वरतानया। कोई ना देवे किसे दान, साध सन्त होए हैरानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सैनापत वेखे घर, घर साचा कवण पछानया। सैनापति साजन साज, एका साज बणाया। जोद्धा सूरा राजन राज, बली बलवान अख्वाया। सत्त रंग निशाना जगत जहान, प्रभ साचे आप झुलाया। पंचम मुख बख्श्या ताज महान, भुल्ल क्यों मुख छुपाया। पंचम लेखा सोहँ दाज, प्रभ साचे झोली पाया। चरन जोड़ा शब्द घोड़ा रकाब, नौ सत्त सोलां आसण लाया। शब्द सोटी दए अज़ाब, मनमुख जीवां दए सज़ाया। वेख वखाणे शाह नवाब, जगत अहिबाब इक्क अख्वाया। नाम सितार वजाए रबाब, सारंगी सारंगा रिहा हिलाया। ना कोई खाए भुन्न कबाब, मदिरा मास ना मुख लगाया। किसे हथ्थ ना आए हयात आब, मौलाना आज़ाद रिहा समझाया। पंडत नेहरू वेख हिसाब, पंडत पांधे संग रलाया। इन्द्र प्रसाद कवण खिताब, कवण सीस ताज टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सोए रिहा जगत उठाया। सैनापति तेज कटार, प्रभ साचे हथ्थ उठाया। कलिजुग अन्तिम लए अवतार, शब्द घोड़े तंग कसाईआ। पंचम अस्सू आया दिल्ली दरबार, पीले बस्त्र तन छुहाईआ। सम्मत चौदां करया ख़बरदार, भुल्ल रहे ना राईआ। देस परदेसा नाता तुट्टे मीत मुरार, हरि बिन संग ना कोए निभाईआ। कलिजुग माया भट्ठ तपे अंग्यिार, प्रभ साचा रिहा तपाईआ। इक्की जेठ वेख विचार, त्रैगुण माया लम्बू लाईआ। पंज तत्त होए ख्वार, चारों कुन्ट जगत वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम लिख्या लेख दर पुजाईआ। पंचम लेखा अन्तिम आउणा, घर मन्दिर हरि विचारना। साची सेज ना मिले सौणा, प्रभ साचा मन विसारना। कलिजुग खेल हरि कल वरताउणा, ना कोई दीसे होर सहारना। सम्मत चौदां चौदां लोक हिलाउणा, गढ़ तोड़ किला हँकारना। लिख्या लेख पूर कराउणा, आप आपणा काज संवारना। भरम भुलेखा दूर कराउणा, जो आए दर द्वारना। धारी केस ना संग निभाउणा, मूंड मुंडाए ना मुख भवावना। वरन बरन प्रभ मेट मिटाउणा, एका राग अपारना। सोहँ साचा जाप जपाउणा, सति पुरख निरँजण गुरमुखां उत्तों करे सलवारना। एका डंका राउ रंक वजाउणा, माया शंका सर्ब निवारना। सम्मत पन्दरां पन्दरां कत्तक लंका गढ़ सपूता रावणा, रामा दुःख निवारना। शाह भबीखन संग रलाउणा, लहिणा देणा कर्ज उतारना। अन्त द्वारे साचे आउणा, प्रभ साचे काज संवारना। पारब्रह्म अबिनाशी करता देस माझे पाउणा, जोती जामा भेख शब्द अधारना। अलख अगोचर अगम्म अथाह एका धाम सुहाउणा, दिल्ली दर सच्चे दरबारना। नौ खण्ड पृथ्वी मथ वखाउणा,

एका मारे नाम मारना। साढे तिन्न हथ्थ सीआं वंड वंडाउणा, मानस देही काज संवारना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग साची बीस बीसे बन्ने धारना।

✻ २० जेठ २०१४ बिक्रमी सोहण सिघ दे गृह पिण्ड मुंडी जमाल ज़िला फिरोज़पुर ✻

पंचम जेठ खोज ब्रह्मण्ड, जोती वंड वंडाया। वेख वखाणे जेरज अंड, उत्भज सेत्ज भेव खुल्हाया। आपे सुत्ता दे कर कंड, पुरख अबिनाशी दिस ना आया। नौ खण्ड पृथ्वी खण्ड खण्ड, शब्द खण्डा रिहा वखाया। त्रैगुण माया दुहागण होवे रंड, ब्रह्मा रोवे दए दुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,, पंचम जेठा मोख दवाया। पंचम जेठा दो जहानां, जगत निशाना रिहा वखाईआ। खेले खेल श्री भगवाना, हरि भगवन रूप वटाईआ। ना कोई जाणे जीव नादाना, ज्ञान ध्यान भेव ना पाईआ। पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराणां, अञ्जील कुरानां दिस ना आईआ। खाणी बाणी होए हैराना, ग्रन्थी पन्थी बैठे मुख छुपाईआ। एका चल्ले तीर निशाना, शिव शंकर मुख भवाईआ। शिव शंकर वेखे मार ध्याना, प्रभ चरन ध्यान लगाईआ। पारब्रह्म प्रभ जाणी जाणा, लोआं पुरीआं खोज खुजाईआ। आप उपाए आप मिटाए, आपे खेले खेल जहानां, आप आपणी बणत बणाईआ। कलिजुग तेरा अन्त निशाना, हरि एका एक वेख वखाईआ। त्रैगुण माया बद्धा गाना, लक्ख चुरासी बणत बणाईआ। पंचम तत्त दर कर परवाना, मन मति बुध संग रलाईआ। अट्ठ तत्त कलि चतर सुजाना, गोबिन्द भेव ना राईआ। गोबिन्द हरि हरि गुण निधाना, निरगुण रूप समाईआ। सरगुण वेखे मार ध्याना, चतुर्भुज अख्वाईआ। लोआं पुरीआं इक्क बिबाना, मात पताल आकाश रिहा चढ़ाईआ। जोद्धा सूर बली बलवाना, एका खण्डा रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी कल वरताईआ। पंचम जेठा जगत निधान, गोबिन्द भेव ना राया। पारब्रह्म खेल महान, जुग जुग करदा आया। कलिजुग वेखे मार ध्यान, दर दरवेशा भेख वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत जुगत जग आपणे हथ्थ रखाया। आपणे हथ्थ हरि वड्याई, एका एक रखाईआ। सृष्ट सबाई आप उपाई, आपे रुत्त मिटाईआ। सूरज चन्न रवि ससि देण दुहाई, दर द्वार रहे कुरलाईआ। करोड़ तेतीसा रोवे मारे धाईं, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सुरपति राजा इन्द गल विच पाए बाहीं, होणी अन्त जुदाईआ। शिव शंकर उठाए थाउँ थाँईं, प्रभ साचे सेवा लाईआ। ब्रह्मा वेखे चाँईं चाँईं, कलिजुग रैण अन्धेरी छाईआ। लक्ख चुरासी रहिणी नाहीं, खाणी बाणी मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोत निरँजण आप जगाईआ। आदि

निरँजण जोत प्रकाशा, अकल कला भरपूरा। आदि अन्त ना कदे विनाशा, आपे नेड़े आपे दूरा। हर घट अन्दर करे वासा, दीपक जोती बख्शे नूरा। आपे देवे पवण स्वासा, धुन अनादी शब्द तूरा। खेले खेल पृथ्वी आकाशा, जन भगतां सद हाज़र हज़ूरा। साचे मण्डल पावे रासा, दिस ना आए मूर्ख मूढ़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया तेरा वर, कलिजुग अन्त कराए पूरा। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, त्रैगुण भेंट चढ़ाईआ। आपे बख्शणहारा दात, आप आपणी कल वरताईआ। आपे होए सांतक सांत, सति सरूप समाईआ। राजस तामस बन्ने नात, निज घर वेख वखाईआ। आपे बैठा इक्क इकांत, आपणी रचना आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग जुग वेखे मार झात, आप आपणा पड़दा लाहीआ। हरिजन मेला कमलापात, नेत्र नैणा दरस दखाईआ। सर्बकला आपे समराथ, अकल कल अख्वाईआ। हरिजन रक्खे दे कर हाथ, त्रैगुण तत्त समाईआ। सेवक सेवा त्रैलोकी नाथ, त्रैगुण आपे लाईआ। आदि जुगादी अकथना अकाथ, कथ ना सके जीव लोकाईआ। आप चलाए आपणा राथ, बणया रहे शब्द रथवाहीआ। भगत सुहेला सगला साथ, आप आपणा संग निभाईआ। कलिजुग लहिण देण चुका सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथ, एका वंडण वंड वंडाईआ। लेखा चुक्के नौ नौ हाथ, सिद्ध चुरासी मुख भवाईआ। ना कोई मेख लगाए मस्तक माथ, जूठी झूठी रेख मिटाईआ। माण मोह विकार हँकारा विकारा ना मारे ठाठ, कलिजुग काया संग रुढ़ाईआ। लेखा चुक्के अट्ठ सट्ठ ताट, तीर्थ रहिण ना पाईआ। त्रैगुण माया तेरा इक्क माठ, प्रभ साचा रिहा बणाईआ। मन्दिर मण्डल मण्डप जाणे ढाठ, ना होवे कोई सहाईआ। पंज पंझी कर इकाठ, त्रै त्रै वेख वखाईआ। जोत निरँजण नठ्ठ नाठ, एका रही हवन कराईआ। लक्कड़ी पाए हाडी तिन्न सौ साठ, जोती लम्बू लाईआ। लक्ख चुरासी होई भाठ, ख़ाकी ख़ाक मिलाईआ। आपे गेड़नहारा उलटी लाठ, धरत मात दए दुहाईआ। हरिजन मेला चरन द्वारे नठ्ठ नाठ, प्रभ एका राह वखाईआ। पल्ले बन्ने नाम गाठ, ठग्ग चोर यार लुट्ट कोई ना जाईआ। हरिजन साचे शब्द इकाठ, गुर शब्दी मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण तेरा वेख दर, कलिजुग अन्तिम जोत जगाईआ। त्रैगुण तेरा दर दरवाज़ा, लोक तिन्न विचारया। प्रगट होए ग़रीब निवाजा, गिण गिण लेख चुका रिहा। आप आपणा साजन साजा, साजणहार आप अख्वा रिहा। आप रचाया कलिजुग काजा, साचा मेल मिला रिहा। जोत निरँजण मंगे दाजा, आदि पुरख अबिनाशी करता झोली पा रिहा। त्रैगुण माया तेरा मात जहाज़ा, पंज तत्त चला रिहा। वेले अन्तिम कोए ना रक्खे लाजा, ब्रह्मा मुख भवा रिहा। अकाल अकाला एका गाजा, एक कल वरता रिहा। दो जहानी राजन राजा, शाह सुल्तान भेव खुल्ला रिहा। धुरदरगाही आया भाजा, लोकमाती भेख वटा रिहा। शब्द घोड़ा अस्त्र शस्त्र

ताजा, बस्त्र पीला तन सजा ल्या। साचा तोड़ा नाम बाजा, प्रेम उंगली आप टिका रिहा। भगत सुहेला रक्खे लाजा, नित नवित्ता खेल खिला रिहा। प्रगट होए देस माझा, पुरी घनक धाम सुहा ल्या। करे खेल कल कि आजा, सम्मत चौदां संग निभा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द चेला इक्क दर, हरि साची सेवा ला रिहा। त्रैगुण माया तेरा रूप, दिस किसे ना आया। किसे हथ्थ ना आए चारे कूट, दहि दिशा वेख वखाया। लोआं पुरीआं इक्क हुलारा रिहा झूट, प्रभ साचा रिहा झुलाया। लक्ख चुरासी लाया बूट, अमृत आत्म पाणी पाया। पंज तत्त विकारा गया रूठ, खाली ठूठ हथ्थ रखाया। कलिजुग मेला जूठ झूठ, मनमति संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण रूप सरगुण धारा, शब्द पार कराया। निरगुण रूप शब्द धारा, सरगुण विच समाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, निहकलंक नाउँ रखाईआ। चारों कुन्ट हाहाकारा, जीव जन्त दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप अख्वाईआ। हरि शब्द भेव अथाह, भेव कोई ना पांयदा। हरि दाता बेपरवाह, आपे वेख वखांयदा। सृष्ट सबाई बण मलाह, एका बेड़ा आप चलांयदा। जन भगतां दस्से साचा राह, नगर खेड़ा इक्क सुहांयदा। सचखण्ड दुआरा सच्चा थाँ, घर चौथे मेल मिलांयदा। गुर शब्दी पकड़े बांह, सुरत सवाणी संग रलांयदा। इक्क जपाए आपणा नाँ, जुग जुग आप जपांयदा। आपे पिता आपे माँ, पूत सपूता आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग काया कूड़ा रूप अन्तिम मेट मिटांयदा। शब्द गुरदेव साजण मीत, हरि साचे आप उपनया। हर घट परखणहारा नीत, वेख वखाणे काया छप्पर छन्नया। बैठा रहे अतीत, दिस ना आए मनमुख अन्नयां। हरिजन काया सीतल सीत, दूई द्वैती भाण्डा भन्नया। मिले मेल प्रभ साचा मीत, जोत निरँजण चाढ़े चन्नया। इक्क सुणाए सुहागी गीत, देवे नाम सच्चा धन धनया। अट्ठे पहर वसे चीत, हरि हरि भाणा जिस जन मन्नया। आपे जाणे हस्त कीट, राउ रंक राज राजाना साह सुल्तानां देवे डन्नया। लक्ख चुरासी कौड़ा रीठ, गढ़ हँकारी भाण्डा भन्नया। गुरमुख मेला इक्क अनडीठ, मिले मेल साचे तनया। त्रैगुण माया पीसण रिहा पीठ, पंज तत्त विकारा पूत सपूता एका जनया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग बेड़ा आपे बन्नया। बेड़ा बन्नणहार दातारा, एका एक अख्वांयदा। जुग जुग लए मात अवतारा, आपणी बणत बणांयदा। साध सन्त दरस पुकारा, भेखी भेख वटांयदा। लक्ख चुरासी हाहाकारा, नैण लोचन नेत्र पेखी माया पड़दा मोह चुकांयदा। आपे लिखणहारा लेखी, लेखा लिखणहार आप अख्वांयदा। आपे जाणे धारी केसी, मूंड मुंडाए आप अख्वांयदा। आपे दाता जोद्धा दस दस्मेशी, गोबिन्द नाउँ धरांयदा। सेवा लाए

७३७
०६

ब्रह्मा विष्न महेष गणेशी, दर दरवेशी आप अख्वांयदा। सति पुरख निरँजण नर नरेशी, निरगुण रूप समांयदा। कलिजुग तेरी कल अन्तिम वेखी, हरि काला रूप वटांयदा। धुर मस्तक लग्गी मात मेखी, दूसर कोई ना वेख वखांयदा। मीत मुरारा मुल्ला शेख़ी, पीर दस्तगीर संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका अंक वखांयदा। एका एका एकँकारा, एका रूप समाया। पारब्रह्म प्रभ भेव अपारा, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाया। खेले खेल विच संसारा, खेलणहार आप अख्वाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, निहकलंका नाउँ रखाया। गुर गोबिन्दा कर प्यारा, आपणे अंग लगाया। शब्द खण्डा तेज कटारा, तन गात्रे रिहा लटकाया। दो जहानी अद्धविचकारा, शब्द सिँघासण डेरा लाया। लक्ख चुरासी पावे सारा, निरगुण सरगुण खेल खलाया। आपे वेखे बंक दुआरा, बंक द्वारी आप हो आया। जोत निरँजण कर उज्यारा, दीपक जोती इक्क जगाया। सोहँ शब्द जै जै जैकारा, घर चौथा वेख वखाया। चौथा पद हरि निरँकारा, आपणे हथ्थ रखाया। गुरमुख विरला पावे सारा, जिस जन आपणी दया कमाया। आपे मेले मेलणहारा, विछड़ कदे ना जाया। गुर चेले सोहण इक्क दुआरा, घर एका धाम सुहाया। पारब्रह्म प्रभ भगत वछल गिरधारा, रूप अनूपा शाहो भूपा भेखाधारी भेख वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण सरगुण मेल कर, साचा धाम सुहाया। निरगुण सरगुण साचा मेला, एका धाम सुहंदड़ा। आपे गुरू गुरु गुर चेला, आपे जोत जगन्दड़ा। आपे होया सज्जण सुहेला, आपे मेल विछंदड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, त्रैगुण माया तेरा खेल आपे आप वरतन्दड़ा। त्रैगुण माया तेरा मेला, पंज तत्त कराया। पुरख अबिनाशी अचरज खेल आपे खेला, ब्रह्मा सेवा लाया। विष्नूं वंसी वसे इकेला, बंस सरबंसा वेख वखाया। आदि निरँजण चाढ़े तेला, जोत निरँजण सेव कमाया। पंचम मिल मिल गायण पायण वेला, साची सखीआं मंगल गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण मेला इक्क दर, सरगुण भेव खुल्हाया। निरगुण मेला सच सुल्तान, एका एक अख्वांयदा। प्रगट होए दो जहान, जोती जामा भेख वटांयदा। शब्द खण्डा तीर कमान, रसना चिल्ले आप चढ़ांयदा। चारे कुन्टां वेखे मार ध्यान, दहि दिशा फोल फुलांयदा। लोआं पुरीआं पावे एका आन, ब्रह्मा विष्नूं देवत सुर शिव शंकर हुक्म जणांयदा। लोकमात मार झात इक्क इकांत, वेखे परखे मिट्टे कौड़ा फोल फुलांयदा। लक्ख चुरासी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी बणत आप बणांयदा। आपे दर बण भिखारी, मंगे मंग अपार। लेखा लिखणहार लिखारी, आदि अन्ता एकँकार। जीव जन्त हरि जोत अधारी, लक्ख चुरासी खेल अपार। जन्मे मरे मरे मर जन्मे वारो

वारी, बिन गुर पूरे कोई ना लावे पार। साध संगत सद सद सद बलिहारी, रसना गाए गुण हरि करतार। नेत्र पेखत उतरे पारी, जो जन सोहे बंक द्वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूर्ब लहिणा पूर्ब कर्मा रिहा विचार। पूर्ब जन्मा जगत जग माया, सुध बुध ना राई। बंन खण्ड तन डेरा लाया, बैठा मुख छुपाई। सन्तन चेरा दर द्वारे आया, नेत्र नैण दिस ना पाई। कुकर्मी आपणा कर्म कमाया, डस्स डस्सणी डंक चलाई। रसना बोल जन बचन सुणाया, तन पीड़ा रिहा सताई। बिच्छू जन्म विच बनवास रखाया, भेव ना आया राई। जीव जन्त जगत नादाना, आत्म ब्रह्म ना कोई जणाई। माया ममता बोझ हँकारा बद्धा गाना, जूठ झूठ मुख रखाई। हरि हरि हरि नाउँ ना किसे पछाना, मानस जन्मा गए रुलाई। मिल्या मेल ना गुण निधाना, आवण जावण ना दया कमाई। गुर सतिगुर ना किसे पछाना, भरमे भुल्ली भरम लोकाई। आत्मक धुन नाद ना कोए वजाना, अनहद राग ना कोए अलाई। शब्द सेज ना कोई हंढाना, मिले मेल ना साचे माही। रोग सोग चिन्ता जगत मिटाना, दिवस रैण रही सताई। गुरमुख विरले बख्शे चरन ध्याना, जिस जन आपणी दया कमाई। देवे नाम धुर फ़रमाणा, वेद कतेबा दिस ना आई। आपे होया जाणी जाना, जानणहार आप अख्वाई। एका घर वखाए पद निरबाना, अमरापद समाई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साजन साचे मीता, आपे रिहा उठाई।

७३६
०६

७३६
०६

सतिगुर शब्द दयाल, दीन दयालया। सतिगुर शब्द अकाल, जोत अकालया। सतिगुर शब्द रखवाल, जुग जुग आप अख्वा ल्या। सतिगुर शब्द प्रितपाल, प्रितपालक दो जहानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि शब्द करे दर परवानया। शब्द मिलावा दो जहान, हरि साचा आप कराईआ। आपे वेखे भूमिका अस्थान, मण्डल मण्डप आप सुहाईआ। शब्द सिँघासण सच राजान, एका आसण रिहा सजाईआ। तख्त ताज शाहो शाबास, आप आपणा रिहा सुहाईआ। आदि शक्त जोत अबिनाश, करता पुरख अख्वाईआ। वेख वखाणे पृथ्वी आकाश, गगन पतालां वेख वखाईआ। आपे होया शाहो शाबाश, रंक राजानां विच समाईआ। भगत जनां हरि दासी दास, सेवक सेवा रिहा कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क सुहाईआ। साचा घर बंक दुआरा, एका एक वसांयदा। जोत सरूपी कर आकारा, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। एका शब्द सच्ची धुन्कारा, एका ताल वजांयदा। आपे सुणे सुणाए सुणनेहारा, दूसर कोए ना संग रखांयदा। पवण उनन्जा कर प्यारा, स्वास स्वासी विच समांयदा। आपे वसया हरि हरि बाहरा, हर

घट वेख वखांयदा। काया मन्दिर चार दुआरा, सच महल्ल अटल इक्क रखांयदा। नौ द्वारे खोल्ह किवाड़ा, लक्ख चुरासी वेख वखांयदा। नाल रलाए पंचम धाड़ा, पंचम मोह वधांयदा। आपे वेखे विकार हँकार अखाड़ा, साचा जोड़ जुड़ांयदा। गुरमुख विरला साचा लाड़ा, प्रभ चरन ओट रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचा इक्क महल्ला उच्च अटला आप सुहांयदा। उच्च महल्ला हरि साचा इक्क सुहाईआ। जोत निरँजण कर उज्यारी, दीपक रिहा जगाईआ। दस्म द्वारी खोल्ह किवाड़ी, आपणी बूझ बुझाईआ। आपे होया पिच्छे अगाड़ी, डूँघी कवरी पार कराईआ। नेड़ ना आए मौत लाड़ी, राए धर्म बैठा मुख छुपाईआ। लेखे लाए चरन छुहाई दाढ़ी, जो जन दर अग्गे बैठे सीस झुकाईआ। होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, डूँघी कन्दर लए तराईआ। अन्तिम मेला सतारां हाढ़ी, गुर पूरा मेल मिलाईआ। मनमुख जीवां अग्न लगाए बहत्तर नाड़ी, तन बस्त्र आप जलाईआ। लुकया रहिण ना देवे कोई झाड़ी, नौ खण्ड पृथ्वी फोल फुलाईआ। त्रैगुण माया कढ्ढे हाढ़ी, वेले अन्त ना कोई सहाईआ। आप चबाए आपणी दाढ़ीं, सम्मत चौदां वेख वखाईआ। धरत मात तेरी इक्क अखाड़ी, सत्तां दीपां रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा अन्तिम घर, आप उसारे आपे दए मिटाईआ। त्रैगुण माया तत्त विरोल, आपणी कल वरतांयदा। लक्ख चुरासी पड़दा फोल, पंचम वेख वखांयदा। नाम वस्त ना किसे कोल, पूरा तोल ना कोई तुलांयदा। जूठा झूठा करया कौल, साचा वणज ना कोई करांयदा। कलिजुग माया उठ सुत्ती अनभोल, हरि साचा आप जगांयदा। ढोल मृदंगा वज्जे एका ढोल, हरि साचा आप सुणांयदा। कवण वस्त तेरे कोल, हरि ब्रह्मे पुच्छ पुछांयदा। सोहँ कंडे तोले साचा तोल, नानक तोला इक्क अख्वांयदा। आपे वसया काया चोल, आपे जोती जोत समांयदा। निशअक्खर वक्खर आपे बोल, शब्द अनादी आप जणांयदा। कलिजुग माया तेरा खेल होल, अन्तिम एका मद्दु तपांयदा। थिर घर वासी बैठ अडोल, आपणी खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका एक एक अख्वांयदा। त्रैगुण माया तेरा रंग, दिस किसे ना आया। जीव जन्त साध सन्त होए नंग, नाम हिस्सा ना किसे वंडाया। जूठ झूठ वहे धारा गंग, सच सरोवर ना कोई इशनान कराया। मानस जन्म ना होया भंग, गुर पूरा नज़र ना आया। काया माटी काची वंग, थिर रहिण ना पाया। माया ममता मारे डंग, आप आपणा अंग रखाया। गुरमुख विरला नाम वस्त दर लए मंग, आत्म झोली लए भराया। सदा सुहेला अंग संग, विछड़ कदे ना जाया। चिट्टे अस्व कसया तंग, नीला नीली धारों पार कराया। नाम वजाए इक्क मृदंग, लोआं पुरीआं रिहा सुणाया। धरत मात मंगे मंग, प्रभ अग्गे झोली डाहया। दर दुआरा बैठी लँघ, नेत्र नैण रहे शरमाया। कलिजुग काया लग्गा अंग,

जूठा झूठा दाग़ लवाया। माया डोरी चढ़ी पतंग, आकाश आकाशां वेख वखाया। जगत विकारा होया संग, मनमती मता पकाया। कोई ना चाढ़े साचा रंग, रंगणहारा दिस ना आया। गुरमुख विरला सन्त सुहेला इक्क इकेला पुरख अबिनाशी शब्द रंगीले बैठ पलँघ, दोए जोड़ बैठा सीस झुकाया। अमृत आत्म धारा सच सरोवर इक्क तरंग, गुर पूरा रिहा उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भेखाधारी भेख वटाया। भेखाधारी शब्दी बाणा, एका एक रखांयदा। किसे हथ्थ ना आए राजा राणा, शाह सुल्तानां भेव ना पांयदा। ना कोई जाणे चतर सुघड़ स्याना, ज्ञानी ध्यानी ना वेख वखांयदा। लेखा लिख ना सके वेद पुराणा, अञ्जील कुराना हिसाब मुकांयदा। खाणी बाणी होए हैराना, हरि का भेव अभेद कोई ना पांयदा। पढ़ पढ़ थक्के जीव जहाना, जोग जुगीशर जगत कमांयदा। तपी तपीशर वेखण मार ध्याना, मुनी मुनीशर ना मोन खुल्ांयदा। खेले खेल ईशर जगदीशर, ईश्वर रूप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा रूप वटांयदा। हरि का रूप शब्द प्रमुख, जुग जुग जगत जणाईआ। सन्त सुहेले कर कर वक्ख, प्रभ आपणी बूझ बुझाईआ। दरस दिखाए अलखणा अलक्ख, एका अलख जगाईआ। हरिजन रक्खे दे कर हथ्थ, समरथ हथ्थ वड्याईआ। सृष्ट सबाई दए मथ, नाम नेत्रा एका पाईआ। मानुख मानस सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, आपणी वंड वंडाईआ। मनमुख जीवां पाए नत्थ, डोरी आपणे हथ्थ रखाईआ। धरत मात तेरी गोदी सत्थ, लक्ख चुरासी रिहा सवाईआ। जन हरि हरिजन साचे सगल वसूरे गए लथ्थ, आत्म दरसी हरि दर्शन नेत्र लोचन पाईआ। नाम चलाए साचा रथ, रथ रथवाही इक्क अख्वाईआ। सतिजुग तेरी साची गथ, सोहँ धारा रिहा वहाईआ। धुर मस्तक लेख लिखणहारा मथ, अन्तिम मेल मिलाईआ। जुग जुग महिंमा अकथना अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। सर्बकल प्रभ आप समरथ, जन भगतन दए वड्याईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ सोहण रिहा तराईआ।

७४१
०६

✲ २१ जेठ २०१४ बिक्रमी बगीचा सिँघ दे गृह मुंडी जमाल ज़िला फिरोज़पुर ✲

माया ममता मोह जगत जंजाल, जीआं जन्तां रही सताईआ। नाम धन ना दिसे सच्चा नाल, साधां सन्तां घर लड़ाईआ। फ़ल ना दिसे काया डाल, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। दीपक जोती ना जगे मस्तक थाल, गगन मण्डल ना चन्द चढ़ाईआ। मन मती जीव हाल बेहाल, दिवस रैण देण दुहाईआ। वेखे खेल शाह कंगाल, हरि साचा बेपरवाहीआ। वेख विखाणे बिरध

बाल जवान, गऊ ग़रीबां भेव खुल्हाईआ। सर्ब जीआं प्रभ जाणी जाण, जागरत दिशा वेख वखाईआ। हरिजन साचे देवे माण, बाल अञ्जाणे गले लगाईआ। शब्द जणाए धुर फ़रमाण, घर साचे रिहा जणाईआ। आपे होए निमाणया ताण, निताणा आप अख्वाईआ। आप चुकाए जम की कान, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। देवणहारा जिया दान, दाता दानी आप हो जाईआ। गुरमुख विरले दर द्वारे साचा मान, मनमुख बैठे मुख भवाईआ। आपे होया बेपछान, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला इक्क घर, बंक दुआरा वेख वखाईआ। भगत सुहेला साचा मीता, एका एकँकारया। जुग जुग चलाए आपणी रीता, हरिभगतन भरे भण्डारया। एका रंग रंगाए हस्त कीटा, ऊँचां नीचां भेव निवारया। एका नाम जपाए सच अनडीठा, चार वरनां इक्क जणा रिहा। त्रैगुण माया तेरा अंगीठा, शब्द भट्ठा नाम रखा रिहा। त्रैगुण माया कर इक्ट्ठा, इक्क इकल्ला वेख विखा रिहा। दो जहानी फिरदा नट्ठा, आवण जावण खेल खिला रिहा। आप उठाए आपणी गट्ठा, दूसर भार ना कोई वंडा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम जेठा मुख वखा रिहा। पंचम जेठ जगत विहाजी, एका वणज कराया। आप आपणा साजण साजी, अन्तिम आपे मेट मिटाया। लोकमात तेरा साचा हाजी, गुर शब्दी बण बण आया। वेख वखाए मुल्ला काजी, शेख़ मुसायकां रिहा उठाया। चिट्टा अस्व साचा ताजी, सच सिँघासण आसण लाया। नौ खण्ड पृथ्वी मारे आवाज़ी, उच्चे टिल्ले रिहा हिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचे हरिजन साचा मेल मिलाया। साचा मेला शब्द सिँघासण, हरि आपणा आप करांयदा। मिले मेल पुरख अबिनाशण, विछड़ कदे ना जांयदा। नानक गोबिन्द रसन स्वासन, रसना जिह्वा सेवा लांयदा। भए प्रकाश पृथ्वी आकाशन, प्रकाश आकाशां विच समांयदा। भगत जनां हरि दासी दासन, दर द्वारे सेव कमांयदा। जगत विकारा रोग विनासन, सहिँसा चिन्ता मूल चुकांयदा। निज घर आत्म रक्खे वासन, महिंमा अगणत जणांयदा। चले चलाए रसन स्वासन, स्वास स्वासी संग निभांयदा। काया मण्डल पावे रासन, गोपी काहन आप अख्वांयदा। निर्मल जोती कर प्रकाशन, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। पंचम शब्द मेल सर्ब गुणतासन, एका ताल वजांयदा। खेले खेल घनकपुर वासन, काहन घनईआ भेव छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग तेरी साची नईआ, चार वरन कराए भैणा भईआ, एका राह चलांयदा। सतिजुग तेरी साची नईआ, प्रभ साचा आप चलांयदा। गुरमुखां लहिणा देणा चुकईआ, लेखा कोई रहिण ना पांयदा। धर्म राए ना कढ्ढे वहीआ, चित्रगुप्त ना मुख वखांयदा। शरन शरनाई जो जन साची पईआ, सचखण्ड दुआरा इक्क वखांयदा। लोकलाज लोकमात अन्तिम रहीआ, जिस जन आपणी दया कमांयदा। पारब्रह्म ब्रह्म साचा सईआ,

७४२
०६

साचा नायक आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला इक्क घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। साचा घर शब्द भण्डारा, एका एक रखाया। पुरख निरँजण बण वरतारा, लोकमात रिहा वरताया। खेले खेल विच संसारा, कलधारा आप अख्वाया। कलिजुग तेरा कूड़ पसारा, अन्तिम मेटे मेट मिटाया। वेख वखाणे गुर दर मन्दिर मस्जिद गुरुदुआरा, शिवदवाला मट्ठ तीर्थ तट्ट अट्ठ सट्ठ भेव चुकाया। खेल खिलाए वेख वखाए संग मुहम्मद चार यारा, अल्ला राणी कर पछाणी, कलिजुग मेला साचे हाणी, मुख झूठा घूंगट लाहया। खाणी बाणी वेद पुराणी अञ्जील कुरानी, रंग अनरंगा सूरा सरबंगा वेखे वेख वखाया। निर्मल जल नीर धारा गोदावरी गंगा, जटा जूट धारी रिक्खी केस गवर्धन सुत होया नंगा, कोए ना पावे सारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण साचे मीता, मेल मिलाए दर दरबारी। मिल्या मेल आदि निरँजण, साचा वक्त सुहांयदा। नेत्र नैण साचा अंजण, एका नाम पांयदा। चरन धूढ़ कराए साचा मजण, दुरमति मैल गंवांयदा। गढ़ हँकारी भाण्डे भज्जण, शब्द खण्डा तेज कटार साची धार वखांयदा। भगत सुहेला आया पड़दे कज्जण, सच दुशाला उप्पर पांयदा। काल नगारे सिर ते वज्जण, कलिजुग डौरू वांहयदा। धर्म राए दर साचा हज्जण, लक्ख चुरासी हज्ज करांयदा। लाड़ी मौत मंगे दाजन, त्रैगुण माया तन पहनांयदा। आप रचाया तेरा काजन, ब्रह्मा लाड़ा वेख वखांयदा। आपे होया साजी साजन, आप आपणी बणत बणांयदा। आपे होया जगत दुहागण, सुहागी कन्त आप अख्वांयदा। त्रैगुण माया होई वैरागण, बिरहों तीर लगांयदा। लोआं पुरीआं खण्ड ब्रह्मण्ड लग्गी दिसे आगण, अग्नी अग्ग ना कोई बुझांयदा। गुरमुख विरले सोए मात जागण, जिस जन प्रभ साचा आप जगांयदा। आप सुणाए आपणा रागण, राग अनादी इक्क अलांयदा। हँस बणाए फड़ फड़ कागन, सोहँ साची चोग चुगांयदा। माया डस्से ना डस्सणी नागण, तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। सरन सरनाई जो जन लागण, सति सरूप विच समांयदा। चरन धूढ़ कराए साचा माघन, सन्त सुहेला आप हो जांयदा। जुग जुग धोवणहारा दागण, अमृत आत्म धारा निर्मल नीर वहांयदा। गुरमुख नारी कन्त सुहागण, हरि साचा शाहो संग निभांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला इक्क घर, चरन दुआरा इक्क सुहांयदा। चरन दुआरा साचा धाम, हरि साचा आप रखांयदा। पूर कराए हरिजन काम, इच्छया भिच्छया एका पांयदा। कोई ना मंगे दामनी दाम, कामन तृष्ना ना कोई वखांयदा। अमृत आत्म प्याए साचा जाम, दिवस रैण रंग रंगांयदा। मिटे रैण अन्धेरी शाम, अन्ध अज्ञान गंवांयदा। लेखे लग्गे काया माटी चाम, जो जन हरि चरन ध्यान रखांयदा। सच वस्त हरि हरि नामा नाम, नाम अमोलक साचा हीरा एका हट्ट विकांयदा। साचा खेड़ा नगर ग्राम, काया मन्दिर इक्क वखांयदा। जोत सरूप रमईआ राम, दर घर

साचे आसण लांयदा। जन भगतां पूर कराए काम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत भगती मार्ग लांयदा।

✻ २१ जेठ २०१४ बिक्रमी बिशन सिँघ दे गृह पिण्ड कादर वाला ज़िला फिरोज़पुर ✻

गुर चरन द्वार साचा सुख, सांतक सति वरताईआ। दो जहानी उज्जल मुख, इक्क इकांत कराईआ। जगत तृष्ना मेटे भुक्ख, राजस तामस बैठी मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे रिहा जगाईआ। जागण वेला वक्त सुहाए, पारब्रह्म प्रभ करता। सन्त सुहागी मेल मिलाए, काया चोली रंग चढ़ाए इक्क बसन्ता। जीवां जन्तां भेव ना राए, जुग जुग खेले खेल आदिन अन्ता। आपणे भाणे विच समाए, घर साचा धाम सुहंता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी कल वरतंता। वरते कल जगत अन्धेरा, चार कुन्ट रैण अन्धेरी छाईआ। किसे ना दिसे सञ्झ सवेरा, रवि ससि बैठे मुख छुपाईआ। पंचम पंचां लग्गा झेड़ा, तत्त मति लड़ाईआ। बिन गुर पूरे पार लँघावे केहड़ा, मनमति रही कुरलाईआ। सतिगुर साचा बन्नृणहारा बेड़ा, जुग जुग आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। करे कराए सच निबेड़ा, त्रैगुण माया वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी उलटा गेड़ा, आपणी हथ्थीं रिहा दवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन जन हरि साचे मेल मिलाईआ। मिले मेल गुरू गुरदेवा, गोबिन्द रंग समाया। जन्म जन्म जग साची सेवा, प्रभ नैणी दर्शन पाया। मिले मेल प्रभ अलख अभेवा, मेल विछोड़ा प्रभ आपे रिहा कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे साचे रंग रंगाईआ। काया चोली हरि रंग रत्ता, एका रंग मजीठया। वेख वखाए पंचम मीता, दिस ना आए हरि हरि अनडीठया। गुरमुख विरला बीजे नाम वत्ता, हरि शब्द रस रस मीठया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, त्रैगुण माया अन्त तपाए कलिजुग तेरा जगत अंगीठया।

✻ २१ जेठ २०१४ बिक्रमी नाजर सिँघ दे गृह त्रैगुण माया दे अन्त करन दे बारे लिख्त होई पिण्ड नाथे वाल ज़िला फिरोज़पुर ✻

आदि पुरख अबिनाश आप उपाया। आप आपणा कर प्रकाश, विच समाया। आदि अन्त ना होए विनाश, एका एक

एक अख्वाया। आपे खेले खेल सर्ब गुणतास, गुणवन्ता गुण सबाया। साचा मण्डल साची रास, सच दुआरा इक्क सुहाया। आप उपाए दया कमाए पृथ्वी आकाश, आकाश आकाशा बणत बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाया। आप आपणी जोत प्रगटाए, आदि पुरख अकाला। दूसर ना कोई संग रलाए, दीना बंधप दीन दयाला। दर घर ना कोई वखाए, राजन राज ना कोई शाह कंगाला। आप आपणा रंग वटाए, जोती नूर कर उजाला। दाता सूरा सरबंग अख्वाए, आपणी आप करे प्रितपाला। भुक्ख नंग ना कोई दिसाए, खेले खेल निराला। आप आपणा रंग रंगाए, गोबिन्द गुर गोपाला। आप आपणा पलँघ विछाए, हरि आसण बेमिसाला। गुर पीर साध सन्त अवतार ना कोई संग रखाए, अकल कला कल वाला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी सुरत संभाला। आप आपणी जोत जगाए, अकल कला भरपूरा। दूसर ना कोई संग रलाए, ना कोई दिसाए नेड़ दूरा। पृथ्वी आकाश प्रकाश ना कोई वखाए, रवि ससि ना कोई तूरा। ब्रह्मण्ड खण्ड ना वंड वंडाए, जेरज अंड उत्भज सेत्ज ना कोई वखाए रंग गूढ़ा। वैराग त्याग ना कोई जणाए, तृष्ना अग्ग ना कोई बुझाए, ज्ञान ध्यान कोई दिस ना आए, भेव ना पाए मूर्ख मूढ़ा। चतुर्भुज आप अख्वाए, भेव गुझ कोई देवी देव ना पाए, ब्रह्मा सुरपति शिव गणेश विष्नूं हरि सेवा लाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रिहा उपाए। आप आपणा कर पसारा, आपणी कल वरताईआ। जोती नूर कर उज्यारा, घर बैठा आसण लाईआ। जीव जन्त ना कोई अधारा, लक्ख चुरासी दिस ना आईआ। साध सन्त ना कोई अवतारा, गुर पीर ना कोई रखाईआ। मुल्ला क़ाज़ी शेख़ पीर फ़कीर दस्तगीर ना कोई नारी नारा, नर नरायण ना कोई गाईआ। रवि ससि सूरज चन्द ना कोई दिसे मण्डल तारा, धरत धवल ना कोई उपाईआ। लोआं पुरीआं ना कोई पसारा, ब्रह्मा शिव नज़र ना आईआ। राज राजान शाह सुल्तान राउ रंक ना दीसे कोई बंक दुआरा, दर द्वार कोई वेख ना पाईआ। सन्त कन्त भगवन्त जन्त ना मेल भतारा, पवण हुलारा ना कोई वखाईआ। ना कोई शब्द धुन सच्ची धुन्कारा, अनहद राग ना कोई अलाईआ। अवण गवण ना कोई पसारा, ब्रह्मण्ड खण्ड ना कोई वंड वंडाईआ। आप आपणा कर आकारा, पारब्रह्म प्रभ पुरख अपारा, घर एका एक सुहाईआ। आप आपणा कर प्रकाश, अकल कला वरताईआ। आदि अन्त ना होए विनास, भेव कोई ना पाईआ। आप आपणा दासी दास, आप आपणी सेव कमाईआ। ना कोई हड्ड नाड़ी दिसे मास, पंज तत्त ना कोए रखाईआ। पवण ना गाए रसन स्वास, जिह्वा मुख ना कोए हिलाईआ। मात गर्भ ना आए दस दस मास, पिता पूत ना कोई अख्वाईआ। आप आपणे घर रक्खे वास, आप आपणा आसण लाईआ। आपे दाता शाह शाबास, शाह सुल्तान आप अख्वाईआ। थिर

घर वेखे साची रास, दर दुआरा इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि जोती नूर उपाईआ। जोती नूर इक्क इकल्ला, एका एक उपाया। आप वसाया सच महल्ला, दिस किसे ना आया। ना कोई दीसे जल थला, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ बन खण्डा ना डेरा लाया। दिवस रैण ना कोई घड़ी पल्ला, वेला वक्त ना कोई वखाया। ना कोई वेखे दूई द्वैती सल्ला, एका दूजा दूजा एका नज़र ना आया। इक्क वसाया निहचल धाम अटला, हरि थिर घर नाउँ रखाया। आप आपणा दुआरा मल्ला, आप आपणी अलख जगाया। अलक्ख निरँजण भेख वटाया। अगम्म अगोचर ना कोई वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ रखाया। आप आपणा नाउँ रखाए, एका एक अकाला। साचा धाम इक्क सुहाए, आपे होए आप रखवाला। पंखी पंछी कोई दिस ना आए, ना कोई दीसे शाह कंगाला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप बणाए आपणी माला। आपणी जोत आप जगा, आपणी बणत बणाईआ। आपणे भाणे रिहा समा, हरि भाणा भेव ना राईआ। दूसर ना कोई वेख विखा, तीजे ना कोई बणत बणाईआ। चौथे घर ना नाद सुणा, साध सन्त ना वेख वखाईआ। पंचम राग ना कोई अल्ला, खाणी बाणी नज़र ना आईआ। छेवें छप्पर छन्न ना कोई वखा, मन्दिर अन्दर जोत जगाईआ। सत्तवें सति पुरख आप अख्वा, आप आपणा नाउँ रखाईआ। अट्ठ तत्त ना जणेंदी कोई माँ, धरतमात ना खुशी मनाईआ। नौ दर ना बणत बणा, लक्ख चुरासी ना वेख वखाईआ। दस्म द्वारी राह रिहा तका, अद्धविचकारी डेरा लाईआ। पारब्रह्म तेरा साचा थाँ, एका एक अख्वाईआ। आप उपाए आपणा नाँ, आप आपणी इच्छया आपणी झोली पाईआ। जोती नूर जोत जगा, दे मति रिहा समझाईआ। नारी कन्त आप अख्वा, आप आपणी सेज हंढाईआ। पूत सपूता इक्क आपणा, हरि शब्दी नाउँ रखाईआ। हरि जोत बणाए साची माँ, एका तत्त झोली पाईआ। आप आपणी बणत बणा, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। ब्रह्मण्ड विच गया समा, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। दिस ना आए किसे थाँ, हर घट वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाईआ। शब्द सुत सच बलवान, सुणे धुर फ़रमानया। देवणहारा गुण निधान, करे जाण पछानया। हथ्थ फड़ाए इक्क निशान, जोती नूर महानया। इक्क रखाए आपणी आन, एका एक वखानया। एका एक नाउँ वखान, एका एक श्री भगवानया। एका एक देवे माण, एका एक माण निमाणयां। एका एक देवे दान, दाता दानी आप अख्वानया। एका एक जाणी जाण, जानणहार आप पछानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा तत्त देवे वर, दर घर करे परवानया। शब्द सुत सच दुलारा, प्रभ अग्गे सीस झुकांयदा। आप आपणी कर निमस्कारा, एका मंग मंगांयदा। आप आपणा कर पसारा, आपे

वेख वखांयदा। पारब्रह्म करे विचारा, कवण खेल खिलांयदा। सुत शब्द ख़बरदारा, एका नाअरा लांयदा। कवण दर कवण घर लै अवतारा, कवण धाम रहांयदा। पुरख अगम्मा पावे सारा, आप आपणा वेख वखांयदा। इक्क इकल्ला एक एकँकारा, एका रूप समांयदा। आप आपणा कर पसारा, ओंकारा रूप वटांयदा। सो पुरख निरँजण सिरजणहारा, साची कल वरतांयदा। पूत सपूता कर प्यारा, शब्द सुत अलांयदा। लोआं पुरीआं इक्क पसारा, आप आपणी झलक वखांयदा। आपे बख्शे चरन प्यारा, दे मति आप समझांयदा। सच सुच्च जगत वरतारा, हरि गिरधारा आप रखांयदा। एका भरया नाम भण्डारा, भरनहारा आप हो जांयदा। निखुट्ट ना जाए वारो वारा, आदि अन्त एका धार रखांयदा। आपे तोला तोलणहारा, साचा तोल तुलांयदा। आपणा बोला आपे बोलणहारा, हरि शब्दी नाउँ रखांयदा। लोआं पुरीआं कर पसारा, इक्क दुआरा आप रखांयदा। आप आपणा कर उज्यारा, रूप अनूप सति सरूप साची कूट सुहांयदा। जोत निरँजण कर प्यारा, आदि निरँजण दया कमांयदा। आप आपणा कर विहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सुत दुलारा संग रलांयदा। शब्द सुत इक्क ध्यान, इक्क ओट रखाईआ। एका नाम इक्क ज्ञान, एका चोट लगाईआ। एका धर्म इक्क निशान, एका एक वखाईआ। एका राग एका गान, एका कान सुणाईआ। एका दानी एका दान, देवणहार इक्क अख्वाईआ। एका माण एका तान, एका नाम चलाईआ। आप आपणी कर पछान, आपणा नेत्र वेख वखाईआ। आपे मेले आपणा हाण, आप आपणी सेज सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत साचे वर, घर साचे रिहा सुहाईआ। साचे दर कर परवान, एका खुशी मनाईआ। आपे वेखे मार ध्यान, आप आपणी उत्पत रिहा कराईआ। आपे देवणहारा माण, दर दुआरा रिहा सुहाईआ। सचखण्ड इक्क ज्ञान, एका राग अलाईआ। ना कोई पवण ना मसान, ना कोई हवन कराईआ। ना कोई पूजा पाठ ज्ञान ध्यान, खाणी बाणी रसना जिह्वा कोई ना गाईआ। ना कोई पढ़े वेद पुराण, ब्रह्मा मुख ना कोई रखाईआ। ना कोई दीसे अञ्जील कुरान, अल्ला हू नाअरा कोई ना लाईआ। ना कोई दीसे जन्त जहान, जीव जुगत ना कोई रखाईआ। ना कोई भूमिका ना अस्थान, मण्डल मण्डप कोई दिस ना आईआ। ना कोई गोपी ना कोई काहन, ना कोई बंसरी रिहा वजाईआ। ना कोई सीता ना कोई राम, लंका गढ़ ना कोई वखाईआ। नानक गोबिन्द कोए ना नाम, ना कोई बणत बणाईआ। एका एक श्री भगवान, जोती जोत समाईआ। साचा सुत नौजवान, आपणे संग रलाईआ। आप आपणा कर ध्यान, लोआं पुरीआं बणत बणाईआ। पुरख अबिनाशी चतर सुजान, आपणा भेख वटाईआ। आपे खेले खेल महान, आपणा अंग कटाईआ। विष्नूं रूप इक्क निशान, एका एक रखाईआ। आपे वेखे अन्दर मन्दिर मार ध्यान, कवण धाम दुआरा सुहाईआ। जोती

७४७ ०६

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रिहा उपाईआ। आप आपणी मारे झाकी, आपणा खोल्ह द्वारया। ना कोई दीसे बन्दा खाकी, ना कोई महल्ल अटारया। ना कोई दीसे सज्जण साकी, भर प्याला ना कोई पिला रिहा। ना कोई लेखा मंगे बाकी, धर्म राए चित्रगुप्त ना कोई उपा रिहा। ना कोई जाणे भविख्त वाकी, लेखा लेख ना कोई लिखा रिहा। ना कोई अस्त्र शस्त्र घोड़ा राकी, बस्त्र कोई ना तन सजा ल्या। ना कोई चले चाल बांकी, कल्गी तोड़ा ना सीस टिका ल्या। खेल जाणे प्रभ खेलणहारा बांकी, दूसर कोई ना वेख वखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेख घर, घर मन्दिर इक्क सुहा ल्या। आप आपणा आपे वेखे, वेखणहार अख्वाया। ना कोई लिखे लेखे, रेखे ना कोई मिटाया। आपणी जोती आपे भेखे, वेस अनेके रिहा कराया। ना कोई दिसे धारी केसे, ना कोई मूंड मुंडाया। ना कोई शिव शंकर ब्रह्मा विष्न गणेशे, सुरपति राजा इन्द दिस ना आया। ना कोई लोक परलोक देस प्रदेसे, गगन पाताल ना कोई रहाया। ना कोई राज राजान नर नरेशे, शाह सुल्तान ना वेख वखाया। ना कोई काया गोबिन्द दस दस्मेसे, पंज तत्त ना नज़री आया। आदि पुरख सदा अडोल रहे हमेशे, ना मरे ना जाया। आपे जाणे आपणा वेसे, आप आपणा रूप उपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नूर टिकाया। आप आपणा नूर टिकाए, आपणी बणत बणाईआ। कँवली कँवला इक्क उपाए, अमृत मुख चुआईआ। धरत धवल ना कोई दिसाए, आफ ताब ना कोई चढ़ाईआ। शाह नवाब कोई नज़र ना आए, इक्क अहिबाब आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका आब कँवल नाभ बणाए दो आब, साची रचन रचाईआ। आप आपणा नूर उज्यारा, आपे रिहा कराया। कँवल कँवला कर प्यारा, कँवला मुख छुपाया। जुग सताई बन्न्हे धारा, धरनी धरना आप अख्वाया। आपे वेखे पार किनारा, आपे बेड़ा रिहा चलाया। पारब्रह्म प्रभ पुरख अपारा, भेव किसे ना पाया। पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ी कारा, आप आपणी करदा आया। नाभी कँवला कर उज्यारा, ब्रह्मा सुत उपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी अचुत बुत्त आपणे रूप समाया। आप आपणा कर सहारा, आपणा भेख वटाया। पारब्रह्म प्रभ खेल न्यारा, खेलणहार अख्वाया। मंगे मंग बण भिखारा, दर दरवेश अख्वाया। लिखे लेख लिखणहारा, लेखा आपणे हथ्थ रखाया। वेख विखाए वेखणहारा, दिस किसे ना आया। रूप अनूपा हरि गिरधारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाया। आप आपणा कर आकारा, आपणी कल वरताईआ। आप आपणा कर विचारा, आपणी बूझ बुझाईआ। त्रैगुण माया कर पसारा, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। राजस तामस सति विचारा, सांतक सहिज सुखदाईआ। ब्रह्मा मेला इक्क दुआरा, एका झोली पाईआ। शब्द जणाए अपर अपारा, आत्मक

धुन उपजाईआ। सुणे सुणाए सुणनेहारा, एका नाद रखाईआ। ब्रह्मा ब्रह्म करे विचारा, पारब्रह्म भेव ना राईआ। आप आपणा ल्या विचारा, ना आपणी बूझ बुझाईआ। प्रभ अबिनाशी किरपा धारा, देवे शब्द जणाईआ। सुणया शब्द अगम्म अपारा, ब्रह्मा वेख वखाईआ। चरन कँवल प्रभ इक्क ध्याना, इक्क आवाज़ लगाईआ। इक्क शब्द इक्क ज्ञाना, आपणा आप सुणाईआ। मुख प्रमुख विच जहानां, उत्पत आप कराईआ। आपे देवे दानी दाना, इक्क भण्डार वखाईआ। आप कराए आपणी पछाना, आपणा मुख वखाईआ। चारे मुख होए हैराना, प्रभ नेत्र दर्शन पाईआ। अट्ठे नेत्र ब्रह्मे शरमाना, नर हरि ना वेख वखाईआ। प्रकाश प्रकाश कोटन भाना, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। निवास निवासा सच अस्थाना, ब्रह्मे धाम भूमिका सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे नाम वड्डी वड्याईआ। ब्रह्मे दर घर साचा पाया, एका नाम अनमुल्ला। प्रभ अबिनाशी रिहा जणाया, दर दुआरा एका खुल्ल्हा। एका रंगण रंग रंगाया, इक्क रखाए आपणी कुला। आपणे तन्दन तन्द बंन्हाया, आदि अन्त सदा अतुल्ला। आपणे अंगण आप रखाया, आपे फलया आपे फुल्ला। नाम मृदंगन इक्क वजाया, इक्क सुणाया साचा ढोला। हथ्थीं कंगण इक्क पहनाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भाग लगाया ब्रह्मा चोला। ब्रह्मे चोली रंग करतार, आपणी कल वरताईआ। हौली हौली शब्द धुन्कार, आपणी रिहा सुणाईआ। नाभी कँवली अमृत धार, निझर झिरना रिहा झिराईआ। लक्ख चुरासी कर त्यार, आप आपणी सेवा लाईआ। विष्नूं मेला मीत मुरार, साचा संग निभाईआ। शिव शंकर बणे दर भिखार, प्रभ साचा संग निभाईआ। तिन्नां मेला इक्क द्वार, दर दुआरा इक्क सुहाईआ। आप आपणी किरपा धार, आपणे रूप समाईआ। निरगुण सरगुण खेल संसार, आपणी रचन रचाईआ। त्रैगुण माया कर त्यार, प्रभ तिन्नां मुख लगाईआ। आपणी हथ्थीं गल पाया हार, ना कोई सके होर लुहाईआ। छत्ती जुग वेख विचार, फूलन बरखा एका लाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव करन निमस्कार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। आपे बैठ सच्ची सरकार, सच सिँघासण रिहा बणाईआ। पंज तत्त तत्त कर त्यार, एका तत्त रखाईआ। हड्ड मास नाड़ी रत्त बख्शे साची धार, आप आपणा रंग रंगाईआ। भगवन्त भगत बण भिखार, देवणहार आप अख्वाईआ। सृष्ट सबाई कर त्यार, ब्रह्मे तेरी सेवा लाईआ। विष्नूं वंसा रहिणा ख़बरदार, बाल अञ्जाणे जोत जगाईआ। शिव शंकर मारी एका मार, आपणी गोदी लए उठाईआ। तिन्नां मेला इक्क द्वार, प्रभ साचा रिहा समझाईआ। आपे वसया सभ तों बाहर, घर आपणा इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया दित्ता वर, त्रै त्रै वेख वखाईआ। त्रैगुण माया कर परवान, ब्रह्मा सीस झुकांयदा। विष्नूं वेखे मार ध्यान, प्रभ साचा खुशी मनांयदा। शिव शंकर बैठा हो हैरान, भेव कोई ना पांयदा। पुरख अबिनाशी खोल्ही

इक्क दुकान, तिन्ने सेवा लांयदा। आदि शक्त बणी मात प्रधान, जगत मात आप हो जांयदा। आपे देवे साचा दान, जोती नूर इक्क उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया तेरा घर आपे आप अपणांयदा। त्रैगुण माया तेरा घर, प्रभ साचे आप सुहाया। आपे देवणहारा वर, आपे लए उपाया। आपणी किरपा आपे कर, करन करावणहार अख्वाया। आपणा भाणा आपे जर, आपणे भाणे सद समाया। इक्क इकल्ला हरी हर, निरगुण रूप अख्वाया। त्रैगुण माया वेस कर, विष्नूं वंस उपाया। ब्रह्मा दर दरवेस कर, दर दरबान लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल खिलाया। ब्रह्मा शिव करन सलाह, विष्नूं संग रलाया। आप आपणा मता पका, आपणा अंग उपाया। पंज तत्त एका नाँ, एका थाँ समाया। अप तेज वाए पृथ्वी आकाश, वास निवासा विच रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगत आपणे हथ्थ रखाया। पंज तत्त कर त्यारी, तिन्नां वेख वखानया। बुत्त सुत अपर अपारी, वेखण वेख वखानया। वज्जे धुन नाद धुन्कारी, ना कोई बोल बुलानया। तुट्टा माण गढ़ हँकारी, होए बाल अंञानया। नेत्र वेखे खोल्ह उग्घाड़ी, चारों कुन्ट सुंञ मसाणया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर एका एक पछानया। पंज तत्त कर त्यारी, ब्रह्मा वेख वखांयदा। सरगुण रूप पसर पसारी, निरगुण कोए ना वेख वखांयदा। ना कोई बोले शब्द जैकारी, ना कोई चाल चलांयदा। विष्नूं वेखे चार दिवारी, चारे कुन्टां ना कोई नज़री आंयदा। दोवें रोवण मारन धाहीं, पूरन इच्छया ना कोई करांयदा। पारब्रह्म दर कर निमस्कारी, दोए जोड़ चरन सीस झुकांयदा। बख्शी बख्शणहार वस्त अपारी, ब्रह्मा अग्गे झोली डांयदा। प्रभ अबिनाशी किरपा धारी, आदि निरँजण आदि शक्त आपणी अंश उपांयदा। जोत निरँजण कर त्यारी, ब्रह्मे झोली पांयदा। लक्ख चुरासी दए अधारी, आप आपणे विच समांयदा। मन मति बुध तेरी सिक्दारी, ब्रह्मे हथ्थ फड़ांयदा। जोती शब्दी खेल अपारी, आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा आपणा वर, घर आपणा इक्क सुहांयदा। ब्रह्मे वर साचा पाया, जीव जन्त उपांयदा। थान थनंतर कोई दिस ना आया, कवण धाम टिकांयदा। गगन गगनंतर वेख वखाया, जोत बसन्तर इक्क डरांयदा। प्रभ अबिनाशी जाणी अन्तर, अन्तर ध्यान लगांयदा। ब्रह्मे फुरना साचा मन्त्र, हरि पूरन पूर करांयदा। धरत धवल धाम सुहंतर, जल बिम्ब आप टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी रचन रचांयदा। धरत धवल हरि उपाई, ब्रह्मे मिली वधाईआ। जीव जन्त रिहा उपाई, द्वार बंका रिहा सुहाईआ। आपे लेखा रिहा लिखाई, ब्रह्मे सुत शब्द जणाई, दिवस रैण रिहा सुणाईआ। आपणी वंड आप वंडाई, शब्द खेल ब्रह्मण्ड चलाई, जेरज अंड रिहा उपाई, उत्भज सेत्ज संग मिलाई, चारे कूटां वेख

वखाईआ। मात पाताल आकाश सुहाई, लोक परलोक रिहा उपाई, आप आपणी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी इच्छया आपे पूर कराईआ। आपणी इच्छया ब्रह्मे भिच्छया, एका एक पाईआ। विष्नूं वंसी करे रच्छया, प्रभ साचे सेवा लाईआ। लोकमात किसे ना दिस्सया, वेखणहार हरि हर थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका लेखा रिहा लिखाईआ। ब्रह्मे लेख लिखावणहारा, एका एक एकँकारया। आपणा भेव खुल्ह्लावणहारा, देवे शब्द हुलारया। अक्खर वक्खर चलावणहारा, वेख वखाणे सर्ब घट जाणे, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहरया। चारे मुख चारे लेख, धुरदरगाही लाए मेख, अट्ठे नेत्र ब्रह्मा वेख, वेद विदातां आप लिखा रिहा। साम रिग युजर कतेब, अथर्बण नाल रला ल्या। सतिजुग त्रेता द्वापर कर हसेब, कलिजुग वेख वखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेख वटा ल्या। ब्रह्मा लेख लिखारी बणया, प्रभ साचा वेख वखांयदा। मात पित किसे ना जणया, ना कोई गोद उठांयदा। ना कोई घड़े ना किसे भन्नया, ना कोई बणत बणांयदा। बिन हरि देवे ना कोई डन्नया, ना कोई डन्न लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा संग रखांयदा। आप आपणा संग निभाए, आपणी कल वरताईआ। ब्रह्मे सुत आप उपाए, सनक सनंदन सनातन सन्त कुमार अख्वाईआ। एका गान एका ध्यान (कराए), ब्रह्म ज्ञान जणाईआ। दर द्वारे आप मिलाए, आप आपणी बणत बणाईआ। वर सराप हो जाए, द्वार पाल आप अख्वाईआ। ब्रह्मा सुत सेवा लाए, लोकमात हरि रघुराईआ। विष्नूं रूप भगवन वटाए, भगतन मेल मिलाईआ। हँकार विकार संग रखाए, नाम धार इक्क चलाईआ। शब्द विचोला विच संसार धराए, ना मरे ना जाईआ। एका ढोला आप उपाए, आपणा राग अल्लाईआ। सतिजुग चोला मात सुहाए, सति सन्तोखी रंग चढ़ाईआ। सेवक गोला आप अख्वाए, साची सेवा रिहा कमाईआ। वार अठारां जोत जगाए, बावन हँसा भेख वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग तेरा लेखा लेख लिखाईआ। सतिजुग बैठा पार किनारा, अन्तिम मेल मिलाया। सतारां लक्ख अठाई हज़ारा, आरजू आप लिखाया। लेखा लेख ना किसे विचारा, मुन रिख भेव ना पाया। पढ़ पढ़ थक्के वेद कतेबां मिल्या मेल ना पुरख भतारा, नर निरँकार दिस ना आया। अलख अगम्म अथाह बेपरवाह वसया ऊँच मुनारा, धाम अटल शब्द महल्ल डेरा लाया। जोती दीपक रिहा बल, दिवस रैण ना कोई रखाया। आपणा धाम आपे मल्ल, आप आपणा संग निभाया। लोकमात खेल सूरा सरबंग, आप आपणी रिहा खिलाया। धरत मात मंगे आपणी मंग, प्रभ अग्गे झोली डाहया। देवणहार ना जाए संग, जुग जुग देंदा आया। रिग वेद तेरा चाढ़े रंग, रघुबंशा दए उपाया। भगत सुहेला साचा संग, आप आपणा दए निभाया। हरिजन लाए आपणे

अंग, अंगीकार आप अख्वाया। गढ़ हँकारी देवे भन्न, एका तीर निशान चलाया। त्रेते मंगे तीआ मंग, प्रभ आपणा रूप वटाया। राम परसा नाता साचा गंग, जोती जोत समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रेते तेरे दो पर, दोए रूप वखाया। त्रेता तेरा पार किनारा, अन्त रहिण ना पाया। द्वापर प्रगटे विच संसारा। आप चलाए आपणी धारा। वेद व्यासा लए अवतारा। बन खण्ड वेख बणया लेख लिखारा। नारद मुन पुकार सुण, आए दर बण भिखारा। चार सलोक धुर दा मोख, गीता ज्ञान ना कोई विचारा। पुराण अठारां सलोक इक्क लक्ख हज़ार सतारां, लेखा गया लिखारा। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा। पुरख अबिनाशी फेरा पाए, वरन गोत ज़ात पात ऊँचां नीचां वसे बाहरा। राज राजानां शाह सुल्तानां ना कोई संग रखाए, भगतन मीता कर प्यारा। आपणा रंग चढ़ाए पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, एका लाए आपणा पौड़ा, ना कोई जाणे लम्भा चौड़ा, दो जहानी उच्च मुनारा। वेखे खेल मिट्ठा कौड़ा, धुरदरगाही आया दौड़ा, शब्द घोड़ा मारे पौड़ा, सम्मत चौदां पहली वारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, द्वापर तेरा वेख घर, वेद व्यास करे प्यारा। कलिजुग तेरी काली धार, दिस किसे ना आईआ। द्वापर तेरी पावे सार, दो जहानां वेख वखाईआ। साँवल सुन्दर रूप अपार, काहना कृष्ना भेख वटाईआ। कँवल नैण मधुर बैन साचे कुण्डल मोर मुकट सीस साचा ताज सुहाईआ। बिदर सुदामा उधारे जुगती जगत द्रोपद लज्जया आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, द्वापर तेरा वेखे दर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। द्वापर तेरा अन्त किनारा। प्रभ खेले खेल न्यारा। सोलां कल लै अवतारा। मेल मिलाए भगत दुआरा। अर्जन इक्क ज्ञान सुणाए, अठारां ध्याए गीता इक्क अधारा। ज्ञान ध्यान कोई रहिण ना पाए, हँकार विकारा दिस ना आए, जोद्धे सूरबीर रणभूमी सुत्ते पैर पसारा। रथ रथवाही आप हो जाए, नाथ त्रैलोकी विच संसारा। साचा धाम इक्क सुहाए, भगतन मीता हरि प्यारा। हार जीत आपणे हथ्थ रखाए, खेले खेल खेलणहारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आवे जावे वारो वारा। द्वापर तेरा अन्त चुकाया, युजर पन्ध मुकाईआ। कलिजुग काला चन्द चढ़ाया, अन्ध अन्धेर कराईआ। सवेर सञ्झ कोई दिस ना आया, ना कोई दीप करे रुशनाईआ। माया ममता घेरा पाया, हउमे हँगता रोग गंवाईआ। लोभ विकारा संग रलाया, काम क्रोध होई कुड़माईआ। जूठा झूठा तन शृंगारा, वेस अवेसा आप अख्वाईआ। ईसा मूसा कर त्यारा, काला सूसा तन छुहाईआ। संग मुहम्मद चार यारा, एका राह वखाईआ। मुहम्मद रोवे ज़ारो ज़ारा, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। किरपा कर परवरदिगारा, एका बख्शे सच सलाहीआ। पुरख अबिनाशी कर प्यारा, देवे वर चाँईं चाँईंआ। कलिजुग वेखे खेल न्यारा, चारे कुन्टां दहि दिशा रिहा वखाईआ। ना कोई मीत मीत

मुरारा, सज्जण सुहेल ना कोई अख्वाईआ। धरत मात तेरा सुत दुलारा, एका लए अंगड़ाईआ। पुरख अबिनाशी दए सहारा, एका हुक्म पढ़ाईआ। हू अल्ला एका नाअरा, अल्ला हू समझाईआ। अहिनल हक्क कर प्यारा, हक्क हकीकत वेख वखाईआ। आपे होए शाह अस्वारा, ऐली अल्ला नूर वखाईआ। मिले मेल सखी सरवर सच्ची सरकारा, अजमतो करमतो अज़िबवा अतिलहे महिबान रहिमान रहीम एका एक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, संग मुहम्मद मेल कर, एका एक करे जणाईआ। संग मुहम्मद साचा मीता, एका एक अख्वाया। कलिजुग तेरी वेखे नीता, नेत्र नैण उठाया। वासा करे विच मसीता, उच्चे मन्दिर ढाहया । एका कलमा लागा मीठा, रसन रसाइनी गाया। नाम खुदाई इक्क अनडीठा, खुदावंद करीम रखाया। कलिजुग तेरा जगत अंगीठा, अन्तिम अन्त बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाया। संग मुहम्मद शब्द सलाह, हरि साचे मता पकाईआ। लक्ख चुरासी बण मलाह, मञ्झधारा रिहा वखाईआ। पकड़ उठाए थाँ थाँ, सोया कोई रहिण ना पाईआ। इक्क मुहम्मद करे हां, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। सदी चौदवीं उडावां काँ, इक्क तेरी ओट रखाईआ। होए विछोड़ा पुत्तरां माँ, ना दीसे धी जवाईआ। कोई ना गाए बेऐब तेरा नाँ, मुल्लां शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर देण दुहाईआ। मक्का काअबा दो दो आबा ना देवे ठण्ढी छाँ, ना कोई हाजी हज्ज कराईआ। अहिमदी मुहम्मदी रोवण मारन धाह, ऐली अल्ला दिस ना आईआ। कोई ना पकड़े किसे बांह, ना होवे कोई सहाईआ। पुरख अबिनाशी इक्क तेरी ओट रिहा तका, वेले अन्त ना होए जुदाईआ। पुरख अबिनाशी इक्क सुणाए नाम सदा, मुहम्मद आप समझाईआ। अमाम अमामा आप अख्वा, एका रंगण नाम मैहन्दी हथ्थीं लाईआ। दिशा लहिंदी फेरी देवे पा, नीले बस्त्र तन छुहाईआ। उम्मत उम्मती दए उठा, नबी रसूलां आप हिलाईआ। इक्क हदीसा दए पढ़ा, कुरान कुराना भेव चुकाईआ। ईसा मूसा विच समा, काला सूसा वेख वखाईआ। अल्ला राणी जाए शरमा, लाल चुन्नी मुख बैठी घुंगट पाईआ। प्रभ अबिनाशी पड़दा देवे लाह, अमाम मैहन्दी नाम रखाईआ। गुर चेले उठाए फड़ फड़ थाँ थाँ, लुकया कोई रहिण ना पाईआ। चौदां तबकां दए हिला, एका खण्डा नाम उठाईआ। चतुर्भुज आप अख्वा, एका दूजा भेव चुकाईआ। मातलोक प्रभ जोत जगा, जोती नूर करे रुशनाईआ। कोहनूर कोहतूर दए चमका, जल्वा आपणा आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मुहम्मद देवे साचा वर, वर दाता आप अख्वाईआ। मुहम्मद वर घर साचा पाया, आत्म वज्जी वधाईआ। आपणा कर्म रिहा कमाया, दिवस रैण सेव कमाईआ। तत्त मति प्रभ मेल मिलाया, नाड़ी रत्त समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अछल अछल्ल आपणा छल कराईआ। आप आपणा छल कराए,

जुग जुग वेस अनेका। सृष्ट सबाई वेख वखाए, लेख लिखाए बुध बिबेका। दर दरवेशा फेरा पाए, आपे जाणे आपणा भेखा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, लोकमात वेखे रेखा। कलिजुग तेरी लिखी रेखे, वेखे हरि तकदीरया। चारों कुन्ट मुल्ला शेखे, पीर दस्तगीर शाह फ़कीरया। जीव जन्त भरम भुलेखे, ना कोई देवे किसे धीरया। अगम्म अगम्मड़ा धाम वेखे, वरन बरन जगत जंजीरया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए पीरन पीरया। आप आपणी किरपा कर, नानक नाम उपाया। जोती नूर साचा धर, लोकमात वड्आया। इक्क कबीरा मेल कर, सौदा सच कराया। साचा सज्जण सुहेल इक्क दर, दुआरा रिहा सुहाया। पुरख अबिनाशी खेल कर, नानक निर्धन वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मार्ग रिहा जणाया। नानक मिली नाम वड्याई, दिवस रैण जणाईआ। प्रभ अबिनाशी दया कमाई, आपणी बूझ बुझाईआ। शब्द शब्दी मेल मिलाई, मेलणहार आप अख्वाईआ। पंज तत्त लोक तजाई, सच वस्त हरि साचे पास टिकाईआ। धू प्रहलाद वेखण चाँईं चाँईं, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। दर दुआरा वेखे साचा थाँईं, दर दरवेश एका अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर बैठा आसण लाईआ। नानक गुर कर पुकार, निरँकार निरँकार निरँकार पुकारया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, खोल्हे बन्द किवाड़या। सति पुरख निरँजण आया बाहर, घर सोहया बंक द्वारया। साचा मेला मीत मुरार, एका दूजा भउ निवारया। तीजा नेत्र वेख उग्घाड़, मिल्या मेल परवरदिगारया। नानक गुर जाए बलिहार, ढहि पया प्रभ चरन द्वारया। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, आपणे गले लगा रिहा। दो जहानी पावे सार, एका नाम सुणा ल्या। सति नाम मन्त्र जगत अधार, गुर नानक झोली अग्गे डाह ल्या। देवे देवणहार दातार, सिर आपणा हथ्थ टिका ल्या। एका शब्द सच्ची धुन्कार, दिवस रैण सुणा ल्या। जोती जगे अगम्म अपार, ना कोई मात बुझा ल्या। आपे होया पहरेदार, नानक तेरी सेवा आप कमा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर चेला आप अख्वा ल्या। नानक चेला दर द्वार, प्रभ अग्गे सीस झुकांयदा। सतिगुर मेला नर निरँकार, गुर पूरा आप अख्वांयदा। खाणी बाणी रही पुकार, सच्चा शाहो इक्क अख्वांयदा। गुर पीर जो लए मात अवतार, प्रभ साचे दी साची सेव कमांयदा। इक्क इकल्ला ख़बरदार, साधां सन्तां आप जगांयदा। शब्द खण्डा तेज कटार, जुग जुग आपणे हथ्थ रखांयदा। पावे वंडां विच संसार, (दीनां मज़्बां वंड) वंडांयदा। नानक मेला इक्क गिरधार, रसना निरँकार गांयदा। आपे तोला तोलणहार, साचा तोल तुलांयदा। मोदीखाना हट्ट पसार, तेरां तेरां नाम अल्हांयदा। सम्मत तेरां गया हार, प्रभ चौदां रुत्त सुहांयदा। नानक मेला इक्क द्वार, निरगुण आप करांयदा।

७५५
०६

सरगुण खेले विच संसार, भेव कोई ना पांयदा। अक्खर वक्खर वसया बाहर, लिख्त लेख विच ना आंयदा। बाणी रही गुण विचार, गुर गुर जो आप अल्हांयदा। गुर मूर्त अकाल, जोत निरँजण सति पुरख आप अख्वांयदा। जुग जुग बन्नृणहारा धार, भेव कोई ना पांयदा। प्रगट हो विच संसार, नानक गुर अख्वांयदा। लहिणा देवे कर्ज़ उतार, अंगद अंग लगांयदा। अमरदास कर प्यार, सेवक सेवा झोली पांयदा। सोढी बंस ख़बरदार, रामदास सीस हथ्थ टिकांयदा। सर सरोवर कर त्यार, अमृत ताल सुहांयदा। हरिमन्दिर तेरा इक्क द्वार, चार वरनां इक्क वखांयदा। रसना गाए नर निरँकार, सेवक सेव कमांयदा। अर्जन मीता इक्क मुरार, एका हुक्म जणांयदा। ठांढा सीता विच संसार, सांतक सति समांयदा। बोध अगाध जणाए शब्द अपार, गुरू ग्रन्थ उपांयदा। पन्थी पन्ध ना होया ख़बरदार, कलिजुग माया पड़दा पांयदा। हरिगोबिन्द शब्द कटार, साचा खण्डा हथ्थ फड़ांयदा। साचे घोड़े हो अस्वार, चारों कुन्ट भवांयदा। गुरमुख करे ख़बरदार, आपणे लड़ बंधांयदा। आपे बन्दीखाने जाए विच संसार, किला इक्क सुहांयदा। राजन राज कर प्यार, आपणा पल्लू आप फड़ांयदा। बवंजा अक्खर बवंजा राजन करे पार, साचा चोला तन छुहांयदा। गुर अंगद पैंती अक्खर लिखे विच संसार, सतारां कोए भेव ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बवंजा देशां बवंजा राजान राज प्रमुख कलि बणांयदा। हरिगोबिन्द तेरा सिक्दार, प्रभ साचे मात रखाईआ। बवंजा देशां करे ख़बरदार, सम्मत पन्दरां रुत्त सुहाईआ। हाढ़ सतारां दिवस विचार, लेखा लेख पुजाईआ। लहिणा देणा कर्ज़ उतार, मंगी मंग देवे झोली पाईआ। शब्द खण्डा तेज कटार, सोहँ एका दए वखाईआ। सो पुरख निरँजण शब्द धार, जीव हँ हँगता दए मिटाईआ। साची संगता कर प्यार, दे मति दए समझाईआ। अन्तिम मंगता सर्ब संसार, नौ खण्ड पृथ्वी फिरे हलकाईआ। निहकलंका लए अवतार, महराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका डंक वजाईआ। हरिराए तेरी साची रास, प्रभ साचा आप पुआंयदा। गुरमुखां लेखे लाए दस दस मास, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। शब्द डोरी आप उडाए पृथ्वी आकाश, लोआं पुरीआं पार करांयदा। चरन द्वार सच निवास, साचा धाम सुहांयदा। अट्ठे पहर वसे पास, दिस किसे ना आंयदा। हरिकिशन तेरी पूरी करे आस, बाल अवस्था लेखे लांयदा। चरन छुहाए दिल्ली गुणतास, वेला वक्त नेड़े आंयदा। गुर तेग बहादर लेखे लग्गे स्वास स्वास, मातलोक हिसाब मुकांयदा। सृष्ट सबाई करे नास, सीस गंज चरन छुहांयदा। आपणे अन्दर आपे करे वास, ना कोई बाहर कढांयदा। वाली हिन्द रक्खणी आस, पन्दरां कत्तक बीस बीसा, हरि साची जोत जगांयदा। जमन किनारा वेख निरँकार, वेला वक्त सुहांयदा। कलिजुग तेरी बन्ने धार, गुर गोबिन्दा लै अवतार, शब्द खण्डा तेज कटार, पंज सिक्दार आप चलांयदा। जोती

७५५
०६

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, वर दाता आप अख्वांयदा। गोबिन्द गुर जगत बलवाना, एका एक अख्वाया। पूत सपूता श्री भगवाना, एका एक अख्वाया। चारे कूटां वेखे मार ध्याना, गऊ ग़रीबां गले लगाया। शब्द खण्डा काया तन पहनाना, दिस किसे ना आया। रसना चिल्ला तीर कमाना, प्रभ आपे रिहा चढ़ाया। आप उठाए मुगल पठाना, शाह ईराना संग रलाया। ईसा मूसा होए हैराना, चीना रूसा मृदंग वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दे मेल दर दर, दर दुआरा वेख वखाया। गुर गोबिन्दा जोद्धा बलकारा, एका एक अख्वांयदा। पुर अनन्द कर त्यारा, आपणा आसण लांयदा। शब्द छन्द हरि करतारा, एका एक सुणांयदा। दूसर ना कोई जाणे बत्ती दन्द, लिखी रेख ना कोई मिटांयदा। त्रैगुण माया पाया अन्ध, नेत्र नैण ना कोई खुल्हांयदा। कलिजुग मुकावण आया पन्ध, दे मति आप समझांयदा। पुर अनन्द साची कंध, ना कोई मात ढांयदा। सति सन्तोख रक्खणा बन्द बन्द, माता गुजरी आप समझांयदा। कलिजुग झूठा चढ़या चन्द, गुर पूरा दिस ना आंयदा। गुरसिक्खां ना पाया निज़ानंद, परमानंद ना कोई समांयदा। तृष्ना भुक्ख रक्खया आत्म गन्द, चरन ध्यान गंवांयदा। गुरमति गुर साचा सुणाए इक्क छन्द, हरि हरि भाणा सच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्दे वाली हिन्दे एका राह वखांयदा। गुर गोबिन्दा दए सलाह, गुरसिक्खां आप समझाईआ। कोई ना दिसे होर मलाह, जे कोई पार लँघाईआ। सरसा दए ना अग्गे राह, प्रभ साचे खेल खिलाईआ। ना कोई पिता ना कोई माँ, साक सज्जण ना कोई अख्वाईआ। गुर गोबिन्दे चरन माणे साची छाँ, किला पुर अनन्द दए सुहाईआ। सिख अग्गों कर गए नाह, विच हां ना किसे हां मिलाईआ। गुर गोबिन्दा नेत्र नीर रिहा वहा, प्रभ अग्गे बैठा सीस झुकाईआ। पारब्रह्म बिना तेरे कोई ना पकड़े मेरी बांह, सारे बैठे मुख भवाईआ। सिँघ दया ल्या उठा, छाती नाल लगाईआ। गुरमुख साचे दिआं समझा, कलिजुग वेल अज्ज वधाईआ। देणा सी छेती पन्ध मुका, गुरमुखां सिर एका छत्र झुलाईआ। माता गुजरी रो रो पल्लू गल विच पा, मेरा हिरदा रही डुलाईआ। पारब्रह्म तेरी साची सरना, मस्तक धूढ़ी आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां रिहा समझाईआ। गुर गोबिन्द पूत सपूते, प्रभ साचे शब्द सुणाया। कलिजुग संगी साथी झूठे, खाली ठूठे हथ्थ फड़ाया। दर दवारिउँ जो गए रूठे, दो जहानी दए सज़ाया। पुरख अबिनाशी अन्तिम तुठ्ठे, तेरा बेड़ा दए बंधाया। लुकया रहिण ना देवे कोई गुट्ठे, आप आपे लए मिलाया। आप बंधाए एका मुट्ठे, साची तन्दन तन्द बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति आप समझाया। गुर गोबिन्दा कर निमस्कार, दोए नैणां नीर वहाईआ। साची सिक्खी कर त्यार, जगत विछोड़ा झल्लया

ना जाईआ। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, फल फुलवाड़ी आपणी हथ्थीं मात महिकाईआ। केस दाढ़ी मुच्छ कर त्यार, वक्खरी चाल चलाईआ। अमृत आत्म साची धार, बैठा मुख चुआईआ। साचा खण्डा तन शृंगार, पंजां रिहा पहनाईआ। आपे मंग्गया बण भिखार, दोवें जोड़ अग्गे डाहीआ। दोहां विचोला नर निरँकार, गुर गोबिन्दा गया बणाईआ। गुर गोबिन्दे सुण पुकार, प्रभ साचे खुशी मनाईआ। अन्तिम मेला विच संसार, बीस बीसा दए कराईआ। खेले खेल हरि निरँकार, छत्र सीस इक्क झुलाईआ। चरन छुहाए दिल्ली दरबार, नौ खण्ड पृथ्वी एका राह वखाईआ। सत्तां दीपां दए हुलार, आप आपणा दए जणाईआ। ब्रह्मा देवत सुर आयण बंक द्वार, मंगण भिच्छया वाहो दाहीआ। पारब्रह्म ना पाए सार, वेला वक्त चुकाईआ। इक्क इकीसा नर निरँकार, जगत जगदीशा आप अख्वाईआ। सुरपति राजा इन्द दए उतार, आप आपणे अंक समाईआ। शिव शंकर बाशक तशका गल लाहे हार, त्रिसूल दए हथ्थ सुटाईआ। प्रभ अबिनाशी कर प्यार, आप आपणी गोद उठाईआ। ब्रह्मा अट्ठे नेत्र वेखे उग्घाड़, कवण कूटे प्रभ साचे जोत जगाईआ। सम्मत इक्की सतारां हाढ़, ब्रह्मा ब्रह्म रूप समाईआ। कलिजुग तेरा मिटे अन्त अखाड़, सतिजुग साची चलत चलाईआ। गुर गोबिन्दा मीत मुरार, होवे आण सहाईआ। जोद्धा सूर बली बलकार, एका खण्डा हथ्थ उठाईआ। लोआं पुरीआं करे ख़बरदार, सोया कोए रहिण ना पाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, प्रभ साचे जोत जगाईआ। लिख्त लेख गोबिन्द अपार, ना कोई मेट मिटाईआ। माछूवाड़े करे पुकार, नंगी पैरी आसण लाईआ। सच सुनेहड़ा मीत मुरार, एका एक अख्वाईआ। पाए झेड़े कलि दस्तार, कल्गी तोड़ा दिस ना आईआ। नीला घोड़ा ना मारे झन्कार, ना पौड़ा रिहा उठाईआ। पंज प्यारे ना मीत मुरार, ना कोई वागां रिहा भवाईआ। सुत मात ना कोई दुलार, रणभूमी सुत्ते आसण लाईआ। सिख साजण ना मीत मुरार, धरतमात गोद बैठे सेज वछाईआ। बिन हरि तेरे कोई ना दिसे यार, एका सथ्थर बैठा वछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दे सुण पुकार, एका शब्द सुणाईआ। गुर गोबिन्दे तेरा रंग, प्रभ साचा वेख वखांयदा। पाटे चीर चढ़ना रंग, प्रभ साचा आप चढ़ांयदा। सूलां सेज धुरदरगाही शब्द पलँघ, लोकमात आप विछांयदा। पुरख अगम्मा तेरे सदा संग, दो जहान ना मुख भवांयदा। एका मंग अन्तिम मंग, प्रभ अबिनाशी पूर करांयदा। चिट्टे अस्व कसया तंग, नीले वाले कोल फेरी पांयदा। गुर गोबिन्दे तेरी काया जगत वज्जे मृदंग, हरि का शब्द डंका आप वजांयदा। लक्ख चुरासी करे भंग, तेरी चोली आप रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दे तेरा वर आपे पूर करांयदा।

सतिगुर पुरख दयाल सर्ब समाया। दीना बंधप दीन दयाल, दीना नाथ आप अख्वाया। संग रखाए काल महांकाल, काल नगारा हथ्थ फड़ाया। लाड़ी मौत वजाए ताल, ताल तलवाड़ा इक्क रखाया। धर्म राए होया कंगाल, लेखा मंगे दर दर दए दुहाया। चित्रगुप्त खोल्ह हिसाब, जीआं जन्तां रिहा वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर साचा एका हो आया। सतिगुर साचा साचा मीत, अकल कला भरपूरा। आपे बख्शे चरन प्रीत, आपे वसे नेड़े दूरा। आप चलाए रीत, जग तोड़े नाता कूड़ा। गुरमुख काया ठण्ढी सीत, फल वेखे मिट्ठा कौड़ा। करे कराए पतित पुनीत, धुरदरगाही आया दौड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुर गोबिन्दे आपे बौहड़ा। सतिगुर साजण साख्यात, सखा सुहेला आप। मेट मिटाए तीनों ताप, ना कोई जाणे पुन्न पाप। कलिजुग लेखा रोग संताप, ना कोई माई ना कोई बाप। एका एक हरि हरि जपाए अजपा जाप। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेखणहारा आप। कलिजुग अन्तिम काला पल्ला, चारों कुन्ट हिलांयदा। वेखे खेल इक्क इकल्ला, एका धाम सुहांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी जगत महल्ला, साचा नाउँ उपांयदा। कुलाखण्ड पए तरथला, ना कोई धीर धरांयदा। इलाबुत पहला बुला, हरि साचा आप लगांयदा। केतमाल फल झूठा हुल्ला, पति डाली ना कोई रखांयदा। किंपुरख तेरा कोई ना पैणा मुल्ला, कलिजुग मुख भवांयदा। हरवरख अमृत आत्म डुल्ल्हा, सीर नीर ना कोई मुख चुआंयदा। हरणयमह तन ख़ाकी रुल्ला, बस्त्र शस्त्र ना तन सजांयदा। भदर दर दुआरा तेरा खुल्ल्हा, झूठा गढ़ तुड़ांयदा। रमक वेखे आपणी कुला, कुलावन्त अन्त पछतांयदा। भारत खण्ड तेरा पैणा मुल्ला, प्रभ साचा आप पुआंयदा। त्रैगुण माया बणाए चुल्ल्हा, साचा भट्ठ तपांयदा। लक्ख चुरासी आपे फलया आपे फुल्ला, आपणी जड़्ह आप उखड़ांयदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार मति तत्त जगत रुल्ला, ना कोई मुल्ल पवांयदा। जूठ झूठ गाया ढोला, शब्द अनादी बोध अगाधी ना कोई जणांयदा। कूड़ कुड़यारा वज्जे बोला, चार वरनां आप जणांयदा। गुरमुख विरला पूरे तोल तुला, तोलणहार आप अख्वांयदा। प्रगट होए कला सोला, निहकलंका नाउँ रखांयदा। कलिजुग काया बदलया चोला, गोबिन्द संग निभांयदा। साचे मन्दिर अन्दर आपे मौला, जोती नूर उपांयदा। भाग लगाए धरनी धवला, धरत धवल सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौ खण्ड पृथ्वी वेखे दर, आप आपणा फेरा पांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी तेरा घर, हरि साचा वेख वखांयदा। सत्तां दीपां देवे वर, लेखा लेख लिखांयदा। लक्खण दीप आए डर, घर सक्खण वेख वखांयदा। कौंच विछोड़ा नारी नर, ना कोई संग निभांयदा। पुष्कर रोवे ज़ारो ज़र, ज़र दौलत ख़ाक मिलांयदा। जम्बु दीप प्रभ जोत धर, जोबन एका एक वखांयदा। भारत खण्ड मिल्या वर, ब्रह्मण्डी वेख वखांयदा।

७५८
०६

सान दीप जाए हर, हरि हरि साचा मुख भवांयदा। सलमल ना सीस ना धड़, ना किला ना गढ़, जल धार वहाए साचा हड़, ना कोई मेट मिटांयदा। कुशा वेखे इक्क अखाड़, कलिजुग तेरा घाड़न घड़, सम्मत चौदां लाए जड़, त्रैगुण माया हथ्थीं फड़, आप बणाए गोर मड़, जोती लम्बू लांयदा। सत्त दीप तेरा जगत निशाना, एका एक रखाया। धर्म झुलाए हरि निशाना, दहि दिशा वेख वखाया। चारे कुन्टां इक्क ज्ञाना, प्रभ साचा रिहा सुणाया। जूठा झूठा ढहि मकाना, कल्लर कंध रहिण ना पाया। त्रैगुण माया तेरा दाना, प्रभ ब्रह्मे झोली पाया। इक्की जेठ कर इशनाना, तेरी अरथी रिहा बणाया। शब्द शस्त्र पीला बस्त्र खेल महाना, भेव कोई ना पाया। शब्द निराला मारे बाना, रसना चिल्ले तीर चढ़ाया। नौ खण्ड पृथ्वी लथ्थे घाना, बूरे कक्के बिल्ले दए हिलाया। त्रै देश वखाए इक्क अस्थाना, कुशा खेल खिलाया। चौदां जोजन सच भूमिका अस्थाना, कलिजुग तेरी वंड वंडाया। चौदां चौदां जीव जहाना, प्रभ साचा रिहा जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नौ खण्ड पृथ्वी सत्त दीप एका रंग रंगाया। दीप खण्ड जगत अखाड़ा, ब्रह्मण्ड पए दुहाईआ। वड वड भागी सतारां हाढ़ा, प्रभ साची बणत बणाईआ। इक्की जेठ बणया लाड़ा, त्रैगुण माया लए प्रनाईआ। त्रैगुण माया तेरी धाड़ा, पंचम करे लड़ाईआ। पंचम रोवे ज़ारो ज़ारा, कलिजुग दए दुहाईआ। कलिजुग बणे दर भिखारा, आवे वाहो वाहीआ। सम्मत चौदां सच दुआरा, चौदां लोकां रिहा वखाईआ। भूअ दूवह स्वर्ग महर जप तप सति अवतारा, धाम भूमिका वेख वखाईआ। इतल वितल सितल तेरा पार किनारा, तलातल महातल रसातल खोज खुजाईआ। पाताल लोक प्रभ लै अवतारा, सांगो पांग बाशक सेज रिहा हंढाईआ। सहँसर मुख गुण दो सहँसर जिह्वा रिहा हिलाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपारा, जप लोक तप लोक बैठा मुख छुपाईआ। सत लोक प्रभ कर पसारा, सति पुरखा रंग वटाईआ। आदि शक्त इक्क आकारा, एका एक वखाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, दस दस्मेस जगाईआ। शब्द सरूपी कर प्यारा, आपणी गोद उठाईआ। अमृत आत्म बख्शे ठण्ढी धारा, दिवस रैण मुख चुआईआ। बस्त्र शस्त्र इक्क कटारा, नाम खण्डा हथ्थ फड़ाईआ। आपे होया पहरेदारा, ब्रह्मण्डां सेव कमाईआ। त्रैगुण माया कर पसारा, लक्ख चुरासी रचन रचाईआ। आपे होया मेटणहारा, आप आपणी जोत जगाईआ। आपे खेवट खेटा विच संसारा, जीव जीवण नईआ रिहा चलाईआ। माँ प्यो बेटा हरि गिरधारा, पिता पूत अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, त्रैगुण माया तेरी धार, गोबिन्द वेख वखाईआ। चले चलाए विच संसार, भरम भुलाए राजे राणया। मनमुख डोबे अद्ध विचकार, ना कोई दीसे वंञ मुहानया। गुरमुख विरले उतरे पार, जिस जन मिल्या हरि भगवानया। देवणहारा नाम सहार, सतिगुर

साचा सखी सुल्तानया। दर द्वारे कर परवान, हथ्थीं बन्ने साचा गानया। भगत वछल देवे इक्क निशान, हउमे सहिंसा रोग मिटानया। आत्म जोती ब्रह्म ज्ञान, शब्द धुन इक्क उपजानया। खाणी बाणी होए हैरान, वेद पुराणी आई हानया। अंज़ील कुरान बहि बहि कुरलान, इक्क दूजे मारन ताअनया। प्रगट होया हरि वाली दो जहान, चार वरन सुणाए एका सच्ची बाणीआ। सोहँ शब्द धुर फ़रमाण, घर चौथे मेल मिलानया। एका पद पद निरबान, घर साचा वेख विखानया। सन्त सुहेले लए वर सद निगाहबान, भरम भुलेखा दूर करानया। आप चुकाए आवण जाण कान, जगत झेड़ा फंद कटानया। सृष्ट सबाई फनाह मकान, थिर रहे ना कोई शाह सुल्तानया। बिन गुर पूरे ना करे कोई पछान, दरगहि देवे ना सच्चा मानया। आपणा कीता आपे पाण, मनमुख भुल्ले गुण निधानया। राम सीता सारे गाण, सीता सुरती राम शब्द ना कोई प्रनानया। राधा कृष्न बोल सुणान, नाम बंसरी ना कोई वजानया। नानक गोबिन्द रहे वखान, मिल्या मेल ना हरि सुल्तानया। खाणी बाणी वेखण मार ध्यान, हथ्थ आए ना वेद पुराणया। गुरमुख तेरा सच निशान, प्रभ साचा आप झुलानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दा लए वर, नारी कन्त आप अख्वानया। गुर गोबिन्दा साचा वरया, पुरख अबिनाशी कन्ता। इक्क वखाए साचा सरया, सर सरोवर इक्क विखंता। अमृत ताल साचा भरया, ना कोई मेट मिटंता। जंगल उजाड़ होया हरया, डल्ला वेख वेख डरया, प्रभ साचा धीर धरंता। फल फुलवाड़ी बग़ीचा भरया, ऊँचां नीचां भेव निवरया, एका रंग रंगाए हस्त कीटा। चार वरन अठारां बरन इक्क खुल्हाए दरया, दर दरवाज़ा इक्क अनडीठा। त्रैगण माया आपणा कीता भरया, कलिजुग अन्त बणाए इक्क अंगीठा। लहिणा देणा कारज सरया, गुर गोबिन्दे लग्गा भाणा मीठा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखे लाए कौड़ा रीठा। डल्ला झल्ला सांझा यार, गुर पूरे इक्क रखाया। कलिजुग मेला अन्तिम वार, सज्जण सुहेला मेल मिलाया। गुर चेला सोहे इक्क द्वार, चेला गुर रूप वटाया। इक्क इकेला नर निरँकार, निज घर वेखण आया। गुर गोबिन्दा कर प्यार, सद बख्शिंदा फेरा पाया। साची बिन्दा कर त्यार, मानस जन्म दवाया। मनमुख करन निन्दा ना पायण सार, भरमी भरम भुलाया। हरिजन मेटे आपे चिन्दा, तन साचा चन्द चढ़ाया। बजर कपाटी तोड़े जिंदा, अन्ध अन्धेर मिटाया। राग सुणाए सुहागी छन्दा, पंचम सेवा लाया। जोत जगाए बन्द बन्दा, बन्दी तोड़ आप अख्वाया। गुरमुख साचा चन्द नौ चन्दा, सीतल सांतक ठांढी धार रिहा वहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत चौदां वेख वखाया। सम्मत चौदां साचा रंग, हरि एका वेख वखानया। गोबिन्द डल्ले मंगी मंग, मिले मेल विच जहानया। आप आपणा वेखे संग, लेखा जाणे धुर फ़रमाणया।

७६०
०६

आपे कट्टणहारा भुक्ख नंग, गऊ ग़रीबां देवे दानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जोत सरूपी पहरया बानया। जोत सरूपी पहरे बाणा, गोबिन्द संग रलाया। डल्ला वेखे मार ध्याना, चारे कूटां वेख वखाया। पुरख अगम्मा हरि भगवाना, एका झूटा रिहा दवाया। शब्द सुहागी बन्ने गाना, नाम मोती तन्द बंनाया। साचा बख्शे तीर निशाना, सोहँ भथ्था हथ्थ फड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, प्रगट हो हरि समरथा, सर्बकल वरताया। गुर गोबिन्दे मेल मिलाए, डल्ले जोत जगाईआ। डल्ले झल्ले वड वड्आए, वड वड्डा वेख वखाईआ। जगत निशाना रिहा बणाए, हरि साचा आप झुलाईआ। इकीस इकीसा वेख विखाए, सम्मत इक्की कर रुशनाईआ। पन्दरां कत्तक रुत्त सुहाए, प्रभ साची मेख लगाईआ। सिँघ नाजर सति सुत तराए, मुख लाहे काला टिक्का मस्तक छाहीआ। फल फुलवाड़ी इक्क वखाए, हरि दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप विछोड़े आपे जोड़े, मेलणहार आप अख्वाईआ। मेल विछोड़ा हरि समरथ, जुग जुग करदा आया। गुरमुख सुहेले लए रक्ख, आप आपणे अंग लगाया। प्रगट हो हरि प्रतक्ख, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाया। चारों कुन्ट लाउँदे भक्ख, इक्क अंग्यार तपाया। लक्ख चुरासी तेरे बणे कक्ख, हड्डी बालण रिहा तपाया। गुरमुख विरले लए रक्ख, जिस जन आपणी चरनी लाया।

७६१

०६

नौ खण्ड पृथ्वी दीप सत्त करे सक्ख, एका गेड़ रिहा दवाया। त्रैगुण माया कर विछोड़ा होई वक्ख, प्रभ साचा रिहा कराया। उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण वक्ख वक्ख, दहि दिशा वेख वखाया। दर दर घर घर मन्दिर अन्दर कलि जगाउँदी रही अलक्ख, अलख अलख गुण गाया। अन्तिम भाण्डा होया सक्ख, सच वस्त नज़र ना आया। शब्द सरूपी तपया मट्ठ, प्रभ साचे आप तपाया। सच सपुत्री पई भट्ठ, जूठा झूठा भार बंधाया। कलिजुग काला रिहा नठ्ठ, चारों कुन्ट फिरे हलकाया। पंज तत्त मुनारा जाणा ढठ्ठ, ढावणहारा रिहा ढाहया । होए विछोड़ा अष्टम् अठ, नौ दर ना वेख वखाया। गुरमुखां मेला इक्क इक्ट्ठ, हरि चरन द्वार सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया तेरा मट्ठ, लोकमाती रिहा तपाया। माया मठ कर त्यार, अग्नी इक्क लगाईआ। हड्ड नाड़ी मास भर भण्डार, साचा हवन कराईआ। तत्त मति रोवे ज़ारो ज़ार, अन्त विछोड़ा आईआ। बुध मति ना बन्ने धार, बैठी सत्थ विछाईआ। लक्ख चुरासी रोवे ज़ारो ज़ार, ब्रह्मा दए दुहाईआ। विष्नूं बंसी सुण पुकार, बैठा मुख छुपाईआ। शिव शंकर होया ख़बरदार, इक्क त्रिशूल हथ्थ उठाईआ। कलिजुग लहिणा देणा करज उतार, हौला भार कराईआ। भाणा सहिणा विच संसार, गुरमुखां रिहा समझाईआ। जूठा झूठा मेट पसार, कूड़ कुड़यारा रिहा मिटाईआ। सच सुच्च सच वरतार, गुरमति गुर आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, त्रैगुण माया तेरा मट्ठ, जोत निरँजण कर इक्ठ, आपे रही तपाईआ। जोत निरँजण सेव कमाए, एका मट्ठ तपाया। देवी देव संग रलाए, करोड़ तेतीसा आप बुलाया। रसना जिह्वा ना कोई ध्याए, हरि हरि गुण गए भुलाया। कौस्तक मनी मस्तक थेव ना कोई लगाए, ना कोई रूप वटाए, अलख अभेव ना राए, अछल अछल्ल कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, त्रैगुण माया बन्द दर, आपे आप रिहा कराया। त्रैगुण माया बन्द दरवाज़ा, पंज तत्त विछोड़ा। करे कराए ग़रीब निवाजा, होए मात अजोड़ा। आपे आप साजण साजा, आपे तोनड़हार रिहा तोड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,, वेखे खेल घर घर चिट्टे अस्व चढ़ चढ़ साचे घोड़ा। दस्म द्वारी साची धार, लोकमात उपजाईआ। चिट्टा रंग अपर अपार, एका नूर सवाईआ। पारब्रह्म कर प्यार, ब्रह्म वेख वखाईआ। दोहां मेला अद्ध विचकार, आर पार आप सुहाईआ। गुरमुख गुरसिख फड़ फड़ लाए पार, साचा बेड़ा रिहा चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नाथे वाला खेड़ा रिहा तराईआ। साचा खेड़ा करे उत्पत, होए मात पसारा। साल वसाल रहे सति, दीपक जोत करे उज्यारा। साचा धाम सच भूमिका सच अस्थान रंग चढ़ाए सति, एका एक एकँकारा। सतिजुग तेरा बन्ने साचा नत्त, सुहाए ताल अपर अपारा। गेड़ रखाए कर्म तिन्न सौ सट्ठ, पूर्ब दक्खण हरि गोबिन्द अद्धविचकारा। त्रैगुण माया बणया मट्ठ, आप बणाए बणावणहारा। कलिजुग अन्तिम गिड़नी उलटी लट्ठ, गुर संगत रल मिल किया संस्कारा। इक्की जेठ हरि समरथ, खेल करे अपर अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे देवे दान, सतिजुग तेरा चलदा रहे सदा भण्डारा। सम्मत वीह सौ इक्की पन्दरां कत्तक प्रभ आए चरन दुआरा। रक्खे शब्द पन्थ पन्थक, गुर गोबिन्दा शब्द सीस जगदीस इक्क दस्तारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कूड़ कुड़यारा मेटे मात पसारा। त्रैगुण माया कर पुकार, उठ चली कर कर धाईआ। नेत्र नैण नीर वहाए रोवे ज़ारो ज़ार, लोकमात राह तकाईआ। खुल्हड़े केस गल विच हार, सीस ख़ाक पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्की जेठ पंचम जेठा सोलां कलीआं एका सेजा आपणे हेठ विछाईआ। पंचम जेठा कर विहार, आपणी कल वरतांयदा। शब्द सिँघासण मूधा मार, उप्पर आसण लांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी पावे सार, कुलाखण्ड डेरा लांयदा। छे जेठ तेरा जगत विहार, भेव ना कोई पांयदा। सत्त जेठ प्रभ बन्ने धार, इलाबुत जोत जगांयदा। अट्ठ जेठ प्रभ वसया बाहर, केतमाल हिलांयदा। नौ जेठ प्रभ सुण पुकार, किंपुरख उलटांयदा। दस जेठ दर दरबार, हरवरख सुहांयदा। ग्यारां जेठ इक्क करतार, हरणयमह

हरी हरि रंग रंगांयदा। बारां जेठ हो त्यार, भद्र फेरा पांयदा। तेरां जेठ कल आपणी धार, रमक राम जपांयदा। चौदां जेठ सांझा यार, चौदां लोकां भारत खण्ड वंड वंडांयदा। पन्दरां जेठ मोड़ मुहार, दीप लक्खण लेख लिखांयदा। सोलां जेठ तन शृंगार, करौच रूप वटांयदा। सतारां जेठ तेज कटार, पुष्कर आप हिलांयदा। अठारां जेठ बन्ने धार, जम्बु आप जगांयदा। उन्नी जेठ विच संसार, सलमल सोभा पांयदा। वीह जेठ कर उज्यार, सान सखी तरांयदा। इक्की जेठ कर निरँकार, कुशा फेरा पांयदा। त्रैगुण माया मद्दु अपार, सोलां सोलां सोलां तन बंधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्की जेठ आपणी बणत बणांयदा।

❋ २२ जेठ २०१४ बिक्रमी जुगिन्दर सिँघ दे गृह पिण्ड नाथे वाल ज़िला फिरोज़पुर ❋

गृह मन्दिर सुहञ्जणा, मिले मेल गोपाल। जगे जोत इक्क निरँजणा, गुर गोबिन्द साचे लाल। चरन धूढ़ी मन मजना, सच सुहावे ताल। पी अमृत आत्म रज्जना, फल लग्गे काया डाल्ह। हरि मेला साचे सजना, देवे नाम शब्द दलाल। धर्म द्वारे बहि बहि सजना, नेड़ ना आए काल महांकाल। जगत नगारा एका वज्जना, आप वजाए एका ताल। मोह ममता माया दझना, पंज विकारा दए उछाल। सच वखाए एका हज्जना, दर मन्दिर सच्ची धर्मसाल। आपे आप पड़दा कज्जना, सोहँ देवे सच दुशाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, फल लगाया काया डाल। काया फल अमृत मेवा, एका एक रखाया। किसे हथ्थ ना आए देवी देवा, करोड़ तेतीसा रिहा कुरलाया। गुरमुख गुर हरि साची सेवा, दर घर साचे रिहा कमाया। मिले मेल अलख अभेवा, वेद कतेबा भेव ना राया। रसना गाया हरि हरि जिह्वा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग विछड़े मेल मिलाया। जग विछड़े जग मेलया, जगत जोग प्रभ हथ्थ। लेखा लेख गुर गुर चेलया, हँकार विकारा देवे मथ्था। पुरख अबिनाशी सज्जण सुहेलया, शब्द डोरी पाए नत्थ। कलिजुग तेरा अन्तिम वेलया, प्रगट होए समरथ। आपणा खेल आपे खेलया, नाम जणाए जगत अकथ। सद वसे रंग नवेलया, लोकमात चलाए साचा रथ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला सच दर, लेख चुकाए साढे तिन्न तिन्न हथ्थ। लेखा लेख कर्म चुकाउणा, कर्म धर्म प्रभ दाता। एका मार्ग साचा लाउणा, मिले मेल पुरख बिधाता। कलिजुग काया दे मति आप समझाउणा, मिटे रैण अन्धेरी राता। बंक दुआरा इक्क सुहाउणा, साची देवे नाम सुग़ाता। भरम भुलेखा दूर कराउणा, चरन प्रीत निभाउणा साचा नाता। पवण पवणा शब्द चलाउणा, अगम्म अगम्मड़ा साथा। आप चुकाए आउणा जाणा, लक्ख

चुरासी तुट्टे साथा। बंक दुआरा इक्क वखाउणा, कल मेल त्रैलोकी नाथा। धर्म राए मुख भवाउणा, लेखा जाणे मस्तक माथा। चरन कँवल जन इक्क वखाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख चढ़ाए साचे राथा। नाम रथ हरि रथवाही, एका एक चलांयदा। आपे बैठ बेपरवाही, साचा मार्ग लांयदा। गुरसिख उठाए फड़ फड़ बाहीं, अन्तिम मेल मिलांयदा। लोकमात मार झात दर द्वार वेखे चाँईं चाँईं, आवण जावण खेल खिलांयदा। मनमुख भुल्ले मारन धाईं, हरि गोबिन्द दिस ना आंयदा। बिन गुर पूरे कोई ना देवे ठण्ढीआं छाँईं, दो जहान कोई ना पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म दरस दृष्ट खुल्हांयदा। आत्म दर खोल्ह दुआरा, दर घर इक्क बुझाया। नौ द्वारे पार किनारा, पंच विकारा नेड़ ना आया। शब्द खण्डा तेज कटारा, तन साचे आप पहनाया। अट्ठे पहर ख़बरदारा, दिवस रैण रिहा जगाया। पारब्रह्म पहरेदारा, आलस निन्दरा विच ना आया। जोती नूर कर उज्यारा, दीपक रिहा जगाया। शब्द उपजाए सच्ची धुन्कारा, धुन नादी रिहा वजाया। अनहद गावे वारो वारा, पंचम सेवा लाया। दस्म द्वारी खोल्ह किवाड़ा, एका धाम सुहाया। बहत्तर नाड़ी वज्जे ताड़ा, प्रभ एका राग अल्हाया। साचे मन्दिर एका अन्दर धर्म अखाड़ा, आपे वेखे वेख वखाया। आत्म सेजा कर प्यारा, नाम सिँघासण इक्क विछाया। जोत सरूपी कर आकारा, पुरख अबिनाशी डेरा लाया। गुरमुख साचा सच दुलारा, आपणी गोद उठाया। अन्त ना पायण पारावारा, पारब्रह्म अख्वाया। दस्म द्वारी पार किनारा, एका धाम सुहाया। वज्जे नाद सच जैकारा, एका राग अल्हाया। सोहँ शब्द सो पुरख निरँजण एका एकँकारा, रिहा वजाया। हँ हँगता ना कोई पसारा, हरि हर रूप समाया। जोती शब्दी एका रंगता, एका रंगण रंग चढ़ाया। पंचम मीता होए मंगता, गुरमुख साचे लए जगाया। पंचम दर आप लाए अंगता, अंगीकार आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरा साचा मेल, सच द्वारे रिहा कराया। सच द्वारे साचा मेला, जुग जुग आप कराया। आपे गुरू गुर चेला, गुर चेला आप अख्वाया। आपे वसे इक्क इकेला, हर घट आप समाया। पारब्रह्म प्रभ सज्जण सुहेला, तत्त मति ना कोई वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरा साचा दर, दर दुआरा वेख वखाया। गुरमुख तेरा सच दुआरा, प्रभ आपणे हथ्थ रखाया। मनमुख भुल्ले जीव गंवारा, हथ्थ किसे ना आया। सुरत सवाणी रोवे हाहाकारा, धीरज धीर ना कोए धराया। मनमति दए मात ललकारा, बुद्धि बैठी मुख छुपाया। गुर पूरा लए अन्त अवतारा, गुरमुख साचे लए जगाया। एका नाम एका धुन एका शब्द इक्क जैकारा, सुन्न मुन्न दए तुड़ाया। आपे मेटे धुँदूकारा, दीपक जोती साचा चन्न चढ़ाया। सोलां कलीआं तन श्रृंगारा, शब्द सिँघासण लाया। पुरख अबिनाशी कर विचारा, जुग जुग आपणा

भेख वटाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, निहकलंकी जामा पाया। राउ रंकां करे ख़बरदारा, एका डंका नाम वजाया। ऊँचां नीचां पावे सारा, राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां रिहा सुणाया। आप सुहाए आपणा बंक दर दुआरा, घर साचा वेख वखाया। प्रगट होए विच संसारा, हरिजन साचे मेल मिलाया। आप आपणी किरपा धारा, जोत निरँजण तेल चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन तेरा सोहे दर, दर घर घर दर एका एक वखाया। साचा घर नाम दरवाज़ा, शब्दी बणत बणाईआ। आपे वसे ग़रीब निवाजा, दीपक जोती दीप जगाईआ। चार कुन्ट साजन साजा, दहि दिशा वेख वखाईआ। हरिजन तेरा रच्चया काजा, सुरत सवाणी लए प्रनाईआ। दिवस रैण मारे आपे आवाजा, आपे रिहा जगाईआ। कलिजुग अन्तिम प्रगट होए देस माझा, गुर गोबिन्दा संग निभाईआ। शब्द घोड़ा एका ताजा, वाग आपणे हथ्थ रखाईआ। धुरदरगाही आया भाजा, लोआं पुरीआं पार कराईआ। गुरमुखां अन्तिम रक्खे लाजा, बख्शे चरन सरन सच्ची सरनाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, जुग जुग आपणी रचना आप रचाईआ।

७६५
०६

❋ २२ जेठ २०१४ बिक्रमी बग्गा सिँघ दे गृह पिण्ड नाथे वाला ज़िला फिरोज़पुर ❋

जल मीना सच सागरा, सरोवर सति समाए। हरिजन नुहाए काया साची गागरा, अमृत आत्म ताल सुहाए। करे कराए वणज नाम सौदागरा, वणज वपारी आप अख्वाए। निर्मल कर्म करे उजागरा, दुरमति मैल गंवाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, काया माटी औखी घाटी पार कराए। काया माटी पंज तत्त, रत्ती रत्त उपाईआ। आपे जाणे बुध मति, मन मनसा पूर कराईआ। बीज बीजे साचे वत, रसना जिह्वा हल चलाईआ। फल लगाए साची वत्थ, एका एका खवाईआ। मोह विकारा दए मथ, तृष्ना तृप्त कराईआ। शब्द जणाए अकथना अकथ, अकथ कथा सुणाईआ। सोहँ चढ़ाए साचे रथ, सो पुरख निरँजण रिहा आप चलाईआ। सगल वसूरे जायण लथ्थ, जो जन दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निर्धन सरधन एका धाम सुहाईआ। निर्धन हरि चरन द्वार, सरधन भेख वटाया। सरधन मंगे बण भिखार, निर्धन झोली डाहया। वस्त गुण हरि इक्क अपार, आपणे हथ्थ रखाया। कोटन कोट मंगण दर द्वार, ब्रह्मा शिव देवत सुर बैठे सीस झुकाया। लक्ख चुरासी करे पुकार, दिवस रैण रही बिल्लाया। पुरख अबिनाशी सुत्ता पैर पसार, आप आपणी सेजा आसण लाया। जुग जुग आपणा लै अवतार, नित्त नवित्ता खेल खिलाया। प्रगट होए विच संसार, मीतन मीता मीत हो आया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, अचरज रीता रिहा चलाया। एका शब्द माण रखाए अठारां ध्याए

गीता, सति पुरख निरँजण आप अलाया। कलिजुग तेरा अन्तिम लहिणा देणा जीता, लेखा लेख रिहा मुकाया। नौ खण्ड पृथ्वी परखे नीता, हरिजन साचे वेख वखाया। पारब्रह्म पुरख अतीता, घर मन्दिर बैठा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत जोग एका एक कमाया। एका एक जोग सन्यास, इक्क वैराग रखांयदा। एका रसन शब्द स्वास, एका जाप जपांयदा। एका मेला हरि गुण तास, गुणवन्ता वेख वखांयदा। आदि अन्त ना जाए विनास, अबिनाशी करता आप हो जांयदा। हरिजन लेखा चुक्के गर्भवास, दस दस मास लेखे लांयदा। मेला चेला शाहो शाबास, सज्जण सुहेला वेख वखांयदा। हरिजन होया दासी दास, दासन दासी सेव कमांयदा। पृथ्वी अकाश साची रास, मण्डप माढ़ी आपे पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ग़रीब निमाणे लए वर, कन्त सन्त आप अख्वांयदा। कन्त सन्त हरि गिरधारा, एका एक अख्वाया। गुरमुख नारी कर प्यारा, आत्म सेज हंढांयदा। सोलां कलीआं सच शृंगारा, आपणा आप कराया। आपे वेखे वेखणहारा, आत्म घर डेरा लाया। सईआ मंगल गायण वारो वारा, पंचम राग अलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे दए वर, नेत्र नैणा दरस दिखाया। लोचन नेत्र नैण, दरस पाया सच द्वारया। रसना किसे ना सके कहिण, कवण रूप शाहो भूप हरि रंग सच्ची सरकारया। आप चुकाए लहिणा देण, भगत सुहेला जुग जुग लए मात अवतारया। लाड़ी मौत ना खाए डैण, आवण जावण गेड़ चुका रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, दर घर घर दर एका वेख वखा रिहा।

❋ २२ जेठ २०१४ बिक्रमी बलवंत सिँघ दे गृह पिण्ड नाथेवाल ज़िला फिरोज़पुर ❋

घर मन्दिर मंगलाचार, दिवस रैण कराईआ। हरिजन साचे मीत मुरार, दिवस रैण रहे गाईआ। गावत गावत गावत तन अहार, काया तृप्त कराईआ। तृष्णा भुक्ख दए निवार, माया ममता पेट कटाईआ। नाम खण्डा मार कटार, दो धारी धार चलाईआ। उच्च अटारी कर पसार, सच महल्ला रिहा वसाईआ। ना कोई दीसे चार दिवार, छप्पर छन्न ना कोई छाईआ। चन्न सूरज ना कोई चमत्कार, तार सितार दिस ना आईआ। गुरमुख विरला हरि द्वार, बैठा सीस झुकाईआ। साचा मेला विच संसार, जुग जुग आप कराईआ। कलिजुग तेरी काली धार, लक्ख चुरासी रही रुढ़ाईआ। मनमुख भुल्ले जीव गंवार, जम की फाँसी गल लगाईआ। मदिरा मासी नार विभचार, कन्त कन्तूहल ना कोए हंढाईआ। रसन स्वासी

शब्द प्यार, हरि साचा विसर ना जाईआ। आपे बख्शे बख्शणहार, सद बख्शिंदा आप अख्वाईआ। जन हरि हरिजन ढहि पया द्वार, फड़ बाहों लए उठाईआ। मंगे मंग बण भिखार, आत्म इच्छया पाए भिच्छया, काया चोली इक्क भराईआ। नर नरायण नौ द्वार किसे ना दिस्सया, सृष्ट सबाई फिरे हलकाईआ। साधां सन्तां माया ममता लग्गी विसया, अट्ठे पहर रहे सताईआ। गुरसिख वंडाए साचा हिस्सया, कलिजुग अन्तिम वंड वंडाईआ। पुरख अबिनाशी कर परीख्या, नाम सोटी एका लाईआ। आपे देवणहारा साची सिख्या, दीवा बत्ती इक्क जगाईआ। धुरदरगाही लेखा लिख्या, लोकमात मेट ना सके राईआ। सृष्ट सबाई दीसे मिथ्या, थिर कोई रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेला इक्क दर, दर द्वारे रिहा कराईआ। दर दुआरा उच्च अगम्मा, एका एका रखाया। ना मरया ना कदे जम्मा, आवण जावण विच ना आया। गगन पाताल रहाए बिन बिन थम्मा, अकाश प्रकाश समाया। जोती नूर चढ़ाए साचा चन्ना, चन्न सूरज रहे शरमाया। आप आपणा जाणे बंना, चार कुन्ट भेव ना राया। ना कोई छप्पर ना छन्ना, गुरदुआरा मन्दिर मस्जिद देहुरा मसीत ना कोई रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका एक बैठ अतीत, लक्ख चुरासी परखे नीत, हरिजन मेला साचे मीत, जुग जुग विछड़े रिहा मिलाया। मेल विछोड़े जुग जुग रीता, आपणी कल वरतांयदा। आपे साजण साचा मीता, गीत सुहागी इक्क सुणांयदा। एका रंग रंगाए हस्त कीटा, ऊँचां नीचां एका धाम सुहांयदा। देवे नाम शब्द अनडीठा, लिखण पढ़न विच ना आंयदा। मिट्ठा करे काया कौड़ा रीठा, जिस जन आपणी दया कमांयदा। काया चोली रंग चाढ़े मजीठा, रंग मजीठी इक्क चढ़ांयदा। त्रैगुण माया जूठा झूठा पीसण पीठा, कलिजुग चक्की आप चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लिख्या लेख धुर मस्तक वेख, लहिणा देणा मूल चुकांयदा। लिख्या लेख पूर्ब कर्मा, प्रभ साचे आप विचारया। मानस मानुख मिल्या जन्मा, जन्मी जन्म सुधारया। इक्क वखाए साचा धर्मा, धर्मी धर्म कमा रिहा। सरन पड़े दी रक्खे सरना, लज पति आपणे हथ्थ रखा रिहा। आप चुकाए मरना डरना, धर्म राए दर दुरकारया। नेत्र खोल्हे हरना फरना, तीजा लोचन वेख उग्घाड़या। आपे दाता करनी करना, करन करावण कर्म कमा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, नारी कन्त रूप वटा ल्या। नारी कन्त शब्द सुहाग, एका एक उठांयदा। आपे सोया आपे गया जाग, आप आपणी आलस निन्दरा लांहयदा। आपे लाहवणहारा भाग, आप उपजाए इक्क वैराग, वैरागी आप अख्वांयदा। हरिजन चरन कँवल जन गया लाग, प्रभ साची दया कमांयदा। जगत बुझाए तृष्ना आग, माया मोह तजांयदा। आप आपणे हथ्थ रक्खे वाग, चारों कुन्ट वेख वखांयदा। हँस बणाए फड़

फड़ काग, सोहँ साची चोग चुगांयदा। चरन धूढ़ी साचा मजन माघ, सन्त सुहेले फड़ लिआंयदा। दुरमति मैल धोवे दाग़, आप आपणी सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दीपक जोती जगे चिराग, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। दीपक जोती कर उजाला, अज्ञान अन्धेर मिटाया। प्रगट होए गुर गोपाला, गुरमुख मेल मिलाया। काया मन्दिर अन्दर बैठ सच्ची धर्मसाला, सच सिँघासण इक्क विछाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख गुरसिख एका दर, दर घर घर दर वर साचा जीउ पिण्ड तन काचा कंचन गढ़, पुरख अबिनाशी उप्पर चढ़, आप फड़ाया आपणा लड़, बन्द किवाड़ी कुण्डा लाहया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि पुरख अबिनाशी करता जोत निरँजण आवण जावण पतित पावन भेख बावन रूप वटाया।

७६८
०६

✻ २२ जेठ २०१४ बिक्रमी प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड नाथे वाल ज़िला फिरोज़पुर ✻

चरन कँवल जन ध्यान, सति कमाईआ। चरन कँवल जन ध्यान, तत्त समाईआ। चरन कँवल जन ध्यान, एका मति रखाईआ। चरन कँवल जन ध्यान, सति सन्तोख धीरज यति धराईआ। चरन कँवल जन ध्यान, आपे रक्खणहारा पत, हरिजन साचे लए तराईआ। चरन कँवल जन ध्यान, सच प्रीत बंधाए नत्त, ना कोए तोड़ तुड़ाईआ। चरन कँवल जन ध्यान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,एका शब्द ज्ञान दवाईआ। शब्द ज्ञान जोत प्रकाशे, मिटे अन्ध अन्धेरा। मिले मेल हरि शाहो शाबाशे, चुक्के मेरा तेरा। निज घर मन्दिर निज आत्म करे वासे, इक्क वखाए सञ्झ सवेरा। रसना रस स्वास स्वासे, भरमां ढाहे डेरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे कराए हक्क निबड़ा। हक्क निबेड़ा सच सुल्ताना, कलिजुग अन्त कराया। गुरमुखां बन्ने हत्थीं गाना, एका तन्द बंधाया। आत्म मारे तीर निशाना, रसना चिल्ला इक्क चढ़ाया। हरिजन साचा होए हैराना, हँकारी किला किस ढाहया । अन्दर बैठ श्री भगवाना, साचा तिला तिलक आप लगाया। वेख वखाणे दो जहानां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जीवण दाता आप हो आया। जीवण दाता जगत जुगीशर, एका एक अख्वांयदा। शब्द मिलावा रिखी रिखीशर, एका धाम सुहांयदा। ईश्र ईश्र आप परमेश्र, रूप अनूप रखांयदा। जन भगतां मस्तक टिक्का लाए नाम केसर, रत्ती रत्त रंगांयदा। साचा मेला विच थनेसर, धाम सुहावा इक्क रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दुआरा वेख वखांयदा। जगत थनेसर धाम अवल्ला, प्रभ आपणा आप उपनया। पंज तत्त युध करे इकल्ला, आपे देवणहारा डंन्निआ। एकँकारा एका वार पाए तरथल्ला, जो

घड़या सो भन्नया। आपे आपणा बोलणहारा हल्ला, आप आपणा बेड़ा बन्नया। गुरमुख विरला चरन दुआरा साचा मल्ला, वेख वखाए निहचल धाम अटलया। पवणी जोती शब्दी रला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, देवे नाम इक्क सुखलया। देवे नाम साची धार, चार वरन जणाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, कमी रिहा कर्म कमाईआ। जगत जुगत जग साची कार, जुग जुग रिहा कमाईआ। भगतन मीत कर प्यार, आवण जावण खेल रचाईआ। धरत धवल सुण पुकार, आप आपणी लए अंगड़ाईआ। लक्ख चुरासी रोवे ज़ारो ज़ार, कलिजुग काया काग वांग कुरलाईआ। सन्त सुहेले गए हार, बेड़ा कोए ना बन्ने लाईआ। वंञ मुहाणा दीसे विच मँझधार, जूठी झूठी नईआ रिहा डुलाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आप आपणी जोत जगाईआ। जोत सरूपी कर आकार, शब्दी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटाईआ। शब्द धारा जोत निरँजण, एका एक अकारया। लक्ख चुरासी वेखे सज्जण, राए धर्म मीत मुरारया। गुरमुख विरले सन्त सुहेले इक्क इकेला आपे पड़दे कज्जण, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर पावे सारया। काया मन्दिर अन्दर डूँघी कन्दर सच द्वार कराए साचा हज्जन, मक्का काअबा दो दो आबा शाह नवाबा इक्क वखा रिहा। जोती नूर ना कोई झल्ले ताबा, रवि ससि दए अज़ाबा, ब्रह्मे उलटी कँवल नाभा, नाभ कँवली आप भवा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सन्तन मेला एका दर, दर दुआरा इक्क सुहा रिहा। हरि सन्तन साचा जोग, एका एक रखांयदा। रस रसना साचा भोग, एका नाम जपांयदा। आप कराए रखाए दरस अमोघ, आत्म दरसी दरस दिखांयदा। सो पुरख निरँजण चुगाए साची चोग, हँ हँगता मेट मिटांयदा। दूई द्वैती कटे रोग, एका रंगण रंग चढ़ांयदा। मेल विछोड़ा संजोग विजोग, प्रभ आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे रिहा वर, वेखणहारा दर घर, दर दुआरा फोल फुलांयदा। आत्म दर सच महल्ला, एका एक उसारया। पुरख अबिनाशी बैठ इकल्ला, वेखे सर्ब पसारया। हरिजन देवे नाम सुखल्ला, मुख पल्ला एका पा रिहा। शब्द फड़ाए तिक्खा भल्ला, पंजां चोरां मेट मिटा रिहा। धाम सुहाए इक्क अटला, निहचल नाउँ रखा ल्या। वेख वखाए जल थला, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर धाम सुहा रिहा। जन भगतां मेटे दूई द्वैती सल्ला, सच समग्री झोली पा रिहा। सृष्ट सबाई मनमुख जीव आप भुलाए कर कर वल छला, अछल छल करा रिहा। ज्ञानी ध्यानी वड विद्‌वानी रहे कुरलाए, पढ़ पढ़ वाद वधा रिहा। सतिगुर पूरा दिस ना आए, नानक गोबिन्द नाम ध्या ल्या। गुण निधाना दिस ना आए, दस्म द्वारी कुण्डा ला ल्या। बजर कपाटी ना कुण्डा कोए तुड़ाए, हउमे हँगता संग निभा ल्या। साचा

७६६
०६

मंगता ना कोई अखवाए, ना भिच्छया झोली पा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजन साचे घर सच मेल ल्या। साचा मेला हरि प्रतक्ख, एका एक कराया। इक्क इकल्ला करे वक्ख, एका अक्खर रिहा पढ़ाया। दूजा भाण्डा करे सक्ख, सहिज जोग कमाया। तीजे मेल अलक्खणा अलक्ख, लेखा लिख ना सके राया। चौथे घर साची वत्थ, हरि समरथ भगती झोली पाया। मनमुख जीवां मनमति पाए नत्थ, चारों कुन्ट रिहा फिराया। अन्तिम लहिणा सीआं साढे तिन्न तिन्न हत्थ, राए धर्म लिखाया। धरत मात वछाई बैठी सत्थ, मंगे मंग दिवस रैण सबाया। सतिगुर साचा रक्खे दे कर हत्थ, समरथ पुरख अखवाया। आवण जावण लक्ख चुरासी देवे मथ, आप आपणा मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे देवे वर, वर घर हरि नर एका गुरमुख पाया। एका दर एका हरि, एका नर कन्त सुहागीआ। गुरमुख नारी वसे घर, दिवस रैण रहे वैरागीआ। पुरख अबिनाशी किरपा कर, हँस बणाए फड़ फड़ कागीआ। अन्दर मन्दिर साचे पौड़े आपे चढ़, किला तोड़ हँकारी गढ़, पंच उखेड़े झूठी जड़, गीत सुणाए पंचम राग इक्क अनादीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख मेला साचे घर, पारब्रह्म ब्रह्म ब्रह्मादीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि पुरख खेले खेल आदि जुगादीआ।

७७०
०६

✻ २२ जेठ २०१४ बिक्रमी जरनैल सिँघ दे गृह पिण्ड नाथे वाल ज़िला फिरोज़पुर ✻

चरन कँवल जन टेक, एका एक रखाईआ। तन बुध होए बिबेक, धीरज धीर धराईआ। कलिजुग माया ना लाए सेक, हउमे रोग ना पीड़ सताईआ। नेत्र नैणा दरस पेख, सगली चिन्त गंवाईआ। साचा मेला दस दस्मेस, दहि दिशा होए सहाईआ। कलिजुग मिटे कूड़ा वेस, सतिजुग साचा राह चलाईआ। बाल अवस्था अलूड़ वरेस, गुण निधाना हरि रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग खेले खेल सभनी थाँईआ। जुग जुग खेले खेल खिलारी, खेलणहार खिलंता। भगत जनां दर बण भिखारी, काया चोली रंगण रंगता। देवे नाम सच्ची सिक्दारी, दूसर दर ना होए मंगता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन मेले मेल हरि, संग रलाए साची संगता। साची संगत साचा साथ, गुर साचा आप रखांयदा। आपे रक्खे दे कर हाथ, दिवस रैण सेव कमांयदा। लभ्भ लभ्भ थक्के नौ नौ नाथ, लक्ख चुरासी भरम भुलांयदा। आप आपणे दर रहे विस्माद, आपे सिम्मल रूप हो जांयदा। आप वजाए आपणा नाद, आप आपणी धुन सुणांयदा। सुनणेहार जगत फरयाद, आपणा भेख वटांयदा। सन्त सुहेले साचे लाध, मस्तक लेख

लिखांयदा। मेल मिलाए मोहण माधव माध, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा साथ निभांयदा।

✼ २२ जेठ २०१४ इन्द्र सिँघ दे गृह पिण्ड नाथे वाल ज़िला फिरोज़पुर ✼

गुर संगत तेरा कर्म विचार, पूर्ब लहिणा झोली पाया। मिल्या मेल विच संसार, अंगद अंग लगाया। लहिणा देणा करज उतार, साचा संग निभाया। डल्ला रहे अद्धविचकार, बाग बगीचा इक्क रखाया। प्रगट हो विच संसार, ऊँचां नीचां भेव मिटाया। गोबिन्द धारा अपर अपार, जोती नूर सवाया। सोहँ खण्डा तेज कटार, हरिजन साचे हथ्थ फड़ाया। देंदा जाए वारो वार, भुल्ल रहे ना राया। एका कल एका वार, चरन प्रीती दए चुकाया। ना कोई उपजे जीव गंवार, हट पसार ना कोई रखाया। निक्की सिक्खी तिक्खी धार, शब्द शब्दी रिहा बणाया। मंगी भिक्खी बण भिखार, गोबिन्द गुर झोली डाहया। प्रभ अबिनाशी बण वरतार, पल्लू दए भराया। संग सुहेला मीत मुरार, अंग संग अख्वाया। गुर चेला सोहे बंक द्वार, बंक द्वार सुहाया। हरिसंगत मीता आप करतार, अचरज रीता रिहा चलाया। ठांढा सीता निझर धार, अमृत मुख चुआया। गुरमुख गुरसिख हरिजन साचे उतरे पार, हरि साची सेव कमाया। मनमुख दुरजन डूँघे अध विचकार, ना कोई बेड़ा बन्ने लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिसंगत तेरा जगत मलाह एका एक अख्वाया।

✼ २२ जेठ २०१४ बिक्रमी साधू सिँघ दे गृह पिण्ड रोडे वाल ज़िला फिरोज़पुर ✼

पुरख अबिनाशी श्री भगवाना, अकल कला समाया। खेले खेल दो जहानां, दिस किसे ना आया। जोती नूर हरि महाना, आपणा आप उपाया। शब्द जणाए सच तराना, एका नाद वजाया। धुन अनादी गाए गाना, गावणहार सदा अख्वाया। सन्त सुहेले गुरमुख विरले साचा मेला मेल मिलाना, दर घर साचा इक्क वखाया। मन मति बुध होए हैराना भेव ना पाए चतुर सुघड़ स्याना, जोत निरँजण कवण टिकाना, आप आपणा धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अबिनाशी करता आप अख्वाया। इक्क इकल्ला एकँकारा, एका धार वहाईआ। सृष्ट सबाई कर पसारा, हर घट बैठा आसण लाईआ। लक्ख चुरासी जीव जन्त साध सन्त बख्शे सच सच्ची सरनाईआ। भेव अभेदा अछल अछेदा खेले खेल

खेलणहारा, जुग जुग आपणा भेख वटाईआ। आदि शक्त आदि निरँजण पुरख अगम्मा खेल अपारा, विच संसारा आपणा आपे रिहा कराईआ। ब्रह्मा शिव देवत सुर लए हुलारा, साचा झूला आप झुलाईआ। सन्त सुहेले कर प्यारा, मिले मेल गिरवर गिरधारा, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर बैठा आसण लाईआ। निरगुण रूप हरि समाया, सरगुण जोत जगांयदा। सरगुण साचा जोग कमाया, एका राग सुणांयदा। एका राग नाद वजाया, पंचम सेवा लांयदा। पंचम सेवक सेव कमाया, सच तराना इक्क सुणांयदा। अलक्ख अभेवा वड वड्डा देवी देवा, आप आपणा भेव खुल्हांयदा। गुरमुख विरला गाए रसना जिह्वा, कौस्तक मणीआ लाए साचा थेवा, औखी घाटी पार करांयदा। आप जगाए जोत जलाए पार कराए औखी घाटी, शब्द सहारा हरि निरँकारा एका एक सिखांयदा। अमृत आत्म सति सरोवर तीर्थ ताटी, एका एक वखांयदा। जोत जगाए काया माटी, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। बजर कपाटी जिस जन पाटी, साची हाटी इक्क रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, भगतन मीता इक्क अतीता, नाम सुणाए साची गीता, साचा शब्द जणांयदा। नाम गीता सच ज्ञान, गुरमुख विरला पांयदा। जिस जन बख्शे चरन ध्यान, आप आपणी बूझ बुझांयदा। जोत ललाटी तेज महान, काया मन्दिर अन्दर इक्क टिकांयदा। गुरमुख साचे कर पछान, माया जन्दर आप तुड़ांयदा। सच भूमिका हरि अस्थान, दस्म द्वारी इक्क सुहांयदा। शब्द सिँघासण वेख विखान, आत्म सेजा आसण लांयदा। पंचम वारो वार गायण, साची सेव करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन तेरे आत्म दर, साची मण्डल साची रास रचांयदा। साचे मण्डल साची रास, एका एक वखाईआ। खेले खेल पृथ्वी आकाश, गगन पतालां वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां आप उपाए, आपे करे करावणहारा, मास थित वार रुत्त आपणे हथ्थ रखाईआ। मनमुख काया जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर दिसे प्रभास, सति सरूप ना नज़री आईआ। कलिजुग ममता मदिरा मास, रसना रस करे हलकाईआ। हरिजन साचा हरि हरि दास, हरि गुण साचा रिहा गाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता लेखे लाए दस दस मास, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। जुग जुग जन भगतां पूरी करे आस, पूर्ब लहिणा झोली पाईआ। आपे होया दासी दास, सेवक सेवा रिहा कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जोती जामा भेख वटाईआ। जोती जामा भेख अपार, भेव किसे ना पाया। शब्द डंक अपर अपार, चारों कुन्ट रिहा वजाया। राउ रंक राज राजानां शाह सुल्तानां करे ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, चार वरन सुहाए इक्क दुआरा, ऊँचां

७७३
०६

नीचां भेव चुकाया। शब्द खण्डा तेज कटारा, दो जहानी पावे सारा, लोआं पुरीआं वेख किनारा, आप आपणा मुख छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण खेल कर, कलिजुग वेला वक्त सुहाया। कलिजुग तेरी काली धार, चार कुन्ट अन्धेरा छाया। धरतमात करे पुकार, नेत्र रो रो नीर वहाया। प्रभ दर रोवे धाहां मार, दोए जोड़ सीस झुकाया। संग मुहम्मद चार यार, अल्ला राणी गल विच पल्ला पाया। ईसा मूसा बण भिखार, काला सूसा तन छुहाया। नानक गोबिन्द कर विचार, दर दुआरा मंगण आया। वेद व्यासा लेख लिखार, लिख लिख लेखा आप समझाया। ब्रह्मण गौड़ पूत सपूता मीत मुरार, प्रगट होए विच संसार, उच्च पहाड़े डेरा लाया। बजर कपाटी सिला पाड़, मेट मिटाए झूठी धाड़, एका वेखे सच अखाड़, जम्बु दीप रुत सुहाया। खेले खेल सतारां हाढ़, लक्ख चुरासी आप चबाए आपणी दाड़, नाल रलाए मौत लाड़ी काल महांकाल, दर द्वारे फेरा पाया। धर्म राए अक्ख रिहा उग्घाड़, त्रैगुण माया तेरा तत्त प्रभ साचा देवे साड़, पंज तत्त ना उब्बल रत्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल विच संसार। कलिजुग खेल खेलणहारा, पारब्रह्म बेअन्ता। हरिजन साचे मेलणहारा, मेल मिलाए साचे सन्ता। नारी कन्त हंढावणहारा, गुरमुख काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता। अमृत आत्म धार इक्क वहावणहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची गंग वहंता। साची गंगा आत्म जल, एका धार वहाईआ। दूई द्वैती मेटे सल्ल, सांतक सति वरताईआ। राजस तामस मंगे दर, बैठे झोली डाहीआ। हरि हरि आपणी किरपा कर, रो रो देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जोती जामा भेख वटाईआ। जोती जामा हरि भगवाना, एका जोत जगाईआ। अगाध बोधी धुर फ़रमाना, शब्दी शब्द जणाईआ। लोआं पुरीआं खण्डां ब्रह्मण्डां वेखे मार ध्याना, उत्भुज सेत्ज जेरज अंडा वेख वखाईआ। आपे गोपी आपे काहना, आपे आपणी रास रचाईआ। आपे रावण आपे रामा, लंका गढ़ आप तुड़ाईआ। आप वजाए शब्द दमामा, साचा डंका इक्क रखाईआ। जुग जुग पूर कराए आपणा कामा, दूसर कोए ना संग रखाईआ। कलिजुग मिटे रैण अन्धेरी शामा, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाईआ। लक्ख चुरासी करे कामा, सोहँ एका बाज उडाईआ। पुरख अबिनाशी अन्तरयामा, हर घट अन्दर मन्दिर वेख वखाईआ। पल्ले ना दिसे किसे सच्चा दामा, साध सन्त जीव जन्त माया ममता लोभ हँकारा बैठे झोली भराईआ। इक्क इकल्ला एकँकारा, सृष्ट सबाई पावे सारा, गुरमुखां वेखे सच दुआरा, कवण वस्त मिली दस्त गुर पूरे हथ्थ फड़ाईआ। एका रंग रंगाए कीट हस्त, ऊँच नीच राउ रंक, इक्क सुहाए द्वार बंक, बंक द्वारी आप अख्वाईआ। खेले खेल वासी पुरी घनक, गुरमुख साचे अंग लगाए जिउँ जन

जनक, सुरत सवाणी सच सपुत्री सीता रामा आप प्रनाईआ। कलिजुग तेरा जूठा झूठा धनुख, अन्तिम वार दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सृष्ट सबाई वेख वखाईआ। सृष्ट सबाई झूठा नाता, कलिजुग संग रलाया। ना कोई पिता ना कोई माता, पिता पूत ना कोई अख्वाया। ना कोई ज़ात ना कोई पात, ना कोई जगत जुगत साची दात, बिन हरि नामे खाली हथ्थ रखाया। गुरमुख विरले मेला कमलापात, पतिपरमेश्वर एका पाया। वेले अन्तिम पुच्छे वात, दर दरबान दर दर फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका दीपक जोती आपणा आप जगाया।

❋ २२ जेठ २०१४ बिक्रमी माला सिंघ दे घर पिण्ड समालसर ज़िला फिरोज़पुर ❋

कलिजुग कूड़ पसार अन्धेरा छाया। चारों कुंट अन्ध अंध्यार, जीव जन्त रहे बिल्लाया। साध सन्त ना पाइन सार, बैठे मुख छुपाया। मिल्या मेल ना कन्त भतार, आत्म सेज ना कोए हंढाया। माया सुत्ते पैर पसार, गूढ़ी नींद ना कोए उठाया। पंज तत्त विकारा कर अहार, तृष्ना मोह वधाया। काम क्रोध तन शृंगार, जूठा झूठा बस्त्र पाया। हऊमे हँगता रोग अपार, कूड़ कप्पड़ इक्क हंढाया। भुक्खा नंगता विच संसार, कलिजुग डौरू रिहा वाहया। गुरमुख विरला सन्त दुलार, पुरख अबिनाशी रिहा गाया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आप आपणी दया कमाया। आत्म दरसी शब्द अपार, धुन आत्मक इक्क उपजाया। उपजे धुन सच्ची धुन्कार, अनहद साची सेवा लाया। पंचम मेला हरि निरँकार, विछड़ कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप अपणी जोत धर, जुग जुग मेला आपणे हथ्थ रखाया। जुग जुग मेल मिलावणहारा, एका एकँकारा। सृष्ट सबाई कर पसारा, आपे बन्ने आपणी धारा। जुग जुग लै मात अवतारा, खेले खेल सिरजनहारा। सतिजुग त्रेता द्वापर वेख पसारा, जोती जोत सरूप हरि, आप अपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल अपर अपारा। कलिजुग खेल खिलावणहारा, एका एक गोबिन्दा। गुर गोबिन्दा मेल मिलावणहारा, मेट मिटाए सगली चिन्दा। हरिजन साचे उठावणहारा, आप उपजाए साची बिन्दा। हस्त कीट ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान एका रंग रंगावणहारा, देवे नाम इक्क अनडीठा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन काया चोली चाहड़े रंग मजीठा। काया चोली रंग रंगाए, रंगणहार दातारा। हरिजन साचा संग निभाए, आदिन अन्ता एकँकारा। एका अक्खर जाप जपाए, एका दूजा जाप जपाए, तीजा नेत्र खोल्ह वखाए, दरस दिखाए नैण मुँधारा। चौथे घर मेल मिलाए, आप अपणा भेख वटाए,

शब्द सरूपी रचन रचाए, जोत सरूपी कर अकारा। पंचम मेला सहिज सुभाए, एका तन रबाब वजाए, रसना खिच्चे वारो वारा। छेवां दर सहिज सुभाए, छप्पर छन्न ना कोए रखाए, चार दीवार ना कोए रखाए, गुरदर मन्दिर मस्जिद कोए दिस ना आए, खाणी बाणी ना कोई अलाए, ब्रह्मा लेख ना कोई लिखारा। वेद व्यासा नज़र ना आए, अञ्जील कुरान ना कोई पढ़ाए, दर साचा इक्क सुहाईआ। आप आपणी जोत जगाए, निज घर बैठा आसण लाए, सति पुरख निंरजन आदि जुगादि विच ब्रह्मादि वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप अपणी जोत धर, दर घर साचा इक्क सुहाए। साचा घर शब्द बनवारी, एका एक रखाया। महल अटल उच्च अटारी, एका नाउँ धराया। सच सिँघासण बैठ गिरधारी, आपणा आसण लाया। ना कोई दिसे चोबदारी, ना कोई सेवक सेवा रिहा कमाया। ना कोई साध सन्त गुर पीर अवतार करे निमस्कारी, इक्क इकल्ला नर निरँकार सच सिँघासण डेरा लाया। ना कोई खण्डा ना कोई कटारी, तन बस्त्र शस्त्र ना कोई सजाया। अबिनाशी करता आप अपणा कर उज्यारी, आप आपणे रंग समाया। (जोती जोत सरूप हरि, आप अपणी जोत धर,) सति पुरख निरंजन आदि शक्त आदिन अन्ता एका रूप शाहो भूप सति सरूप समाया। सति सरूप सति सतिवाद, हरि साचा घर सजांयदा। आपे होए आदि जुगादि, दूसर कोई ना संग रखांयदा। धुर दरगाही वजाए एका नाद, लोआं पुरीआं रिहा सुणाईआ। ब्रह्मा शिव देवत सुर रहे अराध, दिवस रैण इक्क ध्यान लगांयदा। लक्ख चुरासी आप उपाए मोहण माधव माध, एका राह चलाए शब्द जणाई बोध अगाध, सन्त सुहेले आप जगांयदा। अक्खर वक्खर देवे दाद, हरि नामा नाउँ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप अपणी जोत धर, दर घर साचा इक्क सुहांयदा। साचा दर शब्द हुलारा, एका एक रखाया। आपे देवे देवणहारा, चारों कुन्ट रिहा फिराया। धरत धवल अकाश प्रकाश पार किनारा, लोक परलोक अवण गवण भवण रिहा फिराया। एका शब्द इक्क सलोक, आप सुणाए तीनो लोक, त्रैगुण माया भेव ना राया। ब्रह्मण्ड खण्ड पाए वंड जेरज अंड उतभज सेत्ज कोए ना सके रोक, खाणी बाणी रही अलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप अपणी जोत धर, इक्क वखाए साचा घर दुआरा दिस ना आया। दर दरवाज़ा हरि निरँकार, एका एक रखाया। लोआं पुरीआं वसया बाहर, भेव कोई ना पाया। रवि ससि सूरज चन्न गए हार, चारों कुन्ट फेर फिराया। रिख मुन गुर पीर साध सन्त कोए ना पावे सार, अगम्म अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाया। औलीआ पीर शेख मुसायक दस्तगीर चढ़ चढ़ गए हार, साचा डण्डा किसे हथ्थ ना आया। जुग जुग प्रभ लए अवतार, ब्रह्मण्डां खोज खुजाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, जोती जामा भेख वटाया। मनमुख भुल्ले जीव गंवार, अभेद भेदा भेव ना राया। अछल अछल्ला विच संसार, जुग जुग करदा आया। इक्क अकल्ला

एकँकार, एकँकारा रूप समाया। शब्द महल्ला कर त्यार, आप अपणा दर सुहाया। निर्मल जोती कर उज्यार, सच प्रकाश वखाया। ना कोई दीसे धूआंधार, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप अपणी जोत धर, इक्क सुहाए साचा दर, दुआरा इक्क रखाया। बन्द दरवाजा ग़रीब निवाजा, आपणा आप कराया। आप आपणा साजन साजा, बाडी कोए ना अंग लगाया। एका रक्खे साचा ताजा, गुर शब्दी नाउँ रखाया। दो जहानी रक्खे लाजा, आवण जावण आपणा गेड़ कटाया। कलिजुग जोत जगाए देस माझा, भेव रहे ना राया। भगत सुहेला रक्खे लाजा, लाजावन्त आप अख्वाया। कलिजुग तेरा रच्चया काजा, लक्ख चुरासी तेरा संग बणाया। लाड़ी मौत मंगे दाजा, अग्गे आपणी झोली डाहया। धर्म राए खोल्ह दरवाजा, खाली कुण्डां रिहा कराया। काल द्वारे आया भाजा, हरि साचा सेवा लाया। महांकाल दर रिहा साजा, दोए जोड़ सीस झुकाया। चारों कुन्ट लगाए आंचा, एका जोती लम्बू लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा दर इक्क सुहाया। काल महांकाल बण भिखार, प्रभ अग्गे देण दुहाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, दोवें बैठे सीस झुकाईआ। लाड़ी मौत कर श्रृंगार, गल बैठी पल्ला पाईआ। धर्म सपुत्री सच दुलार, वर मंगे बेपरवाहीआ। लक्ख चुरासी वेख विचार, हथ्थ फूलन माला रही उठाईआ। मिले मेल कन्त भतार, नेत्र नैण कज्जल रही पाईआ। सम्मत चौदां हो त्यार, हथ्थीं मैहन्दी लाल रंगाईआ। धर्म राए दी सच सपुत्री कन्या मुटियार, दोवें भुजां रही उठाईआ। खुल्हे केस रोवे ज़ारो ज़ार, विष्नूं अग्गे रही कुरलाईआ। ब्रह्मा अड्डे नेत्र रिहा उग्घाड़, चारों कुन्ट वेख वखाईआ। शिव शंकर रोवे धाहां मार, बाशक तसका गल लटकाईआ। क्रोड़ तेतीसा तेरी कोई ना सुणे पुकार, जगत जगदीसे जोत जगाईआ। कलिजुग अन्तिम आई हार, माया राणी दर प्रनाईआ। प्रगट होया निहकलंक नरायण नर अवतार, शब्द खण्डा हथ्थ उठाईआ। खेले खेल अपर अपार, ब्रह्मण्डां खोज खुजाईआ। जेरज अंडां पावे सार, लुकया कोई रहिण ना पाईआ। भेख पखण्डा करे पुकार, एका मार्ग सच चलाईआ। चार वरनां इक्क द्वार ऊँचा नीचा भेव चुकाईआ। एका अक्खर कराए जै जैकार, दीपां लोआं रिहा सुणाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी कर विचार, सति सन्तोखी धीर धराईआ। नाता तुट्टे काम क्रोध लोभ मोह हँकार, मनमति रही कुरलाईआ। गुरमति देवे सहिज साची धार, काया मन्दिर अन्दर आप टिकाया। निर्मल जोती कर आकार, मस्तक गगन जोत निरँजण करे रुशनाईआ। मुख लगाए साचा सगन, सोहँ साची चोग चुगाईआ। तन बस्त्र चाढ़े एका रंगन, लोकमात उतर ना जाईआ। आप रखाए आपणे अंगन, अंगीकार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क सुहाए साचा दर, दर दुआरा बन्द कराईआ। दर दरवाजा किया बन्द, आपणी कल वरताईआ। पढ़

पढ़ थक्के राग छतीसा छन्द, राग रागनी रहे अलाईआ। किसे ना पाया परमानंद, निजानंद रहे गंवाईआ। सति पुरख ना जाणे छन्द, सीतल सांतक धार ना कोई वहाईआ। मनमती जीव आत्म अन्ध, दूर दुराडा दिसे पन्ध, औखे घाट ना कोई चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन किरपा देवे कर, आत्म खोले साचा दर, बन्द कवाड़ी तोड़ तुड़ाईआ। गुरमुख धन्न कमाई, हरि धन पाया। मनमुख सदा जुदाई, रो रो दए दुहाया। गुरमुख सच कुड़माई, गुर शब्दी जोड़ जोड़ जुड़ाया। मनमुख भेव ना राई, जूठे झूठे धन्दे लाया। गुरमुख धन्न वधाई, घर साचा इक्क सुहाया। मनमुख पई फाही, गल फाँसी इक्क लटकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रिहा तराया। हरिजन साजन साचे मीत, सतिगुर पुरख मनाया। सतिगुर साचा ठांडा सीत, एका रंग समाया। आपे वसणहारा चीत, चित वित ना कोए ठगौरी पाया। जिस जन बख्शे चरन प्रीत, चरनोधक मुख चुआया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, एका राह वखाईआ। एका राह शब्द मलाह, हरि साचा मात रखांयदा। देवणहारा सच सलाह, साचे मार्ग लांयदा। पकड़ उठाए फड़ फड़ बांह, बेड़ा पार करांयदा। निथावयां देवे साचा थाँ, चरन दुआरा इक्क वखांयदा। काग हँस दए बणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका एक धाम सुहांयदा।

७७७
०६

⁕ पहली हाढ़ २०१४ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ⁕

त्रैगुण माया तेरी धार, प्रभ साचे मात वहाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव कर त्यार, साची सेवा लाईआ। आपे होया पहरेदार, दिवस रैण रिहा गाईआ। पंज तत्त कर ख़बरदार, एका डंक वजाईआ। अप तेज वाए पृथ्वी आकाश कर आकार, सरगुण रूप वटाईआ। निरगुण खेले खेल अपार, दिस किसे ना आईआ। मन मति बुध जोत अधार, जोती जोत समाईआ। जोत निरँजण कर अकार, दीपक हथ्थ फड़ाईआ। वेखणहारा अन्दर बाहर, गुप्त ज़ाहर भेव ना राईआ। लक्ख चुरासी कर त्यार, आप आपणी रचन रचाईआ। रूप अनूपा सति सरूपा हरि निरँकार, निज घर बैठा आसण लाईआ। धाम अवल्ला अपर अपार, चार दिवार ना कोई रखाईआ। अगम्म अगोचर अलक्ख अधार, भेव अभेदा भेद छुपाईआ। वेद कतेबा ना पायण सार, पढ़ पढ़ थक्के मात लोकाईआ। जीव जन्त साध सन्त गुर पीर लै अवतार, आवण जावण रचन रचाईआ। पुरख अगम्मा वसया

बाहर, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाईआ। इक्क इकल्ला नर निरँकार, निरगुण रूप समाईआ। जोत सरूपी कर आकार, आदि शक्त आदि भवानी एका नाउँ रखाईआ। शब्द जणाए धुर फ़रमाणा, अगाध बोध जणाईआ। अगाध बोध अकथ कथा कहाणी, रसना कथ ना सके राईआ। सर्बकला आपे समरथ, वेख वखाए थाउँ थाँईंआ। जुग जुग चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही आप अख्वाईआ। कलिजुग अन्तिम सीआं चुकाए साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, अठ्ठ सठ्ठ वेख वखाईआ। सतिजुग चलाए साची गथ, सति पुरख निरँजण आप रघुराईआ। खेले खेल जिउँ रामा घर दसरथ, काहना कृष्ना भेख वटाईआ। प्रगट होए कमलापत, कँवल नैण अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया वेख घर, वेखणहारा वेख वखाईआ। त्रैगुण माया हट्ट पसार, प्रभ साचे वेख विचार, कलिजुग अन्तिम लए अवतार, निहकलंक शब्द डंका चारों कुन्टां आप वजा रिहा। राउ रंकां करे ख़बरदार, शाह सुल्तानां आप उठा रिहा। ब्रह्मा शिव देवत सुर दए हुलार, पुरीआं लोआं आप जगा रिहा। दो जहानां राज राजानां करे ख़बरदार, सोया कोए रहिण ना पा रिहा। गुर गोबिन्द कर त्यार, हरि साचा संग निभा रिहा। शब्द खण्डा तेज कटार, तन गात्रे आप लटका रिहा। कल्गी तोड़ा सीस अपार, नाम नामा आप वखा रिहा। जोती जोड़ा विच संसार, शब्द घोड़ा आप दुड़ा रिहा। वेखे परखे मिठ्ठा कौड़ा, लक्ख चुरासी फोल फुला रिहा। धुरदरगाही आया दौड़ा, ब्रह्मण गौड़ा नाउँ रखा ल्या। पूत सपूता लाए पहला पौड़ा, बजर कपाटी साची सिला उच्चे पर्बत चरन छुहा रिहा। आपे तोड़नहारा किला कोट हँकारी गढ़, कलिजुग तेरा छिला पूर करा रिहा। सति पुरख निरँजण अग्गे खड़, गुर गोबिन्दा वेख वखा रिहा। दस्म द्वारी चोटी चढ़, अन्दर मन्दिर कुण्डा ला रिहा। शब्द सरूपी बाहों फड़, पवण उनन्जा इक्क हुलार वखा रिहा। त्रैगुण माया जाए सड़, ब्रह्मा नेत्र नीर वहा रिहा। शिव शंकर एका अक्खर पढ़, सो पुरख निरँजण गा रिहा। हँ हँगता जाए मर, माया मोह चुका रिहा। साची संगता जाए तर, लोकमाती राह वखा रिहा। निहकलंका खोल्ह् दर, पुरख अबिनाशी भेख वटा रिहा। चार वरन नुहाए एका सर, सर सरोवर इक्क बणा रिहा। ना जन्मे ना जाए मर, आवण जावण विच ना आ रिहा। आपणी करनी आपे कर, आप आपणी बणत बणा रिहा। साध सन्त हरि जोत धर, आप आपणी बूझ बुझा रिहा। ज्ञान ध्यान देवे वर, चरन धूढ़ इशनान करा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण तेरा दर तेरी झोली पा रिहा। त्रैगुण माया तेरा दान, हरि झोली पांयदा। लोकमाती कर इशनान, अन्तिम डोली पांयदा। जूठ झूठ नाल रल जान, साचा संग निभांयदा। खाली ठूठ दो जहान, नाम भिच्छया कोई ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तेरा लहिणा देणा मूल अन्तिम अन्त चुकांयदा।

लहिणा देणा मूल चुकाए, अन्तिम वारया। पंज तत्त त्रिसूल लगाए, शिव शंकर भुजा उसारया। कन्त कन्तूहल दे मति समझाए, एका देवे शब्द हुलारया। सोहँ सो रसना गाए, एका दूजा भउ निवारया। बाशक तशका गल लटकाए, ढहि पए चरन द्वारया। ब्रह्मा नेत्र रिहा उठाए, चारे मुख रसन उचारया। करोड़ तेतीसा रिहा बिल्लाए, सपुत्र राजा इन्द हाहाकारया। नौ खण्ड पृथ्वी वेख वखाए, सत्तां दीपां करे ख्वारया। जेरज अंडा भेव ना राए, उत्भज सेत्ज पार किनारया। ब्रह्मण्डां खण्डां वंड वंडाए, लोआं पुरीआं पासा हारया। सूरज चन्ना दिस ना आए, रवि ससि अन्ध अंध्यारया। तारा मण्डल मुख छुपाए, ऊँच नीच ना कोई वखा रिहा। भेख पखण्डा रहिण ना पाए, कलिजुग तेरी अन्तिम वारया। कलिजुग कन्ढ़ा इक्क वखाए, लक्ख चुरासी खड़े किनारया। धर्म राए डण्डा इक्क वखाए, लाड़ी मौत करे शृंगारया। चित्रगुप्त लेखा लेख लिखाए, लहिणा मूल चुका रिहा। पुरख अबिनाशी भेखाधारी भेख वटाए, जोती जामा भेस वटा रिहा। धारी केसा पकड़ हिलाए, मूंड मुंडाए आप उठा ल्या। नर नरेशा कोई रहिण ना पाए, दस दस्मेस जोत जगा ल्या। विष्न महेषा सेवा लाए, गणपति ना पूज पुजा ल्या। कुरान अंजील ना कोई पढ़ाए, ईसा मूसा खाक मिला रिहा। नेत्र नैण नीर वहाए, गल पलड़ा एका पा ल्या। खाणी बाणी दए दुहाए, भेव अभेदा भेव ना आ ल्या। वेद पुराण बैठे मुख छुपाए, वेद व्यासा दिस ना आ रिहा। कलिजुग अन्तिम वेख वखाऐ, पुरख अबिनाशी बणत बणा ल्या। लेखा लेख आपणे हथ्थ रखाए, लिखणहारा आप अख्वा ल्या। धरत मात मस्तक मेख लगाए, आप आपणी दया कमा रिहा। नेत्र पेख खेल रचाए, साचा संग निभा रिहा। दर दरवेश आप अख्वाए, दर भगतां डेरा ला ल्या। जोती मेला सहिज सुखदाए, हरि शब्दी जोग कमा ल्या। राग अनादी इक्क अलाए, अनहद ढोल वजा ल्या। दीपक जोती जोत जगाए, अन्ध अन्धेर मिटा ल्या। वरन गोत कोई रहिण ना पाए, ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां एका धाम बहा ल्या। द्वार बंका इक्क सुहाए, आप आपणा भेख वटा ल्या। गुरमुख उधारे जिउँ जन जनका, नाम दान हरि झोली पा ल्या। लेखे लाए पूत सपूता, सनक सनंदन सन्त कुमारा वेख वखा ल्या। खेले खेल बार अनका, एका एक हरि रघुराए। प्रगट होए वासी पुरी घनका, एका डंक वजा ल्या। जन भगतां आत्म जोती लाए तनका, नेत्र लोचन नैण दिस ना आ रिहा। आपे फेरनहारा मन का मणका, पंज तत्त हरि मोह चुका ल्या। जोती शब्दी मेला तन का, मति तत्त हरि इक्क बुझा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया तेरा दर, कलिजुग अन्तिम वेख वखा ल्या। कलिजुग माया तेरा जाल, त्रैगुण आप पसारया। आपे वेखे शाह कंगाल, वेखणहारा दिस ना आ रिहा। दो जहानां बण दलाल, आर पार आप जणा रिहा। लक्ख चुरासी हाल बेहाल,

७७६
०६

धर्मसाल ना कोई जणा रिहा। फल ना दिसे किसे डाल, काया खाली खल्ल वखा रिहा। जूठा झूठा वज्जे ताल, नाम तलवाड़ा ना कोई वजा ल्या। अमृत आत्म भरे ना साचा ताल, सर सरोवर ना कोई नुहा रिहा। बिन गुर पूरे कोई ना तोड़े जगत जंजाल, आवण जावण ना कोई मिटा रिहा। दीपक जोती मस्तक थाल, साचे गगन ना कोई वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, त्रैगुण माया तेरा दर, दर द्वारे फेरा पा रिहा। त्रैगुण माया तेरा हट्ट, हरि साचा वेख वखांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी तीर्थ तट्ट, साध सन्त ना कोई आसण लांयदा। जोत ना जगे काया मट्ट, अन्ध अन्धेर ना कोई मिटांयदा। पल्ले ना दिसे नाम गट्ठ, साचा वणज ना कोई करांयदा। झूठा मन्दिर जाणा ढठ्ठ, अन्त रहिण ना पांयदा। लेखा चुक्के अट्ठ सट्ठ, गंगा गोदावरी वेख वखांयदा। गुर दर मन्दिर मस्जिद जगत इक्ट्ठ, जोग जुगीशर ना कोई वखांयदा। भेव ना जानण तत्त अठ, ना कोई पंचम मूल चुकांयदा। हउमे हँगता पैणा भट्ठ, तृष्ना अग्नी ना कोई बुझांयदा। आपे गेड़नहारा उलटी लट्ठ, आपणी कल वरतांयदा। जन भगतां मेल मिलाए नठ्ठ नठ्ठ, दिवस रैण सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, त्रैगुण माया जाए हर, लक्ख चुरासी मुख भवांयदा। त्रैगुण माया रही कुरला, होणी मात जुदाईआ। ब्रह्मे रो रो रही सुणा, ना होवे कोई सहाईआ। ब्रह्मा बैठा मुख भवा, प्रभ साचे हथ्थ वड्याईआ। खुल्ह्ड़े केस गल विच पा, विष्नूं अग्गे आई कर कर धाईआ। विष्नूं वंसी रिहा कुरला, हउँ सेवक सेवा रिहा कमाईआ। शिव शंकर फड़ाए आपणी बांह, मात पित पूत अख्वाईआ। साचा हित ना बणया मित कोई ना, हथ्थ बैठा त्रिसूल छुडाईआ। बिन हरि कोई ना दीसे छाँ, आप उपाए आपे दए मिटाईआ। करोड़ तेतीसा तेरी छाँ, दूर दुराडे वेख वखाईआ। चारों कुन्ट दिसे ना, ना कोई दीसे भैण भाईआ। रजो तमो सतो ना कोई थाँ, त्रैगुण ना धीर धराईआ। सुरपति राजा इन्द रोवे गल विच पा बांह, वेला अन्तिम दए दुहाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करते आपणी रचना लई रचा, लोकमाती जोत जगाईआ। निहकलंका नाउँ रखा, शब्द डंका इक्क वजाईआ। पकड़ उठाए थाउँ थाँ, माण ताण सर्ब मिट जाईआ। लोआं पुरीआं घर घर उडणे काँ, थिर कोई रहिण ना पाईआ। आपे पिता आपे माँ, पूत सपूता आप अख्वाईआ। गुरमुखां पकड़े एका बांह, दूसर किसे हथ्थ ना आईआ। आप जपाए आपणा नाँ, लिखण पढ़न विच ना आईआ। खाणी बाणी दए उपा, गुर पीर सेवा लाईआ। अन्तिम आपे दए खपा, ना कोई दूसर संग रखाईआ। चौदां लोकां रिहा ढाह, चौदां तबकां रिहा मिटाईआ। संग मुहम्मद चार यार ना कोई देवे ठण्ढी छाँ, उम्मत रसूल रही कुरलाईआ। सुणे पुकार धरत गऊ माँ, नेत्र नीर रही वहाईआ। कलिजुग माया रही खा, आप आपणा अहार कराईआ।

तुध बिन कवण द्वारे जा, साध सन्त ना कोई सुहाईआ। पुरख अबिनाशी करी हां, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। धरत मात वेखे राह, दिवस रैण नैण उठाईआ। पारब्रह्म प्रभ साचे लग्गे चंगा केहड़ा थाँ, भूमिका धाम दए सुहाईआ। नगर खेड़ा इक्क ग्रां, सम्बल नगरी नाउँ रखाईआ। गुर गोबिन्दे पकड़े बांह, आप आपणा राह वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया तेरा घर, लोकमात मार ध्यान, इक्क इकांत वेख वखाईआ। थिर घर शब्द अपार, हरि उपाया। ना कोई चार दिवार, छप्पर छन्न ना कोई रखाया। ना कोई बाडी करे त्यार, ना कोई वेख वखाया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आप आपणा धाम सुहाया। दीपक जोती कर उज्यार, एका एक टिकाया। पवण पवणी ना दिसे हुलार, ना कोई हवनी हवन कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर बणाए एका घर, साचा नाउँ रखाया। थिर घर सच महल्ला, हरि एका एक उसारया। आपे वसे इक्क इकल्ला, आप आपणे रूप समा रिहा। ना कोई दीसे जल थला, ना कोई धरत धवल टिका रिहा। ना कोई लाए ठग्ग चोर यार कर कर हल्ला, ना कोई जन्दर अन्दर तुड़ा रिहा। आपणा दर आपे मल्ला, घर साचे आसण ला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर आप वसा ल्या। थिर घर साचा रंग, हरि एका एक रखाया। शब्द सरूपी नाम पलँघ, अन्दर मन्दिर डाहया। आप आपणी मंगी मंग, घर आपणे मंगण आया। आप आपणे बैठा संग, नारी कन्त रूप आप अख्वाया। आप वजाए आपणा मृदंग, आपणी तार सितार हिलाया। आपे कटे आपणी भुक्ख नंग, आप आपणा आहार कराया। आपे डोरी आप पतंग, आप आपणा रिहा उडाया। दर दरवाजा आपणा लँघ, आप उप्पर आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरख अबिनाशी एका धाम सुहाया। सच भूमिका साचा थान, साची धरत सुहाईआ। साची गऊआं साचा काहन, साचा भेख वटाईआ। साचा नाम सच निशान, साचो सच जणाईआ। अमृत सीर पीण खाण धुर दी बाण रखाईआ। नाम वरोले दुध्ध मधान, कर किरपा आप वधाईआ। आपे जाणी जानण जाण, आपे वेख वखाईआ। धर्म बणाए इक्क मकान, मण्डल मण्डप माढ़ी सर्ब ढहि जाईआ। सत्त रंग झुलाए नाम निशान, अक्खर वक्खर लेख लिखाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी सारे गान, चार वरन इक्क सरनाईआ। सत्तां दीपां पाए आन, पारब्रह्म सच्ची सनाईआ। गुरमुख मेला हाणी हाण, सज्जण सुहेला आप मिलाईआ। आपे देवे दानी दान, आत्म झोली आप भराईआ। करे कराए पुण छान, चारों कुन्ट वेख वखाईआ। बिरध बाल नौजवान, वेस अवेसा वेस वटाईआ। पुरख अबिनाशी हरि सुल्तान, साचे घर समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे रिहा जणाईआ। अमृत आत्म चिट्टा दुध्ध, साचा सीर वखांयदा। आपे अस्व बहि कुद्द, चारों

कंट दुड़ांयदा। निर्मल नरायण करे बुध, नौ धार वहांयदा। सम्मत सम्मती पाए सुध, वेला आपणे हथ्थ रखांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी लग्गा युद्ध, धर्म युधिष्टर आप धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग समांयदा।

साचा सीर नाम किउड़ा, हरिजन आप भरांयदा। पीवणहारा थोड़ा थोड़ा, जोड़ी जोड़ा जोड़ जुड़ांयदा। आपे भन्ने रीठा कौड़ा, दुरमति मैल गंवांयदा। जगत चढ़ाए पहला पौड़ा, एका राह वखांयदा। सुखमन नाड़ी राह सौड़ा, बिन गुर पूरे ना कोई पार करांयदा। जन भगतां आत्म अन्तर लग्गी औड़ा, दिवस रैण बिल्लांयदा। कलिजुग अन्तिम आपे बौहड़ा, आप आपणी दया कमांयदा। धुरदरगाही आया दौड़ा, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। साचा नगर सच ग्राम साचा धाम ना कोई जाणे लम्बा चौड़ा, ना कोई लेख लिखांयदा। आपे मक्खण दुध्ध वरोले, आप छाछ बणाईआ। हरिजन मन्दिर आपे बोले, आपे भेख वटाईआ। आपे गऊ आपे चोअ ले, आपे धार वहाईआ। काया धरती आपे मौले, हरि हरयावल आप वखाईआ। आपे उलटी करे नाभ कँवले, अमृत धार वहाईआ। मेल मिलाए सँावल सँवले, काहना कृष्ना रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहारा थाउँ थाँईंआ। दुध दोहया काया भाण्डे, साची वस्त टिकाईआ। जोती अग्नी माया हांडे, इक्क उबाल लगाईआ। नाम प्याले पाया ठांढे, सीतल धार रखाईआ। अर्जन पुच्छे आंढ गवांढे, कवण रूप हरि रघुराईआ। जीव जन्त थक्के मांदे, ना कोई भेव खुल्हाईआ। रसना बहि बहि सारे गांदे, दिस किसे ना आईआ। चरन धूढ़ जो जन नहांदे, दुरमति मैल गंवाईआ। दर दुआरा एका पांदे, साची भूमिका धाम सुहाईआ। आसी पासी रोंदे जांदे, छेड़ू रहे छेड़ छिड़ाईआ। जंगल जूह उजाड़ दसांदे, उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण दिशा वेख विखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेख वटाईआ। गग्गा गुर गोबिन्द गां, नाम सीर चुआया। दस्म द्वारी साचा थाँ, इक्क अख़ीर विखाया। आपे पकड़े पकड़नहारा बांह, महल्ल अटल इक्क बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला इक्क दर, दर दुआरा रिहा सुहाया। दक्खण दिशा गोबिन्द रास, आपणी आप टिकाया। प्रगट होवे नौ दस मास, दहि दिशा वेख वखाईआ। सर्ब वस्त गुर सतिगुर पास, देवणहार आप अख्वाईआ। गुरसिख ना होए मात उदास, भिखक भिच्छया झोली पाईआ। भाग लगाए जंगल जूह विच प्रभास, आस पास धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा चरन टिकाईआ। त्रैगुण माया तेरी रास, कलिजुग अन्त वखाईआ।

खेले खेल पृथ्वी आकास, साध सन्त संग रलाईआ। गुर दर मन्दिर अन्दर कर कर वास, बैठी रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तेरा लेखा लेख वखाईआ।

त्रैगुण माया तेरी धार, चारों कुन्ट पसारया। नौ खण्ड पृथ्वी अन्ध अंध्यार, दीवा बत्ती ना कोई जगा रिहा। सत्तां दीपां आई हार, कमलापती ना कोई मना रिहा। लक्ख चुरासी रोवे ज़ारो ज़ार, धरत धवल ना धीर धरा ल्या। राए धर्म खोल्ह् किवाड़, एका राह वखा रिहा। संग रखाए मौत लाड़, हथ्थीं मैहन्दी लाल रंगा ल्या। सगन मनाए सतारां हाढ़, लोकमाती लेख लिखा ल्या। मिले मेल जंगल जूह उजाड़ पहाड़, जल थल वेख विखा ल्या। आप उठाए आपणी धाड़, एका पल्ला नाम करा ल्या। धरतमात तेरा इक्क उखाड़, शब्द अखाड़ा आप रचा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया भेंट चढ़ा ल्या। त्रैगुण माया तेरी भेंटा, प्रभ साचे आप चढ़ाईआ। आपे होए खेवट खेटा, बेपरवाह मलाह अख्वाईआ। नेत्र लोचन तेरा राह आपे वेखा, आपे मार्ग पाईआ। लहिणा देणा चुकाए देस प्रदेसा, लक्खण रूप वटाईआ। करौच धारे आपणा भेसा, पुष्कर मुख छुपाईआ। जम्बु मेला नर नरेशा, सान करे कुड़माईआ। सलमल देवे जगत अंदेसा, कुशा खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया मेट मिटाईआ। त्रैगुण माया तेरा रंग, प्रभ साचा आप मिटांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी वेख पलँघ, घर साचे आसण लांयदा। इक्क वजाए जगत मृदंग, साची तार हिलांयदा। कुलाखण्ड प्रभ पाए वंड, इलाबुत समझांयदा। केतमाल माल भंग, किंपुरख जोबन हंढांयदा। हरवरख कलि दीसे नंग, खण्ड भारत जोड़ जुड़ांयदा। हरणयमह तन रोवे रंड, नारी कन्त विछोड़ा पांयदा। भद्र तेरा तोड़ घमंड, एका खण्डा वांहयदा। रमक रो रो पावे वंड, नेत्र नीर वहांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी तेरी वंड, त्रैगुण माया आप वंडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप उपाए आप मिटाए आपे लेख लिखांयदा। त्रैगुण माया तेरी रत्त, प्रभ आपणे विच समाईआ। ना कोई डाल्ही ना कोई पत, फुल फुलवाड़ी रहिण ना पाईआ। ना कोई रथवाही ना कोई रथ, महांसार्थी ना कोई अख्वाईआ। ना कोई पूजा पाठ ना कोई गथ, रसना जिह्वा कोई ना गाईआ। ना कोई पंज तत्त नक्क मूंह ना दीसे हथ्थ, नेत्र नैण वेख वखाईआ। चौदस चौदां बुरज गया ढठ्ठ, ना कोई मात बणाईआ। शब्द सरूपी तपया मट्ठ, जोती अग्नी लाईआ। पाणी वारन अट्ठ सट्ठ, धरतमात हथ्थ उठाईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद करन चट्ठ, बैठे सीस झुकाईआ। कलिजुग तेरा अन्तिम हट्ठ, लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिजुग चरन द्वारे गया ढठ्ठ, प्रभ

अग्गे सीस झुकाईआ। गुरमुखां मेला इक्क इक्ट्ठ, सच सच्ची सरनाईआ। आपे गेड़नहारा उलटी लट्ठ, उलटी धार वहाईआ। लेखे लाए हाडी तिन्न सौ सट्ठ, बहत्तर नाड़ी वेख वखाईआ। त्रैगुण माया पई भट्ठ, अन्तिम अन्त मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंज तत्त तेरी जगत लड़ाईआ। त्रैगुण माया गई समा, आपणा मुख छुपाया। गुरमुखां मात गई समझा, राह साचा इक्क वखाया। बिन गुर पूरे कोई ना पकड़े बांह, वेला अन्तिम आया। धर्म राए दए सजा, नेत्र नैण रिहा उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया तेरा भट्ठ, साध संगत कर इक्ठ, आपणी नईआ आप चलाया। साध संगत तेरा हवन, अन्तिम कलिजुग कराया। नौ खण्ड पृथ्वी दए सुनेहड़ा पवन, पवणी सेवा लाया। वेख वखाए अवण गवन, बावन बवन भेख वटाया। मनमुख शंघारे जिउँ रामा रवन, एका खण्डा हथ्थ उठाया। खेले खेल नाथ त्रिलोकी विच त्रैभवन, त्रै देशां वेख वखाया। राज राजानां शाह सुल्तानां ना मिले सवन, गूढ़ी नींद ना कोए रखाया। हरि का भाणा जाणे कवन, पढ़ पढ़ थक्के जीव सबाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया अग्गे धर, एका अग्नी भेंट चढ़ाया। त्रैगुण माया अग्गे रक्ख, प्रभ आपणी कल वरताईआ। प्रगट होए हरि प्रतक्ख, खेले खेल सृष्ट सबाईआ। सन्त सुहेले लए रक्ख, अक्खर वक्खर इक्क पढ़ाईआ। चार कुन्ट उडाए रक्ख, दहि दिशा अन्धेरा छाईआ। साधां सन्तां भाण्डे सक्ख, सच वस्त ना कोई टिकाईआ। भाग निखुटे मस्तक मथ्था, बिधना रेखा रिहा मिटाईआ। लेख चुकाए नौ नाथ, सिद्ध चुरासी रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया तेरा ज़र, तेरे गल पहनाईआ। त्रैगुण माया कर श्रृंगार, आपणा आप विचारया। जूठा झूठा मीत मुरार, लोकमात पासा हारया। ना कोई दीसे सांझा यार, देवे अन्त सहारया। रो रो करे गिरयाज़ार, नेत्र नैण नीर वहा रिहा। कर्म कुकर्मी मारी मार, धर्मी धर्म ना कोई वखा ल्या। शरमी शरमा होई शरमसार, मुख काला घूंगट पा ल्या। धर्म राए दा पुच्छ द्वार, आप आपणा कदम उठा ल्या। आपे खड़ी अधविचकार, सज्जा चरन उठा ल्या। दर दहिलीजों पार आर, अन्दर बाहर वेख वखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रैगुण माया खेल कर, अन्तिम मेट मिटा ल्या। अन्तिम मेटे मेटणहार, जुग जुग रचन रचाईआ। कलिजुग अन्तिम उतरया पार, संग मुहम्मद चार यार बैठे संग निभाईआ। अल्ला राणी कर प्यार, हू हू नाअरा लाईआ। ऐली अल्ला शाह सवार, इक्क इकल्ला आप अख्वाईआ। सच मुसल्ला अपर अपार, आसण सिँघासण रिहा वछाईआ। रोज़ा कूजा बांग अधार, स्वांगी स्वांग वरताईआ। दलाल ऐली शाह अस्वार, इक्क इकल्ला आप अख्वाईआ। दस्तगीर विच संसार, महिबान रूप समाईआ। खलक खुदाए वेख विचार, खुदी तकबर रिहा ढाहीआ।

बेपरवाहे परवरदिगार, अहिनल हक्क नाअरा लाईआ। ख्वाजा खिजर मीत मुरार, नेत्र नीर वहाईआ। मदीना मक्का डूँघी गार, एका खंदक रिहा खुदाईआ। कलिजुग लेखे लग्गे लक्ख चार बत्ती हज़ार, वेद व्यासा गया लिखाईआ। छत्ती जुग खेल करतार, खेलणहार सृष्ट सबाईआ। जगी जोत अगम्म अगम्म अपार, जोती जामा भेख वटाईआ। शब्द धुन सच्ची धुन्कार, पारब्रह्म ब्रह्म जणाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, ओंकारा रूप समाईआ। जगत अन्दर पावे सार, सागर सिन्ध वेख वखाईआ। गोबिन्द डल्ला इक्क प्यार, इक्क महल्ला रिहा वसाईआ। घड़ी घड़ी पल पला दरस प्यार, नेत्र लोचन आप वखाईआ। वलीआ छलीआ विच संसार, कलिजुग अन्तिम भेख वटाईआ। चिट्टे अस्व हो अस्वार, नीला नीली धारों पार कराईआ। सोलां कल सीआं तन शृंगार, एका आसण लाईआ। शस्त्र बस्त्र तेज कटार, आप आपणे हथ्थ उठाईआ। सम्मत तेरां नानक धार, लोकमात आप चलाईआ। तोला बण वड बलकार, सोहँ कंडा हथ्थ उठाईआ। दो जहानां दए हुलार, इक्क हुलारा नाम लगाईआ। सम्मत चौदां किरपा धार, गुरमुख साचे लए तराईआ। आपे वेखे दर द्वार, दर दरवेशा फेरा पाईआ। पंच जेठा मीत मुरार, आप आपणी कल वरताईआ। जन भगतां रक्खे साया हेठां, साचा संग सच्ची सरनाईआ। लक्ख चुरासी भन्ने कौड़ा रीठा, एका खण्डा हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, ब्रह्मण्ड वंड वंडाईआ। पंचम जेठ जोत निरँजण, एका चन्द चढ़ाया। अमृत आत्म पी पी रज्जण, सर सरोवर इक्क सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुर गोबिन्द साचा मेला, प्रभ साचा मेल मिलाया। आपे होया सज्जण सुहेला, आपणी गोद उठांयदा। जोत सरूपी चाढ़े तेला, साचा मंगल गांयदा। पंचम सखीआं पायण वेला, साची रुत्त सुहांयदा। आदि अन्त जुगा जुगन्त छैल छबीला, एका रंग समांयदा। त्रैगुण माया जोती अग्नी लाए तीला, तत्त मति ना कोई रखांयदा। गुर गोबिन्द काया बस्त्र पाए पीला, एका चोली नाम रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैगुण माया तेरा दर लोकमाती बन्द करांयदा। लोकमात मार झात, प्रभ आपणी कल वरताईआ। आपे बैठा इक्क इकांत, थिर घर डेरा लाईआ। जन भगतां बख्शे अमृत बूंद स्वांत, निझर रस मुख चुआईआ। मेट मिटाए अन्धेरी रात, दीपक साची जोत जगाईआ। डूँघा सागर ना आए हाथ, ना कोई फोल फुलाईआ। सम्मत चौदां तेरी गाथ, वेद पुराणां मूल ना गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चौदां हट्टां वेख वखाईआ। चौदां हट्टां खोल्ह किवाड़, प्रभ नेत्र नैण उग्घाड़या। खेले खेल सतारां हाढ़, जंगल जूह उजाड़ पहाड़या। सतिजुग साचा घड़े घाड़, घड़नहारा आप अख्वा रिहा। सृष्ट सबाई लुट्टी जाए दिन दिहाड़, हथ्थ किसे ना आ रिहा। मनमुख सुत्ते पैर पसार,

माया पड़दा पा रिहा। हरिजन साचे मीत मुरार, सोए आप उठा रिहा। त्रै देशां वेखे वेख विचार, त्रैगुण मुख छुपा ल्या। धारी केसा रहिणा ख़बरदार, सुफल कुक्ख ना कोए करा रिहा। लहिणा देणा मुहम्मदी यार, दर द्वारे आप चुका रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत चौदां देवे वर, दो जहाना धरनी धर, धरत धवल धाम सुहा ल्या। धरत मात तेरा जगत अखाड़ा, हरि साचा आप बणांयदा। लेख लिखाए सतारां हाढ़ा, त्रै देशां आप उठांयदा। त्रैगुण माया मंगे भाड़ा, अन्तिम झोली आप भरांयदा। लाड़ी मौत कढ्ढे हाढ़ा, धर्म राए डोली आप उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंज तत्त तेरी बणाए गोली, मन मति बुध खेडे होली, एका रंगण रंग चढ़ांयदा। सम्मत चौदां चौदां लोक, प्रभ साचा आप हिलांयदा। इक्क जणाई शब्द सलोक, धुरदरगाही आप सुणांयदा। हरि का भाणा कोई ना सके रोक, ना कोई मेट मिटांयदा। मनमुख जीवां देवे झोक, ना कोई मोख करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, चौदां चौदस वेख विखांयदा। त्रै देस कर कर वेस, आए विच मैदानया। पकड़ उठाए नर नरेश, मगर लगाए पंज शैतानया। खेले खेल दस दस्मेस, रसना चिल्ला तीर कमानया। भरमे भुल्ले धारी केस, मिले मेल ना विच जहानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आपे गोपी आपे काहनया। गोपी काहना हरि मुरारी, भेखी भेख वटांयदा। गुरमुख मेला बंक द्वारी, दर दुआरा इक्क सुहांयदा। सम्मत पन्दरां कर त्यारी, तीर्थ तट्टां वेख वखांयदा। वेखणहारा वड संसारी, देस पर्देशां फेरा पांयदा। लंका गढ़ तोड़ हँकारी, आप आपणा चरन टिकांयदा। रूसा चीना पैज संवारी, ईसा मूसा दर रुलांयदा। काला सूसा तन शृंगारी, नेत्र नैणां मुख छपांयदा। प्रगट होवे परवरदिगारी, अहिमद मुहम्मद वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पन्दरां अन्दर डेरा लांयदा। सम्मत सोलां लए रक्ख, गुरमुख चरन द्वारया। लाहौर शहर हो प्रतक्ख, चरन छुहाए विच दरबारया। चारों कुन्ट उडाए कक्ख, दहि दिशा होए उजाड़या। माझा देस जगत ढक्क, सिँघ शेर शेर ललकारया। ग्रन्थी पन्थी देवे धक्क, पार कराए ब्यास किनारया। गुरमुख साचे कीने वक्ख, एका वेखे नाम अधारया। मनमुख जीव मारन झक्ख, वेला वक्त ना किसे विचारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत सोलां करे शृंगारया। सम्मत सोलां कर शृंगार, आपणा वेस वटांयदा। दस दस्मेस किरपा धार, रूप अनूपा आप हो जांयदा। वेख वखाए ब्यास किनार, गुर गुर चेले पकड़ हिलांयदा। शब्द खण्डा तेज कटार, पंज तत्त आप जलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्तिम वार वेख वखांयदा। अन्त दुआरा आपे वेखे, आपे लए उपाईआ। सावण जैमल लाए लेखे, लहिणा देण चुकाईआ। पार

किनारा एका वेखे, थल कपूर सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, राज राजानां मेल मिलाईआ। थल कपूर चरन टिका, आपणी जोत जगांयदा। माझा देस दए तजा, ना कोई संग निभांयदा। दो दो आबा मेल मिला, पल्लू नाम फड़ांयदा। बस्त्र गहणा तन छुहा, काया चोला वेख विखांयदा। आप आपणा राह तका, गुर संगत संग निभांयदा। मस्तूआणे डेरा ला, जोत प्रकाश इक्क वखांयदा। पंचम मीता पंचम जोत जगा, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। गुर संगत चरन लए बहा, दूई द्वैती पड़दा लांहयदा। बजर कपाटी दए तुड़ा, साची हाटी हट्ट विकांयदा। दरस अनमुल्ला दए वखा, स्वच्छ सरूप आप हो जांयदा। काया कुला भाग लग्गा, हरिजन भुल्ला मार्ग लांयदा। अमृत डुल्ला मुख चुआ, नाभी कँवल आप उलटांयदा। फल फुलवाड़ी दए उगवा, एका झिरना नाम झिरांयदा। शाह संगरूर सेवा ला, पट पटियाला नाल रखांयदा। बैठ सिँघासण बेपरवाह, एका शब्द अलाुंयदा। सुन्न मुन्न कराए थाउँ थाँ, साधक सिद्ध ना कोई कहांयदा। चुण चुण गुरसिख लए जगा, जागरत दिशा इक्क विखांयदा। गुण अवगुण ना कोई जणा, जगत जोग इक्क कमांयदा। चार वरन जपाए एका नाँ, एका धाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त मनी सिँघ तेरा लिख्या लेख, जोती जामा धर धर भेख, अन्तिम पूर करांयदा। हरिसंगत दर आए, चरन कँवल चित लाया। मंग मंगण ना सके, दर अग्गे झोली डाहया। रोग सोग चिता दुःख रहे सताए, नेत्र नैण चैन ना पाया। गुरसिख आत्म रही बिल्लाए, अमृत बूंद स्वांती मुख चुआया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आसा मनसा पूर कराया। गुरमुख मंगे नाम सुक्ख, तन मन ठांढा सीत। जूठा झूठा उतरे दुःख, बख्शे चरन प्रीत। सुफल कराए मात कुक्ख, काया सीतल सीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हर घट अन्दर बैठा परखे नीत। हरिसंगत हरि रत है, रती रत्त प्यार। आपे दे समझाए मति है, मिले गुर शब्दी नाम अधार। हरि शब्द साची वत्थ है, रसना जिह्वा गुण विचार। जगत वसूरा देवे मथ है, हउमे रोग निवार। गुर सतिगुर पूरा आपे लए रक्ख है, जो जन आए बंक द्वार। मानस देही कल ना लक्ख ना कक्ख है, ना कोई हीरा परखे परखणहारा विच संसार। हरिजन आपे करे परख है, आपणी किरपा धार। देवे दरस हरि प्रतक्ख है, नेत्र तीजा दए उग्घाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जो जन आए साचे दर है, आप कराए पार किनार। रोग सोग पवण मसाना, पंज तत्त समाया। जो जन करे चरन ध्याना, दुःख रोग रहिण ना पाया। इक्क बिठाए शब्द बिबाना, चिन्ता रोग सोग गंवाया। पतिपरमेश्वर घर साचे पाणा, नारी कन्ता एका सेज हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत निज घर वेख विखाईआ। निज घर आत्म शब्द

सलाह, एका एक रखाईआ। सतिगुर साचा बण मलाह, बेड़ा बन्ने लाईआ। लक्ख चुरासी कटे फाह, आवण जावण फंद कटाईआ। होए सहाई थाउँ थाँ, जिस जन ओट रखाईआ। सोहँ जणाए साचा नाँ, सो पुरख निरँजण मेल मिलाईआ। हँ हँगता दए गंवा, साची संगता संग निभाईआ। नानक अंगद गले लगा, गुरमुख साचे रिहा तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सन्त आसा पूर कर, निरासा कोई रहिण ना पाईआ। मनमुख सदा निरास, दर द्वार कुरलाईआ। लेखे लग्गे ना स्वास स्वास, मानस जन्मा रिहा गंवाईआ। आवण जावण गर्भ वास, लक्ख चुरासी फाँसी पाईआ। पंच विकारा दासी दास, पंचम रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख मनमुख वेख वखाईआ। मनमुख माया गया भुल्ल, आत्म दर हंकारया। जगत विकारे गया रुल्ल, जूठा झूठा तन शृंगारया। काया बूटा गया हुल, फल लग्गे ना विच संसारया। पाणी पया काया चुल्ह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख मुन रिख अकेले दर द्वारया। हरिसंगत सच रंग, एका नाम चढ़ानया। दरस दान दर लए मंग, मिले मेल श्री भगवानया। अमृत आत्म धार वहाए साची गंग, करे कराए सच इशनानया। आपे कट्टणहारा भुक्ख नंग, हरि हरि भाणा जिस जन मन्नया। काया माटी काची वंग, जो घड़या सो भन्नया। गुरमुख लगाए आपणे अंग, अंगीकार आप अख्वंनया। शब्द रंगीले बैठ पलँघ, देवे नाम सचा धन धनया। माणस जन्म ना होए भंग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन आत्म मन्नया।

७८८
०६

✻ १७ हाढ़ २०१४ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✻

सतिजुग तेरी साची धार, प्रभ आपणे हथ्थ रखाईआ। जोत सरूपी कर आकार, अकल कला अख्वाईआ। खण्डां ब्रह्मण्डां पावे सार, खोजणहारा खोज खुजाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, लहिणा देणा मूल चुकाईआ। त्रैगुण माया कर ख्वार, पंचम पन्ध मुकाईआ। शब्द घोड़े हो अस्वार, पुरीआं लोआं पार कराईआ। ब्रह्मा शिव देवत सुर करे ख़बरदार, लोकमाती फेरा पाईआ। हाढ़ सतारां वेख विचार, प्रभ अबिनाशी किरपा धार, जन भगतां लहिणा देणा बाकी आप आपणा करज उतार, आप आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अमृत आत्म देवे बाकी, भर प्याला अन्दर मन्दिर आप प्याईआ। काया मन्दिर सच टिकाणा, हरि साचे जोत जगाईआ। आपे बैठ श्री भगवाना, आत्म सेजा रिहा हंढाईआ। जिस जन बख्शे चरन ध्याना, अन्तिम बूझ बुझाईआ। भरमे भुल्ले जीव नादाना, मनमुखां सार ना राईआ। नौ खण्ड पृथ्वी झुल्ले इक्क निशाना, प्रभ साचा आप झुलाईआ। सम्मत चौदां वेखे मार ध्याना, बवंजा देसां आप

उठाईआ। गुर गोबिन्द तेरा दर परवाना, शब्दी शब्द रिहा पुजाईआ। सेवा लाए पवण मसाना, पवण पवणां विच समाईआ। अवण गवण हरि शब्द खुल्ह्लाणा, हर घट वेख वखाईआ। गुरमुख साचे चतर सुजाना, साचा राह तकाईआ। जूठा झूठा पीणा खाणा, राउ रंकां साधां सन्तां रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुर संगत रिहा समझाईआ। गुर संगत तेरा सच विहार, आपणे हथ्थ रखाया। आप कराए अन्तिम वार, सेवक सेवक बण के आया। मंगे मंग दर बण भिखार, अग्गे झोली डाहया। जूठा झूठा नाता मीत मुरार, साक सज्जण सैण भाई भैण दिस ना आया। इक्क इकल्ला एकँकार, इक्क महल्ला रिहा वसाया। नौ खण्ड पृथ्वी आप उठाए लक्ख चुरासी नौ द्वार, जुग जुग आपणी बणत बणाया। दसवें बैठ कन्त भतार, एका रिहा सेज विछाया। हरि सन्त नारी कर प्यार, हाढ़ सतारां लए प्रनाया। चारों कुन्ट वेख विचार, दहि दिशा फेरा पाया। बीस बीसा हरि जगदीसा इक्क इकीसा आप अख्वाया। छत्र झुलाए साचे सीसा, दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिसंगत तेरा साचा राह, शब्द सरूपी बण मलाह, सतिजुग साचा रिहा जगाया। हरिसंगत दर परवान, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। एका देवे धुर फ़रमाण, अभेद अभेदा भेव ना राया। इक्क वखाए चरन ध्यान, ना कोई रखाए जणाए चतर सुजान, आप आपणा खेल खिलाया। पारब्रह्म भेव ना पाण, साधां सन्तां तोड़े माण, जीव जन्त रिहा समझाया। सोहँ शब्द ब्रह्म ज्ञान, इक्क ध्यान लगाया। जुग जुग खेले खेल महान, वेद पुराण ग्रन्थ कतेब किसे ना देख्या कवण दर कवण घर कवण आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सेवक सेवादार अख्वाया। सेवक हरि बलवान, एका एक अख्वांयदा। गुरमुख साचे चतुर सुजान, जुग जुग संग निभांयदा। माण निमाणयां देवे माण, निताणयां ताण आप हो आंयदा। खाणी बाणी कर पछाण, वेद पुराणी वेख वखांयदा। दाता दानी मेहरवान, एका अक्खर जगत वक्खर आपणा नाम रखांयदा। साचा मेला रोड़ी सक्खर, पन्दरां पन्दरां आप मलांयदा। लिख्या लेख उप्पर पत्थर, चार यारां संग मुहम्मद नबी रसूलां करे सथ्थर, अल्ला राणी नेत्र नीर वहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, वेस अवेसा दर दरवेसा एका एक अख्वांयदा। दर दरवेशा बण भिखारी, अकल कला वरताईआ। सम्मत पन्दरां कर त्यारी, शाह पाक रिहा उठाईआ। नीले बस्त्र गल मुख नकाब, दर दरवेशा भेख वटाईआ। हथ्थ ना आए किसे कतेबा, मुल्ला काज़ी शेख़ मुसायक रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर दर घर घर जा जा रिहा जगाईआ।

इक्क इकल्ला एकँकार, एका रंग समाया। जोती नूर कर उज्यार, आपणा आप उपाया। शब्द सुत सच दुलार, आपणी गोद उठाया। एका दूजा मीत मुरार, घर तीजा वेख वखाया। चौथे घर खेल न्यार, आप आपणा रिहा कराया। सन्त सुहेले साचे यार, जुग जुग मेल मिलाया। पंचम मीता कर प्यार, पंचम राग अल्लाया। छेवें छप्पर छन्नां वसया बाहर, दिस किसे ना आया। सति पुरख निरँजण साची कार, सति सतिवादी करदा आया। अट्ठ तत्त ना वेख विचार, हड्ड मास नाड़ी रत्त ना कोई बणाया। नौ दर ना दिसे नौ किवाड़, काया मन्दिर ना कोई सुहाया। दस दस्मेसा एका यार, शब्द सिँघासण कर त्यार, जोती नूर पसर पसार, बैठा आसण लाया। आसण लाया हरि निरँकार, एका जोत जगाया। शब्द चलाए साची धार, अचरज खेल रचाया। आदिन अन्ता जुगा जुगन्ता एकँकार, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, खेले खेल सृष्ट सबाया। लक्ख चुरासी भरमे भुल्ले जीव गंवार, माया पड़दा उप्पर पाया। जूठे झूठे फले फुले ना कोई अन्तिम पावे सार, चारों कुन्ट रहे कुरलाया। गुरमुख विरले भाग लगाए काया डाल्ल, आप आपणी दया कमाया। मानुस बूटे मानुक्ख हुल्ले, साचा फल ना कोई दिसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका खेले खेल खेलणहार अख्वाया। कलिजुग खेल खिलावण आया, दो जहानां वाली। गुरमुख सोया मात जगावण आया, चाल अवल्लड़ी चाली। गोबिन्द काया भाग लगावण आया, धुरदरगाही साचा बाली। आप आपणा संग निभावण आया, दोवां हथ्थां रक्खे खाली। सतिजुग तेरा साचा राह चलावण आया, फल लगाए साची डाल्ली। चार कुन्ट दहि दिशा नौ खण्ड पृथ्वी लक्ख चुरासी गुरमुखां काया मन्दिर हल्ल चलावण आया, अमृत बीज बीजे साचा बणया आपे हाली। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द मेला सच दर, कलिजुग तेरा वेखे घर, खोल्ल द्वार लग्गा फल, पति पत डाल्ली। गोबिन्द दाता बण भिखार, प्रभ अग्गे पुकारया। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, कलिजुग अन्तिम वारया। पूत सपूता दित्ता वार, ना लग्गा पार किनारया। नानक शब्द लेख लिखार, दोए जोड़ करे निमस्कारया। पुरख अगम्मा तेरा दर दरबार, लोकमात ना किसे विचारया। काली रैण अन्ध अंध्यार, रवि ससि सूरज चन्न मुख छुपा रिहा। साध सन्त गुर पीर औलीए शेख़ मुसायक गए हार, जीवां जन्तां भार ना कोई उठा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दा दे मति आप समझा रिहा। गुर गोबिन्द अन्त समझाई, एका धुर फ़रमानया। अन्तिम वेला होए जुदाई, राह खैहड़ा ना कोई रखानया। पैणा राह लम्बे पन्ध जगत नाता आप तुड़ानया। कलिजुग अन्तिम देवे ठंडीआं छाँई, सीस तोड़ा नाम निशानीआ। गुरमुख उठाए फड़ फड़ बांही, सरसे तेरी भेंट चढ़ानया। माता गुजरी ना रोवे गल विच पाए

बाहीं, हरि भाणे विच समानया। पन्थ ख़ालसा सुत्ता पैर पसारी, सम्मत पन्दरां फड़ दाहड़िउँ आप हिलानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग बेड़ा पार करानया। कलिजुग तेरा काला रंग, चार कुन्ट वखानया। कोए ना दिसे संग, राज राजान होए वैरानया। लक्ख चुरासी होणी भंग, किसे दर ना मंगे नाम सच्चा दानया। काची माटी काची वंग, ना कोई दिसे अन्त निशानीआ। मन मति बुध प्रभ लाया जंग, सम्मत चौदां तेरी एह निशानीआ। लाड़ी मौत घर घर बस्त्र रही मंग, धर्म राए दर करे परवानया। गुर संगत तेरा अंग संग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानया। लोआं पुरीआं आपे लँघ, देवत सुर ब्रह्मा शिव दोए जोड़ सीस करन निमस्कारया। अमृत धारा वहाए गंग, हाढ़ सतारां सम्मत चौदां प्रभ दाता वड मेहरबानया। आपे कट्टणहारा भुक्ख नंग, देवे दान हरि भगवान आत्म ब्रह्म ज्ञान शब्द धुर फ़रमानया। भरमे भुल्ले जीव नादान, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हर घट होया जाणी जाणया।

बीस सद चौदां चौदां लोक, हरि नामे वज्जी वधाईआ। नाम जैकारा सच सलोक, प्रभ साचा रिहा सुणाईआ। दो जहानां ना कोई सके रोक, राह विच ना कोई अटकाईआ। लोकमाती जन भगतां देवे साची मोख, एका अक्खर जाप जपाईआ। हउमे दूई द्वैती कढ्ढे खोट, तृष्ना भुक्ख रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग चौथे वेस वटाईआ। चौथे जुग वेस अवल्ला, हरि आपणा आप कराया। आप वसाया सच महल्ला, गोबिन्द सेवा लाया। गोबिन्द मेला साचा डल्ला, एका रंग रंगाया। पंचम मीता पंच प्यारा पंचम करे हल्ला, एका खण्डा हथ्थ उठाया। एका शब्द एका ढोला एका सोहला एका राग इक्क सुणाए महल्ला, एका जोग कमाया। जुग जुग वेखे जोत निरँजण, आपणी जोत जगाईआ। जन भगतां नेत्र पाए अंजन, खेले खेल सृष्ट सबाईआ। चरन धूढ़ बख्शे साचा मजन, सम्मत चौदां हाढ़ सतारां जिस जन दर द्वारे नेत्र नैणा दर्शन पाईआ। भाण्डे गढ़ हँकारी दर द्वारे भज्जण, नाम खण्डा रिहा वखाईआ। राग नगारे अनहद ताल अनादी वज्जण, साची धुन रिहा सुणाईआ। गुर गोबिन्दा आया पड़दे कज्जण, नाल रलया पुरख अबिनाशी साचा माहीआ। दर द्वार बंक उच्च महल्ल अटल राजे राणे सर्ब तज्जण, थिर कोए रहिण ना पाईआ। सर अमृत कोई ना दिसणा सज्जण, प्रभ इट्ट नाल इट्ट खड़काईआ। कोई ना किसे रक्खे लजन, दाढ़ी मुच्छ ना कोई वखाईआ। निरगुण हरि शाहो भूप सति सरूप, वेख वखाए थाउँ थाँईंआ। रामदास तेरे दर द्वारे कूड़ कुड़यारा जूठ झूठ, बैठा आसण लाईआ। गोबिन्द नानक गया रुठ, चारे कुन्टां बैठा मुख भवाईआ। साधां सन्तां हथ्थ खाली ठुठ दर दर माया भिच्छया मंगण, कोए नाम वस्त

खैर ना पाईआ। पुरख अबिनाशी गया तुठ्ठ, गुरमुख विरले एका मुठ आपणी तन्दी सोहँ सुगंधी, मस्तक टिक्का चरन धूढ़ी खाक इक्क रमाईआ। सतिजुग माया रंग चाढ़े गूढ़, उतर कदे ना जाईआ। सुघड़ स्याण बणाए मूर्ख मूढ़, चार वरन एका सरन ऊँचां नीचां फड़ फड़ बाहों गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुर गोबिन्दे दित्ता वर, सम्बल नगरी डेरा कर, साचा मेल मिलाईआ। मिल्या मेल गुर गोबिन्दा, जोती चिन्त मिटाईआ। सृष्ट सबाई करे निन्दा, गुरमुखां मिली वधाईआ। त्रैगुण माया सच द्वारे मारी बैठा जिंदा, कुंजी ब्रह्मे हथ्थ फड़ाईआ। विष्नूं बंसी सदा बख्शिंदा, देवे रिजक सबाईआ। एका दरस दान हो मेहरवान जुग जुग हरिभगतन दिन्दा, आप आपणा भेख वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, सम्बल नगरी हरि वेस कर, गुर गोबिन्दा मेल दर, घर साचा इक्क सुहाया। सम्बल नगरी तेरी धार, त्रैलोक करे उज्यारया। शब्द खण्डा तेज कटार, शस्त्र बस्त्र इक्क श्रृंगारया। नीला नीली छत्तों करे बाहर, नीले वाला शाह अस्वारया। बस्त्र पीला तन श्रृंगार, सुंन अगम्मो वेख वखा रिहा। दमो दम ना पावे कोई सार, खाणी बाणी बहि बहि सारे घर घर वेख विचारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, प्रगट हो विच संसार, आप आपणा बल आपे धारया। आपणा बल आपे धार, आपणी कल वरताईआ। गुर गोबिन्दा कर प्यार, खेले खेल हरि रघुराईआ। वल छल अपर अपार, भेखी भेख वटाईआ। दीपक जोती रही बल, दिस किसे ना आईआ। उच्चे मन्दिर बैठा खड़, हरि द्वार सुहाईआ। हरि मन्दिर मिल्या वर, प्रभ आपणा चरन छुहाईआ। मनमुख जीवां बन्द दर, ना सके कोई खुल्हाईआ। रामदास तेरा सरोवर सर, अमृत आत्म किसे हथ्थ ना आईआ। मरनी मरनी गए मर, मारनहारा दिस ना आईआ। आपणी करनी लैण भर, प्रभ देवणहार सजाईआ। जो जन सच सरनाई जायण पड़, फड़ बाहों लए तराईआ। आपे वेखे किले कोट उप्पर चढ़, उच्चे टिले रिहा हिलाईआ। हँकारी बुरज जाए सड़, जोती लम्बू एका लाईआ। लग्गे अग्ग बहत्तर नड़, ना सके कोई बुझाईआ। सन्त सुहेले शब्द सरूपी कर कर मेले पुरख अगम्मा लए फड़, गोबिन्द गुर संग रखाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई विद्या अक्खर गया खड़, ग्रन्थ पन्थ ना कोई रखाईआ। सृष्ट सबाई नाल रिहा लड़, लक्ख चुरासी तेरी आप उखेड़े जड़, ब्रह्मा संग रखाईआ। कोए ना सके अग्गे अड़, शिव शंकर रोवे ज़ारो ज़र, बाशक तशका गल लटकाईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले कर कर मेले एका अक्खर जायण पढ़, प्रभ साचा रिहा पढ़ाईआ। प्रभ साचा घाड़न घड़, लोकमात रिहा तराईआ। पहला पौड़ा आपणा आपे चढ़, गुरमुखां राह वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची सिख्या रिहा सिखाईआ। साची सिख्या सिख

७६३
०६

अपार, एका इक्क रखाईआ। एका इक्की एका वार, एकँकारा रिहा पाईआ। गोबिन्द रक्खी तिक्खी धार, ना कोई मेट मिटाईआ। अन्त रुढ़ाई विच सरसे अन्तिम वार, हथ्थ किसे ना आईआ। प्रभ अबिनाशी दए कर निमस्कार, गुर गोबिन्दे खुशी मनाईआ। तेरी सेवा अपर अपार, तेरे अग्गे टिकाईआ। अन्तिम वेला विच संसार, कलिजुग अन्तिम लहिणा रिहा चुकाईआ। प्रभ अबिनाशी कर विचार, वर देवे घर सलाहीआ। प्रगट हो नर निरँकार, पकड़ उठाए फड़ फड़ बांहीआ। गुर तेग बहादर लक्ख चुरासी पैज संवार, सृष्ट सबाई दए नहाईआ। गुर गोबिन्दे कर प्यार, आप आपणी गोद उठाईआ। एका दूजा भउ निवार, तीजा चौथा घर वसाईआ। पंचम मेला कर प्यार, छेवें शब्द रंग रंगाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण आप करतार, गोबिन्दे विच समाईआ। नेत्र अंजन पाया इक्क अपार, सृष्ट सबाई वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सम्मत चौदां तेरी रुत्त आपे आप सुहाईआ। सम्मत चौदां तेरी रुत्त, प्रभ साचा आपे आप सुहांयदा। खेले खेल प्रभ अबिनाशी अचुत, भेव कोई ना पांयदा। कलिजुग जीव जूठा झूठा काया भाण्डा जाणा फुट्ट, अन्त कोए रहिण ना पांयदा। गुरमुख लाहा रहे लुट्ट, नेत्र नैण दर्शन पांयदा। लुकया रहिण ना देवे किसे गुट्ठ, दिवस रैण सेव कमांयदा। मनमुख जीव धर्म राए दर टंगे पुठ्ठ, लाड़ी मौत हुक्म जणांयदा। धुर दरगाहों गए रुट्ठ, ना कोई फेर मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द तेरा अन्तिम वर, प्रभ साचा पूर करांयदा। गोबिन्द तेरा साचा राह, आपणा आपे रिहा चलाईआ। शब्द सरूपी बण मलाह, हरि साजन मेल मिलाईआ। सम्मत चौदां दए सलाह, गुरमुखां आप समझाईआ। एका इक्की दित्ती पा, साचा लेख लिखाईआ। साची सिक्खी लई बणा, आपणा संग रखाईआ। धारों तिक्खी लई रखा, चार वरनां रही कटाईआ। रिखी मुनी रोवण मारन धाह, प्रभ साचा दिस ना आईआ। गुर गोबिन्दे तेरा तक्कण राह, सिर नीले चीरे रहे बंन्हाईआ। राए धर्म वखाए अद्ध विच लग्गा फाह, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। दिवस रैण गंवाया मानुख मानस प्रभ साचा शाहो दिस ना आईआ। वड्ड दाता बेपरवाह, बैठा मुख छुपाईआ। दो जहानी साचा शाह, शहनशाह आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द मिल्या तेरा दर, दर दुआरा आप सुहाईआ। गुर गोबिन्दे खोल्ह दर, प्रभ साची जोत जगांयदा। सम्मत चौदां सतारां हाढ़, सृष्ट सबाई मेटे चिन्त सन्त सुहेले आप उठांयदा। आपे होए पिछे अगाड़, फड़ बाहों पार करांयदा। वेख वखाणे नाड़ी नड़, साचा वैद वैद इक्क हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द तेरा मिल्या दर, दर द्वार आप सुहांयदा। गुर गोबिन्द साचा मेहरवान, हरिभगतन दए वड्याईआ। सम्मत पन्दरां होए बेपछान, आप आपणा भेख

वटाईआ। सम्मत सोलां नेड़े आए विच जहान, सम्मत सतारां वाहो दाहीआ। सम्मत अठारां ना कोई वेखे किसे मार ध्यान, जल धारा आप रुढ़ाईआ। सम्मत उनीसा होए हैरान, अल्ला राणी बैठी मुख छुपाईआ। बीस बीसा हरि भगवान, बीस सिक्खां सेवा रिहा लगाईआ। इक्क इकीसा विच जहान, सिँघ दर्शन लिखारी रिहा बणाईआ। शब्द वरतारी वरते विच संसार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। वड भण्डारी आप दातार, गुर गोबिन्दे विच समाईआ। नाम खण्डा तेज कटारी विच दरबार, एका एक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द तेरा वेख घर, घर साचे बैठा आसण लाईआ। गोबिन्द तेरा मल्ल दरवाजा, प्रभ साचे खुशी मनाईआ। प्रगट हो ग़रीब निवाजा, जन भगतां रक्खे लोकमात लाजा, लाजावन्त आप हो जाईआ। बरस त्रताली ना चरन छुहाया देस माझा, पुरी अनन्द गया तजाईआ। अन्तिम कलिजुग मारे अवाजा, सम्बल नगरी धाम सुहाईआ। सतिजुग तेरा रच्चया काजा, अनहद वाजा इक्क वजाईआ। धुरदरगाही आया भाजा, गुर पूरे विच समाईआ। चिट्टा अस्व साचा ताजा, सोलां कलीआं आसण लाईआ। भाग लगाया देस माझा, धाम धामा रिहा सुणाईआ। शाहो भूप वड राजान राजा, सच सिँघासण इक्क वखाईआ। लक्ख चुरासी तेरा खोल्हे पाजा, साध सन्त जूठ झूठ अन्त रहिण ना पाईआ। मानस मानुख भुले नौ दरवाजा, गुरमुख दसवें बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द तेरा वेख घर, आप आपणा चरन छुहाईआ। गोबिन्द तेरा सच द्वार, प्रभ आपणा चरन छुहाया। आपे खोल्हे बन्द किवाड़, आपे कुण्डा लाहया। रुत्त सुहाए सतारां हाढ़, सम्मत सम्मती दए मिटाया। मनमुखां मगर लगाए पंचम धाड़, दिवस रैण चैन ना आया। गुरमुखां माया ममता देवे साड़, अमृत आत्म एका जाम प्याया। जोत जगाए बहत्तर नाड़, अन्ध अन्धेर मिटाया। साचे मन्दिर देवे वाड़, ना कोई सके फेर ढाहया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द तेरा वेख घर, घर साचे मंगल गाया। गुर गोबिन्द घर मंगलाचार, हरि आपे वेख वखांयदा। पंचम गायण वारो वार, हरि साची सेवा लांयदा। राग छत्ती ना पायण सार, ना कोई भेव जणांयदा। वेद कतेब कुरान अञ्जील गए हार, रसना जिह्वा ना कोई अल्हांयदा। खाणी बाणी कर विचार, धीरज धीर ना कोई धरांयदा। प्रगट होए हरि निरँकार, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुर गोबिन्दे कर प्यार, एका मेल मिलांयदा। साचा मेला हरि द्वार, एका अक्खर कर अधार, साची सिख्या आप सिखांयदा। लिख्या लेख हरि करातार, सृष्ट सबाई दए वत्थ, आप उपाए आपे मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द तेरा वेख सर, सर सरोवर इक्क वखांयदा। गुर गोबिन्द तेरा साचा सर, हरि मिल्या इक्क भगवानया। सन्त सुहेले रहे तर, कर धूढ़ सच इशनानया। कलिजुग जीव रहे डर, ना होइण दर परवानया।

७६४
०६

जन भगतां चुकाए जम का डर, आवण जावण फंद कटानया। इक्क वखाए साचा घर, हरि थिर घर नाउँ रखानया। ना जन्मे ना जाए मर, साचे धाम हरि सुहानया। जन भगतां देवे वरनी वर, वर दाता आप अख्वानया। आपणी करनी रिहा कर, करनहार आप अख्वानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द तेरा वेख दर, खेले खेल दो जहानया। भगत जनां साचा मेल, मेल मिलाए श्री भगवाना। जोत निरँजण चाढ़े तेल, हथ्थीं बन्ने साचा गाना। पंचम सखीआं मिल मिल पायण वेल, अनहद गाए साचा गाना। सन्त सुहेले सज्जण आपे मेल, आप सुणाए धुरदरगाही सच फ़रमाना। आपे वसया रंग नवेल, हर घट अन्दर आप समाना। आपे गुरू गुर चेल, आपे गोबिन्द रूप वखाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द तेरा वेख दर, दर दुआरा इक्क सुहाना। गुर गोबिन्दा दर सुहाए, हरि दाता बेपरवाहीआ। सन्त सुहेले लए मिलाए, आप आपणा मेल मिलाईआ। नाम तन्दन तन्द बंन्हाए, साचा सगन मुख लगाईआ। काया चोली रंगण रंग चढ़ाए, उतर कदे ना जाईआ। दूजा दर ना कोई मंगण जाए, जो आए हरि सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द तेरा वेख घर, घर बैठा आसण लाईआ। गोबिन्द तेरा सच टिकाना, हरि आपे आप बणांयदा। शब्द सरूपी इक्क बिबाना, दो जहानां आप चलांयदा। सेव लगाए पवण मसाना, अवन गवण मेट मिटांयदा। ना कोई धूप ना कोई हवन ना तराना, ना कोई दीप जगांयदा। खाणी बाणी ना कोई वेद पुराण, कुरान अञ्जील ना कोई गांयदा। एका अक्खर धुर फ़रमाना, सोहँ जाप जपांयदा। नानक पाया पद निरबाना, सृष्ट सबाई राह वखांयदा। सति पुरख अगम्मा हरि भगवाना, घर साचे आसण लांयदा। इक्क कबीर दर परवाना, आपणा दरस दिखांयदा। कलिजुग भुल्ले जीव नादाना, हरि भेखी भेख वटांयदा। बल द्वारे बण नादाना, वेसी वेस वटांयदा। निहकलंक पहरया बाणा, गोबिन्द संग रलांयदा। गुरमुख साचे वेख वखाना, वेद व्यासा लेख लिखांयदा। उच्च पर्बत सच टिकाना, बजर कपाटी साची सिल्हा आप लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द मेला साचे हरि, हरि साचा मेल मिलांयदा। गोबिन्द मेला हरि द्वार, हरि हरि आप करांयदा। आप आपणी किरपा धार, आप आपणे रंग रंगांयदा। पूत सपूत इक्क वरतार, चारों कुन्ट वेख वखांयदा। साचे घर दए वाड़, जोती जोत आप मिलांयदा। पहले पौड़े पहली वार, फड़ बाहों आप चढ़ांयदा। वेखे परखे मिट्ठे कौड़े विच संसार, जीव जन्त वेख वखांयदा। शब्द हथौड़े मारे मार, आप आपणी सेवा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगवन रूप समांयदा। भगवन रूप हरि समाया, भगतन दर वधाईआ। मनमुख जीव दिस ना आया, जूठ झूठ करी कुड़माईआ।

७६५
०६

मन मति बुध भेव ना राया, जगत विद्या सार ना आईआ। देवी देव किसे नज़र ना आया, अलख अभेव बैठा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द मेला इक्क घर, एका रंग वखाईआ। एका रंग नर नरायण, आपणा आप वखाया। गोबिन्द मेला साचे सज्जण, आपणा आप कराया। ताल नगारे साचे वज्जण, वजावणहार आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटाया।

हरि कल्की अवतार, जोत जगांयदा। हरि कल्की अवतार, भेख वटांयदा। हरि कल्की अवतार, लेख लिखांयदा। हरि कल्की अवतार, वेख वखांयदा। हरि कल्की अवतार, गोबिन्द रूप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कल्गी तोड़ा इक्क वखांयदा। हरि कल्की अवतार, एका एक अख्वाया। खेले खेल अपार, अकल कला वरताया। गुर चेले पावे सार, सारंगधर आप हो आया। मेले मेल नाम दरबार, दर दरबारी इक्क अख्वाया। सज्जण सुहेले लए तार, तारनहारा सृष्ट सबाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप वटाया। कल्गीधर हरि अवतार, जागरत जोत जगाईआ। जोत सरूपी कर उज्यार, कलिजुग रैण अन्धेरी रिहा मिटाईआ। शब्द सरूपी इक्क जैकार, चारों कुन्ट रिहा कराईआ। सतिजुग साचा वणज वपार, आप आपणा नाउँ रखाईआ। सम्मत चौदां बन्ने धार, सति पुरख निरँजण हथ्थ वड्याईआ। गुरमुख साचे कर प्यार, साची सिख्या रिहा सिखाईआ। एका इक्की एका वार, इक्क इकेला रिहा पाईआ। गुर गोबिन्द बण भिखार, दर दुआरा मंग मंगाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, पूर्ब लहिणा झोली पाईआ। शब्द गहणा तन श्रृंगार, अस्त्र शस्त्र वेख वखाईआ। चिट्टा अस्व कर त्यार, आसण सिँघासण इक्क वछाईआ। प्रगट होए शाह अस्वार, वाग आपणे हथ्थ रखाईआ। सचखण्डी खोल्ह आप द्वार, लोकमाती राह तकाईआ। आपे जाणे आर पार किनार, मँझधार वेख वखाईआ। सवेर सञ्झ सूरज चन्न सितार, बैठे मुख छुपाईआ। आप वजाए काल नगार, एका डौरू रिहा वाहीआ। धर्म राए दर बण भिखार, बैठा सीस झुकाईआ। लाड़ी मौत कर त्यार, हथ्थीं मैहन्दी रिहा लाल रंगाईआ। नैण कज्जल पाया भार, सीस मैंढी रिहा गुंदाईआ। नार कन्या होई मुटियार, वर ढूंडे सृष्ट सबाईआ। लक्ख चुरासी वेखे कन्त भतार, कवण हाणीआं हाण मिलाईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत सुहाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़, डूँघी कन्दर फेरा पाईआ। धरत मात तेरा वेख अखाड़, सूरबीरां राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कल्गीधर आप अख्वाईआ। कल्गीधर हरि जगदीसा, जगत जोग वखांयदा। खेले खेल बीस इकीसा, राग छतीसा मेट मिटांयदा। ना कोई कुरान अंज़ील हदीसा,

७६६
०६

ना कोई मुल्ला सबक पढ़ांयदा। राज राजान ना कोई छत्र रक्खे सीसा, तख्त ताज ना कोई हंढांयदा। लिख्या लेख चुक्के विच उनीसा, अहिनल हक्क प्रभ झोली पांयदा। मुहम्मद मुहम्मदी फल गया पक्क, अहिमद अहिमदी आप अख्वांयदा। चार यारी लाए धक्क, अल्ला राणी संग रलांयदा। लोकमाती दए हक्क, परवरदिगार राह वखांयदा। चार यार संग मुहम्मद गए थक्क, चौदां तबकां पन्ध मुकांयदा। मक्का मदीना वेखे ढक्क, सिँघ शेर शेर आप हो जांयदा। नबी रसूलां ना कोई सके रक्ख, ना कोई हाज़ी हज्ज करांयदा। उम्मत उम्मती करे वक्ख, आप आपणी दया कमांयदा। कूजा बांग रोज़ा होए सक्ख, हू अल्ला नाअरा ना कोई लांयदा। प्रगट होए हरि प्रतक्ख, सम्मत पन्दरां आप जगांयदा। चार कुन्ट उडणे कक्ख, कंधी डाह आप लगांयदा। सखी सरवर शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर ना कोई पछाणे आपणा हक्क, हकीकत हक्क सर्ब गंवांयदा। एका शब्द सोहँ नकेल पाए नक्क, डोर आपणे हथ्थ रखांयदा। कलिजुग फल गया पक्क, चौदां लोकां आप खुआंयदा। सन्त सुहेले लए रक्ख, आप आपणा दरस दिखांयदा। फड़ फड़ बाहों करे वक्ख, एका वक्खरी धार चलांयदा। वरोले छाछ जिउँ मक्ख, नाम मधाणा एका पांयदा। आप उग्घाड़े तीजी अक्ख, सोहँ अंजन एका पांयदा। काया मन्दिर जाणे ढठ्ठ, ना कोई साथ निभांयदा। प्रभ आपे गेड़े उलटी लट्ठ, शब्द गेड़ा आपणे आप चलांयदा। त्रैगुण माया तेरा भट्ठ, हरि जोती लम्बू लांयदा। विच पाए तीर्थ अट्ठ सट्ठ, ना कोई शांत करांयदा। गुरदर मन्दिर मस्जिद पए भट्ठ, इट्ट गारा ना कोए लगांयदा। चरन द्वार जो जन आए जाए ढठ्ठ, दो जहानी पार करांयदा। साधां सन्तां पैंडा ना मुक्कणा नठ्ठ नठ्ठ, ग्रन्थ पन्थ ना कोई बचांयदा। पुरख अबिनाशी कर इक्ठ्ठ, मस्तूआणा धाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, बीस बीसा जगत उनीसा एका राह विखांयदा। एका उन्नी प्रभ चुणी, कलिजुग वज्जी वधाईआ। लेखा चुक्के मुस्लिम सुंनी, अन्तिम लहिणा देण मुकाईआ। वड वड गुण गुणी, गुण अवगुण वेख वखाईआ। धरतमात तेरी पुकार सुणी, जोती जामा भेख वटाईआ। सम्बल नगरी साचा धाम चुणी, आप बैठा आसण लाईआ। एका शब्द एका धुनी, एका राग एका कन्त इक्क सुहाग इक्क शब्द इक्क अवाज, आप आपणी रिहा लगाईआ। एका राज एका काज एका साज एका बाज, ग़रीब निवाज आप आपणा रिहा वखाईआ। जुग जुग रक्खणहारा लाज, जन भगतां सेवा रिहा कमाईआ। प्रगट हो देस माझ, साचे शब्द करे कुड़माईआ। कलिजुग लहिणा देण चुकाए कल कि आज, काला टिक्का मस्तक लाए छाईआ। माया राणी गुर दर मन्दिर अन्दर करे नाच, मुख बैठी घूंगट लाहीआ। त्रैगुण तेरी लग्गी आंच, ना सके कोई बुझाईआ। लहिणा चुक्के तत्त विकारा पांच, सरगुण भरम भुलाईआ। काया माटी झूठा कांच, अन्तिम भन्न वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, कल्गीधर जगत जगदीस इक्क हो जाईआ। कल्गीधर हरि जगदीसा, एका एक अखवाए। एका छत्र झुलाए सीसा, दूसर कोई दिस ना आए। ब्रह्मा विष्न महेष शिव गणेशा दर करन , बैठण सीस झुकाए। आपे जाणे धारी केसा, मूंड मुंडाए वेख वखाए। सतिजुग तेरी सच हदीसा, हरि साची रिहा पढ़ाए। सोहँ शब्द इक्क इकीसा, एका इक्की पाए। सो पुरख निरँजण आप आपणी करे रीसा, हँ हँगता मेट मिटाए। साची संगता इक्क हदीसा, एका जाप जपाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कल्गीधर आप हो आए। कल्गीधर हरि भगवाना, आपणी कल वरतांयदा। इक्क इकीसा धुर फ़रमाणा, धुरदरगाही आप अलांयदा। बीस बीसे शब्द निशाना, लोकमाती आप झुलांयदा। उन्नी उनीसा झूठ दुकाना, चार यारी मेट मिटांयदा। अठ्ठ अठारां मार ध्याना, जल धारा मेल मिलांयदा। सम्मत सतारां कर वैराना, दीवा बत्ती ना कोई जगांयदा। चौदां हट्टां खेल वखाना, बाजीगर नटां नाच नचांयदा। तीर्थ तट्टां ना कोई कर परवाना, धूढ़ी धूढ़ ख़ाक उडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कल्गीधर कल्गी तोड़ा सीस टिकांयदा। सम्मत सोलां कर श्रृंगार, एका जोत जगांयदा। आप आपणा कर प्यार, आपणी सेज हंढांयदा। गुरमुख साचे वेख विचार, नेत्र नैण खुल्हांयदा। नेत्र पेखण दरस अपार, दरस दरसी आप करांयदा। मनमुख जीव रोवण धाहां मार, चारों कुन्ट सभ कुरलांयदा। राज राजान छड्डण दर दरबार, तख्त ताज ना कोई वखांयदा। ना कोई वेखे करे किसे विचार, पिता पूत ना कोई समझांयदा। ना कोई नारी कन्त भतार, ना कोई धी जवाई कर कुड़माई खुशीआं सगन मनांयदा। ना कोई विद्या मात पढ़ाई, ना कोई अक्खर लेख हथ्थ फड़ांयदा। लक्ख चुरासी लथ्थी सथ्थर, धरत मात गोद वखांयदा। ना कोई नेत्र नीर वहाए अत्थर, ना कोई धीरज धीर धरांयदा। गुरमुख साचे सन्त सुहेले कर कर वक्खर, एका राह वखांयदा। शब्द अन्धेरी चले झक्खड़, प्रभ सोहँ सेवा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत सोलां वेख घर, आप आपणा वेस वटांयदा। वेस वटाए हरि निरँकार, गोबिन्द जोत जगाईआ। शेर सिँघ प्रभ हो त्यार, पूरन विच समाईआ। पूरन जोत कर आकार, गोबिन्द रंग रंगाईआ। गोबिन्द मेला नर निरँकार, चेला गुर आप अख्वाईआ। साचा मेला विच संसार, सम्बल नगरी आप कराईआ। साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर कर त्यार, चार दीवारी ना कोई बणाईआ। ना कोई बाडी फड़े हथ्थ हथयार, पारब्रह्म बणत बणाईआ। ना कोई दिसे दर द्वार, नौ द्वारे वेख वखाईआ। दसवां कीता बन्द किवाड़, गुर गोबिन्दा बैठा आसण लाईआ। धन्न सुभाग दिहाड़ा सतारां हाढ़, गुरमुखां अग्गे बैठा सेज वछाईआ। सृष्ट सबाई आप चबाए आपणी दाढ़, बचया रहिण कोई ना पाईआ। मगर लगाए अगम्मी धाड़, गुर

गोबिन्दा शब्द खण्डा इक्क रखाईआ। नाल रलाए मौत लाड़, घर घर वेखे फेरीआं पाईआ। मनमुख जीवां टोहे नाड़ नाड़, तिन्न सौ सठ्ठ हाढ़ी वेख वखाईआ। मढ़ी गोर जग देवे साड़, बचया रहिण कोई ना पाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख दस्म द्वारी देवे चाढ़, लाड़ी मौत नेड़ ना आईआ। आपे होए पिच्छे अगाड़, गल फूलनहार टिकाईआ। चौथे घर साचा मेला कन्त भतार, नारी पुरखा आप हो जाईआ। आपणी सेजा आप संवार, गुरमुख साचे गले लगाईआ। नारी कन्ता इक्क प्यार, बैठा आसण लाईआ। आपे सुत्ता पैर पसार, दिस किसे ना आईआ। आपे अन्दर आपे बाहर, आपे गुप्त आपे ज़ाहर, आपे बैठा रंग रंगाईआ। गुरमुख तेरा कर प्यार, लोकमाती फेरा पाईआ। गुर गोबिन्दा साचा यार, वेले अन्तिम मेल मिलाईआ। दुष्ट दमन तेरा हरि सिक्दार, तेरी सेवा रिहा कमाईआ। बीस बीसा हरि दातार, छत्र सीसा रिहा टिकाईआ। वेखे दर दिल्ली दरबार, नौ खण्ड पृथ्वी चरना हेठ दबाईआ। सत्तां दीपां मारे मार, लेखा कोई रहिण ना पाईआ। देवर सुर सुणे पुकार, अन्तिम मेला लए मिलाईआ। गुरमुख साचे कर त्यार, साची घोड़ी रिहा चढ़ाईआ। आपणी हथ्थीं तन शिंगार, सोहणा सीस गुंदाईआ। सोहँ शब्द अपर अपार, झोली रिहा भराईआ। गाउँदे जांदे वारो वार, दर द्वारे रिहा पुजाईआ। आपे उप्पर बैठ सच्ची सरकार, लोकमाती वेख वखाईआ। लोकमाती मार झाती, साची सेवा आप लगाईआ। पुरी ब्रह्म प्रभ खोले ताकी, गुरमुख साचे आप बिठाईआ। सोहँ शब्द मिल्या साचा राकी, प्रभ साचा रिहा दौड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कल्गीधर आप हो जाईआ। कल्गीधर हरि बलवाना, एका एक अख्वाया। शब्द फड़ तीर कमाना, लोकमाती फेरा पाया। गुरसिख उठाए बाल निधाना, आपणे गले लगाया। एका देवे धुर फ़रमाना, सोहँ शब्द जणाया। नानक नानक गोबिन्द गोबिन्द रसना गाणा, आत्म तराना धुन नाद ना कोई वजाया। पुरख अबिनाशी जाणी जाणा, जानणहार आप अख्वाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटाया।

हरि गोबिन्द शब्द शब्द अधार, गुर गोबिन्द रिहा जगाईआ। गुर गोबिन्द शब्द प्यार, प्रभ साचा रिहा जणाईआ। गुर शब्द शब्द गुर सदा बलिहार, गुर सतिगुर बलि बलि जाईआ। गुर गोबिन्द शब्द कटार, हरि गोबिन्द तन कराईआ। हरि गोबिन्द खेल अपार, तन गात्रे रिहा सजाईआ। तन गात्रा अपर अपार, सच म्याना नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच निशाना रिहा वखाईआ। गोबिन्द काया सच म्याना, हरि साची वस्त टिकाईआ। साचा

खण्डा तीर कमाना, गल साचे आप लटकाईआ। मारे मार दो जहानां, एका चिल्ले रिहा चढ़ाईआ। गोबिन्द शब्दी पहरया बाणा, शब्द खण्डा रिहा उठाईआ। जोद्धा सूर बली बलवाना, ब्रह्मण्डां रिहा समाईआ। ब्रह्मण्डां खेले गुण निधाना, गुणवन्ता आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द संग निभाईआ। गुर गोबिन्दा साचा गुर, एका शब्द अलाया। मेल मिलाया लिख्या धुर, लहिणा देण चुकाया। एका नाल रलाया सुर, एका राग नाद तार सुणाया। एका वस्त एका दाद, एका धुन एका माधव माध रूप वटाया। एका शब्द बोध अगाध, बोध अगाधी रिहा जणाया। एका रसना एका साद, एका सुक्ख एका भोग कराया। एका मात एका कुक्ख, पूत सपूता साची सुक्खणा सुक्ख, प्रभ साची गोद उठाया। आपे मेट मिटाए जगत तृष्ना भुक्ख, साची सेवा सेवक रिहा कमाया। मात गर्भ ना उलटा रुक्ख, रक्त बूंद ना कोई रखाया। आपणी हत्थीं लाया बूटा, फल फुलवड़ी संग वखाया। पवण हुलारा रिहा झूट, देवणहार आप अख्वाया। गुरमुख वेख वखाए चारे कूट, दहि दिशा फेरा पाया। गुर गोबिन्दा तीर निराला रिहा छूट, रसना चिल्ला इक्क चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हँकारी किला तोड़ तुड़ाया। हँकारी किला तोड़ गढ़, गोबिन्द हत्थ वड्याईआ। शब्द खण्डा ल्या फड़, लोकमात आया वाहो दाहीआ। आप आपणा घाड़न घड़, बणत आपणी रिहा बणाईआ। आपे अग्नी गया सड़, आपे जोती नूर करे रुशनाईआ। गोबिन्द काया अन्दर वड़, बैठा आसण लाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, पंचम तत्त ना कोई रखाईआ। सन्त सुहेले रिहा फड़, दिवस रैण फेरी पाईआ। आपे वेखे चोटी जड़, गगन पतालां आप सुहाईआ। कलिजुग कूड़ कुड़यारा जाए सड़, वेला अन्तिम दए दुहाईआ। मंगे मंग गोर मड़, धरत मात नेत्र नैण वखाईआ। ख्वाजा ख़िज़र नेत्र नीर मंगे एका हड़, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। धर्म राए चित्रगुप्त फड़ाए लड़, लेखा इक्क दूजे अग्गे रहे टिकाईआ। विष्नूं बंसी अग्गे खड़, ब्रह्मे रिहा उठाईआ। शिव शंकर हत्थ त्रिसूल फड़, बैठा नैण उठाईआ। करोड़ तेतीसा वेखे दर, दिस किसे ना आईआ। भगतां फड़ाए आपणा लड़, जन जनणी आप हो जाईआ। कोई ना सके अग्गे अड़, कलिजुग काला दए दुहाईआ। सतिजुग साचा लड़ रिहा फड़, प्रभ अग्गे बैठा सीस झुकाईआ। ना कोई पीवे हुक्का नड़, ना कोई मदिरा रसन लगाईआ। मनमुख जीवां उखेड़े आप जड़, पहला हल्ला रिहा कराईआ। पंचम जेठ सम्मत चौदां घाड़न घड़, पंज तत्त करे लड़ाईआ। मन मति बुध देस तिन्ने लए फड़, शहनशाह वड सिक्दार आप अख्वाईआ। दस्म द्वारी बैठा चढ़, घर घर पई तन लड़ाईआ। काया गोर रहे सड़, राज राजान शाह सुल्तान बचया रहिण कोए ना पाईआ। सन्त सुहेले सोहँ अक्खर रहे पढ़, जगत दोख नेड़ ना आईआ।

लाड़ी मौत वहाए वहिण हड़, पन्दरां कत्तक दए दुहाईआ। आपणी अग्नी आपे जाण सड़, ना कोई सके किसे बचाईआ। चौदां तबकां उखेड़े जड़, चौदां लोक रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत चौदां वेख घर, राष्ट्रपति रिहा जगाईआ। राष्ट्रपति जगत नादान, ना होए दर परवानया। तिन्नां देशां वेख मैदान, नौ खण्ड पृथ्वी मार ध्यानया। खेले खेल श्री भगवान, गुण निधान किसे ना जाणया। भरमे भुल्ले जीव नादान, हरि वरते आपणे भानया। सम्मत चौदां देवे इक्क निशान, लाड़ी मौत मंगे दानया। घर घर नेत्र नीर वहायन, नारी नार सर्ब पछतान, ना दिसे कोई मकान, भैणां भाईआं बंनृण गानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत चौदां दित्ता वर, पंचम जेठ दर परवानया। पंचम जेठ भाग लगा, नौ खण्ड वज्जी वधाईआ। पंचम तत्त अग्ग लगा, तै देसां भेड़ भिड़ाईआ। त्रै देसां वेस आप वटा, लेखा रिहा लिखाईआ। शाह सुल्तान ना सके कोई बचा, ना कोई शस्त्र अग्गे डाहीआ। ना कोई ढाल हथ्थ रिहा विखा, ना कोई तीर कमान चलाईआ। ना कोई अग्नी बाण रिहा उठा, ब्रह्म अस्त्र ना वेख वखाईआ। ना कोई तन बस्त्र ना कमर कसा, ना तन गात्रे किरपान लटकाईआ। शब्द सिंघासण बैठ प्रभ सचा शाह, साचा हुक्म जणाईआ। सिँघ दर्शन साची सेवा ला, वीह सिक्खां संग रलाईआ। लाड़ी मौत दर आए गुरमुख ना लए प्रना, मुख घुंगट बैठी मुख शरमाईआ। प्रभ अबिनाशी अग्गे बैठ गल विच पल्लू पा, तन फूलन हार शृंगार कराईआ। आपणी गोद आप बिठा, धुर धाम दए पुजा, अहिनल हक्क एका नाअरा लाईआ। हक्क हकीकत लाशरीक वाहिद इक्क खुदा, कलिजुग तारीख इक्क वखाईआ। गुरमुख होणा ना कदे जुदा, विछड़ कदे ना जाईआ। पुरख अबिनाशी दर द्वारे करे सदा, एका मंगण मंग मंगाईआ। गुरमुख साचे लए प्रना, आपणा सीस अग्नी भेंट चढ़ाईआ। सोहँ गदागर करे इक्क सदा, चार वरनां रिहा बुझाईआ। मनमुखां घर लाड़ी मौत गल फाही पा, अन्तिम खुशी मनाईआ। नौ अठारां रोवे मारे धाह रही कुरला, दर द्वारे रहिण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी बणत लई बणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पंचम जेठ दित्ता वर, साची बणत बणाईआ। पंचम जेठ वर घर पाया, नौ खण्ड वज्जी वधाईआ। निहकलंक कलि जामा पाया, त्रैगुण वेख वखाईआ। आप आपणा हरि संग रखाया, सगला संग निभाईआ। साचे घोड़े तंग कसाया, नाम साथी इक्क रखाईआ। सोहँ काठी जीन रखीन रखाया, शाह अस्वार आप हो जाईआ। सर सरोवर मारे ठाठी, कलिजुग ताल पार कराईआ। एका डण्डा विच ब्रह्मण्डां सोहँ खण्डा फड़े साची लाठी, राज राजानां शाह सुल्तानां रिहा डराईआ। गुरमुखां देवे नाम निधाना , चरन दुआरा इक्क वखाईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठी, ना कोई ग्रन्थ पढ़ाईआ।

दो जहानां चिन्ता सगली लाथी, जिस जन नेत्र दरस दिखाईआ। लिख्या लेख मस्तक माथी, लहिणा मूल चुकाईआ। आप चढ़ाए साचे राथी, रथ रथवाही आप अख्वाईआ। प्रगट होए त्रैलोकी नाथी, तुरीआ देस इक्क वखाईआ। आपे जाणे आपणी गाथी, लिखण पढ़न विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम जेठ साचा वर, वर दाता आप हो जाईआ। पंचम जेठ जगत संदेस, हरि शब्दी शब्द जणाईआ। गोबिन्द काया हरि प्रवेश, रवि ससि दिस ना आईआ। आपे नर आपे नरेश, राजन राज आप अख्वाईआ। आपे दाता दानी गुर शब्द दस दस्मेस, नानक संग निभाईआ। कलिजुग काया तेरा वेखे वेस, काले केस दर दरवेश फेरी पाईआ। नाल रलाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, लिख्या लेख रिहा जगाईआ। अंग लाए बाशक शेश, सांगों पांग इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत चौदां तेरा घर, साचा अन्तिम दए सुहाईआ। सम्मत चौदां चढ़या चाअ, घर साचे ख़ुशी मनांयदा। पंचम तत्त ना दिसे कोई राह, ना कोई मार्ग लांयदा। मन मति बुध रही समझा, समझ विच ना कोई रखांयदा। इक्क जंजीर प्रभ आपणे हथ्थ लई रखा, धुन अनादी शब्द दर आपे बन्द करांयदा। गुरमुख विरले सोझी देवे पा, जिस जन आपणी दया कमांयदा। धुन आत्मक राग दए अल्ला, आपणा गाणा आप सुणांयदा। आत्म सेजा दए वखा, नूरी दरस आप करांयदा। फूलन बरखा आपे ला, मेघ मेघला इक्क बरसांयदा। रुत्त बसन्ती दए खिड़ा, फल फुलवाड़ी आप लगांयदा। नारी कन्ता दए मिला, एका धाम सुहांयदा। एका रंगण रंग रंगा, एका दूजा भेव चुकांयदा। तीजा दर दए खुल्ल्हा, आपे मेट मिटांयदा। चौथे डेरा आपे ला, आपणे रूप समांयदा। पंचम मेला सहिज सुभा, साचा कन्त सुहांयदा। छेवां दर हरि खुल्ल्हा, शब्दी शब्द जणांयदा। सत्तवें सति पुरख निरँजण जोत जगा, अलख अलखणा अगम्म अगम्मड़े धाम सुहांयदा। पैसा धेला ना कोई दमड़ा, ना कोई बणत रिहा बणा, सोना रूपा ना कोई अंग लगांयदा। ना कोई हवन ना कोई धूपा, ना कोई पाठ ना कोई पूजा, ना कोई ग्रन्थ ना कोई पन्थ, ना कोई वरन ना कोई गोत, ना कोई दीपक ना कोई जोत, दीवा बत्ती ना कोई जगांयदा। ना कोई दीवा ना कोई बाती, ना कोई मात पिता ना भैण भ्राती, ना कोई नारी ना कोई कन्त, ना कोई जीव नाँ कोई जन्त, ना कोई साध ना कोई सन्त, ना कोई बणाए किसे दी बणत, ना कोई धीर धरांयदा। ना कोई गुर ना कोई पीर, ना कोई रांझा ना कोई हीर, ना कोई चोटी चढ़े अख़ीर, ना कोई शस्त्र ना कोई तीर, ना कोई बस्त्र ना कोई चीर, ना कोई तन रखांयदा। ना कोई पीणा ना कोई खाणा, ना कोई राजा ना कोई राणा, ना कोई वेख वखांयदा। ना कोई तत्त ना कोई मति, ना कोई नाड़ी ना कोई रत्त, ना कोई धीरज ना कोई यति, ना कोई तीर्थ दिसे अठ्ठ सठ्ठ, ना कोई गंगा गोदावरी

नुहाए नठ्ठ नठ्ठ, ना कोई धाम रखांयदा। ना कोई जाप ना कोई ताप, ना कोई पुन्न ना कोई पाप, आपे जाणे आपणा आप, दूसर कोई ना संग रखांयदा। ना कोई अग्नी ना कोई घृत, ना कोई क्रिया ना कोई किरत, ना कोई कार करांयदा। ना कोई आलस ना कोई निन्दरा, ना कोई दर द्वार अन्दर मन्दिर लगाए जिन्दरा, ना कोई पहाड़ ना कोई टिल्ला, ना कोई पर्बत डूँघी कन्दरा, ना कोई सागर ना कोई नीर, ना कोई मच्छली जाल वछांयदा। ना कोई सागर ना कोई गागर, ना कोई कर्म करे उजागर, ना कोई नाम ना कोई ताम, ना कोई सुबाह ना कोई शाम, ना कोई सूरज ना कोई चन्न, ना कोई बेड़ा देवे बन्न्, रवि ससि ना कोई वखांयदा। ना कोई माया ना कोई कोई धन, ना कोई छप्परी ना कोई छन्न, ना कोई राज दरबारी देवे डन्न, ना कोई बुध मति दिसे मन, ना कोई पंज तत्त रखांयदा। ना कोई लाड़ा ना कोई जंञ, ना कोई हथ्थीं बन्ने मौली तन्द, ना कोई गाए बत्ती दन्द, ना कोई राग ना कोई वैराग, ना कोई सोया ना जाए जाग, आलस निन्दरा ना कोई वखांयदा। ना कोई राग ना कोई गौड़ी, ना कोई कीर्तन ना पढ़े पौड़ी, ना कोई जाप सुखमनी उपजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण रूप समांयदा। ना कोई गगन ना कोई थाल, ना कोई धरत धवल आकाश पाताल, लोआं पुरीआं ना बणत बणाया। ना कोई माया ना कोई छाया, ना कोई काल ना महांकाल, धर्म राए दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेखण आया। आप आपणा वेखणहारी, एका एकँकारा। जोत सरूपी जोत उज्यारी, शब्द सरूपी तेज कटारा। मारी जावे वारो वारी, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहरा। पंज तत्त लशकर भारी, खेले खेल विच संसारा। मन शहनशाह मति बुध सिक्दारी, दिवस रैण करन विचारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, धरत मात तेरा लाए इक्क अखाड़ा। धरत मात वेख अखाड़ा, घर घर खुशी मनाईआ। पंचम पंचम कढ्ढे हाढ़ा, रो रो दए दुहाईआ। शब्दी शब्द लग्गी अगम्मी धाड़ा, दिवस रैण रही सताईआ। लुट्टी जाए दिन दहाड़ा, ना कोई सके मात बचाईआ। गुरमुखां लेख लिखाए सतारां हाढ़ा, सतिगुर हथ्थ रक्खी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आपणी दया आप कमाईआ।

हरि शब्द गुर मन्त्रा, शब्दी शब्द जणाए। तन बुझाए लग्गी बसन्तरा, हउमे रोग जलाए। मेल मिलाए साचे कन्तरा, विछड़ कदे ना जाए। ना कोई टूणा जादू चले जन्तरा, गुरमुखां प्रभ दया कमाए। आपे जाणे आदि अन्तरा, देवत सुर

जिन्न खवीस बंध बंधाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अमृत धारा मुख चुआए। गुर संगत तेरा लथ्था रोग, हरि साचे दया कमाईआ। रसना चुगे साची चोग, अमृत मुख चुआईआ। आत्म रस साचा भोग, दर द्वारे रिहा कराईआ। आदि अन्त ना होए वियोग, हरि मीता मेल मिलाईआ। देवे दरस आप अमोघ, दरसी दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अमृत जाम रिहा पिलाईआ। अमृत जल साचा नीर, प्रभ साचे हथ्थ कटोरीआ। नेड़ ना आए बेताला बीर, मेट मिटाए आत्म घोरीआ। शब्द निराला मारे तीर, कढ्ढे पंचम चोरीआ। रसना जिह्वा मुख लगाए साचा सीर, मन मनुआ रिहा होड़ीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुरती रिहा जोड़ीआ। सुरत शब्द एका राह, गुर पूरा इक्क वखांयदा। अन्दर मन्दिर बण मलाह, साचा मार्ग लांयदा। मन मूर्ख ना दए सलाह, आपे मुख भवांयदा। कागों हँस दए बणा, सोहँ साची चोग चुगांयदा। गुरमुख साचा बंस रिहा सुहा, साची अंस तरांयदा। पंच विकारा कंसा दए मिटा, काहना रूप वटांयदा। विच सहँसा गुरमुख साचे लए उपा, आप आपणे मार्ग लांयदा। इक्क जपाए साचा नाँ, नर नरायण आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे भगती वर, अमृत धारा मुख चुआंयदा। सतिजुग प्रभाती उठ जाग, प्रभ साचा आप जगांयदा। इक्क सुणा साचा राग, रागी राग अलांयदा। जन भगतां धो दुरमति दाग़, निर्मल नीर वहांयदा। दीपक जोती जगे चिराग, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। हँस बणाए फड़ फड़ काग, साची चोग इक्क वखांयदा। जगत बुझा तृष्ना आग, तृखा भुक्ख मिटांयदा। माया डस्सणी ना डस्से नाग, साची सिख्या सिख समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच प्रभाती मेल मिलांयदा। उठ प्रभाती मुखड़ा धो, हरि अमृत मेघ बरसांयदा। अमृत आत्म घर गुरमुखां चो, कलस कटोरा हथ्थ फड़ांयदा। दर दरबान अग्गे हो, साची सेवा लांयदा। पंज तत्त हँकारी रहे रो, नेत्र नीर वहांयदा। हरिसंगत गाया सोहँ सो, सो पुरख निरँजण मेल मिलांयदा। अबिनाशी करता आपे हो, लोकमाती फेरा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच प्रभाती आप उठांयदा। सच प्रभाती उठ जाग, प्रभ साचा वक्त सुहांयदा। आपे फड़े हथ्थ तेरी वाग, गुरमुखां राह वखांयदा। दर दर घर घर लाउणा भाग, भागांवन्ती आप समझांयदा। सोहँ तन्दन तन्द बंनॄणा ताग, साची सेव कमांयदा। इक्क वखाउणा कन्त सुहाग, नर नारी रूप वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि प्रभाती वेख वखांयदा। उठ प्रभाती लए अंगड़ाई, आपणा तन संवारया। जोत निरँजण डगमगाई, मिटया अन्ध अंध्यारया। मिल्या शब्द वर घर साचे थाँई, गाया पुरख अगम्म अपारया। पकड़ उठाए फड़ फड़ बाहीं, अन्त ना पारावारया। एका नाम अमृत जाम रिहा

८०४
०६

पिलाई, काया सीतल धार ठण्ढी ठारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच प्रभाती रिहा पुकारया। नाम प्रभाती कर सलाह, एका मता पकाया। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, दाता दानी आया। अग्गे झोली रही डाह, रसना जिह्वा मुख हिलाया। गुरमति मेरी झोली पा, आप आपणी दया कमाया। गुरमुखां घर घर देवां वरता, तन मन्दिर दए सुहाया। फड़ फड़ बाहों राहे पा, नेत्र नैणां वेख वखाया। सदा सुहेला देवे ठण्ढी छाँ, तेरी ओट इक्क तकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग प्रभाती साचा राह वखाया। सच प्रभाती सच मकान, हरि साचा घर वखांयदा। कलिजुग जूठ झूठ दुकान, आपणा मुख भवांयदा। सतिजुग वेख भूमिका अस्थान, धरत मात गोद उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाम प्रभाती इक्क इकांती अमृत देवे बूंद स्वांती, धीरज धीर धरांयदा। अमृत पी प्याला, आत्म वज्जी वधाईआ। मिल्या मेल दीन दयाला, दीना बंधप दया कमाईआ। हरिसंगत तेरा बण रखवाला, लोकमात वेख वखाईआ। जोती खिच्चे अग्नी लाट ज्वाला, थिर रहिण ना पाईआ। साध सन्त होए कंगाला, अट्ठ सट्ठ धीर ना कोई धराईआ। मन्दिर मस्जिद ना दिसे कोई शिवदवाला, मठ हट्ठ ना कोई रखाईआ। प्रगट होया गुर गोपाला, गोबिन्द रूप वटाईआ। जन भगतां देवे नाम दुशाला, सोहँ पल्लू उप्पर पाईआ। आपे शाह आपे कंगाला, आपे धन्न धन्नवाद अखवाईआ। आपे फुल फुलवाड़ी वेखे फल लगाए काया डाल्ा, अमृत मेवा इक्क खवाईआ। आपे चले अवल्लड़ी चाला, जुग जुग वेस वटाईआ। आप वजाए नाद अनादी ताला, ताल तलवाड़ा रिहा वजाईआ। गुरमुख तेरी काया सच्ची धर्मसाला, हरि बैठा आसण लाईआ। गल पाई एका ओअँ सोहँ साची माला, दोए बैठा सीस झुकाईआ। नेड़ ना आए काल महांकाला, नाम खण्डा रिहा डराईआ। अमृत आत्म सुहाए साचा ताला, सर सरोवर इक्क वखाईआ। बजर कपाटी तेरा तोड़े ताला, हरि मन्दिर दए वखाईआ। आत्म सेजा खेल निराला, जोत सरूपी डगमगाईआ। पंचम वजायण आपणा ताला, बैठे रहे सेव कमाईआ। सति पुरख निरजंण दीन दयाला, सच सिंघासण वेख वखाईआ। चौथे घर इक्क दुशाला, सोहँ नाउँ रखाईआ। पहला वर मिल्या सिँघ पाला, लोकमात तन पहनाईआ। आपे होया हाल बेहाला, सृष्ट सबाई रिहा हिलाईआ। कलिजुग तेरी वेखे चाला, अवल्लड़ी चाल दर कराईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाला, जन भगतां रिहा तराईआ। भाग लगाए काया खाला, निरगुण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग तेरी सच प्रभाती, मिल्या मेल सम्मत चौदां सतारां हाढ़ी सृष्ट सबाई सुत्या राती, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। हरिजन मेला दए करा, इक्क द्वार सुहाया। सतिजुग प्रभाती दए जगा, मुख तों पड़दा लाहया। जोत निरँजण दीप जगा, साची सेवा लाया। गुरमुखां अग्नी

अग्ग दए बुझा, आप आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, किरपा कर नाम प्रभाती सच सुगाती आदि शक्त आदि भवानी देवे दानी, हरिजन साचे झोली पाया। आदि शक्ती हरि भगवन्त, जोती खेल खिलांयदा। साचा मेला नारी कन्त, नारी कन्ता आप अख्वांयदा। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, मेट मिटाए देव दंत, हँकारी गढ़ रहिण ना पांयदा। जन भगतां बणाए बणत, आदि अन्त दया कमांयदा। रोग गंवाए हउमे हँगत, हाहा संग निभांयदा। सस्सा बणाए साची संगत, होड़ा जोड़ जुड़ांयदा। प्रभ अबिनाशी होया आपे मंगत, लोकमात फेरा पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग प्रभाती देवे वर, सति सन्तोखी झोली पांयदा। सति सन्तोखी झोली पा, प्रभ एका राह वखाया। गुरमुखां लड़ दए फड़ा, ना कोई सके मात छुडाया। एका घर एका वर एका दर दए खुल्ला, ऊँचां नीचां भेव गंवाया। साचा सर दए बणा, चरन धूढ़ी इक्क वखाया। कागों हँस रूप वटा, सोहँ साची चोग चुगाया। दीपक जोती इक्क जगा, अन्ध अन्धेर मिटाया। आत्म भोगी भोग करा, एका रस वखाया। धुर संजोगी मेल मिला, गुर गोबिन्दे संग निभाया। हउमे रोगी जगत दए गंवा, जो जन रसना महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान रहे गाया। साचा जोगी जोग रिहा कमा, आलस निन्दरा विच ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग प्रभाती तेरा वर, आप आपणी झोली पाया। आपे जोगी बण सन्यास, आपे भेख वटांयदा। भगतन दर होया दासी दास, दासी दास सेव कमांयदा। मण्डल मण्डप काया पावे रास, गोपीआं काहन नाच नचांयदा। निज घर आत्म रक्खे वास, परमानंद समांयदा। लेखे लग्गे स्वास स्वास, जो जन रसना गांयदा। मात गर्भ ना आए दस दस मास, आवण जावण फंद कटांयदा। लक्ख चुरासी होणी नास, ना कोई धरवास धरांयदा। जो जन तजाए मदिरा मास, प्रभ अमृत जाम प्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची धार आप वखांयदा। सतिजुग तेरी साची धार, गुर गोबिन्दे मात चलाईआ। अमृत आत्म कर त्यार, गुरमुखां रिहा प्याईआ। काया बाटा अपर अपार, आपे रिहा भराईआ। कँवल नाभी बन्द कवाड़, ना कोई मुख भवाईआ। मनमुखां लग्गी मगर धाड़, दिवस रैण रहे तृखा तत्त अग्न जलाईआ। गुरमुखां करे काया ठंडी ठार, अमृत मुख चुआईआ। दस्म द्वारी अद्धविचकार, बैठा आसण लाईआ। उप्पर नीचे वेख विचार, धरत धवल आकाश प्रकाश रंग समाईआ। गुरमुखां करे इक्क पिअर, सांझा यार आप अख्वाईआ। कल्गी तोड़ा सीस दस्तार, एका नाम रखाईआ। जोती शब्दी जोड़ा विच संसार, पंचम मीता आप हो जाईआ। सतिजुग तेरी साची रीता, ना कोई मन्दिर देहुरा गुरद्वार मसीता, काया मन्दिर इक्क रखाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता पुरख अगम्मा बैठा घर अतीता, दिवस रैण तेरा राह तकाईआ। पढ़

पढ़ थक्के अठारां ध्याए गीता, काहना कृष्ना अन्तिम रहिणा एका अर्जन आपणा आप जीता, प्रभ चरनी सीस झुकाईआ। आपे रावण आपे सीता, आपे रामा रूप वटाईआ। आपे हस्त आपे कीटा, आपे शाह सुल्तान हो जाईआ। आपे हरिजन माधव बीठला बीठा, कौड़ा रीठा आप हो जाईआ। गुरमुखां अमृत आत्म देवे इक्क अनडीठा, दूसर हथ्थ किसे ना आईआ। गुर गोबिन्दे नैणां देवी चढ़ चढ़ पीता, पुरख अबिनाशी आप प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर बैठा आप तकाईआ। अमृत आत्म साची धार, प्रभ आपणे हथ्थ रखांयदा। जुग जुग जन भगतां कर्म विचार, मुख मुखड़े आप चुआंयदा। लहिणा देणा करज उतार, भाणा सहिणा हुक्म जणांयदा। दिवस रैण विच संसार, नेत्र नैणी आप वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग प्रभाती दए वर, अन्तिम वेला आप करांयदा। नाम प्रभाती गई दर, गुरमुखां करी कुड़माईआ। प्रभ अबिनाशी अग्गे खड़, दोहां जोड़ जुड़ाईआ। सुरत सवाणी रही लड़, आप आपणा खण्डा (रिहा) उठाईआ। मन मतीआ अग्गे रिहा अड़, आप आपणा डंका लाईआ। निहकलंक सम्मत चौदां हाढ़ सतारां आप उखेड़े सभ दी जड़्ह, दर द्वार फिरे हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,गुरमति गुरसिक्खां अन्दर धर, आपणी हथ्थीं बन्द कराईआ। गुरमति प्रभ झोली पा, गुरमुखां एह समझांयदा। काया डोली इक्क वखा, साचा सगन मनांयदा।
८०७ पंज तत्त विकारा गोली दए बणा, सेवक सेवा लांयदा। अनहद धुन अनाहद हौली हौली दए जणा, आप आपणा राह वखांयदा। ८०७
०६ जोत निरँजण दीप टिका, पहला पौड़ा आप चढ़ांयदा। सुखमन नाड़ी तेरा टेडा राह, बंक द्वारी आप करांयदा। शब्द सरूपी ०६
बण मलाह, शब्द चोला बस्त्र पांयदा। अद्ध विच बैठा डेरा ला, पल्लू शब्द नाम फिरांयदा। गुरमुख अग्गों कोई ना करे नांह, प्रभ आपणी उंगली लांयदा। जिउँ बालक बाल उठाए साची माँ, आपणी गोद बिठांयदा। दस्म द्वारी ठण्ढी छाँ, अमृत जाम प्यांअदा। एका दूजा तीजा भुल्लया नाँ, चौथा घर सुहांयदा। ना कोई पिता ना कोई माँ, जोती मेल मिलांयदा। ना कोई मन्दिर ना कोई थाँ, ना कोई पसू पंछी दिसे काँ, ना कोई सीर प्यांअदा। ना कोई बाणी ना कोई अक्खर ना कोई साध सन्त जपाए नाँ, ना कोई जाप जपांयदा। गुर पूरा मिल्या इक्क मलाह, जगत जोग कटया फाह, आसा मनसा दई जला, सहिंसा रोग ल्या मिटा, आत्म भोग इक्क करा, सच संजोग ल्या वखा, एका धाम सुहांयदा। साचा धाम इक्क वखा, आपणे रूप समाया। भेखाधारी भेख वटा, गुरसिक्खां रिहा तराया। देस प्रदेसां फेरा पा, सोए रिहा जगाया। धारी केसा ना सके जणा, ना कोई मूंड मुंडाया। दस दस्मेसा वेख वखा, आपणी कारे लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन जन हरि दर घर साचे लए बहाया।

सतिगुर पुरख दयाल, सति समाया। अकल कला अकाल, एका एक अख्वाया। आप आपणी चली अवल्लड़ी चाल, जुग जुग करदा आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धराया। आप आपणा नाम उपाए, निरगुण खेल खिलांयदा। सरगुण चेला इक्क बणाए, साचा शब्द जणांयदा। दो जहानी मेला रिहा मिलाए, इक्क इकेला वेख वखांयदा। सज्जण सुहेला सभनी थाँईं, सतिगुर पूरा आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचा वेख वखांयदा। हरिजन साचा जगत विचार, भगती रंग रंगांयदा। पूर्ब कर्मा रिहा विचार, नेत्र नैणां वेख वखांयदा। दर घर साचे पावे सार, शब्दी दया कमांयदा। नेत्र नैण अक्ख उग्घाड़, आप आपणा मुख वखांयदा। भाग लगाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़, विच प्रभास डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस वटांयदा। निरगुण वेस खेल अपारा, शब्दी बणत बणाईआ। इक्क इकल्ला ओंकारा, एकँकारा रूप समाईआ। महल्ल अटल सच मिनारा, थिर घर रिहा उपाईआ। दीपक जोती कर उज्यारा, आप आपणा रिहा टिकाईआ। नाद धुन वजाए अपर अपारा, सुणनेहार आप अख्वाईआ। लोकमात खेले खेल न्यारा, साची रचना आप रचाईआ। पंचम तत्त कर प्यारा, नाम वस्त दए टिकाईआ। नाम धन हरि करतारा, आप आपणा रिहा वरताईआ। गुर सतिगुर साचा शब्द बण वणजारा, एका वणज कराईआ। चौदां हट्टां खोल्ह दुआरा, चौदां लोकां आप वरताईआ। तीर्थ तट्टां पार किनारा, भेख पखण्डा रिहा मिटाईआ। सोहँ शब्द जै जै जैकारा, चारों कुन्ट आप कराईआ। दो जहानी एका नाअरा, सतिगुर साचा रिहा लगाईआ। सतिजुग साचा देवे पहरा, दिवस रैण सेव कमाईआ। कलिजुग तेरा मिटे कहरा, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। इक्क कराए सञ्झ सवेरा, एका रुत्त सुहाईआ। हरिभगत तराए कर कर आपणी मेहरा, मेहरवान अख्वाईआ। आपे होया नेरन नेरा, निज घर आत्म डेरा लाईआ। शब्द सरूपी पाए घेरा, चार दिवार ना कोई वखाईआ। दस्म द्वारी कर वसेरा, आप आपणा मुख छुपाईआ। काया नगर साचा खेड़ा, धरत धवल उप्पर रिहा उपाईआ। जुग जुग बेड़ा बन्न्हणहारा, वंञ मुहाणा इक्क चलाईआ। लक्ख चुरासी देवे गेड़ा, आवण जावण बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग तेरा साचा लड़ आप आपणे नाल बंधाईआ। सतिजुग साचा मात मौले, फुल्ल फल फुलवाड़ीआ। जन भगतां उलटी नाभ कँवले, अमृत धारा बरसे एका धारया। मेल मिलाए साँवल सँवले, एका दूजा भउ निवारया। मनमुख जीव होए बवले, ना कोई पावे हरि हरि सारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, प्रगट होए वड बलकारया। प्रगट होए हरि भगवन्ता, आपणी जोत जगाईआ। पकड़ उठाए साचे सन्तां, भरम भुलेखा रिहा मिटाईआ। पकड़ पछाड़े देव दंता, दर द्वार रिहा

दुरकाईआ। लेख चुकाए जिया जन्ता, लहिणा देणा रिहा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचा दर वखाईआ। सतिजुग दुआरा साचा खोल्ह, सति पुरख निरँजण विच समाया। सोहँ अक्खर एका बोल, एका डंक वजाया। लक्ख चुरासी खेले होल, गूढ़ा रंगण रंग रंगाया। जन भगतां अमृत देवे उप्पर धौल, सम्मत सोलां वेख वखाया। भाग लगाए काया चोल, गोबिन्द मेल मिलाया। गुरदर मन्दिर अन्दर लए फोल, फोलणहार वेख वखाया। मन मति बुध लए वरोल, पंचम तत्त मधाणा रिहा चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां वसे सदा कोल, दूसर दिस ना आईआ। भगत सुहेला अंगीकार, आपणे अंग लगांयदा। मन मति बुध फरंगी नार, दर वेसवा आप फिरांयदा। ना कोई संगी मुहम्मदी यार, ना कोई तोड़ निभांयदा। दर दुआरा लँघी अल्ला राणी हो ख्वार, नंगी पैरीं आप फिरांयदा। मुहम्मद मंग मंगी सच्ची सरकार, प्रभ साचा झोली पांयदा। नार दुहागण लग्गी चंगी, कन्त सुहागी वेख वखांयदा। लाल चोली रिहा रंगी, तन श्रृंगार करांयदा। इक्क हदीस पाई अंगी, एका पड़दा पांयदा। चार यार वजाए जगत मृदंगी, साचा ढोला इक्क सुणांयदा। शब्द कटार कर नंगी, आप आपणा रंग वखांयदा। सम्मत पन्दरां चाढ़े डोर शब्द इक्क पतंगी, आकाश प्रकाश आप उडांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शाह इराक नाल पाक, सम्मत पन्दरां वेख वखांयदा। शाह पाक जगत दुरानी, एका शब्द जणाईआ। सम्मत पन्दरां मारे तीर निशानी, पंचम जेठा लेख लिखाईआ। नाल रलाए मुगल पठानी, अल्ला राणी मेल मिलाईआ। अन्तिम ढलदी जाए जवानी, मुड्ढ हड्डीआं रिहा वखाईआ। प्रगट होया शाह सुल्तानी, शाह सुल्तानां वेख वखाईआ। पारब्रह्म मारे तिक्खी कानी, तीर अंदाज आप हो जाईआ। नबी रसूल उम्मत दिसे खाली, अन्त रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, किसे हथ्थ ना देवे ठंडा पाणी, आब हयात ना कोई प्याईआ। आब हयात ना ठंडा पाणी, ना कोई मुख चुआंयदा। ना कोई पीर फ़कीर खुआजा खिजर ना दिसे दस्तगीर, ना कोई पीर सदवांयदा। दर दर घर घर लथ्थे चीर, कलिजुग वेला अन्त अखीर, चारों कुन्टां आप फिरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सम्मत पन्दरां वेखे घर, आप आपणा चरन छुहांयदा। शाह पाक संग इराक, देवे धुर फ़रमानया। पहली कूटे खोल्हे ताक, लहिंदी दिशा वेख वखानया। मक्का मदीना वेख चिराग, जोती नूर कवण करानया। चारे कुन्टां लग्गी आग, ना कोई मात बुझानया। दर द्वारे आउणा भाग, नेत्र नीर वहानया। आपे मेल मिलाए पाकी पाक, परवरदिगार आप अख्वानया। दुलदुल ऐली शाह चढ़े इराक, इक्क संजो तन हंढानया। अल्ला राणी कर इतफाक, तेरा लहिणा देणा होए बिबाक, प्रभ अन्त हिसाब चुकानया। लेख लिखाए भविख्त वाक, ना कोई मेट

मिटानया। अन्तिम मेला ख़ाकी ख़ाक, साढे तिन्न हथ्थ सीं वखानया। गुरू गुर वेखे मार झाकी, अट्ठे पहर नौजवानया। प्रभ दर अग्गे ना दिसे कोई राकी, वेले अन्तिम होए वैरानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका नाम करे कुरबानया। एका नाम कर कुरबान, प्रभ आपणी भेंट चढ़ांयदा। सत्त रंग वखाए इक्क निशान, उप्पर लाल रखांयदा। लाल मैहन्दी खोल्ह दुकान, अमाम मैहन्दी हथ्थ फड़ांयदा। अमाम मैहन्दी हरि भगवान, दिशा लहिंदी खेल खिलांयदा। उम्मत रसूल बहि बहि कहिंदी, अल्ला हू, कवण कूटे नाअरा लांयदा। नाम खण्डा शब्द म्यानो आपे धू, पीर पीरां आप वखांयदा। आपे चोटी बैठ कोहतूर, नूरो नूर धरांयदा। आपे आसा मनसा पूर, आपे कूड़ो कूड़ जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नीला बस्त्र शब्द शस्त्र आप आपणे तन सुहांयदा। नीला बस्त्र काला सूसा, आपणे तन छुहावना। वेस वटाए मूसा ईसा, मूसा ईसा संग निभावना। चरन छुहाए चीना रूसा, सम्मत सतारां पहली चेत्र रुत्त सुहावना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हथ्थ फड़या शब्द मधावना। चीना रूसा चरन छुहा, आपणी दया कमाईआ। पहली चेत्र खुशी मना, सम्मत सतारां रिहा जगाईआ। पंचम जेठ सम्मत पन्दरां लिख्या दए वखा, दर द्वारे दए पुजाईआ। हरिमन्दिर डेरा आपे ला, आपणा खेल खिलाईआ। मनमुख जीवां बाहर धका, अन्दरों कुण्डा देवे लाईआ। आप आपणा मुख छुपा, गुर अर्जन गोद उठाईआ। रामदास तेरा हो सहा, सीस आपणा हथ्थ उठाईआ। नानक सेवा पूर करा, गोबिन्द इक्क आस धराईआ। साची सेवा आप कमा, आपणी बांह हिलाईआ। शब्द खण्डा इक्क उठा, सृष्ट सबाई रिहा समझाईआ। धुरदरगाही वेख वखा, औलीआ पीर शेख़ मेट मिटाईआ। माझा देस भेख वटा, भेखाधारी भेख वटाईआ। दस दस्मेस आपणी जोत दए जगा, कलिजुग तेरा लहिणा देणा दए चुकाईआ। चरन दुआबे आ टिका, आपणा फेरा पाईआ। एका हल्ला दए करा, सीस धड़ रहिण ना पाईआ। धरत मात पल्लू देवे डाह, प्रभ झोली दए भराईआ। कलू काल खुशीआं रिहा मना, प्रभ वेखे चाँईं चाँईंआ। गुर गोबिन्दा कर सलाह, नर नरायण संग रखाईआ। नेत्र नैणा दए वखा, हरिसंगत वड वड्याईआ। भाई भैणा दए बणा, जो जन आए चल सरनाईआ। मनमुख जूठे झूठे दए रुड़ा, कोए रहिण ना पाईआ। हरिजन आप आपणा लड़ फड़ा, एका धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत चौदां दे दे वर, गुरमुख साचे रिहा जगाईआ। सम्मत चौदां हरि सुल्ताना, आपणा आप उठाया। गुरमुखां बन्न्हे हथ्थीं गाना, एका राह वखाया। सोहँ शब्द धुर फ़रमाना, रसना जिह्वा साचा टिक्का लाया। दर द्वारे देवे माणा, वड्डा निक्का जो जन दर द्वारे आया। ना कोई रस रखाए मिट्ठा फिका, एका एक अनरस अनडिठा मुख चुआया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, गुरमुख साचे लए वर, साचा धाम इक्क सुहाया। गुरमुख साचे साची चोली, एका तन रंगाया। इक्क सुणाए आपणी बोली, एका राग अल़ाया। आत्म पड़दा रिहा खोल़ी, दूई द्वैती मेट मिटाया। सुरत सवाणी भाली भोली, भरमी गढ़ तुड़ाया। गुर शब्द सुरती मौली, प्रभ साचे मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग तेरा साचा दर, चार वरनां रिह दिखाया।

हरि शब्द सच्ची कुड़माई, प्रभ साचा आप करांयदा। लोकमात वज्जी वधाई, हरिजन साचे आप जगांयदा। दर द्वारे आए चाँईं चाँईं, आत्म इच्छया वेख वखांयदा। देवे भिच्छया थाउँ थाँईं, मंगण मंग जो मंगांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काईं, सोहँ चोग चुगांयदा। हरि का नाउँ भुल्लणा नाहीं, लक्ख चुरासी पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका अक्खर मात पढ़ांयदा। एका नाम सच सुगात, प्रभ आपणे हथ्थ रखाईआ। धुरदरगाही लै के आया दात, लोकमात रिहा वरताईआ। मेट मिटाए अन्धेरी काया तन रात, जिस जन भिच्छया देवे पाईआ। दरस दिखाए इक्क इकांत, स्वच्छ सरूपी नज़री आईआ। मेल मिलाए कमलापात, हरिजन साचा संग निवाईआ। वेले अन्तिम पुच्छे वात, जो जन रसना रहे गाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ।

८११ ०६ ८११ ०६

सोहँ शब्द सच जैकारा, प्रभ आपणा आप लगाया। धुरदरगाही सच भण्डारा, लोकमात रिहा वरताया। जो जन मंगण आए दर दुआरा, दोए जोड़ लए प्रनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आत्म झोली दए भराया। सोहँ शब्द रसना गाउणा, आत्म वज्जे वधाईआ। मदिरा मास रसन तजाउणा, जूठा झूठा संग छुडाईआ। ज़ात पाती भेव चुकाउणा, ऊँचां नीचां एका रंग वखाईआ। मन गवरे सीस ना किसे झुकाउणा, जगत जगदीसा इक्क अखवाईआ। साचा अक्खर ना किसे पढ़ाउणा, जगत विद्या मात कराईआ। आत्म दर ना किसे खुल्ल़ाउणा, ब्रह्म विद्या ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे नाम वर, दर द्वार करे कुड़माईआ। सोहँ शब्द साची दात, हरि कलिजुग कल वरतांयदा। गुरमुखां देवे धुर सुग़ात, दूसर किसे हथ्थ ना आंयदा। लहिणा देण चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथ, सिँघ मनजीता राह वखांयदा। जगत जगदीसा दिसे साथ, नौ द्वारे पार करांयदा। जोत निरँजण मस्तक माथ, सोहँ साचा तिलक लगांयदा। सति पुरख चलाए साचा राथ, रथ रथवाही आप अख्वांयदा। सतिजुग तेरी साची गाथ, हँ हँगता मेट मिटांयदा। प्रगट होए त्रैलोकी नाथ, साची संगता इक्क बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक

नरायण नर, सतिजुग तेरी साची धार, प्रगट हो विच संसार, गुरमुखां आप वखांयदा। सोहँ शब्द अक्खर बोल, गुरमुख साचे खुशी मनाईआ। प्रभ तोलणहारा पूरे तोल, नाम कंडे रिहा तुलाईआ। आदि अन्त ना जाए डोल, डोलणहार ना आप अख्वाईआ। प्रगट होए कला सोल, नौ सत वेख वखाईआ। सन्त सुहेले लए वरोल, लक्ख चुरासी छाछ बणाईआ। जूठ झूठ कढ्ढे पोल, कलिजुग अन्तिम दए दुहाईआ। दर द्वारे रो रो पुकारे धरत धौल, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। गुरमुखां करे उलटी नाभ कँवल, अमृत झिरना रिहा झिराईआ। काया फुलवाड़ी जाए मवल, हाढ़ सतारां बीज बिजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत आत्म देवे सीज, एका धार चलाईआ। अमृत आत्म ठांढा रस, गुरमुख मुख चुआया। पुरख अबिनाशी राह साचा दस्स, सोहँ साचा सबक पढ़ाया। हिरदे अन्दर आपे वस, तीर निराला मारे कस, बजर कपाटी पार कराया। कोटन कोट प्रकाश करे रवि ससि, अन्ध अन्धेरा दए मिटाया। आत्म सेजा मेला हस्स हस्स, साचा धाम दए सुहाया। जन भगतां आपे होया वस, दर द्वारे फेरा पाया। कलिजुग विद्या होई वस, ऐड़ा अथर्बण आपणी झोली रिहा भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग राह साचा दस्स, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका नाअरा रिहा लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान तेरी जै। आदि अन्त जुगां जुगन्त रहै। जीव जन्त साध सन्त गुर पीर लए अवतार, हुन्दे आए खै। नाम शब्द सच वपार, पारब्रह्म गुर अवतार पुरख अबिनाशी एका रहै। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे नाम वर, थिर घर द्वारे बैठी रहै। थिर घर सच दरबार, प्रभ आपणा आप सजाया। शब्द सरूपी भर भण्डार, देवणहार मात हरि आया। सतिजुग तेरी सच बरात, गुरमुख साचे रिहा बणाया। चार वरनां इक्क जमात, एका राह चलाया। ना कोई ज़ात ना कोई पात, ना कोई ऊँच नीच वखाया। सोहँ शब्द दीप सात, सति निशाना रिहा चढ़ाया। नौ खण्ड प्रभ देवे दात, लेखा आपणे हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां मार्ग रिहा चलाया। साचा मार्ग आप चलाए, सोहँ हथ्थ वड्याईआ। लक्खण दीप फेरा पाए, करे शब्द जणाईआ। करोच पुष्कर आप उठाए, जम्बु होए सहाईआ। सान सलमल लए जगाए, कुशा वज्जे वधाईआ। सत्तां दीपां एका धार बंधाए, सत्त रंग निशाना रिहा वखाईआ। निर्मल जोती दीप जगाए, आप आपणी करे वड्याईआ। कुलाखण्ड हरि जोत जगा, सोहँ शब्द कराए जै जै जैकारया। इलाबुत प्रभ दए जणा, केतमाल सुणे पुकारया। किंपुरख प्रभ बणत बणा, हरवरख दए सहारया। भारत खण्डी जोत जगा, हरणयमह रिहा ललकारया। भद्र बेड़ा दए बंन्हा, रमक खेल अपारया। प्रभ अबिनाशी घट घट वासी, एका जोत करे प्रकाशी, लक्ख चुरासी नौ द्वारया। सोहँ शब्द चार

वरन दासन दासी, विष्नूं भगवान देवे पहरया। ना कोई दीसे मदिरा मासी, हुक्का नड़ ना मुख लगा रिहा। बत्ती दन्द एका पारब्रह्म अकाल पुरख सृष्ट सबाई गासी, ना कोई दूसर वेख वखा रिहा। एका पवण इक्क स्वासी, एका नाम जपा रिहा। इक्क पृथ्वी इक्क अकासी, एका आप अख्वा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जाप वड प्रताप आपणा आप करा रिहा। एका जाप जपे जन देवा, हरि साचा रिहा जपाईआ। सम्मत सोलां साचा मेवा, चरन द्वारे दए खवाईआ। प्रगट होया अलख अभेवा, अलख निरँजण आप अख्वाईआ। गुरमुखां लेखे लाए रसना जिह्वा, गुण रसना रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका अक्खर रिहा पढ़ाईआ। एका अक्खर कर त्यार, हरि सस्से मेल मिलाया। सस्सा किला अपर अपार, दस्म द्वारी विच टिकाया। दस्म द्वारी महल्ल उच्च मुनार, दिस किसे ना आया। सरगुण निरगुण खेल अपार, होड़ा दोवें मुख रखाया। आपे बन्ने धार, आपणा रूप वटाया। उत्ते टिप्पी जीव अधार, विच संसार रिहा वखाया। दोहां जोड़ा अपर अपार, मेल विछोड़ा आप कराया। शब्द घोड़ा कर त्यार, लोकमाती फेरा पाया। जोती जोड़ा शब्द करतार, धुरदरगाही वेख वखाया। पहला पौड़ा कर त्यार, सम्मत चौदां लोकमात रिहा लगाया। पूत सपूत ब्रह्मण गौड़, करे ख़बरदारया। उच्चे टिल्ले पर्बत रिहा बौहड़, गुर गोबिन्दा मीत मुराररया। गुर गोबिन्दा मीत मुरार, आप आपणे रंग रंगाया। शब्द खण्डा तेज कटार, सच गात्रे रिहा पहनाया। दर द्वारे कर त्यार, साचा बस्त्र तन सजाया। अन्दर बैठ सच्ची सरकार, एका राग अलाया। नाम सुरंगा गाए निरँकार निरँकार, निरगुण दिस ना आया। गोबिन्द नानक मेला इक्क द्वार, अर्जन विचोला रिहा बणाया। रामदास तेरा भर भण्डार, सर सरोवर रिहा वरताया। मनमुख भुल्ले जीव गंवार, दर दुआरा दिस ना आया। प्रगट हो विच संसार, जोती जामा भेख वटाया। निहकलंकी लै अवतार, सम्बल नगरी धाम सुहाया। सम्बल नगरी वेख विचार, गुर गोबिन्द संग रलाया। गुर गोबिन्दा रोवे धाहां मार, जगत विछोड़ा झल्लया ना जाया। चारों कुन्ट वेख विचार, पुरी अनन्द किला रिहा वखाया। पुरी अनन्द अक्खर पंज सच्ची धुन्कार, एका मृदंग रिहा वजाया। बीस बीसा करे ख़बरदार, इक्क इकीसा संग रलाया। नर नरायण नर अवतार चौबीसा, सच हदीसा रिहा सुणाया। छत्र झुलाए साचे सीसा, दिल्ली दरबार सेवा लाया। कोई ना करे प्रभ तेरी रीसा, जुग जुग भेख वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमति लै के साची आया। गुरमति साची गुरमुख पाए, प्रभ साचे शब्द जणाईआ। मदिरा मास दए तजाए, रसना नेड़ ना आए, निज़ानंद विच रिहा समाए, परमानंद विच समाईआ। दूई द्वैती डेरा ढाहे, भाण्डा भरम भन्नाईआ।

जोत निरँजण चन्द चढ़ाए, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। खुशी बन्द बन्द वखाए, बत्ती दन्द जो जन गाईआ। आत्म अनन्द इक्क वखाए, ब्रह्म पारब्रह्म दरसाईआ। शब्द सुहागी छन्द सुणाए, सोहँ नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पुरीआं लोआं एका नाद वजाईआ। एका नाद शब्द जैकारा, प्रभ साचा आप वजांयदा। ब्रह्मा उठ उठ करे विचारा, ना कोई भेव खुल्हांयदा। प्रगट होया विच संसारा, दिस किसे ना आंयदा। दो जहानी बन्ने धारा, एका धार वहांयदा। निहकलंकी लए अवतारा, कलिजुग अन्त मिटांयदा। सतिजुग मेला विच संसारा, लोकमाती जन्म दवांयदा। बाली बुध कर उज्यारा, कारज सिध्ध वखांयदा। चिट्टे अस्व बहे कुद्द, शाह अस्वारा आप अख्वांयदा। सतिजुग सतिवाद वरोले चिट्टा दुध्ध, जन भगतां मुख चुआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द साचा दान, जन भगतां झोली पांयदा।

हरि साजन समरथ, सर्ब समाया। हरिजन रक्खे दे कर हथ्थ, जुग जुग लए तराया। शब्द जणाए अकथना अकथ, कथनी कथ ना सके राया। जगत विकारा रिहा मथ, आप आपणा वेस वटाया। आप चलाए आपणा रथ, रथ रथवाही आप अख्वाया। लक्ख चुरासी पाए नत्थ, सोहँ तन्दी इक्क बंधाया। जन भगतां देवे नाम वत्थ, आत्म दरसी झोली पाया। वेख विखाए तत्त अठ, नौ दर खोज खुजाया। झूठा मन्दिर जाए ढठ्ठ, थिर घर इक्क वसाया। थिर घर बैठा हरि समरथ, आपणी गाथा रिहा सुणाया। सगल वसूरे जायण लथ्थ, जिस जन दर्शन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कल आपणी रिहा वरताया। सर्बकला समरथ हरि जगदीसर, एका एक पसारया। आपे वेखे जोगी यती तपीश्‍र, चारों कंट वेख विखा रिहा। मोनी सोनी मुनी मुनीश्‍र, नेत्र नैणा फोल फुला रिहा। भगत सुहेला शब्द रखीश्‍र, रिखी केश आप अख्वा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची कल आप वरता रिहा। साची कल वरते करतारा, कला धार कलि आया। खेले खेल विच संसारा, आपणा भेव छुपाया। गुरमुख साजन साचे कर प्यारा, मेलन मेली मेल मिलाया। जोती शब्दी इक्क हुलारा, पवण पवणी रिहा झुलाया। दामन दामनी चमत्कारा, नूरो नूर सवाया। कामन कामनी कर ख्वारा, देवे दर दुरकाया। राम रामनी हरि अवतारा, दहिसर घोल घुमाया। काहना कंसा खेल अपारा, द्वापर वेख वखाया। कलिजुग अन्तिम लए हुलारा, चारों कुन्टां रिहा डुलाया। पुरख अबिनाशी कर विचारा, आपणा कर्म रिहा कराया। जोत सरूपी कर उज्यारा, आकाश प्रकाश वखाया। गुर गोबिन्द नाल दुलारा, आप आपणी उंगली लाया। आपणी हथ्थीं कर श्रृंगारा, काया

सेहरा इक्क सजाया। फड़ फड़ बन्ने सीस दस्तारा, सोहँ नाउँ रखाया। नीला घोड़ा कर त्यारा, नीली धारों पार कराया। बस्त्र चोला हरि गिरधारा, आपणे हथ्थ रखाया। लाल मैहन्दी तन अपारा, साचा सीस गुंदाया। पुरी अनन्द वेख दुआरा, हरि अन्त आप समाया। अनन्दपुर ना कोई पाए सारा, दस्म द्वारी आप सुहाया। दस्म द्वारी खेल अपारा, गोबिन्द रंग रंगाया। गोबिन्द बैठा साची धारा, नूरो नूर समाया। पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ी कारा, जुग जुग करदा आया। जन भगतां लेखे लाए काया चम्मड़ा, निहकलंक लए अवतारा। जोती जामा ना कोई पल्ले पैसा धेला दमड़ा, एका शब्द वड भण्डारा। आपे मात पित अम्मी अंमड़ा, पिता पूत करे प्यारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल विच संसारा। वड संसारी आप हो, आपणी कल वरताईआ। गुरमुखां आत्म बीज बो, फल फुलवाड़ी रिहा लगाईआ। हरि बिन अवर ना जाणे को, साध सन्त बैठे धूणीआं ताईआ। मन्दिर अन्दर ग्रन्थी पन्थी सारे रहे रो, हरि गोबिन्द नज़र ना आईआ। फल अमृत कटोरी मुख ना देवे कोई चोअ, नेत्र नैण ना कोई खुल्हाईआ। सतिजुग तेरा साचा जाप एका सोहँ सो, नानक रसना गया गाईआ। पुरख निरँजण प्रगट हो, हरिसंगत रिहा पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, घर साचा वेख वखाईआ। साचा घर जगत सुहंजना, घर साचे वज्जे वधाईआ। मिल्या मेल पुरख निरँजणा, गुरमुख वड वड्याईआ। आपे दाता दर्द दुःख भय भंजना, बख्शणहार सच सरनाईआ। पी अमृत आत्म कलिजुग रज्जना, तृष्ना रहिण ना पाईआ। आपणा पड़दा आपे कज्जणा, चरन धूढ़ी मस्तक टिक्का शाहीआ। काल नगारा सिर ते वज्जणा, राए धर्म डौरू वाहीआ। हरिसंगत गुरसिख साचे बहि बहि सजणा, हरि साचा मेल मिलाईआ। मदिरा मास जगत विकारा तज्जणा, एका आत्म रस वखाईआ। अन्त सन्त कोई ना रक्खे लजना, नार दुहागण खुल्हड़े केस मनमुख जीव रोवे मारे धाहींआ। गुरमुख सन्त सुहेला इक्क बैरागना, प्रभ मिलण दी आस रखाईआ। हथ्थीं बन्ने नाम साचा तागना, एका डोरी रिहा वखाईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले हाढ़ सतारां भिन्नड़ी रैण उठ उठ जागणा, सृष्ट सबाई गूढ़ी नींद सुआईआ। चरन धूढ़ कराए माजना, साचे माधन दुरमति मैल गंवाईआ। एका राग उपजाए साचा रागना, धुन आत्मक आप वजाईआ। गुरसिख पाया हरि कन्त सुहागना, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विछड़ कदे ना जाईआ। जगत बुझाए तृष्ना आगना, सांतक सति वरताईआ। फड़ फड़ हँस बणाए कागना, मुख एका जाम प्याईआ। गुरसिख गुरमुख वड वड भागना, दर दुआरा एका एक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत हरि सेवक सेवादार अख्वाईआ। हरि सेवक सुल्तान, गुरमुखां सेव कमांयदा। सेवक सेवा कर परवान, जन भगतां एह समझांयदा। चरन प्रीती मंगे दान, अग्गे

झोली डांयदा। शब्दी शब्द कराए जाण पछाण, नाम झोली इक्क वखांयदा। मेल मिलाए मिल्या मेल धुर संजोगी, धुर फुरमाना एका हुक्म जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सेवक करता पुरख अबिनाशी सेवक सेवा आप कमांयदा। साची सेवा कर अबिनाशी, करते खेल रचाया। प्रगट होए घनकपुर वासी, साचा मेल मिलाया। जोत निरँजण दासन दासी, सेवक सेव कमाया। दर द्वारे कोई ना दिसे मदिरा मासी, दर दवारिउँ रिहा दुरकाया। पकड़ उठाए पंडत काशी, सम्मत पन्दरां नेड़े आया। प्राग अयुध्या करे रासी, प्रभ साचा वेख वखाया। त्रैबैणी नैणी करे बन्द खुलासी, वेला अन्तिम आया। जगन्नाथ तेरा देवे साथी, हरि आपणा चरन छुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सेवक सेवा रिहा कर, दिस किसे ना आया। सेवक सेवा करनेहार करतारा, जुग जुग सेव कमांयदा। जन भगतां देवे नाम अधारा, इक्क अधार रखांयदा। प्रगट हो विच संसारा, आपणा मार्ग लांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, निहकलंका नाउँ रखांयदा। राज राजानां करे ख़बरदारा, साधां सन्तां आप उठांयदा। आपे वसया सभ तों बाहरा, हर घट वेख वखांयदा। हरिजन साचा मीत मुरारा, आपणे संग रखांयदा। दिवस रैण कर प्यारा, अट्ठे पहर दया कमांयदा। नेत्र नैण इक्क उग्घाड़ा, नाम कज्जल एका पांयदा। जोती नूर कर चमत्कारा, आपे वेख दर दुआरा, घर मन्दिर आप सुहांयदा। करे खेल अपर अपारा, गुर मेला मेला गुर वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, साची सेवा सेव कमांयदा।

८१६
०६

❋ १८ हाढ़ २०१४ बिक्रमी आत्मा सिँघ दे गृह पिण्ड मलूवाल ज़िला अमृतसर ❋

जन बालक सति पूत, गुरमुख आप उपाया। आपे वेखे काया दहि दिशा चारे कूट, अन्दर मन्दिर फेरा पाया। अमृत आत्म सोमा रिहा फूट, निझर धारा मुख चुआया। पंच विकारा रिहा तूट, हरि साचा दए जड़ उखड़ाया। तीर निराला रिहा छूट, रसना चिले आप चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे गले लगाया। हरिजन साचे वेख विचार, आपणा खेल खिलांयदा। पूर्ब लहिणा करज उतार, नेत्र नैणां दरस दिखांयदा। भाणा सहिणा विच संसार, भोले भाउ गोबिन्द मेल मिलांयदा। नेत्र नैणा दरस अपार, काहना कृष्ना भेख वटांयदा। भाई भैणां मीत मुरार, साक सज्जण आप अख्वांयदा। साचे मन्दिर अन्दर वेख विचार, आपणा संग निभांयदा। फड़ फड़ बाहों रिहा तार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन बेड़ा लाए पार। हरिजन बेड़ा आपे बन्नृ, आपणे कंध उठाईआ। देवे माल सच्चा

नाम धन, इक्क भण्डार रखाईआ। थिर घर वासा ना कोई छप्परी ना कोई छन्न, चार दिवार ना कोई बणाईआ। चरन प्रीती आत्म जाए मन्न, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। राग अनाद सुणाए कन्न, साची धुन इक्क रखाईआ। हरिजन साचे मात चुण, आप आपणे लड़ बंधाईआ। तीर्थ तट्टां फिरदे रिख मुन, जंगल जूह देण दुहाईआ। जन भगतां पुकार रिहा सुण, दूर दुराडा नेड़े आईआ। लक्ख चुरासी छाण पुण, हरिजन साचे रिहा तराईआ। आपे जाणे गुण अवगुण, गुणवन्ता हरि रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। हरिजन साचे नेत्र पेख, आपणा पन्ध मुकांयदा। आपे कट्टणहारा लेख, जुग जुग वेस वटांयदा। मस्तक टिक्का लाए मेख, आप आपणा कर्म कमांयदा। प्रगट होए माझे देस, नर नरेश दया कमांयदा। सेवक सेवा ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, दर दरवेश रखांयदा। आप तजाए बाशक सेज, सांगोपांग मुख भवांयदा। गुरसिख तेरी इक्क टेक, चरन कँवल रखांयदा। पंज तत्त ना लाए माया सेक, मोह ममता दूर करांयदा। जोती जामा धरया भेस, दस दस्मेस आप हो आंयदा। धार अवल्लड़ी अवल्लड़ा वेस, वेसाधारी आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे संग निभांयदा। गुरमुख साचे सगला साथ, हरि तेरा आप निभाया। प्रगट हो त्रैलोकी नाथ, दर दुआरा इक्क सुहाया। शब्द जणाए अकथना अकाथ, आप आपणा रिहा वखाया। सोहँ चलाए साची गाथ, जुग जुग विछड़े रिहा मिलाया। अमृत आत्म मारे ठाठ, सर सरोवर इक्क उछाल लगाया। ना कोई तीर्थ ना कोई ताट, ना कोई नीर मात वहाया। हरिजन तेरा चरन कँवल बंधाए साचा नात, आप आपणी दया कमाया। पुरख अगम्मा देवे दात, दानी दाता आप हो आया। सोहँ शब्द सच सुगात, प्रभ सतिजुग झोली पाया। कलिजुग मिटे अन्धेरी रात, जूठ झूठ मुख छुपाया। आपे बैठ इक्क इकांत, जन भगतां आत्म बूंद स्वांत प्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे मार झात, हर घट अन्दर वेख वखाया। हर घट अन्दर मारे झाकी, हरि आपणी दया कमाईआ। हरिजन लहिणा देणा बाकी, पिछला मूल चुकाईआ। अमृत आत्म प्याए हरि जाम साकी, दिवस रैण खुमार रखाईआ। बजर कपाटी खोल्ह ताकी, एका एक मेल मिलाईआ। ना कोई जाणे बन्दा ख़ाकी, ख़ाकी ख़ाक समाईआ। अबिनाशी करता एका पाकी, पतित पुनीत कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे तेरा दर, ग़रीब निवाज़ा वेख वखाईआ। ग़रीब निवाज़ा वेखणहारा, हरिजन सन्त दुआरया। एका ताजा कर त्यारा, सोहँ शब्द घोड़ा रिहा शृंगारया। सोहँ मारे साची अवाज़ा, दिवस रैण देवे पहरया। लोकमात रच्चया काजा, सतिजुग कलिजुग वेख वखा रिहा। धुरदरगाही आए भाजा, आप आपणी बणत बणा रिहा। लग्गया भाग देस माझा, सम्बल

नगर धाम सुहा रिहा। सम्बल नगरी वजाए अनहद वाजा, ताल तलवाड़ा इक्क रखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन साचे मेल मिला रिहा।

सत्त रंग जोती धार, हरि उपाईआ। नौ दर खोल्ह किवाड़, बणत बणाईआ। साध सन्त कर विचार, आत्म जोत टिकाईआ। जीव जन्त पसर पसार, वरन गोत धन्दे लाईआ। हर घट वेखे किरपा धार, लक्ख चुरासी आसण लाईआ। हरिसंगत होए सच सिक्दार, राजन भूप आप अख्वाईआ। बख्श बख्शे बख्शणहार, बख्श आपणे हथ्थ रखाईआ। नौ सत्त वणज वपार, एका एक रिहा कराईआ। सत्त नौ कर्म विचार, धर्मी धर्म कमाईआ। नौ सत्त सोलां इक्क प्यार, सोलां कलीआं आप बंधाईआ। सोलां कल लए अवतार, मानस देह रखाईआ। मानस देह तज सरकार, अकल कला हो आईआ। वरते वरतावे विच संसार, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। सुरत मति मन इक्क द्वार, त्रैलोकां वेख वखाईआ। पंज विकार दए डन्ने, डन्नणहार आप अख्वाईआ। जिस जन दर द्वारे आत्म मन्ने, ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। राग नाद सुणाए कन्ने, साचा कान्हा इक्क सुणाईआ। रवि ससि सूरज चन्ने, तारा मण्डल संग निभाईआ। मस्तक थाल दीपक जोत आप टिकाए साचे छन्ने, आप आपणी आप आपणे हथ्थ उठाईआ। लग्गे भाग काया तने, साचा मन्दिर इक्क सुहाईआ। जो घड़या सो अन्तिम भन्ने, घड़न भन्नणहार आप अख्वाईआ। कलिजुग अन्तिम बेड़ा बन्ने, तेरां चौदां रंग रंगाईआ। नानक गोबिन्द एका एक टेक मंगे, दोए जोड़ करन सरनाईआ। दिवस रैण फिरन पैर नंगे, नाम प्रदखणा रिहा कराईआ। सति पुरख निरँजण साचा दर अन्दर कोई ना लँघे, दर दहिलीजे बैठे सीस झुकाईआ। अकाल पुरख आपणा आप लगाया अंगे, सच सिँघासण लई अंगड़ाईआ। चिट्टे अस्व कसया तंगे, सोलां कलीआं आसण लाईआ। सच दुआरा आपे लँघे, आप आपणा मुख वखाईआ। मानस देवत सुर ब्रह्मा शिव बैठे रहे मंगे, पूरन इच्छया आप कराईआ। नीर वरोले गुरमुख गंगे, जोत धारा वेख विखाईआ। मानस जन्म ना होए भंगे, जिस जन आस रखाईआ। सम्मत चौदां गुरसिक्खां अन्दर लँघे, प्रभ बैठा आसण लाईआ। हरिसंगत तेरी चोली रंगे, नाम मजीठी रंग चढ़ाईआ। आउँदा जांदा लोकमात ना संगे, मनमुख चारों कुन्ट देण दुहाईआ। काया माटी काची वंगे, कंचन रूप बणाईआ। सुरत सवाणी हीर स्सयाल झंगे, शब्द रांझा रिहा मिलाईआ। तन वजाए वंझली वंझे, सोहँ फुनकारा लाईआ। लेखे लाए मानस मानुख बन्दे, जिस जन बख्शे सच सरनाईआ। जूठे झूठे जगत धन्दे, अन्त कम्म ना आईआ। मदिरा मासी पापी गन्दे, गुर गोबिन्दा दर दुरकाईआ। हरिसंगत चढ़ाया साचा चन्दे, सतिजुग करे रुशनाईआ।

माया ममता आत्म अन्धे, बैठे मुख छुपाईआ हरिजन गाउँदे गीत सुहागी छन्दे, हरि आपणी चोग चुगाईआ। बजर कपाटी तोड़े जंदे, अन्दर बैठा आपे लाहीआ। जन भगतां उठाए आपणे कंधे, आपणीआं भुजां अग्गे डाहीआ। मनमुख जीव भागां मन्दे, बैठे मुख शरमाईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले साचे मेले, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोलां सोलां वेख हरि, सोलां रिहा जणाईआ। नौ सत प्रभ साची धारा, प्रभ आपणे हथ्थ रखाईआ। सति पुरख लए अवतारा, नौ दर खोल्ह वखाईआ। नौ दर करे बन्द किवाड़ा, दसवें फेरा पाईआ। दसवें अन्दर आपे वाड़ा, आपणा मुख वखाईआ। शब्द वखाए साचा लाड़ा, आपणी हथ्थीं आप आपणी घोड़ी रिहा चढ़ाईआ। चौथे दर आपे वाड़ा, सस्सा किला बणाईआ। होड़ा उप्पर देवे धारा, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। हाहा अग्गे करे निमस्कारा, बैठा सीस झुकाईआ। हरि हरी हरि हरि रिहा विचारा, हरिजन आए दर सरनाईआ। साधां सन्तां कर विचारा, निरँकार करे कुड़माईआ। सम्मत चौदां वेख विचारा, चौदां लोकां हट्ट खुल्हाईआ। चौदां तबकां मारे मारा, निहकलंका जोत जगाईआ। सम्मत पन्दरां काया मन्दिर डूँघी कन्दर वेख विचारा, सन्त सुहेले लए मिलाईआ। सम्मत सोलां बदले चोला, ना रत्ती ना मासा तोला, ना कोई भाग भार वंडाईआ। ना कोई कहार ना कोई चुक्के डोला, ना कोई बोला शब्द जणाईआ। ना कोई राग रंग खुशी खेले होला, ना कोई स्वांग वरताईआ। ना कोई लशकर फौज मारे तीर अंदाज ना गोला, ना कोई निशान रखाईआ। मनमुख जीवां खेले होला, दूई द्वैती पड़दा पाड़ वखाईआ। गुरमुखां अन्तिम व्याहे बोला, साचा कन्त आप हो जाईआ। शब्द कंडा साचा तोला, सच हथ्थ रिहा उठाईआ। पुरख अबिनाशी ना अन्ना ना होए बोला, जन भगतां पुकार हिरदे रिहा वसाईआ। आप सुणाए आपणा ढोला, प्रगट हो हो साचा माहीआ। नौ खण्ड पृथ्वी दुआरा एका खोल्हा, हरि चरन सच्ची सरनाईआ। कलिजुग अन्तिम रक्खया उहला, दिस किसे ना आईआ। गुरमुख तेरी काया आपे बोला, सोहँ जै जैकारा लाईआ। विष्नूं भगवान देवे दान विच जहान, कला सोलां आप अख्वाईआ। हरिसंगत तेरी काया मौला, फल फुलवाड़ी मात लगाईआ। लोआं पुरीआं पया रौला, ब्रह्मा उठ उठ दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सम्मत सोलां राह तकाईआ। नौ सत तेरा रंग वेख, प्रभ आपणी कल वरतांयदा। जोती जामा धारया भेख, साधां सन्तां मुख भवांयदा। आदि जुगादी रिहा वेख, दिस किसे ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति आप समझांयदा। सम्मत चौदां दे मति, हरि साचे सिख्या आप दवाईआ। खेल खिलाए पंज तत्त, मन मति बुध करे लड़ाईआ। पंचम जेठ बीजे साचे वत, हरि आपणा बीज पाईआ। नाड़ बहत्तर उब्बल रत, चारों कुन्ट पए दुहाईआ। जन भगतां रक्खे

८१९
०६

दे कर हथ्थ, समरथ हथ्थ वड्याईआ। चरन धूढ़ बख्शे साची वत्थ, दुरमति मैल गंवाईआ। अमरापद पायण, एका दूजा भउ चुकाईआ। तीजा नैण वेख दर, घर चौथा वेख वखाईआ। पंजवें मेले हरी हरि, छेवें छप्पर छन्न ना कोई रखाईआ। सति पुरख निरँजण घर में पाओ, विछड़ कदे ना जाईआ। अट्ठां तत्तां नाता तोड़ वखाओ, नौ दर जगत बन्द कराईआ। दसवें आसण साचा लाओ, हरि जोती जोत आसण इक्क वछाईआ। पुरख अबिनाशन दर्शन पाओ, दूसर किसे दिस ना आईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी जोत धर, सम्मत सोलां तेरा राह तकाईआ। नौ सत तेरा सच मलाह, प्रभ साचा आप अख्वांयदा। जन भगतां देवे नाम सलाह, एका मता पकांयदा। शब्द सरूपी बण मलाह, एका जाप जपांयदा। इक्क वखाए साचा थाँ, चरन धूढ़ इक्क सुहांयदा। अट्ठ सट्ठ तीर्थ दिसणा ना, गुरदर मन्दिर डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे वेखे आपणा घर नौ सत तेरा इक्क दर, दर दुआरा आप खुल्हांयदा। इक्क इकल्ला हरि निरँकारा, एका घर वखाया। दूजा भरे शब्द भण्डारा, तीजा नैण खुल्हाया। चौथे मेला हरि सन्त दुलारा, पंच शब्द अल्हाया। छेवें छप्पर छन्न ना कोई अवारा, सति पुरख निरँजण साचा खेल रचाया। सति घर वेखे इक्क दरबारा, उप्पर नाम सिँघासण रिहा विछाया। उच्च महल्ल हरि अटारा, एका धाम सुहाया। दीपक जोती कर उज्यारा, आपणे विच समाया। ना कोई दिसे धुँदूकारा, ना कोई धूआँधार रखाया। गुरमुख ना होए हैरान, प्रभ देवे दान, भरम भुलेखा जगत ना पाया।

भिन्नी रैनड़ीए उठ जाग, प्रभ साचा आप जगांयदा। सन्त जनां तन बद्धी ताग, एका तन्द हथ्थ फड़ांयदा। हँस बणा फड़ फड़ काग, दे मति आप समझांयदा। जन भगतां घर दीपक जोत जगा चिराग, तेरी साची सेवा लांयदा। धूढ़ी चरन मजन करा साचा माघ, वेला वक्त सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिसंगत जिउँ नानक अंगद आपणे अंग लगांयदा। हरिसंगत हरि अंग लगा, आपणी कुल बणांयदा। काया चोली रंग चढ़ा, एका रूप वखांयदा। नाम बस्त्र तन पहना, सोहँ शस्त्र तन लगांयदा। साचा अक्खर जगत पढ़ा, एका जाप जपांयदा। बजर कपाटी पत्थर दए तुड़ा, आपणी दया कमांयदा। सस्से उप्पर होड़ा ला, हरिजन मेल मिलांयदा। थोड़ा थोड़ा भेव खुल्ल्हा, आपणा संग निभांयदा। सच वस्त जिस जन झोली देवे पा, सो जन मुख भवांयदा। कलिजुग तेरी वगी वा, हरि भाणा ना कोई विखांयदा। सम्मत सोलां जन भगतां देवे ठण्ढी छा, कलिजुग काला मुख छुपांयदा। सतिजुग

८२०
०६

होए एका नाँ, दूसर ख़ाक मिलांयदा। सर्ब जीआं हरि पिता माँ, वरन बरनां बाहर हो जांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी देवे ठण्ढी छा, साचा राह वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सम्मत सोलां तेरी मंग दिवस रैण मंगांयदा। सम्मत सोलां मंगी मंग, धरत मात दर पुकार। मेरे अंगी लग्गे अंग, लाल चुन्नी लए उतार। साचा संगी मुहम्मदी यार, देवे इक्क प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सम्मत सोलां करे ख़बरदार। सम्मत सोलां सोलां रंग, प्रभ साचा आप चढ़ांयदा। चार यार मुहम्मद संग, शाह ऐली नाल रलांयदा। खिच कटार करे नंगी नंग, आप आपणे हथ्थ रखांयदा। आकाश आकाश डोर पतंग, आपे टंगी अध विचकार आप कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन तेरा वेखे घर, सम्मत सोलां तेरा राह तकांयदा। सम्मत सोलां मात आए, चारों कुन्ट दुहाईआ। गुरमुख विरला ख़ुशी मनाए, घर एका वज्जे वधाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी करे हाए हाए, रसना जिह्वा रहे गाईआ। हरिजन साचे वेख वखाए, प्रभ पकड़ उठाए फड़ फड़ बाहींआ। कलिजुग जीव फिरन हलकाए, ना दीसे कोई सहाईआ। गुरमुखां घाल पाए थाएँ, जो जन रसना रहे गाईआ। आपे वेखे थाउँ थाएँ, लुकया कोई रहिण ना पाईआ। आपे पिता आपे माएं, आप आपणी गोद उठाईआ। हरि शब्द फड़े साची बाहें, तोड़ विछोड़ा ना कोई कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सोलां सोलां वेख वखाईआ। सोलां रंग जाए चढ़, सोलां कल अवतारया। ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई चोटी ना कोई जड़, ना कोई बणत बणा रिहा। ना कोई अक्खर विद्या गया पढ़, ना कोई लेख लिखा रिहा। अग्नी माया ना गया सड़, ना कोई रक्त बूंद पसरया। जन भगतां अन्दरे अन्दर रिहा फड़, दिस किसे ना आ रिहा। दस्म द्वारी बैठा वड़, शब्द जणाई इक्क करा रिहा। जोत जगाए बहत्तर नड़, अन्ध अन्धेर मिटा रिहा। आप फड़ाए आपणा लड़, सम्मत चौदां मुख रखा ल्या। पहली चेत्र चिट्टे अस्व चढ़, गुर गोबिन्द तंग कसा ल्या। मढ़ी गोर ना गया सड़, घर धाम आपणा आप रखा ल्या। सम्बल नगरी बैठा दड़, आपणा मुख छुपा ल्या। गुरमुख साचे सन्त सुहेले आप कराए आपणे मेले, गुर चेले रूप समा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, साची सिक्खी सिख्या आप समझा रिहा। साची सिक्खी कर त्यारा, आप पन्थ चलाया। नौ खण्ड पृथ्वी करे विचारा, भेव किसे ना पाया। पढ़ पढ़ थक्के वेद चारा, पुराण अठारां रहे गाया। अञ्जील कुरानां हाहाकारा, मुलां शेख़ रहे कुरलाया। ग्रन्थी पन्थी रोवण ज़ारो ज़ारा, साचा राह दिस ना आया। रामदास तेरा दर दरबारा, इक्क अखाड़ा स्यासत बणाया। प्रभ लुट्टी जाए दिन दिहाड़ा, दिस किसे ना आया। पंचम जेठ मगर लगाए अगम्मी धाड़ा,

सम्मत पन्दरां नेड़े आया। अन्तिम उजड़े भेडां वाड़ा, पाली कोए ना मगरे आया। धरत मात तेरा इक्क अखाड़ा, सम्मत सोलां रिहा लगाया। कोई ना लुकया रहे विच झाड़ा, फड़ बाहों पार कराया। आप चबाए आपणी दाहढ़ा, आपणा भेख वटाया। गुरमुख साजण साचा लाड़ा, प्रभ साची घोड़ी रिहा चढ़ाया। लाड़ी मौत ना मंगे भाड़ा, अग्गे हो ना घुंगट पाया। भगत जनां देवे नाम धना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा खेल आपे खेलण आया। सम्मत चौदां सच विहार, प्रभ साचे मात कराया। एका इक्की कर त्यार, गुर सिक्खी धीर धराया। वालों निक्की धारों तिक्खी भेव ना पायण मुनी रिखी, किसे लेख लिख्त विच ना आया। गुर गोबिन्दे नेत्र वेखी, आप आपणा रूप वटाया। भरम भुलाए धारी केसी, केसाधारी दिस ना आया। मेल मिलाए दस दस्मेसी, निरँकार विच समाया। मंगण मंग ब्रह्मा विष्न महेष गणेशी, दर द्वार वखाया। पारब्रह्म सदा आदेशी, इक्क आदेश कराया। जोती जामा कलिजुग वेसी वार अनेकी, कलिजुग तेरी वारी अन्तिम आया। सतिजुग तेरा लिखे लेखी, साचा मार्ग रिहा लगाया। शब्द सुनेहड़ा देस प्रदेसी, लोआं पुरीआं आस पुजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सम्मत चौदां तेरा राह, जन भगतां बण मलाह, लोकमाती रिहा वखाया। सम्मत चौदां साचा राह, प्रभ साचा मात चलांयदा। इक्क जपाए साचा नाँ, सोहँ नाउँ रखांयदा। गुरमुख उठाए थाउँ थाँ, दर दुआरा बंक सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा नेत्र आप खुलांयदा। गुर गोबिन्द नेत्र खोल्ह, साची सिक्खी वेख विखाणदा। शब्द दो अक्खर एका बोल, मन्ने भाणा इक्क अकाल दा। अन्तिम तोले पूरा तोल, वेखे खेल दो जहान दा। नाम मृदंग वजाए ढोल, नाता तुट्टे पीण खाण दा। प्रगट होए कल सोल, सम्मत सोलां राह जाणदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सुहेले आप पछाणदा। सन्त सुहेले लए लभ्भ, आपणी जोत जगाईआ। उलटी करे कँवल नभ, अमृत मुख चुआईआ। पंच विकारा दए दब्ब, उप्पर पत्थर नाम टिकाईआ। पिछला लहिणा देणा मूल चुकाए सभ, बाकी कोई रहिण ना पाईआ। हरिसंगत हरि चरन द्वारे रही फब, सम्मत चौदां धार बंन्हाईआ। ज्ञानी ध्यानी रहे लभ्भ, चारे कुन्टां नेत्र रहे उठाईआ। काया चोली पए डब्ब, ना कोई मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत मेला आप आपणा रिहा कराईआ। सम्मत चौदां साचा मेला, प्रभ साचे चरन द्वारया। मेल मिलाए सज्जण सुहेला, एका दूजा भेव निवारया। तीजा नेत्र आपे खोल्हा, चौथे बोले शब्द जैकारया। पंचम तोले साचा तोला, छेवें घर दए हुलारया। सति पुरख निरँजण सति सतिवादी एका घर खोल्हा, ना होए बन्द किवाड़या। खुशी मनाए हाढ़ सतारां सम्मत सोलां, गुरमुख साचे करे उज्यारया। सतिजुग तेरा दर दुआरा पुरख अबिनाशी आपे खोल्हा,

चार वरन वखाए इक्क भण्डारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,, निहकलंक नरायण नर, हरिजन तेरा आपे आप बणे वरतारया।

हरिजन सच प्रीत, जुग जुग इक्क रखाईआ। वसया हस्त कीट, हर घट रिहा समाईआ। आपे सुत्ता दे कर पीठ, बैठा मुख भवाईआ। आपे देवे नाम अनडीठ, सच वस्तू झोली पाईआ। आपे पीसण रिहा पीठ, आपणी इच्छया पूर कराईआ। आपणा भाणा आपे जाणे मीठ, सद भाणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सतिगुर मात उपाईआ। सन्त सतिगुर मात उपा, सिर आपणा हथ्थ टिकांयदा। जोती नूर इक्क टिका, दीपक दीप जगांयदा। शब्द चोट सच लगा, मन खोट कढांयदा। कोटन कोट सरन लगा, साचा मार्ग लांयदा। भेव अवल्लड़ा इक्क रखा, आपणा राह वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सतिगुर वेख वखांयदा। सन्त दुलारे मात उपाए, जुग जुग खेल खिलांयदा। आप आपणी दया कमाए, आपणी सेव कमांयदा। आप आपणा शब्द चलाए, आप आपणी बूझ बुझांयदा। आप आपणा रंग रंगाए, आपणा रंग चढ़ांयदा। आप आपणा संग निभाए, सगला संग रखांयदा। आप आपणे अंग लगाए, अंगीकार आप हो जांयदा। आप आपणा मृदंग वजाए, साची चोट लगांयदा। आप आपणा पलँघ वछा ए, उप्पर सेजा आसण लांयदा। आपणे घोड़े आपे तंग कसाए, दक्खण दिशा मुख भवांयदा। दर दरवाजा लँघ वखाए, ना कोई राह अटकांयदा। जन भगतां मंग इक्क मंगाए, जुग जुग मात समझांयदा। भुक्ख नंग रिहा कटाए, एका ओट चरन ध्यान लगांयदा। काया काची वंग प्रभ लेखे लाए, कंचन गढ़ बणांयदा। दस्म द्वारी उप्पर चढ़ाए, हरि महल्ल सुहांयदा। आपे पेखे दर्शन पाए, आप आपणी तृष्न बुझांयदा। गुरमुख साचे लेखे लाए, कंचन गढ़ बणांयदा। भरम भुलेखे दूर कराए, दो जहानां पार करांयदा। दो जहानी साची मेखे लाए, ना कोई मात उखड़ांयदा। सतिजुग तेरा दर दुआरा वेखण आए, कलिजुग अन्तिम जोत जगांयदा। नर नरेश रिखी केश गवर्धन गुरमुखां भार उठावण आए, हरि दाता दानी दस दस्मेस त्रैगुण माया नार वेसवा परे हटाए, दर दरवेश आप अख्वांयदा। ना कोई जाणे धारी केस, सीस सेहरा इक्क बंधाए। गुरमुख तेरी वाग गुंदाए। साचे घोड़े रिहा चढ़ाए। लोआं पुरीआं पार कराए। थिर घर साचा थान सुहाए। थिर घर सच इक्क द्वार। जगे जोत अगम्म अपार। इक्क इकल्ला एकँकार। सति सरूपी कर पसार। अट्ठे पहर रहे उज्यार। आलस निन्दरा ना कोई विचार। दु:ख सुक्ख तों वसया बाहर। मात कुक्ख ना करया वास, ना अन्दर ना बाहर। ना मानस ना मानुख

८२३
०६

ना देवत ना सुर असुर ना पाए सार। ना पंखी पंछी तरवर सरवर, ना बिरख ना रुक्ख उच्चा टिल्ला ना कोई पहाड़। ना सागर ना सिन्ध, ना फूलन ना मालन पाए हार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सुहेले सतिगुर चेले इक्क कराए सच द्वार। सन्त सुहेले जोत जगा, जुग जुग दया कमांयदा। आप आपणे राहे पा, लोकमाती राह चलांयदा। चरन नाती इक्क बंधा, जूठा झूठा नाता तुड़ांयदा। अमृत आत्म बूंद स्वांती दए पया, निझर धारा इक्क वहांयदा। दिवस राती भेव चुका, सूरज चन्न ना कोई चढ़ांयदा। तारा मण्डल दए खपा, गुरसिख तेरे चरनां हेठ दबांयदा। सो हँ घर दए वखा, आप आपणा फेरा पांयदा। गुर सतिगुर साचा करे सलाह, शब्दी मता पकांयदा। निरगुण रूप बण मलाह, आपणा बेड़ा आप चलांयदा। साचे सन्त आपणी उंगली ला, देश देशां पार करांयदा। पौड़ी पौड़ी लए चढ़ा, सति पुरखे मेल मिलांयदा। सति पुरख विच गए समा, सतिगुर पूरा सो अख्वांयदा। आप तजाए आपणा नाँ, पुरख अकाल आप अख्वांयदा। आपे पिता आपे माँ, आप आपणी सेज हंढांयदा। आपे बाल अञ्जाणे आपणी गोद लए उठा, दे हुलारा आप हिलांयदा। आपे सीर नीर मुख दए चुआ, आपे धीर धरांयदा। आपे बस्त्र चीर तन दए सुहा, आपे वेख वखांयदा। चोटी अख़ीर दए चढ़ा, थिर घर धाम सुहांयदा। गुरमुखां बेड़ा रिहा बंन्हा, कलिजुग वेला वक्त सुहांयदा। मनमुखां हड्डी रीड़ रिहा तुड़ा, कलिजुग भार टिकांयदा। हउमे पीड़ रिहा लगा, दिवस रैण मुख रसन कुरलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सतिगुर वेख वखांयदा। सन्त जनां हरि साजन मीता, एका एक अकालया। जुग जुग चले चलाए आपणी रीता, दीना बंधप दीन दयालया। बैठा रहे सदा अतीता, खेले खेल मात निरालया। आपे हारे आपे जीता, आपे चले अवल्लड़ी चालया। आपे देहुरा आपे मन्दिर मसीता, अन्तिम आपे करे खालीआ। आप उपाए वेद पुराण रसना गाए अठारां ध्याए गीता, अर्जन खड़ा दर सवालीआ। आपे मुहम्मद चार यार रलाए आपे परखणहारा नीता, आपे तीस बतीस करे कवालीआ। आपे नानक अर्जन हस्त कीटा, खाणी बाणी फोल फुलाईआ। आपे गोबिन्द बणया भन्ने कौड़ा रीठा, हथ्थ फड़या तेज कटारीआ। आपे मन्नया भाणा मीठा, धुरदरगाही आप वरताईआ। आपे सुत्ता दे कर पीठा, कलिजुग तेरी अन्त निशानीआ। गुरमुख विरले मात डिठा, जिस मेले कर कर आप आपणी मेहरबानीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सतिगुर देवे नाम निशानीआ। सन्त जनां हरि नाम निशानी, जुग जुग इक्क वखाईआ। आत्म अन्तिम मारे कानी, बजर कपाटी पार कराईआ। राग अनादी सुणाए साची बाणी, धुन आत्मक रिहा उपजाईआ। गुर शब्द मिलाए साचा हाणी, सुरती सुरत लए प्रनाईआ। जोत निरँजण वारे पाणी, पहला दर दरवाजा लँघाईआ। पंचम करे जाण पछाणी, इक्क दूजे मेल मिलाईआ।

वेखे घर इक्क निधानी, हरि निरगुण वेख वखाईआ। एका पड़दा बैठा ताणी, दिस किसे ना आईआ। जिस जन सुणाए आपणी बाणी, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। हँ हँगता मेट मिटाई सच मधाणी वेख वखाईआ। सन्त सतिगुर विटहों कुरबानी, हरि साजण मेल मिलाईआ। सन्त जनां हरि साजण पाया, मिटया सगल वसूरा। राजन राज नज़री आया, वसया नेड़े दूरा। आपणा काज आप रचाया, सर्बकला भरपूरा। देस माझे डेरा लाया, गुरमुखां बख्शे चरन धूढ़ा। दो जहानां सांझ कराया, काया चोली रंग चाढ़े गूढ़ा। त्रैगुण माया आंच बुझाया, दुरमति हूंझे कूड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सन्त सुहेले लए वर, चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा। मूढ़ो मूढ़ अन्ध अज्ञानी, प्रभ साचा दया कमांयदा। सोहँ देवे धुर दी बाणी, एका नाद वजांयदा। अमृत आत्म ठंडा पाणी, साचा सीर मुख चुआंयदा। एका मिले पद निरबाणी, पद चौथा इक्क वखांयदा। भरमे भुल्ल जेरज खाणी, कलिजुग अन्तिम आप भुलांयदा। जूठ झूठ होए मात प्रधानी, सच सुच्च ना कोए जणांयदा। त्रैगुण माया साची राणी, आपणा वेस करांयदा। पंचम मेला पंच शैतानी, पंचम राह भुलांयदा। अन्तिम चुकया दाना पाणी, प्रभ साचा वेख विखांयदा। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर वड सूर बलवानी, एका तीर चलांयदा। पूत सपूता अर्जन गुर मात भानी, साची सेवा लेखे लांयदा। दर द्वारे मंगे दानी, दाता भिच्छया एका पांयदा। एका अक्खर वेख वखानी, हरि चरन ध्यान लगांयदा। कलिजुग तेरी सच निशानी, गुर अर्जन लेख लिखांयदा। हरि जू हरिमन्दिर चरन छुहानी, सृष्ट सबाई मेट मिटांयदा। ना कोई जाणे जीव नादानी, माया राणी भरम भुलांयदा। जोत निरँजण खेले खेल महानी, आदि निरँजण संग रखांयदा। नर नरायण सर सरोवर वेखे ठंडा पाणी, डूँघे ताल फोल फुलांयदा। चार दिवार चार मुख प्रभ आपे चुक्की रक्खे आपणी कुक्ख, आपे बैठा मुख भवांयदा। रामदास ना मानस ना मनुक्ख प्रभ चरन विटहों कुरबानी, पुरख अकाले दीन दयाले एका दित्ता साचा सुक्ख, आपणे चरन लगाया।

सन्त जनां हरि साचा सज्जण, सखा सुहेल अख्वाया। आपे आया पड़दे कज्जण, एका पड़दा पाया। धूढ़ी चरन कराए साचा मजन, सर सरोवर इक्क रखाया। काल नगारे सृष्ट सबाई सिर ते वज्जण, चारों कुन्ट डौरू वाहया। बीर बेताले पी पी रज्जण, लाल गुलाला रंग चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, काल महांकाल सेवा लाया। सति पुरख अकाल, अकल कला समाया। गोबिन्द बणाए साचा लाल, आपणी गोद उठाया। फल लगाए काया डाल, अमृत मेवा रिहा खवाया। अमृत सुहाए साचा ताल, सर सरोवर इक्क वखाया। दासी

दास कराए काल महांकाल, सेवक सेवा साची लाया। आपे तोड़े जगत जंजाल, सगला संग रिहा निभाया। देवे नाम सच्चा धन माल, माल ख़ज़ीना इक्क वखाया। आपे शाह आपे कंगाल, नर निरँकारा आप अख्वाया। गुर गोबिन्दा बण दलाल, विच विचोला मात रखाया। दिवस रैण करे प्रितपाल, पारब्रह्म प्रभ दया कमाया। आपे जाणे मुरीदां हाल, बेहाल आपणा बिस्त्रा आप खुल्हाया। आपे चले अवल्लड़ी चाल, जुग जुग चलदा आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेस कर, नर नरेशा रूप वटाया। गोबिन्द गुर सच मलाह, प्रभ साचे मात बणाया। प्रभ अबिनाशी बेपरवाह, आपणा खेल रचाया। पुरी अनन्द एका धाम दिसा, आप आपणा रंग चढ़ाया। अमृत धारा गंग वहा, गुरमुखां मुख चुआया। मनमुख बैठे मुख शरमा, दिस किसे ना आया। गुरमुखां अन्दर दीपक जोत जगा, जोत निरँजण सेवा लाया। अट्ठे पहर रिहा डगमगा, प्रकाश आकाश वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति पुरख निरँजण आदि अन्त एका एक एकँकार करता पुरख आप अख्वाया। करता पुरख हरि गोबिन्द, गोबिन्द सेवा लाईआ। आप चलाए आपणी चाल, दे मति रिहा समझाईआ। साचा मस्तक साचा थाल, साचा लेख इक्क वखाईआ। आपे चले नाल नाल, दिस किसे ना आईआ। साजन मीता आपे भाल, आपणा संग निभाईआ। नाम निधाना आपणा आपे पीता, आपे ठण्ढा आपे सीता, आपे सीतल धार वहाईआ। आपे पतित आपे पुनीता, पतित पुनीत आप अख्वाईआ। आपे हस्त आपे कीटा, आपे मिट्ठा कौड़ा रीठा, आपे अमृत फल खवाईआ। आपे काया बाटे पाए पाणी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द सेवा साची लाईआ। गोबिन्द गुर कर पुकार, दोए जोड़ करे निमस्कारया। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, मंगे मंग ढहि पए द्वारया। कलिजुग नहिर वगे धारा गंग, ना कोई करे पार उतारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दे दित्ता वर, अमृत भण्डारा दित्ता भर, निहकलंक लए अवतारया। निहकलंक लए अवतार, कलिजुग अन्तिम वारया। जीव जन्त होए विभचार, जूठ झूठ पसारया। ग्रन्थ पन्थ रहे पुकार, सम्बल नगरी वेख वखा रिहा। मिले मेल ना कन्त भतार, ज्ञानीआं ध्यानीआं आत्म रही कुरलाईआ। जन भगतां करे प्यार, आप आपणी गोद उठाईआ। नाम खण्डा तेज कटार, तन गात्रे रिहा पहनाईआ। साचा शब्द सीस दस्तार, कल्गी तोड़ा सच वखाईआ। नीले घोड़े हो अस्वार, सोलां कलीआं आसण लाईआ। नीली छत्तों आया बाहर, कल्गीधर आप अख्वाईआ। सम्मत पन्दरां करे ख़बरदार, पन्थ ख़ालसा दए जगाईआ। हरिमन्दिर फेरा पाए नर निरँकार, भुल्ल रहे ना राईआ। सम्मत सोलां कर श्रृंगार, भेखाधारी भेख वटाईआ। चारों कुन्ट रोए नर नार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। राज राजानां करे ख़बरदार, साधां सन्तां रिहा उठाईआ। शब्द

८२६ ०६

खण्डा तेज कटार, एका रिहा उठाईआ। ब्रह्मा शिव देवत सुर रोवण ज़ारो ज़ार, कलिजुग अन्तिम देण दुहाईआ। गोबिन्द मेला नर निरँकार, जोती जोड़ा शब्द कुड़माईआ। पहला पौड़ा मारे विच संसार, लोकमात खेल खिलाईआ। धुरदरगाही आया दौड़ा, वेखे पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, सम्बल नगर साढे तिन्न हथ्थ लम्बा चौड़ा, गुर गोबिन्द आसण लाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां वेखे परखे मिट्ठा कौड़ा, अन्दर मन्दिर खोज खुजाईआ। दसम द्वारी राह सौड़ा, महल्ल अटल उप्पर चढ़, दूसर दिस किसे ना आईआ। पुरख अकाला गुर गोपाला दीन दयाला इक्क लगाए पहला पौड़ा, बाहों फड़ पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण साचा मेला, प्रभ साचे आप कराईआ। पुरख अबिनाशी साचा गुर, गुर गोबिन्द चेला मात अख्वाया। पारब्रह्म सज्जण सुहेला, जुग जुग बणदा आया। आपे वसया सदा अकेला, हर घट आसण लाया। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला, निहकलंकी जामा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द चेला एका धाम सुहाया। चेला गुर एका धुर एका धाम सुहांयदा। एका राग एका नाद, एका ताल वजांयदा। एका मोहण माधव माध, एका गीत अलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साची सिख्या आप समझांयदा। साची सिख्या हरि जगदीशा एका एक रखाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क बरन, बीस बीसा दए बणाईआ। लक्ख चुरासी पाणी भरन, साची सेवा इक्क लगाईआ। आपे दाता करनी करन, करनहार आप अख्वाईआ। आप खुलाए हरन फरन, नेत्र नैण आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द भेख वटाईआ। गुर गोबिन्द साचा मीता, आपे आप अख्वांयदा। बैठा रहे सदा अतीता, आवण जावण खेल रचांयदा। नाम निधान सति सरूप एका पीता, इक्क खुमार रखांयदा। मनमुख जीवां परखे नीता, अट्ठे पहर वेख वखांयदा। अमृत आत्म ठंडा सीता, निझर धारा मुख चुआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जामा भेख वटांयदा। जोती जामा भेख निरँजण, एका अलख जगाईआ। जन भगतां मेला साचे सज्जण, दो जहानां रिहा कराईआ। ताल तलवाड़े साचे वज्जण, काया मन्दिर अन्दर डूँघी कन्दर अनहद सेवा लाईआ। पंचम मेला साचे सज्जण, पंचम रहे राग अलाईआ। आत्म सेजा बहि बहि सजण, प्रभ साचे आप वछाईआ। आपे रक्खणहारा लजण, गोबिन्द शब्दी रूप समाईआ। मदिरा मास जो जन तज्जण, सम्मत सोलां गुर गोबिन्दा मेल मिलाईआ। गढ़ हँकारी भाण्डे भज्जण, राज राजानां शाह सुल्तानां दर दरबान छड्ड छड्ड नट्ठण, चारों कुन्ट वाहो दाहीआ। वेखे खेल प्रभ देस माझण, सम्बल नगरी धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पन्थ ख़ालसा रिहा उठाईआ। शब्द खण्डा नौ खण्ड लए घेर, लुहार तरखाण

ना किसे बणाया। पुरख अगम्मा ना लाए देर, आप आपणे रिहा हथ्थ उठाया। आपे गुर आपे चेर, आपे गोबिन्द रूप समाया। हरिभगत तराए कर कर आपणी मेहर, अमृत आत्म जाम प्याया। इक्क वखाए सञ्झ सवेर, कलिजुग रैण अन्धेरी मेट मिटाया। कूड़ कुड़यारा ढहि ढहि होए ढेर, रामदास तेरा सर सरोवर निर्मल नीर दए कराया। आप चुकाए मेर तेर, ऊँचां नीचां राउ रंकां राज राजानां शाह सुल्तानां एका धाम बहाया। सतिजुग साचा लाए फेर, जोती जोत सरूप हरि, सत्त रंग निशान झुलाया। नाम झण्डा हरि सत्त रंगा, चारों कुन्ट चढ़ाया। गुर तेग बहादर एका दान मंगा, पन्दरां कत्तक बीस बीसा रुत्त सुहाया। वाली हिन्द भुक्खा नंगा, नौ खण्ड पृथ्वी हाल सुणंदा, प्रभ अबिनाशी खेल खिलंदा, लक्ख चुरासी सेवा लाया। गुर गोबिन्दा चाढ़े शब्द साचा चन्दा, रवि ससि बैठे मुख छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपे वेख वखाया। धन्न वड्याई गुरसिख, गुर पूरा दर पाया। जगत बुझाई तृष्ना भुक्ख, हउमे रोग गंवाया। सुफल कराई मात कुक्ख, मानस जन्म लेखे लाया। कर दरस उतरी भुक्ख, आवण जावण गेड़ कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर साचा इक्क सुहाया। साचा घर शब्द बिबाणा, प्रभ एका एक रखांयदा। ना कोई जाणे राजा राणा, चतुर सुघड़ स्याणा भेव ना पांयदा। आपे होए गऊ ग़रीब निमाणा, निमाणयां देवे दर दर घर घर माणा, निथावयां थाउँ दवांयदा। थिर घर बैठ श्री भगवाना, हरि सन्तां मेल मिलांयदा। सुरती शब्दी बन्ने गाना, साचा सगन करांयदा। आपे होया बीना दाना, दाना बीना आप अख्वांयदा। लहिणा देणा चुकाए लोक तीना, तीन लोक पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बन्द किवाड़ी कुण्डा लांहयदा। जोत निरँजण अग्गे कर, साचा राह वखाया। शब्द सरूपी अन्दर वड़, सुखमन पार कराया। त्रैबैणी नैणी लए फड़, साचा संगम वेख वखाया। अन्दर बहिणा साचे दर, साचा सर इशनान कराया। काग हँस दए कर, अमृत आत्म साची चोग चुगाया। दस्म द्वारी सुहाए बंक द्वार, साचा धाम सुहाया। धुन आत्मक वजाए साचा ताल, राग अनादी रिहा अलाया। गुरसिख गुरमुख गोबिन्द एका घर, घर साचा वेख वखाया। आपे करया बन्द दर, पंज तत्त नज़र ना आया। सुन्न अगम्मो पार कर, साचे मार्ग लाया। सो हँ देश जाए वड़, सस्सा किला तुड़ाया। सन्त सुहेले इक्ठे कर, चौथे पद समाया। ना कोई पीवे जगत मदि, एका साचा जाम प्याया। दस्म द्वारी तेरी हद्द, प्रभ अध विचकार रखाया। जोती जोत सरूप हरि, गुरसिख तेरा वेख घर, दर दरवाजा रिहा खुल्हाया। आत्म घर खोल्ह किवाड़, साची दया कमाईआ। मेट मिटाए पंचम धाड़, शब्द खण्डा रिहा उठाईआ। जोत जगाए नाड़ नाड़, बहत्तर नाड़ी वेख वखाईआ। माया मनसा देवे साड़, अग्नी तत्त रहिण ना पाईआ। शब्द घोड़े देवे

८२८
०६

चाढ़, वाग आपणे हथ्थ रखाईआ। सच द्वारे देवे वाड़, गुर गोबिन्दे मेल मिलाईआ। काया मन्दिर अन्दर इक्क अखाड़, गुर पूरा रिहा वखाईआ। आपे घड़या साचा घाड़, घड़नहार आप अख्वाईआ। नेड़ ना आए मौत लाड़, जिस जन आपणा लड़ फड़ाईआ। काल महांकाल ना चबाए आपणी दाढ़, गुर गोबिन्दा रिहा दुरकाईआ। वेखे खेल सतारां हाढ़, हरिसंगत वड वड्याईआ। आत्मा सिँघ प्रभ जाए तार, घर साचे वज्जी वधाईआ। आपे पुरख आपे नार, आपे कन्त पुरख भतार, आप आपणी सेज हंढाईआ। आपे अमृत आत्म बन्ने धार, साचे खण्डे नाम प्याईआ। तन कटारा वेख विचार, सति श्रृंगार रिहा कराईआ। गुरमुख साचे कर त्यार, एका इक्की रिहा पाईआ। साची सिक्खी विच संसार, वालों निक्की आप रखाईआ। भेव ना पायण मुनी रिखी पंडत पांधे काशी पढ़ पढ़ थक्के, वेद पुराणां हाथ ना आईआ। माया धारी पैण धक्के, नाता तुट्टे भाई भैण सके, बिन सतिगुर ना कोई सहाईआ। पढ़ पढ़ जीव जन्त थक्के, दूई द्वैती पड़दा कोई ना चुक्के, बजर कपाटी ना कोई तुड़ाईआ। साची वस्त ना दिसे किसे हट्टे, ना कोई वणज कराईआ। गुर गोबिन्दे तेरी चरन प्रीती लाहा कोई ना खट्टे, झूठे ताल रहे वजाईआ। शब्द हथौड़ा मारे पहली सट्टे, जो जन आए चल सरनाईआ। पिछला लहिणा देणा मूल चुकाए पाए खत्ते, अगला पन्ध मुकाईआ। हरि प्यार जो जन रती रत्ते, रत्ती रत्त दिस ना आईआ। गुर गोबिन्द तेरी कोई ना झल्ले सट्टे, पन्थ ख़ालसा बैठा मुख छुपाईआ। हरिमन्दिर बैठे हो हो तत्ते, सार शब्द हथ्थ ना आईआ। नानक गोबिन्द चलाया इक्क रथे, रथ रथवाही आप अख्वाईआ। पंच विकारा फड़ फड़ मथे, शब्द मधाणा एका पाईआ। मनमुख जीव सथ्थर लथ्थे, धरत मात सथ्थर रही वछाईआ। अन्तिम लहिणा देणा मूल चुकाए साढे तिन्न तिन्न हथ्थे, कलिजुग वंड वंडाईआ। चरन द्वारे गुर गोबिन्दे जो जन ढठ्ठे, अन्तिम होए सहाईआ। तेरा सुण नाँ, घर घर उडदे काँ, ज्ञानयां ध्यानयां दिसे ना, निहकलंका नाउँ रखाईआ। अन्तिम लहिणा देणा चुकाए तीर्थ अठ्ठ सठ्ठे, गंगा गोदावरी दए दुहाईआ। उच्चे मन्दिर सारे ढठ्ठे, इट्ट गारे जो बणाईआ। गुरमुख तेरा एका रहि जाए हट्टे, प्रभ चरन ओट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे नाम वर, धुर शब्द करे कुड़माईआ। धुर शब्द सच भतार, गुरमुख नारी आप प्रनांयदा। आपे करे सच प्यार, आपणे गले लगांयदा। गोबिन्द विचोला विच संसार, दो जहानां मेल मिलांयदा। नानक तोला नर निरँकार, एका कंडा हथ्थ उठांयदा। सोहँ बोला विच संसार, आपणी रसना गांयदा। होए विचोला अन्तिम वार, चरन गोला राह तकांयदा। साचा ढोला परवरदिगार, चार वरनां आप सुणांयदा। अठारां बरनां करे ख़बरदार, एका सरना हरि जणांयदा। अकाल पुरख हरि करनी करना, गुरमति गुर आप उपजांयदा। आदि अन्त इक्क जणाए आपणी सरना,

आपे मँझधार रुढ़ांयदा। आपणा भाणा आपे जरना, आपणे भाणे विच समांयदा। कलिजुग तेरा अन्तिम करना, सतिजुग साचा राह वखांयदा। जन भगतां खोल्हे हरना फरना, तीजा लोचन आप खुल्हांयदा। आवण जावण चुकाए मरना डरना, साची सिख्या इक्क सिखांयदा। हथ्थ कटार तेज तलवार गुरसिख हथ्थ ना फड़ना, प्रभ एका खण्डा वांहयदा। गुर गोबिन्दा दर द्वारे मार बैठा धरना, आप आपणा हुक्म जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, घर साचा धाम सुहांयदा। साचा धाम इक्क अवल्ला, उच्च अटल मुनारा। पुरख अबिनाशी बैठा इकल्ला, खेले खेल अपारा। दीपक जोती एका बल्हा, एका एक करे उज्यारा। ना कोई दूसर दूई द्वैती दिसे सल्ला, ना कोई पसर पसारा। हरि हरि जू बैठा धाम अटला, आपे जाणे आपणी कारा। शब्द सुत सच सुनेहड़ा आदि शक्त आदि पुरख निरँजण एका घल्ला, लोकमात वारो वारा। सतिजुग त्रेता द्वापर कर कर हल्ला, खेले खेल नारी नारा। कलिजुग तेरा खेल अवल्ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पंज तत्त वसया बाहरा। पंज तत्त ना रक्खी देह, निहकलंक लए अवतारा। जोती शब्दी साचा नेह, भगतन भगती करे प्यारा। अमृत आत्म बरखे मेह, एका धारा ठण्डी ठारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख गुरसिख सन्त सुहेले इक्क इकेले कर कर मेले, जुग जुग विछड़े फड़ फड़ बाहों जाए तारा। सति पुरख निरँजण जोत जगा, जगत करे रुशनाईआ। कलिजुग अन्धेर रिहा मिटा, आप आपणा भेख मिटाईआ। चारों कुन्ट नेत्र रिहा उठा, दिवस रैण वेख वखाईआ। जन भगतां वेखे साचा राह, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। पकड़ उठाए थाउँ थाँ, थान सुहावा इक्क वखाईआ। आप जपाए आपणा नाँ, हरिजन साची बूझ बुझाईआ। सदा सुहेला देवे ठण्ढी छाँ, सीस जगदीस आपणा हथ्थ टिकाईआ। जगत जंजाला कटे फाह, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। सन्त सुहेले मात उपा, जुग जुग करे शब्द कुड़माईआ। कलिजुग साचा सगन मना, हरिसंगत नींह रखाईआ। सोहँ गाना हथ्थ बंन्हा, नाम मैहन्दी सच्ची लाईआ। तन श्रृंगारा इक्क करा, साचा बस्त्र आप पहनाईआ। धूढ़ी कज्जल नेत्र पा, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। प्रेम प्याला जाम प्या, अमृत मुख चुआईआ। सदा रखवाला आप अख्वा, सेवक सेवा रिहा कमाईआ। गुर गोपाला दया कमा, गुरमुख गुरसिख रिहा बणाईआ। जोत ज्वाला इक्क विखा, आत्म जोती नूर सवाईआ। मस्तक गगन थाला दए सुहा, साचे घर वज्जे वधाईआ। एका राग अनादी दए जणा, ब्रह्मादी खोज खुजाईआ। आदि जुगादी आपे जाणे आपणा नाँ, नाउँ आपणा आप उपाईआ। धुर दी बाण धुर दी वादी, आपणा भेख वटाईआ। गोबिन्द नानक गए अराधी, प्रभ तेरी ओट रखाईआ। थिर घर बैठे ला समाधी, चरन कँवल रिहा ध्यान लगाईआ। आप उठाए

दया कमाए इक्क वजाए साचा नादी, एका तूर रखाईआ। शब्द जणाए बोध अगाधी, अगाध बोध रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत तेरी करे मात कुड़माईआ। हरिसंगत हरि जन्म दवा, सतिजुग राह चलाया। आपणी खुशी आप मना, आपे मार्ग पाया। सन्त सुहेले लए उठा, जुग जुग विछड़े मेल मिलाया। दुरमति मैल दाग़ दए धवा, अमृत नाम कटोरा हथ्थ उठाया। साची सिख्या दए पढ़ा, लिख्या लेख ना किसे रखाया। नाम भिच्छया झोली पा, काया तन भण्डार रखाया। एका दूजा भउ चुका, तीजा नैण खोल्ह वखाया। चौथे घर दए सुहा, एका पद वखाया। पंचम नाद दए वजा, अनहद सेवा लाया। गुरमुख साचे लए उठा, गुर गोबिन्द संग निभाया। सरसा तेरी भेंट चढ़ा, प्रभ चरनी सीस झुकाया। आपे खेवट खेट बण मलाह, कलिजुग अन्तिम बेड़े लए चढ़ाया। गुर गोबिन्द नर निरँकार बैठे करन सलाह, कलिजुग वेला अन्तिम आया। आप उठाए फड़ फड़ बांह, दिवस रैण सेव कमाया। पंछी पंखी कोई जाणे ना, आउँदा जांदा दिस ना आया। इक्क उपाए साचा नाँ, नानक सेवा पूर कराया। सो पुरख निरँजण जाणे आपणा थाँ, थान थनंतर इक्क सुहाया। हँ हँगता दए मिटा, हउमे रोग गंवाया। साची संगता दए बणा, सतिगुर पूरा दया कमाया। सस्सा सिख्या इक्क सुणा, एका राह चलाया। हरि का अक्खर आप पढ़ा, हरि जी विच समाया। ऊड़ा अक्खर आप उपा, त्रैलोकां आप वेख वखाया। ऐड़ा लेखा रिहा लिखा, एका अक्ख खुल्हाया। ईड़ी इष्ट आप बणा, आपणा रूप बणाया। सस्सा किला दए सुहा, सतिगुर घेरा पाया। हाहा हरिजन लए बहा, दूसर कोई नेड़ ना आया। कक्का कर्म रिहा कमा, खक्खा खेल रचाया। गग्गा गोबिन्द लए उठा, घग्गा घोड़ा नाल ल्याया। ङ ङिआन दए सुणा, चच्चा चित दए सुहा, सम्मत चौदां वेख विखाया। छच्छा छप्पर इक्क बणा, जज्जा जहाज लए बणा, गुरमुख साचे विच चढ़ा, झज्जा झेड़ा दए छिड़ा, निहकलंकी जामा पाया। ञञा जन्म रिहा वखा, गुरमुख साचे जन्म दवाया। टैंका टल्ल आप वजा, सोहँ हथ्थ रखाया। ठठ्ठा ठोकर दए ला, लोआं पुरीआं रिहा हिलाया। डड्डा डाल रहे तुड़ा, लक्ख चुरासी रिहा खपाया। ढड्डा ढोलक इक्क वजा, अनहद सेवा लाया। णाणा आपणा कर्म कमा, आप आपणा भेख वटाया। तत्ता तिलक इक्क रखा, गुरमुखां जोत जगाया। थत्था थिर घर दए बहा, ना कोई बाहर कढाया। दद्दा दुःख दए मिटा, गुरसिख सच सुच्च समाईआ। धध्धा धवल झोली पा, आत्म दात रिहा वधाईआ। नन्ना निरगुण खेल रचा, सरगुण मेल मिलाईआ। फफ्फा फल फुलवाड़ी मात लगा, हाढ़ सतारां खुशी मनाईआ। पप्पा पूत सपूता ल्या उपा, खेले खेल हरि रघुराईआ। बब्बा बन्द दए करा, नौ दर वेख वखाईआ। भभ्भा भुलयां मार्ग पा, एका चरनां राह वखाईआ। मम्मा मोहणी रूप वटा, मनमुख जीवां रिहा भुलाईआ।

यया यार इक्क अख्वा, सज्जण मीत आप हो आईआ। रारा रेखा दए मिटा, हरिजन साचे लए तराईआ। लल्ला लहिणा देणा मूल चुका, आप आपणे अंग लगाईआ। वावा विष्नूं वेस वटा, जोती नूर संग रलाईआ। सोहँ डंक इक्क वजा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाउँ रखाईआ। ड़ाड़ा अक्खर राह रिहा तका, दर द्वारे वेखे नेत्र नैण उठा, दोवें मुख पारब्रह्म दी बैठ कुक्ख, चारों कुन्ट वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए तराईआ। सतिगुर पूरा सच है, साचे घर समाए। लक्ख चुरासी काया माटी कच्च है, थिर रहिण ना पाए। जूठे झूठे दर दर घर घर रहे नच्च है, नटूआ स्वांग वरताए। माया अग्नी रही मच्च है, मोह ममता करे हलकाए। हरि का शब्द गुरमुख विरले गया पच है, सांतक सति वरताए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भर प्याला दीन दयाला एका नाम प्याए। इक्क प्याला साचा नाम, जन भगतां आप प्यांअदा। कोई ना लाए हरि जी दाम, चरन प्रीती इक्क सिखांयदा। कलिजुग रैण अन्धेरी शाम, सतिजुग साचा चन्द चढ़ांयदा। लक्ख चुरासी तेरा ताम, हरि अन्तिम आप पकांयदा। आपे बैठ साचे नगर गराम, साची रचन रचांयदा। सच भूमिका साचा धाम, साची जोत टिकांयदा। एका जोती रामा राम, वरन गोती वेख वखांयदा। राम नाम सुरती सच सिँघासण कर बिसराम, एका सेज हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिजन साचे वेखे हरि, हरिजन विच समाईआ। आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी रुत्त सुहाईआ। वेख वखाणे चार कुन्ट दहि दिशा नौ दर, आप आपणा फेरा पाईआ। लक्ख चुरासी आपणा आप रही हर, कर्म कुकर्म ना कोए वेख वखाईआ। साध सन्त आपणा धर्म गए हर, ना कोई धीरज धीर धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलिजुग तेरे काचे सन्त, बैठे धूणीआँ ताईआ। गुर पीर रुत्त मानण इक्क बसन्त, माया राणी सेज वछाईआ। भरमे भुल्ले जीव जन्त, सच संदेश ना कोई सुणाईआ। मिले मेल ना साचे कन्त, चार वरन फिरदे वाहो दाहीआ। पारब्रह्म तेरी महिमा अगणत, ना कोई लेखा लेख लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरि भाणे विच समाईआ। हरि भाणा बलवान, आपणे हथ्थ रखाया। एका एक धुर फ़रमान, शब्द संदेश रखाया। जन भगतां देवे दर दर घर घर आन, हो प्रवेश दया कमाया। कलिजुग तेरी अन्तिम लाहे मकान, हाढ़ सतारां त्रै लोकां सतारवीं आप करावण आया। जन भगतां बख्शे चरन धूढ़ भूमिका सच अस्थान, साचा मन्दिर इक्क सुहाया। आपे होया जाणी जाण, जानणहार आप अख्वाया। गुरसिख गऊ ग़रीब निमाणयां दर द्वारे देवे माण, एका नाम जपाया। मनमुख कीता आपणा पाण, राए धर्म दए सजाया। हरि हरि हरिसंगत कर पछाण,

हरिजन साचा मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि साजण वेखण आया। हरिसंगत रंग साचा चाढ़, जोती नूर सवाईआ। दर घर साचे आपे वाड़, अन्दर मन्दिर खोज खुजाईआ। घाड़नहारा साचा घाड़, घड़न भन्नणहार हरि समरथ एका एक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका रंगत रंग रंगाईआ। एका संगत एका भिच्छया, आत्म झोली डाहीआ। हरिसंगत हरि दर परवान, हरि दर वज्जी वधाईआ। धर्म झुलाए सच निशान, सत्त रंगां आप रंगाईआ। लाल भूशन विच जहान, कंचन रूप समाईआ। सूहा वेस हरि भगवान, चिट्टी धारा रिहा चलाईआ। नीली धारी कर परवान, पीली विच समाईआ। काला सूसा पंज शैतान, ईसा मूसा तन पहनाईआ। सच हदीसा अञ्जील कुरान, सच हदीसा इक्क सुणाईआ। आपे वेखे मार ध्यान, बीस बीसा खेल खिलाईआ। जगत उनीसा कर परवान, ऐड़ा अल्ला संग रखाईआ। अथर्बण तेरा वेख बिबाण, अल्ला राणी राह तकाईआ। धरत मात तेरा सच मैदान, नौ खण्ड वेख वखाईआ। शाह अस्वार उठ उठ सारे गाण, आप आपणा तंग कसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे साचा वर, दर घर सच्ची सरनाईआ। दर घर साचा हरि भगवाना, एका एक रखाया। भगत जनां हरि बन्ने गाना, साचा सगन मनाया। सोहँ चिल्ला तीर कमाना, साचे तन पहनाया। आपे वेखे मार ध्याना, दो जहानां वेख वखाया। पंज तत्त तेरा सच मैदाना, हरि सच अखाड़ लगाया। आपे होया जाणी जाणा, त्रै त्रै वेस वटाया। गुर संगत देवे धुर फ़रमाना, सच संदेश उपाया। चरन कँवल कँवल चरन हरि इक्क ध्याना, आवण जावण दए कटाया। सम्मत चौदां हो प्रधाना, लोकमाती रिहा जगाया। ना कोई सोए राजा राणा, साधां सन्तां आलस निन्दरा रिहा लाहया। गुरमुख साचे चतुर सुजाना, आप आपणी बूझ बुझाया। हाढ़ सतारां कर परवाना, नाम निधाना झोली पाया। आवण जावण चुक्के काना, लक्ख चुरासी फंद कटाया। गुरसिख हरिजन तेरा लेखा लाए आउणा जाणा, पीणा खाणा आपणे हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग पैज रखाया। हरिसंगत तेरी साची मति, हरि आपणे हथ्थ रखाईआ। मेल मिलाया कमलापत, कन्त कन्तूहल होए सहाईआ। आत्म बीज बीजे साचे वत्त, फल फुलवाड़ी मात लगाईआ। एका आत्म सच सरोवर ठंडा पाणी देवे घत्त, नीर सीर इक्क उपाईआ। नाल रलाए धीरज सति, सन्तोखी सति धीरज आप रखाईआ। काया मन्दिर अन्दर तेरा साचा हट्ट, साचा धाम सुहाईआ। चौदां लोक वखाए एका हट्ट, एका वस्त टिकाईआ। हरिसंगत लाहा लैणा खट्ट, दूसर किसे हथ्थ ना आईआ। भाग लगाए काया मट्ट, हरि जोती जोत जगाईआ। चरन द्वारे हरिजन आउणा नठ्ठ नठ्ठ, नाता तोड़ना भैणां भाईआ। काया बुरज जाणा ढठ्ठ, अन्त रहिण ना पाईआ। हरिसंगत तेरा सच इक्ठ,

८३३
०६

हरि आपे रिहा कराईआ। त्रैगुण माया तपया मट्ठ, हरि जोती लम्बू लाईआ। इक्की जेठ करी चट्ठ, सम्मत चौदां दए गवाहीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी औध हंढाईआ। कलिजुग तेरा पैंडा जाए मुक्क, वेला अन्त मुकांयदा। सतिजुग साचा राह जाए ढुक, एका मार्ग लांयदा। सिँघ शेर रिहा बुक्क, जंगल जूह उजाड़ पहाड़, वेख वखांयदा। अट्ठ सट्ठ नीर जाए सुक्क, गंगा गोदावरी ना नीर वहांयदा। धरत मात तेरी खाली करे कुक्ख, लक्ख चुरासी मुख छुपांयदा। कलिजुग काया मिटे दुःख, अन्त रहिण ना पांयदा। जन भगतां मिटाए आत्म तृष्ना भुक्ख, चिन्ता सोग मिटांयदा। उज्जल कराए मात मुख, सोहँ साचा जाप जपांयदा। मात गर्भ ना उलटा रुक्ख, दस दस्मेसा फंद कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत तेरा एका घर, एका धाम सुहांयदा। एका घर चरन द्वार, हरिजन आप समझांयदा। पूर्ब लहिणा कर्म विचार, तन गहणा नाम पहनांयदा। नेत्र नैणा दरस अपार, भाणा सहिणा आप समझांयदा। कलिजुग अन्तिम वहिण वहिणा सृष्ट सबाई डोबे विच मँझधार, ना कोई किसे बचांयदा। गुरमुख साचे हरिजन हरिसंगत मिल मिल बहिणा, हरि आपणी दया कमांयदा। वेले अन्त कन्त सन्त भगवन्त मात रहिणा, जीव जन्त मुख छुपांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा आप उपजांयदा। हरिसंगत तेरा गुर भण्डार, हरि रसना भोग लगांयदा। वरते वरतावे विच संसार, सहिँसा रोग चुकांयदा। तन मन काया देवे ठार, अग्नी तृखा बुझांयदा। अमृत आत्म देवे ठण्ढी ठार, एका जाम प्यांअदा। मानस जन्म ना आए हार, पार किनार लगांयदा। एका दए नाम हुलार, सच हुलारा इक्क वखांयदा। वेख वखाए काम क्रोध लोभ मोह हँकार, आसा तृष्ना मेट मिटांयदा। नाम कप्पड़ तन श्रृंगार, साचा वेस वखांयदा। आपे होया पहरेदार, दर दरवेश अख्वांयदा। करे कराए ख़बरदार, नर नरेश आप उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत दया कमांयदा। हरिसंगत तेरा सच भण्डार, लोकमात वरताया। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क द्वार, एका घर रिहा वखाया। आपे खोल्हे जगत कवाड़, आपे राह चलाया। धन्न भाग दिहाड़ा सतारां हाढ़, सम्मत चौदां वेख वखाया। हरिसंगत तेरी जोत जगाए नाड़ नाड़, अन्ध अन्धेर मिटाया। हउमे हँगता तृष्ना देवे साड़, अन्दर मन्दिर डेरा लाया। साचे पौड़े देवे चाढ़, ढूँघी कन्दर वेख वखाया। गुरसिख बणाए साचे लाड़, नारी नर आप अख्वाया। तोड़े किला हँकारी गढ़, एका तीर निशाना लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत मेला साचे घर, सच विचोला नाम रखाया। नाम विचोला पाए फेरे, दोहां धिरां रिहा जगाईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले, उठ उठ बैठे वेखण चाँईं चाँईंआ। मनमुख सुत्ते गूढ़ी नींद घनेरे, ना लई मात अंगड़ाईआ। शब्द विचोला प्रभ अबिनाशी दे आया डेरे, रिहा हाल सुणाईआ। कवण

जाणे प्रभ गुण तेरे, तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। कलिजुग वेला अन्तिम दिसे नेड़े, काले लच्छण देण दुहाईआ। दर दर घर घर मन्दिर गुरदर मस्जिद छेड़े झेड़े, दिवस रैण करन सलाहीआ। लग्गी अग्ग काया खेड़े, ना कोई किसे बुझाईआ। लाड़ी मौत धर्म राए दे आ बैठी वेहड़े, खुल्ह्ड़े केस गल विच पाईआ। चित्रगुप्त करे हक्क निबेड़े, लिख्या लेख रिहा वखाईआ। प्रभ अबिनाशी छेड़ां छेड़े, पंचम तत्त तेरी लड़ाईआ। सम्मत चौदां तेरे हक्क निबेड़े, त्रै देशां वेख वखाईआ। निरगुण जड़्ह आप उखेड़े, सरगुण भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत मेल मिलाईआ। हरिसंगत तेरा नाम भण्डार, प्रभ साचा आप वरतांयदा। प्रगट हो विच संसार, जोती जामा भेख वटांयदा। निहकलंकी नाउँ अपारा, शब्द डंकी इक्क वजांयदा। कल्गी तोड़ा सीस दस्तार, जोती जोड़ा मेल मिलांयदा। शब्द घोड़े हो अस्वारा, चिट्टा अस्व आप दुड़ांयदा। लोकमात करे ख़बरदारा, सृष्ट सबाई आप हिलांयदा। हरिजन साचे लए उभार, आप आपणे चरन लगांयदा। एका बख्शे नाम अधार, सच वस्त हरि झोली पांयदा। हरिसंगत तेरा इक्क प्यार, भैणा भईआ रूप समांयदा। साचा सईआ आप करतार, एका नईआ नाम चढ़ांयदा। धर्म राए ना कढ्ढे वहीआ लेखा लिखे ना कोई विचार, ना कोई हिसाब मुकांयदा। जो जन आए प्रभ चरन द्वार, मानस जन्म लेखे लांयदा। कर्म जरम धर्म वरन हथ्थ सरकार, साची सिख्या आप समझांयदा। लहिणा देणा करज उतार, हरिसंगत तेरी झोली पांयदा। वेखे विगसे कर विचार, वेखणहारा आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत भण्डारा तेरा भर, आप आपणी सेव कमांयदा। जोती जामा भेख धर, दर दरवेश अख्वांयदा। निहकलंक नरायण नर, हरिजन रूप समांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर घर अल्ख जगांयदा। हरिसंगत होए दर परवान, हो प्रतक्ख दरस दिखांयदा। आपे दाता दानी देवे सच्चा दान, सोहँ झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए वर, शब्द सरूपी साची डोली आपे आप चढ़ांयदा।

✻ पहली सावण २०१४ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✻

कवण शब्द कवण धार, कवण जोत जगांयदा। कवण रूप रंग अपार, कवण भेख वटांयदा। कवण संग सन्त दुलार, कवण रंग चढ़ांयदा। कवण वेखे दर दरबार, कवण डेरा लांयदा। कवण करे जोत निरँजण इक्क अकार, कवण सर्ब समांयदा। कवण रूप वेखे वेखणहार, कवण भूप अख्वांयदा। कवण कूट वसे हरि निरँकार, कवण सिँघासण डेरा लांयदा। कवण तीर निराला जाए छूट, जोद्धा सूरबीर कवण चलांयदा। कवण भाण्डा काया काचा जाए फूट, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। कवण

फल जाए टूट, कवण रस चुआंयदा। कवण अमृत आत्म साचा घूट, कवण निझर धारा वहांयदा। कवण रस दो जहानी रिहा लूट, कवण झोली पांयदा। कवण पिता कवण पूत, कवण मात अख्वांयदा। कवण बैठा काया रूठ, कवण मेल मिलांयदा। कवण वखाए खाली ठूठ, कवण नाम भरांयदा। कवण मेटे जूठ झूठ, कवण सेज सुहांयदा। कवण दाता जाए तूठ, हरि सन्तां मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि मन्दिर इक्क सुहांयदा। कवण राज कवण जोग, कवण शब्द सुणास्सया। कवण तृष्ना कवण आसा कवण रस रसना भोग, कवण करे बन्द खुल्ल्हास्सया। कवण मेल मिलाए धुर संजोग, कवण देवे धीर धरवास्सया। कवण चुगाए आत्म चोग, साचा शब्द इक्क अपणास्सया। कवण दिसाए दरस अमोघ, साचे मण्डल पावे रास्सया। कवण मिटाए दूई द्वैती हउमे रोग, देवे दान चरन भरवास्सया। कवण उडाए पार कराए तीनो लोक, घर चौथे मेल शाहो शाबास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि मन्दिर वेखे इक्क घर, दिवस रैण प्रभातया। कवण दिवस कवण रैण, कवण रवि ससि सितारया। कवण नेत्र कवण नैण, कवण लोचन नैण मुँधारया। कवण साक कवण सैण, कवण सज्जण विच संसारया। कवण मात कवण पित कवण भाई कवण भैण, कवण करे सच प्यारया। कवण नाता कवण दाता कवण मिलाए पुरख बिधाता, वेख वखाणे डूँघी गारया। कवण रत्त कवण सत कवण मति कवण मन बुध करे विसथारया। कवण धीरज कवण यति, कवण मेल मिलाए कमलापत, पति पतिवन्ता कवण मिला रिहा। कवण डोरी कवण नत्थ कवण रूप हरि समरथ, कवण खेल खिला रिहा। कवण रामा कवण दसरथ, कवण तीर कमान उठा रिहा। कवण काहना जोद्धा सूरबीर (समरथ), कवण अर्जन गीता ज्ञान सुणा रिहा। कवण नानक गोबिन्द दरस सगल वसूरे जायण लथ्थ, कवण विछड़े जोड़ जुड़ा रिहा। कवण लेख चुकाए साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, बन्दी तोड़ कवण अख्वा रिहा। कवण बिठाए नाम बिबाण साचे रथ, लोआं पुरीआं पार करा रिहा। कवण चलाए जुग जुग महिंमा अकथ, वेद पुराण शास्त्र सिमरत भेव कोई ना पा रिहा। कवण कराए गुरमुख गुर गुर चेले सन्त सुहेले दर घर इक्ठ, कवण जोती शब्द मिला रिहा। कवण काया कवण मन्दिर कवण टिल्ला जाए ढठ्ठ, कवण अटल रखा रिहा। कवण नहावण तीर्थ अठ्ठ सठ्ठ, गंगा गोदावरी कवण वहा रिहा। कवण पूजा कवण पाठ कवण अक्खर हरि वक्खर, हरि सन्तां आप जणा रिहा। कवण तोड़े बजर कपाटी पत्थर, कवण सिला दूर करा रिहा। कवण नेत्र नीर वरोले अत्थर, कवण निझर धार चुआ रिहा। कवण तत्त लथ्थे सथ्थर, कवण खण्डा हरि उठा रिहा। कवण रूप हरि शाहो भूप, कवण सिँघासण सेज वछा रिहा। कवण जोत प्रकाश करे अन्ध कूप, सति सरूप इक्क वखा रिहा। नौ द्वारे दिसण झूठ, जगत मन्दिर इक्क सुहा रिहा। सन्त सुहेले

८३६
०६

नाम दान धुरदरगाही देवे एका मूठ, आत्म झोली आप भरा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण खेल खिला रिहा। हरि भजन हरि का नाउँ, कवण द्वार वसेरा। कवण नगारा कवण गराउँ, कवण धाम डेरा। कवण बिरख देवे ठण्ढी छाउँ, कवण चुकाए मेरा तेरा। कवण पिता कवण माउँ, कवण करे हक्क निबेड़ा। कवण हँस बणाए काउँ, मेल मिलाए काया खेड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे हरि सन्तन दर खुल्ल्हा वेहड़ा।

आदि शक्त आदि भवानी, जोती जोत अकालया। आशा मनसा इक्क निशानी, हरि शब्दी शब्द महानया। ना कोई जाणे वेद पुराणी, हरि खेले खेल महानया। हरि सरूप पद निरबानी, एका एक वखानया। पंज तत्त ना कोई निशानी, मन मति बुध ना कोई रखानया। ना कोई वेद शस्त्र ना कोई अंजील कुरान नानक अर्जन बाणी, ना कोई लेख लिखानया। इक्क इकल्ला हरि सुल्तानी, बैठा सच तख्त सुल्तानया। जोती नूर जगे महानी, अकल कला अख्वानया। खेले खेल दो जहानी, लोआं पुरीआं बणत बणानया। ब्रह्मा विष्न शिव देवे दानी, दाता दानी आप अख्वानया। त्रैगुण माया गुण निधानी, साची रचना आप रचानया। लक्ख चुरासी खेल महानी, सेवक सेवा आप कमानया। निरगुण विटहों कर कुरबानी, आप आपणा अंग कटवानया। निज घर बैठा सच अस्थानी, साचा धाम सुहानया। साधां सन्तां देवे धुर फ़रमानी, एका शब्द सुणानया। राग अनादी धुन आत्मक सुणाए साची बाणी, छत्ती राग भेव ना जानया। अमृत आत्म देवे ठण्ढा पाणी, तट्ट तीर्थ इक्क वखानया। सुरत शब्द मेल मिलाए साचे हाणी, एका दूजा संग निभानया। मारे तीर इक्क निशानी, बन्द कवाड़ा खोल्ह विखानया। आत्म सेजा कर परवानी, हरि खेले नूर जहानया। साचे मन्दिर साची राणी, सन्त सुहेले करे परवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग समानया। एका अल्ला एका नूर, एका रंग अल्लाहीआ। एका शब्द एका तूर, इक्क मृदंग वजाईआ। एका आसा मनसा पूर, एका दूजा भउ चुकाईआ। तीजा नेत्र खोल्ह हज़ूर, चौथे घर समाईआ। पंचम मीता ना नेड़े ना दिसे दूर, सदा अतीता आप अख्वाईआ। छेवें छप्पर छन्न ना कोई बेड़ा पूर, वंञ मुहाणा ना कोई रखाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण हाज़र हज़ूर, दरस दिखाईआ। जगत नाता तोड़े कूड़ो कूड़, जूठ झूठ नेड़ ना आईआ। चरन प्रीती बख्शे साची धूढ़, कौस्तक मणीआ मस्तक टिक्का एका लाईआ। मन मूर्ख ना समझे मूढ़, मन मती भरम भुआईआ। हरिजन काया चोली रंग चाढ़े गूढ़, उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अलख निरँजण जोत निरँजण आपणे अंग लगाईआ। एका अल्ला अहिनल हक्क, हकीकत जानया। परवरदिगार राह रिहा तक्क, अहिबाब करे पछानया। अन्तिम मेला मुकामे हक्क, खुदी खुदाई मेट मिटानया। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी जोत धर, सन्त सुहेले कर कर मेले दर द्वार करे परवानया। साचा नूर ऐली अल्ला, एका परवरदिगारया। शब्द वसाए सम महल्ला, ना कोई चार दिवारया। आप समाए जल थला, डुंघी कन्दर उच्च पहाड़या। लक्ख चुरासी काया अन्दर मौला, मौला रूप समा रिहा। जन भगतां उलटा करे नाभ कँवला, अमृत झिरना आप झिरा रिहा। आब हयात मिले किरना, दो दो आब मेल मिला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुन्न सवाब पाप आपणे हथ्थ रखा रिहा। आप आपणे हथ्थ रखाए, एका शब्द वड्याईआ। लक्ख चुरासी जोत जगाए, निरगुण रूप समाईआ। निरगुण सरगुण खेल खिलाए, साची बणत बणाईआ। सति पुरख निरँजण दया कमाए, जुग जुग भेस वटाईआ। सन्त सुहेले आप उपाए, आप आपणा संग निभाईआ। दीपक जोती इक्क जगाए, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। शब्द अनादी धुन उपजाए, साचा राग अलाईआ। पंचम पंचम सेवा लाए, पंचम सेवा रिहा सुणाईआ। सुन्न समाधी आप खुलाए, सुन मण्डल बाहर कराईआ। बोध अगाधी शब्द जणाए, अकथ कथा रखाईआ। मोहण माधव माधी मेल मिलाए, जोत निरँजण राह वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साजन दर घर साचा वेख वखाईआ। हरिजन साजन साचा शाहो, एका एक अकालया। आपे दाता बेपरवाहो, दीना बंधप दीन दयालया। जुग जुग बणे मात मलाहो, नाम चपू इक्क रखा ल्या। गुरमुखां मेल मिलाए थाँईं थाउँ, हरि शब्दी आप जगा ल्या। पकड़ उठाए धुरदरगाही बाहों, आत्म सेजा डेरा ला ल्या। इक्क वखाए साचा नाउँ, लिखण पढ़न विच ना आ रिहा। मेल मिलाए अगम्म अथाहो, अगम्म अथाह आप अखवा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क सुहा ल्या। साचा घर दर दरबार, जगे जोत नुरानया। इक्क इकल्ला एकँकार, ओंकारा रूप समानया। एका शब्द सच्ची धुन्कार, ब्रह्मण्डां विच समानया। जेरज अंडां पावे सार, उत्भज सेत्ज वेख वखानया। ब्रह्मा शिव देवत सुर कर प्यार, विष्नूं वंसी मेल मिलानया। जोत सरूपी कर अकार, लोकमात खेले खेल हरि भगवानया। साध सन्त लए उभार, दर द्वार करे परवानया। एका जोत एका नूर एका शब्द एका तूर, एका दाता आसा मनसा पूर, सद एका रंग समानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सन्तन वेखे आत्म दर, कवण सेजा रंग रंगानया। आत्म सेजा शब्द फुलवाड़ी, गुरमुख मात लगाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म करे प्यारी, आत्म शब्द जणाईआ। आवे जावे वारो वारी, सन्त सुहेले लए जगाईआ। जीव जन्त ना मिल्या कन्त, मेल विछोड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। भगत सुहेले गुरू गुर चेले, आपणी बणत बणाईआ। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेले, खेलणहार आप अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क सुहाईआ। साचा घर उच्च महल्ल अटल, आपणा आप बणाया।

आपे वेखे उप्पर थल, दूसर किसे दिस ना आया। सच सिँघासण बैठा मल्ल, पावा चूल ना कोई रखाया। आपे जाणे आपणा वल छल, अछल छल अख्वाया। जोती शब्दी गया रल, पवणी पवण समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तां वेखे साचा घर, कवण धाम सुहाया। जन भगतां लहिणा देण चुकाए, आवण जावण लक्ख चुरासी गेड़ा। राए धर्म नेड़ ना आए, भाग लगाए काया खेड़ा। अन्दर मन्दिर डेरा लाए, गुरमुख तेरा दरम द्वारी खुल्ह्आ कराए वेहड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरी काया मन्दिर अन्दर करे हक्क निबेड़ा। एका मक्का एका काअबा, दो दोआबा मेल मिलाईआ। चरन घोड़े दे रकाबा, चारों कुन्ट दुड़ाईआ। खेले खेल देस माझा, दिस किसे ना आईआ। अस्सू तिन्न रुत्त सुहाए, हरि साचे जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शाह सुल्तानां आप उठाईआ। अस्सू तिन्न सच दिवस दिहाड़ा, प्रभ साचा आप विचारदा। नेड़ ना आए पंचम धाड़ा, जमन किनारा वेख विचारदा। खेल खेल अगम्म अपारा, साधां सन्तां वेख विचारदा। हरिजन मेला विच संसारा, एका बख्शे चरन द्वार दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा मार्ग इक्क वखाए, एका दूजा भउ निवारदा। शब्द प्यारा गुरू सति, सतिगुर आप अख्वाए। जूठ झूठ छड्डुणा नत्त, मदिरा मास रसन तजाए। आपे दे समझावे मति, मनमति दए दुरकाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका रंगण रंग चढ़ाए। अस्सू तिन्न सच विहारा, करे जोत अकालया। साधां सन्तां कर प्यारा, आत्म जोती कर अकारा, शब्द वजाए तालया। आपे वसे अन्दर बाहरा, गुप्त ज़ाहर खेल निरालया। आपे करे सृष्ट सबाई कलि ख्वारा, चले अवल्लड़ी चालया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सुहेले लए वर, आप रचाए आपणा काज्जया। हरि करता अबिनाश, पुरख अबिनाश्या। जन भगतां दासी दास, निज घर आत्म करे वास्सया। चले चलाए पवण स्वास, आपे शब्द सच्चा धरवास्सया। साचे मण्डल पावे रास, खेले खेल पृथ्वी आकास्सया। आदि अन्त ना होए विनास, हरि साजण शाहो शाबास्सया। लेखे लाए दस दस मास, लक्ख चुरासी फंद कटास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे नाम धुर भरवास्सया। नाम निधाना हरि भगवाना, जुग जुग आप चलांयदा। जन भगतां बन्ह्रे हथ्थीं गाना, साची डोरी इक्क वखांयदा। तन पहनाए तीर कमाना, बस्त्र शस्त्र नाम सजांयदा। लोचन तीजे इक्क निशाना, दोए नेत्र मूंद आप लगांयदा। पंच विकारा होए वैराना, शाह शिकार ना कोए वखांयदा। साचा राह इक्क वखाना, गुरमुख मार्ग लांयदा। अक्खर वक्खर धुर फ़रमाना, शब्दी शब्द जणांयदा। राग अनादी एका गाना, एका धुन उपजांयदा। उपाए समाए पवण मसाना, पवणी पवण रचांयदा। आर पार इक्क टिकाना, आपणा आप जणांयदा। सति पुरख निरँजण

शब्द बिबाना, जुग जुग आप ल्यांअदा। साधां सन्तां देवे दाना, आत्म झोली आप भरांयदा। दर द्वारे कर परवाना, चरन गोली सेव कमांयदा। चले चलाए आपणे भाणा, भाणा राणा हरि वखांयदा। इक्क वखाए पद निरबाना, घर चौथा धाम सुहांयदा। रक्त बूंद ना कोए निशाना, नारी कन्त ना कोए हंढांयदा। पिता पूत ना संग रखाना, सगला संग तुड़ांयदा। एका शब्द एका गाणा, नाद अनादी आप सुणांयदा। एका जोत श्री भगवाना, एका रूप समांयदा। सन्त सुहेले कर पछाना, आप आपणे रंग रंगांयदा। एका दूजा भेव चुकाना, तीजा लेख मिटांयदा। चौथे दर कर परवाना, आपणा संग निभांयदा। पंचम पंचां खेल महाना, सन्त सुहेले आप खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर मन्दिर इक्क सुहांयदा। घर मन्दिर अन्दर द्वार, एका जोत रुशनाईआ। आपे करे बन्द किवाड़, आपे खोल्ह वखाईआ। आपे वेखे जंगल जूह उजाड़ पहाड़, आपे रुत बसन्ती फल फुलवाड़ी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे नार आपे कन्ती आप आपणी सेज हंढाईआ। आपणी सेजा आप हंढा, आपणी दया कमांयदा। जोती नारी सुत उपजा, शब्दी नाउँ रखांयदा। शब्द सुत बेपरवाह, ब्रह्मण्डां विच समांयदा। ब्रह्मण्डां अन्दर डेरा ला, दिस किसे ना आंयदा। गुरसिख सन्त सुहेले लए जगा, चोरी डोरी घोरी एका पांयदा। आप वखाए आपणा राह, जोत निरँजण डगमगांयदा। इक्क वखाए साचा नाँ, आप आपणा आप अल्हांयदा। दस्म द्वारी साचा थाँ, दर घर साचा इक्क सुहांयदा। ना कोई पन्थी पच्छी तरवर उडे काँ, मच्छ कच्छ ना कोई दिसांयदा। पिता पूत ना पकड़े बांह, माता गोद ना कोई उठांयदा। ना कोई देवे ठण्ढी छा, हित चित ना कोई दुखांयदा। गुर पूरे सद बलि बलि जां, हरि शब्दी नाउँ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचा मेल कर, जग मेली जुग मिलांयदा। जुग मेला जग करता आप, जुग जुग आप करांयदा। सृष्ट सबाई धरता आप, धरनी धरत उपांयदा। अजपा जाप जपता आप, आप आपणा जाप जपांयदा। हरता करता वड प्रताप, करता पुरख आप अख्वांयदा। ना कोई पुन्न ना कोई पाप, हरख सोग ना कोई वखांयदा। आप आपणी थापण थाप, जुग जुग रचन रचांयदा। त्रैगुण तेरा मिटे ताप, राजस तामस सांतक वेख वखांयदा। कलिजुग काया रही कांप, वेला अन्तिम आंयदा। पंज तत्त विकारा रिहा नाच, कलिजुग डौरू वांहयदा। गुमरख विरला चढ़े साचे घाट, लक्ख चुरासी आप रुढ़ांयदा। नाम सौदा हरिजन हाट, चौदां हट्टां वेख वखांयदा। दीपक जोती इक्क लिलाट, मस्तक थाली आप टिकांयदा। आत्म सेजा साची खाट, फूलन वरखा आपे लांयदा। अमृत आत्म सर सरोवर मारे ठाठ, सच हुलारा आप दवांयदा। सतिजुग तेरा साचा पाठ, सोहँ सो रखांयदा। चार वरनां इक्क इक्कु, एका दर सुहांयदा। जोद्धा सूरा वलीआ छलीआ हरि हरि

राठ, सन्त सुहेले तीर उठांयदा। नाम शब्द गुरज साची लाठ, चारों कुन्ट आप भवांयदा। कलिजुग काया अग्नी जले काठ, अग्नी तत्त रुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सुहेले एका दर, एका धाम सुहांयदा। एका धाम एका राह, एका शब्द जणाईआ। एका गुर बेपरवाह, एका नाम वखाईआ। एका देवे ठण्ढी छा, एका बिरखा हेठ बठाईआ। एका हँस बणाए काँ, माणक मोती सोहँ चोग चुगाईआ। सो पुरख निरँजण जाणे आपणा नाँ, आप आपणी बणत बणाईआ। हँ हँगता दए मिटा, हाहा हरि गुण वेख विखाईआ। सस्सा किला इक्क बणा, चारों कुन्ट लकारा लाईआ। होड़ा उप्पर दए टिका, दोवें मुख भवाईआ। तिक्खी धारा लए रखा, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। निरगुण सरगुण वेख वखा, ऊँचो नीच समाईआ। उप्पर बैठा बेपरवाह, जोत सरूपी डगमगाईआ। शब्द धारा रिहा चला, होड़े उप्पर आप टिकाईआ। होड़े मुख दए भवा, सस्से विच समाईआ। सस्सा किला दए खुल्ह्रा, एका चोट लगाईआ। शब्द सुत दर बहा, साची सिख्या दए समझाईआ। सन्त सुहेले लए मिला, एका रंग रंगाईआ। एका घुंडी पैर लगा, लोकमाती कुण्डा लाहीआ। शब्द खूंडी हथ्थ रखा, हाहा लेख लिखाईआ। हाहा डण्डा लए खिचा, नीचे धार चलाईआ। आपे अग्गों लए भवा, टेडा राह बणाईआ। चौथा घर चौथा पद चौथा हिस्सा लए वंडा, अन्दर मुख कराईआ। आपे अन्दर फड़े बांह, एका राह वखाईआ। उत्ते टिप्पी दए टिका, दस्म द्वारी बणत बणाईआ। सुरत सवाणी बन्द करा, दिस किसे ना आईआ। ब्रह्म सरूपी भेव छुपा, ब्रह्म ब्रह्म समाईआ। पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, आपे वेखे वेख वखाईआ। आप आपणी दया कमा, हाहा टिप्पी संग निभाईआ। नारी कन्ता रूप जणा, विचला डण्डा सेज बणाईआ। सति सरूपी बीज पा, मन मति बुध लए उपाईआ। निरगुण तेरा कोई ना जाणे नाँ, रूप रंग दिस ना आईआ। मन जोत सरूप रिहा अख्वा, नानक दए गवाहीआ। मति बुध सेवक सेवा लए लगा, आप आपणी कर चतुराईआ। पारब्रह्म बैठा मुख भवा, ब्रह्म तेरे हथ्थ दित्ती वड्याईआ। पंजां तत्तां बणत बणा, अप तेज वाए पृथ्वी आकाश विच समा, रक्त बूंद मेल मिलाईआ। हड्ड मास नाड़ी तेरा दए उपा, तिन्न सौ सठ्ठ हाडी जोड़ जुड़ाईआ। रथ रथवाही काया रथ रिहा चला, आप आपणी रचन रचाईआ। मन मनुआ सेवा दित्ता ला, चारों कुन्ट रिहा भवाईआ। पंज तत्त आप उपा, पंचां वेख वखाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार जणा, जगत विद्या इक्क पढ़ाईआ। मन मति बुध संग रला, अठ्ठां तत्तां मेल मिलाईआ। बत्ती दन्दां रिहा गिणा, जिह्वा लेख लिखाईआ। नौ द्वारे आप खुल्ह्रा, आपे वेख वखाईआ। दाढ़ी केस मुच्छ रखा, मूंड मुंडाई आप हो जाईआ। धर्मी नैणी तिलक लिलाट लगा, कड़ा किरपान कच्छ आप हंढाईआ। पंज तत्त तेरा रंग रंगा, लक्ख चुरासी लई भुलाईआ। गुरमुख विरले सन्त सुहेले लए

उपा, दे मति समझा, अन्दर बैठा आसण लाईआ। एका वंडण रिहा वंडा, जुग जुग हिस्से पाईआ। ब्रह्मण्डां खोज रिहा खुजा, खोजणहारा बेपरवाहीआ। नार रंडां दुहागणां अड्ड करा, राए धर्म करे कुड़माईआ। लाड़ी मौत मैहन्दी ला, साचे सगन मनाईआ। पंचम जेठ तेल चढ़ा, साचा मंगल गाईआ। अस्सू तिन्न गाना दए बंन्ह, साधां सन्तां करे जणाईआ। शब्द बराती आप बणा, जमन किनारा वेख वखाईआ। सन्तां सुरती आप जगा, शब्द कन्त इक्क वखाईआ। साची वेदी लए गढ़ा, सोहँ झण्डा लाईआ। सत्त रंग निशाना लए उठा, धुरदरगाही बेपरवाहीआ। नारी कन्ता एका धाम बहा, सन्त सतिगुर मेल मिलाईआ। आपे फड़े पल्लू बांह, आपे मुख भवाईआ। आपे जाणे आपणा राह, चारे कुन्टां वेख वखाईआ। चौथे जुग तेरी अन्तिम वार फेरा पा, जोती शब्दी बणत बणाईआ। सन्तां सुरती लए प्रना, आप आपणे लड़ लगाईआ। शब्द घोड़ी लए चढ़ा, चरन रकाबे इक्क टिकाईआ। दस्म द्वारी विच टिका, पहला पौड़ा इक्क वखाईआ। दूजा पौड़ा लए उठा, सोहँ देस सुहाईआ। तीजा पौड़ा बेपरवाह, सुन अगम्मो पार कराईआ। चौथा वेखे साचा थाँ, सति पुरख निरँजण बैठा सेज वछाईआ। ना कोई जपे किसे दा नाँ, ब्रह्मा विष्नूं शिव दिस ना आईआ। नानक गोबिन्द संग मुहम्मद चार यार, राम कृष्न ना कोई सुहाईआ। सन्तां पकड़े आपे बांह, निरगुण खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन मेला साचे घर, साचे दर वज्जी वधाईआ। साचे दर वज्जे वधाई, होए शब्द कुड़माईआ। पंचम गावण चाँई चाँई, मिल्या मेल साचे माहीआ। वेख वखाए थाउँ थाँईं, ऊँचो नीच आप वखाईआ। कोटन कोट जीव जन्त साध सन्त पान्धी थक्के राही, राह खैहड़ा दिस ना आईआ। त्रैगुण माया पाई फाही, ना कोई सके तुड़ाईआ। पंचां टिक्का लाया कालख शाही, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। साची सिक्खी साचा मिल्या माही, आप आपणा लड़ फड़ाईआ। लज पति पारब्रह्म अबिनाशी करते रक्खी, जिस हत्थ वड्डी वड्याईआ। हरि का नाम किसे हत्थ ना करोड़ लक्खी, कीमत करते किसे ना पाईआ। साध सन्त जो सुत्ते लाल अनमुल्लड़े लए उठाईआ। पवण उनन्जा झल्ले पक्खी, प्रभ साची सेवा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन मेला इक्क घर, घर साचा इक्क सुहाईआ। साचा घर सुहंदड़ा, मिल्या पुरख भतार। जुग जुग सद बख्शिंदड़ा, जो जन ढहि पए द्वार। मेल मिलाए साचे अन्दरा, काया मन्दिर इक्क अपार। इक्क सुणाए सुहागी छन्दड़ा, आप आपणी किरपा धार। एका जोग जगत रखंदड़ा, खुल्ल्हे केस दर दरवेश नर नरेश ना कोई विचार। हरि शब्द एका एक वखंदड़ा, एका मेली मेलणहार। दीपक जोती इक्क जगन्दड़ा, मेट मिटाए अन्ध अंध्यार। दूई द्वैती ढाहे कंधड़ा, भाण्डा भरम भउ निवार। मनमुख जीव काया पंज तत्त अन्धड़ा, भेव ना पाए सिरजनहार।

आपे नेत्र लोचन नैण खुल्हंदड़ा, आपे करे बन्द किवाड़। आपे तोड़नहारा जिंदड़ा, बजर कपाटी देवे पाड़। जीव अञ्जाणा भागां मन्दड़ा, दर दर फिरे भिखार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, एका भरे नाम भण्डार। नाम भण्डारा सच ख़जीना, प्रभ आपणे हथ्थ रखाया। जन भगतां देवे दाना बीना, आप आपणी दया कमाया। सांतक सति कराए ठांडा सीना, अमृत आत्म जाम प्याया। काया चोली रंग रंगे भीन्ना, आप आपणा रंग रंगाया। ना कोई मज़्हब ना कोई दीना, ज़ात पात ना कोई रखाया। नौ खण्ड पृथ्वी तेरी भन्ने हँकारी बीना, झूठा ताल ना कोई वजाया। आपे वेखे रूसा चीना, चीना रूसा आप समाया। मिले मेल शाह अबनूसा, कोहतूरा नूर सवाया। ना कोई कुरान ना हदीसा, ना कोई सबक पढ़ाया। लेखा चुक्के ईसा मूसा, मुस्लिम सुन्नी रहिण ना पाया। आपे वेखे काला सूसा, अल्ला राणी मुख छुपाया। खेले खेल बीस बीसा, जगत जगदीसा नाउँ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए तराया। आपे वेख वेद पुराण, सिमरत शास्त्र वेख वखानया। दाता दानी गुण निधान, गुण अवगुण जाणे दो जहानया। लक्ख चुरासी पुण छाण, छाण पुण करे श्री भगवानया। ब्रह्मा वेता दर दरबान, रो रो करे ध्यानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवे धुर फुरमानया। एका शब्द धुर फुरमानी, हरि ब्रह्मे आप जणांयदा। कलिजुग अन्तिम मेल मिलानी, वेला अन्त चुकांयदा। नेत्र अट्ठ बन्द कराई, चारे मुख वखांयदा। शाम यजुर रिग थाउँ थाँईं, अथर्बण रंग रंगांयदा। ऐड़ा अल्ला नूर अलाही, आपणा संग निभांयदा। प्रगट होए बेपरवाही, परवरदिगार करे ख़बरदार मुल्ला शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर शाह हकीर आप चुकांयदा। ख़लक ख़ालक वेख ख़ुदाए नबी रसूल हाए हाए, धीरज धीर ना कोई धरांयदा। ना कोई देवे सच सदाए, रोज़ा बांग मुसल्ला कूजा ना कोई वस्तू वेख वखांयदा। एका एक किसे ना बूझा, वाहिद खुदा ना कोई रखांयदा। संग मुहम्मद दर दुआरा एका सूझा, दर दरवेश फेरी पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धारी केस रूप वटांयदा। धारी केसा हरि बलवान, आपणी जोत जगाईआ। गोबिन्द देवे दाता दान, देवणहार आप अख्वाईआ। नाम खण्डा तेज किरपान, ब्रह्मण्डां वेख वखाईआ। हथ्थ कंगण धर्म निशान, सति सन्तोखी धीर बंधाईआ। तेड़ कच्छ पति लए रक्ख, धीरज यति रखाईआ। कंघा केस दस दस्मेस, दुरमति मैल रिहा धवाईआ। जोत सरूपी हरि प्रवेश, शब्दी करे जणाईआ। नरैण नैणा करे आदेस, नेत्र दरस दिखाईआ। सच सुगाती धुरदरगाही केस, सीस दस्तार टिकाईआ। लहिणा देणा चुकाया ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, शिव शंकर ना सीस झुकाईआ। मिल्या वर दस दस्मेश, पूत सपूता गोद उठाईआ। पारब्रह्म वड नर नरेश, शाहो भूप आप अख्वाईआ। लोआं पुरीआं रिहा वेख, मात

पाताल आकाश डेरा लाईआ। प्रगट हो गुर दस्मेस, पुरख अकाल दोए जोड़ सीस झुकाईआ। पारब्रह्म प्रभ दीन दयाल, आपणे गले रिहा लगाईआ। शब्द बणाए इक्क दलाल, आवे जावे फेरा पाए वाहो दाहीआ। मिलाए मेल काया सच्ची धर्मसाल, सचखण्ड धाम सुहाईआ। सति पुरख निरँजण जाणी जाण, नेत्र अंजन एका पाईआ। गुर गोबिन्दा दर परवान, साचा सज्जण आप बणाईआ। एका देवे धुर फ़रमान, कलिजुग करनी अन्त लड़ाईआ। लक्ख चुरासी चुक्के कान, लोकमाती बणत बणाईआ। जोद्धे सूर बली बलवान, पंज तत्त रिहा उठाईआ। आप बणाए पंज शैतान, कल्गी तोड़ा सीस टिकाईआ। नीला घोड़ा कर ध्यान, सोलां कलीआं आसण लाईआ। जोती जोड़ा हरि हरि दान, एका ओट रखाईआ। पुरख अबिनाशी मेहरवान, काया चोट शब्द लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्दे दित्ता वर, पुरी अनन्द इक्क वखाईआ। पप्पा पुरख अपार, रारा राम अख्वाया। ऐड़ा अक्ख दए उग्घाड़, नन्ना निरगुण वेख वखाया। दद्दा दर्द दु:ख भय भंजनहार, समरथ पुरख आप अख्वाया। पुर अनन्द लए उसार, गुर गोबिन्द विच समाया। शब्द जणाए अट्ठे पहर, दिवस रैण रिहा जगाया। आपे करे ख़बरदार, साचा खण्डा हथ्थ फड़ाया। सिख सुहेले संगी यार, एका मता पकाया। अमृत आत्म कर त्यार, लोकमात आप पिलाया। खण्डे तिक्खी रक्खी धार, निक्की सिक्खी रूप जणाया। नेत्र पेखी विच संसार, वेला अन्तिम आया। लिख्या लेख बैठ दरबार, एका दूजा संग तुड़ाया। गुर गोबिन्दा कर प्यार, माझे देस दए वधाया। अन्तिम प्रगटे निहकलंक नरायण नर अवतार, सम्बल नगरी धाम सुहाया। साढे तिन्न हथ्थ नगर उच्च मुनार, साचा किला इक्क सुहाया। शब्द खण्डा तेज कटार, आप आपणे हथ्थ लए उठाया। गुरमुखां बख्शे एका शब्द प्यार, शस्त्र बस्त्र ना कोए वखाया। आप आपणी जोत कर आकार, आदि निरँजण वेख वखाया। जोत निरँजण सेवादार, सेवक सेवा रिहा कमाया। सन्त सुहेले करे ख़बरदार, फड़ बाहों आप जगाया। अन्तिम मेला पार ब्यास किनार, साचा धाम इक्क सुहाया। मनमुख डोबे अध विचकार, बेड़ा शौह दरया रुड़ाया। गुरमुख साचे लए उभार, जिन्हां पुरी अनन्द संग रखाया। सरसे डोबे डूँघी गार, आप आपणा मोह चुकाया। विछड़या मेल मेल विछोड़े विछड़नहार, सरसे भेंट चढ़ाया। गुरमुख मंगण मंग अपार, गोबिन्द तेरा रूप सहाया। गुर गोबिन्दा देवे वर, पुरख अबिनाशी किरपा कर, बण भिखार गुरसिक्खां रिहा समझाया। चौथे जुग जोत धार, गुर गोबिन्दा नारी लए वर, सन्त सुहेले साचे सुत आपणे लए उपाया। मेल मिलाए अबिनाशी अचुत, सम्बल नगरी धाम सुहाया। सम्मत चौदां सुहाए साची रुत्त, बीस बिक्रमी दए वड्आया। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले आप बणाए आपणे मित, एका राह रिहा पाया। साची सिक्खी सज्जण सुहेले, धार तिक्खी रिहा धराया। सोहँ खण्डा नेत्र पेखे,

दो जहानां लिखे लेखे, मुखी तिक्खी इक्क रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द मेला सहिज सुभाया। निक्की सिक्खी तिक्खी धार, एका एक रखाईआ। गुर गोबिन्दा कर प्यार, पहरेदार आप हो आईआ। साचा खण्डा तेज कटार, तन गात्रे आप लटकाईआ। ब्रह्मण्डां ना कोई खोज ना कर विचार, वेद शास्त्र ना लेख लिखाईआ। गुरमुख विरला सन्त सुहेला पावे सार, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। पूत सपूता कर त्यार, साची सेवा लाईआ। साची शाही इक्क अपार, एका बूंद रखाईआ। लेखा लिखे लिखणहार, जगत जगदीस तेरी वड्याईआ। नौ द्वारे खोल्ह कवाड़, नौ खण्ड पृथ्वी रिहा जणाईआ। दसवें मेला कन्त भतार, साची सेज वछाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, बैठा जोत जगाईआ। शब्द महल्ला कर त्यार, सन्त सुहेले रिहा वसाईआ। गोबिन्द डल्ला इक्क प्यार, सुरत शब्द सच्ची कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सन्तन मेला मेल दर, जुग विछड़े मेल मिलाईआ।

❋ पहली भाद्रों २०१४ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ज़िला अमृतसर ❋

८४५
०६

हरि मूर्त अकाल, मूर्त अकालया। दीना बंधप दीन दयाल, एका एक अख्वाया। करे कराए सर्ब प्रितपाल, प्रितपालक दो जहानया। हरिजन साचे लए उछाल, खेले खेल श्री भगवानया। देवे नाम सच्चा धन माल, धुरदरगाही इक्क ख़ज़ानया। अनहद शब्द वजाए साचा ताल, एका नाद धुन रखानया। तोड़ तुड़ाए जगत जंजाल, देवे नाम धुर फ़रमानया। नेड़ ना आए काल महांकाल, आवण जावण फंद कटानया। काया मन्दिर इक्क वखाए सच्ची धर्मसाल, सर सरोवर आत्म इक्क महानया। भाग लगाए काया माटी खाल, गुणवन्ता हरि गुण निधानया। हरिजन साचा चतुर सुजान, दर घर साचे होए परवानया। बेमुख जीव सर्ब पछतान, वेले अन्त ना कोई छुडानया। लाड़ी मौत मंगे दान, पल्लू आपणा इक्क विखानया। धर्म राए कर पछान, कलिजुग अन्तिम वेख निशानया। जीव जन्त साध सन्त बेईमान, भरया इक्क अभिमानया। बिरला सेठ पंज तत्त, मन मति बुध प्रना । वेख वखाणे आत्म तीर्थ तट्ट, अट्ठ सट्ठ वेख वखा रिहा। कवण वस्त काया माटी जगत हट्ट, कवण वणज वपार ल्या करा। कवण लाहा ल्या खट्ट, कवण गंढु पल्ले लई बंन्हा। काया जगत अन्दर जाणा ढठ्ठ, बुरज रोवण मारन धाह। प्रभ दरस ना मेला नठ्ठ नठ्ठ, ना कोई देवे पन्ध मुका। लिखे लेख अट्ठ सट्ठ, नौ निध विच समा। सिद्ध अठारां भट्ठ भट्ठ, दरगाह अष्टमी नौमी दसवीं खेल खिला। प्रभ चरन द्वारे इक्क इक्ट्ठ, ब्रह्मा विष्न शिव आपे राह तका। कृष्न राम प्रभ गेड़े लट्ठ, द्वापर त्रेता पैज रखा। कलिजुग तेरा कूड़ कुड़यारा वेख हठ, आपणी बणत प्रभ लई

बणा। प्रगट होया हरि समरथ, निहकलंक जामा पा। चरन सरन रामा दसरथ, कृष्न काहना विच समा। जोती शब्दी हरि प्रतक्ख, परम पुरख रिहा अख्वा। अरब खरब ना सकण रक्ख, काया कक्खां हेठ जला। शब्द जणाए इक्क अकथ, दे मति रिहा समझा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत चौदां सावण सुरती शब्द मिला। धन दौलत माल खज़ीना, कोए ना पार उतारया। मन मेरा रूसा चीना, ज़ात पाती वसे बाहरया। मति मतवाली होई अन्धीआ, लुट्टी गई दिन दिहाड़या। बुध बल ना रसना चीना, वेख्या जगत अखाड़या। रत्त तत्त ना होया भीन्ना, अमृत मिल्या ना ठण्ढा ठारया। बिन हरि दर्शन झूठा जीना, ना कोई पार कराए मन्दिर अन्दर उच्च महल्ल अटल अटारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाए तेरा घर, आए दर दरबारया। जगत घर रैण बसेरा, थिर रहिण ना पाईआ। अबिनाशी करता पाए फेरा, सम्मत चौदां रुत्त सुहाईआ। सति पुरख निरँजण पाए घेरा, चारों कुन्ट वेख वखाईआ। ज्ञान ध्यान विद्‌वान ढाहे भरमां डेरा, गढ़ भरम रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर द्वारे आवे जावे फेरा पावे चरन छुहावे इक्क दिशा आपणे हथ्थ रखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कृष्ना रामा रामा कृष्ना आपणे अंग लगाईआ। धर्म ना झुल्ले कोई निशान, सति सन्तोख ना खाणी बाणीआ। वेद पुराणां आई हान, पंडत पांधे रसना जिह्वा होई हलकानीआ। अंजील कुरानां तुट्टा मान, मुल्ला शेख़ जूठ झूठ मारन कानीआ। पुरख अबिनाशी वेखे मार ध्यान, सच महल्ला इक्क रखानीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी वेखे फल काया लग्गी डालीआ। दाता दानी आप हरि, एका एक अख्वाया। शब्द सरूपी दए वर, जोती दीप जगाया। लक्ख चुरासी नारी नर, हर घट रूप समाया। जेरज अंडज सीस धड़, उत्भुज सेत्ज डेरा लाया। आदिन अन्ता जुगा जुगन्ता हरि भगवन्ता कोई ना सके फड़, सगला संग ना कोई निभाया। काया मन्दिर बैठा वड़, डूँघी कन्दर डेरा लाया। हरिजन तोड़ किला हँकारी गढ़, आत्म दरस दिखाया। ना मरे ना जाए सड़, मात पित किसे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करता पुरख आप अख्वाया। करता पुरख हरि निरवैरा, एका एक अख्वांयदा। जन भगत उधारे कर कर मेहरा, मेहरवान आप हो जांयदा। भेव चुकाए मेरा तेरा, इक्क वखाए सञ्झ सवेरा, अन्ध अन्धेरा मेट मिटांयदा। लक्ख चुरासी आप फिराए कर कर हेरा फेरा, जोती जोत आप हो जांयदा। जन भगतां ढाहे भरमां डेरा, एका खण्डा नाम वखांयदा। शब्द सरूपी पाए घेरा, सरसा किला इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चौथे जुग वेख दर, हक्क निबेड़ा आप करांयदा। हक्क निबेड़ा हक्क हबीब, एका एक अख्वाईआ। क्या कोई करे मात शरीक,

८४६
०६

ना कोई वंड वंडाईआ। जीव जन्त साध सन्त परखे नीत, पीर दस्तगीर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, ऐड़ा आपणी अक्ख खुल्हाईआ। ऐड़ा अक्ख आपणी खोल्ह, नेत्र नैण उग्घाड़दा। अथर्बण रसना रिहा बोल, कलिजुग अन्त ललकारदा। जूठ झूठ वज्जा ढोल, संग मुहम्मद चार यार दा। पारब्रह्म तेरा सच्चा कौल, अन्तिम वेला परवरदिगार दा। चौदां तबकां कुण्डा खोल्ह, अहिनल हक्क नाअरा एका मारदा। उम्मत नबी रसूल सुत्ती अनभोल, भुल्लया खेल अमाम मैहन्दी सच्चे यार दा। दिशा लहिंदी वेखे घोल, अन्तिम आया पासा हार दा। साचे कंडे रिहा तोल, एका तोल हरि संसार दा। करे कराए खेल हौली हौल, सम्मत सम्मती आप विचारदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, काया चोला इक्क श्रृंगारदा। काया चोला काया रंग, हरि आपणी खेल रचाईआ। जोत सरूपी हरि मलंग, चारों कुन्ट फेरी पाईआ। सो हँ बैठ इक्क पलँघ, उतर कदे ना जाईआ। अनहद वजाए इक्क मृदंग, ढोलक छैणा ना कोई रखाईआ। अमृत धार वहाई गंग, गंगा जमना रही शरमाईआ। शब्द रंगीले बैठ पलँघ, जगत सिँघासण रिहा तजाईआ। जोत निरँजण लाए अंग, आप आपणे अंग समाईआ। एका कंगण नाम पाई वंग, हरि साचा सगन मनाईआ। दर द्वारे मंगी मंग, वेला अन्तिम दए विखाईआ। नानक तेरा वजाए इक्क सारंग, सारंग बहत्तर नाड़ां तार हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलिजुग तेरा अन्तिम लेखा, हरि आपणे हथ्थ रखाया। जोती जामा धरया भेखा, मुल्लां शेख़ रिहा मुकाया। आप उठाए धारी केसा, मूंड मुंडाया रिहा समझाया। आपे दाता दस दस्मेसा, काहना कृष्ना रूप वटाया। दो जहानां नर नरेशा, निरगुण खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका अक्खर रिहा पढ़ाया। अल्ला राणी हो त्यार, हरि साचे शब्द जणाईआ। संग मुहम्मद चार यार, ऐली अल्ला रिहा ध्याईआ। पीर फ़कीर दस्तगीर परवरदिगार, हू हू नाअरा लाईआ। अन्तिम नाता तुट्टे विच संसार, इक्क इकल्ला रिहा तुड़ाईआ। शब्द खण्डा तेज कटार, आप आपणा रिहा वखाईआ। जलां थलां मारे मार, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ां वेख विखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, ऐड़ा अल्ला रिहा एका अक्ख वखाईआ। अल्ला राणी दर द्वार, बैठी मुख छुपाईआ। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, नेत्र नीर वहाईआ। जूठा झूठा हट्ट पसार, चौदां लोकां इक्क वखाईआ। दुरमति मैल कट्ट आई दरबार, चरन धूढ़ मंगे मस्तक शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द करे जणाईआ। एका शब्द हरि अल्ल्हा, जुग जुग आप रखांयदा। जोत सरूपी बण मलाह, एका राह विखांयदा। अहिनल हक्क इक्क सलाह, मुकामे हक्क बहांयदा। खुदी खुदाई

कोई जाणे ना, खुद खुदावंद आप अख्वांयदा। जगत जुदाई कोई भाए ना, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, राणी अल्ला एह समझांयदा। अल्ला राणी पड़दा लाह, नेत्र नैण उग्घाड़या। उठ उठ वेखे चारों राह, राह खैहड़ा दिस ना आ रिहा। दिस ना आए बेपरवाह, बिसमिल रूप समा रिहा। ना कोई दिसे जगत गवाह, ना कोई सालस कोला बहा ल्या। जूठ झूठ ना किसे थाँ, ना कोई फंद तुड़ा ल्या। संग मुहम्मद चार यार बैठे कर ना, वेला अन्तिम अन्त मुका ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग वखा ल्या। आपणा रंग हरि सरबंग, एका एक रखाया। साचे घोड़े कसया तंग, चौदां तबकां आप दुड़ाया। दर दर घर घर वेखे लँघ, आकाश प्रकाश फेरा पाया। मन मति बुध तेरा लग्गा जंग, जगत नैणी इक्क विखाया। दूई द्वैती ढाहे कंध, पड़दा उहला रहिण ना पाया। इक्क वखाए चण्ड प्रचण्ड, साचा खण्डा हथ्थ उठाया। लेख लिखाए जेरज अंड, अंडज जेरज पार कराया। खोज खुजाए विच ब्रह्मण्ड, कलिजुग तेरी वंड वंडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अल्ला राणी नार दुहागण होए रंड, साचा कन्त ना कोए हंढाया। साचा कन्त हरि मुरार, एका एक अख्वांयदा। ईसा मूसा गए हार, लहिणा देणा मूल चुकांयदा। रो रो धाहां रहे मार, संग मुहम्मद चार यार वेला अन्तिम आंयदा। ना कोई सुणे सुणाए किसे पुकार, मुल्ला शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर फ़कीर शाह हकीर ना कोई पार लँघांयदा। एका वज्झा जगत जंज़ीर, अन्तिम अन्त ना कोई तुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा वेख अन्त अख़ीर, आप आपणी कल वरतांयदा। कलिजुग तेरा अन्त किनारा, हरि साचे जोत जगाईआ। प्रगट होए विच संसारा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। पूत सपूता कर त्यारा, आप आपणी गोद उठाईआ। गुर गोबिन्दा इक्क दुलारा, तन बस्त्र रिहा पहनाईआ। शब्द खण्डा तेज कटारा, तन गात्रे आप लटकाईआ। आपे होया पहरेदारा, दिवस रैण सेव कमाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी मारे मारा, सत्तां दीपां रिहा जगाईआ। ब्रह्मा देवत सुर दए हुलारा, शिव शंकर आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका जोत करे रुशनाईआ। गुर गोबिन्दा साचा सुत्त, हरि आपणे अंग लगांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी अचुत, साचा संग निभांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम रुत्त, लक्ख चुरासी वेख विखांयदा। जन भगतां मेटे आत्म तृष्ना लग्गी तृष्ना भुक्ख, अमृत आत्म जाम प्यांअदा। मनमुखां लग्गा सदा दु:ख, हउमे रोग सतांयदा। मात गर्भ उलटा रुक्ख, आवण जावण गेड़ रखांयदा। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले उज्जल करे मुख, आत्म दरसी दरस दिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,, निहकलंक नरायण नर, गुर गोबिन्दे मेल मिलांयदा। गुर गोबिन्दे उठ बल धार, प्रभ आपणी कल वरताईआ।

दर द्वारे मंगे मंग मुहम्मद यार, रो रो नेत्र नीर वहाईआ। सदी चौधवीं आई हार, चारों कुन्ट पए दुहाईआ। गुर गोबिन्दा कर त्यार, प्रभ नैणी नैण मिलाईआ। आत्म जोती जोत न्यार, शब्दी शब्द मिलाईआ। आप आपणा दए अधार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दो जहानां वसे बाहर, भेव कोए ना पाईआ। गुर गोबिन्दा सुत दुलार, एका एक अख्वाईआ। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, सच वस्त झोली पाईआ। नाम खण्डा तेज कटार, हथ्थ समरथ रखाईआ। चारों कुन्ट दहि दिशा वेख विचार, अलख निरँजण एका अलख रिहा जगाईआ। मेट मिटाउणा अन्ध अंध्यार, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। सम्मत चौदां कर त्यार, नीला बस्त्र तन छुहाईआ। पन्दरां अन्दरे अन्दर जाए मार, डूँघी कन्दर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, सुत दुलारा हरि निरँकारा, एका एक रखाईआ। सुत दुलारा हरि गोबिन्द, एका एक उपाया। लक्ख चुरासी मेटे चिन्द, भरम गढ़ तुड़ाया। भगत जनां हरि बख्शिंद, आप आपणा दरस दिखाया। भाग लगाए भारत खण्ड, सम्बल नगरी धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, एका एक संग निभाया। सच दुआरा हरि निरँकार, एका एक रखाया। गुर गोबिन्दा करे निमस्कार, दोए जोड़ सीस झुकाया। मुहम्मद मंगे मंग अपार, अग्गे झोली डाहया। दोहां विचोला हरि निरँकार, एका एक अख्वाया। कलिजुग अन्तिम होया गोला, दे मति रिहा समझाया। मुहम्मद मुहम्मदी बदलया चोला, ना कोई सके मात बचाया। अल्ला राणी खेले होला, लाल गुलाला रंग चढ़ाया। मिले वड्याई उप्पर धवला, धरनी धवल दए सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच द्वारे बैठे आसण लाया। गुर गोबिन्दा कर निमस्कार, दोए जोड़ सीस झुकांयदा। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, जगत जगदीश आप हो आंयदा। प्रगट होवे विच संसार, छत्र सीस इक्क झुलांयदा। निहकलंका सेवादार, दिस किसे ना आंयदा। अट्ठे पहर ख़बरदार, लोआं पुरीआं वेख वखांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर बन्ने धार, कलिजुग जोत जगांयदा। ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां पावे सार, जलां थलां वेख वखांयदा। भेख पखण्डा दए निवार, जूठ झूठ मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दे मेल कर, दे मति आप समझांयदा। दे मति हरि नरायणा, गोबिन्द एह समझाया। हरि हरि भाणा सिर ते सहिणा, सेवक सेवा रिहा कराया। तन बस्त्र पहनाए एका गहणा, सोहँ नाउँ रखाया। चार वरन नाता बंधाउणा एका मात पित भाई भैणां, ऊँच नीच कोई रहिण ना पाया। शब्द विचोला साचा साक सज्जण सैणा, ना कोई बंधन बंध बंधाया। जूठी झूठी माया विच ना रहिणा, भरमां डेरा ना कोई भन्नाईआ। आप चुकाए लहिणा देणा, पिछला घाटा पूर कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दे दित्ता वर, एका घर रिहा वखाया। इक्क मुहम्मद इक्क अल्ला एका

८४६
०६

दर सवालीआ। एका हरि इक्क मलाह, एका होए रखवालीआ। एका अक्खर एका नाँ, एका एक रिहा जपा, एका एक होए सवालीआ। एका एक अगम्म अथाह बेपरवाह, एका एक वाली दो जहानीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल मात निरालीआ। सतिगुर शब्द अनूप आप उपाया। आपे होया सति सरूप, सांतक सति समाया। वेख विखाए चारे कूट, दहि दिशा फेरा पाया। कलिजुग काया जूठ झूठ, माया ममता फंद लगाया। अन्तिम खाली दिसे ठूठ, सच वस्त ना कोई रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचा वेखण आया। सतिगुर शब्द तरंग, एका एक रखाया। नाम बस्त्र चोली रंग, आपणा तन सजाया। सच सुच्च लाए अंग, सति सन्तोख वरताया। धीरज धीर बैठ पलँघ, नीर सीर पिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे अंगण आप समाया। सति सन्तोख शब्द ज्ञान, सतिगुर मुख उजालया। सतिगुर वेखे मार ध्यान, कलिजुग अन्धेरा कालया। वेद पुराणां अञ्जील कुरानां तुट्टा माण, खाणी बाणी आपणा राह वखा ल्या। लहिणा देणा जगत जहान, जुग जुग मात चुका ल्या। करे कराए पुण छाण, आप आपणी बणत बणा ल्या। कलिजुग अन्त वेख विखान, जोती जामा भेख वटा ल्या। ना कोई खण्डा तीर कमान, ना कोई शस्त्र अंग उपा ल्या। लशकर फौज ना कोई जवान, हस्त गज ना कोई संभालया। अन्न जल ना पीण खाण, लेफ तलाई ना कोई सिरहानया। राग नाद ना कोई गान, रसना जिह्वा ना कोई सुणानया। शब्दी शब्द गुण निधान, आपणा आप आप पछानया। प्रगट हो वाली दो जहान, नौ खण्ड पृथ्वी वेख वखानया। इक्क रखाए सच बिबान, लोआं पुरीआं आप उडानया। धर्म झुलाए हरि निशान, रंग रंगीला आप रखानया। लिख्या लेख लेख महान, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानया। वरन बरन सारे गाण, ऊँचां नीचां इक्क ध्यानया। राज राजानां तुटे मान, शाह सुल्तानां इक्क फ़रमानया। ब्रह्मा ब्रह्म करे पछाण, आत्म जोती इक्क ज्ञानया। शिव शंकर सुणे सुणाए साचे कान, हरि एका शब्द वखानया। सुरपति राजा इन्द बैठा इक्क मकान, करोड़ तेतीसा बाल निधानया। सिँघ मनजीता वड बलवान, मारे तीर तिक्खी कानीआ। सोहँ सो देवे साचा दान, साचे दर करे परवानया। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क ज्ञान, एका जाप जपानया। लेखा चुक्के अञ्जील कुरान, बतीस तीस हदीस ना कोई पढ़ानया। भेव चुकाए गोपी काहन, सीता राम आप हो जानया। नानक गोबिन्द एका तान, एका नाउँ वखानया। नर निरँकारा करे पछाण, ओंकारा दो जहानया। शब्द जैकारा इक्क मेहरवान, धुरदरगाही आप फ़रमानया। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुणे सुणाए साचे कानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द देवे एका वर, आप रखाए आपणी आनया। गोबिन्द वर झोली पा, आत्म खुशी मनाईआ। लोकमाती

८५०
०६

जोत जगा, चार कुन्ट होए रुशनाईआ। अन्ध अन्धेर दए मिटा, दीपक इक्क जगाईआ। सञ्झ सवेर इक्क वखा, एका दूजा भउ चुकाईआ। रवि ससि हरि नाम चढ़ा, सीतल धार वहाईआ। मण्डल मण्डप दए सुहा, रिख मुन संग निभाईआ। आप आपणे लए उपा, आप आपणी कल वरताईआ। जूठ झूठ दए मिटा, लोकमात रहिण ना पाईआ। लक्ख चुरासी दए खपा, अन्तिम अन्त होए जुदाईआ। गुरमुख साचे लए तरा, एका बेड़ा रिहा भराईआ। सोहँ चप्पू नाम लगा, वंञ मुहाणा आपणे हथ्थ रखाईआ। माया ममता अग्न बुझा, तृखा तृष्न बुझाईआ। अक्खर वक्खर दए पढ़ा, सोहँ शब्द भगत पढ़ाईआ। जगत विद्या मूल चुका, ब्रह्मे झोली पाईआ। अन्तिम वेला रिहा जणा, बीस बीसा दए दुहाईआ। राग छतीसा ना कोई गा, नारद मुन रिहा शरमाईआ। नार सुरसती रोवे मारे धाह, होणी अन्त जुदाईआ। वेद व्यासा गया लिखा, पुराण अठारां रसना गाईआ। पुरख अबिनाशी आए वेस वटा, भेव कोई ना पाईआ। ब्रह्मण गौड़ा लए उठा, पूत सपूता आप हो आईआ। हरिजन साचे पौड़े लए चढ़ा, एका डण्डा नाम लगाईआ। आप बहाए साचे थाँ, ब्रह्मण्डां खोज खुजाईआ। आपे पिता आपे माँ, आप आपणी गोद उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी घर घर उडदे काँ, ना दीसे किसे कोई सहाईआ। ना कोई देवे ठण्ढी छाँ, मावां पुत्तरां होए जुदाईआ। गुरमुख साचे सन्त जनां हरि साचा रिहा जणा, गुर चरन सच्ची सरनाईआ। सम्मत पन्दरां दए हिला, अन्दर मन्दिर डेरा ढाहीआ। सम्मत सोलां दए वखा, नेत्र नैण खुल्हाईआ। सम्मत सतारां सत्थ दए विछा, धरत मात झोली डाहीआ। सम्मत अठारां दए रुढ़ा, सागर सिन्ध इक्क वहाईआ। उन्नी उनीसा वेख वखा, अल्ला राणी रही कुरलाईआ। जगत जगदीसा जोत जगा, बीस बीसा करे रुशनाईआ। एका छत्र सीस झुला, जगत जगदीस आप अख्वाईआ। राज मन्त्र दए बणा, नाम विधान इक्क बणाईआ। पंचम पंचां मुख रखा, पंचम जोग कमाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी दए वखा, दूसर कोई ना होर रखाईआ। सत्त रंग निशाना दए चढ़ा, पन्दरां कत्तक रुत्त सुहाईआ। सोहँ अक्खर दए पढ़ा, चार वरनां इक्क पढ़ाईआ। जै जै कारा दए करा, एका नाअरा लाईआ। आप आपणा लए उपा,

जोती नूर करे रुशनाईआ। जन भगतां जोती इक्क जगा, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। साचा सगन आप मना, इक्क इकेला खुशी मनाईआ। काया चोली रंग रंगा, साचा बस्त्र तन पहनाईआ। नाम मृदंगा इक्क वजा, एका राग सुणाईआ। एका धाम दए बहा, साचा ताल इक्क सुहाईआ। आत्म गंग दए नुहा, अठ्ठ सठ्ठ माण गंवाईआ। देहुरा मन्दिर मसीत गुरदुआरा ना दिसे कोई थाँ, ना कोई सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी तेरा नाँ, नौ खण्ड पृथ्वी रही गाईआ। सत्तां दीपां आप सुणा, सति सन्तोख धीरज आप दवाईआ। ब्रह्मा शिव दए उठा, सुरपति रहिण ना पाईआ। गुरमुख साचे दए जगा, आप

आपणा शब्द जणाईआ। एका अक्खर रिहा सुणा, आप आपणी दया कमाईआ। चार वेद ना कोई बणा, ना कोई रचन रचाईआ। छत्तीआं जुग दए मिटा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। व ह ग र वाहिगुरू वाहिगुरू वेख वखा, वेखण वाला आप हो जाईआ। नौ नौ जुग लेख लिखा, चारे जोड़ जुड़ाईआ। नानक गोबिन्द हो सहा, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। अन्तिम मेला लए मिला, आप आपणे रंग रंगाईआ। चार यार संग मुहम्मद दए मिटा, मेटे झूठी शाहीआ। अल्ला राणी जाए मुख छुपा, लाल चुन्नी सीस रखाईआ। मुस्लिम सुन्नी ना कोई रिहा जणा, ऐली अल्ला ना कोई जणाईआ। पंडत पांधा ना रिहा कोई पढ़ा, मस्तक तिलक ना कोई लगाईआ। शिव शंकर त्रिसूल ना रिहा वखा, बाशक तशक ना गल लटकाईआ। गणपति गणेश ना कोई रिहा मना, ना कोई सीस झुकाईआ। आदि शक्त अन्त ना मंगे कोई दुआ, गदा चक्र ना कोई हथ्थ उठाईआ। बुत सिला ना कोई मना, ना कोई पूजे पूज पुजाईआ। राम कृष्न ना कोई ध्या, गीता ज्ञान ना कोई जणाईआ। अञ्जील कुरान ना कोई सिक्खा, ईसा मूसा बैठे मुख छुपाईआ। खाणी बाणी ना बणे किसे दी माँ, साचा सीर ना कोई पिलाईआ। वरन बरन ना जाणे कोई थाँ, ऊँच नीच ना कोई सहाईआ। राज राजान शाह सुल्तान ना कोई करे ध्यान, दर दर फिरन देण दुहाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे मार ध्यान, चारों कुन्ट अन्धेरी छाईआ। जूठ झूठ खाक रही छान, सच वस्त हथ्थ ना आईआ। लोभ मोह हँकारा आपणा कीता पाण, काम क्रोध पई लड़ाईआ। मनमति जीव सर्ब पछतान, मनमुखां ना कोई सहाईआ। राए धर्म वेखे मार ध्यान, लक्ख चुरासी वेखे वेख वखाईआ। लाड़ी मौत नौजवान, हथ्थीं मैहन्दी रही लाईआ। धर्म राए दी सच सपुत्री इक्क रकान, दर मंगण प्रभ द्वारे आईआ। प्रभ अबिनाशी कर ध्यान, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। मनमुख जीव जगत शैतान, लक्ख चुरासी तेरा कन्त बणाईआ। हथ्थीं बन्नृ जा जा गान, एका गाना हथ्थ फड़ाईआ। पंज विकारा वजाए ताल तान, घर घर रही नाच वखाईआ। मन मति बुध होई हैरान, सम्मत चौदां पई लड़ाईआ। चित्रगुप्त मंगे दान, आपणा लेखा रिहा लिखाईआ। कलिजुग जीव सर्ब शरमान, नेत्र नैण ना कोई उठाईआ। भारत खण्ड मंगे दान, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। इलाबुत वेख मैदान, एका धाम सुहाईआ। केतमाल चढ़े अस्मान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। लहू मिझ वहे घाण, कालका आपणा रंग चढ़ाईआ। शब्द खण्डा तेज किरपान, गुर गोबिन्दा रिहा चमकाईआ। काया गात्रा वेख म्यान, आपणे अन्दर आप मिटाईआ। सोहँ लाए तिक्खी (बान), दो धारा आप बंधाईआ। कल्गी तोड़ा वेख निशान, जगत जगदीस सीस चमकाईआ। होए विछोड़ा गोपी काहन, मण्डल रास ना कोए रचाईआ। नानक पाया पद निरबान, हरिभगतन रूप समाईआ। मनमुख भुल्ले जीव नादान, हरि का नाउँ गए भुलाईआ।

राग छतीसा बहि बहि गाण, भेव अभेदा भेव ना राईआ। अन्तिम कीता आपणा पाण, अछल अछेदा छल कराईआ। बीस बीसा वेखे मार ध्यान, आप आपणी कल वरताईआ। इक्क इकीसा झुल्ले निशान, हरि साचा रिहा झुलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, नौ खण्ड पृथ्वी इक्क पढ़ाईआ। सम्मत वीह सौ इक्की पहली चेत्र, हरि आपणा आप विचारना। नौ खण्ड पृथ्वी तेरा एका खेत्र, एका बन्ने धारना। एका नैण एका नेत्र, एका अक्ख उग्घाड़ना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा रंग सूरे सरबंग, सृष्ट सबाई साचा चाढ़ना। सृष्ट सबाई चाढ़े रंग, हरि साचा आप रंगांयदा। सतिगुर मंगी साची मंग, दाता दानी दान भिच्छया झोली पांयदा। सन्त सुहेले साचे रंग, अंगीकार इक्क अख्वांयदा। शब्द वखाए इक्क तरंग, चारों कुन्ट दुड़ांयदा। जै जैकार होए वरभण्ड, ब्रह्मण्ड आप करांयदा। आपणी वंडा आपे वंड, वंडणहार आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा दिवस सच दिहाड़ा आपणा आप मनांयदा। पहली चेत्र सच दिहाड़ा, हरि एका एक रखाया। नौ खण्ड पृथ्वी वेखे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ां, जलां थलां फेरा पाया। लक्ख चुरासी वेखे बहत्तर नाड़ां, अन्दर मन्दिर डेरा लाया। सच धर्म रचाए इक्क अखाड़ा, एका धार बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सतारां हाढ़ा खुशी मनाया। सतारां हाढ़ होए सुभाग, लोकमात खुशी मनाईआ। जोती दीपक जगे चिराग, चारों कुन्ट होए रुशनाईआ। माया ममता बुझे तृष्ना आग, हउमे हँगता रोग गंवाईआ। हँस बणाए फड़ फड़ काग, एका साची चोग चुगाईआ। चरन धूढ़ी साचा मजन माघ, सन्त सुहेले आप तराईआ। कलिजुग जूठा झूठा धोवे दाग़ सच सुच्च आप वरताईआ। माया डस्से ना डस्सणी नाग, दुरमति मैल धवाईआ। आप आपणे हथ्थ रक्खे वाग, चारों कुन्ट फेरा पाईआ। आपे सोया आपे गया जाग, जागणहारा आप अख्वाईआ। हाढ़ सतारां वड वड भाग, सतिजुग तेरा साचा सम्मत रिहा चढ़ाईआ। साचा सम्मत आप चढ़ाए, इक्की एका एकँकारया। एका रंगत नाम रंगाए, मिट ना जाए विच संसारया। साची संगत संग निभाए, एका दूजा भउ निवारया। दूजा दर ना कोई मंगण जाए, ना कोई बणे मात भिखारया। सोहँ कंगण तन पहनाए, आपे करे मात रखवारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हाढ़ सतारां दिवस विचारया। हाढ़ सतारां सति सन्तोख, प्रभ एका एक रखाया। सतिजुग तेरी साची मोख, सोहँ चन्द धराया। गुर संगत मिटे जगत दोख, काया दुखड़ा रहिण ना पाया। ना कोई हरख ना कोई सोग, आलस निन्दरा विच ना आया। प्रभ चरन ना होए कदे विजोग, जिस जन आपणा लड़ फड़ाया। जूठा झूठा रसना भोग, जन भगतां दए तजाया। आप वखाए दरस अमोघ, दर द्वारे फेरा पाया। शब्द चुगाए साची चोग, अमृत फल खवाया।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हाढ़ सतारां साचा दिवस सुहाया। हाढ़ सतारां दिवस सुहंजना, हरि साची जोत जगाईआ। मिले मेल पुरख निरँजणा, गुरमुख हथ्थ वड्याईआ। हरि दाता दर्द दुःख भय भंजना, नेत्र अंजन एका पाईआ। अनहद ताल दर दर घर घर वज्जणा, प्रभ साचा आप वजाईआ। भाण्डा गढ़ हँकारी भज्जणा, अन्दर मन्दिर रहिण ना पाईआ। गुर संगत हरि चरन द्वारे बहि बहि सजणा, दिल्ली द्वारे होए सहाईआ। राष्ट्रपति पड़दा किसे ना कज्जना, अन्तिम वेले मात जुदाईआ। जो घड़या सो भज्जणा, अन्त रहिण ना पाईआ। उठ जाग भबीखण यार सज्जणा, राम रघवंस लहिणा दए चुकाईआ। सम्मत सोलां तख्त ताज तज्जना, निहकलंक इक्क सरनाईआ। बीस बीसे इक्क नगारा वज्जणा, नौ खण्ड पृथ्वी रिहा चुकाईआ। चार वरन विखाए इक्क जहाज़ना, लोकमात रिहा चलाईआ। आपे साजे आपणा साजना, आप आपे मेट मिटाईआ। आपे शाह आपे राज राजना, भेख भिखारी आप अख्वाईआ। आपे सीस आपे ताजना, आपे चरन धूढ़ रमाईआ। आपे रक्खणहारा लाजना, आपे लज पति रिहा गंवाईआ। जुग जुग संवारे आपणा काजना, ना कोई दूसर संग रखाईआ। कलिजुग अन्तिम लोकमात भाजना, बैठा मुख छुपाईआ। सतिजुग साचा मंगे साचा दाजना, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। प्रभ खेले खेल देस माझना, दिस किसे ना आईआ। गुर गोबिन्दा मारे आवाज़ना, आप आपणा भेख वटाईआ। सोहँ रक्खया साचा ताजना, सोलां कलीआं आसण लाईआ। आप दौड़ाए ग़रीब निवाजना, गऊ ग़रीबां होए सहाईआ। लहिणा देणा चुकाए कल्ल कि आजना, आपणे भाणे विच समाईआ। महल्ल अटल उच्च मुनारा अन्तिम सभ ने छाडना, थिर कोई रहिण ना पाईआ। साक सज्जण सैण ना बोले कोई गवांढना, भैण भाई ना कोई संग निभाईआ। मात पित पूत ना मारे आवाजना, सोए उठ उठ धाहीआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी जन भगतां रक्खे लाजना, दर द्वारे अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत दित्ता इक्क वर, हाढ़ सतारां नींह रखाईआ। हाढ़ सतारां चढ़या चाअ, वीह सौ इक्की वज्जी वधाईआ। साचा सम्मत दए चढ़ा, आप आपणा नाँ रखाईआ। संगत हरि साचा जोग कमा, रसना जिह्वा रही गाईआ। आसण सिँघासण ना ल्या कोई वछा, चरन ओट धराईआ। ब्रह्मा शिव विष्न ना ल्या ध्या, वेद पुराण ना सुणे सुणाईआ। नानक गोबिन्द ना ल्या मना, ना कोई बूझ बुझाईआ। ईसा मूसा ना दिसे खुदा, खुदी विच समाईआ। अहिमद मुहम्मद होए जुदा, वेले अन्त जुदाईआ। अल्ला राणी होए जुदा, बिस्मिल रूप समाईआ। कलिजुग नाता तुट्टे नौ निधां, अठारां सिद्धां ना संग निभाईआ। देवी देवत सुर ना फड़े कोई बांह, लाल लिलाट ना कोई जगाईआ। बिन हरि पूरे दिसे ना होर कोई थाँ, इक्क इकीसा रिहा जणाईआ। एका अक्खर एका नाँ, एका करे पढ़ाईआ।

धरत मात खुशी मनाए थाँ थाँ, प्रभ रसना जिह्वा गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हाढ़ सतारां देवे वर, हरिसंगत वड वड्याईआ। हरिसंगत सूरज साचा चन्न, लोकमात आप चढ़ांयदा। लोआं पुरीआं धार बन्न्ह, सेवक सेवा लांयदा। थिर घर वखाए दया कमाए ना कोई छप्परी ना कोई छन्न, चार दिवार ना कोई बणांयदा। ना कोई तत्त ना कोई मति ना दीसे बुध मन, ना कोई विकार रखांयदा। जन भगतां बेड़ा आपे बन्न्ह, भार आपणे कंध उठांयदा। मनमुखां भाण्डा काया देवे भन्न, राए धर्म सेव कमांयदा। धर्म द्वारे लग्गे डन्न, ना कोई किसे बचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हाढ़ सतारां खोल्ह दर, गुर संगत खेल खिलांयदा। गुर संगत लिख्या लेख करतार, आपणे हथ्थ रखाया। कलिजुग मिटे अन्ध अंध्यार, सतिजुग साचा चन्न चढ़ाया। सम्मत इक्की कर प्यार, एका इक्की दए पाया। साची सिक्खी विच संसार, धारों तिक्खी दए चलाया। वालों निक्की लेख लिखार, गोबिन्द सेवा लाया। पारब्रह्म अबिनाशी करते आपणे नेत्र पेख, सम्मत चौदां वेख वखाया। ना कोई जाणे धारी केस, भरम भुलाए मूंड मुंडाया। आपे दाता दानी जोद्धा सूरबीर दस दस्मेस, आप आपणा रूप वटाया। सेव लगाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, दर दरवेश रखाया। कलिजुग तेरा अन्तिम वेस, हरि आपणा वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हाढ़ सतारां जगत विहारा एका एक कराया। जगत विहारा साची रीत, एका एक कराईआ। ना कोई देहुरा मन्दिर मसीत, शिवदवाला मट्ठ ना कोई बणाईआ। ना कोई गुरुदुआरा दिसे जगत अनडीठ, ना कोई मट्ठ वखाईआ। एका नाम हरि हरि चार वरन दिसाए मीठ, रस मिट्ठा इक्क विखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हाढ़ सतारां जोत जगाईआ। हाढ़ सतारां जगत अवल्ला, हरि एका एक रखाया। हरिसंगत वसाया सच महल्ला, नौ दुआरा खोल्ह वखाया। अन्दर बैठा इक्क इकल्ला, घर दसवें डेरा लाया। सदा सहाई निहचल धाम अटला, थिर घर रिहा दिसाया। आपे फलया आपे फुल्ला, फल फुलवाड़ी मात लगाया। कलिजुग तेरा बूटा हुल्ला, अन्तिम फल रहिण ना पाया। जन भगतां मिल्या कन्त कन्तूहला, नाम झुलाए साचा झूला, दो जहानां पार कराया। आप चुकाए जुग जुग जुग लहिणा देणा मूला, लहिणा देणा रिहा चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हाढ़ सतारां वेख घर, हरिसंगत जोड़ जुड़ाया। हरिसंगत जोड़ी साची जोड़, प्रभ आपणे चरन जुड़ांयदा। शब्द चढ़ाए साचे घोड़, साचा राह वखांयदा। लोकमात आपे गया बौहड़, आप आपणा भेख वटांयदा। आपे होए ब्रह्मण गौड़, पूत सपूता आप अख्वांयदा। आप उठाए नीले पौड़, पहला पौड़ा आप टिकांयदा। सम्बल नगरी ना कोई जाणे लम्भा चौड़, गुर गोबिन्द जोत जगांयदा। लक्ख चुरासी वेखे परखे

मिट्ठा कौड़, नौ खण्ड पृथ्वी फोल फुलांयदा। जन भगतां आत्म अन्तर लग्गी औड़, एका अमृत मेघ बरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हाढ़ सतारां तेरी धार लोकमात आप चलांयदा। लोकमात चली धार, हरि साचे आप चलाईआ। ना कोई दीवा ना कोई बाती, ना कोई तेल रखाईआ। ना कोई तीर्थ ना कोई ताटी, ना कोई घाट जणाईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठी, ना कोई ध्यान लगाईआ। ना कोई वस्त ना कोई हाटी, ना कोई हट्ट खुल्हाईआ। जन भगतां बन्ने चरन प्रीती साचा नाती, ना कोई तोड़ तुड़ाईआ। ना कोई जाणे जाति पाती, ऊँच नीच ना कोई वखाईआ। लहिणा देण चुकाए आन बाटी, मात गर्भ फंद कटाईआ। आत्म सेज वखाए इक्क घाटी, पलँघ रंगीला इक्क वछाईआ। हरिजन मेला आप कराए पार कराए औखी घाटी, गुर चेला एका धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हाढ़ सतारां दए वर, सम्मत इक्की वड वड्याईआ। सम्मत इकी सदा सुहाग, हरि साचा कन्त हंढाया। लक्ख चुरासी उपजे इक्क वैराग, एका चोट लगाया। आपे धोए दुरमति दाग़, अमृत मेघ बरसाया। आप उपजाए आपणा राग, अनहद ताल वजाया। रसना ना लाए कोई स्वाद, एका हरि हरि जिह्वा गाया। मिले मेल हरि माधव माध, मेल मिलावा आप कराया। जन भगतां देवे साची दाद, धुरदरगाही लै के आया। सत्तां दीपां सुणे आप फरयाद, दिल्ली द्वारे तख्त सुहाया। शब्द जणाए बोध अगाध, नौ खण्ड पृथ्वी आप जणाया। भगत सुहेले लए लाध, आप आपणा रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हाढ़ सतारां इक्क मृदंग वजाया। इक्क मृदंग वज्जे ढोल, हरि साचे आप वजावणा। नौ खण्ड पृथ्वी दुआरा एका खोल्ह, एका राह वखावणा। सुत्ता रहे ना कोई अनभोल, हरि शब्दी आप जगावणा। सोहँ कंडा तोले पूरे तोल, ना कोई दमड़ा होर बंधावणा। एका शब्द सुणाए साचा बोल, जै जैकार आप करावणा। सृष्ट सबाई जाए मौल, आप आपणे विच समावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हाढ़ सतारां सम्मत इक्की नौ खण्ड पृथ्वी तेरी सिक्खी साची सिख्या इक्क सिखावणा। साची सिक्खी नौ खण्ड, हरि आपणी आप बणांयदा। आपे वंडणहारा वंड, ना कोई दूसर संग रखांयदा। लेखा जाणे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज आप जणांयदा। लक्ख ग्यारां विच ब्रह्मण्ड, हरि जोती नूर जगांयदा। पाप पुन्न ना कोई चुक्के सीस पंड, ना कोई अहिसान यतलांयदा। ना कोई सुहागण ना कोई दिसे रंड, नेत्र नीर ना कोई वहांयदा। ना कोई भेख ना पखण्ड, ना कोई बस्त्र तन रखांयदा। ना कोई पूजे करीर जंड, देवी इष्ट ना कोई रखांयदा। नानक गोबिन्द ना कोई संग, ना कोई सीस झुकांयदा। गुर अंगद ना लाए अंग, अमरदास रामदास ना मेल मिलांयदा। गुर अर्जन ना गाए कोई छन्द, हरि गोबिन्द ना चरन रकाब कोई टिकांयदा।

हरिराए ना बणे बख्शंद, हरिकृष्न ना कोई मनांयदा। तेग बहादर ना वारे कोई जिंद, ना कोई सीस भेंट चढ़ांयदा। गुर गोबिन्द ना कोई मृगिन्द, ना नीला नाल रलांयदा। सभ दी मेटे आपे चिन्द, आप आपणा रूप वटांयदा। गुरुआं पीरां साधां सन्तां हरि बख्शिंद, जुग जुग दया कमांयदा। आपे होए गुणी गहिंद, गुणवन्ता आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हाढ़ सतारां सम्मत इक्की तेरा राह तकांयदा। सम्मत इक्की राह तक्क, एका ओट रखाईआ। उम्मत उम्मती फल गया पक्क, वेला अन्तिम आईआ। दर पुकार सुणाए अहनल हक्क, एका नाअरा लाईआ। पीर पैगम्बर औलीए शेख़ मुसायक ना कोई सके रक्ख, ना कोई होए सहाईआ। इक्क दूजे नालों होए वक्ख, प्रभ साचा रिहा कराईआ। उन्नी उनीसा उडणे कक्ख, मक्का मदीना रहिण ना पाईआ। अरब अरबानीआं दिसे भक्ख, शाह सुल्तानीआं ना कोई जणाईआ। दन्द बतीसा मारे झक्ख, सच वस्त हथ्थ ना आईआ। प्रगट होए हरि प्रतक्ख, आप आपणी कल वरताईआ। सभ दे भाण्डे कीते सक्ख, होए विछोड़ा नूर अलाहीआ। धुरदरगाहों देवे धक्क, ना मिले सच मलाहीआ। सखी सरवर दर राह रहे तक्क, नेत्र नैण उठाईआ। पुरख अबिनाशी एका नकेल पाए नक्क, डोर आपणे हथ्थ रखाईआ। संग मुहम्मद चार यार गए थक्क, उच्ची घाटी ना कोई चढ़ाईआ। लोकमात वेखी झूठी ढक्क, सिँघ शेर शेर दलेर अग्गे बैठा आसण लाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक दित्ता सच्चा वर, हाढ़ सतारां इक्क सिँघासण लोकमात रिहा वछाईआ। इक्क सिँघासण शब्द अडोल, हरि आपणा इक्क रखाया। नौ द्वारे जगत खोल्ह, दूई द्वैती पड़दा लाहया। प्रगट होए कला सोल, द्वापर पार कराया। कलिजुग जीव सुत्ते अनभोल, भेव किसे ना पाया। अकल कला हरि रिहा मौल, जोत सरूपी जामा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत इक्की एका घर इक्क इकल्ला रिहा वसाया। इक्क इकल्ला इक्क घर, एका दर सुहांयदा। इक्क वखाए साचा सर, लक्ख चुरासी आप नुहांयदा। आपणी करनी आपे कर, सतिजुग साची किरत कमांयदा। धरनी धरत धवल धर, साचा धर्म धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत इक्की वेखे सिक्खी, साची सिख्या इक्क सिखांयदा। भगत जनां हर हिरदे वस, आपणी बूझ बुझाईआ। जगत निराला राह दस्स, हरि हिरदे विच समाईआ। तीर निराला मारे कस, तिक्खी धार रखाईआ। मिटे रैण अन्धेरी मस्स, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। प्रकाश प्रकाश कोटन रवि ससि, आप आपणा रिहा वखाईआ। दर दुआरा वेखे नस्स नस्स, नर नरायण सेव कमाईआ। सिँघ किशन मेला हस्स हस्स, दस दस कत्तक घर वधाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि शब्द करे कुड़माईआ। दस दस दस गुरदेव, कीमत कही ना जाईआ। हरिजन हरि हरि साची सेव, आपणी आप कमाईआ। भेव

अभेदा अलख अभेव, लक्ख ना लखिआ जाईआ। वड वड वड देवी देव, देवी देवा आप अख्वाईआ। अमृत आत्म फल खवाए साचा मेव, रुत्त बसन्ती इक्क सुहाईआ। हरिजन गाया रसना जिह्व, नारी कन्ता मेल मलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करन करावणहार हर घट थाँईंआ। कत्तक ग्यारां जाए उठ, उठे उठ बल धार। पुरख अबिनाशी आपे तुट्ठ, बख्शे नाम अधार। भाण्डे भन्ने जूठे झूठ, हउमे रोग निवार। साचा लाहा गुरसिख साचे लैण लुट्ट, पंचम मेला मीत मुरार। तीर निराला रिहा छुट्ट, दो जहानी पावे सार। ठग्ग चोर यार पंचम कढ्ढे कुट्ट, बख्शे चरन प्यार। अमृत आत्म पीणा घुट्ट, लेखा छुट्टे नौ द्वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रिहा तार। हरिजन साचे सच सलाह, एका एक जणाईआ। चरन चरनोदक दए पया, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। एका शब्द सलोक दए सुणा, साजण साचा राग अलाईआ। नाम वस्त हरि झोली पा, लहिणा मूल चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोया सुत आप जगाईआ। तेज भान कर ध्यान, नेत्र नैण उग्घाड़। पुरख अबिनाशी गुण निधान, दर द्वारे करे परवान। वेख वखाए सच अखाड़, मिले मेल गोपी काहन। आप वखाए सच निशान नेड़ ना आए पंचम धाड़। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखण आए जगत मैदान। साचा घर साचा धाम, हरि साची जोत जगाईआ। भरम भूमिका इक्क अस्थान, एका रंग रंगाईआ। जोती नूर कोटन भान, आकाश प्रकाश समाईआ। मिले मेल श्री भगवान, स्वास ग्रास लेखे लाईआ। करे कराए आप पछान, मण्डल मण्डप रास इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सञ्झ सवेर सवेर सञ्झ एका गुण गाईआ। कलिजुग गढ़ हँकार, वरभण्ड समाया। जूठा झूठा मीत मुरार, सगला संग रखाया। काम क्रोध लोभ मोह हँकार, एका रंगण रिहा रंगाया। माया ममता कर पसार, राज राजान शाह सुल्तान करे हलकाया। हउमे हँगता रोग निवार, मनमुख जीवां आप कराया। भुक्खा नंगता दुष्ट दुराचार, चारों कुन्ट फिरे हलकाया। वेख वखाणे मुहम्मदी यार, अन्दर मन्दिर डेरा लाया। करे कराए ख़बरदार, सोया सुत रिहा जगाया। एका एक मात द्वार, हरि शब्दी शब्द जणाया। गुर गोबिन्दा कर त्यार, नाम खण्डा हथ्थ फड़ाया। जोद्धा सूरा वड बलकार, ब्रह्मण्डां वेख वखाया। कलिजुग मिटे रैण अन्धेरी अन्ध अंध्यार, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाया। मनमुख डोबे विच मँझधार, जूठा झूठा वहिण वहाया। सन्त सुहेले लाए पार, बेड़ा बन्नणहार आप अख्वाया। गुरमुख साचे लए उभार, आप आपणा नाम जपाया। एका बस्त्र नाम तन श्रृंगार, सतिजुग साचा रिहा कराया। कल्गी तोड़ा सीस दस्तार, जोती जोड़ा जोड़ जुड़ाया। नीला घोड़ा हो अस्वार, नीली छत्तों बाहर कराया। मारे पौड़ा अद्ध विचकार, दो धड़ सृष्ट सबाया। बीस बीसा रिहा ललकार, जगत जगदीसा

८५८ ०६

आप अख्वाया। इक्क इकीसा एकँकार, इक्क इकल्ला होए सहाया। लोआं पुरीआं बन्ने धार, लोकमात राह चलाया। गुर संगत तेरा हरि प्यार, हरि मन्दिर मेल मिलाया। अट्ठ सट्ठ तीर्थ होए शार, नीर सीर ना कोई मुख चुआया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका दर खुल्हाया। एका दर हरि निरँकार, चार वरन जणाईआ। ऊँचां नीचां कर प्यार, एका दूजा भउ चुकाईआ। तीजे मेला सांझे यार, चौथे दर वज्जी वधाईआ। पंचम गायण वारो वार, छेवें छप्पर छन्न छुहाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण इक्क आकार, आप आपणा रिहा कराईआ। सत्तां दीपां जै जैकार, लक्खण लेखा रिहा लिखाईआ। करौच पुष्कर इक्क पसार, एका जोत जगाईआ। जम्बु दीप जगत विहार, प्रभ आपणा आप रखाईआ। सलमल तेरी सुण पुकार, सति सन्तोख झोली पाईआ। सान सुहेला मीत मुरार, जगत विछोड़ा फंद कटाईआ। कुशा कर्म किरत विचार, लिख्या लेखा दए मिटाईआ। सति पुरख निरँजण किरपा धार, सति सतिवादी बणत बणाईआ। कुलाखण्ड हरि वेख पसार, गोबिन्द गीत सुणाईआ। इलाबुत तेरी हाहाकार, अन्तिम मेट मिटाईआ। केतमाल रोवे ज़ारो ज़ार, भदर देवे दुहाईआ। किंपुरख आई हार, हरवरख शब्द कुड़माईआ। हरणयमह होया शरमसार, दर बैठा सीस झुकाईआ। भारत खण्ड तेरी जै जै कार, नौ खण्ड पृथ्वी आप कराईआ। ब्रह्मा शिव देवत सुर बण भिखार, लोकमात अग्गे झोली डाहीआ। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, हौली हौली रहे सुणाईआ। वेख विखाणे नर निरँकार, काया चोली पड़दा लाहीआ। लहिणा देणा चुक्कणा विच संसार, कलिजुग बोली अन्त व्याहीआ। सतिजुग साचा होए ख़बरदार, सन्त सुहेले रिहा जगाईआ। गुरमुख साचे कर त्यार, पुरीआं लोआं रिहा बहाईआ। ध्रू प्रहलाद रोवे ज़ारो ज़ार, अन्त विछोड़ा आईआ। मुक्कया पन्ध दर द्वार, दर दरवाजा दिस ना आईआ। नानक मंग्गया बण भिखार, अग्गे झोली डाहीआ। गोबिन्द भेखा विच संसार, सम्बल नगरी ओट रखाईआ। गुर चेला करे इक्क प्यार, साचा मेला मेल मिलाईआ। सज्जण सुहेला हरि निरँकार, इक्क इकेला जोत जगाईआ। जोत निरँजण चाढ़े तेला, लोकमात सगन मनाईआ। पंचम शब्द पंचम सखीआं मिल मिल पायण वेला, वारी आपणी आपणी आईआ। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला, लोआं पुरीआं वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी रुत्त सुहाईआ। कलिजुग वेखे अन्त टिकाना, चारों कुन्ट लए अंगड़ाईआ। ना कोई सहाई राजा राणा, सगला संग ना कोई निभाईआ। जूठ झूठ ना दर परवाना, पंच विकार ना वेख वखाईआ। साध सन्त ना सुणाए कोई सच्चा गाणा, ना कोई पार लँघाईआ। पुरख अबिनाशी जुग जुग जणाए दो जहानां, धुर फ़रमाना आप आपणा शब्द अल्हाईआ। कलिजुग तेरा अन्तिम वेख वखाना, सोहँ शब्द वज्जे वधाईआ। सतिजुग मंगे दर दरबाना,

प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। प्रभ अबिनाशी चतुर सुजाना, दोहां वेखे थाउँ थाँईंआ। जन भगतां बन्ने हथ्थीं गाना, तन्दन तन्द बंधाईआ। राग सुणाए एका गाणा, एका ताल वजाईआ। पतिपरमेश्वर एका पाणा, ना कोई दूसर कन्त हंढाईआ। धुरदरगाही देवे शब्द बिबाना, लोआं पुरीआं पार विखाईआ। गुर गोबिन्द रखाए आपणा भाणा, सगली चिन्द मिटाईआ। रसना चिल्ला तीर कमाना, प्रभ साचा रिहा उठाईआ। जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, निहकलंका नाउँ रखाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क निशाना, एका धार चलाईआ। जन भगतां देवे सच्चा दाना, नाम दान हरि झोली पाईआ। चरन धूढ़ बख्शे इशनाना, दुरमति मैल आप धवाईआ। मिल्या मेल गोपी काहना, एका बंसरी नाम वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम फेरा पाईआ। कलिजुग अन्तिम फेरा पा, हरिजन साचे आप जगांयदा। एका शब्द दए जणा, एका दूजा भउ चुकांयदा। तीजा नैण आप खुल्ला, आत्म दरसी दरस करांयदा। चौथे दर दए बहा, घर साचा इक्क सुहांयदा। अन्तिम मेला सहिज सुभा, हरि गोबिन्द मेल मिलांयदा। पंचम मीता चढ़या चाअ, चात्रिक अमृत मेघ बरसांयदा। नाद धुन इक्क वजा, ढोल मृदंग संग तजांयदा। हरिजन साचे लए उठा, एका मार्ग लांयदा। सति पुरख निरँजण सति सतिवादी आप अख्वा, सतिजुग साचा राह चलांयदा। मदिरा मास रसन तजा, अमृत आत्म फल खवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत नाम रंगत काया चोली आप चढ़ांयदा।

८६० ०६

✻ १६ भाद्रों २०१४ बिक्रमी लछमण सिँघ दर्शन सिँघ दे गृह मकान नं० ८६६७ पहाड़ गंज दिल्ली ✻

निरगुण शब्द बिबाण इक्क रखाया। आपे वेखे मार ध्यान, वेखणहार आप अख्वाया। दो जहानी इक्क उडान, आदि जुगादि रिहा लगाया। नेत्र लोचन नैण ना वेख वखान, रसना जिह्वा भेव ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल खिलाया। निरगुण खेल हरि गोबिन्द, आपणी रचन रचाईआ। मेट मिटाए सगली चिन्द, भगतन दया कमाईआ। नाम उपजाए साची बिन्द, उत्पत सृष्ट सबाईआ। दाता दानी वड मृगिन्द, एका एक अख्वाईआ। अमृत धार वहाए सागर सिन्ध, सति सन्तोख समाईआ। जन भगतां मेटे सगली चिन्द, जग अन्दर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप भूप अख्वाईआ। निरगुण भूप सच सुल्तान, साचे तख्त बिराज्जया। सति सरूपी इक्क निशान, शब्द शब्दी मारे अवाज़या। ना कोई देवे दाता दानी दान, ना कोई रचन रचाए स्वम्बर काज्जया। ना कोई खेले बाल नादाना, ना कोई ग़रीब ना कोई राजन राज्जया। एके एक श्री भगवान, आपणा साजन साज्जया।

आपे वेखे मार ध्यान, लोआं पुरीआं फिरे भाज्जया। भगतन करे आप पछाण, अस्व चिट्टे चढ़े ताज्जया। कलिजुग तेरी वेख दुकान, जूठा झूठा साजन साज्जया। नानक गोबिन्द रसना गाण, दिवस रैण मारन आवाज़या। मुल्ला शेख मुसायक पीर दस्तगीर सर्ब कुरलान, वेख वखानण पाकी पाक हाजन हाज्जया। पंडत पांधे रहे वखान, गीता ज्ञान जगत जहाज़या। किसे हथ्थ ना आए गुण निधान, अन्तिम हारी बाजिया। हरि प्रगट होए वाली दो जहान, भाग लगाए देस माज्झया। धर्म झुलाए इक्क निशान, नौ खण्ड पृथ्वी रच्चया तेरा काज्जया। सत्तां दीपां पाए एका आन, जन भगतां रक्खे लाज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग तेरा सति सन्तोख एका नाम चलाए लोकमात जहाज़ना। सतिजुग बेड़ा बेपरवाह, तेरा इक्क बंधांयदा। पुरख अबिनाशी बण मलाह, सोहँ चप्पू लांयदा। गुरमुख साचे लए चढ़ा, साचे राह चलांयदा। एका अक्खर नाम पढ़ा, दोअँ दो मिटांयदा। सोहँ जाप अजपा आप करा, सति पुरख विच समांयदा। आदि पुरख निरँजण आप अख्वा, जोत निरँजण मात जगांयदा। शब्द सपूता आप उपा, गोबिन्द विच समांयदा। गोबिन्द साची सेवा ला, सेवादार आप हो जांयदा। भगत सुहेले लए उठा, आप आपणी दया कमांयदा। एका मुद्दा दए बंधा, वेला अन्त कन्त सन्त सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप निराधार, निरवैर आप हो आंयदा। नर नरायण आदि पुरख अख्वाईआ। जन भगतां नेत्र पाए अंजण, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। ना कोई साक सैण सज्जण, ना कोई दासी दासा ना कोई मात रक्खे लाज ना कोई होए सहाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ विच प्रभासा। गुर चरन धूढ़ साचा मजन, मानस जन्म करे रहिरासा। हरिजन हरि शब्द अमृत आत्म पी पी रज्जण, अन्तिम होए बन्द खुलासा। पारब्रह्म प्रभ आया पड़दे कज्जण, खेले खेल पृथ्वी आकासा। काल नगारे सिर ते वज्जण, लक्ख चुरासी होए नासा। माटी भाण्डे अन्तिम भज्जण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेले खेल तमासा। निरगुण खेले खेल खिलारी, कलिजुग अन्तिम वारया। ब्रह्मा शिव खड़े दर दरबारी, रोवण ज़ारो ज़ारया। करोड़ तेतीसा हाहाकारी, ना सुणे कोई पुकारया। गोबिन्द खण्डा तेज कटारी, आप आपणी करे शृंगारया। शस्त्र बस्त्र अपर अपारी, चिट्टे अस्व तंग कसा रिहा। नीली छत्तों आए बाहरी, खेले खेल नर निरंकारया। भगत जनां हरि दर भिखारी, मंगे मंग अपर अपारया। उठ उठ वेखे वारो वारी, नौ खण्ड पृथ्वी दहि दिशा आप विचारया। इक्क सुहाए बंक द्वारी, दर दिल्ली फेरा पावे आवे जावे वारो वारया। साधां सन्तां करे ख़बरदारी, राज राजानां हाहाकारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लिख्या लेख शब्द लिखारी, बीस बीसा दया कमाए निरगुण अपर अपारया। निरगुण

रूप हरि निरँकार, एका एक अकालया। गुरमुख साचे लए उभार, खेले खेल निरालया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, मेटे घटा कालया। सोहँ शब्द जै जै कार, दीपक जोती जगे दिवालया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग चले अवल्लड़ी चालया।

कोट गढ़ अपार, हरि उपाया। उप्पर चढ़ नर निरँकार, डेरा लाया। निरगुण रूप आप सरकार, सति पुरख निरँजण नाम रखाया। जोती नूर कर उज्यार, जोती जोत समाया। सच सिँघासण अपर अपार, धुरदरगाही आप सुहाया। खेले खेल खेलणहार, आप आपणी खेल खिलाया। हरिजन मेले मेलणहार, जुग जुग मेल मिलाया। पारब्रह्म ब्रह्म भेव निवार, एका दूजा भउ चुकाया। तीजे चौथे कन्त भतार, पंचम होए सहाया पंचम मेला मीत मुरार, दर घर बंक सुहाया। बंक दुआरा अपर अपार, सतिगुर आप बणाया। सतिगुर पूरा सांझा यार, वरन गोत ना कोए रखाया। ऊँचां नीचां कर प्यार, राज राजानां माण गंवाया। तिन्नां लोकां पावे सार, पुरीआं लोआं वेख वखाया। ब्रह्मा शिव दर भिखार, विष्नूं झोली अग्गे डाहया। देवत सुर करे पुकार, करोड़ तेतीसा मंगण लाया। त्रैगुण माया तत्त अपार, हरि आपणी रचन रचाया। ब्रह्मा मीत नाम अधार, एका शब्द जणाया। सृष्ट सबाई करे अतीत, आप आपणी सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाया। आप आपणा वेखणहारा, आदि निरँजण ब्रहमादया। लेखा लेख लिखणहारा, जगत जणाए बोध अघाध्या। लक्ख चुरासी परखणहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका वस्त नाम अनमोल, शब्द सिँघासण रिहा तोल, हरि मोहण माधव माध्या। निरगुण रूप शब्द प्यार, डोरी नाम रखाईआ। जुग जुग लए मात अवतार, भेखाधारी भेख वटाईआ। राम रामा रूप अपार, लंका गढ़ तुड़ाईआ। रावण रामा इक्क अधार, चोटी जड़् रहिण ना पाईआ। कृष्ना मिटाए अन्ध अंध्यार, रैण अन्धेरी रहिण ना पाईआ। बिदर सुदामा जाए तार, लज द्रोपत आप रखाईआ। अर्जन अर्जन इक्क प्यार, नेत्र तीजा वेख वखाईआ। ज्ञान गीता रसन उचार, अट्ठ दस वेख वखाईआ। अट्ठ दस एका धार, द्वापर दए दुहाईआ। नौ द्वारे पार किनार, कलिजुग खेल खिलाईआ। कलिजुग मेला अन्तिम वार, हरि साचा रिहा मिलाईआ। नाम मुहम्मद मीत मुरार, गोबिन्द बणत बणाईआ। नानक लेखा अपर अपार, अर्जन सेव कमाईआ। लहिणा देणा विच संसार, हरि गोबिन्द रिहा चुकाया। गोबिन्द हरि हरि गोबिन्द, हरि गोबिन्द विच समाईआ। नेत्र नैण वेख उग्घाड़, लोचन खोल्ह् खुल्ह्ाईआ। काया कन्दर डूँघी गार, बैठा जिंदा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत सम्मती वेख दर, निरगुण आपणी खेल खिलाईआ। निरगुण रूप हरि समरथ, एका एक अखवांयदा। जुग

जुग कथा चलाए अकथ, कथनी कथ ना कोई वखांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर चलाए रथ, रथ रथवाही आप हो जांयदा। कलिजुग काया रिहा मथ, चारों कुन्ट फिरांयदा। लक्ख चुरासी वेखे सत्थ, एका सथ्थर ख़ाक विछांयदा। लेखा चुक्के साढे तिन्न हथ्थ, जुग जुग मूल चुकांयदा। भगत सुहेला देवे साची वत्थ, सो पुरख निरँजण नाउँ धरांयदा। हँ हँगता करे कक्ख, तन माया अग्नी लांयदा। जूठा झूठा बुरज जाणा ढठ्ठ, जूठ झूठ नेड़ ना आंयदा। गुर दर मन्दिर होए भठ्ठ, हरिजन वेख वखांयदा। भेव खुल्हाए शिवदवाला मठ्ठ, आप आपणा वेख वखांयदा। आपे गेड़नहारा उलटी लठ्ठ, राम रामा आपणे विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस अनेक कर, अनक कला वरतांयदा। अकल कला हरि भरपूरया, आपणी कल आप वरताईआ। एका शब्द एका तूरया, एका नाद वजाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूड़्हया, ज्ञान ध्यान इक्क जणाईआ। हरिजन बख्शे चरन धूढ़या, दुरमति गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल खेल कर, घर साचा इक्क सुहाईआ। साचा घर हरि जगदीस, एका एक अख्वाया। ना कोई पढ़े गाए राग छतीस, राग रागणी ना कोए अल्हाया। ना कोई कुरान अञ्जील हदीस, वेद पुराण ना कोई बणाया। ना कोई ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, ना कोई अल्ला नाअरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला निरगुण रंग समाया। निरगुण रंग हरि करतार, एका एक रखांयदा। जोती नूर अपर अपार, आपणी जोत जगांयदा। शब्द सुत कर त्यार, सूत्र धार आप अख्वांयदा। लोआं पुरीआं कर पसार, ब्रह्मण्डां विच समांयदा। जेरज अंडां दए अधार, उत्भुज सेत्ज वेख वखांयदा। एका खोजे खोजणहार, लक्ख चुरासी डेरा लांयदा। आपे वसया सभ तों बाहर, आसण सिँघासण इक्क विछांयदा। पुरख अबिनाशण खेल अपार, दरसी दरस आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल इक्क कर, सरगुण धीर धरांयदा। सरगुण धर धरवास, गोबिन्द जोत जगाईआ। पारब्रह्म पुरख अबिनाश, शब्दी बणत बणाईआ। साचे मण्डल साची रास, एका रिहा वखाईआ। आवे जावे पृथ्वी आकाश, दो जहानां चलत चलाईआ। सम्मत चौदां वेख तमाश, त्रैगुण वेख वखाईआ। मन मति बुद्धि रक्खी आस, बैठे राह तकाईआ। हरिजन जोती कर प्रकाश, जोत निरँजण राह वखाईआ। भगत सुहेला सद वसया पास, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रंग इक्क रघुराईआ। निरगुण रंग हरि रंग राता, एका कल वरतांयदा। दीना बंधप पुरख बिधाता, अछल छल करांयदा। प्रगट होए त्रैलोकी नाथा, नाथ त्रैलोकी आप अख्वांयदा। जुग जुग चलाए आपणा राथा, एका रथ वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस मात कर, आप आपणा भेख वटांयदा। भेखाधारी भेख वटाया,

भेव कोई ना पांयदा। लक्ख चुरासी खेल आपणे हथ्थ रखाया, आप उपाए आप बणांयदा। धारी केसा रिहा भुलाया, मूंड मुंडाया दिस ना आंयदा। जगत जगदीसा लिखणहारा लेख लिखाया, लिखणहार आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण वेस मात कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, एका नाउँ रखांयदा। एका नाउँ हरि निरँकार, जुग जुग वेस वटाया। राम कृष्न पाए सार, बिधर सुदामा गोद उठाया। नानक गोबिन्द बण भिखार, दिवस रैण मंग मंगाया। संग मुहम्मद चार यार, बैठे राह तकाया। अल्ला राणी रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नीर वहाया। वेद व्यासा करे पुकार, आप आपणे लेख लिखाया। पुराण अठारां एका धार, एका रंग रंगाया। ब्रह्मा वेता रिहा विचार, चारे वेद आप लिखाया। वेद विदांता आप निरँकार, जुग जुग बणदा आया। आप चलाए आपणी गाथा विच संसार, सर्बकला समरथ आप अख्वाया। प्रगट हो त्रैलोकी नाथ, कलिजुग तेरा अन्तिम वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण रूप समाया। हरि का रूप अपार, एका जोत जगाईआ। एका शब्द अपर अपार, एका धार वहाईआ। चार वरनां इक्क प्यार, एका नाम जपाईआ। एका खण्डा एका कटार, एका बस्त्र तन पहनाईआ। एका दूजा अक्खर दर विचार, एका बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दूजा भेव चुकाईआ। एका अक्खर इक्क सलाह, एका राह चलांयदा। शब्द सरूपी बण मलाह, चार वरनां वेख वखांयदा। गऊ ग़रीबां पकड़े बांह, राज राजानां आप उठांयदा। वेख वखाए थाउँ थाँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आप आपणा नाउँ धरांयदा। आप आपणा नाउँ धरा, चारों कुन्ट करे वधाईआ। चार वरनां इक्क सरना, साचा घर रिहा वखाईआ। मुल्ला शेख़ कोई रहिण ना पा, कलिजुग कल वरताईआ। हरिजन वेखे साचे नैण मिला, माया ममता बैठे मुख छुपाईआ। पुरख अबिनाशी जामा पा, हरि शब्द करे कुड़माईआ। साचा सुत इक्क उपा, हरि शब्दी नाउँ रखाईआ। अबिनाशी अचुत्त आप अख्वा, मन मति बुध ना कोई रखाईआ। राष्ट्रपति दे मति समझा, त्रै देशां पए लड़ाईआ। दस दस्मेसा फेरा पा, शब्द खण्डा रिहा उठाईआ। नर नरेशा वेख वखा, सम्मत पन्दरां नेड़े आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप अख्वाईआ।

सम्मत चौदां चढ़या चन्द, हरि साचे जोत जगाईआ। दो जहानी आप बख्शिंद, बख्शणहार आप अख्वाईआ। मन मति बुध होई अन्ध, पंज तत्त करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत चौदां दित्ता वर, राष्ट्रपति

मति ना आईआ। लिख्या लेख पढ़ विचार, नेत्र खोल्ह अञ्जाण। पुरख अबिनाशी बन्ने धार, सृष्ट सबाई पुण छाण। सम्मत पन्दरां पैणी मार, गुण अवगुण ना कोई सुणे पुकार। राज मन्त्री मन्त्र प्रधान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर द्वार दित्ता वर, रंग सत्त इक्क निशान। रंग सत्त सत्त रंग वखा, प्रभ आपणी कल वरताईआ। राष्ट्रपति प्रधान मन्त्री लए जगा, एका मति तत्त आप समझाईआ। सम्मत पन्दरां नेड़े रिहा आ, सुरती सुरत दए भवाईआ। डूँघी कन्दर ना मिले कोई थाँ, ना दिसे मात सहाईआ। बिन हरि कोई ना पकड़े तेरी बांह, सिर छत्र ना कोई झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द संदेस रिहा घलाईआ।

✻ २० भाद्रों २०१४ बिक्रमी दिल्ली तों डिफैंन्स मनिस्टर कृष्णा मैनन नूं शब्द भेज्जया ✻

कृष्णा मैनन मैं गंवा, प्रभ हथ्थ वड्याईआ। पुरख अबिनाशी जोत जगा, लोकमात करे रुशनाईआ। निहकलंका नाउँ रखा, कलिजुग मिटे काली शाहीआ। एका डंका शब्द वजा, राज राजान शाह सुल्तान रिहा जगाईआ। वासी पुरी घनका आप अख्वा, दे मति रिहा समझाईआ। देश परदेसां दए सुणा, शब्द संदेश इक्क रघुराईआ। आप आपणा वेस वटा, पुरख पुरखोतम खेल खिलाईआ। नर नरेश इक्क जणा, नौ खण्ड पृथ्वी रक्खे इक्क सरनाईआ। सोहँ खण्डा रिहा वखा, चण्ड प्रचण्ड नाउँ धराईआ। सत्तां दीपां वंडां रिहा वंडा, दहि दिशा चारे कूंटां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप अख्वाईआ। उठ जाग जगत स्यास, हरि साचा आप जगांयदा। कवण नाम वस्त तेरे पास, कवण राग रसना गांयदा। कवण तन शब्द स्वास, कवण दास रखांयदा। कम्म ना आए हड्ड नाड़ी मास, माण ताण जगत विद्वान रहिण ना पांयदा। आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, बोध अगाधी धुर फ़रमाण, कवण द्वारे हां जणांयदा। कवण रूप हरि भगवान, नेत्र नैण वेख विखान, कवण हवनी हवन करांयदा। चतुर्भुज कवण निशान, दुर्गा अष्टमी कवण भान, कवण तेज प्रकाश करांयदा। कवण सुरती कवण ज्ञान, कवण मूर्ति चरन ध्यान, कवण वेख वखांयदा। पुरख अबिनाशी जाणी जाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भारत माती जगत सुत्त, फड़ बाहों आप हिलांयदा। जगत सुत भगत दुलार, हरि साजन सज्जण सुहेला। आप आपणी किरपा धार, पार कराए वक्त वेला। सम्मत चौदां करे ख़बरदार, अचरज खेल आपे खेला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आपे जाणे आपणा वेला। सम्मत तेरां वीह सद, हरि साचे दया कमाईआ। इन्द्र प्रशाद राष्ट्रपति, लिख्या लेख हथ्थ फड़ाईआ। आपे

८६६ ०६

दे समझाया मति, बुध मति इक्क रखाईआ। चरन प्रीती एका नत्त, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। सृष्ट सबाई उब्बल रत्त, नौ खण्ड पृथ्वी दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आया गया फेरा पाईआ। राष्ट्रपति धुर फ़रमाण, हरि साचे आप जणाया। इक्क वखाया सत्त रंग निशान, सोहँ उप्पर लेख लिखाईआ। सत्तां दीपां इक्क ज्ञान, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जै जै जैकार कराया। प्रगट होए वाली दो जहान, लोकमाती फेरा पाया। नाम खण्डा तीर कमान, रसना चिले आप चढ़ाया। सम्मत चौदां वेखे मार ध्यान, त्रै देसां भेड़ भिड़ाया। मन मति बुध होए वैरान, साचा खेड़ा रहिण ना पाया। मन मनुआ वड्डा शाह अफगान, जगत झेड़ा रिहा चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाए साचा घर, पंचम मुख पंचम ताज धुरदरगाही साचा राज, नौ खण्ड पृथ्वी तेरा काज, लोकमात आप बणाया। लोकमात रच्चया काज, हरि साचे बणत बणाईआ। पंचम मुख बणया ताज, पुरख अबिनाशी सीस टिकाईआ। आप आपणा साजन साज, निहकलंका नाउँ रखाईआ। चिट्टा अस्व साचा ताज, धुरदरगाही आप रखाईआ। प्रगट होए देस माझ, राज राजानां शाह सुल्तानां राउ रंकां रिहा जणाईआ। भगत जनां हरि मारे आवाज़, धुन आत्मक इक्क उपजाईआ। पंच निशान कर ध्यान, पंचम जोग कमाईआ। शब्द डण्डा हरि बलवान, राष्ट्रपति हथ्थ फड़ाईआ। चरन कँवल इक्क ध्यान, हरि भगवान रिहा वखाईआ। साचा जोड़ा वेख निधान, भुल्ल रहे ना राईआ। दाता दानी वड मेहरवान, जुग जुग आप अख्वाईआ। आपे गोपी आपे काहन, आपे भेख वटाईआ। आपे सीता आपे राम, आदि शक्त आप अख्वाईआ। जोत नूरानी विच जहान, सतिजुग आप वखाईआ। शब्द निशानी धुर फ़रमान, नौ खण्ड पृथ्वी रिहा वखाईआ। सोहँ सो इक्क ज्ञान, जीवां जन्तां रिहा पढ़ाईआ। राज ताज ना कोई निशान, मन्दिर अन्दर ना फेरा पाईआ। लहिणा देणा चुक्कणा वेद पुराण, अंजील कुरान रहिण ना पाईआ। ना कोई खाणी बाणी करे ध्यान, जगत विद्या ना कोई पढ़ाईआ। राज ताज ना कोई निशान, मन्दिर अन्दर ना फेरा पाईआ। चारों कुन्ट होए हैरान, ना कोई किसे धीर धराईआ। स्यासत वैरासत होए हैरान, थिर रहिण ना पाईआ। एका शब्द हरि भगवान, अटल अटल रखाईआ। सोया उठ जीव नादान, प्रभ साचे जोत जगाईआ। प्रगट होया विच जहान, निहकलंका नाउँ रखाईआ। गुणवन्ता हरि गुण निधान, वेख वखाए थाउँ थाँईंआ। सम्मत चौदां इक्क ज्ञान, राज मन्त्रीआं रिहा दवाईआ। सम्मत पन्दरां सर्ब पछतान, सुरत सवाणी बैठी मुख भवाईआ। सम्मत सोलां ना दिसे कोई मन्त्री प्रधान, ना कोई बंधन बंध बंधाईआ। सम्मत सतारां जगत मैदान, हरि साचा वेख वखाईआ। वीह सद अठारां आए हान, जल धारा दए रुढ़ाईआ। उन्नी उनीसा मेट निशान, अल्ला राणी मुख छुपाईआ। बीस बीसे हरि

८६६ ०६

भगवान, नौ खण्ड पृथ्वी देवे जोत जगाईआ। सत्त रंग चढ़ाए इक्क निशान, दिल्ली दरबारे फेरा पाईआ। इक्की इकीसा बणाए जगत विधान, आपणी धारा आप चलाईआ। सो पुरख निरँजण सारे गाण, हउमे हँगता दए मिटाईआ। जूठ झूठ मिटे निशान, सच सुच्च दए वरताईआ। पुरख अबिनाशी आपे तुट्ठ, पुरीआं लोआं वेख वखाईआ। ब्रह्मा शिव विष्न एका मुट्ठ, एका सेवा लाईआ। करोड़ तेतीसा जाए रुट्ठ, हरि शब्द साचा छन्द रिहा सुणाईआ। मनमुख जीवां टंगे पुट्ठ, राए धर्म दर वखाईआ। तीर निराला रिहा छुट्ट, दूई द्वैती कढ्ढे फुट्ट, कृष्ना मैनन दर्शन पाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, दर द्वार तेरे मेरे शब्द घेरे रिहा नाम पुजाईआ।

❋ २० भाद्रों २०१४ बिक्रमी दिल्ली बिरला मन्दिर विच जुगल किशोर बिरला सेठ नाल बचन होए ❋

बिरला सेठ मुक्कया पन्ध, वेला अन्तिम आंयदा। काया मन्दिर अन्दर चढ़या चन्द, धूप दीप हवन ना कोए करांयदा। मानस मानस ना मिली सुगंध, आलस तृष्ना ना कोए मिटांयदा। गा गा थक्के बत्ती दन्द, हरिजन ना कोई मिलांयदा। बुरज मुनारा दूई द्वैती कंध, उच्चा मन्दिर अन्दर ना कोई ढांयदा। पुरख अबिनाशी सदा बख्शंद, दे दरस कर तरस जन्म मरन कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहिणा देणा नेत्र नैणां जुग जुग आप चुकांयदा। लहिणा देणा जाए चुक्क, जुग जुग आप चुकाया। हरि का भाणा ना जाए रुक, ना कोई मेट मिटाया। काया बूटा रिहा सुक्क, अमृत आत्म ठण्ढा जल नीर किसे ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाए तेरा घर, कवण दर डेरा लाया। कवण घर कवण द्वार, कवण सेज विछाईआ। कवण नाम कवण अधार, कवण मूर्त ध्यान लगाईआ। कवण राम कवण शाम, कवण गणेश मनाईआ। कवण काया कवण चाम, कवण पतिपरमेश्वर पाईआ। कवण माया कवण साया पल्ले बद्धा धन दाम, कवण संग निभाईआ। मन्दिर अन्दर काया अन्धेरी शाम, दीवा बत्ती ना कोई जगाईआ। बिन हरि नामे झूठा ताम, भुक्खयां भुक्ख ना कोई गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाणे आत्म घर, कवण दुआरा रिहा सुहाईआ। कवण मन्दिर हरि अटल, कवण चार दिवारया। कवण जोती रही बल, दिवस रैण करे उज्यारया। कवण वहे धारा जल, अट्ठे पहर ठण्ढी ठारया। कवण दरवाज़ा ल्या मल्ल, मिल्या मेल राम कृष्न अवतारया। कवण मेटे दूई द्वैती सल, शिव शम्भू पाए सारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेस कर, दर दरवेश आप अख्वा रिहा।

सर्ब ज्ञान सर्बत पूरना परम पुरख दयाल। सद वसे नेड़े दूर दूरना, दीनां बंधप दीन दयाल। आसा मनसा जन भगतां जुग जुग पूरना, सदा सहाई अकल अकाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग मेला मेल कर, नाम भगती जगत भर, देवे जिया दान। जिया दान जगत जोग, एका नाम रखाया। आत्म रस साचा भोग, मन्दिर अन्दर रिहा कराया। मिले मेल धुर संजोग, हरि संजोगी मेल मिलाया। आत्म दरसी दरस अमोघ, दर द्वारका रूप वखाया। दूई द्वैती हउमे कटे रोग, एका रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूर्ब लहिणा शब्द गहणा तन बस्त्र इक्क पहनाया। जुग जुग मेल मिलाए, भगत भगवन्तया। जोत निरँजण वेख वखाए, आदि शक्त आदिन अन्तया। एका बंक दर द्वार सुहाए, पारब्रह्म पति पतिवन्तया। अमृत आत्म धारा गंग वहाए, सुरसती साची सेव कमाए, अंगन आपणे आप रखन्तया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा वेख घर, वेखे खेल जीव जन्तया। जीव जन्त जगत नादान, रैण अन्धेरी छाईआ। हरिजन मेला मेल मिला श्री भगवान, भगत भगवान रूप समाईआ। एका रूप गोपी काहन, काहना कृष्ना आप अख्वाईआ। सीता सुरती शब्दी राम, राम रामा आप हो जाईआ। जन भगतां देवे नाम काम, आत्म तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। पल्ले बन्ने साचा दाम, इक्क ख़ज़ीना हथ्थ रघुराईआ। लेखे लाए काया चाम, जो जन रसना रहे ध्याईआ। भाग लगाए काया खेड़ा साचा नगर ग्राम, मण्डल मण्डप दए वसाईआ। उच्च अटला अगम्मा धाम, हरि साचा इक्क विखाईआ। अछल अछल्ला करे काम, भेखाधारी भेख वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि घर वेखे एका घर, जग मन्दिर वेख वखाईआ। काया मन्दिर सच दुआरा, हरि साचा आप सुहांयदा। दीपक जोती कर उज्यारा, नूरो नूर वखांयदा। अमृत आत्म ठण्ढी धारा, चारों कुन्ट वहांयदा। हरिजन साचे कर प्यारा, आप आपणी हथ्थीं मुख चुआंयदा। एका दूजा भउ निवारा, तीजे नेत्र वखांयदा। तुलसी बणया लेख लिखारा, धुर फ़रमाण जणांयदा। वेद व्यासा करे पुकारा, पुराण अठारां ज्ञान गोझ जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, दर दुआरा इक्क सुहांयदा। साचा शब्द सज्जण शाह, एका एक अख्वांयदा। हरि नाम बणाए जगत मलाह, अन्तिम बेड़ा बन्ने लांयदा। आवण जावण लक्ख चुरासी कटे फाह, राए धर्म नेड़ ना आंयदा। एका वक्खर नाम रखाए साचा नाँ, किसे हट्ट ना मात वकांयदा। बजर कपाटी पाड़े पत्थर, माया पड़दा परे हटांयदा। नेत्र नीर वरोले अत्थर, निझर धार वहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। भेखाधारी जोत अकार, एका एक अख्वाईआ। शब्द सरूपी जै जैकार, जन भगतां मन्दिर अन्दर आप कराईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां पावे

सार, जेरज अंडां आप समाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी बन्ने धार, सत्तां दीपां इक्क जणाईआ। लोआं पुरीआं ख़बरदार, ब्रह्मा विष्न शिव सोया रिहा जगाईआ। शिव शंकर होया पहरेदार, नाम त्रिशूल हथ्थ उठाईआ। पुरख अबिनाशी भेख अपार, इक्क इकल्ला रिहा वखाईआ। कलिजुग तेरी काली धार, जूठ झूठ करी कुड़माईआ। राज राजान शाह सुल्तान सुत्ते पैर पसार, चारों कुन्ट त्रैगुण माया तेरी पई लड़ाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, साध सन्त लए उभार, जमन किनारा वेख वखाईआ। सम्मत चौदां सद बीस बिक्रमी तेरी धार, लोकमात हरि कर विचार, आए वेख दर दरबार, साजण साचे मेल मिलाईआ। राजन राज इक्क सिक्दार, शाहो भूप सच्ची सरकार, नर निरँकारा आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाए साचा दर, दर दुआरा वेख वखाईआ। जगत सेठ शब्द लेख, प्रभ आपणे हथ्थ रखाया। कवण रक्खे साया हेठ, कवण पार कराया। कवण देवे नाम अनडीठ, कवण तृष्न बुझाया। कवण सुत्ता दे कर पीठ, कवण मुखड़ा रिहा वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाए साचा घर, लिख्या लेख रिहा जणाया। तेरां अरबां तेरी धार, तेरां करोड़ चलाईआ। तेरां लक्ख कर अधार, तेरां विच समाईआ। तेरां रूप आप करतार, तेरां बणत बणाईआ। लिख्या लेख नानक अपर अपार, प्रभ पूरा पूर कराईआ। मिल्या मेल पुरख अबिनाशी साचे यार, कलिजुग विछोड़ा रिहा कटाईआ। देवे दरस अगम्म अपार, अन्दर मन्दिर सेज विछाईआ। जोत सरूपी सुत्ता पैर पसार, अट्ठे पहर रंग रंगाईआ। धुन आत्मक नाद अनाहद वजाए इक्क सितार, पंचम राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवी देवा अलख अभेवा एका एक अख्वाईआ।

❋ २० भाद्रों २०१४ बिक्रमी मकान नं ६७८६ गली नं ७ पहाड़गंज दिल्ली लछमण सिँघ दर्शन सिँघ दे गृह सिँघासण उत्ते ❋

अबिनाशी करता आप प्रभ, जुग जुग जोत जगांयदा। वेख वखाणे सृष्ट सभ, भेव अभेद खुल्हांयदा। हरिभगतां उलटी कँवल नभ, आपणी आप करांयदा। पंच विकारा देवे दब्ब, एका धार वहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, भगत द्वारे भेख वटांयदा। जुग जुग भेख अवल्ला, हरि निरंकारया। शब्द वसाए इक्क महल्ला, शब्द अटारया। पार किनारा जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ ना पायण सारया। ज्ञान ध्यान विद्वान दूई द्वैती लग्गा सल्ला, एका दूजा भउ निवारया। पुरख अबिनाशी शब्द उठाए साचा भल्ला, नाम खण्डा तेज कटारया। भारत

खण्डी दर दुआरा मल्ला, नौ खण्ड पृथ्वी वेखे करे विचारया। सत्तां दीपां पए तरथल्ला, लोआं पुरीआं हाहाकारया। एका एक धाम सुहाए निहचल धाम अटला, थिर घर नाम रखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, राम रामा रूप समा रिहा। राम रामा हरि निरंकारया, निरगुण रूप समाया। निरगुण रूप अगम्म अपारया, भेव किसे ना पाया। नाड़ी चम्म ना कोई विसथारया, पंज पति ना कोई रखाया। रक्त बूंद ना कोए हड्ड मास नाड़या, नाड़ी नाड़ ना जोड़ जुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वेखे जगत दर, दर द्वार वेख वखाया। राम रामा राम रहीमा, निरगुण रूप समांयदा। एका हक्क बहक्क यकीना, हकीकत इक्क जणांयदा। भगत जनां दर होए अधीना, जुग जुग फेरी पांयदा। लेखा जाणे रूसा चीना, संग मुहम्मद भेव खुल्हांयदा। लहिणा देणा चुकाए लोक तीना, कलिजुग अन्तिम डंक वजांयदा। राउ रंक राजान शाह सुल्तान हरि भगवान विच जहान एका रंग रंगाए, वरन बरन मेट मिटांयदा। अमृत आत्म धार धुरदरगाही पीण खाण, सच प्याले आप प्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी कल वरतांयदा। जोती जामा भेख अपार जोत जगाईआ। प्रगट हो विच संसार, एका डंक वजाईआ। राज राजानां करे ख़बरदार, सम्मत चौदां दए दुहाईआ। ब्रह्मा शिव देवत सुर रिहा जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी वेख घर, खेले खेल मात रघुराईआ। कलिजुग खेल खिलावणहारा, एका एक रघुनाथया। जोती तेल चढ़ावणहारा, वेख विखाणे पृथ्वी आकारस्सया। गुरमुख मेल मिलावणहारा, वेखे खेल जगत तमास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लहिणा देणा मूल चुकाए, साढे तिन्न तिन्न हाथया। हरि का रूप अगम्म, भेव कोई ना पांयदा। ना मरे ना पए जम्म, ना कोई वेस वटांयदा। ना कोई पवण स्वासी लए दम, हड्ड मास नाड़ी ना कोई रखांयदा। करे कराए आपणा कम्म, लक्ख चुरासी विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रूप वखांयदा। हरि का रूप अपार, भेव किसे ना पाईआ। जोती नूर इक्क अकार, ब्रह्मण्डां विच समाईआ। वंड खण्ड अपर अपार, जेरज अंड दए उपाईआ। त्रैगुण माया कर पसार, लक्ख चुरासी बणत दए बणाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर लए उभार, आप आपणी जोत जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेख वटाईआ। जोती नूर अपर अपार, एका एक रखांयदा। सति सरूप कर आकार, सति सरूप समांयदा। निरगुण खेले खेलणहार, निर आकार हो आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच दुआरा इक्क सुहांयदा। सच दुआरा हरि निरँजण, एका

एक रखांयदा। ना कोई तीर्थ यात्रा करे मजन, ना कोई अठ्ठ सठ्ठ नुहांयदा। ना कोई गीता ज्ञान पढ़े सज्जण, ना कोई अर्जन रथ बणांयदा। ना कोई दर द्वारका ताल वज्जन, ना कोई राम रामा दसरथ अख्वांयदा। ना कोई मक्का काअबा हाज़ी हज्जन, मुला शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर अख्वांयदा। ना कोई ग्रन्थ पन्थ वेखे किसे सजन, बस्त्र तन ना कोई रखांयदा। एका एक करता पुरख अबिनाशी सज्जण, दूसर कोई ना संग रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे रंग रंगांयदा। आपणे रंग समाए, आपणी कल धारया। खाणी बाणी भेव ना राए, लिख लिख थक्के साध सन्त गुर पीर अवतारया। सतिजुग सेवक सेवा लाए, जुग जुग निरगुण खेले खेल अपारया। अलख अभेवा वड देवी देवा आप अख्वाए, रूप रंग रेख भेख नेत्र वेख ना कोई जणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग बणा ल्या। आपणा रंग हरि करतार, एका एक बणाया। शब्द सरूपी कर प्यार, एका धार वहाया। ना कोई दिसे त्रैगुण माया तेरी धार, जूठ झूठ नेड़ ना आया। इक्क इकल्ला मीत मुरार, एका धाम सुहाया। निरगुण रूप हरि निरँकार, निज घर बैठा आसण लाया। शब्द सिँघासण अपर अपार, चार दिवार ना कोई रखाया। छप्पर छन्न ना ल्या उसार, बाडी कोए ना बणत बणाया। रवि ससि सूरज चन्न ना कोई सितार, मण्डल मण्डप कोए नज़र ना आया। दीपक जोती इक्क उज्यार, पारब्रह्म रिहा कराया। खण्डां ब्रह्मण्डां सद वसे बाहर, गुप्त ज़ाहर समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेलणहार सृष्ट सबाया। आदि शक्त आदि भवानी, हरि एका जोत जगाईआ। ना कोई जाणे लिलाट निशानी, जगत विद्या रहे पढ़ाईआ। पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराणी, पारब्रह्म किसे हथ्थ ना आईआ। एका शब्द गुर मन्त्र तिक्खी कानी, बजर कपाटी पार कराईआ। मिले नाम हरि साचा हाणी, हरिजन सुरती लए प्रनाईआ। इक्क वखाए पद निरबानी, दर द्वार सुहाईआ। पंज तत्त तुटे नत मिले मेल हाण हाणी, हरि पुरख बिधाता राम रामा रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे भगती वर, दर घर हरि आपणा आप वखाईआ। लक्ख चुरासी कर त्यार, ब्रह्मे सेवा लाईआ। विष्नूं होए ख़बरदार, शिव शंकर संग रलाईआ। त्रैगुण माया तेरा इक्क प्यार, पंज तत्त बंधाईआ। पंझी प्रकृति पाए सार, नवृति रिहा कराईआ। मन मति बुध कर त्यार, आप आपणा अंग कटाईआ। निर्मल जोत दीपक अकार, सरगुण खेल खिलाईआ। आप लटकाए अद्धविचकार, दस्म द्वारी किला बणाईआ। सो पुरख निरँजण तेरी धार, सेवक आपणी सेव लगाईआ। इक्क खुल्हाए जगत द्वार, भगत विद्या रिहा पढ़ाईआ। लक्ख चुरासी नौ दर देवे वाड़, रस फीका मुख चुआईआ। माया ममता अग्नी साड़, दिवस रैण रही जलाईआ। जन भगत द्वारे रिहा बोली, आवे

जावे फेरा पाईआ। मेल मिलाए हौली हौली, सगला संग निभाईआ। अमृत आत्म देवे नाभ कँवली, प्रेम प्याला इक्क रखाईआ। मेल मिलाए साँवल सँवली, नैण मुँधार इक्क रघुराईआ। गुरमुख आत्म सदा बवली, हरिभगत जगत प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दर सन्तन वर, एका भगती भगत रूप वखाईआ। मेल मिलाए कन्त कन्तूहल, विछड़ कदे ना जाईआ। धुरदरगाही इक्क अकाल, एका एक अख्वाईआ। लोकमात जीव जन्त साध सन्त जायण भुल्ल, हरि सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, किरपा निध आप हो जाईआ। पूर्ब लहिणा वेख दया कमांयदा। शब्द पाए तन साचा गहणा, माया ममता दूर करांयदा। दरस दिखाए तीजे नैणा, दूई द्वैती पड़दा लांहयदा। गुर पूरे जो मन्ने कहिणा, भाई भैणां हुक्म जणांयदा। जूठ झूठ रहिण ना देणा, अक्खर वक्खर आप पढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, जुग जुग आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले देवे वर, वर दाता आप अख्वांयदा। कृपानिध दीन दयाला, दीना बंधप अख्वांयदा। अट्ठे पहर सद रखवाला, चारों कुन्ट दहि दिशा फेरी पांयदा। जन भगतां तोड़े जगत जंजाला, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। धर्म राए ना कढ्ढे दिवाला, चित्रगुप्त ना हिसाब रखांयदा। दरस वखाए दया कमाए, आप आपणे रंग रंगाए, नेड़ ना आए काल महांकाला। समरथ अकथ रिहा नाम जपाए, शब्द पाए तन साची माला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे शाह आपे कंगाला, हरिजन वेखे साचे लाला। लाल दुलारे कर प्यारे, आपणी गोद उठाईआ। आपणी किरपा आपे कर, हरिजन दए वड्याईआ। शब्द गुर काया मन्दिर अन्दर धर, सुरती जोड़ जुड़ाईआ। सुरत सवाणी लए वर, एका शब्द होई कुड़माईआ। सीता सुरती गाए हरी हरि, हरि हरि साचा राम रघुराईआ। बन्द कराए नौ दर, दसवें मेल मिलाईआ। आवण जावण चुक्के डर, जगत जंजाला रहिण ना पाईआ। इक्क वखाए साचा घर, ओंकारा देस विखाईआ। सो पुरख निरँजण दया कर, हँ हँगता रिहा मिटाईआ। काया चोली नाम रंगता, एका रंग मजीठ चढ़ाईआ। प्रभ अबिनाशी करता दर द्वारे जो आए मंगता, एका नाम भिच्छया पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी भिच्छया जन भगतां करे रिच्छया, सीस आपणा हथ्थ रखाईआ। पुन्न पाप जगत धार, प्रभ साचे मात चलाईआ। पंज तत्त कर प्यार, मन मति बुध करी कुड़माईआ। मन मनुआ कर सिक्दार, राज बणतर इक्क बणाईआ। अट्ठे पहर रहे ख़बरदार, चारों कुन्ट वेख वखाईआ। मति मतवाली होई मुरदार, सुरत लैण ना पाईआ। बुधी भेव ना पाए हरि निरँकार, कवण द्वारे बैठा आसण लाईआ। एका भुल्लया नाम मुरार, गुण अवगुण दिस ना आईआ। निरगुण खेले खेल अपार, सरगुण कोए ना मिले चतुराईआ। पाप पुन्न पुन्न पाप जगत धार, दोवें रिहा वखाईआ। मिले मेल सन्त कन्त भतार, लहिणा देणा

दए चुकाईआ। देवे दरस अगम्म अपार, पाप ताप सराप पुन्न रहिण ना पाईआ। सो जन उतरे पार विच संसार, जिस जन गुर पूरे मिली साची सरन सरनाईआ। जुग जुग बन्ने धार, जुग जुग आप चलांयदा। जुग जुग भेख अपार, साध सन्त उपजांयदा। जुग जुग लए अवतार, लोकमाती फेरा पांयदा। लक्ख चुरासी पावे सार, लक्ख चुरासी विच समांयदा। आप आपणी किरपा धार, आप आपणा रंग रंगांयदा। मनमुख गुरमुख विच संसार, एका राह वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुगा जुगन्तर शब्द संदेश लोकमात साचा आप सुणांयदा। शब्द संदेश हरि भगवन्त, लक्ख चुरासी करे जणाईआ। नाल रलाए साध सन्त, नाल रिहा जगाईआ। जन भगतां मेल मिलाए हरि साचे सुत्त, नारी कन्ता रूप समाईआ। एका घर वखाए अबिनाशी अचुत्त, एका सेज विछाईआ। हरि का नाम रसना गाओ, आत्म अन्तर एका पाओ, साचा तन रंगाईआ। गुण अवगुण ना लेख लिखाओ, दिवस रैण हरि दर्शन पाओ, भेव अभेद आप मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जाप आपणा आप रसना पुन्न रिहा वखाईआ। एका नाम जगत अधार, जुग जुग आप चलांयदा। मनमुख भुल्ले जीव गंवार, रसना कोए ना गांयदा। राए धर्म करे ख्वार, हउमे हँगता विच समांयदा। पाप प्रताप कर त्यार, हरिजन हरि झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवे डन्न धर्म राए सेवा लांयदा।

तुलसी राम पछाणया, जो हर घट रिहा समाए। चले चलाए आपणे भाणया, जुग जुग आवे जाए। एका रक्खे शब्द बिबाणया, लोआं पुरीआं वेख वखाए। सन्तां भगतां देवे ठण्ढा पाणीआ, अमृत आत्म जाम प्याए। मेल मिलाए साचे हाणीआ, हरिजन तेरी सेव कमाए। अनहद गाई साची बाणीआ, लिख लिख रिहा चुकाए। एका पाया पद निरबाणीआ, चौथे पद विच समाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म दरसी एका दृष्ट एका इष्ट चन्द राम गुर वशिष्ट भेव अभेद खुल्हाए। तुलसी दास आत्म वज्जी वधाईआ। मिल्या मेल पुरख अबिनास, रसना रिहा गाईआ। रसना गाए स्वास स्वास, दिवस रैण ध्याईआ। लेखे लग्गा हड्ड नाड़ी मास, पंज तत्त होई कुड़माईआ। मात गर्भ ना आए उलटा वास, ना कोई बंध बंधाईआ। खेले खेल पृथ्वी आकाश, आकाश पातालां फेरा पाईआ। निज घर वसया हरि हरि पास, दासी दास सेव कमाईआ। लिख्या लेख बैठ जंगल जूह उजाड़ पहाड़ विच प्रभास, गुण अवगुण निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। कबीर चोटी चढ़ अख़ीर है, मिले मेल हरि भगवानया। त्रैगुण माया तोड़ जंजीर है, हथ्थ बद्धा नाम गानया। अमृत आत्म धुरदरगाह पीता सीर है, घर साचे होए परवानया। ना कोई बचे पीर फ़कीर है, राज राजान ना वेख वखानया। हरि का बाण तीर

तिक्खा एको तीर है, इक्क ध्यान रखानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मिल्या मेल थिर घर, दर हरि नर इक्क पछानया।

राम इष्ट गुरदेव मना, कर्म कर्मा रिहा बणाईआ। आत्म चन्द इक्क चढ़ा, कर्म चन्द अख्वाईआ। नाम सुगंधी झोली पा, काया तन भराईआ। होका दे दे रिहा सुणा, चार कुन्ट रिहा जणाईआ। नाम गांधी नाँ रखा, तन पिंजर ल्या सुखाईआ। आलस निन्दरा मगरों लाह, सेवक सेवा रिहा कमाईआ। स्यासत विरासत नाल प्रना, दोहां मेल मिलाईआ। प्रभ अबिनाशी वेखे साचा थाँ, अद्धविचकारे डेरा लाईआ। पुरी इन्द्र सच्चा थाँ, इन्द इन्द्रासण नाम रखाईआ। सच सिँघासण इक्क विछा, आपे रिहा बहाईआ। अस्व घोड़ा जोती जोड़ा दए बणा, सोलां कलीआं आसण लाईआ। एका दूजा पौड़ा दए चढ़ा, तीजा रिहा टिकाईआ। चौथे घर चौथी वार फूलन माला गल पा, फल फुलवाड़ी मात लगाईआ। मेल मिले दूजी वारी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख वखाणे घट हट्ट, अन्दर जाणे अट्ठ तत्त, आपे वेख वखाईआ।

सुखमन नाड़ी टेडी बंक, हरि साचे आप बणाईआ। चढ़ चढ़ थक्के अंक अंक, अंक ना कोए समाईआ। गुरमुख विरला इक्क इकेला जिउँ जन जनक, हरि हरिजन रिहा समाईआ। नाम सरूपी पाया धनक्ख, एका हथ्थ उठाईआ। जोती नूर कोहतूर एका कनक, घर तीजे वेख विखाईआ। चौथा घर ना कोई राउ ना कोई रंक, ऊँच नीच दिस ना आईआ। आप मिटाए हरि हरि शंक, सहिंसा रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन वेखे साचा घर, कवण महल्ल अटल अचल कवण धाम सुहाईआ। काया मन्दिर उच्च मिनार, हरि साची जोत जगाईआ। जोत सरूपी कर आकार, बैठा आसण लाईआ। शब्द सच्चा अपर अपार, निरगुण आप बुझाईआ। सन्त सुहेले कर प्यार, दिवस रैण रिहा जगाईआ। पंचम गायण वारो वार, सेवक सेवा साची लाईआ। आपे खोल्हे बन्द किवाड़, बन्द किवाड़ी आप खुल्हाईआ। हरिजन वेख वखाए बहत्तर नाड़, नाड़ी नाड़ आप प्रनाईआ। माया ममता देवे साड़, हउमे हँगता रोग मिटाईआ। आत्म रंगता हरिजन बणाए साचा लाड़, जो जन रसना रहे गाईआ। चौथे घर देवे वाड़, सस्सा किला इक्क वखाईआ। सो पुरख निरँजण आर पार, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेख दर, हरि सन्तन देवे नाम वर, जुग जुग एका धाम वखाईआ।

हरिभगतन दर भिखार, जुग जुग आया। मंगे मंग अपर अपार, सच प्रीती रिहा सिखाया। चार वरनां सांझा यार, ज़ात पात विच ना आया। ऊँचां नीचां इक्क विचार, राज राजानां विच समाया। एका कर्म एका धर्म एका जरम विच संसार, लहिणा देणा प्रभ आपणे हथ्थ रखाया। हरिजन मेला कन्त भतार, हरिभगतां विच समाया। नार सुहागण विच संसार, हरिजन साचा आप अख्वाया। सुरत सवाणी करे प्यार, दिवस रैण सेव कमाया। साचा मेला दस्म द्वार, सोहँ सो जिस जन रसना जिह्वा हरि हरि जन रसना गाया। सोहँ शब्द सच प्रभाती, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाया। हरिजन उठाए सुत्तयां राती, छप्पर छन्न फेरा पाया। दरस वखाए इक्क इकांती, रेख भेख ना कोई जणाया। अमृत आत्म देवे बूंद स्वांती, निझर धार वहाया। हरिजन मेल मिले हरि कमलापाती, कवण नैण जगत बैन सारंगधर भगवान बीठला अनडिठ इक्क समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे जगत जुगती भगती वर, आत्म दरसी दरस दिखाया। आत्म दरस नेत्र नैण, लोचन नैण आप खुल्हांयदा। माया ममता विच ना वहिण, दर दहिलीजां फेरा पांयदा। सोहँ सो जन रसना कहिण, जाप अजपा इक्क जपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग तेरा साचा डंका, चार वरनां आप सुणांयदा। साचा डंक ढोल मृदंग, एका शब्द नगारया। नौ खण्ड पृथ्वी लग्गा जंग, धरत मात तेरा दर सुहा रिहा। लाड़ी मौत मंगे मंग, राए धर्म करे पुकारया। चार यार संग मुहम्मद अल्ला राणी दिसे नंग, चारों कुन्ट हाहाकारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग खेले खेल फरंग, दहि दिशा रिहा ललकारया। भगतन मीता इक्क गोपाल, दिवस रैण जगांयदा। देवे नाम अनमुल्लड़ा लाल, काया मन्दिर अन्दर आप टिकांयदा। बस्त्र पाए सच दोशाल, एका पड़दा पांयदा। आपे शाह आपे कंगाल, दाता दानी आप अख्वांयदा। हरिजन सन्त सुहेले जुग जुग भाल, मेला मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सन्तन मेला साचे दर, दर दुआरा बंक सुहांयदा। बंक दुआरा धन्न है, पाया हरि गोबिन्द। मन हँकारी जाए मन्न है, दे मति मिटाए सगली चिन्द। प्रभ जोत जगाए साचे तन है, दाता जोद्धा सूरा वड मृगिन्द। खेले खेल भिन्न भिन्न है, भाग लगाए भारत खण्डी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सुहेले जुग जुग मेले सेवक सेव करांयदा। बख्शिंद बख्शणहार जगत स्वामी, एका एकँकारया। जुग जुग होए मात निहकामी, निहकरमी कर्म विचारया। मेट मिटाए अन्धेरी शामी, राधा कृष्न रूप वटा गया। आपे आप हरि अन्तरजामी, आप आपणी खेल खिला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन जन हरि साचे विदा करा रिहा।

✻ २० भाद्रों २०१४ बिक्रमी बिशन सिँघ दे गृह गुड़गाउँ ✻

हरिजन बख्शे सच सरना, सरन सरनाई इक्क रखाया। कागों हँस दए बणा, रूप अनूपा दए वटाया। साची चोग दए चुगा, माणक मोती नाम रखाया। आत्म भोग दए भुगा, रस आत्मक इक्क चुआया। जगत जोगी जोग दए वखा, जुगत आपणे हथ्थ रखाया। हउमे रोग रोगी दए मिटा, हँ हँगता रहिण ना पाया। दरस अमोघी अमोघ दए विखा, तृष्ना भुक्ख गंवाया। धुर संजोगी मेल मिला, जुग जुग पैज रखाया। सन्त सुहेले पकड़े बांह, आप आपणे कंध उठाया। आपे पिता आपे माँ, पूत सपूता गोदी जाया। दो जहानी देवे ठण्ढी छाँ, सच वसेरा इक्क कराया। एका एक जपाए आपणा नाँ, दूसर कोई नेड़ ना आया। नेत्र नैण दए खुल्ह्ला, दर तीजा वेख विखाया। चौथे घर दए बहा, पद निरबाना रिहा सुहाया। पंचम मेला मेल मिला, राग अनादा रिहा अल्ह्लाया। आप आपणी सेज विछा, उप्पर आसण लाया। गुरमुख साचे सन्त सुहेले लए प्रना, नारी कन्ता आप अख्वाया। आप वखाए आपणा थाँ, रुत्त बसन्ती इक्क सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दया कमाया। हरिजन साचे सद बलिहार, दिवस रैण वधाईआ। मानस जन्म उधरे पार, आवण जावण फंद कटाईआ। लहिणा देणा कर्ज उतार, जग पिछला मूल चुकाईआ। भाणा सहिणा विच संसार, नेत्र दरस हरि रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेख एका दर, दर साचा इक्क सुहाईआ। साचा घर सच दरबारा, एक एक रखांयदा। इक्क इकल्ला एकँकारा, ओंकार रूप समांयदा। शब्द सरूपी बन्न्हे धारा, जोत सरूपी खेल खिलांयदा। अगम्म अगम्मा ना कोई पावे सारा, नाड़ी चम्म भेख वटांयदा। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, नानक गोबिन्द रसना गांयदा। नानक मंगे नाम भिखारा, दर आए झोली डांयदा। गोबिन्द दोए जोड़ करे निमस्कारा, पूत सपूता सीस निवांयदा। पुरख अबिनाशी बैठा अद्धविचकारा, दोहां हुक्म जणांयदा। दोहां देवे नाम अधारा, आप आपणी दया कमांयदा। आपे वसे अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहरा, निरगुण सरगुण वेख वखांयदा। कलिजुग तेरा कूड़ कुड़यारा, अन्तिम डेरा ढांयदा। प्रगट हो विच संसारा, हरि साची बणत बणांयदा। गोबिन्द काया कर प्यारा, साचा संग निभांयदा। दो अक्खर नाम रखाए नौ खण्ड पृथ्वी पावे सारा, दीपां लोआं वेख वखांयदा। सूरज चन्न रवि ससि करन निमस्कारा, ब्रह्मा शिव देवत सुर बैठे मुख शरमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे देवे वर, धाम अटला इक्क अवल्ला गुरमुखां आप वखांयदा। उच्च अटला धाम न्यार, हरि साची जोत जगाईआ। गुरमुख साजण मीत मुरार, एका वेख वखाईआ। ना कोई दिसे संग मात पित भाई भैण नार कन्त भतार, ना कोई मेल मिलाईआ। जीव जन्त होए

गंवार, साध सन्त भरम भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख घर, वेस अवेसा आप कराईआ।

हरि का नाउँ सच वपार, एका वणज करांयदा। शब्दी शब्द गुर शब्द अधार, हरि जोती मेल मिलांयदा। जोती मेला अपर अपार, नूरो नूर समांयदा। नूर नुरानी कर उज्यार, हरिजन वेख वखांयदा। हरिजन मेला सच दरबार, काया मन्दिर अन्दर इक्क सुहांयदा। बजर कपाटी देवे पाड़, सच सिँघासण वेख वखांयदा। आत्म सेजा रंग करतार, अनहद ताल वजांयदा। पंचम गायण वारो वार, सेवक सेवा लांयदा। गुरमुख मंगे नाम भिखार, भिच्छया भिख्या झोली पांयदा। शब्द सिँघासण बैठ सच्ची सरकार, दस्म द्वारी मेल मिलांयदा। अमृत आत्म ठण्ढी ठार, निझर धारा मुख चुआंयदा। निर्मल जोती कर अकार, अन्ध अज्ञान मिटांयदा। एका शब्द इक्क ध्यान, इक्क निशान वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे नाम वर, वर दाता आप अख्वांयदा। नाम वस्त जगत अमोल, प्रभ आपणे हथ्थ रखाईआ। आपे तोलणहारा साचा तोल, जुग जुग रिहा तुलाईआ। जन भगतां अक्खर वक्खर दस्से बोल, रसना जिह्वा सेवा लाईआ। पंचम वजाए साचा ढोल, नाम मृदंगा इक्क रखाईआ। आप आपणा पड़दा खोल्, देवे दरस हरि रघुराईआ। काया मन्दिर रिहा मौल, आत्म सेजा रुत्त सुहाईआ। उलटी करे नाभ कँवल, कँवल नाभी मुख भवाईआ। हरिजन वड्याई उप्पर धवल, काया धरत बसन्त सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे नाम वर, कन्त भगवन्त मेल मिलाईआ। हरिजन मेला साचे कन्त, एका दर द्वारया। नाम बहार रुत्त बसन्त, गुर शब्द खिड़ी गुलजारया। रसना जिह्वा मणीआ मंत, गुर मन्त्र नाउँ इक्क अधारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, आप कराए दो जहानी पार किनारया। हरिजन मंगे एका मंग, झोली अग्गे डाहीआ। पुरख अबिनाशी काया चोली चाढ़े रंग, रंगणहार आप अख्वाईआ। अमृत आत्म धार वहाए गंग, दुरमति मैल रुढ़ाईआ। आप लगाए आपणे अंक, अंगीकार आप अख्वाईआ। नौ द्वारे पार लँघ, दस्म द्वारी कुण्डा लाहीआ। शब्द रंगीला वेख पलँघ, सति सरूपी सेज विछाईआ। हरिजन हरि हरि एका संग, विछड़ कदे ना जाईआ। दर दरवाज़ा जो जन रहे मंग, प्रभ एका भिच्छया नाम वस्त झोली पाईआ। नाम वस्त सच नाम धन, हरि आपणे हथ्थ रखांयदा। एका राग सुणाए कन्न, एका ताल वजांयदा। अन्दर मन्दिर बेड़ा देवे बन्न, मन मति बुध समझांयदा। थिर घर वसाए ना कोई छप्परी छन्न, चार दिवार ना कोई बणांयदा। गढ़ हँकारी किला

देवे भन्न, एका प्रेम धार वहांयदा। गुरमुख जनणी जणया जन, पूत सपूता नाउँ धरांयदा। लोकमात चढ़या चन्न, रवि ससि मुख शरमांयदा। गुर का शब्द जो जन लए मन्न, सुरत सवाणी आप प्रनांयदा। भाग लगाए काया तन, पंचम तत्त वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, नाम सालस इक्क वखांयदा।

✻ २२ भाद्रों २०१४ बिक्रमी करतार सिँघ पुरा बाड़ी ज़िला भरतपुर अर्जन सिँघ दे गृह ✻

हरि साजन जग मीतड़ा, परम पुरख अपार। काया चोले रंगे चीथड़ा, देवे नाम अधार। अमृत आत्म इक्क अनडीठड़ा, बख्शे निझर धार। पंज विकारा कौड़ा रीठड़ा, डन्ने भन्ने भन्नृणहार। आदि निरँजण इक्क अनडीठड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन हरि हरिजन जुग जुग लए अधार। हरि साजण हरि पाया, पारब्रह्म अबिनाश। पंचम बहि बहि मंगल गाया, होए दासन दास। आत्म धुंन इक्क वजाया, सुणे सुणाए पृथ्वी आकाश। बोध अगाध शब्द जणाया, लेखे लाए स्वास स्वास। काया मण्डल मण्डप आप सुहाए, निज घर आत्म रक्खे वास। गुर सतिगुर शब्द चलाया, सद वसे आस पास। आवण जावण फंद कटाया, लक्ख चुरासी बन्द खुलास। परमानंद विच समाया, मेल मिलाए हरि गुणतास। निज घर आसण इक्क वखाया, आत्म सेजा पुरख अबिनाश। जोती नूर सद सवाया, जन भगतां दासी दास। दरस्म द्वारी मेल मिलाया, गुर पूरे बलि बलि जास। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन जन हरि जुग जुग आत्म अन्तर लए वर, आदि अन्त ना होए विनास। हरि साजन तन रत्तया, रत्न नाम अमोल। आपे दे समझावे मत्तया, शब्द अनादी एका बोल। आदि जुगादी धुरदरगाही आवे नट्ठया, जन भगतां सद वसे कोल। चरन द्वारे हरि निरँकारे जो जन सरनाई ढट्ठया, करे पार उतार। चरन धूढ़ माण गंवाए तीर्थ अट्ठ सट्ठया, मजन माघ इक्क इशनान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे हरि हरि मन्दिर काया अन्दर मेले करे पछाण। काया मन्दिर सच द्वार, प्रभ आत्म जोत जगाईआ। गुरमुख नारी कन्त भतार, तन मेला मेल मिलाईआ। सोलां कलीआं तन शृंगार, आसण सिँघासण इक्क विछाईआ। सति पुरख निरँजण खेल अपार, लोइन अंजन एका पाईआ। नाम निरँजण मीत मुरार, सज्जण सैण अख्वाईआ। देवे दरस अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाईआ। गुरमुख साचे जुग जुग उतरे पार, काया माटी चम्मड़े लहिणा देणा मूल चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन आत्म वेख घर, दर दुआरा इक्क खुल्हाईआ। दर दुआरा आत्म वेख घर, दर दुआरा इक्क खुल्हाईआ। दर दुआरा आत्म घर, घर पूरा आप खुल्हांयदा। आप आपणी

किरपा कर, नौ दर बन्द वखांयदा। सर सरोवर नुहाए एका सर, अमृत आत्म ताल भरांयदा। शब्द सरूपी अन्दर वड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, हरिजन सोए मात जगांयदा। सुरत सवाणी लए फड़, पौड़ी पौड़ी जाए चढ़, बजर कपाटी तोड़ तुड़ांयदा। दस्म द्वारी अग्गे खड़्, किला तोड़ हँकारी गढ़, पंच विकार मेटे जड़्, एका धार शब्द प्यार, ओंकार इक्क आकार, निरगुण रूप वखांयदा। सतिगुर साजण मीत मुरार निरगुण मेला कन्त भतार, दोहां विचोला शब्द अधार, एका धाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन आत्म वेख दर, दर घर साचे आसण लांयदा। आत्म घर सच दरवाज़ा, हरि एका एक खुल्हांयदा। भगत सुहेला ग़रीब निवाजा, आप आपणा रूप वटांयदा। बस्त्र शस्त्र चिट्टा ताजा, सोलां कलीआं आसण लांयदा। आप आपणा साजण साजा, दिस ना आए राजन राजा, भगत जनां हरि रच्चया काजा, जुग जुग बणत बणांयदा। अट्ठे पहर अन्दर मन्दिर मारे अवाजा, दो जहानी रक्खे लाजा, पूत सपूता दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आत्म वेख दर, हरि दरसी दरस दिखांयदा। आत्म दरसन लोचन नैण, रसना कहिण ना जाईआ। नाता तुट्टे मात पित भाई भैण, साक सज्जण सैण बंधप कोई ना पाईआ। नेड़ ना आए लाड़ी मौत डैण, राए धर्म मुख छुपाईआ। लक्ख चुरासी आप चुकाए लहिण देण, आर पार किनारा इक्क वखाईआ। एका बस्त्र तन पहनाए शब्द गहिण, उतर कदे ना जाईआ। माया ममता झूठा वहिण, जगत जंजाला मोह कटाईआ। जन हरि हरिजन भाणा हरि हरि सहिण, नेत्र नैण इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन एका मीत मुरार, आप आपणे रंग रंगाईआ। रंगे रंग काया चोली, एका एक रखांयदा। अक्खर वक्खर सुणाए शब्द बोली, लिखण पढ़न विच ना आंयदा। नौ द्वार हरि सृष्ट सबाई तोली, दसवां दर ना कोई खुल्हांयदा। सुरत सवाणी होई गोली, मन मनुआ किरत कमांयदा। मति बुध रही डोली, नेत्र नैण नीर वहांयदा। गुरमुख विरले चरन प्रीती घोल घोली, फड़ बाहों पार करांयदा। दूई द्वैती पड़दा खोल्ही, एका रंग वखांयदा। उलटी करे नाभ कँवली, अमृत आत्म मुख चुआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन जन हरि सुहाए इक्क दर, बंक द्वारी आप अख्वांयदा। सदा सहाई हरि समरथ, समरथ पुरख अपारया। हरिजन राखे दे कर हथ्थ, आदि जुगादी एकँकारया। नाम चढ़ाए साचे रथ, दो जहानी पार किनारया। शब्द जणाए अकथना अकथ, कथ कथा सुणा रिहा। चरन प्रीती बख्शे साची वत्थ, दूई द्वैती दुरमति मैल गंवा रिहा। लहिणा देणा चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, जिस जन दर्शन पा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले कर कर मेले, जुग जुग करे मात वक्ख, दर साचे घर साचे हरि साचे भाण्डे काचे लेखे ला ल्या।

हरि समरथ सज्जणा, साजन मीत मुरार। चरन धूढ़ी बख्शे मजना, हउमे हँगता रोग निवार। जो घड़या सो भज्जणा, शब्द खण्डा एका मार। ताल नगारा एका वज्जणा, काया मन्दिर अन्दर ड्रूँघी गार। गुरमुख विरले अमृत आत्म पी पी रज्जणा, आप सुहाया साचा ताल। हरि चरन द्वारे बहि बहि सजना, वेख ना सके जीव गंवार। धुरदरगाही रक्खे लजना, लज पति हथ्थ रक्खे करतार। हरि वारी बलिहारी साचे सज्जणा, मिल्या पुरख भतार। लोकमाती पड़दा कज्जना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मेले मेल मेलणहार।

सो पुरख निरँजण आप, मूर्त अकालया। सृष्ट सबाई माई बाप, दीना बंधप दीन दयालया। आप जपाए आपणा जाप, नानक गोबिन्द सेवा ला ल्या। जुगा जुगन्तर वड प्रताप, भेखाधारी भेख वटा ल्या। आपे जाणे आपणा आप, जीव जन्त भेव ना पा ल्या। नाम चलाए साचा राथ, रथ रथवाही आप अख्वा ल्या। जुग जुग महिंमा अकथना अकाथ, अकथ कथा अख्वा ल्या। हरिजन रक्खे दे कर हाथ, सीस आपणा हथ्थ टिका ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भेखाधारी भेख वटा ल्या। भेखाधारी भेख वटाए, अकल कला भरपूरया। निरगुण सरगुण खेल खिलाए, आपे वसे नेड़े दूरया। कलिजुग अन्तिम वेख वखाए, चारों कुन्ट अन्धेरा कूड़या। धरत मात रही कुरलाए, प्रभ नेत्र नैण मंगे धूड़या। लक्ख चुरासी रही बिल्लाए, मनमति मूर्ख जीव मूढ़या। गुरमुख साचे रहे ध्याए, हरि हर आसा मनसा पूरया। एका एक हरि सरनाए, नाम निधाना सति सरूरया। फड़ फड़ बाहों पार कराए, आप उतारे आपणे पूरया। दो जहानां वेख वखाए, ज़िमी अस्मानां हाज़र हज़ूरया। धुर फ़रमाना इक्क जणाए, सोहँ शब्द अनादी तूरया। नानक रसना जिह्वा गाए, मेल मिलाए गुण भरपूरया। एका दूजा भउ चुकाए, तीजा लोचन इक्क वखाए, चौथे पद रिहा समाए, पंचम मेला सहिज सुभाए, इक्क वजाए अनहद साची तूरया। छेवें छप्पर छन्न ना कोई रखाए, सति पुरख निरँजण आप हो जाए, अठ्ठां तत्तां दिस ना आए, नौ दर खोलू सृष्ट उपाए, दसम सिँघासण पुरख अबिनाशी आपणा डेरा ला ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग भेख वटा ल्या। भेखाधारी हरि भगवन्ता, आपणे रंग समांयदा। मेल मिलाए साचे सन्ता, सेवक सेवादार अख्वांयदा। आपे नारी आपे कन्ता, आप आपणी सेज हंढांयदा। काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता, उतर कदे ना जांयदा। हरिजन वड्याई जीव जन्ता, भगत अधारी आप अख्वांयदा। हरि जुग जुग बणाए साची बणता, उत्भज सेत्ज जेरज अंडज विच समांयदा। वेख विखाए काशी पंडता, ज्ञानी ध्यानी पंडत पांधे फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा देवे वर, गुरमुखां दया कमांयदा। गुरमुख मेला विच संसार, गुर गोबिन्द मेल मिलाईआ। गोबिन्द मेला इक्क द्वार, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। सज्जण सुहेला मीत मुरार, एकँकार आप अख्वाईआ। गुर चेला सोहे इक्क द्वार, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। मंगे मंग दर भिखार, आत्म झोली अग्गे डाहीआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, एका वस्त झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दे दित्ता वर, सतिजुग मिले मात वड्याईआ। गुर गोबिन्दे वर घर पाया, आत्म वज्जी वधाईआ। अंगीकार इक्क अख्वाया, साचा संगी संग निभाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी डेरा लाया, ब्रह्मण्डी खोज खुजाईआ। जेरज अंडी दिस ना आया, बैठा मुख छुपाईआ। दो जहानां वंड वंडाया, वंडणहार सृष्ट सबाईआ। पुरीआं लोआं रिहा हिलाया, ब्रह्मा शिव सुरपति राजा इन्द दए दुहाईआ। विष्नूं बंसी सीस झुकाया, दोए जोड़ खड़ा सरनाईआ। पुरख अबिनाशी शब्द जणाया, बोध अगाधी इक्क जणाईआ। त्रैगुण माया मेट मिटाया, पंज तत्त रहिण ना पाईआ। पंचम मीता इक्क अख्वाया, अनाद अनादी आप अख्वाईआ। राग रागनी भेव ना पाया, राग छतीसा रिहा गाईआ। वेद पुराणां हथ्थ ना आया, वेद व्यासा लेख लिखाईआ। अञ्जील कुरान दए दुहाया, सभ दा लहिणा रिहा चुकाईआ। साध सन्त जीव जन्त होए हलकाया, आत्म घर ना कोई सुहाईआ। गुरमुख विरले आत्म दरसी पुरख अबिनाशी एका पाया, एका ओट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गोबिन्द मेला इक्क मिलाईआ। गोबिन्द मेला हरि गोपाल, घर साचे वज्जे वधाईआ। दीनां बंधप दीन दयाल, वेख वखाए सृष्ट सबाईआ। नाल रखाए काल महांकाल, राए धर्म रिहा उठाईआ। लक्ख चुरासी फल वेखे डाल्, चारों कुन्ट दहि दिशा नठ्ठ नठ्ठ धाहीआ। नौ खण्ड पृथ्वी गगन पताल, आकाश आकाशां पार कराईआ। त्रैगुण माया तेरा जाल, प्रभ साचा तोड़ वखाईआ। ब्रह्मा वेता होए कंगाल, सच वस्त हथ्थ ना आईआ। कलिजुग अन्तिम अन्त लुट्टया जाए धनी धन माल, धन धनाढ कोई रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लहिणा देणा रिहा चुकाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम धार, चारों कुन्ट रैण अन्धेरी छाईआ। मनमुख भुल्ले जीव गंवार, भेव ना पायण हरि भगवान, रसन विकारा इक्क रखाईआ। पंचम करन हाहाकार, कोए ना सुणे किसे पुकार, राज राजान शाह सुल्तान बैठे मुख छुपाईआ। इक्क इकल्ला ओंकार, एकँकारा पसर पसार, नौ खण्ड पृथ्वी इक्क द्वार, वेख वखाए थाउँ थाँईंआ। निहकलंक लए अवतार, नौ खण्ड पृथ्वी पावे सार, राज राजानां शाह सुल्तानां रिहा जगाईआ। जन भगतां देवे धुर फ़रमाण, आत्म अन्तिम बन्ने गाना। जोत निरँजण नेत्र पाए अंजन, चरन धूढ़ बख्शे साचा मजन, साचा इक्क

इशनान कराना। काल नगारे लक्ख चुरासी सिर ते वज्जन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस वटाना। कलिजुग तेरा अन्तिम रंग, एका एक चढ़ाया। सृष्ट सबाई होई नंग, नाम वस्त ना कोई रखाया। मानस देही होई भंग, आवण जावण ना कोई कटाया। सज्जण मीत मुरार मात पित भाई भैण साक सैण अंग संग, वेले अन्त ना कोए छुडाया। लाड़ी मौत दर द्वारे मंगे मंग, राए धर्म दी सच सपुत्री कुँवार कन्या एका वर लोड़े, प्रभ अबिनाशी अग्गे दोए हथ्थ जोड़े, पुरख अबिनाशी किरपा कर अन्तिम चढ़े शब्द घोड़े, चिट्टे अस्व सोलां कलीआं आसण लाया। गुरमुखां दर वेखे दौड़े, अगम्म अगम्मा अगम्मड़े धाम आपे बौहड़े, वेस वटाए ब्रह्मण गौड़े, पूत सपूता आप उपाया। लक्ख चुरासी वेखे परखे मिट्ठे कौड़े, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लिख्या लेख चुकाया। लिख्या लेख हथ्थ करतार, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, लोकमात फेरी पाईआ। निहकलंक लए अवतार, गुर गोबिन्दे रिहा जगाईआ। शब्द खण्डा तेज कटार, तन गात्रे आप लटकाईआ। आपे होया पहरेदार, दिवस रैण सेव कमाईआ। जन भगतां करे ख़बरदार, चारों कुन्ट फेरा पाईआ। मनमुख सँघारे जीव गंवार, थिर घर कोई रहिण ना पाईआ। वेख वखाए महल्ल अटल उच्च मुनार, गुर दर मन्दिर मस्जिद अन्दर फेरा पाईआ। साध सन्त जीव जन्त ना कोई दिसे विभचार, नार दुहागण रहिण ना पाईआ। गुरमुखां वरे मेला कन्त भतार, दर दुआरा इक्क सुहाईआ। आपे गुर आपे चेला, आपे मेल मिलावणहार, जुग जुग विछड़े रिहा मिलाईआ। खेले खेल खेलणहार विच संसार, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, जोती जामा भेख वटाईआ। शब्द शब्दी पावे सार, दो जहानां एकँकार, इक्क इकल्ला हरि रघुराईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत हिल्ले जूह उजाड़ पहाड़ वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेस कराईआ। वेस अनेकां हरि निरँकारा, अकल कला भरपूरया। आवे जावे वारो वारा, खेले खेल हाज़र हज़ूरया। गोबिन्द मेला इक्क दुआरा, नाद अनादी धुन उपजाए आत्म साची तूरया। पंचम सेवक सेवादार, अन्दर मन्दिर आसा मनसा पूरया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, मेट मिटाए जूठ झूठ पसारा कूड़या। कलिजुग अन्तिम रिहा कुरला, हरि साचे जोत जगाईआ। दिवस रैण उठ उठ मारे धाह, ना दिसे कोई सहाईआ। चार यारां संग मुहम्मद ना कोई फड़े बांह, अल्ला राणी बैठी मुख छुपाईआ। वेद पुराण शास्त्र सिमरत ना कोई कटे फाह, ना कोई संग रखाईआ। खाणी बाणी बैठी मुख छुपा, मनमुख जीवां रसना होई हलकाईआ। नानक गोबिन्द ना कोए सहा, लेखा आपणा गए लिखाईआ। चारों कुन्ट दहि दिशा ना कोई सहा, रैण अन्धेरी

छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम दए जगाईआ। कलिजुग उठ जाग सुल्तान, हरि साचा आप जगांयदा। धर्म राए इक्क निशान, अक्खर वक्खर रूप समांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क ज्ञान, दूसर ना कोई होर ज़बान, एका दूजा भउ चुकांयदा। मेट मिटाए पंज शैतान, ना कोई दिसे बेईमान, अल्ला हू नाअरा ना कोई लांयदा। जन भगतां देवे दानी दान, आत्म जोती ब्रह्म ज्ञान, एका शब्द सच सुणांयदा। दिवस रैण रही प्रभात, रैण अन्धेरी मेट मिटांयदा। आपे पिता आपे मात, चरन प्रीत बंधाए साचा नात, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ांयदा। इक्क इकांत देवे बूंद स्वांत, जन भगतां मुख चुआंयदा। मनमुख जीवां कोए ना पुच्छे वात, चारों कुन्ट उठ उठ रहे झाक, कलिजुग कूड़ कुड़यारा नज़र ना आंयदा। माया ममता हउमे हँगता डसनी नाल बरात, काया नारी नाल प्रनांयदा। राग नाद ना कोई सुणे सुणाए पूजा पाठ, मंगलाचार ना कोई करांयदा। ना दिसे तीर्थ अठ्ठ साठ, गंगा गोदावरी नीर ना कोई प्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेरा लेखा आप मुकांयदा। कलिजुग लेख आप मुकाउणा, प्रभ हथ्थ रक्खी वड्याईआ। जूठ झूठ झोली पाउणा, लोकमात करे कुड़माईआ। पंच विकारा संग रलाउणा, चौथा जुग रिहा शरमाईआ। नाद अनादी शब्द ना किसे गाउणा, तूरत तूर ना कोई वजाईआ। दर दवारिउँ बाहर कराउणा, बीस बीसा दए दुहाईआ। इक्क इकीसा खेल खिलाउणा, खेलणहार आप अख्वाईआ। जगत जगदीसा जोत जगाउणा, कलिजुग अन्तिम फेरी पाईआ। ब्रह्मा शिव आप हटाउणा, सुरपति राजा इन्द रहिण ना पाईआ। ध्रू दुआरा वक्त चुकाउणा, हरिजन साचे माण दवाईआ। ऐड़ा अथरबण अन्त कराउणा, अल्ला अलाही नूर छुपाईआ। इक्क इकल्ला हरि अख्वाउणा, अठारां वरन मेट मिटाईआ। गोबिन्द डल्ला संग मिलाउणा, वल छला जगत भुलाईआ। दूई द्वैती मेट मिटाउणा, नाम हुलार इक्क कराईआ। सोहँ भल्ला इक्क फड़ाउणा, चार वरन सच्ची सरनाईआ। एका मार्ग धरत मात लगाउणा, धरनी धरत आप सुहाईआ। गुरमुख साचे विच समाउणा, आत्म सेजा इक्क विछाईआ। पुरख अबिनाशी डेरा लाउणा, निर्मल जोत करे रुशनाईआ। पंचम नाद राग इक्क सुणाउणा, अनहद साची सेवा लाईआ। अमृत आत्म मेल मिलाउणा, सर सरोवर इक्क विखाईआ। काग हँस आप बणाउणा, गुरमुख तेरी वड वड्याईआ। लक्ख चुरासी फंद कटाउणा, आप आपणी गोद उठाईआ। मात गर्भ ना फेर आउणा, दस दस मास ना वेख वखाईआ। पृथ्वी आकासी बाहर कराउणा, साचे धाम दए बहाईआ। रमईआ राम आप अख्वाउणा, काहना कृष्ना संग रखाईआ। गोबिन्द नानक इक्क कराउणा, एका धार वहाईआ। पूत सपूत आप जगाउणा, हरिजन साचे लए उठाईआ। एका दूजा भउ चुकाउणा, नेत्र तीजा खोल्ह वखाईआ। चौथा धाम इक्क सुहाउणा, जन सन्तां

८८३
०६

ੳ੬ ੮੮੪
੦੬

दए वड्याईआ। सस्सा किले अन्दर बहाउणा, उप्पर होड़ा लगाईआ। सो पुरख निरँजण आप अख्वाउणा, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। ससा संगतां मेल कराउणा, हउमे रोग गंवाईआ। साची संगता इक्क बणाउणा, चार वरन शब्द इक्क कुड़माईआ। एका शब्द गुर मन्त्र जपाउणा, जगत विद्या ना कोई पढ़ाईआ। शस्त्र बस्त्र तन पहनाउणा, नाम गात्रा तन रखाईआ। साचे अस्व आप चढ़ाउणा, आपणी हथ्थीं तंग कसाईआ। गोबिन्द लाड़ा इक्क सजाउणा, लोकमात दए वड्याईआ। नारी कन्त आप प्रनाउणा, एका रूप समाईआ। धरत मात दी गोद सवाउणा, साचा चन्द चढ़ाईआ। ब्रह्मा शिव सेवक सेवादार सेवा लाउणा, विष्नूं वेस वटाईआ। करोड़ तेतीसा सीस झुकाउणा, सुरपति इन्द रहे सरनाईआ। दरगाह साची साचा धाम सुहाउणा, अटल महल्ल अचल्ल हरि रघुराईआ। चार दिवार ना कोई वखाउणा, छप्पर छन्न ना कोई रखाईआ। दीपक जोती इक्क जगाउणा, दहि दिशा करे रुशनाईआ। पारब्रह्म हरि आप अख्वाउणा, पुरख अबिनाश आप हो जाईआ। हरिजन साचे विच समाउणा, मेला सहिज सुभाईआ। शब्द विचोला इक्क रखाउणा, दो जहानां आवे जावे फेरा पाईआ। ओंकारा देस सुहाउणा, निरँकारा रूप वटाईआ। सुंन अगम्मो पार लँघाउणा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आत्म दरसी मेल मिलाउणा, विछड़ कदे ना जाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन एका धाम बहाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। पंज तत्त प्यार, जगत बंधाया। काम क्रोध लोभ मोह हँकार, आप उपाया। मन मति बुध कर शृंगार, तन वसाया। काया माटी अपर अपार, मन्दिर इक्क सुहाया। नाड़ बहत्तर कर उज्यार, बंधन पाया। तिन्न सौ सठ्ठ हाडी कर शृंगार, तन सजाया। रक्त बूंद अपर अपार, गर्भवास डेरा लाया। रैण अन्धेरी वेख प्रभास, बिन रसना जिह्वा गाया। पवण पवणी ना कोई स्वास, मास ग्रास ना मुख रखाया। प्रभ मिलण दी एका आस, आलस तृष्ना विच ना आया। छप्पर छन्न ना कोई निवास, मन्दिर अन्दर ना वेख वखाया। सूरज चन्न ना कोए प्रकाश, तारा मण्डल ना कोई दरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि रचना तेरी बणत बणाया। रक्त बूंद अपर अपार, काया जड़त जड़ाईआ। पंचम पंचम कर प्यार, पंचम वेख वखाईआ। पंचम पंचम कर उज्यार, पंचम मुख छुपाईआ। पंचम गल पावे हार, पंचम दए दुहाईआ। पंचम खेले खेल अपार, पंचम राह तकाईआ। पंचम गाए वारो वार, पंचम रिहा सुणाईआ। पंचम वेखे इक्क प्यार, पंचम रहे जुदाईआ। पंचम मेला इक्क भतार, पंचम रंड वखाईआ। पंचम पंचम कर वपार, पंचम झोली पाईआ। पंचम वसया आपे बाहर, पंचम विच समाईआ। पंचम वेखे पार किनार, पंचम धार रुढ़ाईआ। पंचम मेला इक्क द्वार, पंचम मुख भवाईआ। पंचम मिल्या सांझा यार, पंचम दिस ना आईआ। हरिजन तेरा इक्क प्यार,

पंचम बंध बंधाईआ। जोत सरूपी कर आकार, शब्द कटार चलाईआ। शब्द खण्डा अपर अपार, दिस किसे ना आईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां पावे सार, ढूँघी कन्दर वेख वखाईआ। पंच विकारा वढे कंडा, उठे कर कर धाईआ। तत्त विकारा खण्ड खण्डा, खण्ड खण्ड कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम दर पंचम घर पंचम पंचम राग अलाईआ। पंचम पंचम रोल, पंचम पाया। पंचम पंचम बोल, पंचम छुपाया। पंचम पंचम तोल, पंचम जणाया। पंचम बैठा बूहा खोल, जगत दुआरा इक्क रखाया। काम कामनी वसे कोल, किरती किरत कमाया। करोड़ किरत करे अनमोल, ढोल मृदंगा इक्क वजाया। लोभ मोह हँकारा ल्या फोल, एका दूजा पड़दा लाहया। त्रैगुण माया तेरा घोल, पंचम नाल कराया। शब्द सरूपी वसया कोल, अनडीठा दिस ना आया। अनहद राग सुणाए बोल, गुर मीठा शब्द अलाया। काया पड़दा देवे खोल, नाम खण्डा एका वाहया। चरन प्रीती घोली घोल, आप आपणा मूल तजाया। मक्खण छाछ लए वरोल, नाम मधाणा इक्क रखाया। काया माटी झूठा पोल, जल बिम्ब रूप दरसाया। शब्द सरूपी अन्दर मौल, मौला रूप अख्वाया। हरिजन सोए रहे अनभोल, हरि बिन सोए ना कोई जगाया। आप करन करावणहारा हरिजन चोल, जुग जुग वेस वटाया। पंच विकारा खेले होल, लाल गुलाला हथ्थ रखाया। प्रगट होए कला सोल, अकल कला समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम देवे जगत वर, वर दाता आप अख्वाया। पंचम सेवादार, सेव कमांयदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार, जगत वरतांयदा। गुरमुख वेखे विच संसार, आप आपणी दया कमांयदा। लेखे लाए हरि गिरधार, नेत्र नैणां दरस दिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दे मति आप समझांयदा। गुरमुख समझावे दे मति, तत्त आपणे हथ्थ रखांयदा। बहत्तर नाड़ ना उब्बल रत्त, तत्त मति सुहांयदा। सति सन्तोखी धीरज यति, पल्ले गंढ बंधांयदा। चरन द्वारे एका हट्ट, नीत अनीती आप वखांयदा। लोभ विकारा पए भट्ठ, सच सच्ची धार वहांयदा। मेट मिटाए नठ्ठ नठ्ठ, दिवस रैण सेव कमांयदा। आप आपणी गेड़णहारा लट्ठ, चारों कुन्ट भवांयदा। पंच विकारा गुरसिख चरनी जाए ढठ्ठ, हरि समरथ हथ्थ टिकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख आत्म लए वर, नारी कन्त रूप समांयदा। नारी कन्त कन्त कन्तूहल, गुरमुख सेज हंढाईआ। शब्द सरूपी बरखे फूल, आपणी बरखा लाईआ। आप चुकाए आपणा मूल, शब्द सिंघासण उप्पर बैठ, ना कोई पावा ना कोई चूल, ना कोई बाडी बणत बणाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता दूलो दूल, वड दूला आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे देवे वर, नाम भण्डारा इक्क वरताईआ। नाम भण्डारा इक्क अतुट्ट, जुग जुग आप रखाया। गुरमुख लाहा लैण खट्ट, हट्ट हटवाणा रिहा कराया। तन नगारे लग्गे चोट,

एका डंका रिहा लगाया। आसा मनसा कढ्ढे खोट, तृष्ना भुक्ख मिटाया। आप उठाए दया कमाए आलणिउँ डिग्गे बोट, आप आपणी गोद उठाया। मनमुख जीवां माया ममता जगत तृष्ना अजे ना भरी पोट, दिवस रैण रहे कुरलाया। हरिजन मेला जोती जोत, नूरो नूर सवाया। ना कोई वरन ना कोई गोत, बंधन बंधप कोई ना पाया। लभ्भ लभ्भ थक्के कोटी कोट, कोटन कोट फिरे हलकाया। भेखाधारी बन्नृ लंगोट, उच्चे टिल्ले फेरा पाया। गुरमुख साचे सन्त जनां एका देवे नाम धना, भाग लगाए जगत तना, सच भण्डारा इक्क भराया। नाम भण्डारा हरि दातार, एका एक रखांयदा। दाता दानी देवे देवणहार, हरिजन झोली पांयदा। धुर निशानी इक्क प्यार, सेवक सेवा लांयदा। आत्म ज्ञानी शब्द हुलार, अनहद बाणी राग अलांयदा। पवण पवणी ना पावे सार, ना कोई भेव खुलांयदा। गुरमुख साचे चतुर सुजानी लाए पार, बीड़ा आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे जगत वर, एका भिच्छया झोली पांयदा। साची भिच्छया हरि निरँकार, आत्म अन्तर आप टिकाईआ। दिवस रैण करे रच्छया विच संसार, अट्ठे पहर रहे सहाईआ। विष्नूं वंसी बण वरतार, आपणी हथ्थीं रिहा वरताईआ। ब्रह्मा वेता लिखे लिखार, लिख्या लेख ना कोई मिटाईआ। धारी केसा पावे सार, दस दस्मेसा जोत जगाईआ नर नरेसा आप निरँकार, निरगुण खेल खिलाईआ। सरगुण बन्ने साची धार, सोहँ सो जपाईआ। कालख टिक्का दए उतार, चन्दन चन्द चढ़ाईआ। दो जहानी उतरे पार, आप आपणे कंध उठाईआ। इक्क विखाए पार किनार, शौह दरया ना कोई रुढ़ाईआ। महल्ल अटल उच्च मुनार, हरि बैठा आसण लाईआ। सूरज चन्न ना कोई अवतार, तारा मण्डल ना कोई दिसाईआ। पृथ्वी आकाश ना कोए पाताल, लक्ख चुरासी ना वास रखाईआ। जल थल ना कोई पहाड़, नीर सीर ना कोई वखाईआ। पंच पंचायण ना दिसे धाड़, तट्ट हट्ट ना कोई समझाईआ। वा ना लग्गे तत्ती हाढ़, ठण्ढी धार ना कोई चलाईआ। दर द्वारे देवे वाड़, थिर घर धाम इक्क सुहाईआ। हरिजन साजन साचा लाड़, दर वेखे सहिज सुभाईआ। पुरख अबिनाशी आपे होए पिच्छे अगाड़, दो जहानां पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे जगती वर, जगत भण्डारा आप भराईआ। हरि भण्डार सदा भरपूर, जुग जुग आप रखाया। कलिजुग नाता दिसे कूड़ो कूड़, साचा मार्ग इक्क वखाया। चरन प्रीती देवे साची धूढ़, कौस्तक मणीआ मस्तक टिक्का लाया। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, अज्ञान अन्धेर मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क ध्यान इक्क ज्ञान इक्क इशनान विखाया। सच ज्ञान धर्म जैकार, गुरमुख वेख विखांयदा। नेत्र नैण वेख उग्घाड़, हरि दर्शन लोचन पांयदा। जगत विकारा आप चबाए आपणी दाहड़, नेड़ ना कोई आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, जिस जन बख्शे साचा वर, दिवस रैण दया कमांयदा। दिवस रैण दया कमाए, आप आपणी कल धारया। हरिजन साचा दर्शन पाए, अट्ठे पहर रहे खुमारया। सति सन्तोखी धीर धराए, यति सति कराए वणज वपारया। आत्म मोखी इक्क वखाए, सोहँ शब्द जै जै कारया। हउमे रोग दुःख मिटाए, फंदन फांद विच संसारया। तृष्ना भुक्ख मिटाए, अमृत आत्म जाम पया रिहा। काहना कृष्ना मुख वखाए, कवण नैण सीस जगत टिका ल्या। गोबिन्द मेला सहिज सुभाए, कल्गी तोड़ा सीस टिका ल्या। हरिजन साचे वेख वखाए, जोती शब्दी जोड़ जुड़ा ल्या। नेत्र पेख सदा बख्शाए, आप आपणा मूल चुका रिहा। लिखी रेख ना कोई मिटाए, प्रभ लेखा आपणा हथ्थ रखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अट्ठे पहर दिवस रैण हरिजन वेख वखा ल्या। गुरसिख तेरी छप्पर छन्न, जोती नूर सवाईआ। सुणे सुणाए राग कन्न, अनादी धुन वजाईआ। सृष्ट सबाई छाण पुण, हरिजन मेल मिलाईआ। आपे जाणे गुण अवगुण, दूसर भेव ना राईआ। सन्त सुहेले जुग जुग चुण, सोहँ डोरी नाल बंधाईआ। भाग लगाए साची कुल, कुलवन्ता आप अख्वाईआ। देवे नाम इक्क अनमुल्ल, नाम अनमुल्लड़ा झोली पाईआ। पूरे तोल रिहा तुल, तोलणहार आप अख्वाईआ। आदि अन्तन सदा अडुल्ल, डुल्ल कदे ना जाईआ। पारब्रह्म इक्क अभुल्ल, भुल्ल रहे ना राईआ। लोकमात दुआरा गया खुल्ह, चौदां हट्टां इक्क वखाईआ। नाम वस्त ना लाए मुल्ल, चरन प्रीती इक्क सिखाईआ। मनमुख जीवां काया बूटा गया हुल्ल, अन्तिम फल रहिण ना पाईआ। नाम नामा गए भुल्ल, मदिरा मास रसन लगाईआ। पाणी प्या काया चुल्ल्ह, अमृत आत्म हथ्थ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे साचे दर, अट्ठे पहर होए सहाईआ। आत्म घर साचा भोग, आपणा आप लगांयदा। देवणहार साची चोग, हरिजन चोग चुगांयदा। दरस दिखाए आप अमोघ, निर्मल रूप समांयदा। दो जहानी चुक्के डर चिन्ता रोग, सोग मिटांयदा। इक्क वखाए साचा जोग, सोहँ सो जाप जपांयदा। मिले वड्याई तीन लोक, चौथे पद समांयदा। पंचम गाए इक्क सलोक, एका राग अल्हांयदा। छप्पर छन्न ना देवे मोख, ना कोई पार करांयदा। लेखे लाए काया तन, राग सुणाए साचा कन्न, हरिजन आत्म गई मन्न, पुरख अबिनाशी बेड़ा बन्न, दो जहानां पार करांयदा। गुरसिख तेरी वड्याई धन्न धन्न धन्न, प्रभ सेवक सेवक सेवक सेव कमांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड देवी देवा अलख अभेवा आदि निरँजण जोत निरँजण इक्क जगांयदा। जोत निरँजण मस्तक थाल, आपणी आप टिकाईआ। गुरमुख साचा अनमुल्लड़ा लाल, आपे वेख वखाईआ। भाग लगाए काया माटी झूठी खाल, दीपक दीप करे रुशनाईआ। नेड़ ना आए काल महांकाल, जगत जंजाला नेड़ ना आईआ। फल लगाए साचे डाल्ह, फल

फुलवाड़ी मात लगाईआ। अर्जन अर्जन अर्जन हाल बेहाल, सुर ताल ताल तलवाड़ा बहत्तर नाड़ प्रभ एका एक वजाईआ। सतिगुर शब्द मलाह, आपणा आप बणाया। सृष्ट सबाई मार्ग ला, एका राह चलाया। गुरमति आप समझा, मनमति मेट मिटाया। हरिसंगत साचा मेल मिला, सच सुच्च रिहा वरताया। नाम रंगत इक्क चढ़ा, रंग मजीठी इक्क वखाया। अक्खर वक्खर इक्क पढ़ा, अजपा जाप रिहा कराया। बजर कपाटी सिल हटा, निर्मल जोत रिहा दरसाया। चौदां हट्टा खोल्ह वखा, तीर्थ तट्टां पार कराया। घट घटा रिहा समा, हर घट में आप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे भगती वर, जन आए सरनाए हरि रघुराए लेखे लाया।

❊ २३ भाद्रों २०१४ बिक्रमी इन्द्र सिँघ दे घर करोल बाग विहार होया नवीं दिल्ली ❊

भगत वछल गिरधार, आप अख्वाया। अछल अछल्ल संसार, जुग जुग करदा आया। लोकमाती लए अवतार, नित नवित्ता मेल मिलाया। राम नाम इक्क अधार, हरिजन साचे तृप्त कराया। आत्म अन्तर इक्क प्यार, चरन प्रीती रिहा सिखाया। मोहण माधव मीत मुरार, रूप अनूप दरसाया। नेत्र नैण पेखत पेख दरस अपार, कलिजुग माया मोह चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग फेरा पाया। सतिजुग साचा सतिवाद, सति पुरख वज्जी वधाईआ। त्रेता त्रीया विच विस्माद, राम रामा रूप समाईआ। द्वापर वज्जे एका नाद, काहना कृष्ना रिहा वजाईआ। कलिजुग खोजे जगत ब्रह्माद, हरि जोती जोत जगाईआ। खेले खेल अन्त आदि, जुगा जुगन्त रचन रचाईआ। भगत सुहेले सन्त साध, आपणे आप तराईआ। दिवस रैण रैण दिवस रसना जिह्वा रहे अराध, हरि गोबिन्द रसना गाईआ। जुग जुग विछड़े आपे लाध, मेल मिलावा रिहा कराईआ। सुणे सुणाए दो जहानां फरयाद, अगम्म अगम्मड़ा वेख वखाईआ। शब्द जणाए बोध अगाध, भेव कोए ना पाईआ। धुरदरगाही साची दाद, हरिजन साचे झोली पाईआ। मेट मिटाए वाद विवाद, जगत विकार रहिण ना पाईआ। धुन वजाए आत्म नाद, अनहद सेवा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वेख वखाईआ। वेखणहार हरि समरथा, सर्बकला भरपूरा। जन हरि रक्खे दे कर हथ्था, जगत नाता आप वखाए कूड़न कूड़ा। लहिणा देण चुकाए मस्तक मथ्थाा, मूर्ख मूढ़ी बख्शे चरन धूढ़ा। सगल वसूरा हरिजन लथ्था, दरसन पाए जोती नूरन नूरा। नाम जणाए इक्क अकथा, अट्ठे पहर रसना जिह्वा सति सरूरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला इक्क दर, वेख वखाए नेरन दूरा। नेरन दूर हर घट अन्दर, बैठा सेज हंढाईआ। काया माटी साचा

मन्दिर, इष्ट देव शब्द जणाईआ। आपे तोड़नहारा जन्दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। भाग लगाए डूँघी कन्दर, निर्मल जोती दीप जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे एका दर, दरस दुआरा इक्क वखाईआ। दस्म द्वारी सच महल्ला, एका एक रखाया। पुरख अबिनाशी बैठ इकल्ला, सच सिंघासण डेरा लाया। शब्दी जोती आपे रल्ला, जोती रूप समाया। अमृत धारा नीर वहाए ठांढा जला, सर सरोवर इक्क भराया। हरिजन दरस दिखाए घड़ी घड़ी पल पला, अट्ठे पहर सेव कमाया। पवण सरूपी पक्खा झल्ला, सांत सति वरताया। पंच विकारा करे हल्ला, दुष्ट दुष्ट मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे साचे घर, घर साचा इक्क विखाया। साचे घर हर घट मन्दिर, ऊँचो ऊँच मुनारया। चढ़ चढ़ थक्के गोरख मच्छन्दर, दिस ना आए पार किनारया। गुरमुख साचे सन्त सुहेले दर दुआरा इक्को मंगण, दोए जोड़ चरन सरन निमस्कारया। नाम बसन्ती काया चोली चाढ़े रंगन, उतर ना जाए विच संसारया। एका शब्द तन शृंगार कराए साचा अंगन, बस्त्र शस्त्र इक्क पहना रिहा। चरन धूढ़ कराए माघी मजन, दुरमति मैल मिटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साजन मीत वेख घर, जगत दुआरा इक्क सुहा ल्या। बंक दुआरा दर दरवेश, एका एक रखाया। आपे जाणे रिखी केश, जगतेश्वर रूप वटाया। दाता दानी दस

८८६ ०६ दस्मेस, दुर्गा अष्टमी इष्ट सबाया। दो जहानी नर नरेश, रामा वशिष्ट आप अख्वाया। आपे जाणे आपणे वेस, काहना ८८६ ०६

कंसा मेट मिटाया। कलिजुग अन्तिम अल्लड़ वरेस, बाली बाल वेख वखाया। गोबिन्द काया हरि प्रवेश, नरायण नर अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख दर, आवण जावण खेल खिलाया। हरिजन साजन साचा मीता, एका एक रखांयदा। एका शब्द ध्याए अठारां गीता, अक्खर वक्खर इक्क पढ़ांयदा। सुरत सवाणी साची सीता, राम रमईआ आप प्रनांयदा। राधा राधका रहे अतीता, काहना बंसरी इक्क वजांयदा। नाम निरँजण पतित पुनीता, एका मुकट सीस टिकांयदा। आपे जाणे आपणी रीता, कँवल नैण वेख वखांयदा। हरिजन जन हरि मानस देही जुग जुग जीता, भगत भगवन्ती भगत कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला इक्क घर, इक्क इकेला रूप वटांयदा। इक्क इकल्ला हरि निरँकार, अकल कला समाया। भगत सुहेला मीत मुरार, जुग जुग वेखण आया। खेले खेल अपर अपार, भेव किसे ना पाया। पढ़ पढ़ थक्के जीव गंवार, पारब्रह्म अबिनाशी हथ्थ किसे ना आया। चढ़ चढ़ थक्के कोटन कोटी कोट द्वार, अन्दर मन्दिर अचल्ल अटल निहचल धाम दरसन कोए ना पाया। गुरमुख विरले गुर चरन प्रीती कर प्यार, एका दूजा भउ निवार, तीजे लोइण दरस घर चौथे आप समाया। पंचम मेला कन्त भतार, एका धुन सच्ची

धुन्कार, राग मंगल एका इन्द्र सिँघ सुणाया। सुणे सुणाए सुणनेहार, हरिजन साचे कर प्यार, वेख वखाए अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर, पड़दा उहला रिहा चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेखे दर, दर दरवेश फेरा पाया। दर दरवेस हरि भगवन्ता, भेखी भेख वटांयदा। मंगण मंग ब्रह्मा विष्न महेषा, गणपति भिछक भिच्छया एका पांयदा। कोटन कोट धारी केसा, दर दर आप फिरांयदा। मूंड मुंडाए ना जाए पेशा, जगत जगदीसा ना कोई मनांयदा। अगम्म अगम्मा आपे जाणे आपणा वेसा, अलख निरँजण भेव अभेदा अछल अछल्ल आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेख साचा घर, घर बाहरा इक्क सुहांयदा। साचा घर दर दरबार, हरि जोती नूर सवाईआ। एका शब्द सच्ची धुन्कार, धुन अनादी इक्क वजाईआ। अनहद सेवा सेवादार, दिवस रैण रिहा गाईआ। नाम किंग ताल तलवाड़, रिहा वजाईआ। खिच्ची जाए वारो वार, नाड़ बहत्तर रिहा हिलाईआ। आत्म सेजा कर श्रृंगार, हरि आपणी सेज विछाईआ। जोती नूर अपर अपार, बैठा आसण लाईआ। भेव ना पाए जीव गंवार, नेत्र नैण ना दर्शन पाईआ। गुरमुख विरला सन्त दुलार, दर बैठा सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आप आपणे गले लगाईआ। एका मेला कन्त भतार, नारी कन्ता आप अख्वाईआ। साची सेजा अपर अपार, आप आपणी रिहा हंढाईआ। पूत सपूता कर त्यार, सति पुरखा राह तकाईआ। सुन अगम्मो करया पार, एका धाम सुहाईआ। सोहँ सो देस अपार, हरि साची बणत बणाईआ। किला कोट ना कोई द्वार, दर दरबान दिस ना आईआ। राउ रंक ना कोई राजान, शाह सुल्तान रहिण ना पाईआ। जंगल जूह ना कोई उजाड़ पहाड़, जल थल दिस ना आईआ। राग ताल धुन ना कोई धुन्कार, जगत ताल ना कोई वजाईआ। माया मोह ना कोई धन माल, ना कोई लशकर फौज शाहीआ। पुत्तर धी ना बाल अञ्जाण, मात पित ना कोई दिसाईआ। साक सज्जण ना बिरध जवान, एका दूजा नाता ना कोई बंधाईआ। इक्क इकल्ला श्री भगवान, बैठा जोत जगाईआ। जन भगतां वखाए नाम निशान, जुग जुग अटल रखाईआ। हँ हँगता कर कुरबान, हरि हरि जी विच समाईआ। सोहँ अक्खर कर प्रधान, प्रभ आपणी बणत बणाईआ। कलिजुग तेरा अन्त वेख निशान, लोकमात करे रुशनाईआ। साधां सन्तां देवे दान ब्रह्म ज्ञान, पूजा पाठ ना कोई रखाईआ। रसना हरि हरि जो जन गाण, घर साचे मेल मिलाईआ। सतिजुग तेरी सच दुकान, चौदां लोकां आप खुल्हाईआ। ब्रह्मा विष्नूं शिव मंगण दान, अग्गे बैठा झोली डाहीआ। करोड़ तेतीसा बाल नादान, सुरपति राजा इन्द रो रो दए दुहाईआ। पुरख अबिनाशी मार ध्यान, दे मति रिहा समझाईआ। धुर दरगाही इक्क फ़रमान, लोआं पुरीआं करे जणाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी करे परवान, सत्तां दीपां जै जै जैकार कराईआ। भगत जनां हरि

देवे दान, दूसर हथ्थ किसे ना आईआ। गुरमुख साचे चतर सुजान, आत्म इच्छया इक्क रखाईआ। मेल मिलावा हरि गोबिन्द साचे काहन, नाम नईआ इक्क चढ़ाईआ। रसना चिल्ला तीर कमान, पंचम मेट मिटाईआ। शब्द विखाए सच बिबान, धुरदरगाही डेरा लाईआ। आप चुकाए आवण जाण, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। राए धर्म सुण निधान, हरि साचे शब्द जणाईआ। गुरमुख साचे बाल अंञान, प्रभ आपणी गोद उठाईआ। लाड़ी मौत ना वेखे मार ध्यान, मुख घुंगट बैठी मुख छुपाईआ। दूत दुष्ट सर्ब कुरलान, सोहँ खण्डा आप विखाईआ। दर दुआरा इक्क नर हरि श्री भगवान, दिवस रैण कुण्डा रिहा लाहीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनां धुर दरगाह शब्द सरूपी बण मलाह, आप आपणे धाम बहाईआ।

हरि धन नाम सुग़ात, प्रभ आपणे हथ्थ रखाईआ। जुग जुग देवे दानी दात, देवणहार अख्वाईआ। मंगे मंग धरत मात, रो रो नेत्र नैण नीर वहाईआ। कलिजुग होई अन्धेरी रात, चारों कुन्ट अन्धेरा छाईआ। सच ना दिसे कोई प्रभात, साचा चन्न ना कोई वखाईआ। रवि ससि ना दिसे कोई प्रताप, पारब्रह्म ना कोई गाईआ। दहि दिश खेल नटूआ नाट, जगत नाटक रिहा वखाईआ। नाम वस्त ना मिले किसे हाट, गुर दर मन्दिर वेख वखाईआ। आत्म सेज ना दिसे कोई खाट, पलँघ रंगीला ना कोई विछाईआ। आत्म रस ना लए कोई चाट, रसना जिह्वा होई हलकाईआ। भव जल पार ना करे कोई घाट, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ दए दुहाईआ। जूठ झूठ मारे ठाठ, आप आपणी धार वहाईआ। कलिजुग काया अग्नी काठ, शब्द मेघ ना कोई बरसाईआ। आपे गेड़नहारा उलटी लाठ, भेखाधारी भेख वटाईआ। आत्म अन्तर ना कोई पूजा पाठ, तिलक लिलाट ना कोई लगाईआ। पल्ले दिसे ना नाम गाठ, चारों कुन्टां खाली आप कराईआ। गुरमुख विरले मिल्या एका नाम हाठ, सति सन्तोख धीर धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देवे नाम वर, वड भण्डारा इक्क रखाईआ। नाम सुगात सच सुगंध, एका एक वरतांयदा। जो जन गाए बत्ती दन्द, परमानंद समांयदा। दूई द्वैती ढाहे कंध, निजानंद वखांयदा। जोत निरँजण चाढ़े चन्द, दीपक इक्क विखांयदा। खुशी कराए बन्द बन्द, पंचम मेट मिटांयदा। राग सुणाए सुहागी छन्द, सोहँ सो नाउँ रखांयदा। लक्ख चुरासी तोड़े फंद, आवण जावण गेड़ कटांयदा। सर्ब जीआं आपे बख्शिंद, बख्शणहार आप हो जांयदा। मनमुख जीव भागां मन्द, नेत्र नैण ना दरसन पांयदा। रसन लगाया मदिरा मास गन्द, सुरत शब्द ना कोए मिलांयदा। बजर कपाट ना खुल्ल्हे जंद, नाम कुंजी ना कोई रखांयदा। माया ममता कीना अन्ध, दृष्ट इष्ट ना वेख विखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दर सुहांयदा।

नाम भण्डार हरि वरतंता, एका आदि जुगादया। मेल मिलाए साजन सन्ता, खोज खुजाए वड्ड ब्रहमादया। काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता, शब्द धुन वजाए नाद अनाहद नादया। तोड़े गढ़ हउमे हँगता, सति सति सतिवादया। दर भिखारी जो जन मंगता, देवे नाम धुर दी दादया। गुण अवगुण ना जाणे जीव जन्ता, इक्क जणाए बोध अगाध्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे नाम वर, दिवस रैण रहे अराध्या। नाम भण्डार हरि अनमुल्ला, एका एक रखाया। आपणे तोल आपे तुला, तोलणहार आप हो आया। गुरमुख विरला चरन प्रीती घोल घुला, हउँ घोली घोल घुमाया। माया ममता मोह विच ना रुल्ला, काया चोली भरम ना राया। काया बूटा मात ना हुल्ला, फल वेखे डाल्ह सबाया। भाग लगाए आपणी कुला, कुलावन्त जीव जिस गाया। दर द्वारे जो जन आए भुल्ला, नाम नामा झोली पाया। सच दुआरा आदि जुगादि जुग जुग खुल्ल्हा, ना कोई सके बन्द कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे नाम वर, वर घर एका रिहा सुहाया। पाया नाम हरि अतुट, तोट रहे ना राईआ। लक्ख चुरासी जाए छुट्ट, हरि बन्द बन्द कटाईआ। पंच विकारा ना सके लुट्ट, नाम खण्डा इक्क विखाईआ। अमृत आत्म प्याए साचा घुट्ट, अट्ठे पहर खुमार कराईआ। तीर निराला रिहा छुट्ट, रसना चिल्ले आप चढ़ाईआ। मनमुख जीवां जड़ देवे पुट्ट, जिउँ रामा रावण खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, भेखाधारी वेस वटाईआ। भेस अवल्ला हरि इकल्ला, जुग जुग करदा आया। धरत मात तेरा इक्क महल्ला, हरि साचा दए वसाया। नौ खण्ड पृथ्वी पाए तरथल्ला, सत्तां दीपां दए हिलाया। ब्रह्मा शिव दर द्वारे खल्ला, विष्नूं वंसी सीस झुकाया। करोड़ तेतीसा बोले थला सुरपति राजा इन्द संग रलाया। वेख वखाए जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ां डेरा लाया। दीपक जोत गुरमुख विरले मस्तक थाल बल्ला, अज्ञान अन्धेर मिटाया। धुरदरगाही शब्द सुनेहड़ा एका घल्ला, जुग जुग रिहा सुणाया। मनमुख भुलाए कर कर वल छल्ला, अछल अछल्ल भेव ना राया। ना कोई मेटे दूई द्वैती सल्ला, एका दूजा ना भेव चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे नाम वर, एका रंगण तन चढ़ाया। रंगे रंग काया चोली, हरि एका रंग चढ़ांयदा। पंच विकारा होए घोल, सेवक सेवादार करांयदा। सोहँ अक्खर सतिजुग तेरा साचा बोल, चार वरनां आप जणांयदा। जगत भण्डारा आपे खोल्ह, दो जहानां आप वरतांयदा। एका कंडे रिहा तोल, राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान एका धाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां देवे नाम वर, एका मंगण मंग मंगांयदा। मंगे मंग नाम प्रभात, सच सुच्च वड्याईआ। बैठा रहे इक्क इकांत, दिवस रैण ना कोए जणाईआ। आत्म अमृत देवे बूंद स्वांत, भर प्याला

इक्क प्याईआ। जन भगतां पुच्छे जुग जुग वात, आप आपणी जोत जगाईआ। आपे पिता आपे मात, आप आपणी गोद उठाईआ। चरन कँवल एका सच्चा नात, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। लेखा चुक्के ज़ात पात, वरन बरन रहिण ना पाईआ। वेख वखाए दीप सात, नौ खण्ड पृथ्वी इक्क दुहाईआ। सोहँ शब्द चलाए साची गाथ, अक्खर वक्खर आप पढ़ाईआ। नाथ त्रैलोकी आप चलाए आपणा राथ, रथ रथवाही आप अख्वाईआ। भगत जनां हरि सगला साथ, साचा संग निभाईआ। जिउँ रामा घर दसराथ, दहिसर बाणां नाल घाईआ। काहना कृष्ना त्रिलोकी नाथ, अर्जन गीता इक्क सुणाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे मार झात, चारों कुन्ट रैण अन्धेरी छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क रखाए नाम वर, चार वरनां एह समझाईआ। चार वरन इक्क ज्ञान, हरि साचा आप दृढ़ांयदा। रूसा चीना वेख जपान, शाह इंगलिस्तान आप हिलांयदा। नाम फरंगी कढ्ढे तेज किरपान, चारों कुन्ट चलांयदा। मंगण मंग एका मंगी, ईसा मूसा झोली डांयदा। चार यार कंड नंगी, संग मुहम्मद मुख छुपांयदा। सदी चौधवीं जाए लँघी, ना कोई धीर धरांयदा। राए धर्म दर द्वारे मंग मंगी, दोए जोड़ सीस झुकांयदा। लाड़ी मौत सीस वाहे कंघी, तन श्रृंगार करांयदा। धरत मात चुन्नी लाल रंगी, पल्लू आपणे हत्थ विखांयदा। सम्मत पन्दरां तेरी रुत्त लग्गे चंगी, प्रभ ख़ुशीआं मात मनांयदा। आप उठाए शाह फरंगी, मक्का मदीना वेख वखांयदा। भगत जनां हरि साचा संगी, दे मति आप समझांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका नाम गुण निधान, मार ध्यान दो जहान, सोहँ सो दुरमति मैल धो, हरि बिन अवर ना को, जन भगतां झोली पांयदा। रघुबर हरि रघुनाथ, रघुवंस आप अख्वाया। जुग जुग सगला साथ, जन भगतां संग निभाया। आप आपणा चलाए राथ, रथ रथवाही इक्क अख्वाया। लेखा लेख लिखाए मस्तक माथ, कौस्तक मणीआ टिक्का इक्क लगाया। मेल मिलावा त्रैलोकी नाथ, लोआं पुरीआं विच समाया। लहिणा देणा चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथ, लक्ख चुरासी फंद कटाया। सोहँ शब्द कलि साची गाथ, हरिजन रसना जिह्वा दन्द बत्तीसा एका गुण वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन प्रीती साची रीती नाम वस्त झोली इक्क भराया।

✻ २४ भाद्रों २०१४ बिक्रमी रेशम सिँघ दे गृह मेरठ छाउँणी ✻

सति पुरख सतिवाद, सति समाया। खेले खेल आदि जुगादि, जुग जुग खेल खिलाया। ब्रह्मा विष्न शिव रहे अराध, दिवस रैण रसना गाया। करोड़ तेतीसा वजाए नाद, सुरपति राजा इन्द संग रलाया। नौ खण्ड पृथ्वी शब्द जणाए बोध

अगाध, हरि एका एक रखाया। सन्त सुहेले मात लाध, आप आपणी दया कमाया। धुन वजाए आत्मक साचा नाद, अनहद सेवा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणा वेस वटाया। आदि पुरख अनाद, एका एकँकारया। शब्द जणाए बोध अगाध, लोआं पुरीआं पावे सारया। जन भगतां देवे साची दाद, लक्ख चुरासी वेखे खेल न्यारया। कोटन कोट जीव जन्त साध सन्त रहे अराध, दिस किसे ना आ रिहा। अगम्म अगम्मा मोहण माधव माध, केशव रूप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाया। वेस वटाया हरि अगम्मा, आपणी जोत जगाया। थिर घर वसाए सच महल्ला, छप्पर छन्न ना कोई रखाया। ना कोई गंगा गोदावरी दिसे जला, अठ्ठ सठ्ठ दिस ना आया। गुरदर मन्दिर मस्जिद पैणा ना कोई मुल्ला, हवनी हवन ना कोई कराया। तीर तलवार ना कोई ढाला, अस्त्र शस्त्र ना कोए सजाया। पारब्रह्म अबिनाशी सच सिँघासण एका बैठा मल्ला, आप आपणा रिहा उपाया। जोती शब्दी आपे रल्ला, दर साचा इक्क सुहाया। धाम दिखाए इक्क इकल्ला, ऊँचो ऊँच सुहाया। जुग जुग शब्द संदेश लोकमात घल्ला, राम रामा रूप वटाया। आप आपणा करे कराए लक्ख चुरासी हल्ला, ब्रह्मा वेता वेद विदान भेख वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग जोती भेख कर, लोकमात मार झात, आप आपणा खेल खिलाया। सतिजुग त्रेता पार कर, द्वापर वज्जे वधाईआ। रामा कृष्ना मेल हरि, एका धाम सुहाईआ। कलिजुग अन्तिम वेस कर, अकल कला वरताईआ। नानक गोबिन्द टेक नर, दिवस रैण रिहा गाईआ। संग मुहम्मद चार यार मंगण दर, दोए जोड़ बैठे सीस झुकाईआ। पारब्रह्म प्रभ किरपा आपणी रिहा कर, शब्द वस्त दस्त फड़ाईआ। प्रगट होए विच संसार, कलिजुग अन्तिम दए वधाईआ। चार वरन सुहाए इक्क द्वार, बंक दुआरा इक्क खुल्हाईआ। राउ रंक प्रभ इक्क कर, राज राजानां शाह सुल्तानां ख़ाक रलाईआ। सृष्ट सबाई वेख हरि, नौ खण्ड पृथ्वी आप हिलाईआ। सत्तां दीपां देवे वर, पुरीआं लोआं करे कुड़माईआ। निहकलंका नाउँ धर, गुर गोबिन्दा मेल मिलाईआ। शब्द खण्डा हथ्थ फड़, चारों कुन्ट दहि दिशा आप वखाईआ। रवि ससि रहे डर, धरतमात रही कुरलाईआ। तीर निराला निशाना मारे हरि, आपे मेट मिटाईआ। किला तोड़ तुड़ाए हँकारी गढ़, थिर रहिण ना पाईआ। आप आपणी बूझ बुझाई ना कोई सीस ना कोई धड़, पंज तत्त दिस ना आईआ। हड्ड मास नाड़ी ना कोई नड़, रक्त बूंद ना कोई सुहाईआ। ना कोई चोटी ना कोई जड़, भेव अभेदा भेव छुपाईआ। लक्ख चुरासी नाल रिहा लड़, आपे मेटे आपे लए मिलाईआ। सन्त सुहेले आत्म अन्दर लए फड़, आप आपणा राह वखाईआ। ना मरे ना जाए सड़, आप आपणा रिहा सुहाईआ। जन भगतां फड़ाए आपणा लड़, एका पल्लू नाम रखाईआ। कलिजुग तेरी

काली धार वहे हढ़, कलिजुग रिहा वहाईआ। त्रैगुण माया जाणी सड़, ब्रह्मा रो रो नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा वेख वखाईआ। आप आपणा वेख हरि करतार, आपणी कल वरतांयदा। चौथे जुग पावे सार, महांसार्थी आप अख्वांयदा। वेद अथर्बण पावे सार, पार किनार ऐड़ा अल्ला मुख छुपांयदा। चारों कुन्ट हाहाकार, संग मुहम्मद आप कुरलांयदा। ईसा मूसा ख़बरदार, लिख्या लेख इक्क सुणांयदा। गुर गोबिन्दा कर प्यार, आप आपणी सेवा लांयदा। आत्म चिन्ता दए निवार, बजर कपाटी जिंदा आप तुड़ांयदा। साची बूंद अमृत आत्म धार, कर किरपा आप पिलांयदा। बन्द कवाड़ा खोल्ह द्वार, आत्म सेज फोल फुलांयदा। कलिजुग वेखे नार रंडा, कन्त सुहाग ना कोई हंढांयदा। पंज विकारा खंन खंन, आप आपणी वंड वंडांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क वखाए सोहँ शब्द, साचा डण्डा इक्क रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत तेरां वेख घर, घर साचे जोत जगांयदा। जगत स्यास अन्ध अन्धेर वेख प्रभास, अन्त रहिण ना पाईआ। पंडत पांधे वेखण मार ध्यान, रो रो देण दुहाईआ। पढ़ पढ़ थक्के अञ्जील कुरान, मुल्ला शेख़ रहे शरमाईआ। ग्रन्थी पन्थी सर्ब कुरलान, गुर गोबिन्द दिस ना आईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वेख दुकान, जूठ झूठ हट्ट खुल्हाईआ। चौथे जुग सर्ब कुरलान, मनमति दए दुहाईआ। लोभ मोह हँकारा सर्ब पछतान, काम क्रोध करे चढ़ाईआ। पुरख अबिनाशी खेले खेल महान, आप आपणी जोत जगाईआ। चार वरन देवे जिया दान, आत्म ब्रह्म जणाईआ। ब्रह्म विद्या इक्क बलवान, लिखण पढ़न विच ना आईआ। ना कोई जाणे पंज तत्त शब्द महान, ना कोई पंचम राग अल्हाईआ। इक्क इकल्ला श्री भगवान, वेख वखाए सृष्ट सबाईआ। जंगल जूह उजाड़, पहाड़ डूँघी कन्दर वेखे मार ध्यान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आपणी धार रिहा चलाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, एका धार चलांयदा। राज राजानां करे ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पांयदा। सृष्ट सबाई पावे सार, तीर निशाना इक्क लगांयदा। रसना चिल्ला तीर कमाना, खेले खेल श्री भगवाना, गोबिन्द मेल मिलांयदा। आपे होए जाणी जाणा, दो जहानां करे पछाना, वेखणहार आप अख्वांयदा। गुरमुखां बख़्शे चरन ध्याना, जोत प्रकाश कोटन भाना, जन भगतां कराए साचा मजन, एका माघ करांयदा। मनमुख भुल्ले जीव नादाना, हथ्थ ना आए धुरदरगाही नाम निशाना, ना कोई वेख वखांयदा। राधा कृष्न ना कोई वखाना, राम रमईआ भेव ना पाना, दुर्गा अष्टमी ना कोई सीस झुकांयदा। ना कोई वेखे शास्त्र वेद पुराणा, खाणी बाणी होए हैराना, अञ्जील कुरानां वेख वखांयदा। गुर गोबिन्द होए हैराना, नानक वेखे जगत तमाशा, आप आपणा भेव मिटांयदा। पुरख अबिनाशी सर्ब गुणतासा, कलिजुग

तेरे आत्म अन्तर करे वासा, आप आपणा नाउँ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक गोबिन्द मेल दर, एका रंग समांयदा। एका एक एकँकार, एका रूप समाईआ। जोती शब्दी कर प्यार, पवण पवणी समाईआ। सत्तवें घर वसया आप, छेवें छप्पर देवे पाड़, शब्दी वेख विखाईआ। पंचम मेला हरि मेहरवान, पवण स्वासी नाल रलाईआ। चौथा घर पद निरबाण, आप आपणा कुण्डा लाहीआ। सन्त सुहेले कर परवान, एका शब्द जणाईआ। सोहँ सो हरि प्रधान, अजपा जाप चलाईआ। एका दूजा वेख विखान, तीजा नेत्र खोल्ह वखाईआ। ना कोई राज जोग रसना भोग विच जहान, पंचम तत्त दिस ना आईआ। बहत्तर नाड़ ना उब्बल रत, बुध मन मति रही शरमाईआ। जन भगतां रक्खे दे कर हथ्थ, आप आपणा दर बुझाईआ। तीजे घर हरि सरमथा, आप आपणी बूझ बुझाईआ। पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला सृष्ट सबाई जाए मथ्था, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। सन्त सुहेले लए रक्ख, आप आपणा दरस दिखाईआ। सतिजुग तेरी इक्क चलाए साची गथ, साची धार वहाईआ। सोहँ शब्द बणाए मात रथ, रथ रथवाही आप अख्वाईआ। लक्ख चुरासी पाए नत्थ, एका शब्द डोरी हथ्थ उठाईआ। भगत जणाए अकथना अकथ, कथ ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण खेल कर, खेलणहार आप अख्वाईआ। निरगुण खेल अपार, हर घट समाया। सरगुण बन्न्हे धार, निरगुण वेख वखाया। दोहां विचोला इक्क प्यार, हरि शब्दी शब्द जणाया। आदि निरँजण आदि शक्त, वेख वखाए साचा भगत, हरिभगतन सेवा लाया। ना कोई बूंद ना कोई रक्त, पिता पूत ना कोई अख्वाया। ना कोई बणाए साची बणत, साचे सन्त कवण उपाया। एका एक बन्न्हे चरन प्रीती साचा नत्त, साचा सुत ना कोई उपजाया। राम रामा घर दसरथ, आपे कृष्ना रूप वटाया। कलिजुग अन्तिम देवे साची वत्थ, भेखाधारी आपणा भेख वटाया। सगल वसूरे जायण लथ्थ, जो जन सरन सरनाया। कलिजुग तेरा लहिणा देण चुकाए साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, दर घर रहिण ना पाया। गुर दर मन्दिर मस्जिद जाणे ढठ्ठ, थिर रहिण ना पाया। कलिजुग उलटी गेड़े लट्ठ, तीर्थ तट्ट दिस ना आया। गंगा गोदावरी रही नठ्ठ, शिव शंकर सीस विखाया। प्रभ चरन द्वारे इक्क इक्ठ, बीस बीसा रिहा कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सर्बकला आपे समरथ, कलिजुग कल रिहा वरताया। कलिजुग कल हरि वरता, आपणी कीमत चुकाईआ। लहिणा देणा दए चुका, जुग जुग आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। जन भगतां देवे नाम जिया, अजपा जाप इक्क रखाईआ। एका दूजा भउ चुका, तीजे नैण दरस दिखाईआ। चौथे घर जाए समा, पंचम मेल मिलाईआ। छेवें छप्पर छन्न ना कोई रखा, सत्तवें सति पुरख जाए समाईआ। अठ्ठां तत्तां वसे बाहर, नौ दर सृष्ट सबाई भुलाईआ। दसवें बैठा बेपरवाह, आत्म

सेजा आसण लाईआ। दीपक जोती इक्क जगा, जोत निरँजण सेवा लाईआ। पंज तत्त लए जगा, ताल तलवाड़ा इक्क वजाईआ। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द आपे गा, गोबिन्द विच समाईआ। गुरमुख साचा मेल मिला, जोती जोत समाईआ। एका जोती हरि अख्वा, आप आपणा राह तकाईआ। सुन्न अगम्मो पार करा, ओंकारा देस सुहाईआ। निरँकारा वेखे साचा थाँ, सति पुरखे संग मिलाईआ। नानक भिच्छया मंगे अग्गे कर कर बांह, दोवें बैठा सीस झुकाईआ। कबीरे लाई ठण्ढी छाँ, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। आपे होए हरि सहा, आपणी कीमत अपणे हथ्थ रखाईआ। एका मन्त्र नाम द्रृढ़ा, गुर नानक दए वधाईआ। सतिनाम साचा जाप पढ़ा, लोकमात रिहा वखाईआ। साचा टिक्का मस्तक एका ला, कौस्तक मणीआ जोत जगाईआ। नानक निरगुण रूप समा, सरगुण खेल खिलाईआ। चार वरनां वेख वखाणे एका राह, राउ रंकां ऊँचां नीचां एको थाँ आपणी करे पढ़ाईआ। पंडत पांधे रिहा समझा, एका नाअरा लाईआ। चारे कुन्टां फेरी पा, अन्तिम गया मुख छुपाईआ। गुर अंगद आपणे अंग लगा, लहिणा लहिणे झोली पाईआ। अमरदासे सेवा ला, रामदासे जोत जगाईआ। गुर अर्जन लेखा लेख लिखा, हरि बाणी आप जणाईआ। हरि गोबिन्दे अस्व आप चढ़ा, एका खण्डा हथ्थ फड़ाईआ। हरिराए जपाए एका नाँ, निरगुण विच समाईआ। हरिकिशन हरि गया समा, बाल बाला लेखे लाईआ। गुर गोबिन्द तेरी छाँ, जीआं जन्तां होए सहाईआ। गुर गोबिन्दा फड़े पुरख अबिनाशी तेरी बांह, लोकमात मंग मंगाईआ। एका वेखे साचा नाँ, एका अक्खर नाउँ रखाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा कर, एका दित्ता नाम वर, आप आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर शब्दी शब्द जणाईआ। गुर गोबिन्दे शब्द संदेशा, एका एक सुणाया। आपे नर आप नरेशा, सच सुल्ताना आप अख्वाया। जोत सरूपी कर प्रवेशा परमानंद समाया। गुर गोबिन्द करे अदेसा, दोए सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द लेख लिखाया। गुर गोबिन्द बाल अञ्जाणा, दे मति आप समझांयदा। हरि नर पुरख शाह सुल्तानां, एका घर वखांयदा। खेले खेल वाली दो जहानां, कलिजुग सतिजुग वेख वखांयदा। शब्द जणाए धुर फ़रमाना, आपणा आप जणांयदा। हथ्थीं बन्न्हे एका गाना, दिस किसे ना आंयदा। साचा शब्द तीर निशाना, रसना चिल्ले आप चढ़ांयदा। गोबिन्द काया खेल महाना, गोबिन्द साची सेव कमांयदा। आपे होया दानी दाना, देवणहार आप अख्वांयदा। चरन धूढ़ बख्शे इशनाना, लोकमात आप करांयदा। पंचम मीता पंच प्रधाना, पंचम रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि गोबिन्द देवे वर, एका मति तत्त समझांयदा। मति तत्त इक्क अकाल, गोबिन्द रूप जणाईआ। सर्बकला आपे समरथ, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। शब्द जणाए अकथना अकथ,

लिख्या लेख ना कोई मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द मेले सहिज सुभाईआ। गोबिन्द मेला हरि गोबिन्द, गोबिन्द रंग रंगाईआ। आप मिटाए सगली चिन्द, एका एक धाम सुहाईआ। मिल्या शाह दाता मृगिन्द, सच सुल्तान इक्क सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे देवणहारा वर, वर दाता आप अख्वाईआ। देवे वर देवणहार, गोबिन्द दया कमांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणी नईया चलांयदा। वेद अथर्बण जाए हर, ऐड़ा अक्खर इक्क पढ़ांयदा। त्रैगुण माया जाए सड़, पंच तत्त रहिण ना पांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी एका गढ़, पुरख अबिनाशी आप बणांयदा। भगत जनां हरि अन्दर वड़, गुर गोबिन्द मेल मिलांयदा। दस्म द्वारी चोटी चढ़, सुन्न अगम्मो वेख वखांयदा। सोहँ अक्खर एका पढ़, एका घर सुहांयदा। पंच विकारा रिहा सड़, कलिजुग काली धार वहांयदा। आप उखेड़े लग्गी जड़, लोकमात आप लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि गोबिन्द रूप समांयदा। कलिजुग तेरा अन्त किनारा, हरि साचे जोत जगाईआ। शब्द खण्डा तेज कटारा, आपणे हथ्थ उठाईआ। सम्मत चौदां पहली वारा, मन मति बुध रिहा लड़ाईआ। सम्मत पन्दरां वेख विखारा, धरत मात खेल खिलाईआ। संग मुहम्मद चार यारा, ईसा मूसा वेख वखाईआ। चारों कुन्ट हाहाकारा, ना कोई होए सहाईआ। जगत स्यासत आए हारा, शाह सुल्तान बैठण मुख छुपाईआ। सम्मत सोलां सतारां हाढ़ा, खेले खेल हरि रघुराईआ। लग्गे अग्ग बहत्तर नाड़ा, लुकया कोई रहिण ना पाईआ। आप चबाए आपणी दाढ़ा, आप आपणा भेख वटाईआ। राए धर्म वेखे साचा लाड़ा, लाड़ी मौत करे कुड़माईआ। पंचम जेठ शुभ दिहाड़ा, लोकमात सगन मनाईआ। धरत मात तेरा इक्क अखाड़ा, प्रभ साचा रिहा बणाईआ। आप उठाए अगम्मी धाड़ा, गुर गोबिन्दा सेवा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आपणा नाम लिखाईआ। निहकलंक नरायण नर, नैण मुँधार आप अख्वाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी सुहाए एका राह, सत्तां दीपां धार बंन्हाईआ। सन्त सुहेले साचे सज्जन, चरन धूढ़ कराए मजन, दुरमति मैल गंवाईआ। अनहद ताल नगारे काया मन्दिर वज्जण, साचा गुरुदुआरा धाम सुहाईआ। गढ़ हँकारी भाण्डे भज्जण, माण ताण रहिण ना पाईआ। जन भगतां रक्खणहारा लजण, भगत वछल हरि रघुराईआ। दो जहानी आया पर्दे कज्जण, शब्द दुशाला इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, राष्ट्रपति रिहा समझाईआ। राष्ट्रपति जगत नादान, प्रभ साचा आप उठांयदा। अस्सू तिन्न वेख मार ध्यान, लिख्या लेख दर पुचांयदा। लोकमात आई हान, आत्म छुट्टणा पीण खाण, दानी दान ना कोई करांयदा। राग संगीत ना कोई जहान, हित चित हरि भगवान, एका एक वखांयदा। खाणी बाणी मार ध्यान, पंडत पांधे सारे गाण, नेत्र

नैण दरस दिखांयदा। नाल रलाए मन्त्री प्रधान, इक्क सलाह करांयदा। आपे होया जाणी जाण, भेव कोई ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आप आपणा वेख वखांयदा। निहकलंक नरायण नर, अकल कल वरताया। लोकमाती जोत धर, वेखे खेल नर हरि सृष्ट सबाया। देस प्रदेसां लाहे डर, आप आपणा वेस वटाया। सम्मत पन्दरां चरन धर, लंका गढ़ दए सुहाया। पन्दरां कत्तक मिले वर, राम रामा वेख वखाया। सम्मत सोलां खेल कर, किला शाही फेरा पाया। चीना रूसा जाए चढ़, सम्मत सतारां दए दुहाया। बूरा कक्का लए फड़, लेखा कोई रहिण ना पाया। आप वहाए वहिंदे वहिण हड़, अट्ठ अठारां लेख लिखाया। अल्ला राणी तेरी पुट्टी जड़, उन्नी उनीसा वेख वखाया। बीस बीसा पुरख अबिनाशी अग्गे खड़, जन भगतां होए सहाया। जमन किनारा सुहाए साचा दर, दर द्वारे दिल्ली फेरा पाया। राष्ट्रपति एका अक्खर जाए पढ़, प्रभ साचा दए पढ़ाया। सरन सरनाई साची पड़, दोए बैठा सीस झुकाया। सच सिँघासण जाए चढ़, कल्गी तोड़ा सीस टिकाया। नाम खण्डा एका फड़, नौ खण्ड पृथ्वी रिहा जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका वरन एका गोत लोकमात रिहा बणाया। बीस बीसे कलि अवतार, आपणी जोत जगांयदा। एका अक्खर कर विचार, रोड़ी सक्खर फेरा पांयदा। रोड़ी सक्खर बन्ने धार, दूई द्वैती पत्थर दूर करांयदा। लक्ख चुरासी लथ्थे सथ्थर, नेत्र अथ्थर ना कोई वहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर दुआरा इक्क सुहांयदा। दर द्वार दिल्ली दरबार, हरि साचे शब्द जणाईआ। वाली हिन्द करे ख़बरदार, सम्मत तेरां रिहा कुरलाईआ। सम्मत चौदां कर विचार, मैनन आपणा आप रखाईआ। भगत सुहेला हरि निरँकार, लिख्या लेख ना सके कोई मिटाईआ। देवत सुर रोवण करन पुकार, ब्रह्मा शिव रहे कुरलाईआ। फड़े त्रिसूल हथ्थ अपार, शिव शंकर आप उठाईआ। ब्रह्मा वेखे कर विचार, चारे रसना मुख उठाईआ। विष्नूं वंसी कर प्यार, जन भगतां दर द्वारे फेरा पाईआ। काहना कंसी बण भिखार, दूतां दुष्टां वेख विखाईआ। राम रघुबंसी आप करतार, करता रूप समाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, धरनी धरत वेख वखाईआ। बीस बीसा हो त्यार, जगत जगदीसा आप अख्वाईआ। इक्क इकात बन्ने धार, छत्र सीसा आप झुलाईआ। इक्क हदीसा विच संसार, एका जोत जगाईआ। सत्त रंग निशाना चाढ़, प्रभ साचा वेख वखाईआ। लक्खण दीप कर आकार, पुष्कर जोत जगाईआ। करोच वेखे मार ध्यान, जम्बु डेरा लाईआ। सलमल तेरा धुँदूकार, आपे मेट मिटाईआ। सान रोवे ज़ारो ज़ार, वर मंगे भिच्छया अग्गे झोली डाहीआ। कुशा कच्छ दए निवार, कलिजुग तोड़े गढ़ हँकार, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। सत्त रंग निशाना जाए चाढ़, प्रभ साचा आप चढ़ाईआ। सो पुरख निरँजण अपर अपार, जै जै

जैकार इक्क कराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उप्पर लेख लिखाईआ। राष्ट्रपती दित्ता जिया दान, लेखा रहे ना राईआ। सम्मत वीह सौ पन्दरां मंगे मंग आपे आण, देणा भेंट चढ़ाईआ। पंच मुख ताज ना कोई जाणे राज राजान, शाह सुल्तान भेद ना आईआ। दो जहानां रच्चया काज, कलिजुग सतिजुग वेख वखाईआ। सतिजुग बैठा दर परवान, एका मंगण मंग मंगाईआ। पुरख अबिनाशी वेखे मार ध्यान, चारों कुन्ट वेख वखाईआ। कलिजुग कूड़ कुड़यारा होया हैरान, रो रो नेत्र नीर वहाईआ। जूठ झूठ ना करे कोई पछाण, ना कोई सखा सखाईआ। सगला संग सर्ब तज जाण, अल्ला राणी घूंगट मुख तों लाहीआ। धर्म राए देवे धुर फ़रमान, आप आपणा डौरू वाहीआ। सतिजुग वेखे इक्क ज्ञान, लहिणा देणा मूल चुकाईआ। लाड़ी मौत करे इशनान, हथ्थीं मैहन्दी एका लाईआ। लोकमात आए फेरा पाए आन, सम्मत पन्दरां रुत्त सुहाईआ। वेख वखाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़, डूँघी कन्दर उच्चे पर्बत फोल फुलाईआ। कलिजुग जीव भागां मन्दा आत्म अन्धा, मदिरा मासी गन्दा, अन्त होए ना कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, देवी देवा आप अख्वाईआ। देवी देवा हरि निरँकार, एका एक अख्वांयदा। रिख मुन सेवादार, साचे सन्तां दे मति आप समझांयदा। जुग जुग आए बण वणजार, साचा नाम आप वरतांयदा। आप आपणा खोल्ह भण्डार, हरिजन तृप्त करांयदा। ना कोई भुक्खा ना कोई नंगा, ना कोई रोग सतांयदा। जो जन रले पारब्रह्म तेरी साची संगता, एका पल्लू नाम फड़ांयदा। सो पुरख निरँजण तोड़े हउमे हँगता, हँ हँगता मेट मिटांयदा। मानस जन्म होए ना भंगता, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सन्त सुहेले कर कर मेले गुरु गुर चेले आप तरांयदा। गुर चेला सोहँ बंक द्वार, गुर गोबिन्दे मंग मंगाईआ। पुरख अबिनाशी पहरेदार, दिवस रैण सेव कमाईआ। मेल मिलाए मेलणहार विछड़ कदे ना जाईआ। नाम दान देवे जिया दान, जुग जुग दया कमाईआ। भगत भगती कर परवान, आदि शक्त जोत वखाईआ। आदि शक्त मेल मिलान, जोत निरँजण रही जगाईआ। जोत निरँजण वड बलवान, एका एक अख्वाईआ। गुरमुख साचे चतुर सुघड़ स्यान, मंगण मंग एका मंग मंगाईआ। आत्म मेटे अन्ध अंध्यार जगत अज्ञान, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाईआ। मिले मेल श्री भगवान, सति पुरखा दरस दिखाईआ। सति सरूपा जाणी जाण, सति वस्तू हथ्थ रखाईआ। नेड़ ना आए काल महांकाल, दीन दयाल जो रहे ध्याईआ। अमृत आत्म मारे इक्क उछाल, सर सरोवर दए नुहाईआ। ना कोई शाह ना कंगाल, हरि शब्द विखाए धुर दलाल, दो जहानां मेल मिलाईआ। फल लगाए काया डाल्ह, आप सुहाए काया मन्दिर अन्दर सच्ची धर्मसाल, दस्म द्वारी कुण्डा लाहीआा। कन्त कन्तूहला लैणा भाल, शब्द झुलाए इक्क

निशान, लोकमात झुलाईआ। जो जन दर आए बोला चरन कँवल कर ध्यान, सारंगधर आप आपणा दरस दिखाईआ। नाम वस्त जगत अनडीठड़ा, लिखण पढ़न विच ना आईआ। काया कवड़ी करे मिट्ठा रीठड़ा, अमृत धारा मुख चुआईआ। गुरमुख साचा छैल छबीला, निझर रस आत्म इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वेखे खेल खेल सबाईआ।

सति पुरख निरँजण आदि, अकल कला समाया। जाणे भेव जुग जुगादि, आदि जुगादी आप अख्वाया। खेले खेल विच ब्रह्माद, आप आपणा वेस वटाया। नाम उपजाए एका नाद, एका धुन उपजाया। सन्त सुहेले जुग जुग लाध, एका नाम मन्त्र दृढ़ाया। शब्द जणाए बोध अगाध, अक्खर वक्खर इक्क सिखाया। मेल मिलाए माधव माध, आप आपणे रूप समाया। धुरदरगाही देवे साची दाद, नाम अनमोल झोली पाया। साधां सन्तां सुण फरयाद, भेखाधारी भेख वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क इकल्ला शब्द महल्ला, साचा धाम बहाया। आदि पुरख अनाद, अनाथां दया कमांयदा। जगत सुहेला सगला साथ, जुग जुग संग निभांयदा। नाम चलाए साचा राथ, रथ रथवाही आप अख्वांयदा। आपे जाणे आपणी गाथ, वेद पुराणां भेव ना पांयदा। भगतन टिक्का लहिणा मस्तक माथ, पूर्ब गहणा तन पहनांयदा। मेट मिटाए त्रैलोकी नाथ, त्रैगुण माया वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे आप अख्वांयदा। आदि पुरख जोत अकाल, शब्दी शब्द जणाईआ। हड्ड नाड़ी ना कोई खाल, दम चम्म ना कोई रखाईआ। धन दौलत ना पल्ले माल, वस्त दस्त ना कोई वखाईआ। संग दिसे ना काल महांकाल, ब्रह्मा शिव विष्न दिस ना आईआ। त्रैगुण माया ना जगत जंजाल, लक्ख चुरासी ना कोई उपाईआ। रवि ससि ना गगन पाताल, लोअ पुरीआं ना रचन रचाईआ। ना कोई दीपक ना कोई थाल, ना कोई आरती हवन कराईआ। ना कोई मन्दिर मस्जिद गुरद्वार, ग्रन्थ पन्थ ना कोई उपाईआ। ना कोई बिरख ना कोई डाल, फल फुलवाड़ी कोई दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आदि आप अख्वाईआ। आदि पुरख अपरम्परा, आप अपणे विच समाया। ना कोई बणाए बणतरा, मात पित ना कोई बणाया। अग्नी हवन पवण ना कोई बसन्तरा, सति सति ना कोई रखाया। ना कोई देवत सुर देवतरा, सुरपति ना दिसे कोई सहाया। साध सन्त जीव जन्त ना कोई जपाए गुरमन्त्रा, पीर दस्तगीर ना कोए रखाया। तेज कटार ना कोई खण्डा ना कोई शस्त्रा, बस्त्र तन ना कोई रखाया। ना कोई ज़ात पात ऊँच नीच ना कोई गणे गणतरा, लेखा लेख ना किसे लिखाया। आपे जाणे आपणी अन्तरा, आदि आदि आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा रंग रंगाया।

आदि पुरख अगम्म, ना कोई पवण स्वासी लए दम, रसना जिह्वा ना कोई गाया। ना कोई मरे ना पए जम्म, आलस निन्दरा विच ना आया। ना कोई तृष्ना ना कोई तम, ना कोई भुक्ख रखाया। ना कोई गगन पताल दिसे थम्म्ह, ना कोई नेत्र नीर वहाए छम्म छम्म, जल थल ना कोई रखाया। ना कोई गंधरब ना कोई गन, ज़ात पात ना कोई अख्वाया। ना कोई छप्पर ना कोई छन्न, चार दिवार ना कोई रखाया। ना कोई दान ना कोई गुण, ना कोई धार तलवाड़ वजाया। ना कोई राए धर्म देवे डन्न, चित्रगुप्त ना लेख लिखाया। आप आपणा प्रभ जाणे कम्म, ना कोई दूसर संग रलाया। ना कोई सूरज ना कोई चन्न, तारा मण्डल दिस ना आया। ध्रू भगत ना कहे धन्न धन्न, कबीर नानक ना कोई उपाया। त्रैगुण माया ना लाए संन्ह, पंचम चोर ना कोई रखाया। आप आपणा बेड़ा बन्न, प्रभ आपणे कंध उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आदि पुरख आप अख्वाया। आदि पुरख दयाल, दयावानया। ना कोई करे किसे प्रितपाल, ना दस्से होर निशानया। ना कोई तीर कमान ना दिसे जवान, ना कोई चिल्ला हथ्थ उठानया। ना कोई गोपी ना कोई काहन, ना कोई दसरथ सीता राम, ना कोई पढ़े बाणीआ। ना कोई मन्दिर ना कोई मकान, ना कोई दीपक दीप जगानया। आपे जाणे ना कोई जपे जगत नाम, ना कोई गाए खाणी बाणीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आदि आपणा आप करे पछानया। आदि पुरख अनन्त, अकल कला समाया। आपे साध आपे सन्त, आपे नारी आपे कन्त, आपे पिता पूत हो जाया। आपे वसे रुत्त बसन्त, फल फुलवाड़ी आप लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आदि आदि पुरख समाया। आदि पुरख गहर गम्भीर एका एक, ना कोई मन मति बुध दिसे सरीर, ना कोई तत्त जणांयदा। ना कोई आत्म अमृत प्याए सीर, निझर धार मुख ना कोए चुआंयदा। ना कोई बस्त्र ना कोई चीर, तन गहणा ना कोई पहनांयदा। ना कोई गुरु ना कोई पीर, राज राजान दिस ना आंयदा। ना कोई चोटी चढ़े अख़ीर, जोती जोत सरूप हरि, आदि पुरख आप अख्वांयदा। आदि पुरख अबिनाश, एका एक समाया। आपणे अन्दर आपे किया वास, आप आपणा दरस दिखाया। आपे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ प्रभास, जल थल आप अख्वाया। आपे सास आपे ग्रास, आपे हड्ड नाड़ी मास बण जाया। आपे पृथ्वी आपे आकाश, गगन पाताल आप रचाया। आपे पवण पाणी स्वास, आपे जोती नूर सवाया। आदि अन्त ना होए कदे विनास, आदि आदि आदि आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाया। आदि पुरख हरि देव, गुरदेव आप अख्वांयदा। आपे रसना आपे जिह्व, आपे गीत सुहागी गांयदा। आपे होए सदा निहकेव, केवल एका रूप आप अख्वांयदा। आपे कौस्तक मणीआ मस्तक लाए थेव, आपे जोत

जगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आदि आदि आप अख्वांयदा। आदि पुरख अनाद, आपणा नाद वजाया। सुणे सुणाए आप फरयाद, सुणावणहार आप अख्वाया। आप जणाई करे बोध अगाध, लेखा लिखण विच ना आया। आप आपणा रिहा अराध, आप आपणा नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नर नरायण आदि आदि आदि पुरख आप अख्वाया। आदि पुरख अपार, अपर अपारया। जोत सरूपी इक्क आकार, खेल न्यारया। आपे बन्ने आपणी धार, आप आपणा राह चला रिहा। निरगुण रूप आप करतार, करनी करते विच समा रिहा। आपे अन्दर आपे बाहर, गुप्त ज़ाहर आप समा रिहा। आपे आपणी किरपा धार, आप आपणा घर बणा रिहा। थिर घर पुरख न्यार, आप आपणा बन्द करा रिहा। ना कोई दिसे चार दिवार, छप्पर छन्न ना कोई सुहा रिहा। नज़र ना आए नौ दर, ना कोई नेत्र नैण विखा रिहा। साचे मन्दिर आपे चढ़, आप आपणा राह तका ल्या। ना कोई सीस ना कोई धड़, हरि जोती जोत जगा ल्या। आप आपणा घाड़न घड़, आप आपणी बणत बणा ल्या। आपणे मन्दिर आपे चढ़, आपणा धाम सुहा ल्या। आपणे अग्गे आपे खड़, आपणा हुक्म जणा ल्या। जोती जोत आपे फड़, जोती विच समा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अपार आपणी किरपा धार, घर साचे डेरा ला ल्या। साचा घर हरि दातार, आपणा आप उपांयदा। खेले खेल अपर अपार, आप आपणी दया कमांयदा। सच सिँघासण कर त्यार, उप्पर आसण लांयदा। थिर घर खोल्हे इक्क किवाड़, दिस किसे ना आंयदा। आपे बणया साचा लाड़, आप आपणा चरन टिकांयदा। आपे जोती कर प्यार, नारी रूप अख्वांयदा। एका सेजा आदि निरँजण जोत शब्द जोती सुरती एका धाम सुहांयदा। ना कोई वरन ना कोई गोती, ना कोई संग रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच सिँघासण डेरा लांयदा। सच सिँघासण हरि कन्तूहल, ना कोई पावा ना कोई चूल, ना कोई बाडी बणत बणाया। ना कोई सेजा ना कोई फूल, ना कोई अमृत रिहा छिड़काया। ना कोई शस्त्र ना कोई त्रिसूल, ना कोई सच कटार रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच सिँघासण डेरा लाया। हरि सिँघासण कर त्यार, आपणी जोत जगाईआ। आपे कन्त बण भतार, नर नरायण अख्वाईआ। पूत सपूता कर त्यार, जोती मात बणाईआ। जोती मात कर प्यार, साचा पूत हरि दुलार एका शब्द उपाईआ। एका नाउँ हरि निरँकार, निरगुण खेल खिलाईआ। आपे वेखे वेखणहार, थिर घर बैठा आसण लाईआ। शब्द सिँघासण कर त्यार, प्रभ साचा आसण लाईआ। शब्द सुत कर त्यार, जोती माता खुशी मनाईआ। आपणे अग्गे आपे कर निमस्कार, आप आपणा रूप वखाईआ। आपे बोले शब्द जैकार, सच सच्ची सरकार भुल्ल रहे ना राईआ। आप

आपणा महल्ल उसार, आपणी रचन रचाईआ। आत्म अन्तर मार ध्यान, कँवल नाभी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सुत शब्द दित्ता वर, ब्रह्मण्ड वंड वंडाईआ। हरि साजन जग मीत, एका एक अख्वाया। जुग जुग चलाए आपणी रीत, जुग जुग चलदा आया। आपे बैठा सदा अतीत, निरगुण रूप समाया। शब्द सुहागी साचा मीत, लोआं पुरीआं आप सुणाया। लोकमात चलाए साची रीत, एका डंका नाद वजाया। वेख वखाए हस्त कीट, ऊँचां नीचां विच समाया। नाम निधाना सदा अतीत, अतुट्ट भण्डार रखाया। मिट्ठे करे कौड़े रीठ, जो जन हरि सरनाई आया। पंच विकारा देवे पीठ, नाम चक्की इक्क चलाया। लेखे लाए दन्द बतीस, रसना जिह्वा जिस जन गाया। भाग लगाए राग छतीस, ध्याए अठारां भाग लगाया। वेख वखाए कुरान हदीस, इक्क आदेस दया कमाया। पारब्रह्म तेरी कोई ना करे रीस, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाया। जन भगतां लेखे लाए साचा सीस, जो जन चरन रहे झुकाया। मिल्या मेल हरि जगदीस, विछड़ कदे ना जाया। खेले खेल बीस इकीस, लहिणा देणा चुकाए उनीस, अल्ला हू हू झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेख आत्म घर, तूं तूं मैं मैं भेव चुकाया। हरि नेत्र जग खोलू, साची जोत जगाईआ। एका शब्द अनादी बोल, वरन गोत मिटाईआ। साचे कंडे रिहा तोल, तोलणहार आप अख्वाईआ। थिर घर बैठा सदा अडोल, अडुल्ल कदे ना जाईआ। लक्ख चुरासी रिहा मौल, मन्दिर अन्दर सेज विछाईआ। गुरमुखां अमृत आत्म बख्शे नाभ कौल, कँवल कँवल आप खिलाईआ। दरस दिखाए कला सोल, अकल कला हो जाईआ। गुरमुख पड़दा आपे फोल, दस्त वस्त नाम फड़ाईआ। अनहद मृदंग वजाए साचा ढोल, पंचम सेवा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। हरिजन साचे सज्जणा, हरि देवे सच संदेस्सया। काया भाण्डा अन्तिम भज्जना, ना कोई दिसे नर नरेश्या। लोकमात पड़दा किसे ना कज्जना, शाह सुल्ताना खाली खीस्सया। एका ढोल नगारा वज्जणा, जगत वजाए आप जगदीस्सया। मदिरा मास सभ ने तज्जना, राह टिकाना बीस इकीस्सया। ना कोई मक्का काअबा हाजी हज्जना, मुख छुपाए अल्ला राणी विच उनीस्सया। जल धारा वहिण एका वगना, अट्ठ अठारां तेरी कोई ना करे रीस्सया। सत्त सतारां लाड़ी मौत घर घर जा जा नच्चणा, किसे छत्र ना दिसे सीस्सया। सम्मत सोलां द्वार बंक छड्ड छड्ड भज्जणा, ना कोई गाए राग छतीस्सया। सम्मत पन्दरां मात नगारा एका वज्जना, आप वजाए हरि जगदीस्सया। सम्मत चौदां गुरमुख साचे सन्त जनां हरि चरन बहि बहि सज्जणा, लेख लिखाए इक्क इकीस्सया। गुर गोबिन्द शब्द धारा एका गज्जणा, वेख वखाए ब्रह्मा विष्न महेस्सया। अमृत आत्म गुरमुख पूरे पी पी रज्जणा, आप प्याए दया कमाए मूंड मुंडाए

ना जाणे धारी केस्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जोती आपे शब्द आपे गुर दस दस्मेस्सया। मूंड मुंडाए रंग करतार, आपणी बणत बणाईआ। केसा धार हरि वेख विचार, केसगढ़ रचन रचाईआ। आपे वसया सभ तों बाहर, भेव कोई ना पाईआ। शब्द खण्डा तेज कटार, सोलां कलीआं आसण लाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव सेवादार, रवि ससि रिहा जगाईआ। नीली छत्तों आया बाहर, वागां आपे रिहा उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी पावे सार, सत्तां दीपां वेख वखाईआ। चारे खाणी रही विचार, कलिजुग झूठा दए दुहाईआ। अल्ला राणी सुण पुकार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। ब्रह्मा वेखे अक्ख उग्घाड़, कवण कूटे हरि जोत जगाईआ। शिव शंकर होया ख़बरदार, हथ्थ आपणी त्रिसूल उठाईआ। विष्नूं वंसी सांझा यार, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। इक्क इकल्ला मुहम्मदी यार, सगला संग रिहा तजाईआ। धरत मात रो रो करे पुकार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। राए धर्म बण भिखार, अग्गे झोली डाहीआ। चित्रगुप्त लेख लिखार, लेखा अग्गे वेख वखाईआ। लाड़ी मौत कर श्रृंगार, प्रभ अबिनाशी किरपा धार, मैं जावां चाँईं चाँईंआ। सम्मत पन्दरां कर प्यार, साचा सगन झोली इक्क वखाईआ। ईसा मूसा हो त्यार, मक्का मदीना फेरी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे विच समाईआ। सम्बल नगर साचा खेड़ा, आपणा आप बणांयदा। भगत जनां हरि बन्ने बेड़ा, सच मलाह आप अख्वांयदा। कलिजुग हक्को हक्क करे निबेड़ा, लोकमाती जोत जगांयदा। धरत मात तेरा खुल्ला वेहड़ा, प्रभ साचा आप करांयदा। लक्ख चुरासी एका गेड़ा, आपणी हथ्थीं आप दवांयदा। गुरमुखां वसे काया खेड़ा, प्रभ जोती जोत जगांयदा। शब्द सरूपी पाए घेरा, दिवस रैण वेख वखांयदा। भेव चुकाए मेरा तेरा, एका दूजा भउ चुकांयदा। प्रगट होए सिँघ शेर शेर दलेरा, कलिजुग तेरा एका डंक वजांयदा। आपे होया दाता दानी करनी करना, करता पुरख आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणे अंक समांयदा। पुरख अबिनाशी एका अंक, आदि अन्त रखाया। आप सुहाए द्वार बंक, बंक द्वार आप अख्वाया। आपे जाणे राउ रंक, राउ रंकां विच समाया। सोहँ शब्द सुहाए साचा धनख, रसना चिल्ले आप चढ़ाया। सतिजुग उपजाए साचा बंक, गुरमुखां सुरती सच सीता राम रामा लए प्रनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पुरी घनक घनशाम आप अख्वाया। हरिसंगत वड वड्याईआ, हरि रसना गाया। होए शब्द सच्ची कुड़माईआ, साचा कर्म कमाया। दिवस रैण रैण दिवस अट्ठे पहर एका रंग रंगाया। जूठा झूठा नाता माई भैण भाई, साक सज्जण सैण कोई दिस ना आया। ना कोई धी ना कोई जवाई, गुरमुख पाए अमरापद, आत्म दरसी दर घर साचे पाया। मनमुख जीव आपणा आप गए हर,

वेले अन्तिम दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे नाम वर, जो जन नेत्र नैण लोचन दर्शन पाया। नेत्र लोचन नैण दरस अपारया। रसना किसे ना सके कहिण, पाया सुख कन्त भतारया। मनमुख डुब्बे डूँघे वहिण, ना कोई दिसे पार किनारया। गुरमुख चुकाए लहिण देण, देणा लैणा मूल चुका रिहा। तन बस्त्र पहनाए एका शब्द गहिण, काया चोली रंगण रंग रंगा रिहा। हरिजन भाणा जो जन सहिण, गुर चरन सरन सच्ची मिल मिल बहिण, हरिसंगत रूप समा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग तेरा साचा दर, लोकमात आप खुल्ला रिहा। सतिजुग दर एका खोल्ह, एका दर सुहाया। शब्द दो अक्खर आपे बोल, आप आपणा राग अल्हाया। ना कोई वजाए ढोलक ढोल, सारंग किंग ना कोई वजाया। जन भगतां बजर कपाटी खोल्ह, आप आपणा रूप दरसाया। धुन शब्द वजाए ढोल, अन्दर मन्दिर सेवा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे आत्म घर, घर साचा इक्क सुहाया। गुरमुख साचा धन्न, रसना गोबिन्द गाया। गोबिन्द भाग लगाए काया तन, हउमे रोग जलाया। दूतां दुष्टां देवे डन्न, नाम खण्डा हथ्थ फड़ाया। गीत सुहागी राग अनादी सुणाए कन्न, राग रागनी भेव ना राया। जोत निरँजण चाढ़े चन्न, अन्ध अन्धेर मिटाया। प्रभ का धाम ना छप्पर ना दिसे छन्न, चरन कँवल इक्क सच्ची सरनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख गुरसिख हरिजन साचे सन्त जनां दे मति आप समझाया। पंज तत्त होए जुदाई, मिले मेल श्री भगवानया। अन्तिम नाम बीजे साचे वत्त, हरि वड्डा वड्ड निधानया। बहत्तर नाड़ ना उब्बल रत्त, अमृत मेघ आप बरसानया। सगल वसूरे जाण लथ्थ, जो जन सोहँ शब्द करे परवानया। पुरख अबिनाशी आप आपणी पाए नत्थ, मेट मिटाए पंज शैतानया। जुग जुग देवे जिया नाम दानया। शब्द जणाए अकथना अकथ, रसना जिह्वा ना किसे वखानया। अन्तिम लहिणा देणा चुक्कणा सीआ साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, काया कूड़ कुड़यारा दिसे जीव जहानया। चरन सरन सरन चरन आवण जावण फंद कटानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे नाम दान, मनमुखां हथ्थ ना आए दो जहानया। पारब्रह्म प्रभ एका एक, एक अख्वाया। सृष्ट सबाई रिहा वेख, दिस किसे ना आया। लक्ख चुरासी लिखणहारा लेख लेखा आपणे हथ्थ रखाया। आप धारे आपणा भेस, आप आपणा रूप वटाया। आपे दाता नर नरेश, निरगुण रूप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे अंग लगाया। आप आपणे अंग लगा, बैठा जोत जगाईआ। जोत सरूपी बणत बणा, शब्दी धुन उपजाईआ। शब्द धुन हरि आप, ब्रह्मण्ड विच समाईआ। ब्रह्मण्डां फेरा आपे पा, जेरज अंडां बणत बणाईआ। जेरज अंडां वेख वखा, उत्भज सेत्ज वेख वखाईआ।

त्रैगुण माया रंग रंगा, ब्रह्मे झोली पाईआ। ब्रह्मा विष्न लए उठा, शिव शंकर मेल मिलाईआ। करोड़ तेतीसा आप जगा, सुरपति राजा इन्द रिहा मिलाईआ। कलिजुग अन्तिम वेख वखा, आप आपणी कल वरताईआ। नौ खण्ड पृथ्वी रिहा हिला, थिर कोई रहिण ना पाईआ। सत्तां दीपां रिहा सुणा, एका शब्द जणाईआ। जीवां जन्तां रिहा समझा, अक्खर वक्खर इक्क पढ़ाईआ। जन भगतां नाम झोली पा, बजर कपाटी आप तुड़ाईआ। काया मन्दिर अन्दर पाए साचा थाँ, दिस किसे ना आईआ। हँस बणाए फड़ फड़ काँ, सोहँ चोग चुगाईआ। आपे पिता आपे माँ, आप आपणी गोद उठाईआ। निथावयां देवे साचा थाँ, चरन सरन सच्ची सरनाईआ। दाता दानी बेपरवाह, अलख ना लखिआ जाईआ। चार वरन वखाए एका राह, ऊँचां नीचां भेव खुल्हाईआ। राज राजानां तख्त सुल्तानां इक्क वखा, एका मुकट सुहाईआ। नाम खण्डा तीर इक्क उठा, रसना चिल्ले आप चढ़ाईआ। पंच विकारा रोए मारे धाह, दिवस रैण दए दुहाईआ। कलिजुग बैठा मुख छुपा, हरि साचे जोत जगाईआ। संग मुहम्मद चार यार इक्क दूजे दा तक्कण राह, दर द्वारे वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी राए धर्म देवे फाह, लाड़ी मौत रिहा उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी वेखे थाँ थाँ, लुकया कोई रहिण ना पाईआ। गुरमुखां सद बलि बलि जां, जिस जन गुर पूरा अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि शब्दी जोत जगाईआ। हरि शब्द अमोल, जगत वड्याईआ। आत्म अन्तिम पड़दा खोल्ह, निर्मल जोती दए जगाईआ। उलटी करे नाभ कँवल, अमृत मुख चुआईआ। काया कँवली जाए मवल, मौला रूप समाईआ। भाग लगाए उप्पर धवल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे विच समाईआ। हरिजन साचा सच निशान, हरि एका एक रखाया। आत्म जोती ब्रह्म ज्ञान, इक्क ध्यान लगाया। दो जहानां माण तान, सरन सरनाई आया। दर द्वारे कर परवान, घर बाहर वेख वखाया। मनमुख जीव सर्ब पछतान, वेले अन्त ना कोई सहाया। रसना बहि बहि साचे गाण, प्रभ हथ्थ किसे ना आया। गुरमुख साचे चतुर सुजान, रस रसना जिह्वा लाया। करे कराए हरि पछाण, जुग जुग आपणा भेख वटाया। हरिजन देवे जिया दान, आपणी दया कमाया। कलिजुग अन्तिम वेखे मार ध्यान, चारों कुन्ट अन्धेरा छाया। खाणी बाणी होए हैरान, बैठी मुख छुपाया। वेद पुराणां तुटा मान, अंज़ील कुरान हाहाकार कराया। पंडत पांधे सर्ब कुरलान, पंज शैताना मगर लगाया। साध सन्त जीव जन्त सुत्ते विच बीआबान, हरि मन्दिर किसे दिस ना आया। गुरमुख साचे बाल अञ्जाण, प्रभ आपणी गोद उठाया। अमृत आत्म पीण खाण, दर द्वारे कर परवान, आवण जावण फंद कटाया। साचे सन्तां कर पछान, आदि अन्त आप अख्वाया। जुग जुग बणाए मात बणता, आप आपणा बेड़ा बन्न्ह चलाया। आपे अन्दर आपे बाहर, लक्ख चुरासी विच

समाया। आपे तोड़े माण हँकार, साची संगता विच रलाया। जन भगतां सदा मेहरवान जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे हरि हरि शब्दी जोड़ जुड़ाया। शब्द नाम सच्चा मृदंग, जुग जुग आप वजांयदा। अमृत धारा चारों कुन्ट वहाए गंग, जन भगतां आप पिलांयदा। गुरमुख सदा सुहेला साचा संग, आपणा आप निभांयदा। मनमुख जीव काची माटी वंग, मानस देही होई भंग, बिन हरि कोई ना पार करांयदा। पंज शब्द हथ्थ फड़ अनहद धर्म द्वारे देवे टंग, जिस जन आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि शब्दी शब्द बणांयदा। सोहँ शब्द भगत दलाली, दो लोकां पार कराईआ। मनमुखां खाए अन्तिम काली, सच वस्त किसे हथ्थ ना आईआ। जन भगतां वेखे फल लग्गा काया डाली, अमृत मेवा इक्क रखाईआ। काया मन्दिर अन्दर सच्ची धर्मसाली, पंज शब्द आप उपजाए साचा ताल आपणी हथ्थीं आपे लाईआ। पारब्रह्म प्रभ बणया माली, एका जोत जगाईआ। दरस दिखाए दया कमाए नाल रखाए भूशन लाली, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि शब्द करे कुड़माईआ। हरि शब्द जगत जलाल, एका एक रखाया। रंग रंगाए कंचन सार, सूहा वेस नर नरेश सुन अगम्मो पार कराया। दस्म द्वारी हो प्रवेश, चिट्टी धारा रिहा चलाया। आपे लाउण आया वेस, त्रै कूटां फेरा पाया। पीली धार विच संसार, आप आपणा रंग रंगाया। नीला नीली धारों आया बाहर, पुरीआं लोआं वेख वखाया। काया कँवला कर पसार, कन्त कन्तूहल विच समाया। आप आपणा रक्खया बाहर, भेव किसे ना पाया। साचा वर सच्ची सरकार, निरगुण सरगुण जोत जगाया। शब्द सरूपी बख्शे धार, पूत सपूता आप अख्वाया। ब्रह्मण्डां वेख विचार, नौ खण्ड पृथ्वी डेरा लाया। साधां सन्तां करे प्यार, मनमुखां दए सज़ाया। वलीआ छलीआ विच संसार, अछल अछल्ल करदा आया। कलिजुग तेरी काली धार, चारों कुन्ट दए दुहाया। साध सन्त होए विभचार, नार दुहागण दए दुहाया। प्रगट होए पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा आप अख्वाया। धुरदरगाही आया दौड़ा, जोती जोड़ा मेल मिलाया। शब्द गुर आपे बौहड़ा, सोहँ घोड़ा इक्क रखाया। जन भगतां मन्दिर अन्दर फिरे दौड़ा, आप आपणा वेख वखाया। साचा मन्दिर साढे तिन्न हथ्थ लम्बा चौड़ा, लोकमात आप बणाया। वेखे फल मिट्ठा कौड़ा, कौड़ा रीठा भन्न वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि शब्दी शब्द उपाया। शब्द सुत कर सलाह, एका मता पकाया। जुग जुग चलाए आपणा राह, एका मार्ग लाया। जुग जुग आपणा जाप जपा, शब्द सरूपी दरस दिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि शब्दी शब्द अख्वाया। सतिगुर शब्द जणा, शब्द रूप समाया। गुरमुख साचे लए जगा, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। ऊँच नीच भेव मिटा, राउ रंकां एका धाम सुहाया। आत्म सेजा इक्क विछा,

६०८
०६

आप आपणा आसण लाया। अन्दर मन्दिर मेल मिला, हउमे रोग गंवाया। अनहद ताल इक्क वजा, राग अनादी रिहा सुणाया। अमृत आत्म जाम पया, तृष्ना भुक्ख मिटाया। सोहँ सोहला एका गा, आलस निन्दरा लाहया। प्रभ दर गोला दए बणा, दूसर दर ना कोए बणाया। काया चोला दए बदला, जिस जन आपणी दया कमाया। आप आपणा रंग वखा, नेत्र नैण दए खुल्हाया। तीजा नैण आप खुल्हा, आत्म दरसी दरस दिखाया। जोती जोत गुर शब्द मिला, पारब्रह्म विच समाया। ब्रह्म वेता ना कोई अख्वा, एका नाद आप वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका शब्द रिहा उपाया। एका शब्द हरि बलवान, जुग जुग मात अख्वाया। एका चिल्ला एका तीर, इक्क निशान रिहा लगाया। एका गीता इक्क ज्ञान, एका मन्त्र दृढ़ाया। एका मीत एका मीता, पतित पुनीता आप अख्वाया। एका शब्द गुर का लागा मीठा, गुरमुख रसना जिह्वा गाया। मनमुख जीव जूठा झूठा, बैठा मुख छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि शब्दी शब्द जणाया। शब्द जणाए हरि निरँकार, लोआं पुरीआं पाए सार, ब्रह्मण्डां डेरा लांयदा। गुरमुख साचे सन्त दुलार, आप आपणे रंग रंगांयदा। उतर ना जाए विच संसार, आप आपणी दया कमांयदा। जो जन मंगे बण भिखार, आत्म झोली आप भरांयदा। पंचम कराए चरन कँवल प्यार, साचा धाम सुहांयदा। धर्म राए ना करे ख्वार, चित्रगुप्त ना मुख भवांयदा। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, गुरमुख साचे गोद उठांयदा। एका देवे नाम अधार, साध सन्त आपणी सेवा लांयदा। शब्द घोड़े कर अस्वार, वागां आपणे हथ्थ रखांयदा। लोआं पुरीआं करे पार, थिर घर इक्क वखांयदा। आपे होए सेवादार, चारों कुन्ट फेरा पांयदा। सति पुरख निरँजण कर प्यार, आप आपणा वेख वखांयदा। सतिगुर गुर सतिगुर सच करे निमस्कार, दोए जोड़ सीस झुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी दया कमांयदा। सतिगुर पुरख दयाल, सद मेहरबानया। गुरमुखां देवे नाम धन माल, वड दाता दानी दानया। तोड़ तुड़ाए जगत जंजाल, लेखे लाए प्राण प्राणीआ। सुरत सवाणी सुरत संभाल, शब्द मिलाए साचे हाणीआ। जोत निरँजण दीपक थाल, गगन मस्तक आप जगा ल्या। सन्त सुहेले साचे भाल, अनहद राग सुणाए साची बाणीआ। नाम पर्दा इक्क दुशाल, दिवस रैण आपणा ताणीआ। लेख चुकाए शाह कंगाल, एका रंग रंगानया। भाग लगाए काया खाल, सुणाए अकथ कथा कहाणीआ। मेल मिलाए आपणे नाल, मेल मिलाए धुर दीबानया। आत्म सेजा इक्क विखाल, हरिजन साचा आप बहानया। गुरमुख साचे वेख विखाल, अमृत ताल सच सुहानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग भगतां मेला करनहार आप अख्वानया। भगत मेला हरि गोबिन्द, गोबिन्द मेल मिलांयदा। मनमुख जीव मुख लाए गन्द, कागी

काग कुरलांयदा। भगत जनां हरि आप बख्शिंद, बख्शणहार आप हो जांयदा। गुरमुख साजण साची बिन्द, पूत सपूता आप कहांयदा। दाता सूरा हरि मृगिन्द, गुण अवगुण ना कोई जणांयदा। धार चलाए सागर सिन्ध, निझर रस चुआंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे आप तरांयदा।

✻ पहली अस्सू २०१४ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ✻

काल दयाल प्रभ आप, सर्बकला समाया। आप जपाए आपणा जाप, जपणहार आप अख्वाया। ना कोई पुन्न ना कोई पाप, वर सराफ ना कोई रखाया। ना कोई माई बाप, पिता पुत ना कोई अख्वाया। त्रैगुण माया ना थापन थाप, पंज तत्त ना रूप वटाया। आपे जाणे आपणा आप, हरि आपणे विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाया। आप आपणा वेखणहारा, निहकलंक निहकामी। गुर पीर अवतार साध सन्त ना पाए सारा, ब्रह्मा वेद ना जाणे वेद व्यास ना अठारां पुराणी। आप आपणे रंग समाए, आप जाणे आपणी बाणी। आप आपणा राग अलाए, आपे सुणे आपणी कानी। रसना जिह्वा ना कोई गाए, ना कोई खाणी वेख वखानी। इक्क इकल्ला हरि रघुराए, काल महांकाल दर द्वार रखाए, खेले खेल दो जहानी। काल दयाल प्रतक्ख, हरि आदि अन्त समाया। गुरमुख साचे लए रक्ख, दुरमति मुख दए सज़ाया। जुग जुग कीने वक्ख, घर दर मन्दिर इक्क सुहाया। इक्क जगाए इक्क अलक्ख नर, वेस रूपा आप वटाया। अमृत नुहाए सच सर, सर सरोवर ताल सुहाया। दीपक जोती नूर कर, अन्ध अन्धेर मिटाया। एका शब्द तूर दर, अनहद ताल रिहा वजाया। पंचम विकारा चूर कर, हउमे रोग जलाया। आसा मनसा पूर हरि, आप आपणा बिरध रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखणहार सृष्ट सबाया। काल दयाल आप प्रभ, सति पुरख समाया। गुरमुख साचे लए रक्ख, आप आपणी गोद उठाया। उलट कराए कँवल नभ, अमृत धारा मुख चुआया। पंच विकारा देवे मथ्था, माया ममता मोह चुकाया। दरस दिखाए प्रगट झब्ब, अन्दर मन्दिर कुण्डा लाहया। जगत विछोड़ा मिटे सभ, नेत्र नैणा दरसन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दयानिध आप अख्वाया। दया निध हरि दीन दयाला, आपणी कल वरतांयदा। गोबिन्द गुर हरि गोपाला, हर घट आप समांयदा। गुरमुख वेखे साचे लाला, निरगुण सरगुण खेल खिलांयदा। अग्नी जोती वेख ज्वाला, दीप लिलाट लिलाटी इक्क वखांयदा। जोत निरँजण आप बिठाए सच्ची धर्मसाला, साची सेवा लांयदा। भाग लगाए काया डाल्हा, अमृत फल खवांयदा। हथ्थ रखाए काल महांकाला, आप

आपणे भाणे विच समांयदा। गुरमुखां तोड़े बजर कपाटी ताला, दूई द्वैती पड़दा लांहयदा। शब्द पाए गल साची माला, मन का मणका आप फिरांयदा। सुरत सवाणी होए बेहाला, गुर शब्दी तीर चलांयदा। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाला, चाल बेहंगम इक्क रखांयदा। चौथे घर चौथा पद इक्क रखाया शब्द दलाला, सोहँ पल्ला आप फड़ांयदा। दो जहानां होए रखवाला, राह विच ना कोई अटकांयदा। धर्म राए कढ्ढे दवाला, चित्रगुप्त ना हिसाब वखांयदा। आपे चले नाल नाला, डूँघी कवरी भवरी पार करांयदा। अनहद शब्द वजाए एका ताला, पंचम सेवा लांयदा। आत्म सेजा खेल निराला, दस्म द्वारी वेख वखांयदा। आपे बैठा दीन दयाला, जोत अकाला सर्ब प्रितपाला, ना कोई दूसर संग रखांयदा। गुरमुखां आत्मक झोली करे माल माला, धन नाम एका झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दीन दयाल आप अख्वांयदा। दीन दयाल दया निध सागर, हरि आपे आप अख्वाया। गुरसिख भाग लगाए काया गागर, अमृत आत्म जल भराया। देवे नाम रत्ती रत्नागर, रत्त रत्ती रहिण ना पाया। सोहँ तेरा सच सौदागर, पुरख अबिनाशी आप अख्वाया। जन भगतां निर्मल कर्म करे उजागर, लहिणा देणा रिहा पिछला मूल चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दीन दयाल आप अख्वाया। दीन दयाल सर्ब घट दाता, हर घट आप समाया। दो जहानां पुरख बिधाता, गुरमुख साचे लए तराया। मेट मिटाए अन्धेरी राता, दीपक साचा चन्द चढ़ाया। दरस दिखाए इक्क इकांता, आप आपणा रूप वटाया। अमृत आत्म देवे बूंद स्वांता, दूई द्वैती रोग गंवाया। अन्दर मन्दिर बहि बहि खोल्ले ताका, आपणी हथ्थीं आपे लाहया। सति सरूपी देवे दाता, एका नाउँ झोली पाया। गुरमुख गुरसिख अठ्ठे पहर रहे प्रभाता, दिवस रैण भेव ना राया। मनमुख नार कुलक्खणी कमज़ाता, हरि कन्त ना सन्त हंढाया। मिल्या मेल ना कमलापाता, कन्त कन्तूहल ना वेख वखाया। गुरमुखां देवे आपणी दाता, धुर दरगाही लै के आया। आपे पिता आपे माता, गुरमुख बाल अञ्जाणे गोद उठाया। वेख वखाणे दीप साता, नौ खण्ड चरनां हेठ झसाया। ब्रह्मा शिव देवत सुर करोड़ तेतीसा मंगे बूंद स्वांता, दर दर बैठे सीस झुकाया। पुरख अबिनाशी पारब्रह्म अचुत्त इक्क इकल्ला ना किसे पछाता, सच महल्ला वेख वखाया। उच्च अटला उत्तम ज़ाता, निरगुण रूप समाया। सति पुरख निरँजण सति सतिवादी आपा, आप आपणा रिहा छुपाया। जन भगतां करे वड प्रतापा, जुग जुग लेख लिखाया। सतिजुग त्रेता द्वापर थापन थापा, कलिजुग सेवा लाया। हँसा बावन भेव ना कोई जापा, रामा रावण वेख वखाया। काहना कृष्ना त्रैलोकी नाथा, द्वापर त्रेता संग निभाया। कलिजुग मंगे दोए दोए हाथा, प्रभ अग्गे झोली डाहया। सर्बकला आपे समराथा, जुग जुग वेखे खेल सुभाया। गा गा थक्के नौ नौं नाथा, सिद्ध चुरासी रसन हलकाया। संग मुहम्मद चार यार

बणया राथा, ऐली अल्ला राह चलाया। कलमा अमाम मिली साची गाथा, कायनात आप समाया। ना कोई पूजा ना कोई पाठा, ऐहनल हक्क एका नाअरा लाया। आब हयात मारे ठाठा, मुकामे हक्क इक्क खुदाया। दर मुहम्मद आए नाठा, दोए जोड़ सीस झुकाया। लेखे लाए हड्डी तिन्न सौ साठा, बहत्तर नाड़ी सेव कमाया। भेव ना पाए तत्त आठा, नौ द्वार ना वेख वखाया। नूर अलाही बेपरवाही एका एक वखाए साची गाठा, पल्ले गंढु बंधाया। आपे गेड़नहारा उलटी लाठा, गेड़ा आपणे हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हो दयाल करता कृपाल आप करतारा, करता पुरख अख्वाया। जुग जुग खेल खेलणहारा, खेले खेल सृष्ट सबाईआ। मेल विछोड़े विछोड़नहारा, जुग जुग विछड़े मेल मिलाईआ। आपे तोले तोलणहारा, नाम कंडा एका लाईआ। नानक बोले बोलणहारा, सोहँ रसना गाईआ। तेरां तोले विच संसारा, मोदीखाना इक्क रलाईआ। एका बोली बोले बोलणहारा, त्रैलोकां रिहा सुणाईआ। हरिभगत भण्डारा खोल्हे खोलणहारा, कलिजुग अन्तिम दए दुहाईआ। निहकलंक नरायण नर लए अवतारा, नानक बैठा सीस झुकाईआ। अन्त ना पाए पारावारा, बेअन्त बेअन्त बेअन्त रसना गाईआ। पारब्रह्म प्रभ पुरख अगम्म अपारा, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाईआ। उच्च महल्ल अटल मुनारा, एका एक रखाईआ। ना कोई शब्द ना कोई धुन ना कोई गावणहारा, ना कोई ताल वजाईआ। ना कोई सूरज चन्द तारा, मण्डल मण्डप ना कोए दिसाईआ। ना कोई पवण दए हुलारा, अवण गवण ना कोई जणाईआ। ना कोई मेघ बरसे सवण, इन्द इन्द्रासण ना वेख वखाईआ। ब्रह्मा विष्नूं शिव ना कोई करे कारा, ना कोई मारे ना लए जवाईआ। ना कोई भरे किसे भण्डारा, ना खाली कोई कराईआ। लोआं पुरीआं ना बणे कोई वरतारा, ना कोई झोली अग्गे डाहीआ। दर दरवेश ना कोई भिखारा, ना कोई भिच्छया झोली पाईआ। त्रैगुण माया ना कोई अवतारा, पंज पंझी ना रूप वटाईआ। रक्त बूंद ना लाए गारा, ना कोई बणत बणाईआ। मन मति बुध ना पाए सारा, ना कोई अंग कटाईआ। नारी कन्त ना कोई भतारा, ना कोई सेज हंढाईआ। पिता पूत ना कोई प्यारा, मात पित ना कोई अख्वाईआ। साक सज्जण सैण ना कोई दुलारा, ना कोई बंधप बंध बंधाईआ। लक्ख चुरासी ना कोई सहारा, मानस मानुख ना कोई उपाईआ। पंच शब्द ना कोई उपजाए धुन्कारा, धुन आत्म ना कोई जणाईआ। दस्म द्वार ना कोई घर बाहरा, सचखण्ड ना कोई वसाईआ। अलख अलख ना कोई नाअरा, अलक्खणा लेख ना कोई लिखाईआ। लोआं पुरीआं ना कोई सहारा, ना कोई रचन रचाईआ। ना कोई खण्डा ना तेज कटारा, ना कोई गोबिन्द नाउँ उपाईआ। राम कृष्न ना कोई अवतारा, ना कोई बावन भेख वटाईआ। बंस सहँस ना कोई मारा, ना कोई रावण रिहा घाईआ। शिव शंकर शम्भू ना कोई पुकारा, ना कोई त्रैसूल रखाईआ। ना कोई ब्रह्मा

लेख लिखारा, ना कोई वेद विदांत बणाईआ। ना कोई रसना मुख ना बोले बोलणहारा, नेत्र नैण ना कोई खुल्हाईआ। काया चोला ना हट्ट पसारा, चौदां लोक ना कोई उपाईआ। चौदां तबकां ना हाहाकारा, ना कोई रो रो दए दुहाईआ। ईसा मूसा ना कोई दुआरा, कुरान अञ्जील ना कोई अल्हाईआ। संग मुहम्मद ना कोई चार यारा, अल्ला राणी ना कोई जोबन रही वखाईआ। पीर फ़कीर ना कोई दस्तगीर, शाह हकीर कुतब गौंस ना कोई अख्वाईआ। सति सन्तोख ना कोई धीरज धीर, सांतक सति ना कोए जणाईआ। तामस तत्त ना कोई अख़ीर, राजस रजो ना कोई समाईआ। ना कोई हउमे हँगता दिसे पीड़, दूई द्वैत ना कोई वखाईआ। ना कोई बन्ने किसे बीड़, खाणी बाणी ना रचन रचाईआ। ना कोई बस्त्र ना कोई चीर, ना कोई सीस दस्तार बंधाईआ। ना कोई सुरत सवाणी बणे साची हीर, ना कोई शब्द रांझा साची वंञली रिहा वजाईआ। ना कोई चोटी चढ़े अख़ीर, अद्ध विच ना कोई अटकाईआ। ना कोई जल थल दिसे नीर, अट्ठ सट्ठ ना वेख वखाईआ। ना कोई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ दिसे बीड़, डूँघी गार ना वेख वखाईआ। ना कोई हस्त ना कोई कीड़, राज राजान ना कोई अख्वाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता एका आप आपणी रक्खे धीर, आवे जावे मरे ना जाईआ। आदिन अन्ता हरि करतार, एक एक अख्वांयदा। जुगा जुगन्त लए अवतार, आप आपणी बणत बणांयदा। साधां सन्तां दए प्यार, एका शब्द जणांयदा। शब्द डोरी अपर अपार, काया मन्दिर अन्दर आप रखांयदा। आपे पावणहारा सार, लक्ख चुरासी भरम भुलांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, आप आपणा वेस वटांयदा। नानक गोबिन्द बण लिखार, सेवक सेवा सच कमांयदा। पुरख अबिनाशी कर्म विचार, पूर्ब लहिणा झोली पांयदा। गुर गोबिन्द कर त्यार, साचा संग निभांयदा। चिट्टे अस्व कर अस्वार, साचे राहे आपे पांयदा। सम्बल नगरी विच संसार, सच सिंघासण इक्क वखांयदा। शब्द खण्डा तेज कटार, तन गात्रे आप लटकांयदा। भरमे भुल्ले जीव गंवार, भरम गढ़ ना कोई तुड़ांयदा। मानस जन्म गए हार, अन्दर मन्दिर उप्पर चढ़ दरस कोई ना पांयदा। पंच विकारा गए सड़, शब्द लड़ हथ्थ ना आंयदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी सभ दे अन्दर बैठा वड़, ना कोई सीस ना कोई धड़, गुरमुख विरला वेख वखांयदा। त्रैगुण माया गई सड़, प्रभ साचा लम्बू लांयदा। त्रैलोकां उखेड़े आपे जड़, आपे आप उपांयदा। गुरमुख सन्त सुहेले एका अक्खर जायण पढ़, हरि एका राग अल्हांयदा। चौथे घर जायण वड़, सुखमन नाड़ी टेडी बंक राह विच ना कोई अटकांयदा। आपे तोड़े हँकारी गढ़, तीर निराला इक्क चलांयदा। कोई ना सके अग्गे अड़, काल द्वारे बैठा शरमांयदा। महांकाल प्रभ ल्या फड़, गुरमुखां सेवा लांयदा। आपे जाणे चोटी जड़, भाणा आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करता पुरख

६१३
०६

दीन दयाल, दया निध आप अख्वांयदा। आप दयाल कृपाल पुरख अबिनाश्या, जुग जुग वेस कराया। वेखे खेल शाहो शाबास्सया, हरिजन साचे मेल मिलाया। दर दुरकारे मदिरा मासीआ, घर साचे रहिण ना पाया। गुरमुखां होए दासी दास्सया, सेवक सेव रिहा कमाया। वेख वखाए पृथ्वी आकाश्या, आकाश आकाशां विच समाया। हरिजन तराए रसन स्वास्सया, जुग जुग लहिणा झोली पाया। प्रगट होए घनकपुर वासीआ, कलिजुग वेला अन्तिम आया। राज राजानां होए उदास्सया, शाह सुल्ताना दए हिलाया। कलिजुग उलटा होया पास्सया, अन्तिम देवे कंडां दर वढ्ढाया। गुर पूरे साचे सतिगुर पूरे सद बलि बलि जास्सया, जिस रसना सोहँ गाया। रसना सोहँ सो पुरख सति पुरख, सतिगुर आप हिलांयदा। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता रोग ना कोई लगांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम करन आया परख, जोती जामा भेख वटांयदा। साधां सन्तां द्वारे कलिजुग माया रही वरख, मनमुख झूठे सेवा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दीन दयाला हरि गोपाला गोबिन्द काया वेख वखांयदा। गोबिन्द काया सच टिकाणा, हरि साचे जोत जगाईआ। शब्द सरूपी इक्क बिबाणा, हरि आपणा आप रखाईआ। वेख वखाए दो जहानां, आवण जावण रचन रचाईआ। सोहँ शब्द ल्याए धुर फ़रमाणा, लोकमात आप टिकाईआ। जन भगतां बन्न्हे हथ्थीं गाना, हाढ़ सतारां सगन मनाईआ। मेट मिटाए राज राजाना, शाह सुल्ताना रिहा खपाईआ। साधां सन्तां धन वैराना, नाम धन ना कोई रखाईआ। जूठा झूठा काया मन्दिर टिकाणा, मन मूर्ख थिर रहिण ना पाईआ। रसन विकारा पीणा खाणा, रसना जिह्वा होई हलकाईआ। माया कारन गुर मन्दिर अन्दर बहि बहि गाणा, ग्रन्थी पन्थी ना धीर धराईआ। पंडत पांधे पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराणा, वेद पुराणी दिस ना आईआ। हउमे रोग इक्क लगाना, तीजा तिल ना वेख वखाईआ। जूठ झूठ खेल जहाना, गल बैठे जञ्जू पाईआ। मिल्या मेल ना श्री भगवाना, राम कृष्ना रहे ध्याईआ। पाया पद ना इक्क निरबाणा, आदि शक्त ना घर मनाईआ। दीवा बत्ती ना कोई जगाना, साची वस्त ना कोई रखाईआ। लेखे लग्गे ना अठ्ठ सठ्ठ तेरा इशनाना, अमृत आत्म मुख ना कोई चुआईआ। अन्तिम चुकणा पीणा खाणा, ना कोई धीर धराईआ। मुल्ला शेख़ होए हैराना, गल माला सच लटकाईआ। बगले रक्ख कतेब कुराना, मुसला हथ्थ रखाईआ। कूजा बांग ऊँचा कूके दए दुहाईआ। हक्क हलाल ना किसे पछाना, अहिनल हक्क ना कोई मिलाईआ। धुर दरगाहे ना कोई तल्बाना, ना कोई तलब कराईआ। कलमा अमाम ना कोई गाणा, हक्क हकीकत दए दिखाईआ। मुहम्मद ना मिल्या धुर दीबाना, राह बैठा रिहा तकाईआ। सदी चौधवीं करे परवाना, प्रभ अग्गे बैठा सीस झुकाईआ। अमाम मैहन्दी नाउँ रखाना, अन्त नबी रसूलां तेरी लहू मिझ धार हथ्थीं रंग चढ़ाईआ। आपे होए बेपछाना, काला

बस्त्र तन छुहाईआ। वेख वखाए मुगल पठाना, शाह ईराना लए जगाईआ। मक्का मदीना चरनां हेठ दबाना, मुख इक्क नकाब रखाईआ। अल्ला हू तेरा मुक्के गाणा, ना कोई रसना गाईआ। पीर फ़कीरां आप समझाना, एका जोत करे रुशनाईआ। सभ घट थाँ आपणा रूप वटाना, मुहम्मद अहिमद आपे वेख वखाईआ। शरअ शरायत आप कराना, इक्क शरीअत रिहा जलाईआ। एका अक्खर आप पढ़ाना, बजर कपाटी पत्थर तुड़ाईआ। दूई द्वैती सथ कराना, चरन दुआरा इक्क सुहाईआ। नेत्र नैण नीर अत्थर ना किसे वहाना, अल्ला राणी गल बैठी पला पाईआ। पुरख अबिनाशी तेरे चरन ध्यान, रो रो रही शरमाईआ। पुरख अबिनाशी मेहरवाना, फड़ बांहों गले लगाईआ। उठ सपुत्री बाल नादाना, प्रभ पड़दा उप्पर पाईआ। लज पति रक्खे तेरी दो जहाना, गुरसिख तेरी सेवा आप कमाईआ। सुरत सवाणी गुरसिख तेरी अल्ला राणी, सोहँ शब्द करे कुड़माईआ। काल महांकाल दोवें दर फिरन भरन पाणी, प्रभ खण्डा हत्थ रखाईआ। गुर पूरा मिल्या साचा हाणी, विछड़ कदे ना जाईआ। चौथे घर एका बाणी, नानक सोहँ रसना गाईआ। पाया पुरख हरि सुल्तानी, दर द्वारे बैठा अलक्ख जगाईआ। पुरख अबिनाशी जोत नुरानी, अट्ठे पहर डगमगाईआ। भेव ना पाए छत्ती राग बाणी, साध सन्त गए रसना गाईआ। अर्जन लिख्या लेख अपार महानी, आपणा मुख सुहाईआ। पारब्रह्म तेरे चरन दे कुरबानी, बैठा दर आपणा सीस झुकाईआ। साध संगत हरि दर कर परवानी, कलिजुग अन्तिम मेल मिलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंका नाउँ रखाईआ। निहकलंक हरि नाउँ रखा, आपणी कल वरतांयदा। राम कृष्न लए उठा, आपणा संग रखांयदा। पतिवन्त दयावन्त लए जगा, जामावन्त वेख वखांयदा। काहना कृष्ना आप बणा, आपे मुख छुपांयदा। अर्जन अर्जन अर्जन आप अख्वा, आप आपणी भगती लांयदा। संग मुहम्मद चार यार लए उपा, कलिजुग झोली पांयदा। जूठ झूठ लए प्रना, पंज तत्त संग निभांयदा। ईसा मूसा दए जणा, काला सूसा तन छुहांयदा। चीना रूसा सरन लगा, उन्नी उनीसा चरन छुहांयदा। बीस बीसा वेख वखा, आपणी दया कमांयदा। इक्क इकीसा आपणी बणत बणा, नौ खण्ड पृथ्वी वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निहकलंका नाउँ रखांयदा। निहकलंका नाउँ रखाया, हरि साची जोत जगाईआ। सति पुरख निरँजण भेव ना राया, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहाईआ। नानक गोबिन्द सेवा लाया, सेवक सेवा गए कमाईआ। आपणा लेखा आपणे हत्थ रखाईआ। भरम भुलेखा जगत लाहया, गुर पूरा ना मरे ना जाईआ। देस प्रदेसां होए सहाया, त्रै लोकां पार कराईआ। गणपति गणेश ना कोई मनाया, ब्रह्मा विष्न शिव सेवा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी रचन रचाईआ।

काल नगारा डंक है, जुग जुग रिहा वजाए। ना कोई राउ ना कोई रंक है, राज राजाना ना वेख वखाए। ना कोई द्वार बंक है, मन्दिर अन्दर ना कोई छुपाए। गुरमुख विरला राजा जनक है, नाम रत्न तन रखाए। प्रभ खेले खेल बार अनक है, अनक कला वरताए। कलिजुग वासी पुरी घनक है, हरिजन साचे लए तराए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, काल कलन्दर वेख वखाए। काल नगारा वज्जणा, चारों कुन्ट जणाईआ। जो घड़या सो भज्जणा, थिर रहिण ना पाईआ। बिन गुर पूरे कोए ना रक्खे लजणा, मनमुख जीव देण दुहाईआ । धर्म द्वारे गुरमुख विरले बहि बहि सजणा, जिस जन आपणी दया कमाईआ। मदिरा मास जिस जन तजणा, दरगाह साची दए बहाईआ। वेले अन्तिम रक्खे लजणा, जो जन आए सरनाईआ। हरिजन पड़दा आपणा कज्जणा, गुर चरन प्रीत रखाईआ। नाम चढ़ाए सच जहाजणा, साची नईआ रिहा चलाईआ। मनमुख माया ममता अग्नी दझणा, ना सके कोई बचाईआ। नौ द्वारे फिरया भज्जणा, मन मति होए हलकाईआ । पंच विकारा झूठा गज्जणा, लोभ हँकारा नाल रलाईआ। बजर कपाटी जिंदा वज्जणा, ना सके कोई तुड़ाईआ। वेले अन्त लाउण ना देवे अज पज्जणा, काल द्वारे आवे जाईआ। बहत्तर नाड़ी लहू पी पी रज्जणा, आप आपणी तृष्न बुझाईआ। धर्म राए द्वारे बहि बहि हस्सणा, लाड़ी मौत खुशी मनाईआ। कुम्भी नर्क अन्तिम दझणा, कर्मा भाह रही जलाईआ। गुरमुख गुर चरन द्वारे बहि बहि हस्सणा, मिली सच सच्ची सरनाईआ। मेटे रैण अन्धेरी मस्सया, जोत निरँजण चन्द चढ़ाईआ। माया ममता मूल ना डस्सया, कलिजुग नागन नेड़ ना आईआ। तीर निराला एका कसया, रसना चिल्ला इक्क चढ़ाईआ। जन भगतां हिरदे अन्दर आपे वसया, सुरत शब्दी मेल मिलाईआ। कोटन कोट प्रकाश करे रवि सस्सया, अन्ध अन्धेर मिटाईआ । हरिजन हरि हरि एका राह साचा दस्सया, आप आपणा पन्थ दिसाईआ। साचा नाम शब्द लटकाए रस्सया, गुरमुख साचे लए चढ़ाईआ। आत्म सेजा आए नस्सया, दस्म द्वारी वेख वखाईआ। अमृत आत्म देवे रस रस्सया, निझर धारा इक्क वहाईआ। सगल वसूरा हरिजन साचे अन्तिम वारी लथ्थया, गुर शब्दी दर्शन पाईआ। लहिणा देणा चुक्के सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थया, समरथ हथ्थ वड्याईआ। बोध जणाई अगाध अकथना अकथया, अकथ कथा इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, काल दयाल रंग समाईआ। काल भगवान काली धार, काला रंग चढ़ांयदा। वेख वखाणे सर्ब संसार, जूठी झूठी गंग वहांयदा। लक्ख चुरासी नर नार, माया राणी पलँघ सवांयदा । काम क्रोध कर प्यार, लोभ मोह तन पहनांयदा। खाली ठूठा विच संसार, त्रैगुण आप करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरा काला रूप, काल दयाल आप अख्वांयदा। कलिजुग

६१६
०६

काल अकल कल धारी, एका एक अख्वाया। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारी, शब्द खण्डा हथ्थ उठाया। ब्रह्मा शिव करे खबरदारी, सुरपति राजा इन्द रिहा हिलाया। करोड़ तेतीसा हाहाकारी, गणपति गणेश रिहा कुरलाया। रामा कृष्न वेख विचारी, नेत्र नरायण रिहा वखाया। कलिजुग तेरी अन्तिम यारी, संग मुहम्मद रिहा निभाया। नानक बणया दर भिखारी, नाम सति झोली पाया। अर्जन लिख्या लेख अपारी, हरि लेखा लेख लिखाया। गोबिन्द मंगी तन कटारी, हरि पंचम पंचम सुहाया। दरस दिखाए दर दरबारी, दर घर साचा इक्क वखाया। पूत सपूता कर प्यारी, चारे कुन्टां होए सहाया। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द अन्तिम गया हारी, कलिजुग जूठा झूठा वेख वखाया। रसना गाए वारो वारी, कलिजुग अन्तिम होए सहाया। शब्द खण्डा तेज कटारी, हरि एका लए उपाया। प्रगट होए वड बलकारी, सूरबीर अख्वाया। दो जहानां शाह अस्वारी, साचा घोड़ा इक्क रखाया। सति पुरख निरँजण खेल अपारी, जोती नूर सवाया। पंज तत्त ना मीत मुरारी, त्रैगुण विच ना आया। छप्पर छन्न ना कोई अटारी, किला कोट ना कोई सुहाया। अनन्दपुर ना गढ़ी अपारी, तीर कमान ना कोए चलाया। कल्गी तोड़ा ना सीस दस्तारी, नीला घोड़ा ना वाग उठाया। सरसा नीर वहाए ना वारो वारी, सगला संग ना कोई डुबाया। सिख साजण ना होए कोए इनकारी, ना कोई भाणा मेट मिटाया। प्रगट होए निहकलंका नरायण नर अवतारी, दिस किसे ना आया। काल नगारे लग्गे चोट भारी, एका धौसा रिहा वजाया। शब्द सरूपी लशकर भारी, राम रईयत रिहा बणाया। सहँस सहँसर करे ख्वारी, लेखा लिख्त विच ना आया। लाड़ी मौत धर्म राए दी धी कुँवारी, लक्ख चुरासी नाल लए प्रनाया। दर दर घर घर वेखे वारो वारी, नौ खण्ड पृथ्वी फेरा पाया। सत्तां दीपां पार किनारी, उच्चे टिल्ले डेरा लाया। गुर दर मन्दिर मस्जिद दए बहारी, धरत धवल आकाश वेख वखाया। राज राजानां शाह सुल्तानां तोड़े गढ़ हँकारी, किला कोट रहिण ना पाया। साध सन्त होए प्रभ तेरे नाउँ जगत वपारी, माया वणज ना कोई कराया। मनमुख जीव मानस जन्म गए हारी, सतिगुर पूरा दिस ना आया। जूठी झूठी कलिजुग तेरी तारी, तारनहार ना होए सहाया। कलिजुग काल करे कारी, प्रभ साचे हुक्म सुणाया। सम्मत चौदां करे ख़बरदारी, वीह सद तेरा लेखा आपणे हथ्थ रखाया। गुरमुखां करे चरन प्यारी, चरन धूढ़ मस्तक टिक्का लाया। इक्क सुहाए बंक द्वारी, द्वार बंका इक्क वखाया। लाड़ी मौत होए पनिहारी, गुर दर बैठी सेव कमाया। गुरसिक्खां दूरों निउँ निउँ करे निमस्कारी, नेत्र नैण रही छुपाया। निहकलंक तेरी सच्ची सिक्दारी, दूसर कोई रहिण ना पाया। सोहँ शब्द वड बलकारी, घर चौथा इक्क वखाया। तीजे नेत्र अक्ख उग्घाड़ी, प्रभ एका सुरमा पाया। गुरसिक्खां रक्खे लाज चरन छुहाई दाढ़ी, वेला अन्तिम आया। आपे होए पिच्छे अगाड़ी, दिवस रैण सेव कमाया।

६१७
०६

६१८
०६

उच्चे टिल्ले मल्ले जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, धरत धवल वेख वखाया। त्रैगुण माया अन्तिम आपे साड़ी, जोती लम्बू एका लाया। ब्रह्मा विष्न शिव कढ्ढुण हाढ़ी, प्रभ दर रो रो रहे कुरलाया। लेखा मुकावे सतारां हाढ़ी, जो सिक्खां लेख लिखाया। प्रभ अबिनाशी शब्द डण्डे रिहा झाड़ी, दर दुआरा रिहा दुरकाया। प्रभ जोत जगाए गुरमुखां बहत्तर नाड़ी, आप आपणी दया कमाया। बजर कपाटी पड़दा देवे पाड़ी, स्वच्छ सरूपी नज़री आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, काल दयाल हरि गोबिन्द लाल, शब्द पहन इक्क दुशाल, गुरमुखां रिहा समझाया। काल नगारा रिहा कूक, चार कुन्ट जैकारया। त्रैगुण माया रही फूक, प्रभ साचे इक्क फुंकारा मारया। ब्रह्मा तेरी चुक्के चूक, ना देवे कोई सहारया। शिव जी रोवे आपणा दूख, बाशक तशका लग्गे भारया। सुरपति राजा इन्द करोड़ तेतीसा लग्गी भूख, अमृत धारा मिले अपर अपारया। पुरख अबिनाशी अन्तिम तूठ, कलिजुग आया पासा हारया। साधां सन्तां पल्ले बंन्ही नाम गंढु जूठ झूठ, सच सुच्च ना कोई वणजारया। धर्म सति गया रूठ, तीर्थ तट्टां गुर दर मन्दिर अन्दर विषे विकारया। पंच विकारा रिहा लुट्ट, काम क्रोध लोभ मोह हंकारया। मनमुख जीवां भाग गए निखुट्ट, साची चोग ना कोई चुगा रिहा। तन नगारे ना लग्गे साची चोट, शब्द ताल ना कोई वजा रिहा। कलिजुग जीव आल्हणिओ डिग्गे बोट, ना अन्तिम कोई उठा रिहा। माया राणी ना भरी पोट, तृष्ना भुक्ख ना कोई मिटा रिहा। गुरमुख विरले प्रभ चरन रक्खी एका ओट, इक्क ध्यान लगा रिहा। लक्ख चुरासी विच्चों कढ्ढे इक्क भरमे भुल्ले कोटी कोट, कोट कोटां भरम भुला ल्या। गुरमुख तेरा तन बस्त्र इक्क लंगोट, धीरज यति सति प्रभ आपणे हथ्थ रखा ल्या। मोह विकारा जगत कढ्ढे खोट, नाम खण्डा इक्क चमका रिहा। माया राणी खाली ठूठ, चारों कुन्टां आप वखा रिहा। सतिजुग द्वापर त्रेता जो गए रूठ, कलिजुग अन्तिम मेल मिला रिहा। आप कराए एका मुट्ठ, साची बणत बणा रिहा। लुकया रहिण ना देवे कोई गुट्ठ, नौ खण्ड पृथ्वी वेख वखा रिहा। अमृत आत्म देवे साचा घुट्ट, तृष्ना भुक्ख मिटा रिहा। जूठ झूठ जड़्ह देवे पुट्ट, सच सुच्च बीज बिजा ल्या। सोहँ शब्द लाहा लैणा लुट्ट, वेला गया हथ्थ ना आ रिहा। सम्मत चौदां सृष्टी पैणी फुट्ट, प्रभ साचा खेल खिला रिहा। दिन दिहाड़े पैणी लुट्ट, लुट्टणहारा दिस ना आ रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, काल कालख टिक्का मस्तक शाही मनमुखां आप लगा रिहा। कालख टिक्का काला दाग़, मनमुखां आप टिकांयदा। दीपक जोती बुझे चिराग़, दीवा बत्ती ना कोई जगांयदा। किसे ना मिले कन्त सुहाग, नार दुहागण सर्ब वखांयदा। कोए ना गाए साचा राग, अनहद ताल ना कोई वजांयदा। गुर चरन धूढ़ मिले ना मजन माघ, अट्ठ सट्ठ जूठा झूठा नाहवण नहांयदा। गुर चरन

सरोवर सच प्राग, त्रिबैणी नैणी दरस दिखांयदा। हँस बणाए फड़ फड़ काग, सोहँ साची चोग चुगांयदा। दो जहानी पकड़े वाग, साचा जोगी जोग कमांयदा। आत्म तृष्ना मिटे आग, काम कामनी नेड़ ना आंयदा। गुरमुख होए वड वड भाग, धुर जामन एका नाम दवांयदा। चरन कँवल जो गए लाग, अन्धेरी शाम आप मिटांयदा। कलिजुग सोए गए जाग, जिस जन दामनी दामन आपणा आप फड़ांयदा। आत्म देवे इक्क वैराग, राम रामनी सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, काल दयाल सर्ब कुलवन्त जीव जन्त वेख वखांयदा। काल करतार कर्म कमाया, कलिजुग अन्तिम आंयदा। कर्म धर्म जग वेख वखाया, भरमी भरम ना कोई भुलांयदा। वरन बरन ना कोई छुपाया, ना कोई पड़दा पांयदा। हरन फरन ना कोई खुल्हाया, नेत्र नैण ना कोई दरसांयदा। कमी कर्म ना कोई कमाया, साचा धर्म ना कोई जणांयदा। मरनी मरन जग धन्दे लाया, लक्ख चुरासी बणत बणांयदा। आत्म अन्धे जन्म गंवाया, ख़ाकी बन्दे ख़ाक रलांयदा। हरि बख्शिंदे कर्म कमाया, गुरमुख साचे लए जगाया, आप आपणी सरन लगांयदा। कलिजुग अन्तिम लए तराया, सतिजुग साचा मार्ग लांयदा। सोहँ शब्द नाम वरताया, वस्त अनमोल झोली पांयदा। अजपा जाप जपत जपाया, जागरत जोत वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, काल दयाल एका हरि, एका नाउँ रखांयदा। काल दयाल एकँकारा, एका रंग पसारया। एका घर इक्क घर बाहरा, दुआरा एका एक करे उज्यारया। एका वेखे वेखणहारा, इक्क इकल्ला एकँकारया। जुग जुग लए मात अवतारा, साधां सन्तां संग निभा रिहा। नाथ त्रिलोकी दए सहारा, आप आपणा दर वखा रिहा। सति पुरख निरँजण खेल अपारा, सति सतिवादी बणत बणा रिहा। मरे ना जन्मे विच संसारा, भेखाधारी भेख वटा रिहा। शब्द कराए जगत जैकारा, आप आपणा नाउँ धरा ल्या। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, पुरख अबिनाशी दया कमा ल्या। जोत सरूपी जोत अकारा, जोती नूर धरा ल्या। निहकलंक नरायण नर अवतारा, आदि अन्त आप अख्वा ल्या। खाणी बाणी ना पावे सारा, रसना जिह्वा ना कोई गा ल्या। अछल छल करे विच संसारा, वड छल रूप वटा ल्या। कलिजुग अन्तिम ढहि पया दुआरा, रो रो दर कुरला रिहा। धरत मात करे हाहाकारा, आप आपणा पेट वखा ल्या। साचा सुत ना कोई दुलारा, खाली गोद हिला रिहा। पुरख अबिनाशी कर विचारा, दे मति आप समझा ल्या। सतिजुग साचा तेरा सुत दुलारा, धरत मात तेरी गोद बहा ल्या। सोहँ शब्द वणज वपारा, प्रभ साचे इक्क करा ल्या। चार वरन बहाए इक्क दुआरा, ऊँचां नीचां भेव मिटा रिहा। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई ना कोई अञ्जील कुरान वेद पुराण खाणी बाणी गाए वारो वारा, ना कोई वंड वंडा ल्या। एका शब्द इक्क जैकारा, इक्क इकल्ला एकँकारा,

एका नाअरा ला ल्या। लोआं पुरीआं कर पसारा, आदि पुरख अगम्म अपारा, शब्दी शब्द जणा रिहा। गुरमुख साचे कर त्यारा, लोकमात आप समझा रिहा। ब्रह्मा छड्डणा पए दुआरा, वीह सौ वीह बिक्रमी आप समझा ल्या। शिव शंकर दर बणे भिखारा, प्रभ भिच्छया कोई ना पा रिहा। सिँघ जगदीश साचा लाड़ा, साची घोड़ी आप चढ़ा रिहा। इक्क वखाए सच अखाड़ा, साचे धाम बहा ल्या। करोड़ तेतीसा पुरी इन्द्र वेखे होई उजाड़ा, फल फुलवाड़ी ना कोई लगा रिहा। पल्ले दिसे ना कोई नाम भण्डारा, अरम्बा कोई ना नाच करा रिहा। सच धाम ना कोई अखाड़ा, मण्डल रास ना कोई पा रिहा। लग्गे अग्ग बहत्तर नाड़ा, प्रभ लोकमाती जन्म दवा रिहा। वीह सौ इकी पन्दरां कत्तक सच दिहाड़ा, करोड़ तेतीसा मेट मिटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, काल दयाल आप अख्वा रिहा। काल दयाल नर नरायण, निहकलंक अख्वाया। ना कोई साक सज्जण दिसे सैण, भाई भैण ना कोई बणाया। ना कोई लहिणा ना कोई देण, देणा लहिणा ना कोई चुकाया। ना कोई शब्द ना कोई गहिण, तन शृंगार ना कोई कराया। ना कोई अंमा अंमड़ी पाए वैण, पिता पूत ना कोई कुरलाया। दम दमड़ी ना कोई माया डैण, विकार आकार ना कोई दिसाया। गुरमुखां वेखे एका नैण, दोए नैणां बन्द कराया। लक्ख चुरासी डुब्बी डूँघे वहिण, कलिजुग सागर इक्क बणाया। काल भगवान लैण ना देवे किसे चैन, सीस ताज राजन राज शाह नवाब कोई रहिण ना पाया। गुरमुखां नुक्ता मिटाए इक्क गैन, वखाए ऐन निरगुण समाया। सन्त सुहेले कर कर मेले गुरु गुर चेले आप चुकाए लहिण देण, देवणहार आप अख्वाया। रसना किसे ना सके गौण कोई कहिण, प्रभ अबिनाशी जिस जन दर्शन पाया। चौथे घर चौथे पद सदा सुक्ख लैण, आवण जावण फंद कटाया। गुर सतिगुर पूरा अग्गों आवे लैण, आप आपणा धाम सुहाया। सचखण्ड कोटन कोट बैठे रहिण, आलस निन्दरा दए गंवाया। धुर धाम मिटाए तृष्ना ताम, जिस जन आपणा लड़ फड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चौथे घर जाए वड़, गुरमुख साचे लए फड़, तोड़ तुड़ाए किला गढ़, साचे पौड़े जाए चढ़, पंचम अन्दर ना कोई सीस ना कोई धड़, छेवें शब्द सरूपी जाए खड़, सत्तवें सति पुरख निरँजण जोती जोत समाईआ। जोती जोत आप समा, आपणा आप मिटाया। गुरमुख आपणे सीने ला, एका दूजा भउ चुकाया। तीजे लहिणा देणा दए मुका, लक्ख चुरासी ना फेरा पाया। चौथा घर दए तजा, जिस जन रसना ल्या गा, सच धाम वखाए एका थाँ, सति पुरख निरँजण राह रिहा तकाया। जोत सरूपी देवे ठंडी छाँ, अग्नी अग्ग ना कोए सताया। गुरमुख साचे जुग जुग बलि बलि जा, बलिहारी जिस गुर पूरे दर्शन पाया। गुर पूरा एका पारब्रह्म, सर्ब ओट रखाईआ। नानक गुर गया मन्न, प्रभ तेरी सच सरनाईआ। ना

कोई माल ना कोई धन, सच ख़जीना इक्क वखाईआ। ना कोई सूरज ना कोई चन्न, तारा मण्डल ना कोई लटकाईआ। ना कोई घड़े ना देवे तैनूं भन्न, ना कोई बणत बणाईआ। ना कोई छप्परी ना कोई छन्न, चार दिवार ना कोई रखाईआ। हथ्थ मूंह नक्क ना दिसे कन्न, ना कोई रसना तेरी रही गाईआ। पुरख निरँजण तूही धन्न धन्न, रसना रिहा गाईआ। नानक मंगण आया नाम धन, पंचां तत्तां दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर बैठा आसण लाईआ। थिर घर अगम्म अथाह, बेपरवाह समाया। आपे जाणे आपणा नाँ, आपे रिहा जपाया। प्रगट होए थाउँ थाँ, दिस किसे ना आया। ना कोई जाणे हां ना, प्रभ का भेव किसे ना पाया। जिस जन शब्द सरूपी दए जणा, जन जनका दए कढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेद कतेब खाणी बाणी अञ्जील कुरानी वेद पुराणी भेव किसे ना पाया।

✻ ३ अस्सू २०१४ बिक्रमी १, राष्ट्रपती राजिन्दर प्रसादि, २, पंडत जवाहर लाल नेहरू,
३, मौलाना अबदुल कलाम अज़ाद, ४, कृष्ना मैनन, ५, गोबिन्द वलब पंत
नूं शब्द भेजे गए दरबार विच जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✻

सति पुरख निरँजण हरि करतार, लोकमात जोत जगाईआ। प्रगट हो चवीआं अवतार, निहकलंका नाउँ रखाईआ। वेद व्यासा बण लिखार, लेखा गया लिखाईआ। कलिजुग अन्तिम वार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। नाम खण्डा तेज कटार, शब्दी बणत बणाईआ। राज राजानां करे ख़बरदार, शाह सुल्तानां रिहा उठाईआ। दो जहानां मारे मार, पुरीआं लोआं वेख वखाईआ। तीर निशाना अपर अपार, रसना चिल्ला इक्क चढ़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी आर पार, सत्तां दीपां फेरा पाईआ। जम्बु दीप अधविचकार, प्रभ साची करे रुशनाईआ। भारत खण्ड वेख विचार, ब्रह्मण्ड वंड वंडाईआ। जेरज अंड वेख विचार, उत्भज सेत्ज रिहा हिलाईआ। भेख पखण्डा दए निवार, जूठ झूठ मेट मिटाईआ। पंज तत्त मति विकार, मन मति दए सज़ाईआ। नूर अलाही बेऐब परवरदिगार, नूर ज़हूर इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सृष्ट सबाई रिहा सुणाईआ। सृष्ट सबाई आप जणाए, देवे शब्द निशाना। राष्ट्रपति मात उठाए, देवे धुर फ़रमाणा। अट्ठ सट्ठ तीर्थ रहिण ना पाए, पूजा चुक्के वेद पुराणा। मन्दिर मट्ठ ना कोई डेरा लाए, छत्ती राग ना गाए बाणी गाणा। अंजील कुरान ना कोई पढ़ाए, मुल्ला शेख़ ना कोई विद्वाना। जोती जोत सरूप हरि,

६२१
०६

आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नौ खण्ड पृथ्वी वेख वखाना। राष्ट्रपति जगत नादाना, आपणा आप विचारना। पुरख अबिनाशी शाह सुल्तान, तोड़े गढ़ हँकारना। सृष्ट सबाई वेखे इक्क मैदान, मन मति बुध करे ललकारना। स्यासत विरासत आए हान, ना कोई जाणे ब्रह्म ज्ञानना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नौ खण्ड झुलाए इक्क निशानना। राष्ट्रपति राजिन्दर प्रसादि, हरि साचे शब्द जणाईआ। अस्सू पंज रक्खणा याद, वीह सौ तेरां बिक्रमी रुत्त सुहाईआ। सत्त रंग निशाना देवे दाद, पंचम ताज मुख रखाईआ। खेले खेल आदि जुगादि, शब्द सोटी इक्क वखाईआ। पंचम मीता इक्क वजाए साचा नाद, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच संदेश रिहा दवाईआ। उठणा जाग नेत्र खोल्, हरि साचा आप जगांयदा। सोहँ शब्द वज्जे मृदंगा ढोल, सृष्ट सबाई आप सुणांयदा। चार वरन दुआरा एका खोल्, एका मार्ग लांयदा। जगत विद्या पया घोल, ना कोई बेड़ा पार करांयदा। पंज तत्त रत्त रही खौल, इक्क उबाल रखांयदा। रक्खणा याद कीता कौल, प्रभ साचा आप सुणांयदा। रहिणा सौं ना मात अनभोल, वेला अन्तिम आंयदा। हरि का शब्द ना जाण मखौल, मन मति बुध मेट मिटांयदा। पंडत पांधा ना कोई जाणे रौल, हिसाब कताब ना कोई जणांयदा। पुरख अबिनाशी हौला करे भार उप्पर धौल, मनमुख जीव सर्ब मिटांयदा। लिख्या लेख ना मिटे रत्ती चौल, हरि साचा पूर करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, संगी साथी संग रलांयदा। साचा संग कर त्यार, पंडत नेहरू नाल रलाईआ। पुरख अबिनाशी करे ख़बरदार, भुल्ल रहे ना राईआ। करे कराए करनेहार, करता पुरख आप अख्वाईआ। आवे जावे विच संसार, रामा कृष्ना रूप वटाईआ। कलिजुग अन्तिम लै अवतार, निहकलंका नाउँ रखाईआ। शाह भबीखन कर विचार, लंका गढ़ कवण तुड़ाईआ। प्रधान मन्त्री अन्तिम रोणा ज़ारो ज़ार, बिन हरि होए ना कोए सहाईआ। ज़ोरू ज़र दिवस चार, अन्त रहिण ना पाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी छड्डणा पए घर बार, राज बणत ना कोई बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे मति रिहा समझाईआ। देवे मति श्री भगवाना, एका नाम अलाया। नौ खण्ड पृथ्वी होए वैराना, शाह सुल्तान कोई रहिण ना पाया। ना कोई बैठे विच दवानखाना, सीस ताज ना कोई टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत चौदां रिहा जणाया। राज मन्त्री जगत बलवान, हरि साचे हथ्थ वड्याईआ। सत्त रंग वेखणा इक्क निशान, राष्ट्रपति सेवा लाईआ। उप्पर लिख्या लेख सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरनां इक्क पढ़ाईआ। भरम ना भुल्लणा जीव नादाना, सम्मत सम्मती दए जणाईआ। साचा मेला विच जहान, हरि साजण मीत अख्वाईआ। बवंजा देसां कर पहचान,

६२२
०६

सच संदेश इक्क सुणाईआ। प्रगट होए हरि भगवान, नर नरेशा आप अख्वाईआ। आपे गोपी आपे काहन, सीता राम आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, नौ खण्ड पृथ्वी जगत लड़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी जगत अखाड़ा, प्रभ साचा रचन रचांयदा। लिख्या लेख सतारां हाढ़ा, ना कोई मेट मिटांयदा। शब्द अगम्मी उठे धाड़ा, चारों कुन्ट दुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, प्रधान मन्त्री आप समझांयदा। बवंजा देसां शब्द जणा, हरि साचा कल वरतांयदा। गणपति गणेश ना कोई लए मना, शिव शंकर ना ध्यान लगांयदा। संस्कृत ना सके कोई पढ़ा, हिन्दी बिन्दी ना कोई वखांयदा। इक्क दूजे दा लड़ ना कोई सके छुड़ा, प्रभ माया बंधन पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, त्रैलोकी नंदन आप अख्वांयदा। त्रैलोकी नंदन आप अख्वा, हरि साचे जोत जगाईआ। गोबिन्द पंत लए जगा, दे मति रिहा समझाईआ। कलिजुग वेला अन्तिम गया आ, वेद पुराण भेव ना राईआ। साध सन्त ना सके जणा, दहि दिशा बैठे धूणीआं ताईआ। लेखा सके ना कोई गिणा, करोड़ तेतीसा रहे मनाईआ। प्रभ का भाणा ना सके कोई मिटा, मेटणहार ना कोई अख्वाईआ। सृष्ट सबाई सत्थ दए वछा, धरत मात झोली डाहीआ। लिख्या लेख पत्थर उप्पर दए लिखा, लकीर तकदीर ना कोई मिटाईआ। साची सिख्या इक्क सिक्खा, सोहँ मन्त्र जगत वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत मन्त्री रिहा समझाईआ। जगत मन्त्री आप समझाए, आपणी कल वरतांयदा। कृष्ना मैनन भुल्ल ना राए, राह खैहड़ा दिस ना आंयदा। नौ खण्ड पृथ्वी प्रभ आप लड़ाए, ना कोई दूसर बणत बणाए, राज राजाना शाह सुल्ताना छेड़ां रिहा छिड़ाए, साची सीमां वंड वंडांयदा। उलटा गेड़ा आप गिढ़ाए, गेड़नहार आप अख्वांयदा। वीह सौ वीह बिक्रमी पन्दरां कत्तक सृष्ट सबाई नबेड़ा आप कराए, दूसर कोई ना संग रखांयदा। नगर खेड़ा कोई रहिण ना पाए, शहर ग्रां कोई रहिण ना पांयदा। खुल्ह्ला वेहड़ा धरत मात कराए, उलटा गेड़ा आप दवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा धाम इक्क सुहांयदा। साचा धाम हरि अवल्ला, एका एक रखाया। एका एक हरि इकल्ला, एका रूप वटाया। सोहँ फड़या हथ्थ विच भल्ला, शाहो भूप मेट मिटाया। वेख वखाणे राणी अल्ला, अल्ला अलाही नूर समाईआ। अबदुल कलाम अज़ाद प्रभ सुण फरयाद, करे वेख विचारया। चार यार रक्खया याद, संग मुहम्मद मीत मुरारया। धुर दरगाही मिली दाद, वेले अन्तिम होए ख्वारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुनेहड़ा देवे घर, उम्मत नबी रसूल आपणी आप उठा रिहा। नबी रसूलां दए जणा, एका शब्द जणाईआ। उन्नी उनीसा दए मिटा, ना होवे कोई सहाईआ। मक्का

६२३
०६

मदीना लग्गे ढाह, ना सके कोई बचाईआ। पुरख अबिनाशी एका दस्से राह, साचा कलमा रिहा सुणाईआ। जगत विद्या मिले ना कोई थाँ, अन्त रहिण ना पाईआ। अञ्जील कुरान ना पकड़े कोई बांह, पीर दस्तगीर बैठे मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, पंचम रिहा पंचम जणाईआ। पंचम पंचम शब्द जणाए, भारत खण्ड सरकारा। राष्ट्रपति आप उठाए, पंडत नेहरू मीत मुरारा। गोबिन्द पंत नाल रलाए, सच सलाही सलाहकारा। कृष्ना मैनन वेख वखाए, तोड़े गढ़ आत्म हँकारा। मौलाना आज़ाद फरयाद हरि इक्क वखाए, नूर नुरानी अन्ध अन्धयारा। खुदी खुदाए ना कोई जणाए, हक्क बहक्क ना पावे सारा। पीर फ़कीर दस्तगीर ना कोई मनाए, अल्ला हू हू झूठा नाअरा। अमाम मैहन्दी जोत जगाए, ख़ाकी ख़ाक ना कोए रमाए, आपे होए बेऐब परवरदिवगारा। मक्का मदीना चरन छुहाए, मुख नकाब इक्क रखाए, काला सूसा तन शृंगारा। हक्क ज़नाब दो दो आब वेख वखाए, संग मुहम्मद चार यारा। शाह नवाब कोई रहिण ना पाए, उच्च खताब ना कोई हंढाए, ना कोई सोहे दर दुआरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, जगत अक्खर एका वक्खर आप चलाए, सोहँ जै जैकारा। पंचम प्रधान उठणा जाग, प्रभ साचा आप जगांयदा। माझे देस लग्गा भाग, सम्बल नगरी नाउँ धरांयदा। दीपक जोती जगे चिराग, ना कोई मात बुझांयदा। त्रैगुण माया लाए आग, पंज तत्त रहिण ना पांयदा। स्वांगी वरते आपणा स्वांग, अछल अछल्ल करांयदा। जूठ झूठ चढ़ी कांग, प्रभ साचा आप रुढ़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सम्मत चौदां वेख वखांयदा। सम्मत चौदां छेड़ां छेड़, नौ खण्ड पृथ्वी रिहा जगाईआ। सम्मत पन्दरां भेड़ देवे भेड़, दो धड़ रिहा कराईआ। सम्मत सोलां जड़ उखेड़, थान निथावें दए कराईआ। सम्मत सतारां तेरा गेड़, जीव जन्त भुल्ल ना सके राईआ। सम्मत अठारां लहिणा देणा दए निबेड़, जूठे झूठे मात रुढ़ाईआ। उन्नी उनीसा वेखे तेरा खेड़, अल्ला हू हू नाअरा कोई ना लाईआ। बीस बीसा होए खुल्ला वेहड़, हरि जगदीसा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जाप जपाईआ।

६२४ ०६

* ३ अस्सू २०१४ बिक्रमी १, बाग दयाल महिता जी राधा स्वामी डेरे, २, डेरा बाबा जैमल सिँघ चरन सिँघ नूं शब्द भेज्जया गया दरबार विच जेठूवाल *

बाग दयाल पंज तत्त, दिवस रैण लड़ाईआ। शब्द स्वामी भुल्ली मति, मन मति होई हलकाईआ। ना कोई जाणे

मित गति, गति मित ना कोई जणाईआ। साची दिसे ना कोई वथ, ना मिल्या रथ रथवाहीआ। पंच विकारा पाई नत्थ, जगत सिँघासण आसण बैठा लाईआ। कलिजुग काल चलाए रथ, दिवस रैण भवाईआ। अन्तिम लहिणा लैणा सीआं साढे तिन्न हथ्थ, साची वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले दित्ता वर, तुलसी बूटा आपणे घर लाईआ। तुलसी बूटा गया फुल, प्रभ साचे आप महिकाया। जैमल घर पाया मुल्ल, सावण हट्ट विकाया। दर द्वारे जो आया भुल्ल, पंचम मेल मिलाया। पाणी पया काया चुल्ह, अमृत आत्म रस गंवाया। भाग ना लग्गा साची कुल, कल कलिजुग काला टिक्का मस्तक लाया। सच दुआरा गया खुल्ह, सोहँ सिक्का इक्क चलाया। वड्डा निक्का वेचे एका मुल्ल, वरन गोत ना वेख वखाया। कलिजुग माया ना जाए रुल, ना कोई भरम भुलाया। ना कोई तोले जगत कंडे तोल, ना कोई सके तोल तुलाया। पुरख अबिनाशी जन भगतां देवे नाम अनमुल्ल, अनमुल्लड़े लाल आप बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, विच बनारस बन्ने पारस, तुलसी तुलसी जन्म दवाया। तुलसी राम कर प्रनाम, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। चरन धूढ़ी साचा दाम, पल्ले गंढु बंधाईआ। लेखे लग्गे काया चाम, रसना जिह्वा गया गाईआ। एका मिल्या नाम ताम, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। अमृत आत्म पिया जाम, सांतक सति वरताईआ। मिटी रैण अन्धेरी शाम, दीपक जोत करे रुशनाईआ। आपे जाणे आपणा काम, जुग जुग आपे रिहा कराईआ। लेखा लिख्या रमईआ राम, साची सेवा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्तिम वार दित्ता वर, सालगराम एका काम कराईआ। एका सालग एका राम, एका माला तन पहनाईआ। इक्क जपाया साचा नाम, आत्म ताला बन्द खुल्हाईआ। काया मन्दिर वेख ग्राम, दर द्वारे सोभा पाईआ। अमृत आत्म पिया जाम, दिवस रैण खुमार कराईआ। एका एक हरि हरि नाम, बिन हरि नामे कोए ना पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वणज आप कराईआ। वणज कराए हरि वणजारा, एका नाम अतोला। खेले खेल विच संसारा, आदि अन्त सदा अडोला। कलिजुग तेरा कूड़ पसारा, सच शब्द जैकारा एका बोला। बणे बणाए आप वरतारा, नाम भण्डारा एका खोल्हा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेख वखाणे काया चोला। काया चोला बन्दा ख़ाक, पंज तत्त रचाया। आपे किया बन्द ताक, खोल्हणहार आप हो आया। आपे जाणे भविख्त वाक, आप आपणा राग अलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त सुहेले लए वर, पूत सपूता चारे कूटां वेख वखाया। आप उठाए बाल नादाना, सुरती सुरत दवाईआ। गुर मन्त्र वखाए जगत निशान, एका दूजा सहिज सुभाईआ। चौथा मिले ना धुर फ़रमाण, पंचम जाए कर कर धाईआ। देवणहारा दानी

दान, दिस किसे ना आईआ। पूर्ब लहिणा कर पछान, तन गहणा बस्त्र पाईआ। सेवक सेवा लाए गुण निधान, साची सेव कमाईआ। अमृत आत्म मेवा ख़वाए बेपछान, लोकमात हथ्थ ना आईआ। आपे बख्शे आपणा चरन ध्यान, चरन धूढ़ी मस्तक रिहा रमाईआ। चरन धूढ़ी इक्क ध्यान, एका जोग सिखाया। पुरख अबिनाशी कर परवान, साचे मार्ग लाया। नाम स्वामी इक्क निशान, राहे फड़ के पाया। दोहां मेला विच जहान, दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सेवक सेवक सेवा लाया। सेवक सेवा दर परवान, प्रभ आपणा आप करांयदा। पंज शब्द धुर फ़रमान, आपे आप जणांयदा। मिल मिल सखीआं सारे गाण, संगी साथी नज़र ना आंयदा। इक्क इकेला गुण निधान, गुणवन्ता नज़र ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जैमल सावण मेल मिलांयदा। जैमल सावण मेल मिला, एका रचन रचाईआ। आपे अन्दर दए बहा, आपे बाहर कढाईआ। आपे जोती दए बुझा, आपे जोत जगाईआ। आपे शब्द रिहा जणा, आपे बन्द कराईआ। आपे मार्ग रिहा पा, आपे वेख वखाईआ। डूँघे सागर रिहा तरा, काया गागर इक्क सुहाईआ। साचे पौड़े रिहा चढ़ा, पल्ला एका नाम फड़ाईआ। सुरती शब्दी मेल मिला, मेलणहार आप अख्वाईआ। बजर कपाटी किला तुड़ा, हँ हँगता रिहा मिटाईआ। दस्म द्वारी चरन टिका, सुंन अगम्मो पार कराईआ। सोहँ देश दए वसा, हरि साची रचन रचाईआ। फड़ फड़ बांहों राहे पा, सचखण्ड धाम सुहाईआ। आप आपणा दए मिटा, एका दूजा रहिण ना पाईआ। गुर मन्त्र एका दए सुणा, सति पुरख निरँजण अग्गे बैठा बेपरवाहीआ। आपणा आप आपे लैणा जगा, भुल्ल रहे ना राईआ। मेलणहारा मेल लए मिला, दिवस रैण वेख वखाईआ। साचे घर जोत जगा, दीपक सच करे रुशनाईआ। बाल अञ्जाणे राहे पा, गऊ ग़रीबां गले लगाईआ। एका लेखा ल्या लिखा, भेव ना जाणे कोई राईआ। सिँघ सावण हथ्थ कलम उठा, निहकलंका वेख वखाईआ। उच्चे मन्दिर बंक द्वारे ढाह, थिर कोए रहिण ना पाईआ। सिँघ चरन क्यों कीती नाह, मिल्या मेल ना साचे माहीआ। जगत विद्या इक्क पढ़ा, मन मति करे कुड़माईआ। ग्रन्थ पन्थ रिहा सुणा, आत्म ब्रह्म ना कोई जणाईआ। सतिगुर पूरा ना दित्ता किसे मिला, विच विचोला ना आप हो जाईआ। इट्टां गारा ल्या लगा, चार दिवारी मात बणाईआ। दस्म द्वारी ना मिल्या राह, बन्द दरवाज़ा ना कोई खुल्ह्हाईआ। फुल फुलवाड़ी लई लगा, हरी सिंच क्यारी ना कोई कराईआ। मुच्छ दाढ़ी लई वधा, प्रभ चरन ना धूढ़ रमाईआ। अन्तिम वेखे हरि थाउँ थाँ, लेखा कोई रहिण ना पाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता बैठा जोत जगा, माझे देस करे रुशनाईआ। गुर गोबिन्द संग रला, नौ खण्ड पृथ्वी करे कुड़माईआ। साधां सन्तां रिहा हिला, सोया कोई रहिण ना पाईआ। सिँघ प्रताप तेरी जाग दए खुल्ह्हा, नेत्र

नैण नींद ना आईआ। अन्तिम मुल्ल दए पवा, कौडी कौडी हट्ट विकाईआ। भाण्डा खाली दए वखा, नाम वस्त ना कोए टिकाईआ। वाहिगुरू वाहिगुरू रसना गा, आपणी बणत रिहा बणाईआ। गुर संगत कोलों मथ्था टिका, लहिणा गया रुढ़ाईआ। सिँघ राम ना होए अन्त सहा, प्रभ चरनां विच सुहाईआ। प्रभ अबिनाशी बेपरवाह, भेव कोई ना पाईआ। निहकलंका नाउँ रखा, लोकमात जोत करे रुशनाईआ। दिल्ली ना मिलणा कोई थाँ, वेले अन्त ना कोई छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, बाग दयाला वेख गुर गोपाला, जैमल घर सिँघ गुरचरन ना जाणा डर, प्रगट होया हरी हरि, सिँघ प्रताप जाण आपणा आप, पुरख अबिनाश जाणे पुन्न पाप, पड़दा उहला कोई रहिण ना पाईआ। ना कोई पड़दा ना कोई उहला, ना कोई भेव छुपांयदा। जिस जन बख्श्या काया चोला, हर घट आसण लांयदा। कलिजुग अन्तिम बणया तोला, नानक तेरां धार चलांयदा। सम्मत चौदां लिख्या बोला, लिख्या लेख दर पुचांयदा। सम्मत पन्दरां साध सन्त नाम वस्त ना कोई रक्खे कोला, प्रभ साचा खिच वखांयदा। सम्मत सोलां पंज तत्त खाली दिसे डोला, ना कोई सीस झुकांयदा। चौदां कत्तक अन्तिम खेले होला, सर सरोवर चरन टिकांयदा। गुर गोबिन्दे तेरा बणया बोला, पुरख अबिनाशी आप वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए जगत अनभोला, सृष्ट सबाई आप भुलांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लिख्या लेख गुर धाम, गुर गद्दी जगत माया बदी, अन्तिम वेख वखांयदा।

६२७ ०६

✻ १५ अस्सू २०१४ बिक्रमी दरबार विच जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✻

हरि मन्दिर अपार, तख्त सुहाया। जोत सरूपी कर आकार, शाहो भूप अख्वाया। रूप रंग अपर अपार, भेव किसे ना पाया। कोटन कोट खड़े द्वार, दोए जोड़ सीस झुकाया। मंगण मंग बण भिखार, देवणहार रघुराया। शब्द देवे किरपा धार, धुन आत्मक दए जणाया। हरिजन साचे लए उभार, जुग जुग मेला मेल मिलाया। सतिजुग त्रेता वेख विचार, द्वापर कलिजुग खेल खिलाया। राम कृष्ना लै अवतार, आप आपणा रूप वटाया। दुष्ट सँघारे विच संसार, महांसार्थी आप अख्वाया। जोद्धा सूर बली बलकार, चारों कुन्ट वेख वखाया। लोआं पुरीआं पावे सार, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाया। जेरज अंड वेख विचार, उत्भज सेत्ज राया। आप कराए आपणी वंड, वंडणहार आप अख्वाया। मन मति तोड़े जगत घमंड, गुर मन्त्र अन्तर नाम जपाया। लक्ख चुरासी नार दुहागण रंड, पुरख अबिनाशी कन्त ना कोई हंढाया। खोजत खोजत हरि

ब्रह्मण्ड, कलिजुग अन्तिम वेख वखाया। नाम शब्द चण्ड प्रचण्ड, एका खण्डा रिहा उठाया। मनमुखां सुत्ता दे कर कंड, आत्म सेजा दिस ना आया। हरिजन बख्शे आत्म धारा साची ठंड, सीतल सांतक सच वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग विछड़े जग मेल कर, मेल विछोड़ा आपणे हथ्थ रखाया। जुग विछड़े जग मेलया, जुग जुग कार कमाए। आपे गुर सतिगुर साचा चेलया, अक्खर वक्खर नाम पढ़ाए। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ खेलया, आदि जुगादि समाए। सद वसे रंग नवेलया, दिस किसे ना आए। हरि शाह सज्जण सुहेलया, साजण मीत आप हो जाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आत्म घर, कलिजुग अग्नी अग्न बुझाए। कलिजुग अग्नी पंज तत्त, दिवस रैण रही जलाया। नाड़ बहत्तर उब्बल रत्त, धीरज धीर ना कोए धराया। सति सन्तोखी गया सति, सांतक सति ना कोई वरताया। जुगत जगत ना आए हथ्थ, झूठा जोग कमाया। प्रभ अबिनाशी सर्बकला आपे समरथ, समरथ पुरख अख्वाया। जिस जन राखे दे कर हथ्थ, तत्ती वाओ नेड़ ना आया। रोग सोग देवे मत्था, चिन्ता तृष्ना रहिण ना पाया। मिल्या मेल अलक्खणा अलक्ख, लिख्या लेख दए मिटाया। हरिजन ना जाणे जिस दित्ता सुक्ख, आसा मनसा पूर कराया। धुर दरगाही देवे साची वत्थ, वस्त अमोलक झोली पाया। सोहँ शब्द चढ़ाए रथ, दो जहानां आप चलाया। जगत वसूरा दए मथ, आप आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन बख्शे चरन वर, चरन दुआरा इक्क वखाया। दर दुआरा एका घर, हरि हरि साचा पाया। ना जन्मे ना जाए मर, ना मरे ना जाया। लक्ख चुरासी घाड़न घड़, हर घट बैठा आसण लाया। दस्म द्वारी चोटी चढ़, महल्ल अटल इक्क सुहाया। जोत सरूपी अन्दर वड़, शब्द सरूपी किला बणाया। मन मति बुध ना सके फड़, जीव जन्त होए हलकाया। ना कोई सीस ना कोई धड़, अगम्म अगम्मड़ा भेख वटाया। ना कोई चोटी ना कोई जड़, धरत धवल ना कोई उगाया। अग्नी हवन ना जाए सड़, ख़ाकी ख़ाक ना कोए तपाया। जगत विद्या ना जाए पढ़, एका अक्खर वक्खर नाम रखाया। गुरमुखां लगाए आपणे लड़, एका दूजा भउ चुकाया। तीजे लोइण अग्गे खड़, घर चौथे मेल मिलाया। पंचम मेला हरी हरि, हरि हरि रूप समाया। छेवें नेत्र पेख नरायण नर, नर नरायण आप अख्वाया। सत्तवें सति पुरख निरँजण वसया साचे घर, आप आपणा घर सुहाया। जोती नूर अपार अपर, रवि ससि नज़र ना आया। आपणी शक्ती आपे धर, आदि शक्त रूप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साजन जगत जुग मेला, आप आपणा मेल मिलाया। मेल मिलावा हरि बेअन्त, अन्त कोई ना पाया। रसना गा गा थक्के साध सन्त, दिवस रैण सेव कमाया। लक्ख चुरासी जीव जन्त, माया भरमे भरम भुलाया।

६२८
०६

गुरमुख मेला मेले साचे कन्त, कन्त कन्तूहला हरि रंगाया। खेले खेल आदि अन्त, जुग जुग भेख वटाया। कोटन कोट सँघारे देव दंत, हरनाक्ष नाकश रहिण ना पाया। हरिजन रुत्त सुहाए इक्क बसन्त, फल फुलवाड़ी वेख वखाया। मिले नाम धन्न होए धनवन्त, सच ख़ज़ीना इक्क वखाया। माया ममता होए भस्मंत, भरम गढ़ हरि तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, हरि साजण वेख वखाया। हरि साजण जग मीतड़ा, हरिजन रिहा तराए। काया चोली रंगे चीथड़ा, दुरमति मैल गंवाए। काया एका चाढ़े रंग मजीठड़ा, उतर कदे ना जाए। पंचम तत्त काया कौड़ा रीठड़ा, अमृत आत्म मुख चुआए। देवे नाम जगत अनडीठड़ा, ना कोई वेखे वेख वखाए। सोहँ शब्द साचा लागा मीठड़ा, प्रभ अबिनाशी झोली पाए। मनमुख भरन आपणा कीतड़ा, कलिजुग वेला अन्तिम आए। ना कोई देहुरा मन्दिर मसीतड़ा, गुरदुआरा रहिण ना पाए। गुरमुख विरले मन तन आपणा जीतड़ा, चरन कँवल कँवल चरन ध्यान लगाए। पारब्रह्म प्रभ अबिनाशी करता आपे जाणे आपणी रीतड़ा, नित नवित्त भेख वटाए। इक्क सुणाए सुहागी गीतड़ा, सो पुरख निरँजण दया कमाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जिस जन देवे नाम पूर्ब लहिणा झोली पाए।

हरिजन हरि रंग रतया, राम नाम मजीठ। आपे देवे चेतन्न सतया, सुरत शब्द अनडीठ। आत्म बीज बीजे साचे वत्तया, अमृत आत्म फल मीठ। भाग लगाए डाल्ही पत्तया, कौड़ा भन्ने काया रीठ। चरन कँवल बंधाए साचा नत्तया, नर नरायण नर हरि जगदीश। आकाश प्रकाश सुहाए बिन दीवा बत्तीआ, छत्र झुलाए साचा सीस। जुग जुग समझावे दे मत्तया, सुहागी शब्द इक्क हदीस। सति सन्तोखी धीरज जतया, चरन कँवल जन प्रीत। आलस निन्दरा मन मति लथ्थया, काया चोली ठांडी सीत। सोहँ शब्द चढ़ाए साचे रथया, रथ रथवाही बीठला बीठ। पंज तत्त मूल चुकाए अठ्ठ सठ्ठया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेल इक्क दर, देवे नाम खुमारी साची वथ्थया। नाम खुमार जगत अनमुल्ल, गुर मति गुर हथ्थ रखाईआ। जुगत जगत जोग ना सके तुल, ज्ञान ध्यान निशान ना वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी लक्ख चुरासी खेल ब्रह्मा विष्न शिव सेवा लाईआ। गुरमुख उपजाए लाल अनमुल्लड़े साची कुल, राम रामा रूप समाईआ। मनमुख काया बूटा गया हुल, पत पतीआं रहिण ना पाईआ। हरिजन हरि शब्द कंडे गया तुल, सोहँ रतीआ नाम पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला इक्क दर, ब्रह्मण्डे मेल मिलाईआ। ब्रह्मण्ड मेला हरि निरँजण, एका अलख जगांयदा। नेत्र नैण नाम अंजन, प्रतक्ख स्वच्छ दरस दिखांयदा। दाता दानी दर्द दुःख भय भंजन, मच्छ

६२६
०६

कच्छ रूप वटांयदा। चरन धूढ़ कराए साचा मजन, नस्स नस्स पन्ध मुकांयदा। काल नगारे सिर ते वज्जण, दस दस भगत तरांयदा। जो घड़े सो अन्तिम भज्जण, अन्तिम दु:ख ना कोई वखांयदा। जन भगतां पड़दे कज्जण, समरथ जोत प्रगटांयदा। दो जहानी रक्खे लजण, लाजावन्त आप अख्वांयदा। अमृत आत्म पी पी रज्जण, पंचम झिरना आप झिरांयदा। अनहद ताल तलवाड़े अगम्म अगम्मड़े धाम वज्जण, सुर सितार आप हिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला इक्क दर, दर दुआरा इक्क सुहांयदा। दर द्वार हरि अथाह, थिर घर नाउँ रखाया। पुरख अबिनाशी बैठ बेपरवाह, जन भगतां रिहा जणाईआ। ना कोई पिता ना कोई माँ, ना कोई मंग वखाईआ। सति पुरख निरँजण एका नाउँ, दो जहानां धन्न कमाईआ। जोती शब्दी पकड़े बांहों, मन मति नज़र ना आईआ। दरगहि साची देवे थाउँ, छप्पर छन्न ना कोई रखाईआ। फड़ हँस बणाए काँ, कागों हँस बणाईआ। सोहँ सो जपाए साचा नाउँ, निरगुण विच समाईआ। निरगुण वेखे थाउँ थाँ, सरगुण पैज रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन विछड़े मेल कर, जुग मेला जगत जोग हरि शब्द कमाईआ। जगत जोग जुगत जग अन्तर, आत्म धूणी ताईआ। जोत निरँजण इक्क बसन्तर, जोती हवन कराईआ। अनहद ताल नगारा आत्म अन्तर, अनादी धुन उपजाईआ। इष्ट देव नमो गुर मन्त्र, सोहँ शब्द जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेल कर, अन्दर मन्दिर इक्क वखाईआ। अन्दर मन्दिर घर महल्ला, एका एक वखाया। ऊँचो ऊँच अटला, निहचल धाम सुहाया। किसे हथ्थ ना आए जल थला, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ कोटन कोट जोगी यतीए रिहा फिराया। आकाश प्रकाश दीपक जोती एका बला, सच सिँघासण आसण डेरा लाया। राम धाम नाम एका मल्ला, एका दर सुहाया। दूई द्वैती हउमे हँगता मिटे सल्ला, साची संगत रंग चढ़ाया। आदि अन्त जुगा जुगन्त हरि भगवन्त, साचे सन्त मेल मिलाया। इक्क इकल्ला अकल कला, अकल कल समाया। आवण जावण पवणी पवण जोती शब्दी आपे रला, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड खाणी बाणी वेख वखाया। गुरमुख दर द्वार दर दरवेश नर नरेश एक मल्ला, गणपति गणेश सहँसर मुख गाए शेश, सागोंपाग सेजा कांग, धरत धवल उप्पर मवल, अमृत आत्म नाभ कँवल, साँवल सुन्दर रूप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमख साजण साचे मीत, पतित पुनीत आप कराया।

✻ पहली कत्तक २०१४ बिक्रमी दरबार विच जेठूवाल ज़िला अमृतसर ✻

सति पुरख मेहरवान, हरि निरंकारया। खेले खेल दो जहान, खेलणहार आप अख्वा रिहा। जोती नूर इक्क महान, हरि जोती जोत जगा रिहा। जाणे जणाए धुर फ़रमाण, जानणहार आप अख्वा रिहा। दाता दानी गुण निधान, गुणवन्त वेख वखा रिहा। जोद्धा सूर बली बलवान, एका एक आप अख्वा रिहा। जोती नूर इक्क महान, हरि जोती जोत जगा रिहा। ना कोई चिल्ला तीर कमान, ना कोई खण्डा हथ्थ उठा रिहा। ना कोई वेखे विच मैदान, सन्मुख ना कोई उचारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगा रिहा। हरि रंग अपार, भेव ना भेवया। ब्रह्मा शिव ना कोई विचार, ना कोई देवी देवया। विष्नूं वंसी ना कर आकार, रसना जिह्वा ना कोई सेवया। त्रैगुण माया ना खेल अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका एक अलक्ख अभेवया। अलक्ख अभेव हरि भगवन्ता, एका एक अख्वांयदा। आप बणाए आपणी बणता, ना कोई संग रखांयदा। ना कोई लक्ख चुरासी जीव जन्ता, साध सन्त ना कोई गिणती गणत गिणांयदा। आदि निरँजण एका एक आदिन अन्ता, आदि शक्त रूप समांयदा। पारब्रह्म पुरख बेअन्त बेअन्त बेअन्ता, एका एक अख्वांयदा। आपे नारी आपे कन्ता, आप आपणी सेज हंढांयदा। आपे भूशन बस्त्र पहन रंग चाढ़े बसन्ता, फुल फुलवाड़ी आप लगांयदा। आपे रामा राम रूप होए हनवन्ता, आपे रावण वेख वखांयदा। आपे गोपी काहना कंसा, आपे कृष्न देव अख्वांयदा। आपे जोती खेल सहँसा, हरिभगतन रूप समांयदा। हरिभगत बणाए साची बणता, जुग जुग मात बणांयदा। एका शब्द सुत साची अंसा, आप आपणी गोद उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत नूर उपांयदा। जोती नूर हरि उपा, अकल कला वरताईआ। गुर पीर साध सन्त ना जाणे कोई थाँ, पारब्रह्म वड वड्याईआ। जिस जन किरपा कर साचा हरि हँस बणाए काँ, देवे नाम जगत वड्याईआ। सखा सुहेला देवे ठंडी छाँ, ना जपे जपाए किसे दा नाँ, हरि सन्त सुहेले पकड़ उठाए बांह, आप आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। सच वड्याई हथ्थ करतार, एका एक जणाईआ। गोबिन्द नानक बण भिखार, बैठे सीस झुकाईआ। राम कृष्न लै अवतार, लोकमात रास मण्डल गए रचाईआ। वेद व्यासा बण भिखार, इक्क लक्ख हज़ार सतारां सलोक लिखाईआ। ब्रह्मा अट्ठे नेत्र रिहा उग्घाड़, चारे मुख भवाईआ। दहि दिशा करे विचार, पारब्रह्म दिस ना आईआ। शब्द धुन अपर अपार, सति पुरखा रिहा जणाईआ। झिरना झिर झिर रिहा डुल्ल, बूंद स्वांती रिहा प्याईआ। अबिनाशी करता पाए मुल्ल, जुग जुग आपणा भेख वटाईआ। कलिजुग तेरी वेखे कुल, जूठ झूठ होई

६३१
०६

कुड़माईआ। पंच विकारा भण्डारा रिहा खुल्ह, साध सन्तां घर लड़ाईआ। शब्द पंघूड़ा ना कोई हुलार, जूठ झूठ बैठे धूणीआँ ताईआ। अन्तिम काया बूटा जाणा हुल, फल कोई दिस ना आईआ। गुर गोबिन्दा भाग लगाए साची कुल, पूत सपूता आप उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए वर, कलिजुग तेरी अन्त करे कुड़माईआ। शब्द भण्डार भरपूर, हरि एका एक अख्वाया। ब्रह्मे तेरी वेख दुकान, प्रभ साचा वेख वखाया। पंचम मीता वेखे मार ध्यान, आप आपणी दया रखाया। माया राणी होई प्रधान, सच सुच्च नज़र ना आया। सुरत सवाणी सीता सुरती ना हथ्थ फड़े नाम सोटी, राम रामा ना पार लँघाया। साध सन्त हउमे हँगता तेड़ लंगोटी, जूठ झूठ पल्ले गंढु बंन्हाया। फिर फिर थक्के कोटन कोटी, अट्ठ सट्ठ बैठे डेरा लाया। पुरख अबिनाशी अन्तिम कटे सभ दी बोटी बोटी, कलिजुग तेरा भेख मिटाया। किसे हथ्थ ना आए अन्न रोटी, दर दर फिरे हलकाया। कलिजुग माया जूठी झूठी भंग घोटी, अन्त नशा रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका डंका रिहा वजाया। कलिजुग माया पाए बेअन्ता, आप आपणी कल वरताईआ। एका माण रखाया हउमे हँगता, मंगण मंग ना कोई मंगाईआ। मानस मानुख होया नंगता, तन बस्त्र शब्द ना कोई पहनाईआ। मिल्या मेल ना साची संगता, धुर धाम ना कोई वखाईआ। नानक अंगद ना लाए आपणे अंगता, ना कोई करे सच कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वेख वखाए सृष्ट सबाईआ। सृष्ट सबाई खेल खिलारा, हरि हरि आप अख्वाया। गुर गोबिन्द सपूत दुलारा, साचे धाम सुहाया। एका रूप सति सरूप निरँकारा, एका ओट रखाया। एका शब्द एका धुन्कारा, एका राग अल्हाया। छान पुन सर्ब संसारा, लक्ख चुरासी वेख वखाया। सम्बल नगर धाम न्यारा, आप आपणा आसण लाया। महल्ल अटल उच्च मुनारा, चार द्वार ना कोई रखाया। जोती नूर अपर अपारा, आप आपणा रिहा कराया। सोहँ शब्द तेज़ कटारा, पुरख अबिनाशी पहली वारा, लोकमात हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेख लिखारा सृष्ट सबाई आप हो आया। ना कोई गुर ना कोई चेला, ना तत्त बणाया। जोती शब्दी साचा मेला, सतिगुर रूप समाया। खेले खेल इक्क इकेला, अकल कला अख्वाया। कलिजुग तेरा अन्तिम मेला, चारों कुंट पए दुहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप अख्वाया।

हरि साजण जग मीत, एका एक अख्वाया। जुग जुग चले अवल्लड़ी रीत, सृष्ट सबाई वेख वखाया। सतिजुग त्रेता द्वापर गया बीत, कलिजुग अन्तिम आया। गुरदुआरा देहुरा मन्दिर मसीत, शिवदवाला मठ बणाया। दिवस रैण गौंदे गीत, रसना जिह्वा रहे ध्याया। जूठ झूठ कर प्रीत, जीवां जन्तां आपणा मूल गंवाया। इक्क इकल्ला ना वसया चीत, वरन बरनी मार्ग लाया। पाया पुरख ना हरि अतीत, दर घर साचा ना वेख वखाया। चेतन्न चित ना आया चीत, हउमे हँगता रोग वधाया। काया होई ना ठंडी सीत, अमृत जाम ना कोई प्याया। कलिजुग काया कौड़ी रीठ, निझर रस ना कोई वखाया। गुरमुख विरले हरि हरि भाणा लागे मीठ, चरन कँवल ध्यान लगाया। देवे शब्द नाम अनडीठ, लेखा लिख्त विच ना आया। काया चोली चाढ़े रंग मजीठ, रंगणहार आप अख्वाया। त्रैगुण माया आपणा पीसण पीठ, पंचम तत्त संग रलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग जुग वेखण आया। जुग जुग जगत जगतार, प्रभ साचे आप चलाईआ। लोकमात कर पसार, पुरीआं लोआं वेख वखाईआ। धरत धवल कर कर आकार, आकाश प्रकाश विच समाईआ। अवण गवण पाए सार, सारंगधर आप अख्वाईआ। ब्रह्मा शिव देवत सुर दए हुलार, करोड़ तेतीसा आप जगाईआ। विष्नूं वंसी कर ख़बरदार, आप आपणी करे जणाईआ। लक्ख चुरासी कर्म विचार, पूर्ब लहिणा झोली पाईआ। धर्म राए लेख द्वार, नेत्र नैण रिहा खुल्हाईआ। चित्रगुप्त लेख लिखार, लेखा आपणा रिहा लिखाईआ। लाड़ी मौत कर शृंगार, हथ्थी मैहन्दी रही लाईआ। सच सपुत्री हो त्यार, मुख घुंगट रही वखाईआ। मंगे मंग दर भिखार, लोकमात राह तकाईआ। काल महांकाल रहे पुकार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। वेखे खेल दीन दयाल, दया निध आप अख्वाईआ। फल लगाया आपे डाल्ह, अन्तिम आपे दए चढ़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर चली चाल, आप आपणा रूप वखाईआ। कलिजुग खेले खेल अकाल, अकल कल वरताईआ। साध सन्त थक्के भाल, दिस किसे ना आईआ। सुरत सवाणी होई हाल बेहाल, सुखमन पाई गल विच फाहीआ। ना कोई चले बेहंगम चाल, मिल्या मेल ना साचे माहीआ। हरि शब्द गुर मन्त्र ना करे अन्दर संभाल, मन्दिर अन्दर बैठे डेरा ढाहीआ। मिल्या नाम ना सच धन माल, तन खज़ाना ना कोई भराईआ। अन्तिम अन्त कलि खाए काल, कलिजुग कूके दए दुहाईआ। चार यार संग मुहम्मद नाल नाल, ईसा मूसा राह वखाईआ। गोबिन्द मारे इक्क उछाल, नेत्र नैण रिहा वखाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, सच सिँघासण आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन मेला मेल मिलाईआ। हरिजन मेला धुर दरगाह, हरि साचा आप मिलांयदा। इक्क जपाए साचा नाँ, सति पुरखे विच समांयदा। पकड़ उठाए थाउँ थाँ, जुग जुग विछड़े मेल मिलांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए

काँ, सोहँ साची चोग चुगांयदा। थिर घर वखाए साचा थाँ, आप आपणे विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा रंग रंगांयदा। आप आपणा रंग रंगाए, अकल कला गिरधारी। जोती जामा भेख वटाए, शब्द खण्डा तेज कटारी। निहकलंका नाउँ रखाए, लोआं पुरीआं करे ख़बरदारी। शब्द डंका इक्क वजाए, गुर गोबिन्दा शाह अस्वारी। राउ रंकां आप उठाए, गऊ ग़रीबां इक्क वखाए सच सच्चा दरबारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल अपर अपारी। अपर अपारी हरि हरि खेल, भेव कोई ना पांयदा। सन्त सुहेले आपे मेल, जगत विछोड़ा आप कटांयदा। आपे गुर गुरू गुर चेल, गुर गोबिन्द आप समांयदा। आपे वसया रंग नवेल, हर घट आपे आसण लांयदा। आपे होए सज्जण सुहेल, आप आपणा बंध बंधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका गीत सुहागी छन्द, नौ खण्ड पृथ्वी आप जणांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी एका गीत, प्रभ साचे आप सुणाया। ना कोई देहुरा मन्दिर मसीत, गुरुद्वार दिस ना आया। सतिजुग तेरी साची रीत, प्रभ आपणे हथ्थ रखाया। सोहँ अक्खर साचा रक्खणा चीत, चित वित ठगोरी कोए ना पाया। एका रंग रंगाए हस्त कीट, राज राजाना शाह सुल्ताना दर दर फिराया। मनमुखां सुत्ता दे कर पीठ, आप आपणा मुख छुपाया। मन मति काया करे कौड़ा रीठ, फल अमृत हथ्थ ना आया। गुरमुखां हरि भाणा लागे मीठ, सद भाणे विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन लेखे लए लाया। हरिजन लेखा सच दरबार, आपणा आप लिखांयदा। लिखणहारा एका एकँकार, इक्क इकल्ला सेव कमांयदा। लक्ख चुरासी दर भिखार, भिक्खक भिच्छया एका पांयदा। आवे जावे वारो वार, आप आपणी रचन रचांयदा। नानक गोबिन्द सेवादार, सेवक सेवा आप करांयदा। लेखा लिखे गुण विचार, गुणवन्ता आप हो जांयदा। अन्तिम मेला मेल विच संसार, मस्तक टिक्का इक्क लगांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी रही हार, लक्ख चुरासी मूल चुकांयदा। ब्रह्मा रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नीर वहांयदा। बाशक तशका गल विच हार, शिव शंकर धीर ना कोई धरांयदा। विष्नूं वंसी कर पुकार, प्रभ दर आप कुरलांयदा। सुरपति राजा इन्द होए ख़बरदार, करोड़ तेतीसा नाल रखांयदा। प्रगट होए विच संसार, जगत जगदीसा जोत जगांयदा। शब्द खण्डा तेज़ कटार, तन गात्रे आप लटकांयदा। निहकलंका लए अवतार, वेद व्यासा आप लिखांयदा। जन भगतां करे इक्क प्यार, आप आपणी दया कमांयदा। साचा मेला कन्त भतार, नारी कन्ता आप अख्वांयदा। आत्म सेजा कर श्रृंगार, फूलन बरखा लांयदा। जोत सरूपी कर आकार, शब्दी मेल मिलांयदा। आपे बैठा अध विचकार, दस्म द्वार डेरा लांयदा। चारों कुन्ट बन्द किवाड़, ना

कोई ताक खुल्हांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चार वरन एका सरन एका धार वहांयदा। चार वरन इक्क दुआरा, एका रंग रंगाईआ। खाणी बाणी ना कोई करे प्यारा, अञ्जील कुराना हाहाकारा, रसना जिह्वा कोई ना गाईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक पीर रोवण ज़ारो ज़ारा, नेत्र नीर वहाईआ। अल्ला हू हू तेरा कोई ना लाए नाअरा, अहिनल हक्क ना कोई सुणाईआ। एका एक बेऐब परवरदिगारा, खुदी खुदाई दए मिटाईआ। निहकलंक लए अवतारा, अमाम मैहन्दी नाउँ रखाईआ। पीले बस्त्र तन कर श्रृंगारा, मक्का मदीना फेरा पाईआ। कूजा बांग हथ्थ मुसल्ला अपर अपारा, एका वाहिज़ रिहा सुणाईआ। सोहँ शब्द तेरी जै जै कारा, उम्मत नबी रसूल दी आपे रिहा पढ़ाईआ। अरब अरबानीआं ढहि पए दुआरा, शाह अफगाना रहिण ना पाईआ। एका झुल्ले नाम निशाना अपर अपारा, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उप्पर नाम रखाईआ। एका वाहिद गाँड खुदा, एका नूर अलाहीआ। एका जुदा दए करा, एका मेल मिलाईआ। एका सदा रिहा जगा, एका छन्द सुणाईआ। आपणी गदा आप करा, चाकर चाकरी रिहा कमाईआ। आत्म मध जाम पिला, एका धीर धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका नाअरा हरि निरँकारा आपणा आप करांयदा। आपे करे जगत प्यारा, आपे भरम भुलांयदा। आपे करे तन श्रृंगारा, आपे ख़ाक रुलांयदा। आपे विगसे कर विचारा, वेखणहार आप रखांयदा। बस्त्र दिसे ना किसे चीर संसारा, रूप अनूप सति सरूप आप समांयदा। वंडन वंडे अपर अपारा, खण्ड ब्रह्मण्ड जेरज अंड खोज खुजांयदा। सूरज चन्न वेखे धारा, तारा मण्डल ना कोई चढ़ांयदा। एका एक अबिनाशी करता आदि शक्त जोत सरूप दिसे, अनभव प्रकाश करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका एक भउ चुकांयदा। एका दूजा भउ चुकाउणा, प्रभ आपणी कल वरताईआ। राग छतीसा किसे ना गाउणा, ना कोई जगत विद्या करे पढ़ाईआ। वेद पुराण शास्त्र सिमरत पंडत पाधां ना कोई रखाउणा, तिलक मस्तक ना कोई लगाईआ। मुल्ला शेख़ ना किसे मति रखाउणा, तसबी गानी ना गल लटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका अक्खर जगत वक्खर, लोकमात नाम जपाउणा, सोहँ सो मात पढ़ाईआ। चार वरन अठारां बरन एका मार्ग लाउणा, एका राह चलाईआ। शब्द दस्तार सीस बंधाउणा, नीला काला पीला चीर ना कोई रखाईआ। आत्म दरसी दरस दिखाउणा, हर घट अन्दर वेख वखाईआ। दर दुआरा इक्क खुल्ल्हाउणा, सतिजुग साचा राग अल्हाईआ। जूठ झूठ नज़र ना आउणा, मदिरा जाम ना कोई पिलाईआ। केसाधारी ना माण रखाउणा, मूंड मुंडाए रहे शरमाईआ। ऊँच नीच प्रभ भेव चुकाउणा, राउ रंक ना कोई अख्वाईआ। एका शब्द राग अनादी सृष्ट सबाई

गाउणा, नौ खण्ड हरिजन वज्जे वधाईआ। सत्तां दीपां लक्ख चुरासी प्रभ अबिनाशी पारब्रह्म करता एका पाउणा, ना कोई दूसर ओट रखाईआ। अकाल मूर्त प्रभ नज़री आउणा, एका रंग चढ़ाईआ। गुरमुख साचे दर बहाउणा, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। सर सरोवर इक्क नुहाउणा, चरन धूढ़ ख़ाक रमाईआ। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ मेट मिटाउणा, गंगा गोदावरी रही शरमाईआ। मक्का मदीना पहले ढाउणा, चौदां कत्तक लेख लिखाईआ। ईसा मूसा संग रलाउणा, उन्नी उनीसा दए दुहाईआ। अल्ला राणी गल विच पल्ला पाउणा, नेत्र नैणा नीर रही वहाईआ। संग मुहम्मद चार यार सदी चौधवी मिले ना सौणा, चौदां तबकां रिहा हिलाईआ। सेवा लाए पवणी पवणा, एका शब्द करे जणाईआ। जागरत जोत ज्वाला इक्क जगाउणा, अग्नी लाट ना कोई वखाईआ। कीर्तन सोहला पौड़ी किसे ना गाउणा, नाम सति गया मति समझाईआ। नानक गोबिन्द एह समझाउणा, लक्ख चुरासी गया समझाईआ। कलिजुग अन्तिम निहकलंक प्रभ साचा आउणा, जीव जन्त भेव ना राईआ। जूठा झूठा जगत पसार मिटाउणा, साधां सन्तां अन्दर खोज खुजाईआ। गढ़ हँकारी रहिण ना पाउणा, नौ दर वेखे पई दुहाईआ। आप आपणा डंक वजाउणा, एका अंक रखाईआ। निरगुण सरगुण वेख वखाउणा, निरगुण रूप अलाहीआ। गुरमुख हरिजन जन भगत जुग विछड़े जग मेल मिलाउणा, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। वेद कतेब भेव किसे ना पाउणा, लिख लिख पढ़ पढ़ देंदें मात दुहाईआ। अछल छल प्रभ आप कराउणा, बल बावन भेख वटाईआ। कलिजुग रावण मेट मिटाउणा, राम रामा रूप समाईआ। हरिजन तेरा सति सतिवादी राह चलाउणा, काहना कृष्ना रूप वटाईआ। अर्जन लेखा लेख लिखाउणा, अठारां ध्याए करे जणाईआ। गीता ज्ञान मेल मिलाउणा, कलिजुग अन्तिम औध मिटाईआ। ईसा मूसा आप समझाउणा, आप आपणी दया कमाईआ। कलिजुग तेरा वक़त सुहाउणा, हरि शब्द वज्जे वधाईआ। हरिसंगत हरि हरि साचा पाउणा, हरि नामे मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकरमी निहकर्म कमाउणा, जरम कर्म धर्म बरन मरन चरन हरि सरनाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, आप आपणी जोत धर, सति पुरख निरँजण आप अख्वाईआ। सति पुरख सति सतिवन्त, सति सरूप समाया। भेव ना पायण जीव जन्त, साध सन्त चौथे पद समाया। चौथा पद महिंमा अगणत, पंचम राह तकाया। पंचम रूप हरि बेअन्त, बेअन्त बेअन्त आप अख्वाया। छेवें मेला नारी कन्त, जोती नारी सेज हंढाया। देवे मति अलक्ख निरँजण आदि अन्त, एका रंग समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर हरि आपणा आप सुहाया। करनहार समरथ, हरि रघुनाथया। शब्द जणाए अकथना अकथ, पुरख समराथया। धुर दरगाही साची वत्थ, जन भगतां देवे हथ्थो हाथया। पंचम पंचां देवे मथ, पंचम पाए साची

६३६
०६

नाथया। हरिजन सगल वसूरे जायण लथ्थ, मिले मेल रामा दसराथया, खेले खेल त्रैलोकी नाथ, अनाथ अनाथां होए साथया। लहिणा देणा मस्तक माथ, आप रखाए आपणे हाथया। हरिजन चढ़ाए साचे रथ, रथ रथवाही आप अख्वन्तया। सच जणाई एका गाथ, सोहँ सो भगत भगवन्तया। अबिनाशी करता आपे हो, आपे होए कमलापातया। बीज आत्म साचा बो, फल लगाए काया डाल्ही साची पातीआ। मनमुख जीव रहे रो, धरत मात विछाई बैठी सथया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप जणाए आपणी गाथया। एका गाथा एका अक्खर, एका जगत पढ़ाईआ। बजर कपाटी पाड़े पत्थर, सथ्थर हेठ विछाईआ। नेत्र नीर वरोले अथ्थर, नैणी नीर समाईआ। गुरमुख सच वरोले मक्खण, नाम मधाणा एका पाईआ। कलिजुग अन्तिम आया रक्खण, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। मनमुख जीवां भाण्डे सक्खण, आत्म झोली ना कोई भराईआ। वेख वखाए चारे दिशा उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण, लुकया कोई रहिण ना पाईआ। जूठ झूठ अन्यारे भखण, कलिजुग लम्बू रिहा लाईआ। जीव जन्त सारे तक्कण, राह खैहड़ा दिस ना आईआ। गौंस मज़ौर मक्का मदीना तजण, होए ना कोई सहाईआ। पन्थ ख़ालसा सर अमृत छड्ड छड्ड भज्जण, जावण वाहो दाहीआ। काशी पंडत कोई ना पड़दा कज्जण, चन्दन तिलक ना कोई लगाईआ। अठसठ ना मिले किसे मजन, सर सरोवर ना कोई नुहाईआ। ना कोई हाज़ी करे हज्जन, जगत यात्रा पूर कराईआ। ना कोई शाह सुल्तान राज राजन, दर दरबान ना कोई अख्वाईआ। ना कोई मारे किसे आवाज़न, चवर सीस ना कोई कराईआ। लक्ख चुरासी रच्चया काजन, कर्म धर्म करन कुड़माईआ। धाम अवल्ला देस माझन, प्रभ साचा सगन मनाईआ। जन भगतां आत्म रक्खे लाजन, लाजावन्त आप अख्वाईआ। नाम चढ़ाए सच जहाज़न, सोहँ चप्पू लाईआ। मनमुख जीवां खोल्हे पाजन, भरम गढ़ तुड़ाईआ। गुरमुख नारी कन्त सुहागन, घर साचे मेल मिलाईआ। आप कराए जगत वैरागन, खुल्हड़े केस गल लटकाईआ। चरन धूढ़ कराए मजन माघन, चवर चवरा इक्क कराईआ। पुरख अबिनाशी साचा साजन, हरिजन साचे लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहार हर घट थाँईंआ। वेखणहारा हरि रघुनाथा, सेवक सेवा कमांयदा। दो जहानी सगला साथा, सगला संग निभांयदा। गुरमुख रक्खे दे कर हाथा, आप आपणे अंग लगांयदा। लेखे लाए चरन छुहाया मस्तक माथा, नूर नूरी रूप दरसांयदा। अमृत आत्म मारे ठाठा, एका धार वहांयदा। ना कोई पूजा ना कोई पाठा, भाग लगाए काया बाटा, अमृत आत्म जाम प्यांअदा। ना कोई तीर्थ ना कोई ताटा, साचा मजन इक्क करांयदा। आपे गेड़नहारा उलटी लाठा, कलिजुग गेड़ा आप दवांयदा। धुर दरगाही आया नाठा, भेखाधारी भेख वटांयदा। हरिजन लेखे लाए हाडी तिन्न सौ साठा, नाड़ बहत्तर जोत जगांयदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत हरि रंगण रंग रंगांयदा। हरिसंगत वर साचा पा, आत्म चिन्त मिटाईआ। इक्क ध्यान गुर चरन लगा, रोग सोग गंवाईआ। सोहँ सो रसना गा, सति पुरखे विच समाईआ। सदा सुहेला देवे ठंडी छाँ, आप आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत बख्शे नाम वर, वड दाता बेपरवाहीआ। हरि का नाम जगत अनमुल्ला, गुरमुख विरला पांयदा। सच भण्डारा मात खुल्ला, करनी करता आप वरतांयदा। दर द्वारे ना कोई लाए मुल्ला, चरन प्रीती इक्क सिखांयदा। गुरमुख जो जन आए भुल्ला, भुल्लयां मार्ग पांयदा। आपे फुलया आपे फुला, फुल फुलवाड़ी मात लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत देवे नाम, जो जन साची मंग मंगांयदा।

✻ १० कत्तक २०१४ बिक्रमी चरन सिंघ दे गृह पिण्ड हमराजपुर ज़िला गुरदासपुर ✻

६३८
०६

गुरमुख दुआरा सच घर, मेला पुरख अगम्म। दो जहानी एका वर, ना मरे ना पए जम्म। आवण जावण चुक्के डर, लेखे लग्गे काया चम्म। मेल मिलाया हरि दया कमाया हरी हरि, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग जन भगतां आप संवारे दर दर घर घर आए कम्म।

६३८
०६

हरि दाता दातार, जुग जुग आप अख्वांयदा। जोती नूर हरि अपार, शब्दी शब्द समांयदा। खेले खेल खेलणहार, दिस किसे ना आंयदा। आदि अन्त जुगा जुगन्त लोकमात लए अवतार, आप आपणी बणत बणांयदा। साध सन्त लाए सेवक सेवादार, साची सेवक सेव कमांयदा। भगत भगती करे ख़बरदार, पूत सपूते सोए आप जगांयदा। जुग जुग लहिणा देणा कर्ज़ उतार, साची भिच्छया झोली पांयदा। नाम गहणा तन शृंगार, एका बस्त्र वेख वखांयदा। दर्शन नैणां अन्तिम वार, एका दूजा भेव चुकांयदा। आपे खोल्हे बन्द किवाड़, चौथा घर सुहांयदा। पंचम मेला मीत मुरार, विछड़ कदे ना जांयदा। छेवें छप्पर छन्न ना कोई पसार, चार दिवार ना कोई जणांयदा। सत्तवें सति पुरख निरँजण अपर अपार, थिर घर आपणा आसण लांयदा। दीपक जोती कर उज्यार, अट्ठे पहर डगमगांयदा। अट्ठ तत्त ना पायण सार, भेव अभेदा ना कोई भेव जणांयदा। नौ दर द्वार लक्ख चुरासी कर ख्वार, आप आपणा मुख छुपांयदा। दसवें घर सति आकार, आप आपणा रंग रंगांयदा। जन भगतां मेला विच संसार, अन्तर मन्त्र आप करांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार, कलिजुग

अन्तिम अन्त करांयदा। गोबिन्द लेखा लेख लिखार, लोकमाती राह चलांयदा। भरमे भुल्ले जीव गंवार, भरम गढ़ ना कोई तुड़ांयदा। हउमे हँगता कर प्यार, साची संगता ना कोई रलांयदा। भुक्खा नंगता जीव जन्त ना देवे कोई सहार, ना कोई धीर धरांयदा। पुरख अबिनाशी कर पसार, आप आपणी कल वरतांयदा। निहकलंका लए अवतार, शब्द डंका इक्क वजांयदा। राउ रंकां करे ख़बरदार, शाह सुल्तान सोया कोई रहिण ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। हरिजन मेला सच द्वार, प्रभ साचा आप करांयदा। आपे खोल्ले बन्द किवाड़, आपे कुण्डा लांहयदा। मन्दिर अन्दर साचे वाड़, उच्च महल्ल अटल आप सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला इक्क घर, घर साचा आप सुहांयदा। चरन नाता चरन धूढ़, गुरसिख मात वड्याईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, दे मति आप समझाईआ। काया चोली रंगण चाढ़े गूढ़, उतर कदे ना जाईआ। जगत नाता तोड़े कूड़ो कूड़, एका पल्लू नाम फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। चरन नाता जगत जगदीस, जुग जुग आप कराया। हरिजन छत्र झुलाए साचे सीस, दिस किसे ना आया। मनमुख जीव जूठा झूठा पीसण रहे पीस, सच वस्त ना कोई झोली पाया। पढ़ पढ़ थक्के राग छतीस, राग रागनी सेवा लाया। भेव ना पाए बीस इकीस, हरि गोबिन्द वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन विछड़े जुग मेल मिलाया। जग मेला जगत वर, हरि साचा आप मिलांयदा। शब्द भण्डारा आत्म भर, तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। धुर दरगाही देवे एका वर, एका अक्खर जाप जपांयदा। अमृत आत्म नुहाए साचे सर, तीर्थ तट्ट ना कोई रखांयदा। करनी किरत करता पुरख आपे कर, करनहार आप अख्वांयदा। सन्त सुहेले कर कर मेले बांहों फड़, जुग जुग विछड़े मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन सरन सरन चरन सच सरनाई इक्क वखांयदा। सच सरनाई हरि चरन द्वार, एका ओट रखाईआ। मिल्या मेल कन्त भतार, आत्म सेजा रिहा उठाईआ। फुलन बरखा अपर अपार, अनहद राग अलाईआ। पंचम गायण वारो वार, दिवस रैण मृदंग वजाईआ। प्रभ अबिनाशी वेखे वेखणहार, दर घर साचा रिहा सुहाईआ। शब्द रंगीला पलँघ अपार, पावा चूल ना कोई रखाईआ। दस्म द्वारी अधविचकार, बैठा आसण लाईआ। गुरमुख साचे कर कर प्यार, आप आपणी गोदी रिहा उठाईआ। अट्ठे पहर दिवस रैण वाजां रिहा मार, सेवक सेव रिहा कमाईआ। ग़रीब निवाज़ा ख़बरदार, आलस निन्दरा विच ना आईआ। जुग जुग जन हरि तेरी रक्खे लाजा लोकमात मार झात, आपणी करे आप कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे मेले साचे घर, चरन सरन इक्क सरनाईआ।

चरन चरनोदक अन्तिम मुख, प्रभ साचा आप चुआंयदा। हउमे हँगता मिटे दुःख, सहिंसा रोग मिटांयदा। सुफल कराए मात कुक्ख, आवण जावण गेड़ मिटांयदा। गर्भ वास ना उलटा रुक्ख, धर्म राए ना मुख वखांयदा। लेखे लग्गे मानस देही मनुक्ख, हरि सेवक सेव कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द मेला साचे घर, घर साचा आप सुहांयदा। गोबिन्द मेला शब्द सलाह, प्रभ साचा आप करांयदा। जोत सरूपी बण मलाह, कलिजुग बेड़ा आप चलांयदा। फड़ फड़ बांहों राहे रिहा पा, एका मार्ग लांयदा। लक्ख चुरासी कटे फाह, आपणी दया कमांयदा। इक्क जपाए साचा नाँ, नानक गोबिन्द रसना गांयदा। आपे बणे पिता माँ, गुरमुख साचे बाल अञ्जाणे आपणी गोद उठांयदा। सदा सुहेला देवे ठंडी छाँ, सिर आपणा हत्थ टिकांयदा। कलिजुग अन्तिम घर घर उडणे काँ, ना कोई किसे बचांयदा। होए विछोड़ा पुत्तरां माँ, धीरज धीर ना कोई धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि शब्द साचा मेल दर, दर दुआरा इक्क वखांयदा। दर दरवाज़ा खोल्ह किवाड़, प्रभ आपणी दया कमाईआ। दिवस सुहाए सतारां हाढ़, हरिसंगत मेल मिलाईआ। मनमुखां अग्न लगाए बहत्तर नाड़, हड्ड मास नाड़ी रत्त रिहा जलाईआ। मगर लगाए पंचम धाड़, दिवस रैण चैन ना पाईआ। लक्ख चुरासी आप चबाए आपणी दाढ़, लोआं पुरीआं फेरा पाईआ। ब्रह्मा शिव देवत सुर रोवण ज़ारो ज़ार, अट्ठे पहर देण दुहाईआ। प्रगट हो हरि निरँकार, कलिजुग आपणी खेल वरताईआ। शब्द खण्डा तेज़ कटार, आप आपणे हत्थ उठाईआ। साध सन्त रहे विचार, जगत विद्या मात पढ़ाईआ। लेखा लिख ना सके कोई विच संसार, रसना जिह्वा होई हलकाईआ। अबिनाशी करता अपर अपार, आपणे हत्थ रक्खे वड्याईआ। गुरमुख साचे लए उभार, मेलणहार सहिज सुखदाईआ। चरन प्रीती इक्क प्यार, साची रीती मात वखाईआ। चार वरन प्रभ सांझा यार, राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान ना कोई वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन सरन सरन चरन मिली नाम जगत भगत बूंद रक्त नाम वड्याईआ। हरिसंगत हरि रंग माणया, मेला गोबिन्द राए। पारब्रह्म अबिनाशी करता एका जाणया, हउमे सहिंसा रोग गंवाए। जुग जुग चले चलाए आपणे भाणया, हरि भाणा हत्थ किसे ना आए। भरम भुलाए राजे राणया, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाए। गुरसिख गुरमुख साचा चतुर सुघड़ स्याणया, आप आपणे रंग समाए। सुणे सुणाए अनहद साची बाणीआ, आत्म अन्तर ताल वजाए। आपे जाणे अकथ कहाणीआ, कथनी कथ ना सके राए। अमृत आत्म देवे ठंडा पाणीआ, ताल सुहावा इक्क वखाए। लक्ख चुरासी पुणी छाणीआ, गुरमुख साचे लए जगाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे नाम वर, एका दूजा भउ चुकाए। हरिसंगत नाउँ सच्च, सुच्च सच सच्ची सरनाईआ।

काया माटी भाण्डा कच्च, थिर रहिण ना पाईआ। पंच पंचायण दर रही नच्च, अट्ठे पहर घुंगट लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, हरिसंगत देवे एका वर, एका अक्खर जगत वक्खर करे पढ़ाईआ। एका अक्खर ओंकारा, एकँकारा रूप समाया। बजर कपाटी पाड़े पत्थर, दूई द्वैती सिला हटाया। तीजे नैण वरोले अथ्थर, आकाश प्रकाश समाया। पंच विकारा लथ्थे सथ्थर, चौथे घर सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत मेला सच दर, दर दुआरा इक्क वखाया। दर द्वार आपे खोल्ह, एका कल वरताईआ। अनहद शब्द अनादी बोल, आप आपणा राग अलाईआ। सोहँ कंडे साचा तोल, तोलणहारा हर घट थाँईंआ। आदि अन्त जुगा जुगन्त, थिर घर वासी सदा अडोल, ना डोले ना कोई डुलाईआ। जन भगतां करे नित नवित्त चोल्ह, लोकमात आवे जावे फेरा पाईआ। मनमुख जीव मन मति बुध करे लड़ाई पंजां तत्तां घोल, दिवस रैण रही सुणाईआ। कलिजुग काया खेले होली होल, चारों कुन्ट वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी आपणा अन्दर आपे रही फोल, सच वस्त किसे हथ्थ ना आईआ। साध सन्त रहे अनभोल, माया ममता पड़दा पाईआ। पुरख अगम्मा वसया कोल, ना मिल्या साचा माहीआ। जूठ झूठ जीव जन्त ख़ाक रहे वरोल, ख़ाकी ख़ाक ना कोई समाईआ। आत्म अन्तर ना गया मौल, फुल फुलवाड़ी ना कोई वखाईआ। उलटा होया ना नाभ कौल, अमृत धार ना मुख चुआईआ। दर द्वार ना मेला उप्पर धरत धौल, धरत धवल रही कुरलाईआ। गा गा थक्के सोलां सोल, साँवल सुन्दर दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल दर, हरिसंगत देवे साचा वर, वर दाता आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे लोकमात दए वड्याईआ।

भगत वणजारा खोल्ह हट्ट, साचा वणज कराए। गुरमुख लाहा रहे खट्ट, मनमुखां मुख भवाए। ना कोई मन्दिर तीर्थ किनारा तट्ट, ना कोई धाम वखाए। मन हिरदे जोती लट लट, दिवस रैण डगमगाए। काल अन्धेरा कट्ट कट्ट, जगत जंजाल तुड़ाए। भाग लगाए काया मट, तृष्ना भुक्ख मिटाए। अमृत रस एका चट्ट,, निझर धार समाए। लेखा चुक्के आन बाट, फंदन फंद कटाए। चरन कँवल कँवल चरन जन रहे ढठ्ठ, आप आपणे गले लगाए। माया ममता पाए भट्ठ, थिर रहिण ना पाए। गुरसिख बाल अञ्जाणा प्रभ चरन रखाए इक्क हठ, अन्तिम बेड़ा पार कराए। आपे गेड़नहारा लट्ठ, आप विछोड़े आपे मेल मिलाए। माण गंवाए तिन्न सौ सट्ठ, अठसठ बैठे मुख भवाए। गुरमुखां मेल मिलाए नठ्ठ नठ्ठ, ग़रीब निमाणे

आपणी गोद उठाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिसंगत हरि आपणे रंग रंगाए।

✻ १० कत्तक २०१४ बिक्रमी बचन सिँघ दे गृह पिण्ड काणा कौटा ज़िला गुरदासपुर ✻

आदि पुरख अनन्त, अकल कला समाया। पारब्रह्म बेअन्त बेअन्त, भेव किसे ना पाया। गा गा थक्के जीव जन्त साध सन्त, जुग जुग साची सेव कमाया। गुरमुख विरले इक्क इकेले साचा मेला हरि हरि कन्त, नारी कन्ता रूप समाया। आप बणाए बणावणहारा साची बणत, दूसर ना कोई संग रखाया। एका एक सुणाए सुहागी छन्त, आदि अनादी नाउँ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग भेखी भेख वटाया। जुग जुग भेख हरि निरँकार, आपणा आप करांयदा। सन्त सुहेले लाए पार, गुर मात तरांयदा। भगत जन प्रभ पावे सार, दूर दुराडे खोज खुजांयदा। लक्ख चुरासी विच्चों कढ्ढे बाहर, सीस आपणा हथ्थ टिकांयदा। अठसठ तीर्थ नहावण जीव नदान, हउमे हँगता ना कोई मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। हरिजन तेरा साचा रूप, हरि साचे आप पछानया। वेख वखाणे दहि दिशा चारे कूट, लोआं पुरीआं फोल फोलानया। ब्रह्मा शिव देवत सुर हुलारा रहे झूट, लक्ख चुरासी आवण जाणया। तीर निराला रिहा छूट, एका शब्द धुर फ़रमानया। गुरमुख विरला लाहा रिहा लूट, हरि पाया पुरख सुल्तानया। अबिनाशी करता आपे जाए तूठ, मेल मिलाए दो जहानया। मेट मिटाए जूठ झूठ, नेड़ ना आए पंज शैतानया। एका अक्खर नाम वक्खर बन्न्हे साची मुठ्ठ, आपे होए जाणी जाणया। सन्त साजन मीत मुरार लुकया रहे ना किसे गुठ, मिल्या मेल खेले खेल गुण निधानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जग विछड़े जुग मेल कर, सिँघ बचन आप तरानया। गुरमुख साचा सच दुलार, गोबिन्द अंग लगाईआ। मेल मिलाए मेलणहार, पारब्रह्म आप अख्वाईआ। खेले खेल विच संसार, मनमुख जीवां दिस ना आईआ। जन भगतां मेला इक्क घर बाहर, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। आत्म सेजा कर त्यार, बैठा आसण लाईआ। सति सरूपी इक्क नगार, आप आपणी ताल वजाईआ। आपे होए सुणनेहार, आपे रिहा सुणाईआ। पवण उनन्जा दए हुलार, ना कोई दूसर वेख वखाईआ। दीपक जोती कर उज्यार, आकाश प्रकाश समाईआ। सन्तन मेला सच द्वार, हरि साचा आप कराईआ। आपे नारी होए कन्त भतार, आपे साची सेज रिहा हंढाईआ। वेख वखाणे सच सच्चा दरबार, दर दरबान आप हो जाईआ। सति पुरख निरँजण खेल अपार, थिर घर बैठा आसण लाईआ। थिर घर महल्ल अटल मुनार, चार दुआरा ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त जनां, दर साचा इक्क वखाईआ। साचा दर घर सुहञ्जणा, प्रभ एका एक रखाया। जगाए जोत आदि निरँजणा

निरगुण रूप समाया। आपे होए दर्द दुःख भय भञ्जणा, करता पुरख आप अख्वाया। जन भगतां लोकमात जुग जुग रक्खे लजणा, नित नवित्त फेरा पाया। लक्ख चुरासी जो घड़या सो भज्जणा, थिर कोए रहिण ना पाया। गुरसिख मीत मुरारे सज्जणा, गोबिन्द मेला विछड़ ना जाया। कलिजुग लहिणा देणा वेखे कल कि अज्जणा, धर्म राए दए सजाया। मातलोक पड़दा किसे ना कज्जणा, ना कोई दीसे मात सहाया। काल नगारा सिर ते सभ दे वज्जणा, गुर गोबिन्द लेख लिखाया। निहकलंक नरायण नर पड़दा जन भगतां आपे कज्जणा, एका पल्लू नाम पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे मेल कर, जग विछड़े मेल मिलाया। जुग जुग मेलणहार दातार, एका एक अख्वांयदा। आप उपाए आपे मिटाए, आपे दए अधार, आपे मुख भवांयदा। आप जगाए ब्रह्मा विष्न शिव पाए सार, भरम भुलेखा मूल गंवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचा मेल कर, घर साचा इक्क सुहांयदा। साचा घर शब्द ज्ञान, हरि एका एक रखाया। अट्ठे पहर निगहबान, आलस निन्दरा विच ना आया। जोद्धा सूर बली बलवान, शब्द खण्डा रिहा उठाया। रसना चिल्ला तीर कमान, चारों कुन्ट रिहा चलाया। मेट मिटाए शाह सुल्तान, राज राजान रहिण ना पाया। भगत सुहेले कर पछान, दहि दिशा वेख वखाया। आत्म जोती बख्शे ब्रह्म ज्ञान, नेत्र नैणा दर्शन पाया। एका राग सुणाए साचे कान, धुन आत्मक नाद वजाया। आत्म अन्तिम साचा माही बेपरवाही, घर साचे बैठा दीपक जोत जगाया। सच वस्त नाम वणजारा वखाए इक्क मकान, एका वणज कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल कर, घर साचा इक्क सुहाया। साचा घर दीपक प्रकाश, अग्नी तत्त ना राया। निज घर आत्म रक्खे वास, अट्ठे पहर सेव कमाया। वेख वखाए पृथ्वी आकाश, गगन पतालां डेरा लाया। आदि अन्त ना होए विनास, जुग जुग आपणा भेख वटाया। साचे मण्डल पाए रास, आप आपणी रचन रचाया। गुरमुख लेखे लाए दस दस मास, लक्ख चुरासी फंद कटाया। हरिजन हरि भगत हरि होया दास, दिवस रैण आप आपणी सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचा मेल आपणा मेल मिलाया। हरि साजन जग मीत, हरिजन दया कमांयदा। जुग जुग आपे जाणे आपणी रीत, आप आपणा वेस वटांयदा। वेख वखाणे देहुरा मन्दिर गुरुदुआरा मसीत, हर घट अन्दर आसण लांयदा। बैठा रहे सदा अतीत, पुरख अबिनाशी आप अख्वांयदा। आप बणाए आपणा गीत, आपणी रसना आप अलांयदा। एका रंग रंगाए हस्त कीट, वरन बरन ना कोई मिटांयदा। नाम वस्त जगत अनडीठ, जन भगतां आप वरतांयदा। मनमुखां सुत्ता दे कर पीठ, आप आपणा मुख छुपांयदा। कलिजुग काया कौड़ा रीठ, अन्तिम भन्न वखांयदा। पारब्रह्म प्रभ बीठला बीठ, हरिजन साचे

खोज खुजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जग रचना जुग आप रचांयदा। जुग जुग करनहार समरथ, सर्बकला समाया। हरिजन राखे दे कर हथ्थ, दिवस रैण सेव कमाया। शब्द जणाई बोध अगाध, कथा कथनी भेव ना राया। पंच विकारा पाए नाथा, दूत दुष्ट नेड़ ना आया। गुरमुख विरले आत्म सहिंसा सारा लाथा, जिस जन दरसी दर्शन पाया। लहिणा देणा चुकाए सीआं साढे तिन्न हाथा, काल महांकाल नेड़ ना आया। आप चलाए सतिजुग तेरी साची गाथा, सोहँ साचा नाउँ उपाया। चार वरन चढ़ाए एका राथा, एका मार्ग लाया। खेले खेल त्रैलोकी नाथा, नाथ अनाथां दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सगला साथ आप निभाया। सगला संगी हरि भगवन्ता, एका एक अख्वांयदा। रसना गाए जिह्वा, मणीआ मंत चलांयदा। वेस अनेका करे अनन्ता, अकाल कला समांयदा। सतिजुग चोली रंग बसन्ता, साचा रंग चढ़ांयदा। आपे वेखणहारा आदिन अन्ता, जुग जुग वेख वखांयदा। आपे नारी आपे कन्ता, पूत सपूता आप उपांयदा। आपे जाणे जीव जन्ता, ब्रह्मा विष्न शिव सेवा लांयदा। करोड़ तेतीसा बणाए बणता, सुरपति राजा इन्द संग निभांयदा। आपणी महिंमा आपे जाणे वेद कतेब कोई भेव ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे वेख वखांयदा। गुरमुख साचे धुर संजोग, साचा मेल मिलाईआ। आत्म अन्दर दरस अमोघ, हउमे रोग गंवाईआ। सति सरूपी देवे साची चोग, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। पार कराए तीना लोक, लोक परलोक ना कोई उठाईआ। इक्क सुणाए सच सलोक, लिखण पढ़न विच ना आईआ। चरन प्रीती साची मोख, आदि अन्त होए सहाईआ। पंज तत्त विकारा मंगे वर, अट्ठे तत्त रहे शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचा लए मिलाईआ। हरिजन साचा मेल मिला, आपणी दया कमांयदा। नौ दर द्वारे बन्द करा, जुग तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। दूई द्वैती पड़दा लाह, तीजे नेत्र नैण दरस दिखांयदा। चौथा घर दए सुहा, पद निरबाणा इक्क जणांयदा। पंचम मेला सहिज सुभा, सति पुरख निरँजण आप मिलांयदा। छेवें घर आप आपणा राग अल्हा, आप आपणे विच समांयदा। सति पुरख निरँजण सति सतिवाद आप अख्वा, रंग महल्ल अटल सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल दर, आप आपणा कर्म कमांयदा। जुग जुग कर्म कमावणहारा, आदि पुरख अबिनाशा। साध सन्त रसना गावणहारा, हरि होए दासी दासा। महल्ल अटल उच्च मुनारा पावणहारा, पार कराए पृथ्वी आकाशा। रसना पवण स्वामी सोहँ गावणहारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल घर, इक्क वखाए सच सच्चा दरबारा। सच दरबारा सच घर, गुर साचे वड वड्याईआ। ना जन्मे ना जाए मर, आवण जावण ना बणत बणाईआ। ना कोई दिसे नौ द्वार,

पंज तत्त ना वेख वखाईआ। अग्नी हवन ना जाए सड़, मढ़ी गौर ना डेरा लाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, हड्ड मास नाड़ी रक्त बूंद ना कोई उपाईआ। ना कोई चोटी ना कोई जड़, ना कोई बीज बिजाईआ। हरि का शब्द एका अक्खर गुरमुख साचा जाए पढ़, दो जहानां पार कराईआ। शब्द सरूपी आप फड़ाए आपणा लड़, अट्ठे पहर होए सहाईआ। आत्म अन्दर दरस्म अग्गे खड़, देवे दर्शन हरि रघुराईआ। साचे पौड़े जाणा चढ़, चाढ़नहार रिहा चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे बाल अञ्जाणे, आप आपणी गोद उठाईआ। आपे बख्शे चरन ध्याना, आप आपणी सेवा लाईआ। आप बिठाए साचे शब्द बिबाना, लोआं पुरीआं पार कराईआ। ब्रह्मा शिव देवत सुर वेखण मार ध्याना, गुरमुख तेरा राह तकाईआ। धर्म राए मुख शरमाणा, चित्रगुप्त ना वेख वखांयदा। पाया पुरख इक्क सुल्ताना, एका दूजा भेव मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे मेल मिलांयदा। साचा मेला हरि गोबिन्द, गुर सतिगुर आप करांयदा। आप मिटाए सगली चिन्द, हउमे गढ़ तुड़ांयदा। जन भगत उपजाए साची बिन्द, आप आपणे लड़ बंधांयदा। मनमुख लगाए निन्दया निन्द, निन्दक निन्दया मुख रखांयदा। दाती दानी वड दाता हरि गुणी गहिंद, गुण एका आप अख्वांयदा। अमृत धार वहाए सागर सिन्ध, गुरमुख साचे आप नुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख वखाए साचा दर, दर दुआरा बंक सुहांयदा। बंक दुआरा सच दरवाज़ा, प्रभ साचे जोत जगाईआ। गुरमुख मेला ग़रीब निवाज़ा, ग़रीब निमाणा गले लगाईआ। अन्तिम वेले रक्खे लाजा, लाजावन्त आप अख्वाईआ। नौ खण्ड सत्त दीप लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां जेरज अंडां प्रभ रच्चया काजा, साची बणत बणाईआ। जोत जगाए देस माझा, सम्बल नगरी धाम सुहाईआ। अनहद वजाए एका वाजा, राग ताल ना कोई रखाईआ। दिवस रैण अट्ठे पहर जन भगतां दर द्वारे फिरया भाजा, सुत्तयां दरस दिखाईआ। एका रूप सति सरूप शाहो भूप दरस दिखाए दया कमाए भेव चुकाए मक्का काअबा, हाजी हाजा अट्ठ सट्ठ वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख तेरा सुहाए दर, सेवक सेवा रिहा कमाईआ। हरि सेवक मेहरवान, जुग जुग सेव कमांयदा। हरिभगतां देवे भगती दान, आत्म ब्रह्म जणांयदा। चरन धूढ़ सच इशनान, दुरमति मैल गंवांयदा। दीपक जोती नूर महान, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। आत्म अन्तर पीण खाण, अमृत जाम प्यांअदा। मनमुख भुल्ले जीव नादान, माया पड़दा पांयदा। गुरमुख साचे रसना गाण, जिह्वा रसना आप चलांयदा। सिँघ बचन तेरा दर परवान, हरिसंगत मेल मिलांयदा। हरिसंगत सच रंग, साचे सच वरताया। शब्द सरूपी बैठ पलँघ, लोआं पुरीआं वेख वखाया। अमृत आत्म धार वहाए गंग, सर सरोवर किसे हथ्थ ना आया। साध

६४५ ०६

सन्त कलिजुग माया कीने नंग, पारब्रह्म अबिनाशी करता दरस किसे ना पाया। मानस जन्म होया भंग, जगत तृष्ना हरस ना कोई वखाया। गुरसिख ग़रीब निमाणे प्रभ आप लगाए आपणे अंग, अंगीकार आप अख्वाया। जुग जुग जन भगतां कटे भुक्ख नंग, नाम धन पल्ले गंढु बंधाया। पंच विकारा लग्गा जंग, मन मति बुध घेरा पाया। बहत्तर नाड़ी काची वंग, तिन्न सौ सठु हाडी सतार रिहा खड़काया। गुरमुख तेरा साचा संग, गुर शब्दी अन्त निभाया। दर द्वार मंगी एका मंग, नेत्र नैण लोचन दर्शन पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, हरि गोबिन्द रूप समाया।

✻ १० कत्तक २०१४ बिक्रमी किशन सिँघ दे गृह पिण्ड अल्लड़ पिण्डी ज़िला गुरदास पुर ✻

गुरसिख लाल अनमुल्लड़ा, सतिगुर हट्ट विकाए। लोकमात फलया फुलड़ा, फल फुलवाड़ी वेख वखाए। त्रैगुण माया विच ना रुलड़ा, पंज तत्त ना अग्न सताए। दर वेखे इक्क अनभुलड़ा, पारब्रह्म सरनाए। भाग लगाए साची कुलड़ा, कुलवन्ता दया कमाए। जगत दुआरा एका खुल्हड़ा, पुरख अबिनाशी आप खुल्हाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक तेरा लिख्या लेख, धुर मस्तक वेखी साची मेख, हरि सोया मात जगाए। लिख्या लेख नानक राए, आपणी दया कमाईआ। भाई लालो गया तेरा लेखा वेख वखाईआ। सच भण्डारा इक्क वरता, अतोट अतुट रखाईआ। हँकारीआं विकारीआं माण गंवा, हउमे गढ़ तुड़ाईआ। एका अक्खर आपणा आप पढ़ा, साची बूझ बुझाईआ। दासी दास ढहि पया सरना, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। मंगे मंग अग्गे बेपरवाह, गुर पूरा झोली पाईआ। बेड़ा अन्तिम बन्ने देवे ला, कुलावन्त आप हो जाईआ। साची सेवक सेवा रिहा कमा, दस जामे संग निभाईआ। संग अंग आपणे आप लगा, एका लेखा रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि घट घट वेखे थाउँ थाँईंआ। भाई लालो साचा लाल, अनमुल्लड़ा आप रखाया। पाया वर गोबिन्द गोपाल, भुल्ल रहे ना राया। नाम सति विच दलाल, पंचम तत्त तराया। दे मति आप अकाल, अकल कला समझाया। जुग रुलड़ा जग लए भाल, वेखणहार अख्वाया। फल लगाए साचे डाल्ह, अमृत आत्म फल खवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सेवा लाया। सेवक सेवा कर परवान, एका राह चलाईआ। दीना बंधप दयावान, दीना नाथ आप हो जाईआ। दो जहानी देवे माण, एका चरन ध्यान लगाईआ। एका नाम निधान साचा गाण, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। कलिजुग तेरी वेख दुकान, जूठ झूठ रही शरमाईआ। पंच विकारा नाल शैतान, एका कंडे रिहा तुलाईआ। माया राणी हो प्रधान, अग्गे बैठी पल्लू डाहीआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार निधान,

गल बैठे वकड़ी पाईआ। गुरमुख साचा चतुर सुजान, प्रभ चरन ध्यान लगाईआ। गुर सतिगुर पूरा मेहरवान, निज आत्म वेख वखाईआ। आत्म अन्तर देवे इक्क ज्ञान, सच सुच्च मति समझाईआ। गुरमति कर शब्द प्रधान, नाम नामे कर कुड़माईआ। दसवें जामे मेल गोबिन्द गोबिन्द जाणी जाण, आप अख्वाईआ। मिल्या वर देवे दानी दान, आत्म झोली गया भराईआ। अन्तिम मेला विच जहान, निहकलंक सच सरनाईआ। आत्म देवे जिया दान, जोती नूर सवाईआ। तीर निराला मारे बाण, एका शब्द रखाईआ। रसना चिल्ला तीर कमान, आप आपणा रिहा चढ़ाईआ। जोद्धा सूर बली बलवान, नर नरेश आप अख्वाईआ। उप्पर बैठ सच सच्चा सुल्तान, शाहो भूप रूप वटाईआ। दर द्वारे देवे माण, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। नाता तुटे पीण खाण, जगत लज्जया नेड़ ना आईआ। भाई भैण साक सज्जण सैण सर्ब तज जाण, नाता छुट्टे ना हरि रघुराईआ। आपे मेले मेलणहार, आपे भगतां जगत विछोड़ा फंद कटाईआ। दर द्वारे करे परवान, परम पुरख वड वड्याईआ। एका पाया लालो लाल ज्ञान, लाल अनमुल्लड़ा गुर चरन सच्ची सरनाईआ। चरन चरनोदक साचा मुख, नानक रसन लगाया। आत्म इच्छया साचा सुक्ख, हउमे रोग चलाया। सुफल कराई मात कुक्ख, आप आपणा शब्द सुणाया। उज्जल होए जगत मुख, गोबिन्द सेवा लाया। गोबिन्द सुक्खणा रिहा सुक्ख, निहकलंका राह तकाया। निहकलंक गुरमुख साचे आपणी गोदी लए चुक्क, जोती जामा भेख वटाया। कलिजुग अन्तिम रिहा ढुक्क, ना सके कोई बचाया। हरि का भाणा ना जाए रुक, ना कोई रोके सृष्ट सबाया। मनमुखां मुख पैणा थुक्क, राए धर्म दए सज़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख तेरा वेख दर, पूर्ब लहिणा दए चुकाया।

जग जनणी जुग एक है, एका एक अख्वाए। सृष्ट सबाई देवे साची टेक है, साचा लेखा लेख लिखाए। निज नेत्र आपे रिहा वेख है, जग लोचन वेख ना पाए। आप आपणा कर प्रवेश है, पूत सपूता सुत जगाए। आपे होए दर दरवेश है, घर घर बैठी अलख जगाए। सेवक सेवादार ब्रह्मा विष्न महेष है, दोए दोए बैठे सीस झुकाए। जन भगतां संग हमेश है, अंगीकार अख्वाए। आपे मेल मिलाया दाता दस दस्मेस है, नैणी नैणा दरस दिखाए। रूप वटाया धारी केस है, धारा शस्त्र इक्क जणाए। जगत अगम्मा अवल्लड़ा भेस है, लेखा लिख ना सके राए। मस्तक लाए साची मेख है, जोत लिलाटी आप टिकाए। हरिजन साचा बुध बिबेक है, गुरमति इक्क सरनाए। जग माया ना लाए सेक है, सति तत्त रहे ना राए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन जनणी सेवा लाए। जन जनणी जग जाणया, लक्ख चुरासी सुत्त। कन्त भतारी एका माणया, पारब्रह्म अबिनाशी अचुत। साची सेजा इक्क हंढानया, इक्क सुहाए साची रुत्त।

आपे चले आपणे भाणया, आपणे भाणे आपे रिहा छुट्ट। आपणा नाउँ आप वखानया, आपे लाहा रिहा लुट्ट। आपे जोद्धा सूरबीर बलवानया, आपे जड़ां रिहा पुट्ट। आपे शब्द तीर निशानया, आपे फड़ फड़ रिहा कुट्ट। आपे गाए अनहद बाणीआ, आप प्याए अमृत घुट्ट। आपे दाता होए दानीआ, आपे मुख भवाए बैठा रुट्ठ। आपे देवणहार धुर निशानया, नाम निधाना एका मुट्ठ। आपे मारे अन्तर कानीआ, आपे खोल्हे दृष्ट कूट। आपे दीपक जोत जगाए महानया, बजर कपाटी जाए तुट। आपे तख्त बिराजे सच सुल्तानया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जनणी जन हरि सेवा लाए, हरि साचे दया कमानया। आपे अंगन ल्या वखा, आप आपणे रंग रंगाईआ। साचा सगन ल्या मना, एका मंगल राग अल्हाईआ। गगन पातालां खेल खिला, ब्रह्मण्डां खोज खुजाईआ। आकाश प्रकाश गया समा, दिस किसे ना आईआ। आपणी रासा आपे पा, आपे नाच कराईआ। गोपी काहन खेल खिला, खेलणहार हर घट थाईंआ। सन्त सुहेले मात जगा, आप आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत इक्क वखा, निर्मल बाती रिहा जगाईआ । वरन गोती ना कोई जणा, ऊँच नीच ना कोई जणाईआ। मात पित ना कोई भैण भ्रा, साक सैण ना कोई अख्वाईआ। महल्ल अटल ना कोई थाँ, नगर ग्रां ना कोई दिसाईआ। मानस बिरख ना देवे ठंडी छाँ, पवणी पवण ना सेव कमाईआ। गुर पीर ना जपाए कोई नाँ, ना कोई विद्या रिहा पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जनणी जन दित्ता वर, एका सुत ल्या उपाईआ। जनणी जन सुत उपाया, हरि साची खुशी मनाईआ। थिर घर बैठ आप खुल्हाया, दे मति रिहा समझाईआ। ना कोई दूसर संग रलाया, ना कोई तीजा वेख वखाईआ। चौथे घर ना आसण लाया, ना आत्म सेज विछाईआ। शब्द धुन ना कोई अल्हाया, ना कोई राग सुणाईआ। ताल तलवाड़ा ना कोई वजाया, ना कोई कीरत कराईआ। शब्द सिँघासण इक्क वछाया, हरि बैठा बेपरवाहीआ। जनणी जन पूत सपूता गोद उठाया, अग्गे बैठी झोली डाहीआ। नेत्र नैण ना कोई वखाया, ना कोई बणत बणाईआ। नक्क मूंह हथ्थ ना कन्न लगाया, पंज तत्त ना रक्त रखाईआ। शब्द गहणा ना तन पहनाया, ना कोई छप्पर छाईआ। पुरख अबिनाशी वेख वखाया, आप आपणी जोत जगाईआ। अन्ध अन्धेर कोई दिस ना आया, साचा दीप करे रुशनाईआ। थिर घर साचा धाम सुहाया, प्रभ साचे खुशी मनाईआ। पूत सपूता वेख वखाया, सोहणी बणत बणाईआ। चारे कूटां आप दुड़ाया, दहि दिशा रिहा भवाईआ। लोआं पुरीआं लए उपाया, गगन पातालां रचन रचाईआ। आप आपणा हुक्म जणाया, अट्ठे पहर सेवा लाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड हरि वंड वंडाया, वंडणहार आप हो जाईआ। तेज प्रचण्ड हथ्थ फड़ाया, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेख घर, पूत सपूता साचे दर, घर साचा इक्क सुहाईआ। पूत सपूता मन्न सलाह,

प्रभ अग्गे करे निमस्कारया। पारब्रह्म बेपरवाह, तेरा अन्त ना पारावारया। एका हुक्म दित्ता जणा, अट्ठे पहर ख़बरदारया। लोआं पुरीआं रिहा राह तका, आवां जावां वारो वारया। तेरा दर एका ल्या खुल्ला, ना होए बन्द भण्डारया। जोती माता तक्के राह, नेत्र नैण उग्घाड़या। साचा सुत पकड़ उठाए बांह, हरि शब्दी नाउँ उचारया। वेख वखाए थाउँ थाँ, नर नरायण हरि निरंकारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूत सपूता दित्ता वर, आप आपणी किरपा धारया। पूत सपूते चढ़या चाअ, घर साचे वज्जी वधाईआ। थिर घर मंगल रिहा गा, एका खुशी मनाईआ। एका मिली सच्ची सरना, सरनगत इक्क हो जाईआ। दो जहानां हरि मलाह, बेड़ा आपणा आप चलाईआ। गल विच पल्लू बैठा पा, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। संगी साथी लए उपा, रचन आपणी आप रचाईआ। ब्रह्मा विष्न मात टिका, त्रैगुण माया झोली पाईआ। पंज तत्त बणत बणा, निरगुण आपे वेख वखाईआ। सरगुण साचा रथ चला, रथ रथवाही बेपरवाहीआ। सन्त दुलारे सेवा ला, साची रासा हथ्थ फड़ाईआ। आत्म ब्रह्म ब्रह्म जणा, एका मार्ग रिहा वखाईआ। अट्ठे नेत्र रिहा उठा, चारे मुख चलाईआ। प्रभ अबिनाशी बेपरवाह, एका शब्द करे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसया घर, सुत दुलारा कर प्यारा सेवक सेवा साची लाईआ। साचा सुत हो त्यार, घर साचे खुशी मनांयदा। पुरख अबिनाशी कर प्यार, लोकमाती राह तकांयदा। लक्ख चुरासी मीत मुरार, आत्म सेजा इक्क विछांयदा। महल्ल अटल उच्च मिनार, दस्म द्वारी आप बणांयदा। ना कोई खोल्हे बन्द किवाड़, बजर कपाटी सिल्ला लांयदा। पंचम रक्खे मगर धाड़, अट्ठे पहर डरांयदा। वा लग्गे तत्ती हाढ़, सांतक सति ना कोए वरतांयदा। लग्गे अग्ग बहत्तर नाड़, नाड़ी नाड़ी आप जलांयदा। सुत शब्द वेखे सच अखाड़, दर साचा इक्क सुहांयदा। पुरख अबिनाशी अन्दर वाड़, आपे कुण्डा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे दित्ता वर, साचा मार्ग इक्क जणांयदा। सुत दुलारे सुण फरयाद, हरि साचा करे जणाईआ। एका देवे जगत दाद, चोर यार कोए लुट्ट ना जाईआ। जन भगतां देवे एका दाद, नाम वस्त झोली पाईआ। सदा अटल अडोल रहे आदि जुगादि, जुग जुग भण्डार चलाईआ। खोजे खोज हरि ब्रह्माद, खोजणहार सृष्ट सबाईआ। धुन आत्मक वजाए नाद, साचा नाद सुरत सवाणी लए जगाईआ। हरि जणाई बोध अगाध, बोध अगाधा भेव खुल्हाईआ। जो जन लोकमात पारब्रह्म रहे रसना अराध, तिन्हां सेवक सेवा रिहा कमाईआ। नाम उपाए सन्त साध, एका दूजा गए तजाईआ। तीजे नेत्र ल्या लाध, पर्दा माया पर्हे हटाईआ। चौथा घर सुण फरयाद, मोहण माधव मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत दित्ता वर, हरि शब्द पड़े सरनाईआ। हरि शब्द कर परवान, नेत्र नीर वहांयदा। भगतां दीना भगती

दान, दानी दान आप करांयदा। चरन मजन धूढ़ सच इशनान, दुरमति मैल गंवांयदा। अमृत आत्म पीण खाण, सर सरोवर इक्क नुहांयदा। हँस काग काग हँस सर्ब बण जाण, जो रसना गांयदा। मिले मेल श्री भगवान, विछड़ कदे ना जांयदा। जुग जुग खेले खेल महान, खेलणहार आप हो आंयदा। सतिजुग त्रेता ल्या माण, द्वापर रचन रचांयदा। वेखे मार ध्यान, गोबिन्द नानक सेवा लांयदा। संग मुहम्मद चार यार नौजवान, ईसा मूसा वेख वखांयदा। गुरमुख साचे चतुर सुजान, घर साचे आप जगांयदा। जगत भगती जिया दान, जोग जुगत इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे शब्द ल्या वर, वर आपणा आप हंढांयदा। साचा शब्द कर त्यारी, आदि अन्त समाया। जन भगतां मेले मेल विच संसारी, मेलणहार आप अख्वाया। लालो लालन पैज संवारी, लाल अनमुल्लड़ा इक्क रखाया। इक्क कराया वणज वपारी, एका हट्ट वखाया। रो रो नेत्र नैण नीर वहाया रोवण ज़ारो ज़ारी, दर घर साचे दर्शन पाया। गल पलड़ा चरन सरन जाए बलिहारी, आवण जावण वेख वखाया। नानक बोले शब्द निरँकारी, निरगुण तार रिहा हिलाया। सरगुण जाए पैज संवारी, भेव किसे ना पाया। लोकमात तेरा सच प्यारी, सेवक सेवा करदा आया। अन्तिम मेला वड जोद्धा सूरबीर बलकारी, शहनशाह आप हो आया। देवे नाम शब्द अपर अपारी, सो पुरख निरँजण मेल मिलाया। हँ हँगता दए निवारी, साची संगता संग रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, बाल अञ्जाणा मात उपाया। बाल अञ्जाणे जोत जगा, जोती नूर सवाईआ। शब्द अनादी धुन वजा, आप आपणी बूझ बुझाईआ। नेत्र नैणा दरस दिखा, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। साची सिख्या इक्क सिक्खा, साचे मार्ग लाईआ। जो लिख्या धुर सो दए फ़रमा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जुग जुग लहिणा देणा रिहा चुका, जन भगतां वेख वखाईआ। बस्त्र गहणा तन पहना, नेत्र नैणा नाम रखाईआ। भाणा सहिणा आप जणा, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। मन का मणका दए भुआ, गढ़ हँकार तुड़ाईआ। जनणी जन जनका दए मिटा, सीता सुरती लए प्रनाईआ। राम रामा आप अख्वा, कलिजुग धनुख करे लड़ाईआ। काहना कृष्ना रूप वटा, आपे होए रथ रथवाहीआ। अर्जन गीता ज्ञान सुणा, अठारां ध्याए दिवस अठारां मार्ग पाईआ। आप आपणा भेख वटा, खेले खेल सृष्ट सबाईआ। ईसा मूसा कारे ला, संग मुहम्मद चार यार मस्तक लाई शाहीआ। अल्ला राणी संग उपा, एका नूर सरूर वखाईआ। नानक गोबिन्द जोत जगा, जोग जुगीशर दया कमाईआ। साचा खण्डा हथ्थ फड़ा, तेज प्रचण्डा रिहा चमकाईआ। अन्तिम पुरी अनन्द गया तजा, गुरमुख साचे सरसे भेंट चढ़ाईआ। एका सिख्या गया सिक्खा, वेला अन्तिम दए दुहाईआ। प्रभ निहकलंका जोती जामा पा, गुर गोबिन्द संग रखाईआ। गुरमुख साचे लए उपा, जो

९५० ०६

सरसे गया रुढ़ाईआ। लोकमाती जन्म दवा, ग़रीब निमाणे लए तराईआ। तन गात्रा इक्क वखा, शब्द खण्डा इक्क वखाईआ। लेखा आपणे हथ्थ रखा, ना दूसर किसे वखाईआ। दो जहानी रिहा आप चमका, एका चमक चमकाईआ। साची दमक रिहा दमका, ज़िमी अस्मानां रिहा हिलाईआ। गगन पताल रोवण मारन धाह, रवि ससि देण दुहाईआ। ब्रह्मा शिव बैठे मुख छुपा, नेत्र नीर रहे वहाईआ। करोड़ तेतीसा रिहा कुरला, सुरपति राजा इन्द चारों कुन्ट फिरदा वाहो दाहीआ। नौ खण्ड पृथ्वी प्रभ वेख वखा, लक्ख चुरासी फेरा पाईआ। लक्ख चुरासी होई हलका, मन मति बुध ना धीर धराईआ। वेले अन्त ना होए कोई सहा, अठसठ ना नीर कोई पिलाईआ। मन्दिर मस्जिद गुरुदुआरा ना पकड़े कोई बांह, इट्ट गारा रहिण ना पाईआ। अकाल पुरख तेरा एका एक सच्चा नाँ, जन भगतां लए तराईआ। चारों कुन्ट एका एक वखाए फड़ फड़ बांह, आप आपणी सेवा लाईआ। आपे पिता आपे माँ, भाई भैण आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सन्तन मेला साचे घर, घर साचा सहिज सुभाईआ। गुरमुख साचा सन्त दुलार, दर घर सच करे परवानया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, देवे नाम निशानीआ। गुर गोबिन्दा शाह अस्वार, मारे कलिजुग पंच दुरानीआ। नेजा शस्त्र तेज कटार, ब्रह्मण्डां खण्डां वेख वखानीआ। अस्त्र बस्त्र शस्त्र अपार, सोलां कलीआं आसण इक्क रखानीआ। चरन रकाबे हो त्यार, नीली छत्तों आए बाहर, हरि वाली दो जहानया। लोकमात लए अवतार, सम्बल नगरी धाम सुहानया। किसे हथ्थ ना आए विच संसार, पढ़ पढ़ थक्के जगत विद्वानया। ना कोई जाणे आर पार किनार, बेड़ा डुब्बा जगत मँझधार, ना कोई वेखे वंञ मुहानया। गुरमुख साचे कर प्यार, आप आपणी किरपा धार, देवे दरस अगम्म अपार, अट्ठे पहर करे मेहरबानीआ। आवण जावण भेख न्यार, खेले खेल हरि निरँकार, गुर शब्द मेल विच संसार, मेलणहार आप भगवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचा मेल दर, दर द्वार करे परवानया। गुरमुख साचे सचखण्ड, हरि साचे जोत जगाईआ। किसे हथ्थ ना आए विच ब्रह्मण्ड, साध सन्त बैठे धूणीआं ताईआ। आत्म सभ दी होई रंड, कन्त सुहाग ना कोई हंढाईआ। माया राणी सिर चुक्की पंड, गुर अर्जन तेरा हट्टो हट्ट हट्ट विकाईआ। अन्तिम होणा खण्ड खण्ड, प्रभ साचा रिहा कराईआ। शब्द फड़ तेज चण्ड प्रचण्ड, खेले खेल सृष्ट सबाईआ। मेट मिटाए भेख पखण्ड, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। जन भगतां नाम एका वंड, एका बख्शे सच सच्ची सरनाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां देवे दंड, गऊ ग़रीबां गले लगाईआ। वेख वखाणे जेरज अंड, उत्भज सेत्ज फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सुहाए इक्क घर, घर साचा नाउँ रखाईआ। गुरमुख साचे सच दलील, रसना रस पुकारया।

हरि का शब्द जगत वकील, लाए पार किनारया। मेल मिलाए शाहो छैल छबील, चिट्टे अस्व हरि अस्वारया। तन वखाए बस्त्र नील, रुत्त बसन्ती इक्क सुहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे साचा दर, हरिसंगत मेल मिला ल्या। गुरसिख जग जोत जगा, जागरत दिशा वखाईआ। नेत्र अंजन एका पा, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। धूढ़ मजन इशनान इक्क करा, दुरमति मैल गंवाईआ। साचा सज्जण आप अख्वा, दो जहानां संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मेला सच दर, दर दहिलीज सुहाया। हरि मन्दिर हर घट, हर घट आप समाया। दीपक जोती काया मट, गुर गोपाला रिहा जगाया। चौदां लोक वखाए एका हट्ट, हट्ट हटवाणा आप अख्वाया। लेख चुकाए अट्ठ सट्ठ, तट्ट किनार फेरा पाया। काया मन्दिर अन्दर आप सुहाए सच्च, दर दुआरा गुर साचा बैठा आसण लाया। गुरमुख मेला मेला नट्ठ नट्ठ, कलिजुग अन्तिम रिहा कराया। पंज तत्त मुनारा जाए ढट्ठ, थिर कोई रहिण ना पाया। प्रभ चरन द्वारे इक्क इक्ठ, एका धाम सुहाया। कलिजुग गेड़े उलटी लट्ठ, एका गेड़ चलाया। लक्ख चुरासी पाए भट्ठ, राए धर्म कुंडा लाहया। सन्त सुहेले लए रक्ख, आप आपणी दया कमाया। जन भगतां दरस दिखाए होए प्रतक्ख, जगत परीखिआ विच ना आया। चारों कुन्ट फिर फिर थक्के मुन रिख, रिखी केश गवर्धन धार ना वेख वखाया। साध सन्त दर दर मंगण भिख, तृष्ना भुक्ख ना कोई मिटाया। पंडत पांधे बहि बहि लेखा रहे लिख, लेखा आपणा ना मूल चुकाया। गुरमुख साचे साची सिख्या लैण सिक्ख, प्रभ साचा रिहा सिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि साजन हर घट आप मिलाया। हर घट मेला मेलणहार, मेले धुर संजोगया। चेला गुर सोहिण इक्क द्वार, रस एका आत्म भोगया। एका पुरख एका नार, एका जोग कमाया जोगया। एका कन्त एक भतार, रंग बसन्त साची चोगया। हरिजन मेला विच संसार, देवे दरस अमोघिआ। आदि अन्त एकँकार, जगत विछोड़ा कटे जगत विजोगया। देवे दरस अगम्म अपार, हउमे कटे रोगया। जो जन ढहि पए प्रभ चरन द्वार, आत्म सेजा एका भोगया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजन इक्क दर, दर साचा एका खोज्जया। साचा दर हरि खुजन्ता, खोजणहार हरि निरँकारा। गुरमुख साचे बूझ बुझंता, खोल्ह बन्द किवाड़ा। अनहद ताल इक्क वजन्ता, आप वजाए बहत्तर ताड़ा। धुनी धुन आप सुनंता, सुणे सुणाए सुणनेहारा। साचा धाम हरि सुहंता, ना कोई दिसे चार दिवारा। महल्ल अटल उच्च रखंता, जल थल ना पाए सारा। पुरख अबिनाशी बैठ साचा कन्ता, मेल मिलाए गुरमुख साची नारा। जुग जुग मेला आदिन अन्ता, आदि अन्त कर पसारा। पूरन जोत श्री भगवन्ता, भगवन खेले खेल अपारा। गुरमुख काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता, रंगणहार हरि निरँकारा। लेखा लेख धुर

मस्तक आप लिखंता, लक्ख चुरासी बण लिखारा। वेख वखाए जीव जन्ता, ब्रह्मा विष्न शिव दए भण्डारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरसिख सुहाए सच दुआरा। गुरसिख सच द्वार, हरि शब्द वज्जी वधाईआ। करोड़ तेतीसा दर फिरे भिखार, सच भिच्छया हथ्थ ना आईआ। ब्रह्मा नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार, चारे कुन्टां नीर वहाईआ। शिव शंकर बाशक तशका पाए हार, जटा जूट रिहा वखाईआ। लाड़ी मौत कर श्रृंगार, हथ्थी मैहन्दी रही लाईआ। करोड़ तेतीसा गिरयाज़ार, सुरपति राजा इन्द ना दए दुहाईआ। लोकमात हरि रिहा विचार, राए धर्म खुशी मनाईआ। चित्रगुप्त वड सिक्दार, लहिणा देणा रिहा वखाईआ। लाड़ी मौत कर श्रृंगार, हथ्थीं मैहन्दी रही लाईआ। धर्म राए दा इक्क प्यार, सच सपुत्री रही जणाईआ। लक्ख चुरासी वेखे विच संसार, कलिजुग अन्तिम फेरी पाईआ। मेल मिलाए संग मुहम्मद चार यार, अल्ला राणी लड़ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख तेरा साचा दर, घर साचा इक्क सुहाईआ। साचा घर सहिज सुक्ख पाया, आत्म वज्जी वधाईआ। मिल्या मेल गोबिन्द राया, हरि गोबिन्द विच समाईआ। जोती नूर इक्क उपाया, शब्द करी कुड़माईआ। गुरमुख साचे रिहा जगाया, पूत सपूता दए वड्याईआ। अक्खर दो अक्खर जाप जपाया, सोहँ नाउँ धराईआ। सो पुरख निरँजण दया कमाया, सतिगुर साची सेवा लाईआ। हँ हँगता रोग मिटाया, आप आपणे अंक लगाईआ। दर द्वारे जो मंगता मंगण आया, देवे नाम वड्डी वड्याईआ। साची संगत दए रलाया, आत्म जोती नूर सवाईआ। जगत ज्ञानी किसे भेव ना पाया, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। आत्म अन्तर कुण्डा किसे ना लाहया, प्रभ बैठा मुख छुपाईआ। जगत विवाद रसन रसन वधाया, आत्म रस ना कोई वखाईआ। साध सन्त होए हलकाया, तृखा तृष्ना ना कोए बुझाईआ। चारों कुन्ट फेरा पाया, कलिजुग माया वड वड्याईआ। त्रैगुण तेरा लेख लिखाया, प्रभ तेरी झोली पाईआ। आत्म अन्त वेख वखाया, सम्मत चौदां थित सुहाईआ। गुरमुख साचे सन्त जगाया, एका शब्द करे जणाईआ। नारी कन्त मेल मिलाया, आत्म सेजा इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख तेरा वेख घर, ग़रीब निवाजा बैठा आसण लाईआ। ग़रीब निवाजा पड़दा खोल्ह, आपणी जोत जगांयदा। शब्द अनादी एका बोल, एका मृदंगा ढोल वजांयदा। आदिन अन्ता वसे कोल, दूर नेड़ा ना कोई रखांयदा। करे जणाई हौली हौल, जो जन रसन ध्यांअदा। काया धरती जाए मवल, फल फुलवाड़ी आप सुहांयदा। अमृत आत्म भरे कँवल, नाभी कँवल आप उलटांयदा। बूंद स्वांती देवे साची पौल, नाम खण्डा विच फिरांयदा। गुरमुख सदा रहिण अडोल, ना डोले ना डोल डुलांयदा। भाग लगाए काया चोल, एका बस्त्र तन सुहांयदा। बजर कपाटी पड़दा खोल्ह, आप आपणा रूप दरसांयदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिँघ किशन केशव रूप वटांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत भगवन्त सन्त कन्त अन्त बणत बणांयदा। बणत बणाए धुर दरगाह, दो जहानां वाली। आवण जावण लक्ख चुरासी कटे फाह, बंस सरबंसा पैज रखाली। अगम्म अगम्मड़ा पकड़े बांह, जुग जुग चले चाल निराली। होए सहाई सभनी थाँ, जन भगतां बणया रहे पाली। जोती जोत सरूप हरि, (आप आपणी किरपा कर,) हरि भगत हरि संगत साचा थाँ, गुरसिख आत्मक दीपक जोत जगे दीवाली।

✲ ११ कत्तक २०१४ बिक्रमी तेज भान दे गृह पिण्ड शेख़सर तहसील अखनूर ज़िला जम्मू ✲

निरगुण रूप निरँकार, एका एक अख्वाया। जोत सरूपी कर आकार, जोती नूर सवाया। शब्द सरूप शब्द धुन्कार, शब्दी मेल मिलाया। ब्रह्मण्ड खण्ड पाए सार, आप आपणा विच टिकाया। जेरज अंडज उत्भज सेत्ज लए उभार, ब्रह्मा विष्न शिव सेवा लाया। पंज तत्त तन कर प्यार, रक्त बूंद मेल मिलाया। मन मति बुध कर ख़बरदार, आप आपणा हुक्म जणाया। आपे वसया सभ तों बाहर, हर घट बैठा आसण लाया। हरिजन साचे वेख विचार, जुग जुग मेल मिलाया। जुग मेला जग विच संसार, आप आपणा रिहा कराया। शब्द अनादी बोल जैकार, अन्दर मन्दिर खोज खुजाया। मेट मिटाए धुँदूकार, अन्ध अन्धेर गंवाया। अमृत आत्म प्याए साची धार, निझर धारा मुख चुआया। बन्द किवाड़ी खोल्ह द्वार, दर दरवाज़ा वेख वखाया। शब्द पौड़ी अपर अपार, आप आपणी रिहा लगाया। अनहद वेखे वारो वार, पंचम पंचम गाया। पंचम मेला कन्त भतार, आत्म सेजा आप कराया। हरिजन साचा मीत मुरार, दर घर साचे आप बहाया। इक्क इकल्ला एकँकार, कलि कल आपणी रिहा वरताया। जलां थलां पावे सार, उच्चे टिल्ले पर्बत डूँघी कन्दर फोल फुलाया। अट्ठे पहर ख़बरदार, आलस निन्दरा विच ना आया। रवि ससि रहे पहरेदार, सेवक सेवा रिहा कमाया। आकाश प्रकाशां कर प्यार, धरत धवल सुहाया। ब्रह्मण्ड खण्ड दए अधार, आप आपणा रंग चढ़ाया। सति पुरख निरँजण अपर अपार, खेले खेल सृष्ट सबाया। सतिजुग द्वापर त्रेता उतरया पार, कलिजुग वेला अन्तिम आया। निहकलंका लए अवतार, शब्द डंका रिहा वजाया। राउ रंकां करे ख़बरदार, एका अंका नाम जपाया। द्वार बंका वेख संसार, जन भगतां होए सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण खेल कर, खेलणहार सृष्ट सबाया। निरगुण खेल हरि अगम्म, अगम्मड़ी जोत जगाईआ। हड्ड मास नाड़ी ना दिसे चम्म, ना कोई बणत बणाईआ। पवण स्वासी ना लए दम, रसना जिह्वा ना

कोई गाईआ। नेत्र नीर ना वहाए छम्म छम्म, रोग सोग चिन्त नेड़ ना आईआ। आपे जाणे आपणा कम्म, आपणी करे आप वड्याईआ। गगन पताल रहाए बिन बिन थम्म, कोई भेव ना जाणे राईआ। आप जपाए आपणा नाम, आप आपणा नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे साचे दर, घर साचा इक्क सुहाईआ। हरिजन मेला सच द्वार, हरि पाया पुरख सुल्तान। एका दूजा भउ निवार, तीजे नेत्र इक्क ज्ञान। चौथा घर पद निरबान, सन्त सुहेले विरले पाण। पंचम मेल श्री भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगत जणाई बोध अगाध। अगाध बोध आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान, नर नरायण हरिभगत भगवन रूप समाईआ। भेव ना पायण जीव जन्ता, लिख्या लेख ना कोई जणाईआ। हरिजन मेला साचे कन्ता, नारी कन्ता रूप समाईआ। काया चोली चाढ़े रंग इक्क बसन्ता, उतर कदे ना जाईआ। जुग जुग बणाए आप बणता, लोकमात दए वड्याईआ। सेवक सेवा लाए साध सन्ता, सच सुरती आप दवाईआ। अबिनाशी करता होए बेअन्ता, बेअन्त बेअन्त आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग विछड़े जग अन्तिम मेल मिलाईआ। मेल विछोड़ा हथ्थ, जुग जुग आप रखाया। लक्ख चुरासी विच्चों लए लभ्भ, वेखणहार सृष्ट सबाया। अमृत आत्म धार चुआए नभ, कँवली कँवल फिराया। साचा जाम प्याए मदि, उतर कदे ना जाया। नौ द्वार तेरी मात हद्द, गुरमुख चरनां हेठ दबाया। शब्द अनादी आपे सद्द, ब्रह्मादी खोज खुजाया। विष्नूं वंसी साची बिध, बंस सरबंस वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भेखधारी भेख वटाया। भेखाधारी भेख वटाए, अकल कला कल धारा। वेद कतेब पुराण कोई भेव ना पाए, ना कोई लिखे लेख लिखारा। राग छत्ती रहे गाए, नानक बण लिखारा। अञ्जील कुरान रहे बुलाए, हरि वसया सभ तों बाहरा। हरिजन साचे अन्तर मन्त्र रहे ध्याए, गाया पुरख अपारा। प्रगट होए दरस दिखाए, जुग जुग खेल न्यारा। दीपक जोती जोत जगाए, मेटे अन्ध अन्धयारा। काया मन्दिर ठाकर इक्क वखाए, दोए जोड़ करे नमस्कारा। हवन पूजा साची लेखे लाए, सच सुगंधी सच दुआरा। ताल नगारा अनहद मृदंग इक्क वजाए, वजावणहार आप करतारा। शब्द सिंघासण आत्म सेजा इक्क पलँघ वखाए, निरगुण सरगुण खेल अपारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। दाता हरि भगवान, जीवण मुक्त दवाईआ। देवे नाम धुर फ़रमाण, आदि जुगादि समाईआ। खेले खेल दो जहान, ब्रह्मा वेख वखाईआ। जोत शब्दी खेल महान, लोआं पुरीआं फेरा पाईआ। लोकमाती मार ध्यान, हरिजन सोए रिहा जगाईआ। गुरसिख उठाए बाल निधान, आप आपणी दया कमाईआ। आत्म दानी देवे ब्रह्म ज्ञान, अन्तर मन्त्र शब्द जणाईआ। एका धुन सुणाए साचे कान, राग अनादी इक्क अलाईआ।

अमृत आत्म देवे पीण खाण, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। शब्द निराला मारे बाण, पंच विकारा मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगत भगवन्त मेल मिलाईआ। भगतन मीता हरि भगवाना, एका एक अख्वाया। एका देवे नाम दाना, दाता दानी आप हो आया। धर्म झुलाए सच निशाना, हरिजन साचे हथ्थ रखाया। नौ खण्ड पृथ्वी वेखे मार ध्याना, सत्तां दीपां पड़दा लाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग वेखे खेल सबाया। जुग जुग खेल खिलावणहारा, पारब्रह्म बेअन्ता। सतिजुग त्रेता वेख दुआरा, मेल मिलाए राम रघवंसा। द्वापर ढहि पया दुआरा, दुष्ट सँघारे काहना कंसा। कलिजुग अन्त वेख घर बाहरा, खेले खेल सहँस सहँसा। तुट्टा मोह विच संसारा, गुर गोबिन्द बणाए साचा बंसा। कल्गी तोड़ा सीस अपारा, जोती जोड़ा इक्क रखंता। नाम खण्डा तेज कटारा, तन गात्रे आप सुहंता। दहि दिशा चारे कुन्टां वारो वारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लहिणा देणा मूल चुकन्ता। कलिजुग अन्तिम साचा लहिणा, गोबिन्द लेख लिखाया। तेग बहादर वेखे नैणा, पंडत काशी आया। पंडत काशी रो रो कहिणा, धर्म कर्म रहिण ना पाया। जीव जहानां औखा रहिणा, ना कोई फंद कटाया। तेग बहादर भाणा सहिणा, साचा गहणा तन पहनाया। गुर गोबिन्दा मन्ने कहिणा, गुर पूरे सेवा लाया। आप चुकाए लहिणा देणा, लेखा आपणे हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल खेलणहार आप अख्वाया। तेग बहादर तेग उठा, आपणी आप चलाईआ। सीस धड़ अड्ड करा, जूठ झूठ जड़ उखड़ाईआ। पिता पूत वेखे एका थाँ, ना कोई दूसर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका दित्ता अन्तिम वर, कलिजुग अन्तिम होए सहाईआ। तेग बहादर नेत्र खोल्ह, वेखे दो जहानया। पुरख अबिनाशी आत्म अन्तर रिहा बोल, देवे धुर फ़रमानया। अनहद वजाए साचा ढोल, सुणे सुणाए साचे कानया। सच वस्त नाम अनमोल, लोकमात करे कुरबानया। कलिजुग तुलना अन्तिम पूरा तोल, तोलणहार श्री भगवानया। सृष्ट सबाई जाए डोल, ना कोई किसे धीर धरानया। नौ खण्ड पृथ्वी पैणा घोल, सत्तां दीपां होए वैरानया। लक्ख चुरासी कोई ना पैणा मुल्ल, हट्टो हट्ट विकानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देवे नाम निधानया। नाम निधाना झोली पा, तेगे तेग उठाईआ। पुरख अबिनाशी ल्या मना, आपणा बिरध रखाईआ। एका ओट चरन टिका, बैठा सीस झुकाईआ। आप आपणा विदा करा, जोती जोत समाईआ। जोती शब्दी खेल करा, अगम्म अगम्मड़ा धाम सुहाईआ। नाड़ी चम्मड़ा गया छुडा, जगत तन रहिण ना पाईआ। माया दमड़ा ना ल्या चुरा, खाली हथ्थ वखाईआ। पल्ले गंढु नाम बंधा, आपणा पल्लू ल्या बंधाईआ। गुर गोबिन्दा मात

९५६ ०६

टिका, एका अंक लगाईआ। पुरख अबिनाशी तेरा नाँ, तेरी सच सरनाईआ। आपे पकड़नहारा बांह, आपे लए तराईआ। आपे पिता आपे माँ, आप आपणी गोद उठाईआ। देवणहारा ठंडी छाँ, जुग जुग पैज रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ बुझाईआ। आप आपणी बूझ बुझाए, नेत्र नैण ज्ञानना। तेग बहादर झूज वखाए, नौ खण्ड पृथ्वी करे कराए चानना। एका भाओ दूज चुकाए, तीजे लोइण इक्क वखानना। चौथे घर डेरे लाए, पाया पद निरबानना। पंचम मेला सहिज सुभाए, हरि मेल श्री भगवानना। छेवें छप्पर छन्न ना कोई रखाए, थिर घर पाया इक्क मकानना। सति पुरख निरँजण जोत मिलाए, आपे होया किरपा निधानना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे नाम ज्ञानना। नाम ज्ञाना गया सुझ, अन्तर हरि लिव लाईआ। आपणा लहिणा ल्या बुझ, बैठा भेंट चढ़ाईआ। दूजी वस्त ना दिसे कुझ, जो दीसे सो पराईआ। चरन प्रीती गया लुझ, चरन सरन पड़े सरनाईआ। पुरख अबिनाशी भेव खुल्हाए गुज्झ, आप आपणी करे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेले खेल थाउँ थाँईंआ। तेग बहादर हरि समझा, एका शब्द अल्हाया। आप आपणा रूप वखा, आपणे रंग समाया। दीपक जोती नूर टिका, नूरो नूर कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किरपा निध आप हो आया। किरपा निध आप भगवन्ता, हरि हरि रंग समांयदा। गुर सतिगुर मेला साचे सन्तां, सति पुरखा आप चलांयदा। आपे नारी आपे कन्ता, आपे सेज हंढांयदा। आप बणाए जुग जुग बणता, गुर पीर आप उपांयदा। आपे तोड़े हउमे हँगता, गढ़ हँकारी रहिण ना पांयदा। आपे होए दर दर घर घर मंगता, भगत भिखारी आप हो जांयदा। आपे होए भुक्खा नंगता, जगत जगदीस आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, तेग बहादर एका वर, वर घर आप समझांयदा। एका वर हरि अबिनाशा, हरि जोती नूर अकालया। पाया शाहो सर्ब गुणतासा, दूसर दर ना होए सवाल्या। खेले खेल वेखे जगत तमाशा, कलिजुग रैण अन्धेरी घटा कालीआ। पार कराए पृथ्वी आकाशा, फल लगाए काया साची डालीआ। लक्ख चुरासी करे हासा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका गुर मेल धुर मेलणहार आप अख्वा ल्या। तेग बहादर कर पुकार, नेत्र नीर वहांयदा। पुरख अबिनाशी किरपा धार, दोए जोड़ सीस झुकांयदा। पंडत काशी हो ख्वार, दर द्वारे तेरे आंयदा। लज पति रक्ख विच संसार, ना कोई दूसर पार करांयदा। गुर गोबिन्दा वेख विचार, पिता पूत समझांयदा। पूत सपूता ख़बरदार, शब्दी शब्द जणांयदा। चारे कूटां आई हार, दहि दिशा वेख वखांयदा। ब्रह्मा शिव गए हार, देवत सुर ना कोई बचांयदा। विष्नूं वंसी रिहा पुकार, अग्गे आपणी झोली डांयदा। गोबिन्द दर बण भिखार,

एका मंगण मंग मंगांयदा। कलिजुग कूड़ा रिहा ललकार, अल्ला राणी नाल रलांयदा। संग मुहम्मद चार यार, एका नाअरा हू हू लांयदा। ऐहनल हक्क रिहा पुकार, तूं तूं वेख वखांयदा। पुरख अबिनाशी घट घट बैठा रिहा तक्क, दिस किसे ना आंयदा। कलिजुग अन्तिम गया थक्क, सम्मत चौदां सदी चौधवीं वेख वखांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी ढक्क, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत ढांयदा। भगत सुहेले करे वक्ख, आप आपणी दया कमांयदा। गुर तेग बहादर कर प्रतक्ख, लोकमात फेरा पांयदा। गुर गोबिन्दा पाए नत्थ, शब्द डोरी इक्क रखांयदा। सो पुरख निरँजण वेखे दे कर हथ्थ, आप आपणे रंग रंगांयदा। हँ हँगता दए मथ, नाम मधाणा इक्क चलांयदा। आप चलाए साचा रथ, रथ रथवाही आप अख्वांयदा। जुग जुग महिंमा अकथना अकथ, कथ कथी ना कोई सुणांयदा। प्रगट हो हरि समरथ, आप आपणी रचन रचांयदा। राम रामा घर दसरथ, रावण गढ़ तुड़ांयदा। काहना कंसा देवे मथ, आप आपणा बल वखांयदा। कलिजुग तेरा लहिणा देणा सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, अन्तिम वंड वंडांयदा। प्रगट हो त्रैलोकी नाथ, अनाथ अनाथां दया कमांयदा। तेग बहादर तेरा साथ, प्रभ साचा आप रखांयदा। लहिणा देणा मस्तक माथ, पूर्ब झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, चारों कुन्ट वेख वखांयदा। चारे कुंटां वेखणहारा, अकल कला समाया। जुग जुग लै मात अवतारा, भेखाधारी भेख वटाया। खेले खेल विच संसारा, लेखा लेख ना कोई लिखाया। कलिजुग तेरा अन्त किनारा, औलीआ पीर शेख़ मुसायक दस्तगीर हकीर शाह फ़कीर वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे लिखणहारा लेख, जुग जुग आपे रिहा वटाया। आपे लिखणहारा लेखा, आपे मेट मिटांयदा। आपे नेत्र पेखणहारा, आपे कला भवांयदा। धारी केस पाए सारा, मूंड मुंडाए फोल फुलांयदा। ब्रह्मण्डां अन्दर कर पसारा, डूँघी कन्दर डेरा लांयदा। उच्च महल्ल अटल मुनारा, दस्म द्वारी आप जणांयदा। आपे बैठ निरगुणहारा, निरगुण रूप समांयदा। जोत सरूपी कर आकारा, आकाश प्रकाश समांयदा। मेट मिटाए धुँदूकारा, एका रंग वखांयदा। हरिजन साचा कर प्यारा, साचे धाम सुहांयदा। गुर पीर साध सन्त सोहे इक्क दुआरा, सो पुरख निरँजण आप वखांयदा। चौथा खोल्ह इक्क किवाड़ा, एका जाप जपांयदा। पंचम तत्त ना कोई नाड़ी नाड़ा, सीस धड़ ना कोई उठांयदा। खाणी बाणी ना कोई सारा, ना कोई गीता ज्ञान अल्हांयदा। पुराण अठारां करन विचारा, जगत विद्या वेख वखांयदा। ब्रह्मा चारे वेद चारे मुख गा गा थक्का हारा, पारब्रह्म भेव ना पांयदा। अञ्जील कुराना कर पुकारा, ईसा मूसा हाहाकार वखांयदा। संग मुहम्मद चार यार मारन नाअरा, खुद खुदा ना वेख वखांयदा। कलिजुग कूड़ होवे ख्वारा, अन्तिम कोई ना भार वंडांयदा। पुरख अबिनाशी कर विचारा, आप आपणा

कर्म कमांयदा। तेग बहादर दर पुकारा, प्रभ भिच्छया एका पांयदा। कलिजुग अन्तिम सुणे पुकारा, तेरा लहिणा देण मूल चुकांयदा। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, जोती जामा भेख वटांयदा। शब्द खण्डा तेज कटारा, राज राजाना शाह सुल्ताना वेखे मार ध्याना, ऊँच नीच राउ रंक शाह सुल्तान एका धाम सुहांयदा। एका देवे नाम सहारा सोहँ सो, साचा जाप जपांयदा। एका धागे लए परो, आप आपणी बणत बणांयदा। दुरमति मैल जन भगतां धो, अमृत आत्म जाम प्यांअदा। हरि बिन अवर ना जाणे को, भाणा आपणे हथ्थ रखांयदा। सृष्ट सबाई रही रो, मन मति बुध भेव ना कोई पांयदा। करे कराए सोई जग हो, लेखा लिखणहार आप हो आंयदा। सतिजुग ढोआ रिहा ढोअ, प्रभ अग्गे सीस झुकांयदा। कलिजुग काला नेत्र नीर वहा मुखड़ा रिहा धो, धूढ़ी मस्तक ख़ाक रमांयदा। लोकमात मार झात इक्क इकांत मेट मिटाए एका दो, दो एका रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा संग निभांयदा। आप आपणा संग निभाए, हरि हरि त्रैलोकी नाथा। गोबिन्द काया चोली रंग चढ़ाए, लहिणा देणा मस्तक माथा। अंगीकार प्रभ अंग लगाए, आप चलाए काया राथा। शब्द मृदंग इक्क वजाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेल कराए सर्बकला समराथा।

जोती नूर हरि आकार, हरि हरि आप अख्वाया। हरि हरि आपणा कर पसार, हरि हरि रूप समाया। हरि हरि वेखे करे विचार, हरि हरि लेख लिखाया। हरि हरि खेले खेल संसार, हरि हरि खेल खिलाया। हरि हरि लए मात अवतार, हरि हरि जोत जगाया। हरि हरि खोलू शब्द भण्डार, हरि हरि आप वरताया। हरि हरिभगतन लए उधार, हरि हरिभगती रूप समाया। हरि हरि देवे नाम अधार, हरि हरि जिह्वा रसन हिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाया। हरि हरि नर नरायण, हरि हरि आप अख्वांयदा। हरि हरि वेखे एका नैण, एका रूप समांयदा। हरि हरि साक सज्जण साचा सैण, हरि हरि अंग लगांयदा। हरि हरि नाता मात पित भाई भैण, पिता पूत आप अख्वांयदा। हरि हरि सन्त सुहेले जुग जुग इक्ठे रहिण, मेल विछोड़ा आपणे हथ्थ रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत समांयदा। हरि हरि नूर अगम्म, अगम्म समाया। हरि हरि आपे पया जम्म, हरि आपे मुख छुपाया। हरि हरि आप आपणा लए दम, हरि हरि मार जवाया। हरि हरि एका एक जपाए नाम, हरि हरि नामा रूप अख्वाया। हरि हरि वेख वखाए अन्धेरी शाम, हरि हरि आकाश प्रकाश रखाया। हरि हरि आप रहाए (बिन बिन) थम्म, हरि हरि गगन पाताला डेरा लाया। हरि हरि आपे जाणे आपणा कम्म, हरि हरि जुग जुग बणत बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, हरि जोती नूर सवाया। हरि हरि जोती नूर, हरि जोती आप उपांयदा। हरि हरि सर्बकला भरपूर, करता पुरख आप अख्वांयदा। हरि हरि जुग जुग आसा मनसा पूर, जन भगतां पूरन आस करांयदा। हरि हरि आपे नाद आपे शब्द आपे तूर, आप आपणा राग अलांयदा। हरि हरि आपे तोड़े नाता कूड़, आपे जोड़ी जोड़ जुड़ांयदा। हरि आपे बणाए चतुर सुघड़ मूढ़, ज्ञान ध्यान इक्क वखांयदा। हरि हरि आपे बख्शे चरन धूढ़, जिस जन आपणी दया कमांयदा। हरि हरि काया चोली रंग चाढ़े गूढ़, उतर कदे ना जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि जोती नूर उपांयदा। हरि हरि जोती नूर उपाया, अकल कला समाईआ। आप आपणा रूप वटाया, शब्दी शब्द जणाईआ। चारों कुन्ट वेख वखाया, दहि दिशा फेरा पाईआ। लोआं पुरीआं रचन रचाया, धरत धवल सुहाईआ। ब्रह्मा विष्न वेस वटाया, शिव शंकर संग रलाईआ। त्रैगुण माया तोल तुलाया, तोलणहार आप अख्वाईआ। लक्ख चुरासी बणत बणाया, पंचम तत्त समाईआ। मन मति बुध संग रलाया, हड्ड मास नाड़ी रत्त करी कुड़माईआ। नौ दर द्वारे खोल् वखाया, काया मन्दिर इक्क सुहाईआ। आप आपणा मुख छुपाया, निरगुण निरवैर निरँकार रूप अख्वाईआ। दस्म द्वारी डेरा लाया, बन्द किवाड़ी इक्क रखाया, ना कोई खोजे खोज खुजाईआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर उपाईआ। हरि हरि जोती जोत जगा, आपणी कल वरतांयदा। आप आपणा भेख वटा, लोकमात फेरा पांयदा। साध सन्त लए उपा, शब्दी शब्द जणांयदा। गुर पीर अवतार आप अख्वा, आप आपणा अंग कटांयदा। दुष्ट हँकारी दए गंवा, धरत धवल सुहांयदा। भगतां पैज लए रखा, भगत वछल आप अख्वांयदा। शब्द त्रिसूल हथ्थ उठा, गदा चक्र आप भवांयदा। खण्डा खंजर वेख वखा, शस्त्र बस्त्र तन सजांयदा। अस्व घोड़ा इक्क दौड़ा, ताजी गाजी मेट मिटांयदा। जुग जुग पौड़ा आपे ला, आपे मेट मिटांयदा। ब्रह्मण गौड़ा आप अख्वा, पूत सपूता आप अख्वांयदा। भगत जनां दी आत्म अन्तर लग्गी औड़ा दए बुझा, निझर धार इक्क प्यांअदा। वेखे परखे मिट्ठा कौड़ा, दिवस रैण फिरे दौड़ा, लक्ख चुरासी फोल फुलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि जोती खेल खिलांयदा। हरि हरि जोती खेला, जुग जुग आप कराया। आपे वसे रंग नवेला, इक्क इकल्ला डेरा लाया। सन्त सुहेला गुरू गुर चेला, आपे आप अख्वाया। अचरज खेल हरि हरि खेला, खेलणहार दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूरी नूर उपाया। जोती नूर सच महल्ला, अकल कला वरताईआ। पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला, खेले खेल हर घट थाँईंआ। वेख वखाए जल थलां, डूँघी डल्ला फेरा पाईआ। भगत जनां दर साचा मल्ला, ग़रीब निमाणा गले लगाईआ। दरस दिखाए घड़ी घड़ी पल्ल पल्ला, आवण

जावण रचन रचाईआ। आपे फलया आपे फुला, फुल फुलवाड़ी मात लगाईआ। वेख वखाए काया डाला, गुरमुख वड्डी वड वड्याईआ। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाला, चाल बेहंगम इक्क रखाईआ। दासी दास करे काल महांकाला, दोवें बैठे सीस झुकाईआ। जुग जुग वेखे खेल निराला, सतिजुग साची सेवा लाईआ। त्रेता वेखे धर्म दवाला, राम रामा आप अख्वाईआ। द्वापर होए हाल बेहाला, काहना कृष्ना रूप वटाईआ। मस्तक वेखे गगन थाला, दीपक जोती इक्क जगाईआ। भगत जनां करे प्रितपाला, बाल अञ्जाणे गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वेखे खेल सृष्ट सबाईआ। सृष्ट सबाई खेल खिलारी, खेलणहार करतारा। आवे जावे वड संसारी, लोकमात लए अवतारा। भगतन सोहण बंक द्वारी, मनमुख रोवण ज़ारो ज़ारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर नूर करे उज्यारा। हरि जगत हरि रंग, हरि काया चोली रतीआ। इक्क वखाए सच पलँघ, मेल मिलाए कमलापतीआ। तन शब्दी पहनाए साची वंग, शाहो सुहेला रंगण चाढ़े एका रत्तीआ। अमृत आत्म धार वहाए साची गंग, हरिजन वा ना लग्गे तत्तीआ। मानस जन्म ना होए भंग, आपे दे समझाए मतीआ। सदा सुहेला कट्टणहारा भुक्ख नंग, धीरज धीर धराए सति सन्तोखी सतीआ। आप लगाए आपणे अंग, जगत बणाए साची सखीआ। साचे अस्व कसे तंग, वेख वखाए अट्ठ सट्ठीआ। कलिजुग माया मारे डंग, चरन लावे जो जन ढट्ठीआ। सदा सुहेला वसे संग, आपे होए अंग संगीआ। एका मंगण दर द्वारे हरिभगत जन लए मंग, देवणहार सूरा सरबंगीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिभगती जन देवे वर, दर द्वारे मूल ना संगीआ। हरिभगतन मेला सच द्वार, घर सच सच्चे कुड़माईआ। जोती शब्दी इक्क प्यार, पवणी पवण समाईआ। अवणी गवणी वसे बाहर, अग्नी हवन ना कोई कराईआ। रसना कथनी ना कोई विचार, ना कोई लेखा रिहा लिखाईआ। जन भगतां जुग जुग वक्खरी चाल, प्रभ साचे मात चलाईआ। प्रगट कर विच संसार, सुरती सुरत दवाईआ। आत्म अन्तर इक्क प्यार, अन्दर मन्दिर खोज खुजाईआ। जोत निरँजण कर उज्यार, दीपक जोत करे रुशनाईआ। अनहद लाए सेवादार, सेवक सेवा सच कमाईआ। अट्ठे पहर ख़बरदार, दिवस रैण रिहा जगाईआ। आपे खोल्ह्रे बन्द किवाड़, साचा मन्दिर इक्क वखाईआ। जोत सरूपी कर आकार, हरि बैठा डगमगाईआ। भगत जनां इक्क अधार, एका शब्द जणाईआ। अठारां ध्याए गीता अर्जन दुलार, काहना कृष्ना आप अल्हाईआ। साची मीता कर प्यार, पतित पुनीता आप हो जाईआ। रामा सीता कन्त भतार, सुरती शब्द कुड़माईआ। राधा कृष्ना जै जै जैकार, जोग जुगीशर गाईआ। तपी तपीशर कर विचार, मुनी मुनीशर इक्क जणाईआ। रिखी केश गवर्धन धार, आपणी आप उठाईआ। भगत सुहेला इक्क इकेला मीत मुरार, मुरारी रूप वटाईआ।

नाम बंसरी अपर अपार, तन मन्दिर अन्दर रिहा वजाईआ। बिप्पर सुदामा साचा यार, विछड़यां मेल मिलाईआ। द्रोपत लज्जया रक्खे हरि करतार, गिरवर रूप समाईआ। बिदर सुदामा लाए पार, दिवस रैण करे कुड़माईआ। शब्द बिबाणा कर त्यार, आपणा आप चलाईआ। अर्जन ज्ञाना इक्क प्यार, तीर निशाना रिहा चलाईआ। जोद्धा सूर बली बलवान, हरि भगवान आप अख्वाईआ। खाली हत्थ विच मैदान, रथ रथवाही बैठा माहीआ। सृष्ट सबाई वेखे मार ध्यान, हँकारीआं गढ़ तुड़ाईआ। मेट मिटाए जगत निशान, थिर कोए रहिण ना पाईआ। आपे वेखे वेखणहार, खेले खेल सृष्ट सबाईआ। भगती भगतन कर प्यार, जुगती जुगत बणाईआ। लोकमात तेरी धार, जुग जुग रिहा चलाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, सतिजुग आपणे हत्थ रखाईआ। निहकलंका लए अवतार, एका डंका रिहा वजाईआ। गुरमुख साचे लए अधार, आपणी किरत करी कमाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी दए हुलार, सत्तां दीपां डेरा ढाहीआ। ब्रह्मा रोवे ज़ारो ज़ार, वेला अन्तिम आईआ। शिव शंकर रिहा कर पुकार, हत्थ त्रिसूल उठाईआ। करोड़ तेतीसा वेख विचार, सुरपति राजा इन्द संग रलाईआ। विष्नूं वंसी ख़बरदार, सृष्ट सबाई रिहा कराईआ। कलिजुग काला कप्पड़ दए उतार, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। प्रगट हो विच संसार, चार वरन इक्क सरन बख्शे सच सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेख सच घर, घर साचा इक्क सुहाईआ। हरिभगत हरि रंग रतया, रतया नाम सरीर। लेखा चुक्के तीर्थ तटयां, दूई द्वैती बन्ने बीड़। दीपक जोती जगे लट लटयां, जग चोटी चढ़े अख़ीर। नाम वणज कराए साचे हट्टया, हरि जोद्धा सूरबीर। एका लाहा हरिजन साचे खट्टया, तन बस्त्र पाया साचा चीर। दिवस रैण हरि हरि रसना रटयां, अमृत आत्म मिल्या सीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिभगतन वेख आत्म घर, हरि साचा एका वतया। प्रभ पूरा पूर, पूरी आस कराईआ। प्रभ वसे हाज़र हज़ूर, सहिज सुखदाईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, गुर शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। आपणी बख्शे चरन धूढ़, मूर्ख मूढ़ सुघड़ बणाईआ। काया चोली रंग चाढ़े गूढ़, उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचा वेख वखाईआ। आसा मनसा पूर, हरि अख्वांयदा। देवे नाम सरूर, उतर ना जांयदा। सर्ब गुणा भरपूर, भुक्ख मिटांयदा। जोत जगाए नूर कोहतूर, अन्धेर मिटांयदा। पंच विकारा चूरो चूर, ढहि ढहि सीस निवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दया कमांयदा। आसा मनसा जगत पुजंदा, हउमे रोग जलाईआ। एका देवे नाम सुगंधा, गुरमुख वड वड्याईआ। आप उपजाए आत्म परमानंदा, निजानंद समाईआ। रवि ससि सीस निवायण निउँ निउँ चन्दा, बैठे सीस झुकाईआ। तारा मण्डल गुरमुख काया हेठ रखंदा, चरनां हेठ झसाईआ।

हरि शब्दी मेली मेल मिलंदा, शब्दी शब्द वड्याईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां खोज खुजंदा, अन्दर बाहर गुप्त जाहिर आप समाईआ। जुग जुग वंडणहारा वंडां, हरिजन साचे वंड वंडाईआ। मनमुखां सुत्ता दे कर कंडां, दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन नेत्र नैण रिहा खुल्हाईआ। हरिजन नेत्र नैण खुल्हाए, आत्म दर दरवाज़या। दिवस रैण हरि दरस दिखाए, किरपा कर ग़रीब निवाज्जया। रूप अनूप सति सरूप आप हो जाए, घट घट अन्दर मन्दिर मारे अवाज़या। चारो कुन्ट वेख वखाए, दहि दिशा उठ उठ फिरे भाज्जया। गुरमुख साचे मस्तक रेखा लेख मिटाए, आप संवारे आपणा काज्जया। लक्ख चुरासी वेख वखाए, हरिजन रक्खे साची लाज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचा वेख दर, इक्क चढ़ाए साचे ताज्जया। चिट्टा अस्व साचा ताजा, हरि साचा संग रखांयदा। भगत वछल ग़रीब निवाज़ा, जन भगतां मेल मिलांयदा। धुर दरगाही फिरे भाजा, जुग जुग भेख वटांयदा। कलिजुग अन्तिम रच्चया काजा, लक्ख चुरासी आप प्रनांयदा। लाड़ी मौत देवे दाजा, राए धर्म घर बहांयदा। जन भगतां अन्तिम रक्खे लाजा, चरन प्रीती इक्क वखांयदा। प्रगट होए देस माझा, निहकलंका नाउँ रखांयदा। गुर गोबिन्दा राजन राजा, शाहो भूप आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन सेवक सेवा लांयदा। हरिजन सेवक आस पुजाए, पूजे गुर गोबिन्दा। राम रामा हरि रूप वटाए, मेट मिटाए सगली चिन्दा। नेत्र नैणां दरस दिखाए, अमृत आत्म धार वहाए गंगा। गोदावरी भेव चुकाए अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ वेख वखाए, वड दाता गुणी गहिंदा। तट्ट किनारा पार कराए, हट हटवाणा इक्क खुल्हाए, चार वरनां वेख वखाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन आसा मनसा पूर कर, आत्म तृष्ना भुक्ख मिटाए। जगत तृष्ना माया रोग, हउमे चिन्त मिटाईआ। गुरमुख मेला धुर संजोग, धुर दी बाण बणाईआ। दाता दरसी आप दिखाए दरस अमोघ, नर नरायण आपे आप हो जाईआ। सोहँ शब्द चुगाए साची चोग, सो पुरख निरँजण हथ्थ रखाईआ। पार कराए तीना लोक, लोक परलोक होए सहाईआ। असंख असंखा ना सके घोख, पढ़ पढ़ विद्या गए थक्क, भेव कोई ना पाईआ। बिन सतिगुर पूरे ना मिले साची मोख, वेद पुराण रहे सुणाईआ। दूई द्वैती लग्गा दोख, हउमे हँगता रही कुरलाईआ। घर घर दर दर मन्दिर अन्दर पया सोग, गुर दर वेखे पई लड़ाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता पुरख लक्ख चुरासी कलिजुग तेरी अन्तिम वार देवे झोक, आप आपणी बणत बणाईआ। हरि हरि भाणा कोई ना सके रोक, ब्रह्मा विष्न शिव बैठे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगतन आस पुजाईआ। हरिभगतन आसा आस पुचन्दा, पूरन इच्छया धारी। दर दुआरा इक्क वखंदा, तोड़े गढ़ हँकारी। नाम प्याला इक्क पलंदा, अट्ठे

पहर खुमारी। शब्द जणाई इक्क करंदा, सोहँ जै जै जैकारी। चार वरनां एका थाँ बहंदा, ऊँचां नीचां भेव निवारी। राज राजाना सुणाए एका छन्दा, गऊ ग़रीबां पावे सारी। परमानंद इक्क वखंदा, निजानंद सिक्दारी। रहिण ना देवे कोई मदिरा मासी गन्दा, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी। शब्द फड़ाए हरि साचा खण्डा, जोद्धा सूर बली बलकारी। वेख वखाए जेरज अंडा, उत्भज सेत्ज करे ख़बरदारी। लक्ख चुरासी तेरा भार ना कोई पाए वंडा, जूठ झूठ होई पंड भारी। मनमुख जीवां आत्म होई रंडा, हरि शाहो ना मिल्या कन्त भतारी। जन भगतां आत्म अन्तर पाए ठंडा, देवे दरस नर नरायण निरँकारी। पल्ले बन्ने नाम गंढ्ढा, ना कोई लुट्टे ठग्ग चोर यारी। होए सहाई विच ब्रह्मण्डां, लोआं पुरीआं पार किनारी। राए धर्म सुत्ता दे कर कंडा, चित्रगुप्त ना बणे लेख लिखारी। मेट मिटाए भेख पखण्डा, संग मुहम्मद चार यारी। ईसा मूसा पायण वंडा, अल्ला राणी हू हू कर पुकारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जन भगतां हित नवित्त खेले खेल वड संसारी। आसा मनसा पूर, सर्ब सुखदाया। जग नाता तोड़े कूड़ो कूड़, सच सुच्च वरताया। जन भगतां कटे त्रैगुण माया जूड़, फंदन फंद कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रैलोकी नंदन फेरा पाया। त्रैलोकी नंदन मुकंद मनोहर, लखमी नरायण नरायणा। सन्त सुहेले कर कर मेले मेल मिलाए अन्ध घोर, वेख वखाए आपणे नैणा। पकड़ उठाए मनमुख जीव ठग्ग चोर, मगर लगाए लाड़ी मौत डैणा। शब्द अगम्मे चढ़या घोड़, नौ खण्ड पृथ्वी वहिण एका वहिणा। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़, वेद व्यासा वेखे नैणां। लक्ख चुरासी वेखे परखे मिट्ठा कौड़, गुरमुख विरला सन्त सुहेला लोकमात अन्तिम रहिणा। आपे मारे पहला पौड़, जीव जन्त साध सन्त भाणा सभ ने सहिणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आसा पूर हरि, हरि दर्शन साचे नैणा। गुरमुख साची आस रक्ख, एका ओट तकाईआ। पुरख अबिनाशी हो प्रतक्ख, दरसी दरस दिखाईआ। सृष्ट सबाई करे वक्ख, कक्खों हट्ट विकाईआ। चारों कुन्ट अन्यारे रहे भख, अग्नी लम्बू लाईआ। दर दर घर घर अन्दर मन्दिर करे सक्ख, नाता तुट्टे भैणा भाईआ। किसे ना सके कोई रक्ख, ना कोई वेखे धी जवाईआ। चारों कुन्ट होए ढक्क, खाली हट्ट देण दुहाईआ। ना कोई जणाए अट्ठ सट्ठ, तीर्थ तट्ट ना कोई जणाईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद जाणे ढठ्ठ, इट्ट गारा ना कोई लगाईआ। ना कोई बोले शिवदवाले मट्ठ, गणपति गणेश ना कोई मनाईआ। ब्रह्मा विष्न नट्ठ नट्ठ, पैंडा रहे मुकाईआ। प्रभ चरन द्वारे जाण ढठ्ठ, एका ओट रखाईआ। तिन्नां मेला इक्क इक्ट्ठ, प्रभ साचा घर सुहाईआ। आपे गेड़नहारा लट्ठ, जुग जुग वेस वटाईआ। हरिजन तेरा रक्खे यति, धीरज धीर आप धराईआ। त्रैगुण माया बणया मट्ठ, प्रभ अग्नी हवन कराईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन तेरी पूरन आस इच्छया आप पुजाईआ। पूरन इच्छया हरि भरवासा, हरिजन आप दवांयदा। पाए भिच्छया सर्ब गुणतासा, एक नाम जणांयदा। साची सिख्या जन्म रहिरासा, सोहँ जाप जपांयदा। होए सहाई पृथ्वी आकाशा, दो जहानां पार करांयदा। भगत जनां घर दासी दासा, सेवक सेवा आप कमांयदा। निज घर आत्म रक्खे वासा, निवास निवासा आप हो जांयदा। चले चलाए पृथ्वी आकाशा, रसन स्वासा जिह्वा मणीआ मंत बणांयदा। मेल मिलाए सर्ब गुणतासा, गुणवन्ता आप अख्वांयदा। गुरमुख साचे सद बलि बलि जासा, पूरन आसा जो रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिभगतन पूरी आस कर, घर साचा इक्क वखांयदा। साचा घर शब्द अडोल, गुरमुख इक्क वखानया। ना कोई दूसर दिसे कोल, भाई भैण ना कोई सुहानया। ना कोई काया बस्त्र दिसे चोल, जल अन्न ना कोई दाणया। ना कोई धरनी धौल रही मौल, ना दिसे ज़िमी असमानया। ना कोई पंखी पंछी रिहा बोल, राग अनाद ना गाए कोई गाणया। ना कोई अमृत खण्डा छके पौहल, ना कोई चोटी सीस मुनानया। ना कोई मृदंगा वज्जे ढोल, गुर दर मन्दिर ना कोई सुहानया। ना कोई अमृत आत्म वेखे कौल, नाभी फुल्ल ना कोई खिड़ानया। गुरमुख साचा चरन प्रीती रिहा घोल, दर द्वार होए परवानया। एका नाम सदा अडोल, वेख वखाए हरि भगवानया। जोती जोत नूरी नूर जाए मौल, दिस किसे ना आनया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख पूरन आस दर, दर द्वार होए परवानया। दर परवान कर भगवान, आपणी दया कमाईआ। देवे नाम धुर फ़रमान, दिस किसे ना आईआ। इक्क झुलाए सच निशान, निशअक्खर वक्खर लेख लिखाईआ। गोपीआं काहन सारे गान, कर ध्यान चतुर्भुज रूप वटाईआ। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म पारब्रह्म सर्ब मेल मिलान, पुरख पुरखा आप अख्वाईआ। करनी करन करन करान, खेवट खेट विच जहान, बेटी बेट सर्ब सुखदाईआ। गुरमुख साजण मीत चतुर सुजान, जो जन चरनी डिग्गे आण, मेल मिलाए दया कमाए विछड़ कदे ना जाईआ। रसना हरि हरि नर नर गाए। दर दर घर घर फेरी पाए। जिस जन आपे लए जगाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन आसा पूर कर, आलस निन्दरा विच ना आए। भगवान तज आलस निन्दरा, आपणी जोत जगाईआ। गुरसिख गुरमुख काया बणाए बन बिन्दरा, दिवस रैण मण्डल रास रचाईआ। सेवक सेवा लाए इन्द्र फुनिन्दर मुनिन्दरा, आप आपणा वेख वखाईआ। वड दाता हरि गुणी गहिंदड़ा, गोबिन्द गोबिन्द आप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जुग आसा जग पूर कराईआ। जुग आस देव नेत, नेत्र नैण उग्घाड़ना। वेख वखाए काया खेत, हरि साजण मीत मुरारना। मेल मिलाए नेतन नेत, नेरन नेर वखाए दर द्वारना। भाग लगाए महीना

चेत, सम्मत वीह सौ चौदां जन भगत जुग विछड़े जग मिलावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जन भगत पढ़ाया सोहँ सो, अक्खर वक्खर आपणा दानना। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, दो जहान बणया साचा जामना।

जगदीश्वर जुग चार, जुग जुग रचन रचाईआ। आपणा आप लै अवतार, आपणी बणत बणाईआ। लक्ख चुरासी पसर पसार, खाणी बाणी आप चलाईआ। जीव जन्त दए उधार, साध सन्त तराईआ। दूत दुष्ट दए सँघार, भगतन होए सहाईआ। वेख वखाणे कर विचार, राजे राणे भेव ना पाईआ। चतुर सुघड़ स्याणे गए हार, पढ़ पढ़ विद्या जगत सबाईआ। श्री भगवान भेव निवार, जन भगतां बूझ बुझाईआ। ब्रह्म ज्ञाने इक्क प्यार, नेत्र लोइण खुल्हाईआ। लोचन खोल्हे बन्द किवाड़, वड वड्डी वड्याईआ। दर घर साचे देवे वाड़, मन्दिर इक्क वखाईआ। जोत जगाए बहत्तर नाड़, बालक बाले दे वड्याईआ। ध्रू प्रहलाद उतरे पार, चरन प्रीती इक्क सिखाईआ। बल द्वारे बण भिखार, भेखी भेख वटाईआ। अमरीका जन लाया पार, दुरबासा माण गंवाईआ। जन जनका लए उधार, एका नाम तुलाईआ। गनका पापण उतरी पार, रसना जिह्वा गाईआ। राजा राणा कर प्यार, पाया बीठला हरि रघुराईआ। कबीर कबीरा उधरया पार, बहि बहि रसना गाईआ। सधना त्रलोचन कर प्यार, चरन चरनोदक मुख लगाईआ। धन्ना सेवे अधविचकार, पूजस पूजस सिला मनाईआ। भगवन बीठला किरपा धार, अनडीठा दरस दिखाईआ। सैण नाई कर प्यार, आपणी जोत जगाईआ। राणा वेखे दर दरबार, सेवक सेव कमाईआ। अजामल पापी उतरे पार, नर नरायण रसना गाईआ। जैदिउ हरि बन्न्हे धार, अक्खर विद्या ना कोए पढ़ाईआ। द्रोपद लज्जया विच संसार, कप्पड़ कोटन कोट वधाईआ। बिप्पर सुदामा लाया पार, महल्ल अटल सुहाईआ। बिदर निमाणा सांझा यार, घर आया हरि रघुराईआ। दुर्योधन छड्डया महल्ल मुनार, गढ़ हँकार ना हरि हरि भाईआ। जुग जुग खेले खेल संसार, आप आपणी रचन रचाईआ। बधक लाया कर प्यार, तीर निशाना चरन छुहाईआ। पूतना पापण पैज संवार, मोहण मुम्मे मोहन पाईआ। वेखे विगसे वेखणहार, जुग जुग आपणी रचन रचाईआ। कलिजुग अन्तिम तेरी धार, चारों कुन्ट दए दुहाईआ। जूठ झूठ कर पसार, माया ममता करे कुड़माईआ। हउमे हँगता तेज़ कटार, ईसा मूसा हथ्थ फड़ाईआ। संग मुहम्मद चार यार, अट्ठे पहर करन लड़ाईआ। लक्ख चुरासी मारे मार, वेला अन्तिम दए दुहाईआ। रूप रंग ना रेख ना कोई जाणे भेख करतार, लेखा लिखे सृष्ट सबाईआ। भगत वछल आप निरँकार, निरगुण रूप समाईआ।

६६७
०६

जुग जुग विछड़े मेले कन्त भतार, नारी कन्ता मेल मिलाईआ। आत्म सेजा सच प्यार, फूलन बरखा एका लाईआ। रवि ससि करन निमस्कार, सूरज चन्न मुख शरमाईआ। गुरमुख नूरी जोत चमत्कार, अट्ठे पहर डगमगाईआ। भगतन मीता हरि निरँकार, चेतन्न चीता आप हो जाईआ। नेतन नेता विच संसार, देवत दिउता इक्क वखाईआ। तेज भान प्रभ देवे दान, चरन धूढ़ धुर इशनान, दुरमति मैल मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिभगत हरि मन्दिर अन्दर बैठा बेपरवाहीआ। काया मन्दिर सच टिकाना, हरिजन बणत बणाईआ। दीपक जोती इक्क महाना, प्रभ साचा आप जगाईआ। गावत गाए नाम निधाना, ना कोई दूसर राग अलाईआ। छत्ती राग भेव ना पाणा, नारद सुरसती रही अलाईआ। पढ़ पढ़ वेद पुराणा, पारब्रह्म भेव ना पाईआ। अञ्जील कुरान ना करे पछाना, सच हदीस ना कोई अलाईआ। खाणी बाणी होए हैराना, अछल अछल्ल ना छलया जाईआ। कलिजुग खेले खेल महाना, खेलणहारा सृष्ट सबाईआ। बेमुख भुलाए जीव निधाना, जूठे झूठे धन्दे लाईआ। दिस ना आए वड विद्वाना, ग्रन्थी पन्थी करन सलाहीआ। मथरा बिन्दरा वेखण काहना, काहना रूप ना कोई समाईआ। राधा राधा रसना गाणा, दर सीस ना कोई झुकाईआ। अन्तर मन्त्र पद निरबाना, निरगुण दर ना कोए भवाईआ। साचा खेल श्री भगवाना, भगतन संग खिलाईआ। दर द्वार करे परवाना, जुग जुग आपे वेख वखाईआ। बैणी नैणी वेख निधाना, नेत्र नैण रिहा बिगसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत वछल अछल कर, सृष्ट सबाई रिहा भुलाईआ।

दीन दयाला सर्ब सुख दाता, सर्बकला भरपूरा। चरन कँवल बंधाए एका नाता, गुर सतिगुर साचा पूरा। आपे पिता होए आपे माता, आपे नेरन दूरा। आपे वेखे रैण अन्धेरी राता, आपे चरन सरूरा। आपे मेटे ज़ाता पाता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग वेखे काचा कूड़ा कलिजुग काया कुड़यार, कूड़ा रंग चढ़ाया। चारों कुन्ट वेख विचार, नेत्र नैण उठाया। मनमुख भुल्ले जीव गंवार, हरि गोबिन्द कोए ना गाया। मन्दिर अन्दर हाहाकार, धूआँधार सर्ब दिसाया। माया राणी करे ख्वार, तत्त विकार रिहा जलाया। पंचम पंचां कर प्यार, जूठा झूठा जोड़ जुड़ाया। एका भुल्लया हरि करतार, नर नरायण दिस ना आया। धरत मात करे पुकार, रो रो नेत्र नीर वहाया। पुरख अबिनाशी आपणी किरपा धार, आपणा पल्लू अग्गे डाहया। चारों कुन्ट जीव विभचार, नार दुहागण सृष्ट सबाया। वर मिले ना कन्त भतार, आत्म सेज ना कोए हंढाया। हउमे हँगता लए पैर पसार, अक्लमन्द गूढ़ी नींद सवाया। नेत्र नीर रोवण ज़ारो ज़ार, अथ्थर

सथ्थर हेठ विछाया। चारों कुन्ट होए उजाड़, साचा संग ना कोए निभाया। पंचम लग्गी जगत धाड़, चोर यार रहे सताया। अग्नी अग्ग तत्ती हाढ़, जीवां जन्तां तन तपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धरत मात दए दुहाया। धरत मात रही कुरला, प्रभ अग्गे सीस निवांवदी। पुरख अबिनाशी सुण सुण हार, आपणा वेस वटांवदी। काली चुन्नी सिर तों लाह, खुल्हड़े केस वखांवदी। नौ खण्ड पृथ्वी ख़ाक उडा, सत्तां दीपां धूढ़ रमांवदी। ब्रह्मा विष्न शिव वेखण थाउँ था, नेत्र नैणां आप दरसांवदी। लक्ख चुरासी कलिजुग जीवां सच ना मिल्या कोई थाँ, घर घर वंडीआं बहि बहि पांवदी। पुत्तर मावां पुच्छण ना, नाम नामा ना कोई जणांवदी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर पुकार हो त्यार, एका धाह सुणांवदी। धरत मात दर मारे धाह, प्रभ अग्गे दए दुहाईआ। जुग जुग उठे बेपरवाह, लोकमात लए अंगड़ाईआ। रामा कृष्ना आप अख्वा, दूतां दुष्टां दए सज़ाईआ। गोबिन्द चिल्ले तीर चढ़ा, खेले खेल सृष्ट सबाईआ। कलिजुग अन्तिम गया आ, लक्ख चुरासी दए दुहाईआ। वेद व्यासा गया लिखा, आप आपणी कलम चलाईआ। नानक लेखा रिहा मुका, तेरां तेरी धार वहाईआ। चौदां सम्मत आप चढ़ा, वीह सौ लेख लिखाईआ। चौदां लोकां दए हिला, एका रचन रचाईआ। चौदां तबकां देवे ढाह, संग मुहम्मद चार यार देवे दर दुहाईआ। अल्ला राणी रही कुरला, मुख घुंगट अन्तिम पाईआ। प्रभ द्वार रही शरमा, नेत्र नैण मूंध मुंधाईआ। पुरख अबिनाशी रिहा जगा, शब्द सरूपी रिहा आप हिलाईआ। आप वखाए साचा थाँ, उच्च महल्ले फेरा पाईआ। आप धराए आपणा नाँ, आपे लए मिटाईआ। मक्का मदीना लाए ढाह, अन्तिम लेखा रिहा लिखा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। शाह सुल्ताना ख़ाक रला, मुगल पठानां दए मिटा, अन्तिम रहिण ना पाईआ। तीर निशाना इक्क चला, चारों कुन्ट वेख वखा, प्रभ साचा लेख लिखाईआ। तेज भान दर फेरा पा, सृष्ट सबाई दए हिला, वाली हिन्द दए जगा, सोया कोई रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना चिल्ला इक्क चढ़ाईआ। रसना चिल्ला तीर कमाना, हरि साचा आप चढ़ांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी मारे इक्क निशाना, सत्तां दीपां आप हिलांयदा। वेखे खेल जोद्धा सूरबीर बलवाना, ब्रह्मण्डां खोज खुजांयदा। कलिजुग वरते आपणा भाणा, हरि भाणे विच समांयदा। ना कोई दिसे राजा राणा, तख्त ताज ना कोई हंढांयदा। ना कोई दीसे शाह सुल्ताना, दो जहानां ना कोई वखांयदा। किसे हथ्थ ना आए पीणा खाणा, बालक सीर ना कोए प्यांअदा। चार कुन्ट दहि दिशा वहीर प्रभ आप कराना, धीरज धीर ना कोई धरांयदा। जोत सरूपी पहरया बाणा, मेहरवान आप हो जांयदा। जन भगतां हथ्थीं बन्न्हे गाना, एका तन्दन तन्द बंन्हांयदा। लाड़ी मौत मंगे दाना, राए धर्म

दर सुहांयदा। राए धर्म खोलॣ दुकाना, अठाई कुण्डां बूहा लांहयदा। चित्रगुप्त वेख जहाना, खेल आपणे हथ्थ रखांयदा। लक्ख चुरासी कर इशनाना, प्रभ साचा सगन मनांयदा। सम्मत सम्मती कर परवाना, सम्मत सोलां साथ देवे सुनेहड़े पंचम जेठ दिवस वखाना, राग रंग आप करांयदा। हाढ़ सतारां चल आए विच मैदाना, ख़ाकी ख़ाक उडांयदा। एका वज्जे जगत निशाना, धूआँधार सृष्ट करांयदा। चन्द सूरज किसे दरस ना पाना, तारा मण्डल ना वेख वखांयदा। गुर पीर ना दिसे टिकाना, साध सन्त ना कोई तरांयदा। अट्ठ सट्ठ तीर्थ किसे ना नहावण नुहाना, गंगा गोदावरी ना सीर प्यांअदा। वेद पाठ ना पढ़े पुराणा, खाणी बाणी ना कोई अलॣांयदा। ना कोई सुणाए हदीस अञ्जील कुराना, अहिनल हक्क ना कोई वखांयदा। खुदी खुदाए कर कुरबाना, आप आपणी भेंट मनांयदा। पंडत पांधे वड विद्वाना, मस्तक लिलाटी वेख वखांयदा। जोद्धा सूर हरि वड बली बलवाना, तीर निशाना इक्क चलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, धरत मात मारे झात, इक्क इकांत अमृत देवे बूंद स्वांत, जन भगतां आप पिलांयदा। अमृत देवे बूंद स्वांती, धुर दरगाही लेखा। जन भगतां देवे लहिणा देणा बाकी, मूंड मुंडाए ना जाणे धारी केसा। आत्म अन्तर खोलॣे ताकी, जोत सरूप दस दस्मेसा। आपे जाणे भविख्त वाकी, सेवक सेवा ब्रह्मा विष्न महेषा। नबी रसूल पीर दस्तगीर शाह हकीर पाकन पाकी, आपे जाणे आपणा वेसा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साजन घर साचे आपणे नेत्र पेखा। हरिजन किवाड़ जाए खुलॣ, अन्तिम मंग मंगाईआ। पुरख अबिनाशी ना लाए पल, जो जन ढहि पए सरनाईआ। देवे जोती नूर दरस अटल, नूरो नूर कराईआ। भाग लगाए साची कुल, कुलावन्त इक्क अख्वाईआ। आप उलटाए नाभ कँवल, निझर धार मुख चुआईआ। आत्म सेजा जाए मवल, फल फुलवाड़ी इक्क वखाईआ। मेल मिलाए साँवल सँवल, सुन्दर मुख दरसाईआ। ध्यान रखाए चरन कँवल, कँवल कँवलां विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बन्द किवाड़ा आप खुलॣाईआ। बन्द किवाड़ी आपे खोलॣ, आपणी दया कमांयदा। अन्दर मन्दिर आपे बोल, आपे राग अलॣांयदा। ढूँढी कन्दर आपे फोल, हरिजन वेख वखांयदा। साचे कंडे रिहा तोल, तोलणहारा आप अख्वांयदा। जन भगतां करे साचे चोहल, प्रीती नीती इक्क वखांयदा। काया धरती जाए मौल, आप आपणा रूप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बन्द किवाड़ी वेख वखांयदा। बन्द किवाड़ा बजर कपाट, एका हट्ट रखाया। किसे हथ्थ ना आए तीर्थ ताट, वेखे सृष्ट सबाया। गुरमुख साचा लाहा रिहा खाट, प्रभ चरन ध्यान लगाया। एका रस रसना सोहँ रसना रहे चाट, जोत निरजंण सेवा लाया। जोत निरँजण कदे ना आए आन बाट, गर्भ वास ना वेख वखाया। आप

चढ़ाए औखा घाट, खेवट खेट नाउँ रखाया। चरन प्रीती मारे ठाठ, सर सरोवर दए नुहाया। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, कलिजुग वेला वक्त सुहाया। धूढ़ी मजन इक्क वखाए तीर्थ अट्ठ साठ, हरिजन साचा नवाहण नहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन कपाट आपे वेखण आया। बन्द किवाड़ी बन्द दरवाज़ा, बंधी बंधन पाया। पुरख अबिनाशी साचा साजण साजा, भेव किसे ना पाया। साधां सन्तां मारे आवाज़ां, दिवस रैण रिहा जगाया। अन्दर मन्दिर एका रच्चया काजा, हवनी हवन कराया। नाल रखाए अनहद वाजा, निरगुण रिहा वजाया। भगत द्वारे आए भाजा, दो जहानी फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराया। बजर कपाटी जिंदा तोड़, आपणी दया कमांयदा। शब्द सरूपी चाढ़े घोड़, जोती जोड़ जुड़ांयदा। आदिन अन्ता जाए बौहड़, जन भगतां जुगां जुगन्तां मेल मिलांयदा। सच द्वारे लाया एका पौड़, घर चौथे आप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि साजन वेख वखांयदा। साजन साचा भगतन मीता, गोबिन्द रूप गोपाल। जुग जुग चलाए आपणी रीता, सन्त सुहेले वेखे साचे लाल। आप जणाए अठारां ध्याए गीता, आप चलाए अर्जन बाण। नानक नाम निधाना एका पीता, काया मन्दिर वेख सच्ची धर्मसाल। शब्द जोत होए सरजीता, अकाल मूर्त इक्क निशान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन खोल्हे बन्द किवाड़, काया मन्दिर अन्दर देवे वाड़, ना कोई रक्खे मन्दिर मसीता।

६७०
०६

साचा सज्जण साचा शाह, हरि सज्जण बन बनवारया। गुरमुख पार लगाए बण मलाह, जुग जुग लए अवतारया। आप जणाए आपणा नाँ, निरगुण नाउँ निरंकारया। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, एका साची चोग चुगा रिहा। मेल मिलाए अगम्म अथाह, बेपरवाही आप अख्वा रिहा। सोहँ देस वसाया नगर ग्रां, चार दिवार ना कोई दिसा रिहा। सो पुरख निरँजण बणे पिता माँ, पूत सपूते गोद उठा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची नगरी सच समग्री एका एक वखा रिहा। सर्बकला समरथ, हरि अख्वांयदा। जन भगतां रक्खे दे कर हथ्थ, जुग जुग बणत बणांयदा। सगल वसूरे जायण लथ्थ, नेत्र नैण जो दर्शन पांयदा। दरस वखाए हो प्रतक्ख, बाल अञ्जाणे दया कमांयदा। चरन छुहाए कुली कक्ख, कक्खों लक्ख करांयदा। सृष्ट सबाई उडणे भक्ख, जन भगतां गोद उठांयदा। लक्ख चुरासी करे वक्ख, घर एका एक टिकांयदा। काया मन्दिर कदे ना होवे सक्ख, प्रभ जोती नूर टिकांयदा। जगत अवल्ला राह दस्स, एका शब्द पढ़ांयदा। गुरमुख हिरदे जाए वस, दिस किसे ना आंयदा। कलिजुग रैण अन्धेरी मस, साचा चन्द ना कोए चढ़ांयदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखांयदा। एका शब्द पुराण अधारी, एका जोत जगाईआ। एका नाम तेज कटारी, गुरमुख हथ्थ फड़ाईआ। एका शब्द अपर अपारी, बस्त्र चीर सजाईआ। एका देवे शब्द खुमारी, अट्ठे पहर उठाईआ। दूई द्वैती कट्ट बिमारी, एका रंग रंगाईआ। चरन प्रीती सच सिक्दारी, नीचों ऊँच बणाईआ। चाढ़े रंग अपर अपारी, उतर कदे ना जाईआ। चौथे जुग जन भगत जुग आई वारी, तेज भान होई कुड़माईआ। पाया पुरख हरि कन्त भतारी, साची नारी आप सुहाईआ। शब्द रंगीला पलँघ निवारी, आत्म सेजा आप विछाईआ। फूलन बरखा लाए हरि गिरधारी, मोहण माधव रूप वटाईआ। सुन्दर कुण्डल मुकट बैन वेख मुरारी, नेत्र नैणा दर्शन पाईआ। धुन सुणाए अपर अपारी, साची बंसरी इक्क वजाईआ। वेखे खेल काहना कृष्न मुरारी, आप आपणा रूप वटाईआ। भगत वछल सद पार उतारी, भगत भगवाना रूप समाईआ। चतुर्भुज कर खेल अपारी, कलिजुग वेखे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम लेखे लाए काया चाम, कराए सच्चा वणज वपारीआ। गुरमुख लाल अनमुल्लड़ा, कीमत कोई ना पाए। लक्ख करोड़ अरब खरब किसे तोल ना तुलड़ा, हट्टो हट्ट ना किसे विकाए। जगत कंडे किसे ना तुलड़ा, जनक जनको गया वखाए। चरन द्वारे जो जन आए भुल्लड़ा, प्रभ लेखा लेखे लाए। दो जहानी फलया फुलड़ा, फल अमृत इक्क वखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम नामा इक्क दवाए। नाम गाए हरि हरि नाउँ, पाया गोबिन्द लाल। लेखा लिखे अगम्म अथाहो, बैठा सच सच्ची धर्मसाल। हरिभगत हरिजन बलि बलि जाओ, सेवक सेवा दीन दयाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग विछड़े गुरमुख गुरमुख जग लए अन्तिम भाल। कबीर कबीरा सति है, सति सरूप समाए। प्रभ रक्खणहारा पति है, दिवस रैण रिहा ध्याए। एका वस्त मिली नाम साची वत्थ है, रत्ती रत्त रहिण ना पाए। मिल्या मेल कमलापत है, दर द्वारे मंगण भिच्छया पाए। आत्म बीजे बीज साचे वत्त है, आप आपणी दया कमाए। सिँघ नरायण ना आउणा लोकमात वत्त है, प्रभ जोती जोत मिलाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, तेज भान तेरी सच दुकान, जुग जुग जग आप चलाए। नाम दुकान जगत वणजारा, हरि साचा हट्ट खुल्हांयदा। चौदां लोकां दए हुलारा, देवणहार आप हो जांयदा। सत्तां दीपां करे ख़बरदारा, लक्खण दीप फेरा पांयदा। करौच खेल अपर अपारा, पुष्कर डेरा लांयदा। जम्बु दीप अद्ध विचकारा, हरि साची जोत जगांयदा। सलमल तेरा पार किनारा, सान सिख्या इक्क सिखांयदा। कुशा रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नीर वहांयदा। सत्त रंग निशाना कर त्यारा, हरि साचा वेख वखांयदा। कुला खण्ड तेरी बन्न्हे धारा, जोती नूर उपांयदा। अलाबुत हाहाकारा,

नेत्र नीर वहांयदा। किं पुरख करे पुकारा, धीर ना कोई धरांयदा। हरिवरख तेरा पार किनारा, कलिजुग अन्तिम आंयदा। हरणयमह ढहि पया दुआरा, दोए जोड़ सीस झुकांयदा। भदर वेखे धुँदूकारा, रवि ससि मुख छुपांयदा। रमक खोल्हे बन्द किवाड़ा, राम रहीम आप हो आंयदा। भारत खण्ड जग वेख अखाड़ा, धरत धवल आप सुहांयदा। लग्गे अग्ग सतारां हाढ़ा, ना कोई मात बुझांयदा। लक्ख चुरासी आप चबाए आपणी दाढ़ा, आप आपणा रूप वटांयदा। गुरमुख बणाए साचा लाड़ा, साचे घोड़े आप चढ़ांयदा। बहत्तर नाड़ा वज्जे ताड़ा, राग अनादी इक्क अल्हांयदा। पंचम सखीआं लाया अखाड़ा, बहि बहि मंगल गांयदा। बेमुख जीवां लुट्टी जाए दिन दिहाड़ा, दिस किसे ना आंयदा। मगर लग्गे अगम्मी धाड़ा, अगम्म अगम्मड़ी खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन हरि घर वेख वखांयदा।

हरिजन तेरा सच महल्ला, साचे घर समाया। पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला, अकल कला अख्वाया। वेख वखाए दया कमाए डूँघी गार जलां थलां, उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फुलाया। जन भगतां मेल आपे मेला, जुग जुग विछड़े रिहा मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन छुहाए भगतन दर, भगवन रूप वटाया। भगतन दर सच दुआरा, शब्द वज्जी वधाईआ। लक्ख चाली जीव गंवारा, सार किसे ना पाईआ। अन्तिम होए मात ख्वारा, धीरज धीर ना कोई रखाईआ। उच्च महल्ल अटल ना रहे कोई मुनारा, ख़ाकी ख़ाक उडाईआ। शाह सुल्तान ना कोई सिक्दारा, भूपत भूप ना कोई अख्वाईआ। तख्त ताज ना सीस दस्तारा, शहनशाह ना कोई अख्वाईआ। जन भगतां सुहाए दुआरा, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। सृष्ट सबाई करे निमस्कारा, सतिजुग साची नीह धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर मन्दिर दए सुहाईआ। घर मन्दिर कर पसारा, आपणी दया कमांयदा। तख्त ताज वेख दिल्ली दरबारा, हरिजन बणत बणांयदा। लेखा लग्गे इक्क लक्ख हज़ार ग्यारां, लेख आपणे हथ्थ रखांयदा। धाम सुहाए इक्क दुआरा, चार वरनां इक्क जणांयदा। शेख़ सर राम नगर प्यारा, नर नरायण नाउँ धरांयदा। चार कुन्ट होए चार दुआरा, सर सरोवर आप सुहांयदा। जगे जोत अगम्म अपारा, लाल लिलाट इक्क रखांयदा। हरिजन भगत तेरा भगती दुआरा, प्रभ साचा मात उपांयदा। मस्तक तिलक लगाए अपर अपारा, लाल लिलाट समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सेवक सेवक सेवा लेखे लांयदा।

सेवक सेवा लेखे लाए, होए दर परवानया। आप आपणा संग रखाए, मेल मिलाए दो जहानया। एका साची मंग मंगाए, चरन प्रीत श्री भगवानया। ढोल मृदंग इक्क सुणाए, अनहद आत्म बाणीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मेले गुरू गुर चेले, गुर सतिगुर नेंह निशानीआ। धुर शब्द सतिगुर निशानी, प्रभ साचे इक्क रखाईआ। भेव ना पाए कोई खाणी बाणी, कवण खेले खेल हरि रघुराईआ। कलिजुग माया त्रैगुण जाल बैठी ताणी, चारों कुन्ट विछाईआ। अहिमद मुहम्मद भरन पाणी, अल्ला राणी नाल रलाईआ। अञ्जील कुरान कथा कहाणी, जगत अन्त अन्त रहिण ना पाईआ। वेद पुराणा आई हानी, मान अभिमानी दए मिटाईआ। साध सन्त पढ़ पढ़ थक्के बाणी, बाण निराला ना कोई लगाईआ। जन भगतां मिल्या प्रभ साचा हाणी, गुरमुख हाणीआं हाण मिलाईआ। अमृत आत्म देवे ठंडा पाणी, सांतक सति वरताईआ। हरिसंगत पाए पद निरबानी, घर साचे आप सुहाईआ। आपे होए जाण जाणी, जानणहार सृष्ट सबाईआ। दाता जोद्धा सूरबीर वड दाता दानी, एका भिच्छया झोली पाईआ। सतिजुग तेरी सच निशानी, सोहँ जाप जपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाईआ।

चरन कँवल जन रक्खे आस, प्रभ आत्म तृप्त कराईआ। सर्ब वस्त गुर साचे पास, देन्दयां तोट ना आईआ। लेखे लाए सास ग्रास, हरिजन रसना रहे गाईआ। निज घर आत्म रक्खे वास, काया मन्दिर दए सुहाईआ। साचे मण्डल पावे रास, दीपक जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन प्रीती गुरमुख विरले आप सिखाईआ। चरन प्रीती साचा नाता, गुरमुख विरले पाया। पुरख अबिनाशी इक्क बिधाता, ज़ातां पातां विच ना आया। भगत जनां हरि पिता माता, आप आपणी गोद उठाया। देवे नाम सच सुगाता, आत्म झोली रिहा भराया। नाता तोड़े भाई भैण भ्राता, लहिणा देणा मूल चुकाया। गुरमुख गुरसिख हरिजन चरन धूढ़ गुर पूरे नहाता, दुरमति मैल गंवाया। लेखे लाए पूजा पाठा, जो जन चरन ध्यान लगाया। अमृत आत्म मारे ठाठां, भर प्याला इक्क प्याया। लेखे लाए हाडी तिन्न सौ साठा, बहत्तर नाड़ करे रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन पूरन आस कराया। चरन कँवल जन रक्खे ओट, एका आस रखाईआ। पुरख अबिनाशी कढ्ढे खोट, हउमे हँगता रोग गंवाईआ। काया तन नगारे लाए साची चोट, सोहँ डंका एका लाईआ। आवण जावण लक्ख चुरासी जाए छूट, राए धर्म फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, हरिजन बख्शे सच सरनाईआ। चरन आस सच सरना, जन सरनाई आए। मरना डरना दए चुका, हरना फरना दए खुलाए। करनी करना राहे पा, आप आपणा दरस वखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे नाम वर, चरन ध्यान इक्क रखाए। चरन ध्याना डूँघा सागर, हथ्थ किसे ना आया। पुरख अबिनाशी आप टिकाया काया गागर, अंमित ताल भराया। जिस जन निर्मल कर्म करे उजागर, प्रभ चरन सरन सीस टिकाया। मिले नाम रत्ती रत्नागर, काया चोली रंग रंगाया। दर द्वारे बणे सच सौदागर, साचा वणज रिहा कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन प्रीती एका मार्ग लाया। चरन प्रीती सच सुल्ताना, सच सच्ची कमाईआ। अट्ठे पहर इक्क ध्याना, एका हरि लिव लाईआ। एका शब्द इक्क निशाना, एका तीर चलाईआ। आत्म अन्तर देवे ब्रह्म ज्ञाना, पारब्रह्म सरनाईआ। साचा दान इक्क रखाना, हरि धर्म करे कुड़माईआ। हरिजन साचा चतुर सुजाना, चरन ध्यान इक्क वखाईआ। खेले खेल गोपी काहना, मण्डल रास सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चरन कँवल कँवल चरन एका एक वखाईआ। चरन कँवल सच दरगाह, साचा धाम सुहाया। दूसर दिसे ना कोई राह, ना कोई पार कराया। पुरख अबिनाशी सच मलाह, गुरमुखां बेड़ा रिहा चलाया। फड़ फड़ बन्ने देवे ला, वेला अन्तिम आया। छप्पर छन्ने कोई रहिण ना पा, उच्चे मन्दिर देवे ढाहया । घड़े छन्ने पाणी पीए ना कोई पा, आसण सेज ना कोई विछाईआ। लक्ख चुरासी दर दर घर घर दए रुला, राज राजानां ख़ाक मिलाया। तख्त ताज सृष्ट सबाई दए मिटा, साज बाज दिस ना आया। अस्त्र शस्त्र इक्क दुड़ा, सृष्ट सबाई वेख वखाया। नौ खण्ड पृथ्वी फेरा पा, सत्तां दीपां रिहा हिलाया। लक्ख चुरासी दए जगा, सोया कोई रहिण ना पाया। गुरमुख साचे वेख वखा, आप आपणा दरस दिखाया। चरन प्रीती इक्क सिखा, चरन चरनोदक मुख चुआया। लहिणा देणा दए मुका, बस्त्र गहणा तन पहनाया। भाणा सहिणा हुक्म जणा, जनणी जन लेखे लाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जोड़ा मेल दर, शब्दी घोड़ा इक्क मंगाया। सोहँ तोड़ा सीस लटका, कल्गी कल्की रिहा चमकाया। लोआं पुरीआं लेख लिखा, लेखा आपणे हथ्थ रखाया। केसाधारी वेख वखा, मूंड मुंडाए खोज खुजाया। किसे हथ्थ ना आए बेपरवाह, बैठे मुख भवाया। जन भगत हरिजन घट मन्दिर अन्दर बैठे रहे ध्या, आत्म अन्तर ध्यान लगाया। पुरख अबिनाशी जोत जगा, आपणा आप दए वखाया। शब्द सरूपी शब्द जणा, शब्दी मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे एका वर, चरन प्रीत इक्क ध्यान लगाया। चरन प्रीती मस्तक धूढ़, गुरमुख विरले लाई। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, ढहि पए जो जन सरनाई। जगत नाता तोड़े कूड़ो कूड़, देवे

नाम वड वड्डी वड्याई। रंग मजीठी चाढ़े गूढ़, भुल्ल रहे ना राई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेले खेल सृष्ट सबाई।

सति पुरख निरँजण सति सतिवाद, साचे रंग समाया। सन्त सुहेले जुग जुग लाध, जुग जुग वेख वखाया। धुर दरगाही देवे दाद, दर दर एका जाप जपाया। मेले मेल आदि जुगादि, अकल कला अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए उपाया। हरिजन साचे करे पुकार, दर साचे रिहा कुरलाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, नेत्र नीर वहाईआ। काया चोली रंग ललार, उतर कदे ना जाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, लोकमात बणत बणाईआ। निहकलंकी जामा धार, हरिजन साचे रिहा उठाईआ। अन्तिम करे तन श्रृंगार, एका बस्त्र रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंगण रंग रंगाईआ। साचा रंग आप रंगाउणा, आपणी बणत बणांयदा। त्रैगुण माया मठ तपाउणा, एका लम्बू लांयदा। तिन्न सौ सट्ठ हाडी जलाउणा, आपणी बणत बणांयदा। अट्ठ सट्ठ तीर्थ पाणी पाउणा, गंगा गोदावरी सेवा लांयदा। ब्रह्मा विष्न दर बहाउणा, शिव शंकर वेख वखांयदा। करोड़ तेतीसा प्रभ संग रलाउणा, सुरपति राजा इन्द वेख वखांयदा। लक्ख चुरासी तेरा कर्म कटाउणा, जरम कर्म धर्म वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका पूजा पाठ करा, एक हवन एका मट्ठ बणांयदा। एका मठ आप तपा, एका बल वखाईआ। एका पूजा पाठ करा, एका हवन वखाईआ। एका जोगी जोग कमा, एका राह चलाईआ। एका मार्ग दए ला, एका रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। एका रंग करे त्यार, हरि साचा बणत बणांयदा। ईसा मूसा संग मुहम्मद चार यार, लिख्या लेख वखांयदा। अञ्जील कुरानां पावे सार, अन्तिम मेट मिटांयदा। वेद पुराणां कर अधार, हवनी हवन करांयदा। खाणी बाणी देवे डार, साचा कुंड तपांयदा। वरन बरन ना कोई प्यार, ऊँच नीच ना कोई जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रंग उपांयदा। एका रंग कर त्यार, हरि आपणी बणत बणाईआ। शब्द सरूपी कर अधार, हरिजन रिहा जगाईआ। देवे दरस अगम्म अपार, नेत्र नैण खुल्हाईआ। इक्क वखाए दर द्वार, दूसर कोई रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन तेरी काया चोली आपे वेख वखाईआ। काया चोली सच दुशाला, हरि साचा तन रंगांयदा। मेल मिलाए गुर गोपाला, हरि गोबिन्द रूप समांयदा। फल लगाए साचे डाल्हा, अमृत मेवा इक्क वखांयदा। सर सरोवर बणाए साचा ताला,

चरन धूढ़ रमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान आप हो आंयदा। काया चोली रंग चलूल, एका रंग चढ़ानया। हरिजन ना जाए मात भूल, मिले मेल श्री भगवानया। सच सिँघासण इक्क वखाए ना पावा ना दिसे चूल, जोती नूर महानया। मेल मिलाए कन्त कन्तूहल, दर घर करे परवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे चतुर सुजानया। काया चोली रंग मजीठ, हरि एका एक चढ़ांयदा। देवे वस्त सच अनडीठ, हरिजन झोली पांयदा। आत्म रस साचा मीठ, रसना मुख ना कोई खांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वखाए साचा सुख, निज घर डेरा लांयदा। काया चोली रंग करतार, आपणी दया कमाईआ। गुरमुख नारी कर त्यार, फूलन बरखा लाईआ। सोलां कलीआं तन श्रृंगार, साची बणत बणाईआ। फड़ फड़ बाहों दए हुलार, शब्द पंघूड़ा इक्क झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए जगाईआ। साचा रंग रंग ललारा, आपे वेख वखांयदा। नारी कन्त कर प्यारा, कन्त भतारा आप हो जांयदा। आप खुल्हाए सच दुआरा, दर द्वारे फोल फुलांयदा। इक्क वखाए नाम भण्डारा, गुणवन्ता आप वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच प्यारा इक्क जणांयदा। सच प्यारा कन्त भतारा, सेजा इक्क बणाईआ। आत्म सेजा कर त्यारा, बैठा कुण्डा लाहीआ। दीपक जोती कर उज्यारा, अट्ठे पहर करे रुशनाईआ। शब्द धुन अपर अपारा, अनहद रिहा सुणाईआ। गुरसिख नारी हो त्यारा, मुख बैठी घुंगट पाईआ। पुरख अबिनाशी वाजां रिहा मारा, दर दुआरा इक्क वखाईआ। नेत्र नीर वरोले ज़ारो ज़ारा, रैण सुहंदड़ी अन्तिम आईआ। मिले मेल हरि कन्त भतारा, नार सुहागण सुहाग हंढाईआ। विछड़ ना जाए विच संसारा, अट्ठे पहर दरस वखाईआ। पति पतिवन्त ठांडा दर दरबारा, तत्ती वा ना लागे राईआ। गुरमुख नारी आंढ गवाढणां रही पुकारा, मिल्या मेल साचा माहीआ। अन्तिम झूठा सर्ब संसारा, थिर कोई रहिण ना पाईआ। चोली रंगे रंग करतारा, घर चल आए वाहो दाहीआ। गुरसिख सुरत सवाणी होई मुटियारा, वर लोड़े साचा माहीआ। पिण्ड छड्डुणा पैणा अन्तिम वारा, सच सौहरे डेरा लाईआ। बजर कपाटी खोल्ह किवाड़ा, घर आसण इक्क वछाईआ। जोत निरँजण पाणी देवे वारा, मात सुलखणी इक्क बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन काया चोली दए रंग, रंगण वाला आप अख्वाईआ। काया चोली रंग अनडीठड़ा, हरि साचा आप चढ़ांयदा। गुरमुख देवे नाम अनडीठड़ा, पूर्ब लहिणा झोली पांयदा। काया मिट्ठा करे कौड़ा रीठड़ा, अमृत आत्म जाम प्यांअदा। अबिनाशी करता बीठल बीठला, नाम नामा लेखे लांयदा। माया ममता जूठा झूठा मनमुख जीवां पीसण पीसड़ा, सच वस्त ना कोई रखांयदा। गुरमुख रंग काया चोली चीथड़ा, प्रभ साचा आप

रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सोहँ भट्ठा इक्क तपांयदा। सोहँ भट्ठा हरि निरँकार, कलिजुग अन्त तपांयदा। गुरमुख साजन कर इक्ट्ठा, एका वार रंगांयदा। काया चोली रंग चाढ़े मजीठा, उतर कदे ना जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप तरांयदा।

भगतन मेला हरि भगवान, भगती मेल मिलाया। गुर चेला सोहे इक्क बिबाण, इक्क ध्यान लगाया। दर दुआरा हरि दरबान, दर दरवेश अख्वाया। अट्ठे पहर निगाहबान, सांगोपांग सेज तजाया। इक्क वखाए पद निरबान, निर्भय रूप समाया। सीस झुलाए छत्र महान, जगत जगदीस अख्वाया। आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म सरनाया। लेखा जाणे दो जहान, लिखणहार आप अख्वाया। आवण जावण खेल महान, जुग जुग खेल खिलाया। कलिजुग अन्तिम वेखे मार ध्यान, चारो कुन्टां डेरा लाया। हरिजन साचा चतुर सुजान, आप आपणी दया कमाया। जन भगती मेला तेज भान, तेज धार इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रंग करतार करता इक्क कराया। तेज धारा शब्द अनमुल्ल, आत्म अन्तर लाईआ। आपे पावणहारा मुल्ल, आपे मूल चुकाईआ। सच फुलवाड़ी जाए फुल्ल, रुत्त बसन्ती इक्क सुहाईआ। भाग लगाए साची कुल, कुलवन्त अख्वाईआ। जगत माया ना जाए रुल, त्रैगुण मेट मिटाईआ। कलिजुग बूटा रिहा हुल्ल, वेला अन्तिम आईआ। लक्ख चुरासी रही भुल्ल, कलिजुग रिहा भुलाईआ। चार वरन दुआरा गया खुल्ह, हरि सच सच्ची सरनाईआ। एका तोले साचा तोल, सोहँ कंडा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। मेला सहिज हरि गोबिन्दा, सगली चिन्द मिटांयदा। भगत वछल जन साची बिन्दा, एका एक उपांयदा। मेटणहारा सगली चिन्दा, सहिँसा रोग चुकांयदा। अमृत आत्म देवे सागर सिन्धा, निझर धार वहांयदा। आदि जुगादि जुग जुग बख्शिंदा, जगत जगदीशर आप अख्वांयदा। मनमुख जीव लाए निन्दा, निन्दक निन्दया मुख रखांयदा। वड दाता हरि गुणी गहिंदा, गुरमुख साचे आप तरांयदा। धुन अनादी आत्मक इक्क सुणंदा, घर मन्दिर आप अलांयदा। अनहद शब्द ताल वजंदा, वाजा पवण वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साजन हरि रंग रता, कँवलापता आप अख्वांयदा। कँवलापत हरि भगवन्ता, भगतन रंग समाईआ। मेल मिलावा साचे कन्ता, सतिगुर पुरख मनाईआ। आप बणाए साची बणता, वेख वखाणे थाउँ थाँईंआ। जुग जुग उधारे जीआं जन्तां, नेत्र इक्क ज्ञान वखाईआ। मेल मिलाए साचे कन्ता, नारी कन्ता आप अख्वाईआ। हरिजन महिंमा अगणत अगणता, लेखा गणत ना कोए गिणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, हरिसंगत देवे भगती वर, जगत विद्या नाम पढ़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बख्शे चरन सरन सरन चरन सच सच्ची सरनाईआ।

✻ ११ कत्तक २०१४ बिक्रमी संसार सिँघ दे गृह पिण्ड छम्ब ज़िला जम्मू ✻

सन्त सतिगुर हरि वसया, आदि पुरख निरँकार। राह साचा एका दस्सया, मिले मेल कन्त भतार। मेट मिटाए रैण अन्धेरी मस्सया, दूर कराए धूआँधार। कोटन कोट करे प्रकाश रवि सस्सया, आप आपणी किरपा धार। अन्दर मन्दिर बहि बहि हस्सया, हरि साजन मीत मुरार। आवे जावे फिरे नस्सया, खेले खेल वारो वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त जनां मेल दर, दर दरवाज़ा एका वसया। सन्त जनां हरि मेल मिलाया, आत्म ब्रह्म जणाईआ। चेला गुर रूप समाया, सुरती शब्द मिलाईआ। अनहद साचा ताल वजाया, रागी नाद अलाईआ। मन बैरागी नेड़ ना आया, जगत त्यागी तृष्न मिटाईआ। सोई जागी वर घर पाया, मिल्या मेल साचे माहीआ। बुझी आगी विकार मिटाया, मूर्ख धन्दे लाईआ। हरिजन साचा सच सुभागी, आप आपणा वेख वखाईआ। मिल्या मेल शाहो शाबाशी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सन्तन वेखे साचा दर, बंक दुआरा इक्क सुहाईआ। बंक दुआरा सच महल्ला एका एक वसाया। निहचल धाम इक्क अटला, जुग जुग आप रखाया। सृष्ट सबाई भुलाए कर कर वल छला, हरिजन साचे लए तराया। दीपक जोती एका बला, अज्ञान अन्धेर मिटाया। गगन पातालां पए तरथल्ला, नौ खण्ड पृथ्वी दए हिलाया। सत्तां दीपां एका हल्ला, एका शब्द कराया। जन भगत फड़ाए आपणा पल्ला, एका आपणा लड़ फड़ाया। तीजे नेत्र आपे खल्ला, देवे दरस हरि रघुराया। चौथा घर सच महल्ला, हरिजन साचा वेख वखाया। पंचम मेला सच सुखल्ला, हरि आपणा आप कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे सर, सर सरोवर इक्क नुहाया। सर सरोवर आत्म अन्तर, हरिजन आप नुहांयदा। आप बुझाए लग्गी बसन्तर, काया तृप्त वखांयदा। खेले खेल जुगा जुगन्तर, जुग जुग वेख वखांयदा। सन्त भगत बणाए बणतर, मीत मुरार आप हो आंयदा। वेख वखाए गगन गगनंतर, जल थल मईअल रूप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिभगतन अन्दर साचा मन्दिर एका एक वखांयदा। काया मन्दिर सच टिकाना, हरि साचे जोत जगाईआ। उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खण वेखे मार ध्याना, चारों कुन्ट वेख वखाईआ। दहि दिशा होए निगाहबाना, दिवस रैण सेव कमाईआ। दीपक जोत जगाए इक्क महाना, अट्ठे पहर करे रुशनाईआ। धुन

आत्मक सुणाए अनादी गाना, अनहद ताल वजाईआ। अमृत आत्म देवे साचा खाणा, तृष्ना भुक्ख रहिण ना पाईआ। आत्म सेजा सच पलँघ इक्क विछाना, गुरमुख साजन लए बहाईआ। आप आपणे दर घर करे परवाना, मेल मिलाए चाँई चाँईआ। इक्क दूजे दी होए सहारना, सुरती शब्द समाईआ। शब्दी शब्द हरि भगवाना, जोत निरंतर इक्क वखाईआ। आपणी हथ्थीं बन्ने गाना, दिस किसे ना आईआ। दस्म द्वारी सच मकाना, प्रभ बैठा आसण लाईआ। सति पुरख निरँजण वेखे मार ध्याना, जन भगतां राह तकाईआ। दर द्वार सुहाए पद निरबाना, घर चौथा इक्क दरसाईआ। हरिजन साचा वेखे नेत्र नैण दर्शन पाए शाह सुल्ताना, बैठा अग्गे साचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सन्तन मेला साचे दर, दर साचा इक्क वखाईआ। साचा घर हरि सुहंता, सच समग्री रास। जन भगतां देवे नाम सुगंता, दिवस रैण प्रभास। निजानंद हरि मेल मिलंता, निज घर वेखे हरि गुणतास। काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता, लेखे लाए दस दस मास। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सन्तन मेला साचे घर, घर साचे देवे अमृत आत्म बूंद स्वांत। अमृत आत्म ठांडा नीर, गुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। बजर कपाटी देवे चीर, एका तीर लगाईआ। आप चढ़ाए चोटी सिखर अख़ीर, ना कोई दूसर संग रलाईआ। हउमे हँगता कढ्ढे पीड़, एका अक्खर जाप जपाईआ। तन पहनाए साचा चीर, बस्त्र उतर कदे ना जाईआ। किसे हथ्थ ना आए पीर फ़कीर, जीव जन्त साध सन्त चारों कुन्ट बैठे धूणीआं ताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सन्तन मेला सच घर, हरि शब्द करे कुड़माईआ। हरि शब्द जन कर कुड़माई, प्रभ साचा सगन मनांयदा। साचे घर वज्जे वधाई, साचा मंगल गांयदा। रल मिल सईआं वेखण चाँई चाँई, पंचम मेल मिलांयदा। पंचम मेला साचे माही, विछड़ कदे ना जांयदा। फड़ फड़ राहे पाए पान्धी राही, हरिजन साचे वेख वखांयदा। सदा सुहेला देवे ठंडीआं छाईं, जुग जुग दया कमांयदा। सन्त कन्त भगवन्त अन्त विछोड़ा नाहीं, जुग विछड़े जग मेले अन्तिम मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिभगत दुआरा सच घर, घर साचा इक्क सुहांयदा। सन्तन मेला हरि सुल्तान, सतिगुर सति समाया। मेल मिलाए हरि मेहरवान, एका नात बुझाया। आत्म जोती शब्द ज्ञान, एका नाम पढ़ाया। सच सरोवर इक्क इशनान, चरनोदक मुख चुआया। अन्तर अमृत पीण खाण, तृष्ना भुक्ख मिटाया। पार कराए दो जहान, नाम निधान सुणाया। मिले मेल श्री भगवान, मेला आपणे हथ्थ रखाया। जुग जुग वेखे मार ध्यान, आप आपणा भेख वटाया। सतिजुग त्रेता द्वापर खोल्ह दुकान, वणज वणजारा आप हो आया। कलिजुग अन्तिम खेल महान, खेले खेल सृष्ट सबाया। जूठ झूठ होई प्रधान, पंच विकारा साथ ल्याया। बुध मति होई प्रधान, गुरमति बैठी मुख छुपाया।

साध सन्त जगत ज्ञान, ब्रह्म विद्या ना कोए पढ़ाया। संग रखाए पंज शैतान, माया ममता मोह वधाया। मिले मेल ना प्रभ साचे हाणीआं हाण, साचा कन्त ना कोए हंढाया। आत्म रंडी सुंञ मसाण, अट्ठे पहर रही कुरलाया। वरभण्डी वेखे हरि खोजान, खोजी खोजत दिवस रैण सबाया। अनहद शब्द अनादी बोल, बोलत जैकारा इक्क रखाया। सच दुआरा मन्दिर खोल्हत, काया खेड़ा इक्क वसाया। हरिजन साचा सदा अडोलत, दिवस रैण रैण दिवस हरि चरन कँवल चित लाया। पुरख अबिनाशी बोले हौली हौलत, आप आपणा नाम अल्हाया। उलटा करे नाभ कौलत, कँवल कँवला आप फिराया। आत्म सेजा आपे मौलत, मौला मौला रूप समाया। बिरथा ना जाए हरि सन्त रस रसना बोलत, प्रभ लेखे लए लगाया। आदि अन्त जुगादि आदि सदा अडोलत, डुल कदे ना जाया। सच भण्डारा कलिजुग अन्तिम खोल्हत, जूठा झूठा भेख रिहा मिटाया। सोहँ सो जैकारा एका बोलत, सतिजुग साचा मार्ग लगाया। चार वरन रखाए एका सरन, एका दूजा भउ चुकाया। तीजा नेत्र खोल्हे हरन फरन, घर चौथे मेल मिलाया। चौथे मेला तरनी तरन, तारनहार सृष्ट सबाया। हरि सन्तन मेल मिलाए दाता करनी करन, करता पुरख आप हो आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तन वेखे साचा घर, घर साचा थान सुहाया। घर साचा हरि सुहाए थान, वज्जे धरत वधाईआ। बख्शे चरन धूढ़ सच्चा इशनान, आत्म पड़दा लाहीआ। साचा नाम सच ज्ञान, हरि शब्दी मेल मिलाईआ। अन्तर मेला हरि भगवान, सति सन्तोख समाईआ। पंज तत्त नेड़ ना आए जगत शैतान, प्रभ खण्डा शब्द उठाईआ। देवे दात दानी दान, दाता दानी आप अख्वाईआ। आत्म जोती नूर तेज प्रकाश कोटन भान, रवि ससि बैठे मुख शरमाईआ। गुरमुख साचे चतुर सुजान, अट्ठे पहर कर ध्यान, प्रभ चरन ओट रखाईआ। देवणहार जिया दान, इक्क बिठाए शब्द बिबाण, लोआं पुरीआं पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सन्तन मेला साचे घर, थिर घर साचा इक्क सुहाईआ। थिर घर साचे साचा डेरा, हरि शब्दी मेल मिलाया। जन भगतां मन चाउ घनेरा, दिवस रैण खुशी मनाया। आप चुकाए मेरा तेरा, हउमे हँगता रोग गंवाया। इक्क रखाए संझ सवेरा, रैण अन्धेरी रहिण ना पाया। आपे ढाहे भरमा डेरा, गढ़ हँकारी तोड़ तुड़ाया। हरिजन वखाए काया खेड़ा, साचा मन्दिर अन्दर दए सुहाया। गुरमुख तेरा खुल्ल्हा वेहड़ा, भेव किसे ना पाया। करे कराए हक्क निबेड़ा, जुग जुग बेड़ा बंन्हदा आया। लक्ख चुरासी लग्गे उखेड़ा, कलिजुग अन्तिम दए दुहाया। पंज तत्त तन लग्गा झेड़ा, मन मति बुध रिहा लड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला साचे दर, दर साचा घर साचा हरि साचा वर साचा विरले गुरमुख पाया। हरि कन्त कन्तहूला, हरिजन सुहागण नारी। तन बरसाए साचा फूला, गिरवर

रूप गिरधारी। आप चुकाए अगला पिछला लहिणा देणा मूला, आवे जावे पैज संवारी। सोहँ शब्द झुलाए साचा झूला, चिट्टे अस्व सच सवारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिँघ संसार जगत अधार, मिल्या मेल हरि मीत मुरार, आदि जुगादि जुग जुग जन भगतां कदे ना भूला आप निरँकारी।

❋ १४ कत्तक २०१४ बिक्रमी श्री गुरु गोबिन्द सिँघ जी दे गुरद्वारे मंडी शहर हिमाचल परदेश ❋

निरगुण खेल हरि निरँकार, निरगुण रूप अख्वांयदा। जुग जुग खेले विच संसार, खेलणहार आप हो आंयदा। लोआं पुरीआं पावे सार, गगन पातालां वेख वखांयदा। धरत धवल दए सहार, लक्ख चुरासी विच समांयदा। सतिजुग त्रेता बन्ने धार, द्वापर मेल मिलांयदा। जगत कूड़ा कर पसार, कूड़ा डंक वजांयदा। ईसा मूसा मीत मुरार, सगला संग रखांयदा। संग मुहम्मद चार यार, डौरू डंका वांहयदा। अल्ला राणी कर शृंगार, बस्त्र तन पहनांयदा। वंड वंडाए अपर अपार, नूर अलाही वेख वखांयदा। नानक गोबिन्द भेख अपार, सृष्ट सबाई आप समझांयदा। शब्द खण्डा तेज कटार, तन गात्रा आप छुहांयदा। पंचम मीता कर प्यार, इक्क अतीता आप हो आंयदा। साची रीता विच संसार, आपणी आप चलांयदा। नेत्र वेखे हरि करतार, लेखा लिख्त लिखांयदा। भेव ना पाए कोई जीव गंवार, समरथ हथ्थ किसे ना आंयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, निहकलंका नाउँ रखांयदा। शब्द डंका अपर अपार, राजानां राज आप जगांयदा। राज राजानां शाह सुल्तानां करे ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पांयदा। साधां सन्तां दए हुलार, जोती शब्दी शब्द जणांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी पावे सार, सत्तां दीपां वेख वखांयदा। ब्रह्मे धक्का देवे मार, वेला अन्तिम आंयदा। शिव शंकर रोवे ज़ारो ज़ार, थिर घर ना वेख वखांयदा। करोड़ तेतीसा करे पुकार, सुरपति राज इन्द नाल रलांयदा। लक्ख चुरासी हाहाकार, कोए ना संग वखांयदा। जीवां जन्तां आई हार, जूठ झूठ कुरलांयदा। माया ममता भर भण्डार, जगत झोली पांयदा। गुरमुख साचे गए हार, साचा मार्ग कोई ना लांयदा। खाणी बाणी करे विचार, भेव अभेद भेव ना पांयदा। अञ्जील कुरान रही ललकार, वेला अन्तिम आंयदा। वेद पुराणां आई हार, जगत जगदीश दिस ना आंयदा। हरिजन साचे मीत मुरार, एका राह तकांयदा। प्रगट हो विच संसार, हरि जोती नूर उपांयदा। शब्द सरूपी खेल करतार, जनकी बणत बणांयदा। अन्तिम वेला विच संसार, सम्बल नगरी धाम सुहांयदा। गुर गोबिन्द कर प्यार, हरि गोबिन्द रूप समांयदा। नाम तोड़ा सीस दस्तार, शब्द घोड़ा इक्क रखांयदा। धुर दरगाही आया दौड़ा, वेख वखाए मिट्ठा कौड़ा, पहला पौड़ आप लगांयदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, भेखाधारी भेख वटांयदा। भेखाधारी हरि भगवाना, आपणी कल वरतांयदा। शब्द खण्डा तीर कमाना, रसना चिल्ले आप चढ़ांयदा। नाल रलाए गुर गोबिन्दा वड बलवाना, जोद्धा सूरबीर आप अख्वांयदा। एका मारे तीर निशाना, लोआं पुरीआं आप हिलांयदा। सम्मत चौदां वेखे मार ध्याना, वीह सौ बिक्रमी आप लिखांयदा। चौदां कत्तक विच जहानां, लिख्या लेख पूर करांयदा। प्रगट होए वाली दो जहानां, दीनां नाथा आप बचांयदा। आपे गोपी आपे काहना, राम रमईआ आप हो आंयदा। जन भगतां बख्शे चरन धूढ़ सच्चा इशनाना, साचा मजन आप करांयदा। आत्म अन्तर बन्ने गाना, शब्दी सगन मनांयदा। दीपक जोती जगे महाना, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। दर घर साचे कर परवाना, इक्क ज्ञान जणांयदा। इक्क देवे नाम निधाना, निरगुण मेल मिलांयदा। मेट मिटाए पंज शैताना, झूठा संग तुड़ांयदा। शब्द बिठाए इक्क बिबाणा, भव जल पार करांयदा। आपे होया जाणी जाणा, जानणहार आप अख्वांयदा। मनमुख भुल्ले जीव निधाना, भेव कोई ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द तेरा साचा मेला, इक्क इकेला मेल मिलांयदा। साचा मेला दो जहान, प्रभ हथ्थ वड्डी वड्याईआ। खेले खेल श्री भगवान, जुग जुग भेख वटाईआ। कलिजुग अन्तिम वेख निधान, अकल कला वरताईआ। चारों कुन्ट जीव शैतान, पंचम संग रलाईआ। हरिजन बैठे कर ध्यान, अट्ठे पहर आत्म अन्तर लिव लाईआ। अगम्म अगम्मड़ा होए जाणी जाण, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। लेखे लाए काया चम्मड़ा गुरमुख साचे बाल अञ्जाण, लोकमात दए वड्याईआ। अमृत आत्म देवे पीण खाण, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत चौदां वेख वखाईआ। सम्मत चौदां हरि सुल्तान, आपणी जोत जगाईआ। खेले खेल दो जहान, दिस किसे ना आईआ। गुरमुख साचे चतुर सुजान, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। उठे जोद्धा सूर बली बलवान, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। चारे कुन्टां दहि दिशा वेखे मार ध्यान, आकाश आकाशां फेरा पाईआ। लक्ख चुरासी तोड़े माण अभिमान, माण किसे रहिण ना पाईआ। एका तीर रसना चिल्ले चढ़े कमान, गोबिन्द काया रिहा चढ़ाईआ। सृष्ट सबाई पुण छाण, वेले अन्तिम रिहा कराईआ। जिस जन बख्शे चरन ध्यान, एका ओट रखाईआ। मेल मिलावा करे आण, भुल्ल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि गोबिन्द संग निभाईआ। गोबिन्द गुर वड बलकारा, एका एक अख्वाया। प्रभ चरन कर निमस्कारा, दर बैठा सीस झुकाया। आदि पुरख तेरा इक्क सहारा, ना कोई दूसर ओट रखाया। निहकलंका लए अवतारा, आपणा पल्ला आप फड़ाया। शब्द खण्डा तेज कटारा, एका शब्द रखाया। चिट्टे अस्व कर अस्वारा, जोती जोड़ा मेल मिलाया। साचा

घोड़ा कर त्यारा, लोकमात फेरा पाया। भगत जनां लाहे उधारा, जुग जुग जोड़ जुड़ाया। खेले खेल खेलणहारा, भेव किसे ना पाया। मेले मेल मेलणहारा, मेल विछोड़ा आपणे हथ्थ रखाया। सम्मत चौदां कर भेख न्यारा, चार कुन्ट फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द मेल हरि, घर साचा आप सुहाया। गोबिन्द दर हरि सिक्दार, एका एक अख्वांयदा। अट्ठे पहर पहरेदार, दिवस रैण सेव कमांयदा। जन भगतां बन्ने धार, धीरज धीर धरांयदा। कलिजुग अन्तिम वेख विचार, अट्ठ सट्ठ नीर चीर पार करांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दा मेला हरि, हरि मेला आप करांयदा। गोबिन्द मेल सच सुल्तान, घर सच वज्जी वधाईआ। दाता दानी हरि मेहरवान, आत्म इच्छया पूर कराईआ। पूत सपूता वड बलवान, शस्त्र बस्त्र इक्क सजाईआ। नाम खण्डा तेज किरपान, तन गात्रे आप लटकाईआ। इक्क वखाए आपणी आण, दूसर ओट ना कोए जणाईआ। दर द्वारे कर परवान, दे मति रिहा समझाईआ। चार वरन इक्क ज्ञान, एका जगत पढ़ाईआ। ऊँच नीच सर्ब मिट जाण, राउ रंक एका धाम बहाईआ। तख्त ताज ना दिसे निशान, राज राजान ना कोई अख्वाईआ। एका एक श्री भगवान, दो जहानां होए सहाईआ। वेखे खेल विच मैदान, सम्मत चौदां लेख लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द मेल दर, लेखा आपणा रिहा चुकाईआ। हरि शब्द मलाह, हरि गोबिन्द इक्क रखाया। हरि दाता बेपरवाह, जुग जुग बण के आया। जुग जुग दए सलाह, जुग जुग राह चलाया। गुरमुख वेखे थाउँ थाँ, चारों कुन्ट फेरा पाया। सतिगुर पूरा पकड़े बांह, वेले अन्तिम होए सहाया। आप जपाए आपणा नाँ, नाम नरायणा इक्क वखाया। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, एका साची जोत जगाया। चरन द्वारे बख्शे थाँ, दो जहानां पार कराया। आपे पिता आपे माँ, गुरमुख बाल अञ्जाणे गोद उठाया। जुग जुग खेले खेल निरँजण, आदि अन्त अवतारा। भगत जनां हरि दर्द दु:ख भय भंजन, मेल मिलाए विच संसारा। नेत्र नैण पाए धूढ़ी अंजन, दरस दिखाए अगम्म अपारा। काल नगारे चारों कुन्ट सिर ते वज्जण, ना दिसे कोई सहारा। राज राजान शाह सुल्तान तख्त ताज छड्ड छड्ड भज्जण, दहि दिशा हाहाकारा। कोई ना रक्खे किसे लजण, साध सन्त ना सुणे कोई पुकारा। भगत जनां हरि साचा सज्जण, लोकमात लए अवतारा। जो घड़े सो अन्तिम भज्जण, भन्नणहार आप करतारा। जन भगतन मेला एका पतन, एका दर दुआरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द दए सहारा। गोबिन्द गुर साचा पूत, हरि साची जोत जगाईआ। वेख वखाए चारे कूट, नेत्र नैण इक्क उठाईआ। सृष्ट सबाई रिहा लूट, दिस किसे ना आईआ। सच पघूंड़ा रिहा झूट, जोती माता रही झुलाईआ। राज राजाना करे खाली ठूठ, एका डंका रिहा वजाईआ।

भगत सुहेला गया तूठ, जन भगतां दया कमाईआ। सम्बल नगर कराए एका मूठ, साचा धाम सुहाईआ। मेट मिटाए भेख पखण्डा जगत जूठ झूठ, कलिजुग अन्त रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द लेखा वेख वखाईआ। गोबिन्द गुर हरि हरि वेख, आपणी दया कमांयदा। आपे लिखणहारा रेख, आपे अन्त मिटांयदा। आपे लाए मस्तक मेख, आपे वेख वखांयदा। आप उपाए धारी केस, मूंड मुंडाए आप जणांयदा। दाता जोद्धा आप नर नरेश, निरगुण रूप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत चौदां सति सतिवाद हरि साची खुशी मनांयदा। भगत सुहेले साचे लाध, आप आपणा मेल मिलाईआ। शब्द जणाए बोध अगाध, भेव अभेदा भेव खुल्हाईआ। नाम देवे साची दाद, धुर दरगाही लै के आईआ। आत्म अन्तर अनहद वजाए साचा नाद, धुन आत्मक करे जणाईआ। मेल मिलाए मोहण माधव माध, विछड़ कदे ना जाईआ। गुर गोबिन्दे तेरी सुण फरयाद, चौदां कत्तक रुत्त सुहाईआ। बीस बीसे करया याद, वेले अन्तिम होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी आसण सेज दए सुहाईआ। आसण सेजा हरि करतार, एका एक सुहाईआ। वेख वखाए विच संसार, कोई भेव ना जाणे राईआ। गुर गोबिन्दा सेवादार, सेवक सेवा रिहा कमाईआ। अट्ठे पहर वाजां रिहा मार, प्रभ चरन ध्यान लगाईआ। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, लोकमात दए वड्याईआ। निहकलंका लए अवतार, आप आपणा विच समाईआ। राउ रंकां करे ख़बरदार, राज राजानां रिहा जगाईआ। लेखा लिखे दिल्ली दरबार, शाह भबीखन आप उठाईआ। राष्ट्रपति रहिणा ख़बरदार, कलिजुग वेला अन्तिम आईआ। प्रगट होया नर निरँकार, गोबिन्द भेख वटाईआ। शब्द खण्डा तेज़ कटार, हत्थ आपणे रिहा वखाईआ । सम्मत चौदां कर विचार, थित वार इक्क जणाईआ। पन्दरां अन्दरों कढ्ढे बाहर, राज राजान कोई छुप ना पाईआ। डंका वज्जे विच संसार, जै जै जैकार इक्क कराईआ। पंडत पांधे कशमीर हो लाचार, आइन हरि सरनाईआ। स्यासत विरासत जाए हार, ना कोई बन्ने लाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, पंचम जेठ दए सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लिखाए लेख मंडी सकेत, लहिणा देणा महीना चेत, चेतन्न चित रिहा कराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हत्थ रक्खे वड्याईआ।

जगत मंडी हरि चरन छुहा, गोबिन्द मूल चुकाया। पूर्ब लहिणा झोली पा, नेत्र नैणा दरस दिखाया। दिस ना आए बेपरवाह, केसाधारी सर्ब भुलाया। जोती नूर आप जगा, नर निरँकारा फेरा पाया। पूत सपूता गले लगा, अन्दर वड़ आप

समझाया। आप आपणे अंग लगा, आपणा लड़ फड़ाया। शब्द मृदंग हथ्थ फड़ा, डौरू डंका रिहा वजाया। उच्चे पर्बत आप चढ़ा, दो जहानां रिहा सुणाया। किला कोट कोई रहिणा ना, ना दिसे कोई सहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कत्तक चौदां दिवस सुहाया। गुर गोबिन्दे रक्खी आस, प्रभ चरन ओट रखाईआ। पारब्रह्म बुझाई आत्म प्यास, आत्म दरस दिखाईआ। चरन कँवल द्वारे पाए रास, आपणी खेल रचाईआ। रसना गाए स्वास स्वास, जिह्वा दिस ना आईआ। नेत्र वेखे पृथ्वी आकाश, गगन पातालां फेरा पाईआ। दर द्वारे होया दासी दास, गल पल्लू एका पाईआ। सृष्ट सबाई लेखा चुक्के दस दस मास, दस दस मास बाकी रिहा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्दे अंग लगाईआ। गुर गोबिन्दा अंग लगा, आपणी गोद उठाया। दुआरा बंका इक्क सुहा, आपणा चरन छुहाया। साध सन्त संग रला, सगला संग निभाया। बवंजा देशां लए जगा, आप आपणा खेल खिलाया। राज बवंजा इक्क करा, शाह नवाब आप हो आया। लेख बवंजा इक्क करा, गुरू ग्रन्थ एका मति समझाया। बवंजा अक्खर आप जणा, बावन भेख वटाया। बावन खेल आप रचा, भेव किसे ना आया। कलिजुग लहिणा देणा दए चुका, आत्म झोली पाईआ। साची सिख्या इक्क सिखा, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाया। गुर गोबिन्दा भिच्छया देवे पा, अग्गे पल्लू एका डाहया। जगत इच्छया आप करा, हरिजन साचे होए सहा, सम्मत अठारां मुड़ के फेरी पाया। हाढ़ सतारां दिवस सुहा, सृष्ट सबाई दए रुढ़ाया। ना कोई सके धीर धरा, साचा गढ़ दए सुहाया। आप आपणी दया कमा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मंडी तेरी पाए वंडी, कलिजुग वेखे जगत पखण्डी, नार रंडी कोई रहिण ना पाया। नार रंडी मनमुख जीव, हरि हरि दिस ना आया। ना कोई दिसे जगत पखण्डा लेखा चुक्के साढे तिन्न हथ्थ सीआ, धरत मात गोद सुहाया। किसे घर ना दिसे बत्ती दीव, दीवा उच्चे मन्दिर कोई ना करे रुशनाईआ। ना कोई चार दिवारी दिसे मकान, रक्खे ना कोई पलँघ, अन्दर मन्दिर बहि बहि डाहया। ना कोई खाण पीण, ना आलस निन्दरा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दे तेरा घर, तेरी सेजा दए विछाया। गुर गोबिन्दे तेरी सेज, प्रभ अन्तिम मात विछावणी। शब्द सुनेहड़ा आपणा भेज, जोती जोत जगावणी। एका एक कराए साचा तेज, पूर कराए भावनी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर मन्दिर वेख सच घर, घर साचे बणत बणावणी। तेरी सेज हरि विछा, उप्पर चरन टिकावना। सम्मत अठारां आप सुहा, हाढ़ सतारां खुशी मनावना। सृष्ट सबाई मिटे निशां, गुरमुख माण दवावणा। गुरमुख साचे मस्तक टिक्का तिलक लगा, दे मति आप समझावना। साचा सिक्का मात चला, वीह सौ वीह पन्दरां कत्तक रुत्त सुहावणा। जोती जोत सरूप

९८५
०६

हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सिँघासण पुरख अबिनाशन सतिजुग तेरा इक्क बणावणा।

सच सिँघासण आप विछाए, नर नरायण निरँकारा। गोबिन्द गुर चरन छुहाए, खेले खेल संसारा। पारब्रह्म प्रभ मेल मिलाए, भेव ना पाए जीव गंवारा। जोती शब्दी खेल खिलाए, पंजां तत्तां वसे बाहरा। आदि अन्त ना मरे ना जाए, इक्क इकल्ला एकँकारा। हर घट अन्दर डेरा लाए, आपे वसे गुप्त जाहिरा। गुर गोबिन्दा मंग मंगाए, दोए जोड़ चरन सरन करे निमस्कारा। कलिजुग वेला अन्तिम आए, प्रभ देवे मात सहारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर गोबिन्द सुहाए बंक दुआरा । बंक दुआरा लाए जड़, लोकमात ना कोए उखड़ाईआ। सच सिँघासण उप्पर आप जाए चढ़, ना कोई मंगे लेफ तलाईआ। जीव हँकारी लए फड़, जल धारा दए रुढ़ाईआ। सच किनारे आपे खड़, चप्पू इक्क वखाईआ। सन्त सुहेले जुग जुग फड़, जुग जुग आपे जुगत बणाईआ। मनमुख रुढ़ाए वहिंदे हड़, लहिंदी धार वहाईआ। लक्ख चुरासी आप सुहाए गोर मड़, मन्दिर गुरद्वारे फेरा कोई ना पाईआ। त्रैगुण माया जाए सड़, पंज तत्त मिटे लड़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी एका अक्खर जाए पढ़, प्रभ साची करे पढ़ाईआ। सीस ताज साचा धर, सत्तां दीपां वेख वखाईआ। सतिजुग साचा मात धर, धरनी धरत धवल दए सुहाईआ। राज जोग तख्त ताज सुल्तान इक्क कर, चार वरन सच्ची सरनाईआ। आत्म शब्द ब्रह्म ज्ञान, नर नरायण नेत्र दर्शन पाईआ। अमृत भण्डारा साचा भर, सर सरोवर इक्क वखाईआ। गुर गोबिन्दे मंग्गया वर, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। पुरख अबिनाशी किरपा कर, देवे मात वड्याईआ। मेल मिलावा साचे घर, आपणा आप वखाईआ। सच सरनाई जाए पढ़, ढहि ढहि खुशी मनाईआ। अगम्म अगम्मड़ा अग्गे खड़, देवे दरस हर घट थाँईंआ। सम्मत चौदां चौदां कत्तक वेख्या घर, वेखणहार आप अख्वाईआ। ना जन्मे ना जाए मर, गोबिन्द तेरा संग निभाईआ। राज राजान शाह सुल्तान जायण हर, हरि गोबिन्द करे चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, देवे माण वड्याईआ।

❊ १४ कत्तक २०१४ बिक्रमी महाराजा जुगिन्दर सैन नूं शब्द भेज्जया मंडी शहर हिमाचल प्रदेश ❊

निहकलंक कलि जोत जगाई, चारों कुन्ट करे रुशनाईआ। राज राजान शाह सुल्तान रिहा जगाई, शब्द डंका इक्क

वजाईआ। आदिन अन्ता इक्क रघुराई, द्वार बंका इक्क सुहाई, सकेत मंडी चरन छुहाईआ। चौदां कत्तक दिवस सुहाई, वीह सौ चौदां बिक्रमी नाल रलाई, देवे वड वड्डी वड्याईआ। वीह सौ सौलां हाढ़ी पए दुहाई, सतारां प्रविष्टे लेख लिखाईआ। वीह सद सतारां कोई दिसे नाहीं, राणीआं राजयां संग छुडाईआ। वीह सौ अठारां कोई ना पार कराए फड़ फड़ बाहीं, जल धारा दए रुढ़ाईआ। गुरमुख साचे प्रभ चरन ध्यान इक्क रखाई, फड़ बेड़ा बन्ने लाईआ। हाढ़ सतारां सम्मत अठारां वीह सौ वेख वखाई, प्रभ आए फेरा पाईआ। तिन्न हज़ार संग संग वेख वखाई, कलिजुग अन्तिम वार। लिख्या लेख भुल्लणा नाही, भुल्ल जाए संसार। बिन हरि चरन द्वारे मुल्ल पैणा नाही, कौडी कौडी जगत हट्ट पसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, सम्मत चौदां करे ख़बरदार। छड्डया राज ताज लथ्था सीस, प्रभ हथ्थ वड्याईआ। एका साजन हरि शाहो शबीस, आदि अन्त होए सहाईआ। मुस्लिम सुंनी लेखा चुक्के विच उनीस, अल्ला राणी मुख छुपाईआ। बीस बीसा हरि जगदीस, छत्र सीस इक्क झुलाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी पढ़ाए इक्क हदीस, वीह सौ इकी वेख वखाईआ। सृष्ट सबाई जाए पीस, ना कोई सके बचाईआ। ना कोई गाए राग छतीस, वेद (पुराण) ना कोई समझाईआ। ईसा मूसा खाली खीस, अञ्जील कुरान बैठे मुख छुपाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता चार वरन पढ़ाई हरि जगदीस, आपणी आप कराईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, चारों कुन्ट जै जै जैकार, एका नाअरा लाईआ।

❋ १५ कत्तक २०१४ बिक्रमी सकेत गुरुद्वारे लिख्त करवाई ❋

गोबिन्द पल्ला पा, एका राह वखानया। पुरख अबिनाशी हो सहा, मंगे वर हरि परधानया। दिवस रैण वेखां राह, एका ओट रखानया। इकवंजा बवंजा एका थाँ, मिले मेल गुण निधानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे वर श्री भगवानया। मिल्या वर धुर फ़रमाणा, अन्तिम वज्जे वधाईआ। प्रगट होए हरि भगवाना, लोकमात जोत जगाईआ। सृष्ट सबाई खेले खेल महाना, खेले खेल हरि रघुराईआ। गुरमुख साचे चतुर सुजाना, लोकमात उठाईआ। सम्मत चौदां मार ध्याना, पहली चेत्र थित वखाईआ। पन्दरां कत्तक गुण निधाना, गोबिन्द संग निभाईआ। शब्द खण्डा तीर कमाना, आपणे कंध उठाईआ। दिस ना आए नौजवाना, चढ़दी कला सवाईआ। गण गधंरब उठाए पवण मसाणा, सुंञ मसाणा वेख वखाईआ। तोड़े माण जगत अभिमाना, गढ़ हँकार रहिण ना पाईआ। एका चिल्ला तीर कमाना, नाम

निधाना रिहा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द मेला मेल मिलाईआ। गोबिन्द गुर नैण उठा, चारों कुन्ट लए अंगड़ाईआ। पुरख अबिनाशी वेखे थाउँ थाँ, हर घट रिहा समाईआ। कलिजुग तेरा अन्तिम करे सच न्यां, वड दाता बेपरवाहीआ। इक्क इकल्ला अगम्म अथाह, अगम्म अगम्मड़ा भेख वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा वेख वखाईआ। गुर गोबिन्दे कर अरदास, इक्क जैकारा लाया। पुरख अबिनाशी वसया पास, शब्द हुलारा इक्क रखाया। सोहँ सो स्वास स्वास, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाया। होए सहाई पृथ्वी आकाश, गगन पातालां वेख वखाया। सतिजुग साची पावे रास, वेला अन्तिम आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द काया दित्ता वर, सज्जण मीता आप हो आया। गुर गोबिन्दा वर घर पा, नेत्र नैण मुँधारया। अन्तर मन्त्र एका गा, दिवस रैण जै जै जैकारया। आप आपणा भेंट चढ़ा, आपा उत्तों वारया। एका पल्ला हरि फड़ा, देवे जगत सहारया। वेले अन्तिम पकड़े बांह, प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द काया साचा वर, आत्म अन्तिम एका सुणा रिहा। गोबिन्द गुर शब्द सुणया राग, साची वज्जी वधाईआ। पुरी अनन्द जाणा त्याग, कोए रहिण ना पाईआ। काया सकेत जगत सकेत लग्गे भाग, प्रभ नेतन नेत वेख वखाईआ। शब्द जणाई जिन्न प्रेत, गण गधंरब रिहा हिलाईआ। दो जहानां खेवट खेट, भगतन बेड़ा आप चलाईआ। गुरमुख साचे कलिजुग अन्तिम लए लपेट, शब्द दुशाला इक्क उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, सम्मत अठारां तेरी धार, आपणे हथ्थ रखाईआ। सम्मत अठारां जाए चढ़, चढ़दी धार वहाईआ। पुरख अबिनाशी गया खड़, आपणी दया कमाईआ। आप लगाए जन भगतां जड़, चरन साचा इक्क टिकाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, वेखण विच किसे ना आईआ। गुरमुख साजण मीत मुरार साचे फड़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सकेत गुर गोबिन्दे करया हेत, प्रभ साचा लेखे लाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ।

❊ १६ कत्तक २०१४ बिक्रमी गुरुदुआरा रवाल सर लिख्त होई ❊

खड़ग भूप सर्ब ठौर, करे भेख अकालं। सति सरूप गहर गवर, दीनां नाथ दयालं। दहि दिशा चारे कूट, वेख वखाणे ओअँ। किरपा निध कृपालं। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल दो जहानं। अकालं अनूपा, सरबग सूर दाता। महिंमा अनूपा, जगत पित माता। करे प्रकाश अन्ध कूपा, सर्ब सृष्ट ज्ञाता। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी जोत धर, खेले खेल पुरख बिधाता। दयाल करता दुःख रोग शब्दारनं, सहिज सुक्ख समाया। सृष्ट हरता गुरमुख अधारं, जोती जोत जगाया। दरवेश दाता काज संवारनं, लोकमात आया। गोबिन्द दाता मृगिन्द चिन्द निवारनं, पारब्रह्म अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जामा नामा एका पाया। जामा जामा नर नरायण, नर हरि निरगुण जोत जगाईआ। आपे देवणहारा वर, दर द्वार खुशी मनाईआ। गोबिन्द किरपा आपे कर, निहकर्म रूप वखाईआ। लोकमाती जन्म धर, पूत सपूता उपाईआ। चरन टेक इक्क कर, अमृत आत्म मुख चुआईआ। काया सदा बिबेक हरि, गोबिन्द गुर वखाईआ। पुरख अबिनाशी रिहा पढ़, एका अक्खर जगत विद्या सच पढ़ाईआ। किला कोट ना दिसे गढ़, तीर तलवार दिस ना आईआ। नैणां हवन ना रिहा कर, जोत ज्वाला ललाट दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द वेखे गोबिन्द साईआ। पुरी अनन्द जगत मकाना, गोबिन्द हरि समझाया। अन्तिम छड्डणा मात टिकाना, थिर रहिण ना पाया। जोद्धा सूर बली बलवाना, बल वेखे सृष्ट सबाया। सगला संग जन नौजवाना, सगला साथ ना कोई निभाया। ढहि ढहि ढेरी विच मैदाना, इक्क निशाना रिहा कराया। एका एक श्री भगवाना, खेले खेल खेलणहार आप अख्वाया। मर्द का चेला बण मरदाना, एका मृदंगा नाम वजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द गुर दे मति आप समझाया। गोबिन्द गुर बाल निधान, हरि शब्द करे जणाईआ। एका चिल्ला इक्क कमान, प्रभ एका तीर चलाईआ। सोहँ सो सच ज्ञान, समरथ समरथ समरथ समाईआ। सतिजुग साचे हो प्रधान, सति सतिवन्ता जोग कमाईआ। वरन बरन सर्ब मिट जाण, आपणी नीती तेरी जड़ टिकाईआ। मेल मिलाए हरि हरि आण, अन्तिम खोज खुजाईआ। दूर दुराडा वेखे मार ध्यान, घर साचे आसण लाईआ। धर्म झुलाए इक्क निशान, सत्त रंगां वेख वखाईआ। निरगुण पाए एका आण, सरगुण सीस झुकाईआ। खेले खेल श्री भगवान, अचरज रीत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द वेखे हरि वखाईआ। गोबिन्द गुर कर ध्यान, चरनी सीस निवाया। प्रभ अबिनाशी तेरा धुर फ़रमाण, आप आपणा झोली पाया। अट्ठे पहर होणा निगहबान, एका तेरी ओट रखाया। पुरी अनन्द जगत मैदान, शाह अफ़्गान बणाया। किला कोट सर्ब तज जाण, अन्न दाता हथ्थ ना आया। एका सुरत इक्क ज्ञान, एका नाम दृढ़ाया। वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू सारे गाण, वाह वाह गुरू किसे ना पाया। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द वेखण नैण निशान, गोबिन्द हिरदे दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द देवे साचा वर, सच ज्ञान दृढ़ाया। गुर गोबिन्द पुरख अकाल, एका जोत समाईआ। देवणहारा दीन दयाल, दया रूप अख्वाईआ। हरख सोग ते रहे निराल, चिन्ता रोग

६६०
०६

नेड़ ना आईआ। पिता पूत बण साचा बाल, सच समग्री मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक्क सुणाईआ। सो धुर संदेश हरि दस्मेस, एका एक अल्लाया। गुरमुख उधारे धारी केस, मूंड मुंडाया वेख वखाया। अन्तिम मेला माझे देस, तेरा मेरा रूप समाया। आदि पुरख होए नर नरेश, गोबिन्द चेला साचा साची सेवा लाया। आप वटाए आपणा वेस, करता पुरख खेल रचाया। सेवक सिख उधारे जो लाए तेरी सेव, बेड़ा बन्ने लाया। ना कोई जाप जपाए रसना जिह्व, शस्त्र बस्त्र इक्क सजाया। पुरख निरँजण अलक्ख अभेव, वड देवी देव आप हो आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द दित्ता वर, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। गुर गोबिन्द झोली पा, एका ओट रखाईआ। गुरमुख साचे मात उपा, साचे शब्द जणाईआ। अकाल पुरख होए सहा, साची चोट नगारे लाईआ। पुरी अनन्द वेख वखा, गोबिन्द गढ़ सुहाईआ। पारब्रह्म प्रभ रिहा जणा, अट्ठे पहर जगाईआ। कलिजुग वेला अन्तिम रिहा आ, प्रभ साचा करे लड़ाईआ। लक्ख चुरासी दए खपा, आप आपणी बणत बणाईआ। गोबिन्द तेरी सेवा ला, आपणा नाउँ धराईआ। अन्तिम जोती लए मिला, गोदावरी कन्ढा इक्क सुहाईआ। नानक लहिणा देणा मूल चुका, नदेड़ नबेड़ा हक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, इक्क संदेश रिहा सुणाईआ। गुर गोबिन्द सुण संदेश, नेत्र नीर वहांयदा। जामा जाए दस दस्मेश, हरि जोती नूर समांयदा। अन्तिम आउणा माझे देस, सम्बल नगरी नाउँ रखांयदा। बाल जवानी अल्लड़ वरेस, गुर निधानी दया कमांयदा। भेख अवल्लड़ा करे वेस, दिस किसे ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रूप वटांयदा। पुरख अबिनाशी शब्द जणाई, गोबिन्द वेख वखाया। गुर गोबिन्दा करे लड़ाई, अस्त्र शस्त्र बस्त्र तन पहनाया। फतिह डंक ना कोई वजाई, हरि भाणा आपणे हथ्थ रखाया। अन्त विछोड़ा साचे माही, घोड़ा जोड़ा दिस ना आया। पुरख अबिनाशी पकड़े बांही, जोती जोत समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका लशकर शाही फौज साचे किले रिहा वखाया। साचा लशकर हरि गुण निधान, एका एक वखांयदा। गुर गोबिन्दे वेखे मार ध्यान, पुरख अबिनाशी आपणे हथ्थ रखांयदा। करोड़ छिआनवे इक्क म्यान, एका गात्रे पांयदा। एका देवे नाम किरपान, तिक्खी धार रखांयदा। लक्ख चुरासी पीण खाण, साचा ताम बणांयदा। जुग जुग मेटण जगत निशान, बाहू बल वखांयदा। एका फड़ तीर निशान, पुरख अबिनाशी आपणा आप उठांयदा। थिर घर वासी गुण निधान, घनकपुर वासी आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरा अन्तिम वर, आपे वेख वखांयदा। गुर गोबिन्दा नैण उग्घाड़ी, चारों कुन्ट वखानया। कवण कूट हरि खेल खिलाड़ी, कलिजुग अन्तिम वेखे मार ध्यानया। मुच्छ

केस ना दिसे दाढ़ी, हरि दाता गुण निधानया। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, उच्चे टिल्ले वेख वखानया। त्रैगुण माया सृष्ट सबाई रही साड़ी, ना कोई होए दर परवानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द मेला हरि भगवानया। गोबिन्द गुर उठ उठ वेख, नेत्र नीर वहाईआ। पारब्रह्म तेरा कोई ना दिसे रेख, रूप रंग दिस ना आईआ। अकाल मूर्त तेरा अवल्लड़ा वेस, नाद तुरत रिहा सुणाईआ। गोबिन्द गाया रसना जिह्वा दस दस्मेस, गुण रसना आख वखाईआ। निरभउ निरवैर मेरी सदा आदेस, अजूनी रहित वेख वखाईआ। सैभं ओअँ सोहँ, सति पुरख आप अख्वाईआ। जाप साहिब तेरा भेव खोलिंग इक्क सौ नड़िनवे छंत बैंत कवीओ वाच बेनन्ती अकाल प्रगट दीन दयालं सर्ब प्रितपालं गुरमुख उधारनं ओट चोट नर नरायणं एका एक रखाईआ। हरि शब्द शब्द ज्ञानं, गुर मन्त्रं सर्ब हरनं दुःख रोग बवरजतिह गुर गोबिन्द वारनिंग हरि दरस नैणं पाया। नरैणं शब्द खण्डा तेज कटारं, सदा सदा सदा गरजतिह। ब्रह्मण्ड खोजं तेज प्रचण्ड लोचं जेरज अंडं करे खण्ड खण्ड करता पुरखतिह। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द दित्ता वर, एका नाम अक्खर वक्खर जग पढ़हते। गुर गोबिन्द सुन अगम्म, चरन कँवल चित लाईआ। पुरख अबिनाशी तेरा कम्म, तेरी ओट रखाईआ। गगन रहाए बिन बिन थम्म, एका थम्म नाम उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द दित्ता वर, एका धाम वखाईआ। एका धाम हरि वखा, आपणी कल वरताईआ। आदि पुरख लेखा लेख रिहा लिखा, लिखणहार रिहा समझाईआ। धारी केसा लए बचा, मूंड मुंडाए जो सरनाईआ। कलिजुग अन्तिम जोत जगा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। सम्बल नगरी धाम सुहा, पूत सपूता लए उपाईआ। एका दूजा भउ मिटा, तेरे अन्दर जाए समाईआ। पंज तत्त काया तेरा गहणा पा, आप आपणा लए छुपाईआ। बस्त्र शस्त्र इक्क सजा, एका खण्डा हथ्थ उठाईआ। तन म्यान इक्क जणा, सच गात्रे लए लटकाईआ। शब्द घोड़ा इक्क दुड़ा, लोआं पुरीआं वेख वखाईआ। सोलां कलीआं आसण ला, नौ सत्त करे रुशनाईआ। पहला पौड़ा आप उठा, लहिंदी दिशा वेख वखाईआ। जोती जोड़ा मेल मिला, आपणी रचन रचाईआ । सस्से उप्पर होड़ा ला, साचा किला दए बणाईआ। निरगुण सरगुण खेल खिला, लक्ख चुरासी खेल खिलाईआ। हँ हँगता दए मिटा, गुरमुख साचे संग रलाईआ। साची संगता लए बणा, एका इक्की पाईआ। चौदां लोकां दए सुणा, एका शब्द जणाईआ। चौदां तबकां दए मिटा, ना कोई सके किसे बचाईआ। सम्मत चौदां वेख वखा, गुरमुखां लए तराईआ। घर घर जा जा फेरा पा, आप आपणा फरज कर्ज सिर तों लाहीआ। फिर आपणी जोत जगा, उच्चे टिल्ले पर्बत वेख वखाईआ। गोबिन्दे तेरा वेखणा पहला थाँ, प्रभ साचा करे जणाईआ। गुर गोबिन्दे चढ़या चाअ, सतारां सौ बिक्रमी खुशी मनाईआ।

६६१
०६

चरन छुहाया आपणा आ, लहिंदी दिशा मुख रखाईआ। एका चिला ल्या उठा, इक्क कमान खिचाईआ। भय निर्भय रूप वखा, निरगुण विच समाईआ। एका जै नाम बुला, जैकारा साचा लाईआ। वाहिगुरू अक्खर अक्खर पढ़ा, वक्खरी बणत बणाईआ। सोहँ सो मणीआ मंत गया समा, सो पुरख निरँजण चरन कँवल इक्क दरसाईआ। एका चिल्ला ल्या खिचा, चारों कुन्ट पर्बत देण दुहाईआ। रवाल निमाणा चरनी डिग्गे आ, घर साचा वेख वखाईआ। गुरु गोबिन्दे पकड़ी बांह, दे मति आप उठाईआ। मेल मिलावा साचे थाँ, जोधिआं सूरबीरां आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे वर गया समझाईआ। रवाल दयाल मेल कर, सतिजुग पार कराया। बल बावन भेख धर, अंगी अंग लगाया। रिषी केश वेस कर, गवर्धन रूप अल्ाया। अन्तिम मेला दस दस्मेस कर, दर दरवेशा इक्क सुहाया। करे न्याउँ नर नरेश हरि, वेला अन्तिम दए सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल सृष्ट सबाया। दोहां मेला सच दर, गुर गोबिन्द दित्ती वड्याईआ। चरन द्वारे डिग्गा पर, परम पुरख उठाईआ। एका रंग नर हरि, निरवैर सदा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द एका शब्द सितार वखाईआ। शब्द सितार आप हिला, प्रभ आपणी तार वजांयदा। एका राग रिहा सुणा, एका राग अल्ांयदा। सोहँ सो सो पुरख निरँजण आप अख्वा, सति सरूप समांयदा। आप आपणा दरस दिखा, इक्क नेत्र नैण दरसांयदा। एका शब्द शब्दी रिहा जगा, महिंमा अगणत ना कोई गिणांयदा। गुर गोबिन्दा बैठ साचे थाँ, चरन कँवल ध्यान लगांयदा। जाप साहिब तेरी लिख्त लिखा, सर रवाल धाम सुहांयदा। रेख भेख प्रभ दा कोई जाणे ना, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। कोटन कोट नाम रिहा उपा, लेखा लिख्त विच ना कोई लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्दे मिल्या हरि, हरि साचा धाम सुहांयदा। गुर गोबिन्द गा गा गोबिन्द, सगली चिन्द मिटाईआ। आपे बणया साची बिन्द, आप आपणा लेखे लाईआ। दाता दानी हरि मृगिन्द, मृगेश नरेश अख्वाईआ। धार अणमुली अमृत सिन्ध, सागर काया इक्क वहाईआ। सदा सदा जुग जुग बख्शिंद, बख्शणहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सरूप रिहा दरसाईआ। सति सरूप हरि करतार, गुर गोबिन्दे आपणा आप वखाया। जोती नूर कर आकार, नूरो नूर दरसाया। चन्द सूरज ना कोई पसार, धरत धवल ना वेख वखाया। इक्क इकल्ला एकँकार, अकल कला समाया। अकाल पुरख ना पावे सार, पारब्रह्म भेव ना राया। गुर गोबिन्द कर विचार, दोए जोड़ सीस झुकाया। पुरख अबिनाशी तेरा दर ठांडा घर मिल्या हरि, सांतक सति वरताया। पारब्रह्म प्रभ किरपा कर, एका शब्द अल्ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अकाल मूर्त

साची सूरत एका वेख वखाया। अकाल मूर्त अकल कला, सर्ब घट रिहा समाईआ। सच सूरत सर्ब जल थला, जल थल डेरा लाईआ। दीपक जोती इक्क बला, ब्रह्मण्ड खण्ड करे रुशनाईआ। नर निरँकार निरवैर इक्क इकल्ला, राम रचना रिहा रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्दे दित्ता दर, हरि शब्द सच्ची सरनाईआ। गुर गोबिन्दा वर घर पा, वेखे सच टिकानया। अकाल उस्तत लेख दित्ता लिखा, पाया पुरख सुल्तानया। दोए जोड़ सीस झुका, मंगे वर दो जहानया। पुरख अबिनाशी ल्या उठा, लाए गल गुण निधानया। कलिजुग अन्तिम लए मिला, लोकमात खेल महानया। सम्बल नगरी धाम सुहा, जोत जगाए सच निशानया। निहकलंका आप अख्वा, एका डंका वजाए ताल आपणे हथ्थ रखानया। पुरी घनका नाउँ रखा, सुहाए दर दरबानया। गुरमुख साचे लए उपा, तेरा तेरे लड़ फड़ानया। सम्मत चौदां लए जगा, सोया कोई रहिण ना पानया। एका इक्की देवे पा, सिक्खी तिक्खी धार रखानया। कत्तक कर्मा वेख वखा, आए दर शाह सुल्तानया। सृष्ट सबाई शब्द सरूपी कटक चढ़ा, रसना चिल्ला खिच्चे तीर कमानया। रवाल दयाल तेरी सेवा देवे ला, दिस ना आए विच जहानया। इक्की सौ कोस खेल खिला, खेल खिलंता आप अख्वानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, मेले मेल मेलणहार सर्ब घट जाणया। सोलां कत्तक सोलां कल धार, वीह सौ चौदां बिक्रमी रंग रंगाया। गुर गोबिन्द गुर गोबिन्दा कर प्यार, पुरख अबिनाशी कन्त भतार, साची सेजा वेख वखाया। मिल्या मेल हरि मीत मुरार, प्रगट होए विच संसार, निहकलंका नाउँ रखाया। पुरी अनन्द रहिणा ख़बरदार, प्रगट होया साचा चन्द सुहागी छन्द इक्क सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्दे मेला हरि, हरि साजण आप अख्वाया। पुरी अनन्द प्रभ आप जगाए, कलिजुग अन्तिम वारया। ग्रन्थी पन्थी सोया कोई रहिण ना पाए, शब्द डंका हरि निरंकारया। सम्बल नगर हरि भाग लगाए, माझा देश इक्क विचारया। नीले वाला फेरी पाए, कल्गी तोड़ा सीस जगदीश करे चमत्कारया। कलिजुग नैणां दिस ना आए, मनमुख मूर्ख मूढ़ आत्म अन्ध होए अंध्यारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जोद्धा सूरबीर वड बलकारया। पुरी अनन्द उठणा जाग, गोबिन्द जोत जगाईआ। माझे देस लग्गा भाग, नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां लक्ख चुरासी करे कुड़माईआ। गुर दर मन्दिर अन्दर बुझणा अन्त चिराग, दीवा बत्ती ना कोई जगाईआ। रसना गाए ना कोई राग, ताल तलवाड़ा ना कोई वजाईआ। चारों कुन्ट लग्गणी आग, ना सके कोई बुझाईआ। एका एक हरि हरि गुर गोबिन्दा पकड़े वाग, चरन सरन सरन चरन सच्ची सरनाईआ। कलिजुग जूठ झूठ मस्तक लाया दाग, चार वरन जगत लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सोए रिहा जगाईआ। पुरी अनन्द उठ उठ वेख, चारों कुन्ट रैण अन्धेरी छाईआ। कवण लिखणहारा तेरे लेख, कवण मेट मिटाईआ। कवण दाता जोद्धा सूरा दस दस्मेस, कवण धाम बैठा अलख जगाईआ। कलिजुग जोत सरूपी करया वेस, सम्मत चौदां बीस सद लेखा रिहा आप लिखाईआ। किसे ना चले कोई मात पेश, सृष्ट सबाई दर दर करे हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा लिख्त लेख रिहा आप लिखाईआ। सोलां कत्तक अमृत वेला, अमर अमर कहाया। आपे गुरू आपे चेला, कलिजुग अन्तिम बण के आया। दोहां कराए रवालसर मेला, गुर संगत संग रलाया। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला, ग्रन्थी पन्थी किसे दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माझे देस कर जोत प्रवेश, गुर गोबिन्द मिटाए सगली चिन्द दाता गुणी गहिंद सम्बल नगरी बैठा आसण लाया।

❋ १६ कत्तक २०१४ बिक्रमी रवालसर गुरद्वारे मंडी सकेत तों बचन लिखाए अते हजूर साहिब भेजे गए ❋

६६४
०६
हज़ूर साहिब आया हज़ूर, हाज़र जोत जगाईआ। कलिजुग वेला अन्तिम नेड़ ना जाणो दूर, गोबिन्द रिहा डंक वजाईआ। ६६४ ०६
भेख पखण्डा करे चूरो चूर, ठग्ग चोर यार गुर दर अन्दर मन्दिर रहिण ना पाईआ। एका नूर सति सरूर सर्बकला भरपूर, दिवस रैण करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखे खेल थाउँ थाँईंआ। करे खेल हक्क निबेड़ा, हरि गोबिन्द जोत जगाईआ। सम्बल नगर वसे खेड़ा, हरि साचे बणत बणाईआ। जूठा झूठा करे निबेड़ा, चारों कुन्ट वेख वखाईआ। देवण आया अन्तिम गेड़ा, सृष्ट सबाई दए दुहाईआ। चरन द्वार रक्खे खुल्ला वेहड़ा, गुरमुख साचे लए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गोबिन्द मेला साचे हरि, धाम अवल्ला इक्क सुहाईआ। धाम अवल्ला उच्च महल्ला, सम्बल नगर गराया। गुर गोबिन्दा इक्क इकल्ला, बैठा आसण लाया। किसे हथ्थ ना आए जल थला, तीर्थ तट्टां ना वेख वखाया। गुर दर मन्दिर अन्दर पए तरथल्ला, गुर गोबिन्द मुख छुपाया। दीपक जोती किसे घर ना बला, पाठ अखण्ड कोटी कोट हवन कराया। दूई द्वैती ना मिटया सल्ला, तीर निराला एका लाया। कलिजुग अन्तिम जोत प्रगटाए सृष्ट सबाई भुलाए कर कर वल छला, निहकलंका नाउँ रखाया। सम्मत चौदां सोलां कत्तक सृष्ट सबाई बोलण वाला हल्ला, उच्चे पर्बत उच्चे टिल्ले चढ़ चढ़ वेखणहार पन्थ ख़ालसा होया झल्ला, गुर सतिगुर गुर गोबिन्द दिस ना आया। मन मति मन मती रला, माया मोह वधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नंदेड़ अन्धेर

रिहा वखाया। आपणा आप अन्तिम तज, नंदेड़ दया कमाईआ। सम्बल नगरी आया भज्ज, कलिजुग अन्तिम वज्जी वधाईआ। सृष्ट सबाई इक्क नगारा रिहा वज्ज, चारों कुन्ट काल दुहाईआ। गुरमुखां पड़दे लए कज्ज, एका पड़दा नाम पाईआ। अमृत आत्म प्याए रज्ज, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। अग्नी हवन ना गया दझ, पंज तत्त ना संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा ल्या प्रगटाईआ। आप आपणी जोत जगा, गोबिन्द रंग रंगाया। सम्बल नगर भाग लगा, माझा देस सुहाया। अमृतसर लेख लिखा, अकाल तख्त सुहाया। पुरी अनन्द रिहा बुला, अनन्द पुर वासी आया। नंदेड़ निबेड़ा रिहा करा, अन्तिम गया तजाया। आदि पुरख निरँजण खेल रचा, कलिजुग वेखण आया। शब्द घोड़ा रिहा नठा, लोआं पुरीआं फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मनमुखां दए सज़ा, जिन्हां अंगीठा फोल वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, गोबिन्द काया मन्दिर अन्दर सच सिंघासण डेरा लाया।

❊ १६ कत्तक २०१४ बिक्रमी जुगिन्दर नगर ज़िला कांगड़ा ❊

९९५
०६

सतिगुर दीन दयाल, दयानिध अख्वाया। भगत वछल कृपाल, कारज सिध्ध रखाया। गुरमुख साचे लाल, जुग जुग वेख वखाया। देवे नाम सच्चा धन्न माल, सच ख़जीना इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका अंक रिहा जणाया। कलिजुग अन्तिम हरि निरँकार, अकल कला वरताईआ। निहकलंका लै अवतार, शब्द डंका रिहा वजाईआ। राउ रंकां करे ख़बरदार, शाह सुल्ताना रिहा उठाईआ। चारों कुन्ट दहि दिशा रिहा विचार, लोआं पुरीआं फेरा पाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भज सेत्ज लए उभार, वेख वखाए थाउँ थाँईंआ। गुरमुख साचे सच दुलार, हरि गोबिन्द मेल मिलाईआ। गोबिन्द मेला विच संसार, विछड़ कदे ना जाईआ। एका दूजा भउ निवार, तीजे नेत्र दरस वखाईआ। चौथा घर अपर अपार, पद चौथा इक्क वखाईआ। पंचम मेला मीत मुरार, आत्म दरसी दरस दखाईआ। शब्द अनादी धुन अनाहद वजा एका तार, सुन्न समाध खुल्हाईआ। आत्म सेजा कर प्यार, गुरमुख साचे मेल मिलाईआ। जोत सरूपी इक्क आकार, सति सरूप समाईआ। सति सरूपी हरि निरँकार, अणडिठा राग अल्हाईआ। सुणे सुणाए सुनणेहार, समरथ हथ्थ वड्याईआ। भगत सुहेले लए उधार, जुग जुग आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। कलिजुग अन्तिम लए अवतार, निहकलंका नाउँ रखाईआ। गुर गोबिन्दा मीत मुरार, सम्बल नगरी डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, सृष्ट सबाई रिहा भुलाईआ। जोती नूर हरि निरँकार, अकल कला समाया। खेले खेल विच संसार, जुग जुग वेस वटाया। नानक गोबिन्द लेख लिखार, सेवक सेवा साची लाया। आप आपणी किरपा धार, अमृत मेवा इक्क खवाया। इक्क इकल्ला एकँकार, ओंकारा वेख वखाया। सति पुरख निरँजण बन्ने धार, सति पुरखां मेल मिलाया। चारो कुन्ट वेख विचार, कलिजुग बेड़ा रिहा डुबाया। गुरमुख साचे लए उधार, आप आपणी दया कमाया। नीले वाला शाह सवार, सोलां कलीआं आसण लाया। चिट्टे अस्व हो त्यार, नौ खण्ड पृथ्वी वेख वखाया। सत्तां दीपां पाए सार, आप आपणा रंग रंगाया। सम्मत चौदां वेख विचार, बीस सद रुत्त सुहाया। प्रगट हो हरि निरँकार, ब्रह्मण्डी खोज खुजाया। आप आपणी कल आपे धार, गुर गोबिन्द मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अचरज खेल लोकमात रिहा वरताया। अचरज खेल कर कर हरि, हरि हरि जोत जगाईआ। गोबिन्द गुर मिल्या वर, आत्म वज्जी वधाईआ। चरन छुहाए रवाल सर, वेखे सहिज सुभाईआ। आवण जावण चुक्के डर, जन भगतां लेखे लए लाईआ। गुरमुख आस प्यास एका रहे कर, नेत्र नैण रहे उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे दरस नेत्र नैण वखाईआ। देवे दरस हरि गोबिन्दा, आपणी दया कमांयदा। आप मिटाए सगली चिन्दा, चिन्ता दुःख रहिण ना पांयदा। दाता जोद्धा सूर वड मृगिन्दा, सद बख्शिंदा आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार करांयदा। हरिजन आसा पूर, चिन्त मिटाईआ। देवे दरस हाज़र हज़ूर, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। जगत नाता तोड़े कूड़ो कूड़, शब्द गुर करे कुड़माईआ। बख्शे चरन साची धूढ़, दुरमति मैल गंवाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, जिस जन सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण मीत मुरार, दर घर साचे मेल मिलाईआ। साजण मीत सज्जणा, हरि हरि आप अखवाए। जन भगतां पड़दा कज्जणा, एका पल्ला नाम पाए। काल नगारा सृष्ट सबाई नौ खण्ड पृथ्वी अन्तिम वज्जणा, ना होए कोई किसे सहाए। जो घड़या सो भज्जणा, थिर कोई रहिण ना पाए। गुरमुखां चरन धूढ़ बख्शे साचा मजना, जुगिन्दर नगर फेरा पाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण देवे वर, आया गया लेखे लाए। रसना भोग हरि भगवन्त, लेखे पक्क पकवान। गुरमुख साचे साजन सन्त, हरि देवे नाम निधान। जुग जुग बणाए जगत बणत, वड दाता गुणी निधान। मेल मिलावा साचे कन्त, विछड़ कदे ना जाण। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, परम पुरख सुल्तान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे नाम वर, एका शब्द आत्म जोती ब्रह्म ज्ञान।

✻ पहली मग्घर २०१४ हरिभगत द्वार जेठूवाल ✻

पुरख अबिनाशी आदि अन्त, आपणी रचन रचाईआ। मेल मिलावा साचे सन्त, आप आपणा रिहा कराईआ। आपे पुरख आपे नारी होए कन्त, सेज सुहावी आप सुहाईआ। आपे रसन जिह्वा मणीआ मंत, नाम नामा आप अख्वाईआ। आपे काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, फुल फुलवाड़ी वेख वखाईआ। आपे माया पाए जगत बेअन्त, भरम भुलेखे रिहा भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करता पुरख आप अख्वाईआ। करता पुरख आप निरँजण, एका जोत समाया। दाता दानी दर्द दुःख भय भञ्जण, हर घट बैठा आसण लाया। जन भगतां नेत्र पाए नाम अंजन, अज्ञान अन्धेर मिटाया। धुर दरगाही साचा सज्जण, हरिजन साचे मेल मिलाया। जन भगतां धूढ़ कराए साचा मजन, दर द्वारे फेरा पाया। हरिजन अमृत आत्म पी पी रज्जण, हरि निझर धार वहाया। लोकमात आया पड़दे कज्जण, आप आपणा भेख वटाया। मूर्ख मुग्ध उधारे जिउँ नानक ठग्ग सज्जण, जो जन सरन सरनाई आया। भाण्डे गढ़ हँकारी भज्जण, थिर कोई रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करनहार आप अख्वाया। करनहार आप करतारा, एका एक अख्वांयदा। जुग जुग खेले खेल संसारा, आप आपणी बणत बणांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कर पसारा, वेस अवेसा वेस वटांयदा।
९९७ ०६
कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, निहकलंका जाम प्यांअदा। गुर गोबिन्दा दर भिखारा, दोए जोड़ सीस झुकांयदा। पुरख अबिनाशी कर प्यारा, आप आपणी दया कमांयदा। एका देवे नाम हुलारा, आत्म अन्तर ज्ञान दृढ़ांयदा। अकाल मूर्त अजूनी जून रहित ना कोई पावे सारा, अगम्म अगम्मा देवे धारा, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहांयदा। नानक गुर ढहि पया दुआरा, प्रभ आपणी गोद उठांयदा। देवे नाम अपर अपारा, नाम सति मन्त्र दृढ़ांयदा। सो पुरख निरँजण तेरा खेल न्यारा, हँ हँगता मेट मिटांयदा। एका दीपक जोत कर उज्यारा, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। ना कोई गुरुदुआरा ना दिसे धर्मसाला, नानक काया इक्क सुहांयदा। प्रगट होवे हरि निरँकारा, निरगुण खेल खिलांयदा। सरगुण तेरा बहत्तर नाड़ी वज्जे ताड़ा, छत्ती राग अलांयदा। वेखे विगसे कर विचारा, कीर्तन कीरत करता आप करांयदा। पंचम गावण वारो वारा, सेवक सेवा आपे लांयदा। आपे वसया सभ तों बाहरा, हर घट आप समांयदा। इक्क इकल्ला एकँकारा, अकल कला अख्वांयदा। गुर गोबिन्दा सुत दुलारा, साची भिच्छया झोली पांयदा। लहिणा देणा विच संसारा, अमृत आत्म जाम प्यांअदा। नाम खण्डा तेज कटारा, तन गात्रे आप लटकांयदा। अटल महल्ल चढ़ दस्म दुआरा, चोटी सोटी एका शब्द फड़ांयदा। सुन्न अगम्मो पार किनारा, सोहँ देस सुहांयदा। सो पुरख निरँजण मेल मिलाए गुर गोबिन्द जगत दुलारा, एका नाम दृढ़ांयदा। आपे खोल्हे बन्द किवाड़ा, भेव अभेदा आप

जणांयदा। लाज रखाए केस छुहाए दाहड़ा, पंज तत्त रत्त मति मन बुध मूल चुकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करता पुरख आप हो आंयदा। करता पुरख हरि निरँकार, एका एक अख्वांयदा। कलिजुग अन्तिम लए अवतार, जोती जामा भेख वटांयदा। गुरमुख साजण मीत मुरार, आप आपणे रंग रंगांयदा। देवे दरस अगम्म अपार, आत्म दरसी आप अख्वांयदा। बजर कपाटी देवे पाड़, जोत जगाए बहत्तर नाड़, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। इक्क वखाए सच अखाड़, पुरख अबिनाशी आपणा राग अलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका कन्त सुहाग अख्वांयदा। साचा कन्त हरि सुहाग, एका एक अख्वाया। गा गा थक्के छत्ती राग, नानक निरगुण सेवा लाया। ताल तलवाड़ा वज्जे साचा नाद, धुन धुन्कारा इक्क रखाया। जाणे जणाए बोध अगाध, भेव किसे ना पाया। पुरख अबिनाशी देवणहारा आपणी दाद, जुग जुग देवणहार आप अख्वाया। साध सन्त कोटन कोट रहे अराध, गुरमुख विरले वर घर पाया। जिस जन मिल्या मोहण माधव माध, मेल विछोड़ा जगत मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका अक्खर नाम वक्खर चार वरन सृष्ट सबाई रिहा पढ़ाया। एका अक्खर हरि सुल्तान, आपणा आप चलांयदा। सतिजुग साचा कर परवान, लोकमात चरन टिकांयदा। प्रगट हो विच जहान, इक्क निशान वखांयदा। एका सुरती इक्क ज्ञान, इक्क ध्यान जणांयदा। वेद पुराण अञ्जील कुरान सर्ब मिट जाण, खाणी बाणी होए हैरान, नारद मुन राह तकांयदा। पुरख अबिनाशी हरि भगवान, जुग जुग आपणी जाणे आण, धरत मात मंगे दान, भगत सुहेले कर पछान, नाम निधान झोली पांयदा। कलिजुग अन्तिम मेट मिटाए जगत शैतान, जूठ झूठ सर्ब मिट जाण, सच सुच्च कर बलवान, लोकमात आप टिकांयदा। सोहँ शब्द सच निशान, नौ खण्ड पृथ्वी आप जणांयदा। सत्तां दीपां इक्क ज्ञान, एका मार्ग लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आकाश प्रकाश वेख वखांयदा। आकाश प्रकाश हरि जोत जगा, आपणी कल वरतांयदा। सुरपति राजा इन्द दए हिला, करोड़ तेतीसा नाल रलांयदा। लोकमाती फेरी पा, कलिजुग अन्तिम वेख वखांयदा। राज राजाना दए जगा, शाह सुल्ताना आप समझांयदा। मर्द मरदाना आप हो जा, एका डंका आप वजांयदा। तीर निशाना इक्क रखा, रसना चिल्ले आप चढ़ांयदा। गुर गोबिन्दा संग रला, बस्त्र सशतर तन पहना, साचे अस्व आप चड़ांयदा। पहला पौड़ा लए उठा, नीला नीली धारों पार करांयदा। सोहँ मुद्दा तन बंधा, आप आपणा भार चुकांयदा। दूसर कोई रहिण ना पा, तीर्थ अठसठा दए मिटा, कलिजुग खेल खिलांयदा। सतिजुग तेरी साची चद्दा रिहा करा, सम्मत चौदां लेख लिखांयदा। सम्मत पन्दरां भट्ठा दए तपा, त्रैगुण अग्नी लांयदा। सम्मत सोलां जगत विकारा इक्ट्ठा दए करा, आपणी

बणत बणांयदा। सम्मत सतारां उलटी लट्ठा दए गिढ़ा, सर अमृत थेह करांयदा। सम्मत अठारां दए रुढ़ा, जल धारा आप वहांयदा। उन्नी उनीसा तेरा कोई ना सके नाअरा ला, अल्ला राणी दए दुहाई ना कोई संग संग निभांयदा। बीस बीसा हरि जोत जगा, आप आपणा वेख वखांयदा। निहकलंका डंक वजा, सृष्ट सबाई आप हिलांयदा। राज राजान कोई दिसे ना, ना कोई ताज हंढांयदा। दर दरबान ना कोई लए बहा, ना कोई हुक्म जणांयदा। पुरख अबिनाशी एका एक वखाए आपणा नाँ, दूसर कोई दिस ना आंयदा। गुर गोबिन्दा देवे ठंडी छाँ, पन्दरां कत्तक आप सुहांयदा। सत्त रंग निशाना दए चढ़ा, आप आपणी रचन रचांयदा। सतिजुग तेरी साची नईआ दए चला, सोहँ चप्पू लांयदा। मनमुख जीवां अन्त मिटा, एका दूजा भउ चुकांयदा। जन भगतां तीजा नेत्र आप खुल्ला, एका धाम सुहांयदा। निज घर आत्म वेखे थाउँ थाँ, चौथा घर हरि सुहा, एका पद समांयदा। पंचम गुण आपणा गा, गोबिन्द मेल मिलांयदा। माता गुजरी ना पुकारे लै के नाँ, तेग बहादर ना गोद उठांयदा। जोत निरँजण आदि पुरख बणी साची माँ, सति पुरख साचा पिता आप हो जांयदा। सम्बल नगरी धाम सुहा, आप आपणी जोत प्रगटांयदा। आप आपणा विच टिका, गोबिन्द गढ़ सुहांयदा। उच्चा नीवां ना कोई दिसे थाँ, एका रंग रंगांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी जपाए आपणा नाँ, सोहँ सो रसन अलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप अख्वांयदा। नर नरायण हरि आप करतार, अकल कल वरताईआ। जोती नूर कर आकार, वेख वखाए थाउँ थाँईंआ। शब्द खण्डा तेज कटार, हरि मारे बेपरवाहीआ। लोआं पुरीआं पार किनार पावे सार, सन्त सुहेले गुरू गुर चेले लए उभार, आप आपणी दया कमाईआ। खेले खेल विच संसार, खेलणहार दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन जनणी जन एक जन, पूत सपूता इक्क उपाईआ। पूत सपूता हरि गोबिन्द, हरि हरि चिन्त मिटाईआ। आप उपाए आपणी बिन्द, आपणा रंग रंगाईआ। आप वहाए अमृत धारा सागर सिन्ध, आपे रिहा रुड़ाईआ। आपे होए दाता दानी हरि बख्शिंद, आपे मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। गोबिन्द मेला सच घर, मेलणहार करतारा। दो जहानां मिल्या वर, पाया पुरख अगम्म अपारा। ना जन्मे ना जाए मर, आवे जावे वारो वारा। आपणी करनी रिहा कर, करनहार करतारा। धरनी धरत धवल उप्पर धर, आकाश आकाश कर पसारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर सुहाए इक्क दुआरा। गोबिन्द राग शब्द जणा, आत्म धुन उपजाईआ। पुरख अबिनाशी दया कमा, आपणी बूझ बुझाईआ। अकाल मूर्त इक्क वखा, अकल कला समझाईआ। नाद तूरत रिहा सुणा, तुरीआ पद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, गोबिन्द मेला मेल मिलाईआ। गोबिन्द मेला हरि द्वार, हरि साचा आप करांयदा। दाता दानी पावे सार, महांसार्थी आप अख्वांयदा। लिख्या लेख वखाए अपर अपार, कागद कलम आप हो जांयदा। जनणी जन जाए सुत दुलार, सति सन्तोख समांयदा। नठ्ठ नठ्ठ मेला हरि चरन द्वार, इक्क इक्व सुहांयदा। काया बुरज ढठ्ठ जाए महल्ल मुनार, कोई रहिण ना पांयदा। प्रगट हो विच संसार, भरम भुलेखा सर्ब भुलांयदा। धारी केसा लए उभार, जो जन चरनी सीस झुकांयदा। दस दस्मेसा कर त्यार, साचा धाम सुहांयदा। नगर खेड़ा इक्क अपार, चार दिवार ना कोई बणांयदा। छप्पर छन्न ना ल्या संवार, ना कोई बाडी बणत बणांयदा। आप आपणी किरपा धार, गुरमुख साचा रंग चढ़ांयदा। आत्म सेजा कर त्यार, आपणा आसण लांयदा। जोती नूर कर आकार, साचा शब्द सच्ची धुन्कार, साचा राग अलांयदा। सुणे सुणाए सुणनेहार, आप आपणा वेख वखांयदा। नारी कन्ता सन्त भतार, साची सेज हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया चोली जगत डोली आपणे कंध उठांयदा।

१००० निहकलंक हरि नाउँ है, निरगुण रूप समाए। वसे हर घट थाउँ है, दिस किसे ना आए। शब्द अनादी बेपरवाहो १०००
०६ है, बेपरवाह अख्वाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंका नाउँ धराए। निहकलंका हरि निरँकार, ०६
एका एक अख्वांयदा। एका डंक शब्द अपार, जुग जुग आप वजांयदा। दो जहानां करे ख़बरदार, पुरीआं लोआं आप उठांयदा। निरगुण सरगुण कर विचार, आप आपणा कर्म कमांयदा। जग जुगत बन्ने धार, जोग जुगत इक्क वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा नाउँ धरांयदा। निहकलंका नाम निधान, नर हरि आप अख्वाया। एका शब्द इक्क ज्ञान, इक्क ध्यान लगाया। एका चरन धूढ़ सच्चा इशनान, सर सरोवर इक्क वखाया। एका जोती आत्म ब्रह्म ज्ञान, अज्ञान अन्धेर मिटाया। अमृत आत्म पीण खाण, तृष्ना भुक्ख गंवाया। मूर्ख मूढ़ बणाए चतुर सुघड़ स्याण, आप आपणी दया कमाया। हरि का शब्द सच निशान, जुग जुग आप चलाया। जोद्धा सूर बली बलवान, निहकलंका आप अख्वाया। राउ रंकां वेखे मार ध्यान विच जहान, द्वार बंका फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाया। निहकलंका नर निरँजण, नर नरायण अख्वाया। ना कोई घड़े ना मात भज्जण, ना कोई बणत बणाया। ना कोई ताल तलवाड़ा दर द्वारे वज्जण, वजावणहार दिस ना आया। आप आपणा बणया सज्जण, शब्द मीत इक्क रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एक रिहा वखाया। एका अंक एकँकार, एका कल वरताईआ। एक

तन कर श्रृंगार, तन बस्त्र इक्क सजाईआ। एका खण्डा इक्क कटार, इक्क गात्रे रिहा पाईआ। एका शब्द एका धार, एक एक रिहा चलाईआ। एका गुर एका अवतार, एका खेल खिलाईआ। एका साजण मीत मुरार, सखा सुहेला इक्क अख्वाईआ। एका गुर एका चेला इक्क द्वार, एका मंग मंगाईआ। एका दाता दानी भरे भण्डार, एका खाली रिहा कराईआ। एका गुणवन्ता गुण रिहा विचार, गुण अवगुण वेख वखाईआ। एका रंग बसन्ता रिहा चाढ़, एका चोली रिहा रंगाईआ। एका हउमे हँगता देवे साड़, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। एका नानक एका अंगद मिल्या मेल कन्त भतार, एका सेज हंढाईआ। एका मंगता बणे भिखार, एका झोली अग्गे डाहीआ। एका पैज देवे संवार, एका गुर वड्डी वड्याईआ। एका शब्द एका धुन धुन्कार, एका नाद वजाईआ। एका सुन्न इक्क समाध, इक्क ध्यान वखाईआ। एका बाणी बोध अगाध, अगाध बोध जणाईआ। एका एक रसना रहे अराध, एका एक लिव लाईआ। एका एक माधव माध, मोहण मोहणी रूप वटाईआ। एका एक सन्त साध, एका एक धूणीआं ताईआ। एका एक हरि शब्द हर रक्खणा याद, निहकलंका नाउँ रखाईआ। जुग जुग सुणे लक्ख चुरासी तेरी फरयाद, धरत मात रही कुरलाईआ। जन भगतां देवे साची दाद, देवणहार आप अख्वाईआ। हरिजन साचे लए लाध, गुर गोबिन्दा मेल मिलाईआ। शब्द डोरी लए बांध, एका तन्दन तन्द बंधाईआ। खेले खेल आदि जुगादि, आदि जुगादी आप अख्वाईआ। कलिजुग अन्तिम देवे दाद, नानक गोबिन्द गया लिखाईआ। खेले खेल हरि ब्रह्माद, ब्रह्मण्ड खोज खुजाईआ। मेट मिटाए जगत विवाद, विकार हँकार रहिण ना पाईआ। पकड़ उठाए नौ नौं नाथ, सिद्ध चुरासी रिहा हिलाईआ। ईसा मूसा छड्डणा साथ, चार यारी संग तुड़ाईआ। सीआं वंड वंडाए साढे तिन्न तिन्न हाथ, रविदास चुमारा गया लिखाईआ। आप चलाए आपणी गाथ, सतिजुग साचा मार्ग लाईआ। सोहँ सो एका राथ, रथ रथवाही आप अख्वाईआ। जन भगतां मस्तक टिक्का लाए माथ, जोत निरँजण लिलाट करे रुशनाईआ। अमृत आत्म मारे ठाठ, ताल सुहावा इक्क वखाईआ। लेख चुकाए तीर्थ अट्ठ साठ, घर मन्दिर इक्क सुहाईआ। शब्द घोड़ा देवे साचा राठ, सोलां कलीआं आसण लाईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, निहकलंक तेरे दरस वड्डी वड्याईआ। लेखे लाए हड्डी तिन्न सौ साठ, बहत्तर नाड़ करे रुशनाईआ। आपे गेड़े काया उलटी लाठ, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। चरन द्वारे इक्क इक्ट्ठ, इक्क इकल्ला रिहा कराईआ। अन्तिम मेला नट्ठ नट्ठ, साधां सन्तां राह खैहड़ा दिस ना आईआ। त्रैगुण माया प्रभ तपाए मट्ठ, पंच विकारा अग्नी डाहीआ। सम्मत चौदां करे चट्ठ, गुरमुख साचे संग रलाईआ। आप तपाया जगत वखाया एका मट्ठ, जोती लम्बू एका अग्नी लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर आप अख्वाईआ। निहकलंक

शब्द सितार, एका एक वजांयदा। नानक गाए निरँकार निरँकार निरँकार, निरगुण वेख वखांयदा। गोबिन्द पाया पुरख अपार, परम पुरख समांयदा। दोए जोड़ ढहि पए द्वार, नेत्र नीर वहांयदा। सिक्खी सिख्या कर विचार, सतिगुर साचा सीस झुकांयदा। लिख्या लेख धुर करतार, ना कोई मेट मिटांयदा। पुरी अनन्द ना कोई घर बाहर, अनन्द अनन्द गुर चरनां इक्क वखांयदा। शब्द छन्द ना कोई संसार, बन्द बन्द ना कोई कटांयदा। मदिरा मास ना रसना बत्ती दन्द, गुर गोबिन्दा तीर चलांयदा। तेग बहादर वर पाया परमानंद, निज रूप आप समांयदा। हरिकृष्न चढ़या जगत चन्द, बाल बाला सेव कमांयदा। हरि हरि राए प्रभ आप बख्शंद, बख्शणहार दया कमांयदा। हरिगोबिन्द जोद्धा सूर मृगिन्द, आसण सिँघासण इक्क विछांयदा। अर्जन गुर सागर सिन्ध, बाणी बोध ज्ञान ध्यान इक्क दृढ़ांयदा। राम दास साचा सर, पुरख अबिनाशी वसया घर, एका तरनी गया तर, सर सरोवर इक्क सुहांयदा। अमरदास पाया वर, नार सुहागण सोहे दर, कन्त कन्तूहल सेज हंढांयदा। अंगद अंग गया लग्ग, मिल्या मेल सूरे सरबग, कलिजुग माया अग्नी ना गया दग, एका रंगण रंग चढ़ांयदा। निरगुण नानक गया गा, आपणा आप मेट मिटा, पुरख अबिनाशी दर्शन पा, चार वरनां इक्क जणा, निहकलंक तेरी ओट रखा, एका डंक वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका नाउँ धरांयदा।

१००२ ०६ एका नाउँ जगत धरा, आपणी कल वरताईआ। नौ खण्ड पृथ्वी दए पढ़ा, सत्तां दीपां इक्क वड्याईआ। राज राजानां दए सुणा, दूई द्वैती पड़दा लाहीआ। गुण अवगुण ना कोई जाणा, महिंमा अगणत ना कोई जणाईआ। राग रागनी रहे गा, दिवस रैण सेव कमाईआ। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, थिर घर बैठा आसण लाईआ। दीपक जोती इक्क जगा, अट्ठे पहर डगमगाईआ। शब्द धुन आपणी आप वजा, घर आपणे रिहा अलाईआ। पंज तत्त ना वेख वखा, मन मति बुध ना कोई चतुराईआ। रक्त बूंद ना मेल मिला, हड्ड मास नाड़ी दिस ना आईआ। चित्रगुप्त ना लेखा रिहा लिखा, धर्म राए ना दए सज़ाईआ। ना कोई ब्रह्मा त्रैगुण माया रिहा रला, विष्नूं वंसी ना वेस वटाईआ। शिव शंकर बाशक तशका ना बैठा गल लटका, तन भबूत ना ख़ाक रमाईआ। ना कोई तार सितार रिहा वजा, गावणहार ना कोई दिसाईआ। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, एका बैठा आसण लाईआ। आदि जुगादी आप अख्वा, खेले खेल सृष्ट सबाईआ। जुग जुग मेला मेल मिला, मेल विछोड़े खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर रचन रचा, राम कृष्न कृष्ना राम अख्वाईआ। कलिजुग वेखे साचा थाँ, सच समग्री इक्क टिकाईआ। चार कुन्ट दहि दिशा एका भुल्लया हरि हरि नाँ, गीत संगीत ना कोई गाईआ। मनमुख जीव होए काँ, रसना काग वांग कुरलाईआ। कोई ना देवे ठंडी छाँ, साध सन्त बैठे मुख छुपाईआ। पुरख अबिनाशी

वेखे थाउँ थाँ, हर घट आपणा फेरा पाईआ। करनहारा सच न्यां, साचे कंडे तोल तुलाईआ। कलिजुग द्वारे रिहा कुरला, जूठ झूठ नाल रलाईआ। धरत मात वैण रही पा, खुल्हड़े केस दए दुहाईआ। लाड़ी मौत खुशी रही मना, हथ्थीं मैहन्दी लाल रंगाईआ। सगणा चूड़ा साचा पा, नौ खण्ड पृथ्वी रिहा छणकाईआ। राए धर्म रंग गूढ़ा दए चढ़ा, आप आपणा संग निभाईआ। चित्रगुप्त लेखा रिहा वखा, मनमुख जीवां भुल्ल ना राईआ। पुरख अबिनाशी देवणहार सज़ा, सृष्ट सबाई वेख वखाईआ। चार कुन्ट दहि दिशा रिहा दुड़ा, पवण पवणी रिहा समाईआ। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा वेख वखा, सम्बल नगर डेरा लाईआ। गुर गोबिन्द ल्या जगा, जागरत दिशा इक्क वखाईआ। रसना चिल्ले तीर चढ़ा, नाम निशाना रिहा लगाईआ। बूरा कक्का बिला दए हिला, ईसा मूसा वेख वखाईआ। पहली निशाना रिहा लगा, अल्ला राणी मुख शरमाईआ। संग मुहम्मद चार यार ना कोई बणया सका, सगला संग ना कोई निभाईआ। सम्मत चौदां लेखा रिहा लिखा, चौदां तबकां जड़ हिलाईआ। चौदां लोकां आप सुणा, त्रैलोक करे रुशनाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव वेखे थाउँ थाँ, आवे जावे फेरा पाईआ। कलिजुग काया रिहा कुरला, धीरज धीर ना कोई धराईआ। अमृत जाम ना देवे कोई पया, अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ फिरे हलकाईआ। गुर दर मन्दिर अन्दर साचा राग ना दए कोई सुणा, माया राणी नित लड़ाईआ। कुरान हदीस ना कोई रिहा पढ़ा, शरअ शरायत ना कोई वखाईआ। मुलां पीर शेख़ दस्तगीर राणी अल्ला तेरा कोई ना करे निकाह, हक्क ज़नाब ना कोई मिलाईआ। मिले ना पाकी पाक इक्क खुदा, ऐहनल हक्क ना नाअरा लाईआ। अन्तिम होणा मात जुदा, संग मुहम्मद चार यार छाहीआ। पुरख अबिनाशी एका सदा रिहा लगा, नौ खण्ड पृथ्वी लक्ख चुरासी एका शब्द करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आपणा नाउँ रखाईआ। निहकलंक हरि हरि रंग, रंग रता करतारा। शब्द सरूपी बैठ पलँघ, खेले खेल विच संसारा। नादी शब्द वजाए इक्क मृदंग, अनहद वजाए साची तारा। सर सरोवर धारा गंग, प्रभ रक्खे चरन दुआरा। शब्द सुत तेरा साचा जंग, कलिजुग वेखे अन्तिम वारा। चिट्टे अस्व कसया तंग, प्रगट होए पुरख अपारा। लोआं पुरीआं आए लँघ, लोकमात वेखे इक्क दुआरा। भगत जनां हरि सगला संग, दोए जोड़ करे निमस्कारा। आप लगाए आपणे अंग, आपणी गोदी दए हुलारा। सोहँ कंगण तन पावे साची वंग, उतर ना जाए दूजी वारा। मानस जन्म ना होए भंग, लक्ख चुरासी उतरे पारा। धर्म राए ना देवे डन्न, काल महांकाल ना आए दुआरा। दर दुआरा पारब्रह्म अबिनाशी करते जो जन तेरा रिहा मंग, आदि अन्त भरे अतुट भण्डारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, खेले खेल विच संसारा। खेले खेल विच संसार, अकल अकल कला समाईआ। जोती नूर कर आकार, शब्दी

बणत बणाईआ। शब्द सरूपी इक्क जैकार, जै जै जैकार आप कराईआ। मेट मिटाए अन्ध अंध्यार, काली रैण रहिण ना पाईआ। गुरमुख साजण मीत मुरार, सति पुरख मेल मिलाईआ। एका बख्शे चरन प्यार, चरन प्रीती इक्क सिखाईआ। आपे पुरख आपे नार, आपे नारी कन्त भतार, आप आपणी सेज हंढाईआ। पूत सपूता कर उज्यार, हरि शब्दी शब्द जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वार, जोती नूर शब्द तूर नाद अनादी एका धुन वजाईआ।

❊ पहली मग्घर २०१४ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल तों पटना साहिब शब्द भेज्जया गया ❊

प : पुरख सुल्तान सुल्तान, सति सरूप अख्वाया। ट : टिल्ला उच्च मकान, गोबिन्द गढ़ सुहाया। न : निरगुण खेल महान, निज घर वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पटना लेख लिखाया। प : पुस्तक पाठ, पूजा वेख वखाईआ। ट : टुट्टा साथ, ना कोई संग रखाईआ। न : निरगुण खेल त्रैलोकी नाथ, लोआं पुरीआं रिहा भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर पटना वेख वखाईआ। प : पिता इक्क परवान, परम पुरख सुल्तान। ट : टिक्का मस्तक महान आप लगाए श्री भगवान। न : निरगुण बैठ शब्द बिबाण, फिरे फिराए दो जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पटना वेखे जगत दुकान। प : प्रितपाल सर्ब सुखदाया। आपे शाह आप कंगाल, मंगणहार आप अख्वाया। आपे जोती नूर अकाल, शब्द धुन आप उपजाया। आपे दीनां बंधप दीन दयाल, दया निध आप अख्वाया। आपे काल होए महांकाल, कूड़ पसारा मेट मिटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचे होए सहाया। प : पूरन जोत धर, निर्मल नूर करे रुशनाईआ। आसा मनसा पूर हरि, हरि गोबिन्द विच समाईआ। गोबिन्द हाज़र हज़ूर दर, दर दरवेसा आप अख्वाईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, गढ़ हँकार रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी अलख जगाईआ। आप आपणी अलख जगा, गुर गोबिन्द उठाया। सम्बल नगरी डेरा ला, साचा धाम सुहाया। अमृत जल इक्क भरा, साचा ताल सुहाया। शब्दी शब्द ल्या उपा, शब्दी जोड़ जुड़ाया। जोती नूर डगमगा, दिवस रैण करे रुशनाईआ। आप आपणा वेख वखा, आप आपणा रूप वटाया। बस्त्र शस्त्र तन सजा, एक अस्त्र रिहा दौड़ाया। चिट्टे अस्व आसण ला, सोलां कलीआं वेख वखाया। नीले वाला आप हो जा, जोती शब्दी मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्बल नगरी डेरा लाया। सम्बल नगर सच ग्रां, गोबिन्द मिली वड्याईआ। गुर गोबिन्दा बैठा साचे थाँ, हरि साचा होए सहाईआ। निर्मल बाती इक्क जगा,

चार कुन्ट करे रुशनाईआ। एका शब्द रिहा पढ़ा, चार वरनां इक्क पढ़ाईआ। एका रंग रिहा रंगा, रंगणहार आप अख्वाईआ। गुरमुख साचे लए उपा, आप आपणी बूझ बुझाईआ। प : पौड़ा पहला ला, चौथे घर बहाईआ। साचा पद इक्क वखा, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। हँ हँगता दए मिटा, हउमे रोग गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द वेख वखाईआ। गुर गोबिन्द हरि बलवान, एका एक रखाया। रसना चिल्ला तीर कमान, सोहँ खण्डा हथ्थ फड़ाया। अगम्म अगम्मा वेख मार ध्यान, नाड़ी चम्मा दिस ना आया। मरया ना जम्मा विच जहान, आवण जावण खेल रचाया। धर्म झुलाए इक्क निशान, आप आपणे हथ्थ रखाया। उप्पर लिख्या लेख महान, ना कोई मेटे मेट मिटाया। ब्रह्मा विष्न शिव सारे राह तकाण, कलिजुग वेला अन्तिम आया। गुर गोबिन्दा ना करे कोई पछान, पन्थ ख़ालसा बैठा मुख छुपाया। आपे होया जाणी जाण, जानणहार सृष्ट सबाया। प : पुरखे गुण निधान, परखण वेला अन्तिम आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा धर्म रिहा सुहाया। सम्बल नगर साचा पौड़ा, प्रभ आपणा आप लगाया। सस्से उप्पर इक्क होड़ा, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। जोती शब्दी जोड़या जोड़ा, विछड़ कदे ना जाया। हरि का शब्द साचा घोड़ा, जुग जुग रिहा दुड़ाया। प्रगट होया पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, वेद व्यासा गया लिखाईआ। सम्बल नगर साढे तिन्न हथ्थ लम्भा चौड़ा, पुरख अबिनाशी आप बणाया। गुर गोबिन्दे आत्म अन्तर लग्गी औड़ा, प्यास आस इक्क रखाया। पुरख अबिनाशी आया दौड़ा, साचे (मन्दिर) डेरा लाया। लक्ख चुरासी वेखे परखे जीव जन्त साध सन्त मिट्ठा कौड़ा, जूठ झूठ रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा गोबिन्द वेख वखाया। ट : टुट्टे माण गढ़ हंकारया। मनमुख भुल्ले जीव निादान, विच संसारया। गोबिन्द गुर ना कोई मात पछान, मिल्या मेल ना मीत मुरारया। वेले अन्त सर्ब पछतान, छड्डणा मन्दिर गुरुदुआरया। पुरी अनन्द सर्ब तज जाण, फतिह अकाल ना कोई जैकारया। सर अमृत ना दिसे कोई निशान, खेले खेल हरि निरंकारया। पटने वेखे मार ध्यान, चढ़या चन्न जगत सतारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लिख्या लेख वेख वखारया। न : निरगुण रूप हरि भगवन्त, जुग जुग जोत जगांयदा। गुरमुख मेला नारी कन्त, सन्त साजण मेल मिलांयदा। मनमुखां माया पाए बेअन्त, अन्त ना गणत गणांयदा। भरम भुलाए जीव जन्त, हउमे रोग वधांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे नाम वर, शब्द संदेश इक्क सुणांयदा। गुर गोबिन्दा जोत जगा, लोकमात करे रुशनाईआ। सम्बल नगरी डेरा ला, आपणी रचन रचाईआ। शब्द सुनेहड़ा रिहा सुणा, भुल्ल रहे ना राईआ। सम्मत पन्दरां चरन दए टिका, दर द्वारे आवे फेरा पाईआ। कल्गी तोड़ा सीस इक्क

१००५
०६

चमका, नाम दस्तार इक्क चमकाईआ। बस्त्र शस्त्र इक्क सजा, शब्द खण्डा हथ्थ उठाईआ। तन गात्रा इक्क वखा, दर घर साचा वेख वखाईआ। पहली कत्तक कर्म कमा, किरती कर्म कमाईआ। निहकलंका डंका शब्द वजा, कलिजुग सोए रिहा उठाईआ। द्वार बंका दए सुहा, दर ठांडा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ।

❊ २ मग्घर २०१४ मोहण सिँघ दे गृह पिण्ड तारा चक्क ज़िला गुरदास पुर ❊

तन हरि रंग रत्तड़ा, दिवस रैण प्रभात। आपे दे समझावे मतड़ा, शब्द जणाए बोध अगाध। धाम अवल्ला इक्क वखंदड़ा, धुन उपजाए साचा नाद। जोत जगाए हरि अगम्मड़ा, वेख वखाए ब्रह्म ब्रह्माद। सन्त दुआरा आपे मलड़ा, खेले खेल आदि जुगादि। अबिनाशी करता इक्क इकल्लड़ा, सुणे सुणाए सद फरयाद। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सन्तन मेला सच दर, दर दरवेश आपे खलड़ा, देवे दरस सति सतिवाद। दर दरवेश हरि निरँकार, सन्तन दर सुहाईआ। अट्ठे पहर ख़बरदार, आलस निन्दरा विच ना आईआ। देवे नाम आत्म अन्तर कर प्यार, निरगुण मेल मिलाईआ। सरगुण मेला विच संसार, आपे खोल्ह़े बन्द किवाड़, अन्दर मन्दिर कुण्डा लाहीआ। मेट मिटाए पंचम धाड़, तन रहिण ना पाईआ। साचे पौड़े देवे चाढ़, एका डण्डा नाम फड़ाईआ। आपे होए पिच्छे अगाड़, ब्रह्मण्डां वेख वखाईआ। मेल मिलाए पुरखा नार, नारी पुरख रूप समाईआ। अट्ठे पहर नेत्र नैण रिहा उग्घाड़, हरि सन्तन वेखे थाउँ थाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग फेरा पाईआ। गुरमुख साचे सन्त दुलार, हरिजन मेल मिलांयदा। साचा मेला कन्त भतार, नारी कन्ता रूप वटांयदा। काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता जीवां जन्तां हउमे हँगता लाया बन्द किवाड़, ना कोई खोल्ह़ खुल्ह़ांयदा। अगम्म अगम्मड़ी धार सन्त सुहेले आप बणाए जोत जगाए नाड़ नाड़, बहत्तर नाड़ ताल वजांयदा। त्रैगुण माया अग्नी देवे साड़, पंज तत्त आकाश प्रकाश वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सन्तन वसे साचे घर, दासी दास आप हो जांयदा। दरसी दरस हरि नर नरायण, निरगुण रूप समाईआ। सन्त सुहेला वेखे तीजे नैण, दोए लोचन बन्द कराईआ। एका सेजा सुत्ते इक्ट्ठे रहिण, ना कोई वेख वखाईआ। नाता तुट्टे मात पित भाई भैण, साक सैण ना कोई बणाईआ। माया ममता ना वहाए डूँघे वहिण, काम क्रोध नेड़ ना आईआ। दाता दानी मिले साक सज्जण सैण, आप आपणे अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन मेला सच घर, घर साचा इक्क सुहाईआ।

साचा घर ग़रीब निवाजा, एका एक रखाया। आपे खोल्हे बन्द दरवाज़ा, आपे बन्द कराया। आपे मारनहारा आवाजा, आपे बैठा मुख छुपाया। आपे रक्खे अस्त्र शस्त्र आपे करे कराए मक्का काअबा, साचा हाजी हाजा हक्क नवाब आप हो आया। आपे जाणे पुन्न सवाबा, सवाब पुन्न ना कोई रखाया। जन भगतां अन्दर मन्दिर आप वजाए अनहद वाजा, आपणा ताल सुहाया। दस्म द्वारी रच्चया काजा, अमृत आत्म ताल सुहाया। धुर दरगाही आया भाजा, जन भगतां मेल मिलाया। आपे रचणहार काजा, सुरत सवाणी लए प्रनाया। जिस जन देवे सोहँ सो सच्चा दाजा, नार दुहागण ना कोई अख्वाया। कलिजुग अन्तिम प्रगट जोत देस माझा, गोबिन्द तेरी रक्खे लाजा, लाजावन्त आप हो आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्तन मेला सच घर, घर साचा बंक सुहाया। बंक द्वार सच घर, हरि साचे जोत जगाईआ। गुरमुख साजण देवे वर, आप आपणी बणत बणाईआ। एका रंग रंगाए नारी नर, नर नरायण वेख वखाईआ। हरिजन साचा साची तरनी रिहा तर, सर सरोवर इक्क नुहाईआ। ना जन्मे ना जाए मर, आवण जावण फंद कटाईआ। राए धर्म दा चुक्के डर, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। लाड़ी मौत ना आए कर हार शृंगार, वेस अवेस ना कोई वटाईआ। काल महांकाल गुरमुख तेरे रोवण दर, दूर दुराडे बैठे राह तकाईआ। पारब्रह्म प्रभ मिल्या साचा वर, कन्त कन्तूहल इक्क सुहाईआ। इक्क वखाए थिर घर,
१००७
०६
एका दूजा भउ चुकाईआ। तिन्नां लोकां चुक्के डर, घर चौथे आप बहाईआ। पंचम मेला हरी हरि, हरिजन साचे आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्तन मेला सचे घर, घर सुहञ्जणा इक्क सुहाईआ। घर सुहञ्जणा हरि करतार, एका एक रखाया। जोत जगाए आदि निरँजण अपर अपार, अन्ध अन्धेर मिटाया। ना कोई दिसे चार दिवार, छप्पर छन्न ना कोई रखाया। गुर दर मन्दिर मस्जिद ना दिसे हट्ट पसार, लोआं पुरीआं ना वेख वखाया। गुर पीर साध सन्त ना पावे सार, नाम निधाना ना कोई झोली पाया। ना कोई वेखे किसे करे विचार, ब्रह्मा विष्न शिव ना कोए रखाया। करोड़ तेतीसा ना करे पुकार, सुरपति राजा इन्द ना नाल रलाया। लक्ख चुरासी ना होई त्यार, पंज तत्त ना कोई पसार, पंचम मेल ना कोई मिलाया। पुरख अगम्मा आपे जाणे अगम्मड़ी कार, आप आपणे घर सुहाया। हड्ड मास नाड़ी चम्मड़ा ना कोई आकार, लोचन नैण ना कोई रखाया। आप आपणी जाणे धार, आप आपणे विच समाया। आप आपणी कर विचार, आप आपणा नाउँ धराया। सो पुरख निरँजण खेले खेल अपार, खेलणहार आप अख्वाया। निहकलंक नरायण नर नाउँ इक्क उचार, निरगुण रूप समाया। सरगुण बन्न्हे मात धार, जुग जुग आवे जावे खेले खेल भगवन भगवन्त रूप समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मा शिव देवत सुर सेवक सेवा कर परवान, प्रभ साची

१००७
०६

दया कमाया। कलिजुग अन्तिम वेखे मार ध्यान, ईसा मूसा ख़ाक रलांयदा। संग मुहम्मद चार यार होए हैरान, ना कोई संग निभांयदा। नानक गोबिन्द लिख्या लेख अपार, प्रभ लेखा पूर करांयदा। प्रगट हो विच संसार, करे कराए करनेहार, करता पुरख आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी जोत जगांयदा। साचे घर जोत जगा, लोकमात करे रुशनाईआ। साधां सन्तां रिहा उठा, आत्म तार सितार हिलाईआ। भेख पखण्डा दए मिटा, ग्रन्थ पन्थ ना कोए पढ़ाईआ। वेद पुराणां अन्त करा, पंडत पांधे रिहा समझाईआ। अञ्जील कुराना रहिणा ना, मुल्ला शेखां रिहा सुणाईआ। अहिनल हक्क ना कोई देवे नाअरा ला, हक्क हकीकत वेख वखाईआ। लाशरीक इक्क खुदा, वाहिद हरि रघुराईआ। पंडत पांधे करे जुदा, ना कोई संग निभाईआ। साध सन्त ना सके भेव गणा, घर घर बैठे धूणीआं ताईआ। किसे ना दस्सणा साचा राह, कलिजुग रैण अन्धेरी छाईआ। बिन हरि शब्द ना होए कोई सहा, ना कोई सके बचाईआ। सतिजुग साचा आप लगा, निहकलंक करे रुशनाईआ। राज राजाना दए मिटा, कोई रहिण ना पाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी ल्याए इक्क सरना, दूसर कोई रहिण ना पाईआ। एका अक्खर दए पढ़ा, जगत विद्या रहिण ना पाईआ। आप निभाए सगला साथ, संगी साथ आप हो जाईआ। प्रगट होए जिउँ रामा राम घर दसराथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे मेल मिलाईआ। गुरमुख मंग अपार, प्रभ साचे चरन द्वारया। देवे नाम अधार, अट्ठे पहर खुमारया। सोहँ शब्द जै जै जैकार, अनहद सेवा साची ला रिहा। आप सुणाए आपणी धुन सच्ची धुन्कार, सुन्न मुन्न तुड़ा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे नाम वर, गुण अवगुण ना वेख वखा रिहा। मंगे मंग बण भिखार, हरि नामे चित लाया। देवणहारा हरि दातार, जुग जुग देंदा आया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, लहिणा देणा रिहा चुकाया। शब्द गहणा करे तन शृंगार, साचा बस्त्र इक्क बणाया। नेत्र नैणां दरस अपार, धुर संजोगी मेल मिलाया। दो जहाना उतरे पार, प्रभ बेड़ा बन्ने लाया। आपे खड़़ा अद्धविचकार, दस्म द्वारी डेरा लाया। इक्क इकल्ला एकँकार, निरगुण खेल खिलाया। गुरमुख साचे कर प्यार, गुर शब्दी शब्द जणाया। शब्द गुर अपर अपार, दीपक जोती दए जगाया। दीपक जोती कर उज्यार, अज्ञान अन्धेर मिटाया। एका एक सच द्वार, गुर चरनी चित लाया। चरन कँवल सोहे बंक द्वार, मरे ना जन्मे वारे वार, आवण जावण फंद कटाया। जो जन मंगे दरस अपार, हरि दरसी दरस दिखाया। गुरमुख साचे रसन स्वास, एका शब्द जणाया। पुरख अगम्मा वसे पास, अन्दर मन्दिर डेरा लाया। आदि अन्त ना होए विनास, जुग जुग खेले खेल खेलणहार आप अख्वाया। सगला सुहेला देवे साथ, संगी साथी आप हो जाया। जिउँ अर्जन मेला त्रैलोकी नाथ,

काहना कृष्ना रूप दरसाया। सगल वसूरे जायण लाथ, जिस जन एका ओट तकाया। नाम जणाई अकथना अकथ, अकथ कथा इक्क सुणाया। सर्बकला हरि आप समरथ, देवे गुरमुख मात वड्आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत स्वासे लेखे लए लाया। रसना जिह्वा शब्द स्वास, पवणी पवण मिलाया। वेख वखाए पृथ्वी आकाश, वेखणहार दिस ना आया। गुरमुख काया मण्डल तेरी पाए रास, गोपी काहना आप हो आया। निज घर आत्म रक्खे वास, निजानंद समाया। सतिगुर पूरा शाहो शाबाश, सहिंसा रोग रहे ना राया। बिरथा जाए ना इक्क स्वास, लेखे लए लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा जगत वर, जुग जुग देंदा आया। जोग जुगत जग हथ्थ, जन भगत वड्याईआ। भगत सुहेले लए रक्ख, सिर हथ्थ समरथ रखाईआ। धुर दरगाही देवे नाम वत्थ, अमोल अमुल वखाईआ। पंच विकारा पाए नत्थ, शब्दी शब्द बंधाईआ। काया बुरज सृष्ट सबाई रिहा ढठ्ठ, थिर कोई रहिण ना पाईआ। गुर शब्द द्वारे इक्क इक्ठ्ठ, गुरमुखां मेल मिलाईआ। लेखा चुक्के तीर्थ अठ्ठ सठ्ठ, चरन धूढ़ जो जन गुर पूरे दर नुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाए साचा रथ, जुग जुग आप आपणा मेल मिलाईआ।

१००६ ०६ १००६ ०६

भगत वछल गिरधार, नर नरायण अख्वाया। अछल अछल्ल विच संसार, जुग जुग करदा आया। नाम अटल अपर अपार, आप आपणा रिहा चलाया। जल थल डूँघी कन्दर पावे सार, उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फुलाया। ब्रह्मण्ड खण्ड वेखणहार, जेरज अंड भेव ना राया। वंडे वंड नर निरँकार, नौ खण्ड वेख वखाया। दीपां लोआं इक्क अकाल, करता पुरख आप अख्वाया। सर सरोवर दए उछाल, अमृत ताल इक्क सुहाया। हरिजन उपाए साचे लाल, आप आपणी गोद उठाया। दिवस रैण करे संभाल, सेवक सेवा सच कमाया। काया मन्दिर वखाए सच सच्ची धर्मसाल, साचा मन्दिर इक्क सुहाया। जोती नूर पुरख अकाल, आप आपणा रिहा कराया। दीपक मस्तक साचे थाल, गगन गगनंतर वेख वखाया। रवि ससि करन भाल, मण्डल मण्डप वेख वखाया। धुन अनादी वजाए साचा ताल, अनहद एका राग अलाया। भाग लगाए काया माटी साची खाल, जिस जन आपणी दया कमाया। चले चलाए जुग जुग अवल्लड़ी चाल, भेव कोई ना पाया। लक्ख चुरासी हाल बेहाल, चारों कुन्ट रही कुरलाया। राए धर्म द्वारे होई दासी खाए काल महांकाल, कलिजुग चोट नगारे लाया। सन्त सुहेले गुरमुख साचे सज्जण पुरख अबिनाशी आप आपणे भाल, जोती शब्दी मेल मिलाया। सोहँ शब्द इक्क दलाल, सो पुरख निरँजण मात धराया। एका चाढ़े काया चोली रंग गुलाल, कंचन गढ़ सुहाया। सूहा वेस सुरत संभाल, चिट्टी धारी

तन्द बंधाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण मेल मिलाया। गुरमुख साजण साचा मीत, हरि शब्द करी कुड़माईआ। ना कोई गुरुदुआरा मन्दिर मसीत, काया कप्पड़ इक्क सुहाईआ। जगत अवल्लड़ी चले रीत, चाल निराली रिहा चलाईआ। थिर घर बैठ हरि अतीत, लोआं पुरीआं वेख वखाईआ। ब्रह्मा वेता गाए एका गीत, चारे वेदां लेख लिखाईआ। वेद व्यासा काया सीत, वेद व्यासा इक्क पढ़ाईआ। राम रामा वसया चीत, लंका गढ़ दहिसर तुड़ाईआ। काहना कृष्ना परखे नीत, दुष्ट हँकारी रहिण ना पाईआ। कलिजुग वेखे हस्त कीट, ऊँचां नीचां मात लड़ाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अनडीठ, नेत्र नैण ना कोई दरसाईआ। मनमुख जीव होए कौड़े रीठ, अमृत फल ना कोई खवाईआ। गुर सतिगुर पूरा सुत्ता दे कर पीठ, दिवस रैण ना लए अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। साचा मेला सच सुल्तान, काया चोली रंग चलूलया। मिले मेल श्री भगवान, खेले खेल कन्त कन्तूहलया। आत्म जोती देवे ब्रह्म ज्ञान, आप चुकाए लहिणा देणा पिछला मूलया। नाम भगती साचा दान, लोकमात फल फुलवाड़ी एका फुल अन्तिम फूलया। चरन धूढ़ सच्चा इशनान, दुरमति मैल गंवाए दूलो दूलया। अमृत आत्म पीण खाण, उलटा करे नाभ कौलया। एका मन्दिर एका अन्दर एका राग अनादी गाण, पंचम मेला सखा सुहेलया। लक्ख चुरासी पुण छाण, शब्द सरूपी बैठ बिबान, लोआं पुरीआं मार ध्यान, हरिजन साचा इक्क वरोल्लया। दाता दानी हरि दयावान, दया निध विच जहान, गुरमुख तोले साचा तोल्लया। पारब्रह्म ब्रह्म सुल्तान, अट्ठे पहर निगहबान, आदि अन्त कदे ना डोल्लया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, हर घट अन्दर रिहा बोल्लया। हर घट अन्दर आपे बोल, आपणी रचन रचाईआ। जन भगतां पड़दा देवे खोल्ह, दूई द्वैती मेट मिटाईआ। काया धरती जाए मौल, रुत्त बसन्त इक्क सुहाईआ। देवे वड्याई उप्पर धौल, धरनी धर अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण नेत्र नैण दरस परस बिगसाईआ। दर्शन पेखत नैनन नैणां, निज घर आत्म वसया। इक्क वखाए चरन प्रीत, राह साचा एका दस्सया। शब्द सुणाए सुहागी गीत, कोटन कोट करे प्रकाश रवि सरसया। अट्ठे पहर दिवस रैण परखणहारा नीत, कलिजुग मेट मिटाए रैण अन्धेरी मस्सया। हरिजन काया करे ठंडी सीत, अमृत मेघ आत्म अन्तर गुर पूरा साचा वसया। हरि का शब्द हरिजन लग्गे मीठ, बेमुख जाए दर तों नस्सया। पुरख अबिनाशी इक्क इकल्ला सदा अनडीठ, गुरमुखां अन्दर मन्दिर वसया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सुहाए इक्क घर, घर साचे आपे वसया। साचा घर उच्चा मन्दिर, हरि साचे जोत जगाईआ। भाग लगाए डूँघी कन्दर, निर्मल बाती इक्क वखाईआ।

बजर कपाटी तोड़े जन्दर, एका खण्डा शब्द लगाईआ। चारों कुन्ट जीव जन्त साध सन्त भौंदे बन्दर, थिर घर ना कोई वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला इक्क द्वार, द्वार बंका इक्क वखाईआ। द्वार बंक हरि भगवन्त, एका एक रखाया। आप उधारे जीव जन्त, साध सन्त होए सहाया। जुग जुग बणाए साची बणत, बेड़ा अपणे हथ्थ रखाया। आपे होए पति पतिवन्त, पतिपरमेश्वर आप अख्वाया। जुग जुग महिंमा गणत अगणत, लेखा लेख ना कोई लिखाया। गुरमुख नारी पुरख अबिनाशी मिल्या साचा कन्त, कन्त सुहाग इक्क हंढाया। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, रंग मजीठ इक्क रंगाया। दाता दानी धन्न धन्नया वड धनवन्त, नाम ख़जाना इक्क वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां आत्म अन्तर रिहा भर, साची झोली नाम भराया। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सेवक सेवा रिहा कराया।

आदि अन्त जोती नूर, हरि आपणा आप कराईआ। शब्द नाद साची तूर, आदि जुगादि रिहा सुणाईआ। आपे वसे नेड़े दूर, हर घट बैठा आसण लाईआ। जन भगतां सदा हाज़र हज़ूर, नेत्र नैणा दरस दिखाईआ। नाता तुट्टे कूड़ो कूड़, सच सुच्च समाईआ। चरन बख्शे साची धूढ़, मूर्ख मूढ़ दए वड्याईआ। एका रंग चाढ़े गूढ़, उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर चेला आप उपाईआ। एका गुर हरि करतार, जुग जुग आप अख्वांयदा। सृष्ट सबाई पावे सार, लक्ख चुरासी बणत बणांयदा। साध सन्त लए उभार, आप आपणा कर्म कमांयदा। एका देवे नाम अधार, सच वस्त झोली पांयदा। पूर्ब कर्मां रिहा विचार, लहिणा देणा मूल चुकांयदा। साचे नैणां दरस अपार, निरगुण रूप समांयदा। सरगुण मेला विच संसार, सति सन्तोखी जाम प्यांअदा। जन भगतां उठाए भार, आप आपणे कंध रखांयदा। शब्द पहनाए साचा हार, तन शृंगार वखांयदा। लोकमात कर प्यार, पारब्रह्म हरि दया कमांयदा। चेला मेला अपर अपार, द्वार बंका आप सुहांयदा। खेले खेल खेलणहार, आप आपणे रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चेला चेतन्न रूप रखांयदा। साचा चेला हरि बणा, आपणा रंग रंगांयदा। एका शब्द दए जणा, एका धुन उपजांयदा। एका गुण दए वखा, अवगुण मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा चेला दर सुहांयदा। गुर गोबिन्दा साचा चेला, एका एक अख्वाया। पुरख अबिनाशी करया मेला, विच विचोला नाम धराया। कलिजुग अन्तिम खेले होला, लाल गुलाला रंग लगाया। एका शब्द सुणाए साचा ढोला, नौ खण्ड पृथ्वी आप जणाया। सत्तां दीपां एका

१०११ ०६

बोला, एका नाअरा लाया। जन भगतां रंगे काया चोला, रंगणहार आप अख्वाया। कलिजुग अन्तिम बणया तोला, निहकलंकी जामा पाया। लक्ख चुरासी तेरा काया मन्दिर हरि हरि आपे फोला, लेखा कोई रहिण ना पाया। साधां सन्तां रहिण ना देवे पड़दा उहला, ना कोई सके भेव छुपाया। जन भगतां देवे नाम अनमोला, मुल्ल कोई ना लाया। ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां पाए रौला, चारों कुन्टां होए दुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द चेला इक्क बणाया। गोबिन्द चेला सुण पुकार, प्रभ वेख वेख वखांयदा। वेखे खेल वेखणहार, लोआं पुरीआं भरम भुलांयदा। धरत मात रही पुकार, ना कोई धीरज धीर धरांयदा। मनमुख जीव होए विभचार, नार दुहागण कन्त सन्त ना कोई हंढांयदा। मदिरा मास करन आहार, तन श्रृंगार ना कोई वखांयदा। फिर फिर थक्के नौ द्वार, साचा घर ना कोई सुहांयदा। गोबिन्द चेला करे प्यार, प्रभ अग्गे सीस झुकांयदा। पुरी अनन्द ना कोई द्वार, साचा चन्द ना कोई चढ़ांयदा। बन्द बन्द ना तन कोई कटार, बस्त्र शस्त्र ना कोई सजांयदा। इक्क इकल्ला वेखे प्या द्वार, नेत्र नैणां नीर वहांयदा। सच महल्ला अन्तिम दए उसार, प्रभ आपणी दया कमांयदा। सम्बल नगर कर उज्यार, जोती नूर जगांयदा। सोहँ खण्डा तेज कटार, तन गात्रे आप रखांयदा। चिट्टे अस्व हो अस्वार, दो जहानां फेरा पांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव करे ख़बरदार, एका डंका आप वजांयदा। राज राजानां शाह सुल्तानां रिहा ललकार, राउ रंकां आप जगांयदा। वासी पुरी घनका, भगत उधारे जिउँ जनका, आप आपणी दया कमांयदा। चार वरन चार कुन्ट दहि दिशा वजाए एका डंका, एका ताल तलवाड़ा रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा चेला आप रखांयदा। साचा चेला कर परवान, प्रभ साचा खुशी मनाईआ। एका देवे सोहँ ज्ञान, सोहँ सो सच पढ़ाईआ। रसना चिल्ला तीर कमान, साचा खण्डा हथ्थ फड़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी एका आण, सत्तां दीपां करे जणाईआ। राज राजान शाह सुल्तान सर्ब मिट जाण, थिर कोई रहिण ना पाईआ। गुरमुख साचे चतुर सुजान, प्रभ पकड़ उठाए फड़ फड़ बांहींआ। शब्द बिठाए इक्क बिबान, आप आपणा रिहा उडाईआ। आवण जावण चुक्के कान, जो जन रहे सरनाईआ। दो जहानी देवे माण, थिर घर साचा इक्क सुहाईआ। एका राग सुणाए कान, साचा ताल इक्क वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर चेला इक्क वखाईआ। चेला गुर हरि गोबिन्द, गोबिन्द रूप समाया। आप मिटाए आपणी चिन्द, आपणा भरम मिटाया। सृष्ट शबाई लाई निन्द, मानस जन्म ना वेख वखाया। दाता जोद्धा सूरा वड मृगिन्द, गुणी गहिंद आप हो आया। अमृत आत्म धार वहाए सिन्ध, साचा सागर इक्क भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबन्द चेला दर सुहाया। गोबिन्द नाम एका दुड़ा, एका बूझ बुझाईआ। एका पौड़े रिहा

चढ़ा, एका डण्डा रिहा वखाईआ। ब्रह्मण गौड़ा आप अख्वा, पूत सपूता आप अख्वाईआ। उच्चा टिल्ला वेख वखा, साचे मन्दिर डेरा लाईआ । साची सिला अग्गे टिका, आपे बन्द रखाईआ। लेखा ना सके कोई लिखा, वेद पुराण भेव ना राईआ। खाणी बाणी रहे गा, गुणवन्ता दिस ना आईआ। अञ्जील कुरान रहे कुरला, अल्ला हू हू नाअरा लाईआ। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, वेख वखाणे हर घट थाँईंआ। कलिजुग अन्तिम लहिणा देणा दए चुक्का, पूर्ब लहिणा झोली पाईआ। भाणा सहिणा रिहा सुणा, चार यारां वेख वखाईआ। अल्ला राणी मारे धाह, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। ईसा मूसा वेख खुदा, खुदी खुदाई रिहा जणाईआ। अन्तिम होणा पया जुदा, जगत विछोड़ा आप कराईआ। पुरख अबिनाशी इक्क घोड़ा दुड़ा, वाग आपणे हथ्थ रखाईआ। सम्बल नगरी रिहा सुहा, साढे तिन्न हथ्थ लम्बा चौड़ा बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अक्खर रिहा सखाईआ। एका अक्खर हरि भगवान, कलि अन्तिम वेख वखानया। धुर दरगाही धुर फ़रमाण, आप जणाए दो जहानया। रसना जिह्वा गीत सुहागी एका गाण, पायण पद निरबानया। सो पुरख निरँजण मेहरवान, वड दाता दानी दानया। एका शब्द इक्क ध्यान, एका राग अल्लानया। एका जोती नूर महान, अन्ध अन्धेर मिटानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन बख्शे सच ज्ञानया। चार वरन हरि शब्द जणाई, एका एक जै जैकारा। सोहँ सो सच पढ़ाई, लोआं पुरीआं करे पसारा। अन्त त्रैगुण माया करे लड़ाई, कलिजुग अन्तिम वारा। पकड़ उठाए फड़ फड़ बांही, राज राजाना शाह सुल्ताना वड सिक्दारा। खेले खेल हरि रघुराई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, इक्क इकल्ला शब्द महल्ला जलां थलां फेरा पाईआ। एका शब्द हरि जणा, एका राग अल्लांयदा। चार वरनां इक्क सरना, सच सरनाई हरि वखांयदा। ऊँचां नीचां भेव मिटा, राज राजानां ख़ाक मिलांयदा। गऊ ग़रीब निमाणे गले लगांयदा। सम्मत चौदां लेख रिहा लिखा, लेखा आपणे हथ्थ रखांयदा। चौदां लोकां रिहा हिला, इक्क हुलारा आप लगांयदा। ब्रह्मा रोवे मारे धाह, अट्ठे नेत्र नीर वहांयदा। पुरी ब्रह्म ना मिले थाँ, वेला अन्तिम आंयदा। पुरख अबिनाशी इक्क सुहाए साचा थाँ, वेला अन्तिम आंयदा । पुरख अबिनाशी इक्क सुणाए साचा नाँ, साचा जाम प्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अक्खर वेख वखांयदा। साचा शब्द सुत बलवाना, हरि साचा मात उपांयदा। नाम शस्त्र तीर कमाना, साचे चिल्ले आप चढ़ांयदा। वेखे खेल जोद्धा सूर बली बलवाना, दो जहानां पार फेरा पांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी तेरा इक्क निशाना, लक्ख चुरासी पार करांयदा। राए धर्म बन्ने गाना, प्रभ साची सेवा लांयदा। लाड़ी मौत हो प्रधाना, घर घर नाच वखांयदा। झूठ जूठ कलि मिटे निशाना,

अन्तिम रहिण ना पांयदा। सच सुच्च इक्क वरताना, एका राह चलांयदा। प्रगट होए हरि मर्द मरदाना, आप आपणी जोत जगांयदा। सत्तां दीपां ब्रह्म ज्ञाना, इक्क शब्द जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका मार्ग सृष्ट सबाई वखांयदा। सृष्ट सबाई कर ध्यान, हरि साचे जोत जगाईआ। वरना बरना इक्क ज्ञान, एका दूजा भउ मिटाईआ। तीजे दरस हरि भगवान, चौथे पद समाईआ। पंचम बहि बहि सारे गाण, आत्म घर वज्जे वधाईआ। छेवें छप्पर छन्न ना कोई मकान, हरि बैठा जोत जगाईआ। सति पुरख निरँजण हरि मेहरवान, एका अलख जगाईआ। अट्ठ तत्त ना दर परवान, मन मति बुध पई लड़ाईआ। नौ दर तेरी झूठ दुकान, कलिजुग कूड़ा रिहा चलाईआ। माया ममता पीण खाण, हउमे तृष्ना रोग गंवाईआ। मिले नाम ना सच निशान, चारों कुन्ट रैण अन्धेरी छाईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद होए वैरान, रसना जिह्वा सर्ब हलकाईआ। अन्दर बहि बहि सारे गाण, गोबिन्द गुर ना कोई मिलाईआ। नाता तुटा पीण खाण, मदिरा जाम इक्क प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी देवे फाँसी, राए धर्म हत्थ फड़ाईआ। राए धर्म रिहा ललकार, लोकमात लए अंगड़ाईआ। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, कलिजुग वेला अन्तिम आईआ। कलिजुग रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नीर वहाईआ। नानक गोबिन्द बण लिखार, लेखा गया लिखाईआ। वेद व्यासा हो त्यार, आपणी कलम रिहा चलाईआ। ब्रह्मण गौड़ा पूत सपूता होए उज्यार, उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाईआ। निहकलंका लए अवतार, एका डंका नाम वजाईआ। राउ रंकां करे ख़बरदार, शाह सुल्तानां रिहा हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, इक्क इकल्ला खेल खिलाईआ। इक्क इकल्ला हरि गोबिन्दा, अकल कला समाया। गुरमुख उपाए साची बिन्दा, आप आपणी दया कमाया। अन्दर मन्दिर बजर कपाटी तोड़े जिंदा, एका खण्डा हत्थ उठाया। मनमुख जीव आप लगाए आपणी निन्दा, मुख निन्दया इक्क रखाया। जन भगतां अमृत धार वहाए सागर सिन्धा, सर सरोवर इक्क वखाया। प्रगट होए नर हरि हरि वड मृगिन्दा, जोद्धा सूरबीर आप हो आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका शब्द साचा नाउँ आप चलाए अगम्म अथाहो, बेपरवाह फेरा पाया। बेपरवाह बेऐब, हरि एका एक अख्वांयदा। सृष्ट सबाई साचा नायक, साची सिख्या आप समझांयदा। ना कोई शरअ ना शरायत, हक्क हकीकत वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत चौदां रंग रंगांयदा। सम्मत चौदां लेख लिखा, ईसा मूसा रिहा उठा, अञ्जील कुरान करे कुड़माईआ। मक्का मदीना लाए ढाह, अन्त रहिण ना पाईआ। संग मुहम्मद चार यार रिहा सुणा, वेला अन्तिम पाईआ। दूसर ना कोई जाणे ना सके भेव जणा, भेव कोई

ना पाईआ। गुर गोबिन्दा वेखे थाउँ थाँ, नाल रलाया बेपरवाहीआ। गुरमुख उधारे जिउँ जन जनका, आप आपणी गोद उठाईआ। चारों कुन्ट शब्द जैकारा एका ला, एका राह चलाईआ। नाम निरँजण नेत्र पा, गुरमुख दया कमाईआ। दूई द्वैती पड़दा लाह, एका जोत करे रुशनाईआ। साचा शब्द इक्क सुणा, अनहद ताल वजाईआ। आत्म सेजा दए सुहा, प्रभ फूलन बरखा लाईआ। जोत निरँजण संग रला, मेल मिलाए बेपरवाहीआ। आप आपणे अंगण लए उठा, कर कर लंमीआं बांहीआ। इक्क मृदंगा रिहा वजा, आप सुणाए थाउँ थाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण साचे वर, दर मेला सहिज सुभाईआ। गुरमुख बाल निधान, गुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। देवे नाम निशान, दो जहानां रिहा झुलाईआ। इक्क वखाए सच मकान, थिर घर नाउँ उपाईआ। चौदां हट्टां इक्क दुकान, काया मन्दिर इक्क टिकाईआ। आपे बैठे शाह सुल्तान, साचे कंडे तोल तुलाईआ। साचा कंडा ब्रह्म ज्ञान, आप आपणे हथ्थ रखाईआ। जन भगतां वेखे मार ध्यान, अट्ठे पहर सेव कमाईआ। अमृत आत्म देवे पीण खाण, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। तीर निराला मारे बाण, साची मुखी इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे साची सेव लगाईआ। गुरमुख साचा जगत निधान, गुर पूरे वड वड्याईआ। एका देवे ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाईआ। एका राग सुणाए कान, छत्ती
१०१५ ०६ राग भेव ना राईआ। काया मन्दिर सच मकान, गुर बैठा आसण लाईआ। हरिजन साचे कर पछान, चार कुन्ट दहि दिशा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजन मेल मिलाईआ। गुरमुख साजन मेल मिला, आपणी दया कमांयदा। शब्द सरूपी बण मलाह, आप आपणा कर्म कमांयदा। हरिजन बैठे थाउँ थाँ, सृष्ट सबाई खोज खुजांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, एका साची चोग चुगांयदा। आदिन अन्ता देवे ठंडी छाँ, एका पड़दा नाम पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण मेल मिलांयदा। हरि सज्जण मेला शाह शाबाश, दर मन्दिर इक्क सुहाया। वेख वखाणे पृथ्वी आकाश, डूँघी कन्दर फेरा पाया। लेखे लाए स्वास स्वास, जो जन रसना रिहा गाया। काया मण्डल पावे रास, आप आपणा रूप वटाया। हरिजन होए दासी दास, दिवस रैण सेव कमाया। आदि अन्त ना होए विनास, जुग जुग लेखा लेख वटाया। जन भगतां हिरदे अन्दर रक्खे वास, निज घर आत्म डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग विछड़े जग मेल कर, कलि लहिणा रिहा चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा मेला मेल मिलाया। साचा मेला हरि भगवन्ता, भगवन रूप समाया। गुरमुख उधारे साचे सन्तां, सतिगुर दया कमाया। जुग जुग बणाए बणता, बेड़ा बन्नृणहार

आप अखवाया। मनमुख जीवां माया पाए बेअन्ता, ना कोई सके पड़दा लाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे वेख दर, दर दरवेशा फेरी पाया। हरि शब्द नगारा वज्जया, मनमुख रहे डोल। काल द्वारे फिरे भज्जया, गुरदर मन्दिर रिहा फोल। अन्त पड़दा किसे ना कज्जया, भुल्लया धुर दरगाही कीता कौल। गुरमुख विरला गुर चरन द्वारे बहि बहि सज्जया, काया धरती रही मौल। लक्ख चुरासी जो घड़या सो भज्जया, प्रभ तोलणहारा पूरे तोल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, इक्क वजाए मृदंगा साचा ढोल। नाम मृदंग हरि वजा, लोआं पुरीआं रिहा सुणाईआ। मन मुग्ध गूढ़ी नींद रहे सवा, उप्पर माया पड़दा पाईआ। गुरमुख साचे लए जगा, आत्म ब्रह्म जणाईआ। जोत निरँजण इक्क टिका, दीपक दीप करे रुशनाईआ। नेत्र नैणां वेख वखा, साक सैण भैणा भाईआ। साचा गहणा तन पहना, हार शृंगार आप कराईआ। दर घर साचे बहिणा इक्क सिखा, सिक्खी सिख्या रिहा समझाईआ। गोबिन्द मेला दए मिला, मेल विछोड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। कल्गी तोड़ा दए दिखा, सीस जगदीस आप टिकाईआ। साचे घोड़े दए चढ़ा, सोलां कलीआं आसण लाईआ। पहला पौड़ा आप वखा, पद चौथे जन समाईआ। मिट्ठा कौड़ा वेख वखा, कलिजुग अन्तिम दए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका डंक नाम नगारा, चार कुन्ट रिहा वजाईआ। नाम नगारा अनहद ढोल, अनादी पुरख वजाया। नौ खण्ड पृथ्वी तेरा रच्चया घोल, सत्तां दीपां अखाड़ा इक्क बणाया। सम्मत पन्दरां हल्ला रिहा बोल, अलख निरँजण एका अलख जगाया। काया गठड़ी सभ दी रिहा फोल, नाम वस्त कोई ना कोल रखाया। कलिजुग विकारा अन्दरे अन्दर रिहा बोल, पंज तत्त रिहा शरमाया। मनमुख जीव रहे अनभोल, कलिजुग वेला अन्तिम आया। पुरख अबिनाशी सच दुआरा एका खोल्ह, एका रिहा वणज कराया। अमृत आत्म देवे साची पौहल, एका साचा जाम प्याया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नाम मृदंगा हथ्थ फड़, त्रै लोकां रिहा सुणाया। त्रै लोकां हरि जणाई, अवण गवण मिटाया। चौदां लोकां रिहा उठाई, आप आपणा वेख वखाया। चौदां तबकां रिहा हिलाई, चार यार संग मुहम्मद दए दुहाया। लोकमात लए अंगड़ाई, गुर गोबिन्द वेख वखाया। नानक शब्द करी कुड़माई, जोत निरँजण तेल चढ़ाया। पंचम सखीआं गायण चाँईं चाँईं, साचे मन्दिर मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका डंका राउ रंकां रिहा सुणाया। एक डंक शब्द जैकारा, हरि साचा आप सुणांयदा। मानस मानुख गए हारा, लेखा कोए ना वेख वखांयदा। त्रैगुण माया कर कर वेस पंज तत्त करे शृंगारा, अट्ठ तत्त रहिण ना पांयदा। नौ दर तेरा जगत दुआरा, मन मति घर सुहांयदा। गुरमुख सोहे सच दुआरा, नर निरँकारा वेख वखांयदा।

१०१६ ०६

मिले मेल अगम्म अपारा, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहांयदा। सोहँ शब्द तेरा सच नगारा, सो पुरख आप वजांयदा। हँ हँगता रोग निवारा, साची संगता मेल मिलांयदा। जो जन ढहि पए दुआरा, काल महांकाल नेड़ ना आंयदा। भव सागर कराए पार किनारा, काया गागर वेख वखांयदा। एका देवे शब्द हुलारा, दस्म द्वारी डेरा लांयदा। दस्म द्वारी अधविचकारा, प्रभ साचा खेल खिलांयदा। सुन्न अगम्मो पार किनारा, सोहँ देस सुहांयदा। ना कोई पुरख ना कोई नारा, ना कोई बणत बणांयदा। मिले मेल इक्क एकँकारा, एका एक अख्वांयदा। आप सुहाए सच दुआरा, दर दरबारी आप हो जांयदा। सन्त सुहेले कर प्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, शब्द डंक सच नगारा, गुरमुख साचे आप सुणांयदा। कलिजुग माया रही जाग, मनमुखां रही सवाईआ। घर घर अन्दर लाए आग, पंज तत्त जुदाईआ। अट्ठे पहर रही भाग, वेला अन्तिम आईआ। अन्दर मन्दिर दीपक जोत ना जगे चिराग, धूआँधार वखाईआ। मानस होए हँस काग, जिह्वा काग वांग कुरलाईआ। काया चोली लग्गा दाग़, ना कोई मात धुआईआ। गुरसिक्खां कराए चरन धूढ़ी मजन माघ, आप आपणी दया कमाईआ। सोहँ शब्द तन बन्ने साचा ताग, धुर दरगाही वेख वखाईआ। मन उपजाए इक्क वैराग, मन तन लेखे लाईआ। आप आपणे हथ्थ रक्खे वाग, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ। धुन आत्मक मारे एका अनादी आवाज़, हरिजन सोए रिहा जगाईआ। सम्बल देस लाउणा भाग, गुर गोबिन्द नेत्र नैणां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका नाम मृदंगा रिहा वजाईआ। तन मन्दिर जन सच गृह, हरि मन्दिर हरि रघुराईआ। पुरख अबिनाशी एका रहै, दिवस रैण सेज वछाईआ। अमृत आत्म वहाए साची नैं, एका धारा रिहा चलाईआ। शब्द अनादी एका कहि, राग रागनी भेव ना पाईआ। दरस अमोघा एका दए, नूरो नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मन्दिर इक्क सुहाईआ। काया मन्दिर साचा गृह, साची पूज पुजाईआ। एका अक्खर एका नाम अबिनाशी करता आपणा लए, एका दूजा भेव मिटाईआ। तीजे नेत्र काया खेत्र वेखणहार आपे रहे, घर चौथे बूझ बुझाईआ। पंचम मेला हरि गुण कहे, शब्दी शब्द समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन तेरा साचा घर, दर मन्दिर इक्क सुहाईआ। साचे मन्दिर साचा हवन, प्रभ साचा आप करांयदा। आहूती पाए अवण गवण, आप आपणी दया कमांयदा। सेवा लाए पवणी पवण, पवण स्वासी लेखे लांयदा। दाता दानी दुष्ट दमन, हँकार विकारा मेट मिटांयदा। जूठ झूठ राम रवण, राम रामा आप अख्वांयदा। एका एक नुहाए साचा नहावण, दुरमति मैल गंवांयदा। बिन हरि सन्त ना जाणे कोए कवण, मूर्ख मूढ़ भेव ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, गुरमुख तेरा साचा गृह धाम अवल्ला, आत्म सेजा इक्क सुहांयदा। काया मन्दिर शब्द बिबाणा, हरि साचा आप रखांयदा। जन भगतां देवे धुर फ़रमाणा, बोध अगाधा आप जणांयदा। भरम भुलाए राजा राणा, शाह सुल्तानां दिस ना आंयदा। जिस जन बख्शे चरन ध्याना, चरन चरनोदक मुख प्यांअदा। अमृत आत्म देवे नाम निधाना, सरगुण मेल मिलांयदा। पार कराए दो जहानां, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। नाम निरँजण देवे सच निशाना, एका अलख जगांयदा। वेखे खेल गोपी काहना, मण्डल मण्डप रास रचांयदा। हरिजन देवे पद निरबाणा, परम पुरख समांयदा। आदि जुगादी खेल महाना, खेलणहार दिस ना आंयदा। जन भगतां एका मेला मेल श्री भगवाना, एका दूजा भउ मिटांयदा। तीजे नेत्र इक्क ज्ञाना, घर चौथा आप सुहांयदा। पंचम सुणाए साचा गाणा, अनहद सेवा लांयदा। छेवें दर पुरख सुल्ताना, आप आपणा रूप वटांयदा। सत्तवें घर गुण निधाना, सति पुरखा नाउँ धरांयदा। अट्ठां तत्तां बेपछाना, भेव कोई ना पांयदा। नौ दर भौंदे जीव नादाना, साधां सन्तां विच फिरांयदा। दसवें जोत प्रकाश एका एक खेले खेल महाना, हरि साजन मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख काया साचा मन्दिर, गुरदुआरा इक्क सुहांयदा। गुरुदुआरा साचा मन्दिर, प्रभ साचे जोत जगाईआ। भाग लगाए डूँघी कन्दर, दिवस रैण करे रुशनाईआ। आपे तोड़नहारा जन्दर, आपे बन्द कराईआ। मेल मिलावा
१०१८ अन्दरे अन्दर, आत्म ताकी इक्क खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग विछड़े जग मेल हरि, १०१८
०६ आप आपणी बूझ बुझाईआ। जग मेले जोग जुगत है, पारब्रह्म अनाथा। जन भगतां देवे साची मुक्त है, दो जहानां सगला ०६
साथा। बेमुख ना जाणे मूर्ख मुग्ध है, मिले नाम ना सच्चा राथा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण मीत दर, दरस दिखाए दया कमाए सगल वसूरा लाथा। सगल वसूरा चिन्त रोग मिटांयदा। देवे दरस इक्क अमोघ, हउमे रोग गंवांयदा। नाम चुगाए साची चोग, काग हँस बणांयदा। मिल्या मेल धुर संजोग, जगत विछोड़ा मात कटांयदा। आत्म सेजा साचा रस एका भोग, हरि भोगी आप भुगांयदा। सति पुरख आप जणाए आपणा जोग, आप आपणी भगती लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मन्दिर साचा वर, दर सुहञ्जणा इक्क वखांयदा। गुरमुख काया दर सुहञ्जणा, हरि शब्द वज्जे वधाईआ। दीपक जोती जगे निरँजणा, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। मिले मेल दर्द दुःख भय भंजना, सहिंसा रोग रहे ना राईआ। काल नगारा लक्ख चुरासी अन्तिम सिर ते वज्जणा, थिर कोई रहिण ना पाईआ। जो घड़या सो भज्जणा, राए धर्म दए सज़ाईआ। गुरमुख तेरा गुर पूरे पड़दा कज्जणा, नाम दोशाला उप्पर पाईआ। मिल्या मेल हरि साचे सज्जणा, नर नरायण रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मन्दिर बैठा

वड़, दिस किसे ना आईआ। हरिजन मन्दिर सच महल्ला, हरि साची रचन रचाईआ। आपे बैठा इक्क इकल्ला, अकल कला अख्वाईआ। किसे हथ्थ ना आवे जलां थलां, उच्चे टिल्ले डूँघी कन्दर जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी कोटन कोट रहे फेरीआं पाईआ। जन भगत दुआरा आपे मल्ला, जुग जुग आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। जोती शब्दी पवणा रला, रूप अनूपा सति सरूपा शाहो भूपा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मन्दिर साचा सर, सर सरोवर इक्क सुहाईआ। सर सरोवर साचा ताल, काया नगर खेड़ा। माणक मोती रिहा उछाल, जन भगतां बन्ने मात बेड़ा। एका दए नाम दलाली वड कृपाल, लक्ख चुरासी आवण जावण चुक्के गेड़ा। जगत विछड़े जुग लए भाल, कलिजुग अन्तिम करे निबेड़ा। फल लगाए काया डाल, जूठ झूठ पंचम चुकाए झेड़ा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे साचा घर, साचा मन्दिर अन्दर नर नरायण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन द्वार हरि निरँकार इक्क वखाए खुल्ला वेहड़ा ।

१०१६
०६

✻ ११ मग्घर २०१४ बिक्रमी गुरमुख सिँघ दे गृह पिण्ड भलाई पुर डोगरा ज़िला अमृतसर ✻

१०१६
०६

जुग करता जग आप हरि, हरि हरि रचन रचाईआ। सृष्ट सबाई खोल दर, लक्ख चुरासी डेरा लाईआ। वेख वखाए नारी नर, नर नरायण रूप समाईआ। आप आपणी करनी रिहा कर, भेव कोई ना पाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव मंगण दर, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। अबिनाशी करता ना जन्मे ना जाए मर, खेले खेल हर घट थाँईआ। जगत जोग जुग आपणा कर, जग विद्या करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा भेख वटाईआ। जुग दाता हरि निरँकार, जुग जुग वेस वटाया। लोकमात लै अवतार, आप आपणा कर्म कमाया। खेले खेल विच संसार, खेलणहार दिस ना आया। जोत निरँजण कर उज्यार, अन्दर मन्दिर डेरा लाया। आपे करे बन्द किवाड़, खोलणहार आप हो आया। वेख वखाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़, उच्चे टिल्ले फोल फुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग खेलणहार, जग आपणा खेल खलाया। जग खेलणहार हरि समरथा, सर्बकला समाईआ। आप चलाए आपणा रथा, रथ रथवाही हरि रघुराईआ। आपे जाणे आपणी कथा, वेद कतेब खाणी बाणी सेवा लाईआ। जुग जुग जगत चलाए साची गाथा, नाम विद्या इक्क पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग मेला जग मेल मिलाईआ। मेलणहार हरि निहकरमा, कर्मी कर्म कमाया। जाणे जणाए धर्मी धर्मा, धर्म कर्म आपणे हथ्थ रखाया। आप वटाए वरनी

वरना, ज़ात पात भेव ना राया। लक्ख चुरासी एका सरना, हरि हरि रूप समाया। इक्क खुल्हाए साचा दरना, दीप लोअ पाताल आकाश एका रंग रंगाया। करोड़ तेतीसा दर द्वारे ढहि पए प्रभ साची सरना, नेत्र नैणी नीर वहाया। पंखी पंछी तरवर सरवर हरि हरि भाणा सिर ते जरना, हरिजन भाणे विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता जग आप प्रभ, आप आपणा खेल खिलाया। जग जीवण जग जागया, जागरत जोत जगाईआ। नाम शब्द इक्क अनरागया, राग रागनी भेव ना पाईआ। एका मन्दिर एका अन्दर एका धुन एका शब्द वजाए साचा वाज्जया, ताल आपणे हथ्थ रखाईआ। एका नाद इक्क ब्रह्माद एका हरि हरि गाज्जया, त्रैलोक करे जणाईआ। दो जहानी दर दरवेशा दिवस रैण फिरे भाज्जया, पारब्रह्म वड वड्याईआ। चार जुग तेरा रच्चया काज्जया, कलिजुग अन्त करे कुड़माईआ। लक्ख चुरासी देवे दाज्जया, नौ खण्ड पृथ्वी सगन मनाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव मारे आवाज़या, धरत मात वेख वखाईआ। करोड़ तेतीसा बैठा इक्क जहाज्जया, आप चलाए बेपरवाहीआ। भगत जनां हरि रक्खे लाज्जया, एका विद्या नाम पढ़ाईआ। आपे सोया आपे जागया, आलस निन्दरा विच ना आईआ। हरिजन हँस बणाए कागया, एका साची चोग चुगाईआ। मेट मिटाए राजन राज्जया, शाह सुल्तान आप अख्वाईआ। भेख वटाए देसन माज्झया, सूरबीर आप हो जाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम रक्खे लाज्जया, निहकलंका नाउँ रखाईआ। गुर गोबिन्दे पड़दा काज्जया, गोबिन्द गढ़ सुहाईआ। संग मुहम्मद चार यार करे एका हाज्जया, मक्का काअबा दए दुहाईआ। अन्दर मन्दिर फिरे भाज्जया, मठ शिवदवाला दए दुहाईआ। वरन बरन हरि साचे साजन साज्जया, कलिजुग अन्तिम दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग रचना जग आप कर, वेखणहार आप अख्वाईआ। वेखणहार हरि करतार, हरि हरि रंग समाया। कलिजुग अन्तिम लए अवतार, वरनां बरनां मेट मिटाया। राउ रंकां इक्क प्यार, एका नाम जपाया। एका खण्डा तेज कटार, एका तन पहनाया। एका अमृत आत्म धार, निझर रस मुख चुआया। एका रूप अगम्म अपार, एका राम अख्वाया। एका शब्द कर प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करता जग वेस हरि, हरि हरि आप कराया। हरि नामा जग रत्तड़ा, जुग जुग खेल खिलाए। आपे दे समझाए मतड़ा, गुर शब्दी शब्द जणाए। सतिगुर साजण मीत सरन सरनाई हरि प्रभ ढठ्ठड़ा, मार्ग एका एक वखाए। लेखा लेख वखाए अट्ठ सट्ठड़ा, लहिणा देणा मूल चुकाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जग नैणा जग मुखड़ा रसना हरि हरि नाम ध्याए। नाम रस हरि हरि मीठा, एका एक रखाया। जन भगतां देवे जगत जुग अनडीठा, दिस किसे ना आया। त्रैगुण माया तपे अंगीठा, प्रभ साचे आप तपाया। मनमुख जीव कौड़ा

१०२० ०६

रीठा, अन्तिम भन्न वखाया। हरिजन मेला साचे मीता, मेलणहार आप अख्वाया। वेख वखाए वेदी बेदी अठारां ध्याए गीता, नेतन नेता भेव वटाया। गावत गाए राम सीता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जोती जग कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर मिटाया। हरि जोती नूर हरि प्रकाश, हरि हरि जोत जगाईआ। आदि पुरख सदा अबिनाश, प्रभ आप अख्वाईआ। जुग जुग होया जन दास, दासन दासी सेव कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर रक्खया वास, वास निवासा सहिज सुखदाईआ। रामा राम विच प्रभास, बैठा आसण लाईआ। काहना कृष्ना पृथ्वी आकाश, एका रंग रंगाईआ। कलिजुग अन्तिम कर प्रकाश, पारब्रह्म अख्वाईआ। लक्ख चुरासी वेखे सास ग्रास, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जोग आप धर, आपे मेट मिटाईआ। जग जनणी जग जाण, हरि हरि हरि आप उपाया। आपे घड़े आपे दए भन्न, घड़न भन्नणहार आप अख्वाया। जुग जुग देवणहारा डन्न, लेखा लेख वेख वखाया। वेख वखाए बुध मति मन, ब्रह्म पारब्रह्म भेव ना राया। सुणे सुणाए राग कन्न, राग अनादी भेव छुपाया। तारा मण्डल वेखे रवि ससि सूरज चन्न, धरत धवल सुहाया। पंच विकारा जगत माल धन्न, जूठ झूठ भण्डार भराया। काया झूठी छपरी छन्न, थिर रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाया। कलिजुग अन्तिम हरि निरँकार,
१०२१ हरि हरि जोत जगाईआ। हरि हरि जोती रूप अपार, हरि हरि वेख वखाईआ। शब्दी शब्द जै जै जैकार, नादी धुन वजाईआ। १०२१
०६ आदि जुगादी एका कार, करता पुरख कराईआ। ब्रह्म ब्रह्मादी वेख विचार, मोहण माधव मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग आपणा वेख वखाईआ। जुग वेखणहारा हरि दातारा, हरि हरि रंग समाया। प्रगट होए विच संसारा, आप आपणा नाउँ उपाया। सतिजुग त्रेता द्वापर पार किनारा, कलिजुग वेला अन्तिम आया। निहकलंक लए अवतारा, गुर गोबिन्द संग निभाया। नाम खण्डा तेज कटारा, तन गात्रे आप लटकाया। अस्व घोड़े हो अस्वारा, पहला पौड़ा रिहा उठाया। वरनां बरनां मारे मारा, ऊँच नीच रहिण ना पाया। साची सरना इक्क निरँकारा, लक्ख चुरासी रिहा समझाया। चौदां लोकां इक्क हुलारा, एका नाम दृढ़ाया। लोक परलोक दए सहारा, एका ताल वजाया। इक्क इकल्ला एकँकारा, एका रंगण रंग रंगाया। जूठा झूठा मेट पसारा, सच सुच्च वरताया। चारे वेद करन पुकारा, ब्रह्मा नेत्र नीर वहाया। वेद व्यासा बण लिखारा, पुराण अठारां गया जणाया। अञ्जील कुरान हाहाकारा, ना कोई होए सहाया। खाणी बाणी करे विचारा, विच विचोला हरि हरि राया। कलिजुग अन्तिम लए अवतारा, निहकलंका डंक वजाया। राउ रंकां करे ख़बरदारा, एका एक शब्द जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग दाता आप अख्वाया। जुग

दाता हरि दातार, जुग जुग बणत बणाईआ। सतिजुग त्रेता सच वरतार, समरथ हथ्थ वड्याईआ। एका मार्ग एका धार, एका राह चलाईआ। एका शब्द इक्क जैकार, एका नाअरा लाईआ। एका दरस इक्क प्यार, एका अंग समाईआ। एका मेघ बरस विच संसार, सीतल सांत कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जग जीवण दाता जुग आप अख्वाईआ। अमृत मेघ बूंद स्वांत, हरि आपणी आप वरतांयदा। खेले खेल इक्क इकांत, अकल कला वरतांयदा। कलिजुग अन्तिम मेटे रैण अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चढ़ांयदा। गुरमुखां बणाए सच बरात, साचा सेहरा सीस गुंदांयदा। लहिणा देणा चुक्के ज़ात पात, ऊँचां नीचां मेट मिटांयदा। आत्म अन्तर वेखे मार झात, साचा मन्दिर इक्क सुहांयदा। आपे पुच्छणहारा वात, हरिजन मेल मिलांयदा। आपे देवणहारा दात, हरिजन झोली पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगांयदा। रंग रत्तड़ा हरि चलूल, काया चोली रतीआ। गुरमुख आत्म सेजा बरखे फूल, हरि मेला कमलापतीआ। शब्द सिंघासण ना कोई पावा दिसे चूल, हरि बैठा शाहो रंग रतीआ। नारी मेला कन्त कन्तूहल, दर द्वारे साजण सतीआ। जुग जुग जाणे लहिणा देणा पिछला मूल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग वेखे तेरी हट्टीआ। कलिजुग तेरा हट्ट पसार, चारों कुन्ट करे रुशनाईआ। जूठ झूठ वणज वपार, लक्ख चुरासी रिहा कराईआ। माया ममता मोह विकार, हउमे हँगता संग रखाईआ। कूड़ कुड़यारा तन श्रृंगार, काया कप्पड़ तन हंढाईआ। मिले मेल ना कन्त भतार, जगत दुहागण रही कुरलाईआ। गुरमुख नारी रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, दे मति रिहा समझाईआ। नेत्र नैणां कज्जल अपार, नाम नामा रिहा पाईआ। शब्द चूड़ा तन श्रृंगार, गूढ़ा रंग लाल रंगाईआ। बस्त्र भूशन अपर अपार, काया चोली आप सजाईआ। चरन कँवल हरि दोए जोड़ करे निमस्कार, नेत्र नैणा दर्शन पाईआ। मिले मेल हरि मीत मुरार, जग जोबन लेखे लाईआ। एका मेला इक्क प्यार, एका अंक समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नारी नर वेख वखाईआ। नारी नर हरि नरायण, निज घर आत्म वसया। जन भगतां दर्शन लोचन नैण, मेटे रैण अन्धेरी मस्सया। रसना किसे ना सके कहिण, जिस जन हिरदे हरि रंग वसया। नाता तुट्टे मात पित भाई भैण, प्रभ चरन द्वारे आए नस्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे देवे वर, दर दुआरा एका वसया। दर दुआरा खोल्ह दर दरवाज़ा, साची जोत जगाईआ। देवे दरस ग़रीब निवाजा, अनहद ताल वजाईआ। आप रचाया हरिजन काजा, सच सखीआं मंगल गाईआ। शब्द घोड़े चाढ़े साचे ताजा, हरि साची वाग गुंदाईआ। शब्द विचोला फिरे भाजा, आवे जावे फेरा पाईआ। हरिजन साजन साचा राजन राजा, तख्त सुल्तान बैठा

बेपरवाहीआ। जुग जुग रचणहार काजा, आप आपणी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग तेरी साची रीती, ना कोई जाणे मन्दिर मसीती, गुर मन्दिर गुर दर बैठे ना आसण लाईआ। सतिजुग तेरी साची रीत, प्रभ साचा आप चलांयदा। ना कोई देहुरा मन्दिर मसीत, गुरुदुआरा ना कोई रखांयदा। छत्ती राग ना गाए गीत, अल्ला हू ना नाअरा लांयदा। राधा कृष्न ना रामा सीत, देव ज्वाला ना कोई मनांयदा। आपे जाणे आपणा मार्ग हरि मेहरवान अनडीठ, आप आपणी रचन रचांयदा। पारब्रह्म अबिनाशी करता बीठला बीठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग तेरा साचा राह, गुर गोबिन्द बण मलाह शब्दी शब्द दए सलाह, जोती जोत जगांयदा। शब्दी शब्द हरि बलवाना, एका कल वरतांयदा। सुरत सवाणी बन्ने गाना, एका सगन मनांयदा। पाए वर गुण निधाना, विछड़ कदे ना जांयदा। आदि जुगादी नौजवाना, बिरध बाल ना कोई उपांयदा। एका चिल्ला तीर कमाना, जोद्धा सूरबीर आप अख्वांयदा। एका शस्त्र तन सजाना, एका बस्त्र आप हंढांयदा। लक्ख चुरासी तोड़े माण अभिमाना, गढ़ हँकारी रहिण ना पांयदा। एका मारे सच निशाना, तीर निराला आप चलांयदा। खेले खेल गोपी काहना, राम रमईआ आप हो जांयदा। पुरख अकाला हरि सुल्ताना, साचे तख्त सुहांयदा। गुरमुखां देवे धुर फ़रमाना, बोध अगाधी शब्द जणांयदा। एका राग इक्क तराना, एका नाद वजांयदा। साचा मंगल वर घर साचे गाणा, हरि साचा आप सुणांयदा। उठे मर्द जन मरदाना, गोबिन्द मेला मेल मिलांयदा। कलिजुग तेरा वरते भाणा, लोकमात ना कोई सुणांयदा। सतिजुग परखे विच जहानां, हरि साचा मात धरांयदा। एका देवे गुण निधाना, गुणवन्ता झोली पांयदा। चार वरन इक्क दर बहाना, एका राह वखांयदा। मुल्ला शेख मुसायक पीर दस्तगीर कोई दिस ना आणा, हक्क हकीकत इक्क जणांयदा। रोज़ा बांग ना कोई अल्लाणा, हथ्थ मुसल्ला ना कोई उठांयदा। जगत नकाह ना किसे कराणा, शरअ शरायत ना कोई जणांयदा। पंडत पाधां वेखे मार ध्याना, मथ्थो तिलक ना लगाना, वेदी ना गड्डे कोई काना, ना कोई चार कुन्ट जणांयदा। खेले खेल श्री भगवाना, जुग जुग आपणी बणत बणांयदा। आपे जाणे आपणा भाणा, हरि भाणे विच समांयदा। ग्रन्थी पन्थी होए हैराना, हरि एका बाण चलांयदा। चार कुन्ट चार चौफेर ना किसे फिराना, ना कोई सीस झुकांयदा। चौथे घर पाया पद निरबाना, पुरख अबिनाशी मेल मिलांयदा। साची लांव कर परवाना, साचे लड़ बंधांयदा। मनमुख भुल्ले जीव नादाना, भेव कोई ना पांयदा। मिल्या पुरख ना हरि सुल्ताना, थिर घर ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग खोल्हे साचा दर, सोलां सोलां सोलां धार वहांयदा। हाढ़ सतारां बन्ने धार, सम्मत सोलां हरि रघुनाथया। गोबिन्द गुरसिख कर्म विचार,

आप निभाए सगला साथया। क्रिया कर्म किरत जग दए निवार, साचा तिलक लगाए मस्तक माथया। जोड़ी जोड़ विच संसार, नाम चढ़ाए साचे राथया। मरे ना डुब्बे कलिजुग धार, पार कराए हरि रघुनाथया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द जणाई अकथना अकाथया। अकथ कथा करतार, जुग जुग आप कराईआ। सतिजुग साची बन्ने धार, कलिजुग मेट मिटाईआ। एका शब्द धुन जै जै जैकार, नादी कन्त सुणाईआ। नारी कन्ता इक्क प्यार, काया चोली रंग बसन्ता इक्क चढ़ाईआ। जीव जन्तां होए उधार, जगत विछोड़ा फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग विछड़े जग जोड़े नाता, बिधाता कर्म धर्म जरम आपणे लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचे देवे वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां करे सच कुड़माईआ।

✻ ११ मग्घर २०१४ बिक्रमी गुरमुख सिँघ दे गृह गुरबख्श सिँघ दी शादी दे विहार वास्ते शब्द लिखाए पिण्ड भलाईपुर डोगरा ✻

१०२४ ०६

सति पुरख निरँजण आपणी धार, ब्रह्मण्ड खण्ड चलांयदा। जोत सरूपी कर आकार, शब्दी वंड वंडांयदा। निरगुण सरगुण खेल अपार, भेव कोई ना पांयदा। लोआं पुरीआं पसर पसार, धरत धवल सुहांयदा। आकाश प्रकाश कर विहार, गगन पाताल रहांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर लए उभार, रूप अनूप वखांयदा। करोड़ तेतीसा कर पुकार, सुरपति संग रलांयदा। त्रैगुण माया तत्त अपार, ब्रह्मे झोली पांयदा। पंज तत्त हरि दे उधार, रक्त बूंद अख्वांयदा। हड्ड मास नाड़ी रत्त तन हाडी जोड़ जुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सरगुण मेल मिलांयदा। मन मति बुध देवे वर, घर साचा इक्क वखांयदा। लोकमाती नौ दर, ग़रीब निवाजा आप अख्वांयदा। दसवें बैठा हरी हरि, नर नरायण अख्वांयदा। आपणी करनी रिहा कर, करनहार अख्वांयदा। शब्द ज्ञानी साचा वर, ब्रह्मे झोली पांयदा। नाम जणाई आपणी कर, चारे वेद लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड हरि वंड वंडा, आपणी कल वरताईआ। उत्भज सेत्ज जेरज अंड लए उपा, आप आपणा विच टिकाईआ। परमानंद जाए समा, निजानंद दरसाईआ। महल्ल अटल इक्क वसा, थिर घर नाउँ वसाईआ। आपे जाणे आपणा नाँ, आप आपणा नाउँ उपाईआ। निरगुण निरवैर हरि आप अख्वा, नर हरि दया कमाईआ। साची रचना रिहा रचा, रचनहार आप

हो जाईआ। लोकमाती बणत बणा, वरभण्डी दए वड्याईआ। वरभण्डी हरि जोत जगा, लक्ख चुरासी दए वधाईआ। लक्ख चुरासी खेल खिला, हरि बैठा भेव छुपाईआ। आप उपाए आपे दए मिटा, हथ्थ किसे ना आईआ। आपे कारज दए रचा, सञ्झ सवेरा इक्क बणाईआ। आपे हवनी हवन दए करा, आपे वेदी रिहा गडाईआ। आपे खाणी बाणी दए सुणा, ग्रन्थ पन्थ रचाईआ। साध सन्त आपे रिहा जणा, आत्म शब्दी वज्जे वधाईआ। भेख पखण्डा दए मिटा, जुग जुग हथ्थ रक्खे वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर वेखे थाउँ थाँ, आप आपणी कर रुशनाईआ। कलिजुग वेला अन्तिम गया आ, हरि शब्द वज्जे वधाईआ। नानक गोबिन्द गया लिखा, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी वेखे राह, लोकमाती फेरा पाईआ। शब्द सरूपी बण मलाह, निरगुण खेल करे रघुराईआ। सम्बल नगरी भाग लगा, आप आपणी धरत सुहाईआ। चार वरनां रिहा जणा, ऊँचां नीचां इक्क सरनाईआ। राज राजानां गल पाए फाह, शब्दी धारी इक्क बंधाईआ। मुस्लिम हिन्दू सिख ईसाई एका धाम दए बहा, शरअ शरायत इक्क सुणाईआ। कलमा नबी ना देवे कोई सुणा, शरअ शरायत ना कोई जणाईआ। हक्क हकीकत इक्क वखा, एका नाम सच्ची पढ़ाईआ। पंडत पांधा मस्तक तिलक ना सके कोई लगा, ना कोई विद्या चले चतुराईआ। गुण अवगुण हरि जाणे थाँ थाँ, नौ खण्ड सत्त दीप आप आपणी कल वरताईआ। बेदी वेदी आप समझा, आप आपणा मार्ग लाईआ। नेती धोती दए खुल्ला, जञ्जू गल रहिण ना पाईआ। पन्थ ख़ालसा दए हिला, हरि साचे हथ्थ वड्याईआ। गुर गोबिन्दा संग रला, चारों कुन्ट करे कुड़माईआ। एका शब्द दए जणा, लोआं पुरीआं इक्क सुहाईआ। एका डंका रिहा वजा, अठारां बरनां रिहा उठाईआ। घर मन्दिर अन्दर इक्क सुहा, एका दीप करे रुशनाईआ। आत्मक धुन इक्क वजा, अनहद ताल वजाईआ। आत्म सेजा रिहा विछा, हरि साचे आप विछाईआ। सच सुच्च फूलन बरखा रिहा लगा, अट्ठे पहर सेवक सेव कमाईआ। गुरमुख नारी रिहा जगा, आप आपणी दया कमाईआ। पंज तत्त तन अग्ग बुझा, सांतक सति वरताईआ। सर सरोवर अमृत आत्म दए नुहा, दुरमति मैल गंवाईआ। आप आपणा लड़ दए फड़ा, दिस किसे ना आईआ। साचा मार्ग इक्क लगा, चार वरन सच्ची सरनाईआ। अकाल पुरख तेरा एका नाँ, जुग जुग वेख वखाईआ। सन्त सुहेले जुग जुग मेले आपे होए पिता माँ, आप आपणी गोद उठाईआ। दो जहानी पकड़े बांह, जगत विछोड़ा फंद कटाईआ। चरन कँवल हरि साचा थाँ, गुर गोबिन्दा ओट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका धार विच संसार, एकँकार आप आपणी रिहा चलाईआ। एका धार हरि निरँजण, आदि पुरख चलाईआ। चरन धूढ़ हरि साचा मजन, तीर्थ तट्ट ना कोई वखाईआ। नेत्र नैण नाम पाए साचा अंजन, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। ताल

नगारे साचे वज्जण, मृदंगा आपणा आप हिलाईआ। भगत जनां हरि आया पड़दे कज्जण, नाम दोशाला इक्क रखाईआ। दो जहानी साचा सज्जण, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लिख्या लेख धुर दरगाही वेख लोकमात पूर कराईआ। लोकमात हरि निरँकार, आपणी कल वरताईआ। मंगण मंग चरन द्वार, गोबिन्द झोली डाहीआ। एका इक्की एका वार, साची सिक्खी रिहा उपाईआ। धारों तिक्खी विच संसार, कोई भेव ना पावे राईआ। नेत्र पेखी हरि निरँकार, वीह सौ चौदां बिक्रमी लेख लिखाईआ। सतिजुग साची बन्ने तेरी धार, सिँघ गुरमुख हथ्थ वड्याईआ। गोबिन्द पाया पुरख अपार, अकाल मूर्त नजरी आईआ। एका नारी एका मेला कन्त भतार, एका सेज रिहा हंढाईआ। मरे ना जम्मे विच संसार, आवण जावण खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरनां एका सरना एका नाम एका शब्द एका धुन इक्क जैकार, एका वज्जे वधाईआ। चार वरन इक्क जैकारा, हरि साचा आप करांयदा। कलिजुग तेरा मेट पसारा, सतिजुग साचा मार्ग लांयदा। शब्द विचोला विच संसारा, सोहँ सो करांयदा। वेख वखाणे सच्चा घर बाहरा, थिर घर फेरा पांयदा। दिस ना आए जीव गंवारा, मन मति भरम भुलांयदा। जन भगतां खोल्ह किवाड़ा, आत्म दरसी दरस दिखांयदा। सच मन्दिर दिसे सच अखाड़ा, प्रभ साचा आप लगांयदा। राग
१०२६ अनादी ताल वज्जे बहत्तर नाड़ा, अनहद सुर हिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या १०२६
०६ सिख विचार, गुर मन्त्र अन्तर इक्क अधार, एका राग अल्हांयदा। आत्म अन्तर शब्द ज्ञाना, घर साचे वज्जे वधाईआ। मिल्या ०६
घर हरि पद निरबाना, एका दूजा भउ चुकाईआ। तीजे मेल श्री भगवाना, नेत्र नैण खुल्हाईआ। चौथे घर कर परवाना, गुरमुख साचे दए जणाईआ। शब्द बन्ने हरि हथ्थीं गाना, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। तन श्रृंगार इक्क वखाना, नाम बस्त्र इक्क पहनाईआ। देवे माण दो जहाना, लज पति आपणे हथ्थ रखाईआ। शब्द जणाई धुर फ़रमाना, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। अमृत आत्म पीणा खाणा, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग रचना जग आप कर, आपणी बणत बणाईआ। गुर नाम जगत उजागर, हरि साचा आप करांयदा। भाग लगाए काया गागर, दीपक जोत जगांयदा। देवे नाम रत्ती रत्नागर, आकाश प्रकाश वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा मार्ग लांयदा। सृष्ट सबाई मार्ग लाउणा, हरिजन वड्डी वड्याईआ। पुरख अबिनाशी लेख लिखाउणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। अकाल पुरख अबिनाशी करता एका नज़री आउणा, ना कोई दूसर सीस झुकाईआ। राग छतीस भेव ना पाउणा, पुराण अठारां होए जुदाईआ। ईसा मूसा अल्ला हू हू नाअरा किसे ना लाउणा, कुरान

अञ्जीलां करे सफ़ाईआ। सोहँ शब्द हरि साची जै जै जैकार कराउणा, लोआं पुरीआं गगन पातालां एका शब्द पढ़ाईआ। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर हरि सेवा लाउणा, ब्रह्मण्ड वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, साचा कारज रच्चया आप जन भगत करे कुड़माईआ।

थिर घर बैठ हरि समरथ, हरिजन जोड़ जुड़ाया। शब्द चढ़ाए साचे रथ, रथ रथवाही आप अख्वाया। नाम द्वारे कर इक्ठ, साचा मेल मिलाया। धुर दरगाही देवे साची वत्थ, आसा मनसा पूर कराया। पंच विकारा देवे मथ्था, हाज़र हज़ूर दरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मार्ग लाया। थिर घर बैठ शब्द सिँघासण, गुरमुख मेल मिलांयदा। देवे नाम सर्ब गुण तासन, आत्म झोली पांयदा। निज घर आत्म रक्खे वासन, परमानंद समांयदा। काया वेख पृथ्वी आकाशन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग दाता आप अख्वांयदा। थिर घर बैठ हरि भगवन्ता, गुरमुख जोड़ जुड़ांयदा। गुरमुख नारी साचा कन्ता, सतिगुर मेल मिलांयदा। देवे नाम जिह्वा मणीआ मंता, आत्म ब्रह्म जणांयदा। काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता, उतर कदे ना जांयदा। इक्क सुणाए सुहागी छंता, सोहँ सो जपांयदा।
१०२७ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निज घर आत्म वेख वखांयदा। थिर घर बैठ हरि सुल्तान, हरि शब्द १०२७
०६ करे कुड़माईआ। गुरमुख साचा बाल अञ्जाण, दे मति रिहा समझाईआ। एका शब्द इक्क ज्ञान, एका नाम पढ़ाईआ। जोती ०६
जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे जिया दान, एका भिच्छया झोली पाईआ। थिर घर बैठ हरि निरँकार, निज घर आत्म वसया। गुरमुख साजण मीत मुरार, राह साचा सतिजुग दस्सया। खेले खेल सर्ब संसार, कलिजुग मिटे रैण अन्धेरी मस्सया। सोहँ पाए गल फूलन हार, भगत द्वारे फिरे नस्सया। मेल मिलाए पुरखा नारी कन्त भतार, घर मन्दिर बहि बहि हस्सया। निर्मल जोती नूर कर उज्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साजन एका वर एका मार्ग दस्सया।

❊ ११ मग्घर २०१४ बिक्रमी गुरमुख सिँघ दी सपुत्री जगीर कौर दी गुरबख्श सिँघ नाल शादी समें शब्द उचारया पिण्ड भलाई पुर ❊

हरि मार्ग शब्द सलाह, जोती जोत जगाईआ। पुरख अबिनाशी एका थाँ, हरि साजन मेल मिलाईआ। फड़ फड़

हँस बणाए काँ, दुरमति मैल गंवाईआ। इक्क जपाए साचा नाँ, चार वरन करे कुड़माईआ। आपे पिता आपे माँ, पुत्तर धीआं आप उपाईआ। निर्मल जिया देवे थाँ, निरगुण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा रिहा समझाईआ। शब्द विचोला सच विहारा, हरि साचा मात करांयदा। नारी कन्ता इक्क प्यारा, एका थान सुहांयदा। इक्क शब्द इक्क जैकारा, एका कार करांयदा। इक्क इकल्ला एकँकारा, जुग जुग वेस वटांयदा। कलिजुग मेटे कूड़ पसारा, सतिजुग साचा लांयदा। गुरमुख सोहे बंक दुआरा, हरि जोड़ी जोड़ जुड़ांयदा। वर घर पाया इक्क अपारा, निरगुण मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि साजन वेख वखांयदा। शब्द विचोला आदि जुगादि, प्रभ साचे आप रखाया। जन भगतां देवे नाम दाद, काया झोली दए टिकाया। शब्द जणाई धुन ब्रह्माद, एका ताल वजाया। पाया पुरख हरि माधव माध, विछड़ कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चार वरन इक्क विचोला, हरि शब्दी शब्द जणाया। नाम विचोला नौ खण्ड, सत्त दीप वज्जे वधाईआ। खेले खेल विच ब्रह्मण्ड, हरि जोती जोत जगाईआ। कलिजुग सुत्ता दे कर कंड, सतिजुग साचा रिहा जगाईआ। भगत जनां वंडे साची वंड, हरि साचा रिहा वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग सुरती रिहा जगाईआ। सतिजुग सुरती आप जगा, गुर शब्दी मेल मिलाईआ। नारी कन्ता एका थाँ बहा, सतिगुर दया कमाईआ। सोहँ पल्ला दए फड़ा, ना कोई छोड़े छोड़ छुड़ाईआ। निहचल धाम अटला इक्क वखा, हरि सरन सच्ची सरनाईआ। राग महल्ला गौड़ी ना कोई ल्या अल्ला, ना कोई वेख वखाईआ। सोहँ मन्त्र जगत ज्ञान इक्क दृढ़ा, हरिभगत करे कुड़माईआ। अमृत आत्म इक्क प्या, अमरा पद समाईआ। पंचम मेला सहिज सुभा, मिल सखीआं मंगल गाईआ। अनन्द कारज प्रभ दए करा, बख्शे सच सच्ची सरनाईआ। गुरमुख नारी मंगल गा, थिर घर वज्जे वधाईआ। साची डोली लए बहा, आप आपणा पड़दा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर गोबिन्द तेरी धार एका इक्की एका वार, सतिजुग साचा वेख वखाईआ।

हरि शब्द धुर संदेसा, नामो नाम दृढ़ाया। लेखा चुक्के शिव शंकर गनेशा, पूजस सिला ना कोई मनाईआ। जोग जुगत जग देस प्रदेसा, इक्क संदेश सुणाया। वरनी बरनी आपे वेसा, भेखी भेख वटाया। नर नरायण हरि नर नरेशा, निश अक्खर वक्खर हरि गुण गाया। दे मति समझावे धारी केसा, मूंड मुंडाए भेव चुकाया। दर द्वार कुरलायण ब्रह्मा विष्न

१०२८
०६

महेषा, कलि वेला अन्तिम आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख नाम शब्द गुर मन्त्र इक्क ज्ञान वखाया। इक्क ज्ञान इक्क संदेश, इक्क ध्यान जणाईआ। एका ब्रह्म पारब्रह्म परमेश, परम पुरख अख्वाईआ। एका चरन एका धूढ़ इक्क इशनान इक्क नरेश, एका एक सच्ची सरनाईआ। एका गोपी एका काहन एका गोबिन्द दस दस्मेश, एका नानक रसना गाईआ। एका एक इक्क इकल्ला इक्क ओंकार करे वेस, अकल कला वरताईआ। आदि शक्त जोत निरँजण सम्बल नगर माझे देस, चार कुन्ट दहि दिशा करे रुशनाईआ। गोबिन्द काया हरि प्रवेश, जोती जोड़ा शब्द कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन रिहा जगाईआ। हरिजन साचे आप जगा, आत्म ब्रह्म जणाया। एका अक्खर नाम पढ़ा, निहकरमी कर्म कमाया। साचे पौड़े आपे आप चढ़ा, रवि ससि चरना हेठ दबाया। थिर घर वखाणे साचा थाँ, हरिजन साचे मेल मिलाया। पुरख अगम्मड़े करे सच न्यां, लक्ख चुरासी वेख वखाया। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले पकड़े बांह, आप आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग कामन करया वेस,
१०२६ रूप रंग दिस किसे ना आया। निहकलंक नरायण नर, जगत निरँजण आदि पुरख पुरख परखोतम दयानिध दीन दयाला गोबिन्द लाला संग रलाया। गोबिन्द लाल शब्द दुलार, हरि साचा संग रलांयदा। आप आपणी किरपा धार, आपणे रंग १०२६
०६ समांयदा। अट्ठे पहर इक्क प्यार, एका धार वहांयदा। इक्क सुहाए बंक द्वार, थिर घर नाउँ धरांयदा। चरन कँवल जन सच प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला सच घर, मन्दिर मसीती गुर दर मट्ठ शिवदवाला ना कोई वखांयदा। ०६

✻ २० मग्घर २०१४ बिक्रमी बलवन्त सिँघ, हरबंस सिँघ दे गृह पिण्ड माहल ज़िला अमृतसर ✻

हरि साजन जग मीतड़ा, आदि पुरख अबिनाश। काया चोली रंगे चीथड़ा, जन भगतां दासी दास। मिट्ठा करे कौड़ा रीठड़ा, लेखे लाए दस दस मास। एका चाढ़े रंग बसीठड़ा, आदि अन्त ना होए विनास। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे पृथ्वी आकाश। हरिजन साचा हरि रंग रत्तया, हरि साजन मेल मिलाए। आपे दे समझाए मत्तया, एका नाम ज्ञान दृढ़ाए। कलिजुग वा ना लग्गे तत्तीआ, नाम दुशाला उप्पर पाए। मिल्या मेल कमलापतीआ, नार सुहागण इक्क अख्वाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां मेल मिलाए। मिल्या मेल आदि निरँजण, घर साचे वज्जे वधाईआ। चरन धूढ़ बख्शे साचा मजन, दुरमति मैल रिहा गंवाईआ। भाण्डे भरम गढ़ प्रभ अबिनाशी तेरे

दर ते भज्जण, जन भगतां आया पड़दे कज्जण, दे मति समझाए जिउँ नानक सज्जण, ठग्ग चोर रहिण ना पाईआ। अनहद ताल नगारे आत्म धुनी धुन नादी वज्जण, वजावणहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। हरिजन मेला पति पतिवन्त, हरि साचे आप मिलाया। आपे नारी आपे कन्त, आप आपणी सेज हंढाया। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, फूलन बरखा आपे लाया। जीव जन्त उधारे सँघारे दूत दुष्ट, थिर कोई रहिण ना पाया। कलिजुग माया पाए बेअन्त, लक्ख चुरासी होए हलकाया। गुरमुख विरला जागे सन्त, जिस जन साचे आप जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाया। हरिजन साचा लाल अनमुल्ल, नौ खण्ड विचारया। लक्ख चुरासी कोई ना मुल्ल, एका भुल्लया हरि निरंकारया। अन्तिम फल सुक्कणा टुट्टे डाल्ह, पतझड़ वेला अन्तिम आ गया। लाल अनमुल्लड़ा मानस मानुख जाणा रुल, ना कोई साचा वणज करा रिहा। गुरमुख विरले भाग लगाए आपणी कुल, गुर गोबिन्द मेल मिला रिहा। सच दुआरा नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां गया खुल्ह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक डंक वजा रिहा। निहकलंका हरि करतार, अकल कला अख्वांयदा। गुरमुख साजन लए उभार, चारों कुंट वेख वखांयदा। अट्ठे पहर ख़बरदार, आलस निन्दरा विच ना आंयदा। सति पुरख निरँजण साची कार, जुग जुग आप करांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर होया पार, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। नानक गोबिन्द बण लिखार, वेद व्यासा संग रखांयदा। प्रगट जोत हरि निरँकार, आप आपणी बणत बणांयदा। शब्द खण्डा तेज़ कटार, तन गात्रे आप लटकांयदा। लक्ख चुरासी करे ख़बरदार, एका डण्डा हथ्थ उठांयदा। चार वरन सुहाए इक्क द्वार, ऊँचां नीचां भेव मिटांयदा। देवे दरस अगम्म अपार, आत्म जोती जोत जगांयदा। पंचम गावण वारो वार, सेवक साची सेव कमांयदा। हरिजन मेल प्रभ चरन द्वार, चरन चरनोदक मुख प्यांअदा। अट्ठ सट्ठ तीर्थ होया छार, ना कोई धीर धरांयदा। माया मोह लोभ हँकार, काम क्रोध वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख साचे मेल मिलांयदा।

१०३० ०६

घर मन्दिर सच सुल्तान, निरगुण जोत जगाईआ। दीवा बाती इक्क महान, आप आपणे हथ्थ रखाईआ। सुरत शब्द इक्क ज्ञान, एका ब्रह्म जणाईआ। पारब्रह्म चतुर सुजान, जगत विद्या भेव ना राईआ। खेले खेल दो जहान, जुग जुग आपणी रचन रचाईआ। गुरुआं पीरां देवे दान, नाम वस्त झोली पाईआ। रसना बहि बहि सारे गाण, दिस किसे ना आईआ।

अन्तिम झुलणा सच निशान, नौ खण्ड पृथ्वी आप झुलाईआ। सतिजुग देवे साचा दान, आप आपणी दया कमाईआ। गुरमुख मेला विच जहान, सतिजुग साचा रिहा कराईआ। आवण जावण चुक्के कान, लक्ख चुरासी फंद कटाईआ। राए धर्म मुख शरमान, चित्रगुप्त ना वेख वखाईआ। ब्रह्मा वेखे मार ध्यान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख देवे जगत वड्याईआ। जगत वड्याई हरिजन पाई, प्रभ साचा दया कमाया। कागों हँस रिहा बणाई, हरि साची चोग चुगाया। जो जन चरन सरन ढहि पए सरनाई, मात गर्भ फेर ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनहार आप अख्वाया। करनहार आप करतारा, आपणी कल वरतांयदा। जन भगतां देवे नाम अधारा, आपणा नाम दृढ़ांयदा। अन्दर मन्दिर खोल्हे बन्द किवाड़ा, बजर कपाटी कुण्डा लांहयदा। नेड़ ना आए पंचम धाड़ा, शब्द खण्डा इक्क वखांयदा। गुरमुख साजन साचा लाड़ा, एका एक बणांयदा। लक्ख चुरासी जीव जन्त साध सन्त वेखे चंगा माढ़ा, कलिजुग तेरा रंग चढ़ाया गाढ़ा, ना कोई मात धवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा भेख वटांयदा। आपणा लड़ हरि फड़ा, आपणा दर वखांयदा। पौड़े पौड़े लए चढ़ा, एका मार्ग लांयदा। एका दूजा भउ चुका, तीजे नैण दरस दिखांयदा। चौथे घर दए सुहा, पंचम शब्द अल्हांयदा। छेवें छप्पर छन्न ना कोई रखा, सत्तवें सति पुरख समांयदा। दस्म द्वारी गुरमुख बैठा बेपरवाह, नित तेरा राह तकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मेला साचे दर, काया मन्दिर अन्दर डेरा लांयदा। काया मन्दिर सच महल्ल, हरि साची जोत जगाईआ। दरस दिखाए घड़ी घड़ी पल पल, विछड़ कदे ना जाईआ। सुरत सवाणी हाल बेहाल, रो रो रही कुरलाईआ। पुरख अबिनाशी अवल्लड़ी चाल, जन भगतां इक्क सिखाईआ। नेड़ ना आए काल महांकाल, दर द्वारे बैठे मुख छुपाईआ। जन भगतां करे अन्तिम अन्त संभाल, धुरदरगाही शब्द दलाल, जगत दलाली रिहा चुकाईआ। जोत जगाए जगत अकाल, अकल कला अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला साचे घर, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाजा जन हरि हरि जन आप सुहाईआ। गृह मन्दिर सच सिँघासण, हरि साची सेज विछाईआ। जोती नूर पुरख अबिनाशन, घट घट बैठा आसण लाईआ। जन भगतां दासी दासन, दासी दास आप अख्वाईआ। काया मण्डल पावे रासन, आप आपणी रचन रचाईआ। नाम जपाए रसन स्वासन, जिस जन बूझ बुझाईआ। खेले खेल पृथ्वी आकाशन, गगन पातालां फेरा पाईआ। प्रगट होए घनकपुर वासन, घनी शाम रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दिर रिहा सुहाईआ। गृह मन्दिर साचा हरि हरि पाया, घर साचे वज्जी वधाईआ। हउमे हँगता रोग गंवाया, माया ममता मोह चुकाईआ।

साची संगता मेल मिलाया, दर दुआरा इक्क वखाईआ। भुक्खा नंगता कोई रहिण ना पाया, नाम ख़ज़ाना इक्क टिकाईआ। जिउँ नानक अंगद अंग लगाया, गुरमुख मिली वड्याईआ। दाता सूरा सरबंग हरि आप अख्वाया, देवणहार सृष्ट सबाईआ। जुग जुग जन भगतां द्वारे मंगदा आया, आप आपणी झोली अग्गे डाहीआ। हरि जन काया चोली रंगदा आया, एका रंगण रंग चढ़ाईआ। शब्द घोड़े चिट्टे अस्व तंग कसदा आया, सोलां कलीआं आसण लाईआ। दूई द्वैती हउमे हँगता कलिजुग अन्तिम भन्नदा आया, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। लोआं पुरीआं लँघदा आया, लोकमात करे जोत रुशनाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज अंडां वंडां वंडदा आया, उत्भुज सेत्ज बैठा आसण लाईआ। भेख पखण्डा जुग जुग डन्नदा आया, आप आपणा डंक वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दिर इक्क सुहाईआ। घर मन्दिर सच हरि रंग रूप, हरि एका रंग रंगाया। शाह सुल्तान वड्डा भूप, बैठा आसण लाया। मनमुख काया अन्ध कूप, दीपक जोत ना कोई जगाया। दर दर घर घर मन्दिर अन्दर धुक्खदे धूप, कोटी कोटन हवन कराया। किसे ना मिल्या सति सरूप, सति पुरख निरँजण नज़र ना आया। हाहाकार चारों कूट, दहि दिशा रिहा कुरलाया। जगत नाता किसे ना गया छूट, ना कोई बंधन बंध बंधाया। वरन बरन पई फूट, साची सरन ना कोई रखाया। पंच विकारा रिहा कूट, दिवस रैण रिहा कुरलाया। गुर गोबिन्दे तेरा तीर निराला एका जाए छूट, रसना चिल्ले आप चढ़ाया। नौ खण्ड ना दिसे जूठ झूठ, बीस सद बीस दए रुढ़ाया। मनमुख जीवां टंगे पुठ्ठ, राए धर्म हत्थ फड़ाया। गुरमुख लुकया रहे ना कोई गुट्ठ, आपे आप लए उठाया। हरबंस बलवन्त प्रभ गया तुठ, घर साचे डेरा लाया। जुगां जुगां दे विछड़े गए रुठ, कलिजुग वेला अन्तिम मेल मिलाया। मनमुखां हत्थ फड़ाए खाली ठूठ, नाम भिच्छया ना कोई पाया। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले गए तुठ, पारब्रह्म सरनाया। एका लाहा रहे लुट्ट, अमृत आत्म जाम प्याया। नाम निधाना प्याए एका घुट्ट, अट्ठे पहर खुमार रखाया। आवण जावण लक्ख चुरासी जाए छुट्ट, जिस जन आपणा लड़ फड़ाया। पंचम पंचां जड़ देवे पुट्ट, पंचम शब्द करे जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख तेरे काया घर, एका अनहद ताल वजाया। अनहद ताल शब्द वैराग, प्रभ साचा आप वजांयदा। गुरमुख नारी मिल्या कन्त सुहाग, कन्त कन्तहूला मेल मिलांयदा। दीपक जोती जगे चिराग, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। कूड़ कुड़यारा धोवे दाग़, सच सुक्ख रखांयदा। साचा मजन एका माघ, आत्म सर सरोवर आप करांयदा। माया डस्से ना डस्सणी नाग, तृष्ना तृप्त करांयदा। दो जहानी आपे पकड़े वाग, नाम घोड़े आप चढ़ांयदा। गुर पूरा ना सोया ना गया जाग, अट्ठे पहर एका रंग रंगांयदा। हरबंस बलवन्त होए वड वड भाग, वड भागी हरि हरि पांयदा। वडभागी वड

भाग, हरि हरि पाया। दीपक दीप जगे चिराग, दीपक दीप करे रुशनाया। पंच विकारा लग्गी आग, त्रैगुण माया लहिणा रिहा चुकाया। धुन आत्मक उपजे साचा राग, अनादी धुन रिहा सुणाया। चरन कँवल जन गया लाग, धन्न धन्न जणेंदी माया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गृह मन्दिर साचे अन्दर आप आपणा डेरा लाया।

❊ २० मग्घर २०१४ बिक्रमी खुशहाल सिँघ दे गृह पिण्ड मानावाला ज़िला अमृतसर ❊

पारब्रह्म पुरख सुल्ताना, थिर घर रिहा सुहाईआ। जोती नूर हरि महाना, हरि हरि रिहा जगाईआ। शब्दी शब्द इक्क तराना, आपणा आप अलाईआ। आपे गाए आपणा गाणा, गावणहार आप अख्वाईआ। पारब्रह्म प्रभ हरि भगवाना, नूरो नूर समाईआ। अकल कला कल खेल महाना, भेव अभेदा भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा रिहा सुहाईआ। साचा घर हरि भगवन्त, एका एक सुहाया। आपे जाणे आदि अन्त, भेव किसे ना राया।
१०३३ जुग जुग उपाए साध सन्त, दे मति आप समझाया। गुर पीर बणाए बणत, एका मन्त्र नाम दृढ़ाया। काया चोली चाढ़े १०३३
०६ रंग बसन्त, उतर कदे ना जाया। जगत महिंमा गणत अगणत, लेखा लेख ना कोई लिखाया। जोती जोत सरूप हरि, ०६
आप आपणी जोत धर, आप आपणी सेज हंढाया। आप आपणी सेज हंढा, आपणा रंग रंगांयदा। निरगुण निरगुण विच समा, निरगुण रूप उपांयदा। जोती जोत जोत जगा, जागरत जोत वखांयदा। शब्दी शब्द शब्द जणा, शब्दी बणत बणांयदा। आप आपणा विच टिका, आप आपणा मुख छुपांयदा। आप आपणा लए उपा, दिस किसे ना आंयदा। जुग जुग भेख रिहा वटा, भेखाधारी नाउँ धरांयदा। सति पुरख निरँजण आप अख्वा, सति पुरख मेल मिलांयदा। काया कंचन गढ़ सुहा, नाम सुहागा उप्पर लांयदा। एका अक्खर नाम जपा, जिह्वा मणीआ आप हिलांयदा। गावत गावत सारे रहे गा, गावणहारा दिस ना आंयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, थिर घर साचा इक्क सुहांयदा। हरि शब्द तख्त सुल्तान, बैठा नर निरंकारया। शाहो भूप राज राजान, दो जहानी पावे सारया। आपे दाता दानी देवे दान, आपे मंगे मंग ढहि द्वारया। आपे बख्शे चरन धूढ़ इशनान, सर सरोवर आप नुहा रिहा। आपे होवे जाणी जाण, जानणहार आप अख्वा रिहा। आपे होए चतुर सुजान, मूर्ख मूढ़ आप बणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर साचा इक्क सुहा रिहा। साचा हरि सच वड्याई, घर साचे जोत जगाईआ। आदि पुरख भेव ना राई, अगम्म अगम्मड़ा धाम सुहाईआ।

आपणे हथ्थ समरथ शब्द अकथ रिहा जणाई, अगाध बोध नाम रखाईआ। आप आपणा रथ रिहा चलाई, जुग जुग साचा रथवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर बैठा बेपरवाहीआ। थिर घर साचा शब्द बिबाणा, हरि एका एक रखाया। भेव ना जाणे राजा राणा, शाह सुल्ताना भेव ना पाया। जुग जुग चले चलाए आपणे भाणा, हरि भाणे विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बणत बणाया। आप आपणी बणत बणा, हरि साचे जोत जगाईआ। जोती जोत गया समा, जोती जोत लए उपाईआ। रक्त बूंद कोई दिसे ना, पिता मात ना कोई अख्वाईआ। साचा सुत आप जणा, हरि शब्दी नाउँ रखाईआ। शब्दी शब्द हरि वंड वंडा, ब्रह्मण्ड रचन रचाईआ। ब्रह्मण्ड हरि वेख वखा, आप आपणा रंग रंगाईआ। त्रैगुण माया लेखे ला, ब्रह्मे झोली पाईआ। ब्रह्मा सेवक सेवा ला, पंज तत्त दए वड्याईआ। पंज तत्त हरि बणत बणा, सरगुण वेख वखाईआ। मन मति बुध विच दए टिका, निरगुण खेल खिलाईआ। आप आपणा रिहा छुपा, दिस किसे ना आईआ। एका मन्त्र नाम दृढ़ा, ब्रह्मे बूझ बुझाईआ। चारे वेदां रिहा लिखा, लेखा अन्त ना कोई गिणाईआ। पुरख अबिनाशी बैठा आपणे थाँ, थिर घर साचा थाँ सुहाईआ। जीव जन्त लए उपा, साध सन्त दए वड्याईआ। मानस मानुख लेखे ला, निर्मल जोत करे रुशनाईआ। आत्म ब्रह्म दए जणा, पारब्रह्म भेव ना राईआ।
१०३४ लोकमाती मार्ग ला, एका राह वखाईआ। सतिजुग त्रेता वेख वखा, द्वापर धार बंधाईआ। कलिजुग अन्तिम गया आ, प्रभ १०३४
०६ आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। नानक गोबिन्द गया लिखा, ना कोई सके मेट मिटाईआ। निहकलंक कल जामा पा, हरि ०६
साची जोत करे रुशनाईआ। राउ रंकां लए जगा, राज राजानां दए हिलाईआ। शाह सुल्तानां दए उठा, सोया कोई रहिण ना पाईआ। ब्रह्मा शिव विष्न वेखे थाउँ थाँ, पुरीआं लोआं फेरा पाईआ। करोड़ तेतीसा सुरपति राजा इन्द लुकया रहिणा ना, प्रभ साचा लए उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां वंड वंडा, वंडणहार आप हो जाईआ। जेरज अंड उत्भज सेत्ज गया समा, दिस किसे ना आईआ। वेद पुराणां आप लिखा, गीता ज्ञान जणाईआ। अञ्जील कुरानां लेखा जाणे आप अल्ला, अलाही रूप समाईआ। नानक अंगद अमरदास गुर वेख वखा, रामदास रामा रूप समाईआ। अर्जन लेखा हथ्थ फड़ा, लोकमात दए वड्याईआ। हरि गोबिन्द रूप वटा, दर साचे बूझ बुझाईआ। हरि राए हरि इक्क सरना, सरनगत इक्क समझाईआ। बाल अवस्था लेखे ला, कृष्न कृष्ना वेख वखाईआ। तेग बहादर तेरा नाँ, चार वरन करे जणाईआ। गुर गोबिन्दे देवे ठंडी छाँ, गऊ ग़रीबां गले लगाईआ। वेले अन्तिम पकड़े बांह, जो सरसे गया रुढ़ाईआ। लोकमात जन्म दवा, पुरख बिधाती मेल मिलाईआ। अमृत बूंद स्वांती इक्क पया, सांतक सति वरताईआ। इक्क इकांती दरस दिखा, निरगुण जोत

दरसाईआ। कलिजुग रैण रैण अन्धेरी राती मेट मिटा, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाईआ। एका अक्खर जाप जपा, वाह वाह गुरू हथ्थ वड्याईआ। चार वरनां एका थाँ दए बहा, ऊँच नीच भेव ना राईआ। शाह सुल्तानां दर दर रिहा फिरा, कोई भिख्या नाम ना पाईआ। सम्मत चौदां वीह सद तेरां लेखा गया लिखा, चौदां लोक दए दुहाईआ। निहकलंका खेल रचा, एका डंका रिहा वजाईआ। द्वार बंका दए सुहा, घर साचे आसण लाईआ। गुरमुख उधारे जिउँ जन जनका, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। मेल मिलावा बार अनका, कलिजुग अन्तिम मेल मिलाईआ। प्रगट होए वासी पुरी घनका, सम्बल नगरी डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा वेख वखाईआ। सम्बल नगर साचा खेड़ा, हरि गोबिन्द जोत जगाईआ। आत्म अन्तर खुल्ला वेहड़ा, बैठा सेज विछाईआ। करे कराए हक्क निबेड़ा, दो जहानां वेख वखाईआ। कलिजुग तेरा अन्तिम चुक्के झेड़ा, सतिजुग साचा लए अंगड़ाईआ। जूठ झूठ डुब्बे बेड़ा, माया ममता नाल रुढ़ाईआ। सम्मत पन्दरां लग्गे उखेड़ा, ना कोई धीर धराईआ। नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां एका गेड़ा, गेड़नहार आप रघुराईआ। बिन गुर पूरे पार लँघाए केहड़ा, लक्ख चुरासी दए दुहाईआ। त्रैगुण माया पाया झेड़ा, ना सके कोई तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक्क सुहाईआ। सच घर सच दरबारा, हरि साची जोत जगाईआ। खेले खेल विच संसारा, ऐड़ा अक्खर लेखे लाईआ। अथर्बण रोवे हाहाकारा, अल्ला राणी दए दुहाईआ। संग मुहम्मद चार यारा, ईसा मूसा रिहा कुरलाईआ। पुरख अबिनाशी खेल अपारा, करनहार आप अख्वाईआ। चौदां तबकां दए हुलारा, एका धक्का लाईआ। नौ सत्त वेख दुआरा, पार किनार ना कोई जणाईआ। मनमुख डोबे वहिंदी धारा, कलिजुग माया वहिण वहाईआ। गुर गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द शब्द गुर लै अवतारा, शब्दी बणत बणाईआ। निर्मल जोती कर आकारा, अकल कला समाईआ। कलिजुग मेटे कूड़ पसारा, अन्त रहिण ना पाईआ। जूठ झूठ रोवे ज़ारो ज़ारा, चारों कुन्ट दए दुहाईआ। सतिजुग साचा मारे इक्क ललकारा, सोहँ सो करे लड़ाईआ। सो पुरख निरँजण आप करतारा, हँ हँगता दए मिटाईआ। नाम खण्डा तेज कटारा, गुर गोबिन्द रिहा उठाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पावे सारा, जेरज अंड भुल्ल ना राईआ। मनमुखां सुत्तां दे कर कंड, लोकमात दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचा इक्क वखाईआ। साचा घर हरि निरँजण, एका अलख जगांयदा। दाता दानी दर्द दुःख भय भंजन, जुग जुग भेख वटांयदा। जन भगतां देवे नेत्र नाम अंजन, अन्ध अन्धेर मिटांयदा। चरन धूढ़ बख्शे साचा मजन, अट्ठ सट्ठ माण गंवांयदा। अनहद ताल तलवाड़े काया मन्दिर वज्जण, प्रभ साचा आप वजांयदा। गढ़ हँकारी घर साचे भज्जण, भाण्डा काचा रहिण ना पांयदा। जन भगतां रक्खे जुग

जुग लजण, लाजावन्त आप हो आंयदा। गुरसिक्खां आया पड़दे कज्जण, नाम दोशाला एका पांयदा। गुरमुख विरले अमृत आत्म पी पी रज्जण, सर सरोवर इक्क वखांयदा। दस्म द्वारी साचा हाजी हज्ज कराए हजन, मक्का काअबा इक्क वखांयदा। आत्म सेजा गुरमुख सन्त सुहेले बहि बहि सजण, प्रभ साचा आप बहांयदा। पंच विकारा लोक लज्जया तज्जण, थिर घर साचा आप वखांयदा। इक्क चढ़ाए नाम जहाज़न, दो जहानां पार करांयदा। शाहो भूप वड राज राजन, शाह सुल्तान आप अख्वांयदा। कलिजुग सतिजुग रच्चया काजन, लहिणा देणा मूल चुकांयदा। प्रगट जोत देस माझन, सम्बल नगरी आसण लांयदा। जन भगतां अन्तर आत्म मारे आवाजन, दिस किसे ना आंयदा। नाथ त्रैलोकी ग़रीब निवाजन, गऊ ग़रीबां गले लगांयदा। आपे साजणहारा साजण, आपणी रचना आप रचांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक्क वखांयदा। साचा घर हरि नरायण, निरगुण आप उपाया। आपे वेखे आपणे नैण, जगत नेत्र दिस ना आया। रसना किसे ना सके कहिण, गुण अवगुण ना कोए जणाया। जुग जुग आपे जाणे लहिणा देण, लहिणा देणा आप मुकाया। कलिजुग काली खाए लाड़ी मौत डैण, वेला अन्तिम दए दुहाया। नाता तट्टे साक सज्जण मात पित भाई भैण, बंधन बंध ना कोई बंधाया। मनमुख जीव वहिण झूठे वहिण, झूठे धन्दे वक़त गंवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक्क सुहाया। साचा घर हरि मेहरवान, आपणा आप उपांयदा। ना कोई मन्दिर मस्जिद दिसे मकान, चार दिवार ना कोई रखांयदा। उच्चा नीचा ना झुल्ले कोई निशान, संख नाद ना कोई वजांयदा। ना कोई वेद पाठ पुराण, पूजा सन्धया ना कोई करांयदा। ना कोई हदीस अञ्जील कुरान, शरअ शरायत ना कोई जणांयदा। छत्ती राग ना कोई वख्याण, खाणी बाणी ना कोई अलांयदा। इक्क इकल्ला श्री भगवान, थिर घर बैठा आसण लांयदा। ना कोई खाण ना कोई पीण, ना कोई बस्त्र तन हंढांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसया घर, घर साचा इक्क दरसांयदा। साचा घर दरस अमोघ, हरि जोती नूर सवाईआ। ना कोई चिन्ता ना कोई सोग, ना कोई भोग भुगाईआ। ना कोई जोग ना विजोग, ना कोई रोग रिहा सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच महल्ला रिहा वसाईआ। सच महल्ला आप वसा, आपणी कल वरताईआ। आप आपणी जोत जगा, अट्ठे पहर करे रुशनाईआ। लक्ख चुरासी विच गया समा, हर घट बैठा आसण लाईआ। सन्त सुहेले लए मिला, जुग जुग हथ्थ रक्खे वड्याईआ। शब्दी शब्द रिहा जणा, हरि शब्दी ताल वजाईआ। अन्ध अन्धेरा रिहा मिटा, सतिगुर साचा चन्द रिहा चढ़ाईआ। एका राग रिहा अला, राग नाद भेव ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि साचा धाम सुहाईआ। साचा धाम हरि सुहा,

सगली चिन्त मिटांयदा। दरस दिखाए बेपरवाह, गुरमुख सोए मात जगांयदा। अक्खर वक्खर नाम पढ़ा, साची विद्या आप जणांयदा। बजर कपाटी दए तुड़ा, अन्दर मन्दिर कुण्डा लांहयदा। साचे पौड़े लए चढ़ा, आप आपणी दया कमांयदा। साचा पल्ला नाम फड़ा, आप आपणी सेव कमांयदा। आत्म सेजा इक्क विछा, आसण सिँघासण इक्क सुहांयदा। गुरमुख साजन मेल मिला, नारी कन्ता रूप समांयदा। एका दूजा भेव चुका, तीजा नेत्र इक्क खुल्हांयदा। चौथे घर दए बहा, अमरापद वखांयदा। पंचम मेला सहिज सुभा, गुर पूरा आप करांयदा। अमृत आत्म जाम पया, दुरमति मैल गंवांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा फोल फुलांयदा। दस्म द्वारी सच द्वार, हरि साची जोत जगाईआ। निर्मल बाती कर आकार, निरगुण रचन रचाईआ। गुरमुख साजन पाए सार, आप आपणे विच समाईआ। आप आपणे अन्दरों होए बाहर, आत्म कुण्डा लाहीआ। सुन्न अगम्मों पार किनार, दूर दुराडा वेख वखाईआ। चौथे घर खोल्ह किवाड़, भगत दुआरा इक्क खुल्हाईआ। सोहँ सो जै जै जैकार, सो पुरख निरँजण रिहा कराईआ। हँ हँगता ना कोई पसार, पंज तत्त दिस ना आईआ। एका अंगीकार कर त्यार, आप आपणे अंग लगाईआ। साचा संगी धुर दरबार, गुरमुख साचे लए उठाईआ। चौथे घरों होया बाहर, पंचम वेखे सहिज सुभाईआ। पवण स्वासी लए उधार, जोत प्रकाश इक्क कराईआ। आदि अन्त ना कदे विनासी, मरे जम्मे जम्मे मरे ना राईआ। छेवें छप्पर ना कोई वेखे खेल तमासी, आप आपणा घर सुहाईआ। साचा मण्डल साची रासी, आप आपणी रिहा पाईआ। जोत निरँजण होए दासी, सेवा रही कमाईआ। आदि पुरख इक्क अबिनाशी, करता पुरख अख्वाईआ। सत्तवें घर सति पुरख निरँजण दीपक जोत करे प्रकाशी, इक्क प्रकाश कराईआ। दिवस रैण ना कोई बरस मासी, घड़ी पल ना कोई जणाईआ। सूरज चन्न तारा मण्डल ना दिसे पृथ्वी आकाशी, गगन मण्डल ना कोई दिसाईआ । ब्रह्मा विष्न शिव ना कोई दिसे वासी, ना कोई संग जणाईआ। लक्ख चुरासी ना पवण स्वासी, रसना जिह्वा ना कोई हिलाईआ। साचे घर हरि हरि अबिनाशी, हरि साचा थाउँ सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल खेलणहार आप अख्वाईआ। आप आपणा खेले खेल, घर साचे जोत जगांयदा। शब्दी जोती साचा मेल, छे घर आप करांयदा। पंचम होया सज्जण सुहेल, सच समग्री इक्क वखांयदा। चौथे घर चाढ़े तेल, जन भगतां सगन मनांयदा। दस्म द्वारी वसया रंग नवेल, दिस किसे ना आंयदा। आपे गुर आपे चेल, आपे गोबिन्द रूप समांयदा। जुग जुग विछड़े कलिजुग लए मेल, सज्जण सुहेल आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सम्मत चौदां वेख वखांयदा। सम्मत चौदां रिहा रो, चारों कुन्ट दुहाईआ। कलिजुग काला दाग़ रिहा

धो, नेत्र नैण रहे शरमाईआ। मनमुख जीव जूठ झूठ बीज रहे बो, फल वेले अन्तिम खाईआ। जगत नाता तुट्टे मोह, ना कोई धीर धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग लहिणा जग झोली पाईआ। कलिजुग लहिणा जाणा चुक्क, हरि साचा आप चुकांयदा। मनमुखां मुख पैणा थुक्क, ना कोई मेट मिटांयदा। हरया बूटा जाणा सुक्क, अमृत निर्मल ना कोई मुख चुआंयदा। सतिजुग साचा धरत मात दी प्या कुक्ख, वीह सौ वीह बिक्रमी पन्दरा कत्तक जन्म दवांयदा। कलिजुग पैंडा गया मुक्क, सतिगुर पान्धी आपणा पन्ध मुकांयदा। हरि हरि भाणा ना जाए रुक, गुर गोबिन्द लेख लिखांयदा। राए धर्म चुक्क चुक्क वेखे मुख, नेत्र नैण खुल्हांयदा। लाड़ी मौत सुखणा रही सुक्ख, हथ्थीं मैहन्दी सगन लगांयदा। गुरमुख साजण सन्त सुहेले कर कर मेले गुर सतिगुर आप आपणी गोदी लए चुक्क, आप आपणी दया कमांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर विष्नूं भगवान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल खिलांयदा।

गुरमुख साची घाल, घाले चरन द्वारया। मिले वस्त नाम धन्न माल, देवणहार आप करतारया। गुरमुख सुरती लए संभाल, गुर शब्दी शब्द करे प्यारया। सदा सुहेला चले नाल, आदि जुगादी एकँकारया। नेड़ ना आए काल महांकाल, दर द्वार रिहा दुरकारया। दर द्वार करे संभाल, सेवक सेवा सच कमा रिहा। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल, भेखाधारी भेख वटा रिहा। आपे शाह आपे कंगाल, दीना बंधप दीन दयाल आप अख्वा रिहा। सन्त सुहेले साचे भाल, आप आपणा रंग चढ़ा रिहा। फल लगाए काया डाल्ह, सिँघ खुशहाल आप तरा रिहा। काया वेख सच्ची धर्मसाल, साची जोत निरजंण दीप जगा रिहा। करे कराए आप प्रितपाल, प्रितपालक नाम रखा ल्या। हरिजन साचा बाल निधान, गुण निधाना आप उठा ल्या। अमृत देवे पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख मिटा रिहा। सोहँ चढ़ाए सच बिबान, लोआं पुरीआं पार करा रिहा। आप जणाए धुर फ़रमाण, बोध अगाधी शब्द जणा ल्या। आवण जावण चुक्के कान, लक्ख चुरासी गेड़ कटा ल्या। पाया पुरख हरि सुल्तान, ब्रह्म पारब्रह्म समा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख थाएं पाए घाल, पूत सपूता लेखे ला ल्या। गुरमुख घाल साची सेवा, सतिगुर लेखे लांयदा। धुर दरगाही साचा मेवा, एका नाम खवांयदा। हरि हरि गाया रसना जिह्वा, जागरत जोत जगांयदा। कौस्तक मणीआ मस्तक लाए थेवा, थिर घर साचा इक्क सुहांयदा। मेल मिलाए अलख अभेवा, भेव अभेदा भेव छुपांयदा। किसे हथ्थ ना आए देवी देवा, देवत सुर सर्ब कुरलांयदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण साची सेवा सेवक लेखे लांयदा। साची सेवा दर परवाना, परम पुरख कमाईआ। हथ्थीं बन्ने नाम गाना, एका तन्दन तन्द बंधाईआ। शब्द बिठाए सच बिबाना, पुरख सुल्ताना आप उठाईआ। एका राग सुणाए काना, धुन आत्मक वज्जे वधाईआ। एका पाया पद निरबाना, घर साचे मंगल गाईआ। मूर्ख मूढ़ बणाए चतुर सुजाना, जिस पर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आत्म दरसी देवे ब्रह्म ज्ञाना, जोती नूरो नूर उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण मेल हरि, दर दुआरा वेख वखाईआ। साचा मेला हरि करतारा, अगम्म अगम्मड़ा पाया। लेखा चुक्के विच संसारा, नाड़ी चमड़ा लेखे लाया। पाई वस्त नाम हरि थारा, थिर घर साचे मेल मिलाया। उच्च महल्ल अटल मुनारा, हरिजन साचे लए बहाया। ना कोई दीसे चार दिवारा, छप्पर छन्न ना कोई छाया। इक्क इकल्ला एकँकारा, ओंकारा सेवा लाया। आपे जाणे आपणी धारा, जुग जुग करदा आया। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाया। सतिजुग साचा लै अवतारा, धरत मात दए सुहाया। धरत मात करे प्यारा, आप आपणी गोद उठाया। प्रभ दर द्वारे दोए जोड़ करे निमस्कारा, सच सपूता वेख वखाया। इक्क खुल्हाए धर्म दुआरा, साचा मार्ग लाया। सति पुरख निरँजण तेरा जै जै जैकारा, जोग जुगत इक्क जणाया। भगत भगती दए हुलारा, भगवन रूप अख्वाया। आदि शक्त
१०३६ ढहि पए दुआरा, सरन सरनाई इक्क जणाया। अकाल पुरख करता करनहार करतारा, जुग जुग कारज करदा आया। जोती १०३६
०६ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण वेख हरि, बंक दुआरा इक्क सुहाया। बंक दुआरा सच भूमिका ०६
विच वरभण्ड, सतिजुग वंड वंडाईआ। शब्द गुर खोज ब्रह्मण्ड, ब्रह्मण्डी वंड वंडाईआ। नाम खण्डा तेज चण्ड प्रचण्ड, एका चण्डी रिहा चमकाईआ। कूड़ कुड़यारा तोड़ घमंड, भेख पखण्डा दए मिटाईआ। ना कोई दीसे नार दुहागण रंड, खुल्हड़े केस ना कोए वखाईआ। माया ममता ना चुक्के कोई पंड, रसना तृष्ना ना कोई हलकाईआ। सतिजुग साचा वंडी वंड, सच सुच्च करे कुड़माईआ। पंच विकारा देवे दंड, नाम जैकारा इक्क लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचा सज्जण, जुग मेला जग मेल मिलाईआ। जग मेला जुग मेलया, जुग जुग वड्डी वड्याईआ। अचरज खेल पारब्रह्म पुरख अबिनाशी खेलया, अछल अछल्ल कराईआ। मेले मेल गुरु गुर चेलया, गोबिन्द चेला रूप समाईआ। सन्त साजन सज्जण सुहेलया, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घट मन्दिर मेलया मेल बेपरवाहीआ। घट मन्दिर हरि हरि जोती नूर, दिवस रैण डगमगाया। शब्द अनादी वज्जे तूर, अनहद सेवा लाया। आत्म सेजा बैठा हरि दाता जोद्धा सूर, सूरबीर आप अख्वाया। सर्ब घटा आपे भरपूर, गुणवन्ता नाउँ रखाया। जन

भगतां आसा मनसा पूर, पूरन आसा करदा आया। सदा सुहेला वसे हाज़र हज़ूर, नेड़ा दूर ना कोई जणाया। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, कूड़ी क्रिया दए मिटाया। जिस जन बख्शे चरन धूढ़, चरन चरनोदक मुख चुआया। काया चोली रंगण चाढ़े गूढ़, शब्द मजीठी रंग चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे नाम वर, वस्त अनडीठी हरिजन झोली पाया। वस्त अनडीठ नाम रत्न, गुरमुख तन टिकांयदा। मनमुख जीव वेख ना सकण, नेत्र लोचन नैण ना कोई खुल्हांयदा। नौ द्वारे बहि बहि तक्कण, दस्म द्वारी ना मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचा मेल दर, नाम निधाना झोली पांयदा। नाम निधाना हरि गुणवन्ता, गुरमुख झोली पाया। मिले वड्याई जीव जन्ता, जोती नूर करे रुशनाया। मिल्या मेल नारी कन्ता, आत्म सेजा वेख वखाया। गुरमुख मेल पूरन भगवन्ता, पारब्रह्म परमेश्वर पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि आदिन अन्ता, गुरमुख उधारे साचे सन्तां, सति सन्तोखी धीरज नाम धराया।

अमृत आत्म नाम प्याला, गुरमुखां आप प्यांअदा। दीनां बंधप दीन दयाला, दया निध अख्वांयदा। दीपक जोत जगाए काया सच्ची धर्मसाला, अन्ध अज्ञान मिटांयदा। अनहद शब्द वजाए साचा ताला, ताल तलवाड़ा इक्क रखांयदा। इक्क जपाए नाम सुखाला, सति पुरख निरँजण आप जणांयदा। तोड़ तुड़ाए जगत जंजाला, पंचम मोह मिटांयदा। तन पहनाए साची माला, हरि शब्दी शब्द रखांयदा। फल लगाए काया डाल्ह, गुरमुख साचे मेल मिलांयदा। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाला, नानक गोबिन्द लेख लिखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए वर, आत्म अन्तर मेल मिलांयदा। अमृत आत्म नाम निधान, गुरमुख विरला पांयदा। जिस जन होए आप मेहरवान, आप आपणी बूझ बुझांयदा। एका देवे पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख मिटांयदा। चरन धूढ़ बख्शे सच इशनान, साचे मजन माघ नुहांयदा। आत्म जोती ब्रह्म ज्ञान, हरि शब्दी शब्द दृढ़ांयदा। इक्क वखाए सच निशान, नाम निशाना आप झुलांयदा। गुरमुख वेखे मार ध्यान, गुर पूरा सेव कमांयदा। आदि अन्त जुगा जुगन्त खेले खेल विच जहान, खेलणहार आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, एका वस्त झोली पांयदा। नाम वस्त सच भण्डारा, हरि साचा आप वरतांयदा। जुग जुग लए मात अवतारा, लोकमाती बणत बणांयदा। साधां सन्तां पावे सारा, एका धर्म जणांयदा। इक्क इकल्ला एकँकारा, अकल कला अख्वांयदा। भेव ना पायण वेद चारा, लेखा लिख्त ना कोई वखांयदा। अगम्म अगम्मड़ा आपे जाणे अगम्मड़ी धारा, अगम्म अगम्मड़े धाम सुहांयदा। हड्ड मास नाड़ी ना दिसे चमड़ा, पंज तत्त नज़र ना आंयदा।

जगत माया ना पल्ले दमड़ा, ना कोई गंढु रखांयदा। मात पित ना माई अंमड़ा, पिता पूत ना कोई जणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, आप आपणा मेल मिलांयदा। हरिजन साचे मेल मिलाए, आपणी दया कमांयदा। जोत निरँजण तेल चढ़ाए, साचा सगन मनांयदा। अनहद रागी नाद अलाए, पंचम सेवा लांयदा। साचा मंगल बहि बहि गाए, मिल सखीआं आप सुणांयदा। नाम तन्दन तन्द बंधाए, साचा गाना इक्क रखांयदा। कन्त सुहागी एका साचा छंत सुणाए, राग नाद भेव ना पांयदा। आदि पुरख अबिनाशी करता मेल मिलाए, घर साचा इक्क सुहांयदा। सज्जण सुहेल आप हो जाए, जगत नाता पुरख बिधाता गुरमुख साचे आप तुड़ांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, घर साचा इक्क सुहांयदा। साचे घर मंगलाचार, दिवस रैण वज्जे वधाईआ। आत्म धुन अपर अपार, आप आपणी रिहा सुणाईआ। गावत गावे वारो वार, गावणहार दिस ना आईआ। गुरमुख साजण ढहि पए द्वार, नेत्र लोचण दर्शन पाईआ। आपे खोल्हे बन्द किवाड़, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। मेट मिटाए पंचम धाड़, कूड़ क्रिया रहिण ना पाईआ। साचे घोड़े देवे चाढ़, हरि साचा रथ रथवाहीआ। दस्म द्वारी देवे वाड़, आप आपणा घर सुहाईआ। आपे होए पिच्छे अगाड़, गुर शब्दी रूप वटाईआ। जोत जगाए बहत्तर नाड़, रवि ससि रहे शरमाईआ। काया सच वखाए इक्क अखाड़, हरि बैठा इक्क अकाला सच महल्ला आप आपणी रास रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, घर सुहञ्जणा इक्क दरसाईआ। घर सुहञ्जणा हरि भगवन्त, एका एक रखाया। खेले खेल आदि अन्त, जुग जुग वेख वखाया। आप उठाए साचे सन्त, आप आपणी दया कमाया। नाम जपाए रसना जिह्वा मणीआ मंत, मति बुध भेव ना राया। गुरमुख नारी मेला साचे कन्त, दर घर साचा आप सुहाया। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाया। मिले मेल पती पतिवन्त, सति सतिवन्ती नार सुहाया। एका गाए धुर दरगाही साचा छंत, आप आपणा रिहा अल्हाया। गुरमुख सुरत सवाणी तेरी बणाए बणत, आप आपणे विच मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, घर साचा इक्क सुहाया। साचे घर हरि भगवाना, एका अलख जगांयदा। गुरमुखां देवे शब्द बिबाना, जुग जुग आप चढ़ांयदा। एका राग एक तराना, एका ताल वजांयदा। एका मेल हरि शाह सुल्ताना, शाहो भूप इक्क वखांयदा। जन भगतां चुकाए आवण जाणा, लक्ख चुरासी फंद कटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, आप आपणे अंग लगांयदा। अंगीकार हरि करतार, एका एक अख्वाया। गुरमुख साचे कर प्यार, आप आपणी गोद उठाया। दो जहानी वसया बाहर, दिस किसे ना आया। साधां सन्तां होया सेवादार,

जुग जुग करदा आया। अमृत आत्म मेवा फल अपर अपर, गुर गोबिन्द मुख लगाया। नानक रसना गाए निरँकार निरँकार निरँकार, निरगुण रूप दरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाया। आत्म दर खोल्ह दरवाज़ा, गुरमुख साचे आप जगांयदा। प्रगट हो ग़रीब निवाजा, जोती शब्दी बणत बणांयदा। आप वजाए साचा वाजा, तार सितार आप हिलांयदा। जन भगतां रच्चया हरि काजा, मुख साचा सगन लगांयदा। सति पुरख निरँजण एका देवे साची दाता, दो जहानी गंढु बंन्हांयदा। कलिजुग अन्तिम वेख धरे जोत हरि देस माझा, सम्बल नगर धाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजन मिल्या घर, घर सुहञ्जणा जगे जोत निरँजणा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण वेख वखांयदा। निरगुण सरगुण साचा मेला, हरि हरि आप कराया। आपे गुर आपे चेला, गोबिन्द दर खुल्हाया। पारब्रह्म प्रभ सज्जण सुहेला, दो जहानां आप अख्वाया। आपे वसे सद रंग नवेला, हर घट अन्दर बैठा डेरा लाया। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला, निहकलंक डंक वजाया। नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां लक्ख चुरासी चाढ़े तेला, जूठ झूठ डंका लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां वखाए सच घर, घर साचा इक्क सुहाया।

१०४२ ०६

✻ २१ मग्घर २०१४ बिक्रमी सरमुख सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✻

सो पुरख निरँजण आप करतार, अकल कला समाया। भेव ना पायण वेद चार, ब्रह्मा लिख लिख लेख मुकाया। वेद व्यासा बण लिखार, पुराण अठारां गया जणाया। गीता ज्ञान करे विचार, आदि अन्त भेव ना राया। अञ्जील कुरान रही पुकार, आप आपणा नाअरा लाया। खाणी बाणी वेख विचार, सेवक सेवा रिहा कमाया। पारब्रह्म प्रभ गुर अवतार, गोबिन्द रूप समाया। नाम जपाए अपर अपार, लेखा लेख ना कोई वखाया। जुग जुग लए मात अवतार, सतिजुग त्रेता वेख वखाया। द्वापर बन्न्हणहारा धार, आपणी धारा इक्क वखाया। कलिजुग खेल करे करतार, वेला अन्तिम नेड़े आया। नानक गोबिन्द मंगे मंग भिखार, प्रभ अग्गे झोली डाहया। दोए जोड़ करे निमस्कार, नेत्र नैणां नीर वहाया। आप आपणी किरपा धार, हरि साचे शब्द जणाया। इक्क इकल्ला एकँकार, वेले अन्तिम होए सहाया। निहकलंक चवीआं अवतार, जोती जामा भेख वटाया। शब्द खण्डा तेज कटार, गोबिन्द गात्रे तन पहनाया। कल्गी तोड़ा सीस दस्तार, जोती जोड़ा जोड़ जुड़ाया। नाम घोड़ा अपर अपार, लोआं पुरीआं रिहा फिराया। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा वेख विचार, आप आपणा रंग रंगाया। दहि

दिशा चारे कूटां पावे सार, ब्रह्मण्ड खण्ड वंड वंडाया। खेले खेल खेलणहार, आप आपणी रचन रचाया। गुरमुख मेले विच संसार, जुग जुग विछड़े मेल मिलाया। लहिणा देणा कर्ज़ उतार, नाम गहणा तन पहनाया। नेत्र दरस साचे नैणा, बन्द किवाड़ आप खुल्हाया। थिर घर बहिणा सोहँ शब्द रसना कहिणा, घर चौथा पद इक्क वखाया। अनहद ताल वजाया साचा नाद, ब्रह्माद सेवा लाया। शब्द जणाई बोध अगाध, अगाध बोध आप हो आया। जन भगतां देवे साची दाद, धुर दरगाही लै के आया। मेल मिलाए मोहण माधव माध, विछड़ कदे ना जाया। पकड़ उठाए सन्त साध, आप आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग वटाया। आदि पुरख हरि निरँजण, जोती जोत जगांयदा। भगत सुहेला साचा सज्जण, एका मार्ग लांयदा। कलिजुग ठूठे अन्तिम भज्जण, थिर कोई रहिण ना पांयदा। गुरमुख अमृत आत्म पी पी रज्जण, सर सरोवर इक्क वखांयदा। नाम दोशाला लै आया पड़दे कज्जण, जन भगतां उप्पर पांयदा। मदिरा मास जो जन तजण, गुर गोबिन्द मेल मिलांयदा। एका हज्ज कराए मक्का काअबा साचा हाजी हज्जन, दो दो आबा वेख वखांयदा। चरन घोड़े दे रकाबा, सोलां कलीआं आसण लांयदा। प्रगट होए शाह नवाबा, आप आपणी कल वरतांयदा। लक्ख चुरासी नौ खण्ड तेरा लेखा लेख चुकाए हिसाबा, आप पिछला मूल चुकांयदा। जन भगतां उलटी करे कँवल नाभा, अमृत आत्म मुख चुआंयदा। मनमुख जीवां दए अजाबा, सम्मत सोलां राह तकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण सरगुण खेल खिलांयदा। निरगुण रूप हरि उत्तम, आपणी कल वरताईआ। ना मरे ना पए जम्म, मात गर्भ ना कोई रखाईआ। ना कोई आलस निन्दरा ना कोई खाए पीए तम, तृष्ना भुक्ख ना कोई सताईआ। नेत्र नीर ना वहाए छम्म छम्म, रो रो ना कोए सुणाईआ। आप आपणा जाणे कम्म, ना कोई दूसर दए सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोत करे रुशनाईआ। जोती नूर हरि आकार, एका एक कराया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, निहकलंका जामा पाया। गोबिन्द मेला विच संसार, सम्बल नगरी धाम सुहाया। महल्ल अटल उच्च मुनार, आप आपणा आसण लाया। एका शब्द एका धुन इक्क जैकार, गावणहार इक्क अख्वाया। लक्ख चुरासी सुणे पुकार, हर घट मन्दिर अन्दर बैठा डेरा लाया। कलिजुग काया कूड़ होई कुड़यार, झूठे धन्दे सृष्ट सबाया। काम क्रोध लोभ मोह हँकार, सांतक सति ना कोई वरताया। मनमुख भुल्ले जीव गंवार, आप आपणा मूल गंवाया। चार वरन ना कोई देवे मात सहार, दहि दिशा रहे कुरलाया। पुरख अबिनाशी आपे जाणे आपणी कार, जुग जुग करदा आया। ब्रह्मे देवे शब्द हुलार, कलिजुग वेला अन्तिम आया। अट्ठे नेत्र खोल्ह उग्घाड़, पुरख अबिनाशी जामा

पाया। लुट्टी जाए दिन दिहाड़, भेखाधारी भेख वटाया। त्रैगुण माया देवे साड़, पंज तत्त रहिण ना पाया। गुरमुख उपजाए साचे लाड़, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। साचे पौड़े देवे चाढ़, हथ्थ किसे ना आया। जोत जगाए बहत्तर नाड़, अट्ठे पहर करे रुशनाया। वा ना लग्गे तत्ती हाढ़, अमृत आत्म इक्क प्याया। नेड़ ना आए पंचम धाड़, दर द्वार रहे दुरकाया। आत्म अन्दर साचे मन्दिर इक्क वखाए सच अखाड़, मण्डल रासी रास रचाया। बजर कपाटी तोड़े जन्दर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लेखा लेख रिहा चुकाया। लेखा लेख हरि आप चुकाउणा, कलिजुग अन्तिम होए जुदाईआ। धर्म राए दा दर खुल्ल्हाउणा, राजे जनक मिली वड्याईआ। लक्ख चुरासी लाड़ी मौत नाल प्रनाउणा, सम्मत पन्दरां सगन मनाईआ। हाढ़ सतारां तेल चढ़ाउणा, जोत निरँजण सेवा लाईआ। अकाल पुरख एह खेल रचाउणा, गुर गोबिन्द तेग उठाईआ। सच सिँघासण किसे ना सौणा, राज राजानां पए दुहाईआ। शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाउणा, सीस ताज ना कोई हंढाईआ। पहली कत्तक वीह सौ पन्दरां बिक्रमी पटने हरि चरन छुहाउणा, प्रगट होए धुर दरगाहीआ। पुरी अनन्द आप उठाउणा, सोया कोई रहिण ना पाईआ। देवे सुनेहड़ा पवणी पवणा, माछूवाड़ा याद कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तिम वेख वखाईआ। जीव जन्त कोई जाणे ना, साध सन्त भेव ना पांयदा। हरि का भाणा कोई पछाणे ना, नानक गोबिन्द लेख लिखांयदा। राजा राणा कोई रहिणा ना, ऊँचां नीचां आप मिटांयदा। रसना राम रहीम करीम किसे कहिणा ना, बेऐब परवरदिगार आप अख्वांयदा। नेत्र लोचन दर्शन कोई पेखे ना, भरम भुलेखे जगत भुलांयदा। अकाल तख्त ना कोई बूंद ना कोई रक्त प्रभ अबिनाशी आदि शक्त किसे आए लेखे ना, लेखा लेख ना कोई लिखांयदा। धारी केस गुर दस्मेस कोई वेखे ना, मूंड मुंडाए भेव छुपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक डंक वजांयदा। निहकलंक हरि निरँकार, शब्दी शब्द समाया। जोती शब्दी कर प्यार, जोती जोत जगाया। पंज तत्त ना कोई आकार, हड्ड मास नाड़ी चम्म ना कोई दिसाया। आप आपणी बन्ने धार, आप आपणा मार्ग लाया। सतिजुग त्रेता द्वापर पार किनार, कलिजुग वेला अन्तिम आया। अबिनाशी करता लै अवतार, धरनी धरता वेख वखाया। एका शब्द इक्क जैकार, एका नाअरा रिहा लाया। सतिजुग साचे कर त्यार, लोकमाती राह वखाया। धरत मात करे प्यार, आप आपणी गोद उठाया। देवे मति सच्ची सरकार, शब्द सिँघासण डेरा लाया। वीह सौ वीह बिक्रमी पन्दरां कत्तक दिवस दिवार, तेरा लेखा लेख लिखाया। चार वरनां होए इक्क प्यार, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई कोई रहिण ना पाया। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर करन जै जै जैकार, सोहँ तेरा इक्क जैकारा रसना गाया। वरभण्ड

खण्ड प्रभ पावे सार, जेरज अंड दए तराया। सतिजुग साची वंड आप करे संसार, ना कोई दूसर संग रखाया। लक्खण दीप करे पुकार, नेत्र नीर रिहा वहाया। करौच तेरी कोई ना सुणे हाहाकार, दिवस रैण रिहा कुरलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, आप आपणा रचन रचाया। कलिजुग अन्तिम वार, हरि साचा कल वरतांयदा। सतिजुग साचे कर प्यार, एका मन्त्र नाम दृढ़ांयदा। अक्खर वक्खर लेख लिखार, सो पुरख निरँजण आप अख्वांयदा। बवंजा अक्खर करे विचार, हरि बावन भेख वटांयदा। रोड़ी सक्खर दए अधार, संग मुहम्मद चार यार अल्ला राणी आप हिलांयदा। ईसा मूसा ख़बरदार, काला सूसा तन श्रृंगार, दर दरवेश आप अख्वांयदा। चीना रूसा इक्क प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका तीर कमान उठांयदा। एका तीर इक्क कमाना, हरि एका एक उठांयदा। एका जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, दो जहानां वेख वखांयदा। एका गोबिन्द गुर होए जरवाणा, साचा चिल्ला आप खिचांयदा। भेव ना पाए कोई विद्वाना, ज्ञान ध्यान ना वेख वखांयदा। खेले खेल जिउँ कृष्ना काहना, रथ रथवाही आप हो जांयदा। राम रामा विच मैदाना, दहिसर अन्तिम मेट मिटांयदा। कलिजुग तेरा इक्क निशाना, हरि भगवाना आप करांयदा। रसना चिल्ला साचा तीर कमाना, सोहँ मुखी अग्गे लांयदा। मुख छुपाइन रवि ससि सूरज भाना, आकाश प्रकाश मिटांयदा। जीव जन्त छुट्टे पीणा खाणा, धीरज धीर ना कोई धरांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका तीर चलांयदा। एका तीर शब्द त्रिसूल, हरि आपणी आप चलाईआ। लक्ख चुरासी गई भूल, साचे घर ना वज्जे वधाईआ। कलिजुग आप चुकाए तेरा मूल, बाकी कोई रहिण ना पाईआ। ना कोई दिसे फल फुलवाड़ी पत्त डाली फूल, चारों कुन्ट रैण अन्धेरी छाईआ। गुरमुख विरला हरि शब्द पंघूड़ा रिहा झूल, प्रभ साचा रिहा झुलाईआ। मिल्या मेल कन्त कन्तहूल, दर घर साचा इक्क सुहाईआ। शब्द सिँघासण आप बिराजे ना कोई पावा ना कोई चूल, ना कोई बाडी बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, वेख वखाईआ। कलिजुग तेरा अन्तिम रंग, हरि साचा वेख वखांयदा। चार यारी होई नंग, ना कोई संग रलांयदा। सदी चौधवीं होणा भंग, ऐहनल हक्क अल्ला हू कोई ना नाअरा लांयदा। इक्क वजाए हरि मृदंग, सोहँ नाउँ उपांयदा। जूठ झूठ भन्ने काची वंग, नाम खण्डा एका वांहयदा। चिट्टे अस्व कसया तंग, सच सिँघासण आसण लांयदा। लोआं पुरीआं रिहा लँघ, नीला नीली धारों पार करांयदा। सम्बल नगरी आप सुहाए शब्द रंगीले सच पलँघ, जोती नूर चमकांयदा। कोटन कोट गंगा चरन धूढ़ वहाए गंग, अट्ठ सट्ठ तीर्थ मेट मिटांयदा। सतिजुग साचा मंग रिहा मंग, प्रभ अग्गे झोली डांयदा।

कलिजुग औध रही लँघ, गुर गोबिन्दा मेट मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम धार, आप रुढ़ाए विच संसार, सागर सिन्ध शब्द वखांयदा। सागर सिन्ध शब्द गुर धार, एका एक वड्याईआ। मनमुख जीव ना पायण सार, कलिजुग सोया रहिण ना पाईआ। माया ममता मोह विकार, काम क्रोध करी कुड़माईआ। जूठ झूठ तन शृंगार, मन मति वेस रही वटाईआ। गुरमुख विरला पाए गुर पूरे सार, जिस जन आपणी दया कमाईआ। एका दूजा भउ निवार, तीजे दर्शन साचे माहीआ। चौथे घर हरि करतार, आप आपणा रंग रंगाईआ। पंचम मेला कन्त भतार, नारी कन्त आप अख्वाईआ। छेवें वेस अपर अपार, हरि करतार आपणा आप वटाईआ। छप्पर छन्न ना ल्या उसार, थिर घर बैठा आसण लाईआ। जगे जोत अगम्म अपार, दिवस रैण करे रुशनाईआ। सति पुरख निरँजण इक्क आकार, आप आपणा रिहा वखाईआ। लेखा लिख ना सके विच संसार, भेव अभेदा बैठा मुख छुपाईआ। जुग जुग लए मात अवतार, आप आपणी बणत बणाईआ। रामा कृष्ना पावे सार, तन साथीं हरि रघुराईआ। ईसा मूसा दए धार, ऐड़ा अल्ला नूर अलाहीआ। नानक पाया वर हरि कन्त भतार, एका सेजा रिहा हंढाईआ। मिल्या नाम सति द्वार, मंगे भिच्छया झोली डाहीआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आप आपणी करे जणाईआ। अट्ठे पहर ख़बरदार, आलस निन्दरा विच ना आईआ। चारों कुन्ट दए हुलार, इक्क हुलारा नाम रखाईआ। भरमे भुल्ले जीव गंवार, बैठे मुख शरमाईआ। पुरख अबिनाशी अग्गे वर नानक निरगुण करे निमस्कार, तेरा लेखा बेपरवाहीआ। सति पुरख निरँजण दे प्यार, आप आपणा हथ्थ उठाईआ। नानक तेरां तेरां पावे सार, तोल बोल इक्क कराईआ। कलिजुग अन्तिम लए अवतार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। पंज तत्त ना कोई प्यार, ना कोई दिसे बणत रघुराईआ। शब्द धुन अपर अपार, आप आपणा मृदंग वजाईआ। चार वरन अठारां बरन करे ख़बरदार, राउ रंकां रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक गुर दए वड्याईआ। नानक गुर अन्तर ध्यान, आत्म लिव लाईआ। पुरख अबिनाशी देवे शब्द ज्ञान, अट्ठे पहर जणाईआ। सोहँ सो धुर फ़रमाण, नानक गाया चाँईं चाँईंआ। पुरख अबिनाशी इक्क वखाए पद निरबान, निर्भय रूप समाईआ। आपे जाणे आवण जाण, जुग जुग गेड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। अन्तिम प्रगटे जोत विच जहान, निहकलंक करे रुशनाईआ। सृष्ट सबाई एका अक्खर जगत वक्खर शब्द जैकार सारे गाण, हरि साचा रिहा अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर नानक नाम अमृत निधान, एका जाम प्याईआ। नानक गुर करे परवान, दोए जोड़ करे निमस्कारया। पुरख अबिनाशी जाणी जाण, वेखे विगसे करे विचारया। आप रखाए आपणी आण, आपणे भाणे आप समा रिहा। जन भगतां देवे शब्द बिबान, जुग

ज़ुग खेले खेल खेल खिला रिहा। आवण जावण चुक्के काण, पतित पावन दया कमा रिहा। वेख वखाए काया मन्दिर सच मकान, गुरमुख साची जोत जगा रिहा। चौदां लोक चौदां हट्ट इक्क दुकान, नाम वस्तू साची पा रिहा। तीर्थ तट्ट करे परवान, आत्म सर सरोवर आप नुहा रिहा। दुरमति मैल हरिजन कट्ट, अज्ञान अन्धेर मिटा रिहा। तन नगारे लाए सट्ट, अनहद ताल वजा रिहा। भाग लगाए काया मट, निर्मल दीपक जोत जगा रिहा। जूठा झूठा बुरज सृष्ट सबाई जाणा ढठ्ठ, थिर कोई रहिण ना पा रिहा। ना कोई पूजे शिवदवाला मट्ठ, गुर दर मन्दिर अन्दर मस्जिद डेरा कोई ना ला रिहा। कलिजुग खेल बाजीगर नट, अन्तिम झूठे हट्ट विका रिहा। गुरमुख विरला हरि हरि नाउँ रसना रिहा रट, जिस जन साचे धन्दे ला रिहा। अन्तर आत्म रसना जिह्वा रिहा चट, तृष्णा भुक्ख मिटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका शब्द इक्क ज्ञान, एका धुर फ़रमाण जणा रिहा। चार वरन इक्क ज्ञाना, एका एक पढ़ाईआ। एका तीर्थ इक्क इशनाना, एका मजन रिहा वखाईआ। एका पूजा पाठ पुराणा, पुराण पुराणी लेखे लाईआ। एका राग एका गाणा, एका नाद वजाईआ। इक्क पुरख इक्क सुल्ताना, इक्क सीस हंढाईआ। लोआं पुरीआं आपणी हथ्थीं
१०४७ बन्ने गाना, सतिजुग साची रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, १०४७
०६ त्रैगुण माया रिहा लुटाईआ। ०६

✻ २१ मग्घर २०१४ बिक्रमी पंडत सुखदेव राम दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✻

भगत वछल गिरधार, भगवन रूप समांयदा। अछल अछल्ल विच संसार, मनमुखां आप भुलांयदा। भेखा बावन धर अपर अपार, दर द्वारे फेरा पांयदा। दुष्ट हँकारी रावण दए सँघार, राम रामा रूप वटांयदा। काहना कृष्ना लए अवतार, बिदर सुदामा गले लगांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, हरि जोती नूर दरसांयदा। आदि निरँजण खेल अपार, जोत निरँजण वेख वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दर सुहांयदा। भगतन मेला हरि भगवन्त, आत्म ब्रह्म जणाईआ। मिल्या मेल साचा कन्त, जगत दुआरा इक्क सुहाईआ। जुग जुग महिंमा गणत अगणत, लेखा लेख ना कोई लिखाईआ। कलिजुग जीवां माया पाए बेअन्त, अन्तिम गूढ़ी नींद सवाईआ। जन भगतां काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, नाम रंगण इक्क रंगाईआ। पंच विकार करे भस्मंत, तृष्ना मोह चुकाईआ। देवे वड्याई विच जीव जन्त, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। राग सुणाए इक्क सुहागी छंत, वरन बरन भेव ना राईआ। साचा मेला आदि अन्त, आप आपणा रिहा

कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेला सहिज सुखदाईआ। भगत सुहेला साचा मीता, हरि हरि रघुनाथा। एका शब्द माण रखाए अठारां ध्याए गीता,। दो जहानी सगला साथा। आप चलाए जुग जुग आपणी रीता, प्रगट होए त्रैलोकी नाथा। ना कोई देहुरा दिसे गुरुदुआरा मन्दिर मसीता, गुरमुख काया मन्दिर अन्दर बैठा इक्क अतीता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला साचे घर, सुरत सवाणी वरे किरपा करे आपणी हरे, मेल मिलाए राम सीता। राम रावण हरि करतार, सीता सुरत जगाईआ। आप आपणा कर प्यार, आपणी रीता रिहा जणाईआ। अन्दर मन्दिर वेख विचार, डूँघी कन्दर फेरा पाईआ। हरिजन वेखे नेत्र पेखे मेल मिलाए हरि गिरधार, गिरवर रूप अख्वाईआ। निज घर वासी निज आत्म बैठा आपणा कर आकार, दिस किसे ना आईआ। भगतन करे तन श्रृंगार, तन बस्त्र इक्क पहनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला साचे दर, मिल्या मेल सहिज सुखदाईआ। मिल्या मेल जामा वन्त, पूर्ब लहिणा कर्म विचारया। भेव ना पायण जीव जन्त, कलिजुग गढ़ होया हंकारया। ना कोई बणाए मात बणत, जूठे झूठे मीत मुरारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगती इक्क जणा रिहा। एका भगती हरि भगवाना, आपणी आप जणांयदा। साचा शब्द सच तराना, साचा राग अलांयदा। गुरमुख हथ्थीं बन्ने गाना, दर घर सगन मनांयदा। चरन धूढ़ी सच इशनाना, पीत पीतम्बर सिर छुहांयदा। मेल मिलाए गोपी काहना, नाम बंसरी इक्क वजांयदा। जोत सरूप घनईआ शामा, कँवल नैण दरसांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर भगतां वेख वखांयदा। भगतन दर सच महल्ला, हरि साचे आप विचारया। जोत सरूपी इक्क इकल्ला, वेख वखाए सर्ब संसारया। फेरा पाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी डल्ला, जलां थलां पार किनारया। जन भगत द्वारे दीपक जोती एका बल्ला, मिटे रैण अन्धेरी अन्ध अंध्यारया। दूई द्वैती मेटे सल्ला, एका दूजा भउ निवारया। सच द्वार हरिजन मल्ला, मिल्या मेल एकँकारया। दर दरवेशा अग्गे खल्ला, दर दरबान आप अख्वा रिहा। आप उपाए दया कमाए निहचल धाम अटला, थिर घर साची बणत बणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे होए अछल अछल्ला, अछल छल आप करा रिहा। अछल अछेदी हरि निरँकारा, निरगुण रूप अख्वांयदा। भेव ना पायण वेद कतेबी, लेखा लिख्त ना कोई लिखांयदा। गा गा थक्के देव देवी, ब्रह्मा विष्न शिव सीस झुकांयदा। पारब्रह्म प्रभ अलक्ख अभेवी, अलखणा अलक्ख हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां वेख वखांयदा। अलक्ख अलक्खणा हरि करतार, हर घट रिहा समाया। आपे भाण्डा करे सक्खना, आपे रिहा भराया। आपे बाली बाला खाए मक्खना, शब्द

१०४८
०६

गोकल फेरा पाया। आपे देवे दरस होए प्रतक्खणा, द्रोपद लज्जया लाज रखाया। आप भाग लगाए कुली कक्खणा, बिदर सुदामा गले लगाया। आपे होए तन्दल चक्खना, पैंरी पै पै भगत मनाया। हरिभगत सुखदेव ना रहे सक्खणा, प्रभ जोती दए जगाया। कक्खों करे लक्खणा, जगत ख़ज़ाना मुल्ल कोई ना पाया। करोड़ तेतीस तेरे दर करे परदक्ख्णा, प्रभ साची सेवा लाया। कलिजुग अन्न्यार एका भखणा, प्रभ साचा रिहा तपाया। खेले खेल उत्तर पूर्ब पच्छिम दक्खणा, दहि दिशा वेख वखाया। मनमुख जीवां किसे ना पड़दा ढकना, राए धर्म दए सज़ाया। लाड़ी मौत घर घर दर दर बहि बहि नच्चना, मुख आपणा घुंगट लाहया। गुरमुख साचे प्रभ चरन द्वारे बहि बहि हस्सणा, चारों कुन्ट नैण उठाया। प्रभ साचे पारब्रह्म अबिनाशी करते आपणी गोदी रक्खणा, आदि शक्ती माँ बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख तेरी बूंद रक्ती साचे लेखे लए लाया। साचे लेखे जाए लग्ग, मिल्या मेल बनवारी। प्रगट होए दाता सूरा सरबग्ग, कलिजुग तोड़े झूठी यारी। त्रैगुण माया आप बुझाए अग्ग, काया करे ठंडी ठारी। दरस दिखाए उप्पर शाह रग, पैंडा चुक्के नौ द्वारी। दीपक जोती जाए जग, उपजे शब्द सच्ची धुन्कारी। फड़ फड़ हँस बणाए कग, देवे नाम सच्ची खुमारी। दुरमति मैल धोया दाग़, घर आए कृष्न मुरारी। मनमुख कोई ना पकड़े वाग, प्रभ देवे दर दुरकारी। अन्तिम जोती बुझे चिराग, काया होई अन्ध अंध्यारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेले रिहा उभारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, पूरन गुर अवतारी।

गुर किरपा गुर जाणया, मिल्या नाम प्रसादि। गुरमुख गुर रंग माणया, धुर दरगाही देवे दाद। जन मन्ने गुर का भाणया, रसना छोड़े जगत स्वाद। मिले मेल शब्द गुर हाणीआ, खोजे जीउ पिण्ड ब्रह्माद। दर द्वारे बणे कन्त सवाणीआ, घर साजन साचा लाध। अनहद सुणे आत्म बाणीआ, गावणहारा माधव माध। आवण जावण चुक्के काणीआ, जिस जन रसना ल्या अराध। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सुरती शब्द डोरी लए बांध। शब्द डोरी बंधन पा, हरिजन बंध बंधाया। इक्क जपाए साचा नाँ, सो मन्त्र नाम दृढ़ाया। हँ हँगता दए मिटा, आप आपणे अंगण लाया। मंगते मंग दए वखा, नाम वस्त अनडीठी झोली पाया। लेखा मंगे जो जन रहे कुरला, दे दरस करे तृप्ताया। आपे बणे पिता माँ, हरिजन गोदी लए उठाया। सदा सुहेला देवे ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। हँस बणाए फड़ फड़ काँ, सर सरोवर इक्क नुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच भण्डारा इक्क वरताया। गुर प्रसादी गुर बूज्झया, गुर मन्त्र ज्ञान। गुर चरन गुरमुख झूज्जया, दरगाह होए परवान। चरन कँवल जो जन लूज्झया, नेड़ ना

आयण पंज शैतान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच भण्डारा शब्दी शब्द जणाई, नाम नामा ब्रह्म ज्ञान। नाम ज्ञान गुर प्रसादी, परम पुरख वरताया। जन भगतां देवे आदि जुगादी, जुग जुग देंदा आया। हरिजन हरि हरि सदा रहे विस्मादी, विस्माद रूप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे नाम वर, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जै जैकार साचा नाअरा लाया। सच नाम नाम दृढ़ाउणा, एका अलक्ख जगाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मेल मिलाउणा, स्वच्छ सरूप प्रतक्ख दरस दिखाईआ। नेत्र तीजा हरि आप खुल्लाउणा, बन्द किवाड़ी कुण्डा लाहीआ। आत्म सेजा धाम सुहाउणा, सतिगुर बैठा जोत जगाईआ। इक्क ध्यान हरि चरन रखाउणा, जगत विछोड़ा दए कटाईआ। कलिजुग माया भुल्ल ना हरि भुलाउणा, अणभुल आप अख्वाईआ। कलिजुग अन्तिम सम्मत सोलां हाढ़ सतारां गुरमुखां कल हरि हरि पाउणा, सोहँ कंडे आप तुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, तन शृंगार इक्क कराईआ।

१०५० ०६ ❋ २२ मग्घर २०१४ बिक्रमी बूड़ सिँघ दे गृह पिण्ड नाथेवाल ज़िला फिरोज़पुर ❋ १०५० ०६

गृह कोट सच गढ़, घर सुहञ्जणा नरायण। पुरख अबिनाशी वेखे उप्पर चढ़, दर्द दु:ख भंजन साक सैण। ना कोई सीस ना कोई धड़, रसना गुण ना सके कोई कहिण। ना कोई विद्या अक्खर गया पढ़, मन्दिर अन्दर किसे ना दिसे बैठा नैण। गुरमुखां दर द्वारे अग्गे खड़, आप चुकाए लहिण देण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगायण। रंग रंगाए नाम नरायण, एका नाम चलूलया। नाता तोड़े जगत मात पित भाई भैण, मेल मिलावा कन्त कन्तूहलया। आत्म सेजा साचे मन्दिर सन्त सतिगुर इक्ट्ठे रहिण, खेले खेल दूल्हो दूलया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे फलया आपे फूलया। नाम निरँजण पुरख अथाह, बेऐब हरि निरंकारया। सिफ्ती शब्द सच सलाह, गाए राग अपर अपारया। आदि जुगादी सच मलाह, जन भगतां करे प्यारया। नाम जणाई एका नाँ, इक्कओअंकारा आप करा रिहा। वेख वखाए साचे थाँ, शब्द बिबाणा इक्क उडा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त साजन लए वर, घर सुहञ्जणा इक्क वखा रिहा। घर सुहञ्जणा हरि मुकंदा, पारब्रह्म उचिता। राग अनादी एका छन्द, गुरमुख उठाए सुत्ता। रसन जणाए बत्ती दन्द, एका इक्क सुहाए साची रुत्ता। आत्म बख्शे परमानंद, लोकमात मन्नाए रुट्ठा। खुशी कराए बन्द बन्द, गुर सतिगुर पूरा तुठा। सतिजुग सच चढ़ाए चन्द, मेट मिटाए नाता जूठा झूठा। मदिरा

मास तजाए रसना गन्द, मात गर्भ ना होए पुट्ठा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क बंधाए साचा मुट्ठा। साचा शब्द हरि , निरगुण तोल तुलाया। सरगुण वेखे काया डोला, आप आपणा पड़दा लाहया। नाम वणजारा शब्दी तोला, एका कंडा रिहा वखाया। प्रगट होए कला सोलां, सोलां धार चलाया। गुरमुख आत्म सेजा मौला, काया कमली तन छुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धरनी धर आप अख्वाया। सतिगुर बोध शब्द ज्ञानन, अन्तर नाम जणाईआ। चरन धूढ़ इक्क इशनानन, गुरमुख साचे आप कराईआ। नेत्र तीजे देवे चानन, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। पंज दुष्ट सँघारे जिउँ रामा रावन, लंका गढ़ तन तुड़ाईआ। मन शाह भबीखन फड़ाए अपणा दामन, तख्त ताज सीस टिकाईआ। दया कमाए धुर दरगाही जामन, हाज़र हज़ूर जोत जगाईआ। नेड़ ना आए कामनी कामन, काया किरती वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सहँस जोग दरस अमोघ आप आपणा इक्क वखाईआ। कोटन कोट दान पुन्न इशनान, कोटन जोग अभिआस्सया। पुरख अबिनाशी चरन ध्यान, थिर घर दए इक्क भरवास्सया। मेल मिलाए श्री भगवान, शाह सुल्तान घनकपुर वास्सया। चरन धूढ़ मंगन राज राजान, मिले मेल ना शाहो शाबाश्या। गुरमुखां करे दर परवान, मेल मिलाए काया जंगल जूह उजाड़ विच प्रभास्सया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन वेखे रंग तमास्सया। साचा रंग रंग महल्ल, प्रभ साची रचन रचाईआ। ऊँचो ऊँच अगम्म अथाह बेपरवाह उच्च अटल, बैठा आसण लाईआ। गुरमुख दुआरा लोकमात तेरा ल्या मल्ल, आप आपणी सेवा लाईआ। शब्दी जोती आए चल, पंज तत्त करे कुड़माईआ। प्रकाश आकाश काया खल्ल, अवण गवण भेव ना राईआ। दूई द्वैती मेटे सल्ल, सति सन्तोख इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। जन हरि साचा सच कर्म, साचो सच समाया। पारब्रह्म सरनाई साचा धर्म, कूड़ क्रिया जगत तजाया। ना कोई गोत ना कोई वरन, ना कोई बंधन जग बंधाया। एका मेला हरि करनी करन, पुरख करते विच समाया। नौ अठारां दर दर पाणी भरन, नौ सत्त करे रुशनाईआ। हरिजन खोल्ले हरन फरन, नेत्र नैण पड़दा लाहया। आप चुकाए मरन डरन, आवण जावण गेड़ कटाया। दाता दानी हरि तरनी तरन, तारनहार सृष्ट सबाया। गुरमुख विरले सरनी पड़न, मनमुखां रिहा दुरकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला जुग विछड़े आप कराया। मेल मिला ना हरि भगवन्ता, एका एक अकालीआ। सच दुआरा इक्क खुलंता, लक्ख चुरासी बणे सवालीआ। साची वस्त इक्क रखंता, नाम धन्न दो जहानां वालीआ। गुरमुख साजन संग रखंता, खेले खेल जगत निरालीआ। एका ताल हरि वजन्ता, एका धुन उपा ल्या। एका राग जन सुणंता,

राग रागनी सेवा ला ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख घर, घर साचा इक्क सुहा ल्या।

अनुभव मूर्त शब्द गुर दाता, सतिगुर पुरख समाया। नाद तूरत सर्ब गुण ज्ञाता, अकल कल अख्वाया। आसा मनसा पूरत सदा पित माता, जल थल होए सहाया। बख्शे चरन धूढ़ जगत जुग नाता, दुरमति मैल गंवाया। नाता तोड़े जगत कूड़ अमृत आत्म देवे बूंद स्वांता, सांतक सति वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर मजन इक्क कराया। जग मोहन हरि पीतम्बर, परम पुरख सुल्ताना। जग रच्चया हरि स्वम्बर, भगतां बन्ने भगती गाना। कलिजुग मेटे कूड़ा अडम्बर, सतिजुग सच होए प्रधाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन बख्शे चरन ध्याना। लक्खमी नरायण नर मोहन मद सूधन, सारंगधर अख्वायो। बली बलवान नरायण नर जोधन, सूरबीर जग धायो। जन भगतां करे नाम सम्बोधन, रसना रस रखायो। अकाल मूर्त अगाध बोधन, पारब्रह्म भेव ना रायो। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलायो। चतुर्भुज शब्द गुणवन्ता, त्रै काल भेव ना वेदा। जोती नूर आदि जुगन्ता, आदि पुरख निरँजण अछल अछेदा। हरिजन मेले साचे सन्तां, आप खुल्हाए आपणा भेदा। गीत सुहागी नाम सुणाए एका छंता, जन भगतां जुग जुग देंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लेख लिखंदा। कँवल नैण शब्द धन खुमारी, पारब्रह्म सुल्ताना। भगत वछल आप गिरधारी, रूप अनूप सति सरूप शाहो भूप आप अख्वाना। अकल कर हरि नाम संवारी, खेले खेल दो जहानां। नेत्र लोचन नैण मुँधारी, भगती भगवन मेल भगवाना। राधा सीता चरन द्वारी, गुरमुख सुरती मेल मिलाना। साचा शाहो दस्म द्वारी, आत्म सेजा इक्क सुहाना। निहचल जोती कर उज्यारी, उपजाए शब्द तराना। अनहद सेवक सेवादारी, धुन मृदंग वजाए धुर निशाना। हरिजन साचे पैज संवारी, दर घर करे परवाना। मिल्या मेल नर निरँकारी, निज आत्म सुक्ख महाना। पाया दरस अगम्म अपारी, हउमे रोग चलाना। तुट्टे गढ़ जगत हँकारी, रसना चिल्ला तीर कमाना। चार वरन इक्क सिक्दारी, सोहँ शब्द शाह सुल्ताना। सतिजुग साचे पैज संवारी, मिल्या मेल नाम निधाना। वरभण्डी होए जै जैकारी, ब्रह्मण्डी कर परवाना। भेख पखण्डी रोवण ज़ारो ज़ारी, वेले अन्तिम होए हैराना। नार दुहागण रंडी जीव हँकारी, ना दिसे कोई टिकाना। जेरज अंडी पावे सारी, गुर पूरा हरि मेहरवाना। हरिजन साचे रिहा उधारी, देवे नाम धुर फ़रमाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा जिया जन दाना। जिया दान जगत प्रभ दीना, निरगुण रूप समाया। अमृत आत्म पीणा खाणा, पिया प्रीतम सुहाया। मिले वड्याई

१०५२ ०६

लोक तीना, चौदां हट ना मात विकाया। पुरख अबिनाशी दाना बीना, देवणहार सर्ब सुखाया। गुरमुख गुरसिख हरिजन साजन रसना चीना, हरि मन्दिर मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा नाम जपाया। शब्द तुरंग रिहा कुद्द, हरिजन रिहा चढ़ाए। दो जहानी पावे सुद, फड़ फड़ पार कराए। निर्मल करे जगत बुध, बुध बिबेकी इक्क वखाए। कारज करे सुध, जो जन एका टेक धराए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत विच समाए। हरिसंगत हरि रंग रतया, राम रत अपार। बीज बीजे साचे वत्तया, शब्द गायन जैकार। मिले मेल कमलापतीआ, कन्त सुहागण होए नार। तन रहे रत्त ना रत्तीआ, जो जन मंगे दरस अपार। एका शब्द जणाए राग छत्तीआ, मिले मेल हरि निरँकार। जन गोबिन्द गाया दन्दी बत्तीआ, वा तत्ती ना विच संसार। चरन कँवल उप्पर धवल जो जन ढठ्ठीआ, ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर करोड़ तेतीसा गुरमुख तेरे चरन करन निमस्कार। पति पतिवन्त गुरमुख गुर पूरे अन्तिम रक्खीआ, करे कराए पार उतार। दीपक जोती जगे साचे बत्तीआ, निर्मल जोत आकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि जू हर घट अन्दर हरि मन्दिर हरिसंगत बख्शे चरन प्यार। हरिसंगत हरि मीतड़ा, दिवस रैण प्रभात। गुरमुखां रंगे काया चोली चीथड़ा, मिले मेल प्रभ सगला साथ।
१०५३ ०६
हरि शब्द गुण वखाए इक्क अनडीठड़ा, लेखा लेख मुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हाथ। काया कौड़ा मिट्ठा करे रीठड़ा, जो जन रसना गाए गुरु गुर गाथ। जुग जाणे जणाए आपणी रीतड़ा, सर्बकला हरि समराथ। जन भगतां आदि जुगादी नीतड़ा, आप निभाए आपणा साथ। गुरसिख काया दिहूरा मन्दिर गुरुदुआरा सच मीतड़ा, हरि बैठा त्रैलोकी नाथ। मिले मेल शाहो भूप हरि बीठल बीठला, नामा धन्ना लहिणा देण चुकाया मस्तक माथ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे इक्क वर, आत्म सेजा साचा कन्त सोया साची खाट। हरिभगत जग वड्याईआ, जुग जुग अवल्लड़ी रीत। गुर मन्त्र इक्क दृढ़ाईआ, नाम निधाना पतित पुनीत। आत्म घर वज्जे वधाईआ, पंचम गायण साचा गीत। मिल्या मेल साचे माहीआ, दरस वखाए इक्क अतीत। आवण जावण फंद कटाईआ, लक्ख चुरासी जाए जीत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरिसंगत वेखे एका घर, घर साचा ठांडा सीत। ठांडा दर हरि गोबिन्द, गोबिन्द घर सुहाया। गुरमुख मेटे सगली चिन्द, मन चिन्दया फल पाया। अमृत आत्म धार देवे सागर सिन्ध, सर सरोवर इक्क नुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन बणाए नादी बिन्द, नाद अनादी आप अख्वाया। गुरमुखां काया रंग गूढ़, गोबिन्द आप रंगांयदा। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, जिस जन आपणी दया कमांयदा। एका बख्शे चरन

धूढ़, जोत लिलाटी आप जगांयदा। जगत नाता तोड़े कूड़ो कूड़, औखी घाटी आप चढ़ांयदा। मिल्या मेल सिँघ बूड़, विछड़ कदे ना जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा झोली पांयदा। आप आपणा झोली पा, आपणा आप गंवाया। गुरमुखां विच गया समा, गुरमुख आप बणाया। आप आपणा रक्खया नाँ, नाम आपणा आप जपाया। आप आपणा वेख्या थाँ, दूसर किसे दिस ना आया। जन भगतां बणया पिता माँ, आप आपणी गोद बिठाया। निथावयां देवे हरि चरनी थाँ, चरन चरनोदक मुख चुआया। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, सोहँ साची चोग चुगाया। वेले अन्तिम पकड़े बांह, राए धर्म नेड़ ना आया। सदा सुहेला देवे ठंडी छाँ, छप्पर छन्न एका नाउँ रखाया। गुरमुख पूरे सद बलि बलि जाँ, जिस रसना हरि हरि गाया। जुग जुग करे कराए सच न्यां, हक्क हकीकत वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि हरि रूप समाया। भगतन रैण लाए हरि माथे, मस्तक धूढ़ लिलाटी। चरन सीस जगदीस हर घट साथे, पूरन पूर कराए घाटे। जुग जुग शब्द चढ़ाए साचे राथे, पार कराए औखी वाटे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां तन चीर बस्त्र शब्द पहनाए आपणे बस्त्र रक्खे पाटे।

✲ २३ मग्घर २०१४ बिक्रमी गुलजार सिँघ दे गृह पिण्ड नाथेवाल ज़िला फिरोज़पुर ✲

निरगुण शब्द बिबान, भेव ना भेदया। निरगुण खेल महान, अछल अछेदया। निरगुण पद निरबान, लेख ना जाणे वेद कतेब्या। निरगुण गुण निधान, जाणे गुण ना रसना जिह्वया। निरगुण खेल दो जहान, भेव ना पायण देवी देवया। निरगुण आप भगवान, आप आपणा आपे सेवया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे होए अलख अभेवया। निरगुण रूप अन रंग राता, हरि हरि आप अख्वाया। पारब्रह्म प्रभ पुरख बिधाता, पूरन जोत समाया। दिवस रैण इक्क इकांता, एका धाम सुहाया। ना कोई पिता ना कोई माता, भैण भ्राता ना कोई जणाया। ना कोई ज़ात ना कोई पाता, ग्रन्थ पन्थ ना कोई रखाया। सर्ब जीआं प्रभ आपे दाता, आप आपणा रिहा जणाया। जुग जुग जाणे आपणी गाथा, गावणहार आप अख्वाया। शब्द चलाए साचा राथा, रथ रथवाही हरि रघुराया। भगत जनां हरि सगला साथा, साचा संग निभाया। लहिण देण चुकाए मस्तक माथा, धुर मस्तक लेख लिखाया। लेख चुकाए अट्ठ साठा, तिन्न सौ सट्ठ वेख वखाया। सर सरोवर मारे ठाठां, हरि अमृत जल भराया। एका मन्त्र पूजा पाठा, एका नाम दृढ़ाया। जुग जुग गेड़े उलटी लाठा, गेड़नहार आप अख्वाया। सर्बकल आपे समराथा, सति पुरख निरँजण आया। वेख वखाए रामा घर दसराथा, रावण लंका गढ़ तुड़ाया।

काहना कृष्ना सगला साथा, त्रैलोकी नाथ आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण रूप समाया। निरगुण हरि निरँकार, थिर घर डेरा लाया। ना कोई मन्दिर गुरुद्वार, मस्जिद काअबा ना कोई रखाया। मठ भठ ना कर त्यार, दर दरवाज़ा ना कोई खुल्हाया। वेद पाठ ना कोई पुराण, गीता ज्ञान ना कोई जणाया। शरअ हदीस अञ्जील कुरान, मुसल्ला हथ्थ ना कोई रखाया। खाणी बाणी ना कोए ज्ञान, राग छतीस ना कोए अल्हाया। निरगुण रूप श्री भगवान, हरि आपणे विच समाया। निरगुण रूप अपर अपारा, आपे कल वरताईआ। आपे दीपक जोती कर उज्यारा, आप आपणा अन्धेर मिटाईआ। आपे सुहाए बंक दुआरा, आप आपणा दर वखाईआ। आपे होए राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान सिक्दारा, तख्त ताज ना आप हंढाईआ। आपे होए बेऐब परवरदिगारा, आप आपणा नाअरा लाईआ। आप आपणा करे तन शृंगारा, बस्त्र आपणा तन हंढाईआ। आप आपणा बणे मीत मुरारा, आप आपणा संग निभाईआ। आप आपणा करे बन्द किवाड़ा, आप आपणा रिहा खुल्हाईआ। आप आपणा वेखे सच अखाड़ा, आप आपणा राग अल्हाईआ। आप आपणा सुहाए गढ़ अपर अपारा, उप्पर चढ़ आसण लाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़ ना बन्न्हे दस्तारा, कल्गी तोड़ा ना वेख वखाईआ। ना कोई घोड़ा ना कोई जोड़ा, दर दरबान ना कोई सहाईआ। सस्से उप्पर एका होड़ा, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। साचे मन्दिर आपे लाया पौड़ा, थिर घर बैठा सेज विछाईआ। दर द्वारे आपणे आपे बौहड़ा, आप आपणा वेख वखाईआ। आपे होए मिट्ठा कौड़ा, रस रसीआ हरि रघुराईआ। आपे होए लम्मा चौड़ा, आपणा लेखा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण विच समाईआ। निरगुण नरायण नर हरि खेल अवल्ला, आपणा आप कराया। थिर घर वसाए सच महल्ला, सच समग्री इक्क रखाया। दर द्वार आपणा आपे मल्ला, आप आपणा वेख वखाया। आदि जुगादी इक्क इकल्ला, अकल कला अख्वाया। ना कोई दूई द्वैती मेटे सल्ला, वरन बरन ना कोई जणाया। आपणी जोती आपे रला, आप आपणा दए उपाया। आपे फलया आपे फुला, आप आपणी फुल फुलवाड़ी वेख वखाया। आप आपणा पाए मुल्ला, आप आपणा तोल तुलाया। आपे होए भुल अनभुला, अनभुल अनभुल आप अख्वाया। आपे जाणे आपणी कुला, कुलावन्त हरि रघुराया। आप आपणी प्रीती घोल घुला, आप आपणी सेव कमाया। आपे फलया आपे फुल्ला, आप आपणा दए उपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण विच समाया। निरगुण रूप आदि निरँजण, आदि पुरख अबिनाशा। आपे जाणे आपणा मजन, आप आपणा दए भरवासा। आप आपणा होया सज्जण, आप आपणा दासी दासा। आप आपणा पड़दा आपे कज्जण, आपे पाए मण्डल रासा। आपणे ताल घर आपणे वज्जण, सुणे

सुणाए शाहो शाबाशा। आप आपणी रक्खे लजण, गुणवन्त हरि गुणतासा। ना घड़या ना कदे भज्जण, मात गर्भ ना होए वासा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण वेखे खेल तमाशा। निरगुण रूप हरि अगम्म, आदि अन्त एकँकारा। ना मरे ना पए जम्म, निर्मल जोती जोत उज्यारा। आप संवारे आपणा कम्म, ना कोई मंगे होर सहारा। आपे जाणे आपणा दम, आपे देवे पवण हुलारा। आपे जाणे आपणा चम्म, पंज तत्त ना कोई आकारा। आप आपणा बेड़ा बन्नृ, आप आपणा वेखे मँझधारा। आप आपणी वसया छपर छन्न, ना कोई मन्दिर गुरुदुआरा। निरगुण रूप तेरा खेल धन्न, थिर घर कोई ना लाया इट्टां गारा। ना कोई सूरज ना कोई चन्न, ना कोई चन्द सितारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेले खेल न्यारा। निरगुण रूप हरि अकाल, आपणे रूप समाया। आपे दीना बंधप दीन दयाल, शाहो भूप अख्वाया। आपे होए अनमुल्लड़ा लाल, आप आपणी गोद उठाया। आप आपणा लए भाल, आप आपणा बाहर कढाया। आप आपणा मार उछाल, आप आपणी बणत बणाया। आप आपणा होए दलाल, आप आपणी रचन रचाया। आप आपणा पाए जंजाल, तोड़नहार आप अख्वाया। आपे शाह आपे कंगाल, धन धनवन्त आप हो जाया। आपे चले आपणे नाल, आप आपणा बैठा मुख छुपाया। आप आपणी करे संभाल, अट्ठे पहर सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण विच समाया। निरगुण रूप सति करतार, सति सति समाया। अट्ठ सट्ठ ना करे विचार, गंगा गोदावरी दिस ना आया। पारब्रह्म पुरख अपार, आप आपणी धार चलाया। आप आपणी जाणे सार, सच सार्थी आप अख्वाया। आपे जाणे आपणी कार, करनहार हरि रघुराया। आपे बैठ सच तख्त सच्चे दरबार, आप आपणा हुक्म चलाया। आपे होए चोबदार, आपे शाहो भूप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण रूप हरि निरँकार, निरगुण विच समाया। निरगुण रूप हरि भगवन्ता, भेव ना कोई भेदया। आपे जाणे आदिन अन्ता, आप आपणी करे सेवया। खेले खेल जुगा जुगन्ता, वड दाता देवी देवया। आप बणाए आपणी बणता, आपे खाए आपणा फल साचा मेवया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण रूप ना कोई रसना ना कोई जेहवया। निरगुण रूप हरि निधाना, आदि पुरख अख्वाया। आप आपणा कर परवाना, आपणा घर सुहाया। आप आपणा बण मरदाना, परम पुरख आप हो जाया। आप आपणा करे खेल महाना, आप आपणा रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण रूप उपाया। निरगुण रूप सच तख्त सुल्तान, हरि साचा आप बराज्जया। आपे होए मेहरवान, आप आपणा रच्चया काज्जया। आप आपणा वेखे मार ध्यान, ना कोई दूसर साजन साज्जया। ना कोई दीसे होर निशान, ना कोई मारे आवाज़या। इक्क

इकल्ला हरि भगवान, आप आपणी रक्खे लज्जया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा साजन साज्जया। आप आपणा साजन साज, हरि साचे रचन रचाईआ। आपे होया ग़रीब निवाज, आप आपणी दया कमाईआ। आदि शक्त प्रभ मारे आवाज़, आप आपणे अंग समाईआ। थिर घर रच्चया साचा काज, एका सेज सुहाईआ। पुरख अबिनाशी आप आपणा देवे ताज, सीस आपणे हथ्थ रखाईआ। एका शब्द सुत मार आवाज़, आप आपणा रिहा जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा अंग कटाईआ। निरगुण आपणा आप उपा, शब्दी सुत उपाया। आप आपणा दए जणा, अबिनाशी अचुत्त आप अख्वाया। आप आपणा राग अला, अनादी धुन उपजाया। ब्रह्मादी साची खोज खुजा, एका वंडन वंड वंडाया। आदि जुगादी झोली पा, साचा पल्ला आप फिराया। आपे दाता रिहा वरता, निखुट्ट कदे ना जाया। उत्तम ज़ाता इक्क रखा, पिता मात ना मोह वधाया। साची सिख्या इक्क सुणा, साचा सुत आप पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत दित्ता वर, साचा घर आप सुहाया। साचा घर हरि सुहजंणा, आपणा आप उपाया। जगे जोत इक्क निरँजणा, अट्ठे पहर रुशनाया। आपे होए दर्द दुःख भय भञ्जणा, आप आपणा संग निभाया। आप आपणा बख़्शे साचा मजना, आप आपणा रंग चढ़ाया। आपे होया पड़दे कज्जना, आप आपणी गोद उठाया। आपे बणया साचा सज्जणा, दे मति रिहा समझाया। ब्रह्मण्ड खण्ड तेरा ताल नगारा वज्जणा, प्रभ साचा रिहा वजाया। हरि घड़या फिर ना भज्जणा, जुग जुग वेस वटाया। त्रैलोक तेरा आप चलाए जहाज़ना, लोआं पुरीआं फेरा पाया। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर आप उठाए मार मार आवाज़ना, प्रभ साचा सेवा लाया। लक्ख चुरासी रच्चया काजना, त्रैगुण माया बणत बणाया। पंज तत्त धारे साजना, त्रैगुण वेख वखाया। निरगुण रूप ग़रीब निवाजना, आप आपणा लए उपाया। शब्द सुत देवे वर हरि शाहो शबाशना, आप आपणा विच टिकाया। वेख वखाए पृथ्वी आकाशना, पारब्रह्म इक्क सरनाया। आपे जाणे आपणी वाशना, आप आपणे फुरने विच समाया। आप उपाए शेश बाशक, सांगो पांग रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूत सपूते दित्ता वर, आप आपणी दया कमाया। साचा सुत हो त्यार, दर करे हरि निमस्कारया। पुरख अबिनाशी किरपा कर, ढहि पए चरन द्वारया। छड्डुणा ना पए तेरा थिर घर, आवां जावां वारो वारया। आपणी किरपा आपे कर, मेरा तेरा भेव निवारया। सो पुरख निरँजण सिर हथ्थ धर, आप आपणा दए सहारया। आप आपणा अंग वक्ख कर, सुत शब्द झोली पा रिहा। लक्ख चुरासी दए वर, आप आपणा विच धर, हँ हँगता नाम उपा ल्या। भेव ना जाणे सुर नर, वेद कतेब ना किसे लिखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एक साचा सुत प्रगट

१०५८ ०६

कर अबिनाशी अचुत्त, ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचा ल्या। शब्द सुत वड्ड सिक्दार, त्रैलोक करे ध्यानया। पुरख अबिनाशी करे ख़बरदार, सो पुरख निरँजण देवे धुर फ़रमानया। लोआं पुरीआं पावे सार, गगन पातालां दो जहानया। लक्ख चुरासी दए अधार, आप आपणा अंग कटानया। दिस ना आए विच संसार, मन मति बुध होई हैरानया। आप उपाए आपे लए सँघार, आप विछोड़े आपे मेल मिलानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा आप वखानया। आप आपणा वेख वखा, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। सतिगुर शब्द इक्क सुणा, लोआं पुरीआं रिहा जगाईआ। लेखा लिख्या ना सके कोई मिटा, ब्रह्मा वेता मुख शरमाईआ। आपे जाणे आपणा थाँ, हर घट वसया बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हँ हं रूप अख्वाईआ । हँ रूप आप अख्वा, आपणा अंग कटांयदा। लक्ख चुरासी विच समा, आप आपणा मुख छुपांयदा। जोग जुगत जगत बणा, वेद कतेब अल्लांयदा। भगत शक्त इक्क वखा, अकल कला दरसांयदा। साध सन्त लए उपा, आप आपणा नाम जणांयदा। गुर पीर अवतार धरा, लहिणा देणा जगत चुकांयदा। आप आपणी वंड वंडा, सतिजुग त्रेता रूप वटांयदा। द्वापर वेखे साचा थाँ, रामा कृष्ना भेव ना पांयदा। कलिजुग साचे बलि बलि जां, आपणी विद्या आप पढ़ांयदा। ऐड़ा अक्ख इक्क खुल्ला, अल्ला राणी संग रलांयदा। एका नाअरा नाउँ लगा, लाशरीक आप हो जांयदा । अगैब अगैबी हरि खुदा, खुदी तकबरी विच समांयदा। आपे अन्दर आपे होए जुदा, आपे दिस ना आंयदा। आप आपणा करे फिदा, आप आपणा मूल चुकांयदा। कलिजुग अन्तिम गहणा पा, सच शृंगार करांयदा। नानक गुर ल्या उपा, नाम सति झोली पांयदा। दोए जोड़ बैठा सीस झुका, नेत्र नीर वहांयदा। प्रभ अबिनाशी बेपरवाह, आप आपणे गले लगांयदा। एका देवे सिफ्त सलाह, निरगुण निरगुण विच समांयदा। इक्क उपाए साचा नाँ, एका रसन चलांयदा। नानक निरगुण करे सच न्यां, लोकमाती फेरा पांयदा। दहि दिशा वखाणे साचा थाँ, गऊ ग़रीबां गले लगांयदा। आपणा लेखा आप जणा, आप आपणा राग सुणांयदा। सारंग हथ्थ मरदाने फड़ा, एका ताल वजांयदा। आप आपणा थिर घर बहा, सच महल्ल अटल सुहांयदा। एका एक जणाए साचा नाँ, साचा लेखा इक्क जणांयदा। निरगुण नानक रसना रिहा गा, निरँकार निरँकार निरँकार अल्लांयदा। एका दूजा भउ मिटा, प्रभ साचा दर सुहांयदा। प्रभ अबिनाशी दया कमा, लोकमाती सेवा लांयदा। नानक साची सेव कमा, साचा मार्ग इक्क वखांयदा। जीव जन्त कोई जाणे ना, भुल्ल भुल्ल वक्त गंवांयदा। आप आपणा दए तजा, अंगण अंग लगांयदा। पुरख अबिनाशी अग्गे एका एक रिहा जणा, तेरा भेव कोई ना पांयदा। पारब्रह्म प्रभ दए सुणा, नानक गुर जणांयदा। कलिजुग वेला अन्तिम जाए आ, तेरां तेरां पूरा तोल करांयदा। निहकलंका जामा

पा, शब्दी डंक इक्क वजांयदा। सोहँ सो सतिगुर नानक आपणी रसना गया गा, जीवां जन्तां भेव छुपांयदा। बिन गुर पूरे जुग जुग कोई ना पकड़े बांह, आप आपणा भेख वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सरगुण रूप नर निरँकार, निरगुण निरगुण निरगुण विच समांयदा।

✻ २३ मग्घर २०१४ बिक्रमी नाज़र सिँघ दे गृह पिण्ड नाथेवाल ज़िला फिरोज़पुर ✻

निरगुण सति समा, सति सति समाईआ। सति सति गुण आप जणा, तत्त तत्त समझाईआ। तत्त तत्त प्रभ इक्क रखा, एका गुण अलाईआ। धीरज यति दए बंधा, सति सन्तोख समाईआ। दे मति रिहा समझा, सगली चिन्द मिटाईआ। सो पुरख निरँजण जाप जपा, हँ हँगता रिहा गंवाईआ। सतिगुर इक्क बणा, साजन मीत आप अख्वाईआ। निरगुण निर्धन वेखे थाँ, दर दुआरा रिहा सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोत जोती नूर उपाईआ। जोती नूर दीपक बाल, सति सति करे रुशनाईआ। वेख वखाए गगन पाताल, गति मित ना कोई जणाईआ। आप आपणी चले चाल, खेले खेल सृष्ट सबाईआ। लक्ख चुरासी जीव जन्त सुरत रिहा संभाल, हर घट बैठा आसण लाईआ। वेखणहारा फल काया डाल, रस मिट्ठा कौण रखाईआ। इक्क विचोला शब्द दलाल, धुर दरगाही आप बणाईआ। एका एक सच सच्ची धर्मसाल, हरि मन्दिर दए सुहाईआ। आप आपणा रंग चाढ़े लाल गुलाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सतिगुर सति सरूप अख्वाईआ। सति सति हरि सतिगुर पूरा, सच सुच्च वड्याईआ। आपे होए हाज़र हज़ूरा, आप आपणा दरस दिखाईआ। आपे नाद आपे तूरा, आपे तार हिलाईआ। सर्ब गुण आप भरपूरा, समरथ हथ्थ वड्याईआ। ना कोई जाणे नेड़े दूरा, दूर नेड़ ना कोई थाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सांतक सति रिहा कराईआ। सति सति हरि दीन दयाला, सति सतिवाद अख्वाया। निर्मल जोत इक्क अकाला, आदि जुगादि समाया। जन भगतां चले नाल नाला, दिस किसे ना आया। जुग जुग वजाए आपणा ताला, ताल तलवाड़ा इक्क रखाया। नाम उपाए दया कमाए साची माला, जन भगतां हथ्थ फड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सति हरि नामो नाम मन्त्र दृढ़ाया। नाम मन्त्र सति करतार, सतिजुग सति वरताईआ। सतिजुग साचे कर प्यार, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। सालस बणे विच संसार, सहिसा रोग गंवाईआ। आलस निन्दरा दए उतार, सोया रहिण कोई ना पाईआ। कालख टिक्का ना कोई मस्तक दाग़, जूठ झूठ ना वेख वखाईआ। कूड़ कुड़यारा ना दिसे काग, माया मोह विष्टा ना कोई मुख रखाईआ। मानुस मानुख लाए जाग, आप आपणा रंग चढ़ाईआ। घर घर नारी कन्त सुहाग, आप आपणा रही हंढाईआ।

भगत जनां जन वड वड भाग, जन जननी खुशी मनाईआ। मन्दिर अन्दर दीपक जोती जगे चिराग, चन्न चानणी रही शरमाईआ। सर सरोवर मजन माघ, नेत्र नैणा दरस दिखाईआ। आप बुझाए दया कमाए सृष्ट सबाई तेरी आग, नौ सत्त करे कुड़माईआ। त्रैलोक तत्त काल प्रभ पकड़े वाग, बणे हरि सच्चा रथवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सतिवाद सदा सदा अख्वाईआ। सति सति हरि सति करतारा, साची धार चलांयदा। परम पुरख अगम्म अपारा, पार किनारा इक्क वखांयदा। लक्ख चुरासी तेरा एका नाअरा, इक्क जैकारा लांयदा। सति पुरख निरँजण बन्ने धारा, सस्सा हाहा मेल मिलांयदा। उप्पर होड़ा वड बलकारा, टिप्पी बिन्दी इक्क वखांयदा। आवे जावे विच संसारा, भेव कोई ना पांयदा। सतिजुग तेरा सति पसारा, प्रभ साचा आप करांयदा। आपे होए मात सिक्दारा, सोहँ मस्तक तिलक लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सतिवाद विच ब्रह्माद एका शब्द जणांयदा। सति शब्द सति समाया, सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। आप आपणी दया कमाया, आप आपणा जोग कमाईआ। एका आसण शब्द सिँघासण हरि जी लाया, एक घर वज्जे वधाईआ। दासी दासन सर्ब कराया, मण्डल रासन करे सफ़ाईआ। पृथ्वी आकाशन वेख वखाया, नाम स्वासी इक्क चलाईआ। मदिरा मासी कोई दिस ना आया, सतिजुग तेरी वड वड्याईआ। पंडत काशी ना कोई रिहा पढ़ाया, वेद पुराण ना कोई गाईआ। छत्ती राग ना कोई अलाया, अञ्जील कुरान ना रिहा लिखाईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर कोई दिस ना आया, शाह हकीर ना कोई जणाईआ। मुस्लिम हिन्दू सिख ना कोई बणाया, शूद्र ब्रह्मण वैश ना कोई छत्री करे लड़ाईआ। दूई द्वैती ना कोई दिसे दोख, हरख सोग नेड़ ना आईआ। ना कोई तृष्ना ना कोई भुक्ख, काम क्रोध ना कोई वधाईआ। ना कोई मंगे किसे द्वारे मोख, प्रभ चरन ध्यान लगाईआ। लोआं पुरीआं बख्शे एका आपणा सुक्ख, सोहँ शब्द जैकारा लाईआ। धरत मात तेरी सुफली करे कुक्ख, जन भगतां लए उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति पुरख निरँजण आप अख्वाईआ। सति सति तेरी साची धारा, सतिगुर आप मिलांयदा। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, निहकलंकी जामा पांयदा। गुर गोबिन्दा कर प्यारा, आप आपणा संग निभांयदा। चिट्टे अस्व हो अस्वारा, नीले वाला नाल रलांयदा। जुगा जुगन्तर पावे सारा, आदिन अन्ता आप अख्वांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, बंक दुआरा इक्क सुहांयदा। कल्गी तोड़ा सीस अपारा, जोती जोड़े जोड़ जुड़ांयदा। मेल मिलाए नारी कन्त कन्त भतारा, आप आपणी गोद उठांयदा। एका देवे शब्द हुलारा, लोआं पुरीआं पार करांयदा। सतिजुग तेरा सति दुआरा, प्रभ साचा मात खुल्हांयदा। चार वरनां बख्शे इक्क भण्डारा, दाता दानी आप हो जांयदा। राज राजान शाह

१०६०
०६

सुल्तान ढहि पए दुआरा, ना कोई मुख भवांयदा। एका अक्खर जगत चलाए वक्खर सोहँ तेरी जै जैकारा, एका नाअरा लांयदा। अलख निरँजण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सति सति वरतांयदा। सति सति प्रभ झोली पा, सतिजुग भरे भण्डारा। एका तत्त रिहा समझा, एका चरन प्यारा। एका चित रिहा धरा, नाता तोड़े मोह विकारा। एका गत्त मित रिहा जणा, इक्क इकल्ला एकँकारा। एका रत्त रिहा उपा, हरिजन साचा मात दुलारा। एका तीर्थ रिहा नुहा, प्रभ साचा चरन दुआरा। एका सिख्या रिहा पढ़ा, सोहँ साचा जैकारा। एका लेखा रिहा वखा, लेखा लिखणहार करतारा। एका भिच्छया रिहा पा, कराए वणज सच्चा वणजारा। पूरन इच्छया रिहा करा, सतिजुग मंगे सति दुआरा। दहि दिशा प्रभ फेरी पा, चार कुन्ट कराए जै जैकारा। अकाल तख्त अकाल मूर्त एका दए सुहा, शब्द सिँघासण अपर अपारा। एका ताल दए सुहा, अमृत वहाए साची धारा। सच उछाल दए लगा, दुरमति आप कराए पार किनारा। शाह कंगाल कोई रहिण ना पा, ना कोई मंगे भेख किसे दुआरा। प्रभ एका रंगण रंग दए रंगा, रंगणहार विच संसारा। एका पौड़े दए चढ़ा, ना डुब्बे विच मँझधारा। गौड़ ब्रह्मण दए मिला, पूत सपूता कर प्यारा। सम्बल नगरी दए वखा, गुर गोबिन्द ल्या अवतारा। तन गात्रा इक्क लटका, आप आपणा करे शृंगारा। बस्त्र साचा तन छुहा, गुरमुखां करे प्यारा। आप आपणा ल्या कुहा, गुरसिक्खां उत्तों आपा वारा। गुरमुख साचे लए बचा, कलिजुग तेरी अन्तिम वारा। लक्ख चुरासी रिहा नचा, ना देवे कोई सहारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग सति करे वरतारा। सतिजुग साचा सति सतिवाद, सति पुरख निरँजण आप लगांयदा। आपे देवणहारा दाद, आपे बणत बणांयदा। आप आपणा रक्खया याद, आपे भरम भुलांयदा। आपे सुणे सुणाए सर्ब फरयाद, आपे मोह चुकांयदा। आप वजाए आपणा नाद, हरि आपे आप सुणांयदा। आप उपाए दया कमाए शब्द जणाई बोध अगाध, अगाध बोधा आप अख्वांयदा। सतिजुग मेला हरि साचे माधव माध, द्वार बंक इक्क सुहांयदा। खेले खेल आदि जुगादि, जुग जुग खेल खिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सति सति इक्क तत्त वरतांयदा।

❋ २४ मग्घर २०१४ बिक्रमी कर्म सिँघ दे गृह पिण्ड पिपली ज़िला फिरोज़पुर ❋

सति सन्तोख ज्ञान नाम, नामा मन्त्र दृढ़ाया। आत्म अन्तर इक्क ध्यान, एका एक एक लिव लाया। एका शब्द इक्क धुनकान, धुन अनादी इक्क वजाया। एका रूप श्री भगवान, एकँकारा इक्क अख्वाया। गुरमुख मेला विच जहान, जुग

जुग आप आपणा करदा आया। जाणे जणाए धुर फ़रमाण, दर दरवेशा आप अख्वाया। भरमे भुल्ले जीव नादाना, माया पड़दा एका पाया। कलिजुग काया कूड़ शैतान, कर्म धर्म ना कोई जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राह चलाया। सतिजुग साचे सच जणाई, एका नाम जैकारया। नौ खण्ड पृथ्वी वज्जे वधाई, दीपक जोती इक्क उज्यारया। चार वरन इक्क सरनाई, इक्क वखाए दर दरबारया। एका नाम इक्क पढ़ाई, एका लेखा हरि लिखा रिहा। एका शब्द जगत कुड़माई, कलिजुग अन्तिम सगन मना रिहा। लोआं पुरीआं वेख वखाए थाउँ थाँईं, आप आपणी दया कमा रिहा। जन भगत उठाए फड़ फड़ बाहीं, पूर्ब लहिणा झोली पा रिहा। सदा सुहेला देवे ठंडी छाईं, आप आपणा रंग रंगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा राह चला रिहा। सतिजुग साचा दर परवान, हरि आपणा आप करांयदा। आपे होया मेहरवान, दे मति आप समझांयदा। लोकमात झुलाए धर्म निशान, सच सुच्च वरतांयदा। जूठा झूठा मेट निशान, सांतक सति करांयदा। एका शब्द इक्क बिबान, इक्क चरन इक्क ध्यान, एका ब्रह्म ज्ञान जणांयदा। लक्ख चुरासी पुण छाण, साधां सन्तां देवे माण, आप आपणा मेल मिलांयदा। जोग जुगत हथ्थ भगवान, जुग जुग आपणी आप चलांयदा। सर्बकला समरथ वाली दो जहान, दो जहानां वाली आप अख्वांयदा।

आपे गोपी आपे काहन, राम रमईआ रूप वटांयदा। नानक गोबिन्द वेख निशान, निज घर आसण साचे लांयदा। थिर घर वसाए सच मकान, सच समग्री इक्क रखांयदा। गुरुआं पीरां साधां सन्तां देवे दान, पूरन इच्छया आप करांयदा। जुगा जुगन्त खेल महान, आदि अन्त भेव कोई ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा मार्ग लांयदा। सतिजुग साचा धर्म जैकार, एका एक करावणा। चार वरन होए इक्क द्वार, ऊँचां नीचां भेव मिटावणा। एका खण्डा तेज कटार, तन गात्रे आप लटकावणा। नाम बस्त्र तन श्रृंगार, शब्द सीस दस्तार बंधावणा। आप आपणा बख्शे चरन प्यार, चरनोदक मुख चुआवणा। काया तोड़ गढ़ हँकार, आप आपणा मूल वखावणा। आत्म चोटी चढ़ निरँकार, कोटी कोट जीव तरावणा। हउमे हँगता दुरमति मैल कढे वाशना खोटी, एका एक जाप जपावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, दर साचा इक्क सुहावणा। सतिजुग साचा दर खुल्हाए, पारब्रह्म अबिनाशी। एका वस्त विच टिकाए, चौदां लोक करे दासन दासी। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर फिरन तिहाए, थाउँ थाँईं वेखण घनक पुर वासी। गुरमुख साचे लए जगाए, किसे दिस ना आए पंडत काशी। अगम्म अगम्मड़ा धाम सुहाए, साचे मण्डल पावे रासी। नाड़ी चम्मड़ा कोई दिस ना आए, निर्मल जोत हरि साजन शाहो शाबाशी। जोती

१०६२ ०६

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जन भगतां करे बन्द खुलासी। सतिजुग साचा रिहा पुकार, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, दे मति रिहा समझाईआ। लोकमात रहिणा ख़बरदार, त्रैगुण तेरा संग निभाईआ। कलिजुग रोवे जारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। अबिनाशी करता मारे मार, ना कोई होए सहाईआ। कूड़ क्रिया कर्म विचार, देवणहार जगत सज़ाईआ। दोहां मेला विच संसार, बीस बीसा दए कराईआ। शब्द घोड़े हो अस्वार, चारों कुन्टां रिहा दौड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी रिहा उठाईआ। सतिजुग तेरा साचा रंग, प्रभ साचे आप चढ़ावणा। इक्क वजा नाम मृदंग, एका राग अलावणा। एका अमृत धारा वगे गंग, गुरमुख साचे आप नुहावणा। इक्क वखाए शब्द रंगीला सच पलँघ, गुरमुख आत्म सेजा आपे डाहवणा। आप आपणी चरन प्रीती लए मंग, दर द्वारे फेरा पावणा। मानस जन्म ना होए भंग, जिस जन रसना गावणा। आप लगावे आपणे अंग, अंगीकार आप अख्वावणा। कट्टणहारा भुक्ख नंग, आदि जुगादी मेल मिलावणा। मिले मेल विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड खोज खुजावणा। जाणे जणाए जेरज अंड, उत्भज सेत्ज फोल फुलावणा। ना कोई दिसे नार दुहागण रंड, साचा कन्त सर्ब हंढावणा। पंच विकारा खण्ड खण्ड, एका खण्डा नाम लावणा। सच शब्द धुर दरगाही दात जन भगतां रिहा वंड, आप आपणी सेव कमावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचे पकड़े दामना। सतिजुग साचे सच सलाह, हरि साचा सच वरतांयदा। शब्द सरूपी बण मलाह, लोकमाती फेरा पांयदा। एका एक वखाए जग साचा नाँ, एका धाम सुहांयदा। एका पिता एका माँ, पूत सपूता आप अख्वांयदा। इक्क इकल्ला पकड़े बांह, एका एक आप हो जांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा संग निभांयदा। सतिजुग तेरा साचा संग, हरि साचे आप निभावणा। धरत मात दर मंगी मंग, रो रो नेत्र नीर वहावणा। नौ खण्ड पृथ्वी होए भंग, सत्तां दीपां पड़दा किसे ना पावणा। लक्ख चुरासी होए नंग, कलिजुग कोए ना दिसे जामणा। त्रैगुण माया मारे डंग, पंज शैताना आप कुरलावणा। पंच पंचां लाया जंग, पंचम मोह चुकावणा। पंचम मंग रहे मंग, आप आपणा भेंट चढ़ावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, खेवट खेट आप हो जावणा। गुरमुख आत्म सति, सतिगुर पुरख मनाया। एका एक रखाई मति, एका दूजा भउ चुकाया। एका धीरज एका यति, एका सति सन्तोख समाया। एका नाम एका रथ, रथ रथवाही इक्क चलाया। एका शब्द कहाणी अकथ, अकथ कथा अख्वाया। एका हरि सदा समरथ, हर घट बैठा आसण लाया। जन भगतां देवे नाम

वत्थ, आप आपणी दया कमाया। जगत विकारा देवे मथ, एका तत्त समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचा वेख वखाया। हरिजन साचा सच सज्जण, सच सुच्च वड्याईआ। इक्क कराया साचा मजन, अट्ठ सट्ठ लहिणा देण चुकाईआ। आपे होया पड़दे कज्जण, नाम दोशाला इक्क पाईआ। गढ़ हँकारी दर द्वारे भज्जण, गढ़ भरमी तोड़ तुड़ाईआ। अनहद ताल नगारे काया मन्दिर अन्दर वज्जण, सुणे सुणाए हरि रघुराईआ। गुरमुख उधारे जिउँ नानक ठग्ग सज्जण, आप आपणे अंग लगाईआ। अमृत आत्म सर सरोवर दर द्वारे पी पी रज्जण, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। इक्क चढ़ाए नाम जहाज़न, सोहँ चप्पू लाईआ। सतिजुग मेला ग़रीब निवाजन, लोआं पुरीआं आप सुणाईआ। दो जहानी रच्चया काजन, आपणी आप कुड़माईआ। चिट्टा अस्व साचा ताजन, सोलां कलीआं आसण लाईआ। प्रगट होए देस माझन, सम्बल नगरी डेरा लाईआ। शाहो भूप वड राज राजन, शाह सुल्तान आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। सम्बल नगर सच टिकाणा, गुर गोबिन्द जोत जगाईआ। मिल्या मेल हरि भगवाना, विछड़ कदे ना जाईआ। एका चिल्ला एका तीर कमाना, एका खण्डा रिहा चमकाईआ। एका जोद्धा सूर बली बलवाना, एका तुरंग रिहा दौड़ाईआ। एका मर्द होए वड मरदाना, पारब्रह्म वड वड्याईआ। एका शब्द इक्क निशाना, नौ खण्ड पृथ्वी रिहा कराईआ। एका राग एका गाणा, एका रिहा सुणाईआ। एका पद होए निरबाणा, परम पुरख चरन सरनाईआ। ना कोई जाणे चतुर सुघड़ स्याणा, जगत विद्या होई हलकाईआ। जन भगतां देवे नाम बिबाणा, दो जहानां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ बुझाईआ। सम्बल नगर सच सुहाग, गोबिन्द कन्त मनाया। एका जोती जगे चिराग, अन्ध अन्धेर मिटाया। एका धुन एका राग, एका ताल वजाया। अबिनाशी करता आपे रिहा जाग, जन भगतां रिहा जगाया। आदि जुगादी पकड़े वाग, वरभण्डी खोज खुजाया। धुर दरगाही देवे साची दाद, सोहँ साचा नाम दृढ़ाया। जो जन रसना रहे अराध, अनुभव प्रकाश कराया। मेल मिलाए माधव माध, अजूनी रहित आप अख्वाया। सन्त दुलारे साचे साध, सिदक सबूरी इक्क रखाया। कलिजुग अन्तिम वेला लक्ख चुरासी सुणे सुणाए फरयाद, अन्दर मन्दिर डेरा लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराया। हरिजन मन्दिर सच वसेरा, हरि साची जोत जगाईआ। मेट मिटाए अन्ध अन्धेरा, अज्ञान अन्धेर गंवाईआ। आप चुकाए मेरा तेरा, हउमे रोग जलाईआ। भरमां ढाहे झूठा डेरा, साचा चन्द चढ़ाईआ। करे कराए हक्क निबेड़ा, सुरत सवाणी लए प्रनाईआ। डूँघी कन्दर बन्ने बेड़ा, जोत निरँजण सेवा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रिहा हिलाईआ।

१०६४
०६

साचे मन्दिर हरि भगवाना, हरि हरि जोत जगाईआ। एका शब्द इक्क तराना, एका राग अलाईआ। अनहद गावे साचा गाणा, पंचम रिहा सुणाईआ। परम पुरख हरि शाह सुल्ताना, निज घर बैठा आसण लाईआ। दिस ना आए जीवन दाना, बजर कपाट ना कोई तुड़ाईआ। घर विच घर ना किसे वखाना, दीवा बत्ती ना कोई टिकाईआ। जिस जन मिल्या शब्द बिबाना, दर साचा इक्क सुहाईआ। आपे करे करनहार परवाना, दस्म द्वारी कुण्डा लाहीआ। जगे जोत अगम्म अपारा, रूप रंग ना कोई जणाईआ। चिट्टी धार हरि निरँकारा, आपणी आप वरताईआ। आत्म सेजा सुत्ता पैर पसारा, जन भगतां राह तकाईआ। आपे नारी कन्त भतार, आप आपणा मेल मिलाईआ। आपे करे सच श्रृंगार, आप आपणी बरखा लाईआ। आप आपणा दए अधार, आप आपणे विच समाईआ। एका दूजा भउ निवार, तीजे लोइण मेला सहिज सुभाईआ। चौथे घर देवे वाड़, अमरापद इक्क वखाईआ। ना कोई दिसे बहत्तर नाड़, पंज तत्त ना कोई जणाईआ। रक्त बूंद ना दिसे सीस धड़, ना कोई रचना होर रचाईआ। ना कोई अक्खर विद्या रिहा पढ़, ना कोई करे मात पढ़ाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करता सन्त जनां फड़ाए आपणा लड़, आप आपणी बूझ बुझाईआ। आपणे अन्दर आपणे पौड़े आपे जाए चढ़, दिस किसे ना आईआ। जन भगतां दर द्वारे अग्गे खड़, निरगुण रूप वटाईआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई चोटी ना कोई जड़, ना कोई आकार जणाईआ। हर घट अन्दर बैठा वड़, आप आपणा पड़दा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजन लए वर, देवे मात जगत वड्याईआ। गुरमुख मेला हरि हरि निरँजण, आपणा आप करांयदा। नेत्र पाए एका अंजन, लोचन आप खुलांयदा। चरन धूढ़ बख्शे साचा मजन, दुरमति मैल गंवांयदा। मदिरा मास जो जन तजन, गुर गोबिन्द दरस दिखांयदा। जूठे झूठे अन्तिम भज्जण, काल नगारा इक्क वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलांयदा। हरिजन मेला धुर दरगाह, हरि आपणा आप कराया। गोबिन्द गुर बण मलाह, नाम पल्ला इक्क फड़ाया। एका देवे सच सलाह, निहकलंका जामा पाया। निथावयां घर देवे साचा थाँ, थिर घर साचा इक्क सुहाया। आपे पिता आपे माँ, हरिजन साचे गोद उठाया। चार वरन जपाए एका नाँ, ऊँचां नीचां भेव मिटाया। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, आप आपणी चोग चुगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे वेख वखाया। हरिजन वेखे इक्क इकल्ला, जग वड्डी वड्याईआ। गुरमुख काया सच महल्ला, प्रभ साचा फेरी पाईआ। वेख वखाए काया डल्ला, अन्दर मन्दिर खोज खुजाईआ। दीपक जोती विरले गुरमुख बला, दिवस रैण करे रुशनाईआ। इक्क वखाए निहचल धाम अटला, उच्च महल्ल अटल हरि रघुराईआ। आपे होए अछल अछल्ला,

१०६५
०६

अछल छल कराईआ। जिस जन फड़ाए आपणा पल्ला, विछड़ कदे ना जाईआ। कलिजुग अन्तिम बोले हल्ला, पुरख अगम्मड़ा अगम्मड़ी करे चढ़ाईआ। लेखे लाए जट्ट डल्ला, देस मालवा दए तराईआ। अन्तिम फलया आपे फुल्ला, फल फुलवाड़ी इक्क लगाईआ। कलिजुग बूटा अन्तिम हुल्ला, नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां फल कोई रहिण ना पाईआ। लक्ख चुरासी तेरा कोई ना पैणा मुल्ला, धर्म राए दए सज़ाईआ। गुरमुख विरला भाग लगाए आपणी कुला, जिस मिल्या गोबिन्द माहीआ। चरन द्वारे जो जन आया भुल्ला, नीले वाला दरस दिखाईआ। दो जहान कलिजुग अन्तिम तेरी कोई ना कराए सुल्ला, कलिजुग सतिजुग करे लड़ाईआ। जगत विकारा अन्तिम रुला, जूठ झूठ रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजन वेख घर, घर साचा इक्क सुहाईआ। गुरमुख साजण साचा मीता, हरि एका एक रखाया। नाम निधान हरि हरिजन साचे पीता, हरि हरि विच समाया। हरि हरि शब्द लागा मीठा, रसना जिह्वा गाया। धाम वखाए इक्क अनडीठा, जगत नैणा दिस ना आया। मिट्ठा करे काया कौड़ा रीठा, अमृत मुख आत्म चुआया। काया चोली चाढ़े रंग मजीठा, उतर कदे ना जाया। मात गर्भ ना तपे जगत अंगीठा, आवण जावण फंद कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे थाउँ थांया। हरिजन साचा साचा मेला, जग आप करांयदा। आपे गुर गुरु गुर चेला,
१०६६ गुर गोबिन्द रूप समांयदा। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला, सम्बल नगरी डेरा लांयदा। आपे वसया रंग नवेला, हर १०६६
०६ घट आसण लांयदा। सृष्ट सबाई सज्जण सुहेला, सगला संग निभांयदा। जोत निरँजण चाढ़े तेला, चौदां चौदां सगन ०६
मनांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग विछड़े जग मेल मिलांयदा। जुग विछड़े जग मेलया, आपणी किरपा धार। आपे होए सज्जण सुहेलया, सखा सहाई साचा यार। दर घर मन्दिर अन्दर इक्क अकेलया, इक्क इकल्ला एकँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत जरम कर्म धर्म पूर्ब रिहा विचार। पूर्ब लहिणा सच घर, घर सच वज्जे वधाईआ। नेत्र नैणा दरस कर, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। शब्द गहणा अपर अपार, तन बस्त्र इक्क सुहाईआ। कलिजुग वहिण जगत ना वहिणा, जो जन रहे सरनाईआ। जूठ झूठ नात मात पित साक सैणा भाई भैणा, थिर कोई रहिण ना पाईआ। जिस जन मिले पुरख बिधाता आप चुकाए लहिणा देणा, कर्म कर्मा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण मेल कर, घर सुहञ्जणा जोत निरँजणा अट्ठे पहर करे रुशनाईआ। घर पवित गृह पवित, गुरमुख वड्डी वड्याईआ। हरिसंगत हरि साचा मित, जुग जुग बणत बणाईआ। वेख वखाए नित नवित्त, अकल कला समाईआ। ना कोई वार ना कोई थित, अट्ठे पहर रंग रंगाईआ। इक्क

अबिनाशी वसया चित, चित ठगोरी रहिण ना पाईआ। अमृत आत्म काया दए सित, सिंच हरी क्यारी आप कराईआ। काया रहे ना जगत रित, रक्त बूंद लेखे लाईआ। साची सिख्या एका सिक्ख, सिक्खी सिख्या इक्क निभाईआ। दो जहानी आपे लेखा रिहा लिख, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जन भगतां देवे नाम भिख, भिच्छया झोली पाईआ। किसे हथ्थ ना आए मुन रिख, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ां बैठे धूणीआँ ताईआ। जगत विकारा मिटे तृख, तृष्ना भुक्ख रहे ना राईआ। निहकरमी कर्म जन रिहा लिख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ कर्म लेखे लाईआ।

✻ २४ मग्घर २०१४ बिक्रमी राम सिँघ दे गृह मकान नम्बर ३८६ फिरोज़पुर छाउँणी ✻

हरि हरि अपार, हरि हरि आप उपाया। हरि हरि सच्चा दरबार, हरि हरि बैठा आसण लाया। हरि हरि सच्चा सिक्दार, हरि हरि आपणा हुक्म सुणाया। हरि हरि वेखे कर विचार, वेखणहार आप अख्वाया। हरि हरि रूप अगम्म अपार, अगम्मड़े धाम सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगाया। हरि का रंग अपर अपार, हरि
१०६७ हरि साचे जाणया। आप आपणा लए मंग, आप आपणी सुणे पुकारया। आप आपणे वसया संग, आप आपणा करे पार १०६७
०६ उतारया। आप आपणा वजाए मृदंग, सुणनेहार आप अख्वा रिहा। आप आपणा दरवाज़ा जाए लँघ, आप आपणा मेल मिला ०६
रिहा। आप आपणे बैठ पलँघ, आप आपणी सेज सुहा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगा रिहा। आप आपणा रंग रंगा, आपणी कल वरताईआ। ना कोई दूसर संग रला, ना कोई दूसर संग रलाईआ। निर्मल जोती इक्क जगा, आप आपणी करे रुशनाईआ। सति पुरख निरँजण आप अख्वा, आप आपणा नाउँ धराईआ। आदि जुगादी गया समा, भेव ना कोई राईआ। मोहण माधव माधी लेख लिखा, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि हरी हरि आप उपाईआ। आपणा आप हरि आप उपा, आपणी जोत जगाईआ। आप आपणा नाँ रखा, आप आपणी बणत बणाईआ। आपे होया पिता माँ, आप आपणी गोद उठाईआ। आपे देवणहारा ठंडी छाँ, आप आपणा सिर हथ्थ टिकाईआ। आप आपणी फड़े बांह, आप आपणा राह चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी जाणे आपे वड्याईआ। आप आपणा नाउँ रक्ख, आपणा आप उपाया। जोती नूर कर प्रतक्ख, सति सरूप समाया। आप आपणी कीमत पाए लक्ख, आप आपणा मूल चुकाया। आप आपणा करे सक्ख, आप आपणा

रिहा भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगाया। आप आपणी हरि कल धार, अचरज बणत बणाईआ। रूप अगम्म अपर अपार, पुरख अकाल अख्वाईआ। ना कोई नर ना कोई नार, ना कोई कन्ता नार वखाईआ। पुत्तर धी ना कोई प्यार, बंधन बंध ना कोई रखाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, आप आपणा लए उपाईआ। आप आपणी करे विचार, आप आपणा मता पकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेख वखाईआ। आप आपणा वेख वखा, हरि आपणा आप जणा रिहा। आप आपणा लेखा रिहा लिखा, आपे होए मेटणहारया। आप आपणा सिक्का रिहा चला, आप आपणी मोहर लगा रिहा। निक्का वड्डा हरि आप अख्वा, बिरध बाली रूप ना कोई जणा रिहा। आप आपणी भिच्छया पा, आप आपणी झोली अग्गे डाह रिहा। आप आपणी महिंमा रिहा जणा, अकल कल आप अख्वा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी जोत जगा रिहा। आप आपणी जोत जगा, आपणी दया कमाईआ। आप आपणा रंग रंगा, रंग रगीला वेख वखाईआ। आप आपणा संग निभा, सगला संग आप हो जाईआ। आप आपणा मृदंग वजा, आप आपणा रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण खेल खिलाईआ। सरगुण खेल हरि करतार, करनहार अख्वाया। इक्क इकल्ला एकँकार, इक्क सहारा रिहा जणाया। आप आपणी पावे सार, भेव अभेद आप हो जाया। आपे लेखा लिखणहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आपे रिहा उपाया। आपणी इच्छया हरि उपाई, घर साचे वज्जी वधाईआ। आप आपणी करे कुड़माई, आप आपणा सगन मनाईआ। आप आपणी सेज हंढाई, आपे बणया साचा माहीआ। आप आपणी कुक्ख भराई, आप आपणा पड़दा पाईआ। आप आपणी जोत रिहा जगाई, हरि शब्दी नाउँ धराईआ। शब्द सुत वड्डी वड्याई, पारब्रह्म इक्क जणाईआ। अबिनाशी अचुत्त दया कमाई, सति पुरख निरँजण सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण खेल कर निरगुण जोत इक्क अख्वाईआ। निरगुण पूत साचा सुत्त, हरि साचे आप उपाया। आप सुहाई आपणी रुत्त, आप आपणा वेख वखाया। आप आपणा सोमा पया फुट, अमृत सीर मुख चुआया। आप आपणा ल्या लुट्ट, आप आपणा दए भराया। आप लगाए आपणी चोट, आप आपणा डंक वजाया। शब्द सुत प्रभ भरी पोट, तोट रहे ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण रूप इक्क धर, साचा सुत जणाया। साचे सुत जन्म दवा, हरि साचे खुशी मनाईआ। आप आपणा अंग कटा, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। एका सिख्या रिहा सिखा, भुल्ल रहे ना राईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड रिहा रचा, गगन पाताल आकाश प्रकाश दए कराईआ। एका अक्खर दए पढ़ा, ना कोई

दूजी होर पढ़ाईआ। सति सरूप नाउँ रखा, सांतक सति वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे पकड़नहारा बांह, आप आपणा सीस हथ्थ टिकाईआ। शब्द सुत हरि बलवान, एका एक उपाया। आप आपणी करे पछान, आप आपणा मूल रखाया। पुरख अबिनाशी मेहरवान, दया निध आप हो आया। इक्क फड़ाए सच निशान, दो जहानां आप झुलाया। ना कोई वेखे होर मकान, दर दरवाज़ा ना कोई खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोती इक्क धर, साचा सुत उपाया। साचा सुत सिफ्त सलाह, दोए जोड़ करे निमस्कारया। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, एका बख्शे चरन प्यारया। लोआं पुरीआं रचन रचा, ब्रह्मण्ड लए उधारया। आप आपणा विच लए टिका, आप आपणा कर पसारया। शब्दी शब्द जाए समा, शब्दी शब्द होए आकारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा मार्ग ला रिहा। आप आपणा मार्ग ला, हरि साची रचन रचाईआ। साचा सुत आप उपा, साची सेवा लाईआ। सर्ब घट गया आप समा, दिस किसे ना आईआ। ब्रह्मा विष्न शिव लए उठा, आप आपणा रूप वटाईआ। त्रैगुण माया तत्त सुहा, पंज तत्त करे वड्याईआ। मन मति बुध विच टिका, रक्त बूंद लेखे लाईआ। आप आपणा रिहा छुपा, निरगुण खेल करे रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सुत शब्द दुलार कर प्यार, आप आपणा झोली पाईआ। सुत दुलारा कर प्यारा, आपणा रंग रंगाया। एका देवे सच हुलारा, लोआं पुरीआं विच समाया। इक्क इकल्ला एकँकारा, अकल कला समाया। खेले खेल हरि गिरधारा, खेलणहार दिस ना आया। जोत सरूपी कर उज्यारा, लक्ख चुरासी लए उपाया। लक्ख चुरासी भेव न्यारा, लेखा लेख ना कोई जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत दित्ता वर, इक्क ज्ञान इक्क ध्यान, एका नाम दृढ़ाया। शब्द सुत कर प्यार, ब्रह्मे ब्रह्म समाईआ। आपे जाणे आपणी धुन्कार, आपणा नाद वजाईआ। आपे बणे लेखा लेख लिखार, आपे वेदां रिहा उचार, अछल अछेदा छल कराईआ। लेखा लिखे हरि निरँकार, निरगुण खेल रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सुत दित्ता वर, आप आपणा झोली पाईआ। आप आपणा झोली पा, हरि साचा दए वड्याईआ। सो पुरख निरँजण आप अखवा, आप आपणा नाउँ धराईआ। हँ हँगता हर घट रिहा टिका, बैठा मुख छुपाईआ। आदि अनादी आप अखवा, ब्रह्मादी डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सुत देवे वर, दो जहानां इक्क घर, सोहँ वड वड्डी वड्याईआ। आप आपणा कर उज्यारा, हर घट बैठा आसण लाया। आपे जाणे आपणा सच जैकारा, आपणे अन्दर आपे रिहा सुणाया। आपे गुप्त आपे ज़ाहरा, आप आपणा पड़दा लाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप

आपणा वेख वखाया। आप आपणा वेखणहारा, हरि हरि हरि भगवन्ता। लोकमात खेले खेल अपारा, आप बणाए आपणी बणता। आप आपणा कर चमत्कारा, हरिजन उठाए साचे सन्ता। एका देवे शब्द धुन सच्ची धुन्कारा, अनहद साचा ताल वजन्ता। इक्क वखाए सच सच्चा दरबारा, पूरन जोत श्री भगवन्ता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल आदि जुगन्ता। आप आपणा हरि टिका, लोकमात करे कुड़माईआ। आप आपणा भेख वटा, आप आपणी जोत जगाईआ। पंज तत्त आप समा, आप आपणा मुख छुपाईआ। आप आपणा पड़दा लाह, आप आपणी दए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण खेल खेलणहार आप अख्वाईआ। निरगुण खेल विच संसारा, आपणा आप कराया। आप आपणा लै अवतारा, आप आपणा डंक वजाया। आपे होए भेखी भेख करे न्यारा, एका भिच्छया झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हर घट करे आप पसारा। आप आपणा मात जगा, आपणी करे आप कुड़माईआ। साचे मण्डल रास रचा, साचा मंगल एका गाईआ। रूप अनूपा आप वटा, सति सरूपा आप हो जाईआ। शाहो भूपा हर घट थाँ, शब्द सिँघासण बैठा आसण लाईआ। आप जपाए आपणा नाँ, जुग जुग नाउँ धराईआ। आपणी वंड आप वंडा, आपणे हिस्से रिहा पाईआ। आपणे कंडे आप तुला, तोलणहार आप अख्वाईआ। ब्रह्मण्ड खण्डां आपे रिहा हिला, आपे रिहा टिकाईआ। जेरज अंडां बणत बणा, उत्भज सेत्ज संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेख वखाईआ। आप आपणा हरि वखान, आपणी कल धारीआ। प्रगट जोत विच जहान, खेले खेल वड संसारीआ। काया मन्दिर सच मकान, हरि शब्द लए अवतारीआ। लेखा लिखे जगत महान, आप आपणा गुण विचारीआ। ना कोई सके मात पछान, जीव जन्त ना पायण सारीआ। आप आपणी करे कलयान, आप आपणा पार उतारीआ। आपे देवे आपणा दान, आपणा आप बणे भण्डारीआ। आपे बख्शे आपणा इशनान, चरन कँवल आप अख्वा रिहा। आप आपणा रक्खे माण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा जोग कमा रिहा। आप आपणा जोग कमावे, अकल कला कल धार। सच संजोग आप हंढाए, एका शब्द शृंगार। आप आपणे अंग लगाए, आप आपणी किरपा धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात लए अवतार। लोकमात हरि लै अवतारा, आपणा आप उपांयदा। जन भगतां देवे नाम अधारा, साची सिख्या आप दवांयदा। महल्ल अटल वखाए उच्च मुनारा, काया मन्दिर फोल फुलांयदा। दीपक जोती जगे अगम्म अपारा, निर्मल बाती इक्क वखांयदा। शब्द धुन अपर अपारा, ताल अनादी इक्क वजांयदा। सर सरोवर भरया अमृत भण्डारा, हरिभगतां आप नुहांयदा। आपे मंगे बण भिखारा, आप आपणी झोली पांयदा।

आदि पुरख अबिनाशी करता इक्क इकल्ला एकँकारा, जुग जुग आपणा वेस वटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी वंड वंडांयदा। आपणी वंडन रिहा वंडा, आपणी कल वरतांयदा। सतिजुग साचा नाँ रखा, एका भिच्छया झोली पांयदा। सो पुरख निरँजण आप अख्वा, हँ हँगता विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा मार्ग लांयदा। सतिजुग साचा सति सतिवाद, घर साचे वज्जी वधाईआ। खोजे खोज हरि ब्रह्माद, खोजणहार सृष्ट सबाईआ। भगत सुहेले आपणे लाध, आप आपणी बूझ बुझाईआ। शब्द जणाई बोध अगाध, लेखा कोए ना सके लिखाईआ। आत्म अन्तर रहे अराध, एका निरगुण हरि लिव लाईआ। हरिजन वेखे साचे साध, जो पड़े हरि सरनाईआ। अगम्म अगम्मड़ा देवे दाद, नाड़ी चम्मड़े आप टिकाईआ। थिर घर बैठ सुणे फरयाद, शब्द सिँघासण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साची जोत धर, आप आपणा रंग वटाईआ। रेख भेख प्रभ आप वटा, आप आपणे रूप समाया। आप आपणा लए मिटा, आप आपणा लए उपाया। हरिजन साचे लए उठा, जोग जुगत इक्क सिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वंडण आप वंडाया। सतिजुग साचा उतरे पार, लोकमात वज्जे वधाईआ। त्रै त्रै वेता आए बाहर, त्रैगुण संग रलाईआ। नेतन नेता विच संसार, खेले खेल सृष्ट सबाईआ। नाल ल्याया काम क्रोध हँकार, लंका गढ़ सुहाईआ। पुरख अबिनाशी लै अवतार, राम रामा रूप अख्वाईआ। खेले खेल अपर अपार, खेलणहार आप अख्वाईआ। लहिणा देणा देवे कर्ज उतार, आप आपणी दया कमाईआ। रावण गढ़ तोड़े हँकार, थिर रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। हथ्थ वड्याई हरि साचे शाह, सच्चो सच कमाया। आपे होया बेपरवाह, भेव ना कोई राया। आप आपणी लए सलाह, आप आपणे धन्दे लाया। द्वापर हरि मात धरा, दो जहानां वेख वखाया। भेखाधारी भेख वटा, काहना कृष्ना रूप वटाया। दुष्ट हँकारी मेट मिटा, धर्मी धर्म कमाया। एका गुरमुख रूप वटा, एका भगती भगत जगाया। अठारां ध्याए आप सुणा, एका मन्त्र मूल दृढ़ाया। सृष्ट सबाई गया जणा, भुल्ल रहे ना राया। आप आपणा मेट मिटा, बंसा बंसी दए खपाया। वेख वखाणे आपणा थाँ, दिस किसे ना आया। कलिजुग पकड़े लोकमात बांह, लोकमाती जन्म दवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगाया। कलिजुग साचा सुत दुलार, उठ लै मात अंगड़ाईआ। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, मंगे मंग झोली डाहीआ। जूठ झूठ कर प्यार, माया ममता नाल प्रनाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार तन शृंगार, एका शब्द तन छुहाईआ। एका अक्ख दए उग्घाड़, ऐड़ा अलख जगाईआ। अल्ला राणी हो त्यार, मुख बैठी

१०७१
०६

घुंगट पाईआ। चरन द्वारे कर निमस्कार, नेत्र नैण रही शरमाईआ। मेले मेल विच संसार, कलिजुग मीता रिहा मनाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, देवे सच सच्ची सलाहीआ। लोकमात जाणा रहिणा ख़बरदार, तेरी होए जगत कुड़माईआ। मिले मेल मुहम्मद यार, अन्दर मन्दिर डेरा लाईआ। चार यारी सुणे पुकार, दिवस रैण रही कुरलाईआ करे खेल हरि करनेहार, एका नाअरा रिहा वखाईआ। ऐहनल हक्क तेरी धार, अल्ला हू जणाईआ। एका एक ख़ुदा बेऐब परवरदिगार, ला फानी आप अख्वाईआ। लोकमात कर सिक्दार, इच्छया भिच्छया झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग साचा संग निभाईआ। कलिजुग मेला साचा संग, घर साचे ख़ुशी मनाईआ। एका मुहम्मद मंगे मंग, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। लोकमात वजाए आपणा मृदंग, आपणा रूप वटाईआ। अल्ला राणी होई संग, हथ्थीं मैहन्दी एका लाईआ। पुरख अबिनाशी करता चिट्टे अस्व घोड़े कस तंग, वेखण आवे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी वेखे वड वड्डी वड्याईआ। कलिजुग साचा सच सिक्दार, साचा कर्म कमाया। जूठ झूठ कर ख़बरदार, सृष्ट सबाई मेल मिलाया। पंज तत्त कर शृंगार, माया मोह सीस दस्तार बंधाया। कोई ना पावे किसे सार, एका दूजा मोह चुकाया। वरन बरनी हाहाकार, दूई द्वैती बीज बिजाया। चारों कुन्ट धूआँधार, सच चन्द ना कोए चढ़ाया। रवि ससि रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नीर रहे वहाया। धरत मात करे पुकार, खुल्हड़े केस गल विच पाया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आप आपणा भेख वटाया। नानक गुर दे अवतार, इक्क मृदंग वजाया। आप सुणाए सुणनेहार, साचा शब्द इक्क जणाया। मंग मंगता दर दरबार, इक्क दुआरा रिहा वखाया। भिक्खक भिच्छया पाए अपार, आप आपणा दए वटाया। नानक निरगुण ढहि पए द्वार, थिर घर वेखे खेल रघुराया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, आप आपणे गले लगाया। नाम सति मन्त्र अपर अपार, हरि साचे आप दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक गुर एह समझाया। न : निरगुण रूप नर नरायणा, हर घट आप समाया। न : निरगुण रूप मन्ने कहिणा, भुल्ल कदे ना जाया। क : कर्मी पाया गहणा, प्रभ साचे दर बहाया। आप चुकाए तेरा देणा लहिणा, नाम सति झोली पाया। लोकमात भाणा सहिणा पैणा, इक्क ओट अकाल रखाया। पुरख अबिनाशी दरस दिखाए अट्ठे पहर लोचन नैणां, विछड़ कदे ना जाया। नाता तुट्टे मात पित साक सज्जण सैणा, सति पुरख निरँजण सतिगुर पूरा एका नज़री आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक नानक विच समाया। नानक गुर नर निरँकार, एका अलख जगाईआ। एका शब्द एका सुर एका सितार, एका लिव लाईआ। एका घर एका दर एका हरि एका वर, एका महल्ल सुहाईआ। हरि हरि भाणा रिहा जर, भाणे विच समाईआ।

१०७२
०६

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुरख अबिनाशी देवे वर, नानक नानक नानक एह समझाईआ। नानक गुर हरि आप जणा, आपणा आप बुझाया। सो पुरख निरँजण आप अख्वा, सति पुरखा नाउँ धराया। हर घट अन्दर गया समा, हँ हं आप अख्वाया। नानक चोली रंग रंगा, रंग अनडीठा इक्क रंगाया। आपणा भेव प्रभ आप खुल्ला, आप आपणा पड़दा लाहया। सोहँ सोहँ नानक गुर रिहा गा, हरि गोबिन्द मेल मिलाया। सृष्ट सबाई सतिनाम मन्त्र द्रढ़ा, जगत मार्ग इक्क वखाया। चारे कुन्टां फेरी पा, वरनां बरनां रिहा जगाया। कलिजुग कूड़ा रिहा कुरला, प्रभ अग्गे दए दुहाया। संग मुहम्मद नाल रला, मंगण मंग इक्क मंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख वखाए थाउँ थांया। मंगी मंग हरि दरगाह, मुहम्मद मुख उचारया। चौदां लोक बेपरवाह, तेरा रूप होए सिक्दारया। चौदां हट्ट वेख वखा, चौदां चौदां पार किनारया। पुरख अबिनाशी रिहा जणा, सुण साचे सुत दुलारया। तेरे मस्तक टिक्का दित्ता ला, चौदां तबकां इक्क हुलारया। सद चौदां तेरा लेखा तेरी झोली पा, लहिणा देणा मूल चुका रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हर घट आपे वेख वखा रिहा। कलिजुग तेरी सुण पुकार, प्रभ साचे दया कमाईआ। मुहम्मद रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नीर वहाईआ। नानक बेड़ा डोबे मेरा अधविचकार, नाम चप्पू रिहा दबाईआ। पुरख अबिनाशी कर विचार, लेखा लेखा अग्गे रखाईआ। अभुल्ल अभुल्ल आप करतार, भुल्ल क्यों मेरा वक़त गंवाईआ। पुरख अबिनाशी आदि जुगादी सदा अतुल, पूरा तोल तुलाईआ । कलिजुग सुणाए आपणा बोल, तेरां पूरा तोल तुलाईआ। नानक जोती जाए मौल, हरि शब्द करे जणाईआ। नानक जैकारा एका बोल, लक्ख चुरासी गया सुणाईआ। निहकलंक लै अवतारा वजाए ढोल, मृदंगा आपणे हथ्थ रखाईआ। लोआं पुरीआं पड़दा दए फोल, ब्रह्मा विष्न शिव दए हिलाईआ। लेखा जाणे ना कोई पांधा रौल, जगत जीव भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक निरगुण वेख वखाईआ। नानक निरगुण वक्ख कर, घर साचा आप समाया। साची जोत धर, अंगद अंग लगाया। आप आपणा दित्ता वर, अमर अमरा पद समाया। आपणा भाणा आपे ज़र, राम दास होए सहाया। राम दास तेरा साचा सर, गुर अर्जन सेव कमाया। अर्जन जोती हरि जी हरि, हरि शब्दी बणत बणाया। हरि गोबिन्दा साचे घोड़े चढ़, नाम खण्डा रिहा चमकाया। हरि राए प्रभ सरन पढ़, सरन सरनाई साची आया। हरि कृष्न एका अक्खर गया पढ़, जगत विद्या माण गंवाया। तेग बहादर साचे घोड़े पौड़े गया चढ़, प्रभ साचे आप चढ़ाया । गऊ ग़रीबां फड़ाया एका लड़, आप आपणा पलड़ा डाहया। लेखे लाए सीस धड़, किला गढ़ तुड़ाया। गुर गोबिन्दे हरि अन्दर वड़, दे मति आप समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग

जुग आपणा भेख वटाया। गुर गोबिन्दे आप समा, हरि आपणी जोत जगाईआ। बाल अवस्था बाल नादाना गले लगा, बाली बाल आप अख्वाईआ। शब्द निशाना तीर चला, एका चिल्ला रिहा चढ़ाईआ। तन गात्रे सच नाम खण्डा इक्क वखा, आप आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी भिच्छया झोली पाईआ। गोबिन्द गुर हरि हरि साथा, सगला संग निभाया। आप चलाए आपणा राथा, रथवाही आप अख्वाया। इक्क निभाए आपणा साथा, सगला साथी आप हो जाया। आपे जाणे आपणी गाथा, जुग जुग करदा आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द काया लई वर, वर दाता आप हो जाया। गोबिन्द दर साची नारी, हरि कन्त करे प्यारा। पिता पूत इक्क सिक्दारी, एका एक राज दरबारा। एका जोद्धा सूर वड बलकारी, एका तेज कटारा। एका तोड़े गढ़ हँकारी, एका करे सच प्यारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्दा आप उपजाए साची बिन्दा, वेख वखाए सगल पसारा। गुर गोबिन्दा आप उपा, आपे दए वड्याईआ। पन्थ पन्थी पन्थ बणा, चार वरन इक्क सरनाईआ। साचे मन्दिर डेरा ला, अनन्द अनन्द अनन्द अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे भाणे रिहा समाईआ। आपणा भाणा आप जणा, गुर गोबिन्द आप जणाया। आपणा पूत आप उपा, आपणी सेवा लाया। शब्द दूत रिहा दुड़ा, दो जहानी फेरा पाया। मस्तूआणा वेख वखा, दहि दिशा भेव खुल्ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द एह समझाया। गुर गोबिन्दे शब्द जणाई, प्रभ साचा आप सुणांयदा। पुरी अनन्द होए जुदाई, वेला अन्तिम आंयदा। गुर गोबिन्दा वेखे चाँईं चाँईं, अट्ठे पहर खुशी मनांयदा। गुरमुख गुरसिख जानण नाही, हरि भाणे विच समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वक़त सुहांयदा। आपे जाणे आपणा वेला, आपणी कार कमाईआ। आपे गुर आपे चेला, आप आपणी सेव कमाईआ। सदा सहाई इक्क इकेला, इक्क इकल्ला आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द सेवा लाईआ। गुर गोबिन्द साची सेव कमा, चल्लया कर कर धाईआ। पुरी अनन्द दए तजा, आपणा चरन टिकाईआ। आपणा लेखा आप उठा, आपणे सीस टिकाईआ। सरसा तेरी भेंट चढ़ा, गुर पूरे खुशी मनाईआ। आप आपणा पार करा, खेले खेल वेखे थाउँ थाँईंआ। बीस बीसा विच गया समा, साची अंसा आप अख्वाईआ। गुण अवगुण बाशक मुख सहँसा ना सके गा, गोबिन्द गोबिन्द एह वड्याईआ। जंगल जूह उजाड़ बैठा डेरा ला, इक्क ओट अकाल रखाईआ। सच सुनेहड़ा रिहा घला, प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। माछूवाड़े वाले मिल्या थाँ, पुरी अनन्द दिस ना आईआ। जिउँ भावे तिउँ रिहा करा, नानक सिख्या इक्क सिखाईआ। पुरख अबिनाशी दया कमा,

आप आपणी लै अंगड़ाईआ। गुर गोबिन्दे मिल्या आ, लोकमात जोत जगाईआ। आपे आपणे अंग लगा, साची सिख्या इक्क समझाईआ। वेला वक़त तेरा दए सुहा, प्रभ साचे हथ्थ वड्याईआ। मुहम्मद लहिणा आप चुका, चौदां लोकां दए मिटाईआ। तेरी जै इक्क करा, एका नाअरा लाईआ। सच महल्ला दए वसा, साचा धाम सुहाईआ। किसे दिस ना आए शहर नगर ग्रां, गुर दर मन्दिर ना डेरा लाईआ। तेरी काया मन्दिर जोती दए जगा, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। कलिजुग लेखा दए मिटा, जूठी झूठी मिटे शाहीआ। सतिजुग साचा चन्द चढ़ा, गोबिन्द तेरा ताज तेरे सीस टिकाईआ। ख़ुशी बन्द बन्द करा, गुरसिक्खी दए वड्याईआ। पंचम ठग्गां तों लए बचा, पंचम दित्ती इक्क पढ़ाईआ। पुरख अबिनाशी कलिजुग अन्तिम जोत जगा, एका इक्की देवे पाईआ। साची सिक्खी आप बणा, चार वरन दए सरनाईआ। रिखी मुनी कोई जाणे ना, तिक्खी धार आप चलाईआ। मुस्लिम सुंनी कोई दिसे ना, पंडत पांधा मस्तक तिलक ना कोई लगाईआ। हिन्दू सिख ईसाई कोई उठे ना, ज़ात पात रहिण ना पाईआ। वेद पुराण अञ्जील कुरान ना सके कोई पढ़ा, ना कोई मुल्ला सबक सिखाईआ। होम यग्ग यात्री हवन ना सके कोई करा, दुर्गा मन्त्र ना कोई अलाईआ। राग छत्ती ना सके कोई गा, प्रभ वड्डे हथ्थ वड्याईआ। नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां एका मार्ग दए पा, एका एक करे जणाईआ। ब्रह्मा शिव विष्न सेवा ला, सेवक सेवा इक्क वखाईआ। करोड़ तेतीसा दए जणा, शब्द हुलारा इक्क जणाईआ। गुरमुख साजण साचे तेरे संग रला, लोकमात करे कुड़माईआ। पुरी अनन्द छड्ड जो सरसे दित्ता रुढ़ा, लोकमात जन्म दवाईआ। सम्मत चौदां वीह सद तेरां लड़ दए फड़ा, जोती शब्द करे कुड़माईआ। साचे पौड़े दए चढ़ा, उच्चा डण्डा एका लाईआ। बजर कपाटी किला दए तुड़ा, दस्म द्वारी जोत जगाईआ। एका अक्खर आप पढ़ा, एका मेल मिलाईआ। एका दूजा भउ चुका, तीजे नेत्र दरस दिखाईआ। चौथे घर दए बहा, अमरापद वड्डी वड्याईआ। पंचम मेला सहिज सुभा, गुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। छेवां छप्पर छन्न प्रभ इक्क रखा, शब्दी रचन रचाईआ। सत्तवें सति पुरख निरँजण तेरे दर जाए समा, तेरा काया रथ चलाईआ। आप आपणा भेख वटा, एका डंक नाउँ वजाईआ। निहकलंक नाउँ धरा, गोबिन्द मेल मिलाईआ। सगली चिन्ता दए मिटा, सगली सृष्ट सहाईआ। निन्दक दुष्ट दुराचार कोई रहिणा ना, कलिजुग अन्तिम दए खपाईआ। झूठे वहिण किसे वहिणा ना, मदिरा मास ना कोई खाईआ। वेसवा घर किसे बहिणा ना, काम क्रोध ना होए हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्दे दित्ती आप वड्याईआ। गुर गोबिन्दा सुण प्रनाम, करे चरन द्वारया। पुरख अबिनाशी काया तेरा चाम, तेरे चरनां उत्तों वारया। साची सिक्खी मेरा साचा दाम, फले फुले विच संसारया। एका जपे तेरा नाम, दूजे जाए

ना किसे द्वारया। एक एक देणा ताम, तृष्ना भुक्ख निवारया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर गोबिन्द दए प्यारया। गोबिन्द देवे हरि प्यारा, आपणा हथ्थ उठाया। वेखे खेल विच संसारा, हरि जोती जोत जगाया। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, साचा धाम आप सुहाया। गुर गोबिन्द उठ उठ वेखे कर विचारा, कवण कूटे हरि हरि डेरा लाया। पुरख अबिनाशी भेव खुल्हाए दया कमाए सभ तों वसया बाहरा, जोत निरँजण सेवादारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप वखाए सच सच्चा दरबारा। सच दरबार हरि सुल्तान, आपणा आप वखाया। गुर गोबिन्दा कर परवान, चरन ध्यान लगाया। पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, आप आपणे रंग रंगाया। लेखा लिखे जगत महान, आप आपणा वेख वखाया। सम्बल नगर सच मकान, हरि गोबिन्द जोत जगाया। चौदां लोक चौदां हट्ट चौदां तबक रखाए इक्क मकान, एका वणज नाम कराया। गुरमुख साचे चतुर सुजान, अन्तिम मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा अंक वखाया। हरि हरि अंक अंक अवल्ला, भेव ना कोई भेदया। आपे जाणे इक्क इकल्ला, लेखा लिखे ना चारे वेदया। आपणी जोती आपे रला, हरि शब्दी वेद कतेब्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जाणे जणाए बोध अगाध्या। राम सिँघ हरि राम भण्डारा, राम राम वरताया। आपे बणे जगत वरतारा, जुग जुग आप वरताया। भगत द्वारे बण भिखारा, भेखाधारी भेख वटाया। जन्म कर्म ना जाणे जीव गंवारा, गुरमुखां मेल मिलाया। मिल्या मेल गुर करतारा, गुर मन्त्र नाम दृढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग विछड़े जग मिलाया। राम नाम शब्द भण्डारा, एका एक रखाया। अतोट अतुट विच संसारा, निखुट्ट कदे ना जाया। गुरमुखां देवे कर प्यारा, आप आपणी सेवा लाया। पूरा कीता कौल इकरारा, भुल्ल कदे ना जाया। पाए मुल्ल विच संसारा, अमोलक सेहरा इक्क रखाया। फल लगाए काया साची डाल्ही, फुल फुलवाड़ी वेख वखाया। आत्म अन्तिम दीपक जोती करे उजाला, अन्ध अन्धेर मिटाया। स्वच्छ सरूपी दरस दिखाए गुर गोपाला, गोबिन्द रूप वटाया। अजूनी रहित रसन ना कहित वेख वखाए नूरी नूरा, नूरो नूर समाया। काया मन्दिर आपणा आप उपाए, सुहाए सच सच्ची धर्मसाला। अट्ठे पहर डगमगाए, तोड़ तुड़ाए जगत जंजाला। काल महांकाल नेड़ ना आए, धर्म राए ना कढ्ढे दवाला। चरन सरन इक्क वखाए, देवे नाम सच्चा धन माला। आत्म झोली आप भराए, आपे शाह आपे कंगाला। शब्द फूलन गल हार पवाए, आपे होए दो जहान रखवाला। पूर्ब लहिणा भेव खुल्हाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मारया बाण इक्क निराला। मारया बाण मिरग नैण, नैण मुँधारी दिस ना आया। नैण मुँधारी साचा साक सज्जण सैण,

बधक गले लगाया। धन्न धन्न मुख मुख रसना कहिण, वाह वाह तेरी एह वड्आया। जुग जुग चुक्कया तेरा देण, तेरा तेरी झोली पाया। दर द्वारे गुरमुख तेरी प्रेम भिच्छया आया लैण, दर दहिलीजों बाहर चरन टिकाया। बल द्वार जिउँ बणया साचा सैण, उप्पर चरन टिकाया। आकाश प्रकाश सर्ब शरमायण, गुरमुख तेरा दर्शन दिस किसे ना आया। लक्खमी नरायण मुकंद मनोहर मुकट बैन साचे कुण्डल साची सिक्खी साचे काहन वेखे साचे नैण, नैण नैणां विच समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख गुरमुख वेख वखाया। बधक मार तीर, चीर बंधाया। काहना कृष्ना करे अन्त अख़ीर, जगत तजाया। तेरी कटे जुग जुग भीड़, रसना बचन अलाया। लोकमात अन्तिम बन्ने बीड़, निहकलंक जामा पाया। एका रंग रंगाए हस्त कीट, कीट कीटा आप अख्वाया। दरस दिखाए सदा अणडीठ, लेखा लिख ना सके कोई राया। भगतन घर साचा दर हरि हरि लागे मीठ, जुग जुग फेरी पाया। आदि जुगादि ना देवे कदी पीठ, हरिजन साचे गले लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, द्वापर विछड़े कलिजुग मेल मिलाया।

१०७७ ❊ २५ मग्घर २०१४ बिक्रमी सीतल सिँघ दे गृह पिण्ड डगरू ज़िला फिरोज़पुर ❊ १०७७

०६ सतिगुर शब्द दयाल, सति सति अख्वाया। जन भगतां करे सदा पितपाल, प्रितपालक आप अख्वाया। देवे नाम सच्चा धन माल, सच भण्डारा इक्क वरताया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा शब्द अलाया। हरि शब्द मेहरवान, एका एक रखाया। इक्क वखाए सच निशान, धुर दरगाही इक्क कराया। लेखा लिखे ना वेद पुराण, रसना जिह्वा कोई ना गाया। भेव अभेदा हरि भगवान, अकल कल अख्वाया। लेखा लिख ना सके जगत कतेबा, गुण अवगुण ना कोए जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्दी शब्द उपाया। शब्द गुर सच सुल्ताना, एका एक अख्वाया। खेले खेल दो जहानां, आप आपणा वेस वटाया। रूप रंग रेख भेख ना कोई जाणे जीव नादाना, लेखा लिख्त विच ना आया। आपे जाणे आपणा धुर फ़रमाणा, जुग जुग आपे रिहा सुणाया। आपे नाद तूर आपे होए तराना, आपे अनहद ताल वजाया। आपे गावे सुणे सुणाए साचा गाणा, गावणहार आप अख्वाया। आपे जाणे आपणा पद निरबाना, निरगुण रूप समाया। निरगुण खेल हरि महाना, हर घट बैठा आसण लाया। गुरमुख उठाए दया कमाए विच जहानां, लोकमात वेख वखाया। आपे होया जाणी जाणा, जानणहार सृष्ट सबाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्दी रंग रंगाया। शब्द रंग हरि करतार, आपणा आप चढ़ाया। पुरीआं लोआं बन्ने धार, मात पाताल आकाश फेरा पाया।

धरत धवल दए सहार, मण्डल मण्डप आप उपाया। ब्रह्मण्ड खण्ड एका कार, जेरज अंड डेरा लाया। उत्भज सेत्ज कर प्यार, आप आपणा विच छुपाया। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर लए उभार, शिव शंकर रचन रचाया। लक्ख चुरासी कर आकार, लोकमाती तेरा पंज तत्त पसार, त्रैगुण माया बणत बणाया। मन मति बुध दए सहार, आप आपणी दया कमाया। पुरख अबिनाशी किरपा धार, काया मन्दिर साचे अन्दर आप आपणा महल्ल रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द देवे एका वर, हर घट वेख वखाया। शब्द गुर साचा भूप, चारों कुन्ट करे पसारया। ना कोई रंग ना कोई रूप, ना कोई वेखे विगसे करे विचारया। ना कोई हवन ना कोई धूप, सुगंध अन्ध ना कोई जणा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर साचा वर, एका एक रखा रिहा। साचा दर हरि भगवन्ता, एका एक रखाए। आप वखाए साचे सन्ता, आपणी दया कमाए। जुग जुग बणाए आपणी बणता, आप आपणा रंग रंगाए। आपे नारी आपे कन्ता, गुरमुख साची सेज हंढाए। काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता, उतर कदे ना जाए। देवे वड्याई विच जीव जन्ता, जिस जन आपणी बूझ बुझाए। इक्क सुणाए सुहागी छंता, आप आपणा राग अलाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द एह समझाए। गुर शब्द साची मति, एका एक जणाईआ। आदि जुगादी मेला कमलापत, विछड़ कदे ना जाईआ। सति सन्तोखी धीरज यति, एका हट्ट नाम रखाईआ। आप आपणी मैल आपे कट्ट, उज्जल मुख आप कराईआ। आपे जोती जगाए लट लट, आपे नूरो नूर समाईआ। गुरमुख तेरी काया हट्ट, हरि चौदां हट्ट वखाईआ। ना कोई तीर्थ ना कोई तट्ट, अट्ठ सट्ठ दिस ना आईआ। सर सरोवर काया मट्ठ, अमृत आत्म ताल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्दी दए वड्याईआ। गुर शब्द हरि दए वड्याई, आपणा आप जणाया। ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचाई, एका बंधन नाम पाया। आदि अन्ता विच गया समाई, दिस किसे ना आया। जुग जुग खेले खेल विच सृष्ट सबाई, आप आपणी कारे लाया। जन भगतां फड़ाए आपणी बांही, लक्ख चुरासी विच्चों लए तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्द हरि एका वर, एका नाम जपाया। इक्क दर एका दातार, एका घर मंग मंगांयदा। एका पुरख एका नार, इक्क बहार जणांयदा। एका सेजा कर त्यार, एका आसण लांयदा। इक्क इकल्ला एकँकार, अकल कला अख्वांयदा। शब्दी सुत सच दुलार, सच मार्ग इक्क वखांयदा। लोआं पुरीआं दए अधार, आप आपणा बंधन पांयदा। लोकमाती वेख विचार, गुरमुख साचे आप जगांयदा। आत्म जोती शब्द अपार, एका धुन वजांयदा। अगम्म अगम्मड़ा आपे जाणे आपणी कार, जुग जुग आपे आप करांयदा। ना कोई पल्ले पैसा दमड़ा, नाम धन इक्क रखांयदा।

१०७८
०६

गुरमुखां काया लेखे लाए चम्मड़ा, आप आपणा रंग रंगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द लए वर, हरि शब्दी संग निभांयदा। शब्द गुर साचा तोला, हरि जुग जुग आप कराया। आदि अन्त कदे ना डोला, अडुल आप हो जाया। लोकमात मार ज्ञात नाम भण्डारा एका खोल्ह्या, चार वरन रिहा वरताया। जन भगतां देवे नाम अनमोला, अनमुल्लड़े लाल बणाया। काया चीथड़ा आपे फोला, आत्म अन्तर पड़दा लाहया। आपे बणया साचा मीतड़ा, हरि साचा घर सुहाया। मिट्ठा करे काया कौड़ा रीठड़ा, अमृत आत्म जाम प्याया। इक्क शब्द जणाए अनडीठड़ा, दिस किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत कर बलवान, धर्म निशान इक्क उठाया। शब्द सुत कर प्रवेश, ब्रह्मण्ड वंड वंडांयदा। आप आपणा जाणे वेस, जुग जुग भेख वटांयदा। आपे होए दर दरवेस, आपे भिख्या पांयदा। आपे होए धारी केस, आपे मूंड मुंडांयदा। आपे होए नर नरेश, शाह कंगाल आप हो जांयदा। आप उपाए दया कमाए ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, आप आपणी बणत बणांयदा। आपे सेजा लाए बाशक शेश, सागों पांग हंढांयदा। आप आपणा करे वेस, आप आपणा सीस झुकांयदा। हरिभगत सुहेले जुग जुग लए वेख, ज्ञान नेत्र इक्क रखांयदा। भाग लगाए काया खेत, फुल फुलवाड़ी इक्क जणांयदा। करे कराए साचा हेत, नित नवित्त जोत जगांयदा। दरस दिखाए नेतन नेत, निज घर बैठा आसण लांयदा। आपे होया खेवट खेट, जन भगतां बेड़ा आप चलांयदा। आपे मात पित होया बेटी बेट, पूत सपूता गोद उठांयदा। आपे रक्खे साया हेठ, नाम पड़दा एका पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्दी शब्द जणांयदा। हरि शब्द सच सलाह, एका एक जणाईआ। दो जहानां बण मलाह, लोकमात वेख वखाईआ। जन भगतां दस्से साचा राह, एका मार्ग लाईआ। एका मन्त्र नाम दृढ़ा, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। एका पौड़े दए चढ़ा, दूजा दर रहिण ना पाईआ। तीजा नेत्र दए खुल्ह्या, आत्म दरसी दरस दिखाईआ। चौथे घर दए बहा, अमरा पद समाईआ। पंचम मेला सहिज सुभा, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। गुर पूरा हरि शब्द करे सच न्यां, जुग जुग हथ्थ रक्खे वड्याईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, दुरमति मैल गंवाईआ। इक्क वखाए साचा थाँ, थिर घर नाउँ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द दित्ती वड्याईआ। गुर शब्द सच्चा सिक्दार, प्रभ साचे आप कराया। दिवस रैण अट्ठे पहर ख़बरदार, आलस निन्दरा विच ना आया। गुरमुख साचे लए उभार, आप आपणा मेल मिलाया। हउमे रोग दए निवार, दूई द्वैती मेट मिटाया। अमृत आत्म बख्शे धार, निझर मुख चुआया। दीपक जोती कर उज्यार, आकाश प्रकाश वखाया। आत्म सेजा मेला कन्त भतार, आपणा आप कराया। आपे भुजा रिहा पसार, आप आपणी गोद उठाया। आपे

करे कराए सच प्यार, सच सिँघासण इक्क विछाया। निर्मल जोत अगम्म अपार, पुरख अबिनाशी रिहा जगाया। दस्म द्वारी तेरी धार, चिट्टी चादर पड़दा पाया। वेखे विगसे करे विचार, वेखणहार हरि आप अख्वाया। सन्त सुहेले मीत मुरार, आप आपणे अंग लगाया। पंज तत्त ना कोई प्यार, सुरत सवाणी लए प्रनाया। शब्द सुरत एका धार, एका एक अख्वाया। आपे खोल्हे बन्द किवाड़, बन्द दरवाज़ा आप कराया। आपे तोड़े गढ़ हँकार, किला कोट रहिण ना पाया। गुरमुख साजन साचे फड़ लाए पार, बेड़ा आपणे हथ्थ रखाया। ना कोई सीस ना कोई धड़ हरि निरँकार, आप आपणा भेख वटाया। ना कोई चोटी ना कोई जड़, अग्नी हवन ना जाए सड़, मढ़ी गोर ना कोई दबाया। आपणा अक्खर आपे पढ़, जगत विद्या भेव ना राया। जन भगतां दर द्वारे अग्गे खड़, आत्म दरसी दरस दिखाया। जोत जगाए बहत्तर नड़, नाड़ी नाड़ करे रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द सच सतारा एका एक चमकाया। सतिगुर शब्द शब्द निशाना, एका एक रखांयदा। आपे होया रमईआ रामा, तीर कमाना आप उठांयदा। आपे होए घनईआ शामा, रास मण्डल आप रचांयदा। ईसा मूसा दर परवाना, आप आपणी भिच्छया पांयदा। अल्ला राणी नौजवाना, संग मुहम्मद आप प्रनांयदा। नानक पाया पद निरबाना, निरगुण रूप समांयदा। गोबिन्द मेला दो जहानां, पूत सपूता आप उठांयदा। आपणी हथ्थीं बन्ने गाना, दे मति आप समझांयदा। जोद्धा सूरबीर बली बलवाना, एका शब्द गुर अख्वांयदा। आपे चिल्ला आपे तीर कमाना, आपे खण्डा वांहयदा। आपे वेखे विच मैदाना, पंज शैताना मेट मिटांयदा। आपे करे दर परवाना, मर्द मरदाना आप अख्वांयदा। जुग जुग खेले खेल महाना, सतिजुग त्रेता द्वापर वेख वखांयदा। कलिजुग वरते आपणा भाणा, भेव कोई ना पांयदा। प्रगट होए शाह सुल्ताना, निहकलंका डंक वजांयदा। चार वरनां इक्क बिबाना, एका नाम रखांयदा। ऊँच नीच कोई रहिण ना पाणा, राउ रंकां मेट मिटांयदा। एका राग एका नाद एका गाणा, एका ताल वजांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द घर कर परवाना, आप आपणा वेख वखांयदा। सतिगुर शब्द अपार, गुरमुख विरले पाया। लोकमाती दए अधार, पुरख बिधाती मेल मिलाया। उत्तम जाति विच संसार, जिस हरि हरि साचा गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, एका शब्द जणाया। एका शब्द मात धर, आपणी कल वरताईआ। चार वरन बणाए भैण भ्रा, ऊँच नीच रहिण ना पाईआ। एका सिख्या दए पढ़ा, सोहँ शब्द सच्ची पढ़ाईआ। सतिजुग साचा चन्द चढ़ा, त्रै लोक करे रुशनाईआ। चौदां लोकां आप जणा, आप आपणी बूझ बुझाईआ। अवण गवण हरि जाए समा, पवणी पवण समाईआ। भेखाधारी भेख बावन वटा, निहकलंक नाउँ रखाईआ। जन भगतां दामन आपणा फड़ा, फड़ बांहों

पार कराईआ। साचे पौड़े दए चढ़ा, अन्दर मन्दिर खोज खुजाईआ। सुखमन नाड़ी पार करा, टेडी बंक वखाईआ। जोत निरँजण सेवा ला, सच करे रुशनाईआ। अनहद ताल दए वजा, धुन आत्मक इक्क उपजाईआ। नादी राग दए अल्ला, निरगुण हथ्थ वड्याईआ। गुरमुख साजण मीत आप आपणा दए मना, गुर शब्दी विच समाईआ। साचा घर इक्क वखा, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। आत्म सेजा दए बहा, फूलन बरखा लाईआ। कन्त मेला सहिज सुभा, हरिजन नारी आप कराईआ। एका सेजा रिहा हंढा, एका गुण वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुखां बूझ बुझाईआ। गुरमुख देवे नाम निधाना, अमृत जाम प्याया। एका एक धुर फ़रमाणा, सोहँ शब्द जणाया। चार वरन गायन एका गाणा, सतिजुग साचा मार्ग लाया। मेट मिटाए राज राजाना, शाह सुल्तान सीस ताज ना कोई हंढाया। जन भगतां हथ्थीं बन्ने नाम गाना, एका साचा तन्द हथ्थ बंधाया। आपे होया बीना दाना, दाना बीना आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरि हरिजन विच समाया। हरिजन साचे साचा मेला, आपणा आप करांयदा। आपे गुरू आपे चेला, आपे वेस वटांयदा। आपे होए सज्जण सुहेला, दर दरवेश आप अख्वांयदा। आपे वसे इक्क इकेला, हर घट अन्दर आपे डेरा लांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण वेख दर, घर सुहञ्जणा जगे जोत इक्क निरँजणा, काया माटी वेख वखांयदा। जोत निरँजण कर उज्यार, प्रभ साचा दया कमांयदा। अन्दर मन्दिर खेल अपार, आप आपणा रंग चढ़ांयदा। लक्ख चुरासी नौ द्वारे भौंदी बन्दर, दस्म द्वारी मेल मिलांयदा। माया मोह विकार झूठे धन्दे मानस मानस जन्म गंवांयदा। दूई द्वैती हउमे हँगता कोई ना तोड़े कन्दर, गढ़ हँकार ना कोई तुड़ांयदा। दो जहानी आवण जावण लक्ख चुरासी बिन हरि कोई ना तोड़े बंधन, ना कोई पार करांयदा। जोत लिलाटी कौस्तक मणीआ कोई ना लाए टिक्का चन्दन, साचा तिलक ना कोई लगांयदा। ना कोई समाए परमानंदन, परमानंद ना कोई समांयदा। कलिजुग भरमे भुल्ले मदिरा मासी गन्दन, बत्ती दन्द ना कोई ध्यांअदा। पुरख अबिनाशी इक्क सुणाए सुहागी छन्दन, जन भगतां झोली पांयदा। लक्ख चुरासी आत्म अन्दर होई अन्धन, अज्ञान अन्धेर ना कोई मिटांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला साचे दर, दर दुआरा इक्क खुल्लांयदा। गुरमुख साचे खोल्ल दरवाजा, प्रभ आपणी अलख जगाईआ। आपे होया ग़रीब निवाजा, गऊ ग़रीबां गले लगाईआ। नाम पहनाए सीस साचा ताजा, अटल अटल अख्वाईआ। सोहँ शब्द देवे साचा दाजा, सतिजुग सच मिले वड्याईआ। नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां लोआं पुरीआं प्रभ रच्चया काजा, लोकमात जोत जगाईआ। प्रगट होए देस माझा, सम्बल नगरी

धाम सुहाईआ। शाहो भूप वड राजन राजा, शाह सुल्तान आप अख्वाईआ। जुग जुग जन भगतां रक्खणहारा लाजा, चार वरनां दुष्टां दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे साचा घर, बंक दुआरा इक्क रखाईआ। साचा घर बंक द्वार, घर साचे वज्जे वधाईआ। पुरख निरँजण किरपा धार, जोत निरँजण सेवा लाईआ। आप आपणी जाणे कार, करनहार आप अख्वाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, वेख वखाए सृष्ट सबाईआ। जूठ झूठ हाहाकार, मनमति रही कुरलाईआ। माया ममता मोह विकार, जीआं जन्तां रिहा चलाईआ। हउमे हँगता करे ख्वार, भुक्खा नंगता दए दुहाईआ। पुरख अबिनाशी एका एक लाए अंगता, अंगीकार आप अख्वाईआ। चार वरन बणाए एका संगता, साचा संग निभाईआ। बिन हरि द्वार ना होवे कोई मंगता, ना कोई भिच्छया पाईआ। काया चोली हरि हरिजन रंगता, जुग जुग रंगणहार आप अख्वाईआ। साचे मन्दिर गुरमुख अन्दर जोत सरूपी आपे लँघदा, शब्द धुन करे जणाईआ। पंच विकारा काची वंग भन्नदा, शब्द खण्डा एका वाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेखे साचा दर, दर द्वार इक्क सुहाईआ। दर द्वार सच्चा घर बाहर, हरि साचे आप वसाया। करता पुरख कर आकार, जुग जुग भेख वटाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, सतिजुग लेखा रिहा लिखाया। हरिजन साचे लए उभार, मस्तक रेखा वेख वखाया।
१०८२ ०६ एका बख्शे चरन प्यार, चरन प्रीती इक्क सिखाया। एका शब्द इक्क जैकार, एका नाअरा लाया। एका खण्डा तेज कटार, गुरमुख तन गात्रे आप पवाया। सीस बन्ने सच्ची दस्तार, नाम चीरा इक्क सुहाया। तन बस्त्र गहणा अपर अपार, नेत्र नैणां दरस दिखाया। चिट्टे अस्व हो अस्वार, गुरमुख साचे वेखण आया। सोलां कलीआं कल वरते विच संसार करतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, आप आपणा बिरध रखाया। हरिजन साचा दर घर पा, घर साचे खुशी मनांयदा। मिल्या मेल हरि बेपरवाह, बेपरवाह समांयदा। एका वेखे साचा थाँ, छप्पर छन्न ना कोई जणांयदा। ना कोई पिता ना कोई माँ, भैण भाई ना कोई वखांयदा। सतिगुर शब्द साचा सच मलाह, अन्तिम बेड़ा बन्ने लांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, सर सरोवर इक्क सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, जुग विछड़े जग मेल मिलांयदा। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, भगवन्त सन्त कन्त अन्त बणत आप बणांयदा। गृह मन्दिर घर वसया, पाया पुरख अपार। कोटन कोट करे प्रकाश रवि सस्सया, मेट मिटाए अन्ध अंध्यार। मिटे रैण अन्धेरी मस्सया, जूठा झूठा धूआँधार। तीर निराला एका कसया, मारनहारा मारे मार। जन भगतां राह एका दस्सया, जन भगतां सिंचे तन क्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लाए पार।

गृह मन्दिर हरि सच टिकाणा, एका जोत जगाईआ। एका शब्द इक्क बिबाणा, एका रिहा चढ़ाईआ। एका गुर एका चरन इक्क ध्याना, एका एक एक लिव लाईआ। एका ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलाना, ब्रह्म ब्रह्म आप समाईआ। रूप रंग ना कोए वखाना, आकार साकार ना कोई जणाईआ। ना कोई बस्त्र तन पहरे बाणा, ना कोई शस्त्र आप सजाईआ। ना कोई गाए रसना गाणा, ना कोई ताल वजाईआ। ना कोई दिसे संग मरदाना, ना कोई रबाब हिलाईआ। इक्क इकल्ला श्री भगवाना, आप आपणे घर सुहाईआ। जन भगतां देवे धुर फ़रमाणा, शब्दी शब्द करे जणाईआ। खेले खेल दो जहानां, आवण जावण रचन रचाईआ। आपे होया मेहरवाना, मेहरवान दया कमाईआ। कलिजुग मेटे झूठ निशाना, गुर गोबिन्दा गया लिखाईआ। वेद व्यासा वेखे मार ध्याना, आप आपणा दए जणाईआ। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा नौजवाना, हरि साचा दए जगाईआ। सम्बल नगरी धाम सुहाना, निर्मल जोत करे रुशनाईआ। साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर इक्क बणाणा गुर गोबिन्द रचन रचाईआ। अमृत आत्म देवे पीणा खाणा, तृष्ना भुक्ख रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि मन्दिर बैठा सेज विछाईआ। हरि मन्दिर हरि आप उपाया, आपणी दया कमाईआ। छप्पर छन्न कोई दिस ना आया, चार दिवार ना कोई जणाईआ। ना कोई बाडी संग रखाया, ना कोई वेख वखाईआ। आप आपणा रंग महल्ल रचाया, थिर घर इक्क सुहाईआ। उच्च अटल भेव ना राया, हरि बैठा बेपरवाहीआ। डगमग जोती नूर सवाया, निर्मल आकार इक्क वखाईआ। अकल कला आप समाया, भेव ना जाणे राईआ। आकाश पताल कोई दिस ना आया, ना कोई पुरीआं रचन रचाईआ। ब्रह्मा वेद ना कोई अलाया, ना कोई रसना मुख हिलाईआ। विष्नूं वंसी ना कोई बणाया, ना कोई रिजक सबाईआ। शिव शंकर ना बाशक तशका गल लटकाया, हथ्थ त्रिसूल ना कोई रखाईआ। राम रघुवंस ना कोई जणाया, लंका गढ़ ना कोई तुड़ाईआ। काहना कृष्ना ना कोई रखाया, ना कोई बणे रथ रथवाहीआ। वेद व्यासा ना कुँवारी जाया, पुराण अठारां ना कोई जणाईआ। गीता ज्ञान ना कोई दृढ़ाया, दे मति ना कोई समझाईआ। ईसा मूसा ना कोई जणाया, अल्ला राणी ना किसे व्याहीआ। अञ्जील कुरान भेव ना पाया, लेखा जाणे ना बेपरवाहीआ। नानक अंगद ना अंग लगाया, अमरू अमरापद ना कोई वखाईआ। राम दास ना कोई सहाया, अर्जन शब्द ना कोई जणाईआ। गुर गोबिन्द ना तेग उठाया, हरिराए ना लेख वखाईआ। हरिकृष्न ना मोए जवाया, सीस भेंट ना कोई चढ़ाईआ। ग्रन्थ पन्थ ना वेख वखाया, कल्गी तोड़ा ना कोई टिकाईआ। घोड़ा जोड़ा ना कोई रखाया, तलवार तेज ना कोई चमकाईआ। जोती जोड़ा प्रभ आपणा आप उपाया, निरगुण रूप समाईआ। आपणा खेड़ा आप वसाया, आपे होया बेपरवाहीआ। एका बेड़ा आप चलाया, एका चप्पू लाईआ। आप आपणा नाउँ धराया, निरँकार

१०८३
०६

आप अख्वाईआ। नर निरँकार डंक रिहा वजाया, निहकलंक वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त एका एक अख्वाईआ।

✻ २५ मग्घर २०१४ बिक्रमी गुरबचन सिँघ दे गृह पिण्ड सदा सिँघ वाला ज़िला फिरोज़पुर ✻

हरि शब्द हरि राग, हरि हरि आप अलाया। आपे सोया आपे गया जाग, आप आपणी दया कमाया। आप आपणा बणे कन्त सुहाग, आप आपणी सेज हंढाया। आप आपणे अंग साचे लाग, आप आपणा भोग भुगाया। आप आपणा जगाए इक्क चिराग, दीपक जोत घर रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाया। आप आपणा बल धार, हरि आपणी कल वरतांयदा। अछल अछल्ल खेल अपर अपार, वल छल आप करांयदा। शब्द शब्दी कर प्यार, हरि शब्दी रचन रचांयदा। आदि जुगादी बन्ने धार, ब्रह्मादी वेख वखांयदा। धुन अनादी अपर अपार, निरगुण आप वजांयदा। बोध अगाधी शब्द अधार, शब्दी शब्द उपांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा मंगल करांयदा। मंगलाचार हरि निरँकार, आपणा आप अलाया। वेद कतेब ना पायण सार, ना कोई सके भेव खुलाया। रसना जिह्वा ना सके कोई उचार, हरि गोबिन्द गोबिन्द रूप समाया। अलक्ख अभेव आप निरँकार, लेखा लेख लिख ना सके कोई राया। आपे हो प्रतक्ख विच संसार, जुग जुग भेखी भेख वटाया। भगत सुहेले लए रक्ख, आप आपणी गोद उठाया। लक्ख चुरासी विच्चों करे वक्ख, एका अक्खर नाम दृढ़ाया। नाम वस्त किसे ना मिले हट्ट, चौदां लोक वेख वखाया। खाली दिसण तीर्थ तट्ट अट्ठ सट्ठ, गुर दर मन्दिर वेख वखाया। शिवदवाला वेखे मट्ठ, मूर्त अकाल ना कोई दरसाया। शब्द गुर लोआं पुरीआं ब्रह्मण्ड वरभण्ड जेरज अंड रिहा नठ्ठ, गगन पातालां फेरा पाया। त्रैगुण माया तपया मट्ठ, पंच विकारा लम्बू लाया। साधां सन्तां जीवां जन्तां एका हट्ट, जगत विकार विकाया। माया राणी कर इक्ठ, जगत नाता इक्क बंधाया। काया राणी बुरज लक्ख चुरासी जाणा ढठ्ठ, थिर कोई रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्दी वेख वखाया। शब्द गुर सच सुहेल, एका एक रखाया। आपे वसया जल थल हरि, आपे हर घट डेरा लाया। आपणे दीपक जोती आपे बल, आप आपणा तेज कराया। आप आपणा लए मल्ल, ना कोई दूसर संग रलाया। आप आपणा फड़या पल्ला, आप आपणा घर सुहाया। आपे वसया निहचल धाम अटला, दिस किसे ना आया। जोती शब्दी हरि हरि रला, आप आपणा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर

शब्दी शब्द उपाया। शब्द गुर हरि उपा, आपणी दया कमाईआ। एका धुन रिहा जणा, नाद अनादा आप वजाईआ। एका राग रिहा अलृा, राग रागनी भेव ना राईआ। एका कन्त सुहाग रिहा हंढा, पति पतिवन्त आप हो जाईआ। एका वंडन रिहा वंडा, ब्रह्मण्डी वंड वंडाईआ। उत्भुज सेत्ज डेरा ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण रूप निरगुण हरि, निरगुण रचन रचाईआ। निरगुण रूप हरि निरँकारा, एका एक अख्वाया। आप आपणा कर आकारा, आप आपणा वेखण आया। आप आपणा खोलृ दुआरा, आप आपणा आसण लाया। आपे बण सच्ची सरकारा, शाहो भूप आप अख्वाया। आपे शाहो भूप राज राजान होए दुआरा, आप आपणा ताज सीस टिकाया। आपे मंगे बण भिखारा, आपे भिच्छया झोली पाया। आप आपणा हरि बण वरतारा, आपे भरे भण्डारा, इक्क इकल्ला एकँकारा, खेले खेल अपर अपारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दिर दए उतारा। शब्द गुर धर अवतार, आपणा आप विचारया। दोए जोड़ करे निमस्कार, प्रभ अग्गे सीस झुका रिहा। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, दे मति आप समझा रिहा। अट्ठे पहर ख़बरदार, एका तत्त वखा रिहा। आदि जुगादी तेरी कार, तेरी धार बंनृा रिहा। मरे ना जम्मे विच संसार, मढ़ी गोर ना कोई दबा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर देवे वर, साची दात झोली पा रिहा। सतिगुर मार ध्यान, नेत्र नैण उग्घाड़या । पुरख अबिनाशी इक्क भगवान, वेखे सच अखाड़या। लोआं पुरीआं वंड वंडान, आप आपणा आपे पाड़या। ब्रह्मण्ड हरि तेज महान, एका एक वंड वंडा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर देवे वर, वर दाता आप अख्वा रिहा। सच वर हरि झोली पा, शब्द गुर उठाया। आप आपणा दर खुल्लृा, आपे बाहर कराया। आपणे नेत्र वेख वखा, वेखणहार आप अख्वाया। एका हुक्म रिहा जणा, आदि शक्त जणेंदी माया। ब्रह्मण्डां विच गया समा, दिस किसे ना आया। पार कन्ढा ना सके जणा, गुर पीर अवतार साध सन्त जीव जन्त ना कोई सके लेख लिखाया। पन्थ ग्रन्थ ना कोई रिहा पढ़ा, वेद पुराण ना कोई रिहा अलृाया। अञ्जील कुरान ना कोई रिहा सुणा, अहिनल हक्क अन्ना हू कोई ना नाअरा लाया। हक्क हकीकत इक्क जणा, एका रूप समाया। लाशरीक इक्क खुदा, परवरदिगार आप अख्वाया। जोती नूर दए जगा, आप आपणी जोत जगाया। शब्द शब्दी आप रिहा उपा, शब्दी शब्द करे जणाया। लोकमाती दए टिका, आप आपणा भेख वटाया। पंज तत्त तन चोला पा, आप आपणी रचन रचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर शब्द वसाए साचा घर, सच टिकाणा इक्क रखाया। पंज तत्त कर आकार, प्रभ आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। शब्द गुर देवे साची धार, मन मति बुध ना चले कोई चतुराईआ। आपे होए पहरेदार, अट्ठे पहर

१०८५ ०६

सेव कमाईआ। धुन अनादी अपर अपार, काया मन्दिर अन्दर आप सुणाईआ। अनहद गाए वारो वार, पंचम रहे सेव कमाईआ। जन भगतां सुणाए हरिजन होए सुणनेहार, बन्द किवाड़ी कुण्डा लाहीआ। एका रंग रंगाए हरि करतार, एका दूजा भउ चुकाईआ। तीजा नेत्र दए उग्घाड़, आप आपणी अक्ख खुल्हाईआ। चौथे घर देवे वाड़, हरि प्रतक्ख दरस रघुराईआ। सच वखाए सच अखाड़, साची धारा इक्क बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर मात धर, आप आपणी बूझ बुझाईआ। गुर शब्द जग लै अवतारा, जुग जुग वेख वखाया। सतिजुग त्रेता द्वापर पावे सारा, आवे जावे वारो वारया। अगम्म अगम्म अगम्म हरि खेल न्यारा, अलख अलख अलख इक्क जैकारया। हड्ड मास नाड़ी चम्म ना कोई आकारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग खेले खेल हरि साचा खेलण हारया। गुर शब्द मात प्रधान, वड वड्डी वड्याईआ। आदिन अन्ता देवे धुर फ़रमाण, एका शब्द जणाईआ। दर द्वारे साचे मन्दिर बहि बहि गाण, साची सखीआं मंगल गाईआ। एका राग सुणाए कान, धुन अनादी आप वजाईआ। ब्रह्मा शिव देवत सुर होए हैरान, विष्नूं बंसी बैठा शरमाईआ। पुरख अबिनाशी खेले खेल वाली दो जहान, जुग जुग खेलणहार आप अख्वाईआ। कलिजुग तेरी जूठ झूठ वेख वखान, चार कुन्ट पई दुहाईआ। जीव जन्त सर्ब कुरलान, धीरज धीर ना कोई धराईआ। चार वरन ना देवे कोई इक्क ज्ञान, जगत विद्या मात पढ़ाईआ। दर दर घर घर मन्दिर अन्दर झुलदे जगत निशान, सच निशाना ना कोई झुलाईआ। इक्क इकल्ला निगाहबान, नौ खण्ड पृथ्वी वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी जीव शैतान, माया मोह करी कुड़माईआ। रसना भुल्लया इक्क भगवान, भगती भगत ना कोई कमाईआ। पढ़ पढ़ पोथीआं मंगन दान, लोक लज्जया मात तजाईआ। सेवक सेवक सेवक गुरमुख होए दर परवान, जो आपणा आप भेंट चढ़ाईआ। सतिगुर शब्द विटहु कुरबान, आप आपा घोल घुंमाईआ। नाता तुट्टे पीण खाण, सति सन्तोख समाईआ। आत्म जोती ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाईआ। सच दुआरा एका पाण, विछड़ कदे ना जाईआ। दीपक जोती जगे महान, दिवस रैण रहे रुशनाईआ। मुख छुपाइन कोटन कोट रवि ससि भान, नेत्र नैण ना कोई उठाईआ। राग छतीसा होए हैरान, हरि का भेव ना पाया राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत देवे वर, सतिगुर साचा आप सहाईआ। सतिगुर साचा दीन दयाला, एका एक अख्वाया। गोबिन्द हरि गोपाला, गोबिन्द गढ़ सुहाया। जन भगतां सदा सद करे प्रितपाला, दिवस रैण सेव कमाया। फल लगाए काया डाल्हा, फल फुलवाड़ी इक्क वखाया। एका शब्द वजाए साचा ताला, बहत्तर नाड़ी ताल तलवाड़ा आप हिलाया। जोत प्रगटाए हरि काल अकाला, नूर नूरो नूर सवाया। काया मन्दिर अन्दर बैठ सच्ची धर्मसाला, गुरमुख साचे

लए मिलाया। सुरत सवाणी होए हाल बेहाला, गुर शब्दी दर्शन पाया। गुर शब्दी होए आप रखवाला, पल्ला आपणा आप फड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर सच सपूता हरि आपणा आप उपाया। आप वखाणे चारे कूटां, दहि दिशा आप फिराया। आपे देवे आपणा हुलारा दो जहानी झूटा, इक्क हुलार रखाया। आप आपणे उप्पर आपे तुठा, आप आपणी दया कमाया । कलिजुग तेरा मेट मिटाए पसारा झूठा, अन्त रहिण ना पाया। मनमुखां हथ्थ फड़ाए खाली ठूठा, दर दर होए हलकाया। भगत भगवन्त हरि साजन सन्त गुरमुख साचा जुग जुग रुठा, आपे लए मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द शब्दी वेख दर, हरि शब्दी डंक वजाया। शब्द डंका हरि निरँकार, एका एक वजांयदा। राउ रंकां करे ख़बरदार, सोया कोई रहिण ना पांयदा। गुरसिख उधारे जिउँ जन जनका, आप आपणी बूझ बुझांयदा। एका लाए जोती तनका, तन मन्दिर वेख वखांयदा। प्रगट हो वासी पुरी घनका, अकल कला वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत रिहा चढ़, गुर शब्दी आप चढ़ांयदा। शब्द गुर कर त्यारा, आप आपणा वेख वखांयदा। आप आपणी बन्न्ह दस्तारा, कमर कसा आप करांयदा। आप आपणे अस्व कर अस्वारा, आप आपणा आसण लांयदा। आप टपाए लोआं पुरीआं चार दिवारा, निरगुण खेल खिलांयदा। सच दवारिउँ आए बाहरा, सरगुण भेख वटांयदा। सरगुण जाणे साची धारा, पंज तत्त समांयदा। पंज तत्त हरि कर प्यारा, शब्द गुर बहांयदा। शब्द गुर फड़ तेज कटारा, एका खण्डा वांहयदा। लक्ख चुरासी जीव जन्त तेरी पावे सारा, आप आपणा वेख वखांयदा। जुग जुग बन्न्हे मात धारा, आप आपणी कल वरतांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, हरि साचा भेख वटांयदा। शब्द गुर खेल अपारा, आप आपणा नाउँ धरांयदा। जोती नूर करे चमत्कारा, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। आप आपणा कर पसारा, आपे मेट मिटांयदा। आपे होए जिया अधारा, आपे जिया ख़ाक मिलांयदा। आप दिसाए लोकमात तेरा घर बाहरा, अन्तिम आपे ढांयदा। आप कराए लक्ख चुरासी तेरा पसर पसारा, आपे मेट मिटांयदा। आप बहाए ब्रह्मा विष्न शिव दर दुआरा, साची सेवक सेवा लांयदा। आप कराए आपणा पार किनारा, आप आपणी धार चलांयदा। आप आपणा लै अवतारा, आप आपणा वेख वखांयदा। गुर शब्द हरि कर त्यारा, कलिजुग अन्तिम झोली पांयदा। सच सुच्च दए भण्डारा, सतिजुग संग रलांयदा। एका शब्द एका धुन एका जै जै कारा, नौ सत आप करांयदा। चार वरन बणे भिखारा, आप आपणी भिच्छया पांयदा। हरिजन ढहि पए दुआरा, पूरन इच्छया आप करांयदा। गुरमुख मेला कन्त भतारा, साची नारी आप सुहांयदा। आपे करे तन शृंगारा, सोलां शृंगार रखांयदा। थिर घर वखाए सच्चा घर बाहरा, छप्पर छन्न ना कोई रखांयदा। आदि पुरख निरँजण

१०८७
०६

बैठा कर आकारा, आप आपणी जोत जगांयदा। शब्द गुर गुर शब्द देवे इक्क अधारा, आप आपणी झोली पांयदा। जुग जुग खेल खेलणहारा, करता पुरख आप अख्वांयदा। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, खुल्ल्हे केस विच संसारा, निहकलंका नाउँ रखांयदा। निहकलंक शब्द गुर दाता, पंज तत्त पसारया। मेट मिटाए ज़ातां पातां, ऊँचां नीचां भेव चुका रिहा। चार वरन बणाए इक्क भ्राता, एका मार्ग ला रिहा। कलिजुग मिटे रैण अन्धेरी राता, सतिजुग साचा चन्द चढ़ा रिहा। नार दुहागण दिसे ना कोई कमज़ाता, कन्त सुहागा इक्क वखा रिहा। इक्क इकल्ला बैठ इकांता, आप आपणी रचन रचा रिहा। आपे होया कमलापाता, पतिपरमेश्वर रूप वटा रिहा। सृष्ट सबाई आपे होए पिता माता, आप आपणी गोद उठा रिहा। गुरमुख तेरी उत्तम ज़ाता, ज़ात अजाति ना कोई जणा रिहा। हरि चरन द्वारे आत्म अमृत पीए बूंद स्वांता, हउमे रोग गंवा रिहा। दरस दिखाए बहु बहु भांता, स्वच्छ सरूप आपणा आप प्रगटा रिहा। दो जहानी पुच्छे वाता, जिस जन आपणा लड़ फड़ा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर शब्द वसाया घर, लोकमात इक्क वसा ल्या। सतिगुर शब्द घर बणा, आपणा आप उपाया। दीपक जोती इक्क टिका, आकाश प्रकाश वखाया। हरि गोबिन्द गोबिन्द विच समा, हरि हरि रूप अख्वाया। आप आपणी बिन्द उपा, नादी सुत उपजाया। सगली चिन्दा दए मिटा, भरम गढ़ तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द लोकमात धर, गुर मन्त्र इक्क जणाया। गुर मन्त्र हरि नाम दृढ़ा, हरि नामे वज्जी वधाईआ। सतिजुग साचा मार्ग ला, सति पुरखा करे पढ़ाईआ। साचा लेखा आप लिखा, जग लेखा दए मिटाईआ। धारी केसा लए बचा, जो जन आए सरनाईआ। मूंड मुंडाए गले लगा, दे मति आप समझाईआ। मनमुख जीव दए खपा, कलिजुग अन्तिम दए दुहाईआ। चार यार रहे कुरला, संग मुहम्मद नीर वहाईआ। अल्ला राणी पल्ला पा, मुख नैण रही शरमाईआ। पुरख अबिनाशी दया कमा, दोए बैठी सीस झुकाईआ। चौदां तबकां करे निकाह, एका एक कुड़माईआ। वेले अन्त ना फड़े कोई बांह, हरि साचा दए सज़ाईआ। ना कोई पिता ना कोई माँ, ना कोई भैण भ्राता संग निभाईआ। अन्त नबी रसूलां ना मिलणा कोई थाँ, काग वांग रही कुरलाईआ। चौदां चौदां लेखा रिहा मुका, मुहम्मद भिच्छया झोली पाईआ। कलिजुग रोवे मारे धाह, आप आपणी बांह उठाईआ। जूठ झूठ क्रिया कर्म पंज तत्त कर गए नांह, ना कोई पल्ला इक्क फड़ाईआ। चार कुन्ट दहि दिशा वेखे थाँ थाँ, माया राणी पई लड़ाईआ। सच द्वारे उडदे काँ, सच वस्त ना कोई दिसाईआ। पारब्रह्म अबिनाशी करते दर दर वेचण नाँ, तेरा अन्तिम मुल्ल पवाईआ। निथावयां मिले ना कोई थाँ, जो जन गुर शब्द हट्टो हट्ट विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर,

कलिजुग देवे मात वड्याईआ। कलिजुग सिर प्रभ हथ्थ रक्ख, आपणी दया कमाया। सम्मत चौदां हो प्रतक्ख, चारों कुन्ट वेख वखाया। लक्ख चुरासी काया फोली कक्ख, त्रैगुण माया संग रलाया। पंज विकारा कर वक्ख, तेरा वेला अन्तिम आया। चारों कुन्ट लौंदे भक्ख, अमृत मेघ ना कोई बरसाया। गुरमुख साजण लए रक्ख, जो हरिजन रहे ध्याया। नौ खण्ड पृथ्वी करे सक्ख, दर द्वार फेरी पाया। ना कोई दिसे करोड़ी लक्ख, शाह सुल्तान ना कोई रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर वसाए इक्क घर, एका झण्डा नाम झुलाया। कलिजुग उठ बल धार, आप आपणी लए अंगड़ाईआ। चारों कुन्ट जाए वारो वार, मनमुख जीवां रिहा जगाईआ। बुद्धि बुध ना पावे कोई सार, मन मति चली चतुराईआ। जूठ झूठ कर शृंगार, कूड़ कुड़यारा मंडी लाईआ। नेत्र नैण कज्जल पाया माया मोह प्यार, काम क्रोध धार बंधाईआ। सीस पट्टी रिहा शृंगार, जगत विकारा सीस टिकाईआ। आपे वेखे हो त्यार, मनमुख नारी झूठ यारी अन्तिम लए प्रनाईआ। पंच विकारा उठ उठ जागे, कलिजुग अन्त जगाया। दर दर घर घर लाए आगे, नाता मोह तुड़ाया। हँस बणाए जीव कागे, मदिरा मास विष्टा मुख रखाया। मिल्या मेल ना हरि सरबग सरबागे, अल्पग जीव ना कोए तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर दित्ता वर, कलिजुग अन्तिम वेख घर, सतिजुग साचा वेख वखाया। नमो देव शब्द गुर मन्त्रा, पारब्रह्म सरनाईआ। आप जणाए जुगा जुगन्तरा, हरि जुग जुग पैज रखाईआ। आप कराए आत्म अन्तरा, अन्तर बूझ बुझाईआ। हरि नाम जणाई साचे धाम सुहंतरा, अटल महल्ल सुहाईआ। वेख वखाए गगन गगनंतरा, आकाश प्रकाश रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाउँ उपाईआ। नाम मन्त्र सच सरदूल, सच सच समाया। आपे फलया आपे गया फूल, आप आपणी फल फुलवाड़ी वेख वखाया। आप आपणा रिहा हुलारा झूल, आप आपणा दए हिलाया। आप होए कन्त कन्तूहल, करता करनहार आप अख्वाया। आप चुकाए आपणा मूल, जुग जुग देंदा आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्द साचा नाउँ इक्क ज्ञान दृढ़ाया। नाम ज्ञान शब्द गुरदेव, एका एक बुझाईआ। पारब्रह्म प्रभ साची सेव, बिरथा कदे ना जाईआ। दाता दानी अलख निरँजण अलक्ख अभेव, अलख अलख आप अख्वाईआ। गा ना सके कोई रसना जिह्व, गुण विद्या ना कोई वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा शब्द चलाईआ। शब्द गुर सज्जण जग मीता, एका एक उपाया। जुग जुग चले अवल्लड़ी रीता, आप आपणा भेख वटाया। ना कोई जाणे जणाए देहुरा मन्दिर मसीता, गुरदुआरा ना कोई रखाया। बैठा रहे इक्क अतीता, आप आपणा धाम सुहाया। आपे होए पतित पुनीता, पतित पवन हरि रघुराया। आपे

१०८६
०६

मरया आपे जीता, जीवण मुक्त आप अख्वाया। आपे रामा आपे सीता, आपे लंका गढ़ तुड़ाया। आपे कृष्ना होए नाम अणडीठा, आपे अर्जन रथ चलाया। आपे नानक नाम निधान पीता, आप आपणे विच समाया। आपे गुर गोबिन्द जीता, पूत सपूता आप अख्वाया। आपे जाणे आपणी रीता, जुग जुग करदा आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क शब्द इक्क ज्ञान, इक्क ध्यान एका एक वखाया। नाम रूप हरि नरायण, रूप रंग ना रेख्या। रसना किसे ना सके कहिण, हरि भेखाधारी वड वड भेख्या। दिस ना आए किसे नैण, ना कोई सके मुख वेख्या। जोती शब्दी धाम इक्क्वे एका रहिण, भेव ना पाए ब्रह्मा वेतया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा आपे वेख्या। शब्द नाम हरि नेत्र पेख, निरगुण वेख वखाईआ। ना कोई रूप ना कोई रेख, ना कोई बणत बणाईआ। ना कोई जाणे करे कराए वेस, दर दरवेशी ना कोई जणाईआ। ना कोई जाणे रिखी केश, ना गवर्धन रूप वटाईआ। दिस ना आए ब्रह्मा विष्न महेष गणेश, करोड़ तेतीसा सुरपति राजा सार ना पाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्त हरि शब्द रहे हमेश, आपणी रचना आप रचाईआ। आपे नानक गोबिन्द दस दस्मेस, दहि दिशा वेख वखाईआ। आपे शाह सुल्तान हरि नर नरेश, सच सिँघासण आसण लाईआ। आप आपणा आपे वेख, आपे जाणे आपणी वड्याईआ। शब्द नाम जगत जग मन्त्र लिख्या लेख,
१०६० ०६ लोकमात करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जग आपणी पैज आप रखाईआ। जुग जुग १०६० ०६
आपणा नाम उपा, आपणी कल वरतांयदा। सतिजुग साचा लए जगा, अन्तर मेट मिटांयदा। त्रेता देवे साचा थाँ, थिर रहिण कोए ना पांयदा। द्वापर मात रखाया नाँ, अन्त निशान मिटांयदा। कलिजुग साचे पकड़ी बांह, धरत मात गोद बिठांयदा। आप आपणा भेख वटा, आपणी कल वरतांयदा। ईसा मूसा जोत जगा, संग मुहम्मद नाल रलांयदा। आप आपणे राहे पा, अहिनल हक्क नाअरा लांयदा। खुदी खुदाए दए वसा, खुद खुदाए दया कमांयदा। बेऐब परवरदिगार हरि बेपरवाह, आप आपणा रूप वटांयदा। पीर फ़कीर शाह हकीर दस्तगीर आप आपणे धन्दे ला, आप आपणा मार्ग लांयदा। कुरान इक्क हदीसा इक्क सुणा, तीस बतीसा संग रलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम एका गुरमन्त्र जुग जुग आप जपांयदा। जुग जुग नाम जिया दान, देवणहारा एक एक ओंकारा। सतिजुग भरे सति भण्डारा। हरि बणे आप वरतारा। त्रेता तेरा धार किनारा। राम रामा होए सहारा। द्वापर तेरा कर्म विचारा। काहना कृष्ना मीत मुरारा। वेद व्यासा बण लिखारा। पुराण अठारां बन्ने धारा। अर्जन तेरा इक्क प्यारा। अठारां ध्याए गीता नाअरा। कलिजुग तेरा वेख पसारा। गुर नानक लए अवतारा। मंगे मंग प्रभ चरन दुआरा। नेत्र रोवे ज़ारो ज़ारा। पुरख अबिनाशी करता आदि शक्त

आदि निरँजण अकाल पुरख पावे सारा, देवे नाम अधारा। सतिनाम नमो गुर मन्त्र, एका शब्द उचारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग वेस आप कर, कराए नाम सच्ची जैकारा। नानक गुर दर द्वार, हरि साचा वेख वखाईआ। रूप अगम्म अगम्म अपार, निर्मल जोत करे रुशनाईआ। ना कोई मन्दिर चार दिवार, ग्रन्थ पन्थ ना कोई पढ़ाईआ। ना कोई विद्या रिहा विचार, ना कोई अक्खर लेख लिखाईआ। ब्रह्मा शिव ना दिसे कोई पसार, ना कोई संग रखाईआ। इक्क कबीरा करे निमस्कार, दोए बैठा सीस झुकाईआ। निरगुण निरगुण पावे सार, निरगुण धाम सुहाईआ। इक्क इकल्ला एकँकार, सच घर बैठा आसण लाईआ। आप आपणा सीस छत्र झुलार, आप आपणा मुकट टिकाईआ। आपे होया वेखणहार, आप आपणी सेवा लाईआ। कोटन कोट कोट रूप करतार, नानक वेख वेख बिगसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दरवेश दए वड्याईआ। दर दरवेश शाह सुल्ताना, मंगे मंग भिखारी। देवणहार श्री भगवाना, देवे नाम सच भण्डारी। स : सतिगुर इक्क तराना, त : त्रैलोक मिले सरदारी। न : निरगुण आप वखाए, म : मोह चुक्के पंचम पंचा लाए यारी। सतिनाम दर घर परवाना, गुर सतिगुर करे निमस्कारी। पुरख अबिनाशी वाली दो जहानां, एका भरे नाम भण्डारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक रसना गुण रिहा विचारी। न : निरगुण बाण, हरि एका एक चलाया। न : नाना रूप भगवान, नानक वेख वेख बिगसाया। क : क्रिया इक्क वखान, बिन हरि होर कोई ना थाँईंआ। नानक होया दर परवान, मिल्या मेल हरि रघुराया। पुरख अबिनाशी वड मेहरवान, जिया दान झोली पाया। आप आपणा देवे धुर फ़रमाण, इक्क इकल्ला वेख वखाया। लक्ख चुरासी ना कोई निशान, लोआं पुरीआं गगन पाताल ना कोई रखाया। इक्क इकल्ला नौजवान, नानक निरगुण रूप समाया। एका नेत्र वेखे मार ध्यान, दोए नेत्र दिस ना आया। अट्ठे पहर दिवस रैण दरस महान, एका मंग मंगाया। पुरख अबिनाशी चतुर सुजान, दे मति रिहा समझाया। हरि विछड़ ना जाए दो जहान, हरि नानक विच समाया। एका गौणा गुण निधान, आप आपणा जाप जपाया। नानक गुर कर प्रनाम, दोए जोड़ चरन सीस झुकाया। पुरख अबिनाशी देवे सच फ़रमाण, सोहँ नाम वड्आया। नानक गुर हो प्रधान, लोकमात आया। एका मन्त्र सतिनाम जगत महान, प्रभ साचे झोली पाया। जीवां जन्तां दए ज्ञान, चार वरन एह समझाया। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वेख वखान, शूद्र ब्रह्मण वैश ना कोई जणाया। चारे कुन्टां मार ध्यान, आप आपणा फेरा पाया। मूर्ख मूढ़ बणाए चतुर सुजान, जिस जन आपणी दया कमाया। एका बख्शे चरन ध्यान, वाह वाह सतिगुर साचा सेवा लाया। साधां सन्तां मेल महान, आत्म अन्तर गत जणाया। अन्दर मन्दिर बैठ सच्चे मकान, ब्रह्मण्ड

खण्ड वेख वखाया। गाए सुणाए एका गाण, गावत गावत हरि हरि पाया। आप आपणा घर पछान, जीवां जन्तां एह समझाया। जूठा झूठा दिसे जहान, थिर कोई रहिण ना पाया। मक्का काअबा ना कोई अञ्जील कुरान, पुन्न सवाब ना कोई जणाया। दो दोआबा मेल भगवान, मुख नकाबा आपणा लाहया। एका सुर एका ताल, गुरमुख साचे तन उपाया। इक्क वजाया अनहद बहि बहि मंगल गाण, पंचम सेवक सेव कमाया। हरिजन मेला सच मकान, छप्पर छन्न ना कोई रखाया। एका बैठा हरि भगवान, निर्मल जोती नूर सवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाम दृढ़ाया। नानक गुर नाम दृढ़ा, चारों कुन्ट दए दुहाईआ। जीवां जन्तां राहे पा, एका लेखा रिहा लिखाईआ। वरन गोत कोई दिसे ना, ऊँच नीच ना कोई चतुराईआ। बिन हरि नामे कोई ना थाँ, दो जहानां मिले सज़ाईआ। बिन सतिगुर पकड़े ना कोई बांह, भव सागर ना कोई पार कराईआ। हउमे हँगता दूई द्वैती उडणे काँ, जूठ झूठ रही कुरलाईआ। एका अक्खर सतिनाम रिहा जणा, सति पुरख वड्डी वड्याईआ। एका लेखा रिहा गिणा, गुणवन्ता हरि रघुराईआ। एका ताणा रिहा तणा, नाम सूत्र तन्द वटाईआ। आपणा भाणा आपे रिहा जणा, नानक गुर दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द एका दात वड करामात, लोकमात करे रुशनाईआ। नाम सति हरि साचा जोग, लोकमात

१०६२
०६

वखाया। कलिजुग जीवां कटे रोग, जिस जन रसना गाया। मेल मिलाए धुर संजोग, पिछला मूल चुकाया। दरस वखाए हरि अमोघ, जो जन घोली घोल घुंमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक गुर दित्ता वर, दर घर साचा इक्क सुहाया। दर घर नर हरि साचा पा, गुर नानक खुशी मनाईआ। लोकमात आप आपणा नाम धरा, नाम नामे गया समाईआ। पारब्रह्म तेरी अगणत महिंमा रिहा लिखा, भेव ना जाणे राईआ। साधां सन्तां रिहा जणा, इक्क इकल्ला बेपरवाहीआ। रसना जिह्वा मणीआ मंत बणा, आप आपणा नाउँ जपाईआ। साचा कन्त ल्या मना, नार सुहागण आप अख्वाईआ। आत्म सेजा ल्या बहा, साची खुशी मनाईआ। आप आपणा ल्या रंगा, रंग उतर कदे ना जाईआ। आपणे अंग ल्या लगा, अंगीकार विच समाईआ। इक्क मृदंग ल्या वजा, लोकमात सच्ची पढ़ाईआ। साचा जाप नाम सति जपा, अजपा जाप अख्वाईआ। तीनों ताप दए मिटा, त्रैगुण मेटे शाहीआ। पंचम फड़ फड़ राहे पा, पंचम दए सज़ाईआ। पंचम मेला सहिज सुभा, पंचम घर वज्जे वधाईआ। पंचम हरि हरि रहे गा, पंचम बैठे मुख शरमाईआ। पंचम गल विच पल्ला पा, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। पंचां मिले ना कोई थाँ, देवणहार आप सज़ाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर गुर नानक पकड़ी बांह, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सुहेला देवे ठंडी छाँ, अट्ठे पहर होए सहाईआ। साचा मीता हरि

१०६२
०६

निरँकारा, अकल कल सवाया। अट्ठे पहर खड़ा रहे दुआरा, नानक नानक नानक तेरा रूप वटाया। आपे भरया नाम सति भण्डारा, आपे रिहा वरताया। खेले खेल विच संसारा, खेलणहार आप अख्वाया। आपे मेटे कूड़ पसारा, कूड़ी क्रिया आप कराया। आप रखाए धूंदूकारा, प्रकाश प्रकाश आप कराया। आपणे रंग रवे करतारा, करनहार आप हो जाया। नानक पाया पुरख अगम्म अपारा, वेद कतेब ना कोई विचारा। ना मरे पए जम्म, आदि अन्त इक्क अवतारा। जुग जुग संवारे आपणा कम्म, कारज करनेहारा। नानक दित्ता एका नाम, सोहँ जै जै जैकारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क वखाया सच दुआरा। सच दुआरा नेत्र पेख, नानक वज्जी वधाईआ। ना कोई रूप ना कोई रेख, हरि निरगुण रूप समाईआ। ना कोई मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, ना कोई मूंड मुंडाईआ। आप आपणा आपे वेख, आप आपणी खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक गुर दए जणाईआ। चार वरन गुर आप जणा, इक्क जैकारा लाया। कलिजुग जीव कोई भुल्ले ना, बोध अगाधा शब्द जणाया। माया ममता कोई रुल्ले ना, जूठ झूठ रहिण ना पाया। बिन हरि नामे दीवा बत्ती काया कुले दिसा ना, अन्ध अन्धेर सवाया। अन्तिम वेले पए कोई मुल्ले ना, राए धर्म दए सजाया। सच दुआरा किसे खुल्ले ना, ना कोई मेल मिलाया। पूरे कंडे कोई तोले ना, जो जन बैठे मुख भवाया। तेरां तेरां तेरा वेला कोई भुल्ले ना, ना मोदीखाना वेख वखाया। गुरमख साचा लोकमात कदे हुल्ले ना, गुर पूरे अमृत फल तन लगाया। अमृत आत्म कदी डुल्ले ना, जिस जन चरन ध्यान लगाया। जगत विकारे कदी रुल्ले ना, अनमुल्लड़ा लाल आप बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द एका गुरदेव एका सेवा लाया। नानक गुर सेव कमा, चारों कुन्ट करे रुशनाईआ। साचा नाम इक्क जपा, जीआं जन्तां गया समझाईआ। धुर फ़रमाणा गया आ, वेला अन्त कराईआ। पंज तत्त तन रहिणा ना, झूठी जूठी ख़ाक मिलाईआ। आप आपणा रंग रंगा, प्रभ दे रिहा वड्याईआ। नानक गुर दया कमा, आप आपणा वेख वखाईआ। गऊ ग़रीब निमाणयां ल्या उठा, आप आपणे गले लगाईआ। लहिणा लहिणे झोली पा, अंगद अंगीकार कराईआ। जोत शब्द हरि विच टिका, आप आपणा सीस झुकाईआ। आप आपणा कर जुदा, आप आपणा घर सुहाईआ। प्रभ चरन ध्यान इक्क लगा, मंगे मंग सच्ची सरनाईआ। पुरख अबिनाशी वेखे थाँ थाँ, लुकया कोई रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक मेला रिहा मिलाईआ। नानक गुर कर अरदास, वेले अन्त चितारया। पुरख अबिनाशी दासी दास, आए चल द्वारया। वेख वखाए पृथ्वी आकाश, अप तेज वाए दए सहारया। मिले मेल हरि शाहो शाबाश, नानक निरगुण ढहि द्वारया। लोकमात प्रभ तेरी साची रास, लक्ख

चुरासी वेख वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगा ल्या। पारब्रह्म प्रभ रिहा सुणा, गुर नानक एह जणाईआ। जुग जुग रचना रिहा रचा, वड वड्डी वड्याईआ। साध सन्त गुर पीर अवतार लोकमात टिका, आप आपणा शब्द जणाईआ। आप आपे लए उपा, आप आपणा मार्ग लाईआ। आपे अन्तिम दए सज़ा, देवणहार आप अख्वाईआ। नानक मन्ने इक्क रजा, राजक रहीम रिजक सृष्ट सबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क ध्यान रखाईआ। नानक गुर चरन ध्याना, एका एक रखाया। पुरख अबिनाशी गुण निधाना, दर घर तेरा पाया। आपे होया दर दरबाना, दर दरवेश कहाया। धुर दरगाही तेरा शब्द तराना, तेरी महिंमा नानक रसना गाया। दर घर साचे कर परवाना, अंगद अंग लगाया। दीआ नाम धुर निशाना, आप आपणी बणत बणाया। दस दस हरि कर परवाना, पंज दस होए सहाया। पैंतीस पैंतीस इक्क निशाना, लोकमात दए रखाया। बावन बावन खेल महाना, आप आपणे विच टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेख वखाया। नानक गुर कर विचार, मंगे मंग अपर अपारा। कलिजुग काया कूड़ कुड़यार, चारों कुन्ट धुँधूकारा। सच सुच्च ना करे कोई प्यार, ना कोई पावे तेरी सारा। संग मुहम्मद चार यार, लावण तेरा नाअरा। कलिजुग कर्म आपणा रिहा विचार, लोकमात कर पसारा। हरिभगत रोवण ज़ारो ज़ार, दिवस रैण करन पुकारा। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, धरत मात मंगे मंग अपर अपारा। नानक पाई साची सार, बिन हरि तेरे कोई ना करे पार उतारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक नानक नानक दए सहारा। सति पुरख निरँजण जोत जगा, नानक नाम समझाया। कलिजुग अन्तिम वेखे आ, आप आपणी दया कमाया। जुग जुग भेखी रिहा भेख वटा, भेखाधारी हरि रघुराया। आपणा लेखा आपे रिहा लिखा, हरिजन साचे सेवा लाया। दस दस्मेसा लए उपा, पूत सपूता गले लगाया। कलिजुग अन्तिम मार्ग ला, एका रंग दए रंगाया। चरन प्रीती इक्क सिक्खा, एका घर वखाया। इक्क कटार तन पहना, एका ताज सीस टिकाया। कल्गी तोड़ा इक्क लगा, आप आपणा रूप वटाया। पीला बस्त्र तन छुहा, रंग बसन्ती इक्क चढ़ाया। आदिन अन्ती मेल मिला, जुगा जुगन्ती विच समाया। कलिजुग अन्तिम वेखे तेरा थाँ, हरि जोती नूर उपाया। शब्द डंका दए वजा, आप आपणा नाअरा लाया। नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां दए उठा, सोया कोई रहिण ना पाया। ब्रह्मा विष्न शिव दए हिला, सुरपति राजा ना धीर धराया। करोड़ तेतीसा मारे धाह, ना दीसे कोई सहाया। लक्ख चुरासी देवे फाह, मनमुख कोई रहिण ना पाया। इक्क जपाए आपणा ना, नानक तेरी रसना चिल्ले तीर चढ़ाया। कलिजुग अन्तिम जोत जगा, वेखे खेल सृष्ट सबाया। आप आपणा नाउँ धरा, मेरा तेरा मेट मिटाया।

एका दूजा दए गंवा, घर तीजा इक्क सुहाया। चौथे घर लए बहा, आप आपणी दया कमाया। पंचम मेला मेल मिला, पंच पंचायण मनाया। एका राग आप अल्ला, धुन अनादी रिहा वजाया। वरभण्ड ब्रह्मण्ड दए सुणा, जेरज अंड भुल्ल ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक दित्ता साचा वर, आप आपणा आप वखाया। आपणा आप हरि आप उपा, आपणी जोत जगाईआ। आपणा शस्त्र ल्या उठा, आप आपणा रिहा चमकाईआ। नानक वेख वेख चढ़या चा, शब्द खण्डा हथ्थ बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बूझ बुझाईआ। शब्द खण्डा हरि चमका, हरि साचे आप फिराया। लक्ख चुरासी कोई दिसे ना, मुर्छागत सर्ब समझाया। गगन पाताल आकाश प्रकाश धरत धवल कोई ना पकड़े बांह, ना होए कोई सहाया। इक्क इकल्ला बैठा आपणे थाँ, आप आपणा खेल खिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्द साचा शस्त्र एका एक वखाया। हरि शस्त्र शब्द बलकार, रक्खे हरि अकालया। जुग जुग आपे लए उभार, आप आपणा लए संभालया। आप आपणा करे वार, मारनहार आप अख्वा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक निरगुण दित्ता वर, भरया घर दर सवाल्या। हरि हरि आपणी कर जणा, आपणा रंग चढ़ाया। कलिजुग अन्तिम जाए मुरझा, प्रभ भेखी लए भेख वटाया। जोती जोत लए जगा, जोती नूर सवाया। आप आपणा नाउँ धरा, आपे बैठा मुख छुपाया। आपणा डंक लए वजा, वजावणहारा दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका एक रिहा दरसाया। एका एक हरि अपार, पारब्रह्म बेअन्ता। आप आपणा कर आकार, वेखे सतिगुर साजन सन्ता। आप आपणा कर जैकार, आप बणाए आपणी बणता। कलिजुग तेरी अन्तिम वार, हरि खेले खेल अनन्ता। निहकलंक लए अवतार, वेख वखाए जीआं जन्तां। पंज तत्त ना कोई आकार, मात पित ना कोई बणंता। जोती शब्द हरि भण्डार, तेज कटार ना कोई रखंता। मारी जाए वारो वार, जुग जुग वेस वटंता। कलिजुग मेटे कूड़ कुड़यार, पूरन जोत श्री भगवन्ता। हरिजन साचे लए उभार, मेल विछोड़ा जुगा जुगन्ता। नानक तेरा गाया इक्क जैकार, सोहँ होए मणीआ मंता। चार वरन सोहे इक्क द्वार, भेव चुकाए जीवां जन्तां। राज राजन शाह सुल्तान मंगण मंग भिखार, देवणहार साचा कन्ता। नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां एका शब्द अधार, एका दर दरबार सुहंता। एका पुरख एका नार, नारी कन्ता आप अख्वन्ता। सृष्ट सबाई सांझा यार, हरि जोती नूर हरि भगवन्ता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक देवे नाम वर, वर दाता आप अख्वन्ता। नानक गुर जगत समझा, एका नाअरा लाया। पुरख अबिनाशी ओट तका, तेरा भेव किसे ना पाया। कलिजुग अन्तिम जाए आ, चारों कुन्ट होए हलकाया।

वरन बरन रहे कुरला, धीरज धीर ना कोई धराया। ना कोई दीसे सच सहा, सच सुल्तान दिस ना आया। आप आपणा राग रहे गा, धुन अनादी ना कोए वजाया। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म रहे अल्ला, ब्रह्म ब्रह्म ना वेख वखाया। हँ हँगता विच गए समा, हँ ना कोई मिटाया। सो पुरख निरँजण आपणी दया कमा, सज्जण साचे लए जगाया। आप आपणा नाम दृढ़ा, आप आपणी बूझ बुझाया। किला कोट इक्क वखा, गढ़ हँकार तुड़ाया। काया नगारे चोट आपे ला, अनहद धुन आप वजाया। माया ममता खोट गंवा, साचा संग निभाया। अतुट अतोट हरि आप अख्वा, इक्क भण्डार वरताया। जोती जोत हरि जोत जगा, जागरत जोत रिहा समझाया। शब्दी शब्द हरि शब्द उपा, शब्दी शब्द लेख लिखाया। सोहँ साचा मार्ग ला, सति पुरख निरँजण वेख वखाया। आदि शक्त बणाई साची माँ, चतुर्भुज आप अख्वाया। अगम्म अगम्मड़ा वसे अगम्मड़े थाँ, दिस किसे ना आया। हड्ड मास नाड़ी चमड़े जोत जगा, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, माणक मोती चोग चुगाया। सतिजुग तेरा साचा नाँ, सतिगुर साचे आप धराया। अकाल मूर्त हरि दया कमा, नाद तूरत रिहा वजाया। जगत जीआं सूरत किसे दिसे ना, पंज तत्त डेरा लाया। रत्ती रत्त कोई रहे ना, मन मति बुध दए सजाया। कमलापती कदे विछड़े ना, नार सुहागी सदा हंढाया। दीवा बत्ती कदे बुझे ना, तेल बाती ना कोई रखाया। प्रभ का भेव रहिणा गुज्झा ना, आप आपणा पड़दा लाहया। कलिजुग अन्तिम सच दुआरा सुझा ना, गुरु नानक लेख लिखाया। प्रभ चरन द्वारे कोई झूजे ना, साध सन्त सीस भेंट ना कराया। अन्तर आत्म लिव कोई इच्छा ना, घर साचा ना वेख वखाया। भेव चुकाए एका दूजा ना, वरनां बरनां विच फसाया। नेत्र तीजा किसे खुल्ले ना, मन्त्र ज्ञान ना कोई दृढ़ाया। बजर कपाटी ताला तुट्टा ना, बंधन बंध ना कोई कटाया। पंच प्यार जगत जग छुट्टा ना, पंचम शब्द ना मेल मिलाया। अमृत आत्म सोमा फुट्टा ना, जूठा झूठा तीर्थ नुहाया। काया मन्दिर सतिगुर साचा तुठ्ठा ना, गुर दर मन्दिर डेरा लाया। आप मनाया किसे रुठ्ठा ना, नेत्र रो रो नीर वहाया। दरस दिखाए लुकया गुट्टा ना, आप आपणा भेव खुल्लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक गुर तेरा वर, कलिजुग अन्तिम पूर कराया। सतिगुर नानक सुण संदेश, रसना जै जै जैकारया। पारब्रह्म सदा आदेस, ढहि ढहि पए द्वारया। जुग जुग जाणे आपणे वेस, तेरा भेख अपर अपारया। आपे बाल जवानी होए अल्लड़ वरेस, बिरध बुढेपा ना कोई जणा रिहा। आपे उपाए मुच्छ दाढ़ी केस, मूंड मुंडाया आप समा रिहा। आपे दाता नर नरेश, आप राज जोग कमा रिहा। आपणे नेत्र आपे वेख, आपे नैण मूंद मुंदा रिहा। आपे लिखणहारा लेख, आपे अन्त मना रिहा। किसे ना चले कोई पेश, जो तेरा सो तेरा गुण गा रिहा। नानक मंगे दर दरवेश, प्रभ अग्गे झोली

डाह रिहा। पुरख अबिनाशी कर वेस, जोती जोत मिला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग वखा ल्या। आप आपणा रंग करतारा, आपणा आप जणाईआ। आपे होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, निरगुण रूप समाईआ। सरगुण मेला विच संसारा, महांसार्थी आप अख्वाईआ। शब्द शब्दी कर प्यारा, शब्द गुर नाअरा लाईआ। एका वरन एका सरन एका जैकारा, जै जैकार आप कराईआ। ना कोई दीसे होर दुआरा, कलिजुग अन्तिम होए जुदाईआ। गुरमुख मेला विच संसारा, हरि साचा आप कराईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, इक्क लक्ख हज़ार ग्यारां गुरमुख साचे लए तराईआ। ब्रह्मा रोवे धाहां मारा, अट्ठे नेत्र रिहा खुल्हाईआ। कलिजुग तेरा अन्त ना पारावारा, तेरी वड वड्डी वड्याईआ। विष्नूं वंसी करे विचारा, वेखे खेल थाउँ थाँईंआ। शिव शंकर रोवे ज़ारो ज़ारा, बाशक तशका गल लटकाईआ। इन्द्र देवे ना कोई सहारा, करोड़ तेतीसा रिहा कुरलाईआ। वरभण्ड तेरा कूड़ पसारा, प्रभ साचा मेट मिटाईआ। नौ सत्त देवे इक्क हुलारा, दिस किसे ना आईआ। लक्ख चुरासी जीव गंवारा, अन्तिम मेट मिटाईआ। कलिजुग तेरा पार किनारा, लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिजुग उठाए सन्त दुलारा, धरत मात गोदी पाईआ। अमृत रस साचा सीर देवे हरि निरँकारा, सस्से किले विच बहाईआ। होड़ा उप्पर करे पुकारा, दोवें मुख उठाईआ। निरगुण सरगुण खेल विच संसारा, साचा कोट इक्क सुहाईआ। आप आपणा कर उज्यारा, लोकमात करे रुशनाईआ। सोहँ शब्द तेरा जै जैकारा, चार वरन इक्क पढ़ाईआ। सोहँ जैकारा हरि हरि लाया, सतिजुग नींह रखाईआ। आप आपणा अंग कटाया, लक्ख चुरासी विच गया समाईआ। आप आपणा मृदंग वजाया, डौरू डंका एका वाहीआ। सच सिँघासण शब्द रंगीला नाम इक्क पलँघ वछाया, जोती नूर करे रुशनाईआ। नौ द्वार खोल्ह किवाड़ हरिजन अन्दर लँघ वखाया, आप आपणा कुण्डा लाहीआ। चरन धूढ़ कोटन कोट धार गंग वहाया, तीर्थ तट्ट रहे शरमाईआ। हरिजन साची मंग मंगाया, एका मेला हरि रघुराईआ। आदि जुगादी लए अंग लगाया, जुग जुग आपणी पैज रखाईआ। चिट्टे अस्व साचे घोड़े तंग कसाया, सोलां कलीआं आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वलीआ छलीआ आप अख्वाईआ। वल छल हरि भेख बावन, करे अछल अछेदा। जन भगतां फड़ाए आपणा दामन, भेव ना पायण चारे वेदा। दुष्ट सँघारे जिउँ रामा रावण, हनवन्त उधारे गाया जिह्वा। चण्डी चमके दामनी दामन, रथ रथवाही बेऐब बेऐबा। एका शब्द नानक गुर धुर दरगाही जामन, महिंमा लिखे जगत कतेबा। गुरमुख विरले दर घर साचा पावण, लहिणा देणा चुक्के हिसेबा। नेड़ ना आए कामनी कामन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग खोल्हे सच दर, गुरमुख मेला हरी हरि, आप आपणे घर आपे करे वसेबा।

सतिगुर पुरख शाह सुल्ताना, सति सतिवाद समाया। कलिजुग मेटे झूठ दुकाना, तीर निशाना एका लाया। सतिजुग खेले खेल महाना, सति सरूप समाया। एका उपजे नाम निधाना, निरगुण वेख वखाया। इक्क चलाए तीर निशाना, हरिजन लए चढ़ाया। इक्क जणाई इक्क ज्ञाना, एका धर्म धराया। एका बाणी एका गाणा, एका राग अलाया। एका रूप शाहो भूप हरि भगवाना, एका कूट दरसाया। एका मन्दिर सच मकाना, एका धूप धुखाया। एका बरन आप कराना, इक्क समग्री पाया। एका जाप आप जपाना, अजप्पा जाप समझाया। एका बन्द द्वार वखाना, एका घर रखाया। एका डंक आप वजाना, एका ताल वजाया। एका रंग राउ रंक कराना, एका धाम बहाया। एका मर्द इक्क मरदाना, एका चेला रूप अखवाया। एका पीणा एका खाणा, एका बस्त्र तन पहनाया। एका शस्त्र एका तीर कमाना, एका चिल्ले आप चढ़ाया। एका पवण इक्क मसाणा, एका अवण गवण अखवाया। एका मेघ एका बरखे सवण, एका सीतल धार चलाया। एका रामा एका रावण, एका हँकार मिटाया। एका भेखी एका बावन, एका बल तराया। एका कृष्ना एका सँवल, एका रथ रथवाही आया। एका धरनी एका धरती एका धवल, एका धर्मी धर्म कमाया। एका करनी एका कँवल, करता पुरख आप अखवाया। एका मरनी एका मवल, मरे मर मर जम्मे जीव सबाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मार्ग लाया। सच दरवाज़ा इक्क खुल्ला, लोकमात करे रुशनाईआ। रवि ससि रहे शरमा, मुख रिहा पड़दा पाईआ। तारा मण्डल आपणा मण्डप रिहा ढाह, नूर चमक करे चमकाईआ। ब्रह्मा वेखे बेपरवाह तेरा राह, लोकमात नैण उठाईआ। कवण कूटे बैठा जोत जगा, आप आपणी कल वरताईआ। गुरमुख साजन रिहा तरा, एका प्रेम पढ़ाईआ। आत्म विद्या इक्क सिखा, जगत विद्या दूर कराईआ। लेखा लिख्या लेखे लए ला, लेखा लेखे विच समाईआ। आप आपणा पल्ला लए फड़ा, जन भगतां बेपरवाहीआ। साचे मन्दिर लए चढ़ा, डूँघी कन्दर पार कराईआ। बहत्तर नाड़ करे रुशना, जोत निरँजण डगमगाईआ। अनहद ताल आप वजा, साचा राग अलाईआ। आत्म सेजा आसण ला, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। जन भगतां मेले फड़ फड़ बांह, दर द्वारे फेरी पाईआ। हँस बणाए फड़ फड़ काँ, कागों हँस बणाईआ। इक्क जपाए साचा नाँ, दो जहानां मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, गुरबचन गुर का बचन पूर कराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गृह मन्दिर पूजा एका आपणी आप वखाईआ।

१०६८
०६

१०६६
०६

✲ २६ मग्घर २०१४ बिक्रमी सरदारा सिँघ दे गृह पिण्ड मनावा ज़िला फिरोज़पुर ✲

आपणा नाउँ हरि आप रक्ख, आपणा आप उपाया। आप आपणा कर प्रतक्ख, आप आपणा वेस वटाया। आप आपणा लए रक्ख, आप आपणा दए मिटाया। आप आपणा करे सक्ख, आप आपणा दए भराया। आप आपणा करे वक्ख, आप आपणा सर्ब टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ उपाया। आप आपणा नाम उचार, आप आपणी आवाज़ लगाईआ। आप आपणा लए उभार, आप आपणा साज सजाईआ। आप आपणा लए विचार, आप आपणा आसण लाईआ। आप आपणा वसाए घर बाहर, आप आपणा डेरा लाईआ । आप आपणा होए पहरेदार, आप आपणी सेवा लाईआ। आप आपणा कारज लए संवार, आप आपणा काज रचाईआ। आप आपणा कर प्यार, आप आपणा लए मनाईआ। आप आपणा कर श्रृंगार, आप आपणा वेख वखाईआ। आप आपणी बन्ने धार, आप आपणी धार चलाईआ। आप आपणी वेख रंग करतार, आप आपणा रंग चढ़ाईआ। आप आपणा मंग द्वार, आप आपणी झोली भिच्छया पाईआ। आप आपणा लेखा लेख अपर अपार, आप आपणे अग्गे रिहा टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाउँ चलाईआ। आप आपणा आप उपा, आप आपणी कल वरताईआ। आप आपणा वेख वखा, आप आपणा रंग रंगाईआ। आप आपणी मंग मंगा, आप आपणी झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी करे जणाईआ। आप आपणा दए जणा, आप आपणा पड़दा लाहया। आप आपणा लेखा दए लिखा, आप आपणा राग अल्हाया। आप आपणा मार्ग ला, आप आपणा रिहा चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेख वखाया। आप आपणा कर त्यार, आप आपणा कर्म कमाया। आपे होए शाह अस्वार, आप आपणा आसण लाया। आप आपणा होया पहरेदार, पुरख अबिनाशी सेव कमाया। आप आपणा करे खबरदार, आप आपणा रिहा जगाया। आप आपणा कर मेल अपार, आप आपणा मेल मिलाया। आप आपणी बन्ने धार, आप आपणा रूप वटाया। आप आपणा शब्द उचार, आप शब्दी शब्द समाया। आप आपणा महल्ल उसार, आप आपणा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ बुलाया। आप आपणा नाउँ पुकार, आप आपणा रिहा मनाईआ। आप आपणी पावणहारा सार, आप आपा वेख वखाईआ। आप आपणा गाए गावणहार, गावणहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आप आपणा नाम, हरि साचे आप धराया। इक्क प्याया आपणा जाम, एका रंग रंगाया। आप बंधाए पल्ले साचा दाम, निखुट्ट कदे ना जाया। आप मिटाए अन्धेरी शाम, इक्क ज्ञान दृढ़ाया।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे अंगन आप कराया। आपणे अंगन आपे वड़, आपे अलख जगाईआ। आपणे अन्दर आपे खड़, आपे वेख वखाईआ। आप आपणा वेख गढ़, आप आपणा दए सुहाईआ। आप आपणा फड़या लड़, आप आपणे हथ्थ रखाईआ। आप आपणा घाड़न घड़, घड़नहार आप हो जाईआ। आप आपणा अक्खर पढ़, आप आपणे विच टिकाईआ। आप आपणी अग्नी सड़, आप आपणी जोत समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा घर सुहाईआ। आप आपणा घर सुहाए, आप आपणा आसण लाया। आप आपणा दर खुल्हाए, आपे वेखण आया। आप आपणा सर उपाए, आपे नहावण जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ उपाया। नाउँ उपाए हरि निरँकारा, निरगुण रूप समाए। आप आपणा कर उज्यारा, लोआं पुरीआं बणत बणाए। आप आपणा कर पसारा, लक्ख चुरासी विच समाए। आप आपणा दए हुलारा, हर घट बैठा आसण लाए। आप आपणा बण वरतारा, ब्रह्मा विष्न शिव झोली पाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धराए। नाम धराए हरि, निरगुण रूप समाया। आपणा भाणा आपे रिहा जर, आपणे भाणे विच समाया। आपणी तरनी आपे तर, तारनहार आप अख्वाया। आपणी करनी आपे कर, करता पुरख सृष्ट रखाया। आपणी मरनी आपे मर, आप आपणा लए जिवाया। आप आपणी सरनी पड़, आप आपणा सीस झुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाउँ उपाया। नाउँ उपाए हरि भगवाना, भगवन रूप समाया। आदि अन्त इक्क निशाना, एका तीर चलाया। एका तन्दन एका गाना, एका तन बंधाया। एका बंधन दो जहानां, बन्दी छोड़ आप अख्वाया। एका नंदन विच जहाना, परमानंद वखाया। एका चन्दन कोटन भाना, जोती नूर समाया। एका अनन्दन राग अलाना, नाम तराना एका लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ उपाया। नाउँ उपाए हरि गिरधारी, गिरवर रूप वटाया। पारब्रह्म खेल न्यारी, खेलणहार दिस ना आया। करे कराए आपणी कारी, कारज आपणा आप रचाया। एका नाउँ जोद्धा सूर वड बलकारी, हरि आपणा आप उपाया। सच सुच्च देवे शब्द कटारी, शस्त्र बस्त्र इक्क सजाया। नाम घोड़े कर अस्वारी, लोआं पुरीआं रिहा फिराया। लक्ख चुरासी पावे सारी, दहि दिशा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ धराया। नाउँ धराए निहकलंक, निहकरमी कर्म कमाया। आप सुहाया आपणा बंक, बंक द्वारी आप अख्वाया। खेले खेल बार अनक, अनक कल सुहाया। आप वजाए आपणा डंक, ना कोई डौरू डंक रखाया। आप आपणी लाए तनक, डोरी आपणे हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाम दृढ़ाया। आपे वसया पुरी

घनक, सच सुच्च वेख वखाया। गुरमुख उधारे जिउँ जन जनक, मन मती लेखे लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा होए सहाया। आप आपणा होए सहा, निहकलंक बली बलवाना। आप आपणा लए उपा, आप आपणा हथ्थीं बन्ने गाना। आप आपणा खण्डा लए उठा, आप आए विच मैदाना। आप आपणा पखण्डा भेख दए मिटा, आप आपणा अन्त मिटाना। आप आपणा ब्रह्मण्डां विच गया समा, आप आपणा भेव छुपाना। आप आपणी वंडा दए करा, उत्भज सेत्ज जेरज अंड वखाना। आप आपणा डण्डा ला, लक्ख चुरासी वेखे मार ध्याना। आप आपणा रंडा दए करा, आपे होए सुहागी बाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाम वखाना। नाम वखाए हरि भगवाना, जोती जोत जगाईआ। शब्द तराना दो जहाना, आपणा नाद वजाईआ। भगत भगवाना पार कराना, ब्रह्मादी खोज कराईआ। खेल महाना दो जहानां, दिस किसे ना आईआ। शाह सुल्ताना वड मेहरवाना, थिर घर बैठा आसण लाईआ। शब्द बिबाणा इक्क महाना, आप आपणा रिहा उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ मनाईआ। नाम मनाए दया कमाए गुरमुख चुकाए, हरि वड वड्डी वड्याईआ। रोग मिटाए सोग गंवाए जोग कमाए, एका एक सच्ची सरनाईआ। संजोग वखाए गुरसिख साचे बाल अञ्जाणे गले लगाए, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नाउँ चलाईआ। आप आपणा नाउँ चला, सच महल्ला दए वखा, इक्क इकल्ला वेखे थाँ, लोकमात वड्डी वड्याईआ। हरिजन साचे राहे पा, आप आपणा मेल मिला, दूई द्वैती पड़दा लाह, एका बूझ बुझाईआ। काया चोली रंग रंगा, आप आपणे अंग लगा, हउमे हँगता रोग गंवा, एका अक्खर बूझ बुझाईआ। काया मन्दिर धुन आत्मक इक्क वजा, शब्द राग दए सुणा, ताल तलवाड़ा इक्क वजा, छत्ती राग भेव ना पाईआ। बजर कपाटी दए खुल्ला, आप आपणा दए वखा, आत्म सेजा रिहा सुहा, हरि साची जोत जगाईआ। गुरमुख साचे पकड़े बांह, इक्क वखाए साचा थाँ, जपे जपाए आपणा नाँ, ना कोई दूसर संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा लए उपाईआ। आप उपाया आप हिलाया आप जगाया, आपे जोग कमांयदा। आप उठाया आप खपाया आप वखाया भरम गंवाया, एका धाम सुहांयदा। आप चलाया आप फिराया आप तराया आप वड्आया, आपे बेड़ा बन्ने लांयदा। आप गाया आप पाया आप बणाया सहिज सुख पाया, घर साचे आप बहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका आपणा नाउँ रखांयदा। नाम निरँकार अपर अपारा, एका जोत जगाईआ। निहकलंका खेल अपारा, वरन गोत ना कोई रखाईआ। एका अंका इक्क सहारा, राउ रंकां एका रंग रंगाईआ। प्रगट होवे वासी पुरी घनका, हरिजन साचे

रिहा जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आदि जुगादि जुग जुग जोग जगत भगत आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। नाम नेत्र ज्ञान अंजन, प्रभ साजन साचे पाया। काया कन्दर मिले सज्जण, भाण्डे काचे भाग लगाया। दुरमति धवाए कराए साचा मजन, धूढ़ी मस्तक टिक्का लाया। गढ़ हँकारी भाण्डे भज्जण, भरमी भरम भउ चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि साजन साचे लए तराया। मजन धूढ़ चरन इशनाना, चरन चरनोदक मुख चुआया। मूर्ख मुग्ध कराए चतुर सुजाना, नाम निधाना दया कमाया। मेल मिलाए पुरख सुल्ताना, राज राजाना वेख वखाया। हरिजन गोपी हरि हरि काहना, हरि साचा थान सुहाया। बस्त्र भूशन इक्क वखाना, तन श्रृंगार वखाया। नेत्र नैण कज्जल इक्क महाना, नूरी दरस सुहाया। नाम मैहन्दी रंग रंगाना, उतर कदे ना जाया। सीस मैंडी इक्क रखाना, आप आपणा मेल मिलाया। रसना कहिंदी गुण निधाना, गुण निधाना दन्द बतीसा गाया। कान सुणे साचा गाना, हरि हरि नाम अलाया। नेत्र पेखे दरस भगवाना, दर दर फेरा पाया। मस्तक मंगे धूढ़ी दाना, आप आपणा रिहा चुकाया। सीस जगदीस करे परवाना, हरिजन भेंट चढ़ाया। केस दरवेस होए हैराना, चँवरी चँवर फिराया। नक्क वासना इक्क वखाना, नाम सुगंध उपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम जपाया। नाम जपे जग साचा सज्जण, जिस जन दया कमाईआ। आप बुझाए लग्गी अग्न, अग्नी तत्त मिटाईआ। मुख लगाए साचा सगन, हरि शब्द करे कुड़माईआ। लक्ख चुरासी फिरे नग्न, सच पड़दा कोई ना पाईआ। मानस जन्म होए भंगन, राए धर्म दए सज़ाईआ। गुरमुख साजन दर दुआरा एका मंगन, प्रभ चरन सच्ची सरनाईआ। आपे हरिजन चोली रंगण, नाम ललारी इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वड दाता बेपरवाहीआ। बेपरवाह हरि हाज़र हज़ूर, हरि हाज़र जोत जगाईआ। आपे वसया नेड़े दूर, दूर दुराडा फेरा पाईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, सच सुच्च रिहा वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख गुरसिख लिख्या लेख धुर मस्तक झोली पाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, हरि नर आप हो जाईआ।

शब्द गुर सर्ब भरपूरा, हरि हरि आप उपाया। आपे बख्शे नादी तूरा, आपे धुन उपजाया। आपे होए हाज़र हज़ूरा, आप आपणा दरस दिखाया। आपे होए नूरी नूरा, नूरो नूर समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्दी शब्द उपाया। शब्द गुर सदा अनन्द, अनन्द अनन्द मंगल गाए। आदि जुगादी सदा बख्शिंद, बख्शणहार आप अख्वाए।

आप समाए परमानंद, परम पुरख अख्वाए। आप आपणा गाए छन्द, आप आपणा राग अलाए। आप आपणा वेखे पन्ध, दो जहानां फेरा पाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्दी शब्द उपाए। शब्द गुर साचा कन्ता, आपे बख्शे साचे सन्ता, सतिगुर सेवा लाया। जुगा जुगन्त वेख वखाया। मेल मिलाए नारी कन्ता, कन्त कन्तूहल इक्क आप अख्वाया। जगत बणाए साची बणता, आप आपणा रूप दिखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द दए वड्आया। शब्द गुर शाह सुल्ताना, हरि हरि आप उपाया। आप उपाए हरि भगवाना, आप आपणे धन्दे लाया। आपे देवे नाद तराना, साचा ताल वजाया। आप सुणाए साचा गाणा, सुनणहार आप अख्वाया। आप वखाए पद निरबाना, निरगुण रूप समाया। आपे खेले खेल महाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द शब्दी मेल मिलाया। शब्द द्वारे साची मंग, सगली चिन्त मिटाईआ। आप रंगाए आपणा रंग, एका एक रंगाईआ। आपे मेटणहारा भुक्ख नंग, तृष्ना तृप्त कराईआ। आप आपणे वसया संग, वसणहार आप अख्वाईआ। आपे खेले खेल सूरा सरबंग, जुग जुग आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। सन्त सुहेले गुरु गुरु गुरु चेले एका दान रहे मंग, दर द्वारे झोली डाहीआ। आपे वेखे शब्द तरंग, शाह अस्वार वेख वखाईआ। दो जहानी वेखे पन्ध, सति पुरख निरँजण विच समाईआ। जोती जोत
१९०३ सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द दए वड्याईआ। गुर शब्द हरि आप वड्आ, लोकमात उपाया। आप आपणा १९०३
०६ हुक्म जणा, आपणे मार्ग लाया। आप आपणा नाउँ धरा, निरगुण सरगुण खेल कराया। सरगुण मेला बेपरवाह, नर नरायण ०६
अख्वाया। मेल मिलाए अगम्म अथाह, अगम्मड़ा थान सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा आप उपाया । एका नाउँ हरि हरि धर, शब्दी जोग कमांयदा। आप आपणा देवे वर, आप आपणी झोली पांयदा। आप आपणी करनी रिहा कर, करता पुरख आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपे आप वेख वखांयदा। जुग जुग वेखणहार भगवन्ता, आपणी कल वरतांयदा। भेव खुलाए साचे सन्ता, आत्म ब्रह्म जणांयदा। धुन अनादी आत्मक इक्क वजन्ता, अनहद राग वजांयदा। आत्म जोती इक्क जगंता, आकाश आकाश वेख वखांयदा। साची सेजा इक्क सुहंता, निरगुण रूप समांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाउँ चलांयदा। आप आपणा नाउँ जपाए, जुग जुग हरि भगवाना। सतिजुग त्रेता वेख वखाए, द्वापर दर करे परवाना। मेहरवान आप हो जाए, रघुपत वेखे राम रामा। काहना कृष्ना रूप वटाए, आप आपणा वेख वखाना। कलिजुग अन्तिम मेल मिलाए, मंगे मंग एका दाना। नानक गोबिन्द लेख लिखाए, धुर दरगाही परवाना। पुरख अबिनाशी दया कमाए, प्रगट

११०४
०६

होए वाली दो जहाना। कलिजुग लहिणा देण चुकाए, निहकलंक बली बलवाना। शब्द डंक वजाए, आप उठाए रंक राजाना। द्वार बंक इक्क सुहाए, ना कोई दूसर दर वखाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे आपणी आणा। आप आपणी जोत जगा, आपणी कल वरताईआ। निहकलंक नाम धरा, निरगुण रूप अख्वाईआ। शब्दी शब्द रिहा अख्वा, गुर शब्दी भेव ना राईआ। धुन अनादी रिहा वजा, दिस किसे ना आईआ। ब्रह्मादी खोज रिहा खुजा, ब्रह्मादी खोज खुजाईआ। आदि जुगादि भेख वटा, लोआं पुरीआं फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा घर दए सुहाईआ। आप आपणा घर सुहाए, हरि साचा दया कमांयदा। शब्द सिँघासण डेरा लाए, पृथ्वी आकाश वेख वखाए, लोआं पुरीआं आप सुहांयदा। शब्द सिँघासण गुरमुख जगाए, आप आपणी दया कमांयदा। काया मण्डल साची रासन आपे पाए, हरि काहना गोपी रूप वटांयदा। दासी दासन आप अख्वाए, सेवक सेव कमांयदा। निज घर वासन डेरा लाए, हर घट आपणा आप टिकांयदा। गुरमुख विरले अन्ध अन्धेर मिटाए, आप आपणा रूप दरसांयदा। दूई द्वैती हउमे हँगता पड़दा देवे लाहे, आप आपणी बणत बणांयदा। नाम भण्डारी हरिजन मंगता एका एक मंग मंगाए, आत्म झोली आप भरांयदा। नानक अंगद अंग लगाए, कागों हँस बणांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा नाउँ चलांयदा। सतिजुग साचा नाम धरा, हरि सच करे कुड़माईआ। अक्खर वक्खर दए पढ़ा, एका विद्या हरि जणाईआ। साचा पौड़ा आप रखा, हरिजन साचे दए चढ़ाईआ। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा आप अख्वा, मिट्ठा कौड़ा वेख वखाईआ। सम्बल नगर आए दौड़ा डेरा ला, लम्मा चौड़ा वेख वखा, साढे तिन्न हथ्थ रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उच्चे टिल्ले आपे बैठ आपे हस्से कूके दए दुहाईआ। उच्च महल्ला सच मुनारा, हरि जोत करे रुशनाईआ। शब्द सुहेले सच जैकारा, आपणा आप सुणाईआ। दो जहानी पावे सारा, हरि वड वड्डी वड्याईआ। इक्क इकल्ला एकँकारा, अकल कला अख्वाईआ। जुग जुग बन्ह्रे धारा, धार आपणे हथ्थ रखाईआ। साधां सन्तां दए हुलारा, एका शब्द नाम जणाईआ। गुर पीर लए अवतारा, प्रभ अग्गे मंगण झोली डाहीआ। देवणहार आप सर्ब संसारा, जुग जुग आपणा करे वरतारा, करनहार आप अख्वाईआ। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, जोती शब्दी मेल मिलाईआ। प्रगट हो विच संसारा, निहकलंका नाउँ धराईआ। शब्द खण्डा तेज कटारा, आप आपणे हथ्थ रखाईआ। सो पुरख निरँजण खेल अपारा, गति मित ना कोई जणाईआ। हँ हं प्रभ पावे सारा, हँ हँगता मेट मिटाईआ। एका दूजा भउ न्यारा, तीजा नैण खुल्हाईआ। चौथा सुहाए बंक दुआरा, जन भगतां आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा

नाउँ धराईआ। आप आपणा नाउँ उपा, आप जैकारा लाया। आप आपणे विच गया समा, आप आपणा लए उपाया। आप आपणा राग अला, आप आपणा रिहा सुणाया। आप आपणा सुहाग हंढा, आप आपणा कन्त मिलाया। आप आपणा रिहा जगा, आप आपणा राग रिहा गाया। आप आपणा हुक्म वरता, कलिजुग कूड़ा रहिण ना पाया। सतिजुग साचा मात धरा, लोकमात दए वड्आया। सन्त सुहेले संग रला, इक्क ज्ञान दृढ़ाया। एका अक्खर जाप जपा, सो पुरखे विच मिलाया। सो पुरख निरँजण वेख वखा, हरिजन साचे लए तराया। हरिजन साचे चढ़या चाअ, हरि साजन साचा पाया। आप सुहाए साचा थाँ, थिर घर नाउँ रखाया। हरिजन बिठाए फड़ फड़ बांह, आप आपणा संग रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाम जपाया। आप जपाए आपणा जाप, हरि वड वड्डी वड्याईआ। मेट मिटाए तीनो ताप, त्रैगुण अग्न बुझाईआ। ना कोई पुन्न ना कोई पाप, जो जन रहे सरनाईआ। आप बुझाए आपणा आप, आप आपणी दया कमाईआ। आपे होया माई बाप, हरिजन झोली पाईआ। कलिजुग काया रही कांप, चारों कुन्ट पई दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाउँ धराईआ। नाउँ धर हरि निरँकार, आपणी कल वरताईआ। कलिजुग अन्तिम वेख विचार, आपणा मेल मिलाईआ। भरमे भुल्ले जीव गंवार, भरम गढ़ ना कोई तुड़ाईआ। हउमे हँगता कर प्यार, माया ममता इक्क प्रनाईआ। जूठ झूठ संग शृंगार, सच बस्त्र ना कोई हंढाईआ। नानक गोबिन्द लेख लिखार, कलिजुग मेटे झूठी शाहीआ। लक्ख चुरासी नौ खण्ड पावे सार, सत्तां दीपां वेख वखाईआ। आप आपणी बन्ने धार, लोआं पुरीआं इक्क जणाईआ। चार वरन सुहाए इक्क द्वार, ऊँच नीच रहिण ना पाईआ। इक्क शब्द इक्क जैकार, एका नाअरा लाईआ। एका दर सच्चा दरबार, इक्क इकल्ला आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात हरि नाउँ धर, नाम नामा इक्क उपाईआ। कलिजुग अन्तिम नाम धरा, आपणा आप उपाया। भेव ना कोई रिहा पा, नेत्र लोचन दिस ना आया। गुरमुख विरले अन्तिम सगली चिन्त दए मिटा, जिस जन आपणी दया कमाया। मनमुखां दीपक जोत ना दए कोए जगा, अज्ञान अन्धेर ना मिटाया। काग हँस ना कोई दए बणा, साची चोग ना कोए चुगाया। मानस जन्म ना लेखे देवे कोई ला, लक्ख चुरासी ना फंद कटाया। बिन हरि नामे ना कोई थाँ, राए धर्म दए सज़ाया। गुर पूरे हरदम पकड़ी बांह, वेले अन्त लए तराया। दो जहानी देवे ठंडी छाँ, सदा सुहेला आप अख्वाया। आप जपाए आपणा नाँ, हरि जुग जुग वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नर नरेश दर दरवेश आपणा रूप वखाया। नर नरेश सच सुल्तान, थिर घर साचे वसया। दर दरवेश हरि भगवान, जन भगत द्वारे फिरे नस्सया। आपे जाणे आपणा

११०५ ०६

नाँ, लेखा लेख ना किसे लिख्या। आप चलाए आपणा बान, आप आपणे हथ्थीं रक्खया। आप करे पुण छान, लक्ख चुरासी देवे मथ्थया। आपे पाए आपणी आण, आप चलाए साची गाथया। आप सुणाए धुर फ़रमाण, सर्बकल हरि समराथया। कलिजुग अन्तिम हर घट खेले खेल दो जहान, हरि त्रैलकी नाथया। साचा चिल्ला तीर कमान, जोद्धा सूरबीर बली बलवान, शब्द चलाए साचा राथया। ब्रह्मा विष्न शिव सुर होए हैरान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाउँ धराए, आपे होए सगला साथया। सगला संग आप निभाउणा, हरि करते खेल रचाया। सतिजुग साचा मार्ग लाउणा, जगत लहिणा मूल चुकाउणा, नौ खण्ड सत्त दीप एका धाम बणाउणा, एका धाम सुहाया। चार वरन हरि इक्क कराउणा, ऊँच नीच रहिण ना पाया। एका मन्त्र नाम जपाउणा, एका नाअरा लाया। राज राजान शाह सुल्तान कोई रहिण ना पाउणा, सीस ताज ना कोई रखाउणा, बीस बीसा हरि जगदीसा एका एक अख्वाया। साचा सीस छत्र झुलाउणा, पंचम पंचम मेल मिलाउणा, सतिजुग तेरी साची धार बंधाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, सोहँ जै जै जैकार जुग आप कराईआ।

❊ २७ मग्घर २०१४ बिक्रमी हीरा नंद दे गृह पिण्ड चम्बल ज़िला अमृतसर ❊

हरि शब्द हरि ज्ञान, हरि हरि आप उपाया। हरि शब्द बिबाण, हरि हरि आप उडाया। हरि शब्द निशान, हरि हरि आप वखाया। हरि शब्द मेहरवान, हरि हरि आप उपाया। हरि शब्द प्रधान, हरि हरि आप कराया। हरि शब्द जिया जहान, हरि हरि आप टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्दी जोड़ जुड़ाया। हरि शब्द संग सुहेला, हरि हरि आप कराया। हरि शब्द लक्ख चुरासी मेला, हरि हरि मेल मिलाया। हरि शब्द हरी गुर चेला, चेला गुर हरि आप अख्वाया। हरि शब्द इक्क इकेला, इक्क इकेले धाम सुहाया। हरि शब्द सद नवेला, भेव किसे ना पाया। हरि शब्द सृष्ट सबाई सज्जण सुहेला, हर घट बैठा आसण लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्दी शब्द तराया। हरि शब्द हरि आप तरा, आपणा नाउँ उजारया। इक्क जैकारा आपे ला, लोआं पुरीआं आप सुणा रिहा। वेख वखाए थाउँ थाँ, वेखणहार आप अख्वा रिहा। लोकमाती हरि आप टिका, पुरख बिधाती दया कमा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्दी जोग कमा रिहा। हरि शब्द हरि साचा जोग, एका एक रखाया। हरिजन साचा आत्म भोग, साची सेजा इक्क सुहाया। हरि साजन करना सच संजोग, हरि हरि आप समझाया। हरिजन

देणा दरस अमोघ, हरि हरि रूप वटाया। जन भगतां कट्टणा हउमे रोग, साची सिख्या इक्क रखाया। वेख वखाए तीनो लोक, दो जहानां फेरा पाया। आपणी करे जणाई सच सलोक, जुग जुग आपणा नाम उपाया। लक्ख चुरासी देवे मोख, मुक्त दाता आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोग जुगत इक्क जणाया। हरि शब्द सच सच सुल्ताना, हरि साचे तख्त बिराज्जया। सृष्ट सबाई खेल महाना, खेले खेल राजन राज्जया। लोआं पुरीआं इक्क तराना, एका मारे आवाज़या। गुर पीर साध सन्त मंगण दर दरबाना, देवणहार हरि भगवानया। आप सुणाए आपणा गाना, एका नादी धुन उपजानया। पारब्रह्म प्रभ भेव खुल्ल्हाना, हरिजन साचे वेख वखानया। अन्दर मन्दिर मेल मिलाना, आप आपणा रंग चढ़ानया। जोती नूर हरि महाना, कोटन भाना करे रुशनानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्दी खेल खिलानया। शब्द खिलाड़ी हरि आप प्रभ, जुग जुग खेल खिलाया। सन्त सुहेले साचे मीत आपे लभ्भ, आप आपणा मेल मिलाया। अमृत आत्म मुख चवाए कँवल नभ, एका झिरना निझर झिराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि शब्दी जोड़ जुड़ाया। हरि शब्द हरि नाता जोड़, आपणे अंग लगांयदा। इक्क चढ़ाए साचे घोड़, दिस किसे ना आंयदा। दो जहानी रिहा दौड़, जुग जग वेस वटांयदा। लक्ख चुरासी वेखे परखे मिट्ठा कौड़, हर घट बैठा

११०७ वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम लाया आपणा पौड़, आप आपणा नाउँ उपांयदा। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़, एका धाम सुहांयदा। ११०७

०६ ०६

धुरदरगाही आया दौड़, भेव कोई ना पांयदा। हरिजन साचे जाए बौहड़, आप आपणा मेल मिलांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्दी शब्द अल्ल्हांयदा। हरि शब्द हरि आप अल्ल्हा, एका नाद वजाया। सच तख्त सुल्तान बैठ बेपरवाह, आदि जुगादी खेल खिलाया। साधां सन्तां जुग जुग पकड़े बांह, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। गुरसिख बाल अञ्जाणे फड़ फड़ हँस बणाए काँ, एका साची चोग चुगाया। आप जपाए आपणा नाँ, एका अक्खर आप पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्दी हरि शब्द गुर साचा वेस वटाया। शब्द गुर गुर साचा वेसा, आपणा आप करांयदा। आपे दाता नर नरेशा, नर नरायण आप अख्वांयदा। वेख वखाणे ब्रह्मा विष्न शिव महेष गनेशा, दर दरवेशा फेरी पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्द शब्द नाउँ, लोकमाती आप धरांयदा। लोकमात शब्द बलकारी, एका गुर अख्वाया। आवे जावे वारो वारी, दिस किसे ना आया। सतिजुग त्रेता द्वापर बन्न्हे धारी, कलिजुग वेला अन्तिम आया। पुरख अबिनाशी करे कराए आपणी कारी, जुग जुग करदा आया। लक्ख चुरासी तेरी पावे सारी, ना कोई सके भेव छुपाया। काया मन्दिर अन्दर बैठा सच महल्ल अटारी, उच्चे टिल्ले डेरा लाया। आपे वेखे काया गढ़ हँकारी,

चार दिवारी वेख वखाया। निर्मल जोती नूरो नूर कर उज्यारी, दस्म द्वारी धाम सुहाया। अनहद ताल वजाए वारो वारी, पंचम सेवा रिहा कमाया। अगम्म अगम्मड़ा आपणी सेजा बैठा नर निरँकारी, शब्द सिँघासण इक्क वछाया। गुरमुखां वेखे मार ध्यान दो जहानां वारो वारी, निज घर आत्म मेल मिलाया। पारब्रह्म ब्रह्म देवे सिक्दारी, आप आपणे विच समाया। एका शब्द इक्क जैकारी, एका नाअरा देवे लाया। इक्क इकल्ला एकँकारी, ओंकार रूप समाया। अलख निरँजण आदि पुरख जोद्धा सूर वड बलकारी, दाता दानी आप अख्वाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, सतिजुग देवे सच निशानी, सोहँ साचा जाप जपाया। जन भगतां देवे पद निरबानी, आवण जावण चुक्के कानी, लक्ख चुरासी फंद कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्दी खेल खिलाया। शब्दी खेल जुगो जुग मेला, आदि पुरख अवतारा। आपे वसे रंग नवेला, हर घट करया आप पसारा। आपे गुर गुरू गुर चेला, आपे दोए जोड़ करे निमस्कारा। आपे साजण सज्जण सुहेला, आपे ढहि पए दुआरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्दी शब्द भरे भण्डारा। शब्द भण्डारा हरि भरपूरा, आपणा आप कराया। आप उपजाए दया कमाए अनहद साची तूरा, एका राग अलाया। हरिजन साचे आप उठाए नाता तोड़े कूड़ो कूड़ा, दर दुआरा इक्क सुहाया। मूर्ख मुग्ध अञ्जाण काया चोली रंग चढ़ाए गूढ़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्द बणाए साचा सूरा। हरि शब्द वड बलवान, लोकमात वड्डी वड्याईआ। जुग जुग उठे नौजवान, जगत करे लड़ाईआ। भगतां करे दर परवान, मनमुखां करे जुदाईआ। मारे तीर इक्क निशान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। लोआं पुरीआं सर्ब कुरलान, चौदां लोक पए दुहाईआ। धरत धवल होए हैरान, आकाश आकाशा वेख वखाईआ। लक्ख चुरासी पुण छान, इक्क बिबाण लगाईआ। जिस जन बख्शे चरन ध्यान, चरन प्रीती इक्क सिखाईआ। दो जहानां देवे माण, दरगाह साची लए सुहाईआ। अमृत आत्म पीण खाण, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। दर घर साचा एका पाण, विछड़ कदे ना जाईआ। हरिजन मेला हरि हरि मेहरवान, मेहरवाना दया कमाईआ। धर्म वखाए इक्क निशान, साचे मन्दिर आप झुलाईआ। नौ खण्ड पृथ्वी जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूंघी कन्दर वसे बीआबान, सति वस्त ना कोई दिसाईआ। कलिजुग वेखे उठे मार ध्यान, चारों कुन्ट पए दुहाईआ। जीव जन्त सर्ब कुरलान, साधां सन्तां पति गंवाईआ। पुरख अबिनाशी हरि भगवान, इक्क इकल्ला लै अंगड़ाईआ। शब्द गुर वड बलवान, विच मैदान आप लिआईआ। रसना चिल्ले चाढ़े तीर कमान, सोहँ मुखी उप्पर लाईआ। लोआं पुरीआं तोड़े माण अभिमान, वरभण्डी मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्द हरि हरि नाउँ उपाईआ। नाम शब्द सच जग पूजा, हरि एका एक जणाईआ। भउ चुकाए

११०८
०६

एका दूजा, एका घर सुहाईआ। नेत्र खोले नैण तीजा, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। चौथे घर इक्क वखाए सच दहिलीज़ा, मिले मेल हरि रघुराईआ। पंचम करे आपे रीझा, दर घर साचा बंक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्दे शब्द चलाईआ। शब्द चलाए शब्द गुणवन्ता, शब्दे शब्द समाईआ। शब्दी शब्द शब्द होए सन्ता, हरि सन्ता शब्द अख्वाईआ। शब्दी शब्द हरि सच्चा कन्ता, हरि शब्दी नार प्रनाईआ। शब्दी शब्द हरि जीआं जन्तां, जीआं जन्तां शब्द टिकाईआ। शब्दी शब्द हरि बेअन्त बेअन्ता, बेअन्त शब्द वड्याईआ। शब्द शब्द हरि दाता गुणी गुणवन्ता, गुणवन्त शब्द अख्वाईआ। शब्दी शब्द हरि साचा धाम सुहंता, हरि शब्दी शब्द मृदंग वजाईआ। शब्दी शब्द महिंमा गणत अगणता, लेखा कोई ना किसे वखाईआ। शब्दी शब्द गुर आदिन अन्ता, जुग जुग लोकमात करे रुशनाईआ। कलिजुग अन्तिम खेल खिलंता, हरि शब्दी शब्द उपाईआ। निहकलंका नाउँ रखंता, दिस किसे ना आईआ। पूरन जोत हरि भगवन्ता, निरगुण रूप समाईआ। गुरमुख काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता, उतर कदे ना जाईआ। मनमुख जीआं तोड़े हउमे हँगता, गढ़ हँकार रहिण ना पाईआ। हरिजन द्वारे होए मंगता, बल बावन भेख वटाईआ। आपे होए नानक अंगदा, आपे राम रामा रावण गढ़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे पौड़े चढ़, दो जहानी वेखे घर, महल्ल अटला एका धाम सुहाईआ। शब्द गुर सच पौड़े चढ़या, उच्च महल्ल मुनारा। लोकमात ना मरया ना कदे सड़या, आवण जावण खेल न्यारा। ना कोई सीस ना कोई धड़या, पंज तत्त ना कोई आकारा। ना कोई दूजा अक्खर पढ़या, आपणा आप करे जैकारा। ना भन्ने ना कोई घड़या, ना कोई पंच घुमारा। ना कोई चोटी ना कोई जड़िआ, दिस ना आए अधविचकारा। ना कोई खण्डा तेज़ कटार शस्त्र हथ्थीं फड़या, ना कोई रसना तीर अपारा। सागर नीर धार कदे ना हढ़िआ, ना कोई सुटाए डूँघी गारा। आपणे मन्दिर साचे अन्दर आपे वड़िआ, ना कोई दीसे चार दिवारा। जुग जुग लक्ख चुरासी नाल आपे लड़या, आपे करे प्यारा। कलिजुग आपणा घाड़न हरि हरि आपे घड़या, सो पुरख निरँजण अपर अपारा। आपणा राग आपणा वेद आपे पढ़या, सोहँ शब्द जै जैकारा। जन भगतां द्वारे अग्गे खड़या, मेट मिटाए धुँदूकारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्द लोकमात लए अवतारा। हरि शब्द सच जैकारा, हरि हरि आप लगाया। निरगुण रूप लए अवतारा, सरगुण मेल मिलाया। साजण मीत इक्क निरँकारा, सखा सुहेल अख्वाया। कलिजुग तेरा कर्म विचारा, कर्मी कर्म वेख वखाया। धरत मात दी सुण पुकारा, धीरज धीर आप धराया। लहिणा देणा मुकाए संग मुहम्मद चार यारा, अल्ला राणी नीर वहाया। वेद व्यासा लेख अपारा, पूत सपूता आप कराया। सम्बल नगरी धाम न्यारा, हरि साची जोत जगाया। गुर गोबिन्द खेल

१११० ०६

अपारा, लोकमाती आप कराया। गुणी गहिंदा हरि निरँकारा, हरिजन साचे वेख वखाया। नाम वस्त हरि साची एका दिन्दा, देवणहार सृष्ट सबाया। इक्क जैकार सोहँ रसना कहिंदा, लोआं पुरीआं आप सुणाया। थिर घर वासी थिर घर आपे बहिंदा, सच सिँघासण आसण लाया। आपणा भाणा जुग जुग आपे सहिन्दा, आपणे भाणे आप समाया। इक्क इकल्ला आपे रहिंदा, अकल कल वरताया। लक्ख चुरासी रसना कहिंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि साजन लए तराया। हरि साजन हरि मेल मिलावा, आदि अन्त कराया। देवे माण निमाणयां थावां, ग़रीब निमाणे गले लगाया। हरिजन उठाए पकड़ उठावे बाहवां, आप आपणी दया कमाया। आपे देवणहारा ठंडीआं छावां, जुग जुग सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन जूनी रहित अख्वाया। हरिजन साजन सज्जण सुहेला, सति सतिवाद अख्वाया। पारब्रह्म प्रभ रंग नवेला, एका एक हो जाया। साचे शब्द हरि आप बणाए आपणा चेला, चेला गुर आप अख्वाया। जोत निरगुण चाढ़े तेला, घर साचे सगन मनाया। पंचम सखीआं मिल मिल पायण वेला, कन्त सुहागी एका राग अलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाउँ धराया। कलिजुग अन्तिम आपणा नाउँ धरा, निहकलंका डंक वजाईआ। राउ रंकां रिहा जगा, शाह सुल्तान रिहा उठाईआ। साधां सन्तां रिहा हिला, एका नाम हलूणा लाईआ। जूठ झूठ हरि आप मिटा, भेख पखण्ड मेट मिटाईआ। खेवट खेटा बण मलाह, हरिजन साचे रिहा तराईआ। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, नैनण नैणा दरस वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे नाम दए वड्याईआ। नाम शब्द सच जैकारा, सोहँ सो लगाया। पारब्रह्म प्रभ लए अवतारा, जोती जामा भेख वटाया। शब्द डंक अपर अपारा, चारों कुन्ट रिहा वजाया। कलिजुग काल फड़ नगारा, आपणा डौरू रिहा वाहया। धरत मात रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैण नीर वहाया। धर्म राए मंग मंगे दुआरा, दोए बैठा सीस झुकाया। लाड़ी मौत करे शृंगारा, नेत्र कज्जल एका पाया। लक्ख चुरासी मंगे वर एका कन्त भतारा, जूठ झूठ लए प्रनाया। पुरख अबिनाशी आदि निरँजण जुग जुग खेल खेलणहारा, दे मति रिहा समझाया। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपे जाणे आपणी धारा, धार आपणी आप चलाया। ब्रह्मा नेत्र रिहा उग्घाड़ा, अट्ठे नैण वेख वखाया। शिव शंकर रोवे ज़ारो ज़ारा, बासक तशका गल लटकाया। इन्द इन्द्रासन पार किनारा, करोड़ तेतीसा दए दुहाया। शिव शंकर वेखे कर आकारा, विष्नूं वंसी रूप समाया। कलिजुग तेरी अन्तिम वारा, हरि जोती जामा पाया। निहकलंक नरायण नर इक्क इकल्ला एकँकारा, लेखा लेख ना कोई लिखाया। शब्द महल्ला सच उसारा, आप आपणा आसण लाया। किसे हथ्थ ना आए जल थला डूँघी गारा, गुरमुख हिरदे विच वसाया। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, सति पुरख निरँजण एका नाअरा लाया। एका नाअरा हरि जै देवा, हरि जू आप लगाया। लक्ख चुरासी अमृत आत्म देवे एका मेवा, सति सतिवादी फल खवाया। सेव लगाए देवी देवा, अलख अभेव दया कमाया। चार वरन नौ खण्ड सत्त दीप लक्ख चुरासी रसना गाए जेहवा, जेहवा गुण हरि जणाया। कौस्तक मणीआ मस्तक लाए थेवा, लाट लिलाटी वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मन्त्र सच नाम दृढ़ाया। साचा मन्त्र नाम निधाना, निरगुण आप उपाया। सतिजुग देवे धुर फ़रमाणा, धुर दरगाही लै के आया। चार वरनां इक्क ज्ञाना, एका मार्ग लाया। एका शब्द इक्क बिबाना, एका रिहा उडाया। एका राग इक्क तराना, एका ताल वजाया। एका मन्दिर एका गाणा, एका रिहा सुणाया। एका दर एका घर एका हरि, एका नर नरायण अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा शब्द लए वर, सोहँ सो नाम दृढ़ाया। सोहँ नाम शब्द सहँसा, सतिजुग झोली पांयदा। चार वरन बणाए एका बंसा, एका रंग रंगांयदा। पंज दुष्ट सँघारे जिउँ काहना कंसा, दूई दुष्ट रहिण ना पांयदा। हरिजन साचे आप मिटाए आत्म सहिंसा, सहिंसा रोग ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाउँ जपांयदा। नाम जपाए आपणा आप, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। मेट मिटाए तीनो ताप, त्रैगुण माया मुख शरमाईआ। मेल मिलावा सन्त साध, साजन मीत आप अख्वाईआ। दिवस रैण जन रहे अराध, घर साचे वेख वखाईआ। मेल मिलाए मोहण माधव माध, मन मनसा पूर कराईआ। धुर दरबारी देवे साची दाद, नाम ख़ज़ाना झोली पाईआ। मेल मिलावा आदि जुगादि, हरि दाता बेपरवाहीआ। शब्द जणाई बोध अगाध, लेखा लेख ना जाणे कोई राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जोती नूर करे रुशनाईआ। नूर उजाला गुर गोपाला, आपणा आप करांयदा। दीनां बंधप दीन दयाला, दया निध अख्वांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी इक्क वखाए सच सच्ची धर्मसाला, सतिगुर पूरा आप बणांयदा। नेड़ ना आए काल महांकाला, राए धर्म ना फेरा पांयदा। जन भगतां जुग जुग तोड़े जगत ज़ंजाला, आप आपणा बिरध रखांयदा। देवे नाम सच्चा धन्न माला, ठग्ग चोर यार लुट्ट ना कोई लिजांयदा। तन पहनाए सोहँ शब्द साची माला, सो मणीआ मणत आप करांयदा। भगत वछल आप कृपाला, अछल अछल्ल करांयदा। हरिजन उठाए अञ्जाणे अनमुल्लड़े लाला, जगत हट्ट ना कोई विकांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत जोग जुगत जग मेल आप मिलांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धर्म निशान दो जहान इक्क झुलांयदा।

✻ २८ मग्घर २०१४ बिक्रमी निरँजण सिँघ दे गृह पिण्ड चम्बल ज़िला अमृतसर ✻

हरि हरि शब्द निधान, हरि हरि आप उपाया। हरि हरि कर परवान, हरि हरि आप चलाया। हरि हरि देवे दान, हरि हरि झोली पाया। हरि हरि देवे सच निशान, हरि हरि आपणा आप सलाहया। हरि हरि वेखे दो जहान, हरि हरि वेखणहार आप अख्वाया। हरि हरि आप उडाए आपणा बिबाण, हरि हरि रथ रथवाही आप अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्दी बणत बणाया। हरि हरि शब्दी शब्द बणा, आपणा अंग कटाया। आप आपणा संग रखा, सगला संग निभाया। महिंमा अगणत ना सके कोई गिणा, वेद पुराणा भेव ना आया। खाणी बाणी पाए राह, हरि साचा शब्द अलाया। शब्द सरूपी बण मलाह, जुग जुग फेरा पाया। आप आपणा रिहा छुपा, हर घट बैठा आसण लाया। सन्त सुहेले लए जगा, आप आपणी दया कमाया। आत्म अन्तर पड़दा लाह, एका दर खुलाया। निर्मल दीपक जोत जगा, अन्ध अन्धेर मिटाया। अनहद साचा राग सुणा, आपणा भेव खुलाया। दस्म द्वारी कुण्डा लाह, सच सिँघासण इक्क सुहाया। आत्म सेजा रिहा विछा, आप आपणी दया कमाया। जोती नूर कर रुशना, हरिजन वेखे वेख वखाया। सन्त सुहेले लए उपा, आप आपणा रंग चढ़ाया। सच महल्ला दए वखा, छप्पर छन्न ना कोई ढाया। इक्क इकल्ला बैठा बेपरवाह, रूप रंग ना कोई जणाया। दो जहानी पकड़े बांह, जिस जन आपणा हथ्थ टिकाया। दर घर साचे देवे थाँ, चरन धूढ़ी मस्तक टिक्का लाया। फड़ फड़ हँस बणाए काँ, कागों हँस बणाया। गुरमुख साचे बाल अञ्जाणे आपणी गोदी लए उठा, अन्दर मन्दिर खोज खुजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्दी रंग चढ़ाया। शब्द रंग हरि करतारा, एका रंग रंगांयदा। जुग जुग बणे आप वरतारा, जन भगतां आप वरतांयदा। सच समग्री खोलू दुआरा, सच वस्तू इक्क टिकांयदा। जुगा जुगन्तर पावे सारा, आदिन अन्ता इक्क अख्वांयदा। इक्क इकल्ला एकँकारा, अकल कला समांयदा। आपे जाणे आपणी धारा, हरि आपणी आप बंधांयदा। लोकमात हरि लै अवतारा, पंचम तत्त समांयदा। भेव ना पायण जीव गंवारा, मूर्ख धन्दे लांयदा। इक्क वखाए गढ़ हँकारा, हउमे हँगता रोग लगांयदा। जूठा झूठा कर प्यारा, माया मोह वधांयदा। गुरमुखां बख्शे चरन प्यारा, आप आपणी बूझ बुझांयदा। आपे खोले बन्द किवाड़ा, आपे मुख भवांयदा। मनमुखां मगर लगाए पंचम धाड़ा, सार कोई ना पांयदा। गुरसिख वखाए सच अखाड़ा, हरि साची रास पवांयदा। मण्डल मण्डप वेखे कूड़ पसारा, कूड़ो कूड़ सदा जणांयदा। सतिजुग त्रेता द्वापर वेखे वारो वारा, कलिजुग अन्तिम आंयदा। चारों कुन्ट हाहाकारा, जीव जन्त सर्ब कुरलांयदा। साध सन्त ना कोई पावे सारा, थिर घर ना कोई वखांयदा। धरत मात दर

करे पुकारा, कलिजुग वेला अन्तिम आंयदा। कलिजुग रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नीर वहांयदा। संग मुहम्मद चार यारा, अल्ला राणी मुख शरमांयदा। ईसा मूसा लाए नाअरा, खुदी खुदाई इक्क वखांयदा। अहिनल हक्क ना करे कोई प्यारा, हक्क हकीकत ना कोई जणांयदा। प्रगट होए बेऐब परवरदिगारा, आप आपणी जोत जगांयदा। नानक गोबिन्द बण लिखारा, लोकमाती लेख लिखांयदा। गोबिन्द मंगे दर दुआरा, आप आपणी झोली डांयदा। दोए जोड़ करे निमस्कारा, गल पल्ला एका पांयदा। पुरख अबिनाशी वेखे विगसे कर विचारा, आप आपणी दया कमांयदा। एका बख्शे चरन अधारा, दे मति आप समझांयदा। करे कराए करनेहारा, जुग जुग आप करांयदा। पूत सपूता सन्त दुलारा, हरि गोबिन्द गोबिन्द विच समांयदा। इक्क लगाए साचा नाअरा, जै जै जैकार इक्क करांयदा। पुरख अगम्म अगम्मड़ा खेले खेल न्यारा, दिस किसे ना आंयदा। हड्ड मास नाड़ी ना दीसे चम्मड़ा, रत्ती रत्त ना कोए उपांयदा। वेद व्यासा करे विचारा, आप आपणा भेव खुल्ांयदा। कलिजुग तेरी बन्ने धारा, लेखा लिख्त ना कोई मिटांयदा। लोआं पुरीआं पावे सारा, हरि आपणी कल वरतांयदा। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर दए हुलारा, इक्क हुलारा आप हुलांयदा। नौ खण्ड पृथ्वी सत्तां दीपां मेट मिटाए अन्ध अन्धयारा, कूड़ पसारा मेट मिटांयदा। सच प्रकाशन पुरख अबिनाशन करे उज्यारा, एका जोत जगांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भज सेत्ज पावे सारा, खाणी बाणी वेख वखांयदा। वेद पुराणा दए अधारा, अञ्जील कुराना पार किनारा, बाणी बोध ज्ञान जणांयदा। चार वरन ना करे मीत मुरारा, ना कोई पढ़े सुणाए ना कोई सुनणेहार अख्वांयदा। अकथा कथनी राग रागनी ना कोई गाए वारा, ताल तलवाड़ा ना कोई वजांयदा। शाहो भूप चारे कूटां प्रगट होए ब्रह्मण गौड़ा, गऊ ग़रीबां गले लगांयदा। दो जहानां हरि शब्द एका लाड़ा, आप आपणी दया कमांयदा। ना कोई जाणे लम्मा चौड़ा, नेत्र लोचन नैण ना कोई वेख वखांयदा। कलिजुग अन्तिम मारे पहला पौड़ा, शब्द घोड़ा इक्क दुड़ांयदा। धुर दरगाही आया दौड़ा, सम्बल नगरी धाम सुहांयदा। शब्द गुर गहर वड सागर, भेव किसे ना पाया। जुग जुग करे कर्म उजागर, जुग जुग मेट मिटाया। जुग जुग बणे बणाए नाम सौदागर, जुग जुग वणज कराया। जुग जुग भाग लगाए जन भगतां काया गागर, अमृत आत्म ताल सुहाया। जुग जुग देवे नाम रत्ती रत्नागर, रत्ती रत्त रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्दी शब्द जणाया। शब्द जणाई हरि गोबिन्द, अकल कला कल धारी। प्रगट होए अन्तिम हिन्द, वड जोद्धा सूरबीर बली बलकारी। शाह सुल्ताना दो जहानां वड मृगिन्द, नाम खण्डा हथ्थ फड़े तेज कटारी। मनमुख जीव लगाए आपणी निन्द, आप वसया सभ तों बाहरी। गुरमुख उपाए साची बिन्द, हरि मेला दरस द्वारी। अमृत आत्म धार वहाए सागर सिन्ध, निझर झिरना

झिरे अपारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्द करे अस्वारी। शब्द घोड़ा हरि सिंघासण, हरि आपणा आप लगाया। प्रगट होए पुरख अबिनाशण, जोती जोड़े मेल मिलाया। शाहो भूप हरि शाहो शाबाशन, साचे तख्त सुहाया। वेख वखाए पृथ्वी आकाशन, गगन पतालां फेरा पाया। भगत जनां दर दासी दासन, दर द्वारे सेवा सच कमाया। लेखे लाए दस दस मासन, लक्ख चुरासी फंद कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर शब्द सच ध्यान, साचा मार्ग लाया। साचा मार्ग आपे ला, आपणी कल वरताईआ। कलिजुग अन्तिम वेख वखा, चारों कुन्ट फेरा पाईआ। सत्तां दीपां लए जगा, लक्खण आप उठाईआ। करोच वेखे आपणा नाँ, पुष्कर दए दुहाईआ। जम्बु दीप प्रभ डेरा ला, निर्मल जोत करे रुशनाईआ। सलमल वेखे आपणा राह, नेत्र नैण उठाईआ। सान रोवे मारे धाह, सम्मत चौदां दए दुहाईआ। कुशा मेला बेपरवाह, हरि साचा होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्द करे वड्याईआ। शब्द शाह हरि सुल्ताना, हरि हरि आप उपाया। थिर घर मेल श्री भगवाना, विछड़ कदे ना जाया। आवण जावण खेल महाना, जुग जुग आप कराया। जुग जुग देवे जग जग दाना, जुग जुग झोली रिहा भराया। कलिजुग अन्तिम वेख निशाना, हरि भेखी भेख उपाया। जूठ झूठ होई प्रधाना, चारों कुन्ट फिरे हलकाया। वरन बरन ना कोई संग निभाना, दे मति ना कोए समझाया। ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान होए बेईमाना, गऊ ग़रीब निमाणे कोई ना गले लगाया। गुरमुख मंगण मंग एका दरस चरन कँवल हरि भगवाना, नेत्र रो रो नीर वहाया। किरपा करे गुण निधाना, आप आपणा वेख वखाया। लोकमात कर परवाना, जोती नूर करे सवाया। सतिजुग साचा आप उठाना, आप आपणी बूझ बुझाया। एका देवे ब्रह्म ज्ञाना, ब्रह्म विद्या आप पढ़ाया। चार वरनां इक्क ध्याना, इक्क द्वार सुहाया। अकाल पुरख अबिनाशी करता आदि निरँजण इक्क अख्वाना, एका गुरू बणाया। दूसर कोई रहिण ना पाणा, ना कोई संग रखाया। कूड़ कूड़ा मिटे निशाना, थिर कोई दिस ना आया। सतिजुग साचा होए प्रधाना, प्रभ साचा लए कराया। सोहँ शब्द देवे धुर फ़रमाणा, आप आपणी झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द शब्दी वेस कर, लोकमात फेरा पाया। शब्द वेस हरि अवल्ला, आपणा आप करांयदा। आप वसाए सच महल्ला, दर घर साचा आप सुहांयदा। आपे वसया जलां थलां, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूँघी कन्दर डेरा लांयदा। आपणी जोती आपे रला, आपणा प्रकाश आप वखांयदा। जन भगतां आत्म दर द्वारे खला, आत्म दरस वखांयदा। इक्क वखाए निहचल धाम अटला, उच्च महल्ल अटल इक्क रखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द दुआरा इक्क हुलारा एका राह वखांयदा। एका

राह सच टिकाणा, लोकमात वज्जी वधाईआ। सतिजुग मिले सच बिबाणा, प्रभ साचा रिहा चढ़ाईआ। एका देवे धुर फ़रमाणा, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। हँ हँगता विच आप समाणा, हँगता रोग गंवाईआ। फड़ फड़ ब्रह्मा वेता आप जगाणा, वेला अन्तिम दए सुहाईआ। गुरमुख साचे देवे माणा, आप आपणी दया कमाईआ। सोहँ शब्द इक्क ज्ञाना, एका करे पढ़ाईआ। बाशक तशका शिव शंकर गलों आपे लौहणा, आप आपणी त्रिसूल लए उठाईआ। इक्क वखाए सच टिकाना, अन्तिम मेला सहिज सुभाईआ। गुरमुख साचे कर परवाना, देवे नाम वड्डी वड्याईआ। इक्क जैकारा सोहँ शब्द लगाना, पुरी शिव खुशी मनाईआ। खेले खेल श्री भगवाना, आदि जुगादी भेव ना राईआ। शब्द गुर होए बलवाना, उठ आवे कर कर धाईआ। करोड़ तेतीसा बाल निधाना, आपे लए जगाईआ। सुरपति देवे इक्क निशाना, इन्द इन्द्रासन दए तजाईआ। गुरमुख साचा चतुर सुजाना, आपणी हथ्थीं टिक्का लाईआ। एका राग एका गाना, एका नाद सुणाईआ। आपे होया जाणी जाणा, जानणहार खेल रचाईआ। लोकमात मार झात इक्क इकांत, हरि खेले खेल बेपरवाहीआ। कलिजुग वेखे अन्धेरी रात, चारों कुन्ट रैण अन्धेरी छाईआ। लक्ख चुरासी भरमे भुल्ली ज़ात पात, ऊँचां नीचां पई लड़ाईआ। मन मति नार दुहागण होए कमज़ात, सतिगुर कन्त ना कोई हंढाईआ। शब्द गुर ना पुच्छे कोई वात, मस्तक टिक्का काली शाहीआ। जीवां जन्तां जूठ झूठ बणी

११२५
०६

बरात, लाड़ी मौत करे कुड़माईआ। नाता तुट्टे भाई भैण साक, सज्जण सैण कोई ना होए सहाईआ। धर्म राए बैठा रिहा झाक, अठाई कुण्डां बूहा लाहीआ। चित्रगुप्त रिहा वेख हिसाब, सम्मत चौदां भेव खुल्हाईआ। सतिजुग मंगे साची दात, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। कलिजुग काले तुट्टा नात, दहि दिशा उठ उठ वेखे कर कर धाहीआ। संग मुहम्मद चार यार ना कोई पुच्छे वात, अल्ला हू कोई ना नाअरा लाईआ। किसे फल ना दिसे डाल्ही पात, फल फुलवाड़ी झूठी वेख वखाईआ। लहिणा देणा पया डूँघे खात, ना कोई बाहर कढाईआ। चौदां लोक मिले ना आबे हयात, चौदां तबक रहे कुरलाईआ। तीन लोक ना पुच्छे कोई वात, त्रैगुण माया रही शरमाईआ। पंज तत्त तेरा कोई ना दिसे धीरज यति, सति सन्तोख ना कोई वखाईआ। गुरमुख विरले मेला हरि कमलापात, हरि साचा आप कराईआ। नाम चढ़ाए साचे राथ, जुग जुग बणे रथवाहीआ। सर्बकला आपे समरथ, समरथ पुरख आप अख्वाईआ। लक्ख चुरासी देवे मथ, एका नाम मधाणा पाईआ। महिमा जगत चलाए अकथना अकथ, रसना जिह्वा कथ ना सके राईआ। अन्तिम लहिणा देणा चुकाए सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, कलिजुग तेरी वंड वंडाईआ। उच्चे मन्दिर जाण ढठ्ठ, थिर कोई रहिण ना पाईआ। ना कोई नुहाए तीर्थ अठ्ठ सठ्ठ, गंगा गोदावरी ना फेरा पाईआ। जगत विकारा बणया मठ्ठ, माया ममता अग्नी लाईआ। आपे साड़े हाडी

तिन्न सौ सट्ठ, नाड़ बहत्तर दिस ना आईआ। गुरमुखां आप कराए सच द्वारे इक्ठ, हरि मन्दिर जोत जगाईआ। आपे गेड़नहारा उलटी लट्ठ, जुग जुग आपणी बणत बणाईआ। कलिजुग तेरा कोई ना रक्खे हठ, संगी साथी जाण तजाईआ। ईसा मूसा जायण नठ्ठ, बीस बीसा दए दुहाईआ। गुर गोबिन्द वाली दो जहाना सागर सिन्धा आपे जाए तुठ्ठ, गुरमुखां लए गल लाईआ। एका इकी एका इक्ठ, साची सिक्खी आप तराईआ। लुकया रहिण ना देवे कोई गुठ्ठ, नौ खण्ड पृथ्वी फेरा पाईआ। जुगां जुगां दे विछड़े जो गए रुठ, कलिजुग अन्तिम मेल मिलाईआ। मनमुख जीव धर्म राए दर टंगे पुठ्ठ, वेले अन्तिम दए सजाईआ। संग ना जाए जूठ झूठ, नाता तोड़ ना कोई निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि शब्द दए वड्याईआ। सतिगुर नाता जोड़, जुग जुग वेख वखाया। आपे अस्व चढ़या घोड़, सोलां कलीआं आसण लाया। पारब्रह्म प्रभ रिहा दौड़, जोती जोत खेल खिलाया। हरिजन आत्म लग्गी औड़, अट्ठे पहर रिहा कुरलाया। सतिगुर साचा जाए बौहड़, तृष्ना भुक्ख दए मिटाया। चरन कँवल इक्क नाता जोड़, पुरख बिधाता वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर देवे वर, निरगुण निरगुण सरगुण सरगुण विच समाया। निरगुण सिफ्त सलाह, सरगुण विच समाईआ। निरगुण बेपरवाह, सरगुण जोत जगाईआ। निरगुण पुरख अथाह, सरगुण शब्द जणाईआ। निरगुण दीसे ना, सरगुण बणत बणाईआ। दोहां मेला एका थाँ, एका एक कराईआ। गुर चेला साचे थाँ बहा, गुर गोबिन्द दए वड्याईआ। आपणा मेला आप करा, हरि आपणी बूझ बुझाईआ। साचा तेला आप चढ़ा, साचा सगन मनाईआ। साचा खेड़ा दए वसा, अनहद अनहद मंगल गाईआ। साचा बेड़ा दए चला, आपे बणया हरि रथवाहीआ। साचा गेड़ा दए दुआ, शब्द सुनेहड़ा साचे माहीआ। सुणे सुणाए आपणी थाँ, माछूवाड़ा वेख वखाईआ। वेले अन्तिम पकड़े बांह, प्रभ जोती जोत जगाईआ। कलिजुग अन्तिम वेखे थाउँ थाँ, गुरमुख गुरसिख जो सरसे रिहा रुढ़ाईआ। निहकलंका जामा पा, तेरे मन्दिर अन्दर डंका रिहा वजाईआ। सम्बल नगरी वेखे साचा थाँ, भेव ना पावे कोई राईआ। चार कुन्ट दहि दिशा उडणे काँ, बीस बीसा लेख लिखाईआ। इक्क इकल्ला अकाल पुरख तेरा साचा ना, लोकमात अन्त रहि जाईआ। कुरान अञ्जील वेद पुराण कोई जाणे ना, मुल्ला मुसायक शेख़ पीर दस्तगीर शाह हकीर कोई अख्वाए ना, मस्तक तिलक ना कोई सके लगा, नेती धोती ना रिहा पुआ, ना कोई दूसर रचन रचाईआ। ग्रन्थ पन्थ ना सके कोई पढ़ा, गुर गोबिन्द एका आपणा लड़ दए फड़ा, साचे पौड़े गुरमुख लए चढ़ा, एका दूजा भउ चुकाईआ। तीजा नेत्र दए खुल्ला, चौथे घर रिहा समा, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। पंचम मेला बेपरवाह, आप आपणा दए जणा, जोत लिलाटी इक्क वखा, औखी घाटी पार करा,

बजर कपाटी किला तुड़ा, दस्म द्वारी कुण्डा लाह, आत्म सेजा इक्क विछाईआ। अनहद राग इक्क अला, इक्क तलवाड़ा आप वजा, धर्म अखाड़ा इक्क वखा, गुरमुख साजन मेल मिलाईआ। जोती जोत लए समा, आप आपणी करे रुशनाईआ। जोती मेल शब्द गुर पूरे, हरिजन आपणा आप कराया। अट्ठे पहर हाज़र हज़ूरे, दिवस रैण दरस दिखाया। अनहद वजाए साची तूरे, राग रागनी भेव ना राया। नाता तोड़े कूड़ो कूड़े, पंचम मोह चुकाया। जन भगतां बख्शे चरन धूढ़े, मस्तक टिक्का एका लाया। काया चोली रंग चाढ़े गूढ़े, उतर कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि गोबिन्द रूप समाया। गोबिन्द रूप हरि करतारा, एका एक अख्वांयदा। आपे शब्द आपे धुन्कारा, आपे ताल वजांयदा। आपे जोती नूर करे चमत्कारा, नूरो नूर समांयदा। आपे खण्डा तेज कटारा, आप आपणे गल लटकांयदा। आपे करे पंचां आप प्यारा, पंचां विच आप समांयदा। आपे बन्ने आपणी धारा, अमृत आत्म आप प्यांअदा। आपे जोद्धा सूरबीर बली बलकारा, शाह अस्वार आप अख्वांयदा। आपे वेखे नौ खण्ड पृथ्वी तेरा इक्क अखाड़ा, गुर गोबिन्दा फेरी पांयदा। आप उठाए अगम्मी धाड़ा, दिस किसे ना आंयदा। कलिजुग तेरा अन्तिम काम क्रोध लोभ मोह हँकार माया ममता रिहा साड़ा, कूड़ क्रिया मेट मिटांयदा। साध सन्त जीव जन्त मगर लग्गी अगम्मी धाड़ा, धीरज धीर ना कोई धरांयदा। लग्गी अग्ग बहत्तर नाड़ा, लोकमात ना कोई बुझांयदा। हरि गोबिन्द मेला विच संसारा, गोबिन्द रूप समांयदा। आदि अन्त इक्क अवतारा, एका गुर अख्वांयदा। प्रगट होए विच संसारा, निहकलंका नाउँ रखांयदा। शब्द शब्दी डंक अपारा, आपणा आप वजांयदा। ना कोई मंगे होर सहारा, ना कोई संग रखांयदा। लशकर शाही फौज ना दिसे कोई अस्वारा, ना कोई मृदंग वजांयदा। इक्क इकल्ला एकँकारा, कलिजुग अन्तिम खेल खिलांयदा। ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड लोआं पुरीआं दए हुलारा, शब्द हलूणा एका लांयदा। आपे जाणे पार किनारा, अद्ध विचकारे आप डुबांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, हरि शब्द हरि रूप आप समांयदा। निरगुण रूप अपार, आप उपाया। आपे जाणे आपणी सार, आप आपणे विच समाया। आप आपणी इच्छया धार, आप आपणी रचन रचाया। आप आपणा लए उचार, आप आपणे गले लगाया। आप आपणा कर आकार, आप आपणा वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप नुहाए आप आपणा रूप वखाया। आप आपणी इच्छया धार, आपे बणत बणाईआ। आप आपणा लए उभार, जोती सेज हंढाईआ। जोती सेजा अपर अपार, नूरो नूर सवाईआ। नूरी नूर हरि करतार, आपणा वेख वखाईआ। आपणा आप आपे करे अंगीकार, आप आपणे गले लगाईआ। आप आपणा लए उभार, आप आपणा अंग कटाईआ। साचा शब्द कर त्यार, हरि आपणा वेख

वखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड लए उसार, लोआं पुरीआं गगन पातालां रचन रचाईआ। जोत सरूपी जोती नूर कर आकार, शब्दी संग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसया घर, आप आपणा ल्या वर, आपणी सेजा आप हंढाईआ। आपणी सेजा आप हंढा, आपणा रंग चढ़ाया। आप आपणा विच टिका, आपे दए उपाया। आप आपणा नाउँ उपा, आप आपणा नाउँ धराया। शब्दी शब्द हरि सुत जणा, आप आपणा वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वस्त दस्त आपणे हथ्थ रखाया। आप आपणी रचन रचा, आपणी कल वरताईआ। आप आपणा आसण ला, आपणा जोग कमाईआ। पुरख अबिनाशी आप अख्वा, अकल कला वरताईआ। मदि कैटम्ब दैंत अख्वा, आपणा रूप वटाईआ। विष्नूं वंसी आप अख्वा, ब्रह्मा सेवक सेवा रिहा कमाईआ। अलख अभेवा आप अख्वा, एका एक हरि रघुराईआ। रसना जिह्वा कोई ना सके गा, बेअन्त बेअन्त बेअन्त हरि वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेख वटाईआ। मदि कैटम्ब दैंत सँघारा, आपणी कल वरताईआ। आपणा खण्डा आप उभारा, आपणे हथ्थ रखाईआ। ना कोई लेख लिख सके विच संसारा, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। गुर गोबिन्दा वेख इक्क दुआरा, प्रभ चरन सच्ची सरनाईआ। प्रभ अबिनाशी किरपा धारा, आप आपणी बूझ बुझाईआ। करे कराए करनहारा, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। आपे होए जल बिम्ब धारा, जल बिम्ब आप सुहाईआ। आपे धरनी धरत कर आकारा, धरत धवल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक गोबिन्द नूर हरि, नूरो नूर उपाईआ। कटया सीस हरि जगदीस, आपणी कल वरताईआ। भेव ना पायण राग छतीस, पारब्रह्म वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी बणत बणाईआ। आप आपणी रचन रचा, आपणा रंग रंगाया। नाभी नाभ कँवल उपा, कँवल मुख खिलाया। पंज तत्त ना ल्या जणा, रक्त बूंद ना कोई रखाया। आप आपणा लए उपा, आप आपणे विच्चों बाहर कढाया। पारब्रह्म ब्रह्म रिहा उपा, ब्रह्म ब्रह्म अख्वाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा तत्त उपाया। पुरी अनन्द गोबिन्द तज, आपणी करी चढ़ाईआ। गुरमुख साजण नाल रहे सज, बस्त्र शस्त्र तन सजाईआ। रणजीत नगारा रिहा वज्ज, आपणी धुन सुणाईआ। पंचम रखाया इक्क जहाज़, गोबिन्द रिहा चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द दए वड्याईआ। गुर गोबिन्दा छड्ड मकाना, होया शाह अस्वारी। गुरमुख साजण नौजवाना, संग रखाए जोद्धा बलकारी। खण्डा शस्त्र तीर वेखे चिल्ला कमाना, तोड़े गढ़ हँकारी। मेट मिटाए मुगल पठाना, चारों कुन्ट हाहाकारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे शब्द सच्ची धुन्कारी। गुर गोबिन्दा कर त्यारा,

११२८
०६

आपणा राह वखाया। सरसा आए जल किनारा, गुरमुखां एह सुणाया। लहिणा देणा मेरा अपर अपारा, विच सरसा रिहा टिकाया। सिँघ सत्त सौ रहिणा पहरेदारा, गुर पूरा सेवा लाया। गुर पूरे दी ना पायण सारा, भेव ना जानण राया। आप कराया आपणा सच विहारा, आप आपणा वेस वटाया। सीस रखाया नाम दस्तारा, कल्गी तोड़ा इक्क टिकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल खिलाया। साचे सिक्खां आप सुणा, आपणी दया कमाईआ। तुहाढ्ढी सेवा रिहा लगा, शब्दी शब्द बणाईआ। शब्द शब्द रक्खणा गोद उठा, आपणी झोली रिहा भराईआ। आप आपणा रंग रंगा, आपे रिहा विच समाईआ। साचा हिस्सा अन्त वंडा, फतहि जैकारा एका लाईआ। आपणा खण्डा हथ्थ उठा, दोए जोड़ करन सरनाईआ। गुरमुख दर करन पुकार, नेत्र नीर वहाया। झल्लया ना जाए तेरा प्यार, जगत विछोड़ा रिहा सताया। खाली दिसे ना तेरा द्वार, जगत जुगत वेख वखाया। अट्ठे पहर रहे तेरे चरन द्वार, नेत्र रो रो नीर वहाया। क्यों सरसे रक्खया अधविचकार, ना साचा संग निभाईआ। गुर गोबिन्दा रिहा पुकार, अन्तिम छड्डणा पैणा संसार, थिर कोई रहिण ना पाया। मिल्या मेला हरि कन्त भतार, दु:ख सुनेहड़ा दिआं सुणाया। संग रलावां साचा यार, आप आपणा दु:ख वंडाया।
१११६ प्रगट होए अन्तिम कलि चवीआं अवतार, निहकलंक जामा पाया। शब्द गुर होए सहार, गुर गोबिन्द नाम रखाया। सम्मत १११६
०६ सोलां पावे सार, सरसा तेरा लहिणा देणा दए चुकाया। आवे जावे ना मरे विच संसार, मढ़ी गोर ना कोई दबाया। गुरमुखां ०६
बख्शे चरन प्यार, शब्द शब्दी विच समाया। शब्दी लेख कराए हरि निरँकार, गुरमुख साचे लए मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एक एक समाया।

❊ पहली पोह २०१४ बिक्रमी हरिभगत द्वार जेठूवाल ❊

गोबिन्द हट्ट अपार, भगत भण्डारया। देवणहार सर्ब संसार, हरि निरंकारया। गुरमुख साजन लए उभार, ढहि पए जो जन द्वारया। भव सागर करे पार, खेवट खेट आप अख्वा रिहा। काया गागर निर्मल जोती इक्क आकार, पूत सपूत आप बणा रिहा। शब्दी शब्द रंग अपार, चेतन्न चीत आप चढ़ा रिहा। बीस सद चौदां बंन्ही धार, गोबिन्द बेड़ा बन्ने ला रिहा। कलिजुग अन्तिम लै अवतार, सन्त सुहेले मेल मिला रिहा। निहकलंकी जामा धार, आदि अन्ती भेव खुल्ल्हा रिहा। नरायण नैण दरस कर कन्त भतार, साची नारी शाहो मिला रिहा। देवे दरस अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़ा धाम सुहा रिहा। दो जहानी कर प्यार, लोकमाती वेख वखा रिहा। शब्द निशानी सति करतार, नानक जिह्वा रसना गा रिहा। अमृत

आत्म ठंडा पाणी गुर गोबिन्दे मंगी मंग प्रभ चरन द्वार, देवणहार श्री भगवान (आप अख्वा रिहा)। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे बाल अञ्जाणे आप आपणी गोद उठा रिहा। उठ बाल बाल नादाना, गुर पूरा आप जगांयदा। प्रगट होया वाली दो जहान, कलिजुग अन्तिम फेरा पांयदा। शब्द ल्याए सच बिबान, गुरमुख साचे आप चढ़ांयदा। लोआं पुरीआं वेखे मार ध्यान, नौ खण्ड पृथ्वी फेरा पांयदा। लक्ख चुरासी पुण छाण, सोया पूत आप जगांयदा। देवे नाम आप निधान, चारे कूटां वेख वखांयदा। शब्द खण्डा तीर कमान, रसना चिल्ला इक्क वखांयदा। तन गात्रा हरि म्यान, गोबिन्द गढ़ सुहांयदा। उप्पर चढ़ श्री भगवान, नेत्र आपणा इक्क उठांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण लए वर, आप आपणे लड़ बंन्हांयदा। एका इकी इक्क मलाह, एका एक द्वारया। एका सिक्खी इक्क सलाह, एका एकँकारया। एका तिक्खी वालों निक्की धार बणा, आप आपणी आप चला रिहा। मुनी रिखी कोई जाणे ना, पंडत पांधे भेव ना पा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरिजन साचे आप उठा रिहा। इक्क गोबिन्द इक्क आकार, एका जोत जगाईआ। इक्क शब्द इक्क धुन्कार, एका ताल वजाईआ। एका खण्डा तेज कटार, एका गात्रे रिहा लटकाईआ। एका अमृत ठंडी ठार, सर सरोवर इक्क भराईआ। एका कन्त सुहागी नार, हरि कन्ता आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे अंग लगाईआ। भव सागर गुरमुख उतरे पार, जो जन रहे सरनाईआ। पारब्रह्म प्रभ आप करतार, करता पुरख रूप वटाईआ। इक्क जैकारा गुरमुख सुणाए आप आपणी किरपा धार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए वर, आपणे हथ्थ रक्खी वड्याईआ। साचा तट्ट सच किनारा, हरि साचा वेख वखांयदा। गुरमुखां मैल दुरमति कट्ट, एका हट्ट बहांयदा। लहिणा देण चुकाए अट्ठ सट्ठ, पूजा पाठ ना कोई करांयदा। आवण जावण चुक्के गुर दर मन्दिर मस्जिद मट्ठ, शिवदवाले ना डेरा लांयदा। दर द्वार इक्क इक्ठ, धुर दरगाही धाम सुहांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, गुर गोबिन्द संग रलांयदा। गुर गोबिन्दा बाल निधाना, हरि साचे आप उठाया। आपे वेखे सम्बल नगर सच टिकाना, जोग जुगीशर भेव ना राया। पंडत पांधे होए हैराना, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा दिस किसे ना आया। पन्थी ग्रन्थी वड विद्वाना, चतुर सुजाना मुख छुपाया। हरि गोबिन्द खेले खेल महाना, किला कोट इक्क बणाया। शब्द खण्डा हरि तीर निशाना, ब्रह्मण्डां मार वखाया। जेरज अंडां उत्भज सेत्ज होए वैराना, थिर कोई रहिण ना पाया। जन भगतां बन्न्हे हथ्थीं गाना, एका तन्दन तन्द बंधाया। सोहँ देवे धुर फ़रमाणा, धुर दरगाही लै के आया। धन्न गुरमुख धन्न गुरसिख

११२० ०६

धन्न साचे सन्त जनां, जगत विछोड़ा फंद कटाया। खेले खेल आदि जुगादि जुगा जुगन्ता, जुग जुग आपणा भेख वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण साचे मीत, आप आपणे गले लए लगाया। गुर गोबिन्दा जगत मलाह, प्रभ दर करे निमस्कारया। पुरख अबिनाशी दए सलाह, आप उठाए करे ख़बरदारया। इक्क निशाना दए वखा, मातलोक ना कोई जणा रिहा। इक्क तराना दए सुणा, सोहँ ढोला आपे गा रिहा। इक्क बिबाणे दए बिठा, दो जहानां फेरी पा रिहा। इक्क मकाना दए वसा, सम्बल नगरी नाम धरा रिहा। वेख वखाणे साचा थाँ, निहकलंका जामा पा ल्या। जोती जोत इक्क जगा, शब्दी डंक वजा रिहा। राउ रंकां रिहा सुणा, साधां सन्तां आप हिला। द्वार बंका इक्क सुहा, गुरमुख साजन आप जगा ल्या। वासी पुरी घनक वड दया कमा, दिस किसे ना आ रिहा। साची सईआं साचा मंगल दए सुणा, एका राग अला रिहा। छत्ती राग बैठण मुख छुपा, सोहँ लेख ना कोई लिखा रिहा। त्रैगुण माया ना वेखे तेरा थाँ, ना कोई आपणा रंग वटा ल्या। पंज तत्त ना पकड़े कोई बांह, साचा संग ना कोई रखा ल्या। गुरमुख वेखे एका थाँ, गुर चरन दुआरा इक्क वखा ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, बाल नादाना गले लगा रिहा। बाल नादाना कर परवाना, हरि साची दया कमाईआ। एका दाना धुर फ़रमाणा, आपणा आप जणाईआ। मेल मिलाए हरि भगवाना, एका देवे नाम निशाना, पूरन बूझ बुझाईआ। इक्क बिबाना खेल महाना, लोआं पुरीआं आप उठाईआ। इक्क तराना हरि सुणाना, सुनणेहार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द संग निभाईआ। बाल जवानी अलूड़ वरेसा, हरि गोबिन्द दया कमाईआ। दर द्वारे मंगण ब्रह्मा विष्न महेष गणेशा, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। ग्रन्थी पन्थी फिरदे धारी केसा, धारी केसा दिस ना आईआ। पंडत पांधे करन वेसा, पूत सपूता ना वेख वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ नर नरेशा, आप आपणी कल रिहा वरताईआ। नाल रखाया दस दस्मेसा, दस मास गर्भ ना आईआ। आपणे नेत्र आपे पेखा, जगत नेत्र दिस ना आईआ। कलिजुग तेरा अन्तिम लेखा, हरि साचा रिहा चुकाईआ। सम्बल नगर जगत भुलेखा, धरत मात हथ्थ ना आईआ। पूजा कर कर थक्के शिव शंकर गणेशा, शंकर बरन ना कोई जणाईआ। रसना गा गा थक्के दस दस्मेसा, दसवें घर ना कोई बहाईआ। कूड़ क्रिया करया वेसा, गुर हट्टो हट्ट विकाईआ। अन्तिम प्रगट हो हरि नर नरेशा, लहिणा देणा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग वखाईआ। गुर गोबिन्द बाली बुध, हरि जोती जोत जगाईआ। आपे कारज करे सुध्ध, वरन गोती ना वेख वखाईआ। पन्थ ख़ालसा ना सक्कया बुज्झ, नेती धोती पई दुहाईआ। पुरख अगम्मड़ा चिट्टे अस्व चढ़या

कुद्द, चारों कुन्ट रिहा दुड़ाईआ। मन मति तेरा एका युद्ध, ना कोई सके मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख वखाणे ख़लक खुदाईआ। ख़लक खुदाई आप वेख, आपणा रंग रंगांयदा। होए जुदाई अन्त औलीए पीर शेख़, मुल्ला मुसायक ना कोई अख्वांयदा। अल्ला राणी रही वेख, पीर दस्तगीर कोई दिस ना आंयदा। अहिमद मुहम्मद लिखे लेख, तीस बतीस रसना गांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, इक्क हदीस जणांयदा। इक्क हदीस ऐहनल हक्क, हकीकत जाणया। मेल मिलावा मुकामे हक्क, खुदी खुदाई रहिण ना पाणया। चार यारी गई थक्क, ना कोई दीसे पार किनारया। इक्क मुहम्मद रिहा तक्क, अधविचकारे डेरा ला ल्या। अल्ला राणी आपणा घुंगट रही चुक्क, नेत्र नैण नीर वहा ल्या। घर बैठे सदा ना सके कोई रक्ख, कलिजुग अन्तिम सगन मना ल्या। अन्तिम मेला विच जंगल जूह उजाड़ ढक्क, खुदा खुदावंद मुख छुपा ल्या। निउँ निउँ लकीरां कढ्ढे नक्क, कन्त सुहाग दिस ना आ रिहा। कलिजुग बाबल मात लोकों कढ्ढे ढक, लज्जया आपणी आपणे हथ्थ रखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेख वटा रिहा। ऐहनल हक्क, अन्ना हू एका नाअरा लाया। बेऐब परवरदिगार लैणा रक्ख, अल्ला हू तूं तूं गाया। सथ्थर तेरा वसेरा कुली कक्ख, मन्दिर महल्ल अटल दए तजाया। अन्तिम अन्त द्वार बंक सभ होए सक्ख, थिर कोई रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा लए उपाया। आप आपणा नूर उपा, हरि जोती जोत जगाईआ। एका नाअरा देवे ला, उम्मत उम्मती लए उठाईआ। सम्मत सोलां पहली चेत्र किले शाही चरन टिका, लाहौर शहर कहर वरताईआ। छब्बी पोह लेखा दए लिखा, शाह पाक लए उठाईआ। अमाम मैहन्दी भेख वटा, मुख नकाब इक्क रखाईआ। काला सूसा तन छुहा, ईसा मूसा वेख वखाईआ। शाह अबनूसा संग रला, आप आपणा पड़दा लाहीआ। इक्क हदीसा दए पढ़ा, लेखा लेख ना कोई लिखाईआ। मुस्लिम सुनी कोई रहिणा ना, मुगल पठान ना कोई अख्वाईआ। इक्क जैकारा हरि निरँकारा सोहँ शब्द दए लगा, नौ खण्ड पृथ्वी इक्क पढ़ाईआ। सत्तां दीपां चरन टिका, चार वरन इक्क सरनाईआ। एका ताज सीस टिका, गुर गोबिन्द दए वड्याईआ। पंचम पंचां मेल मिला, पंचम सीस गुंदाईआ। सत्त रंग निशाना दए चढ़ा, सोहँ साचा लेख लिखाईआ। शब्द सोटी हथ्थ उठा, पुरीआं लोआं आप उडाईआ। ब्रह्मा शिव देवत सुर सुरपति राजा इन्द रोवे मारे धाह, अन्त रहिण ना पाईआ। अल्ला राणी कर नकाह, अन्तिम करे जुदाईआ। पंडत पांधिआं प्रभ रिहा सुणा, लोक विद्या रहे ना जगत पढ़ाईआ। ग्रन्थी पन्थी रिहा उठा, सोया कोई रहिण ना पाईआ। पटना अनन्द पुर लए जगा, आप आपणी करे रुशनाईआ। सर अमृत तख्त अकाल दए

हिला, अकल कला वरताईआ। गुर गोपाला दया कमा, गुर गोबिन्द मेल मिलाईआ। गुर गोबिन्द होए सच सहा, आपणा खण्डा हथ्थ उठाईआ। गुरमुख वेखे थाउँ थाँ, लेखा कोई रहिण ना पाईआ। इक्क जपाए साचा नाँ, नानक रसना गया गाईआ। वरन बरन ऊँच नीच राज राजान शाह सुल्तान कोई रहिणा ना, हरि एका रंग रंगाईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद शिवदवाले अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ किसे बहिणा ना, प्रभ चरन सच्ची सरनाईआ। तन भूशन कंचन दिसे गहणा ना, हरि नामे रंग रंगाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार मन मति जग रहिणा ना, सच सुच्च दए वरताईआ। दोए नेत्र मूंध आत्म अन्दर किसे बहिणा ना, तीजा नैण इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, लक्ख चुरासी रिहा जगाईआ। लक्ख चुरासी आप जगाए, हरि गोबिन्द संग निभाया। नाम खण्डा इक्क रखाए, ब्रह्मण्डां वेख वखाया। भेख पखण्डा मेट मिटाए, चारों कुन्ट फेरा पाया। आत्म रंडा जीव जन्त कोई रहिण ना पाए, राए धर्म दए सज़ाया। कलिजुग अन्तिम वेख वखाए, हरि जोती जोत जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए मिलाया। जोती नूर हरि उपा, हरि जोत करे रुशनाईआ। शब्दी धुन इक्क उपजा, अनादी ताल वजाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां रिहा सुणा, एका ढोल मृदंग वजाईआ। ईसा मूसा दए हिला, एका एक नाअरा लाईआ। मक्का मदीना

चरन छुहा, उन्नी उनीसा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। लेखा लेख हरि भगवान, कलिजुग बणत बणाईआ। गुर गोबिन्दा देवे धुर फ़रमाण, साध सन्त भेव ना राईआ। रसना चिल्ला इक्क कमान, सोहँ मुखी अग्गे लाईआ। सो पुरख निरँजण गुण निधान, हँ हँगता दए मिटाईआ। मिले मेल जोद्धे सूरे बलवान, साची नगरी धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क संदेश नर नरेश चारों कुन्ट रिहा सुणाईआ। पन्थ ख़ालसा उठ जाग, प्रभ साचा आप जगांयदा। माझे देस लग्गा भाग, सम्बल नगर धाम सुहांयदा। दीपक जगे इक्क चिराग, अनहद एका ताल वजांयदा। गुरमुख नारी मेला कन्त सुहाग, पीत पीतम्बर सीस टिकांयदा। फड़ फड़ हँस बणाए काग, जो जन सरनाई आंयदा। जन्म जन्म दा धोवे दाग़, गुर गोबिन्दा दया कमांयदा। आप आपणे हथ्थ रक्खे वाग, दो जहानी आप फिरांयदा। चरन धूढ़ बख्शे साचा मजन माघ, नेत्र नैणा दरस दिखांयदा। त्रैगुण माया बुझे आग, पंज तत्त आप समांयदा। इक्क उपजाए सच वैराग, जूठ झूठ रहिण ना पांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, नर नरायण आप अख्वांयदा। पंडत पांधे रक्खणा याद, हरि साचे जोत जगाईआ। वेले अन्त ना सुणे कोई फ़रयाद, ना कोई संग रखाईआ। वेद पुराण ना देवे कोई दाद, ना कोई पार कराईआ। जोती

११२३ ०६

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका शब्द करे जणाईआ। शब्द जणाई हक्क बहक्क, उम्मत नबी रसूला। चार यारी गई थक्क, शौह दरयाए डुब्बा तुला। अमाम मैहन्दी राह रहे तक्क, गल वेखण माला फूला। अन्तिम फल गया पक्क, कलिजुग सज्जण देवे झूला। पारब्रह्म प्रभ पाए नकेल नक्क, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे नाम अमोला। नाम अनमुल्ला दो जहान, जुग जुग आप रखाया। आपे तोलणहारा साचे तोल, नाम कंडा इक्क रखाया। जुगा जुगन्तर ना जाए डोल, अडुल आप अख्वाया। आपे फुलया आपे गया मौल फुल्ल, आपे पतझड़ वेख वखाया। कलिजुग काया बूटा गया हुल, अन्त रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गोबिन्द मेला साचे घर, साचा धाम इक्क सुहाया। साचा धाम इक्क भगवाना, एका एक सुहांयदा। जोती नूर जगे महाना, आप आपणा वेख वखांयदा। धुन अनादी आत्मक इक्क वजाए सच तराना, ब्रह्मादी आप सुणांयदा। जन भगतां बन्ने जुग जुग गाना, आप आपणा सगन मनांयदा। लोकमात वेखे मार ध्याना, सम्मत वीह सद चौदां बिक्रमी नाल रलांयदा। आपे गोपी आपे काहना, मण्डल रास आप रचांयदा। आपे राम सीता रावण रामा, लंका गढ़ आप तुड़ांयदा। आपे होया अन्तर जामा, हर घट बैठा आसण लांयदा। आप वजाए शब्द दमामा, चोट इक्क नगारे लांयदा। ब्रह्मा वेखे मार ध्याना, अट्ठे नेत्र नैण उठांयदा। विष्नूं वंसी होए हैराना, हरि जोती नूर उपांयदा। शिव शंकर बाशक तशका गल सुहाना, हथ्थ त्रिसूल उठांयदा। सुरपति राजा इन्द बाल नादाना, नेत्र रो रो नीर वहांयदा। करोड़ तेतीसा मंगे दाना, आपणी झोली अग्गे डांयदा। पुरख अबिनाशी देवे धुर फ़रमाणा, लोआं पुरीआं आप सुणांयदा। सो पुरख निरँजण हरि भगवाना, सांतक सति वरतांयदा। खेले खेल हरि महाना, खेल खिलारी आप अख्वांयदा। आप आपणा भेख वटाना, भेखाधारी वेस करांयदा। लोकमात हरि जोत जगाना, निहकलंका नाउँ रखांयदा। गुर गोबिन्दा नौजवाना, सोया पूत आप उठांयदा। सम्बल नगरी मेल मिलाना, साढे तिन्न हथ्थ वंड वंडांयदा। साचा खण्डा इक्क चमकाना, हरि शब्दी दिस ना आंयदा। ब्रह्मण्डां वेखे मार ध्याना, आप आपणा मुख छुपांयदा। किसे हथ्थ ना आए जगत विद्वाना, ज्ञानी ध्यानी ना दर्शन पांयदा। पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराणा, अञ्जील कुराना करता कादर दिस ना आंयदा। जिस जन बख्शे चरन ध्याना, अमृत आत्म जाम प्यांअदा। देवे दरस हरि भगवाना, ब्रह्म पारब्रह्म मिलांयदा। आत्म सेजा कर परवाना, नारी कन्ता रूप समांयदा। आप आपणे गले लगाना, एका सेज हंढांयदा। सुरती शब्द इक्क बबाणा, एका मार्ग लांयदा। एका दूजा भउ चुकाना, दूसर दर ना कोई वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, हरि गोबिन्द संग वखांयदा। सगला संग हरि रघुनाथ, अंगीकार

११२४ ०६

अख्वाया। प्रगट हो त्रैलोकी नाथ, मंगी मंग पूर कराया। एका देवे साची वत्थ, धुर दरगाही लै के आया। सोहँ शब्द साचा रथ, चार वरना लए चढ़ाया। कलिजुग बुरज जाणा ढठ्ठ, अन्त रहिण ना पाया। त्रैगुण माया तेरा मट्ठ, प्रभ साचे आप तपाया। सतिजुग तेरी साची चट्ठ, बीस बीसा दए कराया। हरिजन मेला मेल मिलाए नट्ठ नट्ठ, वीह सौ चौदां बिक्रमी रुत्त सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, काया मन्दिर वेख वखाया। काया मन्दिर सच दुआरा, नानक वज्जी वधाईआ। रसना गाए नर निरँकारा, अजपा जाप कराईआ। ओअँ सोहँ इक्क प्यारा, एका दूजा भउ चुकाईआ। मिले हरि कन्त प्यारा, नार सुहागण इक्क अख्वाईआ। आपणी गोदी दए हुलारा, आप आपणे गले लगाईआ। आपे बख्शे चरन प्यारा, चरन चरनोदक मुख चुआईआ। अमृत आत्म ठंडी ठारा, गुर गोबिन्द झोली पाईआ। आपे बणया जग वरतारा, आपे मुख चुआईआ। आपे खोल्हणहार भण्डारा, आपे बन्द कराईआ। जुग जुग खेले खेल विच संसारा, खेलणहार आप अख्वाईआ। आदि पुरख निरँजण अगम्म अपारा, अलक्ख अगोचर अलक्ख ना अलक्ख्या जाईआ। अगाध बोध शब्द जैकारा, हरि साचा आपणा लाईआ। वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी ना पावे सारा, हरि वड्डा वड वड्याईआ। आवे जावे विच संसारा, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर हरि खेल न्यारा, कलिजुग बैठा मुख छुपाईआ। गुर गोबिन्दा बण लिखारा, हरि लेखा गया लिखाईआ। निहकलंक लए अवतारा, जोती शब्द कुड़माईआ। खोजे शब्द सो सिख हमारा, गुरू ग्रन्थ देह बुझाईआ। मिले मेल नर निरँकारा, विछड़ कदे ना जाईआ। हरि का भेव खेल न्यारा, कोई भेव ना जाणे राईआ। अन्दर मन्दिर किसे ना पाया गुर शब्द दुआरा, गुरुद्वारे बैठे सीस झुकाईआ। नानक मिल्या ना मीत मुरारा, नानक नानक नानक रहे गाईआ। गोबिन्द ना तोड़े गढ़ हँकारा, गात्रे किरपान रहे लटकाईआ। चढ़या कोई ना महल्ल मुनारा, बाबे टल्ल पौड़ीआं लाईआ। साचा घाट जीव जन्त तेरा नौ दुआरा, कोई ना पार कराईआ। किसे कम्म ना आउणा पूजा पाठ, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रसना होई हलकाईआ। जूठ झूठ मारे ठाठ, माया ममता लहर चढ़ाईआ। फिर फिर थक्के अट्ठ साठ, गंगा गोदावरी फेरा पाईआ। लेखा चुक्के ना आन बाट, मात गर्भ ना कोई छुडाईआ। बिन गुर पूरे दीपक जोती ना जगे चिराग, जोत निरँजण ना राह वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वारी, हरिजन साचे रिहा मिलाईआ। साचा मेला हरि भगवन्ता, जन भगतां आप करांयदा। देवे नाम फूलन माला सच सुगंधा, दिवस रैण सुंघांयदा। धन्न वड्याई साचे सन्ता, सन्त सतिगुर विच समांयदा। सतिगुर महिंमा बेअन्त बेअन्त बेअन्ता, नानक सतिगुर आपणा इक्क ध्यांअदा। दिवस रैण उडीके करे प्यार साचे कन्ता, नारी रूप (आप) अख्वांयदा।

सोलां कर श्रृंगार काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता, सतिनाम कज्जल धार नैणा पांयदा। सोहँ शब्द सुहागी छंत इक्क गवन्ता, सो पुरख निरँजण आप जणांयदा। आपे जिह्वा आपे मणीआ आपे मणता, मन का मणका आप अख्वांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जनक बदेह तेरा लग्गा नेंहु, हरि साचा पूर करांयदा। जगत नाता बंधी तोड़, आपणा आप कराया। नानक गोबिन्द एका घोड़, एका पौड़ा लगाया। अन्तिम वेले जाए बौहड़, गोबिन्द गोबिन्द मंग मंगाया। सम्बल नगरी आपे जाणे लम्मा चौड़, वेद कतेब ना किसे जणाया। लक्ख चुरासी वेखे फल मिट्ठा कौड़, घट घट अन्दर वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां चरन द्वार तीर्थ तट्ट गुर दर मन्दिर इक्क वखाया।

चरन दुआरा साचा हट्ट, प्रभ साचा आप वखांयदा। दुरमति मैल देवे कट्ट, जो जन धूढ़ी धूढ़ रमांयदा। तन लपेटे साचा पट, एका पड़दा नाम पांयदा। दूई द्वैती कढ्ढे वट, पंचम तत्त ना कोई नचांयदा। दीपक जोती लट लट, अज्ञान अन्धेर मिटांयदा। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, एका चरन ध्यान लगांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण लए वर, नरायण आप अख्वांयदा। गुरमुख साजण सच नरायण, निरगुण आप अख्वाया। रसना सके ना किसे कहिण, जिस जन दर्शन पाया। मेल मिलावा लोचन नैण, नैणा हवन इक्क कराया। नाता तुटे साक सज्जण मात पित भाई भैण, बंधप बंध ना कोई बंधाया। गुरमुख तेरा आप चुकाए लहिण देण, कलिजुग अन्तिम मेल मिलाया। तन पहनाए साचा बस्त्र गहिण, इक्क श्रृंगार रखाया। गुरमुख गुरमुख सतिगुर सन्त साजण एका धाम इक्ठे रहिण, विछड़ कदे ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती जोत नूरो नूर उपाया। पारब्रह्म प्रभ जोत जगा, आपणा आप उपांयदा। आप आपणी दया कमा, सतिगुर पूरा मात धरांयदा। सतिगुर पूरा शब्द जणा, साची सिख्या इक्क सुणांयदा। साची सिख्या इक्क जणा, दे मति आप समझांयदा। साची मति हरि हरि उपा, एका तत्त रखांयदा। एका तत्त वेख वखा, आपणा वेस वटांयदा। आप आपणा वेस वटा, हर घट वेख वखांयदा। हर घट आपे आसण ला, आपणा मुख छुपांयदा। आपणा मुख आप छुपा, आपणी कल वरतांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा नाउँ धरांयदा। जोती नूर हरि निरँकार, जोती जोत सवाईआ। सतिगुर पूरा कर त्यार, लोकमात दए वड्याईआ। सतिगुर पूरा ख़बरदार, एका शब्द जणाईआ। एका शब्द अपर अपार, हरि आपणा आप उपाईआ। आप आपणा कर त्यार, आप आपणे विच टिकाईआ।

आप आपणा कर उज्यार, आप आपणा वेख वखाईआ। आप आपणा वेख विचार, आप आपणा रंग रंगाईआ। आप आपणा रंग ललार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे दर सुहाईआ। जोती नूर हरि उज्यारा, हरि हरि रूप समाया। सतिगुर पूरे कर प्यारा, साचा शब्द सुणाया। साचा शब्द सच्ची धुन्कारा, घर साचे आप वजाया। आप सुणाए हरि करतारा, आपणा राग अलाया। गुर पूरे देवे इक्क अधारा, एका मार्ग लाया। लोकमात लै अवतारा, आप आपणा मात धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात जोत धर, गुर मति गुर आप अख्वाया। सतिगुर दीन दयाल हरि, आपणी कल वरतांयदा। आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आप बणांयदा। पंच विकारा दूर कर, माया मोह तुड़ांयदा। जूठ झूठ ना सोहे दर, पंच विकार रहिण ना पांयदा। घर विच वखाए आपणा घर, रंग महल्ल इक्क सुहांयदा। ना कोई दीसे चार दिवार, दर दरवाज़ा ना कोई रखांयदा। ना कोई बाडी सके घड़, ना कोई बणत बणांयदा। ना कोई दिसे किला कोट गढ़, ना कोई निशान वखांयदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण साचे आप मिलांयदा। साचे घर सच प्रकाश, घर आपणे आप कराईआ। पारब्रह्म पुरख अबिनाश, दर दुआरा इक्क सुहाईआ। गुरमुखां हिरदे कर कर वास, साचे सर आप नुहाईआ। साचे मण्डल पाए रास, गोपी काहन रूप वटाईआ। वेख वखाए पृथ्वी आकाश, इक्क ध्यान लगाईआ। जन भगतां हिरदे रक्खया वास, आत्म ब्रह्म जणाईआ। इक्क वस्त गुर साचे पास, हरिजन काया झोली आप भराईआ। घर विच घर करे प्रकाश, घट घट करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजन जोत जगाईआ। घर विच घर आप टिका, आपणा घर सुहाया। दीपक जोती इक्क जगा, अज्ञान अन्धेर मिटाया। धुन अनादी इक्क वजा, अनहद ताल सुणाया। पंचम मीता मेल मिला, साचा सगन मनाया। साचे घर डेरा ला, आप आपणा पड़दा लाहया। चाउ घनेरा दर्शन पा, मेरा तेरा दए चुकाया। सञ्झ सवेरा दए मिटा, दिवस रैण ना कोई जणाया। घर अन्दर घर दए वसा, घर बाहरी दिस ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण लए तराया। घर सुहञ्जणा घर निरँजणा, घर जोत जगाया। घर मजना घर अंजणा, घर सज्जणा चाँईं चाँईंआ। घर तजणा घर घर विच सजणा, घर भज्जणा घर थिर वखाईआ। घर कज्जणा घर गज्जणा घर वज्जणा, ताल नगारा इक्क वजाईआ। घर जहाज़ना घर ताजना घर राजना, शाहो भूप बैठा आसण लाईआ। घर आवाज़ना घर ग़रीब निवाज़णा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साजण वेख वखाईआ। घर अन्धेरा घर घर बत्ती, घट जोती नूर सवाईआ। घर फेरा घर वा ना लगे तत्ती, घर एका दर सुहाईआ। घर घनेरा घर

कमलापती, घर मेला सहिज सुभाईआ। घर डेरा घर समरथी, घर सदा संग निभाईआ। घर झेड़ा घर शब्द अकथी, घर धुनो धुन उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हर घट बैठा आसण लाईआ। घर बन्दना घर सीस, घर जगदीस अलख जगाईआ। घर चन्दना घर छतीस, घर बीतस घर इकीस वेख वखाईआ। घर अनन्दना घर बीस, घर सीस छत्र झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर में रिहा टिकाईआ। घर अन्दर घर मन्दिर, घर हवनी हवन कराया। घर कन्दर घर त्रैलोकी नंदन, घर बंधन तोड़ तुड़ाया। घर फंदन घर रवि ससि तार सूरज चन्दन, घर आकाश प्रकाश रखाया। घर अनन्दन घर बख्शंदन, घर परमानंद समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन घर घर मेल मिलाया। घर सुत घर दुलारा, घर घोड़ चढ़ाईआ। घर रुत्त घर हुलारा, घर जोड़ जुड़ाईआ। घर लुट्ट घर प्यारा, घर लग्गी तोड़ निभाईआ। घर रुठ घर वणजारा, घर सहिज भण्डार वरताईआ। घर इक्खु घर जैकारा, घर निरँकारा दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे घर वसाईआ। घर गढ़ घर गृह, घर घर वज्जे वधाईआ। घर धड़ घर साचा रहे, घर घर करे रुशनाईआ। घर चढ़ घर साचा बहि, घर घर मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर घर रिहा समाईआ।
११२८ ०६ घर गोबिन्द घर बख्शिंद, घर हरि हरि नाम अपारा। घर अमृत घर धारा सिन्ध, घर घर रिहा वहाईआ। घर कूड़ क्रिया ११२८ ०६
निन्द, घर मूर्ख साची बिन्द, घर घर रिहा उपजाईआ। घर चिन्द घर दाता गुणी गहिंद, घर गहर गवर समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आप मनाईआ। पारब्रह्म गुर वड्याई, सतिगुर पुरख उपाया। सतिगुर पूरे घर वज्जे वधाई, अनहद ताल वजाया। गुरमुख साचे लए जगाई, जागरत जोत आप जगाया। अवण गवण भेव मिटाई, ऊँच नीच ना वेख वखाया। कोटी कोट कोट हरि जीव भुलाई, गुरसिख विरला इक्क उठाया। घट घट घर घर चोटी उप्पर बहि बहि वेख वखाई, उच्चे मन्दिर डेरा लाया। सोहँ सोटी प्रभ हथ्थ उठाई, नाम लंगोटी तेड़ बंधाया। घर घर विच अलख रिहा जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे बणत बणाया। गुरमुख साचे बणत बणाए, सम समग्री हथ्थ रखाईआ। आप आपणी दया कमाए, आत्म अन्तर मैल गंवाईआ। मन मति बुध आप समझाए, साची सिख्या इक्क पढ़ाईआ। आप आपणा जाप जपाए, अजपा जाप आप चलाईआ। रसना जिह्वा आप हिलाए, मणीआ मणत आप समाईआ। गुण अवगुण ना वेख वखाए, दयानिध दया कमाईआ। सरगुण निरगुण मेल मिलाए, सच समाधी विच समाईआ। बोध अगाधी शब्द जणाए, धुर दी वादी बाण रखाईआ। विस्माद विस्माद विस्मादी आप अख्वाए,

गुरमुख साचे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंचम तोड़े पंचम जोड़े पंचम मेल मिलाईआ। गुरमुख साचा आप बणाउणा, आपणे हथ्थ रक्खे वड्याईआ। कंचन काया गढ़ सुहाउणा, हड्ड मास नाड़ी रत्त लेखे लाईआ। हाडी नाड़ी जोड़ जुड़ाउणा, नौ दर वेख वखाईआ। नौ द्वार बंक सुहाउणा, लोकमात रचन रचाईआ। माटी पोच घुमिआर इक्क अख्वाउणा, घट भाण्डे आप बणाईआ। आपणा मन्दिर आप सुहाउणा, आप आपणा दर खुल्हाईआ। आपणा दीपक आप जगाउणा, आपणे घर करे रुशनाईआ। आपणा घर आप सुहाउणा, आपणा राग अल्हाईआ। आपणा राग आप अल्हाउणा, अनहद ताल वजाईआ। अनहद ताल आप वजाउणा, पंचम वेख वखाईआ। पंचम बहि बहि खुशी मनाउणा, घर साचे वज्जे वधाईआ। साचा घर इक्क सुहाउणा, घर घर में वेख वखाईआ। दस्म द्वारी नाउँ धराउणा, दहि दिशा करे रुशनाईआ। साची सेजा इक्क विछाउणा, शब्द सिंघासण आसण लाईआ। आप आपणा उप्पर लगाउणा, निर्मल जोत करे रुशनाईआ। पंज तत्त कोई दिस ना आउणा, ना कोई वेख वखाईआ। सुरत सवाणी गुरमुख नारी आपणे अंग लगाउणा, आप आपणी खुशी मनाईआ। नारी कन्ता भेव खुल्ल्हाउणा, सईआं मंगल साचा गाईआ। आदि शक्त इक्क सगन मनाउणा, अमृत आत्म मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर विच वखाए साचा घर, गुरमुख साचे बणत बणाईआ।

गुरमुख साचे आप बणा, आपणा संग उठांयदा। पंज तत्त विकार वटा, एका राह जणांयदा। हँकार विकारा कोई दिसे ना, सच सुच्च समांयदा। घर विच वखाए साचा थाँ, घर घर में आप टिकांयदा। घर में वेखे पिता माँ, पूत सपूता घर वसांयदा। घर विच देवे ठंडी छाँ, घर अमृत इक्क प्यांअदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख गुरसिख साचे सज्जण लोकमात उपांयदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, हरिजन तेरे घर तेरा घर सुहांयदा।

तेरे घर तेरा घर, हरि हरि आप सुहाया। तेरे दर तेरा दर, हरि हरि आप खुल्हाया। तेरे सर तेरा सर, हरि हरि आप बणाया। तेरे दर तेरा दर, हरि हरि आप उपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख नाम जुग जुग आप वड्आया। गुरसिख हरि रंग रत्तया, सतिगुर सच सरनाए। आप आपणा मुल पछानया, भरमी भरम गंवाए। एका लिव इक्क ध्यानया, एका मन्त्र नाम दृढ़ाए। एका जिह्वा एका गाणया, एका रसना आप हिलाए। एक दान एका दानया, एका झोली आप भ्राए। एका शब्द इक्क निशानया, तीर निराला इक्क लगाए। एका धुन एका बाणीआ, एका

एक हरि सुणाए। एका रंग हरि सुल्तानया, हरिजन साचे आप रंगाए। एका बख्शे चरन ध्यानया, चरन धूढ़ी मस्तक टिक्का लाए। एका ब्रह्म इक्क ज्ञानया, एका धर्म रखाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख लेखे लए लाए। गुरमुख झूठा नाता तोड़, सच सच समाया। चरन प्रीती निभे तोड़, हरि जोती जोड़ जुड़ाया। शब्द चाढ़े साचे घोड़, साचा घोड़ा इक्क दौड़ाया। चौदां चौदस चौदां जाए बौहड़, बीस बीस संग रखाया। आपणे अन्दर आपे दौड़, आप आपणा लड़ फड़ाया। भगतां भगती मेला इक्क इकेला जाए बौहड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराया। तरनी तरन विच संसार, गुर पूरे चरन ध्यानया। एका नाम इक्क जैकार, एके देवे धुर माणया। एका खण्डा एका धार, इक्क म्यान टिकानया। एका कन्ढा इक्क किनार, एका पार करानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले शाह सुल्तानया। हरिजन मेला शाह सुल्तान, शाह शहाना रूप समाईआ। आप आपणी किरपा धार, गुण निधाना संग निभाईआ। चौदां चौदां कर प्यार, घर सच करे रुशनाईआ। बीस बीसा दए आधार, आप आपणी खुशी मनाईआ। जगत जगदीश नर निरँकार, निरगुण होए सहाईआ। कलि कल्की लै अवतार, कलि कल में खेल खिलाईआ। कलि कल्की पावे सार, काल नगारा इक्क वजाईआ। कलि कल्की अवतार, कलि कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। कलि कल्की दुहागण नार, कल्की कलि लए प्रनाईआ। दोहां मेला अन्तिम वार, जगत द्वार रिहा कराईआ। तन पहनाए त्रैगुण हार, पंज तत्त शृंगार वखाईआ। मन मति बुध करे प्यार, दासी दास नाल रलाईआ। आपे वसया सभ तों बाहर, दिस किसे ना आईआ। गुरमुख साचे लए उभार, आप आपणी बूझ बुझाईआ। अमृत आत्म बख्शे धार, काया बाटा इक्क सुहाईआ। सोहँ खण्डा फिरे तिक्खी धार, सच सुच्च मिठास रखाईआ। ब्रह्मण्डां वंडे हरि वंडणहार, आपणी भिच्छया आपे पाईआ। सन्त सतिगुर साजन मीत मुरार, हरि हरिजन लए उठाईआ। आत्म दरसी दरस अपार, दर द्वारे आप वखाईआ। साचा कलस हथ्थ करतार, अमृत अमृत मुख चुआईआ। नाम सालस अन्तिम वार, कलिजुग दए कराईआ। ख़ालसा ख़ालस कर त्यार, चार वरन इक्क सरनाईआ। नाम लालसा अपर अपार, जोती नूर करे रुशनाईआ। आलस निन्दरा दए उतार, चित वित ना ठगोरी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणी ओट रखाईआ। ख़ालसा ख़ालस गुरमुख, गुर पूरा घोड़ चढ़ांयदे। दो जहानां लेखा लिख, साचा पौड़ा आप वखांयदे। सृष्ट सबाई रिहा वेख, आप आपणा मुख छुपांयदे। भरमे भुल्ले धारी केस, धर्म सति ना कोई जणांयदे। गुर मन्दिर अन्दर लभ्भदे दस दस्मेस, नौ दर खोज खुजांयदे। पुरख अबिनाशी अवल्लड़ा भेस, ब्रह्मा विष्न महेष गणेश मुख शरमांयदे। जन भगतां दर द्वारे दर

११३०
०६

दरवेश, भेखा धारी भेख वटांयदे। निरगुण रूप सदा आदेस, सरगुण सच समांयदे। बाल अवस्था अल्लड़ वरेस, चौदां चौदां विच फिरांयदे। आपे आपणे लिखे लेख, गुरमुख साजण वेख वखांयदे। शब्द गुर मुच्छ दाढ़ी ना दिसे केस, मूंड मुंडाया ना कोई सुहांयदे। आदि जुगादी जुग जुग जाणे आपणा वेस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख गुरसिख सन्त सतिगुर एका धाम सुहांयदे।

* * * * *

१९३१
०६